

АКАДЕМИЯИ ИЛМҲОИ ҶУМҲУРИИ ТОҶИКИСТОН  
ИНСТИТУТИ ЗАБОН ВА АДАБИЁТИ БА НОМИ  
АБӮАБДУЛЛОҲИ РӮДАКӢ

ШУЪБАИ ТАЪРИХИ АДАБИЁТ

# ТАЪРИХИ АДАБИЁТИ ТОҶИКӢ

(аз Давраи бостон то ибтидои асри XX)

## Ҷилди 1

Адабиёти давраҳои бостон,  
арабизабон ва асрҳои VIII-IX

Зери назари доктори илми филология, профессор  
Абдунабӣ Сатторзода

Душанбе  
2019

**ББК 63. 3 (2 тоҷик) +74.263.1**

**А-90**

А-90 Таърихи адабиёти тоҷикӣ (аз Давраи бостон то ибтидои асри XX). Ҷ.1.-Душанбе: «Дониш», 2019. -629 с.

Ҳайати таҳририя:

Абдуҷаббор Раҳмонзода, Фарҳод Раҳимӣ, Носирҷон Салимӣ,  
Саҳидод Раҳматуллозода, Абдунабӣ Сағторзода (сармуҳаррир),  
Ҳоким Қаландариён, Мирзо Муллоаҳмад

Ҳайати таҳририяи чилд:

Абдунабӣ Сағторзода, Мирзо Муллоаҳмад, Ҳоким Қаландариён,  
Шарифмурод Исрофилниё, Шамсиддин Муҳаммадиев

Муҳаррирони масъул:

номзади илми филология Анзурат Маликзод  
ва Мубашшир Акбарзод

**ISBN 978-99975-76-16-3**

© Институти забон ва адабиёти ба номи  
Абӯабдуллоҳи Рӯдакии Академияи  
илмҳои Ҷумҳурии Тоҷикистон, 2019

## Муқаддимаи умумӣ

### «ТАЪРИХИ АДАБИЁТИ ТОЧИКӢ»: ПАСМАНЗАР, НАЗАРИЁТ, УСУЛ ВА РАВИШИ ТАЪЛИФ

#### Нигоҳе ба пасманзари таърихи адабиётнигорӣ дар заминаи адабиёти тоҷикӣ

Ташаббускори навиштани нахустин китобҳои илмӣ ва таълимӣ таърихҳои адабиёти форсии тоҷикӣ донишмандони ғарбӣ буданд. Онҳо дар даҳаи охири садаи нуздаҳ ва ду даҳаи аввали қарни ХХ барои шинохти бештар ва амиқтари равандҳои асосии пайдоиш, таҳаввулу тақомул ва вижагиҳои адабиёти форсии тоҷикӣ аз Замони бостон то давраҳои баъдӣ китобҳо навиштанд, ки як навъ ҷамъбасти ҷусторҳои илмӣ чандинасраи шарқшиносии Ғарб дар замина буд.<sup>1</sup>

Аз донишмандони шарқӣ нахустин касе, ки азми навиштани таърихи адабиёти форсии тоҷикиро намудааст, муаллифи китоби номи «Шеър-ул-аҷам ё таърихи шуаро ва адабиёти Эрон»<sup>2</sup> олими маъруфи ҳиндӣ Шиблии Нуъмонӣ буд. Кори ӯро Ҷ. Ваиз Лалл<sup>3</sup>, Абид Ҳасан Фаридӣ<sup>4</sup> ва Муҳаммад Абдулғанӣ<sup>1</sup> ва дигарон давом додаанд.

<sup>1</sup>Joseph Baron von Hammer Purgstall. Geschichte der schonen Redekunste Persiens. – Vienna, 1818; W.G. Ouseley. Biographical Notices of Persian Poets: with Critical and Explanatory Remarks...- London, 1846; H. Ethe. Die Hofische und Romantische Poesia der Perser. - Hamburg, 1887; M.J. Darmesteter. Les origins de la poesie persane. - Paris, 1887; I. Pizzi. - Manuale di Letteratura persiana. - Milano, 1887; E.A. Reed. - Persian Literature, Ancient and Modern. - Chicago, 1893; I. Pizzi. Storia Della Poesia Persiana. - Torino, 1894; H. Ethe. - Neupersische Literatur. - Strassburg, 1896-1904; Th. Noldeke. - Das Iranische Nationalepos: Besonderer Abdruck aus dem Grundriss der iraischen Philologie. - Strassburg, 1896; P. Horn. Geschichteder persischen Literatur. - Leipzig, 1901; E.G. Brown. - A Literature History of Persia. - London, 1906-1908; C. Field. Persian Literature. - London, 1912; E.G. Brown. A History of Persian Literature under Tartar Dominion. - Cambridge, 1924; E.G. Brown. A History of Persian Literature in modern Times. - Cambridge, 1924; A Literary History of Persia. - Cambridge, 1929; R. Levy. Persian Literature. – 1923; А. Крымский. История Персии, её литературы и дервишской теософии. - Москва, 1909-1917; К. Чайкин. Краткий очерк новейшей персидской литературы. - Москва, 1928; Е.Э. Бертельс. Очерки истории персидской литературы. - Ленинград, 1928; M.D. De Redlich. Persian Language and Literature, with a Short Historical Sketch of the Country and Flag. - Philadelphia, 1929 вағ.

Маҳмуди Футӯҳӣ агарчи таъкид намудааст, ки “дар воқеъ нахустин касе, ки таърихи адабиёти форсӣ навишта, Ҳермон Эте аст” ( محمود فتوحى. نظرية تاريخ ادبيات با بررسى انتقادى ) ( تاريخ ادبيات نگارى در ايران. - تهران. - 1387. - ص. 206 ).

Дар асл, тавре ки аз зернавишти аввал бармеояд, Ҳомер Пургштол ва Вилём Узели ба ин кор пештар аз ӯ иқдом карда будаанд.

<sup>2</sup> شبلى نعمانى. شعراالعجم يا تاريخ شعرا و ادبيات ايران. - اعظمگه، 1906، 1910.

<sup>3</sup>J. Waiz Lall. An Introductory History of Persian Literature. - Imperial Book Depot Press, 1914.

<sup>4</sup>Abid Hasan Faridi. An Outline History of Persian Literature A.D. 822-1926. - Ram Prasad & Brothers, 1928.

Дар Эрон, Афғонистон ва Тоҷикистон он вақт суннати таъриханависӣ давом дошт. Ба вучуд омадани асарҳои Ризоқулихони Ҳидоят «Мачмаъу-л-фусаҳо»<sup>2</sup> (1911), Мирзомуҳсин Иброҳимӣ «Намунаи адабиёти Эрон»<sup>3</sup> (1922), Садриддини Айнӣ «Намунаи адабиёти тоҷик»<sup>4</sup> (1926) ва Халилуллоҳи Халилӣ «Осори Ҳирот»<sup>5</sup> (1309-1310/1930-1931) гувоҳ бар он аст.

Оғози навиштани таърихи адабиёт дар ин се кишвари форсидадон ба поёни солҳои бистум ва сиюму чихилуми қарни XX рост меояд. Маҳз дар ҳамин солҳо китобҳои Зайнулобидини Муътаман «Шеър ва адаби форсӣ»<sup>6</sup> (1925), Бадеъуззамони Фурӯзонфар «Сухан ва суҳанварон»<sup>7</sup> (1929-1930), Ҷалолуддини Хумоӣ «Таърихи адабиёти Эрон»<sup>8</sup> (1930); Ш. Ҳусейнзода ва Ш. Ниёзӣ «Адабиёт»<sup>9</sup> (1934), Саид Нафисӣ «Таърихи назм ва насри Эрон»<sup>10</sup> (1932-1933), Рашиди Ёсамӣ «Адабиёти муосир»<sup>11</sup> (1937), Иқбол Ҳасан «Шоирони пешинаи форсӣ дар Ҳинд»<sup>12</sup> (1937), Маликушшуаро Баҳор «Сабкшиносӣ ё таърихи татаввурӣ насри форсӣ»<sup>13</sup> (1941), Ризозода Шафақ «Таърихи адабиёти Эрон»<sup>15</sup> (1941), Муҳаммад Абдулғанӣ «Форсии то муғул дар Ҳиндустон: Нигоҳи интиқодӣ ба рушди забон ва адабиёти форсӣ дар Ҳинд аз замони бостон то давраи ҳукмронии муғул»<sup>16</sup> (1941), Забехуллоҳи Сафо «Таърихи адабиёт дар Эрон»<sup>14</sup> (1943), Ш. Ҳусейнзода «Адабиёти ватан (барои синфи 7)»<sup>15</sup> (1943), Забехуллоҳи Сафо «Ҳамосасароӣ дар Эрон»<sup>16</sup> (1945), С. Риштин «Таърихи мухтасари адабиёти Афғонистон»<sup>17</sup> (1946), А. Мирзоев «Адабиёт (ёри барои дарси адабиёти асрҳои XV1, XV11,

<sup>1</sup>Muhammad Abdulghani. A History of Persian Language and Literature at the Mughal Court. - Allahabad, 1929-1930.

<sup>2</sup>رضاقلى خان هدايت. مجمع الفصحا. - تهران، 1295.

<sup>3</sup>ميرزا محسن ابراهيمي. نمونه ادبيات ايران. - باكو، 1922.

<sup>4</sup>صدر الدين عيني. نمونه ادبيات تاجيك. مسكو، 1926.

<sup>5</sup>حليل الله خليلي. آثار هرات. - هرات، 1309-1310.

<sup>6</sup>زين العابدين موعتمن. شعر و ادب فارسي. - تهران، 1925/1304.

<sup>7</sup>بديع الزمان فروزانفر. سخن و سخنوران. - تهران، 1308-1309.

<sup>8</sup>جلال الدين همائي. تاريخ ادبيات ايران. - تهران، 1309.

<sup>9</sup>Ш. Ҳусейнзода ва Ш. Ниёзӣ. Адабиёт. - Сталинобод, 1934.

<sup>10</sup>سعید نفیسی. تاريخ نظم و نثر ايران. - پاریس، 1311-1322.

<sup>11</sup>رشید یاسمی. ادبيات معاصر. - تهران، 1316.

<sup>12</sup>Iqbal Hasan. The Early Persian Poets of India. - Патна, 1937.

<sup>13</sup>ملک الشعرا بھار. سبک شناسی یا تاریخ تطور نثر فارسی. - تهران، 1320.

<sup>16</sup> Muhammad Abdulghani. Pre-Mughal Persian in Hindustan: A Critical Survey of the Growth of Persian Language and Literature in India from the Earliest Times to the Advent of the Mughal Rule. - Allahobod, 1941

<sup>14</sup>ذبیح الله صفا. تاريخ ادبيات در ايران. - تهران، 1322.

<sup>15</sup>Ш. Ҳусейнзода. Адабиёти ватан (барои синфи 7). - Сталинобод, 1943.

<sup>16</sup>ذبیح الله صفا. حماسه سرایی در ايران. - تهران، 1324.

<sup>17</sup>رشتین. تاريخ مختصر ادبيات افغانستان. - کابل، 1946.

ХУ111 ва XIX)<sup>1</sup> (1948), Салими Найсорӣ «Таърихи адабиёти Эрон»<sup>2</sup> (1949) ва ғ. таълиф гардиданд.

Даҳаи панҷуми асри гузашта оғози марҳалаи густариши беандозаи навиштани таърихҳои адабиёти форсии тоҷикӣ чи дар Шарқ ва чи дар Ғарб ба шумор меравад. Иллати аслии густариши фавқуллодаи ин падидаи илмӣ дар нимаи садаи XX ва идомаи он то имрӯз натиҷаи рушди фарогири адабиётшиносӣ ва нақди адабӣ, умуман, ва дар заминаи адабиёти форсии тоҷикӣ, хосатан, дар ин кишварҳо мебошад. Дастовардҳои нави илмӣ тақозо мекарданд, ки таърихҳои пешинаи адабиёти форсии тоҷикӣ таҷдиди назар ва такмилу тасҳеҳ шаванд. Дар натиҷа дар Эрон<sup>3</sup>, Афғонистон<sup>1</sup>,

<sup>1</sup>А. Мирзоев. Адабиёт (ёри барои дарси адабиёти асрҳои XVI, XVII, XVIII ва XIX). - Сталинобод, 1948.

<sup>2</sup>Салим Нисарӣ. Таърих адабиат ایران. - تهران، 1328.

<sup>3</sup>ذبیح‌الله صفا. حماسه‌سرایی در ایران. - تهران. 1324، 1349؛ حسین خطیبی. تاریخ مختصر نثر فارسی. - تبریز. - 1327؛ ذبیح‌الله صفا. تاریخ ادبیات در ایران. ج. 1-5. - تهران. 1332-1367؛ هم او: مختصر تاریخ تحول نظم و نثر پارسی. - تهران. 1333؛ ابراهیم صفایی ملایری. تحف ادبی قاجار. - تهران. 1333؛ احسان یارشاطر. شعر فارسی در عهد شاهروخ (نیمه اول قرن نهم). - تهران. 1334؛ هوشنگ مستوفی. شعری بزرگ ایران. - تهران. 1334؛ ملک‌الشعرا بشار. سبک‌شناسی یا تاریخ تطور شعر فارسی. در 3 جلد. - تهران. 1334؛ میرزا محمدحسین فروغی. تاریخ ادبیات. - تهران. 1335؛ سعید محمدرضا داعی جواد. تاریخ ادبیات ایران از حمله مغول تا نیمه اول دوره صفویہ. - ج. 1. - اصفهان. 1335؛ حسین فیروز. تاریخ ادبیات ایران و تاریخ شعرا. - تهران. 1337؛ عباس اقبال آشتیانی. تاریخ مختصر ادبیات ایران. - تهران. 1338؛ زین‌العابدین موعظمن. تحول شعر فارسی. - تهران. 1339؛ ذبیح‌الله صفا. گنج سخن. - تهران. 1340؛ محمدصدر هاشمی. شعر و شاعری در عهد صفوی. - اصفهان. 1341؛ بزرگ علوی. تاریخ و تحول ادبیات جدید ایران. - برلین. 1964 (به آلمانی)؛ سعید نفیسی. تاریخ نظم و نثر در ایران و در زبان فارسی. - تهران. 1344؛ حسین خطیبی. تاریخ تطور نثر فارسی. - تهران. 1344؛ محمد صدر هاشمی. شعر و شاعری در عهد صفوی. - اصفهان. 1344؛ محمدجعفر محجوب. سبک خراسانی در شعر فارسی. - تهران. 1345-1350؛ احمدی و حسین رزنجوی. سیر سخن. - تهران. 1345؛ حسن کامشاد. پایه‌گذاران نثر جدید فارسی. - تهران. 1366 (به انگلیسی)؛ ذبیح‌الله صفا. نثر فارسی از آغاز تا عهد نظام‌الملک طوسی. - تهران. 1347؛ احمد گلچین معانی. مکتب وقوع در شعر فارسی. - تهران. 1347؛ ذبیح‌الله صفا. گنجینه سخن. - تهران. 1348؛ اسماعیل نوری اعلی. صور و اسباب در شعر امروز ایران. - تهران. 1348؛ رضازاده شفق. تاریخ ادبیات ایران. - تهران. 1349؛ یحیی آریپور. از صبا تا نیما (تاریخ 150 سال ادب فارسی). در 2 جلد. - تهران. 1350؛ عباس مهین ششتری. تاریخ ادبیات ایران در عصر خلافت عرب. - تهران. 1350؛ محمد استعلامی. بررسی ادبیات امروز. - تهران. 1350؛ محمد دبیر سیاقی. پیشگامان شعر پارسی. - تهران. 1351؛ سعید سجّاد حسین. تاریخ ادبیات ایران. - اوزنگ‌آباد دکن. 1351؛ رشید یاسمی. ادبیات معاصر. - تهران. 1352؛ عباس مهین ششتری. تاریخ زبان و ادبیات ایران در خارج از ایران. - تهران. 1352؛ سعیدرضا صدوقی خسروشاهی. شعر و ادب فارسی در کشورهای همسایه. - تهران. 1354؛ احمد سمیعی. ادبیات ساسانی. - تهران. 1355؛ محمد استعلامی. بررسی ادبیات امروز ایران. - تهران. 1356؛ حمید زرّینکوب. چشم‌انداز شعر نو فارسی. - تهران. 1357؛ یحیی آریپور. از نیما تا روزگار ما. - تهران. 1357؛ حمید زرّینکوب. چشم‌انداز شعر نو فارسی. - تهران. 1358؛ محمدرضا شفیعی کدکنی. ادوار شعر فارسی از مشروطیت تا سقوط سلطنت. - تهران. 1359؛ هم او: ادبیات فارسی از عصر جامی تا روزگار ما. - تهران. 1360؛ عبدالحسین زرّینکوب. سیری در شعر فارسی. - تهران. 1363؛ جمشید ملکپور. ادبیات نمایشی در ایران. در 2 جلد. - تهران. 1362؛ مهدی حمیدی. شعر در عصر قاجار. - تهران. 1364؛ محمدعلی سپانلو. نویسندگان پیشرو ایران. - تهران. 1366؛ حسن عابدینی. صد سال داستان‌نویسی در ایران. در 2 جلد. - تهران. 1366-1368؛ احمد تیممداری. عرفان و ادب در عصر صفوی. - تهران. 1368؛ محمدامین ریاحی. زبان و ادب فارسی در قلمرو عثمانی. - تهران. 1369؛ همایون‌فتح‌رکن‌الدین. تاریخ هشت هزار سال شعر ایران. - تهران. 1370؛ پروین شکبیا. شعر فارسی از آغاز تا امروز. - تهران. 1370؛ محمد دبیر سیاقی. پیشاهنگان شعر پارسی. - تهران. 1370؛ شمس لنگرودی. تاریخ تحلیلی شعر نو. در 4 جلد. - تهران. 1371-1384؛ محمد حقوقی. شعر نو از آغاز تا امروز. - تهران. 1371؛ تحسین یازنجی. پارسی‌نویسان آسیای صغیر. - تهران. 1371؛ حسنی محمدی. شعر معاصر ایران: از بهار تا شهریار. - در 2 جلد. - قم. 1372؛ شمس

## Тоҷикистон<sup>2</sup>, Ҳиндустону Покистон<sup>1</sup> ва кишварҳои ғарбӣ<sup>2</sup> дар ин муддат таърих ва таърихгунаҳои адабиёти форсии тоҷикӣ зиёд

Лنگرودی. مکتب بازگشت. - تهران. - 1372؛ احمد صفاری مقدم. زبان و ادب فارسی در بوسنی و هرزگوین. - تهران. - 1372؛ سیروس شمیس. سیر غزل در شعر فارسی. - تهران. - 1373؛ احمد کبیری حکاک. تلیعة تجدد در شعر فارسی. - تهران. - 1374 (ترجمة مسعود جعفری)؛ کیومرث امیری. زبان و ادب فارسی در هند. - تهران. - 1374؛ محمدجعفر یاحقی. چون سیوی تشنه. تاریخ ادبیات معاصر فارسی. - تهران. - 1374-1375؛ عبدالحسین زینکوب. از گذشته ادبی ایران. - تهران. - 1375؛ سیروس شمیس. سبک‌شناسی شعر. - تهران. - 1376؛ احمد تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام. - تهران. - 1377؛

حسن میرعابدینی. صد سال داستان‌نویسی. - تهران. - 1377؛ محمد حقوقی. ادبیات امروز ایران. نظم. - تهران. - 1377؛ هم او: ادبیات امروز ایران. نثر. - تهران. - 1377؛ محمد غلامرضایی. سبک‌شناسی شعر فارسی از رودکی تا شاملو. - تهران. - 1377؛ حسن انوشه. دانشنامه ادب فارسی در افغانستان. - تهران. - 1378؛ محمدرضا روزبه. سیر تحول غزل فارسی. - 1378؛ محمد مهدی. ادب پهلوانی. مطالعه‌ای در تاریخ ادب دیرینه ایرانی از زردشت تا اشکانیان. - تهران. - 1379؛ منصور رستگار فسایی. انواع نثر فارسی. - تهران. - 1380؛ احمد خاکی. تاریخ ادبیات دوره بازگشت. - تهران. - 1380؛ محمدهادی محمدی. تاریخ ادبیات کودکان ایران. - تهران. - 1380؛ سبحانی. تاریخ ادبیات. - تهران. - 1380؛ علی‌اصغر میریاقری. تاریخ ادبیات ایران. - تهران. - 1381؛ محمدرضا روزبه. ادبیات معاصر ایران (شعر). - تهران. - 1381؛ هم او: ادبیات معاصر ایران (نثر). - تهران. - 1381؛ رویای صدر. بیست سال با طنز. - تهران. - 1381؛ سعید عبدالله. ادبیات فارسی در میان هندوان. - تهران. - 1381؛ پروانه طاهری. ستارگان ادب پارسی. - تهران. - 1382؛ قاسم صافی. بهار ادب. تاریخ مختصر زبان و ادبیات فارسی در شبه قاره هند. - تهران. - 1382؛ صدیق سفیزاده. تاریخ ادبیات ایران. - تهران. - 1382؛ محمدرضا شفیعی کدکنی. ادبیات فارسی از عصر جامی تا روزگار ما. - تهران. - 1382؛ زهره زرشناس. زبان و ادبیات معاصر ایران. - تهران. - 1382؛ قیصر امینپور. سنت و نوآوری در شعر معاصر. - تهران. - 1383؛ مهدی زرقانی. چشم‌انداز شعر معاصر. - تهران. - 1383؛ کاووس حسینی. گونه‌های نوآوری در شعر معاصر ایران. - تهران. - 1383؛ سعیدحسین امین. ادبیات معاصر ایران. - تهران. - 1384؛ توفیق سبحانی. تاریخ ادبیات ایران. - تهران. - 1386؛ سعید مهدی زرقانی. تاریخ ادبی ایران و قلمرو زبان فارسی. - تهران. - 1388 و دیگران.

احمدعلیخان کوهزاد، علی محمد زهما، علی احمد نعیمی، محمد ابراهیم صفا و غلاممحمد غبار. تاریخ ادبیات افغانستان برای صنوف لیسه‌ها. - کابل. - 1330؛ محمدحیدر ژوبل. تاریخ ادبیات افغانستان بعد از اسلام. - کابل. - 1330؛ هم او: تاریخ افغانستان. - کابل. - 1336؛ هم او: نگاهی به ادبیات معاصر افغانستان. - کابل. - 1337؛ خالد محمد خسته. معاصرین سخنور. - کابل. - 1339؛ غلامحیدر یقین. تاریخ ادبیات دری. - کابل. - 1342؛ مولوی خالد محمد خسته ختلانی. یادى از رفتگان. - کابل. - 1344؛ حسین نایل. سیری در ادبیات دری سده سیزدهم. - کابل. - 1345؛ محمدحسن طیبی. تاریخ ادبیات دری افغانستان. - کابل. - 1349؛ غلامسرور همایون. تاریخ ادبیات بدخشان. - کابل. - 1353؛ اسدالله حبیب. ادبیات معاصر از آغاز سده بیست تا جنگ جهانی دوم (1900-1941-1945). - کابل. - 1356؛ عبدالقیوم قویم. تاریخ ادبیات دری از دوره‌های باستانی تا پایان قرن چهارم هجری. - کابل. - 1360؛ محمد عثمان صدقی. سیر ادب در افغانستان. اجمال تطور ادبی در عصر حاضر. - کابل. - 1360؛ اسدالله حبیب. ادبیات معاصر دری. - کابل. - 1362؛ هم او: ادبیات دری در نیمه اول سده بیستم. - کابل. - 1366؛ شاه‌علی-اکبر شهرستانی. هجو در ادبیات دری. - کابل. - 1359؛ لطیف ناظمی. مقدمه‌ای بر داستان‌نویسی کشور. - کابل. - 1360؛ غلامسرور همایون. تاریخ ادب زبان دری در سده‌های پنجم و ششم هجری. - کابل. - 1360؛ رهنورد زریاب. پسمنظر نثر داستانی معاصر دری و نکته‌هایی در باره داستان. - کابل. - 1362؛ اسدالله حبیب. ادبیات دری در نیمه اول سده بیستم. - کابل. - 1366؛ عبدالقیوم قویم. مروری در ادبیات معاصر دری (از 1259 تا 1380). - کابل. - 1385؛ صالح‌محمد خلیق. تاریخ ادبیات بلخ (از کهنترین روزگار تا اوایل سده بیست و یکم). - کابل. - 1387؛ محمدیونس طغیان سکایی. تاریخ ادبیات فارسی دری (سده‌های 7 و 8 هجری) (عصر مغول). - کابل. - 1391 و دیگران.

<sup>2</sup>Ш. Хусейнзода. Адабиёти тоҷик (барои синфи 8). - Сталинобод, 1950; Х. Мирзозода. Материалҳо аз таърихи адабиёти тоҷик (асрҳои ХУ1-Х1Х ва ибтидои асри ХХ). - Сталинобод, 1950; Очерки таърихи адабиёти советии тоҷик. - Ҷ.1-2. - Сталинобод, 1956-1957; А. Мирзоев. Рӯдакӣ ва инкишофи ғазал дар асрҳои Х-ХУ. - Сталинобод, 1957; Ш. Хусейнзода, А. Болдирев. Адабиёти тоҷик (барои синфи 9). - Сталинобод, 1960; Х. Мирзозода. Материалҳо аз таърихи адабиёти тоҷик (ба ёрии муаллимони адабиёт). - Душанбе, 1962; Н. Маъсумӣ. Адабиёти тоҷик дар асри ХУ111 ва нимаи аввали асри Х1Х. - Душанбе. - 1962; Л.Н. Демидчик. Драмаи солҳои 40-50 тоҷик. - Душанбе, 1965; Р. Ҳодизода. Адабиёти тоҷик дар нимаи дууми асри Х1Х. -

Душанбе, 1968; А. Абибов . Аз таърихи адабиёти тоҷик дар Бадахшон (асри XIX ва аввали асри XX.-Душанбе.-1971; Аҳмад Абдуллоев. Адабиёти форсу тоҷик дар нимаи аввали асри XI.-Душанбе,1974; С. Саъдиев. Сӯзанӣ ва муҳити адабии Самарқанди асри XI1.-Душанбе,1974; Абдуллоҷон Ғаффоров. Назми форсиабони Ҳинд ва Покистон дар нимаи дуҷуми асри XIX ва асри XX.-Душанбе,1975; Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои XI1-XIУ.-Душанбе,1976; А. Мирзоев. Адабиёти тоҷик дар нимаи аввали асри XV (1976, номатбуъ); А. Мирзоев, А.Н. Болдирев, Р. Ҳодизода. Адабиёти тоҷик (барои синфи 9).-Душанбе,1976; Драматургияи тоҷик. – Душанбе,1978; У. Каримов. Адабиёти тоҷик дар нимаи дуҷуми асри XV111 ва аввали асри XIX.-Душанбе,1978; А. Абдуманнонов, Р. Амонов, Л.Н. Демидчик, Х. Мирзозода, А. Сайфуллоев, М. Шукуров. Таърихи адабиёти советии тоҷик. Инкишофи жанрҳо», ҷ.1- 6. -Душанбе,1978-1984; С. Амиркулов. Адабиёти тоҷик дар нимаи якуми асри XIX.-

Душанбе,1980; نگرشی به نثر معاصر دری افغانستان، عبارت از 2 جلد. - کابل، 1981

И. Брагинский, М. Бақоев, А. Абибов, К. Айнӣ, Р. Ҳодизода, А. Афсаҳзод. Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои XI1-XIУ.-Душанбе,1983; Х. Отахонова. Таҳаввули жанри достон дар назми муосири тоҷик. – Душанбе,1983; صابر میرزایف. ادبیات.

1364، کابل، - معاصر دری افغانستان، عبارت از 2 جلد. - کابل، 1364  
Душанбе,1985; А. Абдуллоев, С. Саъдиев. Адабиёти форсу тоҷик дар нимаи дуҷуми асри XI ва аввали асри XI1.-Душанбе,1986; А. Афсаҳзод. Адабиёти форсу тоҷик дар нимаи дуҷуми асри XV. – Душанбе,1987; Х. Мирзозода. Таърихи адабиёти тоҷик (аз давраи қадим то асри XI11. - Китоби 1 (1-2).-Душанбе,1987-1989; Р. Ҳодизода, У. Каримов, С. Саъдиев . Адабиёти тоҷик (асрҳои XI-XIX ва ибтидои асри XX).-Душанбе.-1988; С.Саъдиев. Маркази адабии Самарқанд дар шоҳроҳи таърих.-Тошканд, 2012;Маъруфи Рачабӣ. Насри тоҷикии замони ҷанг.-Душанбе,1990; Х. Асозода . Адабиёти садаи XX форсии дарии Афғонистон (таҳлили осори манзум).-Душанбе,1996; Ҳам ӯ:Адабиёти форсии дарии Афғонистон (насири достонӣ).-Душанбе,1997; Ҳам ӯ: Адабиёти Эрон дар садаи XX. – Душанбе,1997; С. Амиркулов. Таҳаввули адабиёти тоҷик дар нимаи якуми асри XIX.-Душанбе,1997; Р. Ҳодизода. Тасаввуф дар адабиёти форс-тоҷик.-Душанбе,1999; Х. Асозода. Адабиёти тоҷик дар садаи XX.-Душанбе,1999; Н. Зоҳидов. Адабиёти арабизабони форсу тоҷик аз истилои араб то аҳди Сомониён.-Хучанд,1999; З. Ғаффорова. Ташаккул ва инкишофи адабиёти форсиабони Кашмир дар асрҳои XV1-XV11.-Хучанд, 2001; Н. Салимов. Марҳалаҳои услубӣ ва таҳаввули анвоъи наср дар адабиёти форсу тоҷик (асрҳои IX-X111).-Хучанд, 2002; Н. Сайфиев. Адабиёти тоҷик дар асрҳоиXV1, XV11, XV111 ва нимаи аввали асри XIX.-Душанбе, 2004; Н. Зоҳидов. Насри арабизабони адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои Y111-IX. – Хучанд, 2004; С. Амиркулов. Таҳаввули жанрҳои адабиёти тоҷик дар нимаи аввали асри XIX. – Душанбе, 2005; Муҳаммадҷони Шақурии Бухорӣ. Нигоҳе ба адабиёти тоҷикии садаи бист.-Душанбе, 2006; А. Раҳмонов. Шамсиддин Шохин ва анъанаи ғазалсароӣ дар адабиёти тоҷики нимаи дуҷуми асри XIX ва аввали асри XX.-Душанбе, 2006; رسول هادی زاده، علی محمد خراسانی. تاریخ ادبیات

فارسی (دری-تاجیکی). - کابل، 2009/1388

А.Сатторзода. Адабиёти тоҷик (барои синфи 8).-Душанбе, 2009; Ш.Р. Исрофилниё. Носири Бухорӣ ва тақомули ғазал дар асри XIУ. – Душанбе, 2009; С. Амиркулов. Нигоҳе ба инкишофи таърихии адабиёти тоҷик дар Мовароуннаҳр (қарни XIX).-Душанбе, 2010; Ш. Раҳмонов.Таҳаввули воҳидҳо ва созмони жанрҳои лирикӣ дар назми форсу тоҷик.-Душанбе, 2010; Ш.З. Суфиев. Саки-наме в системе персидско-таджикской литературы XV1-XV11 веков. – Душанбе, 2011; Н. Зоҳидов. Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои Y111-IX (давраи арабизабон).-Душанбе: «Бухоро», 2014; Х. Шарифзода, М. Нарзиқул. Таърихи адабиёти тоҷик (аз аҳди қадим то оғози а. X111.-Душанбе: «ТоРус», 2017 ва дигарон.

<sup>2</sup>Hadi Hasan. *Mughal Poetry: Its Cultrual and Historical Value.*-Madras.-1951; H.I. Sadarangani. *Persian Poets of Sindh.*-Karachi.-1956; T.N. Devare. *A Short History of Persian Literture: at the Bahmani, the Adilshahi and Qutbshahi Courts.*-India Poona: S. Devare.-1961;

Hadi Hasan. *A Golden Treasury of Persian Poetry.*-Delhi.-1966; شعر فارسی در هند و پاکستان. -تخران. -1349؛

M. Lutfur Rahman. *Persian Literature in India during the Time of Jahangir and Shah Jahan.*-Baroda.-1970; تاریخ شعر و سخنوران فارسی در لاهور. -کراچی. -1971؛

تاریخ ادبیات مسلمانان پاکستان و هند. -در 5 جلد. -لاهور. -1971-1976 (به زبان اردو)؛ انعام‌الق کوثر. شعر فارسی در بلوچستان. -راویپندی. -1351؛ ظهیرالدین احمد. پاکستان میں فارسی ادب. -در 4 جلد. -1974-1985 (به زبان اردو)؛ سعید حسن ثبت رضوی. فارسی‌گویان پاکستان. -ج. 1. -راویپندی. -1354؛ غلام‌محمد لعلزاد. شعر معاصر دری در افغانستان. -دهلی. -1377؛ رضیه اکبر. نظم و نثر فارسی در زمان قطبشاهی. -حیدرآباد دکن. -1982؛ شعیب اعظمی. فارسی ادب به عهد سلاطین تغلق. -دهلی. -1985؛ ادیس احمد. سرهند میں فارسی ادب. -دهلی. -1988 (به زبان اردو)؛ محمد عبدالله. ادبیات فارسی در میان هندوان. ترجمه محمداسلم حانی. -تخران، 1371؛

Khalid Ahmad Nizami. *Persian Influence on the Development of Literature and Sifi Traditions in South Asia.*- Bethesda, 1992؛ کشمیر کی فارسی ادب کی تاریخ. -سرینگر

1993؛ اناماری شمیمیل. ادبیات اسلامی هند. -تخران. -1373؛ محمد زین اردو)؛ انیس ادب. مشاهیر شعرای اردو کی فارسی شاعری. -هند 1373؛ محمودہ ہاشمی. تحوّل نثر فارسی در شبه قاره. -، خانجی. شعراء، علما و امرای نامی بوسنی و هرزگوین. ترجمه علیدوانی. -تخران 1375 (به زبان اردو)؛ محمدکلام سہسرامی. خدمتگزاران فارسی در بنگلادیش. -1375؛ ظہیرالدین احمد. ایرانی ادب. -اسلام‌آباد، اسلام‌آباد 1999؛ شرافت عباس. بلوچستان میں فارسی شاعری کہ پچاس سال. -کوئٹہ 1999 (به زبان اردو)، داکا

Abid Hasan Faridi. *An Outline History of Persian Literature, AD 822-1926.*-Islamabad, 2002

2حسین جوگو. نگاہی کوتاه به ادبیات فارسی. -بوسنی و هرزگوین و

Abdulla Anwar Beg. *Introduction to Persian Literature.*- Atma Ram & Sons, 1942; R. Levy. *Persian Literature.*-London, New York, 1951; A.J. Arberry. *Classical Persian Literature.*-New York, 1958; E.Э. Бертельс. *История персидско-таджикской литературы.*-Москва.-1960; A. Pagliaro, A. Bausani. *Storia Della Letteratura Persiana.*-Milano, 1960; Литература Древнего Востока. -Москва, 1962; А.С. Герасимова, Г.Ф. Гирс. Литература Афганистана. -Москва, 1963; И. Брагинский, Д. Комиссаров. Персидская литература. - Москва, 1963; Ян Рипка и др. История персидской и таджикской литературы. -Москва. -1963, 1970; W. Ivanov. *Ismaili Literature.*-Tehran, 1963; Bozorg Alavi. *Geschichte und Entwicklung der modernen persischen Literatur.*-Berlin, 1964; E.Э. Бертельс. Суфизм и суфийская литература. -Москва. -1965; И. Брагинский. 12 миниатюр. -Москва, 1966; М. Занд. Шесть веков славы. -Москва, 1966; Г.Ю. Алиев. Персоязычная литература Индии. -Москва, 1968; تخران، ج. تاودیا. زبان و ادبیات پهلوی. -تخران، 1348/1969؛ Литература Востока в средние века. -В 2-х ч./Под ред. Н.И. Конрада, И.С. Брагинского, Л.Д. Позднейвой. -Москва, 1970; В.Б. Никитина. Литература Ирана// Литература Древнего Востока. -Москва, 1971. -С.87-141; G.L. Tikku. *Persian Poetry in Kashmir.*-Losageles, 1971; Краткая история литератур Ирана, Афганистана и Турции. -Ленинград, 1971; W. Anna Heinz. *Der indische Stil in der persischen Literatur.*-Wiesbaden, 1973; И.С. Брагинский. Из истории персидской и таджикской литератур. -Москва, 1974; Р.Г. Левковская. Литература Ирана// Литература Востока в новейшее время. -Москва. -1977. -С.133-178; Н.А. Дворянков. Литература Афганистана// Там же. -С.179-191; I.G. Morison, J. Baldick, Muhammad Riza Shafi'ei Kadkanai. *History of Persian Literature: From Beginning of the Islamic Period to the Present Day.*-E.J. Leiden: Brill-Koln, 1981; Y. Jaffery. *History of Persian Literature.* -Delhi.-1981; Д.С. Комиссаров. Пути развития новой и новейшей персидской



навишта шуданд. Манзур аз таърихгунаҳо китобҳои мебошанд, ки ба таърихи таҳаввул ва такомули навҳои чудагонаи адаби бахшида шудаанд.

### **Фаҳмиши «адабиёт» ва «таърихи адабиёт» ва даврандони он**

Баррасии таърих ва таърихгунаҳои бисёре, ки дар заминаи адабиёти форсии тоҷикӣ дар тӯли зиёда аз сад сол дар Шарқ ва Ғарб навишта шудаанд, гувоҳӣ аз он медиҳад, ки муаллифони онҳо на танҳо дар усул, равиш ва меъёрҳои арзёбии адабиёт ва тарзи нигоҳиш, балки дар фаҳмиши адабиёт ва таърихи он низ ба ҳам ихтилоф доранд. Зимнан, омӯзиши таърихи адабиётнигорӣ дар заминаи адабиёти форсии тоҷикӣ ва бурду боҳти он бахши нисбатан ҷавони адабиётшиносӣ мебошад.

Барои гурӯҳе аз онҳо (аз ҷумла Забехуллоҳи Сафо, Ҳерман Эте, Эдвард Браун, Ҷалолуддини Ҳумоӣ, Аҳмади Тафаззулӣ ва дигарон) ҳар чизе, ки дар қолаби назму наср офарида шудааст, гузашта аз ин ҳамаи навиштаҷот адабиёт буда, таърихи адабиёт аз маҷмӯи мучарради асарҳои манзуми мансур ва адибони чудагона иборат мебошад. Барои ҳамин ҳамаи он асарҳои манзум ва мансуре, ки ба ин ё он забон навишта шудаанд ва муаллифони онҳоро кӯшиш намудаанд, ки дар таърихҳои адабиётшон ҷой диҳанд.

Тоифаи дигар адабиётро сирф ба сифати ҳунари забонӣ ва суварӣ (формалистӣ) шинохтаанд. Назди онҳо асари бадеӣ беш аз як маҷмӯи лафзҳо, ибораҳо, ҷумлаҳо ва ҳилатҳои санҷида (санҷатҳои бадеӣ) ва ё сохтори худмӯхтор ва мухасир ба худ чизи дигаре нест. Ва аз ин рӯ ҳангоми нақд ва баррасии асарҳои адабиӣ низ ба вижагиҳои забонӣ ва сохтори он, яъне поэтикаи сохтори он, маҳдуд шудаанд. Бештарини онҳо аз пайравони мактаби шаклгароёни русӣ (формалистҳо), «нақди нав», сохторгароён (структуралистҳо) ва муқоисагароён (компаративистҳо) мебошанд. Ин муаллифон бар онанд, ки дар таърихҳои худ механизми офариниши асари бадеиро, яъне таърихи дарунии онро ошкор созанд.

Гурӯҳи сеюм бар он боваранд, ки адабиёт бозтоби айни ва ё шарҳи мутлақи таърихи иҷтимоӣ аст. Намояндагони ин гурӯҳ ба ҷойи «таърихи адабиёт» ба қор бурдани истилоҳи «таърихи адаби» - ро дӯст доранд, аз қабиле Э. Браун, Абдулҳусайни Зарринқуб ва

---

литературы.-Москва.-1982; Meisami Julie Scott . Medieval Persian Court Poetry.-Princeton.-1987; Е.Э. Бертельс. История литературы и культуры Ирана.-Москва, 1988; J.T.P. De Bruijn. Persian Sufi Poetry: an Introduction to the Mystical Use of Classical Persian Poems. - Routledge Curzon, 1997; History and Literature in Iran: Persian and Islamic studies in honor of Peter W. Avery/-London, 1998; روبين ليوى . - تهران تاريخ ادبيات فارسى. - تهران 1999/1378 Н.И. Пригарина. Индийский стиль и его место в персидской поэзии. - Москва.- 1999 ва дигарон.

дигарон. «Таърихҳои адабӣ», ба таъбири Маҳмуди Футӯҳӣ, «фарҳангномаҳои ҳастанд, ки асомии шоирон ва нависандагонро ба тартиби замони мураттаб кардаанд, на алифбой».<sup>12</sup>

Забеҳуллоҳи Сафо дар «Таърихи адабиёт дар Эрон», Зайнуллоҳидини Муътаман дар «Таҳаввули шеъри форсӣ», муаллифони «Таърихи адабиёти Афғонистон (барои сунуфи дувоздаҳи лисаҳо)», Муҳаммадҳайдари Жубал дар «Таърихи адабиёти Афғонистон» ва Муҳаммадусмони Сидқӣ дар «Сайри адаб дар Афғонистон» аз чунин фаҳмиш баҳра гирифтаанд.

Гурӯҳи чаҳорум таърихи адабиётро на танҳо аз маҷмӯи асарҳои манзуму мансур иборат медонанд, балки ба он «таърихҳои бо забони адабӣ-бадеӣ навишташуда, асарҳои шеършиносӣ, тазкираҳо» ва ғайраро низ марбут донистаанд.<sup>2</sup>

Ниҳоят, тоифаи панҷум бар он ақидаанд, ки адабиёт шакли вижаи шуури иҷтимоӣ буда, мувофиқи қонунмандии вижаи дарунии худ рушд мекунад ва дорои истиқлоли нисбӣ аст. Ва аз ин ҷиҳат аз шаклҳои дигари шуури иҷтимоӣ, аз ҷумла таърих, илм ва ғайра фарқ мекунад.

Ихтилофи усулӣ дар фаҳмиши адабиёт ва таърихи он ба аксари муаллифони китобҳои таърихи адабиёти форсии тоҷикӣ имкон намодааст, ки давраҳои асосии пайдоиш, таҳаввул ва тақомули он, таърихи дарунии онро аз Даврони бостон то имрӯз ба дурустӣ ва илмӣ мушаххас созанд. Бино бар ин, дар таълифоти худ аз даврабандии мухталиф истифода кардаанд,<sup>3</sup> чунончи:

1. Даврабандии адабиёт бар асоси хонадонҳои фармонраво;
2. Даврабандии адабиёт бар асоси сабақати замон;
3. Даврабандии адабиёт бар асоси навъҳо ё жанрҳо, сабақҳо ва мактабҳои адабӣ;
4. Даврабандии адабиёт бар асоси рӯйдодҳои таърихӣ, сиёсӣ ва иҷтимоӣ;
5. Даврабандии адабиёт бар асоси давраҳои оми таърихӣ.

Бояд гуфт, ки ҳеҷ яке аз ин панҷ даврабандӣ сарфи назар аз ҷанбаҳои мусбате, ки ҷанде аз онҳо доранд, барои таълифи илмӣ таърихи адабиёт, умуман, ва таърихи адабиёти форсии тоҷикӣ, хосатан, мувофиқ нестанд. Барои мисол, агар аз зиёдаравии шаклгароён ва сохтгароён ҷашм бипӯшем, метавонем иддао кунем, ки пайравони ин равиш тавонистаанд, ки ба паҳлӯҳои торики адабиёти

---

<sup>2</sup> Маҳмуди Футӯҳӣ. Асари зикршуда.-С.109-110.

<sup>2</sup> Х. Мирзозода. Таърихи адабиёти тоҷик (Аз давраи қадим то асри XIII). Китоби 1 (1).-Душанбе,1987.-С.4.

<sup>3</sup> Ниг.: А. Сатторзода. Даврабандии адабиёт аз нигоҳи равишшиносӣ// А. Сатторзода. Кӯҳна ва нав.-С. 168-174.

гузашта ва имрӯза дар бахши чанбаҳои суварӣ, яъне поэтикаи осори адабӣ равшанӣ биандозанд.

Таҷрибаи чандинсолаи донишмандон дар Шарку Фарб, мисли Ҳ. Эте дар «Таърихи адабиёти форсӣ» ва Маликушшуаро Баҳор дар «Сабкшиносӣ ё таърихи татаввури насри форсӣ» нишон додааст, ки ҳеҷ гуна навъ, шакл, сабк ва мактаби адабиёро наметавон суроғ кард, ки дар раванди пажӯҳиши он вижагиҳои раванди тақомул ва татаввури адабиётро дар давраҳои мухталиф ба тамоми бозтоб диҳад ва бо ҳамин васила як давраи адабиётро аз давраи дигари он ташхис бидиҳад.

Наксии қори ҷонибдорони равиши даврабандии адабиёт бар асоси руҳдодҳои таърихӣ, сиёсӣ ва иҷтимоӣ низ дар он аст, ки дар дидгоҳи тарафдорони ин тариқ адабиёт чизе нест, магар нусхабадале аз руҳдодҳои таърихӣ, сиёсӣ ва иҷтимоӣ. Ҳол он ки, дар воқеият, ҳунари адабиёт маҳз нусхабадалҳои руҳдодҳои таърихӣ, сиёсӣ ва иҷтимоӣ набуда, бозтоби ҳунарии ҳаёти иҷтимоии инсон ва табиат аст. Агарчи инкор наметавон кард, ки дар силсилаи руҳдодҳои таърихӣ, сиёсӣ ва иҷтимоӣ баъзан воқеаҳои муҳимме руҳ додааст, ки бар асари онҳо хати сайри адабиёт низ сифатан тағйир хӯрдааст.

Наксии умдаи методологии даврабандии адабиёт бар асоси даврабандиҳои оми таърихӣ иборат аз он аст, ки дар он талош мешавад, то даврабандии адабиётро бо даврабандии таърих ва равандҳои адабиёро бо равандҳои таърихӣ омезиш диҳанд. Пайравони ин равиш дар асл хостори даврабандии таърихи иҷтимоиянд, на даврабандии адабиёт. Онҳо аз адабиёт танҳо ба унвони гувоҳи ёриқунанда ва қувватдиҳандаи даврабандии таърих баҳра мегиранд. Ҳарчанд ки онҳо такрор ба такрор таъкид кардаанд, ки раванди тақомули адабиёти бадеиро бо раванди оми таърихӣ яке намепиндоранд, вале он гуна ки аз тарҳҳои даврабандии онон бармеояд, ба рушди дарунии адабиёт, яъне таҳаввули чанбаҳои ҳунарий, ба таври бояду шояд арҷ наниҳодаанд. Ва дар натиҷа натавонистаанд, ки таърихи адабиётро ба гунаи усулӣ ва илмӣ таълиф намоянд.

Аз ин рӯ, адабиётро бояд танҳо ва ҳатман ба сифати падидаи вижа ва ҳунарии мустақил шиноخت ва даврабандӣ кард, то имконоти мусоиде барои тамиз ва ташхиси илмӣ ва усулии давраҳои мухталифи адабиёт фароҳам ояд.

Аммо адабиётро чун падидаи вижа ва ҳунарии мустақил баррасӣ ва даврабандӣ кардан ба он маънӣ нест, ки аз равишҳои дигари баррасӣ ва даврабандӣ набояд истифода намуд ва ё сарфи назар кард. Мо бар ин боварем, ки аз онҳо, бахусус, аз равиши даврабандӣ бар асоси навъ, сабк ва мактабҳои умдаи адабӣ, ҳамчунон бар асоси руҳдодҳои таърихӣ, сиёсӣ ва иҷтимоӣ ва бар асоси давраҳои оми таърих, метавон ба унвони равишҳои ёридиҳанда ба қадри зарурат истифода бурд, хосса дар фаслбандиҳое, ки даруни давраҳои ом қарор доранд.

Боист давраҳои адаби аз якдигар аз нигоҳи муҳтавои ғоявӣ ва шакли бозтоби ҳунарии он, чун мавзӯ, мазмун, дарунмоя, василаҳои тасвир, абзори баён, наҳваи офариниши тасвирҳо ва симои одамҳо, сабк ва равиши офариниш аз ҳам фарқи сифатие дошта бошад, вагарна, наметавон ба вучуди давраҳои гуногун яқин ҳосил кард. Маншаи ҳамаи дигаргуниҳо дар муҳтавои ғоявӣ ва шакли бозтоби ҳунари дар адабиёт, вучуди таҳаввул ва татаввур дар диди эстетикӣ (биниши ҳунарии) офаришгарони давраи мушаххас, яъне таҳаввул ва татаввур дар тарз ва тариқи дарки бадеии инсон, ҷомеа ва табиат ва, ба як сухан, воқеиятҳои айнӣ ва зехнӣ мебошад. Аз ин рӯ, тағйирот дар биниши зебоишинохтӣ сабабгори тағйирот ва дигарсозӣ дар марҳалаҳои гуногуни адабиёт аст.

Бо таассуф бояд ёдовар шуд, ки тамоми ҳарфҳои, ки то имрӯз дар заминаи адабиёти форсии тоҷикӣ ва фаъолияти офариниши адибони форсигӯю форсизабон аз ҷониби донишмандон ироа шудааст, ғолибан тааллуқ ба муҳтавои осор ва афкори назарияти гӯяндагонӣ он дорад, на ба тарзи сухани эшон, ба сабк ва шеваи баёни хос ва ба ҳунари офаринандагӣшон. Ба ин маънӣ, ки муҳаққиқони адабиёти форсии тоҷикӣ то ҳанӯз бештар ба муҳтавои навиштаҳои адибони форсигӯӣ ва форсизабон мароқ зоҳир намудаанд ва ҳама бидуни истисно солиёни дароз кӯшиш кардаанд, ки ба саволи ин ё он шоир ё нависанда «чӣ мегӯяд» ҷавоб гуфта бошанд, аз қабилӣ «Фирдавсӣ чӣ мегӯяд», «Носири Хусрав чӣ мегӯяд», «Низомӣ чӣ мегӯяд», «Ҳофиз чӣ мегӯяд», «Мавлавӣ чӣ мегӯяд» ва ғайра. Аммо аз хусуси он ки ин шоирон ва ин нависандагонӣ номӣ «чӣ тавр сухан мегӯянд», яъне ба чӣ тарзу тариқ ва ба кадом шева, ки он осорашонро мондагор ва нотакрор намудааст, тақрибан сухане нарондаанд. Агар сухане ҳам дар тадқиқоти эшон рафта, он ҳам, мутаассифона, ҷузъӣ ва зимнӣ буда, ба моҳияти мавзӯ равшани намеандозад. Бар асари маҳз аз чунин равиш дар таҳқиқ ва таълиф қор гирифтани донишмандон ва муаллифони таърихҳои адабиёт то ҳанӯз наметавонем ба таври мушаххас ва усулӣ ва илмӣ шеърӣ шоиреро аз шоири дигаре ва асари нависандаеро аз нависандаи дигаре тамиз бидиҳем. Масалан, Рӯдакиро аз Қатрони Табрэзӣ, Фирдавсро аз Асадии Тӯсӣ, Низомиро аз Амир Хусрав, Саъдиро дар шеър аз Сайфи Фарғонӣ ва дар наср аз Абдуррахмони Ҷомӣ, Ҳофизро аз Ҳочу ва ғ. ва ҳ.к. Барои ҳамин ҳам маъмулан дар чунин мавридҳо бо зикри чанд мушаххасоти зоҳирӣ ва ҷузъӣ иктифо мекунем ва гумон ҳам мекунем, ки осори адибон ва худӣ ононро ба дурустию ростӣ шинохтаем.

Сарфиназарқарданҳо аз баррасии ҷанбаи ҳунарии адабиёти форсии тоҷикӣ дар тӯли солиёни дароз ба он натиҷа овардааст, ки тадқиқоти адабиётшиносии мо ба таҳқиқоти таърихшиносӣ, осори фалсафӣ, ҷомеашиносӣ ва ғайра табдил ёфта, китобҳои, ба истилоҳ, таърихи адабиёти мо ба таърихҳои кишварамон, фалсафаи он, дину мазаҳаби он, фарҳанги он ва ғайра шабоҳат пайдо намудаанд. Ин ҳама

моро имрӯз водор месозад, ки аз ин ба баъд адабиётро ба сифати адабиёт, яъне ҳамчун яке аз шоҳаҳои мустақили ҳунарҳои зебо, ки ҷавҳари онро тасвир ва тасвиргарӣ, суварӣ ҳаёл, маъниву мазмунҳои шоирона, каломи мухайял ташкил медиҳад, баррасӣ намоем. Зеро дар адабиёти асил ғайр аз ин унсурҳо чизи дигари муҳимтаре нест. Фақат ва фақат дар ҳамон сурат мо метавонем арзиши воқеии ҳар як шеърӯ дoston ё қасидаву маснавӣ, китобҳои мансурро, фаъолияти офаринишии шоиреро, дostonсароеро ё қасидасарою маснавигӯеро, носиреро ва нуфузи афқору осори онро дар раванди тақомули адабиёти форсии тоҷикӣ таъйин намоем. Вагарна баъд аз ин ҳам пеши мо каломи сараву носара, нағзу бад, матбуъу номатбуъ, шеърӯ шиор, тақлиду ибтикор яксон хоҳад монд.

Ҳамин тавр, таърихи адабиёт дар асл таърихи тақомули раванди адабиёти асил ва умдаи он, таърихи тақомули диди эстетикӣ он халқ, яъне ҷаҳонбинию ҷаҳонфаҳмӣ ва маҳорати нигорандагӣ он мебошад.

Аз ин рӯ, ҳангоми таълиф бояд, пеш аз ҳама, ба намунаҳои адабии асил ва фаъолияти адибони ҳунарманд ва навоар тақя намуд ва аз баррасии асарҳои тақрорӣ тақлидӣ ва фаъолияти офаринишии адибоне, ки ба андӯхтаҳои адабӣ ҳунарии пешинӣ чизи тозае зам накардаанд, бояд худдорӣ кард. Аммо ҳамзамон фаромӯш набояд кард, ки раванди тақомули адабиёт хеле фарохтар ва доманадортар аз намунаҳои асил ва фаъолияти офаринишии адибони ҳунарманд, ба истилоҳи дигар, “нуҳбагарӣ” мебошад. Мутаассифона, аксарияти таърихҳои мавҷудаи адабиёти форсии тоҷикӣ ин чизро ба эътибор нагирифтаанд.

### **Зарурати назари нав ба таърихи адабиёт**

Дарки зарурати ба таври усулӣ ва илмӣ, бо биниши нав, назари нав таълиф намудани таърихи адабиёти форсии тоҷикӣ ва таълими он дар доираҳои илмӣ ва донишгоҳии Тоҷикистон дар нимаи аввали солҳои 80-уми садаи ХХ оғоз гардида,<sup>1</sup> дар даврони Бозсозӣ ва Ошкорбаёнӣ ошкортар ва умумитар шуд.<sup>2</sup> Маҳз дар ҳамин солҳо кафедраи адабиёти

<sup>1</sup> И.С. Брагинский, М. Шукуров. Пешгуфтор// Таърихи адабиёти советии тоҷик. Инкишофи жанрҳо, ҷ.1.-Душанбе, 1984.-С.5-10; Нақди адабӣ: имрӯз ва фардо (мусоҳибаи А. Сатторзода бо М. Шакурӣ) (1984)//Кӯҳна ва нав.-С.195-206 ва ғ.

<sup>2</sup> М. Шакурӣ. Вазифаҳои танқиди адабӣ// Рӯзн. «Адабиёт ва санъат»,1986,13 феврал; Ҳам ӯ: Адабиёт ва фалсафаи ҳастӣ // Маҷ. «Садои Шарқ»,1986, №3; Ҳам ӯ: Барои танқиди асил// Маҷ. «Садои Шарқ»,1987, №10; Ҳам ӯ: Литературная критика. Проблемы жанра и проблемы жизни // Маҷ. «Дружба народов»,1987, №3; А. Сатторзода. Вазъи кунунии адабшиносӣ дар Афғонистон ва дурнамои рушди он (1987)// А. Сатторзода. Кӯҳна ва нав.-С.183-194; М. Шакурӣ. Истиклоли фикр ва концепсия даркор аст // Маҷ. «Садои Шарқ», 1988, №2; А. Сатторзода. Кӯҳна ва нав (нуктае чанд дар усули таълифи китоби адабиёт) (1988) // А. Сатторзода. Кӯҳна ва нав.-С.216-221; Асолати нақди адабӣ (мусоҳибаи Носир Салим бо Абдунаби Сатторзода) (1989)// А.Сатторзода. Асари мазкур.-С. 206-215; Х. Асоев. Таҷдиди

классикии Донишгоҳи давлатии (ҳоло миллии) Тоҷикистон тарҳи китоби дарсии «Таърихи адабиёти форсии тоҷикӣ (аз давраи Атиқа то ибтидои садаи XX)» - ро дар 2 ҷилд ва 3 китоб ба вучуд овард ва Институти забон ва адабиёти ба номи Рӯдакии Академияи илмҳо таълиф ва нашри силсилаи очеркҳо оид ба адабиёти форсу тоҷикро дар 12 ҷилд ва аввалин таърихи муфассали адабиёти советии тоҷикро бо усули нав – аз рӯи инкишофи жанрҳо идома дод. Зимнан, он вақт таълифи «Таърихи адабиёти тоҷик аз Замонҳои қадим то айёми мо» низ дар 10 ҷилд ба нақша гирифта шуда буд.

Аммо ҷанги таҳмили шаҳрвандӣ дар Тоҷикистон дар солҳои 90 имкон надод, ки на танҳо ин тарҳҳо амалӣ гарданд, балки таълиф ва нашри ҷилдҳои охири «Таърихи адабиёти советии тоҷик» низ боздошта шуд.

Бо дарёфти сулҳ ва мухайё гардидани фазои муносиби илмӣ дар адабиётшиносӣ ва нақди адабии тоҷик масъалаи зарурати сифатан нав кардани назар ба адабиёти гузашта ва имрӯзаи форсии тоҷикӣ, аз ҷумла зарурати таълифи таърихи он аз нав ба миён омад.<sup>1</sup>

Устодони адабиёти Донишгоҳи давлатии Хучанд ба номи академик Бобочон Ғафуров дар ҳайати докторторони илмҳои филологӣ раиси вақти ин Донишгоҳ Н. Салимов, шодравон А. Насриддинов, М. Хочаева ва Н. Зоҳидов соли 2008 тарҳи китоби дарсӣ барои факултаи филологияи тоҷики мактабҳои олиро зерини «Таърихи адабиёти форсу тоҷик аз Даврони қадим то рӯзгори мо»-ро дар 4 ҷилд ва 7 китоб тартиб доданд. Мутаассифона, ин тарҳ ҳам бо марғи нобахангоми профессор Абдуманнон Насриддинов ва

---

назар мебояд// Маҷ. «Садои Шарқ»,1989, №6; Бозсозӣ ва таърихи адабиёти тоҷик// Маҷ. «Садои Шарқ»,1989, №1; Бозсозӣ ва танқиди адабӣ// Рӯзн. «Адабиёт ва санъат»,1990, 26 апрел; М. Шақури Бухорӣ. Аз пайи дарёфти фаҳмиши нав// Маҷ. «Садои Шарқ»,1990, №7; Р. Мусулмонӣ. Меъёри баҳо// Рӯзн. «Адабиёт ва санъат»,1990,15 март; Х. Шарифов. Марзи адабиёт// Маҷ. «Садои Шарқ», 1990, №5; Ҷам ӯ: Аз нав омӯхтан зарур...Танқид дар шароити Бозсозӣ// Рӯзн. «Адабиёт ва санъат», 1991, 21 март; Р. Мусулмонӣ. Марҳилаҳои адабиёти навин// Рӯзн. «Адабиёт ва санъат», 1991,1 август ва ғ.

<sup>1</sup>Маъруфи Рачабӣ. Муқаддима// Маъруфи Рачабӣ. Таърихи танқид ва адабиётшиносӣ.-Душанбе, 1997.- С. 3-9; С. Табаров. Таърихи адабиёти асри бистумро бояд ба вучуд овард// Маҷ. «Садои Шарқ», 2001, №7; Н. Салимов. Осори М. Турсунзода ва масъалаи таҷдиди назар ба адабиёти шӯравии тоҷик// Маҷ. мақ. «Шоирӣ ватан».-Хучанд, 2001; А. Сайфуллоев. Баъзе муаммоҳои таърихи адабиёти муосир// Фурӯғи маънавият.-Хучанд, 2003; М. Шақури. Маъруф Рачабӣ ва китоби ӯ дар бораи Сотим Улуғзода// Маъруф Рачабӣ. Сотим Улуғзода абармарди набард ва андеша.-Душанбе, 2004; Ю. Акбарзода. Таҳқиқи шеър аз дидгоҳи нав.-Душанбе, 2004; А. Сатторзода. Кӯҳна ва нав; А. Набиев. Муқаддима//А. Набиев. Нарзуллои Бектош ва илму адаби тоҷик.-Душанбе, 2004.-С.3-17; М. Мирзоюнус, С. Аъзамзод. Назари тозаӣ пажӯҳишгар ва муаммои арзишдовари адабӣ (рочеш ба концепсияи нави адабиётшиносӣ// Маҷ. мақ.-Душанбе, 2007.- С.83-96; С. Аъзамзод. Адабиётшиносӣ тоҷик ва ҷустуҷӯҳои илмӣ Лутфулло Бузургзода.- Хучанд, 2009 ; Ш. Солехов. Муқаддима//Ш. Солехов. Роман дар адабиёти тоҷикии қарни XX.- Душанбе, 2011.-С.4-14 ва ғ.

ба кори дигар гузаштани профессорон Носирҷон Салимов ва Низомиддин Зоҳидов то ҳол амалӣ нашудааст.

Бо дарки зарурати фавқулодаи навиштани таърихи мукаммали илмӣ ва усулии адабиёти форсии тоҷикӣ аз Даврони бостон то замони Истиқлоли давлатӣ Сардори Давлат ва Ҳукумати Ҷумҳурии Тоҷикистон Эмомалӣ Раҳмон дар суҳанронӣ ба муносибати рӯзи забони давлатӣ 5 октябри соли 2010 ба Вазорати маориф ва Академияи илмҳои ҚТ супориш дод, ки «китоби таърихи адабиёти тоҷик таҳия ва нашр карда шавад». Ҳоло ходимони Институти забон ва адабиёти ба номи Абӯабдуллоҳи Рӯдакӣ бо ҷалби донишмандон ва устодони донишгоҳу донишкадаҳои ҷумҳурӣ ва хориҷӣ бо таҳия ва таълифи «Таърихи адабиёти форсии тоҷикӣ (аз Давраи бостон то ибтидои асри XX)» дар 6 ҷилд машғул мебошанд.

Таълифи таърихи илмӣ ва усулии адабиёти форсии тоҷикӣ заминаи муътамаде барои барномаҳои таълимӣ, китобҳои дарсӣ ва баёзҳои кироати мактабу мадраса ва донишкадаву донишгоҳҳо хоҳад шуд.

Зимнан, зарурати бознависи чунин таърихи адабиёти форсии тоҷикиро дар кишварҳои дигари форсизабон низ дарк намудаанд<sup>1</sup>.

Яке аз иштироккунандагони Конференсияи илмию эҷодии “Таърихи адабиёти шӯравӣ: назари нав” дар Институти адабиёти ҷаҳонии ба номи А.М.Горкий М.Мушинский баъзе аз усули таърихадабиётнигории навро чунин баршумурдааст: “Таҳлилгарӣ, таърихмандии пайгириона, модерниситезӣ, муносибати эҳтиёткорона ба санадҳо, адами ҳамагуна пешфарзӣ, ғаразгарой, дарки амиқи ходисаҳои иҷтимоию сиёсӣ ва ба вижа падидаҳои адабӣ дар ҳамбастагиашон, дарки худвижагии адабиёт ҳамчун шакли бозтоби тасвиргароёнаи воқеъият, дақиқӣ, қазовати мунсифонаи асарҳои ҷудогона, фаъолияти офариниши адибон ва равияҳои комили адабӣ, кӯшиши кашфи амиқи қонунмандии рушди адабиёт... бояд асоси модели нави “Таърихҳо...” бошанд”.<sup>2</sup>

### **Истиқлоли адабӣ ё худ ваҳдати адабиёти форсии тоҷикӣ**

Азбаски таълифи таърихи илмӣ ва усулии адабиёти форсии тоҷикӣ аз Даврони бостон то замони мо ҳамчунин бастагӣ ба ҷавоб ба саволи истиқлоли адабӣ ё худ ваҳдати адабиёти форсии тоҷикӣ дар Эрон, Афғонистон, Тоҷикистон ва қаламрави забони форсӣ дорад, лозим медонем, ки дар заминаи низ равшанӣ андозем.

Пажӯҳишгарони адабиёти форсии тоҷикӣ дар садаҳои ХУ1-ХУ111 беш аз пеш сари як нукта таъкид намудаанд, ки гӯиё адабиёти як замон ягонаи форсии тоҷикӣ дар ин давра ба чанд шоҳаи мустақил

<sup>1</sup> Ниг.: Маҳмуди Фугӯҳӣ. Асари зикршуда.- С. 265-267.

<sup>2</sup> История советской литературы: новый взгляд // По материалам Всесоюзной научно-творческой конференции, 11-12 мая 1989г. Часть 1. – Москва: «Наука»,1990.-С. 157.

ва ба андозаи қобили мулоҳиза аз ҳам чудо бахш мешавад, аз ҷумла ба адабиёти форсии тоҷикӣ дар Мовароуннаҳру Хуросон, адабиёти форсӣ дар Эрон ва адабиёти форсизабони ҳиндӣ дар Ҳиндустон.<sup>1</sup>

Далели асосии онҳо ин аст, ки бар асари марзбандиҳои сиёсӣ, ки дар қаламрави як замон ягонаи адаби форсӣ ба вучуд омад, яъне қисмат шудани хоки Мовароуннаҳру Хуросон дар байни шайбониён, сафавиён, темуриёни Ҳинд ва баъдтар дурониҳо адабиёти форсии тоҷикӣ дар қаламрави ин давлатҳо худвижагиҳо касб кард. Онҳо ин худвижагиҳоро дар муҳтаво, забон ва тарзи баёни адибон дар ин кишварҳо ба мушоҳида гирифтаанд ва ба ҳулосае омадаанд, ки гуё бо мурури замон муштаракот ба андозаи қобили мулоҳиза коҳиш ёфта, робитаҳои адабӣ тадричан дар байни доираҳои адабии ин кишварҳо қатъ гардидаанд.

Аз истиқлоли мутлақи адабиёти як замон ягонаи форсии тоҷикӣ дар асрҳои ХУI ва ХУII сухан ба миён овардан дар ҳолате дуруст хоҳад буд, ки ҳайати тасвирҳо ва усули тасвиргарӣ, забон ва воситаҳои баён дар адабиёти ба истилоҳ тоҷикӣ дар Мовароуннаҳр, адабиёти форсӣ дар Эрон, адабиёти дарӣ дар Хурсони Афғонистон ва адабиёти форсизабони ҳиндӣ дар Ҳиндустон дигар бошад. Фарқе, ки дар муҳтавои осори адабии ин кишварҳо дар асрҳои ХУI ва ХУII зуҳур намудааст, як чизи муқаррарӣ, табиӣ ва қонунӣ буда, ба ҳеч ваҷҳ далели истиқлоли мутлақи ин адабиёт намебошад. Барои он ки фарққое, ки пажӯҳишгарон дар муҳтаво ва забону баёни осори адибони ин кишварҳо ба мушоҳида гирифтаанд, дар давраҳои пешинаи адабиёти форсии тоҷикӣ низ ҷой дошт. Агар Қатрони Табрзӣ дар дарки шеърӣ шоирони Мовароуннаҳру Хуросон мушките дошт ва рӯйи ниёз ба Носири Хусрави Қубодиёнӣ оварда буд, ҳаргиз маънои онро надошт, ки адабиёти ҳавзаҳои Самарқанду Бухоро ё Ғазнини Табрз ё Дехлӣ ҳар як ба сари худ мустақил буданд ва яқе моли адабиёти форсӣ, дигаре дарӣ, сеюмӣ тоҷикӣ ва чаҳорумӣ моли адабиёти ҳиндӣ мебошанд.

Ташхиси тамоюлҳои асосии адабиёт ба забони форсии тоҷикӣ дар ин кишварҳо дар садаҳои ХУI ва ХУII бармало месозад, ки он дар моҳият ягона боқӣ мондааст. Инро метавон дар асоси тадқиқоти ахир дар нисбати адабиёти форсии тоҷикии асри ХУIII низ гуфт. Зухури вижагии маҳаллии мовароуннаҳрӣ ё хуросонӣ, ё ҳиндӣ ва

---

<sup>1</sup> И.С. Брагинский, Д. Комиссаров. Персидская литература.-Москва, 1963.-С. 58-59; Ян Рипка. История персидской и таджикской литературы.-Москва,1970.-С. 276; Краткая история литератур Ирана, Афганистана и Турции.-Ленинград, 1971.-С. 48;И.С. Брагинский, Д.С. Комиссаров. Общая литературная традиция и разные пути развития (Об особенностях формирования современных персидской и таджикской литератур)//Литература стран Зарубежного Востока и советская литература.-Москва,1977.-С.142; Р. Ҳодизода, У. Каримов, С. Саъдиев. Адабиёти тоҷик (асрҳои ХУI-ХУII ва ибтидои асри XX).-Душанбе,1988.-С.3.



гайра дар адабиёти ин даврҳо ба ҳеч вачҳ далел бар истиклоли адабиёти он маҳалҳо нест.

Осору афкори Бадриддини Ҳилолии Астарободӣ, Зайниддини Восифӣ, Абдуррахмони Мушфиқии Бухороӣ, Мирзо Бедили Дехлавӣ, Соиби Табрэзӣ, Шавкати Бухороӣ, Фони Кашмирӣ, Чунайдуллоҳи Ҳозиқи Хиротӣ, Нозими Ҳиротӣ, Калими Кошонӣ, Толиби Омӯлӣ, Урфии Шерозӣ, Носиралии Сирхиндӣ, Қосими Нишопурӣ, Малехои Самарқандӣ, Мулҳами Бухороӣ, Саййидои Насафӣ, Мирзо Содиқи Муншӣ, Мирзо Асадуллоҳи Ғолиб, Мулҳами Бухороӣ, Қоонии Шерозӣ ва дигарон моли як адабиёт аст, на моли се ё чаҳор адабиёти мустақил. Ҳамаи онҳо “аз як дарёи маънавӣ об хӯрда, дар пиромуни як анъанаи фарҳангӣ эҷод карда, ба як забони муштарак сухани дурфишон ангехтаанд”.<sup>1</sup> Инро, хушбахтона, соҳибони тазкираҳои, ки дар заминаи адабиёти ин қарнҳо таълиф гардидаанд, дуруст дарк намудаанд. Ҳеч яке аз онҳо адабиёти форсии тоҷикии ягонро ба шоҳаҳо бахш накардаанд, аз ҷумла соҳибони «Тазкираи Насрободӣ», «Миръоту-л-хаёл», «Музакиру-л-асҳоб» ва гайра. Барои мисол, Малехо дар тазкирааш ба «мувофиқати машраби» шоирони Мовароуннаҳр бо шоирони Эрон дар шеърӯ адаб таъкид намудааст, на аз муҳолифат. Аз 165 шоире, ки дар қисми асосии тазкираи ӯ зикр гардидааст, 56 нафарро шоирони Эрон (аз Исфохон 17 нафар, аз Кошон -14, аз Сабзвор – 5, аз Нишопур – 3, аз Қум – 2, аз Гелон – 2) ташкил медиҳанд. Донишманди нуктасанҷи тоҷик Садрӣ Саъдиев дуруст ба мушоҳида гирифтааст, ки «Малехо шоирони Эронро на танҳо аз рӯи иродаву хоҳиши шахсии худ, балки ба ҳукми умумияти таърихии адабиётҳои тоҷик ва форс ба тазкирааш дохил кардааст».<sup>2</sup> Гузашта аз ин, бино бар шаҳодати Ҳоҷа Ҳасани Нисорӣ дар «Музакиру-л-асҳоб», Мутрибӣ дар «Тазкирату-ш-шуаро» ва Зайниддин Восифӣ дар «Бадоеъу-л-вақоъ», беш аз 500 нафар адиби Хуросон ба Мовароуннаҳр ва аз Мовароуннаҳру Хуросон ба Ҳинд, Ироқи Аҷам ва Туркия ҳиҷрат намудаанд ва бо ҳамин восита робитаҳои адабии мустақимро дар байни доираҳои адабии адабиёти форсии тоҷикӣ барқарор нигоҳ доштаанд. Бино бар шаҳодати Эраҷи Афшор, нуфуз ва шухрати Шавкати Бухороӣ дар Эрон ба дараҷае будааст, ки «зоҳиран метавон гуфт, ҷунг ва сафинае нест, ки аз қарни XI (ХУ11- А.С.) ба баъд навишта шуда бошад ва шеър аз ин шоири хушсухан дар онҳо наёмада бошад».<sup>3</sup> Ба ҳамин андоза Соиби Табрэзӣ дар адабиёти ҳавзаи Мовароуннаҳр таъсир доштааст. Ба мушоҳидаи устод Садриддини Айний, «Сайидои Бухороии Насафӣ қариб 25 ғоизӣ

<sup>1</sup> Акбар Турсунов. Эҳёи Аҷам. Рӯзи таърихӣ публисисти. -Душанбе, 1984.-С.11.

<sup>2</sup> С. Саъдиев. Адабиёти тоҷик дар асри ХУ11.-Душанбе, 1985.-С.87.

<sup>3</sup> ایرج افشار. رگه‌های پیوند همیشگی در «مذاکرالاصحاب» و «تذکره نصرآبادی» // مجله «آینده»، 1992/1371، ش.7، صص.313-312.

шеърҳои Соибӣ Табрзии Исфохониро мухаммас кардааст».<sup>1</sup> Саййидои Насафӣ комилан ҳақ дошт бигӯяд, ки:

*Ба мулки Исфохону Ҳинд мехонанд ашъорам,  
Зи Туркистонаму ҳаргиз надорам эътибор ин ҷо.*

Аз ваҳдати адабиёти форсии тоҷикӣ дар садаҳои ХУІ, ХУІІ ва ХУІІІ он чиз ҳам шаҳодат медиҳад, ки бисёре аз ҳодиса ва падидаҳои адабӣ миёни онҳо муштарак мебошад, аз қабилӣ идомаи адабиёти дарборӣ, нуфузи бештар пайдо намудани адабиёти доираҳои шахрию хунармандӣ, ривочи адабиёти мазҳабӣ ва тасаввуфӣ, ташаккули сабки ҳиндӣ ё сабки исфохонӣ ва ғайра. Зухури ин ҳодиса ва падидаҳои адабӣ дар ин кишварҳо ба ҳеч ваҷҳ тасодуфӣ набуда, аз ваҳдати адабӣ (на аз истиқлоли адабӣ) гувоҳӣ медиҳад. Садрӣ Саъдиев дар китоби арзишманди худ “Адабиёти тоҷик дар асри ХУІІ” (1985) иқро кардааст, ки суҳансароёни устод ва навардози садаҳои ХУІ ва ХУІІ дар Эрон ва Ҳиндустон, мисли Хоҷа Осафӣ, Нозими Ҳиротӣ, Урфии Шерозӣ, Соибӣ Табрзӣ, Шавкати Бухорӣ, Абутолиби Калим, Мирзоҷалоли Асир, Низомӣ Астарободӣ, Носиралӣ Сирҳиндӣ ва Масъуди Исфохонӣ “дар доираҳои адабии Мовароуннаҳри асри ХУІІ хеле шуҳрат дошта, осорашон пайваста мавриди гуфтугӯву муҳокима ва татаббуъу тақлид қарор гирифта буданд”.<sup>2</sup> Ворид гардидани шеърҳои Нозим, Қассоб ва Қоонӣ ба «Шашмақом» низ қазияи болоро тасдиқ менамояд.<sup>3</sup>

Сустии қазияи истиқлоли адабӣ ёфтани адабиёти форсии тоҷикӣ дар Хуросону Мовароуннаҳр, адабиёти форсӣ дар Эрон ва адабиёти форсизабон дар Ҳиндустонро аз миёни пажӯҳишгарони адабиёти ин давр донишманди соҳибзавқ ва соҳибандешаи тоҷик Субҳон Амиркулов дарк намудааст ва дар заминаи дуруст навиштааст, ки: “Вале бо вучуди ин, масъалаи мустақилияти ин адабиётҳо, махсусан дар тӯли қарнҳои ХУІ-ХУІІ ба ҳадди ифрот таъкиду таъйид намуда, ҳамчун қазияи илмӣ ба риштаи муҳокима кашидан усулан чандон саҳеҳ ва самарабахш нахоҳад буд. Зеро дар давраи мазкур байни адабиёти ҳавзаҳои зикршуда ва намояндагони онҳо иртиботи ирсӣ ва равобити бевосита қавие вучуд дошт, ки ҳамаи онҳо ба як маҷрои умумии адабӣ ворид мешаванд. Аз ҷумла, интишори сабки ҳиндӣ барои ҳамаи адабиёти форсизабони асрҳои ХУІ-ХУІІ-и Эрону Ҳиндустон ва Хуросону Мовароуннаҳр муштарак ва умумӣ мебошад”.<sup>4</sup>

---

<sup>1</sup> Муҳаммадҷони Шақурии Бухорӣ. Се шоҳаи як дарахти баруманд//Муҳаммадҷони Шақурии Бухорӣ. Нигоҳе ба адабиёти тоҷикии садаи бист. – Душанбе, 2006.-С.39.

<sup>2</sup>С. Саъдиев. Асари мазкур.-С.64.

<sup>3</sup> Муҳаммадҷони Шақурии Бухорӣ. Асари мазкур.-С.42.

<sup>4</sup> С. Амиркулов. Таҳаввули адабиёти тоҷик дар нимаи якуми асри ХІХ.- Душанбе, 1997.-С.12.

Бо назардошти он чи гуфта шуд, адабиёти форсии тоҷикии садаҳои ХУI ва ХУIИI-ро ба ҳайси як адабиёти ягона (на се ё чаҳор адабиёти мустақил) омӯхтан ба мақсад мувофиқ мебошад.

Зухури истиқлоли адабии нисбӣ миёни адабиёти якзамон ягонаи Эрон, Афғонистон, Тоҷикистон ва форсизабони Ҳинду Покистон танҳо дар даврони, ба истилоҳ, адабиёти муосир ва ё, ба истилоҳ, адабиёти миллии ин кишварҳо ба назар мерасад, ки ташаккули он мутаносибан ба чоряки аввали нимаи дувум ва охири қарни ХIХ ва ибтидои садаи ХХ рост омада, дар шароити гуногуни иҷтимоӣ чараён дошт. Дар ин марҳала дар ин кишварҳо тадриҷан адабиётҳои танқидие ташаккул меёбанд, ки ҳам аз лиҳози мавзӯ, муҳтаво ва ҳам аз лиҳози воситаҳои тасвир ва ҳам паёму андешаҳои, ки дар худ доштанд, сифатан фарқ мекарданд ва тамоюли маърифатпарварӣ ё равшангарӣ ва маорифпарварӣ доштанд. Ба он ҷудоии сиёсӣ ва иҷтимоии ин кишварҳо дар тӯли зиёда аз сесад соли охир замина гардида буд.

Доктор Маҳмуди Футӯҳӣ дуруст шаҳодат додааст, ки “дар қарни охир дар миёни эронӣ ва арабзабонон, садаи охир, ба унвони “муосир” ё даврони ҷадид (алҳадис) шинохта мешавад. Бинобар зехнияти мутадовил дар ин ҷавомеъ, “муосир” ба давроне итлоқ мешавад, ки дар он андешаи таҷаддудталабӣ дар баробари суннатҳои куҳан падидор шудааст. Мушаххасаи аслии ин даврон, таҷаддуд ва мудернизм ва рӯйгардонӣ аз сохторҳои иҷтимоии суннатӣ ва нигариши қудамонӣ”.<sup>1</sup> Аммо оғози адабиёти муосирро дар Эрон “дар адабиёти асри машрута”<sup>2</sup> дидааст, ки ба назари мо дуруст нест. Зеро “рӯёриии наву куҳна ва андешаи таҷаддудхоҳие”<sup>3</sup>, ки ӯ мегӯяд, дар ин кишвар андаке пештар дар замони адабиёти равшангарӣ низ зухур дошт.

Доктори илмҳои филологӣ Субҳон Амиркулов, ки солиёни дароз бо таҳқиқи адабиёти асри ХIХ машғул мебошад, адабиёти нимаи аввали асри ХIХ-ро «ҳамчун як марҳилаи таркибии нимаи дувуми асри ХIХ» дониста, онро «адабиёти давраи гузариш ба аҳди Ҷадид» номидааст ва таъкид кардааст, ки онро “на чун ҷузъи таркибии адабиёти асрҳои ХУIИ-ХУIИИ, чуноне ки адабиётшиносони замони шӯравӣ муқаррар кардаанд”, таҳқиқ намуд.<sup>4</sup>

Аммо сарфи назар аз истиқлоли адабии нисбӣ касб кардани адабиёти форсии тоҷикӣ дар даврони ба истилоҳ Нав ва Навтарин лозим ба таъкид аст, ки робитаҳои адабӣ ва фарҳангӣ дар қаламрави забон ва адаби форсӣ дар ин марҳалаҳо, ҳатто дар замони Шӯравӣ алорағми сиёсати «садди оҳанин»-и он низ, агарчи гоҳ хафиф ва гоҳе заиф шуда, вале ҳаргиз қатъ нагардида буданд. Барои мисол, осор ва

---

<sup>1</sup> Асари зикршуда, с.169-170.

<sup>2</sup> Асари зикршуда, с. 170.

<sup>3</sup> Ҳамон асар, ҳамон саҳифа.

<sup>4</sup> С. Амиркулов. Нигоҳе ба инкишофи таърихии адабиёти тоҷик дар Мовароуннаҳр (қарни ХIХ).-Душанбе, 2010.-С.5.

афкори Зайнулобидини Мароғай ва хосса китоби ӯ «Саёҳатномаи Иброҳимбек ё балои таассуби ӯ», драма ва номаҳои номии Мизо Малқумхон, ки дар сарзамини Эрон мезистанд, барои аҳли Бухоро, Ҳирот ва Кобул ноошно набуданд. Агар навиштаҳои Маҳмуди Тарзӣ ва «Сирочу-л-ахбор»-и ӯ дар танвири афкори мардуми Бухоро ва Самарқанд нуфуз дошт, таълифоти Садриддини Айнӣ «Намунаи адабиёти тоҷик» ва «Саргузашти як тоҷики камбағал»-и ӯ дар Эрон ва Афғонистон диққати аҳли илму адаби ин кишварҳоро ба худ ҷалб намуда буд. Абулқосим Лоҳутӣ дар як мактуби худ ба номи устод Айнӣ дар таърихи 4 декабри соли 1927 шаҳодат додааст, ки «намояндагони Эрон ва мудирони рӯзномаҳо ва вакилони маҷлис... беандоза аз судмандии «Намунаи адабиёти тоҷик» хурсанд буданд».<sup>1</sup> Шоирони Афғонистонӣ Ҳасан ё Ҳиротии Ширинсухан ва Нодими Майманагӣ маҳз пас аз шиносӣ бо ғазали машҳури Лоҳутӣ «Инқилоби сурх» ва намунаи назираҳои шоирони тоҷик, ки дар «Намунаи адабиёти тоҷик» ҷо доштанд, назира гуфтаанд. Ва осори адибони тоҷик дар ташаккули адабиёти миллии ва ватании Афғонистон дар солҳои 20 ва 30-уми асри гузашта саҳм доштааст.<sup>2</sup>

Бо назардошти он ки дар байни адабиёти муосири Эрон, Афғонистон ва Тоҷикистон сарфи назар аз суғурӯи робитаҳои мустақими онҳо дар солҳои бистум ва панҷоҳуми садаи бист – «марҳилаҳои пайвандсӯз» (М. Шакурӣ) муштарақоти адабӣ хеле зиёд ва қавианд, онҳоро дар ҳамбастагӣ таҳқиқ намудан лозим меояд. Хусусан ки дар даҳаҳои баъдӣ, алаҳусус дар охири солҳои панҷоҳум ва оғози шастуми қарни гузашта ин робитаҳо қувват гирифтанд ва дар даҳсолаи охири қарни ХХ марҳалаи сифатан нава дар робитаҳои адабӣ ва фарҳангии Эрон, Афғонистон ва Тоҷикистон оғоз гардида буд, ки он марҳалаи имтизочи (синтези) адабиёту фарҳанги форсӣ, дарӣ ва тоҷикӣ мебошад.

Оғози ҷопи мунтазами китобу маҷмӯаҳо ва намунаи асарҳои адибони муосири Эрону Афғонистон дар Тоҷикистон, аз қабилӣ Сиёвуши Касроӣ, Жола Бадеъ, Нодири Нодирпур, Фурӯғи Фаррухзод, Муҳаммадхусайни Шаҳрёр, Сухробӣ Сипехрӣ, Қайсари Аминпур, Ҷалол Оли Аҳмад, Муҳаммадамину Риеҳӣ, Симини Донишвар, Восифи Бохтарӣ, Латифи Нозимӣ, Беранги Кӯҳдоманӣ, Латифи Пидром, Ҳоруни Роъун ва дигарон ва баръакс далели равшан бар мавҷудияти ҷунин як марҳала мебошад.

Дар оғози солҳои навадуми садаи ХХ дар Эрон паси ҳам ҷаҳор китоби адибони тоҷик ба алифбои арабиасоси форсӣ дар силсилаи «Фарҳанг ва тамаддуни кишварҳои ҳамсоя» дар Интишороти байналмилалӣ «Алхудо» нашр гардиданд: 1) Гулчине аз ашъори

---

<sup>1</sup> Мукотибаи Садриддин Айнӣ ва Абулқосим Лоҳутӣ.-Душанбе, 1978.-С.11.

<sup>2</sup> А. Сатторзода. Ду тазмини маҷҳул бар як ғазали машҳур //А. Сатторзода. Кӯҳна ва нава.-С.50-54.

устод Лоики Шералӣ (1372); 2) Гулчине аз ашъори Гулрухсор Сафиева (1373); 3) Баргузидаи ашъори устод Бозор Собир (1373); 4) Баргузидаи ашъори Мумин Қаноат (1373). Дар шакли китоби алоҳида чоп шудани навиштаҳои шоирону нависандагони тоҷик дар кишварҳои ҳамзабону ҳамфарҳанг падидаи комилан навед буд. Баъд аз ин чопи асарҳои адибони тоҷик дар Эрон расм шуд ва дар солҳои гуногун маҷмӯаҳои Аскар Ҳаким (1374) ва Ашӯр Сафар (1374) дар Интишороти байналмилалӣ «Алхудо», Гулназар (1376), Фарзона (1376, 1385) ва Раҳмат Назрӣ (1373) дар Интишороти «Суруш», Сотим Улуғзода (1378), Кароматуллоҳ Мирзоев (1382), Абдулҳамид Самадов (1378), Камол Насруллоҳ (1385), Муҳаммадали Аҷамӣ (1386) дар интишороти мухталиф ба таърифи расиданд. Алоқамандии ҷаҳониро хонандагони эронӣ ба шеъри шоири бузурги тоҷик Лоик Шералӣ боиси он гардид, ки дар Эрон пас аз чопи китоби аввали ӯ ду маҷмӯа «Дасти дуои модар» (1373), «Рӯҳи Рахш» (1379) ва ниҳоят «Куллиёти ашъори Лоик Шералӣ» (1383) ба таърифи бирасад. Маҳз дар ҳамин давра, тавре ки шоири тавонои тоҷик Бозор Собир комилан дуруст ба мушоҳида гирифтааст, «назми мо ба Афғонистону Эрон ва назми онҳо ба муҳити адабии мо ворид шуд. Мо ин падидаи тозаро бо камоли хушнудӣ истиқбол кардем» («Адабиёт ва санъат», 3 апрели 1986).

Имрӯз шеъри муосири Эрон, Афғонистон ва Тоҷикистон ба дараҷае ба ҳам наздик шудаанд, ки таҳаввулот ва навиҷоеро, ки дар онҳо дар ин фосилаи замонӣ ба вучуд омадаанд, наметавон дар алоҳидагӣ ва ҷудо аз ҳам ба дурустиву ростӣ ва бе каму кӯстӣ баррасӣ намуд.

Дар марҳалаи кунунии робита ва ҳамкориҳои шеъри муосири форсӣ монандӣ на танҳо дар истифодаи қолибҳои шеъри, воситаҳои василаҳои тасвир ва забону сабки офариниш бештар аз давраҳои пешин гардидааст, балки дар муҳтаво, паёму дарунмояи он низ равшан ба мушоҳида мерасад. Дар шеъри форсии имрӯзи Эрон, Афғонистон ва Тоҷикистон ривҷи ёфтани гуфтани шеъри ғурбат, ёди ёру диёр ва зинда гардонидани суннати шеъри таърифи ғурбатии Носири Хусрав дар сурудаҳои Жола Бадеъи Исфохонӣ, Нодири Нодирпур ва Фаридуни Муширӣ (Эрон), Халилуллоҳи Халилӣ, Восифи Бохтарӣ, Латифи Нозимӣ, Беранги Кӯҳдоманӣ, Муҳаммадкозими Козимӣ, Розики Рӯйин, Розики Фонӣ ва Ҳоруни Роъун (Афғонистон), Бозор Собир, Искандари Хатлонӣ, Сиёвуш ва Муҳаммадали Аҷамӣ (Тоҷикистон); диққат ба баёни вазъи кишвар ва муҳити ахлоқӣ маънавии он дар шеъри Симини Бехбаҳонӣ, Нодири Нодирпур, Ҳушанги Ибтиҳоҷи Соя ва Қайсари Аминпур (Эрон), Қаҳҳори Осӣ, Ҷалили Шабғири Пӯлодиён ва Лайло Сароҳати Рӯшанӣ (Афғонистон), Лоик Шералӣ, Бозор Собир, Қутбӣ Киrom, Мастон Шералӣ, Гулназар, Ҳакназар Ғоиб, Гулрухсор, Аскар Ҳаким, Алимӯхаммад Муродӣ, Камол Насруллоҳ, Раҳмат Назрӣ, Низом Қосим, Фарзона, Ато Мирҳоҷа, Зиё Абдуллоҳ, Искандари Хатлонӣ

ва Сармад (Тоҷикистон) на танҳо натиҷаи ҳодисаҳои сиёсиву иҷтимоист, ки дар чанд даҳсолаи охир дар ин кишварҳо ба вуқӯъ пайваста буданд ва на танҳо ба омилҳои решаҳои мазҳабиву таърихиву фарҳангӣ пайванд мегирад, балки, пеш аз ҳама, паёмади маҳз ба ҳам наздик гардидани адабиёти ин се кишвар мебошад.

Дар ҳамбастагӣ тадқиқ намудани адабиёти муосири Эрон, Афғонистон ва Тоҷикистон ба он маънӣ мебошад, ки падида ва равандҳои адабӣ, фаъолияти офаринишии адибон дар ҳар яке аз ин кишварҳои ҳамзабон бо назардошти он падида ва равандҳои адабӣ ва фаъолияти офаринишии адибон дар ду кишвари дигар баррасӣ карда шаванд. Барои мисол, падидаи зуҳур ва ривочи “шеъри нав”, “шеъри сапед”, “арӯзи озод”-ро дар Эрон, Афғонистон ва Тоҷикистон наметавон бе якдигар омӯхт ва муайян намуд. Дар бораи шеъри Муъмин Қаноат, Лоик Шералӣ, Бозор Собир, Гулназар, Фарзона, Доро Начот ва дигар шоирони наваҷӯи тоҷик наметавон бе муқоиса бо шеъри Нодири Нодирпур, Фурӯғи Фаррухзод, Сиёвуши Касроӣ, Фариддуни Муширӣ, Аҳмади Шомлу, Маҳдӣ Ахавони Солис, Симини Бехбахонӣ, Сухробӣ Сипехрӣ (Эрон), Халилуллоҳи Халилӣ, Восифи Бохтарӣ, Сулаймон Лоик (Афғонистон) ва дигарон чизро равшан кард.

### Чанд сухан дар бораи истилоҳҳо

То имрӯз дар нисбати адабиёти якзамон ягонаи Эрон, Афғонистон, Тоҷикистон ва Ҳинду Покистон дар ин кишварҳои истилоҳоти гуногун ба қор бурда мешаванд, чунончи дар Эрон аз он маъмулан ба унвони «адабиёти форсӣ» ва «адаби форсӣ», дар Афғонистон – «адабиёти дарӣ» ва «адабиёти форсии дарӣ», дар Тоҷикистон – «адабиёти форсу тоҷикӣ», «адабиёти форс-тоҷикӣ» ва «адабиёти форсии тоҷикӣ», дар Ҳинду Покистон – ҳамзамон бо «адабиёти форсӣ» ва «адаби форсӣ» ҳамчун «адабиёти форсизабон» ёд мекунам. Ва донишмандони хориҷӣ дар ин қор ба пажӯҳишгарони дохилӣ пайравӣ намудаанд.

Нахустин кӯшишҳо дар роҳи ҳамгун сохтани истифодаи ин истилоҳот устод Садриддини Айнӣ дар солҳои 40-уми садаи гузашта ҳангоми танзими «Намунаҳои адабиёти тоҷик» карда буд. Ӯ дар ҷавоб ба даъвоҳои баъзе аз шарқшиносон (Е.Э.Бертелс, А.Н. Болдирев ва дигарон), ки тоҷикон ба «адабиёти форсӣ» ҳақ надоранд, аз он ҷумла ба мероси Абулқосими Фирдавсӣ, Саъдии Шерозӣ ва дигарон бо далелҳои адабӣ ва илмӣ пас аз баҳсу мунозираҳои айниёнаи худ исбот намуд, ки тоҷикон низ мисли эронӣ ба ин адабиёт баробар ҳақ доранд, бинобар ин онро бояд «адабиёти форс-тоҷикӣ» номид.

Баъдан ин ташаббуси ӯро донишмандони ватанӣ ва хориҷӣ, аз ҷумла Е.Э.Бертелс, И.С. Брагинский, Ян Рипка, Саид Нафисӣ, Парвиз

Нотили Хонларӣ, Бадъуззамони Фурӯзонфар, Ш. М. Шомӯхамедов, М. Н. Усманов, Ҷ. Гиунашвили ва дигарон дастгирӣ намуданд.

Назарияи устод Айнӣ «адабиёти форс-тоҷик», ки дар илми шарқшиносӣ ва адабиётшиносии муосир, бидуни шак нақши муассире бозид, ҳалли сиёсии қазия, «маҷбурияти таърихӣ» (Муҳаммадҷони Шақурии Бухорӣ)<sup>1</sup> буд. Азбаски дар эҷоди адабиёти гузаштаи мо, тавре ки маълум аст, намояндагони қавму миллият ва кишварҳои гуногун, аз ҷумла Ҳиндустон, Покистон, Афғонистон ва ғ. низ саҳм гирифтаанд, муҳаққиқон солҳои охир бодарназардошти аслии илмии маъмул дар таъйини номи адабиёти ин ё он миллату кишвар, ки аз рӯйи ба қадом забон офарида шудан он аст ва ҳам ба эътибор гирифтани ҳақиқати таърихии кунунӣ адабиёти гузаштаи моро бештар бо истилоҳи «адабиёти форсии-тоҷикӣ»<sup>2</sup> ном мебаранд.

Бо ин ҳама ҳанӯз ҳам ноҳамгунӣ дар қорбурди истилоҳот дар нисбати ин адабиёт давом дорад.

Аммо дар мавриди адабиёти қадим, адабиёти пеш аз ислом ва муосири Эрон, Афғонистон ва Тоҷикистон мутаносибан истифода аз истилоҳоти «адабиёти Давраи бостони эронӣ», «адабиёти арабизабони эронӣ», «адабиёти муосири форсӣ», «адабиёти дарӣ» ва «адабиёти тоҷикӣ» муносибтар аст.

Китоби «Таърихи адабиёти тоҷикӣ (аз Давраи бостон то ибтидои асри XX)» аз 6 ҷилд иборат хоҳад буд.

Ҷилди 1 – Адабиёти Давраи бостон, арабизабон ва асрҳои VIII ва IX ё марҳалаи аввали ташаккули адабиёти тоҷикӣ.

Ҷилди 2 – Адабиёти тоҷикӣ дар асрҳои X ва нимаи аввали XI ё марҳалаи дувуми ташаккули он.

Ҷилди 3 – Адабиёти тоҷикӣ дар нимаи дувуми асри XI ва XII ё давраи имтизочи шеърӣ хирад ва эҳсос.

Ҷилди 4 – Адабиёти тоҷикӣ дар асрҳои XIII ва XIV ё давраи рушди осори ғиноӣ ва ҳичо.

Ҷилди 5 – Адабиёти тоҷикӣ дар асри XV ё давраи Бозгашти адабӣ.

Ҷилди 6 – Адабиёти тоҷикӣ дар охири Асрҳои миёна ва Давраи ҷадид (асрҳои XVI – XIX ва ибтидои асри XX).

Ҷилди якуми «Таърихи адабиёти форсии тоҷикӣ (аз Давраи бостон то ибтидои асри XX)» аз «Муқаддимаи умумӣ», се бахш, «Хулоса», «Китобнома», «Феҳристи номҳо» ва «Феҳристи асарҳо»

<sup>1</sup> Ниг.: Муҳаммадҷони Шақурии Бухорӣ. Сарнавишти форсии тоҷикии Фарорӯд дар садаи XX.-Душанбе, 2003.-С.21; Ҳам ӯ: Хуросон аст ин ҷо. Маънавият, забон ва эҳёи миллии тоҷикон. Нашри дувум. – Душанбе, 2009.-С.157-158.

<sup>2</sup> Ниг.: А. Сатторзода. Таърихчаи назариёти адабии форсии тоҷикӣ.-Душанбе, 2001; У. Каримов. Нигоҳе ба заминаҳои наваҷодӣ дар адабиёти форсии тоҷикӣ.-Душанбе, 2008; В. Охониёзов. Мафҳум ва рамзи рангҳо дар назми классики форсии тоҷикӣ.-Душанбе, 2010 ва ғ.

иборат мебошад. Муаллифони «Муқаддимаи умумӣ» д.и.ф., профессор Абдунабӣ Сатторзода, бахши якум «Адабиёти Давраи бостон» д.и.ф., профессор Шарифмурод Исрофилниё ва Муаззам Диловаров, бахши дуюм «Адабиёти арабизабони халқҳои эронӣ дар асрҳои VIII – IX» д.и.ф., узви вобастаи АИ ҚТ Низомиддин Зоҳидӣ, бахши сеюм «Адабиёт ба забони форсии тоҷикӣ дар асрҳои VIII – IX» н.и.ф. Шамсиддин Муҳаммадиев буда, қисматҳои «Китобнома», «Феҳристи номҳо» ва «Феҳристи асарҳо»-ро н.и.ф. Маҳина Ниёзӣ ва Сарвосо Қозиева таҳия намудаанд.



## БОБИ ЯКУМ

### АДАБИЁТИ ДАВРАИ БОСТОН

Адабиёти хаттии ҳамаи миллатҳо аз адабиёти шифохӣ сарчашма мегирад, зеро пеш аз пайдоиши хат дар ҷомеа ҳар суннати адабӣ ба сурати шифохӣ пайдо ва ҳифз мешуд. Ин адабиёт ба воситаи қавволони касбӣ ҳифз шуда, бо созу мусиқӣ баён мешудааст. Бино ба таҳқиқи С. Воткинс (С. Watkins), гурӯҳи ҳирфаии қавволон давраҳои омӯзишии чиддӣ ва дарозмуддатеро тай мекарданд, то битавонанд суннатҳои шифохии асри хешро ҳифз ва ба дунболи он ҳунари худро аз ҳамин тариқ ва дар мадрасаҳои махсус ба наслҳои баъдӣ интиқол диҳанд. Чунин омӯзишхое дар саросари ҷаҳони ҳиндуаврупоии забон шинохта шуда будааст.<sup>1</sup> Ин ҳукм дар бораи адабиёти бостони мардуми эронитабор низ дуруст аст ва хушбахтона, шоҳиду далелҳои кофӣ барои исботи ин амр ва маълумоти басандае дар бораи қавволони адабиёти шифохӣ дар даврони бостон вучуд дорад.

Тақрибан дар ҳазораи дувуми то мелод адабиёти давраи бостони форсии тоҷикӣ дар сурати адабиёти шифохии мардум, ривоят, устура, афсона ва ғайра ба вучуд омад. Ин адабиёти воҳиди Эрони таърихӣ ва фарҳангист. Дар устураҳои қадими мардумони ориёӣ тасаввуроти онҳо дар бораи табиат, ҳодисаҳои он, обу рустаниҳо, офтобу моҳ, боду борон, раъду барқ, шикор, муқобила бо ҳайвоноти ваҳшӣ, душманон ва амсоли инҳо инъикос ёфтааст. Бино ба таҳқиқи пажӯҳишгарон, шеърӣ оғозин рангу бӯйи паҳлавонӣ дорад ва ин шеър аз ривоятҳои устураӣ-ҷодуӣ дар бораи худоён ва нимахудоён маншаъ гирифтааст. Баъдҳо паҳлавонон ҷойгузини худои дoston шуда ва шакли дoston мутаносиб бо паҳлавони он тағйир кардааст. Шеърӣ ҳамосӣ ё худ паҳлавонӣ бар асоси пажӯҳиши донишманди амрикоӣ Алберт Лорд, шеърест, ки тавассути шоирони бесавод барои иҷрои шифохӣ тасниф шудааст.<sup>2</sup>

Аситир, ривоятҳои афсонаҳо дар адабиёти бостон дар ҳазораи аввали пеш аз мелод, ҳангоми ба миён омадани низоми табақотӣ ба вучуд омадаанд. Ҳамзамон дар ҳамон давраҳо силсилаи чехраҳои устураӣ-«қахрамонони маданӣ» офарида шудаанд, ки ба мардум тарзи зиндагӣ, ром кардани ҷонварон, риштану бофтани пӯшидани либос, сохтани манзил, афрӯхтани оташ, сохтани афзори шикор ва киштукор, бофтани матоъ, киштисозӣ ва ғайраро омӯхтанд, монанди Каюмарс, Ҳушанг, Ҷамшед, Фаридун ва дигарон. Халқ чехраи қахрамонон – пешвоёнеро низ офаридааст, ки ўро аз ҳар гуна бадихо

---

<sup>1</sup>Watkins, C., 1995, *How to Kill a Dragon, Aspect of Indo-European Poetics*, New York \Oxford, نقل از زرشناس زهره. ادبيات شفاهی ایران باستان//تاریخ جامع ایران، جلد پنجم، زیر نظر کلطم موسوی، بجنوردی، تهران، 1394، ص. 640 (منبع: تاریخ جامع ایران)

ҳимоят кардаанд. Дар ҳамин давра ормонҳои мардумии «давраи тилоӣ», ҳукмронии одилонаи подшоҳони ҳаёли пайдо шудаанд. Паҳлавононе ба монанди Рустам, Гаршосп ва дигарон мардумро аз деу парихо ва ғоратгарону истилогарон ҳимоят мекунанд. Дар гуфтори шифоҳии мардум навъҳои ҳамосӣ, сурудҳои ошиқона, афсона, ривоят, масал, зарбулмасалу мақол ва ғ. ба вуҷуд омадаанд. Аз осори хаттии қадим, ки дар заминаи фаҳлавиёт ташаккул ёфтааст, маълум мешавад, ки вазни ҳичоӣ ва унсурҳои савтиёт, нишонаҳои ибтидоии қофия маҳз дар асоси осори шифоҳӣ шакл гирифтаанд.<sup>1</sup>

Дар Эрони Бостон суннати шифоҳӣ маъмул буд ва осори динию адабӣ сина ба сина ҳифз мешуданд ва аз насле ба насли дигар интиқол меёфтанд. Суннати шифоҳӣ дар байни мардуми эронитабор аҳаммияти махсус дошта, сухани шифоҳии зинда аз сурати мактуб муҳимтар будааст. Осори адабиёти давраи бостони эрониро мардумони қадими Эрони таърихӣ, ки қисме аз ҳудуди Осиёи Миёна, Афғонистон, Эрон, умуман халқҳои, ки аз Ҳиндукуш то соҳилҳои Дон, аз баҳри Хазар то Дачла ва Фурот маскун буданд, монанди бохтариҳо, хоразмиён, сугдиён, форсҳо, тахориҳо ва дигарон ба забонҳои авестӣ, сақӣ-хутанӣ, сугдӣ, хоразмӣ, балхӣ, портӣ, форсии миёна ва ғайра офаридаанд.

Таърихи адабиёти давраи бостони эрониро пажӯҳишгарон вобаста ба давраҳои таърихии забонҳои эронӣ осори бозмонда ба ин забонҳо, дар асоси нахустин давлатҳои қавмҳои ориёӣ ва тамаддуну фарҳанг ва адабиёти онҳо табақабандӣ кардаанд. Аз забонҳои давраи бостони эронӣ осори хаттии ду забон боқӣ мондааст. Яке забони авестӣ, ки дар сарзамини ноҳияҳои шарқи Эрон роиҷ буда, қадимтарин осори он эҳтимолан мутааллиқ ба замони миёнаи асри ҳаштум то даҳуми пеш аз мелод аст. Дигаре забони форсии бостон, ки дар ноҳияи Форс густариш дошт ва катибаҳои шоҳони ҳахоманишӣ ба ин забон навишта шудаанд, ки қадимтарини онҳо аз қарни панҷум ва навтарини онҳо аз қарни сеюми пеш аз мелод аст. Аз забонҳои дигари ин даврон, монанди модӣ сақӣ иттилоӣ андаке расидааст.

Дар бораи гузаштагони мардуми Осиёи Миёна то остонаи ҳазораи сеюму дуюми пеш аз мелод ҳеч гуна иттилоъе надорем. Аз ҳудуди ҳазораи дуюми пеш аз мелод аз қabilaҳои ориёӣ, ки қадимтарин осори забонҳои ҳиндӣ -“Ведо” ва бостонитарин осори забонҳои эронӣ - сурудаҳои «Авесто»-ро падида овардаанд, ахборе дар даст ҳаст. Ҳиндушиносон муътақиданд, ки қадимтарин қисмати “Ведо”, яъне “Регведо” дар миёнаи ҳазораи дуюми пеш аз мелод дар сарзамини Ҳинд тадвин шудааст. Авестошиносон мегӯянд, ки таҳрири ниҳии «Авесто» дар қарнҳои аввали пеш аз мелод дар сарзамини Эрон анҷом пазируфтааст. Муҳаққиқони таърих ва

---

<sup>1</sup> М., Хромов А. Адабиёти тоҷик //Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.1.- Душанбе, 1988.-С. 71. (минбаъд: ЭАСТ)

тамаддуни бостон аз баррасии қадимтарин бахшҳои “Регведо” ва «Авесто» ба хулоса омадаанд, ки ниёкони қабилаҳои эронизабон, ки «Авесто»-ро падида овардаанд ва ниёкони қабилаҳои ҳиндузабон, ки “Ведо”-ро сурудаанд, дар замонҳои бисёр қадим дар як сарзамин мезистаанд ва бо лаҳҷаву шеваҳои ориёӣ, ки аз ҳар ҷиҳат ба якдигар наздик ва бо ҳам хеш будаанд, сухан мегуфтаанд. Ягонагии асосҳои динию ақидаҳои ва ваҳдати мавзӯӣ дар «Авесто» ва “Регведо”, иштироки бахрҳои вазнӣ дар бахши манзуми ин ду асари қадим, ки дар бисёр мавридҳо ба сурати мисраъҳои ҳаштҷиҷой суруда шудааст, ин хешовандиро таъйид мекунад.<sup>1</sup> Таърихномаҳои номи қавмҳои ҳиндузабонро аз вақте ки онҳо дар дараи Синд зиндагӣ мекарданд ва қабилаҳои эронизабонро, ки дар Осиёи Миёна ва Эрон мезистаанд, сабт кардаанд. Аммо аксари пажӯҳандагон бар онанд, ки на Ҳиндустон ватани нахустин қабилаҳои буд, ки ба забонҳои ориёӣ сухан мегуфтанд ва на Эрони кунунӣ.<sup>2</sup> Муҳаққиқон собит кардаанд, ки ҷудои қавмҳои эронӣ аз ҳамнаҷодони ориёиёшон дар поёни ҳазораи дуюм ё аввалҳои ҳазораи нахустин пеш аз мелод сурат гирифтааст. Дар бораи масири муҳоҷирати эронӣ ба ғарбӣ (модҳо ва порсҳо) ду назар вучуд дорад: Баъзе бар он боваранд, ки онҳо нахуст ба сӯи шимол рафтанд, баҳри Хазарро давр заданд ва он гоҳ бо гузар аз баландҳои Қафқоз, аз тариқи Арманистони кунунӣ ба минтақаҳои ғарбии Эрони имрӯза қадам ниҳоданд. Гурӯҳи дигар бар ин боваранд, ки модҳоро порсҳо аз шимоли шарқии Эрони кунунӣ гузар карда, дашти Кавирро дарнавардиданд ва сипас дар доменаҳои қаторкӯҳи Зоғрус таваққуф намуданд. Аз сӯи дигар, эронӣ ба шарқӣ ҳамчунон дар Осиёи Марказӣ боқӣ монданд ва танҳо дастаҳои аз онҳо ба минтақаҳои ҷанубитар, монанди Марву Ҳирот муҳоҷират карданд.

Ғарҷанде дар бораи қавмҳои ориёӣ ва муҳоҷирати онҳо тадқиқоти зиёде анҷом ёфтааст, то ба ҳол донишмандон перомуни ватани аслии қавмҳои ориёӣ ва ҳатто дар навишти номи ин сарзамин ва шакли ягонаи қироати он ихтилофи назар доранд.

Аз марҳалаи нахустин шаклгирии адабу фарҳанги қавмҳои ориёӣ ҳеч гуна санаде дар даст надорем. Танҳо аз рӯи шохиду тахминҳо дар бораи он метавон изҳори назар кард. Ин нукта мусаллам аст, ки дар марҳалаҳои нахустин ориёӣҳои эронӣ андешаҳо ва осори фикрии худро танҳо ба ҳофиза месупурданд ва даҳон ба даҳон, аз насл ба насли дигар интиқол меоданд. Суннати китобати осори адабӣ маъмул набудааст, танҳо санадҳои давлатӣ ва сиёсӣ иқтисодиро сазовори китобат меодиданд. Тарона, гуфтор, устураву афсона ва амсоли онҳо нигошта намешуданд. Ба ҳамин сабаб ҳангоми интиқоли шифоҳӣ аз насл ба насли дигар онҳо, бешак, дастхуши дигаргунӣ мегардиданд. Бино ба таъкиди Аҳмади

<sup>1</sup> معین، محمد. مزدیسنا و ادب پارسی. تهران، 1338، ص. 36.

<sup>2</sup> ترابی سیدمحمد. نگاهی به تاریخ و ادبیات ایران. تهران، 1384، ص. 15.

Тафаззулӣ, китоби «Авесто» қарнҳо сина ба сина ҳифз мешуд, то ки саранҷом дар давраи Сосониён ба китобат даромад ва пас аз он ҳам мӯбадон барои иҷрои маросими динӣ ба нудрат ба он рӯҷӯ мекарданду мекунад, зеро он чи аз ҳама муҳим аст, аз ҳифз хондани он мебошад.<sup>1</sup> Суннати шифоҳӣ то даврони баъд аз ислом низ идома ёфт. Чунончи, Ҳаким Фирдавсӣ илова бар ривоёти мактуби “Худойнома” аз ривоёти шифоҳӣ низ баҳра бурдааст.<sup>2</sup> Сабаби ба китобат рӯй овардани зардуштиёнро ба чанд омил вобаста медонанд: Яке он буда, ки миллатҳои соҳибкитоб, монанди яҳудиёну масеҳиён ба онҳо эрод мегирифтаанд ва дигар бими аз байн рафтани осори динию адабии зардуштиён, алалхусус дар даврони ривочи ислом буд, ки онҳоро ба китобат қардан водошт. Бар хилофи зардуштиён Монӣ ва пайравони ӯ ба китобати осори худ бештар аҳаммият медодаанд.

Адабиёти давраи бостони эрониро муҳаққиқон аз чанд дидгоҳ даврабандӣ кардаанд. Масалан, Ҷалолуддини Ҳумоӣ чунин тақсимбандӣ кардааст:

1. Давраи қадими аввал: аз қадимтарин замонҳои таърихӣ то соли 331 пеш аз мелод.

2. Давраи фатрат ва инхитоти адабӣ: аз соли 331 пеш аз мелод то соли 226 мелодӣ.

3. Давраи қадими дуюм: аз соли 226 мелодӣ то 650 мелодӣ.<sup>3</sup>

Аҳмади Тафаззулӣ вобаста ба давраҳои таърихии забонҳои эронӣ осори бозмонда аз ин забонҳоро баррасӣ кардааст.

Дар ин навишта мо саъй намудем, даврабандии Ҷалолуддини Ҳумоиро асос қарор диҳем ва хангоми баррасии осори бозмонда аз даврони бостони эронӣ шеваи Тафаззулиро дунбол кунем. Аз он ҷо, ки баъд аз Ҷалолуддини Ҳумоӣ ва Аҳмади Тафаззулӣ қорҳои зиёди тадқиқотӣ, алалхусус аз ҷониби ховаршиносони аврупоӣ доир ба адабиёти бостони эронӣ сурат гирифтааст, то он ҷо, ки даст доштем, мавриди қорбасти қарор додем.

---

1. تقضلى، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 13.

2. Мухаммадами Риеҳӣ. Фирдавсӣ (зиндагӣ, андеша ва шеърӣ ӯ).- Душанбе: «Бухоро», 2008.

3. جلال الدين همایی. تاريخ ادبيات ايران. به كوشش ماهدخت بانو همای، تهران، 1385، ص. 5.

## Фасли якум

### Адабиёт дар Давраи қадими аввал ва ё Давраи Модию Ҳахоманишӣ

Ин давра аз қадимтарин замонҳои таърихӣ, аз оғози тамаддуни башарӣ шурӯъ шуда, то соли 331 пеш аз мелод идома меёбад. Ин давраро Давраи қадими аввал ва ё Давраи Модию Ҳахоманишӣ номидаанд.

#### I.1. Адабиёти модӣ

Муҳаққиқон бо тақия бар «Авесто» менависанд, ки нахустин созмонҳои тақомулӯфта ба манзилаи давлат, эҳтимолан дар самти шарқи сарзаминҳои эронӣ ба вучуд омадааст. Аксар бар онанд, ки нахустин марказҳои фарҳанг ва маданият ба эҳтимоли қавӣ Самарқанд, Балх ва Марв будааст, зеро ин минтақаҳо сахнаи рӯйдодҳои таърихи асотирии Эрони Бостонанд, ки дар “Худойнома”-ҳову “Шоҳнома”-ҳо акс ёфтааст. Дар «Авесто» аз кишварҳои дар сохилҳои дарёи Ҳирманд ва перомунӣ дарёчаи Ҳомун дар Систон ва низ аз сарзаминҳои он сӯйи Омударё сухан рафтааст. Таъсиси аввалин давлати ориёӣ - давлати Модро муаррихон охириҳои қарни ҳаштум ва ибтидои қарни ҳафтуми пеш аз мелод доништаанд.<sup>1</sup>

Аз даҳаҳои аввали таърихи подшоҳии Мод ҷуз ахбори афсонаомез чизе дар даст нест. Аз модҳо санаде ба яке аз забонҳои эронӣ боқӣ намондааст, аммо дар навиштаҳои муаррихони Юнон ва осори ошурии мутааллиқ ба асри нухуми пеш аз мелод ишороте ба ин қавми ориёӣ ба назар мерасад. Дар катибаҳои ошурӣ аз модҳо ба унвони “модҳои дурдаст”, “модҳои бузурги шарқ”, “модҳо, ки сарзамини онҳо дур афтадасту дар ҳаволии кӯҳи Байканӣ (Дамованд) ҳастанд” ва “модҳои наздики Саҳрои Намак” ёд шудааст. Аз ахбори ин катибаҳои ошурӣ бармеояд, ки модҳо муддате тобеъ ва бочгузори давлати Ошур будаанд. Муаррихони юнонӣ аз достону қиссаҳо ва ашъори модҳо хабар додаанд. Бино ба гуфтаи Аҳмади Тафаззулӣ, Осиниус (Athenaeus) менависад, ки хунёгарон бо авроди худ диловариҳои Куруш ва ҷанги ӯро бо Остөг (Astyages) пешгӯӣ мекарданд. Сипас аз қавли Динун (Dion) менависад: «*Ҳангоме ки Остөгос бо дӯстонаш ба ҷашну шодмонӣ мепардохт, марде ба номи Ангорис (Angares), машҳуртарини хунёгарон буд, эҳзор шуд ва достонҳои манзуми маъмулро ба овоз хонд. Дар поён гуфт: Даде тарсноктар аз гурузи ваҳшӣ дар ботлоқ раҳо шудааст ва агар ба ҳамсоягон мусаллат шавад, дере нагузарад, ки ҳеч душмане ҳамоварди*

---

اباغيدي، حسن رضای. زبان های ایرانی باستان // تاریخ جامع ایران، ص. 79.

*ӯ набошад. Чун Остёг аз хунёгар пурсид: Ин чӣ дадест? Хунёгар ҷавоб дод: Куруши порсӣ”.*<sup>1</sup>

Аз ин навиштаи муаррихи юнонӣ чанд нукта равшан мешавад: аввалан, дар даврони модҳо дostonҳои манзуме будаанд, ки хунёгарон онҳоро бо овоз мехондаанд, аз ҷумла дostonҳо дар бораи диловариҳои Куруш. Сониян, дар ин дostonҳои манзум тамсил нақши муҳим доштааст, чунончи, хунёгар Курушро ба дади тарснок ташбеҳ карда, ки дар ботлоқ раҳо шудааст ва агар бар ҳамсоягон ғалаба кунад, дигар ҳеч касе ҳамоварди ӯ нахоҳад буд. Ҳамчунин Динун (Dinon) менависад: “Куруш дар хоб дид, ки хуришед дар пеши пойи ӯ буд. Се бор кӯшид, то онро ба даст бигирад, муваффақ нашуд, зеро хуришед сур мехӯрд ва мегурехт. Мугон барои ӯ пешгӯӣ карданд, ки се бор гурехтани хуришед ба ин маънист, вай сӣ сол подшоҳӣ хоҳад кард ва чунин низ шуд”.

Ин дostonҳо шаҳодат аз он медиҳанд, ки дар давраи салтанати охириин шоҳи Мод – Остёг корномаҳои Куруш забонзади мардум, хусусан қавми Мод будааст. Дostonҳои марбут ба Куруш маҳз дар ҳамин давра вориди адабиёт гашта, қавмҳои ориёӣ дар дostonҳо ва сурудаҳои худ тавсифи далерӣ шучоат ва зебоӣ наққорию ӯро мекардаанд.

Ҳеродот аз сурудаҳои динии модӣ ном мебарад, ки ҳангоми баргузорию ойнҳои ниёиш муғон барои эзадон мехонданд. Муҳаққиқон бар онанд, ки таснифи ин сурудҳо, ки ба эҳтимол, шабоҳатҳои бо “Яштҳо”-и “Авесто” доштааст, ба давраи модҳо ё ҳатто пеш аз он боз мегардад.<sup>3</sup>

Роҷеъ ба тамаддун ва фарҳангу адабиёти модҳо иттилооти дурусте дар даст нест, зеро аз онҳо катибаҳои монанди катибаҳои шоҳони ҳахоманишӣ то кунун ёфт нашудааст. Донишмандон бо тақия бар ахбори муаррихони юнонӣ ва катибаҳои ошурию ҳахоманишӣ дар бораи фарҳангу адаби қавми Мод сухан кардаанд. Сангнавиштаҳои, ки муҳаққиқи фаронсавӣ дар Шуш ва Ҳамадон пайдо кард, ба тахмини ӯ мутааллиқ ба тамаддуни пеш аз порсҳо, мансуб ба асри Мод аст. Маълум аст, ки ҳунарҳои гуногуни фаръӣ, монанди қошиқорӣ ва наҷқорию сангтарошӣ дар сохтмонҳои модӣ ба қор мерафтааст. Бар асоси бовари донишмандон, дар қовишҳои давраи Мод номе аз Аҳурамаздо бурда нашудааст. Баъзе бар онанд, ки Зардушт аз миёни қавми Мод баргузида шуд ва чун дар диёри ҳудаш тарафдорон пайдо накарду ба суханонаш гӯш накарданд, ҷалои ватан карда, ба диёри ҳамнаҷодони худ - Бохтар (Балх) рафт ва мавриди таваҷҷуҳи шоҳ Виштосб қарор гирифт.

---

اتفضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 16.  
2 همان جا، همان صفحه.

3 زرشناس، ز ادبيات شفاهى ايران، ص. 643.

Аз адабиёти модӣ намунае аз дostonҳои ҳамосӣ, ки аз ҳодисаҳои бунёди давлати Мод ҳикоят мекунад, дар ривояти муаррихони юнонӣ боқӣ мондааст. Намунае аз дostonҳои ҳамосии модиро метавон дар гузориши Ктесий, табиби махсуси Ардашери дуюм, мушоҳида кард. Ктесий дар китоби “Парсико”, ки дар ибтидои садаи чаҳоруми пеш аз мелод навишта шудааст, афсонаҳои модиро нақл кардааст, ки шеваи ҳамосӣ доранд. Аз ҷумла дostonи Порсундоси Порсӣ, асорати ӯ ба дасти ҳокими Бобил - Нонорус ва мочарои раҳиини ӯ аз ин асорат қобили тавачҷуҳ аст. Нонорус ин сипаҳсолори эрониро ҳафт сол зиндонӣ мекунад, то ки Порсундос бо ёрии яке аз ҳампаймононаш озод мешавад ва ба кодусиён паноҳ мебарад, онҳо бо назардошти заковату шуҷоати ин паҳлавон ӯро шоҳ интиҳоб мекунанд.

Аҳмади Тафаззулӣ бо тақя бар ахбори таърихнигорони Юнони Бостон дostonи Стрэнгаюс (Stryangaios), ки ба маликаи сақоиҳо ба номи Зариниё (Zarinaina) ошиқ шуд ва чун ноком гашт, даст ба худкушӣ зад, аз дostonҳои ошиқонаи модӣ медонад. Ҳамчунин дostonи ошиқонаи дигар - дostonи Зариёдрис (Zariadres) ва Удотис (Odatis)-ро мансуб ба ин давра медонад, ки суҷаи мухтасари он чунин аст: Овардаанд, ки Ҳистоспис (Гуштосп) ва бародари хурдаш Зариёдрис аз издивочи Офрудит ва Одунис ба дунё омаданд. Ҳистоспис фармонравои Мод буд ва Зариёдрис бар навоҳии болодасти дарвозаҳои Хазар то Танаис (Tanais) ҳукмронӣ дошт. Дар он сӯйи Танаис маросиҳо (Marathi) мезистанд, ки фармонравои онҳо Умуртис (Omortes) буд. Вай духтаре дошт ба номи Удотис, ки зеботарин зани Осиё ба шумор мерафт. Удотис Зариёдрисро дар хоб диду дил ба ӯ баст ва Зариёдрис низ дар хоб мафтунӣ он духтар шуд. Зариёдрис кӯшид, то Удотисро ба даст оварад, аммо тавфиқ наёфт, зеро падари духтар намехост ӯро ба марди бегона шавҳар диҳад.

Дере нагузашт, ки Умуртис чашни издивоче баргузор кард, ки дар он хешону наздикон ва ашрофи дарбори ӯ ҳузур доштанд ва аз Удотис хост, ки ҷоми шароб ба касе бидиҳад, ки моил ба издивоч бо ӯст. Зариёдрис, ки Удотис ӯро пеш аз он аз мочаро огоҳ карда буд, ба шитоб ба ҳамроҳии гардунаронӣ худ аз Танаис гузашт ва бо либоси сақоӣ, ношинос воридаи чашн шуд ва Удотис ҷоми ӯро пур кард.<sup>1</sup>

Аз ахбори муаррихони Юнони Бостон, аз ҷумла Ҳореси Мителенӣ бармеояд, ки ин дoston дар миёни мардуми Осиё шуҳрати зиёд дошта ва онро бар деворҳои маъбадҳо, коҳҳо ва ҳатто хонаҳои хусусӣ наққошӣ мекардаанд, ашроф ғолибан номи духтарони хешро Удотис мегузоштаанд. Ба назари М. Бойс ин дoston асли модӣ дорад ва бо оини парастии худӣ ишқ (эҳтимолан Аноҳито) иртибот доштааст.<sup>2</sup>

Ин ду дoston дар сарчашмаҳои таърихӣ адабӣ ва асарҳои таърихӣ адабиётшиносӣ ба гунаҳои мухталиф нақл шудаанд ва

---

1. تفضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 18.

2. همان جا، ص. 19.

номҳои қаҳрамонон низ вариантҳои гуногун доранд. Аллома Бобочон Ғафуров менависанд: “Он вақтҳо дар байни қавму тоифаҳои Осиёи Миёна достоне, ки дар «Авесто» ҳам инъикос ёфта буд, ривоч дошт. Тавассути ривояти Ктесий порчае аз қиссаи малика Зарина ва Стриангеи модӣ маҳфуз мондааст. Дар он нақл карда мешавад, ки Зарина баъд аз вафоти шавҳараш - подшоҳи сакоӣ бо Мармар ном ҳокими вилояти портҳо хонадор мешавад. Подшоҳи мулки Форс ба муқобили Мармар лашкар мекашад. Дар вақти муҳориба Стриангеӣ ном марди модӣ як зани сакоиро аз асп фурӯ меандозад- занҳои сакоӣ воқеан, савораи хуб буда, мардонавор мечангиданд. Ӯ маҳз бо дидани ин зани соҳибчамол ва мисли гул шукуфон вайро зараре нарасонда, раҳо мекунад. Пас аз чанд вақт ҳуди Стриангеӣ ба дасти шавҳари вай асир меафтад. Дар дили Стриангеӣ нисбат ба ин зани соҳибчамол оташи ишқ шӯълавар мегардад ва зоҳиран чунин эҳсос дар дили зан ҳам пайдо мешавад. Вале шавҳари вай Стриангеӣро куштанист ва ҳеч як зорию илтиҷои зан ӯро аз ин қасд боздошта наметавонад. Он гоҳ Зарина асиронро раҳо карда, ба воситаи онҳо шавҳарашро мекушад ва бо Стриангеӣ “унсият меварзад” (Ктесий, фикраҳои 7(26), 8а(27 ва ғ.).<sup>3</sup> Баъзе аз донишмандон ин достонро намунае аз офаридаҳои модӣ донистаанд, гурӯҳи дигар онро достони сакоӣ хондаанд.

Баррасии ахбори муаррихони Юнони Бостон нишон медиҳад, ки онҳо номҳои ориёиро тибқи талаффузи юнонӣ сабт кардаанд. Донишмандони эронӣ, аз ҷумла Тафаззулӣ, ки ба сарчашмаи асл даст доштаанд, ин номҳоро чунон ки сабт шудааст, овардаанд. Достони дуюм дар адабиётшиносии тоҷик бо номи “Зариадр ва Одатида” маъруф аст. Воқеан, он яке аз достонҳои ошиқонаи адабиёти давраи бостонии мост, ки дар байни қавмҳои ориёӣ хеле шуҳрат дошта, тавассути осори муаррихони атиқа Ҳореси Митилени ва Атеней то замони мо расидааст. Дар ин асарҳо қаҳрамонони ин достони ишқӣ номҳои юнонӣ гирифтаанд. Дар асл Зариёдрис ё Зариадр ҳамон шоҳзодаи эронӣ Зарир аст, ки дар «Авесто» номаш зикр ёфтааст ва ҳамчунин аз корномаҳои дар “Ёдгори Зарирон” ва “Шоҳнома”-и Фирдавсӣ сухан меравад. Удотис ва Одатида ҳамон шакли юнонишудаи исми Хутаосаи «Авесто»-ст. Ҳистоспис низ шакли юнонишудаи Гуштосп ва Танаис номи юнонии дарёи Сир (Сайхун) аст. Дар “Шоҳнома”-и Фирдавсӣ ва осори таърихии арабӣ ва форсӣ монанд ба ин достон оварда шудааст, вале қаҳрамонони он шахсони дигар – шоҳзодаи эронӣ Гуштосп ва духтари қайсари Рум Катююн мебошанд.<sup>1</sup>

---

<sup>3</sup> Ғафуров Б. Тоҷикон, ҷ.1. –Душанбе: Ирфон, 1998.-С.110.

<sup>1</sup> Фирдавсӣ, Абулқосим. Шоҳнома.-Душанбе:Адиб, ҷ. 6,1989.-С.5-78.



## 1.2. Адабиёт дар давраи Ҳахоманишиён Адабиёти порсии бостон

Бино ба гуфтаи муҳаққиқони адабиёти Давраи бостон, фарҳанг ва тамаддуни давраи ҳахоманишӣ омезае аз тамаддунҳои қуҳани қавмҳои мухталиф аст, зеро ин давлати бузург сарзаминҳои зиёдеро фаро мегирифт. Байнаннаҳрайн, Сурия, Миср, Осиёи Хурд, шаҳрҳо ва қазираҳои юнонӣ ва бахше аз Ҳинд воридаи он буданд. Ҳатто яҳудиён, ки ба воситаи Куруши Кабир аз асорати ҳафтодсола озод шуда буданд ва тайи ду қарн Фаластин аз сотропҳои Ҳахоманишиён ба ҳисоб мерафт, дар тақмили тамаддуни ҳахоманишӣ нақш доштаанд. Порсҳо аз фарҳанг ва тамаддуни тамоми кишварҳои зердаст як тамаддуни бузург ва дурахшоне ба вучуд оварданд, ки бино ба навиштаи таърихнигорони дунёи қадим чун Ҳеродот, дар он даврон беназир буд. Намунаи боризи фарҳанги ҳахоманишӣ ҳамон Тахти Чамшед ва Шуш аст, ки дар сохтани он аз ҳунароҳои тамоми қавмҳои тобег истифода шудааст. Дорюш дар яке аз сангнавиштаҳои худ, ки дар Шуш ба даст омадааст, хабар медиҳад, ки дар сохтани Кохи Шуш аз ҳунаромандони кишварҳои мухталиф истифода шудааст.

Ориёиҳои даврони ҳахоманишӣ тамоми ҳунаро ва пешрафти қори худро аз Аҳурамаздо медонистаанд. Чунончи, Дорюши Бузург дар катибаи Бестун мегӯяд:

*“Дорюшишоҳ гӯяд: Ин аст сарзаминҳое, ки худро пайрави ман мехонанд. Ба хости Аҳурамаздо ба фармони ман ҳастанд ва хироҷ медиҳанд. Он чи ононро гуфтам, чи дар шаб, чи дар рӯз, анҷомаиш доданд”.*<sup>12</sup>

Ва ё Ҳашоёршо дар яке аз сангнавиштаҳои мегӯяд:

*«Худои бузург аст Аҳурамаздо, ки бузургтарини худоён аст, ки ин заминро офарид, он осмонро офарид, мардумро офарид ва шодиро барои мардум офарид, ки Ҳашоёршоро шоҳ кард...» ва «...Ин қорҳо, ки ба дида зебо меояд, ба ёриш Аҳурамаздо анҷом додам»*<sup>2</sup>

Дар даврони ҳахоманишӣ додгустарӣ дар ҳама ҷо барои ҳама яксон барқарор гардид ва ғуломдорию асорат бекор карда шуд. Мардум дар ватани худ озод шуданд ва метавонистанд озодона ҳудоҳои худро парастииш кунанд, барои онҳо ибодатгоҳҳо бисозанд. Аз додгустарии Куруши Кабир тавассути таърихнигорони юнонӣ дostonҳое боқӣ монда, ки воқеан омӯзанда аст: “Крезийос (Cresus) подшоҳи Лидӣ ва Сорд рӯзе ба Сулун – ҳақими юнонӣ фарру шукӯҳи қох ва ганҷинаҳои худро нишон медод, ба ӯ гуфт:

-То кунун хушбахттарин қасеро дидаӣ? Чӣ фарде будааст?

Крезийос гумон мекард, ки ҳақим ӯро хоҳад ном бурд, вале ҳақим дар ҷавоб мегӯяд:

---

12 1 غياث آبادی، رضا مرادی. تمدن هخامنشی، سیزده گفتار در بررسی های هخامنشی. تهران، 1390، ص. 54  
2 مجموعه داستان های شاهان هخامنشی. خشیایار شا. به کوشش ز خزایی، تهران، 1388، ص. 38.

- Касе, ки бо сарбаландӣ ва некӣ зиндагӣ карда бошад, зеро ин кохҳо ва сарватҳо нопойдор мебошанд ва растагориҳо бояд дар саранҷоми кор дид.

Крезийос аз ин ҷавоби донишманди юнонӣ асабонӣ мешавад ва ба андеша меравад. Баъде чанде дар ҷанги Эрон бо Юнон Крезийос шикаст меҳурад ва асир меафтад. Бояд ӯ ва 14 тан аз бузургони Лидӣ дар оташ сӯзонда мешуданд. Дар ин ҳангом Крезийос суханони ҳақимро ба хотир меорад ва ба овози баланд се бор номи ӯро ба забон мегирад.

Куруш баъд аз бозпурсии ин масъала ба поси хотири он ҳақими доно рӯзи дигар фармони озодии Крезийос ва бузургони Лидиро содир мекунад».<sup>1</sup>

Бино ба гуфтаи забоншиносон, забони порсии бостон забонест, ки дар замони Ҳахоманишиён дар Порс роиҷ буд ва осори хаттии он ҳамон катибаҳои шоҳони ҳахоманишист, ки ба хатти мехӣ навишта шудааст. Аҳмади Тафаззулӣ дар асоси номаҳои дар Миср бадастомада, ки ба қарни панҷуми пеш аз мелод мутааллиқанд, забони девонӣ ва мукотибаи шоҳони Эрони Бостонро оромӣ медонад. Воқеан, забони порсии бостон забони модарии ҳахоманишиён буд ва дар аҳди ин сулола забони оромӣ нақши забони байналмилалиро иҷро мекарда ва бештари мукотиботи давлатӣ аз Миср то Ҳинд бо ин забон сурат мегирифт. Аз ин сабаб, Ҳахоманишиён низ онро ба унвони забони идории саросари қаламрави худ мавриди истифода қарор додаанд. Аммо дар мавридҳои зарурӣ дар қаламрави паҳновари Ҳахоманишиён аз забонҳои маҳаллӣ, монанди бобилӣ, мисрӣ, эломӣ, юнонӣ, суғдӣ ва ғайра истифода мешудааст. Ба ҷуз аз катибаҳои шоҳони ҳахоманишиё дигар санаде дар даст надорем, ки ба порсии бостон инашо шуда бошад. Ин катибаҳо ба хатти мехӣ, ки аз чап ба рост навишта мешавад, инашо шудаанд. Ин хат хоси нигориши катибаҳои шоҳӣ буди қорбурди ом надост.

Катибаҳои Ҳахоманишиён, ки дар замони ҳукмронии сулолаи Ҳахоманишиён ҳаққокӣ шудаанд, ёдгорҳои хаттии адабиёти бостони эронӣ ба шумор мераванд. Дар онҳо унсурҳои ибтидоии бадеият, санъати бадеии такрор, ҳунари балоғат ва ғайра мушоҳида мешавад. Ёдгорҳои хаттии замони Ҳахоманишиён, ки рӯи шаҳҳо, девору сутуни қасрҳо, пораҳои мраморӣ, тахтачаҳои тилоӣ, сангӣ ва ғайра ба хатти мехӣ навишта шудаанд. Бештари катибаҳо ба Дорюши аввал, ки бо унвони «Дорюши Бузург» шуҳрат дорад ва писари ӯ-Ҳашоёршо мансубанд. Катибаҳои, ки аз номи дигар шоҳон навишта шудаанд, хеле кам мондаанд.

Аз шоҳони то Дорюш се катибаи кӯтоҳ маълум аст, ки аз номи Куруши Кабир навишта шудаанд. Катибаҳои Куруши Кабир дар

---

اکروش کبير، ص. 24. همان کتاب،

Истахр кашф шудаанд. Ин катибаҳо аз 1 то 4 сатр буда (баъзеашон якчанд нусха доранд), ба се забон – форсии қадим, эломӣ, аккадӣ навишта шудаанд. Дар ин катибаҳо танҳо ном ва насаби шоҳ ба тариқи «Ман Куруш, шоҳи бузург, шоҳанишоҳ, шоҳи сарзаминҳо бо гуногун мардумон, шоҳ дар ин замини бузург, паҳновар ва дуркарона. Писари Виштосп, як ҳахоманишӣ, як порсӣ, писари порсӣ, як ориёӣ, ориёитабор», «Куруш, шоҳи бузург, писари шоҳ Камбучия, ҳахоманиш...»<sup>11</sup> сабт ёфтааст. Аксари донишмандон матни ин катибаҳо аз қадимтарин катибаҳои Ҳахоманишиён доништаанд. Ду катибаи дигар низ маълум аст, ки аз номи аввалин шоҳони ҳахоманишӣ – ниёғони Дорюш Ариярамна ва Аршома (писари Ариярамна) танзим шудаанд. Онҳо рӯи тахтачаҳои тилоӣ канда шудаанд. Катибаи Ариярамна аз даҳ сатр иборат буда, дар Ҳамадон кашф шудааст. Дар он Ариярамна нахуст ба муаррифии худ мепардозад, он гоҳ Ахурамаздоро ситоиш мекунад, ки сарзамини Порсро ба ӯ арзонӣ доштааст. Қисмате аз ин катиба нобуд шудааст. Гумон меравад, ки он тарҷумаи матни забони форсии қадим ба забонҳои эломӣ ва аккадӣ бошад. Катибаи Аршома низ аз Ҳамадон ба даст омада ва ба забони форсии бостон дар чаҳордаҳ сатр, ба рӯи лавҳае аз тило нигошта шудааст. Ин сангнавишта аз рӯи шакл ва мундариҷа мушобеҳи катибаи Ариярамна буда, аз ҷиҳати ҳаҷм аз он андаке фарқ мекунад. Дар бораи асолати ин катибаҳо донишмандон ихтилофи назар доранд. Баъзе асолати ин сангнавиштаҳо қабул доранд, гурӯҳи дигар бар он ақидаанд, ки ин катибаҳо чанд сол баъд аз ҳукмронии шоҳони зикршуда, ба дастури ҷонишинони онҳо дар зери тасвир ва пайкараҳои ин шоҳон барои муаррифии онҳо навишта шудаанд.<sup>2</sup>

Катибаҳои Дорюши аввал дар Бестун, Тахти Ҷамшед, Нақши Рустам, Шуш, Суиз, Алванд ва Ҳамадон бар ҷой мондаанд, ки мазмуни амиқ доранд. Бузургтарин ва машхуртарин катибаи Дорюши Бузург «Катибаи Бестун» (имрӯз ба иштибоҳ «Бесутун» хонда мешавад) аст. Дар ин катиба яке аз муҳимтарин намунаҳои осори хаттӣ ва санъати тасвирӣ сабт ёфтааст, ки назираш дар олам то ҳол пайдо нагардидааст. Ин катиба дар роҳи байни Кирмоншоҳ ва Ҳамадон дар дили шах (дар баландии 105 м аз сатҳи замин) канда шудааст. Баландии катиба 7–8 метр, бараш 22 метр. Дар мобайни он матни катиба ба забони форсии қадим дар 5 сатун канда шуда, 515 сатр дорад. Дар болои матни форсии қадими катиба шоҳ Дорюш ва шоҳоне, ки вай онҳоро мағлуб кардааст, тасвир ёфтаанд. Аз тарафи ростии ин саҳна матни эломии ин катиба, ки дар 4 сатун сабт шудааст, ҷойгир аст. Ин матн аз 323 сатр иборат буда, хеле хароб шудааст. Аз

<sup>1</sup>Қурбонов Х., Диловаров М. Катибаҳои ҳахоманишӣ // ЭАСТ, - С.23.

<sup>2</sup>مولایی، چنگیز. سنگنیشته های شاهنشاهان هخامنشی//تاریخ جامع ایران،ص.115.

тарафи чап матни форсии қадим (дар 3 сутун) мавҷуд аст, ки ба 4 сутуни аввали матни форсии қадим мувофиқат мекунад. Матни эломӣ 650 сатр дорад. Аз тарафи чапи тасвирҳо тарҷумаи akkaди катиба (141 сатр) сабт шудааст.<sup>2</sup>

«Катибаи Бестун» ба 75 бахш тақсим шудааст. Ҳар бахш бо ҷумлаи «Дорюшшоҳ гӯяд» шуруъ мешавад. Бахши муқаддимагии катиба аз баёни аслу насаби Дорюш ва номгӯи мамлакатҳои тобеи шоханшоҳӣ шуруъ гардидааст. Дар қисмати асосӣ оид ба таърихи лашкаркашии Камбуҷия ва вафоти ӯ, ёғӣ шудани мардум ва бархостани шӯру балво дар мамлакатҳои ӯ, сар бардоштани Гауматаи Муғ (Бардияи дурӯғин) ва ба тасарруфи худ даровардани ҳокимият дар Форс, Мод ва дигар мамлакатҳо, оид ба пирӯз шудани Дорюш бар Гауматаи Муғ ва анҷом додани иқдомоте, ки дар роҳи ҳукмфармо шудани худ истифода кардааст, оид ба шӯришҳои сершумор, ки дар соли аввали ҳукмронии Дорюш ба амал омадаанд, чораҷӯиҳои Дорюш дар роҳи паҳш намудани ин шӯришҳо маълумот ҳаст. Илова бар ин катибаи бузург даҳ катибаи хурд низ мавҷуданд, ки ҳар кадом аз чанд калима беш надоранд. Ин катибаҳо (ба ҷуз катибаи яқум ва охирин, ки тарҷумаи эломӣ надоранд) ба се забон навишта шудаанд. Катибаи яқум дузабона, аз 18 сатри форсии қадим ва 10 сатри эломӣ ба худи Дорюш марбут буда, ба сатрҳои 1–11 сутуни 1 матни катибаи калони форсии қадим мувофиқат мекунад. Дар катибаҳои хурд дар бораи ҷиноятҳои душманони ба дасти Дорюш асирфтода маълумот оварда шуда, номи ҳар кадоми онҳо зикр гардидааст. Катибаи хурди дувум ба душмани калонтарини Дорюш – Гаумата тааллуқ дорад: «*Ин Гаумата – Муғ, дурӯғ ин тавр гуфт: «Ман Бардия ҳастам, писари Куруш, ман шох ҳастам».*<sup>1</sup>

Нусхаи «Катибаи Бестун»-ро бори нахуст соли 1836 Г. Роулинсон рӯбардор карда буд. Баъд соли 1903 У. Чексон, солҳои 1904–07 Л. Кинг ва Р. Томпсон, соли 1948 Г. Камерон нашр кардаанд.<sup>2</sup> Ба забони русӣ баъзе пораҳои ин катибаро бори аввал академик К. Г. Залеман тарҷума кардааст. Тарҷумаи комили русии ин матн ба қалами А. А. Фрейман ва В. И. Абаев тааллуқ дорад.<sup>3</sup> Ба забони форсии имрӯза матни ин катиба аз тарафи донишмандони Эрон чандин бор тарҷума шудааст.<sup>4</sup> Додихудо Саймиддинов ин катибаҳоро соли 1982 ба забони тоҷикӣ тарҷума карда, дар маҷаллаи «Садои Шарқ» ба нашр расондааст.<sup>5</sup> Катибаҳои дигари Дорюш аз Истахр, Нақши Рустам ва Шуш аз назди канали Суэтс ёфт шудаанд. Катибаҳои Истахр ҳаҷман

<sup>2</sup> Қурбонов Х., Диловаров М. Катибаҳои ҳахоманишӣ. - С. 24.

<sup>1</sup> غياث آبادی، ر. تمدن هخامنشی، ص. 54.  
<sup>2</sup> مولاي، چنگيز. سنگنبشته های شاهنشاهان هخامنش. ص. 108.

<sup>3</sup> Қурбонов Х., Диловаров М. Катибаҳои ҳахоманишӣ. - С. 24.

<sup>4</sup> معين، محمد يک قطعه شعر در پارسی باستان تهران، 1322.

<sup>5</sup> Саймуддинов Д. Катибаҳои ҳахоманишӣ. // Маҷ. «Садои Шарқ», 1982, №7. - С. 142.

калон нестанд. Як иддаи ин катибаҳо ба се забон буда, гурӯҳи дигар танҳо дорои матни забони форсӣ ва чанде танҳо матни забони эломӣ ва аккадӣ доранд. Калонтарини онҳо катибаҳои «d» (24 сатр) ва «e» (24 сатр) мебошанд, ки дар рӯи девори қаср канда шудаанд. Дар ҳамин ҷо як катибаи хеле боарзиш, ки дар ду варақаи тилоӣ ва ду варақаи нуқрай навишта шудааст, дастрас шудааст, ки дар он дар бораи ҳудуди шоҳигарии Дорюш маълумот оварда мешавад. Тарҷумаи тахтуллафзии катиба чунин аст:

*«Дорюш, шоҳи бузург, шоҳи шоҳон, шоҳи деҳҳо (мамлакатҳо), писари Виштосп, ҳахоманиши.*

*Меғӯяд Дорюшшоҳ: «Ин подшоҳӣ, ки ман дорам, аз Скифия, ки аз Суғд он тараф (аст) то Кушия, аз Ҳинд то Сард ба ман подош (дод), он ки беҳтарини худоён (сарварон, шоҳон) аст. Маро Аҳурамаздо пояд (нигаҳбонӣ кунад) ва хонадони моро».<sup>1</sup>*

Катибаҳои Нақши Рустам, навиштаҷоте аз номи Дорюши Бузург, ки 15 км дуртур аз Истахр дар Хусайнкӯх, ки бо номи Нақши Рустам ёд мешавад, ба хатти мехӣ нақш шудаанд. Нақши Рустам ном гирифтани ин мавзеъ ба номи Рустам – сипаҳсолори Яздгирди севум (подшоҳи охирини сулолаи Сосониён) марбут аст. Дар ҳамин мавзеъ гӯё ӯ бо Саъди Вакқос (сарлашқари арабҳо) ҷангида, ҳалок гардидааст. Дар ин ҷо дар танай кӯх ҷор тоқи азим ба тарзи салиб сохта шудаанд, ки чун даромадгоҳи мақбараи шоҳони ҳахоманишӣ хидмат мекарданд. Дар паси яке аз онҳо (мақбараи дуҷум аз тарафи Шарқ) мақбараи Дорюши аввал ҷойгир аст, ки бо шукӯх ва тарзи ороиши махсуси худ аз дигар мақбараҳо фарқ мекунад. Дар болои даромадгоҳи ин мақбара тасвири калони Дорюш кандакорӣ шудааст. Тахти Дорюшро 30 нафар тахтбардор-намояндагони мамлакатҳои тобеи ӯ бар дӯши худ бардошта, нигоҳ медоранд. Дар ин ҷо силаҳдорони Дорюши Бузург низ акс ёфтаанд. Яке аз катибаҳо (Нақши Рустам А) доир ба шарҳи ҳамин тасвир аст. Ин катиба аз пушти пайкари Дорюш ҷойгир шуда, матни он ба се забон: форсии қадим (60 сатр), эломӣ (48 сатр), бобилӣ (36 сатр) навишта шудааст. Оғози ин катиба ҳам чун катибаҳои дигар аз ситоиши Аҳурамаздо ва баёни насабномаи Дорюш сар мешавад. Дар қисми асосии катиба илова бар Порс мамлакатҳои дигаре, ки дар онҳо қавмҳои гуногуннаҷод мезистанд, номбар шудаанд. Дорюши аввал ба он кишварҳо лашқар кашида, онҳоро тобеи салтанати худ карда буд. Ҳамаи ин мамлакатҳо ба Дорюш боҷ дода, ба қонунҳои ӯ итоат мекарданд. Дар тасвири Дорюш рамзе низ дида мешавад: ҳамаи ин 30 мамлакат, ки намояндагонашон акс ёфтаанд, Дорюшро на танҳо дар ин тасвир, балки дар ҳаёти воқеӣ низ болои тахт нигоҳ медоштанд. Мазмунан ин маънӣ дар матн чунин баён ёфтааст:

---

<sup>1</sup>Қурбонов Х., Диловаров М. Катибаҳои ҳахоманишиён.-С.24.

*«Агар ту фикр кунӣ, ки чӣ қадар сершумор буданд он деҳҳо (мамлакатҳо)-е, ки Дорюшишоҳ идора мекард, ба ин пайкарҳо нигоҳ кун, ки тахти маро пуштибонӣ мекунад, он гоҳ ба ту ошкор хоҳад шуд, ки найзаи марди форс то ба кадом дуриҳо расидааст, он гоҳ ту хоҳӣ донист, ки марди форс аз Форс дуртар то ба кадом дуриҳо ҳукмраво гардидааст».<sup>1</sup>*

Намояндагони халқҳои гуногун – тахтбардорони Дорюши аввал ҳама дар либоси миллии худ тасвир ёфтаанд. Дар зери ҳар як тасвир катибаҳои хурди дусатрӣ ба се забон (форсии қадим, эломӣ ва аккадӣ) ба шакли «ин порс», «ин мод(ӣ)», «ин портӣ» ва ғайра омадааст. Баъзе мутахассисон намояндаи кадом халқ будани шахси тасвиршударо аз тарзи либоспӯши муайян кардаанд. Катибаи Нақши Рустамро «музеи махсуси этнологӣ» меноманд. Дар зери тасвири силаҳдорони Дорюш низ катибаҳои дусатрӣ ба се забон (форсии қадим, эломӣ ва аккадӣ) мавҷуданд. Аз ин катибаҳо маълум мешавад, ки ин тасвирҳо ба Гаубаруваи Патишуварӣ – найзодор ва Аспачана – камондор ва таркашбардори Дорюш марбут мебошанд. Матни ин катиба аввалин бор аз тарафи Вестергард ва Лассен ба табъ расонда шудааст (1840–44), катибаи дувуми аз Нақши Рустам ёфтшуда (Нақши Рустам Б) дар миёнҷойи тоқ аз ду тарафи даромадгоҳ ба се забон (форсии қадим – 60 сатр, эломӣ – 43 сатр, аккадӣ – 30 сатр) навишта шудааст. Дар он усули давлатдории Дорюши аввал ва сифатҳои вай (аспгоз, камонвар ва найзабардори мохир буданаш) баён шудааст. Дар зери матни эломии ин катиба матни забони форсии қадим ба хатти оромӣ (15 сатр) сабт гардидааст, ки ҳоло танҳо якҷанд калимаи он боқӣ мондааст. Ин на танҳо дар навиштаи забони форсии қадим, балки умуман дар як забони ғайрисомӣ нахустин бор истифода шудани хатти оромӣ мебошад.

Як миқдор катибаҳои Дорюш аз Шуш ба даст омадаанд. Ин катибаҳо дар посангҳои сутун, тахтаҳои мрамарӣ ва лавҳаҳо сабт ёфтаанд. Матни аксари инҳо хеле мухтасар (2–11 сатр) мебошад. Танҳо матни ду катиба (катибаи «е» ва «f») ҳаҷман калон буда, яке аз онҳо бо номи катибаи сохтмони қаср дар Шуш маъруф аст. Ин катиба баъди катибаи Бестун аз катибаҳои дигари Дорюш ва шохони дигари ҳахоманишӣ муфассалтар ва аз назари дар бар гирифтани воқеоти таърихӣ, инчунин сарфу наҳв ва луғати забони форсии қадим муҳимтар мебошад. Онро экспедитсияи франсавӣ дар харобаҳои пойтахти Элом – Шуш кашф карда, соли 1929 В. Шеел дар Париж ба табъ расонд.<sup>2</sup> Дар таҳлили забоншиносӣ ва тафсири қисматҳои номафҳуми он олимони машҳур Е. Бенвенист, Ф. Ҳ. Вайсбах, Е. Херсфелд, Б. Бранденштейн ва дигарон иштирок кардаанд.<sup>3</sup> Катиба ба се

---

<sup>1</sup>Ҳамон асар, ҳамон саҳифа..

<sup>2</sup>Ҳамон асар.-С.25.

<sup>3</sup>Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

забон (форсии қадим, эломӣ ва бобилӣ) тартиб дода шудааст. Матни форсии қадим дар рӯи лавҳаҳои гилин ва мрамрин навишта шуда, нисбатан хуб боқӣ мондааст. Чойҳои харобшудан он дар натиҷаи муқоиса бо нусхаҳои дигари ин катиба ва матни тарҷумаи бобилӣ, ки хеле хоно маҳфуз мондааст, барқарор карда шудааст.

Дар катибаи Дорюш оид ба сохтмони қасре, ки ӯ барои худ дар Шуш барафрохтааст, маълумоти муфассал дода мешавад. Барои сохтмони қаср аз мамлакатҳои дурдасти тобеи давлати Дорюш масолеҳи гаронбаҳо (чӯби гаронбаҳо аз Лубнон, тило аз Бохтар, лочвард аз Суғд, фирӯза аз Хоразм, нуқра ва биринҷӣ аз Миср, устухони фил аз Ҳабашистону Ҳиндустон) оварда мешудаанд. Сутунҳои сангии қасрро аз маҳалли Абирадуми Элом овардаанд. Хунармандони юнонӣ, модӣ, заргарону рассомони мисрӣ, хиштрэзони бобилию ошурий ва намояндагони халқҳои зиёде номбар гардидаанд, ки дар сохтмони қаср иштирок доштаанд. Катибаи мазкур дар муайян намудани ҳудуди давлати Ҳахоманишиён, муносибатҳои байналхалқии онҳо, ниғадорӣ номи ашӣи гуногуни маданӣ ва моддӣ, пешаҳои гуногун, ба таври муфассал тасвир кардани техникаи бинокорӣ (мустаҳкам намудани таҳкурсӣ, тарзи хиштрэзӣ ва ғайра) аҳамияти зиёди таърихӣ, забоншиносӣ ва меъморӣ дорад. Дар сохтмони қаср нахустин бор дар таърих коргарони халқҳои гуногун иштирок намудаанд. Доир ба катибаи мазкур тадқиқоти зиёде анҷом ёфтааст. Ба забони русӣ онро В. И. тарҷума ва тафсир намуда, чойҳои норавшани онро рамзкушоӣ кардааст.<sup>1</sup>

**Катибаи Суэтс.** Ин катиба дар рӯи тахтасанге навишта шуда, 33 км дуртар аз шаҳри Суэтс ёфт шудааст. Матни он аз 3 катибаи кӯтоҳ (1, 6, 12-сатрӣ) иборат аст. Катибаи сеюм ба кандани чӯй (канал) бахшида шудааст. Ба монанди дигар катибаҳо Дорюши аввал дар ин катиба суханро аз ситоиши Ахурамаздо сар карда, пас аз он аслу насаби худро сабт намудааст. Дар қисмати асосии катиба хабар дода, ки ман форс ҳастам, аз Форс ба Миср лашкар кашида, онро ба тасарруфи худ даровардам ва фармон додам, ки ин чӯйро аз дарёи Нил, ки дар Миср ҷорист, то ба Форс бикананд. Пас аз он ин чӯй канда шуд, чунонки ман фармудам ва киштиҳо ба воситаи он аз Миср ба Форс равон шуданд, чунонки ман хостам.

Ин катиба дар нусхаҳои гуногун яксатрӣ, чаҳорсатрӣ ва дувоздаҳсатрӣ ба форсии қадим, нусхаи тарҷумаи эломӣ (ҳафт сатр) боқӣ мондааст. Дар зери матни эломӣ тарҷумаи бобилӣ низ мавҷуд будааст, ки тамоман нопадид шудааст. Дар тарафи дигари тахтасанг матни нисбатан калонтар ба хатти иероглифӣ мисрӣ кандакорӣ шудааст. Аз рӯи тахмини мутахассисон мазмуни ин матн гӯё бо мундариҷаи матни форсии қадим як

---

<sup>1</sup>Абаев В. И. Хрестоматия по истории Древнего Востока. -Москва, 1963.

аст. Ба забони русӣ онро Ф. И. Абаев тарҷума ва тафсир кардааст.<sup>1</sup> Як катибаи Дорюш аз кӯҳи Алванд (катибаи сезабона) ёфт шудааст, ки муҳтавои он ба як порчаи матни катибаи Нақши Рустам мувофиқат мекунад. Аз Ҳамадон танҳо як катибаи (сезабона) Дорюши аввал ба даст омадааст, ки дар он Дорюш интишори салтанати худро дар марзу бумҳо ба ин мазмун баён кардааст:

*«Ин аст подшоҳие, ки ман дорам: аз сакҳо, ки аз он сӯйи Сузданд, то ба Ҳабашистон, аз Ҳиндустон то ба Лидия».*<sup>2</sup> Микдори нисбатан зиёди катибаҳо, ки аз номи Хашоёршо навишта шудаанд, боқӣ мондаанд. Ин катибаҳо аз Истахр, Шуш, кӯҳи Алванд ва назди кӯли Ван ёфт шудаанд. Аксари ин катибаҳо сезабона, як идда дузабона буда, катибаҳои алоҳида танҳо матни форсии қадим доранд. Муҳимтарин катибаҳои Хашоёршо «Катибаи зидди девон» ва «Катибаи ҳарамӣ» мебошанд. «Катибаи зидди девон» дар Истахр кашф шуда, матну тарҷумааш ба таърифи расидааст. Он аз ду тахтачаи сангӣ – яке 60 сатри комил ва дигаре 51 сатри нотаом ба забони форсии қадим, 50 сатр тарҷума ба забони эломӣ ва 50 сатр ба забони бобилӣ иборат аст. Оғози катиба ба дигар катибаҳои Ҳахоманишиён монандӣ дорад. Қисмати асосии он оид ба сиёсати динии ҳахоманишиён, аз ҷумла, Хашоёршо маълумот медиҳад.

Дар ин катиба аз номи Хашоёршо, пас аз номбар гардидани мамлакатҳои тобеи салтанати ҳахоманишиён, омадааст:

*«Меғӯяд Хашоёршо: «...вақте ки ман шоҳ будам дар байни ин деҳҳо, ки дар боло навишта шудаанд, мамлакате буд, ки бархост. Пас Аҳурамаздо ба ман ёрӣ кард, бо хости Аҳурамаздо он деҳро ман ишқаст додам ва дар ҷояш барқарор кардам. Ва андар ин деҳҳо деҳе буд, ки (дар он) девҳоро парастии мекарданд. Пас бо хости Аҳурамаздо ман он девдонро баркандам ва хитоб кардам: девон парастии карда нашаванд! Он ҷо ки пеш девон эҳтиром карда мешуданд, ман Аҳурамаздо ва Артаи Бразманиро ситоии кардам. Ва дигаре буд, ки он ки бад кард, онро ман нек кардам. Он чи ман кардам, бо хости Аҳурамаздо кардам...».*<sup>3</sup> «Девон» - эзадони қадимии муқаддаси қабилаҳои ориёӣ аз «девпарастон» қабилаҳои ориёӣ буданд. Дар катиба номи қавму қабилаҳои гуногун, аз ҷумла номи ду қабилаи скифӣ (daha ва akaufacica) муҳфиз мондааст, ки дар дигар катибаҳои ҳахоманишиёӣ дучор намеоянд. Катибаре В. И. Абаев ба забони русӣ тарҷума ва тавзеҳ кардааст.<sup>4</sup>

«Катибаи ҳарамӣ» рӯи тахтасанги гачӣ сабт шуда, аз қисмати ҷанубу шарқии қасри ҳахоманишиён дар Истахр пайдо гардидааст. Ин қисмати қаср, ба қавли муҳаққиқон, ҳарамхонаи Дорюши аввал ва

---

<sup>1</sup>Ҳамон ҷо.

<sup>2</sup>غياث آبادى، ر. تمدن هخامنشى، ص. 55.

<sup>3</sup>مجموعه داستان های شاهان هخامنشى. خشايارشا، ص. 42.

<sup>4</sup>Абаев В. И. Китоби зикршуда.



Хашоёршо будааст ва аз ин сабаб катибаи мазкур «Катибаи ҳарамӣ» ном гирифтааст. Матни форсии қадимии он 48 сатр, матни бобилияш 38 сатр аст. Катиба маълумоти муҳиммеро оид ба таърихи сулолаи Ҳахоманишиён, мубориза ва талоши онҳоро барои ба даст даровардани тахту тоҷ дар бар мегирад. Муҳаққиқон як пораи ин катиба: «Дорюш писарони дигар низ дошт, (вале) хоҳиши Аҳурамаздо он буд, ки Дорюш – падари ман пас аз худ маро меҳтар кард»-ро ишора ба ин матлаб доништаанд.<sup>1</sup>

Аз номи шоҳони дигари сулолаи Ҳахоманишиён, аз ҷумла Ардашери аввал (ҳукмронияш солҳои 465–424 то мелод), Дорюши дувум (ҳукмронияш солҳои 423–404 то мелод), Ардашери дувум (ҳукмронияш солҳои 404–358 то мелод), Ардашери сеюм (ҳукмронияш солҳои 358–338 то мелод) катибаҳое боқӣ мондаанд, ки ҷанбаи бадеӣ надоранд.

Катибаҳои ҳахоманишиён яке аз қадимтарин осори хаттии забонҳои эронӣ мебошанд, ки то ба замони мо маҳфуз мондаанд. Хондан ва тадқиқи ин катибаҳо ба муҳаққиқон имкон дод, ки луғоти забони форсии қадимро шиносанд, сарфу наҳви онро нависанд. Ошкор сохтани луғати забонҳои ғайрихиндуаврупой, ки ба забони форсии қадим дохил шудаанд, ҳиссаи ин халқҳоро дар ҳаёти иқтисодӣ ва маданияи ҳахоманишиён равшан мекунад.

Катибаҳои ҳахоманишиён аҳаммияти бадеӣ низ доранд. Дар онҳо бисёр воқеаҳои таърихӣ бо суҷаи муайян ва ҷолибе тасвир ёфтаанд. Махсусан, «Катибаи Бестун» «китоби сангин»-ест, ки воқеаи ходисаҳои аз сар гузаронидаи Дорюш, Камбучия обу ранги бадеӣ доранд.<sup>1</sup> Баъзе муҳаққиқон (И. Фридрих, В. Кониг, Муҳаммади Муин) бархе аз пораҳои катибаҳои ҳахоманиширо манзум гуфтаанд. Масалан, Муин пораи зеро чунин тақтеъ кардааст:

baga vazgra Auramazdā (9 ҳиҷо)

hуа imām būmim adā (7 ҳиҷо)

hуа avam asmānam adā (8 ҳиҷо)

nuа martiyam adā (7 ҳиҷо)

nuа šyātīm adā (7 ҳиҷо)

martiyan yā (4 ҳиҷо)

Тарҷумааш:

Худои бузургест Ахура Маздо.

Ў, ки ин бум (замин) офарид.

Ў, ки ин осмон офарид.

Ў, ки ин мардум офарид.

Ў, ки ин шодӣ офарид.

<sup>3</sup> Курбонов Х., Диловаров М., мақолаи зикршуда.- С.25.

<sup>1</sup> Ҳамон ҷо.- С. 26.

Барои мардум.<sup>1</sup>

Ҳичои dā, ки дар ҳар як сатр омадааст, қофияро ба хотир меорад. Чунин пораҳоро дар дигар ҷойҳои катибаҳои ҳахоманишиён низ дарёфтани мумкин аст. Ин ҳолат гувоҳи он аст, ки мардуми эрониноҷод аз қадимулайём осори манзум доштаанд.

Ахбор ва гузоришҳое, ки сайёҳони аврупоӣ, тақрибан аз ибтидои асри ҳабдаҳум ба баъд дар ҷараёни сайру саёҳат дар Шарқ ва боздид аз вайронаҳои Таҳти Ҷамшед фароҳам карда буданд, таваҷҷуҳи донишмандони аврупоиро ба хатти меҳӣ ҷалб кард ва заминаи ошноии онҳоро ба ин хат ва сангнавиштаҳо, ки бо он навишта шуда буд, муҳайё намуд. Нахустин ҷаҳонгарде, ки тавсифи нисбатан машруҳе аз вайронаҳои Таҳти Ҷамшед таҳия кард, Петро делла Валле (1586–1652)-и италиявӣ буд. Вақеан, аврупоёнро бо катибаҳои ҳахоманишиён аввалин бор сайёҳи италиявӣ Петро делла Валле ва баъдан сайёҳи франсавӣ Жон Шардин (Jean Chardin) соли 1711 шинос намудаанд.<sup>2</sup> Корстен Нейбур (Carsten Niebuhr) аз катибаҳои ҳахоманишиён нусхае бардоштааст (соли 1778 нашр шуданд), ки ҳамчун мавод барои кушодани рамзи катибаҳои форсии бостон хидмат кардааст. Вай муайян намуд, ки дар навишти катибаҳо се навъи хат истифода шудааст. Баъдтар (1798) Улав Герхард Тихсен (Olav Gerhard Tychsen) муайян намуд, ки хатти моиле, ки дар хатти навъи аввалин (забони форсии қадим) пас аз чанд аломат мунтазам омадааст, аломатест, ки барои гузоштани ҳадди фосил байни калимаҳо истифода шудааст. Олими даниягӣ Фридрих Мюнтер аз рӯйи либоси пайкараҳои дар Истаҳр аксёфта ва муқоисаи онҳо бо манбаҳои юнонӣ муайян намуд, ки катибаҳо ба асрҳои 6–4 то мелод тааллуқ доранд. Соли 1802 ба рамзкушоии хатти меҳӣ донишманди олмонӣ Г. Ф. Грутефенд (G. F. Grotefend) шурӯъ кард. Ба ӯ муяссар шуд, ки якчанд калимаро дуруст хонад ва маънии чанде аз аломатҳои хатти меҳиро таъйин кунад. Ҳалли бисёр масъалаҳои оид ба катибаҳои ҳахоманишиён ба номи муҳаққиқи англис Г. Роулинсон вобаста аст. Дар кашфи катибаҳои ҳахоманишиён ҳиссаи бостоншиносони асри XX (Ж. де Морган, Э. Херсфелд ва дигарон) хеле зиёд аст. Муҳаққиқони шӯравӣ А. А. Фрейман, В. В. Струве, В. И. Абаев, М. А. Дандамаев ва дигарон катибаҳои ҳахоманишиёнро аз ҷиҳати аҳаммияти таърихӣ иҷтимоӣ, фаро гирифтани маълумоти муҳим оид ба маданияти модии мардуми аҳди Ҳахоманишиён, ҳамчун осори забони форсии қадим омӯхта ва тарҷумаву тафсир кардаанд.<sup>3</sup>

---

<sup>1</sup> Нақл аз Х. Қурбонов ва М. диловаров, мақолаи зикршуда.-С. 26 (нигаред сах. 43-и китоб)

<sup>2</sup>مولایی، چنگیز. سنگنبشته های شاهنشاهان، ص. 109  
<sup>3</sup>31123 تفضلی، احمد. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 921 مولایی، چنگیز. سنگنبشته های هخامنشی ص. 127-129

Илова бар катибаҳо бар рӯи лавҳҳо, сиккаҳо, гилҳои пухта ва баъзе зарфҳо низ навиштаҳое ба форсии бостон бар чой мондааст.

Катибаҳои шоҳони ҳахоманишӣ, ки ба хатти меҳӣ ҳаққокӣ шудаанд, гарчанде аз ҷиҳати адабӣ аҳаммияти зиёд надоранд, аммо аз назари таърихӣ ва забоншиносӣ асноди пурарзиши илмӣ ба ҳисоб мераванд. Ҷумлаҳои ин катибаҳо кӯтоҳу мӯҷаз ва содаву равонанд, ки баъзан як мавзӯ дар катибаҳои дигар низ ба такрор омадааст. Агар аз дидгоҳи бадеият, ки имрӯз дар назар дорем, катибаҳои форсии бостонро баррасӣ кунем, онҳо аз тахайюлотии адабӣ ва суварии ҳаёл орӣ ҳастанд, аммо ин нуктаро набояд фаромӯш кард, ки ин осор дар даврони оғози тамаддуни башарӣ эҷод шудаанд. Аз сӯйи дигар, метавон нахустин сабки насрнависӣ, таърихнигорӣ ва иншоии адабиёти форсиро дар ин катибаҳо, алалхусус дар катибаи муфассали Дорюш дар Бестун мушоҳида кард. Ин катибаҳо аз назари сохтор ва муҳтаво дорои сабки хосанд. Нахуст муқаддима, сониян, таҳмидия (ситоиши Аҳурамаздо), баёни мавзӯи асли ва дар охир хотима меояд, ки гувоҳи низоми муайяни насрнависӣ ва таърихнигории он замон аст. Аз ин рӯ, донишмандон Дорюшро нахустин таърихнигори Эрони бостон доништаанд, зеро катибаи Бестуни ӯ қадимтарин санади хаттии форсӣ, ки дар он матни шинохташудаи таърихӣ сабт шудааст.

Матни ин катибаҳо аз диди сохторӣ низ қобили таваҷҷуҳанд. Дорюш дар муқаддимаи катибаи Бестун дар ибтидо худро муаррифӣ мекунад ва ин амал дар баъзе катибаҳои ӯ низ мушоҳида мешавад, аммо дар ду катибаи Нақши Рустам муқаддима бо ситоиши Аҳурамаздо оғоз мешавад. Хотимаи катибаҳо аслан бо ситоиши Аҳурамаздо ва дуову хоҳиш аст.

Аз муҳтавои катибаҳо равшан маълум аст, ки мавзӯи онҳо марбут ба ҳокимият ва сиёсат аст, аммо аксари муаррихон, алалхусус таърихнигорони юнонӣ аз адабиёти ҳамосии ориёӣҳои қадим хабар додаанд. Муҳаққиқон бар онанд, ки дар Форси бостон адабиёти ҳамосӣ эҳтимолан ба сурати шифоҳӣ вучуд доштааст. Аҳмади Тафаззулӣ бо таъя ба фармудаҳои муаррихони юнонӣ менависад, ки омӯзгорони порсӣ одат доштаанд, ки дарсҳои худро бо афсонаҳо, ки мазмуни онҳо «шарҳи аъмоли худоён ва мардони бузург» буд, биёмӯзонанд.<sup>1</sup> Эҳтимолан, дар давраи Ҳахоманишиён илова бар

---

.130-107. شاهنشاهان هخامنشی، ص. 130-107. مجموعه داستان های شاهان هخامنشی. کروش کبیر. تهران، 1388؛ غیاث آبادی، ر. تمدن هخامنشی، شیراز، 1390. Саймуддинов Д. Катибаҳои ҳахоманишӣ. - С.142. Саймуддинов Д. Катибаҳои ҳахоманишӣ. - С.142; Оранский И. М., Введение в иранскую филологию. - Москва, 1960; Рипка Ян. История персидской и таджикской литературы; Фрай Р., Наследие Ирана. - Москва, 1972; Хрестоматия по истории Древнего Востока, часть вторая. - Москва, 1980; Kent R. Old Persian, New Haven, 1953; Brandenstein W., Maerhofer M., Handbuch des Altpersischen, Wiesbaden, 1964.

انتفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 30.

санадҳои бойгонии давлатӣ маҷмӯае аз ривоёти ҳамосӣ, монанди «Худойнома»-и паҳлавӣ ё «Шоҳнома» ба сурати шифоҳӣ ё гунаҳои мухталиф вучуд доштааст, ки нависандагони ҷунонӣ аз онҳо истифода кардаанд. Ривоёти марбут ба Куруш, ки Ҳеродот онро нақл карда, монанди ин дoston, ки ӯро саге дар кӯдакӣ парварда буд, эҳтимолан мутааллиқ ба ин гуна ривоятҳо будааст.<sup>1</sup>

Ривоятҳое, ки муаррихони ҷунонӣ дар бораи Куруш ва саргузашти ӯ овардаанд, ба дostonҳои дигари ҳамосии эронӣ, алалхусус дostonҳои «Шоҳнома» хеле шабоҳат доранд. Дostonи хоби Остөг ва мочарои сари кудрат омадани Куруш бо дostonҳои Ардашери Бобакон (хоби Бобак), фармони шох ба куштани кӯдаки навзод, набераи худ Остөг (Куруш) ва Афросёб (Кайхусрав), ки иҷро намешавад, сари роҳ ё бар об ниҳодани кӯдак (дostonи Дороб писари Хумой ва Баҳман), парвариши кӯдак дар миёни чӯпонон ё мардуми одӣ (Курушро, ки чӯпон парвариш кард ва дostonи Фаридун, Кайхусрав, Зол, Дороб), парвариши кӯдак тавассути як ҳайвон (дostonи Фаридун, Зол) ва ошкор шудани кӯдаки асилзода ва зуҳури осори бузургию хушмандии ӯ дар ҳангоми бозӣ ё варзиш (саргузашти Куруш ва дostonҳои Кайхусрав, Ардашер ва Шопур). Ҳамчунин дostonи ҳилаи фидокоронаи Шерак ва Зупирус (Zorugus) аз ривоёти ҳамосии ин даврон будааст. Муаллифи Юнони қадим Палиен дар асоси ривоятҳои то ба ӯ расидаи сақӣ аз як лавҳаи муборизаи диловаронаи сақӣҳо чунин нақл мекунад: Дорюш бо лашкари сершуморе ба муқобили сақӣҳо равои шуд. Замоне ба урдугӯҳи ӯ сақӣ сақӣ Шерак омад. Аз ӯи баданаш маъҷуб, рӯиаш аз чароҳатҳо баднамо, гӯшу бинияш бурида буд. Шерак арз кард, ки ҳамқавамҳояш ҳамин тариқа чазояш доданд ва инак, ӯ ташнаи ниқор аст. Ӯ роҳбалади ро ба зимма гирифта ваъда дод, ки лашкари форсҳоро ба пайраҳаҳои фақат ба худаш маълум якбора ба ақибгӯҳи сақӣҳо мерасонад. Пас аз ҳафт рӯзи роҳи пурмашаққат аскарони форс ба биёбони хушкӯ холи мерасанд, ки онҳоро хавфи ҳалокат таҳдид мекард. Форсҳо фиреб хӯрдани худро фаҳмиданд. Шерак, дар ҳолате, ки душман ба сараш тег мекашид, ба ифтихор ҷавоб дод: «Ман ғалаба ба даст овардам, зеро бо аз сари роҳи ҳамватанонам-сақӣҳо дур кардани фалокат душманро аз гушнагиву ташнагӣ ба ҳалокат супурдам». Форсҳо сари сақиро аз тан ҷудо карданд. Ин сақӣ чангии Дорюши аввал, ҷӣ навъе ки аз гуфтаи Палиен бармеояд, бемуваффақият анҷом ёфт».<sup>2</sup>

Мазмуни ин дoston бо қаҳрамону макони дигар дар нақли Ҳеродот: «Ҳангоме ки Дорюш аз фатҳи Бобил навмед шуда буд, яке аз дарбориёнаш бо номи Зупирус (Zorugus) довталабона гӯшу бинии худро буриду мӯи худро тарошид ва тани худро бо тозиёна маҷрӯҳ кард, гӯё ки муқофоти ҷинояткоронро дидааст. Сипас, ба сипоҳи душман гурехт ва вонамуд кард, ки аз зулми Дорюш ба паноҳандагӣ

---

<sup>1</sup> همان جا، همان صفحه.

<sup>2</sup> Гафуров Б. Точикон. - С. 96.

омадааст ва пас аз чалби эътимоди онон, бар тибқи нақшаи пешбинишуда дарвозаҳои Бобилро ба Дорюш кушуд. Назири ин дostonхоро дар ривояти Хушнавоз - шоҳи хайтолиён ва Пирӯз- шоҳи Сосонӣ низ мебинем».<sup>1</sup>

Ҳамчунин дostonҳои дигар, ки баъзе аз онҳо, монанди дostonи Бардияи дурӯғин, ки дар катибаҳои шоҳони ҳахоманишӣ сабт шудаанд, дар нақли муаррихони юнонӣ ба шакли дигар омадааст. Муҳаққиқон бар онанд, ки онҳо аз дostonҳои ҳамосӣ ё афсонаҳои роиҷ миёни мардум гирифта шудаанд.

Намунаҳои аз катибаҳои шоҳони ҳахоманишӣ: *Аз маншури Куруши Кабир: «Манам Куруш, шоҳи ҷаҳон, шоҳи бузург, шоҳи тавонманд, шоҳи Бобил, шоҳи Сумер ва Акад, шоҳи ҷаҳор гӯшаи ҷаҳон. Писари Камбучия...*

*Артиши бузурги ман бо сулҳу оромӣ вориди Бобил шуд. Нагузоштам ранҷу озоре ба мардуми ин шаҳру ин сарзамин ворид ояд...*

*Ман бардадориро барандохтам, ба бадбахтии онон поён бахшидам, фармон додам, ки ҳама мардум дар парастии Худои худ озод бошанд ва ононро наозоранд...*<sup>2</sup>

Намунаҳо аз катибаи Дорюши Бузург дар Бестун:

*«Дорюшишоҳ гӯяд: Падари ман Виштосп, падари Виштосп Аршом, падари Аршом Ариёрамна, падари Ариёрамна Чиштиши, падари Чиштиши Ҳахоманиши аст...*

*Дорюшишоҳ гӯяд: Ин аст сарзаминҳое, ки ба бахшииши Аҳурамаздо ба ман расидааст ва ман дар ин сарзаминҳо шоҳ ҳастам: Порса (Порс), Бобируш (Бобил), Асуро (Ошур), Арабоя (Арабия)... Спарда (Испорт), Сорд (Лидӣ), Мода (Мод), Армияна (Армания)... Парсава (Порт), Зрака (Заранг\Систон), Ҳараява (Ҳирот\Ориён), Уворазмия (Хоразм), Бохтриши (Балх\Боктариё), Сугуда (Сугд), Гадораҳ (Қандаҳор), Сакая (Сако)... рӯйи ҳам 23 сарзамин».*

*«Дорюшишоҳ гӯяд: Аҳурамаздо ин шоҳиро ба ман дод. Аҳурамаздо маро ёрӣ дод, то ин подшоҳиро устувор созам. Ба хости Аҳурамаздо подшоҳиро дорам».*<sup>3</sup>

### 1.3. АДАБИЁТИ АВЕСТОӢ

Адабиёти авестой, чунонки аз номаш пайдост, марбут ба китоби динии зардуштиён «Авесто»-ст ва ба ин чихат забонero, ки ин китоби муқаддас ба он навишта шудааст, забони авестой номидаанд. Аксар бар онанд, ки ин забонро бар хилофи дигар забонҳои эронӣ наметавон ба ҳеч як аз қавмҳои эронӣ нисбат дод. «Авесто» дар

1. اتقضى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 31.

2. غياث آبادى، ر. تمدن هخامنشى، ص. 29.

3. غياث آبادى، ر. تمدن هخامنشى، ص. 53-54.

воқеъ, маҷмӯае аз матнҳои динист, ки дар давраҳои мухталиф, дар минтақаҳои мухталиф ва ба воситаи шахсони гуногун падида омадааст. Авестошиносон дастикам ду ғӯйиши мутафовитро дар он шиносӣ кардаанд: яке ғӯйиши «Авесто»-и куҳан, ё ба истилоҳ ғӯйиши гоҳонӣ ва дигаре ғӯйиши «Авесто»-и ҷадид. Ғӯйиши гоҳонӣ дар госоҳо (гоҳон ё готҳо), ки ҷамъан аз 17 суруд иборат буда, мансуб ба Зардушт аст, ба қор рафтааст. Қисматҳои дигар марбут ба ғӯйиши «Авесто»-и ҷадид аст.

Дар бораи замону макони зиндагии Зардушт ё ба эътиқоди бархе замону макони ривочи ғӯйиши гоҳонӣ низ ихтилофи назар вучуд дорад. Баъзе аз донишмандон ба пайравӣ аз таърихи суннатӣ, ки замони зиндагии Зардуштро 258 сол пеш аз ҷамлаи Александри Мақдунӣ медонанд, замони зиндагии ӯро поёни садаи ҳафтум ё оғози асри шашуми пеш аз мелод мешуморанд. Аммо гурӯҳи дигар бо таъна ба вижагиҳои куҳани ғӯйиши гоҳонӣ ва наздикии он ба санскрити ведоӣ замони зиндагии Зардуштро поёни ҳазораи дувум ё оғози ҳазораи нахустӣ пеш аз мелод донистаанд.<sup>1</sup> Қобили зикр аст, ки ғӯйиши гоҳонӣ аз порае ҷиҳатҳои куҳантар аз санскрити ведоӣ ба назар мерасад. Бинобар ин, аксар бар онанд, ки дидгоҳи дувум мақбул ва ба ҳақиқат наздик аст.

Бояд зикр кард, ки ҷуз китоби «Авесто» ва осори вобаста ба он ҳеч асари дигаре ба ин забон дар даст нест ва дар ҳуди китоби «Авесто» ишорае ба номи аслии ин забон нашуда ва ҳатто калимаи «Авесто» низ дар матнҳои авестой наомадааст. Танҳо дар давраи Сосонӣ ва дар китобҳои паҳлавӣ ба калимаи «Абистог» (дар арабӣ Абистог, Абистог ва дар форсӣ Абистог, Авистог, Вистог ва ғайра) ба назар мерасад. Дар ин китобҳо забони «Авесто»-ро «забони динӣ» низ номидаанд. Маънии дақиқи калимаи «Авесто» низ равшан нест, танҳо эҳтимол дода шуда, ки ба маънии «ситоиш» бошад.<sup>2</sup> Аз баррасии забоншиносӣ ва муқоисаи забони авестой бо форсии бостон аз як сӯ ва аз сӯи дигар, муқоисаи ин забон бо забонҳои шарқии давраи миёна, муҳаққиқон ба хулоса омадаанд, ки забони авестой мутааллиқ ба машриқи Эрон будааст. Имрӯз аксари донишмандон муътақиданд, ки ин забон ба навоҳии Осиёи Миёна, эҳтимолан ба ноҳияи Хоразм тааллуқ дошта ва мурод аз Эронвич дар «Авесто» ҳамин ноҳия будааст. Албатта, баъзе аз донишмандон ноҳияҳои дигар, монанди Систон, шимоли Хуросон (Марву Балх)-ро низ пешниҳод кардаанд. Дар ин масъала Аҳмади Тафаззулӣ ва Жола Омӯзгор батафсил маълумот додаанд.<sup>3</sup> Бино ба ривоёти зардуштиён, ки дар «Авесто» ва дигар китобҳои паҳлавӣ зикр шудааст, ҳамаи муҳтавои ин китобро Урмузд (Ахурамаздо) ба Зардушт илҳом ва иблаг кардааст. Нуктаи муҳимме, ки набояд аз назар дур дошт, ин

---

1. Бағибидӣ, Ҷ. زبان های ایران باستان//تاریخ جامع ایران، ص. 54.

2. تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 35.

3. آموزگار، ژاله و تفضلی، احمد. اسطوره زندگی زردست. تهران، 1370.

аст, ки номи паёмбари зардуштиён дар «Авесто» бар хилофи интизор ба сурати Zaraoustra омадааст, дар сурате, ки ин ном бино бар қаваиди овоии забони авестой бояд Zaratustra мебуд.<sup>1</sup> Вобаста ба ин нукта муҳаққикон ба хулоса омадаанд, ки номи паёмбар ба эҳтимоли зиёд ба забони бостонии дигаре ба ғайр аз авестоист, яъне, забони модарии Зардушт ва забони зодгоҳи ӯ будааст. Ба ин тартиб авестошиносон ба хулоса омадаанд, ки забони авестой забони зодгоҳи Зардушт набуда ва ин забон назди ориёиҳои эронӣ забони муқаддас ва динӣ ба шумор мерафтааст, на забони гуфтугӯии қавме ё қабилае. Аз ин сабаб Зардушт дар сурудаҳои ин забони муқаддасро ба ҷойи забони модарии худ ба қор бурдааст. Дар мавриди замони зиндагии Зардушт ва замону макони қадимтарин бахши «Авесто» донишмандон ихтилофи назар доранд.<sup>2</sup> Нуктаи қобили қабул он аст, ки вай эҳтимолан дар ҳудуди 1000 пеш аз мелод мезистааст. Ин замон силсилаи бо номи “Квай” (ё Кай ва ҷамъи он ба забони паҳлавӣ Каён) аз аҳолии Систон дар Эронвич ҳукумат доштанд, ки охириин подшоҳи он силсила Виштоспа (Vistaspa-Гуштосп) ном доштааст. Зардушт дар замони ин подшоҳ зуҳур ёфт ва дини худро бар вай арза кард.

Бино бар баъзе ривоятҳо, дар давраи Ҷоҳоманишиён ду нусхаи комил аз «Авесто» вучуд дошт, ки якеро дар ганҷи шоҳӣ ва дигареро дар Дизи нибишт - маркази ниғаҳдории асноди давлатӣ ниғаҳдорӣ мекарданд. Ин ду нусха дар давраи Александри Мақдунӣ ба дасти юнониён афтоду аз миён рафт. Нахустин қасе, ки ба гирдоварии бахшҳои «Авесто» иқдом кард, Балоши Ашқонӣ, ба эҳтимол Балоши аввал (Валаҳши аввал) буд. Пас аз вай чанд тан аз шоҳони Сосонӣ, монанди бунёдгузори давлати Сосониён Ардашери Бобакон, Шопури аввал, Шопури дувум ва Хусрави Анӯшервон фармони гирдоварӣ, тадвин, такмил ва бознигарии матнҳои «Авесто»-ро доданд. Кӯшиши донишмандон барои исботи вучуди матни мактуби «Авесто» дар давраи Ашқонӣ натиҷа надод.<sup>3</sup> Ин натиҷа авестошиносонро ба хулоса оварда, ки «Авесто» то давраи Сосониён сина ба сина нақл мешудааст ва ба эҳтимол дар замони шоҳаншоҳии Шопури дувум мӯбадони Порс хаттеро бар пояи таҳрири форсии миёна ва хатти “Забур”-и паҳлавӣ барои нигориши он ихтироъ кардаанд. Хатти авестой, ки истилоҳан “диндабира” ё “диндабирӣ” (хатти китоби динӣ) хонда мешавад, хатти алифбой бо 53 нишона аст ва аз рост ба чап навишта мешавад.

«Авесто»-и давраи Сосонӣ дорои 21 наск (китоб) буд ва ба се қисм тақсим мешуд: 1. Гоҳоник: шомили матнҳои Гоҳон; 2. Ҷодагмонасриг: шомили дуову вирдҳо ва зикрҳо; 3. Додиг: шомили қонунҳои динӣ. Пас аз ҳамлаи арабҳо бори дигар «Авесто»

---

<sup>1</sup>Бағийидӣ, Ҷ. زبان های ایران باستان، ص. 56.

<sup>2</sup>راشد محصل، محمد تقی. اوستا/تاریخ جامع ایران، ص. 131-135.

<sup>3</sup>همای، جلال الدین. تاریخ ادبیات ایران، ص. 7.

пароканда шуд, ба гунае, ки он чи имрӯз боқӣ мондааст, чаҳоряки «Авесто»-и даврони сосонист. Бино ба таҳқиқи донишмандон, «Авесто»-и кунунӣ дорoi панҷ наск аст:

1. Яснҳо (ниёишҳо): шомили ҳафтоду ду “ҳот” ё “ҳо”- пора, бахш, ки дар маросими таҳияву нисори афшурдаи гиёҳи хум кироат мешавад. Тавре ки зикраш рафт, 17 суруд аз ин 72 суруд “Гохон” номида мешавад, ки мансуб ба ҳуди Зардушт аст. Ясни 53 ба эҳтимол қадимтар аз дигар яснҳои гоҳонист ва ё ба суннати дигар тааллуқ дорад. Сурудҳои 35 то 41 мансуб ба шогирдони Зардушт аст.

2. Яштҳо (ситоишҳо): шомили 21 суруд, ки асосан дар ситоиши яздони аслии дини зардуштӣ ҳастанд, аммо мавзӯҳои маснӯии дигареро низ шомил мешаванд.

3. Виспарад (ҳамаи сарварон): шомили 24 карда (фасл), ки ба унвони мукаммали Яснҳо, бавижа дар оинҳои Наврӯз ва гоҳанборҳо (чашнҳои фаслии шашгона) хонда мешаванд.

4. Вандидод (қонуни дурӣ аз дев): шомили 22 фарқард (боб), ки бештари қонунҳои марбут ба таҳорат ва товони гуноҳон аст. Ин наск ягона наски «Авесто»-и сосонист, ки ба таври комил маҳфуз мондааст.

5. Хурда-Авесто: шомили дуоҳо ва зикрҳои кӯтоҳ, ки зардуштиён дар вақтҳои хос кироат мекунанд.

Илова бар ин панҷ наск чанд қитъаи дигар ба забони авестой боқӣ монда, ки иборатанд аз: а) Авгимадайчо, ки рисолае дар бораи марг аст; б) Пурсишниҳо, ки маҷмӯае аз пурсишҳову посухҳои динист; в) Фарҳанги уим евак, ки фарҳанги вожаҳои авестой ба форсии миёна аст; г) Нирангистон: шомили аҳкоми марбут ба оинҳои динӣ; д) Хирбадистон: шомили аҳкоми марбут ба хирбадони зардуштӣ; д) Қитъаҳои кӯтоҳе чун “Офарин Зардушт”, “Виштосп Яшт”, “Найранги оташ”, “Вайсонаск” ва чандин қитъаи беноми дигар, ки Аҳмади Тафаззулӣ дар бораи онҳо батафсил маълумот додааст.<sup>1</sup>

Авестошиносон матнҳои «Авесто»-и куниниро бар асоси қидмат ва махсусиятҳои он ба ду даста: 1) “Авесто”-и куҳан” ё худ “Авесто”-и гоҳонӣ” ва 2) “Авесто”-и ҷадид” ҷудо кардаанд.

**“Авесто”-и куҳан-“Авесто”-и гоҳонӣ.** Куҳантарин ва муқаддастарин бахши «Авесто» “Гохон” аз қисмати Яснҳо мебошад, ки сурудаҳои ҳуди Зардушт аст. “Гохон” ҷамъи “гоҳ” ба маънии суруд аст. Аксари муҳаққиқон бар онанд, ки “Гохон” қадимтарин бахш аз «Авесто» ва куҳантарин осори адабии мардуми эронитабор аст. “Гохон” шомили 17 суруд аст, ки дар «Авесто»-и имрӯза дар миёни “Яснҳо” қарор дорад ва яснҳои 27 то 34 ва 43 то 51 ва 53-ро ташкил медиҳад. “Гохон” шеър аст ва дар ин масъала ихтилофи назар нест. Ин сурудаҳо на танҳо аз назари адабӣ, балки аз ҷиҳати дар бар доштани тафаккуроти навини он рӯзгорон аҳаммияти вижае доранд ва нишондиҳандаи ақидаҳои аслии Зардуштанд. Дар “Гохон”

انتفضلى، تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 35-64.



Худои мутлақ Ахурамаздост ва амшоспандон чилваҳои хосси ӯянд, дар муқобил рӯҳи вайронкор ё Аҳриман қарор дорад. Муҳаққиқон дар шинохти комили ин сурудҳо ва андешаҳои Зардушт очизанд, мушаххасоти шеърӣ онҳо ба дурустӣ шинохта нашуда ва дар тарҷумаву шарҳи маънии вожаҳои ин сурудҳо ихтилофи назар доранд. Бо ин ҳама мушкилоти луғавӣ ва сарфию нахвӣи “Гоҳон” сабаби он намешавад, ки лутфу зебоии он даста аз сурудхоеро, ки маънии онҳо равшан аст, инкор кунем. Хусусан ҳангоме ки “Гоҳон”-ро бо он чи аз шеъри ҳиндуэронии он замон (монанди сурудҳои ведоӣ ва яштҳо) боқимонда муқоиса кунем, бештар ба бадеъ будани “Гоҳон” пай мебарем.<sup>1</sup> Аксар бар онанд, ки “Гоҳон” асли дини зардуштист ва матнҳои форсии миёна тарҷума ва шарҳу тавзеҳи онҳост. Матни “Занд”-и “Гоҳон” тарҷумаи калима ба калима ва тафсири аз муфассирони динист. Бояд зикр кард, ки тафсири мӯбадон бардошти суннатӣ ва гоҳ шахсии онҳоро дар бар дорад ва аз ин рӯ катъӣ ба назар намерасад.

Авестошиносон бар онанд, ки аз назари сохтор ва созмони дохилӣ шеъри гоҳонӣ шабоҳате ба ашъори ведоӣ дорад. Ҳар суруд дорои бандҳост ва ҳар банде абётеро бо теъдоди собити ҳичо дар бар дорад. Маҷмӯаи 17 “ҳо”-и “Гоҳон”-ро ба панҷ бахш тақсим карда ва ҳар яки онро ба номи калимаҳои оғозини он номгузорӣ кардаанд:

1. **Ахунавадгоҳ:** ҳои 28 то 43-ро ба ин ном номидаанд. Шумораи бандҳои Ахунавадгоҳ ба тартиби зер аст: “Ҳо”-и 28 то 30 ҳар як 11 банд ва “ҳо”-и 31 то 43 ба тартиби дорои 22, 16, 14 ва 15 банд. Ҳар як аз бандҳои Ахунавадгоҳ дорои се байт аст ва ҳар байт аз ду мисраи ҳафту нуҳхичой ташкил шудааст.

2. **Уштавадгоҳ** (ё Уштватгоҳ): Ин гоҳ “ҳо”-и 43 то 46-ро дар бар мегирад, ки ба тартиб дорои 16, 20, 11 ва 19 банд ҳастанд. Ҳар банд дорои панҷ байт ва ҳар байт аз ду мисраи чаҳору ҳафтхичой ташкил шудааст. “Ҳо”-и 43 ва 44 тарҷеъбанд аст, ба ин маънӣ, ки дар “ҳо”-и 43 байти нахуст дар бандҳои 5,7, 11, 13, 15 ва дар “ҳо”-и 44 байти аввал дар ҳама бандҳо, ба чуз банди 20 такрор шудааст.

3. **Спандмадгоҳ:** Ин гоҳ шомили “ҳо”-и 47 то 50 аст, ки ба тартиб дорои шаш, дувоздаҳ, дувоздаҳ ва ёздаҳ банд аст. Ҳар банд чаҳор байт дорад ва ҳар байт аз ду мисраи чаҳор ва ҳафтхичой ташкил шудааст.

4. **Вухушатроғоҳ:** Ин гоҳ як “ҳо” аст (“ҳо”-и 51), ки дорои 22 банд аст. Ҳар банд се байт дорад ва ҳар байт аз ду мисраи ҳафтхичой ташкил шудааст.

5. **Ваҳиштуяштгоҳ:** Дар ин гоҳ як “ҳо” аст (“ҳо”-и 53), ки дорои 9 банд мебошад. Ҳар банд чаҳор байт дорад. Ду байти аввал дорои ду мисраи ҳафт ва панҷхичоист, аммо бандҳои 3 ва 4 се мисраъ доранд, ки ба тартиб дорои ҳафт, ҳафт ва панҷ хичост.<sup>2</sup>

Бояд зикр кард, ки ба сабаби тағйире, ки дар фароғӯии ҳичоҳо ва вожаҳои авестой пеш омадааст, ҳеч як аз бахшҳои “Гоҳон” назми дақиқи ҳичоии зикршударо надорад. Аз сӯйи дигар, нигориши

<sup>1</sup> همان جا، ص. 37.

<sup>2</sup> راشد محصل، محمد تقی. اوستا/تاریخ جامع ایران، ص. 135-136.

«Авесто» дар замоне сураат гирифта, ки забони авестой забони мурда ва азбайнрафта будааст. Ихтилофи ҳичой, ки дар сурудҳои «Авесто» мебинем, аз ин ҷиҳат аст.

**«Авесто»-и ҷадид.** «Авесто»-и ҷадид шомили қисмате аз “Яснҳо”, “Виспарад”, “Хурда-Авесто” (ниёиш, гоҳ, сирӯза, офарингон), “Яштҳо”, “Вандидод” “Ҳодухтнаск”, “Авагамадайчо”, “Вайсонаск”, “Офарин пайғамбар Зардушт” ва “Виштосп (Гуштосп) яшт” аст. Бино ба таҳқиқи авестошиносон, дар ин бахшҳои «Авесто» бо дини зардуштии мутааххиртаре рӯ ба рӯ ҳастем. Пас аз Зардушт ва шояд дар ҳамон замони ӯ, бисёре аз андешаҳои қадими эронӣ ва ҳиндуэронӣ, ки дар ниёишҳову оинҳои динии худоёни қадим инъикос ёфта буд, ҳамроҳ бо устураву афсонаҳои ин худоён бо оинҳои динии пеш аз Зардушт бо ақидаҳои ин пайғамбар даромехт ва аз он матнҳои «Авесто»-и мутааххир ҳосил шуд.<sup>1</sup> Баъзе бар онанд, ки ақидаҳои, ки пас аз Зардушт бо гуфтаҳои ӯ омехта шуд, усулан писанди Зардушт набудааст ва танҳо алоқаи пойбандӣ ба суннатҳои қадим рӯҳониёни пайрави вайро бар он доштааст, то ин афкорро ба андешаҳои ӯ биомезанд. Аз сӯйи дигар, набудани зикри номи худоёни қадими ҳиндуэронӣ ва оинҳои парастии онҳо дар “Гоҳон” далели қатъӣ барои муҳолифати Зардушт бо ин афкор нест. Зардушт дар “Гоҳон” бар он аст, ки усули андешаҳо ва навоариҳои худро баён кунад ва он чи дар мадди назар дошта, эҳтимолан тағйири тарзи андешаи мардум нисбат ба олами улҳият аст, на хосатан даҳлат дар оини парастии худоён, ҷуз мавридҳои, ки писанди ӯ набудааст, монанди қурбонии бедодгаронаву ифротӣ.<sup>2</sup>

Дар таълимоти Зардушт Аҳурамаздо бузургтарин худост, ки дар миёни шаш амшоспанд қарор дорад. Зардушт дастае аз худоёни ҳиндуэронӣ дайваҳо (девон)-ро берун кард. Парастии ин худоён, ки дар ақоиди пеш аз Зардушт буданд, дар оини зардуштӣ нақше надорад, балки ба ҳайси қувваҳои аҳриманӣ шинохта мешаванд. Бино ба гуфтаи Аҳмади Тафаззулӣ, агар Зардушт бо парастии худоёне ҳамчун Меҳр ё бо маросиме ҳамчун фишурдани хум (авестой: хаума) ва ғайра муҳолифати асосӣ дошт, ин гуна худоён ва оинҳои мушкил метавонистанд замоне пас аз ӯ дар қолаби дини зардуштӣ, ки аз муҳофизакортарин динҳост, роҳ ёфта бошад.<sup>3</sup>

Илова бар ин, «Авесто»-и ҷадид ҳамчунин шомили дуоҳову зикрҳост, ки пас аз Зардушт таълиф шудааст.

---

<sup>1</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 39.

<sup>2</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 40.

<sup>3</sup> همان جا، ص. 41.

### I.3.1. Сайри таърихии «Авесто» ва арзиши илмию адабии он<sup>1</sup>

«Авесто» куҳантарин асари динӣ, адабӣ ва таърихии мардуми эрониҷадо мебошад. «Авесто»-е, ки имрӯз дар даст аст, самари саъю талоши зардуштиёни Ҳиндустон аст, ки бар дини бостонии ниёкони худ содик мондаанд ва ин китоби муқаддаси зардуштиро, ки фарҳангу тамаддун ва забони куҳани эронӣ ва боарзиштарин санади хаттӣ Эрони Бостон аст, нигоҳ доштаанд. Китоби «Авесто» чандин бор дар кишварҳои гуногун, чун Ҳиндустону Эрон, Тоҷикистон ва кишварҳои Аврупо ба нашр расидааст, ки ба назари авестошиносон, харчанд аз назари суннат арзишманданд, аммо аз диди илмӣ-интиқодӣ, чунонки бояд, мустанад нестанд. Дақиқтарин ва илмитарин ҷопе, ки дар пажӯҳишҳои илмӣ аз он истинод мешавад, нашрест, ки Карл Фридрих Гелднер, авестошиноси олмонӣ пас аз муқоиса ва баррасии беш аз 130 дастнависи мухталиф омода кардааст.<sup>2</sup>

Пажӯҳандагон калимаи «Авесто»-ро ба тарзҳои гуногун шарҳу тавзеҳ додаанд. Баъзе онро аз решаи ҳиндуаврупоии «вид» ба маънии «дониш» гирифтаанд. Дар ин ҳолат маънии «Авесто» ба маънии номи китоби муқаддаси Ҳинди бостон – «Ведо» мувофиқ меояд. Дар забони паҳлавӣ «Авесто» ба шакли «Апастак» (Упастак) омадааст, ки он маънои «матни асосӣ», «бунёдӣ»-ро медиҳад. Дар «Бундаҳишн» «Авесто» бо номи «дин»- «китоби мазҳабӣ», «қонуни динӣ» омадааст. Дар китобҳои таърихии давраи исломӣ ба забонҳои арабӣ ва форсӣ, осори бадеии манзуму мансур навишти гуногуни «Авесто» – Ависто, Абастоғ, Абасто, Ависто, Апасто, Афасто, Бустоқ, Исто, Усто, Васто, Сито ва ғайра ба назар мерасад.<sup>3</sup>

Шоирони аҳди Сомонӣ, ки дорои ифтихори миллӣ буданду ба шовинизми арабӣ нафрат доштанд, аз фарҳангу адабиёти аҳди бостон, хосса аз «Авесто» ва «Занд»-у «Позанд» ба ифтихор ёд кардаанд. Чунончи, дар як байти Рӯдакӣ номи «Авесто» ба шакли «Абисто» омадааст:

*Ҳамчу муаммот фахру ҳиммати ӯ шарҳ,  
Ҳамчу Абистот фазлу сирати ӯ Занд.<sup>4</sup>*

<sup>1</sup>Брагинский И.С. М. Диловаров. Авесто //ЭАСТ, ҷ 1.-Душанбе, 1988,-с., 44-47; Диловар М. Авесто //ЭМТ, ҷ., 1,-Душанбе, 2011.-С. 115-119; -65. تفضلی، تاریخ ادبیات، ص. 72.; 131-176. اوستا/تاریخ جامع ایران، ص. 72.; 131-176.

<sup>2</sup>Geldner R.A. Avesta, the Sacred Book of the Pariss, vol. 1896, III, Stuttgart. راشدمحصل محمد تقی، اوستا، ص. 131.

<sup>3</sup>تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 35.

<sup>4</sup>دیوان ابو عبدالله جعفر ابن حکیم ابن عبدالرحمان ابن آدم رودکی سمرقندی، تحیه، تصحیح، پیشگفتار و حواشی قادر رستم، تهران، 1391، ص. 32.

Доир ба мавҷудияти матнҳои қадимии динӣ дар байни зардуштиён таърихнависони Юнону Рими Қадим ишораҳо кардаанд. Масалан, таърихнигор Плиний ба Гермипп, ки дар асри 3 то мелод умр ба сар бурдааст, така карда мегӯяд, ки навиштаҳои муғон (зардуштиён) гӯё 2 млн. байт будааст ва мундариҷаи онҳо дар китоби Гермипп сабт шудааст.<sup>1</sup>

Нахустин матнҳои «Авесто» дар ҳазораи дувуми то мелод, тақрибан миёни асрҳои XII– X пайдо шудаанд. Дар ҳамин давра китобҳои муқаддаси ҳиндувони қадим – «Ведоҳо» («Ригведо», «Атхарваведо», «Самаведо», «Яҷурваведо») ба вуҷуд омадаанд. Аз ҷиҳати мазмуну муҳтаво ва мавзӯҳои дарбаргирифтааш «Авесто» ба «Ведоҳо», махсусан «Ригведо» бисёр наздикӣ дорад. Забони авестой ҳам аз бисёр ҷиҳатҳо ба забони санскрит монанд аст. Бисёр муаммоҳои матнҳои авестой ва ҷойҳои аз ҷиҳати маъно норавшани «Авесто» дар муқоиса бо матнҳои санскрит ҳал карда шудаанд. Дар таҳқиқоти олимони авестошинос, аз ҷумла М. Бойс, Г. Нёли, Инслер ва дигарон масъалаи замони пайдоиши «Авесто» ва ба «Ригведо» аз ҷиҳати замон наздик будани он ба миён гузошта шудааст.<sup>2</sup>

Бино ба андешаи баъзе аз авестошиносон, макони пайдоиши «Авесто» сарзамини Осиёи Миёна, Хуросон (Эрон) ва Бохтар (Афғонистон ва Тоҷикистон) мебошад ва тақомули баъдии «Авесто» дар ҷануби Эрон (Форс) ба амал омадааст. Мувофиқи анъанаи зардуштия, осори дини зардуштии ба забони форсии миёна, забони форсии дарӣ, санскрит, гучаротӣ ва ғайра навиштаи зардуштиён ва порсҳои Эрону Ҳиндустон «Авесто» дар ҳазораи 1 то мелод бо зуҳури Зардушт ба миён омадааст. Бино бар он ки дар матнҳои давраи миёна омадааст, Зардушт ба фармони шоҳ Виштосп «Авесто»-ро, ки аз 1200 фрагард (боб) иборат буд, ҳамроҳ бо тафсири он («Занд) ба диндабира (хатти динӣ) дар тахтаҷаҳои тилоӣ навишта, дар ганҷи шоҳӣ ё хазинаи оташқадаи Самарқанд ниҳод.<sup>3</sup> Аҳмади Тафаззулӣ бар он аст, ки ин матлаб, ба эҳтимол сохтаи дасти мӯбадони зардуштии ҷануби Эрон аст, аммо зардуштиён ба ҳасби суннат онро пазируфтанд.<sup>4</sup> Дар «Динкард» омадааст, ки ба фармони Виштосп матни «Авесто» навишта шуда, як нусхааш дар Шиз (Ганҷи Шойгон – назди кӯли Урумия) ва дигараш дар Дизи нибишт (dizinibist-китобхона, маркази асноди давлатӣ)-и Истахр, нусхаҳои дигараш дар китобхонаҳову оташқадаҳои шаҳрҳои дигар ҷой дода шудаанд. Дар ривояти дигар аз «Динкард» омада, ки Доро писари Доро дастур дод, ки «Авесто» ва

<sup>1</sup> Брагинский И.С. Из истории таджикской и персидской литературы.-С. 102.

<sup>2</sup> Брагинский И.С. Китоби зикршуда, -С. 103.

<sup>3</sup> عربان، سعيد. متون پهلوی. تهران، 1371، ص. 64.

<sup>4</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 65.

«Занд» дар ду нусха таҳия карда шаванд. Тибқи ривоятҳои осори паҳлавӣ, пас аз ҳучуми Искандар юнониён як нусхаи «Авесто»-ро сӯзонданд ва нусхаи дигарро ба кишвари худ бурда, ба юнонӣ тарҷума карданд. Искандари Мақдунӣ солҳои 30 қарни 4 то мелод ҳудуди давлати Ҳахоманишиёнро забт кард ва ба империяи худ пайваст. Пас аз вафоти Искандар (323 то мелод) давлати юнонии Бохтар ё Селевкиҳо (байни солҳои 140 – 129 то мелод) таъсис ёфт ва онро Кӯшониён аз миён бардоштанд, то ахиран Ашкониён (247 то мелод – 224 мелодӣ) дар ин марзу бум ҳукумат доштанд. Аз он замон осори хаттӣ хеле кам боқӣ мондааст.

Балоши Ашконӣ (ба эҳтимол Балоши аввал) фармон дод, ки он чи аз «Авесто» ва «Занд» ба сурати мактуб ё шифохӣ боқӣ монда буд, гирд оваранд, то ин ки «Авесто» чун шакли собиқаш барқарор гардад. Дар замони Ардашери Бобакон матни «Авесто» бо сарвари мӯбади мӯбадон Тансар барқарор ва таҳрир карда шуд. Бо фармони Шопури аввал қисмҳои марбут ба илмҳои нучум, тиб, ҳисоб ва фалсафа, ки аз матни таҳрири Тансар берун монда буданд, ба «Авесто» дохил карда шуданд. Шопури писари Ҳурмузд бори дигар ба таҳриру такмили «Авесто» фармон дод ва ин корро Озарбади Маҳраспандон ба анҷом расонд. Шопур дастур дод, то матнҳои гирдоваришуда озмуда шаванд ва барои ин кор мӯбади мӯбадони замони ӯ Озарбоди Маҳраспандон тан ба вар (озмуни динӣ) супурд. Ин вар чунон буд, ки охани гудохта бар синаи ӯ рехтанд, аммо газанде ба ӯ нарасид. Бо ин кор зардуштиён ба дурустии матни фароҳамомадаи «Авесто» имон оварданд.<sup>1</sup> Дар замони Хусрави Парвиз матни «Авесто» боз ҳам таҳрир шуд ва ба забони паҳлавӣ тарҷумау тафсир гардид, ки онро «Занд» мегуфтанд. Чунин маълумот дар осори дигари динии паҳлавӣ аз қабилҳои «Ардавирофнома», «Бундаҳишн», «Номаи Тансар» ва ғ. омадааст. Таърихнависони арабзабон ва форсизабон (Табарӣ, Масъудӣ, Ибни Балхӣ ва дигарон) низ дар осори худ ин гуна ҳикояту ривоятҳоро овардаанд. Масалан, Ибни Балхӣ дар «Форснома» мегӯяд: «Чун Зардушт биёмад, Виштасф ӯро ба ибтидо қабул накард ва баъд аз он ӯро қабул кард ва китоби «Занд» оварда буд, ҳама ҳикмат ва бар дувоздаҳ ҳазор пӯсти гови даббоғишуда навишта буд ба зар. Ва Виштасф онро қабул кард. Ва ба Истаҳри Порс кӯҳест, Кӯҳи Нибишт гӯянд, ҳама суратҳо ва кандакорихо аз санги хоро кардаанд ва осори аҷиб андар он намуда ва ин китоби «Занду Позанд» ба он ҷо ниҳода буд».<sup>2</sup>

---

<sup>1</sup> راشد محصل، محمد تقى. اوستا، ص 164.

<sup>2</sup> Лондон, 1921. ابن بلخى. فارسنامه. به سعى و اهتمام و تصحيح گای لیستراج و رینولد آل نیکلسن. 2  
Брагинский И.С. ва Диловаров. Авесто. -С. 45.

Аз ахбори сарчашмаҳо чунин бармеояд, ки дар давраи Ашкониён кӯшише барои навиштани «Авесто» сурат гирифт ва дар давраи Сосониён он дар чаҳор марҳала идома ёфтааст. Ба таъбири дигар, муаллифони давраи Сосонӣ чунин мепиндоштанд, ки агар «Авесто» китобат шавад, ба замони Зардушт бозмегардад. Шохони ашконӣ ва сосонӣ ҳар як ба навъе ба гирдоварии матнҳои парокандаи он иқдом карданд. Ишораҳои дар «Номаи Тансар» ва «Таърихи Табарӣ» ба ин мавзӯ шудааст, аммо аксар бар онанд, ки ин бовар пояи илмӣ надорад.<sup>1</sup> Баъзе авестошиносон бар он андешаанд, ки дар замони Ҳахоманишиён «Авесто» ба сурати мактуб вучуд нашофтааст, ки Искандар битавонад онро бисӯзонад. Он чи ҳам дар бораи гирдоварии «Авесто» дар замони Ашкониён ва ибтидои давраи Сосониён гуфта шудааст, метавонад гирдоварии ривоятҳои шифоҳӣ буда бошад. Гуруҳи дигар бар онанд, ки «Авесто» дар давраи Ашконӣ ба хатте баргирифта аз оромӣ ба нигориш даромада буд. Агар чунин кор сурат гирифта бошад ҳам, ҳеч таъсире аз худ бар ҷой наниҳодааст. Ба қавли муаллифи китоби «Шигифтиҳои Систон», «наскҳои «Авесто» дар миёни дудмонҳои некон (зардуштиён) пайваста бар ҷой монд, пас Искандар мӯбадонро гирифтӯ бидушт ва яке аз наскҳои «Авесто»-ро, ки «Буғнаск» ном (дошт), ҷавони систонӣ ба хотир супурд ва бад-ин гуна китоби дин ба Систон бозгашт ва ҷуз дар Систон дар ҷойҳои дигар онро дар сина насупурданд».<sup>2</sup>

«Авесто» дар замони Сосониён 348 бобро дар бар мегирифт ва ба 21 наск (китоб) тақсим карда шуда буд. Наскҳои 1 – «Судкор-наск» (накӯкорӣ), 10- «Виштасп-састо-наск» (дар бораи шоҳ Гуштосп, қабул гардидани дини зардуштӣ ва мубориза ба муқобили Арҷосп), 12- «Читрадад-наск» (ривоятӯ устураҳо аз замони Каюмарс то Зардушт) аҳаммияти адабию бадеӣ доранд. Дар наскҳои дигар аз масъалаҳои дини маздаясно, офариниши олам, дӯзаҳу бихишт, рӯзи растохез, Зардушт ва ҳаёти ӯ, нучум, тиб, ҳуқуқ ва ғайра сухан мерафт. Мувофиқи ҳисоботи олими англис Э. Вест, «Авесто»-и замони Сосониён тақрибан 345 000 калимаро дар бар мегирифтааст.<sup>3</sup>

Ҳамонандии ҳарфҳои алифбои авестой бо ҳарфҳои паҳлавӣ баъзе аз муҳаққиқонро ба ин натиҷа оварда, ки тадвину танзими алифбои авестоиро ба қарни чаҳоруми мелодӣ, яъне, замони ҳукумати Шопури дувум, нисбат диҳанд, зеро дар ин давра зардуштиён бо будоӣён, масеҳиён, монавиён дар рақобати шадид буданд ва мекӯшиданд, ки монанди онҳо худро соҳиби китоб нишон диҳанд. Баррасии тадқиқоти авестошиносон чунин натиҷа медиҳад, ки «Авесто» дар давраи то

<sup>1</sup> Bailey, H.W., Zoroastrian Problems in the Ninth Century Books. Oxford, 1971. pp 166; 56. نامه تنسر به گشنسپ، به کوشش، مجتبی مینوی، ج. 2، تهران، 1354.

<sup>2</sup> عریان، سعید. متون پهلوی، ص. 65-69: تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 70-71.

<sup>3</sup> West, E.W. 1880 (a): Pahlavi texts, I, SBE, V, Oxford. نقل از اشدری، ج. دانشنامه مزدیسنا. تهران، 1381، ص. 36.

мелод, агар китобат шуда бошад, эҳтимол ба хатти оромӣ навишта шуда буд ва дар замони Сосониён хатти махсусе дар асоси хатти оромӣ барои сабти матнҳои «Авесто» ихтироъ гардид, ки дар он қариб тамоми овозҳои нутқ ифода меёбанд. Пас аз ҳучуми арабҳо зардуштиён дучори таъқиб гардиданд ва китоби онҳо ҳам парокандаву парешон шуд. Зардуштиёни Эрон аз таъқиби арабҳо ба Ҳиндустон гурехтанд ва пас аз саргардониҳо дар иёлатҳои Мумбай ва Гучарот сокин гардиданд. Зардуштиён, ки дар Ҳиндустон онҳоро «порсҳо» мегӯянд, ҳамроҳи худ «Авесто» ва дигар осори динияшонро оварданд. Дар байни онҳо ва зардуштиёни Эрон омӯзиши «Авесто» идома ёфт ва онҳо якҷанд бор ин китобро нусхабардорӣ карда, аз насл ба насл гузаронданд. Қадимтарин нусхаи дастнависи «Авесто», ки то замони мо расидааст, ба соли 1278 тааллуқ дорад.

«Авесто»-и то замони мо расида бар мабноси бахшҳои мавҷуди он аз панҷ қисм – «Ясно», «Яштҳо», «Виспарад», «Вандидод», «Хурда-Авесто» иборат аст. Ҳамчунин китобҳо ва қитъаҳои пароканда, монанди «Пурсишҳои», «Аугемадаеча», «Нирангистон», «Ҳодухт-наск» низ маҷмӯаҳо, монанди «Висо-наск», «Виштосп-яшт», «Офарин Зардушт» ва «Ниранги оташ» вомерхӯранд, ки ба забони авестой навишта шуда, ба шумори осори адабиёти авестоиянд. Мувофиқи ҳисоби Э. Вест, маҷмӯи калимаҳои қисмҳои боқимондаи «Авесто» ба 83 ҳазор мерасад.<sup>1</sup> Аз ин қисмҳо «Вандидод» наски 19-уми «Авесто»-и замони Сосониён мебошад. Дар «Ясно» қадимтарин матни «Авесто»- «Ғохон» ҷой гирифтааст, ки муаллифаш худи Зардушт аст. Се қисми «Авесто» – «Ясно», «Виспарад», «Вандидод» дар баъзе дастнависҳо баъзан чун қисмҳои алоҳидаи мустақил, дар бархе дастнависҳо ба ҳамдигар алоқаманд мебошанд.

Мазмуну муҳтавои «Авесто» хеле ғанӣ ва гуногунранг аст. «Авесто» қомусест, ки дар он зиндагӣ ва омолу кирдор, тарзи ҳаёти мардуми қадими эронинажод, донишҳои андӯхтаи онон дар соҳаҳои гуногуни илм – фалсафа, ҳуқуқ, тиб, ҷуғрофия, ҳисоб, нучум, таърих, забону адабиёт ва ғайра инъикос ёфтааст. Дар «Авесто» маълумоти муфидеро оид ба таърих, маданияти модӣ ва маънавии аҳолии қадимии Осиёи Миёна ва кишварҳои дигар, дар бораи дин, асотир, ҳамосаҳои қаҳрамонии онон ва ғайра дарёфта мумкин аст. «Авесто» ғайр аз фармоиши маросими мазҳабӣ, унсурҳои ибтидоии илмӣ, тасаввуроти қонунгузорӣ, маҷмӯи дастурҳои ақидавӣ (динӣ ва фалсафии ибтидоӣ), ахлоқӣ ва зебоишинохтиро низ дар бар гирифтааст. Маълумоти ҷуғрофӣ дар боби 1-уми «Вандидод» фароҳам омадаанд. Дар ин ҷо аз 16 кишвари офаридаи Ахурамаздо, аз қабилҳои Суғд, Марв, Бохтар (Балх), Нусай (миёни Балху Марв), Ҳирот ва ғайра сухан меравад. Фаргарди дувум достонест дар

<sup>1</sup> همان کتاب، ص. 36.

бораи Йима (Чамшед), ки ба сабаби зиёд шудани мардумону чорпоёни кишвараш ва тангӣ кардани замин барои онҳо, марзу буми кишварашро бо ёрии чӯбдасти тилоии худ васеъ мекунад. Ин боб инъикоскунандаи лаҳзаҳои таърихи қадимии мардуми ориёӣ, ҳаракати онҳо аз кишвари аслияшон ба тарафҳои ҷануб бо мақсади дарёфти ҷойҳои нави зисту рӯзгузаронии худашон ва дарёфти ҷароғоҳҳои нав барои чорпоёнашон мебошад. Дар «Авесто» масъалаҳои ҳуқуқ низ матраҳ гардидаанд. Дар фарғарди 4-уми «Вандидод» омадааст: «Касе, ки аз бозгардонидани сунурдае ба дорандааш худдорӣ кунад, кирдорааш бад-он монад, ки он сунурдаро дуздида бошад...».<sup>1</sup> Барои задани касе, агар вай беҳуш шавад, устухоне аз вай бишканад, хуни вай равон шавад, осеби сахте расонидан, шикастани аҳду паймон ва ғайра ҷазоҳои гуногун таъйин гардидааст. Масъалаҳои экология (тоза нигоҳ доштани обҳо, замин), тиб, риояи гигиена, пешгирии бемориҳо, табобати бемориҳои гуногун, пизишк ва қору аъмоли ахлоқии ӯ, покии андешаву гуфтору кирдори ӯ дар «Вандидод» матраҳ гардидаанд. Аз ҷумла дар фарғарди 7-ум омадааст, ки пизишк пеш аз ҷарроҳӣ кардани инсон бояд се бор ин гуна ҷарроҳиро дар тани ҷонварон биозмояд. Дар фарғарди 20-ум аз бемориҳои он давра, ки офаридаҳои Аҳриман буданд ва аз табиби нахустин Трита сухан меравад.<sup>2</sup>

Таркиби иҷтимоию ҳудудии аҳолии қадими Осиёи Миёнаву Эрон мувофиқи «Авесто», ба се гурӯҳи иҷтимоӣ – чорводору барзгарон, лашқарӣён ва рӯҳонӣён тақсим шудааст. Аз ин маълумоти “Авесто” чунин бармеояд, ки қавмҳои ориёӣ дар даврони зиндагии шубонӣ бадабӣ ва ҷодарнишинӣ ба се табақаи иҷтимоӣ тақсим мешуданд: ҷанговарон, рӯҳонӣён ва ҷӯпонон, ки аслан дар як радиф буданд ва ҷандон фосолаи амике онҳоро аз ҳам ҷудо намекард. Таҳаввули иҷтимоие, ки баъдҳо сурат гирифт, яъне, табдили ҳаёти кӯчӣ ба зиндагии кишоварзӣ, ки садсолаҳо тӯл кашидааст, дар системаи ҳаёти иҷтимоии онҳо саҳт муассир будааст ва табақаҳо аз ҳам ҷудо шуданд: 1. Рӯҳонӣён, ки иҷрои маросими диниро ба уҳда доштанд. 2. Ашрофу сарварони қабила ва ҷанговарон ва 3. Барзгарони деҳот, ки ба кишоварзӣ ва ҷӯпонӣ машғул буданд. Муҳаққиқон пайдоиши табақаи пешаваронро, ки дар “Авесто” аз онҳо ба номи хутухш (hutoxs) ёд шудааст, натиҷаи тақомули ҳамин таҳаввули иҷтимоӣ ва интиқоли иқтисоди шубонӣ ба маишати кишоварзӣ медонанд.<sup>3</sup>

Раҳой аз ҳаёти кӯчию ҷӯпонӣ ва вобастагии ориёӣҳо ба замини хунари кишоварзӣ дар эътиқоди динӣ ва маросиму одоби динии онҳо таъсири амиқ гузоштааст. Ҳамин таҳаввули зиндагӣ сабаб шуда, ки ба тадриҷ дар баробари худоёне чун Митро (худои галаву ҷароғоҳ), ки ба зиндагии шубонӣ марбут аст, худои ҳақим Аҳурамаздо, ки худои бонии назму тартиби иқтисоди рустой ва кишоварзӣ буд,

<sup>1</sup> Диловаров М. Авесто.-С.116.

<sup>2</sup> Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

قترابی، سیدمحمد. نگاهی به تاریخ و ادبیات ایران. ص.17.



пайдо шавад ва ба тамоми худоёни онҳо бартарӣ ёбад. Муҳтавои асосии таблиғоти «Гоҳон»-и «Авесто» аз даъват барои пурқувват кардани ҷамоаи чорводорону барзгарони муқимӣ, зарба задан ба ҳучумҳои бодиянишинон ва истехком додани ҳокимияти «арта вахишта» («беҳтарин тартибот»)-и рӯҳониёну пешвоёни ҳарбӣ – сипаҳсолорон иборат аст, ки ибтидои давлатдорӣ мебошад.<sup>1</sup>

«Авесто» агар барои зардуштиён асоси дин ва дарбаргирандаи намозҳо, ниёишҳо, ситоишҳо ва аҳком аст ва аз сӯйи дигар, санадест бисёр арзишманд аз гузаштаи қавмҳои эронӣ ва саршор аз никоти устурай, таърихӣ, фарҳангӣ ва забонию адабӣ. Дар ин китоби муқаддас, ки муҳимтарин сарчашма доир ба таърих ва низоми динии аҷдоди мардуми ориёитабор, аз ҷумла халқи тоҷик аст, унсурҳои фалсафӣ акс ёфтаанд. Ба ин унсурҳо тасаввуроти бадеию эстетикӣ ва ахлоқӣ вобастаанд. Аҳаммияти «Авесто» чун асари бадеӣ ва яке аз асарҳои адабиёти бостони мардуми эронинаҷод, аз ҷумла ниёғони халқи тоҷик хеле бузург аст. Ба воситаи «Авесто» асотир, ривоятҳо, қиссаҳои достонҳои қадим, намунаҳои эҷодиёти шифоҳии халқ то замони мо расидаанд. Қаҳрамонони асотирӣ, сужаи достонҳо дар бораи онон аз қадимулайём дар байни халқ маълуму машҳур буданд ва аз забон ба забон гузашта, маҳфуз мондаанд. Аз асотирҳои достонҳои «Авесто» муаллифони осори адабию таърихӣ асрҳои миёна истифода кардаанд. Асли чехраҳои асотирӣ «Авесто», чун Ҳаошйанҳа, Тахма Урупа, Йима Хшаета, Гайа Маретан, Траетаона, Ажи Дахака ва ғайра дар қисми асотирӣ «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ ба шакли Ҳушанг, Тахмураш, Ҷамшед, Каюмарс, Фаридун, Заҳҳок ба назар мерасанд. Сужаи баъзе порчаҳои «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ ба сужаи асотирӣ ривоеҳои «Авесто» хеле наздик аст. Асотирҳои достонҳо, ривоятҳои «Авесто» дар осори санъати рассомӣ, пайкарасозӣ ва ғайра инъикос ёфтаанд. Дар «Авесто», махсусан дар қисми «Ясно» пораҳо ва ҷумлаҳои андарзӣ ба назар мерасанд. Боби якуми «Ясно» бо ҷумлаи «*Роҳ яжест*» (*ва*) *он* (*роҳи*) *ростӣ*, *ҳамаи дигар* (*роҳҳо*) *бероҳа* (*аст*)» ба охир расидааст.<sup>2</sup> Дар ҷойҳои дигар омадааст: «*Беҳрӯзӣ касеро бод, ки аз ӯ ба ҳар қасе беҳрӯзӣ расад*», «*Қасе газандеро ангега шавад, ҳамаи газанд бад-ӯ расад*»<sup>3</sup>. Дар боби 65 «Ясно» (бандҳои 7 – 8) обҳои ситоиш шудаанд:

*Эй обҳои нек! Эй беҳтарин офаридагони Маздо!  
Об аз он бадандеи мабод!  
Об аз он бадғуфтор мабод!  
Об аз он бадқирдор мабод!  
Об аз он дӯздин (бевиҷдон), дӯстозор,  
муғозор, ҳамсоязор ва хонаводаозор мабод!..<sup>4</sup>*

<sup>1</sup> Диловаров М. Авесто.-С. 116.

<sup>2</sup> Диловаров М., асари мазкур.-С.117.

<sup>3</sup> Ҳамаи ҷо, ҳамаи саҳифа.

<sup>4</sup> Диловаров М. Авесто, -с.,117.

На танҳо дар мухтавои «Авесто», балки дар шакли шеърӣ он, забон ва воситаҳои адабияш унсурҳои адабиёти шифоҳиро дарёфттан мумкин аст. Рӯҳониён барои бештар таъсир расондан ба пайравони худ аз шакли шеърӣ ва забони содаи адабиёти шифоҳӣ истифода кардаанд.

Дар «Авесто» таваҷҷуҳ ба сухан (гуфтор) ҳамчун қувваи асосии таъсирбахш (ғояи «Мантра спента» – «Сухани муқаддас») мақоми хос дорад. Сухан дар силсилаи сегонаи ахлоқи дини зардуштӣ: «Пиндори нек, гуфтор (сухан)-и нек, кирдори нек» дар марказ қарор гирифтааст. Дар «Авесто» санъатҳои бадеии гуногун – ташбеҳ, такрор, истиора, сачъ, тародуф, суолу ҷавоб, таносуб ва ғайра бисёранд. Такрор яке аз маъмултарин санъатҳои бадеӣ дар «Авесто» мебошад. Хусусияти асосии поэтикаи «Авесто» истифода аз санъати тазод аст. Ин ҷиҳати «Авесто» аз таълимоти зардуштия, ки дуалистӣ буда, дар он муборизаи қувваҳои неку бад мавқеи муайян доранд, бармеояд. Хусусияти услубии ҷолиби диққати «Авесто» он аст, ки дар асар ду навъ калимаҳо, яке барои ифодаи офаридаҳои қувваи нек ва дигаре барои махлуқоти бад истифода шудааст. Ин хусусият таъсири каломии авестоиро бештар кардааст. Масалан, калимаи «даст» нисбат ба офаридаи нек, «чангол» ҳангоми аз махлуқоти бад ё дев ёд кардан ба кор меравад.<sup>1</sup>

Авестошиносон бар онанд, ки қисмҳои асосии «Авесто» – «Гохон» ва «Яштҳо» манзум буда, дорои вазни шеърӣ (ҳиҷоӣ) мебошанд. Гоҳи нахуст ҳафт ҳот аз ҳотҳои «Яснаҳо» аст. Гоҳи нахуст аз пораҳои себайтӣ ташкил шуда, ҳар байт 16 ҳиҷо дорад. Ҳашт ҳиҷо дар мисраи аввал ва нӯҳ ҳиҷо дар мисраи дуюм омадааст. Аксари мисраҳои «Яштҳо» аз ҳашт ҳиҷо иборатанд (баъзан 10 ё 12 ҳиҷо низ вомеранд).<sup>2</sup>

Дар қисмҳои дигари «Авесто» низ пораҳои манзумро дарёфттан мумкин аст. Дар «Гохон» ба ғайр аз вазни ҳиҷоӣ савт (тоника) низ вучуд дорад. Дар қисмҳои манзуми «Авесто» унсурҳои қофия низ ба назар мерасанд. Дар «Авесто» истилоҳоти махсус оид ба банду мисраъ ва калима мавҷуданд. Бобҳои «Ясно» «ҳаити» (ҳо, хот), азони «Видевдат» «фрагард» (фаргард) ва «Яштҳо» «карда» ном доранд. Банд ба истилоҳи «Авесто» «вачасташтай» (аз ҷузъҳои вача – вожа, сухан, гуфтор ва таш – тарошидан, буридан; таш – афзори ҷӯбтарошӣ аз ҳамин ҷост) мебошад. Як мисраъ дар «Авесто» «афсман» ном дорад. Маънии луғавии ин калима «андоза», «миқёс» аст ва дар забони паҳлавӣ ба шакли «патман» омадааст. Дар «Гохон» «афсман» ба маънии «мавзун» (гуфтор, сухани мавзун) ба кор рафтааст. Зардушт дар як банди ҳоти 46 «Ясно» ба Аҳурамаздо мегӯяд: «...Ман ба ту бо суханони мавзун мурочиат менамоям, на бо суханони

<sup>1</sup>Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

<sup>2</sup>Абуалқасимӣ, محسن. شعر در ایران پیش از اسلام. تهران، 1373، ص.8.

номавзун» («афсман... анафсман»)). Як калима, ки аз маҷмӯи онҳо мисраъ ба вучуд меояд, «вачангха» – «вожа» ном дорад. Як ҳиҷо «пад» номида мешавад. Аз назари сохторӣ шеърӣ гоҳонӣ ба шеърӣ ведой монанд аст. Ҳар суруд дорои бандҳост ва ҳар банде байтҳоеро бо теъдоди собити ҳиҷоҳо дар бар дорад.<sup>1</sup>

Дар мавриди шеърӣ «Гоҳон» ва махсусан вазни он донишманди эронӣ Муҳсини Абулқосимӣ ба тафсил маълумот додааст.<sup>2</sup>

### **1.3.2. Таърихи мухтасари таҳқиқ ва наشري «Авесто»**

Ба баррасии матнҳои авестой, пеш аз ҳама, худи мӯбадон ва муфассирони зардуштӣ иқдом намудаанд. Корбурди ибораҳои монанди «пурюткешон (омӯзгорони нахустин) гуфтаанд», «чунонки дар дин пайдост» ва «дар дин гуфта шудааст», ки дар тафсириҳои «Авесто» («Занд») ва матнҳои паҳлавӣ омадаанд, нишон медиҳад, ки нависандагони зардуштӣ андешаҳои худро бо истинод ба ибораву ҷумлаҳои авестой таъкид мекардаанд. Авестошиносон нахустин осори тафсирии «Авесто»-ро матнҳои «Занд» донистаанд. «Занд» тарҷума ва шарҳу тафсири «Авесто» ба забони паҳлавӣ ва дарбардорандаи дарёфти мӯбадон ва муфассирони давраи сосонӣ аз ин китоби муқаддас аст. Мӯбадон ҳама бахшҳои «Авесто»-ро тарҷумаву тафсир кардаанд, аммо ҳама зандҳои он боқӣ намондааст. «Динкард» ва «Бундаҳишн», ки дар аҳди Сосониён навишта шудааст, на шарҳу тафсир, балки натиҷаи пажӯҳиши мӯбадон аз матнҳои «Авесто» мебошад. Тарҷумаи санскрит, бино ба таҳқиқи муҳаққиқон, тарҷума аз «Занд» аст, на тарҷумаи бевоситаи «Авесто».<sup>3</sup> Китобу рисолаҳои дигари паҳлавӣ, монанди «Ривояти паҳлавӣ», «Додистони динӣ», «Ривоёти Дороби Ҳурмуздёр» ва ғайраро низ метавон аз ҷумлаи рисолаҳои дастурӣ ва таҳқиқии «Авесто» донист.

«Авесто» аз дер боз диққати донишмандони соҳаҳои гуногуни илмро ба худ ҷалб намудааст ва олимони бисёре ба омӯзиши ҷиҳатҳои гуногуни он даст задаанд. Дар бораи Зардушт, «Авесто» ва мазмуну муҳтавои он дар осори таърихнависони Юнону Рими Бостон ишораҳо мавҷуданд. Ин гуна ишоратҳо дар осори таърихиву динӣ ва адабии аврупоии асрҳои миёна низ ба назар мерасанд. Забоншиносии аврупоӣ бо воситаи навиштаҳои нависандагони даврони бостон бо номи Зардушт ошноӣ доштанд. Баъзе ўро ҷодугаре медонистанд, ки гурӯҳе аз файласуфони Юнони Бостон, монанди Фисоғурас назди ў фалсафа омӯхтаанд. Нахустин бор дар осори Афлотун дар бораи

---

<sup>1</sup> Диловаров М. Авесто.-С. 117.

<sup>2</sup> أبو القاسمي، محسن. شعر در ایران پیش از اسلام، ص. 8-20.

<sup>3</sup> راشد محصل، محمد تقی. اوستا، ص. 165.

таълимоти ӯ перомуни ҷаҳон ва офариниш сухан рафтааст.<sup>1</sup> Дар асрҳои ҳабадаҳ ва ҳаҷдаҳ сайёҳони аврупоӣ дар бораи зардуштиёни Ҳинд ва китоби динии онҳо маълумот додаанд. Соли 1800 роҳиби англисӣ Томас Ҳойд (Thomas Hyde) китобе нашр кард, ки дар он зардуштиён ба сифати парастандагони Худои ягона муаррифӣ шудаанд. Дар иншои ин китоб роҳиби мазкур аз осори паҳлавӣ, монанди «Ардавирофнома»-и форсӣ, «Зардуштнома» ва «Фарҳанги ҷаҳонگیرӣ» астифода карда, доир ба наздикии дини зардуштӣ ва монавӣ ишора намудааст. Аксар ин китобро нахустин иқдом дар шинохти дини зардуштӣ медонанд. Ин роҳиб дар навиштаи дигари худ аз вучуди ду Зардушт хабар медиҳад: Зардушти бунёдгузори дини зардуштӣ, ки дар давраи модҳо зиндагӣ ва фаъолият дошта ва дигаре Зардушти дувум устои Фисорғурас.<sup>2</sup> Аммо китоби ин роҳиб дар Аврупо ба интиқоди саҳт рӯ ба рӯ шуд, хусусан, яктопараст эълон шудани зардуштиён ба ҷомеаи месаҳии Аврупо писанд набуд.

Пас аз Ҳойд ба омӯзиши ҷиддии «Авесто» пажӯҳишгари франсавӣ Анкетил Дюперрон камар баст ва соли 1771 асари худро бо номи «Занд-Авесто» дар се ҷилд ба таърифи расонд. Ҷилди аввал шарҳи сафарҳои вай аст. Ҷилди дувум гузоре дар бораи дастнависҳои авестой ва паҳлавӣ, ки ҳамроҳ оварда буд, зиндагии Зардушт, бино ба суннати зардуштӣ ва тарҷумаи «Вандидоди сода»-ро шомил мешавад. Ҷилди сеюм тарҷумаи бақияи бахшҳои «Авесто», тарҷумаи «Бундаҳишн», вожаномаи «Занд»-паҳлавӣ, вожаномаи паҳлавӣ – форсӣ ва куллиёте дар бораи оинҳои диниро дар бар мегирифт.<sup>3</sup> Дюперрон забони авестоиро назди дастурони порсӣ -пайравони оини зардуштӣ омӯхта буд ва дар тарҷумаи ӯ тарзи идрок, тафсиру ташреҳоти порсҳо таъсири зиёде гузошта буд. Тарҷумаҳои сатҳии Дюперрон нишон медиҳад, ки ҳатто омӯзгорони порсии ӯ низ бардошти равшан ва дурусте аз «Авесто» надоштаанд. Навиштаҳои ин олимони франсавӣ бо вучуди норасоӣҳо нахустин иқдоми ҷиддӣ дар заминаи авестошиносӣ ба шумор меравад. Бузургтарин хидмати Дюперрон он буд, ки шакку шубҳаҳои дар бораи асолати «Авесто» аз байн бурд. Мувофиқаи илмӣ дар масъалаи мутобиқати тарҷумаи Дюперрон бо китоби асл ва яқинд масъалаи дигар мазмуну муҳтавои давраи якуми омӯзиши «Авесто» (1771 – 1826)-ро ташкил доданд. Олимони англис Уилям Љонс, Ричардсон, Эрскайн ва олмонӣ Майнерсу Болен ба Анкетил Дюперрон зид баромада, ба асари қадимии эронӣ будани «Авесто» шубҳа намуданд.<sup>4</sup> Ба ақидаи Ричардсон ва Майнерс, «Авесто» гӯё баъд аз ҳучуми арабҳо мураттаб шуда бошад, зеро дар он калимаҳои арабӣ ба назар мерасидаанд. Ба тарафдории Дюперрон ва асолати «Авесто» чун ёдгори адабиёти

1. ارشد محصل، محمد تقی. اوستا، ص. 165.

2. همان جا، ص. 166.

3. همان جا، ص. 167.

<sup>4</sup> Диловаров М. Авесто. -С. 117

қадими мардуми эронинажод мутарчими асари Дюперрон ба забони олмонӣ профессори Донишгоҳи Рига Клойкер, сиккашинос Тихсен, олимони П. Бартоломе ва Родэ бароманд. Тарҷума ва тафсири Дюперрон дар кори шиносии аврупоӣ бо «Авесто» ва дини зардуштӣ нақши муайяне гузошт. Риттер, Гегел, Гёте ва дигар бузургони илму тамаддуни Аврупо аз рӯи тарҷума ва тафсири Дюперрон оид ба дину фалсафаи мардуми эронинажод изҳори ақида намудаанд.<sup>1</sup> Дар бист соли ибтидои асри XIX пешравие дар авестошиносӣ ба назар намерасад. Танҳо донишманде, ки беш аз дигарон ба қор пардохт, олими даниягӣ Р. К. Раск буд, ки ба Ҳиндустон рафта, аз он ҷо якҷанд дастнавис овард, забони санскрит ва авестоиро омӯхта, муносибати онҳоро таъйин намуд ва қидмати «Авесто»-ро исбот кард. Р.К. Раск дастури забони муқоисаиро ихтироъ кард ва исбот намуд, ки забони авестой ҳамрешаи санскрит ва дастури он мутобиқ бо форсии бостон аст.

Давраи дувуми омӯзиши «Авесто» (1833-солҳои 80 асри 19) бо асарҳои олими франсавӣ Эжен Бюрнуф оғоз меёбад, ки навиштаҳои ӯ таҳаввули бузург дар омӯзиши «Авесто» эҷод кард. Ӯ дар бораи забонҳои прокрит (хиндӣ миёна) таҳқиқот мекард ва аз он шева ба мутолиаи «Авесто» ва забонҳои эронӣ пардохт. Вай «Авесто»-ро дар муқоиса бо санскрит, бо истифода аз тарҷумаи «Авесто» ба санскрит меомӯخت. Аз боби якуми «Ясно» шурӯъ намуд ва баъдтар яке аз бобҳои «Ясно» (нуҳум)-ро бо матн, тарҷума ва тафсир нашр кард.<sup>2</sup>

Баъд аз вафоти Э.Бюрнуф (1852) се гароиш дар заминаи авестошиносӣ ба вучуд омад: Гурӯҳе муътақид буданд, ки барои баррасии дақиқи «Авесто» бояд ҳама осори марбут ба адабиёти авестоиро гирд овард. Гурӯҳи дигар гумон доштанд, ки мушкилоти забони авестоиро танҳо бо роҳи муқоисаи он бо забони санскрит метавон ҳал кард. Гурӯҳи сеюм мегуфтанд, ки ин ду шеvaro бояд тавъам пеш гирифт. Баъд аз Э. Бюрнуф ду тарҷумаи «Авесто» интишор ёфт: Тарҷумаи олими даниягӣ Вестергорд дар соли 1852 ва тарҷумаи Ф. Шпигел, донишманди олмонӣ дар се ҷилд, солҳои 1852 – 1859 ва 1863.<sup>3</sup> Бартари тарҷумаи Ф. Шпигел дар он буд, ки матнҳои паҳлавӣ («Занд»)-ро ба ҳамроҳ дошт.

Аз нимаи дувуми қарни XIX ду шеваи таҳлил дар бораи «Авесто» ба миён омада буд. Шеваи нахуст дар асоси «Занд» буд, ки онро мактаби суннатгаро меноманд. Бунёдгузори ин мактаб Ф. Шпигел ва фарди шохиси он Дармстетери франсавӣ буд. Натиҷаи кори Дармстетер тарҷумаи «Авесто» дар се ҷилд бо номи «Занд – Авесто» буд.<sup>4</sup> Шеваи дувум шеваи татбиқӣ буд, ки дарки дурусти «Авесто»-ро танҳо аз тариқи муқоисаи он бо сурудҳои ведоӣ мумкин медонистанд.

<sup>1</sup>Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

<sup>2</sup> راشد محمد، محمد تقی. اوستا، ص. 168.

<sup>3</sup> راشد محمد، محمد تقی. اوستا، ص. 169.

<sup>4</sup>Darmsteter, J., 1892-3: le Zand – Avesta. - Paris.

Пайравони ин мактаб бештар муҳаққиқони «Ведо» буданд. Норасоихое, ки дар ҳар дуи ин мактаб вучуд дошт, сабаб шуд, ки дар охири асри XIX К. Гелднер бо талфиқи ин ду мактаб чопи бисёр муътабар аз «Авесто»-ро фароҳам оварад.<sup>1</sup> Илова бар ин, К. Гелднер чанд тадқиқоти муҳим оид ба вазни шеърҳои «Авесто» ва мақолаҳои умумии ҷамъбасти оид ба «Авесто» навиштааст. Ӯ бовар дошт, ки «Авесто»-и ҷадид, алалхусус «Яштҳо» маҷмӯае аз шеърҳои ҳаштҷиқоист. Сабаби асосии ихтилофи назари пажӯҳандагон аз назари Гелднер дар он аст, ки матнҳои ин китоб ба дурусти баргардон нашудаанд ва бояд онҳоро тасҳеҳ кард. Аз авестошиносон Ҳенинг доир ба назари Гелднер чанд эрод гирифтааст.<sup>2</sup> Ба таври кулӣ дар ин давра олимони авестошинос ба ду гурӯҳ ҷудо шуданд: Гурӯҳи якум (Ф. Шпигел, Ф. Юсти, де Харле, В. Гейгер) муътақид буданд, ки зардуштиён хонишу дарки «Авесто»-ро ба ҳамон асли қадим нигоҳ доштаанд.<sup>3</sup> Гурӯҳи дувуми олимони Бенфей, П. Рот, М. Хауг ва дигарон дар тафсири матни «Авесто» ба равиши муқоисавии таърихии забоншиносӣ, инчунин ба муқоисаи «Авесто» бо осори адабии Ҳинди Бостон-«Ведоҳо» таъҷибоваранд.<sup>4</sup> Х. Бартоломе, ки аз дастовардҳои ин ду равию истифода кардааст, асосгузори давраи сеюми омӯзиши «Авесто» (охири асри XIX – ибтидои асри XX) мебошад. Дар ин давраи омӯзиши «Авесто», ки то солҳои 30 асри XX идома ёфтааст, оид ба ин асар асосан тарафдорони Х. Бартоломе ва тарафдорони Андреасу Вакернагел баҳс оростанд.<sup>5</sup> Андреас масъалаи барқарор намудани сохти қадимии (архетип) «Авесто»-ро ба миён гузошт, чунки ба ақидаи ӯ матни имрӯзаи «Авесто» ба хатте навишта шудааст, ки дар давраҳои пасин ихтироъ гардидааст.

Аз солҳои 20 – 30 қарни XX давраи чоруми омӯзиши «Авесто» шурӯъ мешавад. Муҳаққиқони ғарбӣ – Ф. Алтхейм, К. Барр, Е. Бенвенист, У. Бианки, Х. В. Бейли, А. Вааг, Т. Виденгрэн, С. Викандер, Л. Гаал, С. Ҳартман, Р. Гиршман, И. Гершевич, Х. В. Хумбах, А. В. Ҷексон, Дюшен-Гийемен, А. Кристенсен, В. Ленс, Х. Ломмел, Й. Маркварт, А. Мейе, Ф. Волф, Н. С. Нюберг, К. Рудолф, В. Хеннинг, Й. Ҳертел, Е. Ҳерсфелд, В. Хинс, С. Хуарт, Х. Ф. Юнкер ва дигарон оид ба масъалаҳои гуногуни марбути «Авесто» – чун асари адабии бадеӣ, асотир, таърихи Эрони Бостон, Зардушт ва таълимоти ӯ, матни «Авесто», алифбои «Авесто» ва ғайра таҳқиқот ба анҷом расондаанд.<sup>6</sup> Дар омӯзиши «Авесто» ҳиссаи олимони порс – пайравони зардуштия дар Ҳиндустон хеле калон аст. Оилаи Анклесариа (бобо, падар, писар),

---

<sup>1</sup>Geldner K.1886, Avesta, the Sacred Books of the Parsis, vol.I.- Stuttgart.

255-57 نقل از وهمن، فریدون ادبیات زردشتی. تهران، 1347، ص.

<sup>3</sup>Диловаров М. Авесто. -С. 118.

<sup>4</sup>Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

<sup>5</sup>. Диловаров М. Авесто. -С. 118.

<sup>6</sup> Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

Ф. Бодде, П. Санчоно, Ч. Товодиё, Н. Тарапоревалла ва дигарон оид ба «Авесто» ва қисмҳои он таҳқиқоти пураарзише анҷом додаанд. Онҳо «Авесто»-ро ба забонҳои аврупоӣ ва ба забонҳои ҳиндӣ низ тарҷума кардаанд.<sup>1</sup> Иброҳим пури Довуд бо роҳбарии олимони порси Ҳиндустон ба омӯзиши «Авесто» шурӯъ кард ва баъдан дар ин соҳа яке аз мутахассисони шинохта гардид. Вай тақрибан тамоми «Авесто»-ро бо шарҳу тафсири фаровон ба забони форсӣ гардондааст.<sup>2</sup> Дар Русия омӯзиши «Авесто» солҳои 60 асри XIX оғоз ёфтааст. Ба тарҷумаву таҳқиқи он К. Коссович, К. Залеман, К. Иностранцев, В. Тураев, Ф. Розенберг ва дигарон машғул шудаанд. Аз олимони шӯравӣ Фрейман, Е. Э. Бертелс, Б. Гафуров, И. С. Брагинский, В. И. Абаев, С. Н. Соколов, В. Л. Лившиц, Никитина В. Б. ва дигарон дар бораи таърихи «Авесто», хусусиятҳои адабии он, забони авестой ва ғайра таҳқиқоти арзандае анҷом додаанд.<sup>3</sup> Дар қори тарҷумаи «Авесто» ба забони русӣ Е. Э. Бертелс, И. С. Брагинский ва И. М. Стеблин-Каменский ҳиссаи сазовор гузоштаанд.<sup>4</sup>

Дар Тоҷикистон тавачҷуҳи нисбатан бештар ба «Авесто» аз солҳои 80 асри XX оғоз ёфта, пас аз Истиқлол идома ёфт.<sup>2</sup> Соли 2001 дар Тоҷикистон 2700-солагии «Авесто» таҷлил гардид ва ба ин муносибат симпозиуми байналмилалӣ доир гашт, матни комили «Авесто» (тарҷумаи Чалили Дӯстхоҳ) ба алифбои крилӣ нашр шуд.<sup>3</sup> Бори нахуст муҳаққиқи тоҷик Б. Бобохонов баъзе «Яштҳо», «Гоҳон» ва якҷанд фарғарди «Вандидод»-ро ба тоҷикӣ тарҷума кард, ки солҳои 1985, 1986, 2000, 2001 дар саҳифаҳои матбуоти тоҷикӣ ба таъъ расиданд.<sup>4</sup> Ба муносибати «Соли тамаддуни ориёӣ» ва 2700-солагии

---

<sup>1</sup> ارشد محصل، محمد تقی، اوستا، ص. 131.

<sup>2</sup> ویسپرد. تهران، 1334. یسنا، ج. 2، تهران، 1337. یشت ها. تهران، 1334. 1347، پورداود، ابراهیم. یسنا، ج. 1، تهران،  
<sup>3</sup> Струве В. В. Родина зороастризма // Жур. «Советское востоковедение», 1948, № 5; Бертельс Е. Э., Новые работы по изучению Авесты // «Уч. зап. ИВАН СССР», т. 3, Москва, 1951; Ҳам ӯ: История персидско-таджикской литературы, Москва, 1960; Абаев В. И., Скифский быт и реформа Зороастра // ArchivOrientalni.- Praha, XXIV, I, 1956; Брагинский И. С., Из истории таджикской народной поэзии. Элементы народно-поэтического творчества в памятниках древней и средневековой письменности, - Москва, 1956; Ҳам ӯ: Из истории персидской и таджикской литератур.- Москва, 1972; Ҳам ӯ: От Авесты до Айни.- Душанбе, 1981; Оранский И. М., Введение в иранскую филологию.- Москва, 1960; Маковельский А.О., Авеста.- Баку, 1963; Никитина В. Б., Древнеиранская литература// Литература древнего Востока.- Москва, 1972; Гафуров Б. Г., Таджики.- Москва, 1972; Лелеков Л. А. Современное состояние и тенденции зарубежной Авестологии // Жур. «Народы Азии и Африки», 1978, № 2;

<sup>4</sup> Бертельс Е.Э. Отрывки из «Авесты». Пер. с языка «Авесты» // Восток, 1924, №4.

<sup>2</sup> Диловаров М. Авесто\ЭМТ, ч. 1, -с., 115.

<sup>3</sup> Авесто. Тарҷумаи Чалили Дӯстхоҳ, -Душанбе, 2001.

<sup>4</sup> Бобо-Назар Гаффор. Номаҳои бостон. -Душанбе, 2010.

«Авесто» донишмандони тоҷик китобу мақолоти зиёде ба нашр расонданд.<sup>5</sup> М. Диловаров «Готҳо»-ро ба кириллӣ нашр намуд.<sup>6</sup>

Бояд зикр кард, ки донишмандони эронӣ дар таҳқиқи «Авесто» қорҳои боарзише анҷом додаанд ва навиштаҳои аврупоиёно ба форсӣ тарҷума кардаанд, ки чанде аз онҳоро зикр намудем ва дар «Китобнома» номгӯи пурраи онҳоро овардаем.

### 1.3.3. Шарҳи қисматҳои асосии «Авесто»

#### 1.3.3.1. Гохон

“Гохон”(«Готҳо» ё “Госоҳо”) ҷамъи “гоҳ” (дар “Авесто “госо” ба маънии суруд, нағма) қадимтарин баҳши «Авесто» ва қуҳантарин асари адабии мардуми эронитабор аст, ки тақрибан асрҳои XI-X то мелод таълиф шудааст. Сарояндаи ин сурудҳо худ Зардушт аст, зеро дар “Гохон” шаш бор ба унвони аввалшаҳс аз худ ёд мекунад. Дар «Авесто» «Гохон» як қисми таркибии «Ясно» (17 боби онро ташкил мекунанд) мебошанд. Забони «Гохон» авестоист, вале онҳо нисбат ба дигар қисмҳои «Авесто» қадимтар буда, бо калимаву ибораҳо ва таркиботи худ ба кулӣ фарқ мекунанд. Забони «Гохон» ба осори забони санскрит «Ведо» («Ригведо», «Самаведо», «Яҷурваведо», «Атхарваведо»), ки тақрибан дар миёни ҳазораи 2 то мелод навишта шудаанд, қаробат дорад. «Гохон» аз калимаи авестоии «gatha» буда, маъниаш суруд, суруди мутантан (гимн) аст. Дар забони паҳлавӣ – форсии миёна ин калима «gas» (ҷамъаш – gasan) шудааст. Дар санскрит ин калима ба маънии пораҳои манзуме буда, ки пас аз пораҳои мансур меомаданд. Дар забони форсии тоҷикӣ калимаи gatha дар шакли «гоҳ» (истилоҳест дар мусикӣ; дар таркибҳои «дугоҳ», «сегоҳ» дида мешавад) боқӣ мондааст. «Гохон» дар оғоз сурудҳо, пораҳои манзуме буданд, ки баъд аз пораҳои мансур меомаданд, вале бо мурури замон он пораҳои мансур аз байн рафтаанд ва танҳо «Гохон» боқӣ мондаанд. Аз ҳамин сабаб аст, ки ҳоло робитаи маънавии байни байтҳо ва баъзе бобҳои «Гохон» то андозае коства, фаҳмидани маънии онҳо душвортар гардидааст.

---

<sup>5</sup>Эмомалӣ Раҳмон. Нақши Авесто дар тамаддуни миллӣ ва ҷаҳонӣ.- Душанбе, 2001; Ҷам ӯ: Тоҷикон дар оинаи таърих // Аз Ориён то Сомониён, кит.якум.- Душанбе, 2009; Диловаров М., «Авесто» ва баъзе хусусиятҳои адабии он // Маҷ. «Мақолаҳои советӣ», 1976, № 4; Ҷам ӯ: Авесто – ганҷи шойғони эронитаборон // Маҷ. «Фарҳанг», 2004, № 3 – 4; Ҷам ӯ: Фишурдаи суҳанрониҳо дар симпозиуми байналмилалӣ «Авесто ва тамаддуни ҷаҳонӣ».- Душанбе, 2001; Ҷам ӯ: Наҳустқомуси миллат, X., 2001; «Авесто» – китоби муқаддаси зардуштиён (Феҳристи адабиёт).- Душанбе, 2001; Нурув Н., Авесто ва мероси фарҳангии тоҷикон.- Хучанд, 2001

<sup>6</sup> Готҳо ва Ҷафт хот ва дигар гуфтаниҳои ёрон ба порсии равон аз Алиакбари Ҷаъфарӣ, баргардон ба хатти кириллӣ аз Муаззами Диловар.-Техрон: Асотир, 1382.



Аксари авестошиносон бар онанд, ки «Гоҳон» асли дин аст ва матнҳои форсии миёна тавзеҳ, шарҳ ва тафсири онҳоянд. Матни занди «Гоҳон» тарҷумаест калима ба калима, ҳамроҳ бо пораҳои тафсир аз муфассирони динӣ. Тафсири мӯбадон низ бардошти суннатӣ ва гоҳе шахсии онҳоро дар бар дорад ва аз ин рӯ муътамад ва қатъӣ ба назар намерасад.<sup>1</sup>

«Гоҳон» – сурудҳо, манзумаҳои онанд, ки ба вазни ҳичоӣ навишта шудаанд. Вобаста ба «Гоҳон» якчанд истилоҳи шеърӣ дар «Авесто» омадааст. Вачаташтай барои ифодаи як банд шеър маъмул буд. Бо калимаи «афсман» мисраъро ном бурдаанд. Пад – ҳичо, вачанҳо – воҷаро ифода мекарданд. «Гоҳон» вобаста ба шумораи мисраъҳои бандҳо ва ҳичоҳои мисраъҳо ба 5 навъ тақсим шудаанд ва номи махсус доранд. Номи «Гоҳон» ба ғайр аз «Аҳунаватгоҳ» аз калимаи нахустине, ки гоҳ бо он оғоз меёбад, гирифта шудааст. Номи «Аҳунавайтгоҳ» ба нахустин калимаи дуои муқаддаси дини зардуштӣ «Ахуна вайрӣ»-и «Авесто» марбут аст.<sup>2</sup>

1) «Аҳунаватгоҳ» аз 7 хо (боб)-и «Ясно» (28–34) таркиб ёфта, аз 100 вачаташтай (банд), ки ҳар кадом 3 афсман (мисраъ) дорад, иборат аст. Ҳар як аз бандҳои «Аҳунаватгоҳ» дорои се байт аст ва ҳар байт аз ду мисраи ҳафт ва нуҳҳичоӣ ташкил шудааст. Мисраъ 16 ҳичо дорад. Диранг (тактеъ) дар ин мисраъ пас аз ҳичоӣ ҳафтум омадааст. Масалан:

**Аешам аенанҳам /Виванҳушо сравӣ Йимасчит,  
Йе майшенг чихнушо/ аҳмакенг гауш бага хваремно,  
Аешамчита аҳми твахми Мазда вичитои аипи.**

(Тарҷума: Яке аз ин гунаҳкорон Йима Вивангаҳои аст, касе, ки барои хушнудии мардум гӯшт хӯрданро ба онон омӯхт. Аз онҳо, эй Маздо, ту маро бадур ниғаҳ дор).<sup>3</sup>

2.«Уштаваидгоҳ». Ин гоҳ, ҳои 43 то 46-ро дар бар мегирад, ки ба тартиб дорои 16, 20, 11 ва 19 банд ҳастанд. Ҳар банд дорои панҷ байт ва ҳар байт аз ду мисраи чаҳор ва ҳафтҳичоӣ ташкил шуда аст. Ҳои 43 ва 44 тарҷеъбанд аст, ба ин маънӣ, ки дар ҳои 43 байти нахуст дар ҳама бандҳо, ба ғайр аз банди 20 такрор шудааст. Диранг пас аз ҳичоӣ чорум меояд. Масалан:

**Кам немой зам / кутра немой айени паири хваетеуш / йа верезена  
ҳаҷа наеда даҳйеуш / йои састаро дрегванто ката тва / Мазда  
хшнаошаи Ахура.**

---

اراشدمحصل،محمد تقى. اوستا،ص.135.

<sup>2</sup>Диловаров М. Готҳо //ЭМТ, ҷ., 4.-Душанбе, 2015.-С. 434.

<sup>3</sup>Ҳамон ҷо. -С. 435.

(Тарчума: Ба кадом замин рӯй оварам? Ба кучо рӯй оварам? Пешвоён ва озодагон аз ман дур мешаванд. Аз барзгарон низ хушнуд нестанд ва аз пайравони дурӯғ, ки фармонфармоёни кишваранд. Чӣ гуна туро, эй Маздо Ахура, хушнуд созам?)<sup>1</sup>

3) «Спентамадгоҳ». («Ясно» ҳоҳои 47–50). Ин гоҳ шомили ҳои 47 то 50 аст, ки ба тартиб дорои 6, 12, 12 ва 11 банд аст. Ҳар банд чаҳор байт дорад ва ҳар байт аз ду мисраи чаҳор ва ҳафтхичой ташкил шудааст ва диранг пас аз ҳиҷои чорум меояд. Масалан:

**Ваоча мой йа / твем видва Ахура,  
Пара ҳйат ма / йа менг перета чимаити.  
Кат ашаа / Мазда венгхат дрегвантем,  
Ҳа зй анхеуш / ванухи виста акеретиш.<sup>2</sup>**

(Тарчума: Эй Ахура, бигӯй ба ман он чиро, ки ту аз он огоҳӣ. Оё пеш аз фаро расидани рӯзи охират, эй Маздо, пайрави ростӣ бар дурӯғпараст пирӯз мешавад? Равшан аст, ки ин беҳтарин паёме дар зиндагӣ мебошад.)

4) «Воҳушшатроҳ» («Ясно», ҳои 51) Ин гоҳ як хо дорад, ки дорои 22 банд аст. Ҳар банд се байт дорад ва ҳар байт аз ду мисраи ҳафтхичой ташкил шудааст. Диранг дар миёни мисраъ меояд. Масалан:

**Ноит урвата датоибйасча / карпано вастрат арем,  
Гавои ароиш асенда / хваиш  
Шйаотанашача сенгҳайшча,  
Йе иш сенгҳо апемем / дручо демане адат.<sup>3</sup>**

(Тарчума: Карапанҳо ба дастурҳо ва оини кишоварзӣ итоат намекунанд, ба хонумони дурӯғ мебаранд).

5) «Ваҳиштаиштгоҳ» («Ясно», ҳои 53). Ин гоҳ дорои як хо аст, ки 9 банд дорад. Ҳар банд чаҳор байт дорад. Ду байти нахуст дорои ду мисраи ҳафту панҷхичоист, аммо байтҳои 3 ва 4 се мисраъ дорад, ки ба тартиб дорои 7, 7 ва 5 хичоист. Масалан:

**Темча ту Поуручиста / Ҳаечатаспана,  
Спитамаи йезиви дугедрам / Заратуштрахе,  
Ванхеуш паитйастем мананҳо / ашаҳйа,  
Маздасча / таибйо дат сарем,  
Ата хем ферашва тва хратва / спеништа /  
Армайтиш / худанварешва.<sup>4</sup>**

---

<sup>1</sup>Ҳамон чо, ҳамон сах.

<sup>2</sup>Ясно, ҳои 48, банди 2 (тарчумаҳо аз М. Диловаров. Готҳо. ЭМТ, ч., 4, -с., 434-435).

<sup>3</sup>Ясно, ҳои 51, банди 14.

<sup>4</sup>Ясно, ҳои 53, банди 3.

(Тарчума: Ту, эй Поуручиста, аз дудмони Ҳаечатаспа ва хонадони Спитама, эй чавонгарин духтари Зардушт, ин (мард – Ҷомосп)-ро бо андешаи беҳу ростӣ ва Маздо барои ту ҳамчун сарвар баргузидааст. Акнун бо хирадат пурсучӯ кун ва порсоии муқаддасро ба хубӣ ба ҷо овар).

Дар «Гоҳон» баробарии шумораи ҳиҷоҳои мисраъҳо риоя шудааст, вале ба мисли вазни арӯз ҳиҷоҳои дарозу кӯтоҳи мисраъҳо ба ҳамдигар мутобиқ нестанд. Мисраъҳои «Гоҳон» баъзан бо садонок ба охир мерасанд ва оҳанги махсуси хониш доранд. Дар баъзе пораҳои «Гоҳон» унсурҳои қофия низ ба назар мерасад. «Гоҳон» аз ҷиҳати мазмуну мухтаво аз қисматҳои дигари «Авесто» фарқ мекунад. «Гоҳон» чун баъзе қисматҳои «Авесто» дуоҳои хушкӯ холи ва аз ҷиҳати мухтаво муҷаррад нестанд. Онҳо ҳамчун офаридаи як шоири замон ба рӯҳ ва тақозои он давр мувофиқанд ва масъалаҳои иҷтимоию сиёсӣ, ғояҳои он давр, афкори андешаҳои мардум дар онҳо инъикос ёфтаанд. Сурудҳои «Гоҳон» на танҳо аз назари адабӣ, балки аз ҷиҳати дар бар доштани тафаккури навини он замон аҳамияти басазое доранд ва нишондиҳандаи андешаҳои ҳуди Зардуштанд.

Замони эҷоди онҳо (оғози ҳазораи 1 то мелод) дар Осиёи Миёна давраи гузариш аз соҳти ҷамоати ибтидоӣ ба ҷамъияти синфӣ ибтидоӣ ёфта буд. Баъзе қabilaҳои мардуми эронинаҷод, аз ҷумла ниёғони халқи тоҷик дар ин давра муқимӣ, баъзе қавмҳои ориёӣ ханӯз ба ҳаёти кишоварзӣ нагузашта, бодиянишин буданд. Муқимиҳо ба кишту варз ва чорводорӣ машғул буданд. Қавмҳои дигари ориёӣ, ки ҳаёти кӯчӣ доштанд, ба онҳо ҳуҷум оварда, дехоту хонаҳои ононро хароб мекарданд, молу милкашонро ғорат менамуданд, чорпоён ва мардумро бо худ мебурданд. Ҷангу хунрезӣ, орогани чашну базм пас аз ғоратгарӣ, куштани чорпоҳои ғаниматӣ машғулияти асосии онҳо буд. Дар «Гоҳон» («Ахунавидгоҳ», махсусан «Ясно» ҳои 29–30) ба муқобили ҳамин гуна ғорату куштор ва хунрезӣ эътироз шудааст. Зардушт эътирози худро тавассути ташхис додани равони чорпоён (Геушурван) баён кардааст. Геушурван ба Ахурамаздо аз куштору хунрезии зиёд гила карда, хостори шахси ниғаҳбон, кишоварзи хуб мебошад, то ки ӯро аз ин гуна аҳволи тоқатнопазир раҳой бахшад. Дар «Ясно»-и 30 банди 8 Зардушти Йима (Ҷамшед)-ро барои ба мардум куштани чорпоён ва хӯрдани гӯшти онҳоро омӯхтанаш мазаммат мекунад.<sup>1</sup>

Зардушт дар «Гоҳон» тарғибгари ободонии кишвар, ривоч додани кишту кор мебошад. Ӯ тарафдори он аст, ки мардум даст ба кор бошанд, гову гӯсфанд парвариш кунанд, муқимӣ бошанд ва зиндагии моддии худро беҳ намоянд. Дар «Гоҳон» ғояи шоҳи одил, шаҳрӯри хуб, ҳукмроне, ки барои ободии мамлакат кӯшо бошад ва мардумро аз ғоратгарону роҳзанон ҳимоят намояд, махсусан дар

---

<sup>1</sup> Диловаров М. Авесто.-С. 435.

«Воҳушшатргоҳ» баён ёфтааст. Тимсоли ин гуна подшоҳ Гуштосп – ҳомӣ ва пайрави Зардушт аст, ки дар «Гоҳон» борҳо номаш омадааст ва ситоиш шудааст. Ҳукмронии қабилаҳои душман ҷодугар ва насихатгарони онҳо пайравони дурӯғ мебошанд, ки мардумро гумроҳ менамоянд. Дар бобҳои дигари «Гоҳон» мавзӯҳои гуногун баррасӣ шудаанд. Дар «Ясно»-и 30 оид ба пайдоиши ду мазҳар – некӣ ва бадӣ суҳан рафтааст. Аз «Уштавайтгоҳ» (ҳоти 44) мунозираи Зардушт бо Ахурамаздо ҷолиби диққат аст. Ин боби «Гоҳон» ба тарзи пурсишҳои Зардушт аз Ахурамаздо оид ба пайдоишу зуҳури ҳодисаҳои табиат, масъалаҳои иҷтимоӣ ахлоқӣ ва ғайра сохта шудааст. Бо ин роҳ Зардушт мақсаду мароми худро баён кардааст. «Мунозира бо Худо»-и мансуб ба Носири Хусрав ба ҳамин боби «Гоҳон» монанд аст.<sup>2</sup>

Дар аксари бобҳои «Гоҳон» лаҳзаҳои зиндагии Зардушт инъикос ёфтааст. Дар ҳои 46 Зардушт аз камии пайравонаш, инчунин аз ҳоли танги иқтисодии худ шикоят кардааст. Дар «Ясно»-и 53 («Ваҳиштаиштгоҳ») вай дар сурати падари меҳрубон ва насихатгар дар ҷашни арӯсии духтараш Поуручиста тасвир шудааст. Ӯ духтарону ҷавононро насихат карда, онҳоро ба нақӯкорӣ даъват менамояд. Ба ғайр аз Зардушт ва Поуручиста дар «Гоҳон» инчунин номи Ҷомосп (домоди Зардушт), Фрашаоштра (бародари Ҷомосп), Спитама ва дигарон, номи шахсиятҳои қабилаҳо – муҳолифони Зардушт – Усиҷ, Бендва, Карапан, Грехма ва дигарон зикр шудаанд.

Дар «Гоҳон» воситаҳои тасвири бадеӣ – тазод, ташбеҳ, тавсиф, такрор ва ғайра зиёд истифода гардидаанд. Дар онҳо махсусан санъати тазод вобаста ба дугонагӣ (дуализм)-и дини зардуштӣ (муборизаи некӣ ва бадӣ) хеле серистеъмол аст. Сермаъноии калима ва мафҳумҳо яке аз хусусиятҳои ҷолиби «Гоҳон» мебошад. «Гоҳон» аз замони таҳрири тадвини «Авесто» ба шакли китоби алоҳида, чун сурудаҳои муқаддаси Зардушт мавқеъ ва эътибори баландро соҳиб гаштаанд. Дар қисмҳои дигари «Авесто» («Вандидод», «Васпарад») онҳо ситоиш шудаанд. Дар дастнависҳо ва нашрҳои «Авесто» пас аз ҳар боб ва ё якҷанд боб пораҳои илҳоқие ба «Гоҳон» афзуда шудаанд, ки онҳоро мӯбадони зардуштӣ ҳангоми тоату ибодат меҳонданд. Дар «Авесто» се дуои муқаддаси дини зардуштӣ, ки манзуманд (ба вазни шеърии «Гоҳон», инчунин 7 боби мансури «Ясно», ки дар доҳили 17 боби «Гоҳон» омадаанд (бобҳои 35–41) ва «Ясно», боби 42 (мансур) аз ҷиҳати қадру эътибор ба «Гоҳон» баробаранд. «Ясно ҳаптанҳаити» аз рӯи забон ва тарзи ифода таркибот ва қидмати замони таълиф ба «Гоҳон» монанд мебошанд.

---

<sup>2</sup> Нақл аз Диловаров М. Авесто. -С. 435.

Баробари нахустин тарҷумаҳо ва таҳқиқоти «Авесто» «Гоҳон» низ мавриди назари донишмандон қарор гирифтанд, вале баъдан омӯзишу таҳқиқи онҳо нисбат ба дигар қисматҳои «Авесто» бештар ривоч гирифт ва тадқиқу баррасии онҳо як соҳаи ҷудоғонаи авестошиносӣ гардид. «Гоҳон» ба забонҳои лотинӣ, англисӣ, франсавӣ, олмонӣ, гучаротӣ, баъзе бобҳо ва порчаҳои он ба русӣ ва гурҷӣ (дар таҳқиқоти олимони русу Шӯравӣ) ва форсӣ тарҷума шудаанд.<sup>1</sup>

Дар Тоҷикистон соли 2001 «Авесто» ба ҳатти кириллӣ баргардонда шуд.<sup>2</sup> Донишманди тоҷик Бобо-Назар Ғафор «Гоҳон»-ро ба тоҷикӣ тарҷума намуда, бо тавзеҳот ба таърифи расонд.<sup>3</sup> Муаззам Диловаров «Готҳо ва ҳафт хот»-ро ба кириллӣ баргардон кардааст.<sup>4</sup>

Авестошиносон бар онанд, ки забони «Гоҳон» илҳомгирифта аз нубуғи паёмбарист, ки бар сухан тасаллути комил ва андешаи пухтаву парварда дорад. Каломи «Гоҳон», ки илҳомгирифта аз нуруи аҳурамаздост, бо халлоқияти ӯ меомезад ва ба гуфтаҳои ӯ намуде мебахшад, ки орифу омӣ аз он баҳра мегиранд ва онро мувофиқи замири хеш мефаҳманд. Муҳаммадтақии Рошидмуҳассил бар он аст, ки сухани «Гоҳон» чандпахлуву чандваҷҳист ва ҳар кас тибқи ҷаҳонбинӣ ва дарки хеш аз он баҳра мегирад. Аз ин рӯ, барои «Гоҳон»-и Зардушт як маънии зоҳирӣ ва як ё чанд маънии ихомӣ ва ботинӣ қоилад аст. Маънии зоҳир ба ҳама мафҳум аст, аммо маънии ботинии онро орифон, ҳар як ба қадри мартабаи хеш дармеёбанд. Ин танаввуъи маъноӣ, ба андешаи ӯ, ҳам дар таъбиrotу таркибхост ва ҳам дар бофти ашъор ба назар мерасад. Муҳаққиқи мазкур намунаи зеро барои далели фикраш меоварад:

*«Гавишурун (равони гов) ба шумо гила қард, ки: Барои кӣ маро офаридед, кӣ маро тарошид (сохт), хаим, ситам, хунрезӣ ва зӯр маро сунҷ кардааст, маро ҷуз шумо ниғаҳбоне нест. Эдун бо шубонгарии нек ба сӯйи ман оед».*<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup>Ниг: Бертельс Е. Э. История персидско-таджикской литературы; Маковельский А. О. Авеста. -Баку,1960; Литература Древнего Востока; Брагинский И. С. Из истории таджикской и персидской литератур; Поэзии и проза Древнего Востока. -Москва, 1973; Абаев В. И. Миф и история в Гатах Зороастра // Маҷ. Мақол.: Историко-филологические исследования. -Москва, 1974; Bartholomae Chr., Die Gathasdes Awesta. -Strassburg, 1905; Anklesaria B. The holy Gathasof Zarathushtra.- Bombay, 1953; Humhaech H. W. Die Gathasdes Zaratustra, I-II.-Heidelberg, 1959; Jnster S. The Gathasof Zaratuster. Teheran – Liege,1975; Gnoly G. Zoroaster's Time and Homeland.- Naples, 1980.

<sup>2</sup>Авесто. Тарҷумаи Чалили Дӯстхоҳ.-Душанбе, 2001.

<sup>3</sup>Бобо-Назар Ғафор. Номаҳои бостон.- Душанбе, 2010.

<sup>4</sup>Готҳо ва Ҳафт хот ва дигар гуфтаҳои ёрон ба порсии равон аз Алиакбари Ҷаъфарӣ. Баргардон ба ҳатти кириллӣ аз М. Диловаров. Техрон: Асотир, 1382.

<sup>1</sup> راشد محمد، محمد تقى. بحس در باره محتويات گاهان، تاريخ جامع ايران، ص.170.

Бояд зикр кард, ки мафҳуми «равон» дар «Гоҳон» мавқеи калидӣ дорад ва дар аксари қисматҳои он аз равонҳои гуногуни сухан меравад. Масалан, дар «Ахунвавадгоҳ» аз «равони чаҳон» ёд шудааст:

*«Равони чаҳон назди шумо бигрифт: «Чаро маро сохтед? Кӣ пайкарамро тарошида? Маро хашиму зӯру ситам ба сутӯҳ кашинондаанд. Ман ҷуз шумо ободкунандаи дигареро надорам. Маро бо касе ошно созад, ки некуву судбахш ва ободкунанда бошад».*<sup>1</sup>

Муҳаққиқ суол мегузорад, ки оё ин «гов» ҳамон ҷонварест, ки намоди ҷаҳорпой судманд мебошад, ки кушандагонашро Зардушт маҳкум кардааст? Пажӯҳишгар аз ин мафҳум чанд маънии истиорию ихомӣ мегирад: 1. Гов истиора аз ҳуди Зардушт аст, ки ўро муҳолифонаш борҳо озурдаанд. 2. Манзур аз гов ҳастӣ ва коинот аст ва Зардушт дар хитоби худ ба гурӯҳе назар дорад, ки неъматҳои зебои ахурамаздиро нобуд мекунанд ва чаҳони покро ба бадӣ меолоянд. 3. Равони гов истиора аст барои дайнно (дин, вичдон, биниши дарунӣ).<sup>2</sup>

Муҳаммадтақии Рошидмуҳассил ба таври қатъӣ намегӯяд, ки маънои рамзии «равони гов» дар «Гоҳон» яке аз ин маъноҳост, шояд яке аз инҳо бошад, мумкин аст, ҳамаи ин маъноҳоро бо ҳам дошта бошад ва шояд маъноҳои дигаре ҳам дар миён бошад. Ба назари муҳаққиқ, ин яке аз ҷиҳатҳост, ки каломи «Гоҳон»-ро эътило мебахшад. Буъди дигар, ба андешаи ў, жарфои сухан ва эҷозест, ки дар «Гоҳон» намуд ёфта, онро хайрулкалом кардааст. Воқеан, аз он ҷо, ки «Гоҳон» сурудаҳои ҳуди Зардушт аст, аз дигар қисматҳои «Авесто» фарқ дорад ва муҳаққиқон низ аз ашъори гоҳонӣ бардоштҳои гуногун доранд, ки дар бораи бахшҳои дигар ин китоби муқаддас дуруст нест.

Он нукта, ки «Гоҳон» асли дини зардуштист, ҷойи ҳеҷ тардиде нест, аммо авестошиносон ва муфасссирону тарҷумонони он дар заминаи мавзӯъ ва нуктаҳои асосии ин қисмати «Авесто» ихтилофи назар доранд. Ҷанбаҳои ситоишӣ, ахлоқӣ ва адабию ирфонӣ, ба андешаи муҳаққиқон, бисёр дида мешавад, аммо аз ин миён ҳадафи аслии Зардушт чист, ба таври комил равшан нест. Хумбох чунин мепиндорад, ки «Гоҳон» сирфан ахлоқӣ нест, балки бахшҳои муҳимме аз он ниёиш ба даргоҳи Худованду баёни хостҳо ва ниёзҳои ниёишгар аст. Зардушт дар ин ки сухани худро ихомӣ баён кунад, тааммуде доштааст ва ин таҷаллии ҳунари ўст. Ҷамчунин, суханони ў дар бораи оташу оинҳои динӣ дар анҷуманҳои динӣ гуфта мешудааст ва муҳотаби ў оммаи мардум будаанд.<sup>3</sup> Нуберг (Nyberg) ва пайравони ў навъи ирфони шаманиро дар «Гоҳон» мебинанд ва аз таъсири

<sup>1</sup> Готҳо, ва Ҳафт хот ва дигар гуфтаҳои ёрон ба порсии равон аз Алиакбари Ҷаъфарӣ. Баргардон ба хатти кириллӣ аз М. Диловаров.-С. 18.

<sup>2</sup> Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

<sup>3</sup> Humbach, H., 1991, The Cathas of Zarathushtra, 2 vols.- Heidelberg. نقل از راشد محصل، م. اوستا، ص. 171.

чомаи меҳрӣ ва анҷуманҳои онҳо дар чомаи гоҳонӣ сухан мегӯянд.<sup>1</sup> Донишманди дигари олмонӣ ба «Гоҳон» ва таълимоти он буъди иҷтимоӣ мебахшад ва Гуштосп- ҳомии Зардуштро бо Гуштосп падари Дорюш яке медонад. Хенинг бар ин ду назар эроди зиёде гирифтааст ва Енслер таваччуҳи Зардуштро ба ойнҳову одоб мепазирад, аммо така бар мавзӯҳои ахлоқиро муҳимтар мешуморад.<sup>2</sup>

Аз баррасии андешаҳои авестошиносон бармеоҷад, ки сухани «Гоҳон» чандваҷҳию чандмаъноист ва сирфан ахлоқӣ, оинӣ ё адабӣ донишгари он ноҳада ангоштани ҷанбаҳои дигари он аст. Ба андешаи Бобаки Алихонӣ ва М. Рошидмуҳассил, аврупоиён ба таври қуллӣ ба яке аз абъоди муҳими «Гоҳон» таваччуҳ накардаанд ва он масъалаҳои ирфонии нуҳуфта дар он аст.<sup>3</sup>

### 1.3.3.2. Яснҳо

«Яснҳо» ба маънии парастигу ниёш ва дарбардорандаи дуохост, ки дар оинҳои динӣ хонда мешудааст. Ин калима дар «Авесто» дар шакли «ясна», дар санскрит дар шакли «ачна» ва дар пахлави дар шакли «язишна» омадааст. Дар забони тоҷикӣ дар шакли «ҷашн» боқӣ монда, калимаҳои «эзад», «яздон» низ аз решаи он паҳид омадаанд.<sup>4</sup> «Яснҳо» аз 72 боб, ки онҳоро ба истилоҳи авестой «*haiti*» ва дар тоҷикӣ «ҳо», «ҳот» мегӯянд, иборат аст. Дар яснҳои 1–8 дуо, ниёш ва порчаҳои ситоишӣ дар бораи Ахурамаздо ва ёварони ӯ - амшаспандон омадаанд. Дар ҳои 9–11 рустании мукаддас - хум ситоиш шуда, ки онро «Хум-яшт» номидаанд. Ин қисматҳо аз ҷиҳати мазмуну мундариҷа ба «Яштҳо» қаробат доранд. Дар «ҳо»-и 12-ум қонуну қоидаҳои оини зардуштӣ таъйин гардида, се меъёри асосии он – «маниши нек», «гӯиши нек», «қуниши нек» ситуда шудаанд. Бобҳои баъдӣ (13–27) низ дуову ниёшҳои гуногунро, ки зардуштиён ҳангоми ниёш мехонданд, дар бар мегиранд. Аз «ҳо»-и 28 то 34 «Гоҳон» шурӯъ мешаванд. Бобҳои 35–41-ум «Ясно ҳаптан ҳаити» (ҳафт боби «Ясно») ном дошта, аз ҷиҳати мазмуну мавзӯ ба «Гоҳон» наздиканд. Боби 42-юм ҳамчунин ба «Гоҳон» монанд аст. Дар бобҳои охири «Ясно» (52, 54–72) дуову ниёшҳо дар бораи Суруш (56–57), оташ (62), Ардвисура Анохита (63–69) ва ғайра фароҳам омадаанд. Баъзе бобҳои ин қисми «Яснҳо» такрори бобҳои авваланд. «Ясно»-ро ҳангоми намоз ва дигар маросимҳои зардуштӣ ду мӯбад (Зот ва Респӣ) бо навбат ба бандҳои чудо қарда, мехонданд. Аксари матолиби «Ясно» динӣ, ситоиши эзадону фариштагон аст,

---

<sup>1</sup> Аҳирга, Ҳ.С. Динҳои Ирани Бастиан. Тарҷумаи С. Нҷмабадӣ, Тегран, 1359.   
 <sup>2</sup> Нқл аз Рашидмуҳаммад, Муҳаммад Тоқӣ. Авеста. Ҷ. 71.

<sup>3</sup> Алиқхони, Б. Баррасии Латайф Арифани дар **Насв** Арифани, Тегран, 1379. 1379.

<sup>4</sup> Эмомалӣ Раҳмон. Нигоҳе ба таърих ва тамаддуни орифӣ. - Душанбе: Ирфон, 2006. - С., 369.

вале баробари ин бобҳои 9–11, 12 ва ғайра аз ҷиҳати мазмуну муҳтаво, махсусан дар бар гирифтани устураҳои қадим, достону ривоятҳо ва баъзе маълумоти этнографӣ аҳаммияти калон доранд.<sup>1</sup>

«Ясно» тарҷума ва тафсири паҳлавӣ, яъне «Занд» низ дорад ва баробари дигар бахшҳои «Авесто» мавриди таҳқиқу баррасӣ қарор гирифта, ба забонҳои аврупоӣ, санскрит, гучаротӣ ва ғайра тарҷума шудааст. Тарҷума ва тафсири онро ба забони форсӣ Иброҳим пури Довуд анҷом додааст.<sup>2</sup> «Ясно» бо ин банд поён меёбад:

*«Роҳ яке (аст) ва он ростӣ (аст), дигар (роҳҳо) бериҳа (аст)».*<sup>3</sup>

### 1.3.3.3. Виспарад

«Виспарад» ба маънии «ҳамаи радон, ҳамаи сарварон» аст ва ин номгузорӣ аз он ҷо гирифта шуда, ки дар дини зардуштӣ барои ҳар як аз офаридагони нек рад ё сарвар ба назар гирифта шудааст. Масалан, хум, ки шираи он дар оинҳои динӣ нӯшида мешуд, ради гиёҳон ва дарёи Дойтӣ (дарёи Ому), ки Зардушт дар канори он ба пайгамбарӣ баргузида шуд, ради дарёҳост. Фаслҳои «Виспарад»-ро ба истилоҳи авестой «карда» (тақсимшуда, бахш, фасл, боб) мегӯянд ва он дорои 24 карда аст. «Виспарад» ҳамроҳ бо «Яснҳо» дар маросимҳои динӣ, хусусан Наврӯз ва ҷашнҳои шашгонаи фаслӣ хонда мешаванд.

Дар «Виспарад» ба ҷуз аз радҳо аз эзадони минуй, моддӣ ва ҳар он чи неку нағз аст, ёд ва ситоиш шудааст. Бино ба андешаи Муҳаммадтақии Рошидмуҳассил, «Виспарад»-ро бояд навиштае донист, ки барои сипосгузорӣ аз офаридаҳои неки эзадӣ тадвин шудааст.<sup>4</sup> «Виспарад» аз назари шеваи нигориш монанди бахшҳои «Ясно» аст ва аз ин ҷиҳат онро пайвасте бар «Ясно» ва мукаммили он медонанд.<sup>5</sup> «Виспарад» «Занд», яъне, тарҷума ва тафсир низ дорад ва ҷамъан аз 100 банд иборат аст. Кӯтоҳтарин кардаи он дорои як банд (кардаҳои 6 ва 17) ва дарозтарин кардаи он дорои 21 банд (кардаи 11) аст. «Виспарад» низ монанди «Ясно» бо ин банд поён меёбад:

*«Роҳ яке (аст) ва он ростӣ (аст), дигар (роҳҳо) бериҳа (аст)».*<sup>6</sup>

### 1.3.3.4. Яштҳо

“Яшт”-(авестой Yashti – ситоиш, ниёиш, парастииш), аз назари луғавӣ ҳамреша бо калимаи “ясн” ва ба маънии парастиишу ниёиш аст. Гарҷанде калимаи «яшт» (йашти) бо «ясн» (йасна) ҳаммаъност, вале фарқе низ дорад. Тафовути «Яснҳо» ва «Яштҳо» дар мазмуни

<sup>1</sup> Диловаров М. Ясно //ЭМТ, ҷ.,3.- -С. 398.

<sup>2</sup> Пурдауд, абраҳим. Биснаҷ.1, теҳан,1334

<sup>3</sup> Пурдауд, абраҳим. Биснаҷ.2, теҳан,1337,ص120.

<sup>4</sup> راشدمحصل، محمد تقى. ويسپرد/تاريخ جامع ايران،ص164.

<sup>5</sup> تقضلى، تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام،ص42.

<sup>6</sup> پورداود، ابراهيم. ويسپرد.تهران،1334.



онҳост. «Яснҳо» ба маънои ситоишу ниёиши умумист, «Яштҳо» ситоишу ниёиши эзадони ҷудогонаи зардуштиро дар бар мегиранд. «Яштҳо» сурудҳо ҳастанд, ки умуман ба ситоиши худоёни қадими ориёӣ, монанди Мехру Ноҳид ва ғайра ихтисос доранд. Дар ин қисмат эзадоне ситоиш мешаванд, ки ба давраи пеш аз Зардушт тааллуқ доранд ва аз ин рӯ бисёре аз андешаҳои Эрони Бостон ва давраҳои нахустини шаклгирии фарҳанги эронӣ ва ҳатто даврони муштаракӣ хиндуэрониро метавон дар онҳо дид. Артур Кристенсен дар бораи шаклгирии «Яштҳо» ва тафовути забони он аз «Ғоҳон» батафсил маълумот додааст.<sup>1</sup>

«Яштҳо» аз 21 яшт фароҳам омадаанд, ки номашон ба номи эзадони 30 рӯзи солшумории зардуштӣ мутобиқ аст: 1) «Хурмузд-яшт»; 2) «Ҳафт амшаспанд-яшт»; 3) «Урдибиҳишт-яшт»; 4) «Хурдод-яшт»; 5) «Обон-яшт»; 6) «Хуршед-яшт»; 7) «Моҳ-яшт»; 8) «Тир-яшт» («Тиштра-яшт»); 9) «Дрвасп» ё «Геуш-яшт»; 10) «Мехр-яшт»; 11) «Сурӯш-яшт»; 12) «Раши-яшт»; 13) «Фарвардин-яшт»; 14) «Баҳром-яшт»; 15) «Ром-яшт»; 16) Дин-яшт»; 17) «Ард-яшт»; 18) «Аштод-яшт»; 19) «Зомёд-яшт»; 20) «Ҳаома-яшт»; 21) «Вананд-яшт».<sup>2</sup>

«Яштҳо» аз назари ҳаҷм аз ҳамдигар фарқ доранд, баъзе кӯтоҳтар ва пораҳои дигар тӯлонитаранд ва аз ҷиҳати забон низ бо якдигар тафовут доранд. Яштҳои 1, 4, 12, 18 ва 20 нисбатан навтаранд, яштҳои 5, 8, 10, 13, 17 ва 19, ки «Яштҳои бузург» номида мешаванд, бисёр қухан ҳастанд ва эътиқодҳои қавмҳои ориёӣ пеш аз Зардуштро бозтоб медиҳанд. Аз миёни яштҳои дигар 9, 11, 14, 15 ва 16 низ бахшҳои қухан дорад. «Яштҳо» ҳатто дар шакли имрӯзааш баъзе аз хусусиятҳои шеърӣ дорад.<sup>3</sup> Шумори «Яштҳо» имрӯз 21 аст, аммо дар қадим ба яке аз китобҳои азбайнафтаи «Авесто», ки «Бағон-яшт» («Ситоиши худоҳо») ном дошт, дохил мешуданд ва шумораашон, зоҳиран, зиёдтар будааст. Ҳар як аз «Яштҳои бузург»-ро ба чанд қарда (фасл) ва ҳар қардаро ба бандҳо тақсим намудаанд. Дар «Яштҳо» эзадоне ситуда мешаванд, ки номашон дар осори хиндуориёӣ, аз ҷумла «Ригведо» зикр ёфтааст. Дар «Яштҳо» аз шоҳони асотирии Эрони Бостон, махсусан силсилаи Пешдодиён, Каёниён, паҳлавонони ҳамосӣ сухан меравад, ки дар қисми асотирии «Шоҳнома»-и Абулқосим Фирдавсӣ тасвир шудаанд. Бахше аз яшт ба тавсифи эзаде мепардозад, ки яшт махсус ба ӯст ва сипас достону устураҳое, ки ба ӯ марбут аст, баён мешаванд. Ин достонҳо ва устураҳо кӯтоҳу фишурдаанд. Барои намуна достони тирандозии Ораш танҳо дар банди 6 «Тиштар-Яшт» ишора шудааст. Ин устура ба гунае, ки дар матнҳои оғозини форсии нав дида мешавад, дар «Авесто»

1 کریستن سن، آرتور. ملاحظاتی در باره قدیمترین عهد آیین زردشتی // مزدایپرستی در ایران باستان، ترجمه ذبیح الله صفا، تهران، 1336.

2 Брагинский И. С. Из истории таджикской и персидской литературы.-С. 56.

3 Lazard, G., 1884, 'Lametriguedel'Avestarecent' // AstaIranica 23.-P.284-30.

راشدمحصل، محمد تقی. // اوستا، ص. 148.

наомадааст.<sup>1</sup> Тавассути «Яштҳо» бисёр устура, афсона, ривоят ва дostonҳои қадими ниёконамон боқӣ мондаанд. Аксари авестошиносон бар онанд, ки «Яштҳо» муҳимтарин сарчашма доир ба таърих, устура ва фарҳанги бoston аст ва маълумоти арзишманде дар бораи гузаштаи қавмҳои ориёии эронӣ ва пиндорхову боварҳо ва эътиқодоти онҳо ба даст медиҳад. Дар «Яштҳо» сахнаи ҷанги қавмҳои ориёӣ бо душманон, симои паҳлавонони таҳамтан, илоҳаи зебоӣ Ардвисура Аноҳита, эзадони накӯкору хайрҳои мардум ва ғ. тасвир гардидаанд. Онҳо инъикосгари афкору андешаҳои ватанҳои, адолат, ҳукмронии одилона, панду насихат, некию накӯкорӣ ва ғ. мебошанд. «Яштҳо» аз ҷиҳати ҳаҷм ба «Яштҳо»-и калон ва хурд ҷудо мешаванд. «Яштҳо»-и калон матлаби зиёди асотирӣ, дostonӣ ва ҳамасиро дар бар мегиранд. «Яштҳо»-и хурд аз пораҳои ситоишии иборатанд, ки баъзеяшон аз қисмҳои дигари «Авесто» иқтибос шудаанд.

Мазмуну мавзӯи ҳар яшт аз аввал то охир яксон нест. Дар дохили он дostonу дostonҳои хурде вомехӯранд, ки аз мавзӯи асосии яшт дуранд. «Яштҳо» ба монанди «Ғоҳон» манзуманд, вале дар онҳо баъзан калимаҳои зиёдати барои тафсир дохил шудаанд, ки боиси камбудии вазн ва нобаробарии шумораи ҳиҷоҳои мисраҳо гардидааст. Вазни шеърии «Яштҳо» ҳиҷоӣ ва оҳангӣ, шумораи ҳиҷоҳои мисраҳо аз 8 то 12 мебошад. Дар охири яшт поре такрор мешавад, ки он ба байти василаи тарҷебанд (дар мавриди «Яштҳо» он бо номи «банди васила» мақбултар мебошад) монанд аст.<sup>1</sup>

Бино ба андешаи авестошиносон, «Яштҳо» дар шакли кунунӣ бархе аз мушаххасоти шеъриро дорад. Бахше аз яшт ба тавсифи эзаде мепардозад, ки яшти махсуси ўст ва сипас дostonу устураҳои марбут бо ў баён мешаванд, ки кӯтоҳу фишурдаанд. Аз қурбонӣҳо, ки шахсони асотирӣ барои эзоди вижа кардаанд ва ҳоҷатҳои, ки аз ў хостваанд, низ ёд мешавад. Ишораҳои дostonӣ ва устураҳои «Яштҳо» кӯтоҳ аст. Масалан, дostonи тирандозии Ораш танҳо дар банди 6 «Тиштра-яшт» ишорае гузаро шудааст. Шеваи ҷумлабандии баъзе аз дostonҳои мавҷуд дар паҳлавӣ нишон медиҳад, ки мазмуни онҳо аз «Авесто» гирифта шудааст, аммо матнҳои авестоии онҳо аз байн рафтааст. Бояд зикр кард, ки «Яштҳо» аз ҷанбаи таърихӣ, устураӣ ва фарҳангӣ муҳимтарин манбаъ ба ҳисоб меравад. Дар он маълумоти арзишманде дар бораи гузаштаи қавмҳои ориёӣ, андешаву эътиқодоти онҳо мавҷуд аст. Дар воқеаҳои «Яштҳо» ё худоён нақши асосӣ доранд ва ё шахсиятҳои таърихию асотирӣ. Воқеаҳои гурӯҳи аввал чандон зиёд нестанд, аз ҷумлаи онҳо метавон ба пайкори Тиштар, эзоди борон ва Апӯш, деви хушксолӣ ва хушк дар «Тиштра-яшт» ишора кард. Дар рӯйдодҳои марбут ба шахсиятҳо, қаҳрамонони дoston ғоҳ аз нахустин паҳлавонон ё шоҳони пешдодист. Монанди устураи ҷанги Гуштосп бо

---

اراشد محصل، محمد تقى. پاییدن مرز به روایت متن های زردشتی، مجله تحقیقات تاریخی، س 1، ش 3، تهران، 1368، ص 561-569.

<sup>1</sup> Диловаров М. Яштҳо. -С. 399.

Гандрев (дев) («Ром-яшт», бандҳои 27-29; «Зомёд-яшт», бандҳои 40-41), ки марбут ба давраи ҳиндуаврупоист. Ё ривояти марбут ба Чам ва даврони шаҳрерии ӯ («Обон-яшт», бандҳои 15-17). Баъзе аз дostonҳо таърихӣ ва ё ниматаърихӣ ҳастанд, монанди чангҳои Кайхусрав ва Афросёб («Обон-яшт», банди 49) ва ё набардҳои Гуштосп бо хиюнон («Ром-яшт», банди 29).<sup>1</sup>

Дар «Яштҳо» эътиқодот ва пиндорҳои пешаззардуштӣ ва зардуштӣ бо ҳам омехтааст ва Зардушт дар онҳо ба сурати шахсияти устураӣ даромадааст. Монанди гуфтугӯи Зардушт бо хум, мавриди навозиши эзадбонуи Ашӣ қарор гирифтани Зардушт, парастии Зардушт Ахурамаздоро ва фирор додани Ахриману девон («Ард-яшт», банди 17).

Тавре ки зикр шуд, «Яштҳо» шомили сурудҳои ниёиш дар ситоиши эздон ва баъд аз «Гоҳон» муҳимтарин баҳши «Авесто»-ст. Аз миёни 21 яшти он яшти панҷум ба номи эзади обҳо Ардависур Аноҳид аст ва «Обон-яшт» низ хонда мешавад. Ардависур Аноҳид илоҳа ва мазҳари обҳост, ки аз даврони куҳан назди қавмҳои ориёӣ муқаддас будааст. Ин ном аз ду чузб: Ардависур ва Аноҳита таркиб ёфтааст. «Ардавӣ» номи дарёи афсонавӣ ва «суро» ба маънии неруманд, ки сифати ин дарёст. Аноҳид ба маънии покиза аст, ки дар порсӣ Ноҳид мешавад. Аноҳид эзадбонуи обҳо ва сарчашмаи хайру баракат аст. Аз ин эзадбону дар катибаҳои Ҳахоманишиён ном бурда шудааст. Дар бандҳои 3 то 5 ва 69 аз нури зиндагибахши Аноҳид, бузургию тавоноии ӯ ва бархурдории ӯ аз ҳазорон дарёву рудхона сухан рафтааст. Гуфта шуда, ки Аноҳид ба занон шири пок эҳдо мекунад. Дар «Яшт»-и панҷум аз шоҳону қаҳрамонони Эрони Бостон низ ситоиш шудааст, ки мушаххасоти ҳамосӣ ва шеърӣ дорад. Насри «Обон-яшт» содаву раво ва дилнишин аст, ки устодона анҷом гирифтааст. Ин яшт дорои тавсифҳои бадеъ аз Аноҳидаст, алалхусус дар он ҷо, ки аз таркиби моддии ӯ сухан меравад. Дар ин яшт ба тартиб аз шоҳони пешдодӣ ва қаҳрамонони он даврон Ҳушанг, Чамшед, Аждаҳок (Заҳҳок, дар Бобил), Фаридун, Гаршосп, Афросёб, Ковус, Кайхусрав, Тӯс, писарони Виса сухан меравад, ки ба Аноҳид қурбонӣ мефиристанд, то ҳочати онҳоро раво кунад. Аноҳид на ҳама ҳочатхоҳонро ба мурод мерасонад. Онҳоеро, ки ҳочати нек надоранд, монанди Аждаҳок, Афросёб, писарони Виса ва бародари Арҷосп комёб намекунад. Дар бандҳои 64 ва 126 то 130 Аноҳид тавсиф шуда, ки хеле зебост. Дар ин тавсифҳо Аноҳита духтари зебои хушпайкар, неруманд, некрӯй, камарбанди заррин дар миён баста, кафшҳои дурахшон ва бандҳои тилоӣ дар по дорад.<sup>2</sup>

Гелднер - авестошиноси олмонӣ бар он аст, ки «Яштҳо» дар асл манзум буданд. Ӯ «Яштҳо»-ро дар асл ташкилшуда аз байтҳои ҳаштҳичой медонад, ки дар тӯли замон аз сурати абёти ҳаштҳичой берун омадаанд. Ҳенинг - эроншиноси олмонӣ «Яштҳо»-ро манзум

<sup>1</sup> راشد محمد، محمد تقی، اوستا، ص. 152

<sup>2</sup> قلی زاده، خسرو. فرهنگ اساطیر ایرانی. تهران، 1387، ص. 92-94.

ба назми зарбӣ зикр мекунад. Вай ашъори «Яштҳо»-ро ташкилёфта аз байтҳои медонад, ки се ё чаҳор ҳиҷоӣ зададор доранд.<sup>1</sup> Аз он ҷо, ки дар «Яштҳо» эътиқодоти пешаззардуштӣ бо ақидаҳои зардуштӣ ба ҳам омехта шудаанд, Аҳмади Тафаззулӣ вобаста ба мазмун дар «Яштҳо» ду гуна ашъорро қобили ташхис медонад: ашъоре, ки дар онҳо аз аъмоли эзадон ва қаҳрамонону шоҳони асотириӣ бо забони шоирона суҳан рафтааст, дар онҳо суварӣ ҳаёл бо тасвирҳои шоирона ба қор гирифта шудааст; ашъоре, ки дуоҳову зикрҳои диниро дар бар доранд, баёнҳои андешаҳои зардуштӣ ҳастанд. Дар қисмати бештари ашъори дастаи аввал байтҳо ҳаштҳиҷоиянд, аммо дар дастаи дувум ҳиҷоӣ байтҳо ҳафт ва нӯҳ аст. Вобаста ба ин, муҳаққиқ ба ҳулоса меояд, ки байтҳои «Яштҳо» усулан ҳаштҳиҷоӣ буда, баъдҳо бар асари интиқоли шифоҳии «Авесто» аз як насл ба насли дигар, дар тайи қарнҳо ва сипас хангоми ба китобат даромаданаш тағйироте дар теъдоди ҳиҷоҳо роҳ ёфтааст. Илова бар ин, тадвинкунандагони ниҳоии «Яштҳо» натавонистаанд қоидаҳои вазни онро риоя кунанд. Эҳтимол низ меравад, ки ҷумлаҳои мансур низ дар миёни қитъаҳои манзум роҳ ёфта бошанд. Аз ин рӯ дар баъзе бахшҳои «Яштҳо» ба байтҳои ғайриҳаштҳиҷоӣ бармеҳурем.<sup>2</sup>

### 1.3.3.5. Хурда –Авесто

«Хурда-Авесто» ҷадидтарин бахши «Авесто» ва маҷмӯаи пораҳои баргузида аз матнҳои дуову ниёишҳои зардуштист, ки пайравони он онҳоро дар адои намоз, иҷрои қонуну қоидаҳои динӣ, хангоми ҷашну сӯғворӣ ва ғайра мехонданд. Мӯбади бузурги аҳди Шопури дувум Озарбади Маҳраспандонро мураттибу тадвинкунандаи он медонанд. Дастнависҳои зиёде аз «Хурда-Авесто» то замони мо расидаанд. Аксари қисмҳои ин асар бо қисматҳои дигари «Авесто» якҷо омадааст, барои ҳамин онро ҷузъи панҷуми «Авесто» донистаанд. Номгӯӣ ва шарҳу тафсири қисмҳои «Хурда-Авесто» ба ин қарор аст: 1) Сарсухан; 2) Дуоҳои муқаддаси зардуштӣ – Ашем воҳу ва Йата ахуна ваирйа... Ин дуоҳоро зардуштиён дар ҳар ҳолату хангом, пеш аз оғози қорашон мехондаанд; 3) «Ниранг» (қоида)-и кустӣ бастан-пораест, ки дар он қонуну қоидаҳои бастанӣ миёнбанди муқаддаси зардуштӣ - кустӣ шарҳ ёфтааст. Ин миёнбандро писарони зардуштӣ хангоми ба синни балоғат (15-солагӣ) расидан мебастанд; 4) «Суруш ва ё ниранг» (қоида)-и дастшӯӣ; 5) «Хушбом» – як пора матн дар васфи бомдод; 6) «Ниёишҳо» – «Хуршед-ниёиш», «Меҳр-ниёиш», «Моҳ-ниёиш», «Ардвисура-ниёиш», «Оташи Баҳром-ниёиш». Дар ниёишҳо пораҳо аз «Хуршед-яшт», «Меҳр-яшт», «Моҳ-яшт», «Обон-

1. نقل از ابوالقاسمی، محسن. شعر در ایران پیش از اسلام، ص. 24.  
2. تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 61-60.

яшт» оварда шудаанд; 7) «Гоҳон» – панҷ суруд ва тавсифи гоҳ (вақт)-и шабонарӯз. Дар ҷамеаи зардуштиёни Эрони Бостон шабонарӯзро ба панҷ ҳангом бахш мекардаанд: 1) Ҳовангоҳ – аз сар задани хуршед то нимрӯз; 2) Рапитвингоҳ – аз нимрӯз то аср; 3) Узайарингоҳ – аз аср то нишастани хуршед; 4) Ависрутримгоҳ – аз шом то ними шаб; 5) Ушаҳингоҳ – аз ними шаб то бархостани хуршед. Номи ҳар як ҳангоми шабонарӯз инчунин эзад (фиришта)-и ниғаҳбони ҳамон ҳангом буд ва дар сурудҳои «Гоҳон» ӯ ситоиш шудааст; 8) «Яштҳо». Дар нусхаи «Хурда -Авесто» «Яштҳо» низ ҷо дода шудаанд. Миқдори «Яштҳо» дар нусхаҳо гуногун аст, вале дар ҳамаи нусхаҳои он ду «Яшт»-«Хурмузд-яшт» ва «Суруш-яшт» мавҷуданд. К. Гелднер – мураттиби матни интиқодии «Авесто» тамоми 21 «Яшт»-ро ба «Хурда-Авесто» дохил кардааст;<sup>1</sup> 9) «Сирӯза» – қитъаҳо дар ситоиши сӣ рӯзи моҳ. Дар солшумории зардуштӣ ҳар як рӯзи моҳ ва инчунин дувоздаҳ моҳи сол бо номи амшоспандон ва эзадони зардуштӣ бо монанди Ахурамаздо, Баҳром, Суруш, Рашӣ, Меҳр ва ғайра мавсум буданд. Масалан, ба муносибати фаро расидани рӯзи Меҳр қитъаи ба Меҳр бахшидашударо меҳонданд. Тамоми «Сирӯза» дар рӯзи сиюми вафоти пайравони дини зардуштӣ хонда мешуд; 10) «Офарингон» – ҷаҳор ситоишу ниёиш, ки барои иҷрои маросимҳои динӣ ва ҷашнҳои зардуштиён истифода мешуданд. «Офарингони даҳмон» – дар оғози соли нав, рӯзҳои ҷаҳорум, даҳум ва сиюми ҳар моҳ, инчунин ҳангоми даргузаштани касе хонда мешуд; «Офарингони Гоҳонҳо»-ро дар панҷ рӯзи охири сол, ки онро «Андаргоҳ», «Баҳизак» ё «Панҷаи дуздида» мегуфтанд, меҳонданд. Азбаски ин панҷ рӯз мавсум ба номи «Гоҳон» аст, «Офарингони Гоҳон» ном гирифтааст; «Офарингони Гоҳанбор» ҳангоми шаш ҷашни динӣ хонда мешуд. Ба ақидаи зардуштиён, Ахурамаздо оламро дар шаш навбат дар муддати як сол офаридааст. Замонҳои офаринишро «Гоҳанбор» мегуфтанд. Дар қадим рӯзи фаро расидани ҳар як Гоҳанборро ҷашн мегирифтанд. Ҷашни якум рӯзи чихилупанҷумин, дувум – садупанҷоҳумин, севум – садухаштодумин, ҷаҳорум – дусаду даҳумин, панҷум – дусаду навадумин ва шашум – сесадушаступанҷумин рӯзи сол фаро мерасид. Ахурамаздо гӯё дар нахустин Гоҳанбор осмон ва сипас об, замин, гиёҳ, ҷонварон ва одамнро офарида будааст; «Офарингони Рапитвингоҳ» ситоишест дар васфи эзди ниғаҳбони фасли тобистон – Рапитвин (вазифаи дигари ин эзад, чунонки дар «Гоҳон» зикр шуд, ниғаҳбонии нимрӯз – яке аз вақтҳои шабонарӯз мебошад).<sup>1</sup>

<sup>1</sup>Geldner K.1886, Avesta, the Sacred Book of the Parsis, vol.I.-Stuttgart; Нақл аз Диловаров М. Хурд-Авесто //ЭАСТ.-С. 325.

<sup>1</sup>Диловаров М. Хурд-Авесто.-С.325.

«Хурда- Авесто» аз чихати дар бар гирифтани баъзе ривоятҳои ҳамосӣ ва асотирӣ, маълумоти мардумшиносӣ, ситорашиносӣ, таърихӣ, инъикоси тарзи зиндагии ниёғони мардуми ориёӣ, ному тарзи баргузории чашнҳо, тарбияи ҷавонони ҷамоаи зардуштиён ва ғайра аҳаммият дорад. Илова бар инҳо, «Хурда-Авесто» шеърҳо ва дуоҳои дигаре, монанди дуоҳои маъруфи зардуштӣ «Суруши боч» (дуои хоси эзади Суруш) ва «Хушбом» (дуо дар ситоиши сапедадам)-ро низ дар бар дорад.<sup>1</sup>

### 1.3.3.6.Вандидод

“Вандидод” ба маънии “қонуни ҷудо аз дев” дар асл номи нуздаҳум наски “Авесто”-и давраи Сосонӣ буда, ки ба таври комил боқӣ мондааст. Вожаи «Вандидод» шакли таҳрифшудаи калимаи «Виде-давд» - «Вй-даево-датем» мебошад. “Вандидод” аз 22 фарғард (боб, фасл)-и гуногунмавзӯӣ иборат буда, дар шакли муколамаи Зардушт ва Аҳурамаздо сохта шудааст. Яъне, Зардушт аз Аҳурамаздо мепурсад ва Аҳурамаздо ба ӯ посух медиҳад. Мавзӯи аслии “Вандидод” аҳкоми динӣ, баҳусус қонунҳои марбут ба покӣ ва кайфарҳост, аммо дар он масъалаҳои низ матраҳ мешаванд, ки ба аҳком иртиботе надоранд. Масалан, фарғарди нахуст аз 16 кишвари офаридаи Аҳурамаздо–Эронвич, Суғд, Марв, Балх, Нусай (дар миёни Балху Марв), Ҳирот, Ваекарета, Урва, Хнента дар Гургон, Ҳарахвайти, Ҳилманд, Рай, Чахра, Варан, Ҳафтрӯд, сарзамини гирдогирди сарчашмаи рӯди Ранға сухан мегӯяд, ки иқоматгоҳи ориёӣҳо будааст. Ин сарзаминҳо ҳама дар шарқи Эрони таърихист. Ин қадимтарин маълумот дар бораи маншаъ ва хостгоҳи қавмҳои ориёӣ эронӣ мебошад. Агар Аҳурамаздо дар ин кишварҳо тухми некӣ мекошта бошад, Аҳриман дар онҳо сардию боду борон, мору ҳашароти зараровар, хушксолӣ, гуруснагӣ, шохони золим паҳн менамуд. Аз ҷумла, дар Суғд Аҳриман ҳашараи захрдоре офарид, ки чорпоёнро газида ба ҳалокат мерасонд. Ном ва мавзеи ҷойгир будани баъзе кишварҳо дар илми ҷуғрофиё ва таърихи муосир муайян гардидааст, аммо ваҷҳи тасмия, мавзеи ҷуғрофии баъзе аз онҳо то ҳол дақиқ нашудааст.

Дар матни «Вандидод» таҳти мафҳуми «дев» ҳар гуна офариниши бади зараррасонанда ба инсон, монанди магас, занбӯр, хазанда, масасан, мор, ҳашарот, ҷонварон, инчунин мафҳумҳои ғайримоддӣ–Бушосп–деви танбалию коҳилӣ, Насу – деви палидкунандаи бадани инсон, ҳар гуна бемориҳо, ки чун як офаридаи бад ташхис шудаанд ва ғайра фаҳмида мешавад.

---

<sup>1</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص 44 .

Фрагарди дувуми «Вандидод» достони Чам (Чамшед) аст, ки дар «Авесто» ба шакли Йима Хшаета (Йимаи дурахшон) омадааст. Дар ин фардгард дар бораи подшоҳии Чам ва осонию роҳатии даврони шахрерии ӯ сухан меравад. Зардушт аз Ахурамаздо мепурсад, ки ба ғайр аз ман боз бо кадом шахсе аз мардум ҳампурсагӣ (гуфтугӯӣ) кардаӣ? Ахурамаздо «Чами хурчехри хубрама»-ро нахустин касе аз мардумон медонад, ки диногоҳию динбурдориро напазируфт, вале ниғахдорӣ, солории кишвару мардумонро бар дӯш гирифт. Дар замони сарвари Чам кишварҳои ориёӣ аз рамаҳои чорпоён, мардумон пур шуданд ва кишвар барои онҳо тангӣ мекард. Бо ёрии асои тилоие, ки Чам аз Ахурамаздо гирифта буд, вай кишварҳои ориёиро се бор васеъ кард ва барои чорпоён чарогоҳҳо, барои мардум ҷойи зист муҳайё намуд. Кори дигари неки Чам барои мардум сохтани Вари Чамкард мебошад. Вари Чамкард қалъаест, ки Чам ба дастури Урмузд дар зери замин сохт, то мардумонро аз шарри зимистони малкус (ба маънии мирондан ва куштан) дар ҳазораи Ушидар ҳифз кунад. Достони Чами «Вандидод»-ро оғози «Достони Чамшед»-и «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ мегардонанд. Дар «Шоҳнома» дар бораи Чамшед маълумоти мухтасар омадааст. Ба воситаи ин бахши «Вандидод» достони Фирдавсӣ комилтар мегардад.<sup>1</sup>

Фрагарди сеवуми «Вандидод» додҳои марбут ба замин, кишоварзӣ кардан, ободонии он марбут аст ва дар он шеваи дур доштани замин аз олудагӣ шарҳ дода шудааст. Яъне, бо бунёди хона, оила, зиндагӣ бо қадбону ва фарзандон, доштани рамаи чорпоён ва аз коштани гиёҳу гандум ва дарахтони мевадор замин шод мешавад. Баръакси ҳол, замин талхкому андӯхгин мегардад. Замин ба шахсе, ки вайро ба «дасти чапу рост, дасти рости дасти чап» кишт кунад, фаровонӣ мебахшад. Кишти ғалла, алалхусус ҷаву гандум амали неке шуморида шудааст, ки боиси табоҳии девон мегардад:

*«Ҳангоме ки ҷав ба бор ояд, девон аз ҷо бармеҷаҳанд. Ҳангоме ки гандум фаровон бирӯяд, дили девон аз ҳарос меларзад. Ҳангоме ки гандум орд шавад, девон нола бармеоваранд. Ҳангоме ки гандум хирман шавад, девон нобуд мешаванд. Дар хонае, ки гандум инчунин ба бор ояд, девон беш намеоянд».*<sup>2</sup>

Фрагарди чаҳорум шарҳи шароитест, ки бояд дар паймонҳои риоят шавад. Мавзӯи асосии ин фрагард аҳду паймон ва ҷазо барои шикастани онҳост. Шаш навъ паймон: гуфтор-паймон, даст-паймон, гӯсфанд-паймон, гов-паймон, мардум-паймон, киштзор-паймон номбар шудаанд ва барои шикастани онҳо ҷазоҳо таъйин гардидаанд. Дар ҳамин фрагард баъзе масъалаҳои ҳуқуқӣ—ҷазоҳо барои расонидани зарари ҷисмонӣ, масалан, барои задани касе, агар

<sup>1</sup>Диловаров М. Вандидод //ЭМТ, ҷ.,3.-Душанбе, 2014. -С.459.

<sup>2</sup>Авесто.-Душанбе, 2001, нақл аз М. Диловаров. Вандидод. -С.460.

вай беҳуш шавад, устухоне аз вай бишканад, хуни вай равон шавад ва осеби сахт расонидан ҷазоҳои гуногун муқаррар шудаанд. Никоти муҳим дар ин фрагард обод кардани хонадон, ҳамсар доштан мебошанд. Гуфта шудааст, ки: «*Касе дорой дорад, басе бартар аз касест, ки ҳеч надорад*».<sup>1</sup>

Фрагарди панҷум то дувоздахум шарҳи олудагиҳо ва нопокиҳост, ки дар ҳангоми ламси ҷасад пеш меояд. Чигунагии покӣ аз ин олудагиҳо низ баён шудааст, яъне, тоза нигоҳ доштани замин (дар замин нагӯронидани одами мурда ва ё ҳайвоноти мурда), об (тоза кардани он аз олудагиҳову ҷасадҳои мурда), маросими ба дахма бурдани мурда ва монанди инҳо. Мавзӯю масъалаҳои дар фрагардҳои дигари «Вандидод» матраҳгардида дар бораи нигоҳубин ва арзиши сағ (фрагарди 13), дар бораи подафроҳ (кайфар)-и куштани бабр (сағи обӣ, фрагарди 14), дар бораи панҷ гуноҳи бузург, ки ҷазои қатл барои онҳо дар назар гирифта шудааст (фаргарди 15). Бахше аз он низ шарҳи вазифаҳои мард нисбат ба ҳамсару фарзандонаш аст, дар бораи нопокиҳои занона (фаргарди 16), дар бораи гирифтани ноҳун, тарошидани мӯйи сар ва нигоҳ доштани онҳо, беҳдошт (гигиена, фрагарди 17), ситоиши хурӯс ба унвони парандаи ёвари Суруш, ки бар хилофи Бушосп–деви коҳилию танбалӣ, мардумро барои иҷрои корҳои динӣ – намози бомдод мехонад, гуноҳи набастани кустӣ (камарбанди динӣ, фрагарди 18), шарҳи озмуни Зардушт ва муқовимати ӯ дар баробари васвасаҳои Аҳриман ва низ дархости Зардушт аз Ахурамаздо, то ӯро ба ҳақиқати дин огоҳ гардонад (фрагарди 19) ва дар бораи тиб, навъҳои дармонҳо, музди пизишк ва монанди инҳо (фрагардҳои 20-22) мебошанд. Воқеан, дар ин фрагардҳои «Вандидод» масъалаҳои гуногуни илми тиб ба таври густарда инъикос ёфтаанд. Дар ин ҷо аз таълими пизишк, амали ҷарроҳиро се бор дар ҷонварон санҷидан, сипас ба табобати мардумон – пайравони маздоясно даст задан, номгӯи бемориҳо, ки шумораи онҳо 99999–то гуфта шудааст (масалан, таб, сардард, табларза, ажана, ажава, хура, моргазидагӣ), нахустин пизишк дар таърихи мардуми ориёӣ–*Трита*, гирифтани ҳаққи хидмати пизишкӣ (бо молу ашё, на бо пул), тарзҳои табобат–сухандармонӣ, гиёҳдармонӣ, кордармонӣ (ҷарроҳӣ) ва ғайра сухан меравад. Дар «Вандидод» дуо бар зидди беморӣ омадааст:

*Ман мегӯям: «Эй беморӣ, дур шав!»*

*Ман мегӯям: «Эй марг, дур шав!»*

*Ман мегӯям: «Эй таб, дур шав!»*

*Ман мегӯям: «Эй нохушӣ, дур шав!»*<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup> Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

<sup>1</sup>Нақл аз Диловаров М. Вандидод. -С. 460.



Мавзӯу масъалаҳои дар “Вандидод” матраҳгардида аз лиҳози замони тадвин яқсон нестанд, баъзе куҳан ва бархе дигар наватаранд. Бино ба гуфтаи муҳаққиқон, ҳатто огоҳиҳои пешаззардуштӣ низ дар онҳо вучуд дорад, аммо аксари авестошиносон бар онанд, ки замони тadvini ниҳии онҳо бояд пас аз давраи Ҳоҳоманишиён бошад.<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup> راشد محصل، محمد تقی. اوستا //تاریخ جامع ایران، ص.146-148. ;Диловаров М. Вандидод. -С. 460; تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص.60-62.

## ФАСЛИ ДУВУМ

### II. АДАБИЁТ ДАР ДАВРАИ ФОСИЛА ВА ТАНАЗЗУЛИ АДАБӢ

Давраи дувум, бино ба табақабандии Ҷалолуддини Хумоӣ, аз замони инқирози давлати Ҳахоманишӣ дар соли 331 пеш аз мелод ва то давраи таъсиси давлати Сосониён бо кӯшиши Ардашери Бобакон дар соли 226 мелодиро дар бар мегирад. Ин давраро донишманди мазкур “давраи Искандарию Ашконӣ ё давраи фатрат ва инхитоти адабӣ” номидааст.<sup>1</sup>

Ба қавли бархе аз муҳаққиқон, ки така ба сарчашмаҳое чун “Динкард”-у “Бундаҳишн” доранд, баъд аз он ки Искандари Мақдунӣ Эронзаминро забт кард, ҳар чӣ аз китобҳои илмию адабии эронӣро ба назари худ писандид, амр кард, ки ба юнонӣ тарҷума кунанд. Ҳаким Низомӣ дар “Искандарнома” ба ин маънӣ ишора мекунад:

*Хирадномаҳоро зи лафзи дарӣ  
Ба юнонзабон кард қисватгарӣ.<sup>2</sup>*

Сипас, асли ин нусхаҳоро бо тамоми осори илмию адабӣ ва динии мардуми эронитабор маҳву нобуд сохт. Дар заминаи кинаи деринае, ки юнониён ба Ҳахоманишиён доштанд, на танҳо осори илмию адабӣ ва динӣ, балки осори фарҳангию моддӣ низ нобуд карда шуд. Аз ҷумла бо фармони ин шоҳи ғаддор пойтахти шоҳони ҳахоманиширо оташ заданд, китобхонаҳоро, ки ҳар як дорои осори нафисаи илмию мазҳабӣ ва адабии эронӣ буд, сӯхтанд. Ҷонишинҳои ӯ - селевкиён низ ин ҷинойти ӯро давом доданд ва ҳеҷ эътиное ба улуму одоби эронӣ надоштанд.<sup>3</sup>

Хулоса, дар асари истилои Искандари Мақдунӣ ва ҷонишинҳои ӯ тамаддуну забони юнонӣ дар Эрон роиҷ ва ҷонишини тамаддуни эронӣ гашт. Ба қавли муаррихон, дар натиҷаи интишори ҳеленизм (Hellenisme) дар Машриқ (яъне, ғалабаи тамаддун ва забони юнонӣ) ба қуллӣ Эрон ва осори илмию адабии он поймол ва мағлуби забон ва тамаддуни юнонӣ шуд ва илмҳои юнонӣ, аз қабилӣ тиббу фалсафа ва луғоти юнонӣ дар Эрон ривочи комил ёфт. Муаррихон менависанд, ки Искандар ва селевкиён дар ҷойҳои мухталифи Эрон, аз қабилӣ Систон, Афғонистон ва Балучистон 70 шаҳр бино карданд ва дар онҳо муҳочирони юнониро ҷой доданд.

---

1 Һмаи, Ҷалал алдин. Тарих адбиат иран ; ص. 14

2 نقل از Һмаيي، ج. ګناب ذکر شده، ص. 14

3 Һمان جا، Һمان صفحه.

Бо харобкори Искандар ва ҷонишинҳои ӯ тамаддун ва фарҳанги ориёии эронӣ ба кулӣ аз байн нарафт, чунонки ин ҳолат дар дигар сарзаминҳои забткардаи ӯ, монанди Миср рух дод. Юнониёни муқими Эрон рафта - рафта ҳайсиати қавмии худро аз даст доданд ва эронӣ шуданд.

## II.1. Адабиёт дар давраи Ашкониён

Бояд зикр кард, ки забоншиносон оғози давраи Ашкониён то поёни аҳди Сосониёро давраи ривочи забонҳои эронии миёна мехонанд. Забони портӣ, ки ба паҳлавонӣ ва паҳлавии ашкониён низ маъруф аст, аз забонҳои эронии миёнаи шимолӣ ғарбист. Ин забон дар матни монавӣ ба забони форсии миёна «паҳлавоник» номида шудааст.<sup>1</sup> Сурати бостонии ин забон, чунонки аз номаш пайдост, дар устони Порт - аз устонҳои шоҳаншоҳии Ҳахоманишиён роиҷ буд. Бино ба гуфтаи Тафаззулӣ, «ҳеч навиштаи адабӣ ба забони портӣ (паҳлавии ашкониён) чи динӣ ва чи ғайридинӣ аз даврони Ашкониён бар ҷой намондааст».<sup>2</sup> Ашкониён дар оғози ҳукуматашон зери таъсири фарҳанг ва забони юнонӣ буданд, ки ҳатто ному лақаби худро бо ҳатту забони юнонӣ дар сиккаҳояшон ҳаққоқӣ кардаанд. Балоши аввал нахустин подшоҳи ашкониён буд, ки дар баробари забону ҳатти юнонӣ забон ва ҳатти портиро низ дар қорҳои давлатдорӣ ба қор бурд. Бино ба гуфтаи забоншиносон, забони ашкониён порсии ашкониён ё паҳлавии шимолӣ буд, ки бо забони паҳлавии ҷанубӣ ё паҳлавии сосониён тафовути зиёд надошт. Агарчи асар аз гунаи бостонии ин забон мавҷуд нест, вале баъзе аз калимаҳои аҳди қадими онро дар катибаҳои ҳахоманишиён метавон пайдо кард, монанди Фравартиш (Fravartī-номи яке аз шӯришгарони портӣ), Патиграбона (Patigrabana-номи шаҳре дар Порт), Вишпаузотӣ (Vispauzati-номи шаҳре дар Порт) ва ғайра, ки дар катибаи Бестуни Дорюши Бузург, дар қисмати ба забони форсии бостонии он ба қор рафтааст.<sup>3</sup> Дар аҳди Ашкониён санад ва номаҳо дар оғоз ба забони оромӣ навишта мешуд ва аз ҳудуди нимаи дувуми қарни аввали пеш аз мелод забони портӣ ва ҳатти он, ки аз ҳатти оромӣ иқтибос шуда буд, ҷойи онро гирифт. Илова бар оромӣ забони юнонӣ низ яке аз забонҳои расмӣ шоҳаншоҳии ашкониён буд.<sup>4</sup> Дар ин давра сиккаҳоро нахуст ба расми селевкиён ба забони юнонӣ зарб мекарданд, вале аз ҳудуди нимаи қарни аввали мелодӣ портӣ ба ҷойи он ба қор гирифта шуд.<sup>5</sup>

1. Бағбидӣ, Ҳ. زبان پارتی//تاریخ جامع ایران، ص. 177-188

2. تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 75

3. همان جا، ص. 77.

4. تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 77.

5. بیات عزیز الله. تاریخ تطبیقی ایران با کشورهای جهان. تهران، 1384. ص. 33.

Бино ба таъкиди Ҳасанризои Боғбедӣ, куҳантарин осори барҷоймонда ба забони портӣ сафолнавиштаест, ки дар харобаҳои шаҳри Нисо - пойтахти қадими Ашкониён дар наздикии Ашхободи<sup>1</sup> кунунӣ, дар Туркманистон ёфтаанд. Бештари ин сафолинаҳо ба садаи нахусти пеш аз мелод тааллуқ дорад. Забони портӣ тавассути фаъолияти густардаи мубаллиғони оини монавӣ дар Осиёи Марказӣ ва Эрон батадриҷ яке аз муҳимтарин забонҳои дини монавӣ шуд. Забоншиносон дар асоси шоҳидҳои илмӣ собит кардаанд, ки ин забон то асри шаши мелодӣ зинда будааст ва баъдан аз байн рафтааст. Бо вучуди ин ҳама забони портӣ баъд аз асри шаш ҳам дар Осиёи Марказӣ дар байни пайравони оини Монӣ ба қор мерафтааст. Бештари осори монавии портизабон мутааллиқ ба асри нухуми мелодист. Забони портӣ ба унвони забони оини монавӣ то асри XIII зинда буда ва баъд аз ҳамлаи муғул бо аз байн рафтани дини монавӣ аз байн рафтааст. Пажӯҳандагон бар онанд, ки забони портӣ солҳои дароз ҳатто баъди аз байн рафтани дар Эрон дар байни пайравони дини монавии Осиёи Марказӣ мавриди истифода буд.

Осори бозмондаи портӣ ба ду хат навишта шудааст: хатти портӣ ва хатти монавӣ. Ҳар ду хат асли оромӣ доранд ва аз рост ба чап навишта мешаванд. Ҳасанризои Боғбедӣ бо тақия бар таҳқиқоти Бенвенист менависад, ки қорбурди густардаи забони портӣ дар тӯли қарнҳо сабаб шуда, ки калимаҳои бисёре аз ин забон ба забонҳои дигар, аз ҷумла форсии миёна, суғдӣ, оромӣ, сурёни ва алалхусус арманӣ ва аз он тариқ ба забони гурҷӣ роҳ ёбанд. Аз сӯйи дигар, забоншиносон собит кардаанд, ки аз он ҷо ки давраи шукуфои ва рушди нумӯи забони форсии дарӣ дар садаҳои нахустини ҳиҷрӣ дар шарқи Эрон, дар Хуросону Мовароуннаҳр буд, вожаҳои бисёреро метавон ёфт, ки маншаи портӣ доранд. Аз сӯйи дигар, дар забони портӣ низ калимоти зиёдеро аз забонҳои монанди форсии миёна, сурёни, ҳиндӣ, юнони метавон мушоҳида кард. Ҳ.Боғбедӣ дар байни осори портӣ аз қитъаҳои хабар медиҳад, ки ба хатти суғдӣ ва чинӣ навишта шудаанд. Донишмандони аврупоӣ, монанди С. Вилямс дар ин масъала батафсил маълумот додаанд.<sup>2</sup> Аҳмади Тафаззулӣ бар он аст, ки адабиёт дар даврони портӣ, ҳамонанди адвори дигар, ба сурати шифоҳӣ ҳифз мешудааст. Қиссагӯёну наққолон афсонаҳоро сина ба сина нақл мекардаанд. Гурӯҳе аз онон гӯсон (gosan) ном доштаанд. Шоирон ва мусиқидонони даврагарде будаанд, ки дostonҳоро бо шеър нақл мекарданд. Дар қитъае аз осори монавии портӣ омадааст:

---

<sup>1</sup>Бояд зикр кард, ки ин шаҳр на Ишқобод, ки бародарони эронӣ мегӯянд ва на Ашхобод, ки рафиқони туркман мегӯянд, балки Ашқобод бояд бошад, яъне шаҳре, ки Ашқ- муассиси сулолаи Аршақҳо (Ашкониён) бунёд ниҳодааст.

<sup>2</sup> نقل از باغییدی، ح. زبان پارتی، ص. 179.

«Ҳамчу гӯсоне, ки ҳунари шаҳрёрону кайҳои пешинро баён медорад ва худ ҳеч накунад»<sup>1</sup>.

Муҳаққиқон бо баррасии осори монавии портӣ ба хулоса омадаанд, ки гӯсонҳо ҳофизи дostonҳои миллии Эрон будаанд ва онҳоро ба Сосониён мунтақил кардаанд. Ҳамин дostonҳо баъдҳо бахше аз сарчашмаҳои «Худойнома»-и паҳлавиро ташкил дода ва ниҳоятан дар «Шоҳнома» мунъакис шудаанд. Аз миёни дostonҳо, ки дар адабиёти форсии тоҷикӣ боқӣ монда, манзумаи ошиқонаи «Вису Ромин» аст, ки асли портӣ дорад. Ҳамчунин эҳтимол дорад, ки баъзе аз дostonҳои «Шоҳнома», монанди дostonи «Бежану Манижа», ки бунмояш ошиқона аст, асли портӣ дошта бошад.<sup>2</sup> Осори портии мутааллиқ ба давраи Ашконӣ ё андаке пас аз онро, ки хеле кам аст, муҳаққиқон ба таври зер муаррифӣ кардаанд:

1. Сафолинаҳои шаҳри Нисо, ки дар наздикии Ашхобод (Туркменистон) - пойтахти қадимии Ашконӣ ба даст омадааст, таърихи ниғориши онҳо асли аввали пеш аз мелод аст. Ин навиштаҳо ба рӯйи кӯзаҳои шароб ва сирко аст, ки шомили номҳои ашхос, маконҳо, вазн ва таърихи рӯзу моҳу сол мебошанд.

2. Аз се чармнавиштаи ёфтшуда дар Уромони Курдистон ду тикка ба хат ва забони юнонӣ ва яке ба хат ва забони портӣ мебошад, ки мутааллиқ ба садаи аввали мелодист. Бар пушти яке аз чармнавиштаҳои юнонӣ низ калимоте ба портӣ дида мешавад. Ин чармнавиштаҳо қиблаи фурӯши ду токистонанд.

3. Навиштаҳои кӯтоҳ бар чанд сикка, муҳр ва ҷавоҳир аз поёни давраи ашконӣ ва сиккаҳои шоҳони тобей онҳо дар Систон ва бахшҳои аз Ҳиндустон дар асрҳои аввал ва дуҷуми мелодӣ.

4. Сангнавиштаҳои кӯтоҳ дар Ормозӣ (дар Гурҷистон), як сангнавиштаи кӯтоҳ дар Покистон ва чанд сангнавиштаи кӯтоҳ дар Эрон, дар сари пули Заҳоб, Хинги наврӯзӣ, Қоли чангол ва Лохмазор. Бархе аз сангнавиштаҳои Ормозӣ дузабонаанд ва тарҷумаи юнонӣ низ доранд.

5. Қатибаи бисёр кӯтоҳ бар нимтанаи сангии Балоши ҷаҳорум дар муаррифии ӯ.

6. Қатибаи Балоши ҷаҳорум бар муҷассамаи биринҷӣ аз Ҳеракл, ки дар Ироқ ёфт шудааст. Ин қатиба тарҷумаи юнонӣ низ дорад ва мавзӯи он пирӯзии Балош бар Меҳрдоди ҷаҳорум ва фатҳи Мишон аст. Таърихи китобати он соли 150 мелодист.

7. Қатибаи санги мазори Хувосаг, шаҳрбони Шуш, ки ба фармони Ардавони ҷаҳорум, охири подшоҳи ашконӣ бино шудааст. Таърихи китобати ин қатиба 463 ашконӣ, баробар ба соли 215

<sup>1</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 76.

<sup>2</sup> خالقی مطلق، جلال. بیژن و منیره و ویس و رامین//ایران شناسی، س 2، ش 2، ص. 283-298

мелодист. Ҳамчунин осори бозмондаи портӣ аз давраи Сосониён низ кашф шудааст.<sup>1</sup>

Қобили зикр аст, ки бештари осори бозмондаи портӣ осори монавӣ ҳастанд, ки дар аввалҳои асри XX дар харобаҳои савмаи монавӣ дар Турфони Туркистони Чин ёфт шуданд. Ин осорро муҳаққиқон ба ду даста тақсим намудаанд:

1. Осори Монӣ ва шогирдони ӯ, ҳамчун Амму, мубаллиғи бузурги оини монавӣ дар шимоли шарқи Эрон ва бахшҳои аз Осиёи Марказӣ. Муҳимтарин асар аз ин навъ бахшҳои аз китоби «Ардхангвифирос» (омӯзиши Аржанг) дар тафсири «Аржанг» - китоби маъруфи Монист.

2. Осори мутааххири монавӣ, ки бештар марбут ба фирқаи диноварон (диновария) ҳастанд. Қисмати қобили таваҷҷуҳе аз ин осор манзум аст.<sup>2</sup>

Ҳамчунин ду китоби бозмонда ба забони форсии миёна ба номҳои «Ёдгори Зарирон» ва «Дарахти Осурӣ» дар асл манзума ба забони портӣ будааст. Шоҳиди ин даъво вучуди вожаҳои дахили портӣ дар онҳост. Бидуни шубҳа, маснавии «Вису Ромин»-и Фахруддини Гургонӣ низ асли портӣ доштааст. Муаллифони сарчашмаҳои исломӣ, монанди Ҳамдуллоҳи Муствафӣ, Ҳамзаи Исфаҳонӣ ва дигарон дар баробари ин достони ошиқона «Синдбоднома» ва достони «Бузосиф ва Балухар»-ро низ мансуб ба ин даврон медонанд.<sup>3</sup>

Баррасии ахбори сарчашмаҳо ва навиштаҳои муҳаққиқон собит менамояд, ки забони Ашкониён забони паҳлавии шимолӣ буд, ки бо забони паҳлавии ҷанубӣ ё паҳлавии сосонӣ андаке тафовут дошт. Ашкониён забони худро ба хатти оромӣ менавиштаанд. Илова бар он асноде, ки зикр шуд, дар Бобил лавҳае ёфт шуда, ки мутааллиқ ба аҳди ашконӣ ва ба хатти мехист. Ин бозёфт гувоҳи он аст, ки хатти мехӣ то ин аҳд тамоман аз байн нарафта будааст. Мазмунҳои ин лавҳаҳо доир ба ситорашиносӣ, қонунҳои мухталиф ва сурудаҳои динист. Шоҳони ашконӣ аз забони юнонӣ огоҳ будаанд ва намоишномаҳои юнонӣ дар дарбори онҳо ба намоиш гузошта мешудааст. Он чи аз фарҳангу адабиёти аҳди ашкониён боқӣ монда, гарчи андак аст, аммо аз фарҳангу адаб ва хунари омехтаи эронияи юнонӣ гувоҳӣ медиҳад. Ашкониён дар қорҳои давлатии худ ибтидо ба ҷойи қоғаз аз катон ва баъд, монанди мисриён аз папирусҳо истифода мекардаанд.

Аз адабиёти давраи ашконӣ иттилои зиёде дар даст нест, аммо меросе, ки аз онҳо ба даврони сосонӣ интиқол шуда, гувоҳи он аст, ки адабиёти омиёна ва ғайримактуби аҳди ашконӣ ҳолӣ аз аҳаммият

<sup>1</sup>Бағбидӣ, Ҳ. زبان پارتی، ص. 76-79; تفضلی، تاریخ ادبیات، ص 44-51; ترابی، س. نگاهی به ایران، ص. 181-182.

<sup>2</sup>Бағбидӣ، Ҳ. زبان پارتی، ص. 183.

<sup>3</sup>ترابی، س. نگاهی به تاریخ و ادبیات ایران، ص. 49.

набудааст. Ҳамчунин, Ашкониён дostonҳое доштаанд, ки ба гунаи шеър буда, ҳамроҳ бо оҳанги созҳои мусиқӣ хонда мешудааст. Қисмати асосии адабиёти ғайридинии портӣ манзум буда, ки бо созу мусиқӣ хонда мешудааст. Ин адабиётро қиссагӯёну наққолон сина ба сина нақл мекардаанд. Донишмандони давраи ашконӣ аксар ҳамон муғҳо будаанд, ки илова ба расмияти рӯхоният симати таълимӣ низ доштаанд, хондану навиштанро ба мардум меомӯзондаанд, табибу мударрис ва мунаҷҷиму солноманавис низ будаанд.

Муҳаққиқон бар онанд, ки ҳунарҳои ин давра пасттар аз аҳди ҳоҳоманишист. Аз осори санъати ашкониён қисмате боқӣ монда, ки ба шеваи юнонию румист. Муҳимтарин ҳунарҳои бозмондаи онҳо сиккаҳо мебошанд.

### II.1.1. Дарахти Осурӣ

Аз осори муҳими адабие, ки муҳаққиқон ба асли портӣ доштани он муътақиданд, манзумаи «Дарахти Осурӣ»-ст, ки ба забони портӣ ё паҳлавии ашконӣ суруда шуда, вале ҳоло ба хатти паҳлавӣ дар даст аст. Матни ин манзума ба забони портӣ ва ба хатти паҳлавӣ буда, дар ҳудуди 120 байт аст. Ин манзума дар навъи адабии мунозираи муфохара эҷод шуда, мунозираи миёни буз ва дарахти хурмост. Бино ба таъкиди муҳаққиқон, қавмҳои эронӣ дар замонҳои қадим ин навъи адабиёро, ки дорои вижагиҳои адабиёти шифохист, аз миёнрӯдон иқтибос кардаанд. Намунаи ин гуна осор дар матнҳои шумерӣ ва аккадӣ дида мешавад.<sup>1</sup>

Ин манзума эҳтимолан дар асрҳои II-III ба забони паҳлавии ашконӣ навишта шуда, баъдтар ба забони форсии миёна таҳриру такмил гардидааст. Муаллифи асар маълум нест. Дoston бидуни муқаддима дар бораи дарахти ношиносе оғоз мешавад, вале хонанда ё шунаванда аз рӯйи тавсифи кӯтоҳе, ки оварда мешавад, пай мебарад, ки манзур дарахти хурмост:

*Дарахте рустааст  
Саросари кишвари Сурастон.  
Бунаш хушк аст,  
Сараш аст тар.  
Баргаш ба най монад,  
Бараш монад ба ангур.  
Ширин бор оварад,  
Барои мардумон.  
Он дарахти баланд  
Бо буз набард кард,*

---

<sup>1</sup>. 347. Мирфхрایی، مهشيد. درخت آسوری//تاریخ جامع ایران، ص.

*Ки: «Ман аз ту бартарам  
Ба бисёр гуна чиз».<sup>1</sup>*

Нахуст хурмо ба мунозира бармехезад ва аз сифатҳои неки худ ва фоидааш ба мардум сухан мекунад (байтҳои 1-27). Чунонки аз забони дарахт омадааст, меваашро, ки ба ширинии ангур аст (байти 3), мардум мехӯранд, аз тахтааш бодбони киштӣ, чорӯб, ҷувоз, мӯзаву кафш, мех, шира, ангубин (байтҳои 9, 10, 11, 13, 14, 15, 16, 17, 19 ва 20) ва ғайра месозанд. Дарахт соя меафканад ва мардум дар сояаш роҳат мекунанд. Дарахт барои нишон додани бартарии худ нисбат ба бузӯро таънаву маломат ва масҳара мекунад:

*Расан аз ман кунанд,  
Ки пои туро банданд.  
Чӯб аз ман кунанд,  
Ки гардани туро моланд.  
Мех аз ман кунанд,  
Ки сари туро овезанд.<sup>2</sup>*

Пас аз анҷоми сухани дарахт буз ба мунозира бармехезад ва аз сифатҳои неку фоидааш ба мардум ҳарф мезанад (27-116):

*Буз посух кард,  
Сар фароз ҷунбонд,  
Ки: «Ту бо ман пайкор мекунӣ?!  
Ту бо ман набард мекунӣ?!  
Чун аз кардаҳои ман  
Шунида шавад,  
Бувад нанги ӯӣ (ки бо)  
Сухани ҳарзаат пайкор кунад».<sup>2</sup>*

Дар оғози сухан буз бо тамасхуру истехзо дарахтро таънаву маломат карда, хурморо ба деви баланд ва кокули ӯро ба гесуи дев ташбеҳ мекунад (байти 33). Агарчи посухгӯӣ ба ӯро нанге барои худ медонад (байти 4), ба шарҳи фоида ва судмандиҳои худ мепардозад. Мувофиқи гуфтаҳои буз вай дар зиндагию рӯзгори мардум суди зиёде меорад: аз пӯсти ӯ камарбанд, мӯза, машк, пешбанд, зеҳи камон, анбон, хӯрчин, аз пашми риштааш банд, матоъ (пӯшок) ва дигар чизҳо месозанд, мардум аз шири буз паниру чурғот, дӯғ тайёр

---

<sup>1</sup>Дарахти асурик (таҳияи матн бо пешгуфтору шарҳу тавзеҳот аз М. Диловаров) // Маърифат, 1995, № 1-2.

<sup>2</sup>Ҳамон ҷо.

<sup>2</sup> Маъҳази зикршуда, ҳамон саҳифа.



мекунад, дар маросими динӣ барои парастии эзадон аз шири ӯ истифода мекунад ва монанди инҳо (байтҳои 50, 53, 55, 56, 57, 58, 65, 67, 70, 78, 79, 82, 117).

Аз гуфтори буз аён мегардад, ки ӯ нисбат ба дарахт ба мардум фоидаи бештар меоварад ва дар поёни мунозира: «Буз ба пирӯзӣ шуд, Хурмо андар сутӯҳ» (байти 117). Дар охир шоир касеро, ки ин сурудро нигаҳ дораду бинависад ва бихонад, дуо ва душманони ӯро нафрин мекунад (байтҳои 118-120).

«Дарахти Осурӣ» аз ҷиҳати муҳтаво асари мардумӣ, маҳсули эҷодиёти шифоии халқ аст, ки ба кӯшиши муаллифи номаълуме таҳрир гардида, ба адабиёти хаттӣ ворид шудааст. Дар асар аз ҳаҷву мутоибаи халқӣ, зарбулмасалу мақолҳо истифода шудааст. Масалан, дарахт ба буз мегӯяд: Чӯб аз ман кунанд, ки гардани туро «моланд». Буз аз бартарии худ ифтихор намуда, гуфтори худро бо дарахт пеши ҳуку гуроз марворид афшондан ва ё пеши уштури маст чанг задан шуморидааст. Муаллифи «Дарахти Осурӣ» дар асараш аз санъатҳои бадеӣ – ташхис, ташбеҳ, истиора, маҷоз, тавсиф ва ғайра истифода кардааст. Вазни шеърӣ «Дарахти Осурӣ» ҳиҷоист. Баробарии ҳиҷоҳо дар ҳамаи мисраъҳои тамоми матн риоя нашудааст. Дар он мисраъҳо аз 10 то 15 ҳиҷо доранд. Дар «Дарахти Осурӣ» унсурҳои қофия низ ба назар мерасанд.<sup>1</sup>

Баъзе аз донишмандон бар онанд, ки ин мунозира тазоди миёни ду боварро нишон медиҳад: боваре, ки бузро намояндаи дини зардуштӣ ва хурморо намояндаи динҳои ғайритавҳидӣ ва чандхудоии ошурӣ ва бобилӣ медонанд, ки оини парастии дарахт дар онҳо нақши муҳим доштааст.<sup>2</sup> Гурӯҳи дигар онро чилваҳое аз тазоди миёни зиндагии чорводорӣ, ки намоди он буз ва зиндагии кишоварзӣ, ки намоди он хурмо, медонанд.<sup>3</sup>

Ба таври кулӣ баршумурдани бартариҳои буз дар чаҳорҷӯби истилоҳот ва масъалаҳои динӣ, алалхусус дини маздаён (байти 48), эзади Гушурван (байти 51), эзади ҳум (байти 52), подёби маздопарастон бар пӯсти буз (байти 100), ба андешаи Мирфаҳроӣ, наметавонад бартарии дини маздаёнӣ талаққӣ шавад.<sup>4</sup> Истилоҳот ва мазмунҳои, ки рангу бӯи миллӣ ё паҳлавонӣ-дарборӣ доранд, низ дар матн дида мешаванд, монанди ишора ба давраи фархундаи Чамшад (байти 34), «Гӯяндам ба афсон мардумони порсӣ» (байти 47), Рустаму Исфандёр (байти 71), чомаи шоҳвор (байти 85) ва ғ.

<sup>1</sup> Диловаров М. Дарахти асурӣ // ЭАСТ, ҷ.1, -С.384.

<sup>2</sup> Smith S. Draxt-i Asurig. Notes on the Assyrian Tree. // BSOS 4/1926-1928. - P.69-76; نقل از میرفخرایی، مهشید. درخت آسوری // تاریخ جامع ایران، ص.347.

<sup>3</sup> روح امینی، محمود. جستاری مردمشناختی از منظومه درخت آسورگ // هفتاد مقاله، تهران، 1329. ص.326-323.

<sup>4</sup> میرفخرایی، مهشید. درخت آسور ص. 348.

Бартоломе аввалин муҳаққиқе буд, ки ба портӣ будани забони матни асар пай бурд ва Бенвенист ба манзума будани он ишора кардааст. Ӯ бо баррасии бахшхое аз матн натиҷа гирифта, ки асоси вазни манзума ҳиҷоист, баъзе ашъор шашҳиҷоӣ ва бархе ёздаҳҳиҷоӣ ҳастанд. Ин назари Бенвенист дар бораи ҳиҷоӣ будани вазни «Дарахти Осурӣ» мавриди интиқоди Ҳенинг қарор гирифт. Ҳенинг муътақид буд, ки вазни ин манзума бар асоси зада ё зарб аст. Таъйини назми тамоми матни манзума аз имкон берун аст, зеро тағйироте, ки хангоми интиқоли он ба паҳлавӣ рӯй додааст, корро душвор мегардонад. Ҳамчунин калимаҳои ношинохта дар матн зиёданд. Моҳери Наввобӣ саъй намудааст, то ин корро анҷом диҳад, аммо муваффақ нагаштааст.<sup>1</sup>

Матни манзумаи «Дарахти Осурӣ» забони шоирона дорад, содаву равон ва бидуни ороиш аст. Тасвиrotи шоирона ё худ сувари ҳаёл, ки ҷо-ҷо ба назар мерасад, хеле содаву ибтидоист. Масалан, ташбеҳи барги дарахти хурмо ба барги най аз назари шакл (байти 3), ширинии хурмо ба ангур (байти 3), ташбеҳи гардани буз ба нармию сафедии андоми духтар (байти 84), муқоисаи бӯи буз ба гули гетӣ (номи гул) (байти 86), мафҳуми «кӯи мурдагон», ки маҷозан ба маънии гӯристон, «марворид пеши хук афкандан» (байти 11), «чанг задан пеши шутури маст» (байти 112) ва ғайраро метавон намунаи ибтидоии амсолу зарбулмасал дар адабиёти форсии тоҷикӣ донист.

### II.1.2. Ёдгори Зарирон

Манзумаи дигаре, ки аз осори адабии аҳди ашконӣ буда, дар давраи Сосониён ба хат ва забони паҳлавӣ баргардонидашуда, тағйироте дар он роҳ ёфтааст, манзумаи размии «Ёдгори Зарирон» мебошад. «Ёдгори Зарирон» тақрибан дар ибтидои асри 5 ба забони портӣ навишта шуда, баъдан ба забони форсии миёна баргардон шудааст. Танҳо қитъаи кӯтоҳест, ки дар қолаби шеърӣ ҳамосӣ ва оҳанги шоирона бозмондааст. Дар асл, ба портӣ будани дoston шакке нест, зеро вожаву таркибот ва сохторҳои забони портӣ дар матни асар дида мешавад. Номи нависандаи асар маълум нест. Эроншиноси франсавӣ Э. Бенвенист нахустин касе аз донишмандон буд, ки ба шеър будани матни асар пай бурд ва саъй намуд, то мавҷудияти оҳангу қофия, шашҳиҷоӣ будани мисраъҳо ва дигар сохтмони шеърӣ онро таъйин намояд.

Мавзӯи дoston дар бораи набардҳои мазҳабӣ байни шоҳи Эрон – Гуштосп (Виштосп) ва шоҳи хиюнон – Арҷосп аст. Гуштосп бо ҳама бародарону писарон ва шоҳзодагону мулозимони худ дини

<sup>1</sup> نوابی ماهیار، یحیی. درخت آسوری. تهران، 346.

маздоясноро мепазирад (бандҳои 1-2). Вақте ин хабар ба Арҷосп мерасад, ки Гуштосп дини зардуштиро пазируфта, аз он дине, ки дар гуашта дошт ва бо хиюнон ҳамдин буд, даст кашидааст, бар ӯ гарон меояд (банди 3). Арҷосп ду тан аз бузургони кишвараш – Бедирафши ҷоду ва Номхости ҳазоронро бо номае ба назди Гуштосп мефиристад ва тақозо менамояд, ки аз дини зардуштӣ даст бикашад (банди 4). Арҷосп таъкид менамояд, ки агар Гуштосп сухани ӯро қабул кунад, ба ӯ симу зар, аспони некӯ, тахти шоҳӣ ҳада хоҳад кард, аммо агар сухани ӯро напазирад, ба лашкари бузурге ба Эрон омада, онро хароб хоҳад кард, мардумонашро асир мегираду банди худ месозад, чорпоёнро ба кишвари худ мебарад (банди 12). Гуштосп дар ҷавоби нома очиз монд, бародари ӯ - сипаҳбад Зарир ба фиристодагон посух медиҳад, ки Гуштосп аз дини нав даст намекашад ва омодаи набард бо эшон аст (банди 18). Ба фармони Гуштосп Зарир барои огоҳии мардум ба сари кӯҳҳо оташ меафрӯзад ва ҳама мардуми кишвар, ба ғайр аз муғонро ба ҷанг фаро меҳонад ва аз онҳо меҳоҳад, ки то як моҳи дигар, ҳама бо силоҳ ба дарбори шоҳ оянд (бандҳои 23-25). Мардум даъвати ӯро мепазиранд ва ба майдони набард меоянд. Гуштосп аз вазири донову бохиради худ – Ҷомосп меҳоҳад, ки пайомади ҷангро барои ӯ пешгӯӣ кунад. Ҷомосп аз Гуштосп хоҳиш мекунад, ки ба оини беҳӣ савганд хурад, ки пас аз огоҳӣ аз оқибати ҷанг ҳеч гуна осебе ба ӯ намерасонад (бандҳои 41-42). Ҷомосп пешгӯӣ мекунад, ки дар ҷанг 32 тан аз бародарон ва писарони Гуштосп, аз ҷумла Зарир ва Подхусрав, бародарони ӯ ва Фаршовард (Фаршедвард), писари ӯ кушта мешаванд (банди 48).

Баъд аз як моҳ ҷанги байни Эрону хиюнон шурӯъ мешавад ва он чи Ҷомосп пешгӯӣ карда буд, ба ҳақиқат мепайвандад. Дар он ҷанг чанде аз фарзандони Гуштосп, бародараш Зарир кушта шуданд. Писари хурдсоли Зарир – Баствар (Bastwar, дар «Шоҳнома» Настур забт шудааст) ба майдон рафт, то интиқоми падарашро бигирад ва бо дидани пайкари бечони падар нолаву шеван мекунад, ки «Акнун чӣ кунам, чӣ агар аз асб бинишинам ва сари ту, падар, андар канор гираму хокат аз гардан бигирам, пас ба сабуқӣ боз бар асб нишастан натавонам» (банди 86). Баствар бо партоби тире ба қалби Бедирафши ҷоду интиқоми падарро мегирад. Сипас, Баствар ва Спендодад (Исфандёр) - писари Гуштосп ва Гиромикард - писари Ҷомосп хунарнамоиҳо мекунанд ва сипоҳи Арҷосп ҳама кушта мешаванд. Исфандёр гӯшу бинӣ ва дасту пое аз Арҷоспро мебурад, чашмеро ба оташ месӯзонад ва ба хари думбуридае нишонда, ба кишвари хиюнон мефиристад, то ба хиюнон бигӯяд, ки «дар он ҷанг чӣ рафтааст» (бандҳои 106-114).

Суханоне, ки дар ин достон ба шакли нақли қавл баён шуда, аз ҷумла афсун хондани Баствар бар тире, ки ба дили Бедирафши ҷоду

мезанад (банди 92), савганд додани Чомосп ба Гуштосп (банди 41) ва нолаи Баствар бар пайкари бечони падар (банди 84-87), бино ба андешаи муҳаққикон, дарбардорандаи боварҳои куҳан ва дар айни ҳол мубҳам аст.<sup>1</sup>

Сужаи ин асар, ки марбут ба ҷангҳои мазҳабист, ба давраҳои қадимтар тааллуқ дорад, зеро дар «Авесто» номи қаҳрамонони дoston вомехӯранд ва аз муборизаи онҳо бо қувваҳои бадӣ – Арҷоспу Бедирафши ҷоду суҳан меравад. Қисмате аз ин дoston, зимни саргузашти Зардушт дар китоби ҳафтуми «Динқард» (фасли чаҳорум, банди 87) омадааст. Мӯбадони зардуштӣ ин дostonро дар «Худойнома»-и Сосонӣ ҷой додаанд ва Дақиқӣ бо истифода аз ин «Худойнома» ва низ суннати шифоҳӣ, ки ҳанӯз дар он замон дар шимоли Эрон зинда буд, онро ба шеър даровард ва Фирдавсӣ ашъори Дақиқиро дар «Шоҳнома»-и худ гунҷонид.<sup>2</sup> «Ёдгори Зарирон» достони паҳлавонию қаҳрамонӣ, сароғози дostonҳои ҳамосӣ мебошад. Тавсифҳои шоиронаи муболиғаомез, тасвирҳои такрор ба такрори саҳнаҳои ҷанг, ки дар ҷангномаҳои адабиёти классикии форсии тоҷикӣ хеле ривоч ёфтанд, рӯҳи ҳамосии дostonро пурқувват кардаанд. «Ёдгори Зарирон» дар тарзи дostonсароии адабиёти форсии тоҷикӣ бетаъсир намондааст. Аксар лаҳзаҳои сужети он, тарзи баёни воқеа ва рӯйдодҳо дар «Гуштоспнома»-и Дақиқӣ, «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ айнан дучор меоянд. Тафовути асосии ривояти Фирдавсӣ бо матни «Ёдгори Зарирон» дар он аст, ки дар ин ҷо воқеаи ҷанг дар як рӯз сурат мегирад ва корномаи Зариру писараш хеле барҷаста ба тасвир омадааст, аммо дар «Шоҳнома» дар қолаби ҷангҳои тӯлонӣ, ба шарҳи номаҳо, суҳанрониҳо ва тасвири бештари саҳнаи ҷанг омадааст. Илова бар ин, дар «Шоҳнома» Бедирафши ҷоду ба дасти Исфандёр кушта мешавад, на Баствар.

Ривоятҳои дигаре аз ин дoston тавассути Саолибӣ дар «Ғурур-ус-сияр» ва Табарӣ дар «Таърихи Табарӣ» нақл шудааст. Муҳаққикон бар онанд, ки ривояти Табарӣ хеле наздик ба достони «Ёдгори Зарирон» аст.<sup>3</sup>

### II.1.3. Достони “Вису Ромин”

Яке аз дostonҳои дигари аҳди Ашкониён, ки нахуст ба забони портӣ эҷод ва дар охири аҳди Сосониён ба паҳлавӣ тарҷума шудааст, достони ошиқонаи “Вису Ромин” мебошад. Асли портӣ ва тарҷумаи паҳлавии он аз байн рафтааст. Тарҷумаи мансури паҳлавии он дар

<sup>1</sup> میرفخرایی، مهشید. یادگار زریران//تاریخ جامع ایران، ص. 358

<sup>2</sup>Boyce M. Ayadgar I Zariran. M.1989.Eir3.- P. 128-129.; Benveniste E. Le memorial de Zarer.Poeme Pehlevi mazdeen.// “Journal asiatique”.Volume, CCXX, 1932, № 2.

<sup>3</sup>غیبی، بیژن. یادگار زریران. 1375؛ عربیان، سعید. مثنوی پهلوی تهران، 1371؛ بهار، محمد تقی. ترجمه چند متن پهلوی تهران، 1347؛ Саймуддинов Д. Адабиёти паҳлавӣ.-Душанбе, 2001.

асрҳои 1X-XI дар байни мардум маҳбубият доштааст, аммо забони он ба ҳама қобили фаҳм набудааст:

*Валекин паҳлавӣ бошад забонаш,  
Надонад, ҳар кӣ бархонад, баёнаш.<sup>1</sup>*

Достони «Вису Ромин» дар таҳрири манзуми шоири асри XI Фахруддини Гургонӣ то замони мо расидааст. Дар бораи маҳалли пайдоиши достони Фахруддини Гургонӣ андешаҳо гуногунанд. Баъзеҳо ба он гумонанд, ки шоир ривояти мансури паҳлавии қиссаро ба назм даровардааст. Дигарон бар ин андешаанд, ки Гургонӣ достони худро дар заминаи ривоятҳои мавҷуди манзуми «Вису Ромин» дар адабиёти форсии тоҷикӣ эҷод намудааст.<sup>2</sup> Мувофиқи маълумоти «Мачмаъу-т-таворих» дар аҳди Шопури Ардашер ин қисса маъруф будааст. Достони «Вису Ромин»-и Гургонӣ солҳои 1042–54 дар баҳри ҳазаҷи мусаддаси маҳзуф назм шуда, тақрибан аз 10000 байт иборат аст. Симоҳои асосии достон намояндагони хонадони шоханшоҳи Марви Шохҷон – Мӯбад, Зард, Ромин ва хонадони Моҳобод – Шаҳрӯ, Қоран, Вис ва Виру мебошанд. Шоир зимни тасвири сахнаҳои ишқӣ қабохати зиндагии аъёну ашрофи замони худро ба тариқи ҳаҷву танз намоиш додааст. Достон бо ғалабаи адолат ба поён мерасад. «Вису Ромин»-и Гургонӣ дар асри 17 аз тарафи Саргис Тумогвелли ба гурҷӣ тарҷума шудааст, ки бо номи «Висрамиани» машҳур аст.<sup>3</sup> Соли 1914 О. Уордрон «Вису Ромин»-ро аз гурҷӣ ба англисӣ тарҷума кард.<sup>4</sup> Ба забони русӣ достон соли 1938 тарҷумаву нашр шуд. Аз «Вису Ромин»-и Гургонӣ нусхаҳои дастанависӣ кам боқӣ мондааст. Матни асосии достонро аввалин бор шарқшинос Нассау-Лис (Калкатта, 1864–65) таҳияву тадвин намуда, чоп карда буд. Баъдтар матни интиқодии онро адабиётшиноси эронӣ Мучтабо Минавӣ (Техрон, 1937) ба таъб расонд. Ниҳоят матни интиқодии нави «Вису Ромин»-и Гургониро адабиётшиносони гурҷӣ А. Гвахариа ва М. Тодуа таҳия карданд, ки бо ҳамкориҳои Пажӯҳишгоҳҳои шарқшиносии АИ Ҷумҳурии Гурҷистон ва Ҷумҳурии Тоҷикистон (бо пешгуфтори К.Айнӣ) ва Бунёди фарҳанги Эрон соли 1970 дар Техрон ба таъб расид.<sup>5</sup>

Хулоса, адабиёти давраи ашқонӣ монанди давраҳои дигари аҳди бостон ба сурати шифоҳӣ ҳифз мешуд ва ҳеч навиштаи адабие аз ин

---

<sup>1</sup>Фахруддини Гургонӣ. Вису Ромин.- Душанбе, 1966.

<sup>2</sup>Мирзозода Х. Таърихи адабиёти тоҷик, ҷ 1.-С.136.

<sup>3</sup>Бертельс Е. Э. История персидско-таджикской литературы. Москва, 1960..

<sup>4</sup>Брагинский И. С. 12 миниатюр.–С.212.

<sup>5</sup>Азизкулов Ҷ. Вису Ромин.//ЭАСТ,ҷ.,1.-С.326.

давра боқӣ намондааст. Аз баррасии пажӯҳандагон бармеояд, ки ашкониён бо адабу суннатҳои юнониён ошно будаанд, аммо гунаҳои суннати адаби ҷаҳон аз адаби юнонӣ таъсир напазируфт, зеро ин гунаҳои суннати бидуни баҳрагирӣ аз навиштору китобат вуҷуд дошт. Чунин ба назар мерасад, ки қисмати бузурги адабиёти ғайридинии ҷаҳон манзум буда ва ҳамроҳ бо созу мусиқӣ хонда мешудааст. Ин адабиётро қиссагӯён ва наққолон сина ба сина нақл мекардаанд. Ин қиссагӯёнро “гӯсон” мегуфтаанд, ки ба маънии хунёгар, овозхон ва ё худ ҳофиз аст. Таъбири “гӯсон” ҳам дар достони “Вису Ромин”, ки асли ҷаҳонӣ дорад ва ҳам дар сарчашмаҳои аҳди исломӣ монанди “Муҷмалу-т-тавориҳ ва-л-қисас” омадааст. Муҳаққиқон гӯсонро шоирону мусикидонони давраганд ва ҳофизи достонҳои миллӣ донистаанд. Гӯсонҳо достонҳои миллӣ, алалхусус достонҳои Каёнӣро бо шеър нақл мекардаанд. Ин достонҳо, ки бо воситаи гӯсонҳо ба даврони Сосониён интиқол ёфтанд, манбаи асосии “Худойнома”-и паҳлавӣ шуданд ва баъдан дар “Шоҳнома” бозтоб ёфтанд. Шоҳномашиносоне монанди Ҷалол Холиқии Мутлақ бар он андешаанд, ки баъзе аз достонҳои “Шоҳнома”, монанди достони “Бежану Манижа”, ки мазмуни ошиқона дорад, эҳтимол дорад, ки асли ҷаҳонӣ дошта бошанд.<sup>1</sup> Гӯсонҳо нақши созандае дар зиндагии ашкониён ва ҳамсоғони онҳо то даврони Сосониён бозиданд. Онҳо шеъри ҳамосиро дар даврони ашкониён тарғибу тарвиҷ мекарданд ва корномаҳои шоҳзодагону бузургони ашкониёро монанди паҳлавонии каёнӣ ба шеър мебардордаанд. Шеваи кори ин шоирон-гӯсонҳо ба ин тартиб будааст, ки нахуст достонҳо ва ё ҳодисаҳои шавқангезро меомӯхтаанду ҳифз мекардаанд ва он гоҳ ҳар бор онро аз нав, ба сабки худ, ба шеваи бадеҳасароӣ баён мекардаанд. Истифодаи созҳои мусиқӣ, монанди барбату чанг ва руду даф ҳини қироати достонҳо дар шунавандагон шӯру ҳаяҷон эҷод мекардааст. Холиқии Мутлақ хунаҳои наққолию шоҳномаҳои даврони баъд аз ислом идомаи суннати гӯсонӣ медонад ва бар он аст, ки аксари гӯсонҳо мардуми нобино буданд. Гуё Ҷомер – ҳамосароӣ бузурги Юнони Бостон ва устод Рӯдакӣ, ки ин хунаро доштанд, нобино будаанд.<sup>2</sup>

Баррасии муҳаққиқон ба дурустӣ нишон медиҳад, ки достонҳои қуҳани паҳлавонӣ чандин бор тағйир ёфтаанд ва бисёре аз онҳо ба қулӣ аз байн рафтаанд. Чунинчун, аз чандин шахсияти асотирӣ, ки дар “Авесто” зикр шудааст, ному нишоне нест. Дар “Худойнома”-ҳои Сосониён силсилаи ҳоҳоманишиён фаромӯш шуда ва воқеаҳои он даврон бо давраи Каёнӣ маҳлӯт шудааст. Воқеаҳои даврони Селевкиён ҳамагӣ аз байн рафта ва аз таърихи воқеии даврони

1. اخلقى مطلق، جلال. بیژن و منیژه و ویس و رامین، ص. 283-298.  
 2. اخلقى مطلق، جلال. مطالعات حماسی. حماسه سرایی باستان // سیمرغ، نشریه بنیاد فردوسی، 1381، ص. 3، ش. 2، ص. 273-298.

Ашкониён маълумоти ночизе бар ҷой мондааст. Шоҳномашиносон бар онанд, ки корномаҳои баъзе аз шоҳони ашкони дар достонҳои паҳлавонии ҳамосаи миллӣ бозтоб ёфтаанд. Гударз, Мелод (шакли дигаргуншудаи Мехрдод) ва Фарҳод аз паҳлавонии “Шоҳнома” номи чанд тан аз шоҳони ашкони будааст.<sup>1</sup> Дар даврони Ашкониён таърихи асотирӣ мутахаввил мешавад ва шахсиятҳои ҳодисаҳои таърихи ин даврон ба давраи пеш аз зуҳури Зардушт интиқол меёбанд. Бино ба гуфтаи З.Заршинос, дар даврони Ашкониён ва Сосониён ду омили муҳим ва ҷадид дар достонҳои паҳлавонӣ нуфуз мекунад, ки дар “Авесто” нишоне аз онҳо дида намешавад. Омили нахуст таърихист ва таъсири Ашкониёнро дар суннатҳои шифоҳии даврони Сосониён ва бозтоби онро дар таърихи асотирӣ нишон медиҳад, ба ин маъно, ки дар “Шоҳнома”-и Фирдавсӣ номи шоҳзодагони ашкони дар паҳлавонии куҳан мушоҳида мекунем. Барои намуна, дар ривоятҳои гуногуни ҷанг бо турониён Гударз бо писарону наберагонаш иштироқи ғаълдоранд ва номитарин шоҳони ашкони ба унвони дастнишондагон ва сардорони бузурги давраи Каёни муаррифӣ мешаванд. Т. Нёлдеке далели ин интиқоли замони, ки шоҳоне монанди Гударзу Фарҳодро то дараҷаи кадхудой таназзули мақом додааст, чунин баён мекунад: “Дар асари нуфузи хонадонҳои бузурги феодалии ашкони, монанди Суран, Қоран ва Мехрон, ки дар даврони Сосониён қудрат ва нуфузи худро дар ҳадди шоҳзодагон ҳифз кардаанд, асомии ниёкони онон ҷузви паҳлавонии достонҳои миллии Эрон ба шумор омадааст ва аз он ҷо ки ривоятҳои шифоҳии ҳамосаи миллии Эрон дар замони Сосониён танзиму тадвин шудааст, онон подшоҳони ашкони, ки чандон ҳам мавриди алоқа ва эҳтиромашон набудаанд, ба таназзули рутба дар асри Каёниён қарор додаанд”.<sup>2</sup>

Омили дигар, ки бино ба андешаи З.Заршинос, шояд аз рӯи рақобат бо гударзиён пардохта шуда бошад, афсонаҳо дар бораи шоҳони Систон, ки низ дастнишондагони шоҳони Эрон муаррифӣ мешаванд. Ҷеҳраи тобноки ин маҷмӯа Рустами Дастон аст. Ривоятҳои марбут ба Рустам низ ба ҳалқаи ривоятҳои каёни даромехта ва дар “Худойнома” ҳифз шудааст. Ин ҳамосаҳои сақӣ хамроҳ бо ҳамосаҳои ашкони ба воситаи хунёгар-шоирони портӣ тарвиҷу таблиғ шудааст. Муҳаққиқони адабиёти бостон гӯсонҳо - ҳамон хунёгар-шоирони даврони ашконию сосонию вориси суннатҳои зиёде медонанд, ки ба давраҳои гуногун ва аслу маншаи мутафовит тааллуқдоранд. Дар миёни ин суннатҳо се риштаи аслии достонҳои ҳамосӣ ва паҳлавонию ташхис медиҳанд, ки ҳар кадом аз як қавмҳои эронӣ сарчашма гирифта ва достонҳои дигар аз манбаъҳои гуногуни бобилию юнони ва монанди он дар тӯли замон

ازرشناس زهره. ادبيات شفاهی ایران//تاریخ جامع ایران،ص.664.

نقل از زرشناس زهره. ادبيات شفاهی. –Heidelberg, 1920. 664.

ایران//تاریخ جامع ایران،ص.664.

ба онҳо афзуда шудааст. Аввалан, суннати куҳани шимолу шарқӣ, ки дар навиштаҳои муқаддаси зардуштӣ (“Авесто” ва китобҳои паҳлавӣ) бозтоб ёфтааст ва реша дар суннатҳои адабии ҳиндуэронӣ ва ҳатто ҳиндуаврупой дорад, ки гурӯҳи афсонаву ривоятҳои пешдодию каёниро то зуҳури Зардушт шомил мешавад. Дувум, суннате, ки чудо аз суннати зардуштӣ рушду густариш ёфтааст ва дostonҳои ҳамосии хонадони Золу Рустамро дар бар дорад, ки аз Систон бархостааст ва эҳтимол ба қавми сақӣ мутааллиқ аст.<sup>1</sup> Дар “Авесто” номи Рустам нест ва дар китобҳои паҳлавӣ Рустам, аз ҷумла дар “Бундаҳишн” шоҳи Систон аст. Ин суннат бо суннати зардуштӣ рабте надорад, аммо бисёр куҳан аст. Лақаби Рустам “Сагзӣ”, яъне сақӣ аст. З. Заршинос ҳаде мезанад, ки Рустам паҳлавони сақӣ буда, ки афсонаҳояш ҳамроҳ бо қабилаҳои сақӣ муҳочим омада ва дар давраи ашқонӣ дар нуқоти мухталифи Эрон ривоч ёфта ва саранҷом ба сурати баҳше аз ҳамосаи миллии бо дostonҳои каёни даромехтааст.<sup>2</sup> Севум, суннати шабеҳи таърихӣ, ки дар атрофи шахсиятҳо ва воқеаҳои таърихӣ даврони ҳахоманишӣ, ашқонӣ ва сосонӣ ба вучуд омада, дар қолаби ҳамосаҳои каёни ҷой дода шудааст. Ин ҳамосаҳо, ки тавассути гӯсонҳо-хунёгарон суруда шудаанд, монанди дostonҳои Бежан, Мелод, Гев, Шопур ва ҳатто дostonи Фурудро дар бар мегиранд. Донишманди шаҳир Эҳсонӣ Ёршотир бар он аст, ки дostonи Фуруд ёдовари кушта шудани Вордон, писари Ардавони севум ва ба эътиборе нобародар (аз як падар, аммо модари дигар)-и Гударз (дар “Шоҳнома” нобародари Кайхусрав) ба дасти бузургони ашқонист.<sup>3</sup>

Дар охир ин нуктаро набояд фаромӯш кард, ки ин ҳама фарҳангзудоҳои мақдуноҳи (Искандару селевкийн) натавонист тамаддуни юнониро дар аҷмоқи рӯҳи мардуми эронитабор нуфуз диҳад, балки таъсири он сатҳӣ будааст. Ашқонийн ҳарчанд дар ибтидо аз забон ва тамаддуни юнонӣ пайравӣ карданд, аммо шоҳони баъдӣ, монанди Балози аввал ба эҳёи суннати миллии камар бастанд. Аз баррасии таҳқиқоти муҳаққиқони адабиёти бостон бармеояд, ки яке аз сабабҳои хеле кам боқӣ мондани осори давраи фосил ва таназзули адабӣ, алалхусус осори аҳди ашқонӣ он буда, ки Сосонийн саъй намуданд, осори бозмонда аз аҳди искандарию селевкийн ва ашқониро аз байн бибаранд, то пайванди худро бо Ҳахоманишиён мустаҳкам намоянд.

<sup>1</sup> 665 زرشناس زهره ادبيات شفاهی ایران//تاریخ جامع ایران،ص.

<sup>2</sup> همان جا، همان صفحه.

<sup>3</sup> یارشاطر، احسان. چرا در شاهنامه از پادشاهان ماد و هخامنشی ذکر نیست؟!/شاهنامه شناسی(1)، تهران، 1353، ص. 268-301.



## ФАСЛИ СЕВУМ

### ДАВРАИ СЕВУМИ ПЕШ АЗ МЕЛОД

#### III. Адабиёти эронии Давраи миёна

Ин давра шурӯъ мешавад аз инқирози давлати Ашкониён дар соли 226 мелодӣ ва таъсиси давлати Сосонӣ ба ҳиммати Ардашери Бобакон, то ҳудуди инқирози давлати Сосонӣ ва қатли Яздгирди севум дар соли 650. Ин давраро Ҷалолуддини Ҳумоӣ давраи Сосонӣ ё давраи қадими дувум меномад. Аммо ин давраро давраи сеюми адабиёти бостон номидан саҳеҳ аст. Илова бар ин, ин давраро танҳо бо номи «адабиёти давраи Сосонӣ» ихтисос додан дуруст намеояд, зеро ба ҷуз аз ҳудуди Сосониён ва забони паҳлавии сосонӣ ба забонҳои дигари эронӣ, чун суғдӣ, хоразмӣ, балхӣ, хутанӣ, бохтарӣ ва ғайра осори боарзише бар ҷой мондааст. Аз ин рӯ, ин давраро «Адабиёти эронии Давраи миёна» номидан мувофиқи мақсад аст.

#### III.1. Адабиёт дар давраи Сосониён

Дар замони ҳукмронии Александри Македонӣ, ки дар Шарқ бо номи Искандари Мақдунӣ шуҳрат дорад ва ҷонишинони ӯ дар Эрон Ҷосифи Миёна фарҳангу адабиёти Юнони Бостон таъсири худро гузошт, дар баъзе забонҳои ин сарзаминҳо ҳагги юнонӣ пазируфта шуд. Юнониён ба дин ва урфу одати мардуми ин марзу бум таъсир расонданд. Дар баробари эзадони дини зардуштӣ мардум баъзе эзадони Юнони Бостонро низ парастид мекарданд. Нақши Искандар аз ҳамин давра дар осори адабию маданияи халқҳои эронӣ ҷой ёфт ва яке аз чеҳраҳои машҳури адабиёти қадим ва адабиёти асрҳои миёна гардид. Асрҳои III-IX давраи нави инкишофи адабиёти қадими форсии тоҷикӣ мебошад. Дар ин давра, ки замони инкишофи низоми феодалист, ин адабиёт ҷараён ва роҳҳои наву тозатар ёфт ва рушд кард. Дар давраи Сосониён (224 – 654) дини зардуштӣ мақоми давлатӣ ёфт. Адабиёти ин давра баръақс адабиёти қарнҳои пешин, ки танҳо намунаҳо ё унсурҳои он дар «Авесто» омада, ба як забон – авестой буданд, гуногунжанру гуногунзабон (забонҳои эронии давраи миёна; забони форсии миёна, портӣ, суғдӣ, балхӣ, хоразмӣ ва ғайра) мебошад. Аксари асарҳои адабиёти оғози асрҳои миёна дар заминаи фарҳанги оини зардуштӣ ба вуҷуд омаданд. Вале баробари осори мазҳабӣ таълифоти дунявӣ низ дар адабиёти ин давра ба назар мерасанд. Асарҳои адабии ин давра бо номи адабиёти паҳлавӣ машҳуранд ва ба яке аз шеваҳои забони форсии миёна – «порсик» навишта шудаанд. Ду

забони давраи миёнаи эронӣ – забони форсии миёна («порсик») ва портӣ (пахлавӣ) шеваҳои ба ҳамдигар хеле наздик буданд. Якумашон забони чанубу ғарбӣ (вилояти Форс) ва дувумашон забони шимолу шарқӣ (вилояти Хуросон) буд. Ёдгорҳои адабиёти пахлавӣ дар ибтидо ба забони портӣ («пахлавӣ») мурағаб шуданд, вале баъдан дабирон онҳоро ба забони форсии миёна («порсик») танзиму тахрир кардаанд ва дар ҳамон шакл онҳо то замони мо расидаанд. Адабиёти пахлавӣ мероси муштараки мардумони эронӣ (тоҷикҳо ва форсҳо) мебошад. Дар асарҳои III-VI «Авесто» чанд бор тахрир ва ба забони пахлавӣ тарҷумаву тафсир шуд, ки онро «Занд» мегӯянд. «Авесто»-ро аз ин мавқеъ мешояд асари адабиёти пахлавӣ хонд, зеро дар он замон матни асар ба шакли мукамалтаре дароварда шуд ва эътибори бештаре пайдо кард.

Тарҷума ва тафсири «Авесто» ба забони пахлавӣ дар адабиётшиносӣ оғози тарҷума ва тафсир доништа шудааст. Аз инкишофи илми луғатшиносӣ, оғози таълиму тадриси забони авестой ва пахлавӣ асарҳои «Фарҳанги уим-евак» ва «Фарҳанги пахлавӣ» гувоҳӣ медиҳанд. Асарҳои динии адабиёти пахлавӣ «Додистони динӣ», «Мотикони Йушти Фриён», «Шоист, ношоист», «Ривояти пахлавӣ», «Ардавирофнома», «Занди Воҳуман-ясп», «Ҷомоспнома», «Мотикони ҳазор дотистон», «Минуи хирад» ва ғайра баробари масъалаҳои динӣ, расму одоби динӣ, ҳуқуқ, масъалаи ҷаннату дӯзах, охири ҷаҳон, рӯзи растохез ва ғайра бисёр дostonҳо, ривоятҳо, устураҳои қадимиро дар бар мегиранд, ки аз аҳаммияти адабию зебошинохтӣ ҳолӣ нестанд. Як ҷузъи муҳимми адабиёти пахлавӣ андарзномаҳо, ба монанди «Андарзи Озарбади Махраспандон», «Андарзи Хусрави Қубодон», «Андарзи кӯдакон», «Пандномаи Бузургмеҳр» ва ғайра мебошанд. Ин андарзномаҳо зерин таъсири рӯҳияи дини зардуштӣ ва ахлоқии он эҷод шудаанд, вале дар онҳо ҳикматҳои амалӣ, масъалаҳои муҳимми зиндагӣ ва таълиму тарбияи наврасон инъикос ёфтаанд.

Дар баробари осори динӣ ба забони пахлавӣ як зумра осори ғайридинӣ, монанди «Корномаи Ардашери Бобакон», «Шаҳристонҳои Эрон», «Авдиҳо уд саҳикиҳа-йи Сакистан» ва ғайра то замони мо расидаанд, ки асарҳои таърихӣ-адабӣ мебошанд. Ин асарҳои манзуму мансур дар анвои мухталифи адабӣ – мунозира, dostonҳои ишқии мочароӣ, ҳамосаи қаҳрамонӣ ва ғайра эҷод шудаанд. Номе як зумра осори пахлавӣ то замони мо тавассути тарҷумаҳои онҳо ба забони арабӣ, инчунин «Ал-фехрист»-и Ибни Надим боқӣ мондаанд, ки муҳимтарини онҳо «Ҳазор афсон», «Оиннома», «Тоҷнома» ва ғайра мебошанд. На танҳо ном, балки пораҳои зиёд, нақли мазмуну муҳтаво ва мавзӯи ин асарҳо тавассути осори таърихӣ адабии арабӣ ва форсӣ «Таърихи Табарӣ»-и

Муҳаммад ибни Ҷарири Табарӣ, «Тарҷумаи Таърихи Табарӣ»-и Абӯалии Балъамӣ, «Муруҷ-уз-заҳаб»-и Мақдисӣ, «Уюн-ул-ахбор»-и Динаварӣ, «Шоҳнома»-ҳои Абулмуаййиди Балхӣ, «Гуштоспнома»-и Дакиқӣ, «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ, «Мучмал-ут-таворих»-и муаллифи номаълум, «Осор-ул-боқия»-и Абӯрайҳони Берунӣ, «Сиёсатнома»-и Низомулмулк ва ғайра маълум аст. Дар қарни аввали хурӯчи хилофати араб тарҷумаи осори паҳлавӣ ба забони арабӣ хеле авҷ гирифт. Тарҷумаҳои арабиро як шакли нави идомаи адабиёти паҳлавӣ доништан мумкин аст. Дар қарни тарҷумаи осори паҳлавӣ саҳми Ибни Муқаффаъ хеле бузург аст. Нусхаҳои аслии «Вису Ромин», «Бахтёрнома», «Офариннома», «Искандарнома», «Хусраву Ширин», аксари достонҳои «Шоҳнома», андарзномаҳои ин асар ва ғайра то замони мо нарасидаанд, вале ба мавҷудияти нусхаи аслии онҳо ба забони паҳлавӣ (портӣ) ва ё паҳлавӣ-форсии миёна шубҳае нест.

Воқеан, давраи Сосониён аз дурахшонтарин давраҳои тамаддуни эронист. Мардуми эронитабори ин давра аз ҳайси ҷалолату азамат ва илму тамаддун дар байни миллатҳои мутамаддини замони худ мақоми аввалро доштанд ва давлати Сосонӣ дар миёни кишварҳои Машриқ аз бузургтарин давлатҳои муқтадири он аср ба шумор мерафт. Асос ва пояи тамаддун ва неҳзати илмии арабу аҷам, ки бузургтарин неҳзати илмии дунё ба ҳисоб меравад, бештар аз рӯйи бақоёи тамаддун ва илму адаби ин аҳд рехта шудааст. Сосониён ҳукумати тавоно ва муназзаме таъсис доданд, ки асоси онро дину оини миллӣ ва фарҳангу тамаддуни эронӣ ташкил меод. Аз назари фарҳанги миллӣ бузургтарин қисм, ки анҷом доданд, эҳё ва тадвину тафсири “Авесто” буд, ки бунёдгузори давлати Сосониён - Ардашери Бобакон ба он иқдом кард. Ардашер дини зардуштиро дини расмӣ умумӣ ва давлатӣ қарор дод ва ба тарғибу ташвиқи он дастур дод, ки мӯбадон бо роҳбарии мӯбадонмӯбад - Тансар ин амалро ба хубӣ анҷом доданд. Чунончи, Тансар ба шоҳи Табаристон - Гуштнасонома навиша, ўро аз фармони шаҳаншоҳ огоҳ ва ба тарғиби оини дини беҳӣ водор намуд. Ин номаро Ибни Муқаффаъ дар асри ҳаштум аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума намуд ва дар қарни дувоздахум Ибни Исфандёр онро аз арабӣ ба форсӣ тарҷума карда, дар китоби “Таърихи Табаристон” дохил намудааст. Ин китоб ҳоло дар музейи Лондон маҳфуз аст ва Дармстетер онро аз муҳимтарин санадҳои таърихии Эрон медонад. Ардашер дар қарни сиёсии давлат низ ислоҳот ворид намуда, онро аз ҳар чихат муназзам сохт. Дар замони Ардашери Бобакон барои нашри тамаддун ва илму адаб заминаи хубе фароҳам шуд. Ба қавли муаррихи шаҳир Имоуддин Исмоил ибни Маликафзали Абулфидо, муаллифи таърихи машҳури «Ал-мухтасар фӣ таърих-ил-башар», дар замони Сосониён аввалин неҳзати илмии эронӣ дар давраи Шопури аввал (241-271) шурӯъ

мешавад, зеро ин подшоҳи муқтадир баъд аз ғалаба бар Рум ва ба асорат гирифтани Валериен (Valerien) – императори Рум ва теъдоди зиёди румиён камари ҳиммат ба ободонӣ ва нашри илму фарҳанг барбастан. Бо амри ӯ асирони румӣ пули Шуштар ва садди Шодурвонро дар рӯди Корун сохтанд, ки ба «Банди Қайсар» маъруф аст. Ҳамчунин бо дасти асирони муҳандиси румӣ шаҳрҳои Шохпур дар Форс, Ҷунди Шохпур дар Хузистон ва Нишопурро дар Хуросон сохт. Донишмандони румиро иззату иқром кард ва онҳоро ба пойтахт ҷамъ намуда, ба навиштани китобҳои илмӣ ташвиқ намуд. Ҳамчунин дастае аз донишмандони румиро ба Юнон фиристод, то китобҳои илмӣ доир ба фалсафа, тибро ба Эрон биёваранд ва онҳоро ба паҳлавӣ тарҷума кунанд. Ин корҳои Шопур мардумро ба илм ҷалб кард ва ба ин сабаб илму адаб дар Эрон ривож ёфт.

Ин иқдоми Шопурро шоҳони дигари сосонӣ идома доданд, аз ҷумла Яздгирди аввал дар муддати шоҳии худ (399-420) бо воситаи иртибот бо румиён аз илму адаби онҳо баҳраҳо ба Эрон расонидааст. Баҳроми Гӯр (420-438) бештар ба адабиёту мусиқӣ майл доштааст. Масъудӣ дар «Муруҷ-уз-заҳаб» менависад, ки Баҳроми Гӯр ба форсӣ ва арабӣ ашъори бисёр иншо кардааст (Баҳром, ки дар миёни арабҳо тарбият шуда буд, забони арабиро хуб медонист). Абӯмансури Саолибӣ навишта, ки Баҳроми Гӯр 400 нафар созандаву навозандаро аз Ҳиндустон ба Эрон ворид кард ва онҳоро ба атрофу навоҳии ин мамлакат ҷой дод. Ҳамза ибни Ҳасани Исфаҳонӣ – адиб ва муаррихи маъруф дар зимни ҳикояте оварда, ки ба амри Баҳроми Гӯр 12000 лӯлӣ ва ромишгару хунёгар аз Ҳиндустон ба Эрон омадаанд ва дар атрофу акнофи мамлакат пароканда шудаанд. Хулоса, Баҳроми Гӯр аз он сабаб, ки бо Арабу Ҳинд дар робита буд ва майли бештаре ба мусиқию шеър дошт, ин ду ҳунарро раванқ дода, аз илму адабиёти Ҳинду араб ба Эрон манфиат овардааст.

Авҷи тараққиёти илму адаб дар Эрон ин давра ба аҳди Анӯшервони Одил (531-578) рост меояд. Анӯшервон худ донишманд буда, ба мутолиаи китобҳои илмӣ майли бештаре доштааст. Дар даврони ӯ комилан васоили неҳзати илмии Эрон омода гаштааст, зеро аввалан, ҳусни тадбир ва шеваи одилонаи ӯ мақбули хосу ом буда ва мардум, ки дар амният ва осудагӣ мезистанд, майли бештаре ба илму фарҳанг намуданд. Сониян, ки худ олим буд, олимнро иззату эҳтиром мекард ва аз ҳар ҷиҳат пуштибони онҳо буд ва маҳз адолату илмпарварии ин шоҳ имкон дод, ки мамлакат аз ҳайси илму адаб хеле пеш равад. Дилбастагӣ, ки Анӯшервон ба илму ҳикмати юнонӣ ва ҳиндӣ нишон меод, гувоҳи таҷаддудгароӣ ва навҷӯӣ дар он даврон он муҳит аст. Тарҷумаи китобҳои илмии тиббӣ ва ҳикмату фалсафаи Юнону Ҳинд ба паҳлавӣ заминаи бузурге барои рушди илму дониш дар Эрон шуд. Овардани «Калилаву Димна», бозии шатранҷ ва ошноӣ бо дини будоӣ дар ноҳияҳои шарқи мамлакатро муҳаққиқон натиҷаи таваҷҷуҳи Хусрави аввал

донистаанд. Хусрави Парвиз гарчанде чандон алоқае ба илму дониш надошт, даврони ҳокимияташ асри тилоии мусиқӣ ба ҳисоб меравад ва эҳтимол дорад, ки дар мусиқии эронии баъд аз ислом таъсири мусбат расондааст. Бояд зикр кард, ки дар «Корномаи Ардашери Бобакон» ва рисолаи «Хусрав ва ридак» ишораҳое ҳаст, ки Ардашери Бобакон ва Анӯшервон низ ба мусиқӣ рағбати зиёде доштаанд ва дар дарбори онҳо хунёгарону мусиқишиносон дорои мақоми хос будаанд. Борбад, Саркаш, Накисо, Ромтин аз чумлаи бузургтарин устодони мусиқии аҳди Хусрави Парвизанд. Аз ахбори сарчашмаҳо бармеояд, ки қисмати бузурги дostonҳои ҳамосии миллӣ дар ин давра тадвин шуда буданд. Барои Ҳурмузи чаҳорум дар зиндон ривоёте аз шоҳони пешин мехонданд ва ин гувоҳи он аст, ки дар аҳди Хусрави аввал бахше аз дostonҳои миллӣ ва ахбори шоҳони гузашта тадвин шуда будааст. Манзумаи «Ёдгори Зарирон» ва «Корномаи Ардашери Бобакон» шояд дар ҳамин давра китобат шуда бошанд. Илова бар ин, китобҳои зиёди андарзнома ва қиссаҳои динӣ, таърихӣ ва паҳлавонӣ низ ба забони паҳлавӣ таълиф шудаанд.

Дар давраи Сосониён аз асри сеюм то ҳафтуми мелодӣ забони расмии давлатӣ ва забони динӣ дар Эрон забони порсии миёна буд. Осори аслии забони порсии миёна, мананди сангнавиштаҳо, катибаҳои мазҳабии зардуштӣ ва таълифоти ғайридинӣ марбут ба даврони Сосонӣ аст. Он чи аз ин забон боқӣ мондааст, то ҳудуди ҳаждаҳ аср қидмат дорад ва аз ҷиҳатҳои динӣ, таърихӣ, асотирий, ҳуқуқи татбиқӣ, одобу русуми иҷтимоӣ ва фарҳангии мардум ва алалҳусус аз назари таърихи забон дорои аҳаммияти фаровон аст, аммо аз назари адабӣ арзишаш чандон зиёд нест. Хатте, ки бахши асосии адабиёти порсии миёна ба он навишта шуда, хатти паҳлавӣ ном гирифтааст. Муҳаққиқон бар онанд, ки беш аз нисфи осори адабиёти порсии миёна дар асри нухуми мелодӣ гирдоварӣ шуда, аммо дур намедонанд, ки ин осори адабӣ низ ҳамзамон бо нигоштани сангнавиштаҳо ва санадҳои дигар офарида шуда бошад, алалҳусус матнҳои динӣ, ки бар ривоятҳои куҳантар устуворанд. Масалан, матни «Ёдгори Зарирон»-ро ба сурати кунунӣ мутааллиқ ба садаи шашуми мелодӣ медонанд ва Нёлдеке онро қадимтарин китоби порсии миёна медонад, аммо Бенвенист нусаҳои мавҷуди ин асарро сурати дастхӯрдае аз як манзумаи ҳамосии аҳди ашқонӣ, пеш аз асри сеуми мелодӣ мешуморад. Донишмандоне монанди Аҳмади Тафаззулӣ ва Саййидмуҳаммади Туробӣ бар онанд, ки адабиёти умумӣ, ки пеш аз ин ба сурати шифохӣ аз насл ба насли дигар мунтақил мегашт, дар аҳди Сосонӣ ҷойи худро ба адабиёти мактуб дод, ки он ба дастури шоҳ ва ашрофи дарбор сурат гирифтааст. Осори ба забони паҳлавии сосонӣ аз ин адабиёт боқимонда (порсии миёна) нисбат ба дигар забонҳои роиҷ зиёдтар аст. Баъзе аз ин осор рӯйи тахтасангҳо, нигинҳо, зарф ва сиккаҳо нигошта шуда ва микдоре рӯйи папирусҳо, пӯстҳо ва китобу рисолаҳо нигориш ёфтааст. Аз даврони Сосонӣ сангнавиштаҳо дар Нақши Рустам, Нақши Рачаб, Ҳочиобод,

Бешопур, Тоқи Бӯстон, Тахти Чамшед, Каъбаи Зардушт, Фирӯзобод, Бойкулӣ (дар Курдистон), Дарбанди Қафқоз ва Озарбойҷон ба даст омадааст, ки ба даврони шоҳаншоҳии Ардашери аввал, Шопури аввал, Баҳроми аввал ва дувум, Нарсӣ, Шопури дувум ва севум тааллуқдоранд. Ин сангнавиштаҳо аслан ба се забон: паҳлавии сосонӣ, паҳлавии ашконӣ ва юнониянд.<sup>1</sup>

Хулоса, таҳқиқоти пажӯҳандагони адабиёти бостон нишон медиҳад, ки мардуми эронитабор дар ин давра он чи худ надоштанд, аз миллатҳои дигар, чун юнониҳо, хиндуҳо, бобилиҳо, ошуриҳо иқтибос карданд ва худашон низ китобу рисолаҳои зиёде нашр намуданд. Дар ҳар фанне, мисли тиб, фалсафа, нучум, мусиқӣ, мантик, начҷорӣ ва махсусан фанни шеърӯ адаб ва таърих маҳорати комил пайдо карданд ва дар ҳар фанне китоби зиёде таълиф намуданд, ки баъдҳо қисмате аз онҳоро мусулмонон ба арабӣ тарҷума намуда, муқаддимаи неҳзати илмӣ хеш қарор доданд.

Китобу рисолаҳои бозмонда аз ин давронро аз лиҳози муҳтаво Саййидмуҳаммади Туробӣ чунин тақсимбандӣ кардааст:

1. Матнҳое, ки дар асл ба забони авестой буда, сипас ба порсии миёна баргардонда шудаанд.
2. Матнҳое, ки ба порсии миёна навишташуда ва дорои матолиби динӣ ё пайванди наздик ба дини зардуштиянд.
3. Матнҳои ба порсии миёна навишташуда, ки матолиби ғайридинӣ доранд.
4. Матнҳои ба порсии миёна навишташуда, ки дар бораи одобу одот ва русуми дини зардуштиянд.
5. Андарзу ҳикмат ба порсии миёна.
6. Матнҳои мустақил ба порсии миёна.
7. Вожаномаҳои порсии миёна.
8. Матнҳои порсии миёна, ки дар мавзӯи пешгӯиҳо ва поёни кори ҷаҳон навишта шудаанд.

### III.2. Адабиёти паҳлавӣ

Забоне, ки дар Эрон аз қарни сеवуми пеш аз мелод то садаи нухуми мелодӣ забони гуфторӣ ва катбӣ будааст, ба истилоҳи забоншиносон, «форсии миёна» номида мешавад. Забони форсии миёна, ки гоҳ «паҳлавӣ» ё «паҳлавии сосонӣ» хонда мешавад, аз забонҳои эронии миёнаи ҷанубиғарбӣ ва бозмондаи яке аз гунаҳои форсии бостон аст. Ин забон забони расмии шаҳаншоҳии Сосонӣ буд ва дар он замон

---

اتفضلى، تاريخ ادبيات، ص: 83-110 ترابى، س. نگاهی به تاريخ و ادبيات ايران، ص: 51-745 همایى، ج. تاريخ ادبيات، ص: 3-17؛ باغبیدی، ح. زبان فارسی میانه/تاريخ جامع ايران، ص: 191-200؛ باغبیدی، ح. کتبه های فارسی میانه/تاريخ جامع ايران، ص: 201-240

«порсиг» хонда мешуд, зеро хостгоҳи он устони Порс буд. Аз асри нухуми мелодӣ ба баъд вожаи порсӣ-форсӣ (аз порсиг) танҳо ба форсии дарӣ гуфта мешавад ва форсии миёнаи бакоррафта дар матнҳои зардуштиро «пахлавӣ-фаҳлавӣ» меномиданд. Истилоҳи «пахлавӣ-фаҳлавӣ» дар замони Сосониён ба сурати «пахлавиг» (pahlawig) танҳо ба забони портӣ гуфта мешуд. Ба таъбири дигар, вожаи «пахлавиг» дар аҳди Сосониён танҳо ба забони портӣ гуфта мешуд. Дар давраи исломӣ ба сурати пахлавӣ-фаҳлавӣ ба номе барои Сосониён, ки худашон онро «порсиг» меномиданд, бадал шуд. Аз ин рӯ, акнун барои рафъи ибҳом, забонеро, ки хостгоҳаш устони Порт будааст, портӣ ё пахлавонӣ ё пахлавии ашконӣ ва забони расмии шоҳаншоҳии Сосониёро форсии миёна ё пахлавии сосонӣ ё танҳо пахлавӣ меноманд. Истилоҳи «пахлавӣ», алалхусус сурати муарраби он «фаҳлавӣ» баъдҳо ба ғӯишҳои маҳаллии ғарби Эрон низ гуфта мешуд.<sup>1</sup>

Кухантарин осори боқимонда ба забони форсии миёна навиштаҳои бисёр кӯтоҳ бар сиккаҳои шоҳони маҳаллии Порс пеш аз таъсиси сулолаи Сосониён аст. Ин забон дар давраи Сосониён ба забони расмии давлатӣ бадал шуд ва дар заминаҳои мухталиф қорбурди густарда ёфт. Бо зуҳури Монӣ дар оғози таъсиси давлати Сосониён ва дар натиҷаи фаъолиятҳои густардаи мубаллиғони дини монавӣ дар шимоли шарқи Эрон ва Осийи Марказӣ забони форсии миёна батадрич яке аз муҳимтарин забонҳои дини монавиён шуд. Қисмати бештари осори монавӣ ба забони форсии миёна мутааллиқ ба пеш аз асри нухуми мелодист. Форсии миёна қорбурди худро ба унвони забони оини монавиён то садаи сздаҳум ҳифз кардааст.

Осори боқимондаи форсии миёнаро муҳаққиқон ба чаҳор даста тақсим кардаанд: а) форсии миёнаи катибай, б) форсии миёнаи зардуштӣ, в) форсии миёнаи масехӣ ва г) форсии миёнаи монавӣ ё турфонӣ.<sup>2</sup> Ин осор ба чаҳор хат навишта шудаанд: хатти мунфасил (гусаста ё катибай), хатти таҳрирӣ (пайваста, муттасил, шикаста ё катбӣ, хатти забурӣ ва хатти монавӣ). Ҳамаи ин хатҳо асли оромӣ доранд ва аз рост ба чап навишта мешаванд. Осоре, ки ба забони пахлавӣ таълиф шуда, бештар осори дини зардуштиянд. Аз муҳимтарин намунаҳои матнҳои порсии миёна матнҳои мебошанд, ки дар асл ба забони авестой буда, сипас ба порсии миёна баргардонда шудаанд. Инҳо ҳамон гузоришҳо ва тарҷумаҳои ҳамроҳ бо тафсири матнҳои авестоиянд, ки дар истилоҳ «Занди «Авесто» хонда мешавад. Тақрибан тамоми матнҳои «Авесто» (чӯз бахше аз «Яштҳо», ки чанбаи ниёишӣ дорад) дар аҳди Сосониён ба порсии миёна тарҷума шуд, аммо на ҳамаи он тарҷумаҳо то имрӯз боқӣ мондаанд. Бештарин кӯшиш дар тарҷума ва гузориши «Авесто» дар аҳди

<sup>1</sup>اميرفخرايى، م. ادبيات فارسى ميانه//تاريخ جامع ايران، ص 112-114.. آموزگار، ژ. و تفضلى، ا. زبان پ، ادبيات و دستور آن، تهران، 1375، تفضلى، تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 191-192.  
<sup>2</sup>ابوالقاسمى، محسن. راهنماى زبانهاى ايران باستان، تهران، ج 1375. ص. 156.

Анӯшервони Одил анҷом шудааст. «Авесто»-и давраи сосонӣ аз 21 наск иборат буд, ки ба се бахш тақсим мешуд: 1.Наскҳои гоҳонӣ дар худошиносӣ; 2.Наскҳои додӣ дар қонунҳои одоби зиндагии дунявӣ; 3.Наскҳои Ҳадамансирик дар ниёишҳо ва сурудаҳои динӣ.<sup>1</sup>

Бояд зикр кард, ки аз адабиёти паҳлавӣ осори адабии ғайридинӣ, чи манзум ва чи мансур, аз байн рафтааст, вале тарҷумаҳои арабӣ ва форсии баъзе аз онҳо, монанди «Калилаву Димна» ва «Ҳазору як шаб» то ба мо расидааст. Муҳаққиқон бар онанд, ки ин тарҷумаҳо айнан баргардони сурати асли нестанд, балки дар таҳрирҳову ривоёти гуногун дучори тағйироти фаровон шудаанд. Мазмуни баъзе аз ин осор низ дар китобҳои адабии форсӣ иқтибос гардида ва ба суратҳои гуногун чилвагар шудааст, монанди ривоятҳои ҳамосии манқул дар «Шоҳнома», «Гаршоспнома» ва ривоятҳои ошиқона, ки дар «Хусраву Ширин» ва «Ҳафт пайкар»-и Низомӣ инъикос ёфтааст. Метавон гуфт, ки адабиёти паҳлавӣ дар ин гуна осори форсӣ идома ёфтааст. Аҳмади Тафаззулӣ бар он ақида аст, ки осори адабии паҳлавӣ ба сабаби аҳаммияте, ки суннати шифохӣ дар Эрони пеш аз ислом дошт, ғолибан ба китобат дарнаёмада буд ва он чи низ сурати мактуб ба худ гирифта буд, дар даврони исломӣ ба сабаби таҳаввули забони паҳлавӣ ба форсӣ ва низ ба иллати тағйири хатти паҳлавӣ ба арабӣ аз миён рафт, ё ба иллати таассуботи динӣ ва ё ҷангҳову ситезаҳо нобуд гардид. Шеърҳои паҳлавӣ низ ба вазъи мушобеҳ дучор гардид. Таҳаввули забон ва тағйири вазни ҳичой ба арӯз мӯчиби фаромӯшии ин ашъор шуд, ки ғолибан сина ба сина ҳифз мегардид ва ҳамроҳ бо мусиқӣ хонда мешуд. Аз раванқ афтодани мусиқӣ ва гоҳе мамнӯияти он дар даврони исломӣ низ худ яке аз мӯчиботи фаромӯшии ин осор шуд.<sup>2</sup>

Осори динии паҳлавӣ низ «дастхуши рӯзгори нохуш» гардида, осеби фаровон дидааст. Бештари осори динии паҳлавӣ дар асрҳои IX-X таълифу тадвини ниҳой шудаанд, ки дар ин даврон дини зардуштӣ дар ҳоли завол буди мӯбадони зардуштӣ дигар аз тарафи давлат пуштибонӣ намедиданд. Аксари муҳаққиқон бар онанд, ки майл ба доштани осори мактуб дар баробари динҳои яҳудию масеҳӣ ва монавӣ ва пеш аз ҳама, хатари аз байн рафтани осори зардуштӣ сабаб шуд, ки мӯбадон ва донишмандони зардуштӣ даст ба гирдоварӣ ва таълифи ин осор бизананд. Вале таассубҳои динии муслмонон, чи арабу чи аҷамии муслмоншуда ва ходисаҳову ҷангҳо, хусусан ҳамлаи муғул сабаби аз байн рафтани ин осор гардид. Аксари китобҳои боқимондаи паҳлавӣ, монанди «Динкард» ва «Гузидаи Зодиспарам» ба сурати ноқис ба дасти мо расидаанд. Бо ин ҳама он чи аз адабиёти пурмухтаво ва дурахшони он даврон боқӣ мондааст, на танҳо барои шинохти дини зардуштии аҳди Сосонӣ, балки барои фаҳмидани устураҳои бостонии Эрони Бостон, шинохти ҷаҳонбинии мардуми ориёии эронӣ аҳаммияти

<sup>1</sup> Ҷрабӣ, с. Нگاهی به تاریخ و ادبیات ایران، ص. 71.

<sup>2</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 35.



фавкулудда бузург дорад ва сарчашмаи муҳим ба шумор меравад. Ҳарчанд замони таълифи ин осор нисбатан нав аст, аммо муҳтавои мазмуни онҳо аз дунёи куҳан сухан мегӯяд. Бояд зикр кард, ки нусхаи асли адабиёти паҳлавӣ аз байн рафта, танҳо тарҷумаҳои онҳо ба арабӣ ва форсӣ боқӣ мондаанд.

Ин нуктаро бояд зикр кард, ки интиқоли суннати шифоҳӣ ба суннати навишторӣ дар охириҳои давраи Сосониён шурӯъ шуда буд. Футӯҳоти исломӣ замоне рӯй дод, ки ин таҳаввул ва интиқоли фарҳангӣ шакл гирифта буд, аммо тағйири ҳукумат ва пайдоиши равишу шеваҳои нав дар идомаи ин интиқол таъсир гузошт ва онро тираву кунд сохт. Бино бар ин, танҳо китобҳои динии зардуштӣ бо кӯшиши мӯбадону донишмандони ин оӣин боқӣ монданд. Аз сӯйи дигар, суннати шифоҳӣ дар давраи Сосониён низ аҳаммияти худро аз даст надода буд. Муҳаққиқон далелҳои овардаанд, ки дар ин аср шеъри ғайридинӣ бахше аз адабиётро ташкил меода ва тавассути хунёгарони касбӣ хонда мешуда ва аз ин роҳ густариш ёфтааст. Аз ин гурӯҳ яке ду асар бар ҷой мондааст, ки гувоҳи идомаи суннати гӯсонҳои даврони портиҳо ҳастанд.<sup>1</sup> Аммо қисмати бештари осори боқимонда натиҷаи кӯшиш ва ҳосили андешаву қалами мӯбадони донишманд аст, ки дониши динии худро дар қолаби осори хеш парварида, ба наслҳои пас аз худ интиқол додаанд. Ин осорро бояд дар ҷаҳорҷӯби андешаҳои динии ҳоким бар ин осор баррасӣ кард, зеро асл ва сарчашмаи ҳамаи онҳо «Авесто» ва тарҷумаву тафсириҳои он аст. Аз сӯйи дигар, ин ҷо аз осоре сухан меравад, ки аслашон аз миён рафта, танҳо тарҷумаи онҳо ба арабию форсӣ боқӣ монда ва ё ишорате аз онҳо дар ин китобҳо шуда, ки маълумот дар бораи онҳо дорем.

### III.2.1. Тарҷума ва тафсири «Авесто» ба паҳлавӣ

Дар мавриди замони китобати «Авесто» донишмандон ихтилофи назар доранд, аммо аксар бар онанд, ки ин кор дар замони Сосониён анҷом гирифтааст. Аммо ниёз ба тарҷума ва тафсири «Авесто» хеле пештар бояд ба миён омада бошад, зеро ҳатто дар давраи Ашкониён забони авестой забони мурда ба ҳисоб мерафт ва танҳо мӯбадон онро меомӯхтанд. Тафсири баъзе аз қисматҳои «Авесто» ба забони авестой дар даврҳои қадимтар сурат гирифтааст, ки дар ин масъала ҳама авестошиносон ҳамфикранд. Намунаҳои аз ин тафсириҳо дар ҳуди «Авесто»-и кунунӣ боқӣ монда, вале бо матни асл ҷунон омезиш ёфта, ки ҷузви матни асл пиндошта мешавад. Калимаҳои ҷумлаҳо низ дар дохили матни «Авесто» дида мешаванд, ки ба эҳтимоли зиёд барои тавзеҳ ва тафсир будаанд.<sup>1</sup>

<sup>1</sup> Boyce M. Middle Persian literature. HDO1. -P.33,243. نقل از میرفخرایی،م. ادبیات فارسی میانه،ص. 50-60. 1332، تهران، ترجمه رشید یاسمی، ج. 2، ص. 50-60.

### Ш.2.1.1.Занд

Тарчума ва тафсири «Авесто»-ро ба забони форсии миёна «Занд» хондаанд, ки маънии онро баъзе «дониш», гурӯҳи дигар «тавзеҳ» гуфтаанд. Эҳтимол меравад, ки «Занд» ба маънии шабеҳи чизе, монанди «огоҳӣ» ё «эзоҳу равшанӣ» буда бошад. Маҳшеди Мирфаҳрой менависад, ки «Занд» аз назари корбурди динӣ ба маънии тафсири паҳлавии матнҳои муқаддас аст, чи бо ҳавошӣ ва тавзеҳоти авестой ва чи бидуни он.<sup>1</sup> Суннати тафсири «Авесто» ба «Занд»-и паҳлавӣ арзишу эътибори зиёд бахшид. Бино ба маълумоте, ки дар «Динкард» омадааст, нависандагони паҳлавӣ ҳеч тафовуте миёни «Авесто» ба забони авестой ва баргардони паҳлавии он - «Занд» намегузоштанд ва бар он ақида буданд, ки маншаъ ва сарчашмаи ин тарчумаҳо низ худи Зардушт аст ва ин ҳар ду, яъне, «Авесто» ва «Занд» яке ҳастанд. Ба ҳамин сабаб, истилоҳи «Авесто» ва «Занд» ва «Занд ва Авесто» борҳо дар матнҳои паҳлавӣ бо ҳам ба кор рафтаанд. Се истилоҳ - «Авесто», «Занд» ва «Позанд» аз дер боз бо якдигар махлут шуда ва ба ҷойи якдигар ба кор рафтаанд. Нависандагони китобҳои паҳлавӣ истилоҳи «Авесто»-ро барои матни асли китоби муқаддаси зардуштиён ва истилоҳи «Занд»-ро барои тарҷумаву тафсири он ба забони паҳлавӣ ба кор бурдаанд. Дарҳамомезии ин ду истилоҳ дар осори нависандагони асрҳои миёна низ дида мешавад ва танҳо баъзе аз онҳо ин истилоҳотро дар ҷойи худ ба кор бурдаанд.<sup>2</sup> Масъудӣ дар «Муруҷ-уз-заҳаб» менависад: «Китоби аввал (мачусӣ) «Бастоҳ» ном дошт ва Зардушт ба сабаби ин ки мардум онро намефаҳмиданд, тафсире бар он навишт, ки онро «Занд» гӯянд ва сипас бар тафсир тафсире навишт ба исми «Позанд».<sup>3</sup>

Устод Рӯдакӣ низ ин ду истилоҳро дуруст ба кор бурдааст:

*Ҳамчу муаммост фаҳру ҳиммати ӯ шарҳ,  
Ҳамчу Абистост фазлу сирати ӯ Занд.<sup>4</sup>*

Аммо шоироне монанди Лабибӣ, «Позанд»-ро ба маънии «Авесто» ба кор бурдаанд:

*Гӯянд, нахустин сухан аз номаи Позанд  
Он аст, ки бо мардуми бадасл мапайванд.<sup>5</sup>*

Дақиқӣ гӯяд:

*Яке зардуштвораи орзуяст,  
Ки пешат Зандро бархонам аз бар.<sup>1</sup>*

<sup>1</sup> Мирфараҳӣ, м. ادبيات فارسی میانه، ص. 245.

<sup>2</sup> معین، محمد. مزدیسنا و ادب پارسی. تهران، 1338. ص. 208-220.

<sup>3</sup> همان جا، ص. 221.

<sup>4</sup> دیوان رودکی سمرقندی، ص. 32.

<sup>5</sup> معین، محمد. مزدیسنا و ادب پارسی، ص. 212.

Хулоса, «Занд» дақиқан ба маънии тарҷумаи китоби «Авесто» ба забони паҳлавӣ, ки дар баробари тарҷума шарҳу тафсир ҳам шудааст. Бино ба гуфтаи пажӯҳандагон, пас аз тадвини «Авесто» дар замони Балози аввали Ашконӣ тарҷума ва тафсири «Авесто» ба паҳлавӣ, яъне, «Занд» оғоз шуд, ки то охириҳои даврони Сосониён идома доштааст. Гумон меравад тарҷумаву тафсири «Авесто» то замони Маздак, муосири Қубод (490-531) тӯл кашидааст, зеро номи Маздаки Бомдодон дар «Занди Вандидод» омадааст. Баъзе аз нависандагони асрҳои миёна, монанди Хоразмӣ ва Берунӣ Маздакро муаллифи тафсиру таъвили «Авесто» донистаанд.<sup>2</sup>

### Ш.2.1.2. Позанд

«Позанд» - тафсири «Занд», овонавишт (транскрипсия)-и матнҳои паҳлавӣ ба хатти авестой (бо истифода аз ҳарфҳои изофӣ ва аломатҳои диакритикӣ) ва алифбои арабиасоси форсии тоҷикӣ. Позанд дар асрҳои VIII-IX бар ивази хатти душвори маъмул дар забони паҳлавӣ ва дар оғози зуҳури забони форсии нав ба миён омадааст. Ҳангоми ба «Позанд» баргардонидани матнҳои паҳлавӣ хузворишҳо (ҳетерограммаҳо) ба нусхаи форсияшон иваз карда мешуданд. Ба форсии нав ва лаҳҷаҳое, ки зардуштиёни Эрон гуфтугӯ мекарданд (яздӣ, симнонӣ, соӣ, сангсорӣ ва ғайра) ба назар мерасад. Дар калимоти матнҳои «Позанд» ба лаҳҷаҳои зикршуда аз ҷиҳати сохт ва хусусиятҳои фонетикӣ монандӣ дида мешавад. «Позанд» фонологияи забони паҳлавиро дар бар гирифта, барои дарки маънии калимаҳои ин забон ва дарёфтани таҳавул дар фаҳми онҳо бештар мусоидат мекард. Аксари ёдгорҳои адабии динии паҳлавӣ, аз қабилӣ «Бундаҳишн», «Минуи хирад», «Ҷомоспнома», «Ардавирофнома», «Баҳман-яшт», «Аогемадаеча», «Хурда-Авесто» ва ғайра ҳам дар шакли паҳлавӣ ва ҳам дар навишти «Позанд» то замони мо расидаанд.<sup>3</sup>

Пас аз асри X, ки ислом дар Эрон ва Мовароуннаҳру Хуросон устувор гардид, забони паҳлавӣ оҳиста-оҳиста фаромӯш ва доираи фаъолияташ танг шуд. Мӯбадон ва рӯҳониёни зардуштӣ, ки ба Ҳиндустон муҳоҷират карда буданд, зурур донистанд барои забти калимаву ибораҳои душвори ношинохта ва дуоҳову ниёишҳо дар осори динии худ аз хатти авестой, ки талаффузи дақиқи вожаҳоро нишон медиҳад, истифода кунанд. Ба таъкиди пажӯҳандагон, ин амали онҳо позанднависиро ба вучуд овард. Нависандагони асрҳои миёна, «Позанд»-ро тафсир бар «Занд» донистаанд. «Позанд» танҳо хоси баргардони матнҳои «Занд» ба хатти авестой нест ва баъзе

---

<sup>1</sup> همان جا، ص. 377

<sup>2</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 177

<sup>3</sup> Диловаров М. Позанд. // ЭАСТ, ҷ. 2.-С. 541.

матнҳои паҳлавӣ низ «позанд» доранд. М.Мирфахроӣ матнҳои «Позанд»-ро чунин тақсимбандӣ намудааст:

1. Позанди матнҳои шинохташудаи паҳлавӣ, монанди «Бундаҳишн», «Минуи хирад», «Ардавирофнома», «Занд ваҳман-ясн».

2. Аз матни «Шиканд гумоник визор», «Пус дониш комаг» ва қисмати асосии «Ёдгори Ҷомосбӣ» танҳо таҳрири Позанд дар даст ҳаст.

3. Соири осор: Офаринҳо, дуоҳо, тавбаномҳо (патит), нирангҳо (аврод), ривоёт, ситоиш, сӣ рӯза, даҳ андарз ва панҷ хими осрунон (мӯбадон), саду як номи Худо.<sup>1</sup>

Бояд зикр кард, ки матнҳои паҳлавӣ ба хатти арабиасоси форсӣ низ навишта шудаанд. Корбурди ин хат вобаста ба вазъияти замона будааст. Ривочи ин хат дар Ҳиндустон ва ошноии зардуштиён ба он сабаб шуд, ки ин хатро барои овонависи матнҳо истифода баранд. Ин шеваи овонависиро муҳаққиқон «овонависи порсӣ» номидаанд. Яке аз осори паҳлавӣ, ки бо ин хат овонависӣ шудааст, «Ҷомосбнома» мебошад, ки дар унвони дастнависи порсии он чунин омадааст: «Китоби «Ҷомосбнома»-и позанд бо тарҷумаи порсӣ».<sup>2</sup>

Муҳаққиқони осори паҳлавӣ баъзе аз матнҳои паҳлавӣ ва қисмате аз дуохоро, ки зардуштиён ба форсӣ баргардонда ва ё осореро, ки ба ин забон эҷод кардаанд, «форсии зардуштӣ» номидаанд, ки аз «овонависи порсӣ» тафовут дорад. Жола Омӯзгор «форсии зардуштӣ»-ро гунае аз форсӣ медонад.<sup>3</sup>

**Занди «Авесто».** Муҳаққиқон бар онанд, ки дар аҳди Сосониён тамоми «Авесто» ба забони паҳлавӣ тарҷума ва тафсир шуд, ки онро «Занд» меноманд. Занди ҳамаи «Авесто» боқӣ намонда, танҳо занди ҳамаи «Яснҳо», «Виспарад», «Вандидод», «Хурда-Авесто», «Ҳирбадистон», «Нирангистон» ва чанде дигар аз ин осор боқӣ мондааст. Бояд зикр кард, ки занди «Вандидод», «Ҳирбадистон» ва «Нирангистон», гарчи аз назари адабӣ арзиши баланд надоранд, аммо арзиши илмӣ онҳо аз диди забоншиносӣ бештар аст.

Авестошиносон бо баррасии матнҳои тарҷумашуда се хусусияти «Авесто»-и замони Сосониёнро мушаххас намудаанд: 1. Тарҷума таҳтуллафзист; 2. Баргардонҳо тафсиру таъвил ба дунбол доранд, ки дар қабул ва ё инкори ҷумлаҳои авестой ҳастанд; 3. Баргардонҳо гоҳ ҳамроҳ бо тавзеҳоте дар рад ё қабули тафсире ё тафсири дигар аст. Замоне, ки ба зиндагии рӯзмарраи динӣ ё ғайридинӣ марбут мешаванд, бисёр дарозу тӯлонӣ ва пурдомана ҳастанд.<sup>4</sup>

**Тарҷумаи «Яснҳо».** Тарҷумаи «Яснҳо» калима ба калима аст, яъне, ҳар калимаи авестой ба як вожаи паҳлавӣ баргардон шудааст.

---

<sup>1</sup> Мирфхрай, м. ادبيات فارسی میانه، ص 248

<sup>2</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص 120

<sup>3</sup> آموزگار، ژاله. ادبیات زردشتی به زبان فارسی. مجله دانشکده ادبیات تهران، 1348، س 18، ش 1-2، ص 172-179.

<sup>4</sup> میرفخرایی، م. ادبیات فارسی میانه، ص 250

Дастнависҳои зиёде аз «Яснҳо»-и «Авесто» ҳамроҳ бо занди он мавҷуд аст. Муҳаққиқон аз миёни ин дастнависҳо чаҳор дастнавис аз ду гурӯҳи ҳиндӣ ва эрониро дорои арзиши илмӣ донистаанд.

**Тарҷумаи «Вандидод».** Авестошиносон тарҷумаи «Вандидод»-ро муътабартар аз тарҷумаи қисматҳои дигари «Авесто» донистаанд. Дастнависҳои мавҷуди «Вандидод» ҳама аз рӯи як дастнависи асли, ки дар асри XI дар Систон нусхабардорӣ шуда, рӯйнавис шудаанд.

**Занди «Фрагард ҷуд дивдод».** Ин асар китоби мустақиллест дар бораи мухтавои «Вандидод». Дар ин китоб ибороте аз 16 фрагарди «Вандидод»-и паҳлавӣ омадааст, ки дар бораи маросим ва оинҳои покизагӣ ҳастанд, яъне усуле, ки дар китоби «Вандидод» баён шудаанд. Мавзӯ ва масъалаҳо ба сурати пурсишу посух нақл шуда, андешаву назарияҳои муфассирон дар бораи онҳо зикр шудаанд.

**Занди «Хурда-Авесто».** Ин китоб аслан тарҷумаи паҳлавии «Хурда-Авесто» буда, аз мазмунҳои зер иборат аст: Дуоҳои ашам ва хув, хув навар, баъзе «боч» (ё зикри дуоҳои нон (ғизо) хӯрдан, идрор кардан, кустӣ (камарбанди динӣ) бастан, Суруши боч, дуоҳои ситоиши дин, дуои хушбом (сапедадам), Виспа ҳумата (ҳама андешаҳои нек), ном ситоиш (ситоиши Худо), ниёишҳо (Хуршед, Меҳр, Моҳ, обу оташ), дуоҳои хосси вақтҳои панҷгонаи шабонарӯз, тавбаномаҳо, Яштҳо (Урмузд, Урдбиҳишт-яшт, Сурушходухт-яшт, Суруш-яшт, Ҳум-яшт, Ванан-яшт, Баҳром-яшт, Гуштосп-яшт), Офарингон (дахмон, фарвардигон, гоҳонбор, офарин Зардушт ва офарин бузургон, ду сирӯза (бузург, кӯчак: дуоҳои ҳар яки сӣ рӯзи моҳ) ва дар ситоиши сирӯза ва паймони заносӯй.<sup>1</sup>

**Ҳирбадистон ва Нирангистон.** Бино ба таҳқиқи донишмандон, матнҳои паҳлавии «Ҳирбадистон» ва «Нирангистон» аз ду китоб иборат аст, вале умуман ба унвони «Нирангистон» шинохта шудааст. «Ҳирбадистон» дар бораи ҳирбадӣ ва ё оину омӯзиши пешвоист, аммо «Нирангистон» аз мавзӯҳои мазҳабӣ ва маросими гуногун иборат аст. Дар унвони занди «Ҳирбадистон» ва «Нирангистон» омадааст, ки ин матн бар тибқи таълими Пишагсар (Pešagsar) навишта шудааст ва дар бахши дувуми «Нирангистон» зикр шуда, ки фрагарди дувум бар тибқи таълимоти Сушонс (Sosans) навишта шудааст. Аҳмади Тафаззулӣ зикр мекунад, ки ҳар ду ин шахс аз муфассирони «Авесто» будаанд ва номи беш аз сад муфассири «Авесто» маълум аст, аммо аз замони зиндагии онҳо иттилоъе надорем.<sup>2</sup>

### III.2.2. Осори таълифшуда бар асоси «Занд»

Баъд аз тадвин ва тарҷумаи «Авесто» осори зиёде ба забони форсии миёна ё худ паҳлавӣ дар мавзӯоти гуногун таълиф шудаанд,

<sup>1</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 124-123

<sup>2</sup> همان جا، ص. 125

ки бештари онҳо пайванди амиқ бо дини зардуштӣ доранд. Муҳаққиқон бар он ақидаанд, ки замони таълифи онҳо ба асрҳои IX-X рост меояд.

### III.2.2.1. Динкард

«Динкард» ё ба қавли муаллиф «Китоби дин», тахтуллафзӣ ба маънии «карда (таълифе) бино бар китоби дин («Авесто» ва «Занд») ва ё ба таъбири содатар «таълифи динӣ» -ст. Ин китоб ганчинаи азиме аз дониши маздояснист, ки дар он мазмуну мавзӯҳои гуногун бар пояи «Авесто» ва «Занд» аз давраҳои мухталиф ва бо сарчашмаҳои мутафовит, ба дасти муаллифоне, ки танҳо номи ду нафари онҳо дар китоб омада, гирдоварӣ ва тадвин шудааст. «Динкард» воқеан, ба ҳукми донишномаи дини зардуштист, ки аз он яксаду ҳафтод ҳазор калимаи порсии миёна бар ҷой мондааст. Ин китоб муҳимтарин асари адабиёти паҳлавист, ки дар асри IX навишта шуда, дар он афкори динию мазҳабӣ, донишҳои илмӣ, таърихӣ, инчунин асотиру ривоятҳои Эрон аз давраҳои қадим то асри IX гирд оварда шудаанд. «Динкард» хусусияти донишномай дорад. Дар он қариб тамоми асарҳои динии ба забонҳои авестой ва паҳлавӣ навишташуда гирд омада ё мазмунҳои онҳо мухтасаран дарҷ гардидааст. «Динкард» аз 9 китоб иборат буда, то замони мо ҳафт китоби он расидааст. Ду китоби аввал ва оғози китоби сеуми «Динкард» аз байн рафтааст. Муҳаққиқон Озарфарнбағи Фаррухзодон ва Озарбоди Умедонро муаллифони «Динкард» медонанд ва бар онанд, ки се китоби аввал ба Озарфарнбағ мансуб буда, китобҳои дигар ва умуман, тартибу танзими бахшҳои дигари асар ба Озарбоди Умедон тааллуқ дорад. Аммо аксар бар онанд, ки қисмати нахусти «Динкард», яъне китобҳои сеум, чаҳорум ва панҷум, ки бештар ҷанбаи ахлоқӣ, ҳикамӣ ва фалсафӣ дорад, аз таълифоти Озарфарнбағи Фаррухзодон будааст, ки Озарбоди Умедон онҳоро ба шакли ниҳой тадвин карда, номи худро дар охири фасл аз китоби сеюм овардааст.<sup>1</sup> Китобҳои шашум, ҳафтум, ҳаштум ва нуҳумро, ки бештар ба тафсиру ҳифзи дониши дини зардуштӣ мепардозанд, ба он афзудааст. Дар китоби «Шиканд гумоник визор» (фасли 4, банди 107) низ Озарфарнбағи Фаррухзодон ба унвони муаллифи «Динкард» ёд шуда, ки аз ӯ маҷмӯаи ривоёт ва андарзҳои низ дар даст аст.<sup>2</sup>

Муҳтавои «Динкард» аз ақидаҳои зардуштӣ, таърихи паёмбарон, таърихи ҷаҳон, таърихи қавмҳои гуногун ва дину мазҳаби онҳо, инчунин мазмунҳои таърихӣ ва адабӣ иборат аст. Масалан, китоби сеюми «Динкард», ки аз 420 бахш иборат аст, масъалаҳои динию фалсафӣ ва баҳсҳои диниро дар шакли пурсишу посух дар бар мегирад. Як бахши ин китоб аз таърихи «Авесто» баҳс мекунад. Дар он оид ба таърихи навишта шудани ин китоби таърихӣ, аз тарафи

<sup>1</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 129.

<sup>2</sup> میرفخرایی، م. ادبیات فارسی میانه، ص. 260.

Искандари Макдунӣ сӯзонда шудани як нусхаи он ва барои тарҷумаву омӯзиш ба Юнон бурда шудани нусхаи дигараш ривояту афсонаҳо баён гардидаанд. Пас аз воқеаи Искандар дар «Динкард» аз таърихи танзими «Авесто» аз тарафи мӯбадон дар давраи Ашкониён ва Сосониён (махсусан, дар аҳди Ардашери Бобакон ва мӯбади мӯбадони дарбораш Тансар) сухан меравад.

Дар бахшҳои китоби сеюми «Динкард» аз амшоспандон, шоҳоне, ки дар замонашон «Авесто» танзим гардидааст – Гуштосп, Дорюш, Балони аввал, Ардашери Бобакон, Шопури аввал ва дувум, Хусрави Анӯшервон ёд шудааст. Аз бахшҳои 35, 208 ва 241-уми китоби сеюми «Динкард» бармеояд, ки мураттибони он аз Қуръон ва паёмбари ислом – Муҳаммад (с) огоҳ будаанд.

Дар китоби чаҳоруми «Динкард» шарҳи таърихии «Авесто» идома ёфта, дар ин китоб бештар сухан аз кӯшишҳои Шопури аввал дар чамъоварӣ ва мураттаб кардани «Авесто» меравад. Ин китоб масъалаҳои динӣ, расму одоби зардуштӣ ва ғайраро низ дар бар мегирад.

Китоби панҷуми «Динкард» аз ду қисм иборат аст: Бахши нахуст посухҳои Озарфарнбағи Фаррухзодонро ба пурсишҳои Яъқуби Холидон, ки дар китобе ба номи «Самрон» ё «Самлон» дарҷ шудааст, дар бар мегирад, саргузашти инсоният то замони Зардушт ва паёми ӯ барои мубориза бар зидди девон ва парастии эзадон, бакоргирии андешаи нек, гуфтори нек ва кирдори нек, дурӣ чустан аз андешаи бад, гуфтори бад ва кирдори бад хулоса мешавад. Бахши дуюми китоб шомили 33 пурсиши Бухтмори масеҳӣ ва посухҳои Озарбоди Фарнбағ аст. Ёздаҳ пурсиш марбут ба масъалаҳои чун ҳастии эзад ва рақиби ӯ, се пурсиш дар бораи «Авесто» ва чигунагии илҳоми эзадӣ, чаҳор пурсиш дар бораи парастии оинҳои дини зардуштӣ ва ғайра.

Китоби шашуми «Динкард» мунтахабе аз илоҳиёти зардуштӣ, дониستانيҳои суннатӣ ва бузургтарин маҷмӯаи андарзҳои мавҷуд ба забони паҳлавист. Воқеан, китоби шашум маҷмӯи ҳикмат ва масалҳои пешиниён мебошад, ки мавзӯҳои ахлоқӣ, андешаҳои фалсафӣ ва ғайраро дар бар мегирад. Ин андарзҳо дар адабиёти паҳлавӣ ба шакли китобҳои андарзнома даромадаанд, ки чанде аз онҳо ба ғайр аз масъалаҳои зеҳнӣ ва фарҳангӣ, ҳамнишинӣ бо ашхоси донову нек, вафо ба паймон, фақр (дарвешӣ), хубӣ, бадӣ (бештар аз бадияш сухан меравад) ва ғайраро низ дар бар мегиранд. Ин китоб арзиши зиёди адабӣ дошта, дар он таъсири осори ҳиндӣ, махсусан, «Панчатантра» (ба паҳлавӣ тарҷума шуда буд) дида мешавад. Сабки ин китоб нисбат ба китобҳои, ки масъалаҳои динӣ ва мазҳабиро дар бар мегиранд, содатар аст. Дар он масалу ҳикматҳо ва панду андарз бо ташбеҳу истиора ва таъбирҳои шоирона омадаанд.<sup>1</sup>

Китоби ҳафтуми «Динкард» бар «Спанд-наск», «Чехрдод-наск», «Таълимоти Гуштосп» – бахшҳои то замони мо нарасидаи «Авесто» асос ёфтааст. Дар ин китоб перомуни таърихи Эрон, паёмбарони

<sup>1</sup> Диловаров М. Динкард // ЭАСТ, ҷ.1.-С. 405.

Эрон, таърихи пахлавонони асотирии халқҳои эрониноҷод: Каюмарс, Сиёмак, Хушанг, Тахмураш, Ҷамшед, Фаридун, Эраҷ, Кайхусрав, Кайгуштосп, Зардушт (тарҷумаи ҳолаш батафсилот омадааст) маълумот медиҳад. Дар ин китоб афсонаҳои зебо ва шоиронае дар бораи Зардушт ҳаст, ки воқеоту рӯйдодҳоро ба номи ӯ мепаивандад. Аз ин сабаб китоби ҳафтуми «Динкард»-ро баъзе муҳаққиқон «Зардуштнома» номида, онро маъхази асосии «Зардуштнома»-и форсии Баҳром ибни Паҷду ва «Милалу ниҳал»-и Шаҳристонӣ шумурдаанд.<sup>2</sup>

Китоби ҳаштуми «Динкард» як навъ феҳристи мундариҷаи матнҳои «Авесто» буда, маҳз ба туфайли онҳо мо огоҳ мешавем, ки «Авесто»-и давраи Сосониён аз 21 наск иборат будааст. Он наскҳо аз рӯи мазмуну мундариҷа ва мавзӯҳои дарбаргирифташон се навъ будаанд: 1) Дотик; 2) Госоник; 3) Ҳотик-мосарик. Ҳар кадоми онҳо аз 7 наск иборат буда, наскҳои «Госоник» аз шарҳи қоидаву қонунҳои дини зардуштӣ, адабӣ, динӣ, мавзӯҳои асотирий, таърихӣ мазҳабӣ ва ғайра иборатанд. Дар наскҳои «Достик» аз хусуси донишҳои дунявӣ, ҳуқуқӣ ва ғайра маълумот дарҷ гардидааст. «Ҳотик – монсарик» (авестой – manthra – «сухани муқаддас») – наскҳои дорад, ки бо гуфтаҳои муқаддаси динӣ ва андарзо орошта мебошанд. Китоби ҳаштуми «Динкард» ба таври қуллӣ аз ҷаҳоншиносӣ, ситорашиносӣ, каломӣ эҷадӣ, андарзу омӯзиш барои зиндагии рӯзона гуфтугӯ мекунад, вале муҳимтарин бахшҳои он бахшҳои ҳуқуқист, монанди қонунҳои ҷазо, дуздӣ, шаҳодати дурӯғ, дарҷоти гуноҳ, паймоншиканӣ, заминҳои кишоварзӣ, чорподорӣ, хайрот ва ғайра.

Дар бахшҳои китоби нухум шарҳу тафсири мундариҷаи наскҳои «Госоник» («Судкор-наск», «Варш-монсар-наск», «Бағ-наск) омадаанд. Аз ин наскҳо «Судкор-наск» ҷолиби диққат буда, аз достону ривоятҳо дар бораи «судкорон» – қаҳрамонону пахлавонон (Каюмарс, Хушанг, Тахмураш, Ҷамшед ва дигарон) иборат аст. То имрӯз китобҳои сеюм, панҷуму шашуми «Динкард» ба таври қомил ва бахшҳои аз фаслҳои китобҳои дигар овонависӣ ва тарҷума шудааст.<sup>1</sup>

### III.2.2.2. Бундаҳишн

“Бундаҳишн” дар забони пахлавӣ аз решаҳои бун, асос ва даҳишн – диҳиш, яъне, офариниш, офариниши оғозин ё “бунёдин”, он чи дар

<sup>2</sup> Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

<sup>1</sup> Рипка Ян. История таджикской и персидской литературы; Брагинский И. С. Из истории таджикской и персидской литературы; М. Диловаров. Динкард // ЭАСТ, ҷ. 1. - С. 405; 13891. تهران, هفتم. دینکرد / تاریخ جامع ایران، ص. 259. راسد محصل، م. دینکرد هفتم. تهران، 128-140. میرفخرایی، م. دینکرد / تاریخ جامع ایران، ص. 259. راسد محصل، م. دینکرد هفتم. تهران، 128-140. West. Pahlavi Texts IV. Sacred Books of the East. XXXVII. Oxford, 1892; de menasce y. p. Une encyclopedie mazdeenne, le Denkart. - Paris, 1958; mole m. Ja legende le Zoroastze. - Paris, 1967;



ибтидо офарида (дода) шудааст, иборат аст. “Бундаҳишн” яке аз бузургтарин осори адабиёти паҳлавист, ки дар асри IX таълиф шудааст. Номи аслии ин китоб «Занд-огоҳӣ» аст, ки дар оғози асар омада, ба маънии “огоҳӣ бар пояи “Занд” мебошад. Ин ишора ба он аст, ки мураттибон аз тарҷумаҳои паҳлави “Авесто”, ки онҳоро “Занд” мегуфтанд, истифода кардаанд. “Бундаҳишн” маҷмӯаест, ки аз мавзӯҳои гуногун ва манбаъҳои мухталиф гирдоварӣ ва тадвин шуда ва тайи таҳрирҳои мухталиф густариш ёфтааст. Аз ин ҷиҳат пажӯҳандагон натавонистаанд таърихи нахустин таҳриро мушаххас кунанд ва низ нависандаи воҳидеро барои он ном баранд. Дар матн ишораҳои зиёде ба ҳамлаи арабҳо шуда, вале яқин нест, ки инҳо дар матн асл вучуд доштаанд ё иловаи баъдист. Бештари донишмандон бар ин андешаанд, ки “Бундаҳишн” кори асил дар мавзӯи офариниш буда, аз тарафи муаллифе, ки дар охири давраи Сосониён мезиста, тадвин шудааст. Фаслҳои ахир (31-36) баъдҳо ба он афзуда шудаанд.<sup>1</sup> Дар миёни муаллифони таҳрири охирини «Бундаҳишн» ба эҳтимол Фарнбағноме будааст, ки исми худро дар фасли марбут ба хонадони мӯбадон ҳамроҳ бо ҳамасрони худ: Зодиспарам писари Гушнҷам - муаллифи «Гузидаҳои Зодиспарам» ва Озарбоди Умедон, муаллифи «Динкард» овардааст, ки дар асри IX мезистаанд. Пас аз Фарнбағ мавзӯҳои нав ба китоб илова шуда, зеро дар поёни фасли 36 соли 527 порсӣ (1157 мелодӣ) низ зикр шудааст. Аз мазмуну муҳтавои китоб бармеояд, ки мураттибон аз “Авесто”, китобҳои паҳлавӣ, аз ҷумла «Худойнома» истифода бурда, қомуси мухтасаре тартиб додаанд ва ба ғайр аз офариниш (масъалаи асосии китоб) ба донишҳои динию дунявӣ, ситорашиносӣ, тавсифи ҷирмҳои осмонӣ, гоҳшуморӣ, ҷуғрофия, таърих, асотири мардуми ориёӣ, қиссаи ривоятҳо ва ғайра дахл кардаанд.

«Бундаҳишн» дорои 36 фасл аст ва муҳтавои он, бино бар муқаддимаи китоб, ба се бахш тақсим мешавад, ки ҳар бахш ба мавзӯи воҳиде ихтисос дода шудааст: 1) Дар бораи офариниши оғозини Аҳурамаздо ва душмани Аҳриман ба ин офаридаҳо (фаслҳои 1-7; 2); Дар бораи чигунагии офаридагони моддӣ аз оғоз то фарҷом, он гуна, ки аз дини зардуштӣ пайдост (фаслҳои 8, 30, 34, 36); 3) Таърихи шоҳони сулолаи Каёниён, кишварҳои, ки онон дар тасарруфи худ доштанд ва офатҳои, ки ба Эроншаҳр расидааст (фаслҳои 31,33,35). Пас аз дебоча, ки афзудаи баъдист, муқаддимаи кӯтоҳе дар бораи муҳтавои куллии китоб омадааст. Фасли аввал дар бораи чигунагии Урмузд ва Аҳриман, ҷой ва сифоти ҳар як, набарди онҳо бо якдигар, офаридгони ҳар як ва офариниши онҳо дар ҳолати минуӣ (нодиданӣ) ва сипас, гетӣ (диданӣ, моддӣ) аст. Фасли дувум дар бораи фароз омадани равшанӣ (Хуршед, Мох, ситораҳо). Фасли сеум дар бораи сабаби офариниши офаридагон барои набард.

<sup>1</sup>Henning W.B. An Astronomical Chapter of the Bundahishn //JPAS, 1942.-P.229-248. از نقل میرفخرای، م. ادبیات فارسی میانه، ص.280.

Фасли чаҳорум дар бораи ҳамлаи Аҳриман ба офариниш ва марги гови яктоофаридида. Фасли панҷум дар бораи душмани ду мину ва ранҷи Кайхон, ки чӣ гуна иттифоқ афтод. Фасли шашум дар бораи набард кардани офаридагони гетӣ дар муқобили Аҳриман (дах набард). Фасли ҳафтум дар бораи навъҳои офаридагон. Фасли ҳаштум дар бораи чигунагии заминҳо. Фасли нухум дар бораи чигунагии кӯҳҳо. Фасли даҳум дар бораи чигунагии дарёҳо. Фасли ёздаҳум дар бораи а) рӯдҳои номвар ва б) ҳафт гуна об. Фасли дувоздаҳум дар бораи дарёчаҳо. Фасли сиздаҳум дар бораи чигунагии панҷ гуна чорпои судманд. Фасли чаҳордаҳум дар бораи мардону занон. Фасли понздаҳум дар бораи тавлиди мавҷудот. Фасли шонздаҳум гиёҳон. Фасли ҳабдаҳум дар бораи сарварони ҳар як офарида. Фасли ҳаждаҳум дар бораи оташ. Фасли нуздаҳум дар бораи хоб. Фасли бистум дар бораи садоҳо. Фасли бистуякум боду абру борон. Фасли бистудувум чонварони зиёнрасон. Фасли бистусевум навъҳои гургҳо. Фасли бистучаҳорум офаридагони гуногун ва ҳадаф аз офариниши онҳо. Фасли биступанҷум соли динӣ. Фасли бистушашум бузургирдори эзадони минуй. Фасли бистухафтум дар бораи бадкирдории Аҳриман ва девон. Фасли бистухаштум ҷаҳони сағир. Фасли бистунухум сарвари кишварҳои ҳафтгона. Фасли сиюм пули Чинвад ва равони даргузаштагон. Фасли сиюякум шаҳрҳои номии Эроншаҳр ва хонаи Каёнӣён. Фасли сиюдувум иқоматгоҳҳои, ки Каёнӣён сохтаанд. Фасли сиюсевум дар бораи газанде, ки ҳар ҳазора ба Эроншаҳр ояд. Фасли сиюҷаҳорум растохез ва тани пасин. Фасли сиюпанҷум дудаи мӯбадон ва фасли сиюшашум солшумории тозиён ба дувоздах ҳазор сол.<sup>1</sup>

Муаллиф аз манбаи истифодакардаи худ ном намебарад. Аз баррасии муҳаққиқон маълум мешавад, ки манбаи асосии «Бундаҳишн» «Авесто» мебошад. Масалан, бахши офариниши кӯҳҳо аз «Яштҳо» гирифта шудааст. Аз рӯи маълумоти «Динкард», ки дар он баъзе бахшҳои азбайнрафтаи «Авесто» боқӣ мондаанд, метавон ба хулоса омад, ки мураттибони «Бундаҳишн» аз он бахшҳо истифода намуда, бо ин амал дар ҳифзи бахшҳои гумшудаи «Авесто» хидмат кардаанд.

Насри «Бундаҳишн» вобаста ба манбаи истифодашуда печидаву мураккаб ва ё содаву раван аст. Аз он ҷо, ки манбаи асосии китоб «Авесто» ва тарҷумаи тафсири он аст, наҳваи авестой зербинои онро ташкил медиҳад. Дар «Бундаҳишн» хусусияти суннати адабиёти шифоӣ низ ба назар мерасад. Агарчи аҳаммиати «Бундаҳишн», пеш аз ҳама, дар мавзӯҳои асотирӣ ва қидмати онҳост, аммо китоб саршор аз маълумоти гуногунест, ки дар дигар осори паҳлавӣ наомада ва ё танҳо ишора шудааст. Маълумоти таърихӣ дар асоси «Худойнома»-и давраи Сосониён аст, ки таърихи Эронро аз оғоз то замони фаро расидани ислом шарҳ додааст. Ин фасли «Бундаҳишн» муҳимтарин санад дар бораи муҳтавои «Худойнома»-и замони Сосониён аст, ки аз тағйироти

<sup>1</sup> میرفخرایی، م. ادبیات فارسی میانه، ص. 281-28.

давраи исломӣ маҳфуз мондааст. Маълумоти бисёр ҷолиб дар бораи сарзаминҳои Осиеи Миёна дар даврони Сосониён ва то аввалҳои омадани ислом, қавмшиносӣ, хонадоншиносӣ, ситорашиносӣ ва монанди инҳо аз мавзӯоти ҷолиби “Бундаҳишн” аст.

Аз «Бундаҳишн» ду таҳрир то имрӯз расидааст, ки яке «Бундаҳишни хиндӣ» ва дигаре «Бундаҳишни бузург» ном гирифтааст. «Бундаҳишни хиндӣ» мухтасар буда, дар Ҳиндустон нусхабардорӣ шудааст. «Бундаҳишни бузург» дар Эрон нусхабардорӣ шуда, нисбат ба «Бундаҳишни хиндӣ» бахшҳову фаслҳои бештарро фаро гирифтааст.

Донишмандони Аврупо бо «Бундаҳишн» аз рӯи тарҷумаи франсавии он, ки Анкетил Дюперрон анҷом дода буд, шинос шуданд. Баъдан «Бундаҳишн»-ро олими англис Е. В. Вест дар силсилаи «Китобҳои муқаддаси Шарқ» (Sacred Books of the West) дар Оксфорд (соли 1880) ба англисӣ тарҷума карда, ба таъб расонд.<sup>1</sup> Дар Техрон тарҷумаҳои «Бундаҳишн»-ро ба забони форсӣ Руқия Бехзодӣ<sup>2</sup> ва Меҳрдоди Баҳор<sup>3</sup> чоп карданд. Тарҷумаи русии «Бундаҳишн»-ро соли 1997 муҳаққиқи осори паҳлавӣ О. М. Чунакова ба таъб расонд.<sup>4</sup> Соли 2006 ба муносибати Бузургдошти тамаддуни Ориёӣ Муаззам Диловаров матни омодакардаи Меҳрдоди Баҳорро ба алифбои кириллӣ таҳия ва чоп намуд.<sup>5</sup>

### III.2.2.3. Гузидаҳои Зодиспарам

«Гузидаҳои Зодиспарам» навиштаи Зодиспарам писари Гушнҷам (gusn-jam) (Ҷавонҷам (juwan-jam) ҳам навиштаанд) ва бародари Манучеҳр-муаллифи «Номаҳои Манучеҳр» мебошад, ки дар асри нух мезистааст. Номае, ки бародараш Манучеҳр ба ӯ навиштааст, таърихи 250 яздгирдиरो дорад, ки баробар ба 881 мелодист. Номи Зодиспарам дар фасли 35 «Бундаҳишн» аз ҳамасрони тадвинкунандаи китоб зикр шудааст. Зодиспарам аз хонадони рӯҳонии зардуштӣ буда, падараш Гушнҷами Шопурон дар «Номаҳои Манучеҳр» бо унвони «пешвои беҳдинон» ёд шудааст (номаи 1, фасли 3, банди 10). Илова бар ин, номи Гушнҷам дар осори дигари паҳлавӣ, монанди «Модёни ҳазор додистон» дар канори муфассирони дигар омада, ки аз мақоми баланди динии ӯ гувоҳӣ медиҳад. Намояндаи бузурги ин хонадон мӯбади шаҳир Озарбоди Маҳраспандон мебошад, ки дар замони Шопури дувум (309-389) мезистааст. Зодиспарам дар китоб бо унвони ҳирбади Нимрӯз ва дар «Номаҳои Манучеҳр» (оғози номаи дувум: 53) танҳо бо унвони

<sup>1</sup>Диловаров М. Бундаҳишн // ЭМТ, ҷ.3.-Душанбе, 2014. -с.,243.

<sup>2</sup>بیهزادی، رقیه. واژه نامهٔ بندهشن. تهران، 1368.

<sup>3</sup>بهار، مهرداد. بندهشن. تهران 1369.

<sup>4</sup>Чунакова О.М. Зороастрийские тексты Суждения разума (Дадестан-и-меног-и храд) Сотворение основы (Бундаҳишн) и другие тексты.- Москва, 1997.

<sup>5</sup>Фарнбағ Додағӣ. Бундаҳишн. Гузориши Меҳрдоди Баҳор, таҳияи М. Диловар. Душанбе, 2006.

хирбад ёд шудааст. Зодиспарам бар хилофи бародараш Манучехр суннатгарои мутаассиб набуд. Чанд навоварие дар маросими дини зардуштӣ (аз ҷумла дар маросими татхир мавсум ба баршнум) карда, ки боиси хашми рӯҳониён гаштааст ва ба бародараш Манучехр, ки мӯбадонмӯбади Порс буд, шикоят кардаанд. Дар «Номаи Манучехр» се нома дар ин масъала дида мешавад, ки бо оҳанги тунду тез ва бо назари суннатӣ сухан гуфтааст.<sup>1</sup>

«Гузидаҳои Зодиспарам» низ монанди «Бундаҳишн» бо така бар «Авесто» ва «Занд» дар бораи офариниши ҷаҳон, афсонаи зиндагии Зардушт, таркиби инсон аз ҷону тану равон, амалҳои неки паёмбарон, паҳлавонон ва охири ҷаҳон аст. Муҳаққиқон ин китобро вобаста ба муҳтавои он ба ҷаҳор бахш тақсим кардаанд: 1. Ҷаҳоншиносӣ ё офариниши оғозин. 2. Таърихи дин ва шарҳи ҳоли паёмбарону паҳлавонон ва дostonҳо дар бораи Зардушт. 3. Таркиби инсон аз тану ҷон ва равон ва ҳодисаҳои охири ҷаҳон, растохез ва фаршгард. Бахши аввал дорои се фасл аст: Фасли якум дар бораи Урмузду мабдаи некӯӣ ва Аҳриману мабдаи бадӣ. Фасли дувум дар бораи ҳамлаи Аҳриман ба офаридаҳои урмуздӣ: осмон, замин, гиёҳ, гови яктоофарида ва Каюмарс ва олудани ҳар як аз онҳост. Фасли сеум дар бораи муқобила ба олудагист, ки Аҳриман ба офаридагони Урмузд бурдааст. Дар ин фасл аз дарёҳо, баҳру рӯдҳо ва кӯҳҳо низ сухан рафтааст. Табақабандии гунаҳои гиёҳӣ ва ҷонварӣ аз мавзӯҳои ҷолиби ин фасл аст. Бахши дувум (фаслҳои 4-28) шарҳи зиндагии паёмбарон ва паҳлавонон аст. Фаслҳои панҷум то бистушашум дар бораи зиндагӣ ва фаъолияти Зардушт мебошад, ки хеле батафсил омадааст. Бахши сеум аз ду фасл (фаслҳои 29-30) иборат аст, ки дар бораи таркиби одамӣ аз тану ҷону равон ва чигунагии вазифаҳои андомҳои дохилӣ, монанди дил, мағз, ҷигар, меъда ва марги тану бақои равон аст. Пажӯҳандагон бар он ақидаанд, ки ин ду фасл аз назари асолат ва диққату ҷомеият дар тамоми адабиёти паҳлавӣ санади якто ва ғайриқобили ҷойгузин ба шумор меояд.<sup>2</sup> Дар фасли 32 ишораи кӯтоҳе ба Ҷамшед, Фаридун ва Гаршосп рафтааст. Ҷамчунин дар бораи ҷавонмардию бахшандагии Фаршуштар, мушовири Гуштосп маълумоти кӯтоҳе омадааст. Бахши ҷаҳорум фаслҳои 34-35-ро фаро мегирад, ки сухан аз ҳодисаҳои поёни ҷаҳон ва рӯзи растохез аст.

Назаре ба мавзӯҳои гуногуни «Гузидаҳои Зодиспарам» нишон медиҳад, ки муаллифи он аз илму донишҳои замони худ огоҳии комил дорад ва бешак, аз донишмандони замони худ будааст. Зодиспарам роиҷтарин ва дархуртарин мавзӯҳои замони худро огоҳона ба насри равону сода матраҳ кардааст, зеро китоби ӯ, пеш аз ҳама, барои мардуми авом нигаронида шудааст. Бино ба гуфтаи Аҳмади Тафаззулӣ,

<sup>1</sup>Мирфхрабӣ, м. Гзиде Һай Задспирм//Тарих Ҷаме айран, ص. 286.

<sup>2</sup>Мирфхрабӣ, м. Гзиде Һай Задспирм//Тарих Ҷаме айран, ص. 287.

Зодиспарам рисолаи дигаре зери унвони «Хулосае дар бораи анвои тухмаҳо (нажодҳо)» таълиф карда, ки аз байн рафтааст.<sup>1</sup>

Аз Манучеҳр-писари Гушнчами Шопурон-хирбад ва раис рӯҳониёни Порсу Кирмон, ки дар нимаи дувуми асри IX зиндагӣ ва эҷод кардааст, се нома ва китобе бо унвони «Додистони динӣ» боқӣ мондааст. Манучеҳр бародари бузурги Зодиспарам, муаллифи «Гузидаҳои Зодиспарам» мебошад, ки ҳар ду аз авлоди Озарбоди Маҳраспандонанд. Сабаби нигориши ин се нома шикоятҳои рӯҳониёни мутаассиби зардуштӣ аз навоариҳо ва ба қавли онҳо бидъатҳои бародари Манучеҳр-Зодиспарам дар сода кардани баъзе маросими динӣ, монанди татҳири баршнум будааст. Номаи якум хитоб ба мардуми Сирҷони Кирмон, номаи дувум хитоб ба бародараш Зодиспарам ва номаи сеюм номаи саркушода ба «беҳдинон», яъне, зардуштиёни Эроншаҳр аст, ки дар воқеъ, ба масобаи фатвои динист. Номаи сеюм санаи 250 яздгирдиरो дорад, ки баробар ба 881 мелодист. Аксари муҳаққиқон бар он ақидаанд, ки таърихи ин нома санади муътабарест барои таъйини дигар матнҳои паҳлавист.<sup>2</sup>

Манучеҳр барои исботи назари худ илова бар истинод ба матнҳои динӣ, аз гуфтаҳои бузургтарин муфассирони «Авесто», монанди Абараг, Сушонс, Мидевмоҳ, Озарфарнбағ ва Озарбарзин ишора кардааст. Манучеҳр ба ҳайси як пешвои рӯҳонии суннатгаро иҷрои бечунучарои маросими диниро талаб кардааст. Ӯ аз он тарс дорад, ки бародараш Зодиспарам монанди ниёи бузурги худ- Зардушт Фаранбағ, ки чихил сол пеш аз ӯ ба ислом гаравида буд, таҳти таъсир воқеъ шавад. Вай саҳт афсӯс меҳурад, ки бародараш бо ин фатво мақоми волои худро аз даст додааст. Манучеҳр бар он аст, ки бояд бародараш-Зодиспарам пеш аз фатво додан бо ӯ, ки бузургтарин марҷаи мардум аст, масъаларо ба миён мегузошт. Манучеҳр бародари худро сарзаниш мекунад ва рафтори ӯро ба пизишке монанд мекунад, ки ба беморе, ки барои дарди дандон назди ӯ рафтааст, тавсия медиҳад, ки дандонро биканад (номаи 2, фасли 5, банди 11). Ҳамчунин бародарашро таъна зада мегӯяд, ки суханони ӯ болотар аз суханони он гозур (ҷомашӯй)-ест, ки ба ӯ ҷомаҳое медиҳанд, то ранг (чирк) аз онҳо бизудояд ва ӯ ҳама ҷомаҳоро месӯзонад ва мегӯяд: Чирку ночиркро сӯзондам (номаи 2, фасли 3, банди 16).<sup>3</sup>

Муҳаққиқон бар он андешаанд, ки Манучеҳр воқеан на танҳо дар доиши динӣ, балки дар илми нучум низ огоҳии комил дорад. Баррасии ӯ дар мавриди «Зичи шаҳрёр» ва «Зичи ҳиндӣ» огоҳона аст. Сабки нигориши Манучеҳр аз шеваи нависандагии бародараш-Зодиспарам хеле тафовут дорад. - Зодиспарам сабки содаву равон ва олимона дорад, аммо «ибороти Манучеҳр ҳама сақилу тӯлонӣ ва мутаазаммини ҷумалоти фаръии бисёр аст, ки дар натиҷа дарки

---

<sup>1</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 148.

<sup>2</sup> نامه های منچهر // تاریخ جامع ایران، ص. 290.

<sup>3</sup> همان جا، همنا صفحه.

мафоҳимро барои хонанда душвор мекунад».<sup>1</sup> Дар онҳо аз тасвиrotи бадеӣ танҳо ду тамсил ба назар мерасад (номаи 2, фасли 1, банди 15, саҳифаи 58 ва номаи 2 фасли 3, банди 16, саҳифаи 70). Аҳаммияти ин номаҳо дар муҳтавои онҳо, барои огоҳӣ аз дидгоҳи мӯбадон дар бораи масъалаҳои динӣ, истилоҳоти хосси онҳо ва тарзи нигориш қобили тавачҷух аст.

«Додистони динӣ» ба маънии маҷмӯаи орои динӣ, доварихи динӣ асаре аз адабиёти паҳлавист, ки ба қалами мӯбадонмӯбади зардуштиён Манучеҳр писари Гушнҷами Шопурон дар асри нухум тааллуқ дорад. «Додистони динӣ» дар шакли пурсишу посух навишташуда, аз як муқаддима ва 92 пурсиши шахсе бо номи Меҳрхуршед (Митра Хваршед) писари Озармоҳ, аз пайравони дигари беҳдинон ва посухи Манучеҳр иборат аст. Ин унвони ба таври суннатӣ ба китоб дода шуда, бино ба андешаи муҳаққикон, асли ҷадидтаре дорад, зеро муаллиф дар муқаддима ба унвони «Пурсишнома» (pursishnamag) ишора мекунад. Таърихи дақиқи нигориши китоб маълум нест. Муҳаққикон бо таърихи дақиқи охири «Номаи Манучеҳр», ки соли 881 мелодист ва низ оҳанги нисбатан мулоимтаре дар ин ҷо нисбат ба «Номаҳо» дорад, тахмин мекунанд, ки «Додистони динӣ» бояд пеш аз «Номаҳо», яъне, пеш аз таърихи 881 таълиф шуда бошад.<sup>2</sup>

Мавзӯҳои дар китоб матраҳшуда марбут ба расму оини зардуштӣ буда, масъалаҳои гуногунро дар бар мегиранд. Пурсишҳо дар бораи масъалаҳои фалсафӣ, худошиносӣ, динию иҷтимоӣ, ахлоқӣ, ҳуқуқӣ, иқтисодӣ ва низ офаринишу падидаҳои табиист. Муҳтасари муҳтавои китоб ба тариқи зайл аст: Пурсишҳои яқум то сеюм дар бораи «марди росткор», лақабе барои Каюмарс, пешнамунаи инсон ва намунаву мазҳари инсонии комил аст. Дар ин ҷо ба суоли сабаби бартарии Каюмарс аз офаридагони дигар, монанди хуршеду моҳу оташ ва вазифаҳои Каюмарс дар ин ҷаҳон ҷавоб дода шудааст. Ба андешаи Манучеҳр, муҳимтарин далели бартарии инсон ба дигар мавҷудот хирад аст. Пурсиши шашум дар бораи симати офариниши инсон дар ҷаҳони моддӣ, пурсишҳои ҳафтуму ҳаштум дар бораи таъсири хайрот барои равони шахси даргузашта, нухум то ёздаҳум дар бораи афзоиши фоидаи кори нек, пурсишҳои дувоздаҳ ва сездаҳ дар бораи расидагӣ ба аъмоли равон дар рӯзи ҷаҳоруми пас аз марг ва подафроҳ ва подоши он аст. Ҳамин тариқ дар пурсишҳои дигар ба муҳимтарин масъалаҳои динӣ, хусусан дар бораи равони инсон баъд аз марг дар дунёи дигар аз дидгоҳи оини зардуштӣ ҷавоб гуфта шудааст.

Мавзӯи пурсишҳо аслан суннатист ва баъзан дар мавридҳои, ки ба зиндагии рӯзонаи зардуштиён дар асрҳои аввали қабули ислом ва муносибати онҳо бо мусулмонон марбут мешавад, вобаста ба вазъияти замон суҳан рафтааст (пурсишҳои 40,52 ва 62). Манучеҳр

1. تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، 150

2. میرفخرایی، م. دادستان دینی // تاریخ جامع ایران، ص. 293

дар посухҳои худ таъкид мекунад, ки аз таълимоти доноёни пешин ва дастури онҳо дар бораи дин огоҳ буда, аз он андешаҳо, ки аз назари ӯ мантиқитар будаанд, интихоб кардааст.

Сабки китоб, алалхусус насри муқаддимаи он насри мураккаби печида аст. Чунин ба назар мерасад, ки муаллиф пургӯй ва ба кор бурдани калимоти мураккабро меписандад. Дар насри китоб забони форсии нав (асри IX) бетаъсир набудааст. Ин китоб барои мардуми авом душвору номафҳум будааст. Муаллиф дар муқаддима менависад, ки чун ин матнҳои таълимию тафсирист, ҳатто барои донишмандон равшан нест. Дар ҳалли ин масъала Манучеҳр хонандагонро ба хондани асарҳои донишмандони пешин ҳидоят мекунад. Дар поёни китоб якчанд андарзи динӣ ва дунявӣ ҷой гирифтаст, ки аз китоби шашуми «Динкард» гирифта шудааст. Ва баъд аз он андарзҳои дигар хитоб ба беҳдинон омадааст.<sup>1</sup>

### III.2.2.4. Ривоёти паҳлавӣ

Дар нусхаҳои матни «Додистони динӣ» матне ҳамроҳ меояд, ки ба «Ривоёти паҳлавӣ» маъруф аст. Дар дастнависҳо унвоне барои ин китоб зикр нашудааст. Муҳаққиқон ба қиёс бо дигар осори паҳлавӣ ин унвонро барои матн муносиб дидаанд. Китоб муқаддима надорад. Гирдоваранда мавзӯҳоро паси ҳам оварда, ба 65 фасл тақсим кардааст. Замони таълифи китоб маълум нест. Пажӯҳандагон дар асоси ишораҳо, ки дар матн омадааст ва сабуку шеваи нигоҳи он, муътақиданд, ки дар охири асри IX ва ибтидои асри X навишта шуда бошад.

«Ривоёти паҳлавӣ» аз назари шеваи пурсишу посух ба «Додистони динӣ» шабоҳат дорад. Мухотаби асли мардуми авом ҳастанд, аммо мавзӯи фаслҳои 2, 19, 29, 30, 34 ба мӯбадон нигаронида шудааст. Мавзӯи «Ривоёти паҳлавӣ» фалсафӣ ё ҳатто худошиносӣ нест, балки як нигоҳи суннатӣ дар бораи покӣ, ростӣ, дурустӣ, корҳои неку бад ва савобу гуноҳон аст. Муаллиф дар асоси дониш ва огоҳияш аз насҳои «Авесто»-ву «Занд» сухан мегӯяд ва бо овардани достонҳои устураӣ, монанди достони Гаршосп, Гуштосп, Чамшед хонандаву шунавандаро ба иҷрои дурусти аъмоли динӣ фаро меонад. Муаллиф дар 65 фасл аз мавзӯҳои гуногуни динӣ баҳс мекунад. Масалан, фасли 1: тақвим (рӯзҳои поёни сол), фаслҳои 2 ва 19: вазъи хонае, ки касе дар он мурдааст, фасли 4: сабру бурдборӣ ва нармию дурустӣ, фасли 5: пирӣ, фаслҳои 6,7 ва 12: корҳои неку бад, фаслҳои 8, 39 ва 45: издивоҷ бо наздикон, фасли 10: ростию родӣ, фаслҳои 11, 15, 21 подафроҳи корҳои бад ва гуноҳҳои гуногун, фасли

<sup>1</sup>Мероси хаттии бостон, китоби II, ҷ. I. -Душанбе, 2014; Рипка Ян, История персидской и таджикской литературы, Москва, 1980; Диловаров М. Додистони динӣ // ЭАСТ, ҷ. I, с. 422;

تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 294-292; میرفخرایی، م. دادستان دینی // تاریخ جامع ایران، ص. 295-299. . تاوادیاء، ج. . زبان و ادبیات پهلوی. تهران، 1348.

14: куштани гӯсфанд, фасли 20: назр, фасли 31 тавба ва достони Чам, фасли 34: талок, фасли 36: достони Зардушт, фасли 42: бозаргонӣ, фасли 43: зану фарзанд, фасли 47: Зардушт ва Гуштосп, фасли 59: курбонӣ, фасли 62: андарзи Озарбоди Маҳраспандон ва ғ.<sup>1</sup>

Муаллиф аз сарчашмаи истифодакардаи худ ном намебарад. Муҳаққиқон дар муқоиса бо дигар осори паҳлавӣ ба натиҷа расидаанд, ки манбаи асосии «Ривоёти паҳлавӣ» тарҷума ва тафсири «Авесто»-ст. Аммо дар ин китоб мавзӯҳои ҳастанд, ки дар дигар осори паҳлавӣ наомадаанд ва ё ба шакли мухтасар нақл шудаанд, монанди достони Чам ва хоҳараш Чамик (ё Чамӣ) ва достони Гангдиз. Бино ба андешаи муҳаққиқон, «Ривоёти паҳлавӣ» намунае барои ривоятҳои форсӣ будааст.<sup>2</sup>

«Ривоёти паҳлавӣ» барои зардуштиёне навишта шудааст, ки дар асрҳои аввали ривочи ислом бо мусулмонон зиндагӣ мекарданд ва ба масъалаҳои ҳалгалаб рӯ ба рӯ будаанд. Ҳадафи ин китоб на танҳо расондани огоҳии амалӣ, мазҳабӣ ё худошиносӣ, балки эълму интишори имон ва масъулият дар миёни онҳо будааст. Таъкиди нависанда дар издивоҷ бо наздикон нишон медиҳад, ки рӯҳониёни зардуштӣ аз издивоҷ бо бегонагон тарс аз заволи дини худ доштаанд. Аз муҳтавои китоб ва баррасии муҳаққиқон чунин ба назар мерасад, ки мавзӯи баҳси «Ривоёти паҳлавӣ» доир ба чанд масъалаи зер аст: Оинҳои ибодию амалӣ, ростию дурустӣ, савобу гуноҳ, подош ва подофарох, хираду доноӣ ва поёни ҷаҳону рӯзи растохез. Қобили зикр аст, ки гирдоваранда зимни нақли достонҳо ва зикри панду андарз гоҳе аз ташбеҳу тамсил низ истифода кардааст, монанди фасли 7, банди 5, фасли 9 бандҳои 2 ва 3 ва фасли 25 банди 4 ва ғ.<sup>3</sup>

### III.2.2.5. Вичаркарди динӣ

«Вичаркарди динӣ» ба маънии «фатвоҳои динӣ» буда, маҷмӯае аз матнҳои гуногуни паҳлавист. Дар оғози китоб омада, ки онро «Мидевоҳ - писарамуи Зардушт» таълиф кардааст. Маҷмӯа хусусияти ривоётро дорад ва аз мавзӯҳои зер баҳс мекунад: Тавсифи баъзе аз гуноҳон ва товони онҳо, ирс, оташҳои муқаддас, афзорҳои, ки дар қорҳои динӣ истифода мешаванд, оинҳои марбут ба гузаштагон, даҳма ва устудон, оини татхир, кустӣ бастан, издивоҷ, 101 номи Яздон, панҷ рӯзи гоҳонӣ, тавзеҳоти Гавгушнасп, яке аз муфассирони «Авесто», дар бораи мушкilotи «Авесто», дуоҳои, ки дар маросими динии гуногун бояд хонда шаванд ва ғайра. Бахши асосии китоб (саҳифаҳои 21 то 49) ба зиндагиномаи Зардушт ихтисос дорад, ки маълумоти он дар дигар китобҳои паҳлавӣ, монанди «Динкард», «Зардуштнома» низ омадааст, вале айнан ба ҳеч як матни дигари паҳлавӣ монанд нест. Баъзе аз

<sup>1</sup> Мирфараҳӣ, М. روايات پهلوی // تاریخ جامع ایران، ص. 297.

<sup>2</sup> همان جا، ص. 298.

<sup>3</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 153-156.



бахшҳои он аз дигар китобҳои паҳлавӣ айнан нақл шудаанд. Аз сӯйи дигар, рисолаи «Сӣ рӯзи моҳ», ки танҳо қисмати оғозини он чоп шудааст, дар ин китоб ба тамомӣ омадааст, ки ба андешаи муҳаққиқон, арзишаш низ дар ҳамин аст.<sup>1</sup>

### Ш.2.6. Осори кашф ва пешгӯӣ

Аз осори паҳлавӣ матнҳои боқӣ мондаанд, ки дар бораи шарҳи сафарҳои рӯҳонӣ, мукошифаву пешгӯии воқеаҳо, алалхусус рӯйдодҳои поёни ҷаҳон ҳастанд. Ин шоҳи адабиёт, ки дар адабиёти миллатҳои дигар низ собиқа дорад, дар адабиёти паҳлавӣ низ нақши густарда дорад. «Ардавирофнома», «Занд Ваҳман-яшн», «Ҷомосбнома», «Ёдгори Ҷомосбӣ» ва «Омадани шоҳ Баҳроми варҷованд» аз ин шоҳи адабиёти паҳлавиянд. Ин гуна мукошифаву пешгӯихоро муҳаққиқон ба таври пароканда дар дигар осори паҳлавӣ мушоҳида намудаанд. Аз ҷумла дар «Ривоёти паҳлавӣ» (фасли 36), ки Зардушт аз Урмузд дархости ҷовидонагӣ мекунад, аммо Урмузд намепазирад, зеро дар ин сурат ногузир аст қотили Зардуштро низ ҷовидона кунад. Урмузд хиради ҳамаогохро ба Зардушт арза медорад ва Зардушт бо ёрии он чизҳои мебинад, ки вақте хиради урмуздӣ аз ӯ ҷудо мешавад, гумон мекунад, ки дар хоб будааст. Дар бораи Гуштосп низ дар «Ривоёти паҳлавӣ» чунин мукошифа ёд шудааст (фасли 47). Пажӯҳандагон бар он ақидаанд, ки қадимтарин шарҳи ин сафарҳои рӯҳонӣ ва мушоҳидаҳои ғайбӣ дар «Катибаи Картир» аст, ки дар он мӯбадонмӯбад Картир аз меъроҷи худ ва дидораш аз бихишту дӯзах суҳан мегӯяд.<sup>2</sup>

#### Ш.2.6.1. Ардовирофнома

«Ардовирофнома» ё ба қироати суннатӣ «Ардовирофнома» яке аз осори динии адабиёти паҳлавист, ки ба сабаби мавзӯи ҷолиби худ мавриди таваҷҷуҳи зиёд қарор гирифтааст. Мавзӯи «Ардовирофнома» шарҳи баёни сафари тахайюлӣ ва мушоҳидаҳои мӯбади порсо аз бихишту дӯзах аст. Вирофро ҷомеаи мӯбадон аз байни 7 кас ба сабаби дониши динӣ ва ахлоқи намунавияш фиристодаи заминиён ба он дунё интиҳоб мекунанд. Ардовироф пас аз нӯшидани май ва банг барои таскину оромиши равон аз пули Чинвад мегузарад ва бо раҳнамоии Эзад-Суруш ва Озар шодиҳои бихишт ва ранҷу азоби дӯзахро мебинад. Баъд аз ҳафт шабонарӯз рӯҳи Ардовироф аз ин сафари рӯҳонӣ ба замин бармегардад, то он чиро, ки дидааст, ба дастурони динӣ шарҳ диҳад.

Дар асоси суҳанронии Вироф «Ардовирофнома» ба қисмҳои (фрагардҳо) ҷудо гардидааст. Аз 101 фрагард (фасл)-и

<sup>1</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات، ص. 153. آموزگار، ژ. و تفضلی، ا. اسطوره زندگی زردست. تهران، 1370. ; عربان، س. متون پهلوی، تهران، 1371. تاریخ جامع ایران، ص. 300. ; میرفخرایی، م. وچرکرد دینی//  
<sup>2</sup> میرفخرایی، م. کشف و شهود// تاریخ جامع ایران، ص. 300

«Ардовирофнома» се фрагарди аввал перомуни чигунагии сурат гирифтани сафари Вироф ба чаҳони дигар аст. Дар ҳар як фрагард аз гуноҳе ва подошу ҷазои он сухан рафтааст. Ғарази асли аз ин сафари рӯҳонӣ таъкид ба анҷом додани оинҳои дини зардуштӣ пас аз даврони сосонист, зеро дар ин давра бо ривочи дини ислом оини зардуштӣ дар ҳоли завоҷ қарор дошт. Мӯбадони зардуштӣ саъй менамуданд бо тарсондани мардум аз ранҷҳои дӯзах расму русуми дини зардуштиро дар байни онҳо зинда нигоҳ доранд. Озмуне, ки Озарбоди Маҳраспандон дар замони Шопури дувум бо рехтани оҳани ғудохта бар синаи хеш анҷом дод, то ҳаққонияти дини зардуштиро исбот намояд, дар ин китоб такрор мешавад. Ин бор рӯҳониён ва пешвоёни дини зардуштӣ дар оташқадаи Озарфарнбағ, ки дар Шероз аст, гирд меоянд ва аз миёни ҳафт марди рӯҳонӣ марде ба номи Ардовирофро барои сафар ба чаҳони дигар интихоб мекунанд, то бо шарҳи он чи дидааст, шакку шубҳаи пайравони ин динро дар иҷрои маросими динӣ аз байн бибарад. Дар матн ба унвони тафсир афзуда шудааст, ки Вироф ҳамон мӯбади машҳури замони Анӯшервон -Виҳи Шопур (Биҳи Шопур) аст ва бино ба гуфтаи М. Мирфаҳрой, аз ин роҳ хостаанд ба шахсияти рӯҳонии маъруф пайванд диҳанд.<sup>1</sup>

Мазмуни фаслҳои 4 то охири фасли 19 ба шарҳи ин сафари рӯҳонӣ аз забони Вироф ва ба қалами дабири донову фарзона баён шудааст. Фасли чаҳорум то фасли понздаҳум шарҳи сафари Вироф ба чаҳони равшанӣ ва некист. Ӯ равони гузаштагонӣ некӯкорро дар се шаби аввал мебинад ва таҷаллии кирдорашонро дар пайкари канизӣ зебо мушоҳида мекунад. Аз табақоти биҳишт ҷойгоҳи амшоспандон ва дигар парҳезкорон, некӣ дар биҳишт, бадӣ дар дӯзах ва ҳамастагон (аъроф) огоҳ мешавад, ғараҳари Зардушт, Гуштосп, Ҷомосп ва писарони Зардуштро мебинад (фаслҳои 4-12).

Фасли 13 маҳсуси занони порсост, ки дар эҳтиром гузоштан ба шавҳар ва анҷоми корҳои динӣ мумтоз будаанд. Фасли 16 то то поёни фасли 99 дар бораи дӯзах, гуноҳкорону подафроҳи онҳост, ки дар он гуноҳони занон ҷойи маҳсус дорад. Дар ин бахш ба ғайр аз гуноҳҳои ахлоқӣ ва умумӣ, ба гуноҳҳои ишора мешавад, ки аз иҷро накардани маросими динӣ ва оинҳои шаръӣ сар задаанд ва ҳар як подафроҳи маҳсуси худро доранд, монанди гуноҳи ғияр кардан бар мурдагон, бадзабонии занон, зино, дурӯғгӯӣ, ғайбат, ҷодугарӣ, камфурӯшӣ, фиреб дар муомила, паймоншиканӣ, куштани ҷорпоёни ғоидаовар, озори ҳайвонҳо, ришвахорӣ, таҷовуз ба мулки дигарон, шир надодан ба кӯдак, ҳасодат, фармон набурдан аз шавҳар, сикти чанин, ғоҳишагарӣ ва ғайра. Дар фасли 100 Вироф Аҳриман ва

---

<sup>1</sup>Мирфараҳрой, М. Ардаубиразнома // Тарих Ҷамеаи Иран, 302.

бадиҳои вайро мебинад, бо Урмузд вомехӯрад ва суханони ӯро ба унвони андарз ба мардум мерасонад ва монанди инҳо.<sup>1</sup>

Бино ба гуфтаи М. Диловаров, тасаввуроти эсхатологӣ (ондунӣ), ки дар ин асар омадааст, аз масъалаҳои марказии дини зардуштӣ буда, ба бисёр осори адабии динии Шарқи Наздик ва Марказӣ (махсусан ба адабиёти дини ислом) таъсир расондааст, масалан, меъроҷи Муҳаммад пайғамбар (с). Суҷаи «Ардовирофнома» ба «Мазҳакаи илоҳӣ»-и Данте ва «Рисолату-л-ғуфрон»-и Абулғалои Маарӣ монанд аст.<sup>2</sup> Баъзе донишмандон монандии мавзӯи ин асарро бо «Мазҳакаи илоҳӣ»-и Данте таворуди адабӣ донистаанд.<sup>3</sup> Яке аз монандиҳои «Ардовирофнома» ва «Мазҳакаи илоҳӣ» дар он аст, ки дар ҳар ду асар тасвири дӯзах нисбат ба биҳишт муфассалтар аст.

«Ардовирофнома» бо вучуди асари динӣ буданаш дорои хусусиятҳои бадеӣ низ мебошад. Насри асар содаву равон аст, аммо ба сабаби якнавохтии мазмун ва такрори мазмунҳо арзиши адабияш зиёд нест. Дар он унсурҳои адабиёти шифоҳӣ ва анъанаҳои адабиёти хаттӣ ба ҳам омехта омадаанд. Тамсилҳо, воситаҳои тасвири бадеӣ, монологу диалогҳо, иборалардозҳои мӯҷаз аз арзиши бадеии он шаҳодат медиҳанд. Тозагии асар дар муҳтавои он, яъне, ниёз ба итминон дар бораи судмандии иҷроӣ маросими динӣ ва фармудаҳои шаръӣ нуҳуфта аст. Шояд аз ҳамин сабаб назди зардуштиён маҳбубият касб карда, ба тавре ки ҳам ба позанд таҳрир шуда ва шумори зиёди таҳрири форсию гучаротӣ аз он падид омадааст. Ҳамчунин, дар давраҳои баъдтар ба назм даромадааст. Умуман, «Ардовирофнома» бо тарзи баёни содаву мӯҷаз ва мукамал будани таркибу сохтор нисбат ба дигар осори адабиёти паҳлавӣ комилтар аст.<sup>4</sup>

Қадимтарин нусхаи нисбатан мукаммали «Ардовирофнома» матни позандии он мебошад. Вале аз ҷиҳати мазмуну мундариҷа нусхаи паҳлавӣ «Ардовирофнома», ки дутоаш то имрӯз боқӣ мондааст, аз нусхаи форсии дариӣ он ғанитар аст. Дар матни паҳлавӣ замони ба вуқӯъ пайвастанӣ рӯйдодҳои ин китоб – давраи Эронро забт кардани Искандари Мақдунӣ муқаррар гардидааст. Пас аз он ки Искандар нусхаҳои «Авесто»-ро несту нобуд кард, дар байни зардуштиён оид ба дину мазҳаб шубҳа ба миён омад. Мувофиқи нусхаи позандӣ ривояти мазкур ба давраи ҳукмронии шоҳ Виштосп тааллуқ доштааст. Асли ин асар, ба гуфтаи муҳаққиқон, хеле қадимист, зеро номи Вироф дар «Авесто» омадааст, аммо маълум нест, ки бори аввал дар чӣ замоне таҳрир шудааст. Нусхаи тарҷумаи форсии «Ардовирофнома» замони ин ривоятро ба давраи Ардашери Бобакон мансуб медонад. Ин нусхаест, ки дар нимаи дувуми асри XIII Зардушт Баҳроми Пажду ба назм

<sup>1</sup> ʔзӣнио, Флип. ардауиравф наме. ʔзҗме ʔале. ʔмузҗар, теһран, 1372.

<sup>2</sup> Диловаров М. Ардавирофнома // ЭМТ, ҷ. 1, с. 537.

<sup>3</sup> ʔтауадиа җеһатҗир. ʔбан ва адбиат пеһлуӣ. теһран, 1348.

<sup>4</sup> Мирифхраӣ, М. ардауиравф наме // тарих җаме иран, с. 303.

даровардааст. Тарзи баён дар «Ардовирофнома»-и манзум сода аст. Калимаҳои арабӣ дар он хеле каманд. Дар он аз истилоҳоти динӣ ва нучумии маъмул дар забони пахлави истифода шудааст. Ба ғайр аз нухаи манзуми «Ардовирофнома»-и Пажду, чанде аз муаллифони дигар, аз ҷумла Анӯшервон писари Марзбон «Ардовирофнома»-ро ба назм даровардаанд. «Ардовирофнома» ба забонҳои санскрит, гучаротӣ, англисӣ тарҷума шудааст.<sup>1</sup>

### Ш.2.6.2. Занд Ваҳман-яси

«Занд Ваҳман-яси» (тафсири «Баҳман-яси») аз зумраи осорест, ки дар онҳо пешгӯиҳо дар бораи воқеаҳои марбут ба гузашта ва оянда сухан меравад. Ин гуна осор ба адабиёти кашфу шуҳуд ва пешгӯӣ дохил мешаванд. Мавзӯи «Занд Ваҳман-яси» ҳамон тавре ки аз номаш бармеояд ва дар матни китоб ҳам тавзеҳ шуда, аз тарҷумаву тафсир (Занд)-и «Студгар (Судгар)-наск» ва «Ваҳман (Баҳман)-яси»-и «Авесто» гирифта шудааст. Дар суннати зардуштӣ пешгӯӣ ба зэди Баҳман марбут аст, ки ба вобастагии ӯ бо хираду доноӣ ва илҳом дар матнҳои осори форсии миёна таъкид шудааст. Дар оғози китоб омада, ки Урмузд чаҳор давраи чаҳонро, ки намоди ҳар кадом яке аз филиззот аст, дар хоб ба Зардушт нишон дод: заррин, симин, пӯлодин ва давраи омехтагии оҳан бо филиззоти дигар. Даврони аввал мусодиф бо подшоҳии Гуштоспу зуҳури Зардушт, давраи дувум бо подшоҳии Ардашери Каёнӣ (Баҳмани Ардашер) ва давраи сеум мусодиф бо подшоҳии Хусрави Анӯшервон аст. Даврони чаҳорум давраи ҳукмронии девони жӯлидамӯӣи хашмнаҷод аст, ки мусодиф бо поёни ҳазораи Зардушт ба шумор омадааст.<sup>2</sup>

Дар фасли дувум аз чанд мӯбад ёд мешавад, ки Анӯшервон аз он хоста, то ба ҳифзи «Авесто» саъй намоянд, онро аз душмани пайравони Маздак эмин нигоҳ доранд ва тавсия медиҳад, ки «Яси»-ро ҳамчун роз пинҳон доранд ва танҳо ба фарзандони худ биёмӯзонанд. Фасли сеум такрори фасли аввал, аммо бо тафсили бештар ва ба ҷойи чаҳор давраи чаҳон, ҳафт давраи таърихӣ меояд, ки ҳар давра ба шоҳони каёнӣю сосонӣ ва ашконӣ (Балоши аввал) нисбат дорад ва давраи охир ба девони жӯлидамӯӣи хашмтухма марбут аст. Фасли чаҳорум дар баёни вижагиҳои ҳазораи Зардушт, яъне, давраи оҳани омехта аст, ки дар он аз тохтутозҳои бегонагон ва пайомадҳои нохуши онҳо сухан меравад. Фасли панҷум супориши Урмузд ба зардуштиён дар бораи иҷрои аъмоли динӣ дар ин замони душвор аст. Фасли шашум дар бораи ҳодисаҳои бадест, ки рӯй

<sup>1</sup>Мирфхраيي، م. ارداویرازنامه // تاريخ جامع ايران، ص. 301-303، غفیی، رحيم. ارداویراف نامه. مشهد، 1342. ; آموزگار، ژاله. ادبيات زردشتی به زبان فارسی. مجلة دانشکده ادبيات تهران، 1348، س. 18، ش. 1-2، ص. 172-179. ; Ян Рипка, История персидской и 1348 تهران، پهلوی. ادبيات پهلوی. تهران، 1348 تاجیکسکوی літературы; Диловаров М. Ардовирофнома. –С.537 تفضلی. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 167-169.

<sup>2</sup>ميرفخرايي، م. زند و همن-يسن // تاريخ جامع ايران، ص. 304.

хоханд дод. Фасли ҳафтум ва ҳаштум пешгӯӣ дар бораи Ҳушидар (ё Ушидар) – нахустин наҷотбахши дини зардуштӣ, омадани Бахроми варҷованд, намоди эзади ҷангу пирӯзӣ ва Пашутан - писари Гуштосп ва нақши ӯ дар бозсозии ҷаҳон аст. Фасли нухум дар бораи Ҳушидармоҳ, раҳо шудани Заҳҳок аз банд ва кушта шудани ӯ ба дасти Гаршосп, зуҳури Сушиёнс, охирин наҷотбахши дини зардуштӣ ва рӯйдодҳои замони онҳост, ки бо он китоб ба охир мерасад.<sup>1</sup>

Бино ба андешаи М. Бойс, суннати пешгӯии «Авесто», ҳадди ақал аз асри дувуми пеш аз мелод таъсири бисёре ба навиштаҳои мукошифайи юнонӣ ва юнонӣ-мисрӣ ба ҷой гузоштааст. Дар Эрон ин суннат ба шакли зинда ҳифз шуд ва бо гузашти замон ин пешгӯиҳо ба ҳақиқат пайваст, ба тавре ки бо инқирози силсилаи сосонӣ даврони оҳани баромехта бо тасаллутӣ арабҳо бар Эрон татбиқ шуд.<sup>2</sup> Аз «Занд Ваҳман-ясн», бино ба таъкиди Аҳмади Тафаззулӣ, як таҳрири позанд ва ду таҳрири порсӣ, яке мансур ва дигаре манзум боқӣ мондааст. Таҳрири порсии мансур ба қалами Рустам писари Исфандёр дар соли 866 яздгирдӣ (баробар ба 1496 мелодӣ) аз рӯйи матни позанди дастнависи Ҷамшед писари Исфандёр писари Рустам дар шаҳри Язд анҷом ёфтааст.<sup>3</sup>

### Ш.2.6.3. Пешгӯиҳои Ҷомосп

Ҷомосп дар адабиёти бостони мо рамз, намоди доноию хирадмандист, ки намунаи он баъдан дар симои Бузургмехри ҳаким ва Лукмони ҳаким идома ёфтааст. Номи Ҷомосп дар «Ҷохон» («Ясн»-и 46 банди 17, «Ясн»-и 49 банди 9 ва «Ясн»-и 51 банди 18)-и «Авесто» ва дар матнҳои зиёди паҳлавӣ борҳо омадааст. Ӯ баъд аз Гуштосп дувумин касест, ки ба Зардушт имон овард. Ҷомосп домоди Зардушт, вазири Гуштосп, бародари Фрашуштар ва аз хонадони Ҳвува (хонадони ҳамсари Зардушт) аст. Ҷомосп дар суннати зардуштӣ пешгӯии бузургест, ки аз ҳама огоҳиҳои эзадӣ бархурдор аст. Тавсифе аз он чи ки хиради абаринсонии ӯро ошкор месозад, дар «Ёдгори Зарирон» дар ҷанги мазҳабии эронӣён зидди хиюнон бо роҳбарии Арҷосп омадааст (бандҳои 35-38), пешгӯиҳои ӯро бо он чи дар «Занд Ваҳман-ясн» омада, шабоҳатҳо ва ихтилофоте дорад. Аз Ҷомоспи ҳакими доно илова бар «Ёдгори Зарирон» пешгӯиҳои боқӣ монда, ки баъзе аз онҳо дар «Ҷомоспнома» ва қисмате дар «Ёдгори Ҷомоспӣ» дарҷ ёфтаанд.<sup>4</sup>

### Ш.2.6.4. Ҷомоспнома

Қисмате аз матни паҳлавӣ «Ҷомоспнома» дар се фасл боқӣ мондааст. Фасли якум, ки овонависи порсии зардуштӣ ва тарҷумаи

1. ارشد محصل ، م. زند و همن-یسن. تهران، 1370

2. نقل از میرفخرایی، م. زند و همن-یسن، ص. 306

3. تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام. ص. 172

4. تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 170

порсӣ дорад, ба шакли пурсишу посух миёни Гуштоспу Чомосп дар бораи поёни ҳазораи Зардушт ва ҳодисаҳоест, ки бояд воқеъ шаванд. Гуштосп аз Чомосп мепурсад, ки ин дини пок чанд сол ривоҷ дорад ва пас аз он чӣ давра фаро мерасад? Чомосп ҷавоб медиҳад, ки ин дин як ҳазор сол ривоҷ хоҳад дошт. Сипас, мардум ба паймоншиканӣ рӯй меоранд, ба якдигар кину ҳасад меварзанд ва ба сабаби аз дин дур шудан ба бадбахтӣ ва офатҳои табиӣ дучор мешаванд. Сармову гармои шадид, хушксолӣ, бемориҳои гуногун, ҷанг, тасаллути бегонагон ва ғайриэронӣ бар эронӣ рӯй медиҳад ва кишвар дучори ошуфтагию парешонӣ мешавад. Робитаи хонаводагӣ суғур мешавад, хурдон калонсолонро эҳтиром намекунанд, кех (хурд) аз мех (бузург) пайдо нест ва мардумон ҳампушти надоранд. Дар он замон мардуми Эроншаҳр дучори ноумедӣ мешаванд ва хурду бузург дар пайи чора мегарданд. Саранҷом Эзадмехр ба воситаи марде ба шоҳи Падишхоргар (Табаристон) паём мефиристад ва шоҳ бо ёрии ҳамон мард ба ҷанги бегонагон меравад ва бар онҳо пирӯз мешавад. Сипас, ба фармони Урмузд Эзад Суруш ва Нарюсанг (nairyosang), Пашутан, писари Гуштоспро аз Гангдиз бармеангезад. Пашутан бо 150 шогирд, ки ҷомаи сиёҳ доранд, дирафш дар даст, барои ёрии дин то Порс меояд, оташро яшт мекунад ва ба он зухр (пешкаш ё нисорест, ки ба манзури баракатбахшӣ ба оташ ё об мерезанд) медиҳад. Гунаҳкоронро ин гуна нобуд месозанд, ки дар зимистони сард барги дарахтон бихушқад. Он гоҳ «гурги замона» поён меёбад ва «меши замона» оғоз мешавад ва Хушидар, писари Зардушт барои дин зухур мекунад. Даврони бадӣ хотима меёбад ва шодию хуррамӣ фаро мерасад.<sup>1</sup>

Дар фасли дувум Гуштосп дар бораи офатҳои гуногун, монанди хатар, ниёз, барфи сиёҳ, жолаи (тагарг)-и сурх, корзори бузург ва офатҳои, ки мардум ба онҳо дучор мешаванд, аз Чомосп мепурсад. Чомосп теъдоди офатҳо ва номи фармонравоёноро, ки ин офатҳо дар даврони онҳо рӯй медиҳад, бармешуморад. Фасли сеум гуфтугӯ миёни Урмузд ва Зардушт дар бораи растохез ва нишонаҳои он аст, ки бино ба гуфтаи Мирфаҳроӣ, нақли фасли 34-и «Бундаҳишн» аст.<sup>2</sup>

Дар фасли чаҳорум Зардушт дар бораи равони даргузаштагон мепурсад. Баъд аз ин фасл се қитъаи кӯтоҳ меояд: Қитъаи якум дар бораи нишонаҳоест, ки ҳангоми зуҳури Хушидар зоҳир мешаванд (монанди поёни фасли аввал), аз ҷумла он ки шаб аз рӯз равшантар бошад, Хафтуринг (ба маънии «дорои ҳафт нишон», Дубби акбар, Банотуннаъш) ҷояшро раҳо кунад ва ба сӯйи шарқ гардад, фарқи тобистон аз зимистон мумкин набошад. Қитъаи дувум, ки баргардони порсӣ дорад, ибтидои он афтада, дар бораи тавоноии Чомосп дар пешгӯист. Қитъаи сеум, ки охираш аз байн рафта, посух ба суоли Гуштосп аст, ки чанд сол подшоҳӣ хоҳад кард, чӣ корҳои неке бояд анҷом диҳад ва вазифаи ӯ чист? Чомосп дар қолаби панду андарз

1. ميرفخرايى، م. جاماسينامه/تاريخ جامع ايران، ص 307.

2. ميرفخرايى، م. جاماسينامه/تاريخ جامع ايران، ص 308.

ба ӯ посух медиҳад, ки бояд ба кори нек саъй намояд ва агар гуноҳе аз ӯ сар задааст, бояд тавба кунад, зеро ҳама мардум бараҳна ба ин ҷаҳон оянд ва бараҳна бояд бираванд ва ҳеч чизро бо худ набаранд, чун қуниши нек. Мирфахроӣ таъкид мекунад, ки ин қитъа ривояти позанд ва тарҷумаи порсӣ дорад.<sup>1</sup>

Бино ба андешаи Э. Бенвенист, ин асар ба шеъри ҳаштхичой, ба сабки ашъори «Авесто» суруда шуда будааст. Донишманди мазкур барои бозсозии он ба сурати шеър тағйироте дар матн даровардааст. Аммо Аҳмади Тафаззулӣ бар он аст, ки муқоисаи ин матн бо шеърҳои дигари паҳлавӣ назари Бенвенистро таъйид намекунад ва аз ин муқоиса ба натиҷа мерасад, ки матни кунунии асар насрест, ки асли он ба шеър буда ва забони шеърии он аз ин ҷиҳат аст.<sup>2</sup>

### III.2.6.5. Ёдгори Ҷомоспӣ

“Ёдгори Ҷомоспӣ” низ аз ҷумлаи осори адабиёти паҳлавист, ки бино ба таъкиди пажӯҳандагон, асли паҳлавии он аз байн рафта, аммо матни комил ба позанд, бо иштибоҳоти бисёр ва ривояти порсӣ (бо овонависӣ ба хатти арабӣ), бо тафсириҳои форсӣ гучаротӣ ба ҷой мондааст, ки метавон аз рӯи онҳо асли паҳлавиро бозсозӣ кард. “Ёдгори Ҷомоспӣ” монанди “Ҷомоспнома” ба шакли пурсишу посух танзим ва аз манбаъҳои гуногун гирдоварӣ шудааст. Пурсишҳо на танҳо ба таърихи Эрон, балки мавзӯҳои таърихи Афсонаӣ, таълимоти аслии зардуштӣ, ҷаҳоншиносӣ ва растохезро низ дар бар мегирад.<sup>3</sup> Мухотаби муаллиф оммаи мардум аст ва шояд аз ин сабаб ҷаззобияти мардумписандона дорад. Муҳаққиқон бар онанд, ки ин китоб аз манбаъҳои гуногун гирдоварӣ шудааст. Фасли аввал бо тавсифе аз хирадмандии Ҷомосп оғоз мешавад. Фасли дувум посух ба ин савол аст: “Чист, ки ҳамеша буда, ҳамеша ҳаст ва ҳамеша хоҳад буд?” Фасли сеюм посух ба саволи “Урмузд аз миёни офаридагони минӯӣ ва гетӣ кадом якро нахуст офаридааст?” мебошад. Дар ин ҷо офариниши шаш амшоспанд ба ҷароғҳое монанд шудааст, ки ҳар як бо дигаре равшан мешавад ва ба ин тариқ ҳеч кадом хомӯш намешаванд (бандҳои 6-7). Фасли чаҳорум феҳристи подшоҳони Эрон аз Каюмарс то Гуштосп аст. Фасли панҷум дар бораи мардумони шаш кишвари ҷаҳон, ба ғайр аз Эронвич аст. Фаслҳои шашум то ҳаштум дар бораи мардумонест, ки дар Албурз, Гангдиз, Ҳиндустон, Чин, Туркистон, Тоziён ва Барбаристон зиндагӣ мекунанд. Фасли нухум дар бораи мардуми ачибулхилқа аст, монанди рӯдапо, чашмбарсина, гӯшбарсина ва паканаҳо. Фасли даҳум дар бораи мардумони Сейлон ва онҳое, ки дар дарё зиндагӣ

<sup>1</sup> همان جا، همان صفحه

<sup>2</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 17-173

<sup>3</sup> Messina G. Libroapoca littico persiana: Ayakar IZamaspik.-Roma.1939; نقل از تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص.174.

мекунанд. Фасли ёздаҳум дар бораи ин ки чаро мардуми бад офарида шуданд, ҳол он ки Урмузд медонист, ки онҳо ба дӯзах хоҳанд рафт? Фасли дувоздаҳум дар бораи сокинони Мозандарон ва Туркистон аст. Фасли сездрахум дар бораи вижагии пешгӯиҳои Ҷомосп аст. Фасли чаҳордахум дар бораи муддати фармонравоии Гуштосп ва корҳои хубу вазифаҳои ӯст. Дар фасли понздаҳум фехристе аз фармонравоёни Эрон пас аз Гуштосп то тасаллути арабҳо ва муддати ҳукмронии онҳо ироа шудааст. Дар ин фасл (бандҳои 5 ва 6) гуфта шудааст, ки пас аз поён ёфтани ҳукумати Искандар ва бародарон, портиён таҷдиди ҳаёт мекунанд ва дубора ба комёбӣ хоҳанд расид.<sup>1</sup> Ин андеша хилофи идеологияи Сосониён аст, зеро онҳо Ашкониёнро душман медонистанд ва сабӣ намудаанд, ки нақши ин дудмонро дар эҳёи тамаддуни эронӣ ночиз нишон диҳанд. Мирфаҳроӣ бар ин андеша аст, ки чунин назар баръакси таблиғоти маъмули сосонӣ дар бораи бадихои даврони ашкониён ва натиҷа мегирад, ки баъзе аз мавзӯҳои китоб аз давраи Ашкониён интиқол ёфтааст. Муҳаққиқ ин назарашро бо ин нукта таквият медиҳад, ки Ҷомосп ҳама ҷо бо унвони портии «бедахш» ёд мешавад, ки дар аввалҳои давраи сосонӣ болотарин мақом баъд аз шоҳ буд, аммо баъдҳо аҳаммияти худро аз даст додааст.<sup>2</sup> Фасли шонздаҳум, ки ба паҳлавӣ низ ҳифз шудааст, ҷавоби ин пурсиш аст, ки дини зардуштӣ то чанд сол ривоч дорад ва пас аз он чӣ давроне фаро мерасад? Ин фасл аз фасли аввали «Ҷомоспнома» гирифта шудааст. Дар ин асар низ монанди «Занд Ваҳман-яси» пешгӯиҳо пас аз ҳамлаи Искандар бо пешгӯиҳои баъдӣ дар бораи заволи арабҳо, туркҳо ва румиҳо дар ҳам омехтааст. Фасли ҳабдахум, ки танҳо ба позанд мавҷуд аст, ба шарҳи пешгӯиҳои Ҷомосп дар бораи рӯйдодҳои ҳазораи Ушедар, Ушедармоҳ ва воқеаҳои охири ҷаҳон бахшида шудааст. Мазмуни ду фасли охирини рисола ба фасли чилуҳаштуми «Ривояти паҳлавӣ» ва фасли сиюҷаҳоруми «Ҷузидахои Зодиспарам» шабоҳат дорад.

Муҳсини Абулқосимӣ дар китоби «Шеър дар Эрони пеш аз ислом» қитъае аз ин матнро аз лиҳози ҳиҷоӣ баррасӣ карда, дар идома овонависӣ, тарҷумаи форсӣ ва шарҳи порас аз вожаҳои онро овардааст. «Ёдгори Ҷомоспӣ» мавриди таваҷҷуҳи порсийи Ҳинд қарор гирифта, тарҷумаи гучаротии он ҳамчун ганҷинаи гаронбаҳо маҳфуз дошта шудааст.<sup>3</sup>

---

<sup>1</sup>Мирфхраӣ, м. یادگار جاماسبی//تاریخ جامع ایران، ص.309

<sup>2</sup>کتاب ذکر شده، ص.310

300 ; تفضلی. تاریخ ادبیات.ص.174-176; ابوالقاسمی، محسن. شعر در ایران پیش از اسلام.تهران، 1383<sup>3</sup>  
310-308. م. یادگار جاماسبی//تاریخ جامع ایران، ص.308-310  
этюды. -СПб., 1909; Чунакова О. М. Изведать дороги и пути праведных. Пехлевийские назидательные тексты. Введение, транскрипция текстов, перевод, комментарий и глоссарий.- Москва, 1991; Чунакова О. М. Пехлевийский словарь зороастрийских терминов, мифических персонажей и мифологических символов.- СПб., 2004; Боголюбов М. Н. Труды по иранскому языкознанию: избранное.- Москва, 2012.



### III.2.6.6. Бахроми варчованд

Мураттиб ё худ веростори ин матн ба он унвони «Дар бораи омадани Шоҳ Бахроми варчованд» додааст. Варчованд ё варзованд ба маънии соҳибқудрати муъҷизаомез, соҳиби муъҷиза аст. Зухури Бахроми варчованд дар поёни ҷаҳон ба сурати манзумаи муқаффоӣ «он» дар ҳудуди 14 байт пешгӯӣ шудааст. Байтҳо ва ҳатто мисраъҳо бо «он» хатм мешаванд. Умед ба наҷот ва раҳой бо воситаи Бахроми варчованд дар фасли ҳаштуми «Занд Ваҳман-яси» низ омадааст. Дар оғози манзума аз ҳамлаи арабҳо, ғорати молу милк, дороии мардум ва тақсими он байни сарварони араб, кушта шудани подшоҳ, рабудани подшоҳӣ аз Хусрав, на ба ҳунару мардӣ, балки ба афсӯсу ришханд, ҳоли табоҳи дини зардуштӣ ва вазъи ҷизя ишора шудааст. Дар охир мужда дода мешавад, ки Бахроми варчованд аз хонадони Каён дар поёни ҷаҳон хоҳад омад ва аз арабҳо кин хоҳад гирифт. Аз муҳтавои манзума бармеояд, ки он пас аз ислом тасниф шудааст ва таъсири забони форсӣ дар вай дида мешавад.<sup>1</sup>

### III.2.6. Осори фалсафӣ ва каломӣ

Бино ба гуфтаи муҳаққиқони адабиёти бостон, осори фалсафӣ ва каломии бозмонда ба забони форсии миёна натиҷаи ҳамбастагии андешаҳои эронӣ бо фалсафаи юнонӣ ҳастанд, ки дар шинохти адабиёти ин даврон аҳаммияти бузург доранд. Ошноии эронӣ бо забон ва фарҳанги юнонӣ аз давраи Ҳахоманишиён, алалхусус баъд аз забти Эрон аз тарафи Искандари Мақдунӣ шурӯъ мешавад ва ҳатто Ардашери Бобакон дар катибаи Нақши Рустам забони юнониро дар баробари забони паҳлавӣ ба қор бурдааст. Шоҳони Сосонӣ аз ибтидо василаҳои ошноии эронӣро бо илмҳои гуногун фароҳам карданд. Ибни Надим мегӯяд, ки Ардашер барои ҷамъоварии китобҳо аз Ҳинду Рум ва ҷустуҷӯи бақоҳои осоре, ки дар Ироқ монда буд, қасон ба он ноҳиятҳо фиристод ва он чи пароканда буд, гирд овард. Шопур низ ин қорро идома дод, ҷунон ки ҳамаи ин китобҳо ба паҳлавӣ тарҷума шуд. Масъудӣ менависад, ки рӯҳонии машҳури замони Ардашери Бобакон -Тансар бо мазҳаб ва афкори Сукроту Афлотун ошноӣ доштааст.<sup>2</sup>

Нуфузи илмҳои юнонӣ дар Эрон, бино ба гуфтаи муҳаққиқон, бештар ҳамроҳ бо ривочи дини масеҳӣ дар подшоҳии Сосонӣ буд ва дар давраи Анӯшервон ба ҳадди қамоли худ расид. Муаллифони сарчашмаҳои асримиёнагӣ хабар медиҳанд, ки Анӯшервон бо донишмандон бештар менишаст ва онҳоро, чи худро чи бегона, гиромӣ

---

1. اتقضى. تاريخ ادبيات. ص 311; ميرفخرایی، م. بهرام ورجاوند//تاريخ جامع ايران؛ ص. 176-177  
2. صفاء، ذبيح الله. تاريخ ادبيات در ايران. ج. 1، تهران، 1374، ص. 17.

медошт. Ба адабиёту фалсафаи юнонию румӣ тавачҷух дошт ва ба дастури ӯ китобҳои зиёде, аз ҷумла рисолаҳои Афлотуну Арасту ба паҳлавӣ тарҷума шуданд. Дар он замон фалсафаи афлотунӣ дар Рум ба ҳадди камол расида буд ва императори Рум бар асари ихтилофоти мазҳабӣ мактаби фалсафии Афина («Дабистони Афина») -ро баст ва файласуфонро таъбид кард. Аз он ҷумла ҳафт тан аз бехтарин файласуфон ва донишмандони Рум, монанди Симплисиюс (Simplicius) ва Домосиюс (Damascius) ба хидмати Нӯшервон омаданд ва ба даргоҳи ӯ паноҳ бурданд. Нӯшервон онҳоро эҳтиром намуда, аз онҳо барои нашр ва тарҷумаи китобҳои илмӣ истифода кард. Ин донишмандон чандин китоб дар фалсафа, мантиқ ва ғайра таълиф карданд, ки ба паҳлавӣ тарҷума шуд. Хусрави Анӯшервон бо баъзе аз ин файласуфон, аз ҷумла Прискиёниюс (Priscianus) мувоҳидаи илмӣ дошта, аз ӯ пурсишҳои намудааст. Прискиёниюс дар посух ба ин пурсишҳо китобе бо унвони «Ҳалли масоиле дар бораи мушкilotи Хусрав - подшоҳи Эрон» навишта, ки тарҷумаи латинии он боқӣ мондааст.<sup>1</sup> Ҳамчунин, Нӯшервон донишмандони зиёдеро аз Юнону Ҳинд ва дигар мамлакатҳо ба Эрон ҷалб кард ва онҳоро ба тарҷумаву нашри китобҳои илмӣ водошт. Илова бар ин, иддае аз донишмандонро ба мамлакатҳои дигар фирисод, то китобҳои илмиро ба Эрон биёваранд ва онҳоро ба паҳлавӣ тарҷумаву нашр намуд. Чунончи, Бурзуяи табиб китоби «Калилаву Димна» ва китобҳои дигари санскритро аз Ҳинд ба Эрон овард ва он рисолаҳои илмию адабӣ ба паҳлавӣ тарҷума шуданд. Бино ба таъкиди муаррихон, шоҳ худ дар маҷлисҳои илмӣ иштирок намуда, дар ҳалли масъалаҳои илмӣ бо донишмандон баҳсу мунозира мекардааст. Яке аз ҳақимони юнонии ба дарбори ӯ паноҳҷуста китобе дар бораи раваншиносӣ ва хоб барояш навишта, ки тарҷумаи латинии он боқӣ мондааст. Ҷурҷӣ Зайдон - муаллифи «Таърихи тамаддуни исломӣ» менависад, ки Анӯшервон дар масъалаҳои илмӣ ба андозае маҳорат ёфта буд, ки ҳукамои юнонӣ вайро шогирди Афлотун тасаввур мекардаанд. Таърихнигори юнонӣ Агосиёс (Agathias) бо тааҷҷуб менависад, ки чӣ гуна Анӯшервон бо он ҳама гирифториҳои сиёсӣ ва низомӣ метавонист ба улуми юнонӣ тавачҷух дошта бошад ва онҳоро ба забони ибтидоӣ ва ҳашин (манзураш забони паҳлавист) дарёбад? Ин юнонии мутаассиб бо вучуди изҳори душманӣ бо Анӯшервон эътироф мекунад, ки вай дӯстдори осори Арасту ва Афлотун будааст.<sup>2</sup> Яке аз исавиёни эронӣ бо номи Павлуси Эронӣ (Paulus Persa) - раиси ҳавзаи эронии насибӣ китобе дар бораи мантиқи Арасту ба сурёнӣ барои Анӯшервон навишта, ки дар он нисбат ба исботи вучуди вочибу тавҳид ва соири назарҳои файласуфон ба бартариҳои равиши ҳақимон бар равиши аҳли дин ишора кардааст.<sup>3</sup>

<sup>1</sup>Мирфخرایی، م. ادبیات فارسی میانه//تاریخ جامع ایران؛ص.314

<sup>2</sup>همان منبع،ص.315.

<sup>3</sup>تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام. ص. 160

Хулоса, мардуми эронитабор дар он даврон аз андешаву назариёти фалсафӣ ва илмҳои роиҷи он замон монанди тиб, риёзиёт ва нучум огоҳии комил доштаанд, ки дар китобҳои паҳлавӣ, аз ҷумла «Додистони динӣ», «Динкард», «Гузидаҳои Зодиспарам» ва «Шканд гумоник визор» инъикос ёфтааст.

### Ш.2.6.1. Шканд гумоник визор

«Шканд гумоник визор» ба маънии гузориш ё худ шарҳи азбайнбарандаи гумону шубҳаҳост, ки Мардонфаррух писари Урмузддод ном рӯҳонии зардуштӣ дар дифоъ аз таълимоти дугонапарастии зардуштӣ ва интиқод аз динҳои дигар тақрибан дар охири асри X таълиф намудааст. Муаллиф дар фасли 1, банди 38 аз унвони китоб ёд мекунад. Асли паҳлавии китоб аз байн рафта ва дуровияти позанду санскрит аз он боқӣ мондааст. Бино ба гуфтаи пажӯҳандагон, баъдтар панҷ фасли аввали китоб дубора ба паҳлавӣ баргардонида шудааст. Муаллиф дар фасли 4, банди 107 ва фаслҳои 10, 12 худ мегӯяд, ки барои исботи Эзаду Аҳриман ва зиддияти онҳо ва низ исботи ҳаққонияту бартарии дини зардуштӣ далелҳои худро аз «Динкард» ва дигар рисолаҳои паҳлавӣ гирифтааст.<sup>1</sup>

Мардонфаррух дар муқаддимаи китоб баъд аз ситоиши дин ба масъалаи офариниш мепардозад ва инсонро солору сарвари офаридагон медонад. Дар ин ҷо ӯ худро муаллифи китоб муаррифӣ мекунад ва сабаби таълифи китобро шарҳ медиҳад. Аз суҳанони муаллиф бармеояд, ки мақсади ӯ аз ин китоб шиносондани навомӯзон бо аҳкоми дини зардуштӣ ва дур кардани шакку гумонҳои онҳо дар ҳаққонияти ин дин аст. Қобили зикр аст, ки бар хилофи аксари китобҳои паҳлавӣ муаллифи ин китоб барои исботи ақидаҳои зардуштӣ ва мубориза бо динҳои дигар аз далелҳои мантиқӣ истифода мебарад ва камтар ба устураву афсонаҳо таъҷ мекунад. Муҳаққиқон мавзӯи китобро пас аз муқаддима ба ду бахши кулӣ тақсим кардаанд: Фаслҳои 2 то 10 дар бораи усули ақидаҳои зардуштист. Фаслҳои 11-16 дар танқиди динҳои бегона аст. Муаллиф дар фаслҳои 11-12 аз дини ислом, фаслҳои 13-14 аз дини яҳудӣ, фасли 15 аз дини масеҳӣ ва дар фасли 16 аз дини монавӣ интиқод мекунад.

Аз муҳтавои китоб бармеояд, ки муаллифи он на танҳо аз аҳкоми дини зардуштӣ, балки аз ақоиди динҳои ислом, масеҳӣ, яҳудӣ ва монавӣ ба хубӣ огоҳ аст. Масалан, ӯ ба мазмунҳои қуръонӣ, монанди ронда шудани шайтон ва берун омадани вай аз бихишт, офариниши шайтон аз оташ ва офариниши инсон аз гил, нофармонии шайтон дар бораи сачда кардан ба Одам (фасли 11, бандҳои 52-60) ишора мекунад. Бино ба таъкиди муҳаққиқон, огоҳие, ки муаллиф аз дини яҳудӣ ва монавӣ медиҳад, хеле боарзиш аст, зеро аз китобҳои

---

<sup>1</sup>هدايت، صادق. چهار باب از کتاب شکند گمانی و یچار، تهران، 1322.

муқаддаси онҳо истинод меоварад. Аз маълумоти додаи муаллиф чуни бармеояд, ки дини Монӣ дар он замон пайравони зиёде доштааст.<sup>1</sup>

Шеваи нигориши «Шканд гумоник визор» равшан ва дар айни замон қавию пурмоя аст ва забони содаву равон дорад. Бино ба таъкиди забоншиносон, насри ин китоб аз назари таҳаввули забони форсӣ дорои аҳаммияти бисёре мебошад. Гарчи матни паҳлавии он дар даст нест, баргардони он ба хатти авестой тағйиру таҳаввули забони форсии он замонро бо форсии замони сосонӣ ба хубӣ нишон медиҳад. Аксар бар онанд, ки «Шканд гумоник визор» ба сабаби дар бар доштани истилоҳоти фалсафӣ то андозае нишондиҳандаи шеваи истидлоли ақлӣ ва мантикии эронии даврони бостон аст.<sup>2</sup>

### III.2.6.2. Пуси дониш комаг

«Пуси дониш комаг» ба маънии «писари орзуманди дониш» ва бо номи «Чами кустӣ» низ маъруф аст, монанди «Шканд гумоник визор» асли паҳлавияш аз байн рафта ва ривояти позанди он боқӣ мондааст. Дар ин рисолаи хурд, ки аз 600 калима иборат аст, писари донишхоҳ аз падари донишдӯсти худ дар бораи сабаби баستاني кустӣ (камарбанди динии зардуштӣ) суол мекунад. Падару писар дар ин чо намояндаи устоду шогирд ҳастанд. Дар ҷавоби падар баъзе масъалаҳои оини зардуштӣ, монанди санавият мавриди баҳс қарор мегирад. Падар дар посухи суоли писараш мегӯяд, ки барои нишон додани дониш доништан лозим аст, аммо барои намудани ахлоқ ва рафтор имон мавриди ниёз аст ва илова мекунад, ки баستاني кустӣ решава асоси дугонагиро нишон медиҳад. Тани одамӣ, ки ҷаҳони асгар (кайҳони кӯчак) аст, монанди ҷаҳони акбар (кайҳони бузург) ба ду қисмати хубу бад тақсим мешавад: Қисми болоии бадан ахурой ва баҳши поинии бадан аҳриманист ва камарбанд ҳадди фосили ин ду қисмат мебошад.

Қобили зикр аст, ки қисмати болоӣ бо андомҳои минӯӣ ба биҳишти зебо ва баҳши фурудин бо андомҳои моддӣ ба зиштию гандагии дӯзах ташбеҳ шудааст. Баستاني кустӣ (камарбанд) нишони бандагӣ ба Урмузд ва омодагии шахс ба хидмати вай аст. Муҳаққиқон бар онанд, ки шеваи нигориши рисола ва замони таълифи он ба «Шканд гумоник визор» монандиҳо дорад ва эҳтимол меравад, ки ҳар ду ҳосили як муҳити фарҳангӣ ва ҳамзамон буданд.<sup>3</sup>

---

<sup>1</sup>Мирфхрайӣ, М. ادبيات فارسی میانه//تاریخ جامع ایران؛ص.319  
<sup>2</sup>تفضلی. تاریخ ادبیات.ص.320-316 ; میرفخرایی، م. ادبیات فارسی میانه//تاریخ جامع ایران؛ص.13, 164-161  
; تاوادیاهانگیر. زبان و ادبیات پهلوی. تهران، 1348 // دیلواروف م. شکند گومونیک ویزور  
ЭАСТ,ч.,3.-С. 371.  
<sup>3</sup>تفضلی. تاریخ ادبیات.ص.164; میرفخرایی، م. ادبیات فارسی میانه//تاریخ جامع ایران؛ص.320-321.

### III.2.6.3. Гучастаг Аболиш

Рисолаи «Гучастаг Аболиш» дар бораи мувоҳисаи мазҳабии зиндике аз аҳолии Истаҳр, ки ҳангоми дар дини зардуштӣ буданаш Дайурмузд ном дошт ва баъд исломро қабул карду Абдуллоҳ ном гирифт, аммо тибқи суннати зардуштӣ ўро Аболиш мехонанд, бо Озарфарнбағи Фаррухзодон-пешвои зардуштиён дар асри X, дар ҳузури халифа Маъмун дар Бағдод аст. Дар адабиёти паҳлавӣ унвони «гучастаг» (мальун, палид) барои Аҳриман ва Искандари Макдунӣ ба кор рафтааст. Муҳаққиқон бар онанд, ки ин ном бояд номи ў баъд аз гаравидан ба ислом бошад. Сабаби аз дини зардуштӣ даст кашидани Аболиш дақиқ гуфта нашудааст. Аболиш рӯҳонии маъруфи зардуштӣ, рӯзе гуруснаву ташна ба оташгоҳе рафт ва хоҳиш кард, ки дар маросими оини «боз», ки аз оинҳои динии зардуштӣ асту баъд аз итмоми он ба ғизоҳои дуохонда саҳим (шарик) мешаванд, ширкат кунад. Аммо рӯҳонии оташкада, ки ўро намешинохтанду аз мақоми рӯҳонияш огоҳ набуданд, Аболишро ба маросим роҳ надоданд. Вай хашмгин аз оташкада берун омад ва дар роҳ ба марде бархурд, ки ба ў гуфт: «Чаро бояд ба дине эътиқод дошта бошӣ, ки марде чун туро ба маросими бочи он роҳ надиханд ва туро хор доранд?» (бандҳои 1-2). Аболиш бо ин суханон аз дини зардуштӣ рӯй гардонд ва бо доноёни зардуштӣ, яҳудӣ ва масеҳии Форс ба муборизаи динӣ пардохт ва ба ривояти муаллифи рисола, ҳамаи онҳоро шикаст дод. Сипас ба Бағдод, ба дарбори халифа Маъмун рафт (бандҳои 3-4). Аболиш дар ҳузури халифа бо Озарфарнбағ ба мувоҳиса пардохт ва ҳафт масъаларо дар бораи усули ақоиди зардуштӣ аз ў пурсид. Озарфарнбағ ба ҳама пурсишҳо посух гуфт ва бино бар гуфтаи муаллифи рисола, писанди халифа қарор гирифт. Аболиш шикаст хӯрд ва аз дарбор ронда шуд. Номи муаллиф ва замони таълифи рисола маълум нест. Пажӯҳандагон бар онанд, ки ба эҳтимол бахше аз адабиёти динии зардуштист, ки дар асрҳои нуҳум ва даҳум тадвин шудааст.<sup>1</sup>

### III.2.7. Панду андарз ва ҳикам

Дар адабиёти форсии миёна ва нав суханони кӯтоҳу ҳақимонаеро, ки шахсиятҳои машҳур, монанди подшоҳон, рӯҳонӣ ва бузургони донову хирадманд хитоб ба фарзандон, шогирдон, дарбориён ва мардуми ҷаҳон гуфтаанд, андарз меноманд. Ин суханон навъе васиятномаи рӯҳонӣ ва маънавии онҳо ба шумор мераванд. Панду андарз, осори ҳикамӣ ё худ ахлоқӣ дар адабиёти форсии тоҷикӣ собиқаи кӯҳан дорад ва аз адабиёти авестой маншаъ мегирад. Баррасии муҳаққиқон нишон медиҳад, ки ахлоқӣ муҳимтарин бахши адабиёти паҳлавиро ташкил

<sup>1</sup>تفضلى. تاريخ ادبيات.ص322-321 ; ميرفخرابى، م. ادبيات فارسى ميانه/تاريخ جامع ايران؛ص. 164-166؛  
هدايت.ص.گجسته اباليش، تهران، 1318.

медихад ва он таъсири густардае ба адабиёти баъдазисломии ҳам форсии тоҷикӣ ва ҳам арабӣ доштааст. Аксари пажӯҳандагон оғози андарзноманависии адабиёти мардуми ориёитаборро аз «Авесто» медонанд, зеро хулосаҳои аз ибораҳои авестой дар забони паҳлавӣ, ба хусус аз “Бариш-наск” дар даст аст, ки бояд онҳоро ба таври мушаххас пешини андарзноманависӣ дар забони паҳлавӣ ба шумор овард.<sup>1</sup>

Андарзҳои паҳлавӣ аксар чузъи адабиёти шифоҳиянд ва аз насле ба насле бо тағйироту дигаргуниҳо интиқол ёфтаанд. Таъйини муаллиф ва замони эҷоди онҳо аз имкон берун аст. Дар китоби сеvuми «Динкард» андарзҳои ба Чамшед-подшоҳи пешдодии асотири мансуб аст. Андарзномаи кӯтоҳе аз Хусрави Анӯшервон боқӣ монда, ки Хусрав хангоми марг ҳамчун хитоб ба ҷаҳониён гуфтааст. Дар «Шоҳнома» андарзҳои аз шоҳон, монанди Манучеҳр, Кайкубод, Кайхусрав, Ардашер, Шопур, Анӯшервон, Хурмузд пеш аз маргашон омадааст, ки донишманди эронӣ Холиқии Мутлақ онҳоро батафсил баррасӣ намудааст.<sup>2</sup> Дар китоби шашуми «Динкард», ки муфассалтарин андарзномаи паҳлавист, андарзҳои ба рӯҳониёни замони сосонӣ Озарнарс, Озармеҳр, Озарбузайд ва дигарон мансуб аст. Аз шахсиятҳои бузурге чун Ушнари доно (мушовири Кайковус), Бузургмеҳри Бухтагон (вазири Анӯшервон), Саена (ҳакиме, ки дар аҳди бостон зистааст) ва ғайра дар асарҳои паҳлавӣ андарзҳои боқӣ мондааст. Ин гуфтаҳо гувоҳи он аст, ки қабл аз Сосониён низ суннати андарзгӯӣ вучуд доштааст. Ба таври кулӣ аз гурӯҳи андарзҳои умумӣ, ки номи гӯяндаи онҳо маълум нест, метавон «Андарзи доноён ба маздаён» ва “Андарзи пурюткешон”-ро ном бурд. Барои таъйини муаллифони матнҳои андарзӣ ягона роҳ мансуб намудани онҳо ба муаллифонест, ки номашон дар ҳуди осор омадааст. Матнҳои андарзие низ вучуд доранд, ки дар дурустии интисоби онҳо шубҳа аст, монанди онҳое, ки ба Зардушт ва шогирди ӯ-Син мансуб аст.<sup>3</sup> Шумораи зиёде аз андарзҳои паҳлавӣ, бино ба гуфтаи муҳаққиқон, дар асрҳои IX-XII ба арабӣ тарҷума шудаанд ва аз он ҷо, ки асли паҳлавии бештари онҳо аз байн рафтааст, осори боқимонда ба забони арабӣ арзиши бузург доранд. Муҳаққиқони адабиёти араб таъкид мекунанд, ки аксари суҳанварони пууровазай араб дар оғози адаби арабӣ аз андарзҳои паҳлавӣ суд бурдаанд. Қисмати бештари андарзҳои даврони сосонӣ аз роҳи тарҷума ба забони арабӣ дар “Ҷовидон хирад”-и Ибни Мисқвейҳ, “Ғура”-и Саолибӣ, “Уюн-ул-аҳбор”-и Ибни Қутайба, “Муруҷ-уз-заҳаб”-и Масъудӣ ҳифз шудаанд. Бахши андаке аз ин андарзҳо дубора ба адабиёти форсӣ роҳ ёфтанд. Бархе аз ин андарзҳо мустақиман аз манбаъи паҳлавӣ ва баъзе бавосита ба назми форсӣ дароманд,

<sup>1</sup> Мирфараби, М. ادبيات فارسی ميانہ//تاريخ جامع ايران؛ص.223

<sup>2</sup> خالقی مطلق، جلال. کیخسرو و کورش//ايران شناسی،س7،ش1،ص.158-170.

<sup>3</sup> فضات، ف. کتاب سوم دینکرد. تهران، 1371.

монанди андарзи Бузургмеҳр, ки дар баъзе аз дастнависҳои «Шохнома» бо унвони «Гуфтор андарзи «Пандномаи Бузургмеҳр шох Нӯшервонро» ёд шудааст.<sup>1</sup> Андарзноманависӣ дар адабиёти паҳлавӣ дар асрҳои III-IX ривочу равақ ёфтааст. Дар ин давра андарзнома чун як навъи адабиёти бадеӣ, дидактикӣ арзи вучуд намуд. Чанде аз андарзномаҳои паҳлавӣ дастраси муҳаққиқон гардидаанд, ки онҳоро ба ду гурӯҳ тақсим намудаанд. Яқум, андарзномаҳое, ки дар онҳо масъалаҳои дини зардуштӣ матраҳ гардидаанд: «Чидак андарзи пурюткешон», «Андарзи доноён ба маздяснон», «Якчанд сухан (ки) Озарфарнбағи Фаррухзодон гуфт», «Суханҳои Бахтофарид ва Озарбади Зардуштон», «Андарзи дастурон ба бехдинон», «Андарзи пешиниён», «Ёдгори Бузургмеҳр» ва ғайра. Дувум, андарзномаҳое, ки ҳикмати амалӣ, масъалаҳои дунявиро дар бар мегиранд: «Андарзи Озарбади Маҳраспандон», «Вожае чанд аз Озарбади Маҳраспандон», «Андарзи Ушнари доно», «Андарзи Ҷамшед», «Андарзи Саена», «Андарзи Хусрави Қубодон».

Дар осори динӣ, адабӣ ва таърихӣ паҳлавӣ, аз қабилҳои «Динкард», «Бундаҳишн», «Минуи хирад», «Дарахти Осурӣ» ва ғайра бобҳову фаслҳо ва пораҳои андарзӣ, пандуахлоқӣ вучуд доранд. Масалан, дар «Динкард» андарзҳо аз «Авесто» оварда шудаанд, дар боби дувуми «Минуи хирад» 100 гуфтори андарзӣ фароҳам омадаанд. Аксари андарзномаҳое, ки матнашон боқӣ монда, дастраси муҳаққиқон гардидаанд, дар замони Сосониён тадвин шудаанд. Дар андарзномаҳои динӣ паҳлавӣ оид ба риояи расму оини дини зардуштӣ, итоат, порсой, қаноат, тан додан ба тақдир ва ғайра сухан меравад. Дар андарзномаҳои дигари паҳлавӣ аз давлатдорӣ одилона, раиятпарварӣ, тарғиби ростӣ, некӣ ва нақӯкирдорӣ, тарғиби илму дониш, дӯстӣ ва рафоқат, бузургдошти падару модар ва устодони дабиристон, ғамхорӣ кардан ба аҳли хонадон, ба мактаб додан ва ба таҳсили илми фарзандон мусоидат намудан ва ғайра сухан меравад. Суннати андарзноманависӣ пас аз Сосониён дар адабиёти арабӣ, адабиёти асримиёнагии форсии тоҷикӣ ва халқҳои дигари Шарқ идома ёфт. Дар таъсири андарзномаҳои паҳлавӣ, ки аксарашон ба забони арабӣ тарҷума шудаанд, дар адабиёти арабӣ навъи «адаб» пайдо шуд. Дар адабиёти форсии тоҷикӣ асарҳои ба андарзнома монанд ва ё пораҳои андарзӣ дар нигоштаҳои Рӯдакӣ, Абӯшақури Балхӣ («Офариннома»), Фирдавсӣ (андарзҳои шоҳон хангоми ба тахт нишастан ва ё васиятҳо пеш аз марг дар «Шохнома»), Асадии Тӯсӣ («Гаршоспнома»), Абӯалӣ ибни Сино («Пирӯзинома», «Зафарнома», асарҳои андарзӣ, ки ба ӯ нисбат дода мешаванд), Абдуллоҳи Ансорӣ («Насоҳат», «Тухфат-ул-мулук», «Анис-ул-муридин ва шамс-ул-маҷлис», «Манозил-ус-соирин»),

---

<sup>1</sup> Мирфараҳӣ, М. Андорз ва ҳикмат//Тарихи ҷамъи Иран: 322-325.

Хусрави Дехлавӣ, Саъдӣ («Гулистон», «Бӯстон»), Абдуррахмони Ҷомӣ ва дигарон ба назар мерасанд. Ба «Роҳат-ус-судур»-и Ровандӣ, «Марзбоннома», «Сиёсатнома», «Калилаву Димна», «Таърихи Табаристон», девонҳо, китобҳои таърихӣ ва адабии дигар низ андарзҳои паҳлавӣ дохил гардидаанд. Чунин ба назар мерасад, ки Фирдавсӣ аз андарзномаҳои паҳлавӣ хуб огоҳ буда, ки дар «Шоҳнома» аз онҳо батақрор ёд мекунад. Дар «Шоҳнома» инчунин «Андарзи Бузургмехр», «Андарзнома навиштани Баҳроми Гӯр ба кордорони худ» ва ғайра оварда шудаанд. Дар «Гаршоспнома»-и Асадии Тӯсӣ низ суҳанони Гаршосп ва Наримон зери унвони «Андарзнома» омадаанд.<sup>1</sup> Суннати андарзнависӣ дар адабиёти форсии тоҷикӣ, ки аз адабиёти Бостон сарчашма мегирад, дар қолабҳои гуногун, дар асарҳои мустақил, дар дохили асарҳо, насихатномаҳои шоирон ва носирон, насихат ба фарзанд, ҳикоятҳои тамсилии китобҳои ахлоқ, рисолаҳои ҷавонмардӣ ва маҷмӯаҳои панду андарз ва ғайра то кунун идома дорад.

Бояд зикр кард, ки муҳаққиқон андарзҳои паҳлавиро ба ду гурӯҳ: динӣ ва амалию таҷрибӣ тақсим кардаанд, вале гоҳ андарзҳои амалию таҷрибӣ дар миёни гурӯҳи аввал ва низ баръакси он мушоҳида мешавад. Дар андарзҳои гурӯҳи аввал баъзе мавзӯҳо ҷойгоҳи махсус доранд. Аз ҷумла, дар ин андарзҳо «хирад» бисёр ситоиш мешавад. Ба андешаи пажӯҳандагон, хирад дарбардорандаи дониш, бавижа дониши нафс аст, яъне донишани асл ва пайвастагиҳои худ. «Фарҳанг» унсури дигарест, ки дар ин андарзҳо ситуда мешавад. Рафта ба макони омӯзиш ва ҳидояти динӣ (хирбадистон) бештар мавриди таъкид қарор гирифтааст. «Машварат бо доноён ва некон» аз дастурҳои тақрор ба тақрори андарзҳост. «Паймон» дар мафҳуми андоза ва эътидол нуктаи марказии андарзҳо ба шумор меояд. Паймон миёни ифрот ва тафрит, ки ҳар ду нақӯҳидаанд, қарор дорад. Тақдир нақши муҳимме дар сарнавишти инсон дорад ва андарзҳо гарчи ихтиёр ва иродаи инсонро дар таъйини сарнавишт нодида намегиранд, нақши андаке барои он қоиланд. Аз ҷақру дарвешӣ дар андарзҳо аксар дар маънии мусбати он суҳан меравад. Аз имтиёзоти сарвату дорой низ дар андарзҳо суҳан рафта, дар мавриди истифодаи дурусти он ишораҳо шудааст. Андарзҳои динӣ ба пазириши Яздон дар даруни ҳуди инсон таъкид доранд ва ин корро бо берун рондани девон, ки ба таври малмус ва воқеӣ бо ҳислату амали бади инсон мушаххас мешаванд, анҷомшуданӣ медонанд.<sup>1</sup> Дар гурӯҳи дувуми андарзҳо маъмулан адабиёти ахлоқӣ ва ҳикамӣ дар қолаби никоти омӯзишӣ ва таълимӣ ба шеваи ҷаззоб ба оммаи мардум арза шудааст. Ҳикоятҳои афсонавӣ ё таърихӣ, тамсил, ташбеҳ ва киноя барои таъсири бештар бахшидан ба хонанда дар андарзҳо фаровон ба қор мераванд. Баъзе аз андарзҳо на дар қолаби андарз, балки ба шакли амсолу ҳикам ба адабиёти форсии тоҷикӣ роҳ

<sup>1</sup> Афсаҳзод А., Диловаров М. Андарзнома // ЭАСТ, ҷ.1. -С. 154.

<sup>1</sup>Shaked Sh. Andarz. Eir 2.- P.11-16. 323-325. م. ادبيات فارسی میانه//تاریخ جامع،ص.



ёфтаанд. На танҳо ба забони паҳлавӣ, балки ба дигар забонҳои эронии миёна, монанди забони суғдӣ, портӣ ва матнҳои монавӣ дostonҳои кӯтоҳе дар ҳамин қолаб омадааст.<sup>2</sup>

### III.2.7.1. Андарзҳои Озарбоди Маҳраспандон

Озарбоди Маҳраспандон ё Мораспандон-мӯбадонмӯбади замони Шопури Сосонӣ сермуҳсултарин муаллиф дар заминаи андарзнависист. Се маҷмӯа ва чанд китъаи андарз ба ӯ мансуб аст. Андарзи Озарбоди Маҳраспандон дар маҷмӯаи «Матнҳои паҳлавӣ» чунин оғоз мешавад: «Озарбодро фарзанди танизод набуд ва бо таваккул ба Яздон соҳиби фарзанд шуд ва номи паёмбари дини худ – Зардуштро бар ӯ ниҳод».<sup>1</sup> Сипас, андарзҳои хитоб ба ӯ эрод мекунад. Дар ин суҳанони кӯтоҳи ахлоқӣ фазилати паймон (эътидол), эҳтиром ба падару модар, бузургону соҳибони қудрат, машварат кардан бо доноён дар анҷоми корҳои муҳим, монанди зан гирифтани ва идораи дорой, ҳамнишинӣ бо некон ва дурӣ чустан аз нодонону фиребкорон таъкид шудааст. Ростгӯӣ, фурӯтанӣ, некномӣ, бахшандагӣ, диндӯстӣ, хирад ва имон ситуда шуда, дурӯггӯӣ, густохӣ, нодонӣ, мардумозорӣ, худситой ва бераҳми нақӯшиш шудааст. Баъзе аз ин андарзҳо дар қолаби масал дар миёни мардум роиҷ шудаанд, монанди «Ҳар чӣ бар худ наметарсанд, бар дигарон наметарсанд», «На ба рост ва на ба дурӯг савганд маҳӯр» (банди 40), «Ҳар кӣ барои рақиб чоҳ канад, худ дар он афтад» (банди 109), «Марди доно монанди замини нек аст, ки чун тухм дар он афканда шавад, хорбор (он чи хӯрда шавад)-и гуногун диҳад» (банди 5), «Душмани қадимӣ ба мори сиёҳ монад, ки кини садсола фаромӯш накунад ва дӯсти куҳан ба майи куҳан монад, ки ҳар чӣ куҳнатар бошад, барои хӯрдани шаҳрерон беҳтару шоистатар аст» (бандҳои 100-1010), «Касе, ки падару модар дорад, ба шери беша монад, ки аз касе наметарсад ва касе, ки падару модар надорад, ба бевазана монад, ки моли ӯ биситонанд ва ӯ ҳеч коре натавонад ва ҳар кас ӯро хор дорад»...<sup>2</sup>

Андарзҳои Озарбоди Маҳраспандон аз бандҳои (фикраҳои) пандунасихатӣ ва суҳанони ҳикматомез иборат аст. Ӯ ин андарзҳоро барои писари хеш – Зардушт навиштааст. Банди дувуми он бо хитоб ба писар оғоз меёбад. «Писарам, некандеш бош...» Аксар панду насихатҳо ҳикмати амалиянд, барои тарбияи инсонӣ комил дастурҳои муфиду арзанда мебошанд. Дар ин андарзҳо аз нақӯкор будан, бо мардуми нодон дӯстӣ накардан, аз бадқирдорон дурӣ чустан, парҳез кардан аз дурӯггӯӣ, нишастан дар суҳбати доноён, дар кори бадӯширифта

<sup>1</sup> Таваддияҷ. زبان و ادبيات پهلوی. تهران، 180-186.1348; تفضلی. تاريخ ادبيات.ص.322-325; میرفخرایی، م. ادبيات فارسی میانه//تاريخ جامع ايران؛ ص 154; -С. 154; Афсаҳзод А., Диловаров М. Андарзнома. -Душанбе, 2003. Саймумдин Д. Адабиёти паҳлавӣ. -Душанбе, 2003. <sup>2</sup> نقل از میرفخرایی، م. آذرباد مهرسپندان//تاريخ جامع ايران؛ ص.325. <sup>2</sup> میرفخرایی، م. آذرباد مهرسپندان//تاريخ جامع ايران؛ ص.326.

масъул ва кӯшо будан, бенавоёнро масхара накардан (зеро шахси доро ҳам метавонад бенаво бишавад), ба фарзанд илму дониш омӯзондан, хурмати падару модарро ба ҷой овардан ва ғайра сухан меравад. Дар андарзҳои Озарбоди Маҳраспандон» фикраҳои ба назар мерасанд, ки дар насихати шоҳону дигар ҳокимон (одилу раиятпарвар будан, саховат кардан, суханони ҳасудону дурӯғгӯёнро нашонидан ва ғайра) гуфта шудаанд. Намунае чанд аз «Андарзи Озарбоди Маҳраспандон» дар тарҷумаи Д. Саймиддинов: «Бо марди бадогоҳ (ҷохил) ҳамроҳ мабош! Бо марди хашмин ҳамроҳ мабош! Бо марди ҳарзагӯй ҳамроҳ мабош! Бо марди маст ҳамнӯш мабош! То чанд тавонӣ, мардумон ба сухан маёзор! Агар туро писаре бувад, ўро дар кӯдакӣ ба дабиристон бидех, зеро омӯзиш равшании чашм аст. Бегуноҳ бош, то бебим бошӣ! Ва туро гӯям, писарам, ки барои мардумон аз ҳама беҳтар чиз хирад аст».<sup>1</sup>

Андарзҳои Озарбоди Маҳраспандон баъд аз тарҷума ба забони арабӣ ва форсӣ таъсири густардае ҳам ба адаби араб ва ҳам ба адабиёти форсии тоҷикӣ доштааст.<sup>2</sup>

### III.2.7.2. Вожае чанд аз Озарбоди Маҳраспандон

Бино ба гуфтаи мураттиби «Маҷмӯаи матнҳои паҳлавӣ» ин андарзҳо суханонест, ки Озарбоди Маҳраспандон пеш аз марғаш ба унвони васият ба мардуми ҷаҳон гуфтааст.

Муҳаққиқон бар онанд, ки ин андарзҳои пароканда аз маҷмӯаҳои гуногун ҷамъоварӣ шудаанд, зеро шеваи ҳикмӣ сабаби якнавохтии онҳо шудааст. Бештари андарзҳои ин маҷмӯа аз навъи насихатҳои таҷрибист, аммо дар он чанд андарзи динӣ низ ба назар мерасад, монанди тавсия дар мавриди се бор дар рӯз рафта ба оташкада (банди 72 ва 73), парҳез кардан аз хӯрдани гӯшти гову гӯсфанд (банди 13).<sup>3</sup>

### III.2.7.3. Андарзи анӯшаравон Озарбоди Маҳраспандон

«Анӯшаравон» ё «анӯшакравон» ба маънии «дорои равони ҷовид» мебошад. Ин андарзнома дар фасли 62-и «Ривояти паҳлавӣ» омадааст. Дар оғози андарз омада, ки Озарбодро шогирде буд, ки рӯзгори дароз шогирдии ўро карда буд. Шогирд аз устод хост, ки ўро фарҳанг кунад, яъне, насихатҳои биомӯзонад, ки тавонад равони худро беҳтар кунад. Озарбод чанд панди умумӣ ба ў медиҳад, аммо шогирд қонеъ намешавад ва тақозои пандҳои махсус мекунад.

<sup>1</sup> Саймиддинов Д. Адабиёти паҳлавӣ.- Душанбе, 2003.

<sup>2</sup> Диншاهи иранӣ. اخلاق ايران باستان. 1334; ميرفخرايى، م. ادبيات فارسى ميانه؛ تفضلى. تاريخ ادبيات. ص. 172-171. سايميددينوف د.، ادبياتى پاھلاوى. - 1384. تهران. زبان و ادبيات پهلوى. 1384. Душанбе, 2003; Изведать дороги и пути праведных.- Москва, 1991.

<sup>3</sup> تفضلى. تاريخ ادبيات. ص. 326; ميرفخرايى، م. واژه اى چند از آنرياد مهرسپندان// تاريخ جامع ايران، ص. 182.

Саранҷом Озарбод 22 вожа (сухан)-ро, ки аз устоди худ-Меҳрурмазд ва ӯ низ аз Одаруг шунида буд, барои ӯ бозгӯ мекунад.

Бино ба гуфтаи пажӯҳандагон, бештари андарзҳои ин маҷмӯа таҷрибиянд, вале баъзе аз онҳо оҳанги динӣ низ доранд ва гоҳе ба «Авесто» истинод шудааст. Масалан, банди 14 дар бораи оштихоҳӣ омадааст, ки «Аз «Авесто» пайдост, ки растохез ва тани пасин кардан (тани пасин истилоҳест муродиф бо растохез ва аксари вақтҳо ҳамроҳ бо он ба кор меравад. Манзур аз он пайкарест, ки офаридагон дар поёни ҷаҳон бо он бармеҳезанд ва ҷовидон бо он тан боқӣ мемонанд), бемаргӣ оростан, аз роҳи ошӣ мумкин бошад».<sup>1</sup> Дар ин маҷмӯа се навъи ҷавонмардӣ баршумурда шудааст: 1) Он родӣ беҳтар аст, ки аз касе нахоҳанд ва ӯ бидиҳад. 2) Он родӣ беҳтар аст, ки аз касе бихоҳанд ва дар ҷо бидиҳад. 3) Он касе, ки аз ӯ бихоҳанд, замон кунад (муҳлат бихоҳад) ва дар замоне, ки кунад, бидиҳад. Ва беҳтар аст ба он касе дода шавад, ки ҳаргиз умеди бозпардохт аз ӯро надошта бошад. Дар ин маҷмӯа дар фазилати ростӣ, миёнҷигарӣ, оштихоҳӣ, паймон, фурутанӣ, бурдборӣ ва хурсандӣ таъкид шудааст.<sup>2</sup>

Илова бар ин, “Даҳ андарз ба номи Озарбоди Маҳраспандон ва дигар пурюткешон” дар фасли 199 китоби сеvуми “Динкард” омада, ки бино ба гуфтаи муҳаққиқон, таҷрибию ахлоқӣ ҳастанд ва камтар оҳанги динӣ доранд. Дар фасли 200 ин китоб даҳ тавсия, ки дар ҳақиқат “зидандарз”-анд, аз Монӣ дар муҳолифат бо ин даҳ андарз нақл шудааст. Ҳамчунин дар китоби шашуми “Динкард” низ андарзҳои дигаре ба Озарбоди Маҳраспандон мансуб аст ва баъзе аз онҳо ба арабӣ тарҷума шудаанд.<sup>3</sup>

#### Ш.2.7.4. Ёдгори Бузургмеҳр

“Ёдгори Бузургмеҳр” андарзномаест дар 264 банд (Матнҳои паҳлавӣ: 85-102) аз Бузургмеҳри Бухтагон, вазири донишманди Анӯшервон, ки бо хат ва забони паҳлавӣ иншо шуда, масъалаҳои ахлоқиро дар бар мегирад. Матни ин асар бо муқаддимаи муаллиф оғоз шуда, фарогири тақрибан 1760 вожа аст. Бузургмеҳр дар муқаддима (банди 1) ба зикри лақаб ва унвонҳои худ мепардозад ва мегӯяд, ки ин андарзнома ба дастури Хусрави Анӯшервон таълиф гардида ва дар хизонаи шохӣ (Шойгон) ниҳода аст, то барои беҳбуд бахшидан ба фарҳанги ононе ба кор ояд, ки шоистагии пазируфтани онро доранд. Сипас шарҳе дар бораи нопойдорӣ дунё, бевафоӣ умр, саботи порсой, корҳои нек ва парҳез аз гуноҳ, бихишту дӯзах ва

1. میرفخرایی، م. انوشه روان آذرباد مهرشپندان | تاریخ جامع ایران، ص. 327.

2. تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 183.

3. تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 184.

монанди инҳо меоварад (бандҳои 2-4). Пас аз он матни аслии андарзнома оғоз мешавад.

Матни асли андарз дар шакли суолу ҷавоб дар бораи усули асосии дини зардуштӣ аз банди 5 оғоз мешавад. Бузургмеҳр худ суолхоро матраҳ мекунад ва сипас ба онҳо посух мегӯяд. Пурсишу посухҳо мӯҷаз ва ҳақимонаанд ва дар бораи бартариҳои хираду дониш, некию нақӯкорӣ, оини дурусти давлатдорӣ ва ғайра ба тарзи шавқангез оварда шудаанд. Ин бахш шомили феҳристе аз бадтарин девони офаридаи Аҳриман ва айбҳои онҳо, монанди оз, ниёз, хашм, рашк, нанг ва нодонист, ки сабаби гумроҳӣ мегардад. Аз сӯи дигар, дарбаргирандаи фазилатҳое, монанди хурсандӣ, бурдборӣ, некчашмӣ, некномӣ ва доноист, ки Урмузд барои муқобила бо девон офаридааст. Баъд аз номгӯи фазилатҳо “бародарони дурӯғин”-и онҳо, разилатҳо меояд. Масалан, ҷавонмардию озодагию бахшандагӣ фазилат аст, дар баробари исроф, ки бародари дурӯғини он аст, разила ба шумор меравад (бандҳои 85-104).

Баъзе аз андарзҳои ин маҷмӯа аз навъи андарзҳои ахлоқӣ ва бархе аз навъи андарзҳои динии зардуштист, ки дар онҳо истилоҳоти динии зардуштӣ истифода шудааст. Масалан, растохез ва тани пасин (банди 4), се асли бунёди дини зардуштӣ, яъне, андешаи нек, гуфтори нек, кирдори нек (банди 12) ва ғайра.<sup>1</sup>

«Ёдгори Бузургмеҳр» дар даврони исломӣ низ аз шуҳрат бархурдор будааст. Ба тахмини донишмандон, бори нахуст онро Ибни Муқоффаъ ба арабӣ тарҷума кардааст. Бахши бузурге аз матни арабии «Ёдгори Бузургмеҳр» дар китоби «Булуҳар ва Будосиф» аз қавли Булуҳар дарҷ шудааст. Ҷамчунин тарҷумаи арабии бештари бахшҳои он дар «Ҷовидон хирад»-и Ибни Мисквейҳ омадааст. Нусхаи дигаре аз ин асар ба номи «Ҳиками Бузарҷмеҳр» маъруф аст. Дар «Кашфу-з-зунун»-и Ҳоҷӣ Халифа (асри 17), ки ба забони арабист, омада, ки «Зафарнома» ё «Пирӯзинома»-и Бузургмеҳр аз сӯи Пури Сино ба порсии дарӣ баргардонда шудааст.<sup>2</sup> Фирдавсӣ низ бахшҳое аз онро дар «Шохнома» бо унвони “Панд додани Бузарҷмеҳр Нӯшинравонро” ба назм даровардааст.<sup>3</sup> Ҷамчун ин ин андарз дар баъзе нусхаҳои “Шохнома” бо унвони «Гуфтор андар пандномаи Бузарҷмеҳр шох Нӯшинро» омадааст. Пажӯҳандагон бар онанд, ки гунаи мансури «Ёдгори Бузургмеҳр» дар «Шохнома»-и Абумансурӣ” вучуд доштааст. Аммо бархе аз муҳаққиқон, аз ҷумла Мохёри Наввобӣ матни паҳлавии «Ёдгори Бузургмеҳр»-ро яке аз манбаъҳои «Шохнома» донистаанд ва бар он ақидаанд, ки худи Фирдавсӣ ё «меҳрубони сарои ӯ» онро аз

1. آبادانی، ف. اندرزنامه بزرگمهر حکیم. اصفهان، 1350. م. میرفخرایی، م. یادگار بزرگمهر//تاریخ جامع ایران، 3ص29

2. عریان، س. منتهای پهلوی، ص124

3. Фирдавсӣ Абулқосим. Шохнома, ҷ.8.-Душанбе: «Адиб», 1990.-С. 273-290.

пахлавӣ тарҷума кардааст.<sup>1</sup> Агарчи матни «Ёдгори Бузургмеҳр» ва «Шоҳнома» дар ҳама вожаҳо бо ҳам мутобиқ нестанд, Фирдавсӣ тақрибан ҳамаи андарзу мазмунҳоро бо ихтилофи андаке бо ҳамон назму тартиби матни паҳлавӣ овардааст. Бархе аз гуфтаҳо ё андарзҳои мансуб ба Бузургмеҳрро дар баъзе аз манбаъҳои форсию арабӣ, монанди «Муруҷ-уз-заҳаб»-и Масъудӣ, «Ғурау-с-сияр»-и Саолибӣ, «Ахлоқи Носирӣ»-и Насируддини Тусӣ, «Таърихи Байҳақӣ»-и Абулфазли Байҳақӣ, «Сиёсатнома»-и Низомулмулк, «Қобуснома»-и Кайковус ибни Искандар, «Чавомеъу-л-ҳикоёт ва лавомеъу-р-ривоёт»-и Муҳаммад Афвӣ, «Зубдат-ут-таворих»-и Абулқосими Кошӣ, «Бӯстон» ва «Гулистон»-и Саъдӣ ва дар баъзе аз осори Ибни Фақеҳ ва Ҷоҳиз метавон дид. Дар ин тарҷумаҳо бахшҳои, ки мазмуни зардуштӣ доранд, ҳазф ё тағйир дода шудааст.<sup>2</sup>

Қадимтарин нусхаи «Ёдгори Бузургмеҳр» нусхаи «Дастури Ҷомосп» (Jamasp-Asana, J.M.) аст, ки аз он танҳо 500 вожа боқӣ монда, 14 сафҳаи баъдии он гум шудааст. Ин матро нахустин бор дастур Пашутани Санҷоно соли 1885 дар Техрон ба табъ расонд ва Маликушшуаро Баҳор онро ба форсӣ баргардон кардааст. Овонависӣ ба хатти авестой (позанд) ва тарҷумаи англисию гуҷаротӣ он дар маҷмӯаи «Ганҷи шойгон» нашр шуд. Матни паҳлавӣ ва илҳокоти нусхабадалҳои ин андарзнома соли 1897 аз дар Бумбай ба табъ расид. Соли 1898 тарҷумаи олмонии бахши нахустини ин андарзномаро Ф. Мюллер нашр кард. Соли 1930 А. Кристенсен бахшҳои аз онро ба фаронсавӣ баргардонд. Соли 1933 Ҷ. Торопур бо номи «Андарзномаи паҳлавӣ» овонависӣ ва тарҷумаи онро ба забонҳои англисию гуҷаротӣ дар Бумбай ба чоп расонд. Аз эроншиносони рус К. А. Иностранцев соли 1909 ин андарзхоро бо номи «Ангораҳои давраи сосонӣ» («Сасанидские этюды») дар Санкт-Петербург чоп кард.<sup>3</sup>

Дар замони шӯравӣ ховаршинос О. М. Чунакова чандин матни паҳлавӣ, аз ҷумла матнҳои интиқодии ин андарзхоро бо транскрипсия ва тарҷумаи русии онҳо ба табъ расонд.<sup>4</sup> Дар Эрон матни паҳлавӣ ин андарзнома бо тарҷумаи форсӣ ва муқоисаи он бо «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ (аз рӯи нусхаи чопшудаи Ҷомосп Осано) мунташир шуд.<sup>5</sup> Матни паҳлавӣ он ҳамроҳи овонависӣ ва тарҷумаи форсию англисияш соли 1971 ба чоп расид. «Ёдгори Бузургмеҳр»-ро

---

1. انوابی ماهیار، یحیی. مجموعه مقالات، به کوشش م. طوسی، شیراز، 1355، ص. 407.

<sup>2</sup> Диловаров М. Пандномаи Бузургмеҳр // ЭАСТ, ҷ. 2. - С. 524-25.

<sup>3</sup> Иностранцев К. А. Сасанидские этюды. - СПб., 1909.

<sup>4</sup> Чунакова О. М. Изведать дороги и пути праведных. Пехлевийские назидательные тексты.

<sup>5</sup> عریان، س. متن های پهلوی، تهران، 1371.

донишманди тоҷик Д. Саймуддинов баргардон ва бо пешгуфтор дар маҷаллаи «Садои Шарк» ва баъдан дар китоби алоҳида нашр намуд.<sup>1</sup>

### Ш.2.7.5. Андарзи Ушнари доно

Бино ба гуфтаи М. Мирфахроӣ, яке аз тарҳҳои мавриди алоқаи муаллифони андарзҳо корбурди ададҳост. Дар ин гуна андарзҳо суханон, анвои мардумон ва мавзӯҳои гуногун, хубу бад зери ановини адади феҳрист мешаванд. Андарзи мансуб ба Ушнари Доно дар ин гурӯҳ қарор дорад.<sup>2</sup>

Ушнар дар “Авесто” (Фарвардин-яшт, банди 131) бо сифати “бисёр зирак” ва дар осори паҳлавӣ бо сифати “бисёр доно” ва “пурхирад” омадааст. Ба ривояти “Динкард” вай мушовири Кайковус буда (китоби ҳафтум, фасли 1, бандҳои 36-37) ва ба сабаби хирадмандии ӯ Кайковус дар ҳафт кишвар подшоҳӣ кардааст. Ба ривояти “Бундаҳишн” (TD2: 212) дар замони Кайковус кушта шудааст.<sup>3</sup>

Андарзномаи Ушнар ба 56 банд тақсим шудааст. Дар оғози андарз шогирде аз Ушнар меҳаҳад, ки то суханонеро ба унвони “таълим” (фарҳанг) ба ӯ бигӯяд (банди 1). Ушнар хоҳиши ӯро мепазирад ва ба тавсифи фазилатҳову разолатҳо, ё ба таъбири дигар, хунарҳову айбҳо мепардозад (банди 42). Дар ин бахш бар фазилати хирад, некӯкорӣ, кӯшиш, донишу диҳиш ва хурсандӣ бар бадӣ ва нописандӣ, тундию тезӣ, нодонӣ ва шаҳват таъкид шудааст. Дар банди 39 ба нишонаҳои доноӣ дар мард пардохтааст, ки иборатанд аз: 1. Барои чизе, ки рафту гузашт, ғам набарад; 2. Чизеро, ки омадааст, сухани нодуруст наандешад; 3. Ба он чи омадааст, хурсанд бошад; 4. Ба он умед дошта бошад, ки сазовори будан аст; 5. Ба бадӣ ношод ва ба некӣ фирефта нашавад. Дар банди 40 ба нишонаҳои нодонӣ ишора карда, ки аз ин қароранд: 1. Марди нодон бесабаб хашм гирад; 2. Дӯст аз душман нашиносад; 3. Сухани бесуд бисёр гӯяд; 4. Роз натавонад нигоҳ доштан; 5. Бемавқеъ бисёр бихандад; 6. Нисбат ба ҳар кас густох бошад.<sup>4</sup>

Бандҳои 43 то 46 ва 50 ва 51 ба сурати пурсишу посух матраҳ мешаванд. Бино ба таҳқиқи пажӯҳандагон, бештари андарзҳо ҷанбаи амалии таҷрибӣ доранд, ба ҷуз банди 55, ки комилан ҷанбаи динӣ дорад ва дар он истилоҳоти хосси зардуштӣ, монанди амшоспандон, тани пасин, дини маздяснӣ, растохез, умри нух ҳазор соли ҷаҳон ва ғайра ба қор рафтааст.<sup>5</sup>

<sup>1</sup> Саймуддинов Д. Адабиёти паҳлавӣ. Душанбе, 2003.

<sup>2</sup> Мирфхраӣ, М. андрз аوشнр дана// тарих ҷамеи айран, с. 330.

<sup>3</sup> نقل از میرفخرايي، م. اندرز اوشنر دانا// تاريخ جامع ايران، ص. 330.

<sup>4</sup> گشتاسب، ف. اندرز اوشنر دانا. تهران، 1393. ميرزايي، ناظر. اندرز اوشنر دانا، تهران، 1383.

<sup>5</sup> تفضلي. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 186.

### III.2.7.6. Андарзи доноён ба маздаяснон

Унвони “Андарзи доноён ба маздаяснон”-ро, ки дар дастнависҳои матн ва дигар нусхаҳои хаттӣ наомадааст, веростори китоб бо така ба ҷумлаи оғозии андарз: “Гӯш - андар доред шумо, мардум, ки маздаяснонқишвар ҳастед, бишнавед ин сухани доноро, ки андарзи неки Урмузд ва амшоспандон аст” ин унвонро интиҳоб кардааст.<sup>13</sup>

“Андарзи доноён ба маздаяснон” аз бист банд иборат буда, матни андарз бо банди 2 оғоз мешавад ва шомили дастурҳоест, ки як зардуштии боимон бояд бомдод, пас аз бедор шудан онҳоро анҷом диҳад, монанди шустану дасту рӯй бо оби пок, пӯшидани ҷомаи пок, бастанӣ кустӣ ва хондани ниранги марбут ба он. Сипас, сухан доир ба бесуботии ҷаҳони моддӣ ва сарвату дороист ва ба андешаи нек, гуфтори нек, кирдори нек ва парҳез аз андешаи бад, гуфтори бад ва кирдори бад супориш мешавад. Дар бандҳои 13-16 ба фонӣ будани мардум, нопойдории ҷавонӣ ва озодагии равон аз ин ки бозмондагон чадал кунанд ва барои он хайрот накунанд, ишора шудааст. Дар банди 9-и ин андарз низ чанд истилоҳи зардуштӣ, монанди сипанди минӯ, дини гоҳонӣ, беҳдини поки маздаяснон ба назар мерасад. Бандҳои 17 то 20 қитъаи шеър бо қофия дар бораи нопойдории корҳои ҷаҳон ва марғу нестӣ ҳаст, ки, бино ба гуфтаи пажӯҳандагон, мавзӯи аслии “Андарзи доноён ба маздаяснон” ба шумор меояд. Банди 4 дорои ташбеҳи олиест: *“Колбади мардумон ба дарахте монад, ки бикоранд ва рӯяду афзояд ва рушд кунанд. Он гоҳ онро бишкананд, бибурранд ва ҷӯбҳояширо даста кунанду бар отаиш ниҳанд ва отаиш онро бисӯзонаду бибалғад ва бод пок хокистари онро дар ҷаҳон бияфшонад. Он гоҳ ба ҷуз ӯ, ки онро кошта ё дидааст, ҳеч кас надонад, ки худ чунин дарахте буда ё на”*.<sup>2</sup>

Муҳаққиқон “Андарзи доноён ба маздаяснон”-ро аз ҷумлаи андарзномаҳои динӣ доништаанд ва ба форсӣ тарҷума шудааст.<sup>3</sup>

### III.2.7.7. Андарзи Хусрави Қубодон

«Андарзи Хусрави Қубодон» аз ҷумлаи асарҳои адабиёти паҳлавист, ки ба Хусрави Анӯшервон тааллуқ дорад. Дар ин рисола андарзи кӯтоҳе дар 13 банд омада, ки Хусрави Анӯшервон ҳангоми марғ ба мардуми ҷаҳон эрод кардааст (банди 1). Дар ҳамин банд мардумро ба парҳез кардан аз гуноҳ, беарзиш донистани молу сарвати ин дунё ва некӣ варзидан даъват кардааст. Дар идома (то

<sup>1</sup> Мирфхрайӣ, М. Андрз данайан бе мзди́снан//Тарих Ҷамеъиран, с.231

<sup>2</sup> Мирфхрайӣ, М. Андрз данайан бе мзди́снан//Тарих Ҷамеъиран, с.232

<sup>3</sup> Навабӣ Маһияр, Ёҷиӣ. МҶмӯеъеъ мқалат, с.331-332. ; Ериан, с.мтн Һай пелوى, с.475. Тفضلى. تاريخ ادبيات, ميرفخرايى, م. اندرز دانايان به مزدیسنان//تاريخ جامع ايران, ص.187

банди 8) андарз хитоб ба чамъ аст ва дар онҳо бар паймон (эътидол), чавонмардию ростӣ, хурсандӣ ва муруоти дарвешон таъкид шудааст. Дар ин чо ба кӯтоҳ будани умри инсон дар ин ҷаҳон, дурию душвории роҳи онҷаҳонӣ ва доварию рости саҳти Яздон ва фарози пули Чинвад ишора шудааст.

Аз банди 8 то 10 андарзҳо хитоб ба фард (ба сифаи дувумшаҳси танҳои феъли амр) аст, ки низ доир ба нопадории ҷаҳон ва неқварзӣ таъкид шудааст. Дар бандҳои 11-12 андарзе хитоб ба мардум омада ва дар он суолоте матраҳ шуда ва ҳуди нависанда ба онҳо посух гуфтааст. Андарзҳои ин рисола аз ҷумлаи андарзҳои динист. Барои намуна, яке аз онҳоро меоварем: «Ҳар кас бояд бидонад, ки аз кучо омадаам, ман инро донам, ки аз пеши Урмуздхудой омадаам».<sup>1</sup>

«Дар «Андарзи Хусрави Қубодон» бандҳое низ ҳастанд, ки дар онҳо мардум ба некию нақӯкорӣ, ростгӯӣ, каримӣ, ғамхори дарвешону нодорон будан, ба панди устод гӯш додан ва ғайра даъват карда мешаванд. Масалан: «Оину паймон ба кор доред ва ба қору қонун розу рост ва (бо) ростон ҳамсухан бошед»; «Ба баҳраи хеш хурсанд бошед ва баҳраи дигар кас (ба ғорат) мабаред»; («Аз») неқон бош, то бихишти бош».<sup>2</sup>

«Андарзи Хусрави Қубодон» аз навъи андарзҳои динӣ мебошад ва ба забонҳои англисӣ, гучаротӣ, форсии тоҷикӣ, русӣ тарҷума ва тафсир шудааст.<sup>3</sup>

### Ш.2.7.8. Гузидаи андарзи пурюткешон

Андарзномаест хеле мураккабу душвор дар 59 банд дар бораи усули ақидаҳое, ки ҳар зардуштии понздаҳсола бояд онҳоро бидонад ва ба он муътақид бошад. Мафҳуми “пурюткешон” ба маънии нахустин омӯзгорони дин аст. Баъзе онро “нахустин гаравандагон ба дин” ва “нахустин паёмбарону пайравони аввалияи дини беҳӣ” тарҷума кардаанд.<sup>4</sup>

Дар банди якуми андарзнома омадааст: “Пурюткешон дорои нахустин донишҳо дар ядой аз дин ҳастанд.”<sup>5</sup> Ин ақидаҳо бино бар гуфтаи пурюткешон, дар қолаби пурсишу посух матраҳ мешавад. Барои намуна, пурсиш: Ҳар кас бояд бидонад, ки кистам? Посух: Офарида ҳастам (бандҳои 1-2). Сипас, эътиқод ба Урмузд ва

<sup>1</sup> عربیان، سعید. متنهای پهلوی، ص. 98.

<sup>2</sup> Нақл аз Диловаров М. Андарзи Хусрави Қубодон // ЭМТ, ҷ. 1. - С. 443;

<sup>3</sup> Саймуддинов Д., Адабиёти паҳлавӣ, Д., 2003; Изведать дороги и пути праведных. Пехлевийские назидательные тексты. Введение, транскрипция текстов, перевод, комментарий и указатели О. М. Чунаковой, М., 1991; 188-187. ص. تفضلی. تاریخ ادبیات، ص. 1329 ; عربیان، سعید. متن های پهلوی، تهران، 1371 ; اندرز خسرو قبادان. متن های پهلوی، تهران، 1329. میرفخرایی، م. اندرز خسرو قبادان // تاریخ جامع ایران، ص. 332.

<sup>4</sup> قلی زاده، خسرو. فرهنگ اساطیر ایرانی، ص. 156.

<sup>5</sup> همان جا، همان صفحه.



амшоспандон, чудой аз Ахриману девон, омори равон пас аз марг, растохез ва тани пасин, гузаштан аз пули Чинвад (пули Сирот, пулест, ки ин чахонро бо он чахон пайванд медиҳад ва бояд ҳама аз он гузаранд) ва омадани Сушёнс, наҷотбахши зардуштӣ баён мешавад. Дар ин ҷо низ монанди дигар андарзҳои динӣ бар усули ақидаҳои таъкид шуда, ки ба вазифаҳои амалӣ, монанди ҳар рӯз се бор ба оташкада рафтан (банди 45), аҳаммияти тавба ва пушаймонӣ (бандҳои 36 ва 51) низ ишора шудааст.<sup>1</sup>

Дар ин миён андарзҳои ахлоқӣ низ дида мешаванд, монанди ҳамапурсӣ бо некон (банди 44), саъй намудан дар талаби фарҳанг (бандҳои 41-42), парҳез аз озори падару модар ва дигар бузургсолон (банди 46) ва ғайра.<sup>2</sup>

Ин андарз дар “Мутуни паҳлавӣ” ҷоп гардида ва ба форсӣ тарҷума шудааст.<sup>3</sup>

### III.2.7.9. Андарзи дастурон ва беҳдинон

Бино ба ривояти мурағибони «Мутуни паҳлавӣ» ин андарзнома аз 35 банд иборат буда, аз навъҳои андарзи динист ва унвони он аз ҷумлаи аввали он гирифта шудааст, монанди дастур ба мардум дар бораи ин, ки дар бомдод ҳар рӯз се деви нопокӣ, коҳилӣ ва беимонӣ бар мардумон дарояд. Бо анҷом додани одоби таҳорат ва покизагӣ деви нопокӣ, бо ниёиш кардан дар оташкада деви коҳилӣ ва бо ниёиши хуршед ба неруи яздон деви беимонӣ ронда мешаванд (бандҳои 1-4). Зиёни сухан гуфтан ҳангоми хӯрок хӯрдан (бандҳои 6-7), нишонаҳои бадҳашмӣ, шӯрҷашмӣ, парҳез аз танпарварӣ ва ҳасад (бандҳои 9-11) ишора шудааст. Бандҳои 12-35 дар қолаби пурсишу посух перомунӣ баъзе аз ақидаҳои одоби зардуштист. Мисол: «Чӣ касе ба ҷонварони озордиҳанда ҷон ато кардааст? (банди 12-16), «Оё Урмузд аз сӯйи худ касеро дар дӯзах барои мучозоти равони бадкорон гумоштааст? (бандҳои 20-23), «Чаро дар хонае, ки касе дар он даргузаштааст, набояд то се шаб гӯшти тоза хӯрд?» (бандҳои 34-35), Суду савоби хайрот (банди 30). Дар ин андарзнома аз ситорағони Тиштар, Садвес, Вананд ва Ҳафтавранг (ба маънии дорони ҳафт нишон) ба унвони чашми тези Яздон ном бурда шудааст.<sup>4</sup>

### III.2.7.10. Андарзи Беҳзоди Фаррухпирӯз

«Андарзи Беҳзоди Фаррухпирӯз», ки матни он дар «Матнҳои паҳлавӣ» (73-77) ба нашр расида, аз 31 банд иборат аст. Аз шахсияти

---

<sup>1</sup> عربان، سعيد. متن های پهلوی، ص. 86.  
<sup>2</sup> میرفخرایی، م. اندرز پوریوتکیشان//تاریخ جامع ایران، ص. 333.  
<sup>3</sup> متون پهلوی (آوانوشت)، ص. 526. 159؛ نوابی ماهیار، ی. مجموعه مقالات، ص. 86؛ عربان، س. منتهای پهلوی، ص. 333 میرفخرایی، م. اندرز پوریوتکیشان//تاریخ جامع ایران، ص. 188؛ تفضلی. تاریخ ادبیات. ص.  
<sup>4</sup> عربان، س. منتهای پهلوی، ص. 189. 333؛ تفضلی. تاریخ ادبیات، ص. میرفخرایی، م. اندرز دستوران به بهدینان//تاریخ جامع ایران، ص. 334.

Беҳзоди Фаррухпирӯз иттилое дар даст нест. Бино ба тахмини пажӯҳандагон, эҳтимол дорад аз рӯҳониёни охириҳои аҳди Сосониён ё ибтидои давраи исломӣ бошад. Ин андарзнома аз ду мавзӯи аслии иборат аст: Яке мадҳи хирад, ки матни андарзнома бо он оғоз мешавад ва дигаре бебунёдӣ ва нопойдории ин ҷаҳон. Матни андарз бо ситоиши хирад оғоз мешавад ва баъд аз зикри чанд андарзи кӯтоҳ мавзӯи аслии баён мегардад. Дар бандҳои 6-18 мавзӯҳои, монанди савоб андӯхтан, розӣ будан ба тақдир, мағрур набудан, лоф наздан ва ғайра матраҳ шудаанд. Бандҳои 8-18, ки дар ситоиши хирад аст, забони шоирона доранд ва дар поёни байтҳо навъе аз қофия дида мешавад.<sup>1</sup> Бандҳои 19-31 дар бораи безътиборӣ ва нопойдории ҷаҳони моддӣ ва бесамарии андӯхтани молу сарват аст. Дар баъзе аз ин андарзҳо низ кинояву тамсил дида мешавад. Масалан: *Он чи доно дар оғози қор бибинад, нодон ба анҷом бибинад (банди 21)*. *Сутур (киноя аз деви марг), ки омад, бидуни бор наравад (банди 34)*.<sup>2</sup>

Қисмати аввали матни ин андарз бо андарзи «Хем ва хиради Фаррухмард» ҳамонандиҳо дорад ва ба форсӣ тарҷума шудааст.<sup>3</sup>

### Ш.2.7.11. Хем ва хиради фаррухмард

Ин андарзнома дар дастнависҳо унвон надорад ва дар маҷмӯаи «Матнҳои паҳлавӣ» (162-167) ба ҷоп расида ва ба форсӣ тарҷума шудааст. Он бо зикри хусусиятҳои «фаррухмард» (марди саодатманд) оғоз мегардад ва дар чанд маврид аз хему хирад сухан меравад (бандҳои 2, 15, 17, 18), мурағиб аз ин сабаб ин унвонро барои он салоҳ донистааст. Дар банди 3 сухан аз марди поки соҳибтағам аст, дар банди 4 аз бесаводии марди беабзор (бемахорату тавоноӣ) сухан меравад ва дар банди 6 марди зираку доно васф шудааст. Ин марди доно ба дарахти раз (ангур)-и бороваре ташбеҳ шуда, ки шоҳаҳояш хушк нест, сояш ҳамешагӣ ва бораш ширин аст. Аз ҳамин сабаб ҳамеша ситудаву гиромист. Дар банди 7 марди нодон ба дарахте монанд шудааст, ки шоҳаҳояш тар несту меваи ангур наоварад ва чунин дарахте танҳо барои сӯхтану пӯшиши бом ба қор ояд. Дар бандҳои 8 ва 9 марди мағрур, ки танҳо ба худ меандешад, ба гӯрҳаре ташбеҳ шуда, ки ҳаргиз шутури мастро дар дашт надидааст ва аз ин ҷиҳат ба неруи худ шоду хуррам аст. Аммо чун шереро бинад, ки аз кӯҳ фуруд ояду дар гирад, аз тарс бар ҷой наояд. Дар ин андарзнома ба хирад таваҷҷуҳи махсус шуда ва қитъаи шеърӣ бо қофия дар ситоиши хирад дар миёни матн (бандҳои 16-19) омадааст. Пажӯҳандагон махсусияти ин андарзномаро дар забони шоирона, калимаҳои хубу нодир ва ташбеҳоти фаровони он дидаанд ва андарзҳои онро ба гурӯҳи

<sup>1</sup> تصضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. ص. 190

<sup>2</sup> عريان، سعيد. متن های پهلوی، ص. 112.

<sup>3</sup> تقضلى، احمد. اندرز بهزاد فرخ پيروز. هفتاد مقاله، تهران، 1371، ص. 537-542. ميرفخرایی، م. اندرز بهزاد فرخ پيروز//تاريخ جامع ايران، ص. 334. ؛ تقضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 190

андарзҳои таҷрибӣ дохил кардаанд, ки оҳангҳои динии онҳо хеле кам аст.<sup>1</sup>

Бино ба таъкиди муҳаққиқон, ҳамонандиҳо миёни ин андарзнома ва бахши аввали «Андарзи Бехзоди фаррухпирӯз» дида мешавад.<sup>2</sup>

### III.2.7.12. Доруи хурсандӣ

«Доруи хурсандӣ» аз ҷумлаи осори андарзии паҳлавист, ки аз ҳашт банд иборат буда, дар маҷмӯаи «Мутуни паҳлавӣ» ба нашр расидааст. Дар он феҳристе аз сифатҳои хуб, ҳамчун хурсандӣ (қаноат), шикебой ва таваккул ба доруи таркибӣ, бино бар таҷвизи пизишк, ташбеҳ шудааст. Пажӯҳандагон махсусиятҳои ин матнро дар қорбурди миқёсҳои вазн, монанди дирамсанг, донг, истилоҳоти дорушиносӣ, монанди омехтан, бехтан, кӯфтан, афкандан ва тамсилҳои назири «ҳовани шикебой», «камча (қошук)-и таваккул ба Худо» доништаанд.<sup>3</sup>

### III.2.7.13. Хешкорию ридакон

«Хешкорию ридакон» аз навъи рисолаи таълимии паҳлавист, ки асли он аз байн рафта, матни позандии он боқӣ мондааст. Мафҳуми «ридак» ин ҷо ба маънии «кӯдак, навҷавон» омадааст. Забони содаву раво дорад ва бо ҷумлаи «Ин фарҳангро устои дабиристон додааст» шурӯъ мешавад. Дар ин андарзнома вазифаҳои кӯдакон аз замоне, ки субҳ аз хоб бармехезанду ба дабиристон мераванд ва ба хона бозмегарданд, шарҳ дода шудааст. Баъзе аз андарзҳо ҷанбаи динӣ доранд, монанди одоби шустушӯӣ бомдодӣ (банди 2), одоби динии сари суфра (бандҳои 13-16) нишастан. Баъзе андарзҳо таълимию ахлоқӣ ҳастанд, монанди чашму дилу гӯшу забонро ба таълиму тарбият дар дабиристон супурдан (банди 5), ба роҳгузарони ошно дар роҳи мадраса эҳтиром кардан (банди 6), анҷом додани қорҳое, ки дар хона ба кӯдак супорида мешавад (банди 7), наозурдани падару модар ва дигароне, ки дар хонаанд ва хушрафторӣ бо онҳо (бандҳои 8-12) ва риояти одоби хӯрок хӯрдан (банди 20).<sup>4</sup>

Матни позанди ин андарзнома дар асоси чанд нусхаи дастнавис веросторӣ ва ба форсӣ тарҷума шудааст.<sup>5</sup>

---

<sup>1</sup>Мирфхрайи, м. Ҷим и Ҷрд Фрхмрд//Тарих Ҷамеирири, в.334-35.  
<sup>2</sup>Мзрдрпур, ктйон. Ҷим и Ҷрд Фрхмрд//Фрхнг, с.4, ш.1-2, в.69-91; Тфзلى. Тарих адбйат, в.191. Ҷим и Ҷрд  
Мирфхрайи, м. Ҷим и Ҷрд Фрхмрд//Тарих Ҷамеирири, в.334-335.  
<sup>3</sup>Бһар, Мхмд Тقى. ТрҶме Ҷнд Мтн Пһлуы. Тһран, 1347.185; Ерири, с.Мтнһай Пһлуы, в. Мирфхрайи, м. Даруы  
Ҷрсндй//Тарих Ҷамеирири, в. Тфзلى. Тарих адбйат, в.191.  
<sup>4</sup>Мзрдрпур, ктйон. андрз куодкн//Ҷйстн, Тһран, 1368, с.6, ш.8-7.  
<sup>5</sup>Мзрдрпур, к. андрз куодкн//Ҷйстн, Тһран, 1368, с.6, ш.8-7, в.54; Мирфхрайи, м. Ҷошкарй рдгн, в.336  
Тфзلى. Тарих адбйат, в.192. 443. 1.-С. 1. ЭМТ, Ҷ., Диловаров М. Андарзи кӯдакон\ЭМТ, Ҷ., 192.

### III.2.7.14. Андарзи «Хубӣ кунам ба шумо, кӯдакон»

Баъд аз матни «Хешкори и ридакон» ин андарзнома омада, ки аз лиҳози мазмун идомаи он аст, ки таҳрири позанди он дар даст аст. Дар ин ҷо низ ба рафтори дурусти кӯдакон дар роҳи ҳирбадистон таъкид шудааст. Аз ҷумла, наозурдани ҳайвонот (банди 25), эҳтиром ба раҳгузарони ошно (банди 26), эҳтиром ба падару модар ва фармонбардорӣ аз онҳо (бандҳои 27-29), одоби хӯрок хӯрдан (бандҳои 30-37), одоби динии субҳгоҳӣ (банди 38), вақти рафтан ба мадраса (рӯз ё шаб) ва синни рафтан ба мадраса (банди 41) ва талош дар фарогирӣ (банди 42-43) аст. Қобили зикр аст, ки дар андарзномаи «Хешкори и ридакон» барои калимаи мактаб, мадраса вожаи «дабиристон», аммо ин ҷо мафҳуми «ҳирбадистон» ба кор рафтааст.<sup>1</sup>

### III.2.7.15. Андарзи пешиниён

Андарзҳои кӯтоҳе дар ҷаҳор қитъа бо унвони «Андарзҳои пешиниён» дар «Матнҳои паҳлавӣ» (39-40) омадааст, ки дар ду қитъаи онҳо номи гӯянда ва гироваранда зикр шудааст: Дар қитъаи аввал нуҳ андарз дар қолаби ҷумлаҳои кӯтоҳ баён гардида ва дар ҳар яке аз онҳо фазилатҳои ахлоқӣ ё неъматҳои моддӣ бо яке аз шахсиятҳо ва ё ашӯ муқоиса шудааст. Масалан: *Ҳамбози зани нек будан хуб аст (банди 5); Беҳтарин хоста тандурустист (банди 1).*

Дар қитъаи дувум нуҳ андарз дар қолаби ҷумлаҳои кӯтоҳ бо сохти масдарӣ омадааст. Аз ҷумла: *Падару модарро наозурдан (банди 2); Дорои зани хубсухан будан (банди 3); Ба кори савоб кӯшо будан (банди 4).*

Қитъаи сеум аз шаш андарз иборат буда, ҷумлаҳои кӯтоҳ дорад ва бо феъли «надорад» поён меёбад: *Дардманд аст, он ки хирад надорад (банди 1); Ранҷур аст, он ки зан надорад (банди 2); Беном аст, он ки фарзанд надорад (банди 3).*

Қитъаи ҷаҳорум аз дувоздаҳ андарзи кӯтоҳ иборат аст, ки ҳар андарз бо калимаи «нест» поён мепазирад:

*Замонро дору нест (банди 7); Худоро анбоз нест (банди 10); Зиндагиро ромии нест (банди 6)<sup>2</sup>.*

Илова бар ин, андарзҳои кӯтоҳе дар панҷ қитъа дар маҷмӯаи «Матнҳои паҳлавӣ» (78-82) мавҷуд аст: Андарзномае бо ҷумлаҳои содаву равон, бо сохти масдарӣ дар бораи анҷом додани корҳои нек ва дурӣ кардан аз бадихову зиштиҳо: *Родӣ кардан, рост гуфтан, зан кардан.*

Андарзномае дар 11 банд дар бораи анҷом додани корҳои нек ва дурӣ ҷустан аз корҳои бад, намуна:

---

<sup>1</sup>Мирфхрайӣ, М. خوبی کنم به شما کودکان//تاریخ جامع ایران،ص.336.؛ تفضلی. تاریخ ادبیات،ص.192.  
<sup>2</sup>مزدآپور، ک. اندرز کودکان//چیستا،تهران،1368، س.6،ش7-8،ص.54.؛ میرفخرایی، م. خوشکاری رنگان//تاریخ جامع ایران،ص.336..192.؛ تفضلی. تاریخ ادبیات،ص. 336.؛ دیلواروف М. Андарзи кӯдакон\ЭМТ، تاریخ ادبیات،ص. 443.-1،.1،.443.

*Он судро набояд суд ангоштан, ки пас аз он зиёни бисёр бошад (банди 5); Он фарзандро набояд фарзанд ангоштан, ки фармони падару модар набарад (банди 10)<sup>1</sup>.*

**Сухане чанд аз Озарфарнбағи Фаррухзодон.** Андарзномаест мансуб ба Озарфарнбағ писари Фаррухзод, ки дар он ду пурсиш дар бораи хирад, хем, ҳунар, некӣ, некномӣ, имон ва устуворӣ матраҳ шуда ва ба онҳо посух гуфта шудааст. Аз ҷумла:

*«Пурсид, ки киштани хирад чӣ? Гуфт, ки киштани хирад омӯхторӣ ва оби он нишоидорӣ ва бори он гузидорӣ ва ҷойи он бихишти равшани ҳамаосонист».*

Андарзнома дар ду қитъа мансуб ба Бахтофарид омадааст, ки бино ба гуфтаи пажӯҳандагон, ба эҳтимол яке аз рӯҳониёни замони Анӯшервон будааст. Ин андарзнома дар фазилати хурсандӣ (қаноат) аст:

*«Бахтофарид гуфт, ки ҳеч марде аз ман тавонгартар нест, магар он ки аз ман хурсандтар аст».*

Қитъае мансуб ба Озарбоди Зардуштиён, набераи Озарбоди Маҳраспандон – рӯҳони маъруфи замони Шопури дувуми Сосонӣ. Дар оғози матн омада, ки Озарбоди Зардуштиён 150 сол умр дида ва 90 сол мӯбадонмӯбадӣ кардааст. Андарзҳои ӯ, бино ба қавли муҳаққиқон, таҷрибӣ ва амалӣ ҳастанд:

*«Гуфт, ки ба тавонгарӣ ва дарвешӣ ва подшоҳӣ расидам. Дар тавонгарӣ гузидордаҳиши (тамиздиҳанда дар баҳиши) ва дар дарвешӣ кӯшову миёнарав ва дар подшоҳӣ фурӯтан будам».<sup>2</sup>*

### III.2.8. Додистони Минуи хирад

«Додистони Минуи хирад» ва ё «Доно ва Минуи хирад» ба маънии «довариҳои рӯҳи хирад», ки дар он шахси намодин ба номи «Доно» пурсишҳое аз хиради шахсиятёфта, яъне, «Минуи хирад» мепурсад. Ин хирад, ки дар муқаддимаи китоб хеле ситуда шудааст, дар пурсиши 1 (банди 195) ва пурсиши 56 (банди 4) бо хиради ғаризӣ (asn-xrad) яке доништа шудааст. Бино бар он чи дар даромади китоб омада, Доно дар ҷустуҷӯи ҳақиқат ба кишварҳои бисёр сафар карда, бо донишмандони гуногун ба гуфтугӯ пардохта, аз андешаҳои ақидаҳои мухталиф оғоҳ гардидааст. Вақте ки ба арзиши хирад пай мебарад (пурсиши 1, банди 51), онро бармегузинад, Минуи хирад бар ӯ зоҳир мешавад, то ба пурсишҳои ӯ посух гӯяд. Ин дoston бо он чи дар дебочаи «Шканд гумоник визор», «Хем ва хиради Фаррухмард» ва боби «Бурзуяи табиб» дар «Калилаву Димна» омадааст, хеле шабоҳат дорад.

---

<sup>1</sup> میرفخرایی، م. اندرز کوتاه// تاریخ جامع ایران؛ص. 338  
<sup>2</sup>نوابی، ی. مجموعه مقالات،ص. 504-524-121-116؛ عریان، س. متن های پهلوی،ص.؛ میرفخرایی، م. اندرز کوتاه// تاریخ جامع ایران؛ص. 338؛ تفضلی، تاریخ ادبیات،ص. 194-195؛ .

Донишмандон достони «Минуи хирад»-ро бино ба сабаби дар бар доштани андарзу ҳиками бисёр ва ситоиши хирад ба гурӯҳи адабиёти андарзӣ дохил кардаанд. Андарзҳои ин китоб бештар аз навъи ҳикмати амалӣ ва таҷрибист, аммо дар ин асар мазмунҳои устуравӣ ва дostonҳову афсонаҳои куҳани эронӣ низ дида мешавад. Ин китоб монанди бештари осори адабиёти паҳлавӣ бар асоси суннати шифоҳӣ тадвин ёфта, номи гирдоваранда ва соли таълифаш маълум нест. Дар «Минуи хирад» аз ҷангҳои румиёну туркон бо Эрон бисёр сухан рафта, аммо аз араб ва ислом зикре нест, аз ин рӯ гуфтан мумкин аст, ки дар охириҳои давраи Сосониён таълиф гардидааст.

Матни асар шомили як даромад ва 62 пурсишу посух аст. Дар даромади асар мусанниф худро ҳамчун «Доно»-е шиносонида, аз инқирози дини зардуштӣ ва рӯй овардани мардум ба динҳои дигар сухан меронад. Дар боби якум пайдоиши ҷаҳон, ба дӯзах ё бихишт рафтани равон пас аз марг аз мавқеи дини зардуштӣ шарҳ ёфтааст. Намунае аз пурсишҳои боби якуми «Минуи хирад» чунин аст:

*«Барои наҷоти равон ва саодати тан чӣ чиз накӯтарин аст? Он чизе, ки аз номаи динӣ бошад ва фатҳу шодмонӣ ва хушбахтӣ дар ин кишвар пойдор бимонад ва некию суд ба офаридагони Аҳурамаздо бирасонад. Донишу ростию покӣ метавонанд зиндагонии ҷаҳон ва ҷаҳонӣро шоду некӯ доранд ва дар сарои дигар ошонро растагор намоянд».*<sup>1</sup>

Боби дувуми «Минуи хирад», ки нахустин саволи Доно бо он шурӯъ мешавад, тақрибан дорои 100 фикраи андарзӣ ва пандуахлоқист. Чунин андарзҳоро дар «Минуи хирад» пайдо кардан мумкин аст:

*«Аз давлатмандон бенаво касест, ки бо он чи дорад, хурсанд набошад ва аз бенавоён он кас давлатманд аст, ки ба ҳар чӣ дорад, созгор ва хурсанд бошад»; «Коҳилиро аз худ дур дор, в-агарна, ӯ туро аз кори нек дур хоҳад дошт».*<sup>2</sup>

Дар бобҳои дигар вобаста ба пурсишу посухҳои Донову Минуи хирад дostonу ривоятҳо, рӯйдодҳои таърихӣ, асотирии мардуми эронинаҷод, номи паҳлавонону шоҳони Эрони бостон – Каюмарс, Хушанг, Ҷамшед, Сом, Гаршосп, Кайхусрав, баъзе шоҳони сулолаи Сосониён ва рӯйдодҳои замони онҳо оварда шудаанд. Масалан, дар боби бистуяк дар бораи Ҷамшед ва суде, ки ӯ ба ҷаҳон овард (мутобиқи маводи китоби «Видевдат»-и «Авесто») маълумоте дарҷ гардидааст.

«Минуи хирад» ғояи подшоҳи одил, ҳукмронии одилоноро талқин менамояд. Гарчанде ин ғоя мутобиқи талаботи дини зардуштӣ баён гардидааст, дар замони таълифи асар як ҷиҳати мусбат ба шумор меравад. Дар ин боб фикраи зер ҷолиб аст:

*«Як деҳхудои одилу дурусткор бештар аз подшоҳи золими як мамлакат».*<sup>3</sup>

---

1. تفضلی، احمد. مینوی خرد. تهران، 1347، ص. 123.

2. همان جا، همان کتاب؛ ص. 124.

3. تفضلی، احمد. مینوی خرد. تهران، 1347، ص. 124.

Дар байни пайравони дини зардуштӣ «Минуи хирад» яке аз асарҳои муътабар ба шумор мерафт. Азбаски он ба забони сода таълиф шуда, бештар хусусияти энциклопедӣ дорад, мӯбадон дар таълими ҷавонон аз он истифода менамудаанд. Қисмати андарзӣ, пандуахлоқии «Минуи хирад» низ ба таълиму тарбияи ҷавонон хеле мувофиқ буд. «Минуи хирад» ба қавли яке аз муҳаққиқони адабиёти паҳлавӣ, Ҷаҳонгир Товодиё, «усулан як матни динист, валеқ рӯҳи саршор аз хирад дар он фармонравой мекунад».<sup>1</sup>

Он ситоиши хирад аз дониш, ки дар адабиёти форсии тоҷикӣ дар давраҳои нав бармеҳӯрем ва мисоли беҳтарини он оғози «Шоҳнома»-и Ҳақим Фирдавсист, бешубҳа, идомаи анъанаи адабиёти бостонии халқҳои эронинаҷод аст. Маъхазии асарҳои нахустини пандуахлоқӣ дар адабиёти форсии тоҷикӣ низ ҳамон андарзномаҳои адабиёти бостон, аз ҷумла боби дууми «Минуи хирад» ва ғайра буданд. Таълимоте, ки дар «Минуи хирад» оид ба хирад баён гардидааст, дар Юнон назари худро дар фалсафаи ақлӣ (ратсионалистӣ)-и Арасту дорад.<sup>2</sup>

Қадимтарин нусхаи дастнависи паҳлавии «Минуи хирад» нусхаи китобаткардаи Меҳрубон писари Анӯшак (1589) буда, он соли 1936 дар Копенгаген ба таври аксӣ (факсимилӣ) ба таъб расидааст. «Минуи хирад» ду таҳрири позандӣ, тарҷумаи санскрит (асри XIII Нериосинг), ду тарҷумаи манзуми форсӣ (соли 1612, дар баҳри мутақориб – назмкунанда Дороб Санҷоно писари Хурмуздёр), як тарҷумаи мансури форсӣ («Ривоёти Дороби Хурмуздёр», ҷилди 1) дорад. Нусхаҳои манзуми форсӣ яке дорои 54 пурсиш ва дигаре 64 пурсиш дар китобхонаи миллии Фаронса (Париж) маҳфузанд. Тарҷумаи англисии «Минуи хирад»-ро олими англис Е. В. Вест анҷом дода, дар силсилаи «Sacred Books East» («Китобҳои муқаддаси Шарқ», ҷ. XXIV) с. 1885 ба таъб расонидааст.<sup>3</sup>

### Намунаҳо аз «Додистони Минуи хирад»:

*Пурсид Доно аз Минуи хирад, ки кадом кори нек меҳтару беҳтар (аст)? Минуи хирад посух кард, ки меҳтарин кори нек родӣ ва дудигар ростӣ ва издивоҷ бо наздикон, седигар Гоҳанбор (чашиҳои шаиғонаи сол), ҷаҳорум ҳама (дастуроти) динро (ба ҷой овардан), панҷум*

1. اتاواديا جهانگیر. زبان و ادبيات پهلوی؛ ص. 89.

<sup>2</sup> Диловаров М. Минуи хирад // ЭАСТ, ҷ. 2. - С. 255-256.

<sup>3</sup> Накл аз Диловаров М. Минуи хирад. - С. 256. 1347. تهران، خرد. مینوی احمد. تفضلی، 339-342. میدفخرایی، م. مینوی خرد//تاریخ جامع ایران، ص. 342. Брагинский И. С. Из истории таджикской народной поэзии. - Москва, 1956; Литература Древнего Востока; Достони «Минуи хирад», тарҷумаи Д. Саймуддин // Маҷ. «Садои Шарқ», 1994, №3-4. - С. 118-142; Диловаров М. Минуи хирад. - С. 255-256.

парастиши эзадон ва меҳмониши мусофирон кардан, шашум барои ҳар кас некӣ хоستان, некчашиӣ ба некон (кардан)<sup>1</sup>.

Пурсид Доно аз Минуи хирад, ки хирад беҳтар аст ё ҳунар? Минуи хирад посух кард, ки хирад, ки бо он некӣ нест, онро хирад набояд донист. Ва ҳунар, ки бо он хирад нест, онро ҳунар набояд донист<sup>2</sup>.

Пурсид Доно аз Минуи хирад, ки кадом шодӣ аз андӯх бадтар аст? Минуи хирад посух кард, ки он ки хоста аз роҳи гунаҳ андӯхта ва бад-он шод бувад. Пас, он шодӣ аз андӯх бадтар аст<sup>3</sup>.

Пурсид Доно аз Минуи хирад, ки ба бим ва сухани дурӯғ зистан бадтар (аст) ё марг? Минуи хирад посух кард, ки ба бим ва сухани дурӯғ зистан аз марг бадтар (аст), чи барои зиндагии ҳар кас шодию хушии гетӣ бояд. Чун ӯро шодию хушии гетӣ нест ва биму сухани дурӯғ бо ӯст, (чунин зиндагӣ аз) марг бадтар гуфта шудааст<sup>4</sup>.

Пурсид Доно аз Минуи хирад, ки подшоҳонро чӣ чиз судмандтар ва чӣ зиёнкортар(аст)? Минуи хирад посух кард, ки подшоҳонро машварат бо доноёну некон судмандтар (аст) ва онро гуфтугӯву машварат бо гайбаткунандагон ва дурӯён зиёнкортар<sup>5</sup>.

### III.2.10. Рисолаи Йуишти фриён ва Ахт

Йуишт (форсии миёна: Yuišt I Friyan) яке аз покони дини зурдуштӣ ва аз бемаргон аст. Дар яшти 5, банди 51 ва яшти 13 банди 120 аз ӯ сухан рафта ва ба мунозираи ӯ бо Ахти чодугар ишора шудааст.<sup>6</sup> Падари ӯ-Фриён аз турониёни дӯсти Зардушт буд. Бино бар маълумоти «Авесто» (Обон-яшт, бандҳои 81-83) Йуишт аз хонадони Фриён барои Аноҳито, эзадбонуи обҳо дар ҷазираи миёни обҳои мавҷзанандаи рӯди асотирии Аранг сад аспи нар, ҳазор гову даҳ ҳазор гӯсфанд қурбонӣ кард ва аз ӯ хост, то бар Ахти бадандеши кӯрдил пирӯз шавад ва ба 99 пурсиши душворе, ки ӯ аз рӯи душманӣ мепурсад, посух гӯяд. Аноҳито ин дархостро бароварда месозад. Ин дoston аз ривояти кӯхани Эрони Бостон маншаъ гирифта, сина ба сина хифз ва дар ҷараёни интиқол чузъиёте ба он афзуда шудааст. Эҳтимол меравад, ки дар замони Сосониён китобат шуда бошад. Бино бар «Авесто» (Фарвардин-яшт, банди 120), Йуишт аз хонадони Фриён, марди порсо ва аз хонадони зардуштӣ буда, ба гунае, ки фраваҳари покдини ӯ ситуда шудааст. Хонадони Фриён аз турониён будаанд, ки дар «Гоҳон» (Ясни 46, банди 12) аз онҳо ба некӣ ёд шудааст. Дар адабиёти паҳлавӣ Йуишт шахсияти устурай ба худ

<sup>1</sup>Достони «Минуи хирад», тарҷумаи Д.Саймуддин.-С.124.

<sup>2</sup>Ҳамон ҷо. С 129.

<sup>3</sup>Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

<sup>4</sup>Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

<sup>5</sup>Ҳамон ҷо, ҳамон саҳифа.

<sup>6</sup>قلی زاده، خسرو. فرهنگ اساطیر، ص.462



мегирад ва аз ҷовидононе ба шумор меояд, ки дар поёни ҷаҳон маъмури иҷрои растохез дар кишвари Хуванирас ҳастанд.<sup>1</sup>

Ахт аз рӯҳониёни муҳолифи дини зардуштӣ буда, ки ба ҳамин муносибат дар «Авесто» (Обон-яшт, 81-83) сифатҳои «бадандеш», «пурмакр» ва дар адабиёти паҳлавӣ унвони «ҷодугар»-ро гирифтааст. Дар китоби севуми «Динкард» (210-212) аз ӯ бо сифати ҷодугар, нодон, пири дурӯғ ва торикандеш ёд шудааст. Ҳамчунин даҳ зидандарз дар баробари андарзҳои Зардушт ба ӯ нисбат дода шудааст. Дар китоби нуҳуми «Динкард» (869) низ дорои сифати баддин ва торикандеш аст.<sup>2</sup> Дар «Гохон» зикре аз Ахт нест, аммо аз шахсияти дигаре ба номи Кавина ёд шуда, ки аз муҳолифони Зардушт будааст. Ҳамин шахс аст, ки дар «Ғузидаҳои Зодиспарам» (фасли 25, банди 1) Кави Випа номида шуда ва дар китоби нуҳуми «Динкард» бо Ахт яке доништа шудааст.<sup>3</sup>

Бино бар «Рисолаи Ӯишти Фриён» (фасли 3, банди 36), Ҳуфриё-хоҳари Ӯишт зани Ахт буд ва ба сабаби посухе, ки хилофи майли Ахт дода буд, ба дасти шавҳари худ кушта шудааст (фасли 3, банди 60). Ахт бародари худро низ мекушад, то дурустӣ ё нодурустии гуфтаи Ӯишт ба ӯ маълум гардад (фасли 3, бандҳои 6-11). Дар «Ғузидаҳои Зодиспарам» (фасли 25, банди 10) омада, ки Кави Випа, ки ҳамон Ахти ҷодугар аст, дар ҳаштодсолагии дин кушта шудааст. Ӯро аз муосирони Зардушт доништаанд, ки умри дароз дидааст.<sup>4</sup>

«Рисолаи Ӯишти Фриён» аз 6 боб иборат буда, дорои 3000 калимаи паҳлавист. Мазмуни мухтасари дoston чунин аст. «Ахт ном ҷодугаре бо 70 ҳазор лашкар ба шаҳри намодин бо унвони «шаҳри Пурсишгузорон» (шаҳри кушояндагон ва ё ҳалқунандагони муаммо) ворид мешавад. Ахт қасди нобудии шаҳро дорад ва бар он аст, ки шаҳро зери пой филон андохта, несту нобуд кунад. Чун ба он ҷо мерасад, мардуме, ки синнашон аз понздаҳ бештар набошад, фаро мехонад ва суолхоро матраҳ мекунад. Ҳар касро, ки натавонад ба суолҳои ӯ посух гӯяд, мекушад (фасли 1, бандҳои 1-6). Ахт 900 марди рӯҳонӣ ва 9 духтарро аз хонадони Спитамон Зардушт, ки ба саволҳои ӯ ҷавоб дода натавонистанд, мекушад (фасли 2, банди 11). Саранҷом дар шаҳр марде бо номи Маҳраспанд (ё Мораспанд) ба Ахт мегӯяд: Шаҳро зери пойи пилон лагадмол макун ва мардуми бегуноҳро накуш. Дар ин шаҳр мардест ба номи Ӯишти Фриён, ки синнаш аз понздаҳ бештар нест ва метавонад ба пурсишҳои ту посух гӯяд. Ахт мепазирад ва ба Ӯишт паём мефиристад, то назди ӯ ояд ва ба 33 пурсиши ӯ посух гӯяд. Ахт таҳдид мекунад, ки агар Ӯишт натавонад ба пурсишҳо посух гӯяд, ӯро ҳамон ҷо мекушад. Ӯишт мепазирад ва

1. کریستن سن، آرتور. کیانیان. ترجمه ذبیح الله صفا، تهران، 1336، ص. 219-224.

2. میرفخرایی، م. یوشت فریان و اخت//تاریخ جامع ایران، ص. 343.

3. تقضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 252.

4. همان جا، ص. 253.

ба назди Ахт меояд (фасли 1, бандҳои 7-14), аммо чун аз монеаҳое, ки Ахт дар роҳи посухгӯии ӯ эҷод кардааст, то ҳимояти амшоспандон ва эзадонро аз ӯ боз дорад, огоҳ аст. Аз чумла, Ахт палидери дар ҷойи Йуишт пинҳон кардааст, то ӯро биолояд. Йуишт ба хона намедарояд, то он ки Ахт он монеаҳоро баргараф месозад (фасли 1, бандҳои 14-19).

Дар фаслҳои дувуму сеум 33 пурсиши Ахт ва ҷавобҳои Йуишт омадааст, ки пажӯҳандагон ин пурсишу посухҳоро бар асоси мавзӯ ба чанд гурӯҳ тақсим кардаанд:

1. Пурсишҳое, ки оҳанги зардуштӣ доранд ва дар онҳо ба боварҳо ва одобу русуми динӣ ишора шудааст.

2. Пурсишҳо, ки марбут ба ҳушёрӣ зиракӣ ва огоҳии умумӣ ҳастанд.

3. Пурсишҳое, ки ҷанбаи ахлоқи умумӣ доранд ва аз шумули андарзҳо ба шумор меоянд.<sup>1</sup>

Саранҷом Йуишти Фриён бо зиракӣ ва бо ёрии яздон ба 33 саволи Ахт ҷавоб медиҳад ва худ чанд саволе пеши ҷодугар мегузорад. Ахт ба саволҳои Йуишт ҷавоб дода наметавонад ва Аҳриман низ ӯро ёрӣ намекунад, бино бар ин, бо дасти ӯ кушта мешавад.

Сужаи «Рисолаи Йуишти Фриён ва Ахт», бино ба гуфтаи пажӯҳандагон, аз манбаи қадимтар – «Обон-яшт»-и «Авесто» гирифта шудааст. Дар «Авесто» ин қисса ҳамагӣ се банд аст. Йуишти Фриён ба Ардвисура Анохита қурбониҳо пешкаш карда, аз ӯ хоҳиш менамояд, ки дар ҷавоб додан ба 99 (дар «Рисолаи Йуишти Фриён» 33) саволи сарбастаи Ахти ҷодугар ӯро ёвар бошад. Ардвисура Анохита ин хоҳиши ӯро ба ҷо меорад. Дар қиссаи паҳлавии «Рисолаи Йуишти Фриён» лаҳзаҳои дидори Ахт ва Йуишт, саволу ҷавоби онҳо бо ҷузъиёташ тасвир ёфтааст. Саволҳои Ахти ҷодугар ба масъалаҳои дини зардуштӣ, илми тиб, ҳаёти ҷонварону парандагон, инчунин дигар масъалаҳои ахлоқию иҷтимоӣ марбутанд. Баъзе саволҳо аз ҷиҳати шакл чистон ва луғазҳои маъмулиянд. Масалан, пурсиши зер ҳам аз ҷиҳати мазмун ва ҳам шакл ҷолиби диққат аст: «Он чист, ки даҳ по, се сар, шаш чашм, шаш гӯш, ду дум, се бинӣ, чаҳор шох се пушт дорад ва тамоми ҷаҳонро зиндагӣ ва хӯриш аз ӯст?» Ҷавоб «Марде, ки бо ду барзагов ҷуфт меронад».<sup>2</sup>

Насри рисола содаву раван ва аз ҷумлаҳои кӯтоҳ иборат аст. Тадвини ниҳии он эҳтимолан дар охириҳои аҳди Сосонӣ китобат шудааст, аммо баъдҳо дар он тағйирот ворид гаштааст, зеро нуфузи забони форсӣ дар он дида мешавад. «Рисолаи Йуишти Фриён ва Ахт» ба адабиёти форсии тоҷикӣ бетаъсир набудааст, шабоҳатҳои миёни баҳше аз ин рисола ва мунозираи марди динӣ ва Говпой (бар пояи

1. اميرفخرايى، م. يوشث فریان و اخنت//تاريخ جامع ايران، ص344-345.

<sup>2</sup> Диловаров М. Йуишти Фриён.// ЭАСТ, ҷ.1.-С.

дах пурсишу посух), ки дар боби чоруми «Марзбоннома» омадааст, дида мешавад.<sup>1</sup>

Танҳо якчанд нусхаи ба хатти паҳлавӣ таълифёфтаи «Рисолаи Ёуишти Фриён» то замони мо расида, ки муҳимтарини онҳо соли 1266 бо дасти Рустами Мехрпаноҳ китобат шудааст. «Рисолаи Ёуишти Фриён»-ро дар асри 18 шарқшиносони аврупоӣ низ нашр ва ба забонҳои англисӣ ва франсаӣ тарҷума кардаанд.<sup>2</sup>

### Ш.2.11. Таърих ва ҷуғрофия

Аз китобҳои таърихӣ ва ҷуғрофии паҳлавӣ ба забони асли микдори каме то ба имрӯз расидааст, аммо бисёре аз онҳо дар асрҳои У111-Х мавҷуд буда ва нависандагони Арабу Аҷам ҳангоми навиштани таърих ва ҷуғрофияи Эрон Осиеи Миёна аз онҳо истифода кардаанд. Аз китобҳои таърихӣ ва паҳлавӣ, ки бисёре аз дostonҳои «Шоҳнома» аз он маншаъ гирифтаанд, танҳо «Корномаи Ардашери Бобакон» боқӣ мондааст.

#### Ш.2.11. 1. Корномаи Ардашери Бобакон

«Корномаи Ардашери Бобакон» дostonи таърихӣ ва омехта бо афсона дар бораи зиндагӣ ва подшоҳии асосгузори давлати Сосониён Ардашери Бобакон аст. Дoston бар асоси ривоятҳои куҳантаре дар охири давлати Сосонӣ навишта шудааст. Дар оғози дoston, пас аз шарҳи кӯтоҳе дар бораи вазъи Эрон баъд аз марги Искандари Макдунӣ ва ҳукумати мулукуттавоифии Ашкониён омадааст, ки Ардавони чаҳорум – охири шоҳи ашконӣ бар Порс ва ноҳияҳои наздик ба он фармон меронд. Бобак, ниёи модарии Ардашер дар он айём волии (марзбон) Порс буд. Бобак писар надошт ва Сосон, ки аз насли Дорои Дороён (Дорюши севуми Ҳахоманишӣ) буд, ҷӯпонии ӯро ба уҳда дошт. Бобак намедонист, ки Сосон аз насли шоҳони Эрон аст, то ин ки шабе хоб дид, ки хуршед аз сари Сосон метобад ва ҳама чаҳонро равшанӣ мебахшад. Шаби дувум низ дар хоб дид, ки Сосон дар пили орастаи сапеде нишастааст ва ҳама ба ӯ таъзим мекунанду офарин мехонанд. Шаби севум ҳам дар хоб дид, ки се оташкадаи бузург: Фарнбағ, Гушнаб ва Барзинмехр дар хонаи Сосон медурахшанд ва ба ҳама чаҳон равшанӣ мебахшанд. Бобак аз хобгузoron таъбири хоби худро хост. Онҳо гуфтанд, ки он мард, ки дар хоб дидаӣ ва ё яке аз фарзандонаш ба подшоҳии чаҳон хоҳад расид, зеро хуршед ва пили ораста нишони тавоноӣ ва пирӯзист. Бобак Сосонро пеш хонд ва чун аз наҷоди вай огоҳ гардид, ӯро

<sup>1</sup>معين، محمد يوشث فریان و مرزبان نامه، تهران، 1324.

<sup>2</sup>جعفرى د. ماتیکان يوشث فریان. تهران، 3431365; ميرفخرایی، م. رساله يوشث فریان و اخت/تاریخ جامع ایران، ص. 355-351 تفضل، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص.

гиромӣ дошт ва духтари худро ба ӯ дод. Аз ин издивоҷ Ардашер ба дунё омад. Сосон вафот кард ва Бобак Ардашерро ба фарзандӣ пазируфт ба хунарҳои гуногун парварид, то дар Порс шухратёр шуд.

Ардашон аз хунарҳои Ардашер огоҳ шуд ва аз Бобак хост, ки ӯро ба дарбор фириштад. Бобак ногузир Ардашерро ба дарбор фириштад. Ба фармони Ардашон Ардашер ҳар рӯз бо шоҳзодагон ба нахчиру чавгон мепардохт. Ардашер дар ҳама хунарҳо саромади ҳамагон шуд ва ба сабаби далерӣ аз чашми шоҳ афтад ва ба фармони ӯ ба охури сутурон фириштада шуд. Ардашон канизи зебое дошт, ки дил ба Ардашер баст ва Ардашерро ёрӣ кард, то аз дарбори Ардашон бо зинафзори дираму динор ва ду асп бигрезанд.

Ардашер ба сӯи сарнавишти пуршукӯҳе, ки ситорагон барои ӯ пешгӯӣ карда буданд, шитофт. Ардашон ба таъқиби онҳо пардохт, аммо Ардашер бо пуштибонии мардуми Порсу Исфаҳон ва дигар фармонравоёни маҳаллӣ ва низ бо ёрии фарраи эзадӣ, ки ӯро ҳамроҳӣ мекард, Ардашонро шикаст дод ва духтари ӯро ба занӣ гирифт. Ба ин тартиб набераи Ҳахоманишиён бо набераи Ашкониён (дарвоқеъ, бо Каёниён, зеро Сосониён Дорюшро охири подшоҳи Каёнӣ медонистанд) пайванди заносӯӣ баст, то ба тарқибе, ки ба подшоҳии ӯ машруӣят мебахшад, даст ёбад. Форс ва Кирмон сахнаи корномаи Ардашер дар мақоми подшоҳист. Ӯ созандаи шаҳрҳо ва равшанкунандаи оташкадаҳост. Ардашер ба набарди шоҳони маҳаллӣ меравад ва шоҳи курдони мод-Кирми Ҳафтвод, ки сипоҳиёнаш ба роҳзании дарёӣ дар ноҳияҳои чанубӣ машғул буданд ва Мехргон-аз фармонравоёни Форсро аз миён бармедорад.

Ҳамсари Ардашер (духтари Ардашон) бо игвои бародарони табъидияш дар Кобул меҳаҳад, то Ардашерро бо заҳр бикушад, аммо ноком мемонад. Чун розаш ошкор мешавад, ба марг маҳкум мегардад. Аммо мӯбаде, ки ба куштани зан маъмур шуда буд, чун мефаҳмад, ки зан бордор аст, аз куштани ӯ дармегузарад. Зан дар ниҳон фарзанде мезояд, ки номи Шопур бар вай мениҳанд. Мӯбад муддатҳо Ардашерро аз ин хабар огоҳ намесозад, то ин ки Ардашер аз фармони худ пушаймон мешавад, Шопурро назди вай меоварад. Дар ин миён ситорашиносон пешгӯӣ мекунанд, ки давоми подшоҳии Ардашер бо издивоҷи писаре аз хонадони ӯ бо духтаре аз хонаводаи Мехрак, ки ба дасти Ардашер кушта шуда буд, ҳосил мешавад. Ардашер фармон медиҳад, ки ҳама фарзандони Мехракро бичӯянд ва бикушанд. Як духтари Мехрак аз марг наҷот меёбад ва барзгаре ӯро тарбият мекунад. Рӯзе Шопур бо ин духтар воমেҳӯрад ва шефтаи вай мешавад ва беҳабар аз падар бо ӯ издивоҷ мекунад, ки Хурмуз аз ӯ зода мешавад. Ардашер танҳо ҳангоме аз ин роз огоҳ мешавад, ки набераашро мебинад ва

дармеёбад, ки пешгӯӣ ба ҳақиқат пайвастааст. Дар асар ҳамчунин аз шаҳрҳое, ки Ардашер сохтааст, суҳан меравад.<sup>1</sup>

Аз баррасии «Корномаи Ардашери Бобакон» бармеояд, ки дар асар шаҷараи Ардашер, таваллуду даврони ҷавонӣ, тарбия ва омӯзиши илму ҳунарҳои замон, мағлуб сохтани Ардавон, муборизаи Ардашер бо душманони дохилӣ ва хориҷии кишвар ба хоҳири ташкил кардани давлати мутамаркиз, таваллуди фарзандаш - Шопур, наберааш Хурмузд ва ғайра ба тартиби муайян нақл шудааст. Илова бар ин, «Корномаи Ардашери Бобакон» ба масобаи нахустромани таърихиест, ки мавзӯҳои ҷуғрофӣ, монанди номи шаҳрҳо, ки Ардашер бино кардааст, аз ҷумла Ромиши Ардашер – Туч, Бухт Ардашер – Бушеҳр, Ардашер Хуррах – Фирӯзобод, нӯҷуму ситорашиносӣ, таъбири хоб, пешгӯӣ, устураву афсонаро ҳам дар бар дорад.

Дар байни осори адабии ғайридини паҳлавӣ «Корномаи Ардашери Бобакон» калонтарин асар аст, ки 5600 калимаро дар бар мегирад. Дастнависҳои ин асар бо чанд матни дигари паҳлавӣ дар як маҷмӯа то замони мо расидаанд ва нусхаи қадимии он дастнависест, ки соли 1322 китобат шудааст. «Корномаи Ардашери Бобакон»-ро котибон ва дастурони зардуштӣ ба 18 боб (бо сарлавҳаҳо) ва як хотима бахш кардаанд, ки хотима иловаи давраҳои баъдӣ мебошад.

Дар «Корномаи Ардашери Бобакон» воқеаҳои таърихӣ бо лаҳзаҳои хамосӣ, ишқӣ ва ривояти афсонавӣ омехта гардидаанд. Суҷаи асар бо андак тағйирот дар боби «Подшоҳии Ашкониён»-и «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ оварда шудааст, аммо аз он ҷо, ки ба зоҳир кори мӯбадони зардуштӣ будааст, унсурҳои зардуштии он дар «Шоҳнома» ҳазф шудааст. Маълумоти осори таърихӣ арабӣ ва форсии асрҳои 1X–X оид ба пайдоиши давлати Сосониён ва саргузашти асосгузори он – Ардашери Бобакон ба «Корномаи Ардашери Бобакон» монанд аст. «Корномаи Ардашери Бобакон» чун дигар осори адабии паҳлавӣ дар асоси қиссаву ривоятҳои халқӣ ба вучуд омада, баъдан ба асари адабиёти хаттӣ табдил ёфтааст. Ин китоб ривояти шифоҳии кӯхнатаре доштааст, зеро достони таваллуди Ардашер монанди достони зода шудани Куруш аст. Ин қисса дар замони Сосониён ва давраҳои баъдӣ хеле машҳур будааст.<sup>2</sup>

«Корномаи Ардашери Бобакон» яке аз аввалин кӯшишҳои инъикоси бадеии воқеияти таърихӣ буда, муҳимтарин хусусиятҳои адабиёти бадеӣ (суҷаи печидаи мочароӣ, бофти бадеӣ, тавсифи қаҳрамонон, нутқи персонажҳои асар ва ғайра)-ро дорост. Рӯйдодҳои таърихӣ пайдарпай ва бо тартиби муқаррарӣ тасвир шудаанд, аз ин рӯ суҷаи асар хусусияти таърихӣ воқеӣ гирифтааст. Баъзан, хангоме ки воқеаҳои таърихӣ хушқу ҳолӣ тасвир мешаванд, «Корномаи Ардашери Бобакон» ба солномаҳо шабоҳат пайдо

1. Касроӣ, Аҳмад. Карномаи ардашир баёкан. تهران, 1369. مشكور، مجمدجواد. كارنامه اردشير بابكان. تهران، 1242

2. ميرفخرايى. م. كارنامه اردشير بابكان//تاريخ جامع ايران، 351-354

мекунад. Ин асар бо услуби нигориши худ давраи саршавии эҷоди асарҳои таърихии бадеӣ буда, дар ривочи адабиёти форсии тоҷикӣ, ташаккули навъи қисса (достон)-ҳои фалсафии пандуахлоқӣ таъсир расонидааст.<sup>1</sup>

### Ш.2.11.2. Шаҳристонҳои Эрон

«Шаҳристонҳои Эрон» рисолаи хурдест дар шашсад банд, ки таърихи бунёди шаҳрҳои Эронро аз гоҳи бостон то ба фарҷоми сулолаи Сосониён фаро мегирад. Ин рисола танҳо асари боқимонда ба забони паҳлавӣ дар бораи ҷуғрофиёи таърихии сосонист. Муҳаққиқон бар онанд, ки дар давраи Сосониён осори комилтару ҷомеътаре дар ин замина вучуд доштааст, зеро дар дигар осори паҳлавӣ, монанди «Динкард», «Бундаҳишн» ва «Ғузидаҳои Зодиспарам» дар бораи шаҳрҳову кӯҳҳо ва рӯдҳо ба чунин асаре ишора шудааст.

«Шаҳристонҳои Эрон» феҳристе аз номи шаҳрҳои аслии Эрон аст ҳамроҳ бо маълумоте дар бораи шахсиятҳои таърихӣ (Ардашер, Шопур) ва асотирӣ (Ҷамшед, Фаридун, Ковус, Заҳҳок, Афросиёб) ва низ афсонаҳои марбут ба онҳо. Паҳлавишиносон бар онанд, ки ин таҳрири ниҳонии рисола дар асри IX сураат гирифтааст, (банди 61), аммо фарогири ривоёт ва суннатҳои қадимӣ низ ҳаст, ки тибқи маъмул омеае аз унсурҳои каёнӣю сосонӣ дар он инъикос шудаанд. Аз ин рӯ, тадвини аввалияи ин рисола ба солҳои охири замони Сосониён бармегардад.<sup>2</sup>

Дар асоси матни рисола, Эроншаҳр бино бар ҷаҳор ҷиҳати аслии ҷуғрофӣ ба шарқ, ғарб, ҷануб ва шимол тақсим шудааст. Нахуст номи шаҳрҳои меояд, ки дар шарқ (Хуросон) қарор доштаанд. Феҳристи ин шаҳрҳо бо Самарқанд оғоз ва ба «Шодфаррухи Хусрав», ки ҷойи он маълум нест, поён мепазирад (бандҳои 2-20). Пас аз он шаҳрҳои ноҳияи ғарб (Ховарон) номбар мешаванд, ки нахустини онҳо Тайсафун ва охиринашон Мадина (Ясриб) аст (бандҳои 21-33). Номи шаҳрҳои, ки дар банди 33 омадааст, Шом (Сурия), Яман, Куфа, Макка, Мадина ва шаҳрҳои Африқо (алалхусус Миср) мавқеияти Сосониёнро дар замони Хусрави Парвиз бозтоб медиҳад, ки ба тартиб Антокия ва дигар шаҳрҳои Сурияву Арабистони ҷанубӣ ва Мисрро ба тасарруфи худ даровардаанд.<sup>3</sup> Шаҳрҳои ноҳияи ҷануб (Нимрӯз) бахши баъдии рисола аст, ки бо Кобул оғоз ва бо Ашкар, ки макони он маълум нест, поён меёбад. Ноҳияи шимол бо шаҳристони Озарбойҷон оғоз мешавад ва бо Омил (ба эҳтимоли пажӯҳандагон, маркази Табаристон, Мозандарони

<sup>1</sup> Саймуддинов Д. Корномаи Ардашери Бобакон // ЭАСТ, ҷ.2. -С.63.; Книга деяний Ардашер сына Папака.- М, 1987; 351-354.ص. کارنامه اردشیر بابکان//تاریخ جامع ایران،ص. 1342. تفصیلی. تاریخ ادبیات،ص. 260؛مشکور،م. کارنامه اردشیر بابکان،تهران،1349؛کسروی،ا. کارنامه اردشیر بابکان،تهران،1342. تفصیلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام،ص. 265

<sup>3</sup> Marguart J. A Caralogue of the Provincial Capitals of Eransahr.- Rome, 1931.- P. 72-73. 355. ص. نقل از میرفخرایی،کتاب ذکر شده،ص.

имрӯзӣ будааст) хатм мешавад (бандҳои 56-60). Бунёди шаҳри Бағдод ба дасти Абӯмансур банди охирини (61) рисола аст.<sup>1</sup>

Дар ин рисола низ монанди дигар осори паҳлавӣ устураҳо бо воқеиятҳои таърихӣ дар ҳам меомезанд. Интисоби бунёди баъзе аз шаҳрҳо ба шоҳони асотирӣ, монанди Ҷамшед, Фаридун, Заҳҳок ва Афросиёб ба ҳавзаи асотирӣ тааллуқ дорад. Аз сӯйи дигар, интисоби бунёди баъзе аз шаҳрҳои дигар, монанди Гӯр (Ардашер Хуррах), Белобод (Ҷунди Шопур) ва ғайра ба шоҳони сосонӣ ҳақиқати таърихист ва аз манбаъҳои дигар таъйид мешавад. Бино ба гуфтаи Аҳмади Тафаззулӣ, шоҳони Сосонӣ одат доштаанд, ки ҳар гоҳ шаҳреро бунёд мекарданд ва ё шаҳр ё дехеро вусъат меоданду дигар истеҳкоме барои он дуруст мекарданд, номи худро бар он мениҳоданд ва шаҳр номи нав касб мекард. Ин расми номатлуб боис шуда, ки баъзе шаҳрҳо чандин бор ном иваз кунанд, монанди Гӯр, Ардашер Хуррах, Фирӯзобод ва дар мавридҳои номи аслии ин шаҳрҳо фаромӯш шаванд. Дар мавридҳои интисоби бунёди шаҳре ба шахсиятҳои вафтида бар асари шабоҳати лафзӣ ва иштиқоқи омиёна будааст, монанди интисоби шаҳри Буст ба Баствар ё Рухат (Рухач) ба Рухом ё Шуш ва Шуштар ба Шишиндухт (Шушиндухт).<sup>2</sup>

Рисолаи «Шаҳристонҳои Эрон» дар маҷмӯаи «Матнҳои паҳлавӣ» (18-24) ҷошудааст ва донишмандоне монанди Аҳмади Тафаззулӣ, Содиқи Ҳидоят, Саййиди Урён (ба форсӣ), Моркуарт (ба англисӣ)<sup>3</sup> ва Д. Саймуддин (ба тоҷикӣ) матни онро тарҷумаи баррасӣ карда, ба нашр расондаанд.<sup>4</sup>

### Намунае аз матни «Шаҳристонҳои Эрон»:

*Ба номи неру ва ёрии офаридгор Ҳурмузд дуои нек*

*Шаҳристонҳое, ки дар сарзамини Эроншаҳр бунёд шудаанд, дар рӯзҳои ҷудогона кадом шаҳрёр, ки бунёд кардааст, дубора бар ин ёдгор навишта шуд.*

*Дар самти Хуросон (машириқ) шаҳристони Самарқандро Ковуси Ковадон бунёд гузошт, Сиёвахиш Ковусон анҷом бидод. Кайхусрави Сиёвахиш он ҷо зода шуд ва ӯ отаиши пирӯзманди Баҳромро он ҷо нишонд. Пас, Зардушт дин («Авесто») овард ва аз фармони Вишностиох ҳазору дусад фрагард (бахш) ба диндабирӣ (хатти авестой) ба тахтаҳои заррин канду навишт ва ба ганҷи он отаиш ниҳод. Пас, гуҷаста (малъун) Сикандар (онро) сӯхт ва ба дарё афканд. Сугди ҳафтошён дар (он) буд. Ва ҳафт ошён ин, ки ҳафт*

<sup>1</sup> . تفضلی، احمد. شهرستانهای ایران، شهر های ایران، به کوشش محمد یوسف کیانی، تهران، 1368، ج.2، ص.332

349

<sup>2</sup> تفضلی، احمد. شهرستان های ایران، شهر های ایران، ص.348

<sup>3</sup> میرفخرایی، م. شهرستان های ایران//تاریخ جامع ایران، ص.355.

<sup>4</sup>Матни паҳлавии «Шаҳристонҳои Эрон. Пешгӯфтор, тарҷума ва ташреҳи Д. Саймиддин // Маҷ. «Садои Шарқ», 1998, №5-8.-С. 136-142.

шаҳрёрон дар (он) буд. Яке он Йам (Чамшед), яке он Аҷсидаҳок (Заҳҳок) ва яке он Фаридун ва яке он Манучеҳр ва яке он Ковус ва яке он Лухросп ва яке он Виштоспшоҳ. Пас, гуҷаста Афросиёби Тур ҳар як нишемани девонро буткадаи худоён кард...»<sup>1</sup>

### III.2.11.3. Шигифтиҳо ва барҷастагиҳои Систон

«Шигифтиҳо ва барҷастагиҳои Систон» матни кӯтоҳе дар шонздаҳ банд дар маҷмӯаи «Матнҳои паҳлавӣ» (25-26) омада, ки муаллиф ва соли таълифи он номаълум аст. Ин рисола ягона матни паҳлавист, ки берун аз ноҳияи Форс, ба эҳтимоли пажӯҳандагон, дар охириҳои давраи Сосониён навишта шудааст. Эҳтимол меравад, ки нависандаи рисола систонист ва бо муҳаббат доир ба баёни хусусиятҳои табиӣ ва суннатҳои мардуми Систон мепардозад, ки сабаби бартарии Систон нисбат ба дигар шаҳрҳо шудааст:

1. Дарёи Ҳирманд, дарёчаи Фараздон, дарёчаи Каёнса ва кӯҳи Ушдоштор (банди 2). 2. Ҳушидар, Ҳушидармоҳ, Сушёнс, се наҷотбахши дини зардуштӣ дар ин ҷо зода ва растохез хоҳанд кард (банди 3). 3. Систон паноҳгоҳи фарзандони шохони Каёнӣ пас аз қатли Эраҷ буд. Тибқи ривоёти паҳлавӣ, ҳангоме ки Салму Тур Эраҷро куштанд, Фаридун духтареро, ки аз Эраҷ зода шуда буд, ба дарёчаи Фараздон бурд ва ӯро бипарварид ва ин розро пинҳон дошт, то Манучеҳр зода шуд. Фаридун ба дарёчаи Фараздон рафт ва аз Ардависура Аноҳид ва дигар эзодон барои бозоростани Эроншаҳр ва фарраи Каён мурод хост ва Манучеҳрро бамурод ёфт (бандҳои 4-8). Гуштоспшоҳ дини зардуштиро дар Систон таблиғ кард ва пайравоне ёфт, монанди Сен, ки ҳамроҳ бо Бурзмехр «Бағон-наск»-и «Авесто»-ро тадвин кард (бандҳои 9-12). Пас аз ҳамлаи Искандар «Авесто» фақат дар Систон ҳифз шуда буд (бандҳои 14-15).<sup>2</sup>

Бояд зикр кард, ки Систон шигифтиҳои зиёде дорад, ки дар дигар осори паҳлавӣ низ ёд шудааст. Масалан, тибқи ривояти «Бундаҳишн», ёздаҳумин ҷойи некӯ, ки Урмузд офарид, Систон буд; Дарёчаи Каёнса (Ҳомун), ки нутфаи се мунҷии дини зардуштӣ дар он ниғаждорӣ мешавад, дар Систон аст; Дарёчаи Фараздон, ки дар Систон аст, мегӯянд агар марди парҳезкоре чизе дар ӯ афканад, мепазирад. Агар шахс парҳезкор набошад, боз ба берун афканад; Фаридун барои бозпасгирии Эрон аз Заҳҳок ба дарёчаи Фараздон дар Систон шуд ва он ҷо аз эзодон ёрӣ хост; Пас аз ҳамлаи Искандар дастурони динӣ ба Систон гурехтанд ва динро ҳифз карданд. Оташи Каркӯйро Афросиёб дар замони тасаллуташ бар Эрон дар Систон нишонд; Ба ривояте,

<sup>1</sup>Ҳамон ҷо.-С. 137.

<sup>2</sup>Мирфхраиӣ, М. شگفتی ها و برجستگی های سیستان//تاریخ جامع ایران، ص. 356. عربان، س. منتهای پهلوی، ص. 243؛ قلی زاده، خسرو. فرهنگ اساطیر ایرانی، ص. 283.



Бахроми варҷованд, ки дини зардуштиро наҷот мебахшад, аз аҳолии Систон аст, ҷаҳонпахлавон Рустам низ систонӣ буд...<sup>1</sup>

### III.2.12. Осори ҳамосии паҳлавӣ

Бештари осори хаттии форсии миёна бар пояи адабиёти шифоҳӣ тадвин шудаанд. Адабиёти шифоҳӣ, бино ба қавли муҳаққиқони ин соҳа, дар муқоиса бо адабиёти хаттӣ аз пӯёҳои камтаре бархурдор аст, зеро дар ин ҷо эҷодкор ҳам вазифаи офариниши хунарӣ дорад ва ҳам ногузир аст, ки онҳоро аз ёд донад ва ба ин тартиб мизони ибтиқору навоарӣ бар вай танг мешавад. Дар давраи Сосонӣ, ки суннати китобат рӯ ба густариш ниҳод, гарчи нависандагон маводи кори худро аз адабиёти суннати шифоҳӣ мегирифтанд, аммо дар заминаҳои тоза низ осоре падида оварданд, ки адабиёти ин давраро пурбор гардонд. Аз ҷумла насабнома, ҷангнома, воқеаҳои хушу нохуш, балову офат, номҷойҳо ва муҳимтар аз ҳама, достонҳо дар бораи маншаи эронӣ, ҷашнҳо, одобу русум ва оинҳо ва ба таври кулӣ донишу донистваҳои куҳан, ки баъзе аз онҳо дар осори бозмондаи зардуштӣ боқӣ мондаанд. Бино ба қавли муҳаққиқони адабиёти бостон, эронӣ дар тӯли наслҳо мунтазир буданд, то парокандагии рӯйдодҳо ва гуногунии падидаҳои ҷаҳонро дар қолаби тарҳҳои шарҳу тавзеҳ диҳанд ва густариши суннати китобат абзори лозимро барои таркиби моҳиронаи ин мавод дар ихтиёри онҳо қарор дод.<sup>2</sup>

Тадвини «Худойнома» дар солҳои охири давраи Сосонӣ натиҷаи ин таркибу пайвастагист. Агарчи асли «Худойнома» боқӣ намондааст, пажӯҳандагон осори онро дар навиштаҳои арабии оғози давраи исломӣ ва то ҳаде дар «Шоҳнома» пайдо карда, тасвири равшани муҳтавои онҳоро ба даст овардаанд. Табиатан дар ривоятҳои давраи исломӣ унсурҳои зардуштӣ коҳиш ёфтанд, аммо дар кори мӯбадони зардуштӣ будани асли асар ҳеч шубҳае нест. «Худойнома» дар бузургдошти Сосониён аст ва таърихи Эрон низ бар асоси пайдарпайии ҳукмронии подшоҳон ва воқеаҳои марбут ба онҳо баён мешавад, аммо силсилаҳо ва воқеаҳо бино бар равиши дини зардуштӣ шакл мегиранд. Нуқтаи марказии он зиндагии Зардушт аст ва барои таҷлил аз Виштосп, ҳомии Зардушт, силсилаи Виштосп, яъне Каёниён ба силсилаи Пешдодӣ, ки нахустин силсилаи эронист, пайванд меҳурад. Пайванди ин ду силсила чорҷӯбе барои тафсири «Авесто» аз таърихи ҷаҳон фароҳам кард ва шухрати Каёниён барои тақвияти хонадони Сосонӣ ба қор гирифта шуд. Ҷаҳоманишиён – пайравони ростини Сосониён, танҳо ба ин ҷиҳат дар ин таърих ҳузур доранд, то ба Дорюши аввал ва Дорюши севум пайванди сохтагии ин ду силсила барқарор шавад. Бештари

<sup>1</sup> قلبي زاده، خسرو. فرهنگ اساطير ایرانی، ص. 283-284

<sup>2</sup> ميرفخرايي، م.خدای نامه//تاريخ جامع ايران، ص. 395

муҳаққиқон бар онанд, ки чорчӯби замони «Худойнома» низ зардуштӣ буд ва низоми ҳазораи он иқтисо мекард, то даврони подшоҳии Ашкониёнро, ки дар бораи онҳо огоҳии каме доштанд, ба нисф коҳиш диҳанд. Мирфахроӣ бар он аст, ки Ашкониён дар «Худойнома» нақши қудратманд, аммо ношинохтае доранд, зеро мӯбадон барои пур кардани пайдарҳамии холимондаи ҷонишинони подшоҳӣ ночор шуданд низоми хунёгарии Ашкониёнро ба Каёниён мансуб намоянд. Ба ин тартиб, Рустами қахрамони сақоӣ ва шохзодагони фаромӯшшудаи ашконӣ, монанди Фарҳод, Гударз, Мелод ва дигарон ҳамроҳи Каёниён вориди «Худойнома» шуданд. Пайдо шудани достони Рустам ба забони суғдӣ гувоҳи он аст, ки ин гуна дostonҳо дар Осиёи Миёна хеле ривоч доштаанд.<sup>1</sup> Ин омилҳо вобаста ба маҳорати муаллифони «Худойнома» дар эҷоди шӯру ҳаяҷони ҳамосӣ давраи Каёниёнро зиндатарин ва беҳтарин бахши «Худойнома» намуд. Муаллифони «Худойнома» ба адабиёти андарзӣ низ тавачҷуҳ доштанд ва ин андарзҳо ҳамроҳ бо хутбаҳои шохон ҳангоми батахтнишинӣ дар «Худойнома» гунҷониданд. Илова бар ин, муаллифон аз манбаҳои хориҷӣ низ истифода кардаанд, монанди ривоятҳои сурёнии достони Искандар. Ривоятҳои сурёни бо эътиқодоти рӯҳониёни зардуштӣ тазод дошт, аммо онҳо ин ривоятҳоро мувофиқи боварҳои худ перостаанд. Ҳамчунин, афсонаҳое, ки дар он даврон дар бораи шахсиятҳои таърихӣ, монанди Ардашери Бобакон роиҷ шуда буданд, дар ин китоб ба ҳайси воқеоти таърихӣ ворид шуданд.<sup>2</sup>

Чунонки зикраш рафт, бештари осори ҳамосии паҳлавӣ, ки усулан ба адабиёти шиғоҳӣ тааллуқ доранд, баъд аз футӯҳоти арабҳо ё ба арабӣ ва форсӣ тарҷума шуда ё аз миён рафтаанд. Аз осори ҳамосии паҳлавӣ яке «Ёдгори Зарирон» аст, ки ҳарчанд ба забон ва хатти паҳлавист, аммо дар асл ба забони портӣ буда, вожаҳову таркибот ва сохторҳои забони портӣ дар матни он зиёд дида мешавад. Аз ин рӯ, мо онро ба мероси адабиёти портӣ ворид намудем.

### III.2.12.1. Худойнома

Муҳимтарин асари таърихӣ давраи Сосониён, ба иттифоқи кулли муҳаққиқони адабиёти бостон, «Худойнома» аст, ки илова бар ҷанбаҳои таърихияш орояҳои адабӣ низ дорад. Аммо имрӯз на асли «Худойнома», ки ба забони форсии миёна навишта шуда буд, боқӣ мондааст ва на тарҷумаву таҳрирҳои арабии он, аммо пораҳои муфассале аз ин китоб дар сарчашмаҳои арабӣ ва форсии асрҳои миёна нақл шудааст.

---

1. یارشاطر، احسان. رستم در زبان سغدی//مهر، تهران، 1331، ش.8، ص.411-406  
2. میرفخرایی، م. خدای نامه//تاریخ جامع ایران، ص.96-395

«Худойнома», ба форсии миёна «Худойномак», мураккаб аст аз «худой» ба маънии «худо», «сарвар» ва «номак» ба маънии «китоб». Таърихнигорон ва нависандагони давраи исломӣ «Худойномак»-ро ба «Сияр-ул-мулук» тарҷума карданд ва дар асрҳои IX-X, ки забони форсии тоҷикӣ ривоч ёфт, форсизабонон, ки калимаи «Худой»-ро ғолибан барои Аллоҳ ба кор мебарданд, «Шоҳнома»-ро ба ҷойи «Худойномак» ва «Сияр-ул-мулук» ба кор барданд. Аммо вожаи «худой» ба маънии куҳан дар он даврон ба кор мерафт, монанди лақабҳои баъзе аз подшоҳон чун «Сомонхудот», «Бухорхудот». Дар «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ калимаи «худой» ба маънии шоҳ ва сарвар фаровон ба кор рафтааст. Ин калима имрӯз ҳам дар забони форсӣ ба кор меравад, монанди деҳхудо, қадхудо.<sup>1</sup>

Дар муқаддимаи бойсунқурии «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ зикр шуда, ки бо дастури Яздгирди севум мураттиби «Худойнома» бо номи Донишвари Деҳқон маҷмӯи таърихро «аз оғози давлати Каюмарс то интиҳои подшоҳии Хусрави Парвиз» мудавван кард. «Худойнома» дostonҳои қаҳрамонӣ, саргузаштҳои ишқии паҳлавонон, қиссаҳои динӣ ва ғайра, хулоса, тамоми мавзӯҳоеро, ки ба таърихи Эрони қадим дахл дошт, дар бар мегирифт. Бино ба қавли Забехуллоҳи Сафо, матни аслии «Худойнома» монанди бисёре аз китобҳои таърихӣ ва адабии паҳлавӣ дар оғози садаи дувуми ҳиҷрӣ (ҳаштуми мелодӣ) ба василаи Ибни Муқоффаъ ба арабӣ тарҷума ва ба «Сияру-л-мулуки-л-Фурс», «Сияр-ул-мулук», «Сирату-л-Фурс», «Таъриху мулук-ил-Фурс» ва ғайра мавсум шуд.<sup>2</sup>

Ба интишор ва шуҳрати «Худойнома» инчунин паҳн шудани ривояту қиссаҳои эронӣ дар байни арабҳо, тарҷумаҳои арабии ин асар мусоидат кардаанд. Баъд аз Ибни Муқоффаъ ин асарро Муҳаммад ибни Ҷаҳими Бармакӣ, Зодвайҳ ибни Шодвайҳи Исфahонӣ, Муҳаммад ибни Баҳром ибни Матёри Исфahонӣ, Ҳишом ибни Қосими Исфahонӣ, Мӯсо ибни Исои Касравӣ, Баҳром ибни Мардоншоҳ, Исҳоқ ибни Язид, Умар ибни Фарруҳон, Баҳроми Ҳиравии Маҷусӣ, Баҳром ибни Меҳрони Исфahонӣ бо номҳои «Сияру-л-мулуки-л-Фурс», «Таърихи мулуки бани Сосонӣ», «Сирату-л-Фурс» тарҷума ва таҳзибу такмил карда буданд. Китоби дигаре бо исми «Таъриху мулуки-л-фурси-л-мустаҳраҷ мин хизонат-ил-Маъмун» низ тарҷумаи арабии «Худойнома» мебошад. Аз ин тарҷумаҳои адибону муаррихони асрҳои IX-X-и араб ва форсу тоҷик Табарӣ, Балъамӣ, Ҳамзаи Исфahонӣ, Саолибӣ, Ибни Надим, Масъудӣ, Ибни Қутайба, муаллифи «Мучмал-ут-таворих в-ал-қисас», мураттибони «Шоҳнома»-и Абӯмансурӣ ва дигарон ёд кардаанд. Муаллифони мазкур тамоми маълумотро доир ба таърихи Эрони Бостон ва аҳди Сосониён аз тарҷумаҳои арабии «Худойнома» гирифта буданд. Масалан, дар «Уюну-л-ахбор»-и Ибни Қутайба пораҳои зиёде бевосита аз тарҷумаҳои арабии

<sup>1</sup>خطیبی، ابو الفضل. خدای نامه//تاریخ جامع ایران، ص. 674

<sup>2</sup>صفا، ذبیح الله. تاریخ ادبیات در ایران، ص. 86

«Худойнома» иқтибос шудаанд, ки тавассути онҳо аз асли «Худойнома»-и паҳлавӣ низ метавон иттилоъ пайдо кард.<sup>1</sup>

Бино ба таъкиди пажӯҳандагон, бар асари тарҷумаи «Худойнома» ривоят ва дostonҳои миллии Эрон дар миёни муслмонон маъруф ва мунташир гашт ва нусхаҳои зиёде аз он бардошта шуд. Бар асари бедикқатии нусхабардорон дар он хатоҳо, иловаҳову костихое роҳ ёфт, то ҷое, ки Баҳром ибни Мардоншоҳ-мӯбади шаҳри Шопур барои таҳияи китоби «Таърихи подшоҳони Эрон» ночор шуд, чандин нусха аз китобҳои «Худойнома»-ро муқоисаву муқобала кунад. Мирфаҳроӣ муаллифон ва мутарҷимони «Худойнома»-ро ба се даста тақсим мекунад:

1. Мутарҷимоне, ки дар вазъи аслии китоб даст набурда ва тағйироти зиёд дар он наодоанд, монанди Ибни Муқаффаъ, Зодвайҳ писари Шодвайҳи Исфaҳонӣ ва Муҳаммад ибни Ҷаҳими Бармакӣ.

2. Мутарҷимоне, ки ба комил сохтани қисматҳои мухталифи китоб пардохта, ҳикоеҳои таърихӣ ва қиссаҳои аз китобҳои дигари паҳлавӣ ба он афзудаанд, монанди Баҳром писари Матери Исфaҳонӣ ва Ҳишом писари Қосими Исфaҳонӣ.

3. Муаллифоне, ки корашон муқобалаи нусхаҳои мухталифи тарҷумаҳои «Худойнома» бо яқдигар ва интиҳоби дурусттарин аз миёни онҳо буд. Ин гурӯҳ мазмунҳоеро, ки аз китобҳои дигар ёфта буданд, низ ба асли китоб афзуданд. Ин муаллифон дар мавриде, ки миёни дostonҳои мушаббах зиддияте меиданд, ба тағйири онҳо мепардохтанд, монанди Баҳром ибни Мардоншоҳ ва Мӯсои Касравӣ.<sup>2</sup>

«Худойнома» аз манбаъҳои асосии «Шоҳнома»-ҳои Масъуди Марвазӣ, Абулмуйяиди Балхӣ, муаллифони «Шоҳнома»-и Абӯмансурӣ ва Абӯалии Балхӣ будааст. Фирдавсӣ асоси кори худро бар «Шоҳнома»-и Абӯмансурӣ қарор дода, аммо аз манбаъҳои дигар, хусусан адабиёти шиғоҳӣ истифода кардааст. Ибни Надим ғайр аз «Худойнома» аз китобҳои таърихӣ ва дostonҳову ривоятҳои дигар ном бурдааст. Номи китобҳое, ки вай зикр карда ва номи теъдоди дигаре аз дostonҳои ҳамосӣ ба забони паҳлавӣ, ки имрӯз дар даст нест, вале дар сарчашмаҳои арабӣ ва форсӣ омада, аз ин қарор аст: «Китоби Баҳром», «Китоби Баҳроми Чӯбин», китоби «Шаҳрбароз бо Парвиз», «Китоби Анӯшервон», «Достони Рустаму Исфандёр», «Достони Пирони Виса», «Китоби пайкор», «Китоби Доро ва бути зарин», «Китоби Кай Лухросп», «Достони Шарвини Даштбай».<sup>3</sup>

«Худойнома» воқеаҳо ба лиҳози замонӣ, аз оғози офариниш то замони таълифи китоб дар бар мегирифт ва бозтоби тасвири вижаи таърихи Эрони таърихӣ буд, ки пажӯҳандагон бар он «Таърихи милли» ном ниҳодаанд. Қадимтарин гузориш дар бораи ин китоб ба замони Баҳроми Гӯр мансуб мешавад. Бино ба қавли Фирдавсӣ,

<sup>1</sup>Саъдиева Г. Худойнома // ЭАСТ, ч., 3. - С. 324.

<sup>2</sup>Мирфараҳӣ, М. Худай Наме//Тарихи Ҷамеи Иран, в. 397.

<sup>3</sup>Мирфараҳӣ, М. Худай Наме//Тарихи Ҷамеи Иран, в. 398.

хангоме ки Баҳром маҷлис меорост, «Номаи бостон»-ро барои ӯ меҳонданд ва дар нахчиргоҳ «мӯбади покрой» бар дасти ростии ӯ аз Ҷаму Фаридун дostonҳо меҳонд.<sup>1</sup> Ин гузориш нишон медиҳад, ки дар замони ин подшоҳ дostonҳои подшоҳони асотирии Эрон китобат шуда буданд ва мурод аз «Номаи бостон» ҳамон «Худойнома» аст. Абулфазли Хатибӣ бо овардани шоҳиди таърихӣ аз гуфтаи таърихшиноси маъруфи юнонӣ Огосиос собит мекунад, ки дар давраи Анӯшервон «Худойнома» китобат шуда будааст.<sup>2</sup> Шаҳбозӣ бар асоси ривоёте дар муқаддимаи қадими «Шоҳнома» собит мекунад, ки «Худойнома» дар замони Хусрави Парвиз тадвини дубора ёфтааст.<sup>3</sup> Нёлдеке бо таърифи маълумоти муқаддимаи «Шоҳнома»-и Бойсунғурӣ муътақид аст, ки дар давраи Яздгирди сеум «Худойнома» навишта шуда ва таърири аслии он аз Каюмарс то поёни подшоҳии Хусрави Парвизро дар бар мегирифтааст.<sup>4</sup> Бахши охири «Худойнома» бегумон баъд аз юриши арабҳо ва кушта шудани Яздгирди сеум афзуда шудааст, ки аз шикваву зорӣ аз шукӯҳу шаҳомати аздастрафтаи давлати Сосониён ҳикоят мекунад.

Қисмати аслии «Худойнома»-ро таърихи шоҳони Эрон ташкил медиҳад. Пажӯҳандагон ин таърихро ба ҷаҳор давра тақсим кардаанд: 1. Пешдодиён, нахустин шоҳоне, ки фармонравои саросари ҷаҳон буданд. Аз Каюмарс оғоз мешавад ва ба ҷонишинони Манучеҳр поён меёбад. Маъруфттарин шоҳони ин сулола: Хушанг, Тахмураш, Ҷамшед, Заҳҳок ва Фаридун буданд. 2. Каёнӣён, подшоҳоне, ки танҳо дар Эрон фармон меронданд ва бо ҳамсоягони худ-турониён пайваста дар ҷангу ҷидол буданд. Ин давра аз Кайқубод оғоз мешавад ва ба Искандар поён меёбад. Маъруфттарин шоҳони ин давра иборатанд аз Кайқубод, Кайхусрав ва Кайвиштосп. 3. Ашкониён, ки дар раёси низоми мулукуттавоифӣ қарор доштанд. 4. Сосониён, ки ваҳдату якпорчагии Эронро эҳё карданд. Маҷрутарин подшоҳони ин сулола Ардашери якум, Баҳроми Гӯр, Хусрави Анӯшервон ва Хусрави Парвиз буданд.<sup>5</sup>

Нахустин бахши «Худойнома»-ро дostonҳо ва устураҳои қуҳани ҳиндуэронӣ ва қавмҳои эронӣ, монанди дostonҳои марбут ба Ҷамшед, Заҳҳок ва Фаридун ташкил мекунанд, ки падидаҳои онҳо шарҳи Эрони таърихӣ будааст. Дар марҳалаҳои баъдӣ тақомули ривоёти «Худойнома» ривоятҳои аз паҳлавонони хонадонҳои бузурги давраи ашкониён, ки қуҳантарини онҳо марбут ба хонадони Гударз аст, бо ривоятҳои шоҳӣ дармеомезад. Гударз ва Геву Бежан дар мақоми паҳлавонони барҷастаи дарбори шоҳони Каёнӣ зоҳир мешаванд.<sup>6</sup> Ба қавли Кристенсен, зикри шоҳони ашкониён, монанди Гударз, Мелод ва Фарҳод дар шумори

<sup>1</sup> Фирдавсӣ Абулқосим. Шоҳнома, ҷ. ,1989.-С.

<sup>2</sup> خطیبی، ابوالفضل. خدای نامه/تاریخ جامع ایران، ص. 677

<sup>3</sup> نقل از خطیبی، ابوالفضل. خدای نامه/تاریخ جامع ایران، ص. 678

<sup>4</sup> تولدک، تودور. حماسه ملی ایران. ترجمه بزرگ علوی، تهران، 1357.

<sup>5</sup> حمزه اصفهانی. تاریخ. نقل از خطیبی، ابوالفضل. خدای نامه/تاریخ جامع ایران، ص. 680

<sup>6</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات پیش از اسلام، ص. 271

пахлавонони каёнӣ собит мекунад, ки нуфузи ашкониён дар таърихи давраи каёнӣ пас аз силсилаи Ашкони дар давраи Сосонӣ будааст.<sup>1</sup> Вале А. Тафаззулӣ бар он аст, ки дар ҳамон замони ашкони қахрамонон ва шоҳони ашкони бо ривоёти каёнӣ даромехтанд.<sup>2</sup>

Бо зуҳури Дорой якум, Дорой дуҷум ва Искандар «Худойнома» то ҳаде вориди асри таърихӣ мешавад. Бино ба қавли донишмандон, Дорой якум баъзе чанбаҳои подшоҳии Дорюши якуми ҳахоманиширо нишон медиҳад.<sup>3</sup> Дар бораи Искандари Макдунӣ аҳбори «Худойнома» бо ҳақиқати таърихӣ муҳолифат дорад. Дар осори паҳлавӣ ўро «гучастак» (малъун) номидаанд, ки Эроншаҳро вайрон карду «Авесто»-ро сӯхт. Барои он ки ба подшоҳии Искандар ҳаққоният бахшанд, ўро фарзанди Дорой якум ва набераи духтарии Файлакус (Филип) гуфтаанд. Бар пояи ин ривоят, Дорой якум духтари шоҳи Румро ба занӣ мегирад ва чун аз даҳонаш бӯйи нохуш меомад, ўро ба Рум бозмефиристад ва он духтар дар он ҷо Искандарро ба дунё меоварад. Дар «Худойнома» аз таърихи Ашкониён гузориши бисёр кӯтоҳе мундариҷ будааст, вале ба гуфтаи муҳаққиқон, корномаҳои баъзе аз шоҳони ашкони дар дostonҳои паҳлавонииҳамосаи миллӣ бозтоб ёфтааст. Бо зуҳури Ардашери якум (Ардашери Бобакон) ривояти «Худойнома» бо воқеоти таърихӣ созгортар мешавад, зеро мураттибони он ба санадҳои таърихӣ дастрасӣ доштаанд. Дар ин қисмат ҳам ривоятҳои таърихӣ баъзан бо афсонаҳо дармеомезад, монанди чанги Ардашер бо Кирми Ҳафтвод.<sup>4</sup> Аз замони Яздгирди аввал ба баъд маълумот дар бораи ҳар як подшоҳ дода мешавад, ки ба воқеоти таърихӣ созгор меоянд. Бино ба қавли пажӯҳандагон, воқеоти марбут ба сиёсати хориҷӣ ва «рӯйдодҳои, ки фоқиди фоқидаи равобӣ ё нуруи саргамкунанда аст», аз «Худойнома» ҳазф шудаанд.<sup>5</sup> Аммо бозгӯи шукӯҳу дабдабаҳои шоҳони сосонӣ, монанди саҳнаҳои шикору маҷлиси базм, пазируфтани гусели сафирон, бахшишу дарёфти тухфаҳо ва ғайра аз баҳсҳои муҳими «Худойнома» будааст.

Аз баррасии муҳтавои «Худойнома» ва бардоштҳои пажӯҳандагон бармеояд, ки «Худойнома» таърихе буда, чун занҷираи пайваставу муназзам аз хонадонҳо ва шоҳоне, ки аз рӯзгорони қадим то замони тадвини он бар миллат ва кишвари ягона ҳукмронӣ мекардаанд. Ин нукта илова бар шарҳи диловариҳои шоҳону паҳлавонони миллӣ дар ҳар давра метавонист ғурури миллиро дар ҷанг бо душманон бедор ва тақвият кунад. Шарҳи пуробутоби ҷангҳои бардавоми Эрону Турон дар давраи каёнӣ ва татбиқи туронӣ ба турк абзори муносибе буд барои тақвияти рӯҳияи фидокорӣ ва ҷоннисорӣ баҳри дифоъ аз марзу буми

1Кристиансен, А. Р. Тур. Кияниан. ترجمه ذبيح الله صفا، تهران، 1336. ص. 185.

2تفضلي. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 271.

3يارشاطر، احسان. چرا در شاهنامه از پادشاهان ماد و هخامنشی ذکرى نيست؟/شاهنامه شناسى(1)، تهران، 1353، ص. 269-301.

4Фирдавсий Абулқосим. Шохнома. -Душанбе, 1989, ҷ. 7, -С.217-227.

5Yarshater, E/1983, Iranian National Historu. -Cambridge.-P.359-477.

نقل از خطیبی، ابوالفضل. خدای نامه/تاریخ جامع ایران، ص. 383.

ватан дар муқобили душманон. Аксари пажӯҳандагон бар онанд, ки баъд аз фурӯпошии давлати сосонӣ ҳувияти динии мардуми эронитабор ранг бохт, вале миллатгароии мавҷуд дар «Худойнома» дар «Шоҳнома» тақомул ёфт ва дар тасбиати кишвар ва миллати воҳид дар давраи исломӣ нақши босазое дошт.<sup>1</sup>

### III.2.12.2. Достони Шарвини Даштбай

Шарвин-писари Бармиё (шояд Наримон) аз аҳолии Даштбай (Қазвин) яке аз сардорони эронӣ буда, ки дар замони яке аз шоҳони сосонӣ подшоҳи Рум аз ин шоҳ хост, ки касеро ба сарпарастии фарзанди یتимаш бигуморад. Шарвин ба ин симат маъмур гардиду раҳсипори Рум шуд. Пас аз бист сол ба фармони шоҳи Эрон мамлақати Румро ба шоҳзодаи Рум супурд ва ба Эрон бозгашт. Адибони даврони исломӣ ба достони «Шарвин ва Хуррин» ишора кардаанд. Ибни Қутайба Хурринро банда (ғулом)-и Шарвин хонда ва ўро бо сифатҳои саворкори ҷавонмарду далер тавсиф кардааст. Дар шеъри арабӣ Шарвин ва Хуррин бо сифатҳои «шери шучоъ ва диловару далер» зикр шудаанд. Дар шеъре, дар шарҳи тасвири бар девор Шарвин «дастор бар сар нишаста» ва Хуррин «тозон дар ҳоле, ки бо тире бачаи ҳайвони зебову забонбастаро нишон гирифта» тавсиф шудааст.<sup>2</sup>

Аҳмади Тафаззулӣ аз баррасии ахбори сарчашмаҳои арабию форсӣ доир ба достони Шарвин ба хулоса меояд, ки «Достони Шарвини Даштбай» аз зумраи дostonҳои таърихӣ будааст. Бино ба қавли ӯ, Абӯнӯвос достони Шарвинро ҳамрадифи достони «Вису Ромин» овардааст ва аз ин ҷо ба натиҷа мерасад, ки «Достони Шарвин» дорои воқеаҳои ошиқона низ будааст. Ин тасаввурро Ҳамдуллоҳи Муставфӣ дар «Таърихи гузида» низ таъйид мекунад, ки «номи Шарвин дар ашъори паҳлавӣ бисёр аст. Китобест дар ишқномаи ӯ, «Шарвиниён» хонанд». Ҳамзаи Исфохонӣ дар шарҳи Шарвин, ки дар яке «форсиёт»-и Абӯнӯвос омада, менависад, ки достоне буда, ки онро бо овоз мехондаанд.<sup>3</sup>

Яке аз дostonҳои ҳамосии дигар, ки асли паҳлавии он аз байн рафта, аммо дар сарчашмаҳои арабию форсӣ батақрор аз он ёд шудааст, «Достони Баҳроми Чӯбин» мебошад. Масъуди Марвазӣ дар «Муруҷ-уз-заҳаб» аз китобе, ки эронӣ дар шарҳи ҳол ва корномаҳои

1. Млаирӣ, М. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام. تهران، 1356، ص. 167 تاوادیا ج. زبان و ادبیات پهلوی، ص. 177-269؛ تفضلی. تاریخ ادبیات، ص. 6، 274. صفا، ذ. تاریخ ادبیات در ایران ج. 2، ص. 3952؛ میرفخرایی، م. خدای نامه، ص. 1378؛ کریستنسن، آ. ایران بزرگ در زمان ساسانیان.؛ کریستنسن، آ. کیانیان، 675؛ خطیبی، ا. خدای نامه، ص. 163؛ ایران؛ خطیبی، ا. سرگزشت سیر الملوك ابن مقفع // یادنامه احمد تفضلی، تهران، 1389، ص.؛ ریاحی، م. سرچشمه های فردوسی شناسی، تهران، 1372، 1332؛ صفا، ذ. هماسه سرای در ایران، تهران؛

2. Розен В. Р., К вопросу об арабских переводах «Худойнаме» // Восточные заметки. - СПб., 1895.

3. این فقیه همدانی. البلدانف، ص. 159-216، نقل از تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 274-276.

3 نقل از تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 276.

Бахроми Чубин доштаанд, ёд кардааст. Бино ба нақли Байҳақӣ, Хусрави Парвиз пас аз пирӯзӣ ба Бахроми Чубин, дастур дод, ки ҳама чанғо ва воқеаҳоро, ки рӯй дода буд, бинависанд.<sup>1</sup> Дар китобҳои Табарӣ, Ибни Қутайба, Яъқубӣ ва Балғамӣ низ саргузашти афсонаомези Бахроми Чубин нақл шудааст. Масъудӣ нақл мекунад, ки дар соли 303 ҳичрӣ дар шаҳри Истаҳри Форс дар хонаи яке аз ашрофи эронӣ китоби бузурги бисёр нафисеро дидааст, ки дар он маълумоти фаровон доир ба илмҳои эронӣ, саргузашти подшоҳон ва биноҳову мулкдорӣ онҳо, ки назири онҳоро дар китобҳои дигар, монанди «Худойнома», «Оиннома» ва «Гохнома» надида будааст, зикр шудааст. Ба қавли ӯ, ин китоб тасвири бистухафт тан аз шоҳони сосониҳо (биступанҷ тан мард ва ду тан зан) дар бар доштааст. Дар ин тасвирҳо мушаххас буда, ки шоҳ дар вақти марг ҷавон будааст ё пир. Ҳар гоҳ, ки яке аз шоҳон дармегузашта, расми ӯро мекашиданд ва ба ҳазина месупурданд. Рафтор ва ҳодисаҳои муҳимми рӯйдода дар даврони ҳар кадом шоҳ сабт мешудааст. Ба гуфтаи ин нависанда, ин китоб соли 113 ҳичрӣ аз рӯйи он чи дар ҳазинаи шоҳон буд, китобат шуда ва барои Абдулмалики Марвон ба арабӣ тарҷума шудааст.<sup>2</sup>

Аз дигар китобҳои ҳамосӣ ва таърихӣ паҳлавӣ, ки дар асрҳои аввали густариши ислом вуҷуд дошта ва баъд аз миён рафтааст, китобҳои Истаҳрӣ (асри XI) дар асари хеш «Ал-масолик вал-мамолик» зикр кардааст. Ин муаллиф дар васфи Ҳиснучас (Джи гач, джи сапед) дар ноҳияи Арҷон (Бехбаҳони кунунӣ) менависад, ки дар ин диҷ зардуштиён ҳастанд ва ба мутолиаи «Аёткорот» ва шарҳи набардҳои худ мепардозанд. Аҳмади Тафаззулӣ бо баррасии гузориши Истаҳрӣ менависад, ки «Аёткорон» ба маънии рисола ва китоб аст ва баъзе аз китобҳои паҳлавӣ ин унвонро доранд. Донишманди мазкур бар он аст, ки ин китобҳо таърихӣ будаанд ва дар китобу рисолаҳои марбут ба кишвардорӣ, монанди «Номаи Тансар», «Корномаи Анӯшервон» низ мавзӯҳои таърихӣ матраҳ шудаанд.<sup>3</sup>

### Ш.2.13. Дастинаҳо (тавқеот)

Дастина, ки дар адабиёти баъдазисломӣ бо номи «тавқеот» ёд мешавад, ҷумла ё ҷумлаҳои кӯтоҳи ҳикматомезест, ки аз гуфтаҳои шоҳону фармонравоён дар посух ба гузориш ё пурсише нақл шудааст. Дар дарбори Сосониён маъмул буда ҳар аризае, ки ба шоҳ навишта мешуда, ба дастури шоҳ яке аз дабирон ҷавоби номаро бо ҷумлаҳои кӯтоҳу мучаз менавиштааст ва баъд аз имзои шоҳ онро ба дабирхона мефиристодаанд. Дар фармонҳо ва ё номаҳое, ки аз сӯйи подшоҳ ба ҳокимон ва ё шоҳони дигар навишта мешуд, низ ин ин

<sup>1</sup> نقل از محمدی ملایری، محمد. تاریخ و فرهنگ ایران. تهران، 1372. ص. 331-339

<sup>2</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، 277

<sup>3</sup> همان جا، ص. 276



амал иҷро мешудааст. Бино ба гуфтаи Муҳаммади Малоирӣ, ин роҳкорхоро, ки ғолибан бо ҷумлаҳои кӯтоҳ адо мешуда, дар арабӣ «тавқеъ» ва дабире, ки мутасаддии он буда, «соҳибтавқеъ» хондаанд.<sup>1</sup> Вақеан, дастинаҳо ё худ тавқеоти даврони сосонӣ аз осори хунарӣ ва адабии забони паҳлавӣ ба шумор мераванд, зеро аз забони подшоҳ ва бо қалами бузургтарин дабири дарбор иншо мешудаанд. Аз ин рӯ, ин дастинаҳо дар қолаби мазмунҳои ахлоқӣ ва таркиботи ҳикматомез навишта мешудаанд. Бино ба таҳқиқи пажӯҳандагон, аз ҳама бештар аз Хусрави Анӯшервон дастинаҳо боқӣ мондаанд. Ибни Қутайба менависад, ки дар зери номаҳо, ки ба коргузори давлат навишта мешавад, ба андозаи чаҳор сатр ҷойи холӣ бигузоранд ва он барои тавқеъ (дастина)-и худи Анӯшервон будааст. Анӯшервон дар ин чаҳор сатри холӣ ба дасти худ дастина (тавқеъ) менавиштааст:

*«Бар некон ба меҳрубонӣ ҳукумат кун ва дар идораи авоми мардум майлу алоқаро бо тарс даромез ва бар фурӯмоёгон бо афкандани тарс дар дилҳояшон фармонравой кун!»<sup>2</sup>*

Абулқосим Фирдавсӣ дар «Шоҳнома» зери унвони «Андар тавқеи Нӯшинравон» аз 37 тавқеи Анӯшервон вобаста ба номаҳои вай баён кардааст.<sup>3</sup> Муҳаққикон бар онанд, ки ин тавқеот аз «Шоҳнома»-и Абӯмансурӣ гирифта шудааст. Аз ин рӯ эҳтимол дорад, ки ин тавқеот дар «Худойнома» низ мавҷуд будааст. Муфасссалтарин тавқеоти форсӣ мансуб ба Анӯшервон, ки дорои 173 пурсишу посух аст, дар китоби «Дастурномаи Касравӣ ё тавқеоти Анӯшервон» гирд омадааст. Ин китоб аз арабӣ ба форсӣ тарҷума шуда, аммо асли арабии он аз байн рафтааст.<sup>4</sup> Ба ғайр аз тавқеоти Хусрави Анӯшервон аз шоҳони дигари сосонӣ, монанди Ардашери Бобакон, Нарсӣ, Баҳроми Гӯр, Қубод ва Хусрави Парвиз низ тавқеъҳои нақл шуда, ки Аҳмади Тафаззулӣ бо нишон додани маъҳаз онҳоро баррасӣ кардааст.<sup>5</sup> Дар охири давраи Сосониён маҷмӯае аз тавқеоти шоҳони ин сулола фароҳам омада ва баъд аз интишори ислом ба арабӣ тарҷума шудааст. Халифаҳо ва амирони араб дар пайравӣ аз шоҳони сосонӣ тавқеот навиштаанд, ки намунаҳои онҳо дар китобҳои адабию таърихӣ роҳ ёфтааст. Шоирони форсу тоҷик низ аз тавқеъҳои паҳлавӣ, алалҳусус аз тавқеоти Анӯшервон дар ашъори худ ёд кардаанд:

Носири Хусрав мегӯяд:

*Бихондам пок тавқеоти Кисро,  
Бихондам аҳди Кайковусу Нӯзар.<sup>6</sup>*

<sup>1</sup> محمدی ملایری، محمد. تاریخ و فرهنگ ایران. ص. 274.

<sup>2</sup> نقل از تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، 240.

<sup>3</sup> Фирдавсӣ Абулқосим. Шоҳнома.- Душанбе: «Адиб», ҷ., 8, 1990. -С. 377-391.

<sup>4</sup> نقل از تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 240.

<sup>5</sup> همان جا، صص. 239-245.

<sup>6</sup> ناصر خسرو. دیوان، به کوشش مجتبی مینوی ومهدی محقق، تهران، 1353، ص. 536.

Шоирони дарбор чун Унсурию Муиззӣ тавқеоти мамдӯҳи худро бо тавқеоти Анӯшервон муқоиса карда ва гоҳе боло гузоштаанд:

*Адли ӯ Нӯшинравон гаштаст, к-андар васфи ӯ*

*Байтҳои шеър тавқеоти Нӯширвон бувад.*<sup>1</sup>

Маликушшуарои дарбори Салҷуқиён - Амир Муиззӣ ба муболиға тавқеи мамдӯҳи худро аз тавқеоти Анӯшервон боло мегузорад:

*Раҳӣ шуд чаҳон пеши тавқеи ӯ,*

*Раҳо кард тавқеи Нӯширвон.*<sup>2</sup>

Махдии Муҳаққиқ зимни таҳлили ашъори Носири Хусрав таъкид мекунад, ки шоир мазмуни тавқеоти шоҳони Сосониро дар шеъри худ ба кор бурдааст:

*Дар чаҳони дин бар асби дил сафар бояд-т кард,*

*Гар ҳамехоҳӣ чаридан, мар туро бояд чамид.*<sup>3</sup>

\*\*\*

*Чамидан ба некӣ-т бояд, ки мард*

*Зи некӣ чарад, чун ба некӣ чамад.*<sup>4</sup>

Суннати тавқеънависӣ ба тақлид аз шоҳони сосонӣ дар асрҳои миёна, ҳам дар миёни шоҳону амирон ва ҳам шоирону нависандагон ба назар мерасад.

### III.2.14. Хитобаҳои тоҷузори

Пажӯҳандагони адабиёти бостон бо тақя бар сарчашмаҳои асрҳои миёна менависанд, ки шоҳони сосонӣ дар ҳангоми тоҷузори, яъне, рӯзи тахтнини хитобаҳо эрод мекардаанд, ки ин хитобаҳо маъмулан аз қитъаҳои олии адаби ба шумор меравад, зеро илова бар мӯҷазбаёнӣ мазмунҳои ахлоқию пандуандарзӣ низ доранд. Асли паҳлави ин хитобаҳо аз байн рафта, таърихнависон, монанди Ибни Қутайба, Табарӣ ва Саолибӣ дар китобҳои хеш аз хитобаҳои Ардашери Бобакон, Баҳроми Гӯр, Анӯшервон ва Хурмуз писари Нӯшервон нақл кардаанд. Хитобаҳои шоҳон маъмулан дар ситоиши худ ва адолат, бахшоиш бар мардум, фармонбардорӣ аз мардум ва андарзо дар бораи идораи кишвар ба коргуздоронанд.<sup>5</sup>

Абулқосим Фирдавӣ дар «Шоҳнома» аз номи шоҳони пешдодӣ ва каёнӣ низ хитобаҳо меоварад, ки муҳаққиқон, монанди Аҳмади Тафаззулӣ ва М. Мирфаҳрой онро бозтоби суннати сосонӣ донистаанд, аммо Ҷалолуддини Хумой бар он аст, ки фанни хитобанависӣ аз даврони хеле қадим, хосса аз даврони ҳахоманишиён байни мардуми

<sup>1</sup> عنصری بلخی. دیوان، به کوشش دبیرسیاقی، تهران، 1342، ص. 21

<sup>2</sup> نقل از تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 244

<sup>3</sup> مهدی محقیق. تحلیل اشعار ناصر خسرو، تهران، 1344، ص. 59

<sup>4</sup> همان جا، 63

<sup>5</sup> نقل از تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 238-239

ориёӣ роиҷ будааст. Донишманди номбурда бо таъя ба катибаҳои шоҳони ҳахоманишӣ менависад, ки хитобаҳои ахлоқию сиёсӣ, ки мазмунҳои онҳо далер намудани мардумони ориёӣ, тарсондани эшон аз дурӯғ гуфтан ва ғайра дар он катибаҳо дарҷ аст, далели он аст, ки фанни хитоба дар байни қавмҳои ориёӣ вучуд доштааст. Ба андешаи ӯ, худи Зардушт дар асри ҳафтуми пеш аз мелод ягона хатибе будааст, ки бо хитобаҳои мазҳабию ахлоқӣ мардумро ба дини худ даъват мекарда ва баъд аз вай ҳам мубаллиғони кеши зардуштӣ дар ҳақиқат хатибоне будаанд, ки бо ибороти балеғ ва мазомини дилчасп мардумро ба пайравии мазҳаби Зардушт тарғиб менамудаанд, зеро ҳеч даъвати мазҳабӣ ҳолӣ аз хитоба намешавад.<sup>1</sup>

Вақеан, дар катибаҳои шоҳони ҳахоманишӣ, хосса катибаҳои Дорюши аввал ҷумлаҳои андарзие ба назар мерасанд, ки аз хутбаҳои шоҳони сосонӣ ҳеч камӣ надоранд ва Ҳаким Фирдавсӣ ба маъҳазии қадимтаре даст дошта, ки аз номи шоҳони пешдодию каёнӣ хитобаҳо нақл мекунад. Аз ҷумла, хитобаҳо аз катибаи Дорюши аввал:

*Дорюшишоҳ гӯяд: Ту, ки пас аз ин шоҳ хоҳӣ шуд, худро бо ҳамаи тавон аз дурӯғ нос дор! Агар чунин меандеши, ки сарзамини ман дар осоиш бошад, марди дурӯғзанро сахт гӯшмол деҳ!*<sup>2</sup>

### III.2.15. Оиннома

«Оиннома» ба китоб ё ба гурӯҳе аз китобҳо гуфта мешавад, ки шомили одобу русум ё усулу қоидаҳои илму фан ва ё ҳунарҳо будааст. Дар замони Сосониён китобу рисолаҳои зиёде дар мавзӯҳои гуногун бо ин ном вучуд доштааст. Зоҳиран маҷмӯаи онҳоро, ки ҳар як шомили фанни махсус буда, оиннома ё оинномаи бузург меномидаанд. «Оиннома» яке аз осори адабиёти паҳлавист, ки тақрибан дар асрҳои 6–7 таълиф шудааст. Муаллифаш маълум нест. Асли паҳлавии ин асар ҳифз нашудааст. Ибни Надим, Табарӣ, Масъудӣ, Саолибӣ ва дигарон аз ин китоб ном бурдаанд. «Оиннома», шояд қисматҳои аз онро Ибни Муқоффаъ дар ибтидои асри У111 дар баробари дигар асарҳои паҳлавӣ ба забони арабӣ тарҷума карда, ки бо унвони «Ал-ойин» ё «Китоб-ул-ойин» шуҳрат доштааст. Аз вучуди ин асар ҳамон таърихнависони араб шаҳодат медиҳанд, ки баъзеяшон аз он иқтибоси мухтасаре овардаанд ва ё мазмуну матлабҳои дарбаргирифтаашро баён кардаанд. Аз ҷиҳати мазмун «Оиннома» ба пандномаҳое, ки вазирон («Пандномаи Бузургмеҳр»), рӯҳониёни зардуштӣ, мӯбадони сосонӣ ва дигарон ба ҳукмронон мебахшиданд, қаробат дорад. Дар шакли панду андарзи «Оиннома» қонуну қоидаҳои давлатдорӣ ва ҳукмрониро, ки ба шоҳ ва атрофиёни ӯ дахл дошт, дар бар гирифтааст. Муҳимтарин масъалаҳои

---

<sup>1</sup> Ҳамایی، جلال الدين. تاريخ ادبيات ايران، ص13.  
<sup>2</sup> غياث آبادی، رضا مرادی. تمدن هخامنشی، ص55.

«Оиннома» қоидаҳои ҷанг, муносибати байни табақаҳои ҷамъиятӣ, урфу одат, қоидаҳои одобу ахлоқи ҷамъиятӣ, қонунҳои ҳуқуқ, омӯзиши илмҳои гуногун ва монанди инҳо будаанд. Бино ба таҳқиқи Муҳаммади Малоирӣ, «Оиннома» китоби бузурге буда ва на ҳама қисматҳои он ба арабӣ тарҷума шудаанд. Муҳаққиқ сабаби ин амрро дар он медонад, ки «Оиннома»-и бузург илова ба маорифу илмҳои, ки дар ҷомеаи исломӣ шинохташуда ва ривоч ёфта буд, шомили мавзӯҳои дигаре ҳам буда, ки бо муҳити исломӣ созиш надоштааст.<sup>1</sup> Муҳимтарин асар дар бораи муҳтавои ин китоб, бино ба таъкиди муҳаққиқон, пораҳеост, ки аз худи ин китоб дар яке аз маъхазҳои қадими арабӣ, яъне, китоби «Уюну-л-ахбор»-и Ибни Қутайба боқӣ мондааст. Муҳаққиқон бар онанд, ки Ибни Қутайба ё аз тарҷумаи Ибни Муқаффаъ истифода бурдааст ва ё худ бевосита ба асли паҳлавии асар даст доштааст, зеро дар ҳеч яке аз ин пораҳо, ки бо ҷумлаи «Дар оин хонадам» оғоз мешавад, номи мутарҷим зикр нашудааст. Он пораҳои ҷунинанд:

1. Дар оини ҷанг. Омодагӣ ба ҷанг, одоби саворон ва ин ки шоҳони Эрон чӣ гуна марзбононе ба марзҳои ҷаҳоргона мегуморданд; Одобҳои ҷанг ва қалъагирӣ, шаҳркушӣ, камин кардану равона намудани ҷосусон, эъзоми пешоҳангон ва дастаҳои дигар аз лашкариён ва эҷоди силоҳхонаҳо.<sup>2</sup>

2. Оини тирандозӣ. Ибни Надим мегӯяд, ки оини тирандозӣ таълифи Баҳроми Гӯр аст ва қайд карда, ки ба гуфтаи баъзе аз Баҳроми Чубин аст. Баҳроми Гӯр ва Баҳроми Чубин аз мардони далери даврони сосонианд, ки дар бораи далерию шучоати онҳо ривояту афсонаи зиёде эҷод шудааст. Ба гуфтаи Ибни Надим интисоби китоб ба Баҳроми Гӯр ба гумон наздиктар аст, зеро дар таърихи даврони сосонӣ пеш аз ҳама ба шикору тирандозӣ шуҳрат дорад.<sup>3</sup>

3. Оини ҷавгонбозӣ. Ибни Надим аз китобе ба номи «Оини ҷавгонбозӣ аз ойини эронӣ» ном бурдааст, ки эҳтимолан дар давраи аввали асри аббосӣ ба арабӣ тарҷума шудааст. Аз арабҳо нахустин касе, ки ба ҷавгонбозӣ пардохт, Ҳорунарашид будааст, зеро арабҳо то ин замон аз ин бозӣ хабар надоштанд. Қитъае дар «Уюну-л-ахбор» омада, ки дар он шеваи ба даст гирифтани ҷавгон, гардонидани он, тарзи задани гӯй дар ҳоли саворӣ, шеваи рафтор бо ҳамнабардон ва дигар қоидаву қонунҳои ин бозӣ ва ҳамчунин дастурҳои ахлоқии дигар баён шудааст.<sup>4</sup>

4. Оини пешгӯӣ ва роҳҳои мухталифи он. Аз пораи иқтибоснамудаи Ибни Қутайба бармеояд, ки яке аз роҳҳои пешгӯӣ ин будааст, ки мурғеро мепаронидаанд ё мурғеро, ки дар ҳоли парвоз

---

<sup>1</sup> محمدی ملایری. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام. ص. 191.

<sup>2</sup> همان جا، صص. 194-192.

<sup>3</sup> همان جا، صص. 196-194.

<sup>4</sup> همان جا، ص. 197.

будааст, аз ҷиҳати навъи парвози ӯ пешгӯӣ мекардаанд ва онро фоли неку бад мегирифтаанд.<sup>1</sup>

5. Гохнома. Ин китоб, ки доир ба тартиби табақоти давлати Сосониён аст, ҷузви «Оиннома» будааст ва онро китоби ҷудогона намедонистаанд. Аз ҳамин рӯ, дар «Ал-фехрист»-и Ибни Надим номи он наомадааст.<sup>2</sup>

6. Дар тарбият ва одоби муошират. Ибни Қутайба ду пора аз «Оиннома» нақл мекунад, ки яке аз онҳо дар бораи одоби хӯрок аст шомили омӯзаҳои умумӣ дар тартибу одоби иҷтимоӣ.<sup>3</sup>

7. Мавзӯҳои пароканда. Ибни Қутайба дар китоби худ се қитъа аз «Оиннома» нақл мекунад, ки дар бораи одоби мусоҳибат бо подшоҳон ва оини маҷлиси эшон будааст.<sup>4</sup>

Аз баррасии пажӯҳандагон бармеояд, ки «Оиннома» илова бар ахбору дostonҳои таърихӣ, маҷмӯаи бузурге аз илму маорифи даврони сосонӣ, сохтори давлат ва одобу русуми дарбори онҳо ва мартабаҳои дарбориён ба шумор мерафтааст. «Оиннома» дорои тамоми маълумоте буда, ки барои бузургону шоҳзодагон ва фармонравоёни давлати сосонӣ донишҷӯи онҳо зарурӣ ва ҳатмӣ будааст. Дар китобҳои паҳлавӣ ишораҳои ба оинномаҳо шудааст. Дар китоби сеvуми «Динкард» дар боби «таълим» аз китоби «Оиннома»-и таълифи Озарфарнбағи Фаррухзодон ишора шудааст. Дар рисолаи «Гузориши шатранҷ» аз «Оинномаҳо»-е ном бурда шуда, ки шомили қоидаҳои ин бозӣ будаанд. Рисолае низ дар бораи оини номанависӣ мавҷуд аст.<sup>5</sup>

### Ш.2.16. Тоҷнома

Бино ба таҳқиқи пажӯҳишгарон, Ибни Надим дар «Ал-фехрист»-и худ аз китобҳои эронӣ дар ду ҷо аз китобе бо унвони «Ат-тоҷ» ном бурдааст: яке дар зимни китобҳои, ки Ибни Муқоффаъ ба арабӣ тарҷума карда (132) ва дигаре дар фехристи китобҳои таърихӣ ва дostonии эронӣ (364). Мавриди аввалро «Китоб дар сирати Анӯшервон» ва мавриди дувумро «Китоби «Тоҷ» ва фолҳои неке, ки подшоҳон бад-он мезаданд» номидааст.<sup>6</sup> Қадимтарин сарчашмае, ки аз китоби «Ат-тоҷ» ном мебарад, «Уюну-л-ахбор»-и Ибни Қутайба мебошад, ки зоҳиран мақсуд аз он як «Тоҷнома»-и паҳлавии сосонист. Ибни Қутайба ҳашт қитъа аз китоби «Ат-тоҷ» нақл карда, ки ҳама аз навъи панду андарз ва дастурхоест дар бораи оини мамлакатдорӣ ва одобу русуми дарборӣ, ки дар давраи Сосониён

<sup>1</sup> همان جا، ص. 198.

<sup>2</sup> همان جا، ص. 198.

<sup>3</sup> همان جا، ص. 201.

<sup>4</sup> همان جا، ص. 202.

<sup>5</sup> میرفخرایی، م. آیین نامه//تاریخ جامع ایران، ص. 397-400.

<sup>6</sup> نقل از تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 249.

маъмул будааст. Панҷ қитъа аз забони Хусрави Парвиз аст, ки ду қитъа аз онҳо шомили панду андарзҳое дар бораи корҳои сипоҳу кишвар ба писараш Ширӯя (11\1; 15) ва қитъаҳои сеюм, чаҳорум ва панҷум дастурҳоест, ки ин подшоҳ ба амиру хазинадори худ додааст (45\1;59; 84).<sup>1</sup> Аз се қитъаи дигар, нахустини онҳо мансуб ба яке аз подшоҳон, ки шомили баёни вазифаҳои шохӣ, душвории ин вазифа нисбат ба вазифаҳои дигари мардум аст (5\1). Қитъаи дигар сухани яке аз вазирон дар бораи машварат ва қоидаҳои он аст. Қитъаи ҳаштум хутбаест, ки яке аз дабирини подшоҳ эрод кардааст.<sup>2</sup>

Бино ба гуфтаи муҳаққиқон, тарҷумаи китоби «Точнома»-и Ибни Мукаффаъ дар адабиёти араб шуҳрати азим касб кард. Илова бар он ки аз ин китоб дар осори адабии араб пораҳои зиёде нақл шуда, чандин китоб дар пайравӣ аз он ва бо номи «Точнома» дар адабиёти араб эҷод шудаанд. Аз ҷумла «Китоб-ут-точ»-ҳои Абиубайда (вафоташ дар аввали асри IX), Ибни Ровандӣ, Собӣ ва Ибни Форис. Маъруфтарини ин китобҳо «Китоб-ут-точ»-и мансуб ба Ҷоҳиз будааст.<sup>3</sup>

### Ш.2.17. Рисолаҳои кӯтоҳи таълимӣ Ш.2.17.1. Сурсухан

«Сурсухан» (дар паҳлавӣ Sursaxwan) рисолаи кӯтоҳест дар 21 банд, ки дар маҷмӯаи «Матнҳои паҳлавӣ» (155-159) ҷоп шудааст. Ин рисола намунаҳои барои дуоҳои шукргузорӣ бар суфраи меҳмонӣ, пеш ва пас аз хӯдани хӯрок аст. Матни рисола бо сипосгузорӣ аз мизбон оғоз мешавад (банди 2), сипас, Урмузд (банди 3), амшоспандон (банди 4), табақаҳои ҳафтгонаи биҳишт (банди 5), се оташи муҳим (Фарнбағ, Гушнасб ва Бурзинмеҳр) (банди 6), эзадони Меҳр, Суруш, Рашн, Баҳром, Войи биҳӣ (банди 7) ва дигар эзодон (банди 8), шох ва бузургони дарбор, сипахбадони чаҳоргона, довари доварон (раиси доварон), андарзбад (мушовир)-и муғон ва хазорбад (фармондеҳи ниғаҳбонони шохӣ) (бандҳои 9-15) ниёиш мешаванд. Он гоҳ барои фаровонию баракат дар кишвари Эрон ва мизбон дуо мешавад (банди 15-17) ва саранҷом Урмузду амшоспандон, табақаҳои чаҳоргона мӯбадон, ҷанговарон, кишоварзон ва санъатгарон, оташҳо, холигарон (ошпазҳо), хунёгарон, дарбориён ва боз ҳам мизбонон ниёиш мешаванд (банди 18). Рисола бо сипосгузории гӯянда аз мизбон хатм мешавад:

*«Серам аз хуриш, пурам аз май ва хуррамам аз ромиш... Хуш бихобед ва Яздонро дар хоб бибинед» (банди 19-21).*<sup>4</sup>

<sup>1</sup>Мирфхрайи, м. Таҷнома//Тарихи ҷамъи иран, с.401

<sup>2</sup>Маммади Малайри, Маммад. Ферҳанги иранӣ пеш аз ислам с.162

<sup>3</sup>Мирфхрайи, м. Таҷнома//Тарихи ҷамъи иран, с.400; ибн Ндиим. Ферҳанги. Бе кушш رضا تجدد, تهران, 1352.

<sup>1</sup>Маммади Малайри, Ферҳанги иранӣ пеш аз ислам. с. 163-61 ; تفضلى. تاريخ ادبيات, ص. 1248

<sup>4</sup>Мирфхрайи, м. Серсхн//Тарихи ҷамъи иран, с.371

Зикри сипаҳбадони чаҳоргона далолат бар он дорад, ки рисола, ба эҳтимоли қавӣ дар давраи Сосониён, дар замони Анӯшервон ё пас аз ӯ таълиф шудааст. Ин рисола дар маҷмӯаи «Матнҳои паҳлавӣ» ба нашр расида ва Ҷаҳонгири Товодиё онро таҳзиб ва ба англисӣ ва Саййиди Урён ба форсӣ тарҷума кардаанд.<sup>1</sup>

### III.2.17.2. Хусрав ва ридак

«Хусрав ва ридак» рисолаест, ки дар он ридаке (ғулومه) аз дарбориёни Хусрави Парвиз бо номи Хушорзу (банди 125) ба суолҳои подшоҳ ҷавоб мегӯяд. Дар оғоз Хушорзу саргузашти худро ба шоҳ нақл мекунад, ки ӯ аз хонадони сарватманде буда, аммо дар хурдсолӣ аз падар ятим мондааст. Ба туфайли сарвати меросмонда ба фарҳангистон рафта, огоҳии динӣ ва дабириро фаро мегирад. Баъд аз он дар ҳунарҳои саворӣ, тирандозӣ, найзаандозӣ, мусиқӣ, ситорашиносӣ ва бозиҳои гуногун маҳорат ҳосил мекунад (бандҳои 1-18). Хушорзу аз шоҳ хоҳиш мекунад, ки ӯро имтиҳон кунад ва Хусрави Парвиз пурсишҳое дар бораи беҳтарин хӯрокҳо (бандҳои 20-54), майҳо (бандҳои 55-59), он чи бо май хӯрда мешавад (бандҳои 65-66), созҳо (бандҳои 60-64), гулҳо ва атрҳо (бандҳои 67-94), аспҳо (бандҳои 98-100) ва дигар амалу пешаҳо матраҳ мекунад. Ҷавобҳои ридак ба подшоҳ писанд меояд. Дар охири рисола достони дилписанде омада, ки ба эҳтимоли муҳаққикон иловаи баъдӣ мебошад. Ин достон имтиҳони ҷобукию далерии ридак аст. Шоҳ аз вай мехоҳад, то ду шерро, ки сабаби ваҳшати рамаи асбон шудааст, зинда дастгир кунад. Ридак аз ин имтиҳон сарбаландона мебарояд ва ба симати марзбон таъйин мешавад. (бандҳои 110-120). Пажӯҳишгарон ин рисоларо аз навъ ва чинси адабиёти андарзӣ донистаанд.<sup>2</sup>

Мавзӯи саволхое, ки дар рисола матраҳ мешаванд, дониш аст ва дар ҳар пурсише омӯзише нухуфта аст. Гарчанд ридак ба қавли худаиш, ҳамчун як ҳирбад донандаи ҳуби «Авесто»-ст ва андешаҳои мӯбадӣ дар рисола дида мешавад (банди 9), аммо сухан бештар дар бораи созу навоҳо, хӯроку атриёт, бозиҳову зинафзорҳост, ки аз ин ҷиҳат рисола дорои аҳаммият аст. Ба андешаи муҳаққикон, пурсишу посухҳои ин рисола бозгӯи чигунагии завқу салиқаи ашрофи сосонӣ, шукӯҳу ҷалоли дарбори Хусрави Парвизро дорад.<sup>3</sup> Саолибии Нишопурӣ дар «Таърихи ғураар-ус-сияр» тарҷумаи бахше аз ин рисоларо овардааст.<sup>4</sup> Тарҷума аз асли паҳлавӣ мухтасартар аст, аммо дар мавориде иловаҳо дорад, ки дар матни паҳлавӣ нест, монанди беҳтарин обҳо, беҳтарин пӯшокҳо,

انفضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 329.

<sup>2</sup> همان جا، ص. 289.

<sup>3</sup> همان جا، ص. 290.

<sup>4</sup> Саолибии Нишопурӣ. Таърихи ғураар ус-сияр. Таҳияи Н. Зоҳидов, -Душанбе: Бухоро, 2014.-С. 344-346.

нармтарин бистарҳо, вале достони шерон, ки дар матни паҳлавӣ ҳаст, дар ривояти арабӣ вучуд надорад.<sup>1</sup>

Матни ин рисола дар маҷмӯаи «Матнҳои паҳлавӣ» ба нашр расида ва ба форсӣ низ тарҷума шудааст.<sup>2</sup>

### III.2.17.3. Гузориши шатранҷ ва вазъи нард

«Гузориши шатранҷ ва вазъи нард» рисолаи кӯтоҳе дар 38 банд аст, ки дар «Матнҳои паҳлавӣ» (115-120) омадааст. Дар ин рисола ба шарҳи чигунагии вуруди шатранҷ аз Ҳиндустон ба Эрон, шеваи бозии он ва дар баробари он, ироаи бозии нард аз сӯйи эронӣ ба Ҳиндувон аст. Бино ба гуфтаи муҳаққикон, унвони рисола дар нусхаҳои ҳаттӣ наомада, таҳзибгари матни паҳлавӣ бо илҳом аз калимоти калидӣ ва бо таваҷҷуҳ ба мавзӯи рисола ин унвонро ба он додааст.<sup>3</sup>

Дар оғози рисола омада, ки шоҳи Ҳиндувон Девишарм (ки дар шакли Добшалим дар «Калилаву Димна омадааст) дар замони Хусрави Анӯшервон барои озмудани хирад ва доноии эронӣ ва низ ба назар гирифтани суди худ шатранҷе бо муҳраҳое аз зумурраду ёкут, бо тухфаҳои гаронбаҳо, ҳамроҳ бо беҳтарин доноёни дарбори худ ба Эрон фиристод. Аз шоҳ хост, ки доноёни Эрон маънӣ ва мафҳуми онро дарёбанд, вагарна, бояд ба Ҳиндувон бочу хироч пардозанд (бандҳои 1-4). Шоҳ се рӯз муҳлат хост, аммо дар ин муддат ҳеч як аз доноёни Эроншаҳр натавонистанд рози ин бозиро дарёбанд. Саранҷом Бузургмеҳри Бухтагон дар шатранҷ нишони корзорро дид ва пас аз ташреҳи муҳраҳо ва шеваи бозӣ, нақши намодини ҳар як муҳраро баён дошт (бандҳои 5-11). Пас аз он Бузургмеҳр бозии нардро ихтироъ намуда, ба номи бунёдгузори давлати Сосониён – Ардашери Бобакон «Нивардашер» (нардашер) номид ва шеваи бозии онро ба шоҳ тафсир кард (бандҳои 19-32). Хусрави Анӯшервон Бузургмеҳрро бо тахтаи нард ва тухфаҳои бисёр ба Ҳинд фиристод, то доноёни ин сарзамин мафҳуми намодини муҳраҳо ва тосҳои нардро бозёбанд. Шоҳи Ҳиндустон чиҳил рӯз замон хост, вале ҳеч як аз доноёни Ҳинд натавонистанд бозии нардро дарёбанд. Бузургмеҳр пирӯз шуд ва бо бочу хирочи фаровон ба Эрон бозгашт (бандҳои 32-37). Муаллифи рисола дар охири матн дар бораи оини бозӣ, таваҷҷуҳ ва кӯшиши бештар дар ҳифзи муҳраҳои худ, то бурдани муҳраҳои ҳариф ва дифоъ дар баробари ӯ тавсияҳо медиҳад (банди 38).<sup>4</sup>

Шарҳи рамзи муҳраҳои шатранҷу нард, ки дар рисола аз ҷониби Бузургмеҳр баён шудааст, қобили таваҷҷуҳ аст. Масалан, дар шатранҷ шоҳ ба унвони муҳраи аслӣ, рух бар чапу рост, фарзин намоди артишторонсолор, пил пуштибонсолор, аспсаворон ва ғайра

<sup>1</sup> معين، محمد. خسرو قبادين و ريديگ وى//آموزش و پرورش، تهران، 1332، س. 1، ش. 14، ص. 68-74.  
<sup>2</sup> ميرفخرایى، م. خسرو و ريديگ//تاريخ جامع ايران، ص. ; ملكى، ايرج. خسرو و ريديک// مجله موسيقى، تهران، 1344 ;  
عريان، سعيد. متن های پهلوى، ص. 72-82.

<sup>3</sup> تقضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 291.

<sup>4</sup> ميرفخرایى، م. رساله های کوتاه تعليمى//تاريخ جامع ايران، ص. 368.



омадааст. Бозии нард рамзи чаҳон бар асоси чаҳонбинии зардуштист, аз ҷумла, ташбеҳи тахтаи нард ба замини спандормуз (муқаддас ва баракатбахшанда), сӣ муҳраи сафеду сиёҳ ба сӣ шабонарӯз, гардиши гардона ё тос ба гардиши ахтарону сипехр ва гайра. Бино ба таҳқиқи Аҳмади Тафаззулӣ, маълумоти ин рисола дар бораи ихтироии шатранчу нард афсонаомез аст ва эҳтимолан аз ривоятҳои шифоҳии роиҷ дар охири аҳди Сосониён китобат шудааст. Робитаи фарҳангии Эрон бо Ҳинд, ки дар давраи Анӯшервон хеле ривож гирифта буд, сабаби эҷоди ин афсона шудааст. Аксар бар онанд, ки ин рисола аз «Оиннома», ки номи он дар охири матн (банди 38) омадааст, гирифта шудааст. Мазмуни ин «Оиннома» аз роҳи «Худойнома»-и паҳлавӣ ба китобҳои таъриху адаби арабию форсӣ, монанди «Фурар-ус-сияр»-и Саолибӣ ва «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ бо ихтилофҳо роҳ ёфтааст.<sup>1</sup> Дар «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ ихтироии шатранч дар «Достони Гав ва Талҳанд ва пайдо шудани шатранч» батафсил омада, аммо ихтироии бозии нард аз тарафи Бузургмехр мухтасар аст.<sup>2</sup> Он маълумоте, ки дар бораи бозии нард дар матни паҳлавӣ омада, дар «Шоҳнома» нест. Дар баъзе сарчашмаҳо ихтироии нард ба даврони Ардашери Бобакон мансуб аст ва муаллифони баъзе аз сарчашмаҳо, монанди Яъқубӣ онро низ аз ихтирооти ҳиндуҳо доништаанд.<sup>3</sup>

### Ш.2.17.4. Оини номанависӣ

«Оини номанависӣ» рисолаи кӯтоҳи таълимиест, ки дорои 62 банд буда, дар «Матнҳои паҳлавӣ» (132-140) ҷой дода шудааст. Дар матн номи рисола наомада, онро веростори матн интиҳоб кардааст. Ҳадафи рисола шарҳи шеваи нигориши нома ба дигарон ва дар муносибатҳои гуногун, бо зикри намуна аст. Номаҳо бо таваҷҷуҳ ба мақоми мухотаб, бо унвонҳо ва лақабҳои тахсиномез оғоз мешаванд ва бо дуоҳо хотима меёбанд. Намунаҳои номаҳо хитоб ба бузургону мансабдорон, коргузорону хидматгорон, падару модар, хешону дӯстон аст. Намунаҳои низ барои тасалият ва хурсандӣ бахшидан ба бузургон, талаби мағфират барои даргузашта ва дарозии умр барои бозмондагон, узрҳои, ки нависанда дар қор шитоб доштааст (бандҳои 18-26), омадааст. Намунаҳои додашуда барои номаҳои расмӣ адибона аст ва ҷумлаҳои, ки дар онҳо ба қор рафта, то андозае маснуист. Замони нигориши рисола, ба эҳтимоли муҳаққиқон, охириҳои даврони сосонист ва аз назари сайри таҳаввули номанигорӣ дар адабиёти форсии тоҷикӣ дархури таваҷҷуҳ аст.<sup>4</sup>

<sup>1</sup>Фирдавсӣ Абулқосим. Шоҳнома, ҷ. 8. -С. 291-306.

<sup>2</sup>Ҳамон ҷо. -С. 347-350.

<sup>3</sup>Бешар, М. ترجمه چند متن پهلوی، ص. 10-17. 152-157. 17-10. عريان، س. متنهای پهلوی، ص. ;

ميرفخرايي، م. رساله های کوتاه تعليمی//تاريخ جامع ايران، ص. 368؛ تقضلى. تاريخ ادبيات، ص. 291.

<sup>4</sup>تقضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 292. ... ميرفخرايي، م. آيين نامه نويسی//تاريخ جامع ايران، ص. 372.

احدزادگان، م. آيين نامه نويسی. چيستا، 1365، س. 3، ش. 8، ص. 609-611.

Дар миёни осори паҳлавӣ ду фарҳанги нисбатан хурд вучуд дорад, ки дар шинохти адабиёти паҳлавӣ холӣ аз аҳаммият нест: яке «Фарҳанги паҳлавӣ» («Frahang-i pahlavig») дарбардорандаи се гурӯҳ аз мушкилтарин калимаҳои паҳлавӣ ба лиҳози имлост. Муаллиф саъй намудааст калимаҳои аз назари имлоӣ барои дабирон ва котибон душворро гирдоварӣ кунад. Воқеан, ин фарҳанг фарҳанги тафсирии забони форсии миёна, яке аз осори лексикографии паҳлавӣ мебошад, ки тафсири хузворишҳоро дар бар мегирад. Гурӯҳи нахуст, калимаҳои оромиасл ё хузворишҳое ҳастанд, ки дар матнҳои паҳлавӣ навишта мешуданд, вале ҳангоми хондан муродифҳои паҳлавии онҳо талаффуз мешудааст. Масалан, «миё» менавиштанду «об» мехонданд. Дар ин мавридҳо гирдоваранда ин калимаҳоро ҳамроҳ бо гунаи паҳлавии онҳо овардааст. Гурӯҳи дувум вожаҳое ҳастанд, ки аз назари имло душвор будаанд ва ин душворӣ аз ибҳоми хатти паҳлавӣ ба миён омадааст. Барои намуна як ҳарф ё як сурати мураккаб аз ду ё чанд ҳарф, гоҳе нишондиҳандаи чанд овоз аст ва гоҳе дар ҳангоми навиштан ё шикастанависии ҳуруф баъзе аз вожаҳо аз сурати аслии худ дур меафтанду монанди ҳуруфи дигар мешаванд. Ба ин тартиб сурати навишти бисёре аз калимаҳо аз ҳам фарқ пайдо мекунад. Гирдоваранда баъзе аз ин калимаҳоро дар шакли равшантари онҳо дар зерӣ ҳар вожа овардааст. Дар ин мавридҳо котибон дар зерӣ вожаи паҳлавӣ вожаи душворро ба хатти авестой ё форсӣ овонависӣ мекунанд, то котибони баъдӣ битавонанд ба осонӣ онҳоро хифз кунанд ва дар вақти зарурӣ онҳоро бинависанд. Гурӯҳи сеюм калимаҳое ҳастанд, ки ба сабаби ноошноии паҳлавизабонон бо онҳо бо чанд муродиф дар фарҳанг омадаанд.<sup>1</sup>

Дар ин фарҳанг калимаҳо вобаста ба мавзӯ дар сӣ фасл табақабандӣ шудаанд: 1. Чаҳонбинӣ, 2. Гетӣ, 3. Обҳо, 4. Донаҳо ва меваҳо, 5. Хӯрданиҳо, 6. Сабзичоту гиёҳҳо, 7. Чаҳорпоён, 8. Парандагон, 9. Ҳайвонот (нуктаи чолиб ин чо он аст, ки калимаи «занҷабил» ба сабаби шабоҳати хаттӣ бо «зиндапил» дар ин чо омадааст), 10. Андомҳо, 11. Мардумон, 12. Бартарин мардумон, 13. Пасттарин мардумон, 14. Саворӣ, 15. Дабирӣ, 16. Филизот, 17. Доварӣ ва қазоват, 18-23. Феъл, 24. Замир, 25. Қайд, 26. Санъат, 27. Замон ва тақсимооти сол, 28. Номи рӯзҳо, 29. Адад, 30. Авзон.<sup>2</sup> Аз он чо, ки ин фарҳанг бидуни нақли матн аст, арзиши адабии зиёде надорад, аммо тартиби мавзӯии калимаҳо, ки нисбат ба тартиби алифбоии калимаҳо аз қидмати бештаре бархурдоранд, огоҳиҳои фарҳангии судманде дар бар доранд. Муҳаммадҷаводи Машкур ин фарҳангро дар тарҷумаи форсӣ бо иловаи хузворишҳои паҳлавӣ мунташир кард.<sup>3</sup> Раҳим Додихудоев дар асоси «Фарҳанги паҳлавӣ» «Луғати ҳетерограммаҳои

<sup>1</sup> میرفخرایی، فرهنگ پهلوی//تاریخ جامع ایران،ص.375.

<sup>2</sup>تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام،ص.323.

<sup>3</sup>مشکور، محمدجواد. کارنامه اردشیر بابکان. تهران، 1369.

пахлавӣ»-ро мурааттаб намудааст.<sup>1</sup> Дар мавриди соли таълиф, нусхаҳо ва тарҷумаву нашри ин фарҳанг Аҳмади Тафаззулӣ, М.Мирфахроӣ ва Муаззам Диловаров батафсил навиштаанд.<sup>2</sup> Дигаре «Фарҳанги уим-евак» («Frahang-i oim – evak») фарҳанги дузабонаи авестой-пахлавӣ ва яке аз осори лексикографии забони пахлавӣ мебошад. «Фарҳанги уим-евак» фарҳанги кӯтоҳест, ки дар он вожаҳо (тақрибан 1000 вожа) ва дар баъзе мавридҳо чумлаҳои авестой, ба эҳтимол аз наскҳои гумшудаи «Авесто» бо баргардони пахлавии онҳо омадааст. Аз он ҷо, ки ин фарҳанг бо вожаи «уим» (oim)-и авестой, ба маънии «як» оғоз шуда ва бо калимаи пахлавии «евак» (evak) баргардон шудааст, китобро «Уим-евак» номидаанд.<sup>3</sup> «Фарҳанги уим-евак» бо ҳуруфи авестой ва пахлавӣ китобат шуда, аз 27 фасл иборат аст. Он бо дуо оғоз шуда, баъд аз он мавзӯи асли меояд. Фаслҳои 1–4 ва 25–27 аз рӯи мавзӯ, як қисми фасли 4 ва фаслҳои 5–25 мутобиқи алифбои авестой мурааттаб гардидаанд. Дар ин фарҳанг шумораҳои миқдорӣ ва тартибӣ, ҷонишинҳо, сифатҳо бо префикси hu – «хуб», узвҳои бадани инсон, пайвандакҳо, истилоҳоти динӣ, ҳислатҳои инсон, воҳидҳои андоза (ангушт, кадам), шабу рӯз ва қисмҳои он тафсир шудаанд. Бобҳои ба тартиби алифбо сохташуда нокомил буда, ҳамагӣ доир ба 24 ҳарфи авестой мисолҳо оварда шудаанд. Дар алифбои авестой 48 ҳарф ва 44 овоз вучуд дорад. «Фарҳанги уим-евак» барои омӯхтани забони авестой пешбинӣ шудааст. Дар он як қатор масъалаҳои грамматикаи забонҳои авестой ва пахлавӣ, аз қабилӣ падеж, шумора (танҳо, дугона, чамъ), ҷинсият ва ғайра шарҳ ёфтаанд. Соли таълиф ва мурааттиби он маълум нест, аммо ба таҳмини муҳаққиқон, монанди бисёре аз китобҳои пахлавӣ мумкин аст дар асри X ё XI таълиф шуда бошад.<sup>4</sup>

Ин фарҳанг аз назари дар бар доштани баъзе аз калимаҳо, ки дар матнҳои авестоии даврони сосонӣ ва пас аз он мавҷуд будаву акнун дар даст нест, монанди номи баъзе аз гуноҳон ва номҳои аъзои бадан аҳаммияти илмӣ дорад. Ҳамчунин вучуди истилоҳоти забоншиносӣ барои шумора, ҷинс ва бандакҳои сарфӣ дар навъи худ бемонанд аст.<sup>5</sup>

### Ш.2.19. Достонҳои мансури пахлавӣ

Осори ғайридини давраи Сосониён хеле кам боқӣ монда, зеро бештари достонҳо ба таври шифоҳӣ аз насле ба насле нақл мешуданд. Бино ба таҳқиқи донишмандон, бештари достонҳои пахлавӣ дар

<sup>1</sup>Додихудоев Р. Лугати ҳетерограммаҳои пахлавӣ.-Душанбе, 1969.

<sup>2</sup>Мирфхраӣ, М. فرهنگ پهلوی//تاریخ جامع ایران،ص.372-377. تفضلی. تاریخ ادبیات، ص. 321-323;

Диловаров М. Фарҳанги пахлавӣ, нусхаи электоронӣ

<sup>3</sup>Мирфхраӣ, М. فرهنگ پهلوی//تاریخ جامع ایران،ص.373

<sup>4</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام،ص.324

<sup>5</sup>Мирфхраӣ, М. فرهنگ ایم ایوک//تاریخ جامع ایران،ص.373-374.323-324. تفضلی. تاریخ ادبیات پیش از اسلام،  
Диловаров М. Фарҳанги оим-евак, нусхаи электоронӣ.

замони Анӯшервон китобат ва дostonу афсонаҳо аз миллатҳои дигар, алалхусус ҳиндуҳо ба паҳлавӣ тарҷума шудаанд. Ба таври куллӣ, муҳаққиқон дар адабиёти ин давра ду навъи дostonу ҳикоятро ташхис додаанд: Ҳикоятҳо дар бораи шахсони таърихӣ ва ё афроде, ки вучуди онҳоро дар таърих медонистаанд ва дигар афсонаҳо, ки асоси таърихӣ надоштаанд ва фақат барои саргармӣ ва гоҳе барои тарбияи ахлоқӣ гуфта мешудаанд.

Ибни Надим дар оғози фасле, ки дар он китобҳои афсонаро зикр мекунад, менависад: «Нахустин қасоне, ки ба таснифи афсона пардохтанд ва онҳоро дар китобҳои вижа мудавван сохтанд ва дар ганҷинаҳо ниғаҳдорӣ карданд ва бархе аз онҳоро ҳам аз забони ҷонварон ҳикоят карданд, эронӣни бостон буданд. Пас аз эшон Ашқониён, ки табақаи севум аз подшоҳони Эрон ҳастанд, дар ин қор муболиғат карданд ва дар рӯзгори Сосониён бар он афзуда шуд, то аъроб онҳоро ба арабӣ тарҷума карданд...».<sup>1</sup> Баъд аз ин Ибни Надим шуморе аз ин афсонаҳоро ном мебарад, аз ҷумла «Ҳазор афсон», «Хурофа ва нузха», «Хурӯс ва рӯбох», «Рӯзбеҳи ятим», «Намруд-малики Бобил» ва ҳамчунин китобҳои эронӣ ва ғайриэрониро зикр мекунад, ки Аббони Лоҳиқӣ онҳоро ба забони арабӣ назм кардааст, монанди «Калилаву Димна», «Синдбоднома», «Булуҳар ва Будосиф».<sup>2</sup>

### Ш.2.19.1. Ҳазор афсон

Ба зоҳир гумон меравад, ки «Ҳазор афсон» асли китоби машҳури «Ҳазору як шаб» аст. Муаллифони сарчашмаҳои давраи исломӣ, монанди Масъудӣ ва Ибни Надим, ки аз ин дoston ёд кардаанд, дар ин андешаанд.<sup>3</sup> Сабаби таълифи дoston ин буда, ки яке аз подшоҳон ҳар гоҳ зане мегирифт, як шаб бо ӯ буд ва дигар рӯз ӯро мекушт. Иттифоқан бо духтаре аз шоҳзодагон ба номи Шаҳрзод издивоҷ кард ва чун ба ӯ даст ёфт, он духтар забон ба дostonсарой кушуд ва суханро ба поёни шаб кашонид, ба ин манзур, ки подшоҳ ӯро барои дувумин шаб ниғаҳ дорад ва боқии афсонаро аз вай бишнавад. Ҳазор шаб ба ҳамин гуна сипарӣ шуд ва дар ин муддат шоҳ бо ӯ ҳамбистарӣ мекард, то саранҷом фарзанде аз ӯ таваллуд шуд. Духтар фарзандро ба шоҳ нишон дод ва ӯро аз ҳилаи худ огоҳ кард. Шоҳ хирадмандии духтарро писандид ва ӯро нигоҳ дошт. Хидматгузори шоҳ бо номи Динорзод дар ин қорҳо бо духтар ҳамраъӣ буд. Бино ба ривояте, ин китоб барои Хумой-духтари Баҳман таълиф шуда буд ва ҳамчунин ривоятҳои дигар. Китоби «Ҳазор афсон» аз ҳазор шаб ва камтар аз дусад афсона иборат аст, ки як афсона ба чандин шаб нақл мешавад. Китоби «Ҳазору як шаб»-ро, ки ҳоло дар даст аст, муаллифони гуногун иншо кардаанд. Ҳикоятҳои дар ин китоб гирдомадаро муҳаққиқон ба чанд даста тақсим кардаанд: 1) Афсонаҳои

<sup>1</sup> ابن ندیم، الفهرست، به گوشش رضا تجدد، تهران، 1352، ص. 186

<sup>2</sup> نقل از میدفخرایی، م. داستلن های منثور//تاریخ جامع ایران، ص. 404.

<sup>3</sup> نقل از میدفخرایی، م. داستلن های منثور//تاریخ جامع ایران، ص. 404.

бостонии Эрон, ки ҳастаи аслии онро ташкил меода, ки аз китоби «Ҳазор афсон»-и паҳлавӣ гирифта шудааст. 2) Ҳикоятҳое, ки дар давраи исломӣ дар Бағдод ба он изофа шудааст. 3) Афсонаҳое, ки пас аз ин таърих дар Миср ба ин китоб пайваст шудааст. Ин китоб баъди ба арабӣ тарҷума шудан миёни мусулмонон шуҳрати зиёд ёфт ва охира-охира афсонаҳои нав ба он зам шуданд. Ҳангоми нусхабардорӣ котибон бо тақозои муҳит ва замон ба он тағйироти зиёде ворид намудаанд, ки афсонаҳои пешин асли худро гум кардаанд. Ҳамчунин касони зиёде дар тақлид ба он китоб навиштанд, ки яке аз онҳо Ибни Абдуси Чаҳшёр аст, ки дар асри X зиндагӣ кардааст.<sup>1</sup>

### III.2.19.2. Калилаву Димна

«Калилаву Димна» маъруфтарин қиссаест, ки дар замони Сосониён аз санскрит ба паҳлавӣ тарҷума шудааст. «Калилаву Димна» маҷмӯаи қиссаву ҳикоеҳои тамсилии пандомезест аз забони парандагон ва ҳайвонот, ки масъалаҳои муҳимми ахлоқию иҷтимоиро дар либоси рамзу киноя дар бар мегирад. Ин асар аз китобҳоест, ки масъалаҳои ахлоқии он бар замми арзиши адабию таърихӣ ҳамеша дар маҷлисҳои олимон ва аҳли завқ мавриди баррасӣ, баҳс ва радду бадал қарор гирифта, ҳикояву ҳикматҳои он муносиби мақома ё ҳолате мисол оварда мешаванд. Ҳикоятҳои ин китоб ҷанбаи рамзӣ доранд. Асли «Калилаву Димна» маҳсули фикр ва натиҷаи таҷрибаи зиндагии донишмандони Ҳинд аст. Унвони китоб аз номи ду шағолест, ки ба ҳиндӣ-санскритӣ Картако ва Димнако буда, ба паҳлавӣ чун Калилак ва Димнак интиқол гардида, тавассути тарҷума ва талаффузи арабӣ ба Калилаву Димна табдил ёфтаанд. Воқеаҳои китоб аз мунозираи ин ду шағол ибтидо мегиранд. Манбаи аслии китоб «Панчатантра» ба санскрит буда, дар панҷ боб мавҷуд аст. Боби «Сайёҳ ва заргар», ки дар «Панчатантра» як ҳикояи хурди «Шер ва Гов» аст, дар «Калилаву Димна» ба боби махсуси табдил ёфта, се боби дигараш аз «Маҳабҳарата» гирифта шудааст. Маҷмӯи ҳикоеҳои ҳиндиро дар замони ҳукмронии Хусрави Анӯшервон Бурзуяи ҳаким аз Ҳиндустон ба Эрон оварда, аз прокрит ба паҳлавӣ гардонд ва ба он «Картодианко» ном гузошт.<sup>2</sup> Бино бар ин, аз 16 боби мавҷудаи «Калилаву Димна» 10-тояш аслан ҳиндӣ буда, 6 боб аз аслу бунёд моли эронинажодон аст. Тақрибан соли 570 шахси эронинажоди масеҳимазҳабе ба номи Буд (ё Бавд) онро аз паҳлавӣ ба сурёни тарҷума кард.<sup>3</sup> Вале ин нусха чандон шуҳрат наёфт ва ба дигар забонҳо тарҷума нашуд. Дар он боби Бурзуяи табиб вучуд надорад. Азбаски «Калилаву Димна» мазмуни динӣ надошта,

<sup>1</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 297.

<sup>2</sup> مجتبیایی، فتح الله. ملاحظاتی در باره اعلام کلیله و دمنه/ازبانشناسی، تهران، 1363، س. 1، ش. 2، ص. 33-63.

<sup>3</sup> محجوب، محمد جعفر. در باره کلیله و دمنه، تهران، 1336، ص. 129.

баръакс оид ба сиёсати мамлакатдорист, масъалаҳоеро фаро мегирифт, ки тарафҳои неки он тарғиб, ҷиҳатҳои бад мазаммат гардида, инсон аз содир кардани он бояд парҳез менамуд. Аз ин рӯ ин китоб бо хусусияти тарбиявии худ барои арабҳо низ судманд буд, бинобар он тарҷумаи паҳлавияш эмин монд. Дар асри VIII вақте ки ҳокимият аз дасти Умавиён ба дасти Аббосиён гузашт, нуфузи фарҳанги эронӣ дар ҳаёти сиёсӣ ва иқтисодии хилофат афзуд ва ҳаракати шуубия авҷ гирифт. Адибони пайрави ин ҳаракат асарҳои зиёди илмию адабии паҳлавиро ба арабӣ гардонданд, ки аз намояндагони барҷастаи ин ҷараён яке Ибни Муқаффаъ буд. Ӯ «Калилаву Димна»-ро дар ин вақт аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума карда, ба он тағйирот ва иловаи зиёде даровард. Аз ин рӯ, китоби ӯ асосан аз се асл фароҳам омадааст: ҳикоёти аслии ҳиндӣ, иловаҳои, ки ҳангоми тарҷумаи паҳлавӣ ба он дохил шудааст ва тағйироти худи Ибни Муқаффаъ.<sup>1</sup>

«Калилаву Димна»-и Ибни Муқаффаъ аз бобҳои зайл иборат аст: 1) Дар тарҷумаи Ибни Муқаффаъ; 2) Бурзуяи табиб ва он чи тааллуқ бад-ӯ дорад; 3) Шер ва гов; 4) Бозчустии кори Димна; 5) Кабӯтари Мутаваққа; 6) Бум ва зоғ; 7) Маймун ва сангпушт; 8) Зоҳид ва мири мушон (росу); 9) Қалламуш ва гурба; 10) Шоҳзода ва мурғи фанза; 11) Шер ва шағол; 12) Тирандоз ва модашер; 13) Зоҳид ва меҳмони ӯ; 14) Подшоҳи Ҳинд ва паноҳандагони ӯ; 15) Шоҳзода ва ёрони ӯ; 16) Сайёҳ ва ҳунарманд.

Ибни Муқаффаъ дар бобҳои як ва ду сайри таърихии «Калилаву Димна»-ро то замони худ муфассал баён мекунад, ки он арзиши бузургии илмӣ дорад. Тарҷумаи паҳлавии «Калилаву Димна» аз миён рафтааст. Тамоми тарҷумаҳои баъдии он ва таҳрири Ибни Муқаффаъ аз тарҷумаҳои форсии тоҷикӣ сурат гирифтаанд. Ин китоб дар байни арабҳо хеле шуҳрат ёфт ва онро баъдҳо шоирони араб Оббон ибни Абдулҳамиди Лоҳикӣ (750–815) ва Саҳл ибни Навбахт, ки эронинаҷод буд (асри 8), Алӣ ибни Довуд ва дигарон ба арабӣ ба риштаи назм кашидаанд. Аз миёни ин шоирон назми Оббони Лоҳикӣ бештар шуҳрат дорад ва байтҳои пароканда аз он боқӣ мондааст. Илова ба ин дар охири асри XI ва баъдтар «Калилаву Димна» боз ду бор ба забони арабӣ ба назм дароварда шудааст. Дар ин китоб масъалаҳои ахлоқӣ, сулҳу сафо, рафоҳияту осоиши мардум, тадбири давлатдорӣ, адлу инсоф, саховату ҷавонмардӣ, некӣ, рафоқату садоқат, иттиҳоду бародарӣ, тарғиби дониш, мурувват ба бечорагон ва амсоли инҳо ташвиқ гардида, бадӣ, ҷанг, сифатҳои зишти одамӣ, аз қабилӣ хиёнат, дурӯғ, дуздӣ, худбинӣ, ҳасаду бухл, ҷаҳлу нодонӣ, риё мазаммату маҳкум карда мешавад.

---

<sup>1</sup>Афсаҳзод А. Калилаву Димна // Энциклопедияи советии тоҷик, ҷ. 3.-Душанбе, 1981. -С.180.

«Калилаву Димна» дар адабиёти форсии тоҷикӣ мақоми хос дорад. Таъсири ғояҳои умуминсонии онро дар эҷодиёти бузургтарин намоёндагони адабиёти форсии тоҷикӣ – Рӯдакӣ, Фирдавсӣ, Низомӣ, Саъдӣ, Мавлавӣ, Ҷомӣ ва дигарон мушоҳида кардан мумкин аст. Ин китоб чандин бор ба форсии тоҷикӣ тарҷума ва танзим шудааст. Ба забони форсӣ нахуст «Калилаву Димна» дар замони Наср ибни Аҳмади Сомонӣ аз нусхаҳои арабии Ибни Муқаффаъ тарҷума гардид ва бо хоҳиши вазир Абулфазли Балъамӣ (вафоташ 940) устод Рӯдакӣ соли 932 онро ба назм даровард. Ҳамин тарик, «Калилаву Димна» ба забони форсии тоҷикӣ аз забони арабӣ тарҷума гардида, дар асрҳои баъд яке аз манбаъҳои назму насри ахлоқӣ, ҳикмату андарз, панду насихат, мавъизат ва зарбулмасалу мақолҳо қарор гирифт, зеро нусхаҳои аслии паҳлавии «Калилаву Димна» аз байн рафта, таҳрир, танзим ва тарҷумаи он аз рӯи навиштаи Ибни Муқаффаъ сурат мегирифт. Аммо аз «Калилаву Димна»-и манзуми Рӯдакӣ, ки нахустин маснавии ахлоқии адабиёти форсии тоҷикӣ буд, ғайр аз як миқдор байтҳои пароканда (бештар аз сад байт), ки дар сарчашмаҳои таърихӣ ва «Луғати фурс»-и Асадии Тӯсӣ дучор мешаванд, дигар чизе боқӣ намондааст. «Калилаву Димна»-и Рӯдакӣ бо ин байтҳо оғоз меёбад: *«Ҳар кӣ н-омухт аз гузашти рӯзгор, Низ н-омӯзад зи ҳеч омӯзгор»*. Соли 1144 Абулмаолии Насруллоҳи Муншӣ «Калилаву Димна»-и Ибни Муқаффаъро ба форсӣ тарҷума кард, ки ҳоло дар даст аст. Ин тарҷума яке аз тарҷумаҳои машҳури форсии тоҷикии ин китоб мебошад. Баргардони он ба тарзи озод сурат гирифта, иншоияш бо сабки маснӯъ ва суханороии муншиёна, вале ҷо-ҷо бо фасоҳат ва балоғати баланд таҳрир гардидааст ва дар матн барои тафсилу тавзеҳи маъниҳои дақиқи он байту фикраҳои шеъри форсию арабӣ, ҳадису оят ва зарбулмасалу мақоли зиёде оварда шудааст. «Калилаву Димна»-и Абулмаоли аз намунаҳои барҷастаи насри асри XI форсу тоҷик ба шумор меравад ва таъсири он ба «Марзбоннома», «Тӯтинома» ва амсоли онҳо калон аст.<sup>1</sup>

Бобҳои «Калилаву Димна»-и Абулмаоли чунин ном доранд: 1) Ибтидои «Калилаву Димна» аз забони Бузургмеҳр; 2) Барзуяи ҳаким; 3) Шер ва гов; 4) Бозҷусти кори Димна; 5) Дӯстии кабӯтар, зоғ, муш, боҳа (сангпушт) ва оҳу; 6) Бум ва зоғ; 7) Бӯзина ва боҳа; 8) Зоҳид ва росу; (мири мушон); 9) Гурба ва муш; 10) Подшоҳ ва фанза ё фариса ва комҷӯй; 11) Шер ва шағол; 12) Тирандоз ва модашер; 13) Зоҳид ва меҳмони ӯ; 14) Подшоҳ ва бараҳманон; 15) Заргар ва сайёҳ; 16) Шоҳзода ва ёрони ӯ.<sup>2</sup>

<sup>1</sup>Афсаҳзод А. Калилаву Димна.-С. 180.

<sup>2</sup>ابولمعالی نصر الله منشی. کلیله و دمنه. به کوشش مجتبی مینوی، تهران، 1343.

Абулмаоли таъкид менамояд, ки мутарҷимони пешин бештар ба шавқангезии ҳикояҳо аҳаммият додаанд, аммо ӯ ба тавзеҳи маонии дақиқ, балоғату ҳусни иншо ва кашфи рамзиёту ишороти асар диққат додааст. Аз ин рӯ дар тарҷумаи ӯ баробари нигоҳ доштани мундариҷаи умумӣ, ба ҷузъиёт тағйироти зиёд ворид шудааст. Соли 1257 Аҳмади Қоней «Калилаву Димна»-ро дар Осиеи Хурд аз рӯи «Калилаву Димна»-и Абулмаоли ба форсӣ ба номи яке аз ҳукмронони салҷуқӣ Иззуддини Кайковус дар вазни «Шоҳнома», дар ҳаҷми 4500 байт ба назм даровард, ки як нусхаи он дар Музеи Британия таҳти рақами Add 7766 нигоҳ дошта мешавад.<sup>1</sup>

Неҳзати адабию илмие, ки пас аз истилои муғул дар асри ХУ дар Осиеи Миёна ва Хуросон ба амал омада, ба инкишофи афкори маънавии халқҳои ин сарзамин таконе дод, ба сайри таърихӣ «Калилаву Димна» низ бетаъсир намонд. Хусайн Воизи Кошифӣ матни «Калилаву Димна»-и Абулмаолиро мувофиқи завқи муосирони худ бори дигар дар охири асри 15 барои вазири Хусайни Бойқаро – Низомуддин Аҳмади Суҳайлӣ (1444–1502) таҳрир карда, ба он «Анвори Суҳайлӣ» ном гузошт.<sup>2</sup>

Дар асри ХУ1 вобаста ба вазъи сиёсӣ иҷтимоии замони ҳукмронии Акбар (1556–1605) Абулфазл ибни Муборак дар асоси «Калилаву Димна» «Иёри дониш»-ро бо забон ва ифодаҳои содатар тартиб дод. Соли 1945 дар Техрон аз тарафи Ҷаҳонбахши Ҷомехрӣ ном шоире «Калилаву Димна»-и манзум ба майдон омад, ки «Рой ва Бараҳман» (8000 байт) ном дорад. Ин манзума дар баҳри ҳазачи мусаддаси маҳзуф иншо гардидааст. Таҳрир ва талхиси тоҷикии «Калилаву Димна» (аз рӯи «Анвори Суҳайлӣ») ба қалами Расул Ҳодизода тааллуқ дорад (соли 1967).<sup>3</sup>

«Калилаву Димна» дар таърихи адабиёти форсу тоҷик мақоми фавқулода бузург дошта, аз бехтарин осори адабиёти ҷаҳонӣ ба шумор меравад ва дар инкишофи жанри тамсили тарбиявӣ ахлоқӣ нақши калон бозид. Ин китоб шухрати беандоза зиёд дошта, ба забонҳои сурёни, юнони (1080 бо номи «Стофанит ва Ихнилат»), яҳудӣ (1251), лотинӣ (асри 13), испанӣ (1251), олмонӣ (1480), италиявӣ (1552–53), донморкӣ (1518), англисӣ (1570), ҳолландӣ (1623), франсавӣ, малай, туркӣ, ўзбакӣ (1838, 1898, 1966), озарӣ (1960), гурҷӣ, арманӣ, тоторӣ (ҷамъ қариб ба 60 забон) тарҷума шудааст, ки матни Ибни Муқаффаъ ё Абулмаоли ва ё Кошифӣ асли онҳост.<sup>4</sup> Тарҷумаҳои лотинӣ ва юнонии таҳрири арабии «Калилаву Димна» дар асрҳои миёна дар тамоми Аврупо интишор доштанд. Сабаби асосии истиқболи

---

<sup>1</sup>Нақл аз Афсаҳзод А. Калилаву Димна. -С. 180.

<sup>2</sup>Кошифӣ, Хусайн Воиз. Анвори Суҳайлӣ. -Душанбе, 1979.

<sup>3</sup>Калилаву Димна, таҳияи Р. Ҳодизода.- Душанбе, 1979.

<sup>4</sup>Нақл аз Афсаҳзод. Калилаву Димна. -С. 180.



густардаи ин китоб дар он буда, ки таълимоти он дастури зиндагии мардуми авом ва раҳнамое барои фармонравоён доир ба оини мамлакатдорист. Аз ривояти Ибни Қутайба ва Ҳаким Фирдавсӣ ба хубӣ метавон аз аҳаммияти ин китоб дар даврони сосонӣ огоҳ шуд. Аз ривояти Ибни Қутайба бармеояд, ки чун Хусрави Парвиз тавассути ҷосусон огоҳ шуд, ки Баҳроми Чӯбина «Калилаву Димна» мехонад, ба Бундуй ва Бистом-тағоҳои худ гуфт: «Ҳаргиз аз Баҳром чун акнун хароснок нашуда будам, ки шунидам ба хондани «Калилаву Димна» мудовимат мекунад, зеро ин китоб ба воситаи иштимол бар одоб ва дурандешӣҳо барои инсон рои беҳтар аз рои худаш ва ҳазму эҳтиёте бештар аз ҳазму эҳтиёти худаш падида меоварад».<sup>1</sup>

Хусусияти умдаи «Калилаву Димна»-ҳо аз он иборат аст, ки онҳо дар услуби ҳикоят андар ҳикоят ё қисса андар қисса навишта шудаанд. Ин услуб аз услубҳои серистифодаи насри классикӣ ва ривоятии форсии тоҷикӣ мебошад. «Калилаву Димна» аз мавзӯҳои писандидаи мусаввирони асрҳои XI–XII буд. Он чун асари ахлоқӣ ғояҳои баланди умуминсонӣ – дӯстӣ, рафоқат, зебӣ, неки, осоишу сулҳу сафо, одоби писандида, рафтори шоиста ва гуфтори ҳамидаро тарғиб намуда, ҷаҳлу нодонӣ, бухлу ҳасад, мумсикӣ, ғадру хиёнат, қабохату ҷиноят ва дигар хислатҳои разилаи инсониро маҳкум мекунад.<sup>2</sup>

Тарҷумаи таҳрири форсии тоҷикии «Калилаву Димна» дар тӯли асрҳо ҳикмати Ҳинди бостон, хиради эронинажодони қадим ва заковати арабҳои асримӣнаро ба ҳам пайваста, дар даврони навини адабиёти форсии тоҷикӣ (асрҳои X–XX) равон гардида, чун падидаи дурахшони синтези арзишҳои ахлоқӣ, бадеӣ ва адабии умуминсонии халқҳо ва замониҳои гуногун арзи вучуд кардааст.<sup>3</sup>

### III.2.19.3. Синдбоднома

«Синдбоднома» аз ҷумлаи беҳтарин осори бадеии аҳди қадим аст, ки муаррихон онро аз осори бадеии аҳди Ашкониён донистаанд, вале аксар бар онанд, ки ин китоб асли паҳлавӣ дорад. Бино ба қавли муаллифони сарчашмаҳои адабӣ, «Синдбоднома» ба забони паҳлавӣ дар ду таҳрир – яке мухтасар ва дигаре муфассал мавҷуд будааст.<sup>4</sup>

Масъудӣ дар «Муруҷ-уз-заҳаб» менависад, ки Синдбод дар замони шоҳе аз ҳиндувон ба номи Куруш буд ва китобе дошт ба номи

انقل از میرفخرایی، م. کلیله و دمنه//تاریخ جامع ایران؛ص. 407.

<sup>2</sup>Афсаҳзод А.Калилаву Димна. -С. 179.

<sup>3</sup>Афсаҳзод А.Калилаву Димна. -С. 179-180; Мирзоев А., Сездаҳ мақола.- Душанбе, 1977; Калилаву Димна.- Душанбе, 1979; Брагинской И. С., Очерки из истории таджикской литературы.- Сталинобод, 1956; 406. کلیله و دمنه//تاریخ جامع ایران،ص. 303-302. محجوب، محمد جعفر. در باره کلیله و دمنه، تهران، 1336؛ تفضلی. تاریخ ادبیات ایران،ص.

<sup>4</sup>Азизкулов Ҷ. Синдбоднома // ЭАСТ, ч. 3.-С. 123.

«Ҳафт вазир ва муаллиму ғулом ва зани шоҳ» ва ин ҳамон китобест, ки бо номи «Китоби Синдбод» маъруф аст.<sup>1</sup> Забехуллоҳ Сафо номи ин шоҳро Куш овардааст.<sup>2</sup> Дар мавриди асли китоби «Синдбоднома» муаллифони сарчашмаҳо ба ду гурӯҳ чудо мешаванд: як гурӯҳ асли онро хиндӣ шуморанд, гурӯҳи дигар асли эронӣ доштани онро таъкид кардаанд. Имрӯз тақрибан собит шудааст, ки ин китоб дар Эрон ва ба эҳтимол дар замони Хусрави Анӯшервон таълиф шуда, гарчи асли дoston аз Ҳинд гирифта шудааст.<sup>3</sup> «Синдбоднома» дар асри VIII аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума шуда ва баъдан матни арабии он ба сурёни ва дар асри XI матни сурёни ба юнонӣ тарҷума шудааст. То имрӯз тарҷумаҳои зиёди ин асар ба забонҳои гуногун мавҷуд аст. Дар адабиёти форсии тоҷикӣ чанд таҳрири мустақили манзуму мансур дорад. Нахустин таҳрири «Синдбоднома» ба форсии дарӣ, бино ба таъкиди Ҷ. Азизкулов, ба қалами устод Рӯдакӣ тааллуқ дорад, ки абёти парокандае аз он боқӣ мондааст. Ба дастури амир Нӯҳ ибни Мансури Сомонӣ ва ӯ Нӯҳ ибни Наср аз тарафи Хоҷа Амид Абулфавориси Фанорӯзӣ соли 950 аз паҳлавӣ ба форсӣ тарҷума шуд, ки онро Азрақӣ ба назм даровардааст. Машҳуртарин таҳрири «Синдбоднома» ба қалами Заҳирии Самарқандӣ тааллуқ дорад, ки онро Ҷумъабой Азизкулов нахуст бо номи «Китоби Ҳаким Синдбод» (соли 1971) ва сипас соли 2012 бо унвони «Синдбоднома» дар Душанбе ба нашр расонд.<sup>4</sup>

Мазмуни мухтасари «Синдбоднома» чунин аст: Дар кишвари Ҳиндустон Курдис ном шоҳи одилу фозил фармонравой дошт, аммо писаре надошт, ки валиаҳд шавад, аз ин чихат ғам меҳӯрд. Дар пирсолӣ соҳиби писаре шуд. Таълиму тарбияи шоҳзода ба дӯши Синдбоди Ҳаким гузошта шуд. Чун шоҳзода дар илму дониш комил гашт, пеш аз он ки ба имтиҳони доноёни дарбор равад, Синдбод устурлоб пеши офтоб дошта, дарёфт, ки то ҳафт рӯз чони шоҳзода дар хатар хоҳад буд. Бино бар ин, ба шоҳзода фармуд, ки то ҳафт рӯз бо касе сухан нагӯяд ва худ ғоиб шуд. Яке аз канизони шоҳ, ки ба шоҳзода ошиқ буд, назди ӯ рафт ва арзи таманно кард. Шоҳзода хоҳиши ӯро рад кард. Каниз назди шоҳ рафта, шоҳзодаро ба хиёнат муттаҳам кард ва шоҳ дар ғазаб шуда, ба қатли писар фармон дод. Ҳафт вазири фарзонаи шоҳ ба ҳимояти шоҳзода бархоста, дар бораи бевафоии занон ва зарари таъҷил ҳикоятӣ тамсилӣ оварда, иҷрои қатлро ба таъхир меандохтанд, то ин ки ҳафт рӯз сипарӣ шуд ва шоҳзода бегуноҳии худро собит кард. Ин ҳикоят ва 34 ҳикояти дарунандарун, ки ҳафт тан вазиру шоҳ ва канизаку шоҳзода ба тақвияти сухану иддаои худ овардаанд, муҳтавои «Синдбоднома»-ро

---

1. اتفضلى، تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 299.

2. صفا، ذ. تاريخ ادبيات در ايران، ج. 2، تهران، 1339. ص. 1001.

3. نقل از ميرفخرابى، م. سندهادنامه//تاريخ جامع ايران، ص. 408.

4. Синдбоднома, таълифи Заҳирии Самарқандӣ, тадқиқот, тасҳеҳи матн ва таълиқоти Ҷ. Азизкулов. - Душанбе: «Пайванд», 2012.

ташкил медиҳад. Заҳирии Самарқандӣ вобаста ба талаботи замони худ тарҷумаи «Синдбоднома»-и Абулфаворисро ба насри музайян ва ораста ба амсоли форсию арабӣ ба қалам дод.<sup>1</sup>

#### Ш.2.19.4. Булуҳар ва Будосиф

«Булуҳар ва Будосиф» (Булавҳар, Будосаф, Бузосиф ва Будисиф низ хондаанд) аз ҷумлаи китобҳои афсонаист, ки дар аҳди Сосониён аз ҳиндӣ ба паҳлавӣ тарҷума шудааст. Ин китоб низ пас аз ислом ба арабӣ тарҷума шуда ва Аббони Лоҳикӣ онро ба назм даровардааст. Қаҳрамони асосӣ шоҳзодаи ҳиндӣ Будосиф аст, ки баъд аз солҳои шавқу интизор ба дунё омад. Мунаҷҷимон толеи ӯро пешгӯӣ карданд, ки пешвои порсоёни замони худ хоҳад гашт. Падараш, ки ба тоифаи зоҳидон нафрат дошт, доягон гумошт ва фармуд, ки назди ӯ танҳо аз шодию тараб ва комронӣ сухан гӯянд. Будосиф баъд аз чанде рози марғу бемориро дарёфт ва ба андеша фуру рафт. Дар ин хангом Булуҳар, ки яке аз обидони машҳур ва ҳакимони Сарандеб буд, дар либоси бозаргон оҳанги диёри ӯ кард. Шоҳзода назди вай роҳ ёфт ва пас аз гуфтушунудҳое Булуҳар тавонист зеҳни Будосифро ба охират мутаваҷҷеҳ кунад. Шоҳзода пас аз он бо илҳом ва раҳнамоии фариштае тарки дунё кард ва роҳи биёбонро пеш гирифт. Дар роҳ чаҳор фаришта ӯро ба осмон бурданд ва Худованд дину ҳикматро ба ӯ омӯзонд ва ба ҳидоятӣ халқ маъмураш кард.<sup>2</sup>

Бояд зикр кард, ки асоси китоб шарҳи зиндагии Будост. Вожаи Будосиф шакли эронишудаи «Boddhisattva» аст, ки лақаби Будо пеш аз Будо шудан (ба огоҳӣ расидан)-и ӯст ва Булуҳар зоҳидест, ки Будоро ба ҳақиқати зиндагӣ ошно месозад. Аксар бар онанд, ки дар ин дoston саргузашти Будоро ранги дигаре додаанд, то дар муҳити динҳои сомӣ қобили қабул бошад.<sup>3</sup>

Дар миёни авроқи кашфшуда дар Турфони Чин, ки ба пайравони Монӣ тааллуқ дорад, қитъаҳои аз ин дoston ба шеърӣ форсии дарӣ ва ба хатти монавӣ пайдо шудааст. Аҳмади Тафаззулӣ ҳадс мезанад, ки эҳтимол дорад ин абётро яке аз шоирони ҳамасри устод Рӯдакӣ суруда бошад. Ин дoston ба чандин забони аврупоӣ тарҷума шудааст. Бино ба таҳқиқи Минавӣ, дostonи «Булуҳар ва Будосиф» дар китобҳои адабу ахлоқи арабию форсӣ таъсири бисёр гузоштааст.<sup>4</sup>

#### Ш.2.19.5. Тӯтинома

«Тӯтинома» унвони як силсила маҷмӯаҳои мансуру манзуми адабиёти форсии тоҷикӣ, ки ҳикоятҳои аз забони тӯтӣ нақл

---

<sup>1</sup>تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 301-299.  
<sup>2</sup>یحقی، جعفر. فرهنگ اساطیر و داستانوارہ ها در ادبیات فارسی، تهران، 1386، ص. 223.  
<sup>3</sup>میدفخرایی، م. بلوهر و بوداسف//تاریخ جامع ایران، ص. 409.  
<sup>4</sup>تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 302.

шудаанд. Бино ба гуфтаи муҳаққиқон, ин китоб тарҷума ва иқтибоси китоби «Шукосаптатӣ» (Sukasaptati-Ҳафтод достони тӯтӣ)-и санскрит аст, ки дар аҳди Сосониён ба паҳлавӣ тарҷума шудааст.<sup>1</sup>

Ин асар чандин бор ба форсӣ таҳрир шуда, вале қадимтарин таҳрири он аз байн рафтааст. Қадимтарин нусхаи мавҷуди ин китоб «Тӯтинома»-и Зиёуддини Нахшабист. Нахшабӣ онро дар заминаи маъхазҳои ҳиндӣ аз нав таҳрир намуд, ҳикоятҳоро ба тартиби муайян дароварда, суханпардозҳои тӯлониро кӯтоҳ, шумори ҳадису оятҳо, таъбироти арабӣ ва такрори беҳудаи ҳикоятҳоро кам кардааст. Ашъори шоирони дигарро ҳазф намуда, ашъори худро ҷойгир карда ва ҳикоятҳои дорой мазмуни ғайриахлоқиро иваз намудааст.<sup>2</sup>

«Тӯтинома» ба шеваи ҳикоят андар ҳикоят иншо шуда, ҳикоятҳо аз забони тӯтии Маймун ном бозаргоне ба зани ӯ гуфта мешавад ва бо ин амал зани бозаргонро то омадани шавҳараш аз хиёнат бозмедорад. «Тӯтинома» чандин бор таҳрир ва ба назм дароварда шуда, ба забонҳои бисёре тарҷума шудааст.<sup>3</sup>

### Ш.2.19.6.Искандарнома

«Искандарнома» низ аз ҷумлаи китобҳои асли паҳлавӣ доранд. Бино ба гуфтаи муаллифони сарчашмаҳо, қиссапардозе аз мардуми Миср, ки бо фарҳанги юнонӣ ошно буд, дар асри дувуми мелодӣ дар асоси ривоятҳо дар бораи Искандар китобе ба забони юнонӣ навишт, ки маншаи ҳама ривоятҳои мавҷуд аз қиссаи Искандар аст. Ӯро Колистенс дурӯғин номидаанд. Дар соли 330 мелодӣ нависандаи дигар ин асарро аз юнонӣ ба латинӣ тарҷума кард ва дар охири аҳди Сосониён ин асар ба паҳлавӣ тарҷума шуд ва аз ҳамин тарҷумаи паҳлавӣ дар «Худойнома»-ҳо истифода кардаанд. Қадимтарин «Искандарнома»-и мансури форсии мавҷуд дар байни асрҳои шашум ва ҳаштум навишта шудааст.<sup>4</sup>

Бояд зикр кард, ки дар ҳама осори паҳлавӣ, монанди «Корномаи Ардашери Бобакон», «Динкард», «Бундаҳишн» ва ғайра, ки аз Искандар ёд шудааст, ӯро «гучастак» (малъун, палид, вайронкор) номидаанд, зеро ин шоҳи ғаддор баъд аз забти Эрон онро вайрон кард, китобҳои зиёд, аз ҷумла «Авесто»-ро сӯхт. Як нусхаи онро ба Юнон фиристод ва фармуд, ки ба юнонӣ тарҷума кунанд. Дар адабиёти асримиёнагии форсии тоҷикӣ Искандар дар бештари осори манзуму мансур бо Зулқарнайни Қуръон яке доништа шуда, ба рамзи шоҳи одил мубаддал гардидааст.

---

انقل از میدفخرایی، م. طوطی نامه/تاریخ جامع ایران، ص. 409.

<sup>2</sup>Алимардонов А. Тӯтинома // ЭАСТ, ҷ., 3. -С. 237.

<sup>3</sup>Мирфخرایی، م. طوطی نامه/تاریخ جامع ایران، ص. 409-410. تفضلی. تاریخ ادبیات، ص. 304.

Алимардонов А. Зиёи Нахшабӣ ва «Тӯтинома»-и ӯ.- Душанбе, 1980.

<sup>4</sup>مقدمه // اسکندر نامه (کاسیتنس دروغین)، به کوشش ایرج افشار، تهران، 1343، ص. 9-3

Бино ба гуфтаи пажӯҳандагони адабиёти бостон, ба забони паҳлавӣ адабиёти мансури зиёде буда, ки қисмати бештари онҳо аз байн рафтааст ва аз бархе аз онҳо дар сарчашмаҳои асримиёнагӣ танҳо ном боқӣ мондааст. Масалан, Ибни Надим аз ҷумлаи дostonҳои мансури паҳлавӣ китоби «Мушқдона ва шоҳи занонро» ном бурдааст. Ба андешаи ховаршиноси рус Константин Иностранцев, номи ин китоб дар асл «Мушқдона ва Мӯбадон» будааст, ки дар асари таҳриф ба ин шакл даромадааст.<sup>1</sup> Ин китоб дорои афсонаҳои буда, ки дар адабиёти паҳлавӣ шуҳрат дошта ва қаҳрамонони он яке мӯбадон (кӯтоҳшудаи мӯбади мӯбадон) ва дигар канизак ба номи Мушқдона будааст. Ин тасвирҳои муҳаққиқи номбурда бо таъя ба китоби «Алмаҳосин ва-л-аздод», ки дар он номи канизак ба таври саҳеҳ омада, ба даст додааст. Ин дoston дар бораи яке аз мушовирон (шояд мӯбади мӯбадон бошад)-и Хусрави Парвиз бо номи Мӯбадон ва канизаки Ширин бо исми Мушқдона будааст. Мурод аз «Шоҳи занон» ин ҷо Ширин аст. Мӯбадон Хусравро аз дурӣ ҷустан аз занон тарғиб мекарда, ки Ширин аз он норозӣ будааст. Аз ин рӯ, Ширин ҳилае меандешад ва канизаки зебои худ-Мушқдонро ба Мӯбадон мебахшад, ки оқибат Мушқдона Мӯбадонро мутеи худ месозад.<sup>2</sup>

Дostonи дигар дostonи «Балош ва духтари шоҳи Ҷинд» буда, ки дар «Мучмал-ут-таворих» аз он ёд шудааст. Мазмуни ин дoston чунин будааст: Балош аз шоҳи Ҷинд духтарашро хостгорӣ мекунад, аммо шоҳи хиндувон духтарро намедихад. Балош бо шоҳи Ҷинд ба ҷанг мебарояд ва дар як набарди тан ба тан ўро мекушад духтарашро асир мегирад ва ба никоҳи худ мебарорад. Баъдан Балош аз ин духтар дилсард мешавад ва ба духтари охурсолори дарбор майл мекунад. Духтари шоҳи Ҷинд барои донистани сабаби дилсардии Балош аз ў ва рағбаташ ба духтари охурсолор ба ин зан наздикӣ меҷӯяд. Духтари шоҳи Ҷинд дармеёбад, ки сабаби тавачҷуҳи шоҳ ба духтари охурсолор итоату меҳрубонӣ будааст. Аз ин рӯ, ҳилае меандешаду худро ба шоҳ наздик мекунад ва бо фармонбардорию меҳрубонӣ меҳри духтари охурсолорро аз дили шоҳ берун мекунад. Дар зимни дoston қиссае аз забони ин ду зан барои исботи вафодории худ ва хиёнати дигар ба шоҳ омада, ки бино ба гуфтаи муҳаққиқон, ҳар ду асли хиндӣ доранд. Ҷикояти аввал қиссаи рӯбоҳест, ки бо ҳила бо парандагон тарҳи дӯстӣ меафканад, то онҳоро бихӯрад. Ҷикояти дувум қиссаи кабӯтару зоғ аст, ки кабӯтар бо лутфи зоғе ба ошхонаи шоҳӣ роҳ меёбад, аммо аз сипосгузори ба зоғ сар мепечад. Дар охир духтари охурсолор, ки шоҳ ўро ба шоҳдухтари хиндӣ бахшида буд, заҳр хӯрда мемирад. Сабаби

---

<sup>1</sup>ابنوسترنسف، کنتانتین تحقیقات در باره ساسانیان، ص. 50.

<sup>2</sup>تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 305.

худкушии духтари охурсолор он буда, ки шохдухтари ҳиндӣ меҳоҳад  
ӯро ба зании ғуломе диҳад.<sup>1</sup>

Илова бар ин, дар сарчашмаҳои асримиёнагӣ аз асарҳои мансури  
дигаре, монанди «Фарза ва Симок» ва дostonҳои шоҳону вазирони  
Ҳинд ёд шудааст, аммо аз муҳтавои ин дostonҳо хабаре нест. Аз сӯйи  
дигар аксари муҳаққиқон бар онанд, ки дostonҳои насри ривоятӣ,  
монанди «Доробнома», «Самаки айёр» аслу мояи адабиёти даврони  
бостонро доранд, аммо ҳеҷ нусхае аз онҳо ва ё ишорае ба асли  
пахлавии онҳо дар даст надорем.

Адабиёти мансур, алалхусус амсолу ҳикам, таъриху қисас ва  
мазмунҳои ахлоқию сиёсӣ дар ин аҳд равнақи басазо доштаанд ва  
бархе аз онҳо дар ибтидои асрҳои миёна ба арабӣ тарҷума шудаанд.  
Шухрати китобҳои монанди «Калилаву Димна», бобҳои  
илованамудаи форсиён чун боби «Барзуяи табиб» ва китобҳои, ки  
холо мавҷуд аст, монанди «Корномаи Ардашери Бобакон» ва  
ҳикоёту дostonҳои размию базмӣ, мисли ҳикояти «Баҳроми Чубин»  
ва қиссаҳои, ки дар асрҳои аввали исломӣ навишта шуданд, монанди  
«Вису Ромин», «Хураву Ширин», «Золу Рудоба» ва «Бежану  
Манижа» ба қавли муҳаққиқон, асли портӣ ва ё паҳлавӣ доштаанд.

### III.2.20. Адабиёти ахлоқии паҳлавӣ

Адабиёти ахлоқӣ яке аз муҳимтарин қисматҳои адабиёти  
пахлавист, ки ҳам ба адабиёти араб ва ҳам адаби форсии тоҷикӣ  
таъсир расондааст. Ниёкони мо ба ин гуна адабиёт аз даврони куҳан  
алоқаи зиёд доштаанд ва яке аз заминаҳои ривочи осори ахлоқӣ дар  
адабиёти асримиёнагии форсии тоҷикӣ ҳамин адабиёти ахлоқии  
даврони бостон аст. Аммо баъд аз ҳамлаи арабҳо ин ганҷинаи  
боарзиш аз байн рафта, танҳо бахше аз мазмунҳои онҳо дар осори  
суханварону суханшиносони асрҳои миёна бозтоб ёфтааст. Бино ба  
гуфтаи Муҳаммадии Малоирӣ, Қоҳиз менависад, ки эронӣ ба  
сабаби кӯшиш ва тавачҷуҳе, ки ба ин гуна мавзӯҳо доштанд,  
мавъизаву пандҳоро монанди таърихи ҳодисаҳои бузург ва умуре, ки  
нишонаи сарфарозӣ ва ифтихороташон буд, илова бар китобҳо, бар  
сангҳои азим низ менигоштанд ва ё дар биноҳои бузург ба ёдгор  
мегузоштанд.<sup>2</sup> Аҳаммияте, ки ин адабиёти ахлоқӣ дар даврони  
сосонӣ доштааст, сабаб шуда, ки дар тирози либосҳо, хошияи  
фаршҳо, канори суфраҳо, дар миёни баъзе аз зарфҳо ба чойи нақшу  
нигор ё зимни нақшу нигор суханони кӯтоҳи пандомез бинависанд.  
Масъудӣ аз хони бузурге мутааллиқ ба Анӯшервон ном мебарад, ки  
бар гирдогирди он бо гавҳарҳои гуногун суханони ҳикматомез

اتفضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. ص. 306.

<sup>2</sup>جاحظ، عمر بن بحر. المحاسن والاضداد، 201؛ نقل از ملایری؛ م. تاریخ و فرهنگ ایران، ص. 256.

навишта будаанд.<sup>1</sup> Дар адабиёти форсии тоҷикӣ манзумае аз ҳамин қабил, аз осори гузашта ба номи «Пандномаи Анӯшервон» мавҷуд аст, ки бунёди он бино бар муқаддима, пандҳое буда, ки бар тоҷи Анӯшервон нигошта будааст. Дар китоби «Ривоёт» ҷаҳор андарз нақл шуда, ки дар оромгоҳи Анӯшервон, бар дасторе ба забони паҳлавӣ навишта шуда буд. Ривоят мекунад, ки рӯзе Маъмун-халифаи аббосӣ ба оромгоҳи Анӯшервон рафт ва онро дар он ҷо ёфт.<sup>2</sup> Ҳамаи инҳо ва он чи дар адабиёти форсӣ ва арабӣ аз онҳо боқӣ монда, далолат бар он дорад, ки ин навъи адабӣ дар давраи Сосониён ривочи бисёр доштааст, то ҷое, ки ин гуна адабу ҳикамо аз вижагиҳои фарҳанги Машриқзамин шумурдаанд.

Дар забони форсии тоҷикӣ калимаи «адаб» то ҳадде муродифи вожаи «тарбият» аст. Ибни Мисквейҳ маҷмӯае аз ҳамин навъ навиштаҳои даврони сосониро дар китоби худ «Ҷовидон хирад» оварда ва ҳамаро зери унвони «Одоб-ул-фурс» ёд кардааст.<sup>3</sup> Ховаршиноси рус К. Иностранцев дар мақолаи «Дар бораи суннати адаби форсӣ дар садаҳои нахустини исломӣ» китобҳоеро, ки Ибни Надим дар «Ал-фехрист» овардааст, ба се гурӯҳ тақсими мекунад: 1. Китобҳое, ки бевосита аз забони форсии миёна тарҷума шудаанд. 2. Таълифоте, ки дар давраи аббосӣ, яъне дар давраи нуфузи эронӣ дар хилофат ба вуҷуд омадаанд ва таъсири китобҳои даврони сосонӣ ба онҳо равшан аст. 3. Китобҳое, ки асл ва сарчашмаи онҳо маълум нест, ҳарчанд баъзе аз мазмунҳои онҳо аз осори эронӣ гирифта шудааст.<sup>4</sup>

Дар адабиёти паҳлавӣ таълимоти адабӣ ва ахлоқӣ ба шаклҳои гуногун вуҷуд дошта ва баъд аз тарҷумаи арабӣ низ ба чандин даста тақсими шудаанд. Масъудӣ дар «Муруҷ-уз-заҳаб» баъд аз шарҳи иҷмолии таърихи Эрон менависад: «Мо ахбори сияру васоёву уҳуд ва мукотиботу тавқиғот ва хитобаҳои тоҷгузорию расоили эшонро дар китобҳои гузаштаи худ баён кардаем...».<sup>5</sup>

Маҳшеди Мирфаҳроӣ бо тақя ба ин суханони Масъудӣ мегӯяд, ки ҳар як аз унвонҳое, ки дар ин гуфта омада, намояндаи як даста ва навъи ҳосе аз ин осор аст. «Оиннома»-ҳо ва «Тоҷнома»-ҳо низ аз ҳамин гунаанд. Вақеан, мутолиаи ва баррасии ин даста осор огоҳиҳои бештаре дар бораи вазъи сиёсӣ ва иҷтимоӣ адабии даврони Сосониён ба даст медиҳад. Бино ба таҳқиқи пажӯҳандагон, асли паҳлавӣ ҳеч як аз ин осор дар даст нест ва танҳо тарҷумаи арабӣ ва гоҳ форсии онҳо боқӣ мондааст. Муҳаққиқи мазкур ин осорро ба чанд даста тақсими намудааст:

**Ахбору сияр.** Китобҳое, ки Масъудӣ ба унвони «ахбору сияр» хондааст, осоре будаанд дар мавзӯи таърихи умумӣ ё саргузашти подшоҳон ва дигар бузургон аз паҳлавӣ тарҷума шудаанд. Осореро, ки

<sup>1</sup> مسعودی، البولحسن علی. مروج الذهب، 204/2. نقل از میرفخرایی، اندرزهای پهلوی در کتابهای دوران اسلامی//تاریخ جامع ایران، ص. 377.  
<sup>2</sup> همان جا، همان صفحه.

<sup>3</sup> ابن مسکویه، ابوعلی محمد الحکمة لبخالده: 26-88، نقل از ملایری؛ م. تاریخ و فرهنگ ایران، ص. 266.

<sup>4</sup> اینوسترنسف، کنستانتین. تحقیقات در باره ساسانیان. ص. 22.

<sup>5</sup> ملایری؛ م. فرهنگ ایران پیش از اسلام، ص. 269.

дар ин замина дар забони паҳлавӣ вучуд доштааст, муҳаққиқон ба ду гурӯҳ тақсим мекунад: 1. Осори муштамил бар таърихи умумӣ аз навъи «Худойнома». 2. Китобҳое, ки саргузашти яке аз подшоҳон ё сарварон ё бузургон ва шарҳи воқеаҳои марбут ба онҳоро дар бар доштаанд. Муриди Масъудӣ ва Ибни Надим аз ахбору сияр дастаи дувум аст.<sup>1</sup>

**Васоё.** Осоре, ки дар забони арабӣ ба унвони «васоё» маъруфанд, иборат аз мазмунҳои ҳикматомез ва насиҳатҳое ҳастанд, ки аз сӯйи подшоҳон хитоб ба ҷонишин ва ё ҷонишинони баъдӣ ё бузургону коргузoron дар бораи идораи кишвар дар ҳангоми маргашон дода шудааст, ки муҳаққиқон онҳоро як навъ «васиятномаи сиёсӣ» номидаанд. Намунае аз ин адабиёт дар забони паҳлавӣ «Андарзи Хусрави Қубодон» аст. Пажӯҳандагон бар онанд, ки дар адабиёти паҳлавӣ шумори зиёде аз ин васоё вучуд дошта ва теъдоди зиёде низ ба арабӣ тарҷума шудаанд. Дар «Таърихи Табарӣ», «Таърих»-и Ҳамзаи Исфаҳонӣ ва баҳусус дар «Шоҳнома»-и асари бисёре аз ин таълимоти ахлоқӣ дида мешавад. Фирдавсӣ пас аз саргузашти шоҳони сосонӣ ва баёни марги онҳо мазмунҳои бисёре аз андарзҳои вопасини онҳоро ба назм даровардааст.<sup>2</sup>

**Уҳуд.** Уҳуд иборат аз маҷмӯаи дастурҳое аз пошоҳони сосонист, ки дар ҳангоми ҳукумат дар бораи мавзӯҳои гуногун аз оини ҷаҳондорӣ ва роҳу расми подшоҳӣ бо мазмунҳои ахлоқӣ хитоб ба ҷонишинҳои худ ва ё бузургони кишвар навишта шудааст. Дар адабиёти паҳлавӣ рисолаҳои зиёде аз ин гуна ба подшоҳони маъруфи сосонӣ, монанди Ардашери Бобакон ва Анӯшервон мансуб аст.

### Ш.2.20.1. Аҳди Ардашер

«Аҳди Ардашер» рисолаест аз васиятҳои сиёсии Ардашери Бобакон ба шоҳони эронӣ, ки баъд аз вай ба шоҳӣ мерасанд. Ин васиятҳо андарзҳое ҳастанд доир ба идораи мамлакат ва оини кишвардорӣ. Нусхаи паҳлави «Аҳди Ардашер» аз байн рафта, аммо чанд нусха ва чанд хулосаи арабии он вучуд дорад. «Аҳди Ардашер» насиҳатҳо ва дастурҳоест, ки Ардашер барои писараш Шопур ва шоҳони пас аз ӯ навиштааст, аз ҷумла: Таъкид бар иттиҳоди дину давлат. Ҳушдор дар ин бора, ки фурӯмоягон набояд ба кори дин ва пажӯҳишу қонунҳои он бипардозанд (банди 4). Ҳушдор дар бораи пайдоиши ақоиду фирқаҳо ва аз байн бурдани онҳоро ба тухмати бидъатгузорӣ тавсия медиҳад ва низ ба рӯҳониён андарз мекунад, ки фақат ба корҳои динӣ (амр ва наҳй) бипардозанд (банди 6). Тақсими раият ба ҷаҳор табақа: 1. Ҷангҷӯён; 2. Рӯҳониён; 3. Дабирону муначчимон ва пизишкон. 4. Санъатгарону бозаргонон ва кишоварзон (банди 13). Манъи интиқол аз як табақаи иҷтимоӣ ба

<sup>1</sup>Млаирӣ; м. فرهنگ ایران پیش از اسلام، ص. 133

<sup>2</sup>میرفخرایی، ادبیات اخلاقی ایران//تاریخ جامع ایران، ص. 382-383



дигар (бандҳои 12-13). Муҳаққиқон бар онанд, ки ин «Аҳд» дар тамоми даврони тӯлонии хонадони сосонӣ (424 сол) барои тамоми шоҳон ҳамчун қонуни асосӣ муҳтарам ва лозимуличро будааст. Ҳатто шоҳон ҳуқуқ надоштанд, ки онро дигар кунанд ва нодида гирифтани он гуноҳи бузург ба ҳисоб мерафтааст. Дар асрҳои миёна ин рисола хеле шухрат ёфт ва дар бисёр китобҳои адаб аз он ёд шудааст ва барои осон ҳифз кардани он яке аз шоирони араб онро ба назм даровардааст. Ривоятест, ки халифаҳо ба муаллимони фарзандонашон мефармудаанд, то маҷбур созанд, ки онҳо ин рисоларо ҳифз кунанд.<sup>1</sup>

Ҳамчунин Ибни Надим аз рисолаи дигаре бо унвони «Аҳди Ардашер ба писараш Шопур» дар зимни мавъизаву одоб ва ҳикам ном мебарад. Муҳаққиқон бар онанд, ки ин ҳамон матни кӯтоҳшудаи «Аҳди Ардашер» аст.<sup>2</sup>

### III.2.20.2. Рисолаи Ардашер дар оини кишвардорӣ

Рисолаест мансуб ба Ардашери Бобакон дар мавриди қонунҳои давлатдорӣ, ки дар бораи чангҷӯён, дабирон, доварони лашкаркашӣ, пазириши сафир, сохтани шаҳрҳо, тадбири ӯ дар бораи хонадони ашроф, додхохию ободонии сарзаминҳо баҳс шудааст. Қисмате аз онро Фирдавсӣ дар «Шоҳнома» ба назм даровардааст.<sup>3</sup>

Ба ҳамин минвол рисолаҳои монанди «Аҳди Шопур ба писараш Хурмуз», «Аҳди Кубод», «Аҳди Анӯшервон», «Корномаи Анӯшервон», ки асли паҳлавӣ дошта, дар асрҳои миёна ба арабӣ тарҷума шудаанд. Тавқеот ва хитобаҳои тоҷгузориро низ, ки бештар аз ҷумлаҳои кӯтоҳи ҳикоматомез иборатанд ва аз қавли подшоҳон нақл шудаанд, муҳаққиқон ба гурӯҳи адабиёти андарзии паҳлавӣ дохил кардаанд.<sup>4</sup>

### III.2.21. Номаҳои сиёсӣ

Ба монанди рисолаҳои зикршуда номаҳои аз шоҳону бузургони сосонӣ ба паҳлавӣ эҷод шудаанд, ки муҳаққиқон онҳоро «номаҳои сиёсӣ» хондаанд.<sup>5</sup> Дар китобҳои арабию форсӣ аз ин номаҳо ёд шуда, ки дарбардорандаи ҳидоятҳои марбут ба идораи кишвар аст. Аз ин миён ду нома ба Ардашер мансуб аст, ки асли паҳлавии онҳо аз байн рафтааст. «Номаи Ардашер», «Номаи Тансар», «Номаҳои Анӯшервон», «Номаи Хусрави Парвиз дар посухи Ширӯя» аз он ҷумлаанд. Ин

<sup>1</sup>Мирфхрайи, عهد اردشير//تاريخ جامع ايران،ص.833.

<sup>2</sup>ميرفخراي، عهد اردشيربه پسرش شاپور//تاريخ جامع ايران،ص. 385

<sup>3</sup> Фирдавсӣ Абулқосим. Шоҳнома, ҷ.7.-С. 252-268.

<sup>4</sup> تفضلى. تاريخ ادبيات،ص.382-388. ; ميرفخراي، ادبيات اخلاقي ايران//تاريخ جامع ايران،ص. 214-226

<sup>5</sup> تفضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام،ص.227

номаҳоро вобаста ба муҳтаво метавон ба шумори адабиёти андарзӣ ворид кард. Ибни Надим низ ин номаҳоро дар феҳристи китобҳои мавъизаи одоб ва ҳикам овардааст.

### III.2.21.1. Номаи Тансар

«Номаи Тансар» яке аз муҳимтарин санадҳо дар мавриди ташкилоти идории даврони сосонӣ мебошад. Ин номаро Тансар, (Абӯрайҳони Берунӣ онро ба шакли «Тусар ё Тавсар» зикр карда ва аксари муҳаққиқон навиштаи Беруниро саҳеҳ медонанд») ҳирбадонхирбади аҳди Ардашери Бобакон ба посухи Гушнасб-шоҳи Табаристон, ки баъзе иқдомоти Ардашерро мавриди танқид қарор додааст, навиштааст. Бино ба қавли муҳаққиқон, Ибни Муқаффаъ ин номаро ба забони арабӣ тарҷума карда буд, вале асли паҳлавӣ ва тарҷумаи арабии он дастрас нест. Муаллифи «Таърихи Табаристон» Баҳоуддин Муҳаммад ибни Ҳасан ибни Исфандёр дар ибтидои асри XIII матни арабии онро ба форсӣ тарҷума карда, дар асари худ ҷой додааст. Бино бар муқаддимаи тарҷумаи форсии «Номаи Тансар», тарҷумаи Ибни Муқаффаъ бар пояи ривояти Баҳром писари Хурзод буда, ки ба зоҳир тадвинкунанда ё нависандаи асли паҳлавии нома будааст (Номаи Тансар: 1).<sup>1</sup>

«Номаи Тансар» дорои мазмунҳои таърихӣ, сиёсӣ ва ахлоқист. Тансар дар нома шоҳи Табаристонро, ки дар итоат аз Ардашер ба шубҳа афтада буд, ба итоат фаро хонда ва мардумро низ дар ин маврид таълим додааст. Вабаста ба оҳанги таълимӣ доштани ин нома баъзе аз муҳаққиқон онро ба шумори адабиёти андарзӣ қарор додаанд.<sup>2</sup>

Нома бо муқаддимае оғоз мешавад, ки пажӯҳандагон онро аз танвинкунандаи таҳрири паҳлавии нома медонанд. Дар муқаддима аз зуҳури Искандар, кушта шудани Доро, тақсими Эрон ба шоҳони маҳаллӣ ва зуҳури Ардашеру ғалабаи ӯ бар навад тан аз шоҳон, аз ҷумла Ардавон суҳан рафтааст. Бино ба муҳтавои нома, Ардашер Гушнасб-шоҳи Табаристонро, ки пас аз Ардавон аз ҳама нерумандтар буд, ба сабаби ватанпарастӣ ва ҷонибдорияш аз шоҳони Порс, ба ҳукумати Табаристон боқӣ гузошт. Баъд аз ин асли нома оғоз мешавад. Дар ибтидо номи фиристанда, ки мақоми болотар дошта ва сипас номи муҳотаби нома омадааст.

Мучтабо Минавӣ «Номаи Тансар»-ро вабаста ба мавзӯҳои, ки ирсолкунанда матраҳ карда ва интиқодхое, ки овардааст, ба ҳабдаҳ банд тақсим кардааст: 1. Андар салом ва дуо; 2. Андар васфи Тансар манзилат ва сирати хешро, таъйини тақлиф қардани Тансар барои Гушнасб (Минавӣ ин номро «Ҷиснасф» меорад); 3. Андар аҳкоми

<sup>1</sup> Мирфхраиби, м. نامه تنسر//تاريخ جامع ايران، ص.388  
<sup>2</sup> ، ميرفخرايبي، م. نامه تنسر//تاريخ جامع ايران، ص.389

шаҳаншоҳ ва табдили суннати мутадовил; 4. Андар табақоти мардум ва саъйи шаҳаншоҳ дар истиқрори онҳо; 5. Андар уқубатҳои шаҳаншоҳ дар истиқрори аъзои арбаъа; 6. Андар қатл ва уқубат бар гуноҳони динию мамлақати ва фардӣ; 7. Андар кори буютот (хонаҳо, утокҳо) ва имтиёзоти бузургзодагон, ҳикояти тобут, истишҳод (шоҳид овардан) ба андарзҳои шаҳаншоҳ; 8. Андар амри абдол (пахлавӣ: стурех), тафсири абдол; 9. Андар куштани шаҳаншоҳ оташҳои мулуки тавоифро; 10. Андар ҷаҳор навъи мучозот ба пилу гов, дарозгӯш ва дор, тафсири ин мучозоти ҷаҳоргуна; 11. Андар манъи омма аз таҷаммул ва ниҳодани имтиёз миёни табақоти мардум; 12. Андар амри ҷосусон ва мунҳиён (хабардиҳандагон); 13. Андар бозгирифтани моли тавонгарон ва туччор; 14. Андар сабаби падид накардани валиаҳд. Достони Дорои Чехрозод ва Дорои Дороён ва Берӣ (номи кӯдаке аз абнои хадам (хидматгорон) ва Растин, ҳикояти бӯзинагон, андар тариқаи таъйини валиаҳд; 15. Андар базму разми шаҳаншоҳ ва манзилати Эроншаҳр ба дигар кишварҳо; 16. Андар он ки Гушнасб ва ҷамоати ўро Тансар вақе (қадр, манзилат) намениҳад; 17. Андар баргариши Ардашери Бобакон бар Ардашери Дароздаст, ҳикояти Чаҳнал, подшоҳи қадаримазҳаб, қиссаи кӯр ва замингир, узрҳои Тансар.<sup>1</sup>

Ба таври кулӣ, дар ин нома ба чанд мавзӯи муҳим ва асосӣ таъкид шудааст: Табақоти иҷтимоӣ дар давраи сосонӣ ва саҳтгириҳои Ардашер дар гузаштан аз табақае ба табақаи дигар, магар дар шароити махсус (бандҳои 4, 5, 7, 11); Шеваи кишвардории Ардашер (бандҳои 3, 6, 10, 12, 13); Сомон бахшидан ба қонунҳои ирс дар хонавода (банди 8); Интиқоди Гушнасб, ки ҷаро Ардашер барои худ валиаҳд таъйин намекунад ва посухи Тансар мабнӣ бар он ки ин кор сабаб мешавад шоҳ гумон кунад, ки валиаҳд ҳамвора мунтазири марги ўст. Ба ин тартиб меҳри ў аз дили шоҳ меравад. Дигар ин ки вай мавриди ҳасади дигарон қарор мегирад ва низ, бино бар он ки мақоме дорад, дучори худбинӣ мешавад. Эҳтимол меравад, ки Гушнасб меҳоҳад дар кишвари худ иқдомоте ба роҳ андозад, ки Тансар ўро гӯшзад мекунад, ки наметавонад хилофи назари мардумон рафтор кунад ва ҷорae ҷуз фармонбардорӣ надорад (банди 16). Дар банди 17 Гушнасб даъво карда, ки бо Ардашер хешовандон ва аз наводагони Ардашер писари Исфандёр аст. Гумон меравад, ки Гушнасб меҳоҳад ўро бо Ардашер баробар бидонанд. Дар ҷавоб Тансар ба ў тавсия медиҳад, ки ҳар чӣ зудтар ба хидмати шоҳ биёяд. Дар охири ин нома нависанда ба шарҳи корҳои Ардашер мепардозад.<sup>2</sup>

Дар мавриди интиқоби ин нома ба замони Ардашер ду назари мутафовит ҳаст: Дармстетер муътақид аст, ки ин нома аз даврони Ардашер аст ва ҳама воқеаҳои зикршуда дар он ба ибтидои даврони Сосониён марбут мебошад. Кристенсен бар ин бавар аст, ки мазмуни нома аз навъи андарзҳои шоҳона аст ва таърихи нигориши номаро ба замони Хусрави Анӯшервон медонад. М. Бойс бо таваҷҷуҳ ба

انقل از میرفخرای، م. نامه تنسر//تاریخ جامع ایران،ص. 389-390  
<sup>2</sup> نامه تنسر//انقل از تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 228-234

хусусияти шифоҳӣ доштани адабиёти паҳлавӣ назари Дармстетерро таъйид кардаву ёдовар шуда, ки нома дар асл ба замони Ардашер тааллуқ дорад, вале тайи замон, алалхусус дар замони Анӯшервон ва баъд аз он дасткориҳо дар он рӯй додааст. Баъзе аз маълумот, монанди зикри номи туркон ва Анӯшервон аз иловаҳои баъдист.<sup>1</sup>

### III.2.21.2. Номаҳои Анӯшервон

Бино ба таъкиди пажӯҳандагони адабиёти бостон, Анӯшервон баъд аз расидан ба подшоҳӣ номаҳои ба ҷаҳор подусбон (марзбон)-и ҷаҳор ноҳияи кишвар навишт. Табарӣ тарҷумаи арабии онро ба подусбони Озарбойҷон ва ҷумлае аз номаи ӯро ба марзбони Хуросон зикр карда ва Ибни Надим дар феҳристи китобҳои мавъизаҳои одобу ҳиками эронӣ аз китобе ба номи «Номаи Хусрав ба пешвоёни раият дар сипосгузорӣ» ёд мекунад.<sup>2</sup> Ҳамчунин дар феҳристи худ аз китобҳои дар бораи «Фирисодани подшоҳи Рум файласуфонро назди подшоҳи Эрон ва пурсиши вай аз ӯ матолибе аз ҳикмат» ёд мекунад. Аз ин китоб ба ғайр аз ҳамин ном хабари дигаре ба даст наомадааст. Дар замони Анӯшервон чанд тан аз файласуфони настурии тобеи мактабҳои юнонӣ ба сабаби ноамни, ки дар қаламрави Рум эҳсос мекарданд, ба дарбори Анӯшервон паноҳанда шуданд ва муддате дар Эрон монданд ва сипас ба кишвари худ боргаштанд. Китоби пурсишҳои, ки подшоҳи Рум ба дасти Букроти Румӣ барои Анӯшервон фирисод, ба сурати пурсишу посух ба Анӯшервон ва подшоҳи Рум мансуб аст.<sup>3</sup> Ибни Надим аз номаҳои ба унвони «Он чи Хусрав ба марзбон навишт ва посухи марзбон ба ӯ» ёд мекунад. Константин Иностранцев Хусравро Хусрави Парвиз донистааст. Дар бораи ин китобҳо ва муҳтавои номаҳои Муҳаммади Малоирӣ батафсил маълумот додааст.<sup>4</sup> Ин номаҳои аҳаммияти зиёде таърихӣ доранд, аммо арзиши бадеияшон зиёд нест.

<sup>1</sup>Boyce M., The Letter of Tansar.-Roma, 1968.-P. 22-121, 228-233. نامهٔ تنسر//نقل از تفضلی،تاریخ ادبیات،ص. 288-291. م. نامهٔ تنسر//تاریخ جامع ایران،ص. 288-291. کریستن سن، آرتور. ایران در زمان ساسانیان. تهران، 1378؛ میرفخرایی، م. نامهٔ تنسر//تاریخ جامع ایران،ص. 288-291. Рипка Ян, История персидской и таджикской литературы; Диловаров М. Номаи Тансар // ЭАСТ, ч., 2.-С. 475.

<sup>2</sup>طبری، محمد بن جریر. تاریخ طبری. ترجمه ابوالقاسم پاینده، تهران، 1362.ص. 295.

<sup>3</sup>این ندیم، الفهرست. ص. 391.

<sup>4</sup>محمدی ملایری، محمد. کتاب ذکر شده، ص. 218-219, 292-293.

## ФАСЛИ ЧАҲОРУМ

### Шеър дар адабиёти давраи миёна

Аксари донишмандон ва файласуфони бузург монанди Арасту, Абӯалӣ ибни Сино, Хоҷа Насири Тӯсӣ, ки шеърро таъриф кардаанд, тахайюлро рукни асли ва моҳияти каломи шеърӣ қарор додаанд, ки сабаби таҳрики хонандаву шунаванда мегардад ва гоҳе оҳангро низ дохили фазилати таъриф ва чузъи муқаддимоти ҳақиқати шеър донистаанд. Ҳеч кадом аз ин бузургон вазну қофияро бо ин маънӣ, ки дар илми арӯзу қофияи имрӯзӣ маъруф аст, дахил дар ҳақиқати шеър нашумурдаанд. Каломи мавзун дар истилоҳи кудамо ба ду маънӣ қобили қабул будааст.<sup>1</sup>

Дар мавриди вучуди шеър ва равнақи он дар адабиёти бостон ҳеч чойи шубҳа боқӣ намонад, ки ниёғони мо дар ин давра шеър доштаанд ва ашъори онҳо дорои вазни махсус будааст. Донишмандоне монанди Артур Кристенсен, Тақизода, Иқболи Оштиёнӣ, Ҷалолуддини Хумой, Рукнуддини Хумоюнфаррух, Аҳмади Тафаззулӣ ва чанд тани дигар вучуди шеърро дар ин давра ба таври возеҳ собит кардаанд. Аз ҳама бештар дар ин масъала Муҳсини Абулқосимӣ дар китоби хеш «Шеър дар Эрони пеш аз ислом» навиштааст.<sup>2</sup> Тақизода барои исботи вучуди шеър дар ин давра аз «Ҷизонат-ул-адаб»-и Абдулқоҳир ибни Умари Бағдодӣ ду ҳикоят меоварад: «Ибн Ас-саййид оварда, ки Талҳаи Асадӣ аз ашрофи араб ба дарбори Кисро (Хусрави Парвиз) мерафта ва якмартаба мусодиф ба ид шудааст ва дар ин мавқеъ дидааст, ки муғаннӣ ду мартаба ашъори арабӣ хонда ва барои Касро онро тарҷума кардаанд ва ӯ напосандида ва баъд аз он муғаннӣ шеъри порсӣ хонда ва шоҳро хуш омада ва тараб кардаву ҷом нӯшидааст».<sup>3</sup>

Ҳикояти дувум: «Кисрои Анӯшервон рӯзе шунид, ки Аъшо бо ин байт тағаннӣ мекунад: (тарҷума аз арабӣ) «Бедорӣ кашидам ва хобам намебарад ва чист ин беҳобӣ, ки бедор нигоҳ медорад ва дар сурате, ки дар ман на дардест ва на ишқе». Нӯшервон гуфт: -Ин араб чӣ мегӯяд ва тарҷумаи ин байтро хост. Баъд аз шунидани тарҷума гуфт: -Пас, ӯ дар ин сурат дузд аст».<sup>4</sup>

Иқболи Оштиёнӣ аввалан, аз рӯйи иртиботи шеър бо мусиқӣ ва сониян, бо чанд фикра бо асноди таърихӣ вучуди шеърро дар ин давра собит кардааст. Хулосаи матлаби ӯ аз ин қарор аст, ки бо вучуди тараққии мусиқӣ дар давраи Сосониён ва ривочи бозори ғино дар он давра чӣ гуна мумкин аст, ки эронӣ бозавқи он давра шеър надошта бошанд ва ба сурудани он напардохта бошанд, дар сурате ки асноди

<sup>1</sup> نقل از همایی، ج. تاریخ ادبیات ایران، ص. 27

<sup>2</sup> ابوالقاسمی، محسن. شعر در ایران پیش از اسلام

<sup>3</sup> نقل از همایی، ج. تاریخ ادبیات ایران، تیریز، 1308، ص. 224

<sup>4</sup> همان جا، ص. 225

таърихӣ бар вучуди он дар даст аст. Аз он чумла ин ки Ибни Мукаффаъ дар ду чо аз муқаддимаи «Калилаву Димна» гӯяд: «Анӯшервон дар рӯзе, ки ба ифтихори Барзуяи табиб ва шодии овардани «Калилаву Димна» чашн гирифт, шуаро ва хутабои мамлакати худро фармуд, то дар чашн ҳозир шаванд ва ҳар кадом муносиби он рӯз чизе бисозанд».<sup>1</sup> Чалолуддини Хумоӣ менависад, ки гузашта аз ин асомии баъзе ашъор ва алҳон, мисли хусравонӣ, паҳлавӣ ё фаҳлавӣ, ки аз давраи қадими қабл аз ислом боқӣ монда ва дар ислом ҳам мавриди таваҷҷуҳ будааст, вучуди шеърро дар давраи Сосониён исбот менамояд. Илова бар ин калимоту мафҳумҳое монанди чома, чакома, сарвод ва пасванд, ки яқинан баъзе аз онҳо боқимондаи давраи сосонист, ки муҳаққиқон барои исботи ақидаи худ меоваранд, далели дигаре мебошад. Сипас, бо истинод ба гуфтаи Иқболи Оштиёнӣ менависад, ки аз чумлаи умуре, ки боиси инкори вучуди шеър дар он давра шуда, боқӣ намондани номи шоирони он давра аст. Иқболи Оштиёнӣ ду омилро сабаби боқӣ намондани номи шоирон медонад: Яке он ки чун тарфи эҳтиёҷи мусулмонон набуда ва дигар он ки мусиқию шеър кори як нафар будааст ва мусиқидонон шоир ҳам будаанд.<sup>2</sup> Артур Кристенсен менависад: «Эрониёни аҳди сосонӣ билошак шеър доштаанд ва аз ҳар ҳайс дар забони паҳлавӣ назмҳо ё таснифҳои буда, ки онҳоро бо созу мусиқӣ мехондаанд. Дар китоби паҳлавӣ (мурод «Корномаи Ардашери Бобакон») мутолиа мекунем, ки Ардашер дар истабл (сутургоҳ) нишаста, табл зад ва нағмаҳои кард ва бо навои дигар хурраи намуд».<sup>3</sup> Дар тазкираҳо ва дигар сарчашмаҳои таърихӣ адабӣ, монанди «Ал-муъҷам»-и Шамси Қайси Розӣ, «Лубоб-ул-албоб»-и Авфӣ, «Муруҷ-уз-заҳаб»-и Масъудӣ, «Ғураи мулк-ил-Фурс»-и Саолибӣ, «Ал-масолик ва-л-мамолик»-и Ибни Хурдодбеҳ ва «Тазкират-уш-шуаро»-и Давлатшоҳи Самарқандӣ Баҳроми Ғурро гӯяндаи нахустини шеъри форсӣ донистаанд. Муҳаммад Авфӣ муддаист, ки Баҳроми Ғур шеъри форсӣ тозӣ дошта ва мегӯяд, ки дар китобхонаи Сари Пули бозорчаи Бухоро девони ӯро дидаву мутолиа карда ва аз он чо ашъор навишта ёд гирифтааст.<sup>4</sup>

Давлатшоҳи Самарқандӣ вучуди шеърро дар Эрони Бостон таъйид мекунад ва дар масъалаи нахустин гӯяндаи шеъри форсӣ менависад: «Тӯфонот ва ҳаводису инқилоб ва қатли ом ҳама боиси он аст, ки табдили аҳвол шавад. Ва уламову фузало ба забони форсӣ қабл аз замони ислом шеър наёфтанд ва зикри асомии шуаро надидаанд, аммо дар афвоҳ афтода, ки аввалкасе, ки шеър гуфт ба забони форсӣ, Баҳроми Ғур буд. Ва сабаб он буд, ки ӯро маҳбубае буд, ки ӯро «Дилороми Чангӣ» мегуфтаанд ва он манзура, зарифа ва нуктадону росттабъ ва мавзунҳаракот буд. Ва Баҳром бар ӯ ошиқ буд ва он канизакро доим ба шикор ва тамошо ҳамроҳ бурдӣ. Рӯзе Баҳром дар хузури Дилором дар

1 نقل از همایی، ج. تاریخ ادبیات ایران، ص. 225

2 همان جا، ص. 226

3 کریستن سن، آرثور. ایران در زمان ساسانیان، تهران، 1378.

4 عوفی، محمد. ابواب الالباب، به کوشش ادورد براون، تهران، 1361.

беша ба шере даровехт ва он шерро ду гӯш гирифта, бар ҳам баст ва аз гошти тафохур бад-он диловарӣ ба забони Баҳром гузашт, ки:

Манам он пили дамону манам он шери яла.

Ва ҳар сухане, ки аз Баҳром воқеъ шудӣ, Дилором муносиби он ҷавобе гуфтӣ. Баҳром гуфт, ки «Ҷавоби ин сухани ман чӣ дорӣ?» Дилором муносиби он бигуфт:

Ном Баҳром туро падарат Бӯчабала.

Подшоҳро тарзи ин калом ба мазоқ мувофиқ афтод ва ба ҳукамо ин сухан арз кард. Дар назм қонуне пайдо карданд, фаамо аз як байт зиёд намегуфтандӣ». <sup>1</sup>

Давлатшоҳи Самарқандӣ барои исботи шеъри аҳди бостон далели дигаре меоварад: «Абӯтоҳири Хотунӣ гуфта, ки ба аҳди Азуддуддавлаи Дайламі ханӯз қасри Ширин, ки ба навоҳии Хониқин аст, билкул вайрон нашуда буд, дар катибаи он қаср ин байт навишта ёфтанд, ки ба дастури форсии қадим аст:

*Ҳижабро, ба гейҳон анӯша бизӣ,  
Ҷаҳонро ба дидор тӯша бизӣ».* <sup>2</sup>

Ин ду байт, ки вучуди шеърро дар аҳди Сосониён бозгӯ мекунад, ба ин шакл набуда, муаллифони тазкираҳо онро ба завқи худ тағйир додаанду ба замона ва ба забони форсию вазни арӯзӣ мувофиқ сохтаанд. Баъзе аз донишмандон навиштаанд, ки тарҷумаи «Илиада»-и Ҳомер ба порсӣ дар хазинаи китобҳои форсиён буда ва онро салотин ҳам бо ғинову суруд мехондаанд. <sup>13</sup> Ҳоча Насир дар «Асос-ул-иктибос» менависад: «Ҳайате бошад суханро аз ҷиҳати тасовии ақволи ӯ ба ҳасби зоҳир шабеҳ ба вазн чунонки хусравониҳои қадим будааст». <sup>24</sup> Соҳиби «Таърихи Систон» аз рӯзгори Яъқуби Саффорӣ ҳикояте меоварад, ки шоирон ӯро ба арабӣ шеър гуфтанду нафаҳмид ва қабул накард ва ба таҳриқи Яъқуб Муҳаммад Васиф ба порсӣ шеър гуфт, сипас, менависад: «Муҳаммад Васиф пас шеъри порсӣ гуфтан гирифт. Ва аввалшеъри порсӣ андар Аҷам ӯ гуфт ва пеш аз ӯ касе нагуфта буд, ки то порсиён буданд, сухан пеши эшон бо руд бозгуфтандӣ ба тариқи хусравонӣ». <sup>3</sup>

Он чи муҳаққиқони адабиёти бостон ба унвони шеър барои адабиёти паҳлавӣ қоил шудаанд, ашъори нисбатан кам аст ва он

<sup>1</sup>Давлатшоҳи Самарқандӣ. Тазкират-уш-шуаро. Таҳияи М.Нуруллоева.-Хучанд, 2015.-С. 46.

<sup>2</sup>Ҷамончо, ҳамон саҳифа.

<sup>3</sup> نقل از همای، جلال الدین. تاریخ ادبیات ایران، ص. 228.

<sup>4</sup> نصیر الدین توسی. معیار الأشعار. تهران، 1345. ص. 86.

<sup>3</sup> تاریخ سیستان. به کوشش محمد تقی بهار، تهران، 1314. ص. 132.

осори боқимонда низ дучори таҳрифҳо ва дигаргуниҳои бисёр шудааст. Муҳимтарин ашъори бозмонда аз адабиёти паҳлавӣ пораҳои шеърии таълимӣ ё андарзиянд. Осори андарзӣ, ки аз ҷумлаҳои кӯтоҳ ташкил мешаванд, осон ба назм медароянд. Ин пораҳои шеърӣ дар дохили андарзномаҳои мансур ҷой доштаанд ва котибони нусхаҳои паҳлавӣ, ки дар даврони исломӣ шеъри паҳлавиро аз насри он бознамешинохтанд, бидуни таъйини ҳеч гуна нишона, ки шеър будани онро собит созад, навиштаанд. Муҳаққиқони зиёде саъй намудаанд, то шеъри паҳлавиро аз насри он ҷудо созанд. Се манзумаи кӯтоҳи ахлоқӣ: «Андарзи доноён» дар рисолаи «Андарзи доноён ба маздяснон», қитъае дар «Мадҳи хирад» дар рисолаи «Дар бораи хем ва хиради Фаррухмард» ва «Васфи хирад» дар рисола «Беҳзоди Фаррухпирӯз» ба сифати осори манзум шинохта шудаанд. Аҳмади Тафаззулӣ бар он аст, ки қисматҳое аз «Бариш-наск»-и авестой низ ба шеър буда ва ин қитаъот тарҷумаи он қисматҳо ё таҳти таъсири он қисматҳо тадвин ёфтааст.<sup>1</sup>

Дар «Таърихи Систон» қитъаи шеъре оварда шудааст, ки ба назми ҳичой суруда шуда, марбут ба лаҳҷаи миёна буда, аз охириҳои аҳди сосонӣ боқӣ монда ва дар қарнҳои аввалияи ҳичрӣ мутадовил будааст. Ин қитъа «Суруди оташкадаи Каркӯй» ном дорад ва бино ба қавли Маликушшуаро Баҳор, дар оташкадаи Каркӯй воқеъ дар Систон ин суруд хонда мешудааст:

*Фурӯхт бодо рӯш,  
Хунида Гаршосб ҳуш.  
Ҳаме бираст аз ҷӯш,  
Нӯш кун, май нӯш!  
Дӯст, бад-огӯш!  
Б-офарин ниҳода гӯш!  
Ҳамеша некӣ кӯш,  
Дӣ гузашту дӯш.  
Шоҳо, худойгоно,  
Б -офарин шоҳӣ.<sup>2</sup>*

Маликушшуаро Баҳор онро чунин тарҷума кардааст:

*Афрӯхта бодо равшанойӣ,  
Оламгир бод ҳуши Гаршосб.  
Ҳаме нур аст аз ҷӯш.  
Нӯш кун, май нӯш.  
Дӯст бидор дар огӯш,  
Ба офарин неҳ гӯш.  
Ҳамеша некӣ куну некӯкор бош,  
Ки деру зуд бигзашт.*

<sup>1</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 308.

<sup>2</sup> تاریخ سیستان، ص. 39.



*Шоҳо, худойгоно,  
Баофарин шоҳӣ.*

«Суруди оташкадаи Каркӯй» ба хатти форсӣ навишта шуда, аммо ҳам аз назари забону хат ва ҳам аз назари вазн ба шеъри паҳлавӣ мансуб аст. Ин суруд оҳанги динӣ дорад ва бино ба таъкиди муаллифони сарчашмаҳои асримиёнагӣ, мардуми Хуросон онро дар ситоиши оташкадаи Каркӯйи Систон сурудаанд ва онро мӯбадони зардуштӣ бо лаҳни хоссе дар назди подшоҳ мехондаанд.

Аз миёни ашъори бозмондаи паҳлавӣ ду манзумаи нисбатан муфассал, яке «Дарахти Осурӣ» ва дигаре «Ёдгори Зарирон» боқӣ монда, ки ҳар ду асли портӣ доранд ва мо онҳоро дар қисмати адабиёти портӣ овардаем. Қитъаи шеърии динӣ таҳти унвони «Дар бораи омадани шоҳ Баҳроми варҷованд» низ дар даст ҳаст. Ҳамчунин абёти парокандае дар китобҳои адабии арабию форсӣ нақл шудааст, ки асли паҳлавӣ доранд, гарчи баъзе аз онҳо то ҳақде таҳти таъсири ашъори арӯзӣ қарор гирифтааст, монанди ду байти зер, ки Роғиби Исфаҳонӣ онро нақл кардааст:

*Зиюз ҳаитоз гӯр,  
Турист долмана мурв.  
Мор бе на мирз,  
Ҷуз куш бузнис мурд.*

Тарҷума: Гӯр (хар) ҳаштод сол зиндагонӣ кунад, мурғи лошахӯр сесад сол. Мор намемирад, ҷуз ин ки касе ўро бикӯшад.<sup>1</sup>

Навъи дигари ашъори паҳлавӣ манзумаҳои ошиқона буда, ки аз байн рафтаанд. Яке аз ин манзумаҳо «Вису Ромин» ном дорад, ки мочарои ишқбозии ин ду тан аст. Зане бо номи Шаҳру бо шоҳи Марв ба номи Мӯбад паймон мебандад, ки агар духтаре ба дунё оварад, ўро ба занӣ ба Мӯбад медиҳад. Баъди чанде духтаре таваллуд мекунад ва Вис ном мениҳад. Шаҳрӯ духтарро ба Мӯбади пир намедиҳад. Вис ба бародари Мӯбад - Ромин ошиқ мешавад. Баъд аз мочароҳои зиёде ин ду дилдода ба ҳам издивоҷ мекунанд. Муҳаққиқон собит кардаанд, ки ин достон асли портӣ дорад ва дар охири аҳди Сосониён ба паҳлавӣ тарҷума шудааст. Асли портӣ ва тарҷумаи паҳлавӣ ин достон аз байн рафтааст. Ин тарҷумаи мансури паҳлавӣ дар асрҳои X-XI дар байни мардум маҳбубият дошта, вале забони он ба ҳама ошно набудааст. Аз ин рӯ Фаҳруддини Гургонӣ дар асри XI онро ба назм даровардааст, ки имрӯз дар даст ҳаст. Ҳарчанд дақиқ нест, ки достони «Вису Ромин» ба арабӣ тарҷума шудааст ё не, аммо ишороти баъзе адибон ба ин достон, монанди Абӯнӯвос гувоҳ ба шухрати он аст.<sup>2</sup>

---

<sup>1</sup> اتفضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 309

<sup>2</sup> تفضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 310

Дар даврони Сосониён сарояндагон ва хонандагоне бо номи кулӣ хунёгар ё ба паҳлавии ашконӣ гӯсон будаанд, ки дostonҳои ҳамосӣ, ошиқона ва ғайраро аз ёд медонистаанд ва онро бо созҳои мусиқӣ меҳондаанд. Аз ахбори сарчашмаҳо ва таҳқиқи муҳаққиқон бармеояд, ки дар аҳди бостон, хусусан дар даврони Ашкониёну Сосониён хунари шоирро мусикидонӣ тавҷам буда ва ҳар касе даъвои мусикидонӣ мекард, бояд аз хунари шоирӣ ҳам бархурдор мебуд ва баръакс. Мусикидонон ё худ хунёгарон, монанди Борбаду Саркаш (баъзе Саргас овардаанд) ва Накисову Ромтин ҳамон шоирон-хунёгарони он давра буданд. Шеърӣ зеро, ки Ибни Хурдодбеҳ ба номи Борбад забт карда, дар мадҳи Хусрави Парвиз суруда шудааст:

*Хоқон моҳ моназу қайсар хуршиз,  
Они ман хузой абр моназ комгорон,  
К-хоҳаз моҳ пӯшаз, к-хоҳаз хуршиз.<sup>2</sup>*

(Тарҷума: Хоқон монанди моҳу қайсар монанди хуршед аст, аммо худовандгори ман монанди абри комгор аст. Ҳар гоҳ бихоҳад, моҳро мепӯшад ва ҳар гоҳ бихоҳад, хуршедро).

Аҳмади Тафаззулӣ қитъаи зеро, ки дар тавсифи наргис аст, шеърӣ паҳлавӣ медонад, гарчи хусусиятҳои забони форсӣ дар ин ба назар мерасад:

*Наргис узмуруд даста,  
Марворид фаду (паду) руста,  
Зараи дар миён баста.<sup>3</sup>*

Муҳаққиқи мазкур сабаби аз байни рафтани шеърӣ паҳлавиро ба чанд омил вобаста медонад: яке ин буда, ки дар Эрони Бостон суннати шифоҳӣ аҳаммияти бештаре аз суннати китобат доштааст ва рӯҳониёну дабирон, ки аҳли қалам буданд, ҷуз осори динӣ ва заруратан асноди давлатӣ ва иқтисодиро ба китобат дарнамеоварданд. Ба ин сабаб батадриҷ бисёре аз ин гуна осор аз миён рафт. Сабаби дигар ин буда, ки пас аз ислом форсии дарӣ ривоч пайдо кард ва забону хатти паҳлавӣ оҳиста-оҳиста рӯ ба фаромушӣ овард. Иллати сеюм он буда, ки бо ривочи шеърӣ арӯзӣ ин гуна ашъори қадимӣ ё аз равнақ афтод ва батадриҷ аз хотирҳо маҳв шуд ё ба қолаби шеърӣ арӯзии форсӣ даромад. Сабаби чаҳорум ин буда, ки дар Эрони Бостон шеър бо овозу соз ҳамроҳ буд ва бо таҳрими мусиқӣ ё қамаҳаммият шудани он дар давраҳои исломӣ ин гуна ашъор аз равнақи ҳамагонӣ афтод ва мунҳасир ба маҷлиси ашрофи дарборҳо гардид ва сипас аз ёдҳо зудуда шуд.

Аз байн рафтани шеърӣ аҳди бостон боиси он гашта, ки баъзе муаллифони сарчашмаҳои давраи исломӣ ба шеър доштани мардуми

---

2 همان جا، ص. 312.

3 همان جا، همان صفحه.

эронитабор шак оваранд. Чунончи, Абӯхотами Розӣ бар он аст, ки эронӣён аслан шеър надоштаанд, аммо гурӯҳи дигари муаллифон, амсоли Ҳамзаи Исфаҳонӣ аз анвои гуногуни шеъри паҳлавӣ хабар додаанд, ки Тафаззулӣ дар ин масъала батафсил маълумот медиҳад.<sup>1</sup>

Бояд зикр кард, ки суннати тавъам будани шоирию хунёгарӣ ё худ мусикидонию шоирӣ баъд низ идома ёфтааст. Чунончи, устод Рӯдакӣ, бино ба қавли муаллифони сарчашмаҳо, на танҳо «аввалин касест, ки шеъри форсиро мудавван сохт», ҳамчунин «дар илми мусикӣ маҳорати тамом дошта, нахустин касе буд, ки дар мусикӣ чизе тасниф кард» ва ё Фаррухӣ, бино ба қавли тазкиранигорон, «шеър хуш гуфтӣ ва чанг тар задӣ».<sup>2</sup> Ин суннати чандхунарӣ дар байни аҳли илму адаб то кунун идома дорад, аксари муҳаққиқони машҳури адабиёти форсии тоҷикӣ аз хунари шоирию нависандагӣ ва ҳатто овозхонӣ бархурдоранд.

Ниёкони мо дар даврони бостон дар илми балоғат рутбаи аввалро доштаанд. Дар китобҳои арабии садаҳои нахустини давраи исломӣ ғолибан ишороте ба китобҳои илмии мардуми форсинаҷод шудааст. Далелҳои таърихӣ собит менамоянд, ки дар ин давра илми балоғату хитоба дар байни мардуми эронитабор равнақи басазое доштааст. Дар хитоба ҳамин қадар кофист, ки бино ба гуфтаи Чурчи Зайдон, мардуми Яман, ки дар хитоба ва балоғат шуҳрат доштаанд, дар натиҷаи ҳамсоғӣ бо форсҳо будааст.<sup>3</sup> Хитобаҳои балеғу ғаррое, ки аз шоҳони сосонӣ дар китобҳои давраи асримиёнагӣ, монанди «Шоҳнома» ва «Муруч-уз-заҳаб» нақл шудаанд, шоҳиди дигаре дар равнақи фунуни хитоба ва балоғат дар давраи сосонист. Дар давраи Умавиёну Аббосиён ба дибирону адибон пайваста тавсия мешуда, ки амсолу ҳиками Бузургмеҳр, «Калилаву Димна», «Тавқеоти Анӯшервон» ва «Худойнома»-ро бихонанд.

Аз ахбори сарчашмаҳо чунин бармеояд, ки мардуми эронитабор дар илми балоғат китобе доштаанд бо номи «Корванд», ки қавоиди ин фан ва намунаҳои аз суханони балеғро дар бар доштааст. Суханони ҳикматомезе, ки дар катибаҳои ҳахоманишӣ дарҷ аст, аз куҳантарин намунаи сухани балеғ дар таърихи фарҳанг ва адабиёти мардуми эронитабор аст. Аҳмади Тафаззулӣ бо истинод ба гуфтаи Ҷоҳиз меоварад, ки «хатибтарини мардумон эронӣенанд». Илова бар ин, Ҷоҳиз аз қавли шуубия менависад, ки касе, ки орзуи расидан ба камолро дар хунари балоғат дошта бошад ва бихоҳад, ки калимоти ғарибу нодирро бишиносад ва дар илми забон маҳорат пайдо кунад, ногузир аст, ки китоби «Корванд»-ро бихонад.<sup>4</sup>

Бино ба гуфтаи муҳаққиқони адабиёти бостон, дар миёни матнҳои мавҷуд ба забонҳои балхӣ ва хоразмӣ ҳеч намунае аз шеър ёфт

<sup>1</sup> تفضلی، شعر پهلوی// تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 308-314

<sup>2</sup> نظامی عروضی سمرقندی، چهار مقاله، به کوشش محمد معین، تهران، 1335، ص. 267

<sup>3</sup> نقل از همایی، ج. تاریخ ادبیات ایران، ص. 247

<sup>4</sup> تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 314

нашудааст, аммо бар хилофи ин, бештари осори барҷомонда аз забони хутанӣ ашъори динӣ ё ғайридинӣ ҳастанд. Бештари матнҳои суғдии монавӣ аз забонҳои ғарбӣ тарҷума шуда ва ба сурати қитъаҳои пароканда боқӣ мондаанд. Матнҳои суғдии будой ғолибан аз манбаъҳои чинӣ тарҷума шудаанд ва матнҳои суғдии масеҳӣ, ки нисбат ба матнҳои монавӣ дар вазъияти бехтаре боқӣ мондаанд, дар миёнашон қитъаҳои шеърӣ дида мешавад, аз манбаъҳои сурёни тарҷума шудаанд. Ба ҳамин далел огоҳиҳои мавҷуд аз вижагиҳои шеъри суғдӣ, ки намунаҳои парокандаи он дар матнҳои динӣ ва ғайридинӣ дида шудааст, ноқис аст. Ҳарчанд ҳеч матни манзуме ба забони форсии миёна дар осори мавҷуди паҳлавии зардуштӣ дида намешавад, дақиқ маълум аст, ки қитъаҳои аз матнҳои, ки имрӯз дар сурати наср боқӣ мондаанд, дар асл манзум будаанд. Дар адабиёти монавӣ теъдоди зиёди осори манзуми шомили сурудҳои динӣ ва матнҳои оинӣ бар ҷой мондааст. Илова бар ин, аз тариқи манбаъҳои ғайримустақим ва низ тасвиригараҳо ва шохидҳои бостоншинохтӣ метавон огоҳиҳои дар бораи шоир-навозандагони даврони ашконию сосонӣ ба даст овард.<sup>1</sup>

Бостоншиносоне, монанди М.Бойс бо далелҳои илмӣ собит кардаанд, ки дар дарбори шоҳони Эронзамин, хусусан Ашкониёну Сосониён шеъри шифохӣ мақоми баланд дошт ва шеърҳо аз тарафи овозхонон бо овоз хонда мешуданд. Шеъри шифохӣ суннати хеле қадимии мардуми ориёӣ буда, ки пешинаи ин навъи шеър ба замони Ҳахоманишиён ва ҳатто пеш аз он бармегардад, зеро ба ривояти муаррихони юнонӣ, зиндагии Курушро дар қолаби «достон ва овоз» нақл мекарданд. Дар он замон табақае аз шоир-навозандагони хирфай ба номи «гӯсон» вучуд доштанд, ки дар дарбори шоҳ ва низ барои наҷибзодагону бузургон шеър мехонданд. Бахши умдае аз осори ин шоир-навозандагон, ки қитъаҳои аз онҳо дар ҳамосаҳо маҳфуз мондааст, дар замони Ашкониён падид омад ва дар давраи Сосониён низ идома ёфт. Дар замони Сосониён шоир-навозандагони дарбориро, ки ҳамчун гузашта аз маҳбубияти хос бархурдор буданд, хунёгар меномиданд. Дар «Шоҳнома»-и Ҳақим Фирдавсӣ аз шоир-навозандагон ё худ хунёгарони дарбори Ашкониёну Сосониён ёд шудааст. Илова бар ин дар сарчашмаҳои, монанди «Номаи Тансар», «Китоб-ут-точ», «Муруч-уз-заҳаб»-и Масъудӣ, ки аз рӯзгори шоҳони ашконию сосонӣ қисса мекунанд, нишон медиҳанд, ки шоир-навозандагон-хунёгарон ҷойгоҳи муҳимме дар дарбори ин сулолаҳо доштаанд. Ҳақим Фирдавсӣ ва Саолибӣ аз шеъри дарбори Сосониён сухан гуфта, номи баъзе аз хунёгарон ва созҳои мусиқии он айёмро ном бурдаанд. Машхуртарин хунёгарони аҳди сосонӣ Борбад ва Саркаш (Саргис) будаанд, ки дар дарбори Хусрави Парвиз фаъолият мекардаанд. Саркаш, ки пеш аз Борбад ба дарбор роҳ ёфта буду сарвари хунёгарон маҳсуб мешуд, баъд аз вуруди Борбад ба дарбор мақоми пешинашро аз даст дод. Аксар бар онанд, ки Саркаш рақиби

<sup>1</sup> کارلو جوانی چرتی. شعر در ایران باستان//تاریخ جامع ایران،ص.606-615.

Борбад ва ба эҳтимол қотили ӯ буд. Аз хунёгарони дигари он даврон Накисо ва Ромтин низ сарчашмаҳо ёд кардаанд. Намунаи нодири шеъри портӣ дар матни «Ёдгори Зарирон» боқӣ мондааст, ки ривояти мавҷуди он ба эҳтимол марбут ба замони Сосониён аст. Муҳаққиқон чанд сатри онро асли забони портӣ доништаанд. Он лаҳзае, ки Баствар бар пайкари бечони падараш, ки дар ҷанг бо нерӯҳои аҳримани Арҷосп бар замин афтадааст, навҳа мекунаду овоз медиҳад. Ҳамчунин дар нақши Тоқи Бустон - марбут ба охирҳои давраи Сосониён, бонувони ҷангнавоз ва заноне, ки дар ҳоли рақсанд, тасвир шудаанд.

Бино ба андешаи муҳаққиқон, шеъри шифоҳии давраи сосонӣ шабеҳ ба шеъри давраи ашқонӣ будааст ва дар асрҳои аввали исломӣ оҳиста-оҳиста фаромӯш шудааст. Далели ин амр он буда, ки дигар касе онро иҷро намекард ва сониян, бахши умдаи ин ашъор китобат нашуда буд. Қисмати хеле андаки он, ки китобат шуда буд, ҷозобаи чандоне барои хонандагон надошт. Фаҳруддини Гургонӣ дар муқаддимаи «Вису Ромин» мегӯяд, ки сурати навиштории ин навъ шеър ҷозобаи чандоне надорад.<sup>1</sup> Ашъори динии портӣ ва форсии миёна бештар сурудаҳои динии монавӣ ҳастанд, ки бояд бо овоз хонда мешуданд. Намунаҳои аз онҳоро бостоншиносон дар ноҳияи Турфон пайдо карданд. Ин сурудаҳоро Бойс ба се гурӯҳ тақсим мекунад: Мачмӯаи сурудаҳои дароз, ки аз бахшҳои гуногун ташкил шудаанд, ситоишҳои дарози якпорча (портӣ: afriwan; форсии миёна afurishn) ва сурудаҳои кӯтоҳ, ки бештар абҷадӣ ҳастанд (портӣ: basan; форсии миёна: mahg). Аз ҷумлаи муҳимтарин сурудаҳои мачмӯаи сурудаҳои портӣ «Хуайдагмон» ва «Ангад рушно» ҳастанд, ки ба забони сӯғдӣ низ тарҷума шудаанд ва ашъори форсии миёна «Гуфтори равони равшан» ва «Гуфтори равони зинда» мебошанд.<sup>2</sup>

Дар миёни забонҳои эронии миёна бахши умдае аз адабиёти бозмондаи хутанӣ манзум аст. Бузургтарин асари бозмондаи забони хутанӣ китоби «Замбаста» аст, ки ба дурустӣ «шеъри хутанӣ дар бораи оини Будо» хонда шудааст. Намунаи шеъри ғайридинии хутанӣ низ боқӣ мондааст, аз ҷумла шеъри ғиноӣ, ки дар шаш дастнавишта дар ноҳияи Дунхуан ёфт шудааст. Ҳамчунин нӯҳ байти ошиқона дар тӯморе ба даст омада, ки ба таърихи 925 мелодист. Н. Кумомуту нӯҳ навъи адабии дигареро дар миёни осори хутанӣ шиносӣ кардааст, ки «номаҳои шоирона» аст. Ин номаҳо дар чанд дастнавис дар ноҳияи Дун Хуан ёфт шудаанд ва баъзе аз онҳо ба асри X тааллуқ доранд. Ҳадафи асли аз нигориши ин номаҳо сурудани ранҷи дурӣ аз ватан будааст. Дар шеъри хутанӣ ҳар байт ду мисраъ ва ҳар мисраъ ду пора ё поя дорад.

---

<sup>1</sup> کارلو جووانی چرتی. شعر در ایران باستان//تاریخ جامع ایران،ص.611.

<sup>2</sup> همان جا، 146

## ФАСЛИ ПАНЧУМ

### V. Адабиёти суғдӣ

Адабиёти суғдӣ аз бахшҳои муҳими адабиёти аҳди бостон ба шумор меравад. Забони суғдӣ яке аз забонҳои эронии миёнаи шарқист, ки аз садаи нахуст то сздаҳуми мелодӣ дар густиран чугрофии бузурге аз Баҳри Сиёҳ то марзҳои ғарбии Чин мардумони эронитабор бо он такаллум мекарданд. Маркази забони суғдӣ кишвари Суғди Бостон ва муҳимтарин шаҳрҳои он Самарқанду Бухоро ва Панҷаканту Уструшан аст. Илова бар ин, забони суғдӣ дар ноҳияҳои дигар, монанди воҳаҳои Турфон дар Туркистони шарқӣ ба унвони забони муомилоти тичорию фарҳангӣ ва забони идорию таълифу тасниф ривоч доштааст. Аз баррасии матнҳои ба забони суғдӣ бадастомада суғдшиносон ба натиҷа расидаанд, ки суғдиён дар интишори дини будой дар Осиёи Марказӣ, ҳамчунин дар Тахористон (Бохтар) ва дигар вилоятҳои Осиёи Миёна нақши муҳим доштаанд. Онҳо дар тарғиб ва умумият додани мазҳаби монавӣ дар давлатҳои туркӣ, алалхусус Туркистони шарқӣ ва Муғулистону Чин ва ҳамчунин чихати наشري оини масеҳӣ дар Осиёи Миёна ва Марказӣ сахми бузург доштаанд.<sup>1</sup>

Бино ба гуфтаи забоншиносон, забони суғдӣ дар таҳаввули овой ва мушаххасоти сарфӣ бо забонҳои хутанӣ, хоразмӣ ва балхӣ ваҷҳҳои муштараке дорад, ки метавон бо вучуди ихтилофи муҳтавоу хат ин ҷаҳор забонро дар як гурӯҳи забонӣ, ки эронии миёнаи шарқист, қарор дод. Осори ин забон, ки аз деҳу рустоҳои водии Зарафшон, ноҳияҳои наздики Самарқанд то яке аз бурҷҳои девори бузурги Чин, ғорҳои Ҳазорбудой Дунхуан ва аз Муғулистони шимолӣ то дараи Синд дар шимолӣ Покистон кашф шудаанд, густиран чугрофии онро дар Осиёи Миёна ва низ нуфузи фарҳангии онро аз асри сеум то сздаҳуми мелодӣ нишон медиҳад.

Ду сол баъд аз фиристода шудани нахустин ҳайати иқтишофии Олмон ба Осиёи Марказӣ яке аз пажӯҳишгарон, ки масъули расидагии мадракҳо ва нусхаҳои бозёфта аз Турфон (Туркистони Чини он рӯз ва Син Киёнки имрӯзӣ) буд, дар миёни онҳо қитъаи хурдери муталлиқ ба як забони ношинохта аз гурӯҳи забонҳои эронӣ ташхис дод. Шоҳидҳои таърихӣ ва кашфиёти баъдӣ маълум кард, ки он забони то он рӯз ношинохта (ё дар воқеъ фаромӯшшуда) забони суғдист. Беш аз як аср аз он рӯйдод мегузарад. Дар ин муддат санади бисёре ба забони суғдӣ кашф, хатти ношинохтаи он хонда ва бештари матнҳои он шиносоиву тарҷума шудааст. Дар соли 1930 ба санадҳои бозёфта аз Чин, мадракҳои санадҳои Тоҷикистон изофа шуд. Кӯшиши

<sup>1</sup> Ҷумҳури Алберт Лианьдауиҷ. Ҷан Ристам та диваштиҷ. Дӯшнбе, 1987, с. 8-2

донишмандон дар хондани он санадҳо ба гуногунии адабиёти суғдӣ ва равшантар кардани таърихи суғдиён афзуд. Солҳои 80-уми асри гузашта кашфи ҳудуди шашсад сангнавишта дар дараи баланди рӯди Синди Покистон густараи чуғрофии матнҳои суғдиро ба шимолӣ Шибҳи қора кашонд. Бадруззамони Қариб таъкид мекунад, ки «китобхонаи пинҳон дар яке аз ғорҳои Ҳазорбудои Дунхуани Чин ва регзорҳои Турфон, харобаҳои диже дар кӯҳи Муғи Тоҷикистон ва вайронаи яке аз бурҷҳои дидабонии девори бузурги Чин ганчинаи адабиёти суғдиро, ки беш аз як ҳазора дар синаи худ ба амонат нигоҳ дошта ва рози қавми шаҳришин, бозаргон, мубаллиғи дину фарҳангро дар баробари дидагони ҳайратзадаи пажӯҳандагони қарни бистум кушудаанд».<sup>11</sup> Ба ин санадҳо, ки пас аз кашф ба китобхонаҳои бузурги чаҳор шаҳри Аврупо, яъне Париж, Лондон, Берлин ва Санкт-Петербург тахвил шуданд, катибаҳои кашфшуда дар Муғулистон, деворнавиштаҳои шаҳри қадимии Афросёб дар Самарқанд ва катибаҳои Покистонро ҳам бояд афзуд, то битавон густараи фаъолияти шаҳрӣ ва фарҳангии ин қавми эронинажод ва нақши он дар интиқоли фарҳангу ҳунаро ва колоро ба хубӣ нишон дод.<sup>2</sup>

Зодгоҳи ин забон сарзамини Суғд аст. Мафҳуми «суғд» ва роҷеъ ба суғдиён бори нахуст дар «Авесто» (Меҳр-яшт ва Вандидод), катибаҳои ҳахоманишӣ (Дорюш ва Хашоёршо) ва осори муаррихи Юнони Бостон Ҳеродот омадааст. Дар «Меҳр-Яшт» ба сурати «suūda», дар фасли аввали Вандидод «suūdaō šayanās» (маҳалли сукунати суғдиҳо), дар феҳристи кишварҳои офаридаи Ахурамаздо бо вожаи «gava» (сукунат) ҳамроҳ аст. Дар ин ҷо омада, ки «Гава» сарзамини суғдиён аст ва онро Ахурамаздо ба ҳайси дувумин аз ҷумлаи беҳтарин маконҳо ба вучуд овард. Номи Суғд ҳамеша бо Балх, Хоразм ва Ҳарӣ (номи қуҳани Ҳирот), ки ҳамсоиягони наздиқашон будаанд, ҳамроҳ аст. Ду бор низ калимаи «Суғд» бо «сако» дар ибораи «сакоҳои он сӯи Суғд» омадааст. Ҳамчунин Дорюш дар Катибаи Шуш, ки аз сохтмони кохи худ тавсиф мекунад, аз сангҳои лочварду ақиқ, ки аз Суғд оварда шуда буданд, сухан мегӯяд. Дар матнҳои Юнони бостон аз Суғд ба сурати «sogdiana» ном бурда шудааст. Ҳеродот Суғдро дар феҳристи миллатҳои, ки дар фармонравии шоҳаншоҳии ҳахоманишӣ қарор доштаанд ва суғдиёнро дар феҳристи афроди сипоҳиёни Хашоёршо меоварад. Ҳудуди Суғдро рӯди Ому (Чайхун) ва рӯди Сир (Сайхун) дар шимол мебард. Бино бар гуфтаи муаррихи Юнони Бостон, мардуми Суғд, Балх ва Ҳирот забони ҳамдигарро мефаҳмидаанд. Дар асари

---

<sup>1</sup> Қариб, بدرالزمان. زبان سغدى//تاريخ جامع ايران، ص. 432

<sup>2</sup> همان جا، همان صفحه.

донишманди дигари юнонӣ Птолемей (асри дувуми мелодӣ) роҷеъ ба Суғд маълумоти муфассали чуғрофӣ ба назар мерасад.<sup>1</sup>

Бино ба гуфтаи Бадруззамони Қариб, дар маъхазҳои сосонӣ ва матнҳои паҳлавӣ номи Суғд ба суратҳои гуногун дида мешавад. Дар матни портии катибаи Каъбаи Зардушт Шопури аввал ва дар тарҷумаи юнонии он номи Суғд миёни устонҳои қаламрави сосонӣ ҳамроҳ бо номи Кушоншаҳр ва Кошғару Чоч (Тошканд) зикр шудааст.<sup>2</sup> Сулӣ бо номи Суғд дар маъхазҳои чинӣ, тибетӣ, санскрит ва хурушатӣ наздик аст. Номи Суғд дар матнҳои форсии миёнаи Турфон «swyly» ба вожаи «суғд» наздик аст.<sup>3</sup> Суғдиҳо худро «suḡdīk» ва «suḡdīane» мехонданд. Дар сарчашмаҳои исломӣ Суғд ба сарзамин ва миллате дар Варорӯд (Мовароуннаҳр) гуфта мешавад. Аммо чуғрофинависони исломӣ, монанди Истаҳрӣ, Мақдисӣ, Ибни Ҳавқал, Ёкут ва Яъқубӣ дар бораи ҳудуди чуғрофиёии ин сарзамин ҳамраъӣ нестанд.<sup>4</sup> Абӯрайҳони Берунӣ дар «Осор-ул-боқия» дар бораи гоҳномаи суғдӣ ва идҳои моҳҳои суғдиён маълумоти боарзиш медиҳад, ки маҳз он ахбор таваҷҷуҳи донишмандонро ба вучуди забони мустақиле бо номи суғдӣ ҷалб карда буд, аммо перомуни ҳудуди сарзамин Суғд хомушӣ гузидааст.<sup>5</sup>

Аҳмади Тафаззулӣ дар асоси катибаи Бугут (Bugut) менависад, ки «суғдӣ забони расмии нахустин императории туркон будааст».<sup>6</sup> Дар асри X бо густариши забони порсии дарӣ (форсии нав) дар Осиёи Миёна забони суғдӣ оҳиста-оҳиста мавқеашро аз даст дод, вале то асри XI ба ҳайси забони гуфтугӯӣ идома ёфт ва ҳоло ҳам дар водии Зарафшон байни мардуми Яғноб ин забон роиҷ аст.

Пажӯҳишгарони олмонӣ аввалин касоне буданд, ки диққати олиморо ба забони суғдӣ ҷалб карданд ва илмро бо осори ба ин забон иншошуда ошно намуданд. Гарчанде ин донишмандон дар ибтидои асри XX бо мутолиаи як матни аз Турфон ёфтшуда забони онро суғдӣ гуфтанд,<sup>7</sup> Абӯрайҳони Берунӣ ҳазор сол пеш дар китоби «Осор-ул-боқия» бо зикри номи рӯзҳо, моҳҳо ва чашнҳои суғдӣ ба мавҷудияти ин забон ишора карда буд.<sup>8</sup> Воқеан, пажӯҳишгарони олмонӣ дар асри XX тавонистанд бо ин кашфиёти худ дар илм забони суғдиро аз нав зинда кунанд. Кашфиёт дар Осиёи Миёна нишон медиҳад, ки суғдиёни тиҷоратпешаву ҳунарманд, ки воситаи интиқоли фарҳангу ҳунар ва молу коло миёни ду дунёи Шарқу Ғарб, Чину Эрон ва Ҳинду Рум будаанд, фаъолтарин мубаллиғони динҳои

---

<sup>1</sup> Уллиямз, Симира. Ашнай ба забан Сугдӣ. Мӯрҷман Вӯда Ндаф ва Момд Жеғрзәде ва Рстм Вӯдӣ, Тһран, 1387, с. 2-13. Хромов Альберт Лианӯдаовиҷ. аз Рстм та Дӯаштбӯж, с. 13-17.

<sup>2</sup> Қрӯб, Бдрзман. Фрһнг Сғрӣ. Тһран, 1374, с. 12.

<sup>3</sup> Қрӯб, Бдрзман. Збан Сғдӣ// Брӯх Ҷамс әран, с. 433.

<sup>4</sup> Нқл аз Қрӯб, Б. Фрһнг Сғдӣ, с. 11-13.

<sup>5</sup> Берунӣ Абӯрайҳон. Осор-ул-боқия. -Душанбе: Ирфон, 1990. -С. 257—259.

<sup>6</sup> Тфзӯлӣ. Тарӯх әдбӯбат әран пӯш аз اسلام, с. 357.

<sup>7</sup> Хромов А. аз Рстм та Дӯаштбӯж, с. 15.

<sup>8</sup> Берунӣ Абӯрайҳон. Осор-ул-боқия. -С. 257—259.



будой, монавӣ ва масехӣ дар миёни қавмҳои Осиёи Миёна ва Чин ба шумор мерафтаанд.<sup>1</sup> Гуногунии санадҳои бадастомада фаъолияти динии ин муҳочирони дур аз ватанро чилвагар месозад. Нуктаи чолиб ин аст, ки пайравони ҳар дин ҳатте барои баёни эътиқоди худ интиҳоб кардаанд. Матнҳои будой ба ҳатти суғдӣ, осори монавӣ ба ҳатти монавӣ ва матнҳои масехӣ ба ҳатти сурёни навишта шудаанд. Дар матнҳои будой истилоҳоти зиёде аз санскрит ва прокрит ва дар матнҳои монавӣ вомвожаҳое аз форсии миёна ва портӣ дида мешавад. Матнҳои суғдии масехӣ аз асли сурёнии худ саҳт таъсир бардоштаанд. Муҳаққиқон бисёре аз мушкилот ва масъалаҳои мавриди шубҳаи ин матнҳоро аз нафаҳмидани маънои матни асл доништаанд. Бо ҳамаи густариши ҷуғрофии забони суғдӣ ихтилофи ғӯиши матни мактубҳо андак аст. Ин ба он маъно нест, ки матнҳои забони суғдӣ аз назари забонӣ ягонагии комил доранд, балки ихтилофи мавҷуд бештар бозтоби омилҳои таърихӣ, баҳусус қорбурди ҳатҳои муҳталиф ва суннатҳои имлоии гуногун аст, то ихтилофи ғӯишӣ. Бешубҳа, гунаҳои шевае аз забони суғдӣ дар ноҳияҳои дур аз пойтахт (Самарқанд) вучуд доштааст, ки мутафовит бо забони суғдии осори мактуб мавҷуд буда ва эҳтимолан, шеваи яғнобии имрӯзӣ дар ноҳияи кӯҳистони водии Зарафшон низ боқимондаи яке аз он шеваҳост.<sup>2</sup>

Муҳаққиқон адабиёти суғдиро бар ҳасби мавзӯ ба ду гурӯҳ тақсим мекунанд: Осори динӣ ва ғайридинӣ. Масалан, А.Л. Хромов ҳамаи мероси ҳаттии суғдиёро, ки имрӯз дар даст аст, ба чунин бахшҳо тақсим мекунад: осори будой, монавӣ, масехӣ ва ғайримазҳабӣ.<sup>3</sup> Бештари адабиёти суғдӣ мазмуни динӣ дорад. Матнҳои ёфтшуда аз Чин гувоҳи ин матлаб аст. Матнҳои будой, монавӣ ва масехӣ - оинҳое, ки суғдиёни муҳочир бо худ ба Турфон ва Ҳазорбудои Дунхуани Чин бурдаанд, низ далели ин даъвоянд. Матнҳои ғайридинӣ шомили номаҳои бостонӣ, санадҳои Тоҷикистон, сангнавиштаҳои Покистон, катибаҳои Муғулистон, Ўзбекистон ва Қирғизистон, сиккаҳои парокандаи суғдӣ дар Осиёи Миёна, навиштаҳои рӯи ашё, симин, чарм, сафолинаҳо ва сангҳои гаронбаҳост. Қадимтарин сиккаҳои суғдӣ мутааллиқ ба асри дувуми мелодист ва чаҳидтарини онҳо аз даврони ҳукумати Ғӯрак дар Самарқанд аст, ки дар ноҳияи Панҷакант ба даст омадаанд. Дар миёни матнҳои динӣ қитъаҳои парокандаи достонӣ, монанди достони Рустам ва набарди ӯ бо девон дида мешавад, низ чанд достони кӯтоҳ, ки зоҳиран асли ҳиндӣ, сурёни, юнони ва эронӣ доранд. Як қитъаи тилисми борон, шарҳи ҳоси сангҳои боронзо, чанд матни кӯтоҳи тиббӣ ва ситорашиносӣ, як қитъа дуои ашму ҳуи авестой, ки

<sup>1</sup> Қриб, بدرالزمان زبان سغدى//تاريخ جامع ايران،ص.434

<sup>2</sup> همان جا، ص.433

<sup>3</sup> خر و موف آاز رستم تا ديواشنيچ، ص.23

эхтимолан сурати таҳрифшудаи суғдии поёни аҳди хахоманишист, дида мешавад.<sup>1</sup>

Қадимтарин матни муҳим ба забони суғдӣ номаҳо, мактуб бар коғаз аст, ки бозаргонони суғдӣ аз Чин барои ҳамкорон ва хешони худ ба Суғд фиристодаанд. Ин номаҳо, ки ба соҳибашон нарасидаанд, дар харобаҳои яке аз дидбонии девори шимоли ғарбии Чин кашф шудаанд. Номаҳои қадими суғдӣ аз панҷ номаи комил ва чанд пораи ноқис иборат аст, ки ба гуфтаи баъзе аз муҳаққиқон, ба ибтидои асри чаҳорум тааллуқ дорад, аммо гурӯҳи дигар таърихи эҷоди он номаҳоро ба охири асри дувуми милодӣ мансуб медонанд.<sup>2</sup> Пажӯҳандагон ин номаҳоро ҳамроҳ бо чӯбнавиштаҳои чинӣ пайдо карданд, ки мансуб ба асри аввали мелодиянд.<sup>3</sup> Ба эътибори ин чӯбнавиштаҳо таърихи номаҳоро миёна ё поёнии асри дувуми мелодӣ, баъд аз таърихи эҳтимолии ихтирои коғаз (105 мелодӣ) ташхис додаанд.<sup>4</sup> Дар сурати таъйиди таърихгузори муҳаққиқон, номаҳои суғдӣ куҳантарин матни навишта бар коғаз шумурда мешаванд. Муҳтавои ин номаҳо мазмуни динӣ надоранд, балки дарди дили муҳочирони суғдиҳо дар раванди рӯйдодҳои муҳимме аз таърихи Чин бозгӯӣ мекунанд. Саргузашти муҳочирон дар ин номаҳо хеле муассир бозтоб ёфтааст. Ин номаҳо ҳамчунин маълумоти судманде дар бораи равиши номанависии суғдиҳо медиҳанд. Аҳаммияти онҳо, пеш аз ҳама, аз диди забоншиносӣ хеле муҳим аст. Илова бар ин, дар онҳо ба ҳодисаҳои таърихӣ ишора шуда, ки дар шинохти воқеаҳои он рӯзгор ва чигунагии номанигории суғдиёни қадим аҳаммияти фавқулода доранд.<sup>5</sup>

## V.1. ОСОРИ ДИНИИ СУҒДӢ

### V.1.1. Адабиёти суғдии будой

Бино ба таҳқиқи суғдшиносон, адабиёти суғдии будой, ки пурҳаҷмтарин маҷмӯаи матнҳои суғдӣ ва солимтар аз матнҳои дигар ба дасти мо расидааст, нақши бузург дар муаррифии вожагон ва низ сохтори сарфию наҳвии забони суғдӣ доранд. Бахше аз ин матнҳо дар ғорҳои Ҳазорбудой Дунхуан ва қисмати дигар дар Турфон кашф шудааст. Матнҳои Дунхуан нӯҳ аср дар ғорҳо пинҳон ва аз дастбурди

<sup>1</sup> Қриб, Бдр.зман. مطالعات سغدى. به كوشش محمد شكرى قومشى، تهران، 1386، ص. 223-239

<sup>2</sup> خروموف. نامه های باستانی // از رستم تا دیوشنچ، ص. 45

<sup>3</sup> ویلیامز، سیمز. آشنای با زبان سغدى، ص. 15-14

<sup>4</sup> قریب، بدر.الزمان. زبان سغدى // تاریخ جامع ایران، ص. 435

<sup>5</sup> قریب، ب. زبان سغدى // تاریخ جامع ایران، ص. 431-482.

قریب، ب. فرهنگ سغدى. تهران، 1374؛ قریب، ب. روایتی از تولد بودا، متن سغدى وسنتره جاتکه/ تهران، 1383

قریب، ب. مطالعات سغدى، تهران، 1386؛ ویلیامز. آشنای با زبان سغدى. تهران، 1387

قریب، ب. عناصر زردشتی در متن ایرانی شرقی // جشننامه محمدعلی موحد، به كوشش حسن حبیبی، تهران، 1387؛ زرشناس زهره. زن و واژه. گفتارهای در باره زنان و زبان سغدى، تهران، 1385. زرشناس زهره. جستارها در زبانهای ایرانی میانه شرقی. تهران، 1385؛ تفضلی، تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، صص. 357-365.

ادبیات ایران پیش از اسلام. به كوشش رونالد امریک، م. ماتسوخ، ترجمه زیر نظر ژ. آموزگار، تهران، 1393، ص. 348.

замона беҳтар эмин мондаанд. Ҳоло баъзе аз онҳо дар музейи Лондон, бахши бузург дар Китобхонаи миллии Париж ва қисмате аз онҳо дар Берлин ва Санкт-Петербург ниғаҳдорӣ мешаванд.<sup>1</sup> Муҳтавои матнҳо бозтоби мактаби будоист, ки дар Осиёи Миёна ва Чин пайравони зиёд дошт. Бештари ин матнҳо дар савмааҳои Осиёи Марказӣ аз чинию ҳиндӣ тарҷума шудаанд. То кунун танҳо як матн, он ҳам ба таври эҳтимолӣ таърихгузори шудааст, ки онро ҳудуди 728 медонанд. Бештари матнҳои будоӣ дар ғорҳои Ҳазорбудои Чин дар Дунхуан кашф шудаанд. Миёни маъбади дарунандарун биношуда дар дили ғорҳо китобхонае бо маҷмӯи қобили мулоҳизае аз дастнависҳои суғдӣ пайдо шуд. Ин китобхона муддати нӯҳсад сол бо девори нозуке аз ғори асли ҷудо ва аз дастбурди замон барканор монда буд ва ганҷинаи он низ ҳолати беҳтаре дошт. Кашфи ин китобхона ва розкушоии хатти матнҳои он таърихи аҷибе дорад, ки тавассути суғдшиносони аврупоӣ сурат гирифтааст.<sup>2</sup>

Дар миёни ин матнҳо Вессантра-чатака, ки ривояте аз таваллуди Будост, муфассалтарин матни забони суғдӣ ба шумор меравад. Аксари суғдшиносон ҳангоми баррасии осори суғдӣ будоӣ ба Вессантра-чатака ишора доранд ва матни ин дoston ба забонҳои форсӣ, русӣ, олмонӣ ва англисӣ тарҷума шудааст. Мубаллиғони суғдӣ оини будоӣ барои тарғиби дини худ аз дoston ё ривоят бештар истифода мекардаанд, зеро барои омӯзиши дин ва интиқоли он беҳтарин восита будааст. Бо нақли дostonу ривоят ва ё тамсилҳо мардум бештар мутаваҷҷеҳи оини будоӣ мешудаанд ва бо ин роҳ онҳоро аз қонуну суннатҳои динӣ огоҳ мекардаанд. Дар адабиёти суннатии будоӣ чатакаҳо дostonҳои ҳастанд, ки зиндагиҳои пешини Будоро ривоят мекунанд ва овадонаҳо дostonҳои ҳастанд, ки ба шарҳи қорҳои дурахшони қудсиёни будоӣ мепардозанд.<sup>3</sup> Вессантра-чатака дostonест, ки яке аз таваллудҳои Будо (Чатака)-ро пеш аз таваллуди Будои таърихӣ ва бо тақия бар сифати бахшандагии ӯ баён мекунад. Ин танҳо матни будоист, ки онро таълиф пиндоштаанд. Сафҳаҳои аввали ин дoston аз байн рафтаанд, аммо аз сатрҳои боқимонда асли маънӣ равшан мешавад:

Шоҳи шаҳри Шивағҳваша – Шива фарзанд надошт. Чандин муддат ниёиш мекард, то писаре дошта бошад ва саранҷом занаш писаре таваллуд кард, ки ӯро Судахан ном доданд. Саргузашти шоҳзода аз айёми туфуллият то ба қамол расидану ба духтари зебое бо номи Мандри хонадор шуданаш ва соҳиби ду фарзанд, писаре бо номи Каршнаян ва духтаре бо исми Чалин гардиданаш нақл мешавад. Рӯзе шоҳзода аз қаср берун рафт ва гурӯҳи бузурге бенавоёнро дид ва саҳт ғамгин шуд. Бо хоҳиши шоҳзода падараш иҷозат медиҳад, ки ҳар чи бенавоён бихоҳанд, ба онон бибахшад.

---

1. Қриб, б. زبان سغدى//يارىخ جامع ايران،ص.431

2. همان جا،ص.431-439

3. ادبيات ايران پيش از اسلام. به كوشش رونالد امريك، مارياماتسوخ،ص.347

Мувофиқи фармони шох, Судастан метавонист ҳама чизро бибахшад, ба ғайр аз шохпили сапед – Рочварт, ки аз шаш вижагӣ бархурдор аст. Шохзода рӯзгори дароз ба тангдастон бахшишҳо мекард ва овозаи саховати ӯ ба ақсои олам паҳн шуда буд. Рӯзе ба садақадихӣ дар беруни қаср машғул буд, бараҳманҳое, ки аз ҳазорон фарсанг дуртар омада буданд, ҳамон шохпилро аз вай дархост карданд.

Шохзода намехост, ки бараҳманон ноумед шаванд ва ҳамчунин наметавонист фармони шохро нодида бигирад, саъй намуд бо зиракӣ корро ба анҷом бирасонад. Бараҳманонро ба чойгоҳи пилон бурд, умед дошт, ки онҳо шохпил Рочвартро намешиносанд ва пили ҳамонанди ӯро бармегузинанд. Аммо бараҳманон аз дониши пинҳон бархурдор буданд ва бо ёрии чоду чонвари мавриди назарашонро пайдо карданд ва Судастан ночор шохпилро ба онҳо дод.

Чун Шивашох аз ин мочара огоҳ гардид, саҳт барошuftу хашмгин шуд ва мушовиронро даъват кард, то муайян кунанд, ки шохзода сазовори чӣ чазоест. Мушовирони шох Судастанро сазовори саҳттарин чазо донистанд, аммо саранҷом, шох бо маслиҳати яке аз бузургони некхоҳ салоҳ дид, ки шохзодаро ба кӯҳи дур аз одамизод – Дандарак, ки чойгоҳи дарандағони ваҳшӣ ва девони одамхор аст, ба муддати даҳ сол бадарға кунад.

Зани шохзода аз ӯ такозо мекунад, ки ӯву фарзандонашро низ ҳамроҳ бигирад. Судастан мекӯшад, то занаш аз ин раъйш баргардад ва ӯро аз бадбахтихову азобу ранҷҳое, ки пеш меоянд, тарсонданӣ мешавад. Аммо занаш пофишорӣ карда, мегӯяд, ки агар шохзода онҳоро ҳамроҳ нагирад, ӯ худашро хоҳад кушт ва бачагон ятим мемонанду аз ғам мемиранд ва гуноҳи марги ин се бар дӯши Судастан хоҳад буд. Шохзода маҷбур мешавад зану фарзандҳояшро низ ҳамроҳи худ гирад. Судастан ва оилаашро ба аробае чой медиханд, бузургмарди некхоҳе, ки ба шохзода раҳм оварда буд, гули зарринеро ба ӯ тақдим мекунад, ки ҳазор статер вазн дошт. Парчае аз тилои холис ба ароба мебанданд, ки бо ҳафт гуна санги гаронбаҳо зинат ёфта буд. Хӯроку либос барои даҳ сол ба онҳо медиханд ва баъд аз худохофизии пуршукӯху гирияву нолаи ҳамагон аробаи бадарғашудагон ба роҳ мебарояд.

Ҳангоме ки онҳо роҳи дарозе тай карданд, ба бараҳмане вохӯрданд. Бараҳман нақл мекунад, ки ба шаҳри Шивағҳваша, назди шохзода Судастан равон аст, зеро шунидааст, ки ҳар чӣ аз ӯ хоҳанд, медихад. Судастан саргузашташро ба ӯ нақл мекунад. Бараҳман вақте мефаҳмад, ки шохзода дигар наметавонад чизе бибахшад, худро ба хок меафканад ва гирияву нола мекунад. Судастан гули зарринро ба ӯ мебахшад, то бараҳман оромиш ёбад ва худ хоҳиши ботинияшро иброз медорад: Ҳеч пушаймон нестам аз он ки ҳар чизеро, ки аз ман хостаанд, бедареғ бахшидаам, мехоҳам дар зиндагии дубораам Будо шавам. Дар идомаи роҳ Судастан бо бараҳманҳои зиёде вомехӯрад, ки аз вай бахшишҳои пурарзиш металабанд. Ҳамин тариқ, Судастан ҳар чизе, ки дошт, то либосу хӯрок ва асбу ароба, ки ба он савор буданд, ҳамаро бахшид. Ӯ бо

зану фарзандонаш пиёда ба пеш меравад, пойҳояшон пуробилаву устухонҳояш намоён аст, дар биёбони ҳавлноки беобуалаф қадам мезананд. Онҳо аз гуруснагию бетавонӣ тамоман беҳол мегарданд. Худованди арш бо дидани ранҷҳои онҳо дар чехраи пирмарди нуроние баробари чашмонашон ҳувайдо мегардад.

Худованди арш барои Судашиан шаҳри бузурге бо кохҳои мухташаму хидматгорони бешумор меофаринад. Мусофиронро либосҳои зебову муносиб мепӯшонанд ва онҳо як ҳафта дар он ҷо истироҳат мекунанд, то хастагиашон рафъ шавад. Рӯзи ҳаштум шоҳзода ба пуштибонаш мегӯяд: «Падарам амр дода, ки ман бояд ба кӯҳи Дандарак биравам ва ман наметавонам фармони падарро нодида бигирам. Иҷозат фармо, мо ба роҳ бароем, то аз сарпечии ман ба бузургии падарам газанде нарасад». Мусофирон аз шаҳр берун мешаванд ва чун ба пушт менигаранд, чизеро намебинанд, ба ҷуз биёбони анбошта аз хору муғелон.

Дар кӯҳи Дандарак онҳо ба зоҳиди гӯшанишине вомехӯранд ва ӯ онҳоро ба кулбаи худ даъват мекунад. Судашиан монанди кулбаи зоҳид аз шоху барг кулбае месозад ва дар он ҷо зиндагӣ мекунанд. Хӯрокашон меваҳои гиёҳону баргҳои дарахтҳои хурӯ ва алаф аст. Ҳайвонҳои ваҳшӣ назди кулбаи онҳо меоянд ва чун Судашианро мебинанд, пойи ӯро мелесанд. Рӯзе, хангоме ки зани Судашиан барои овардани меваҳои хурӯӣ рафта буд, шоҳзода ду фарзанди худро ба бараҳмане, ки ба кулбаи ӯ омада буд, мебахшад.

Ҳамин ки бараҳман бачагонро мебарад, замин шаш бор такон меҳурад, оби дарёҳои бузург ба ҷӯш дармеоянд, худоҳо дар мақоми осмонияшон Судашианро сано меҳонанд. Зани шоҳзода чун аз рафтани бачаҳо огоҳӣ меёбад, саҳт андуҳгин мешаванд, аммо сипас ба тақдир тан медиҳад. Худованди арш меҳаҳад бидонад, ки бахшишҳои шоҳзодаро худде ҳаст ё не, дар симои бараҳмани пири зиштчеҳрае намоён мешавад ва занашро аз ӯ меҳаҳад. Судашиан аз занаш маслиҳат мепурсад. Зан мегӯяд, ки ҳоло ки кӯдаконро бахшидааст, дигар набояд ба ҳамсараш дилсӯзӣ кунад. Судашиан дасти занашро гирифта ба бараҳман медиҳад. Аммо бараҳмани зиштсимо занро намебарад ва ба шоҳзода баргардонида мегӯяд, ки назди ӯ амонат мегузорад ва дар бозгашт ӯро мегирад.

Бараҳмане, ки кӯдаконро ҳамчун бахшиш гирифта буд, ба умеди фурӯхтан онҳоро гирди ҷаҳон мегардонад, аммо харидоре пайдо намекунад, зеро онҳо лоғар ва камқувват буданд. Аз гардиши рӯзгор, бараҳман бо кӯдакон ба шаҳри Шивагҳваша меравад. Бузургмарди некхоҳ, ки мушовири шоҳ буд, иттифоқан онҳоро мебинаду мешиносад ва шоҳро огоҳ мекунад. Шоҳ аз шунидани ин хабар беҳуш мешаваду аз тахт меафтад. Шоҳ Шива меҳаҳад кӯдаконро бигирад, аммо онҳо аз бобояшон хоҳиш мекунанд, ки онҳоро ба зӯр наситонад, балки баҳояшонро ба бараҳман бипардозад, ҳар чӣ хоҳад, бидиҳад. Бараҳман чун мебинад, ки аз ин муомила суди фаровон

мебинад, ба ивази кӯдакон ҳазор барзагов меҳаҳад. Кӯдакон ба бобояшон аз зиндагии пурмашаққати падару модарашон дар кӯҳи Дандарак нақл мекунад. Шохӣ пушаймон пайки савореро ба он ҷо мефиристад ва ба писараш фармон медиҳад, ки бозгардад. Аммо шохзода ҷавоб медиҳад, ки «ба ман фармон шуда буд, ки даҳ сол ин ҷо бошам, танҳо шаш солаш сипарӣ шудааст. Ман ҳоло наметавонам баргардам». Шох гурӯҳе аз бузургонро бо аспу пили ороста ва ҷомаҳои гаронбаҳо ба назди писараш равона мекунад. Судашан ночор мепазирад ва ба шаҳр бармегардад. Падар тахтро ба Судашан волегузорад ва иҷозат медиҳад, ки то ҳар чиро бихоҳад, бибахшад.

Достон бо гуфтугӯи Будо бо шогирди баргузидааш – Ананда, ки аз хусусиятҳои нави ҷатака аст, хотима меёбад. Будо мегӯяд, ки ин бахшишу бахшиданҳо, ки Судашан карда, ночиз асту ӯ хеле беш аз инҳо додааст. Сипас, Будо ба шогирдаш ошкор мекунад, ки Судашан худи ӯст дар як даврони зиндагии пешинаш ва Мандри ҳамсари кунунии ӯ-Яшодхоро ва ҳайвоноти ваҳшӣ ҳамин шогирдон ва сомеони ӯянд, ки гирду пешашро гирифтаанд.<sup>1</sup>

Муҳаққиқон бар онанд, ки қисмати поёнии достон, ки набояд зиёд бошад, аз байн рафтааст. Ин достон дар осори ҳунарии аксари кишварҳои будой инъикос ёфта ва мавзӯи қорҳои адабии зиёде будааст. Пажӯҳишгарон бо тавачҷуҳ ба сабки адабие, ки дар матн ба қор рафтааст, ҳаде задаанд, ки нигорандаи ин достон суғдизабон буда ва достонро аз рӯи матни дигаре тарҷума накарда, балки онро бознависӣ кардааст.<sup>2</sup> Нахустин муҳаққиқе, ки нусхаи суғдии Вессантра-ҷатакаро баррасӣ кард, R. Gauthiot буд.<sup>3</sup> Вай нусхаҳои полӣ, тибетӣ ва чинии ин матнро низ дар даст дошта ва ба баррасии тафовутҳои мавҷуд байни нусхаҳои мухталиф пардохтааст. Бахши зер, ки марбут ба таваллуди Судашан аст, танҳо дар нусхаи суғдӣ омада ва дар се нусхаи дигар вучуд надорад. Шох Шива аз ҳамсараш дар бораи хобе, ки дишаб дидааст, суол мекунад ва ӯ чунин посух медиҳад:

*Эй сарвар, чунон ба назар омад, ки худои хуршед аз ҳафт гавҳари чинтоман (гавҳари бароварандаи орзуҳо) берун шуд ва дар паҳлӯи рости ман ҷой гирифт (сатрҳои 6-8)<sup>4</sup>.*

Шох аз ин хабар шод мегардад ва тамоми пешгӯиҳои кишварашро даъват намуда, мепурсад, ки фарзанди батни занаш писар аст ё духтар? Онҳо ҷавоб доданд, ки кӯдак писар асту фархундабахт хоҳад буд. Равшан аст, ки хоби ҳамсари подшоҳ бар пояи достони таваллуди Будо шакл гирифтааст.

---

<sup>1</sup>Бертельс Е.Э. История персидско-таджикской литературы.- С. 69-71. Ин достонро Бадрузамони Қариб ба форсӣ тарҷума кардааст:

Қариб, б. Р. روایتی از تولد بودا، متن سغدی و سنتره جاتکه/ تهران، 1383.

<sup>2</sup>ادبیات ایران پیش از اسلام. به کوشش رونالد امریک، ص. 348. بوتاکا یوشیدا. سغدیان و آیین بودایی//

<sup>3</sup>همان جا، ص. 349

<sup>4</sup> Қариб, б. Р. روایتی از تولد بودا، ص/ 57

Рафтори Судашиан ва амали бахшандагии  $\bar{u}$  аз ҳайсиати як инсони одӣ фаротар меравад ва чанбаи улуҳият касб мекунад, зеро майлу хохиши бахшандагии  $\bar{u}$  то ба ҳаддест, ки пили сапедро, ки шаш оч дошту ганҷи миллӣ ба шумор мерафт ва бахту иқболи кишвари шоҳ Шива вобаста ба он аст ва илова бар ин, шоҳзода сарехан аз бахшидани он манъ шуда буд, ба бараҳмани фиристодаи як кишвари душман мебахшад. Дигарон аз фаҳми ин амали Судашиан очиз буданд, танҳо худ медонист, ки ин кораш амали хайрест ва ҳеч зиёне дар пай надорад. Ин маъниро метавон аз суҳанони  $\bar{u}$  хангоми бахшидани пил ба бараҳман, ки онро дилдорӣ медиҳад, маълум кард:

*Ту вориди сурати таносухёфтаи баде шудаӣ ва гарчи по дорӣ, боз ҳам наметавонӣ он гуна ки майл дорӣ, биравӣ. Пас, чаро чунин ба зорӣ мегирӣ ва ман туро на ба хотири як фард, балки ба хотири ҷондорони панҷ ҳастии сетабақа (яъне, панҷ гуна ҷондорони се ҷаҳон; тамоми мавҷудот) ҳада медиҳам. Пас, агар ман ба орзуям бирасам, нахуст туро аз дард берун кашам (сатрҳои 53в-60в).<sup>1</sup>*

Е.Э. Бертелс бар он аст, ки бештари калимоти будой дар чатака бозгардонида нашуда, танҳо овонигорӣ шудаанд. Дар ин матн номи «бағоният» (улуҳият)-и ҳиндӣ-бараҳмо, дар ҳамаи матн ҷойи худро ба Зарв (*zrw*) додааст, ки худ пайдост расонандаи номи куҳантарини бағонияти оини зардуштӣ –«Зарвон», «Замони бекарон» аст.<sup>2</sup> Вақте ки шоҳзода бо ҳамроҳии аҳли оилааш ба кӯҳи Дандарак расид, зоҳиди горнишине онҳоро аз дур дид ва ба худ чунин гуфт:

*Ин худои (*zrw*) (Зарвон) аст ҳамроҳ бо бонуи хеш ё худои барин ва ё Вишпаркар ва ё Норёни муъҷизагар? Пас, дигар бор ба хеш чунин андешид: «Агар Зарвон буд, ришдор мебуд, пас, Зарвон нест. Ва агар худои барин буд, ўро се чаши мебуд, пас, худои барин нест. Ва агар Вишпаркар буд, ўро се чехра мебуд, пас, Вишпаркар нест. Агар худои Норйёни муъҷизагар буд, ўро шонздаҳ даст мебуд ва агар Варишмон (*varisravana*) буд, тамом нӯшида дар силоҳ буд,пас, Варишмон нест (сатрҳои 909-922).<sup>3</sup>*

Пажӯҳандагони адабиёти суғдӣ бо тақя бар матни фавқ бар он андешаанд, ки суғдиён худоёни худро бо худоёни ҳиндӣ яке медонистаанд. Зарвонро бо бараҳман, худои барин (Озвағ-Хурмузд)-ро бо Индра ва Вишпаркар (*Vayunsuparo.kago*-авестой)-ро бо Шива. Хусусиятҳои шамоили ин худоён низ таҳти таъсири вижагиҳои ҳамтоёни ҳиндии онҳост. Масалан, дар деворнигораҳои дар Панҷакант кашфшуда Вишпаркар бо се чехра ва бо дигар вижагиҳои Шива ба тасвир кашида шудааст. Муҳимтарин қисмат он ҷост, ки достони Индра, ки худро ба сурати як бараҳмани зиштсимои солхӯрда даровардааст, аз шоҳзода ҳамсарашро ҳада мехоҳад, то

<sup>1</sup> يوتاكا يوشيدا. سغديان و آيين بوداي،ص. 349

<sup>2</sup>Бертельс Е.Э. История персидско-таджикской литературы.-С. 71.

<sup>3</sup> يوتاكا يوشيدا. سغديان و آيين بوداي،ص. 350

мизони азми Судашианро дар бахшиши тамоми дороиҳояш биозмояд. Шоҳзода ҳамсари хеш - Мандриро ба Индра мебахшад:

*Пас, чун Судашиан ин абётро ба забон овард, дасти Мандриро бигирифт ва ўро ба бараҳман дод, бидуни таассуф, бидуни пушаймонӣ, ба тавре ки хотираш парешон набуд. {Пас}, чун бараҳман ҳадыро ба даст овард, ўро офарин хонд: «Фархунда бошӣ ту, эй шоҳзода ва мақоми Будоро ба даст орий!» Ва бараҳман хурсанд ба роҳ афтод. Пас, он гоҳ, эй Онандро, бараҳман роҳи дуре нарафт ва ба ақиб бозгаишту ба он қулба расид ва ба Судашиан чунин гуфт: «Ман раҳсипори сарзамини дигаре ҳастам ва ин занро назди ту амонат хоҳам сунурд, дар баробари Митра, довари офариниш, ҳамроҳ бо фариштагони кӯҳистону фариштагони ҷангал ва фариштаи чаимасорон, ба шарте, ки ту ўро ба касе ҳады надихӣ. Пас, Судашиан Мандриро ба амонат гирифт. Пас, он гоҳ, эй Онандро, худои барин шакли худро ошкор кард (сатрҳои 1192-1212)».<sup>1</sup>*

Ибораи «Дар баробари Митра» дар байни суғдиён як ибораи қолабӣ буда, ки ҳангоми ёд кардани савганд ба кор мерафтааст. Тадвингар ва ё тарҷумони ин дoston саъй намуда, ки дostonро бо зиндагии рӯзмарраи суғдиён мушобихат бахшад. Дoston бо чунин бардошт хотима меёбад:

*Ман (Будо) будам Судашиан ва низ шоҳ Шива, акнун шоҳ Шандудон аст ва шаҳбонуи шоҳ Шива низ акнун маликаи Муҳомой аст ва Мандри низ акнун ҳамин Яшудар аст ва он нахчирон низ, ки дар кӯҳи Дандарак буданд, ҳамин ҷамъ аст, ки акнун дар баробари ман бошад (сатрҳои 1462-1478).<sup>2</sup>*

Муҳаққиқон номи Судашианро аз ду ҷузъ: хиндии su-(нек) ва эронии dasan (ҳады) иборат медонанд ва нусхаи суғдии Вессантра ҷатакаро қадимтарин матни суғдии будой мешуморанд. Баъзе аз муҳаққиқони уйғур муътақиданд, ки нусхаи уйғурии ҷатака бар пояи нусхаи суғдии он навишта шудааст. Ютоко Юшидо менависад, ки ба далели пора-пора будани нусхаи уйғурӣ наметавон дар ин маврид итминон ҳосил кард, аммо вижагиҳои хосси матни суғдӣ, ки мустақил будани он аз соири нусхаҳост, ин фарзро тақвият мекунад.<sup>3</sup>

Пажӯҳишгарон аз байни дostonҳои мутааллиқ ба адабиёти авадона ба тамсили ду бародар ишора кардаанд. Дар ин дoston дostonи дигаре низ зикр шуда, ки дар бораи ду марди аҳли як шаҳр аст. Ҳарчанд ин дoston ба забони суғдист, аммо пажӯҳандагон дар матн ибороти хосси будоиро пайдо накардаанд, аз ин рӯ ба осори будой ва ё масеҳӣ бадани он шубҳа доранд.<sup>4</sup>Ин ду мард яке моҳигири сарватманд ва дигаре кишоварзи бибизоат аст. Вақте моҳигири бадтинат аз кишоварзи нексиришт хост, ки ба сифати хидматгор барои ӯ кор кунад, кишоварз чунин посух медиҳад:

<sup>1</sup> همان جا، ص. 350

<sup>2</sup> همان جا، ص. 351.

<sup>3</sup> همان جا، ص. 352.

<sup>4</sup> همان جا، ص. 352.



«Эй сарвар, ман марди тангдасте ҳастам ва наметавонам (он тавре ки бояд) туро хидмат кунам ва ин тақсири бузург хоҳад буд аз ҷониби ман». Моҳигир посух дод: «Нороҳат набош, ман марди тавонгаре ҳастам, ҳар чиро ки мехоҳӣ, бидуни таоруф (аз ман) бигир, то мушкилоти ношӣ аз тангдастият поён назирад». Кишоварз гуфт: «Онҳое, ки бидеҳиш зиёд доранд, тавонгар маҳсуб намешаванд, вале онҳое, ки тангдаст ҳастанд, аммо бидеҳие надоранд, сарватманд ба шумор меоянд». Он гоҳ моҳигир аз дасти кишоварз хашигин гафт».<sup>1</sup>

Моҳигирро ҳангоми зери дарахте хобиданаш мор газид ва кишоварз вақти ҳезумчинӣ ба он дарахт наздик шуд ва аз дидани моҳигири мурда дар ҳайрат монд. Кишоварз ҳангоми бозгафт ба подшоҳ вомехӯрад, ки ӯ низ часади моҳигирро дида буд ва подшоҳ кишоварзро гумонбари қатл доништа, дастгир мекунад. Қисмати дигари дoston аз байн рафтааст.

Аз он ҷо ки дostonҳои суғдии будой барои омӯзиш ва тарғиби дини будой эҷод шудаанд, нақши Будо дар аксари ин дostonҳо ба назар мерасад ва дар баъзе аз онҳо ба шеваи ибодат ва расму русуми будоӣ ишора мешавад. Дostonи дигар дар бораи мочарои байни Будо ва мулҳидон (бидъатгузoron) аст, ки асли он маълум нест. Мулҳидон ба Будо ҳасад мебаранд, чаро ки ӯ ба мизони зиёде аз ҳимоят ва лутфи шоҳ Бимбисора (Vimbisara) бархурдор буд. Муфассалтарин матни ин дoston қисматест, ки шоҳ мулҳидон (бидъатгузoron)-ро накӯҳиш мекунад:

Ба кадом хонадони бузург, ба кадом рутбаву мақом тааллуқ доред? Муъҷизот ва (бо) ҷодуӣ рафтани шумо ба осмон аз парвозҳои як гунҷишкак муъҷизаосотар нест. Китобҳои таълимӣ ва омӯзаҳои шумо ҳамонанди қар-қари як калогӣ сиёҳ аст. Оё байни онҳо тафовуте вуҷуд дорад? Ин ки гумон мебаред омӯзгорони сарвари ҷаҳонед, монанди ин аст, ки як шабпара бихоҳад дар бораи нур хуршедро таълим диҳад<sup>2</sup>.

Дар адабиёти суғдии будой аз тамсил фаровон истифода шуда, зеро ғараз аз офариниши чунин ҳикоятҳои тамсилӣ омӯзиш ва тадриси оини будой будааст. Масалан, Бенвенист ҳикояте дар бораи шоҳ Вирудҳака (Virudhaka) меоварад:

Рӯзею рӯзгоре обгире буд, ки дар он даҳ миллион моҳӣ мезистанд. Ду моҳӣ роҳбари онон буданд ва он ду ниёкони дигар моҳиён буданд. Замоне қаҳтиш бузург шуд ва мардум тамоми он моҳиёнро хӯрданд. Он гоҳ майл ба интиқомҷӯӣ чунон рушд кард, ки онон ба сурати инсон дубора зода шуданд. Ва он ду моҳӣ, ки роҳбарашон буданд, низ (худро ба сурати инсон дароварданд). Яке аз онҳо подшоҳе ба номи Вирудҳака шуд ва дигаре подшоҳе ба номи Прухӣ (Proxi, эҳтимолан аз вожаи санскрити rigohita- рӯҳонӣ) ва бақия моҳиёни кӯчак сарбозон шуданд. Он мардуме, ки дар замони қаҳтӣ моҳиёнро хӯрданд, сокинони шахри

<sup>1</sup> همان جا، همان صفحه.

<sup>2</sup> همان جا، ص. 353.

*Капилавасту шуданд. Ба далели тамоюл ба интиқомчӯӣӣ шоҳ Вирудҳака ба ҳамроҳии як лашкар раҳсипори он шаҳр шуд ва тамоми касонеро, ки моҳиёнро хӯрда буданд, кушт. Дар он замон Будо ҳаҷӯз зинда буд, аммо ин масъала монё аз он нашуд, ки он мардум дар маърази он амал қарор нагиранд. Ҳол ба ин иллат касе набояд гӯшт бихӯрад.<sup>1</sup>*

Ҳикояти дигар дар бораи подшоҳи пизишкон ва писараш аст:

*Замоне подшоҳе буд, подшоҳи пизишкон. Ӯ ба ҳама маҳоратҳо муҷаҳҳаз буд. Писаре дошт ва тамоми маҳоратҳо ва дониши пизиширо ба ӯ меомӯхт. Як рӯз хост дониши пизишики писараширо биоэмояд. Бино бар ин, ба ҳилае вонамуд кард, ки саҳт мариз аст. Ба ӯ гуфт: «Эй писарам, бирав ва бар як фили бодной савор шав. Дар миёни ҳар кӯҳе, ҷангале ва соҳили рӯдхонае, дар ҳар ҷаҳор ҷиҳат дақиқан ҷустуҷӯ кун ва агар гиёҳе бошад, ки доруӣ набошад, онро ин ҷо биёвар, зеро барои ман бисёр муфид аст. Пас писар раҳсипори ҳар ҷаҳор ҷиҳат шуд ва ба муддати даҳ рӯз ҳама ҷо рафт. Бо ин ки тамоми гиёҳонро баррасӣ кард, ҳатто як гиёҳ ҳам пайдо накард, ки доруӣ набошад. Он гоҳ ба назди падараш, подшоҳи пизишкон, бозгаиш ва ҳамаи чизҳоеро, ки дида буд, тавзеҳ дод. Падараш гуфт: «Акнун писари ман ба тамоми маҳоратҳо ва донишҳои пизишкӣ муҷаҳҳаз аст. Уро дар тамоми ҷаҳон подшоҳи пизишкон хоҳанд шинохт. Қонуни будой дуруст чунин ҳолате дорад»<sup>2</sup>.*

Дастаи дигаре аз матнҳои суғдии будой осори ахлоқие ҳастанд, ки дар онҳо кирдору рафтори хубу бад шарҳ шудаанд. Воқеан, аз муҳтавои ин матнҳо бармеояд, ки ҳадафи омӯзишӣ доранд ва ба мардуми одии пайравони оини будой нигаронида шудааст. Яке аз ин гуна матнҳо «Сутро дар карохати ошомидани сукровар» мебошад, ки пажӯҳишгарон асли онро пайдо накардаанд. Сутро феҳристи тӯлоние аз таъсири бади ошомидани мастиоварро бармешумурад:

*Ҳамчунин ба сабаби мастӣ бадани бошукӯҳ пажмурда мешавад, сарвар қудраташиро аз даст медиҳад, марди хирадманд хиради худро аз даст медиҳад, марди нековоза дар натиҷаи он бадном мешавад, марди сарватманд фақир мешавад ва ба назари тамоми мавҷудоти зинда масҳара ва нафратбарангез мерасад. Бино бар ин, касе набояд ошомидани сукроварро бинӯшад».*

Матни боло бо ин ҷумла хотима меёбад:

*«Зиёну айби ошомидани сукровар беандоза зиёд аст, лекин ман танҳо андаке аз онро ба ихтисор шарҳ додам»<sup>3</sup>.*

Хӯрдани гӯшт дар мактаби будоии муҳоёна аз гуноҳҳои кабира ба ҳисоб мерафта ва қатъан мамнӯъ будааст. Муҳимтарин далеле, ки

1 همان جا، ص. 357

2 همان جا، ص. 357

3 همان جا، ص. 341

нависандаи ин асари суғдии будоӣ барои нахӯрдани гӯшт меоварад, ба тариқи зайл аст:

*Он кас, ки дигаронро намекушад ва гӯшт намехӯрад ба (ҳеч кадом) аз ин бемориҳо мубтало нахоҳад шуд. (Ҳар) кас, ки мехоҳад ба ин бемориҳо мубтало нашавад ва чунин ранҷҳое аз як дунё ба дунёи дигар (яъне, як таваллуд пас аз дигаре дар силсилаи таваллуду марг) насибаиш нашавад, бояд мутлақ аз хӯдани гӯшт парҳез кунад. Далелаи ин аст, ки базре(тухм, дона) аз вучуди Будо дар (ҳамаи) панҷ гунаи мавҷудоти зинда ва дар миёни чаҳор унсури аслӣ (ки ҳама чиз аз онҳо сохта мешавад) ҳаст ва (ҳар мавҷудоти зиндае) ба мақоми будоӣ хоҳад расид.<sup>1</sup>*

Баъзе далелҳои муаллиф барои парҳез аз гӯшт хеле содаанд, гумон меравад, ки мухотаби нависанда мардуми одӣ ҳастанд:

*(Аз он ҷо ки ҳамаи мо дар силсилаи ҳастӣ ҳастаем), касе нест, ки модар ё падар, бародар ё хоҳар, писар ё духтар, хешованд, дӯст ё рафиқ (каси дигаре) набошад. Агар падару модари касе дар солмандӣ бимиранд, ба сурати чаҳорпоён, парандагон ё ҷонварони ваҳшӣ дубора зода хоҳанд шуд, лекин ба далели кирдори бадашон ин нукта доништа нахоҳад шуд ва писарашон модар ё падари худро хоҳад кушт ва пас аз буридану тикка-тикка кардани онҳо, онҳоро хоҳад пухт ва хоҳад хӯрд, чаро ки дар зеҳни худ аз ин кор лаззат мебарад<sup>2</sup>.*

Бояд зикр кард, ки ин гуна навиштаҳои будоӣ ба забони суғдӣ хеле зиёданд, ки аз тарафи пажӯҳандагон баррасӣ шудаанд ва нуктаи ҷолиб он аст, ки ин матнҳо аслан берун аз сарзамини Суғд ба даст омадаанд. Мардуми чинии ҳамасри суғдиён на танҳо дар навиштаҳои таърихӣ ва солномаҳо, балки дар достону ашъори худ низ аз суғдиён ном мебаранд. Дар ҳуди сарзамини Суғд ҳеч шоҳиде ба даст наомада, ки далели раванки оини будоӣ дар ин сарзамин бошад. Бозёфтҳои осори фарҳангии суғдиён, монанди деворнигораҳо, мучассамаҳои хурди сафолӣ ва монанди онҳо ҳамагӣ маҳсули оини зардуштии маҳаллии он даврон аст, ки дини қавмии суғдиён ба шумор меояд. Баррасии бозёфтҳои фарҳангӣ, навиштаҳои суғдии будоӣ ва авзои сиёсию иҷтимоии он даврон муҳаққиконро ба хулоса оварда, ки суғдиён бо ин ки ба хубӣ бо дини будоӣ ошно будаанд ва бо Чин, ки дини будоӣ яке аз динҳои аслии он буд, пайванди устувор доштаанд, ин дин натавонист дар сарзамини Суғд густариш пайдо кунад. Кашфи мучассамаи Будои сутӯҳ (Avalokitesvara) дар Самарқанди куҳан низ далели густариши ин дин дар Осиёи Миёна наметавонад шуд. Ҳамчунин, дар санадҳои кӯҳи Муғ ва дигар навиштаҳои мутааллиқ ба асри ҳаштум низ ҳеч номи хоссе, ки ба оини будоӣ иртибот дошта бошад, ёфт нашудааст.

Аз мутолиаи осори суғдии будоӣ равшан ба назар мерасад, ки онҳо бештар дар навъи ҳикоят эҷод шудаанд ва аҳаммияти

---

<sup>1</sup>همان جاء،ص.341-42

<sup>2</sup>همان جاء،ص.357

адабияшон андак нест, гарчанде аз ороишу перояҳои адаби камтар бархурдоранд. Аммо бояд ин нуктаро ба хотир дошт, ки ин ҳама тарҷумаанд ва осори адаби вақте ки тарҷума мешавад, бешак, хусусияти адабии худро то андозае аз даст медихад.

## V.2. Адабиёти суғдии масеҳӣ

Дар баробари осори суғдии будой навиштаҳое ба забони суғдӣ ба даст омада, ки марбут ба дини масеҳист. Қисмати бештари навиштаҳои суғдии масеҳӣ дар як савмаи вайрони настурии Булоик дар шимоли Турфон ба даст омадааст. Бино ба таҳқиқи пажӯҳандагон, осори масеҳии суғдӣ бештар аз сурёни - забони динии масеҳиёни настурии Осиёи Миёна тарҷума шудааст ва баъзан матни суғдӣ ҳамроҳи матни сурёни низ ба назар мерасад. Навиштаҳои суғдии масеҳӣ шомили тарҷумаи бахшҳое аз китоби Инчил, достони паёмбарон, шарҳи ҳоли қидисон (монанди Боршиббо ва Ҷирчис), кушторҳо ё саргузашти шуҳадои масеҳӣ, монанди аъмоли Писиюн (Pithion), муосири Яздгирди Сосонӣ, тафсирҳо ва ашъор аст. Дар он шарҳ дода шудааст, ки чӣ гуна Писиюн тавонистааст духтаре бо номи Анохид ва падараш Одархурмазд, ки мӯбад буд, масеҳӣ кунад ва саранҷом ҳар се шахид шудаанд, шуҳадои замони Шопури дувум, мавъизаҳо ва тафсирҳо, маҷмӯае аз чистонҳо ва ғайра. Масеҳиёни суғдизабон баъзе осори худро ба хатти суғдӣ низ навиштаанд.<sup>1</sup> Мюллер (Muller F.W.K.)-нахустин рамзкушои матнҳои суғдии масеҳӣ бахше аз ривоятҳои Инчилро дар соли 1912, сипас маҷмӯаи дигарро ҳамроҳи дигар донишмандон дар соли 1934 ҳарфнависӣ ва ба олмонӣ тарҷума кард.<sup>2</sup> Баъд аз ин чандин донишманди аврупоӣ, монанди Е.Бенвенист, М. Швартс доир ба матнҳои суғдии масеҳӣ тадқиқоти судманде анҷом доданд, ки хонум Бадруззамони Қариб дар ин масъала маълумот додааст.<sup>3</sup>

Чанд катибаи кӯтоҳ низ дар наздикии Самарқанд пайдо шудааст, ки ба идомаи оини Масеҳ то қарни сздаҳум дар он сомон ишора дорад. Пажӯҳандагон бар онанд, ки баъзе аз матнҳои суғдии масеҳӣ, ки бо тарҷумаи сурёни ҳамроҳанд, дар ватани аслии суғдиён тарҷума шуда, тавассути муҳочирон ба Турфон роҳ ёфтаанд. Бо ин ҳол, осори масеҳии кашфшуда дар ноҳияи Суғд дарбардорандаи осори хаттӣ ба забони сурёнист, аз ҷумла теъдоде сангнавиштаи кӯтоҳ, ки дар наздикии Ургут (Urght) ва як пора саволнавиштаи бадастомада дар Панҷакант, ки барои машқи хат навиштаанд. Дар асри VIII масеҳиёни настурий дар сарзамини Суғд истиқроқ ёфта буданд.<sup>4</sup> Аммо аз он ҷо, ки бештари матнҳои суғдии масеҳӣ ва ҳатто «Забури»-и

<sup>1</sup> تقضلى، تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 363-364.

<sup>2</sup> Muller F.W.K. Neutestament liche Bruch stuecke in soghdischer Sprache.-SPAW.-P.260-270; 443; 443 ص. تاريخ جامع ايران، ص. 270; 443; 443

<sup>3</sup> قريپ، ب. زبان سغدى// تاريخ جامع ايران، ص. 443-444

<sup>4</sup> ويليامز، نيكالس سيمز. ادبيات مسيحي در زبانهای ایرانی ميانه// ادبيات ايران پيش از اسلام. به كوشش رونالد امريك، ص. 315

пахлавӣ дар Булоик ёфт шуданд, муҳаққикон Турфонро маркази аслии ақаллияти масеҳӣ доништаанд. Гумон меравад китобхонаи Булоик шумори зиёди матнҳои сурёнии масеҳиро ҳамроҳ бо тарҷумаи суғдии онҳо дошта, ки теъдоди ками онҳо ба дасти пажӯҳандагон расидааст.<sup>1</sup>

Намунаҳо аз осори суғдии масеҳӣ:

*Ва падар (дигаре) буд, ки узлат гузида буд ва (дар шахри номдор) буд ва ӯро шукӯҳи бисёр буд. Ва ба ӯ хабар доданд, ки (яке аз қиддисин) аз ин ҷаҳон меравад, биё, пеш аз он ки даргузарад, ӯро (бадрақа кун!) ва ӯ оғоз кард дар зеҳни хеш чунин андешидан, ки «агар дар рӯз хориҷ шавам, мардум ба сӯйи ман хоҳанд иштофт ва маро шукӯҳе хоҳад буд ва дили ман ба ин амр мувофиқ нест, аммо агар ба ҳангоми торикии шаб биравам, ҳеч кас маро намебинад». Ва дар торикии шаб аз ҳуҷраи хеш хориҷ шуд, зеро мехост, ки пинҳонӣ биравад. Ва бедиранг ду фаришта аз тарафи Худованд омаданд ва бо онҳо машғалҳое буд ва роҳро барои ӯ равшан карданд. Ва билофосила ҳамаи шахр иштофтанд, чун ин шукӯҳро دیدанд ва чун ӯ орзу кард, ки аз шукӯҳ бигрезад, шукӯҳмандтар гашт. Ва (бад-ин восита) муҳаққак шуд он чи навиштаанд, ки он касе, ки хештанро хор шуморад, сарафроз хоҳад буд».*<sup>2</sup>

Ин ҳикоят хеле шабеҳ аст бо ҳикояти Боязиди Бастомӣ дар мавриди нигоҳ доштани саломатии ботин, ки Шайх Аттор дар тазкираи худ нақл кардааст.<sup>3</sup>

Намунаи дигар низ аз осори таълимии масеҳии суғдист, ки дар навъи чистон гуфта шудааст:

*Шогирд пурсид: «Он паёмовари гайрисухангӯ, (ки) паёми нанавиштаеро бардошт ва ба шахри ношинохта рафт, кӣ буд?» Омӯзгор гуфт: «Паёмовари гайрисухангӯ кабутар буд, паёми нанавишта барги як дарахти зайтун буд, шахри ношинохта киштии Нуҳ буд».*<sup>4</sup>

### V.3. Адабиёти суғдии монавӣ

Пажӯҳандагон бар онанд, ки адабиёти монавӣ ба забонҳои эронӣ дастоварди ақаллияти динии кӯчакест. Ин адабиёт бар адабиёти зардуштии ҳоким, осори рӯхонӣ ва ё хунёгарон таъсире бар ҷой наниҳода ва худ низ чандон таҳти таъсири адабиёти зардуштӣ қарор нагирифтааст. Монавиён адабиёти эронии мунҳасир ба хешро офаридаанд. Монӣ китоби машҳури худ-«Шопургон»-ро ба форсии миёна навишт ва шогирди вай-Мор Омуро офарандаи адабиёти портии монавӣ медонанд. Онҳо ақидаҳои динӣ ва қолабҳои адабии суннати худро ба дунёи эронӣ ворид карданд. Монавиён, ки дар Эрон таъкиб ва шиканча шуданд, пайравони онҳо ба Осиёи Марказӣ, ки

1. اقريب، ب. ادبيات سغدى مسيحي//تاريخ جامع ايران،ص.444

2. ويليامز، ن. س. ادبيات مسيحي در زبانهای ایرانی میانه// ادبيات ایران پیش از اسلام. به کوشش رونالد امریک، ص.323

3. Аттор Фариддин. Тазкират-ул-авлиё. -Душанбе, 2007.

4. ويليامز، ن. س. ادبيات مسيحي در زبانهای ایرانی میانه، ص.325

таассуби динӣ камтар буд, паногоҳ ёфтанд ва аз ин рӯ, осори адабии эронии монавӣ танҳо дар ин сарзамин ёфт шудааст. Осори монавии эронии дар Турфон ёфтшуда ба маротиб беш аз матнҳои монавии туркист. Ин нуктаро набояд аз ёд бурд, ки адабиёти монавӣ адабиёти фирқагарост ва набояд дар саҳми он дар адабиёти эронии миёна беш аз ҳад муболиға кард. Монавиён офаридаҳои адабии худро танҳо ба форсии миёна маҳдуд накарданд ва аз ҳамон оғоз портӣ ва сипас суғдиро низ дар ноҳияҳои шимоли шарқии Эрон ба қор бурданд. Баррасии осори суғдии монавӣ пажӯҳандагонро ба ҳулоса оварда, ки осори монавии суғдӣ охиртар аз «Номаҳои бостонӣ»-и суғдист, яъне, ба забони суғдие, ки пас аз даҳаҳои нахусти асри чаҳоруми мелодӣ ба он сухан мегуфтаанд. Монишиносон сабаби ривочи адабиёти монавӣ ба забони суғдӣ ва ба унвони забони адабии монавӣ шинохта шудани ин забонро дар фаъолиятҳои роҳбари ҷомеаи монавиён Моршод Урмизд (Marsad Ohrmezd) медонанд.<sup>1</sup>

Аз осори суғдии монавӣ сурудаҳои ниёиш, хитоба, рисола, тавбанномаҳо ва эътирофот, ки бештар тарҷумаҳои аз форсии миёна ва портиянд, боқӣ мондаанд. Матнҳои асил ба забони суғдӣ низ дар байни дастнависҳои кашфшуда дар Турфон воমেҳӯранд, ки дар онҳо мавзӯҳои фалсафӣ ва усули оини Монӣ, гоҳ дар қолаби дoston ва гоҳе тамсил матраҳ мешавад. Устураи офариниши олам ва сохтори қайҳону бихишт, нур ва ғайра дар осори бозмонда ба забони суғдӣ ба назар мерасад, ки Бадруззамони Қариб дар ин масъала батафсил маълумот додааст.<sup>2</sup>

Аҳмади Тафаззулӣ менависад, ки ҳеч матни комиле ба забони суғдии монавӣ бар ҷой намондааст. Он чи ба даст омада, қитъаҳои аз матнҳои гуногун аст. Аз китобҳои ҳафтгонаи аслии монавиён танҳо китаоте аз китоби «Ғӯлон» ва китаоти кӯтоҳе аз номаҳо дар даст аст. Муҳимтарин осори суғдии монавӣ иборатанд аз: тавбанномаҳо, сурудаҳои хурду бузург, саргузашти дин, таквини олам, дostonҳои тамсилҳо, воҷанномаҳо, феҳристи луғот ва феҳристи номи миллатҳо, ҷадвали тақвимӣ ва ғайра. Матнҳои монавӣ ба хатти хосси монавӣ навишта шудааст. Илова бар ин, баъзе ҷумлаҳо ва луғоти суғдӣ дар китобҳои нависандагони асримиёнагӣ, монанди Абӯрайҳони Берунӣ (аз ҷумла «Осор-ул-боқия») ва Абӯнаصري Форобӣ забт шудааст.<sup>3</sup> Бино ба гуфтаи Вилямс Сеймс, маҷмӯаи асили матнҳои суғдии монавӣ дар Берлин ниғаҳдорӣ мешавад. Ин ганҷинаи адабӣ илова бар тарҷумаи сурудаҳо ва матнҳои динӣ аз форсии миёна ва портӣ дорои осори бисёрест, ки аз фарҳангу забони суғдӣ маншаъ гирифтааст. Ба андешаи ӯ, дар миёни ин осор метавон мавзӯҳои бораи таърихи калисо, ҷаҳоншиносӣ, дostonҳо, тамсилҳо, матнҳои эътирофот, ҷадвали тақвим, номаҳо, феҳрист ва фарҳанги луғотро

<sup>1</sup> اورنر زوندرمان. ادبيات مانوی به زبانهای ایرانی//ادبیات ایران پیش از اسلام. به کوشش رونالد امریک، ص 236-237

<sup>2</sup> قریب، ب. ادبیات سغدی مانوی//تاریخ جامع ایران، ص. 440-442

<sup>3</sup> تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام. ص. 364

мушохида кард.<sup>1</sup> Вернер Зундерман (Werner Sundermann) менависад, ки монавиён қолабҳои адабиёро ба вучуд оварданд ва парвариданд, ки дар адабиёти зардуштии ношинохта буд, монанди қолабҳои чун сурудаҳои динии чамъӣ, маҷмӯаи сурудҳо ва мавъизаҳои ахлоқӣ. Донишманди мазкур муътақид аст, ки дар хусуси арзиши ҳунари ва зебошинохтии осори адабии эронии миёнаи мавҷуд бехтарин намунаро нависандагони монавиё офаридаанд. Ҳунари дostonсароии монавиё беназир аст ва марсияҳои чунин зебову пурэхсос, ки дар маҷмӯаҳои монавиё омада, дар адабиёти зардуштии ҳамто надорад.<sup>2</sup>

Муаллифони матнҳои суғдии монавиё бо ташбеҳҳои истиорот дostonҳои навиштаанд, ки забони зиндаи замони худро бехтар аз матнҳои будой ва масехии суғдӣ баён мекунад. Аз сӯйи дигар, шумораи зиёди калимоти форсии миёна ва порти дар матнҳои ниёишӣ ва сурудҳои суғдӣ нишон медиҳад, ки маросими динӣ дар ҷомеаи эронитабори Осиёи Миёна ба ин ду забон баргузор мешудааст. Монавиёни суғдизабон дар интиқоли дostonҳо ва устураҳои эронӣ, ҳиндӣ, юнонӣ ва сурёнӣ ба фарҳанги мардуми Осиёи Миёна нақши чашмгир доштаанд. Деворнавиштаҳо ва китобҳои зебои нақшдор гувоҳи густариши нақши ҳунари монавиё ва алоқаи монавиён ба тазҳиби китобҳоро навиштаҳояшон ҳастанд.

## V.2. Осори ғайридинии суғдӣ

Осори ғайридинии суғди ро пажӯҳандагон дар навиштаҳои рӯйи сиккаҳо, ашӯи симин, мансучот, чарм, сафолпораҳо ва сангҳои гаронбаҳо таъйин намудаанд. Сиккаҳои дорои навиштаҳо ба забони суғдӣ, ки ҳатто аз асри аввали пеш аз мелод маълуманд, бино ба таъкиди суғдшиносон, ба масобаи сарчашмаи муҳимми пажӯҳиши инкишоф ва минтақаҳои интишори хатти суғдӣ мебошанд. Дар сарзамини Суғди Самарқанд сиккаҳои мутааллиқ ба асрҳои II-IV ва VI-VIII мелодӣ кашф шудааст. Сикаҳои дорои навиштаҳои суғдии мазруб дар Уструшан, Чоч, водии Фарғона ва ҷануби Тоҷикистони имрӯза (бозёфтҳои кашфшуда аз Ачиннатеппа ва Кофарқалъа воқеъ дар водии Вахш) ба асрҳои VII-VIII тааллуқ доранд. Рӯи сиккаҳои хоразмии нимаи аввали асри VIII дар радифи катибаҳои хоразмӣ навиштаҳо ба забони суғдӣ низ ба назар мерасад, ки далели интишори густардаи хатти суғдӣ дар Осиёи Миёна аст. Бино ба қавли муҳаққиқон, дар Бухоро шурӯъ аз асри II пеш аз мелод сиккаҳои зарб мешуданд, ки навиштаҷоти рӯйи онҳо ба хатти суғдӣ буд ва дар ин робита сиккаҳои нуқра қобили тавачҷуҳанд, ки аз асри V мелодӣ ба баъд тайи панҷ қарн зарб мешуд ва дар катибаи суғдии рӯйи сиккаҳои мазкур «подшоҳи Бухоро» то асрҳои X-XI мелодӣ ҳамвора

1. ويليامز، سيمز. آشنای با زبان سغدی، ص. 17.

2. زوندرمان. ادبيات مانوی به زبانهای ایرانی// ادبيات ایران پیش از اسلام. به کوشش رونالد امریک، ص 237

хифз шудааст. Сиккаҳои номбурда дар нашрияҳои илмӣ ба номи «Бухорхудот» ёд мешаванд.<sup>1</sup>

### V.2.1. Номаҳои бостонии суғдӣ

Куҳантарин матни муҳим ба забони суғдӣ «Номаҳои бостонӣ»-и суғдист, ки муҳочирон ва тоҷирони суғдӣ аз Чин барои хешовандон ва ҳамкорони худ ба шахрҳои Суғд фиристодаанд. Бино ба гуфтаи Тафаззули, номаҳои бостонии суғдӣ шомили панҷ номаи комил ва чанд қитъаи ноқис аст, ки ин аснод аз қадимтарин осори муфассали суғдӣ ба шумор меравад. Муҳтавои ин номаҳо мазмуни динӣ надорад. Илова бар аҳамияти забоншиносӣ, аз ҷиҳати дар бар доштани ишороте ба ҳодисаҳои таърихӣ ва пай бурдан ба чигунагии номанависӣ низ муҳим ба шумор меравад.<sup>2</sup>

Номаҳои бостонии суғдӣ номаҳои мебошанд, ки дар яке аз манораҳои подгон (гарнизон)-и воқеъ дар ҷанубу ғарби девори бузурги Чин дар мавзеи Дунхуани Чини ғарбии ҳамхудуд бо биёбони Такламакон олими англис Авриэл Стейн соли 1907 пайдо кардааст. Шумори умумии номаҳо нӯҳ буда, шаш нома тақрибан комил ва аз се номаи дигар пораҳо расидаанд. Номаҳо бар қоғази чинӣ бо хатти оромӣ навишта шудаанд. Номаҳо қадимтарин нусхаҳои қаламии суғдӣ мебошанд, ки то замони мо боқӣ мондаанд. Ин номаҳо солҳои 312-313 китобат шудаанд. (Факторияҳои) Маҳаллаҳои суғдиён дар Чин аз ибтидои асри IV маълум мебошанд. Панҷ нома аз Дунхуан ба Лоян ва шахрҳои дигари Чини ғарбӣ ва як нома (номаи 2) ба Самарқанд навишта шудааст. Дар се нома – номаҳои 4, 5 ва 6 сухан дар бораи муомилаҳои тиҷоратӣ меравад. Номаи 1 ва 3 номаҳои “ғарибӣ” мебошанд.

#### Намунае аз «Номаҳои бостонӣ»-и суғдӣ Sogdian Ancient Letter No. 1

Номаи рақами якуми суғдии бостон

*(P̄yī čan) Az duxtari (ȳ) ozodduxt ba (modari) girōmī (ȳ)  
Čatīc. (P̄yī rost) Az duxtari (ȳ) ozodduxt Mevnāy ba (modari)  
girōmī (ȳ) Čatīc – neymat va ɛxtīrom. R̄ūze xursandīe mebud baroi  
kase, ki tavonad turo ba salomatī va osudağī bibīnad. Ammo (baroi  
man) in r̄ūz bextarin hoxad bud, ki turo tavonam ba salomat bibīnam.  
Man xele mehoxam turo bibīnam, (vale čunin) baxtro nadoram. Man  
ba royzan Sazarak muro čat kardam, vale royzan guft: “In čo kase (az*

<sup>1</sup>خروموف آلبرت لیانیداویچ. از رستم تا دیواشتیج، ص. 36.  
<sup>2</sup>تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 358.



хешовандони) наздиктари шавҳари (ту) Нанайдат мисли Артиван нест”. Ман ба Артиван муроҷиат кардам, вале ӯ мегӯяд: “Фарнхунд (фароз) ва ман рад мекунам, ки шитоб кунам ва рад мекунам (фароз). Фарнхунд мегӯяд: “Чун хешовандони шавҳар розӣ нестанд, ки ба назди модари худ баргардӣ, ман туро чӣ гуна мегирам? Ҳоло интизор бои, шояд, ки (шавҳари ту)-Нанайдат биёяд. Аммо мани шӯрпешонӣ бе пӯшок ва бе пул зиндагӣ мекунам. Ман хоҳиш мекунам, ба ман қарз (диҳанд), аммо касе розӣ намешавад, ки ба ман диҳад ва ман маҷбур ҳастам, ки аз мӯбад (vauprat) садақа бипурсам. (Ҷ ба ман гуфт:) “Агар ту ба назди модарат равон мешавӣ, ман ба ту шутур медиҳам ва касе, ки ман (хостаам, бо ту) меравад ва (ҳамин тариқ ҳангоми) сафар ман метавонам доимо туро назорат кунам. Зарурат аст, ки ӯ то расидани мактуби ту (Чатис) барои ман чунин кунад?”.<sup>1</sup>

### Sogdian Ancient Letter No. 3

Номаи рақами сеvуми суғдии бостон

(Рӯи чап) *Аз духтари (ӯ) Шайн, аз канизаки (ӯ) ба меҳтару озодмард Нанайдат. (Рӯи рост) Ба меҳтару озодмард, пури худоён Нанайдат дуруд ва эҳтироми ба ду зону задан, ки ба худоён мекунанд. Басо рӯзи фархунда мебуд, ки ман туро ба саломат, хушнуд, беранҷ ва бо ҳама аҳли табор бибинам. Ва меҳтаро, вақте ман аз саломати бегазанди ту мешунавам, худамро хушбахт мешуморам. Вале ман ба кулфат гирифтаам ва басо рӯзгори нохуш дорам, хеле бад, ва ман худамро (қариб, ки) мурда ҳисоб мекунам. Ман яке паси дигар ба ту мактубҳо мефиристам, вале аз ту ҳеҷ мактуб намегирам. Ва умедамро қандаам, ки туро бибинам. Аз барои ту ман се сол боз дар Дунхуан зиндагӣ мекунам. Бори аввал, дуюм ва панҷум роҳ аз ин ҷо кушода буд, вале розӣ нашуданд, ки маро баранд ва ба ман гуфтанд, ки “Дар ин сураат имкони ҳамроҳӣ кардани ту нест”. Сипас, ман (пурсидам), ки маро ба назди Фарнхунд ё беҳтар ба назди шавҳарам баранд, то дар Дунхуан намонам. Аммо Фарнхунд ба ман чунин гуфт: “Ман гуломи Нанайдат нестам ва дорой надорам, ки туро ҳамраҳӣ кунам”. Сипас, (фароз) “Бигузур маро ба назди модарам баранд”. Ин вақт (хешовандони шавҳар) чунин гуфтанд: “Дар Дунхуан касе наздиктар аз Артиван - хеши (шавҳари ту) нест. Вале Артиван ба Фарнхунд чунин гуфт (фароз) Ва ман чунин гуфтам: “Агар ман дастур надошта бошам, ки (чӣ гуна рафтор кунам) ва агар (болои сари ман) парастор набошад, пас, бигузур маро назди падарам (баранд). Агар маро (ба назди падарам набаранд), ман маҷбур мешавам, хидмати хитоиҳоро бикунам. Ин ҷо марди озодмард Офрагтак, ки аз бовари хитоиҳоро бархурдор буд ва пӯшоки (заноаи) хуби хитой дошт, ба ман ёрӣ дод. Ва ту-Нанайдат ба ман*

---

<sup>1</sup>Нусхаи электронӣ.

навис, ки кай ту маро аз ин ҷо мегирӣ ва ту чӣ кардан мехоҳӣ?. Агар ту маро аз ин ҷо нагирӣ, ман маҷбур мешавам, хидматгори хитоиҳо шавам ва ба онҳо хидмат карданро омӯзам. (Фароғ) Охир, тамоми ин солҳо ман фармонҳои туро иҷро мекардам, ман ба Дунхуан новобаста ба он ки модарам ва бародаронам розӣ набуданд, омадам ва аз гапи ту набаромадам. (фароғ) Аммо аз ин пас ман (чунин мегӯям): “Беҳтар, ки ман то зани ту будан, зани сағ ё хук бошам! Ман акнун чунин мешуморам. Фиристода шуд аз канизи ту Мевнай. Ин мактуб рӯзи даҳуми моҳи сеюм навишта шудааст”.

Дар иловаи мактуби духтари Мевнай чунин омадааст: “Ба сабаби гуноҳи Фарнхунд мо ходими хитоиҳо шудем – ман ва инчунин модари ман (Мевнай).

Аз номи духтари (ӯ) Шайн ба меҳтару озодмард неъмат ва эҳтиром. Рӯзе хурсандие мебуд барои касе, ки тавонад туро ба саломатӣ, осудагӣ ва хушбахтӣ бибинад. Ман шудам... нигоҳбони рамаи ҳайвоноти хонагӣ. Ба иборати дигар ман мехоҳам... аз ин ҷо биравам. Ман... ман медонам, ки ту натавонистӣ бист ... бифиристӣ. Ин заррур аст барои андешидани ҳама корҳо. Фарнхунд гурехт. Хитоиҳо ӯро ҷустуҷӯ доранд, вале ёфта наметавонанд. Ба сабаби қарзҳои Фарнхунд мо гуломи хитоиҳо шудем, ман ҳамроҳи модарам.<sup>1</sup>

## V.2.2. Достони суғдии Рустам

Аз ҷумлаи осори адабии ғайридинии боқимондаи забони суғдӣ матни “Достони Рустам”- қахрамони миллии мардуми эронинажод, ки тавассути “Шохнома”-и Ҳаким Фирдавсӣ шуҳрати ҷаҳонӣ ёфт, қобили тавачҷуҳ аст. Бино ба гуфтаи А. Л. Хромов, сарчашмаи ин достон матни достони мансуре буда, ки дар аҳди бостон ба забонҳои эронӣ, алалхусус суғдӣ вучуд доштааст. Пораҳое аз достони суғдии Рустам дар Туркистони шарқӣ тавассути ҳайатҳои бостоншиносони англисӣ ва франсавӣ кашф гардида буд ва акнун як қитъа аз он дар Париж ва қитъаи дигар дар Лондон маҳфуз аст. Аксари донишмандон мепиндоштанд, ки ин ду қитъаи мавҷуд ба ҳамдигар рабте надоранд. Суғдшиноси англис Сеймс Вилиямс бо таҳлили ин ду пораи достон сабит намуд, ки пораи достоне, ки дар Лондон ҳаст, идомаи қитъаи Париж аст. Гарчанде матни боқимондаи достони суғдии Рустам хеле кӯтоҳ аст, аммо дарбаргирандаи воқеаҳо ва мочароҳои қобили тавачҷуҳ мебошад:

«Девҳо ба зудӣ по ба фирор ниҳода, ба қалъаи худ мутаворӣ шуданд, вале Рустам онҳоро то дами дарвозаи қалъа таъқиб намуд. Бисёре аз девҳо дар зери суми аспи Рустам аз байн рафтанд ва фақат як ҳазор аз онон тавонистанд дар дохили қалъа ҷон ба саломат баранд.

---

<sup>1</sup>Нусхаи электронӣ.

Онҳо баъди вуруд ба дохили қалъа дарвозаро бастанд. Рустам, ки аз пирӯзӣ рӯҳи тоза гирифта буд, баргаиш ва озими марғзоре шуд, ки алафи сабзи тару тоза ва ширадор дошт. Ӯ дар он ҷо таваққуф намуд, зини аспро гирифтун аспро барои чаро раҳо намуд. Худи Рустам ба замин нишаст, каме гизо хӯрд ва осуда, бо хаёли роҳат қоличаеро густарда, рӯйи он дароз кашид ва ба зудӣ ба хоб рафт.

Дар ин муддат девҳо ба ройзанӣ пардохтанд, ки баъдан чӣ кунанд? Яке ба дигаре мегуфт: «Чӣ нангу ифтизоҳ аст, ки мо ҳама аз як тан савор тарсидему ба қалъаи худ фирор кардем. Агар ӯро аз байн набарем, ё худи мо нобуд мешавем, ё ба газаби худоён гирифта хоҳем шуд».

Девҳо муҳиммоти фаровон ва қувои зиёде ҳозир намуданд. Урдуи онҳо дарвозаро боз намуда, ба ҷанги Рустам азимат карданд. Ин қуво як неруи воқеан даҳшатангез буд. Урдуи девҳо аз камонварон, аробаҳои ҷангӣ, дастаҳои филсавор, гурозсавор, рӯбоҳсавор, сагсавор, сусморсавор ва морсавор иборат буд. Бисёре аз девҳо мисли лошахӯрҳо дар ҳоли парвоз буданд ва бисёре дигар рӯйи замин сарнигун ва пой дар ҳаво муаллақ мезаданд. Тамоми ин неру наъраи ваҳшиёна мезад ва ба илова тӯфони тавғам бо борони шадиду рағд ва бориши барф чараён дошт. Рағд мегурриду барқ медурахишд. Аз даҳони девҳо шуълаи оташу дуд берун мерехт.

Дар ин ҳангом Рустам ба хоби паҳлавонӣ рафта буд ва гофил аз хатаре буд, ки ӯро таҳдид менамуд. Вале Раҳи – асп вафодораи дар паҳлӯи ӯ буд ва ҳама чизро ба таври муъҷизаосо қабл аз вуқӯъ пешбинӣ менамуд. Раҳи бо эҳсоси хатар Рустамро бедор кард ва Рустам ба зудӣ аспро зин намуда, либоси чармӣ ва ҷавшану зиреҳ бар тан карда, ба сӯйи девҳо ҳаракат намуд. Вале, ҳангоме ки аз дур фавҷи даҳшатангези онҳоро дид, ба дӯсти содиқи худ – ба Раҳи гуфт: «Биё, девҳоро гӯл бизанем, чунин вонамуд мекунем, ки гӯйӣ ақиб меравем. Бигузор онҳо моро то канори бешизор таъқиб кунанд ва он гоҳ...». Раҳи розӣ шуд. Он гоҳ Рустам аспро ба шиддат ба ақиб баргардонд. Девҳо аз дидани ин манзара бо савдозадагӣ ва девонавор шурӯъ ба таъқибӣ ӯ карданд ва фарёд мезаданд: «Нагузored фирор кунанд! Ӯро накушед! Зинда бигиред! Ба шадидтарин наҳве шиканча хоҳем кард! Девҳо ҳамдигарро ташиқ намуда, бе чеғу фарёди ваҳшиёна ҳамчунон Рустамро дунбол менамуданд. Дар ин вақт буд, ки Рустам ногаҳон аспро баргардонд ва рӯй сӯйи урдуи даҳшатангез тохт намуд. Ӯ ба онҳо ҷунон ҳамлавар шуд, ки шери газаболуд ба ҷони сайди худ меафтад, ё гург худро ба рамаи гӯсфандон мезанад, ё лошахӯр бар сари харгӯи сарозер мешавад ва ё чайра ба мор ҳамла мекарад. Ва ӯ бад-ин тартиб девҳоро мекӯбиду мекӯбид...».<sup>1</sup>

Дар ин ҷо матн қатъ мегардад. Дар «Шоҳнома» чунин сахна ба назар намерасад, Алберт Хромов бар он аст, ки ин як матни асил аст, вале баъзе донишмандон бар он андешаанд, ки суғдиён онро аз забони паҳлавӣ тарҷума кардаанд. Далели ин донишмандон талаффузи калимаи «Рустам» аст, ки дар забони суғди боистӣ

<sup>1</sup>Sims-Williams, N.1976, The Sogdian fragment of the British lebraru // Ibd-iranian journal 18.-P. 43-82, .46-49. نقل از خروموف آلبرت لیانیداویچ. از رستم تا دیواشتیج، ص.

«Рустаҳм» ва ё «Рустаҳм» хонда шавад.<sup>1</sup> И. Гершевич (Gershevitch, I.) бар он аст, ки эҳтимол дорад достони Рустам, қаҳрамони номии «Шоҳнома», ки фақат дар манбаъҳои суғдӣ ва форсӣ шинохта аст, аз дostonҳои ҳамосии сақӣ бошад.<sup>2</sup> Тафовути матни суғдӣи достони Рустам аз «Шоҳнома» нишондиҳандаи он аст, ки дар Осӣи Миёна, алалхусус дар байни суғдиён, дostonҳои ҷудогона аз афсонаҳои марбут ба Рустам дар даврони қадим вучуд доштааст. Муҳаққикон бар он андешаанд, ки афсонаи Рустам, ки пештар ба суннати адабии бумии пешсақии Заранг (Систон) нисбат дода мешуд, бояд ба сурати достоне дида шавад, ки ба шахсияти вижа, афсонаӣ ё таърихӣ тааллуқ надорад.<sup>3</sup> Ба ақидаи Шкерву П.О. (Skjaervo P.O.), Рустам намуна аз як ҷангҷӯӣи ҳамосии ҳиндуаврупоиро ироа мекунад, ки бо умри дароз муҳофизи силсилаи фармонравост ва ҳаргиз худу хонадонаш ба тоҷу тахт даст намеёбанд ва сифати аслии ӯ тоҷбахшист. Донишманди мазкур аз муқоисаи Рустам бо Бҳишма (Bhishma) ба ин натиҷа мерасад, ки ин ду ҷеҳраи аслии ва марказии суннати ҳамосии ҳиндуэрониянд ва аз суннати муқаддамтар, яъне, ҳиндуаврупой маншаъ ёфтаанд.<sup>4</sup>

Матни суғдӣи достони Рустам воқеан, як асари бадеист, ки бо ороиши адабӣ зинат ёфтааст. Санъатҳои бадеӣ, алалхусус ташбеҳ, тавсиф, муболиға, ки бештар ҳоси афсонаву ривоят ҳастанд, устодона ба қор рафтаанд. Чунончи, ташбеҳи ҳамлаи Рустам ба девон ба ҳамлаи шери қазаболуд ба сайд, ҳамлаи гург ба рамаи гӯсфандон, лошахӯр ба харгӯш ва ё ҷайра ба мор хеле дилҷасп ва табиӣ афтадааст. Ва ё тасвири муболиғаомези лашкари девҳо, ки бархе аз ин девон савор бар ҳук, рӯбоҳ, сағ, мор, сузмор ва бисёре аз девон монанди қарғас парвоз мекунанд. Ҳатто девон бар табиат ҳукм меронанд ва қудрати барангехтани борону барфу жола ва раъду барқро доранд. Дар тасвири ҷанги Рустам низ санъати муболиға ҳунармандона ва табиӣ ба қор рафтааст.

П.У. Шкерву (Skjaervo) достони суғдӣи Рустамро бо матни авестоии фарғарди нуздаҳуми «Вандидод» санҷидааст. Дар матни авестой девон ба фармони аҳреман барои қуштани Зардушт равона мешаванд. Ҳар ду дoston суғдӣ ва авестой бо дасисае барои қуштани паҳлавон аз сӯйи девон оғоз мешаванд, дорой ҳамҷинсҳои овой, бозгӯӣҳои яқсон ва истилоҳоти мушаббаху мутародифанд.<sup>5</sup>

1. همان جا، ص. 49.

2. Gershevitch, I. 1968, Old Iranian literature.- Leiden.-P. 1-30. نقل از زرشناس، ز. ادبیات شفاهی. ایران باستان//تاریخ جامع ایران، ص. 647.

3. Noldeke, Th., 1920, Das iranische Nationalepos.- Heidelberg. P. 647. مقاله. نقل از زرشناس، ز. مقاله ذکر شده، ص. 647.

4. Skjaervo, P.O., 1998b, Eastern Iranian Epic Traditions II, Rostam and Bhisma //Acta Orientalia 51.-P. 159-170, 647. نقل از زرشناس، ز. مقاله ذکر شده، ص. 647.

5. Skjaervo, P.O. Eastern Iranian Epic Traditions II, Rostam and Bhisma.-P. 167-169

### V.2.3. Катибаҳои суғдӣ

#### V.2.3.1. Катибаҳои Афросиёб

Соли 1965 бостоншиносон дар харобаҳои Афросиёб (шимоли шаҳри Самарқанд) дар баробари нақшу нигорҳои рӯйи девор даҳ катиба ба забони суғдӣ кашф карданд, ки дар шарҳу тафсири нақшҳои рӯйи девор аст. Бар яке аз деворҳо як катибаи 16 - сатрӣ вучуд дорад, ки дар он шарҳи бор ёфтани расули Чағониён аст. Ин катибаҳо, бино ба гуфтаи муҳаққиқон, ба охири асри ҳафтум ва аввали асри ҳашт тааллуқ доранд.<sup>1</sup> Расули Чағониён барои барқарор намудани робитаи дӯстона ба Самарқанд меравад, то паёми шоҳи Чағониёнро, ки Туронташ ном дорад, ба шоҳи Самарқанд, Варғумон ё Урғумон расонад. В.А. Лившиц (V.A.Levshits), ки ин катибаро хонда ва баррасӣ намудааст, тафовутҳои миёни оини чағониён ва суғдиён меёбад ва таърихи катибаро қарни ҳафтуми мелодӣ медонад. Донишманди номбурда менависад, ки зоҳиран номи Афросиёб иртиботе бо қахрамони устураии «Шоҳнома» надорад ва эҳтимолан, таркибе аз исми об мебошад.<sup>2</sup>

#### V.2.3.2. Катибаҳои Панҷакант

Катибаҳои кӯчаке, ки дар Панҷакант бар рӯйи зарфҳои сафолину сангин ва устухонҳо ба даст омадааст, ба охири асри ҳафтум ва ибтидои қарни ҳаштум тааллуқ доранд. Муҳаққиқон аз миёни ин осор як қитъаи сафолии навиштаи шашсатриро дорои аҳаммияти бештар донистаанд, зеро дар он алифбои суғдӣ бо зикри номи котиб (Друвасп) ва номи ҳокиме, ки дастури таҳияи онро додааст (Кавифарн), дарҷ гардидааст.

Катибае, ки ба рӯйи чӯби қасри Чихил хучра дар шимоли Уструшан (Истаравшан) кашф шудааст, низ ба охири асри ҳафтум ва аввали қарни ҳаштум тааллуқ дорад<sup>3</sup>. Матни суғдии достони Рустам ба наср навишта шудааст, аммо достонҳои марбут ба Рустам ба забони форсӣ манзум аст ва бешак, замони таълифи он дар даврони пеш аз ислом будааст.

#### V.2.3.3. Осори кӯҳи Муғ

Соли 1932 дар қалъаи кӯҳи Муғ чӯпоне як сабад ва дар он як варақ қоғази абрешимӣ ёфт. Эроншинос А.А.Фрейман муқаррар кард, ки он ба забон ва хатти суғдӣ навишта шудааст. Баъд аз он қалъаро кофтуков карданд, ибтидо 20 хуччат ва чанд чиз пайдо карданд ва чун бостоншиносони касбӣ қалъаро ҷустуҷӯ намуданд, 21 дастхатти дигар

1. تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 358.

<sup>2</sup> Levshits V. A and Hromov, A, 1981, Sogdijskij Jazuk.- Osnovy 11.-P. 347-514.

3. نقل از قریب، ب. زبان سغدی، ص. 447.

تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 360.

ёфт шуд. Дар рафти хафрийёт хуччатҳои дигар, ки шуморашон аз 80 гузашт ва ашӯи зиёд ба даст омаданд. Ин хуччатҳо, ки ҳафтаду чаҳортои он ба забони суғдист, ба охири подшоҳи Суғд Деваштич тааллуқ дорад. Деваштич баъд аз ҳамлаи арабҳо ба ин қалъа ақибнишинӣ карда буд ва гумон меравад, ки бойгонияшро ҳамроҳ овардааст. Ин санадҳо, ки дар рӯи чарму коғаз ва пӯст навишта шудаанд, аксар номаҳои идорӣ, асноди молӣ, ёддоштҳо ва фармонҳои идорӣ ва як хатти издивоҷ аст.<sup>1</sup> Дар асоси ин санадҳои ёфтшуда метавон вазъияти сиёсӣ иқтисодии охири асри ҳаштумро ба хубӣ муайян кард. Илова бар ин, номаҳои бадастомада дар муайян намудани шеваи номанигории ин замон аҳаммияти калон дорад. Ин аснод, ки дар онҳо номҳои хоси шахсиятҳои таърихӣ, лақабҳо ва худуди чуғрофии Суғд зикр ёфтааст, арзиши бузурги илмӣ дорад.

Аз миёни ин санадҳои ёфтшуда ақди никоҳи духтаре бо номи Дуғдгунча ва Уткин ном марде қобили тавачҷуҳ аст. Дар ин санад вазифаҳои арӯсу домод бо хурдтарин чузъиёташ сабт шуда ва ҳатто масъулиятҳои мард дар шароити тарки зан ва баръакс муқаррар гардидааст. Ин ақди никоҳ рӯи пӯст навишта шуда ва онро Рамтиши Вғашфарн ном хаттот иншо кардааст. Санадҳои ёфтшудаи кӯҳи Муғ далолат бар он дорад, ки дар Суғди он даврон хунари хаттотӣ хеле рушд карда будааст.

#### V.2.3.4. Катибаи Лодак

Катибаи кӯтоҳе дар Лодаки Тиббет ба даст омада, ки бино ба гуфтаи бостоншиносон, ба соли 841 тааллуқ дорад ва аз ҷумлаи катибаҳои ёдбудист. Дар ин катиба омада, ки марди самарқандӣ бо номи Нӯшфарн ба ҳайси фиристода роҳии дарбори ҳокони Тиббет аст, ба ноҳияи Лодак расидааст. Катиба бо зикри соли 210 (ба тахмини бостоншиносон солшумории яздгирдӣ) оғоз мешавад.<sup>2</sup>

#### V.2.3.5. Катибаи Муғулистон

Ин катиба дар байни солҳои 808-821 ба се забон (суғдӣ, уйғурӣ ва чинӣ) иншо шуда, дар Қарабалғасун – пойтахти тобистонии шохони уйғурӣ дар соҳили дарёи Архуни Муғулистон кашф шудааст. Бино ба гуфтаи бостоншиносон, ин катибаро ҳокони уйғур ба муносибати гаравиданаш ба оини Монӣ навиштааст. Муҳтавои катиба аз гароиши туркони уйғурӣ ба дини Монӣ ва нуфузи ин дин миёни онҳо ишора дорад. Дини Монӣ аз замони хони уйғур Бугухон (759-779) дини расмӣ туркони уйғурӣ шуд ва чандин муддат давом дошт. Дар ин замон суғдиҳо дар татбиқ ва омӯзиши хат барои навиштани забони уйғурӣ ба туркон

<sup>1</sup>Ғафуров Б. Точикон. -С. 372-384.

<sup>2</sup>تفضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 361

ёри додаанд. Солҳои баъд хатти суғдӣ бо номи уйғурӣ шинохта шуд.<sup>1</sup> Қадимтарин катибаи Муғулистон дар Бугут пайдо шуда, ки деворнавиштаест мансуб ба нахустин силсилаи ҳоконҳои турк-Урхун (худуди 580), ки гароише ба дини будой доштанд.

### V.2.3.6.Катибаҳои Қирғизистон

Катибаҳои дар ҷумҳурии Қирғизистон бадастомада катибаҳои ёдбудӣ буда, ба фармони хонҳои қарахонии турк нигошта шудаанд ва ба асрҳои 9-11 тааллуқ доранд. Илова бар инҳо, сафолнавиштаҳо дар ноҳияҳои гуногуни Суғди қадим, амсоли Бухоро, Фарғона, Варахша, Ҳафтрӯд, водии Ҳисор, Марв ва ғайра ба даст омадаанд, ки осори ғайридинӣ буда, ба хат ва забони суғдӣ навишта шудаанд.<sup>2</sup>

### V.2.4. Сиккаҳои суғдӣ

Сиккаҳои суғдӣ, бино ба таҳқиқи суғдшиносон, дар бештари ноҳияҳои Осиёи Марказӣ мавҷуданд. Маъруфттарини онҳо сиккаҳои Самарқанду Бухоро ҳастанд, ки аз асри дувум то ҳаштуми мелодӣ таърихгузори шудаанд. Сиккаҳои ҳокимони Бухоро («Бухорхудот») бо хатти суғдӣ каме ихтилоф доранд, чунин ба назар мерасад, ки забони бухорӣ эҳтимолан гунае аз суғдӣ будааст.<sup>3</sup> Соли 1963 М.Н. Боголюбов ва О. И. Смирнов феҳристи сиккаҳои суғдиро танзим карданд ва бо ин пажӯҳиш қисмате аз таърихи Суғдро бозсозӣ намуданд.<sup>4</sup>

Кухантарин сиккаҳои суғдӣ зери таъсири фарҳанги юнониянд. Сиккаҳои Самарқанд бо номи Онатинус ба хатти юнонӣ дар як рӯ ва як вожаи суғдӣ дар рӯи дигар зарб шудаанд. Баъзе низ нақши як тирандози истодаро бар як рӯ доранд. Аммо сиккаҳои Бухоро дар садаҳои нахустини мелодӣ ба тақлид аз чаҳордирҳамии юнониянд ва аз асри чаҳоруми мелодӣ ба баъд ба тақлид аз сиккаҳои сосонӣ бо нақши оташдон дар як рӯ ва нақши фармонраво дар рӯи дигар, ки аз нақши Баҳроми панҷум тақлид шудааст, зарб шудаанд. Аз қарни шашум ба баъд сиккаҳои Самарқанд бештар мутаассир аз фарҳанги чиниянд. Дар ин давра нуфузи фарҳанги Чин бар шарқи Варорӯдон, бавижа дар Фарғонаву Самарқанд афзун гашт. Баъд аз фатҳи Осиёи Миёна аз тарафи арабҳо баъзе аз фармонравоёни араб сиккаҳои сосониро ба номи худ зарб карданд, ки ин кор дар Эрон низ роиҷ буд. Чадидтарин маъзҳазе, ки дар бораи сиккаҳои суғдӣ навишта шуда, аз Микоил Фидру аст. Микоил ин сиккаҳоро ба чаҳор бахш тақсим кардааст: сиккаҳои зарбшуда дар Бухорову Самарқанд ва низ

<sup>1</sup>Yashida, Y, 1991, "Sogdian Miscellany III", Corolla Iranica, Papers in honor of Prof. David Neil Mackenzie.-P. 237-243. ,447. نقل از قریب، ب. زبان سغدی، ص.

<sup>2</sup>Henning, 1958.-P. 52-54; Livshitz, 1970, 256, n.2. 363. نقل از تفضلی. تاریخ ادبیات، ص.

<sup>3</sup>قریب، بدرالزمان. فرهنگ سغدی. تهران، 1374.

<sup>4</sup>Согдийские документы с горы Муг. Вып.3. Хозяйственные документы. Чтение. пер. и коммент. М.Н. Боголюбова и О.И. Смирнова.-Москва, 1963.

сиккаҳои арабӣ-суғдӣ, ки тавассути ҳокимони араби Осиёи Миёна ба тақлид аз сиккаҳои Бухорову Самарқанд зарб шудаанд. Сиккаҳои дирҳами сиёҳ, ки тавассути амирони сомонӣ ба тақлид аз сиккаҳои навъи севум зарб шуда ва ҳама номи Бухорхудотро дар худ доранд. Аз навъи сиккаҳои Сомониён сиккаҳои замони Қарахониён, ки дар нимаи дувуми садаи дувоздаҳум дар Осиёи Миёна ҳукумат мекарданд, низ ёфт шудааст.<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup> Қриб, Бдралزمان. فرهنگ سغدى. ص. 448-449.



## ФАСЛИ ШАШУМ

### VI. Адабиёти хутанӣ

Забони хутанӣ ба гурӯҳи забонҳои эронии миёнаи шарқӣ дохил мешавад ва осори адабие аз ин забон дар ноҳияи Хутан ва ғорҳои Ҳазорбудо, наздикии Дунхуан кашф шудааст. Осори бозмонда аз ин забон комил ё ноқис, кам нест ва дар музейҳои Париж, Санкт-Петербург, Лондон, Вашингтон, Деҳлии нав маҳфуз аст. Аммо бахши азими матнҳои адабии хутанӣ аз байн рафтааст. Бештари осори мавҷуд тасҳеҳ, бозтасҳеҳ, ҳарфнависӣ ва тарҷумаанд, ки мунташир шудаанд. Дастанависҳои осори хутанӣ аз нимаи дувуми асри V то охири асри X мебошанд. Перомуни дастанависҳо, қитаот, тасҳеҳ, тарҷума, пажӯҳишҳои анҷомшуда, сохтори забонӣ ва осори бозмонда аз адабиёти хутанӣ М. Мирфахроӣ ва М. Маҷҷи батафсил маълумот додаанд.<sup>1</sup>

Қобили тавачҷуҳ аст, ки бахши асосии адабиёти хутанӣ назм мебошад. Баъзе аз донишмандон ин назарро матраҳ кардаанд, ки вазни ашъори хутаниӣ қадим аз даврони ҳиндуаврупой, аз тариқи пайвандҳои бо юнонӣ ва дигар низомҳои вазнӣ маншаъ гирифта ва усулан каммист. Аммо ин фарзия қабули ҳамагонӣ наёфт ва мавриди интиқод қарор гирифт. Дар авзони ашъори хутаниӣ нав ҳар пора шомили ду байт ва ҳар байт шомили ду мисраъ аст, ки бо теъдоди зада дар ҳар мисраъ мурағтаб шудааст. Баррасии вазни ашъори хутаниӣ нав муҳаққиқонро ба хулоса оварда, ки дар ин ашъор дастикам ду навъи вазн, яке, бо се зада ва ҳудуди ҳашт ҳичо дар ҳар мисраъ ва дигаре бо чаҳор зада ва ҳудуди дувоздаҳ ҳичо дар ҳар мисраъ вучуд дорад.<sup>2</sup>

Осори бозмонда аз забони хутанӣ санадҳои давлатӣ ва матнҳои адабӣ ҳастанд. Аз адабиёти шифоҳии хутанӣ ба ҷуз бозтоби заифе дар афсонаҳои бунёдгузори Хутан, ки ба асли эронӣ доштани онҳо гувоҳӣ медиҳад, чизе дар даст надорем. Оғози адабиёти катбии хутаниро донишмандон бо осори будоии он ҳамзамон медонанд, ки қадимтарин дастанависҳои онҳо ба хатти бироҳимии туркистонии оғозин навишта шуда, ба асрҳои V-VI марбут аст. Бино ба таҳқиқи бостоншиносон, қисмати асосии матнҳои адабии бозмонда аз забони хутанӣ осори будой ҳастанд, ки аз санскрит тарҷума шудаанд. Матнҳои асли ва умдаи будой ба забони хутаниро ба се гурӯҳ тақсимбандӣ кардаанд: 1) Осори асил ва таҳҷоии хутанӣ; 2) Сутраҳои маҳоёна; ва 3) Матнҳои гуногуни аз санскрит тарҷумашуда.

**Осори асили хутанӣ.** Хутан дар ҳазораи аввали мелодӣ маркази муҳимми дини будой буда ва роҳибони будоии Хутан илова бар

---

<sup>1</sup>Мирфахроӣ, М. Адабиат хутанӣ // Таърих ҷамъи иран, 533-576; Мануро, М. Адабиат хутанӣ // Адабиат иран пеш аз ислам, 378-465. Амриг, М. Адабиат хутанӣ // Таърих ҷамъи иран, 576.

тарчумаҳо худ низ асарҳо навиштаанд. Муаллифи китоби «Замбаста» сабаби таълифи қонунро ба забони хутанӣ чунин тавзеҳ медиҳад:

*«Мардуми Хутан барои «қонун» ба забони хутанӣ ҳеч арзише қоилад нестанд. Онҳо инро ба забони ҳиндӣ бад мефаҳманд, ба забони хутанӣ ба назарашон қонун намеояд: Барои чиниҳо қонун ба чинист; Ба забони кашмирӣ бисёр назирӯфтанист, аммо ба кашмирӣ он гуна меомӯзанд, ки маънии онро дармеёбанд»<sup>1</sup>.*

Аз осори асили хутанӣ шумори андаке боқӣ мондааст, аз ин осори бозмонда пажӯҳандагон ба се матн арзиши баланд қоилад: «Замбаста» (Zambasta) ба хутани қадим, «Манҷушриноиротмуёватара» (Manjusrinairatmuavata) ва «Вималакирти» (Vimalakirti) ба хутани нав. Ин се матн, бино ба таҳқиқи пажӯҳандагон, осори асили хутанӣ дар бораи ҷанбаҳои гуногуни дини будоист.

### V1.1.Замбаста

Китоби «Замбаста» ё «Зомбосто» манзумае ба хутани қадим аст, ки асли ҳиндӣ дорад, аммо бевосита аз манбаҳои ҳиндӣ тарҷума нашудааст. Ин асар як таълифи асили хутанӣ барои омӯзиши мазҳаби будоии маҳоена аст. Аз ҷиҳати адабӣ низ қобили таваҷҷуҳ мебошад, зеро дар ин асар дostonҳо ва ибороти шоирона зиёд ба қор рафтааст, монанди тасвири баҳор (фасли 20), тасвири кӯҳҳо ва фаслҳои гуногуни сол (дар фасли 17). Намунае аз тасвири баҳор аз ин асар:

*«Замоне Будо бо шаманҳои бисёре дар Шрoвастӣ (Sravasti) иқомат дошт. Будосутудаҳо бисёр зиёд он ҷо буданд. Баҳор омада, ҷаҳон гарм шуда ва гулҳо гуногунанд. Ҳама дарахтон болидаанд. Шоҳаҳо ҷавона задаанд. Бо вазиши бод такон мехӯранд. Насим аз лобалои дарахтон хуш мебӯяд. Бирқаҳои нилуфарӣ, чашмаҳо, толобҳо, кӯҳҳо афзудаанд. Мургон таронаҳои бисёр дилангез сар медиҳанд. Обҳо бар канораҳои заргуни чашма равон шудаанд. Рӯзҳо абрӣ, зояндагон бисёр пуришӯру гарманд. Дар ҳар гӯша булбулон бас нагма месароянд. Навоҳо гуногунанд: оҳиставу баланд...»<sup>2</sup>*

Китоби «Замбаста» беҳтарин матни забони хутанӣ шинохта шуда, дар се вазни мутафовит суруда шудааст ва маъхазии аслии шинохти вазни шеъри хутанӣ мебошад. Ин китоб, бино ба гуфтаи пажӯҳандагон, аз 25 фасл иборат буда, ки 24 фасли қомилу ноқисии он то ба имрӯз расидааст. Як фасли он шомии 55 байт буда, ки аз байн рафтааст. Ду фасли аввал тафсири аз сутраҳо бо мазмунҳои афсонавист. Фаслҳои боқимонда доир ба қонуну қоидаҳои оини будоӣ ва фасли 13 доир ба бартарии мактаб ё худ мазҳаби маҳоенаро нисбат ба мактаби шрoвақаҳаёна (гардунаи шунавандагон) батафсил номбар мекунад, ки асл ва марказии асарро ташкил медиҳад. Бино ба

<sup>1</sup>Бергрфте аз мифраи, м. ادبيات ختنی//تاریخ جامع ایران، ص. 543

<sup>2</sup>همان جا، ص. 544

гуфтаи муҳаққиқон, марказияти муҳтавоии ин фасл ба «Ясно»-и «Авесто» шабеҳ аст.<sup>1</sup>

## V1.2. Манҷушириноиротмуёватара

«Манҷушириноиротмуёватара» (Manjusrinairatmuavatara) матни асил ва манзум ба забони хутани нав аст, ки ба таври комил боқӣ мондааст. Ин асар дар замони Виша Шура (Visa Sura)-шоҳи Хутан таълиф ё рӯйнавис шудааст. Матн аз сарчашмаҳои гуногун, аз ҷумла осори куҳантари хутанӣ гирифта шудааст. Чандин байт ба хутани нав баргардони байтҳои «Замбаста» ба хутани қадим ва миқдоре низ аз сутраи «Вачраҳа чадика»-и хутанист. Дар оғози фасли шашуми сутраи «Вималакиртинирдеша» феҳристи тамсилҳо дида мешавад. Тавсифе аз се килиша (нопокӣ, олудагӣ), яъне дилбастагӣ, нафрат ё кинаву фиреб, ки гулони ақида ва шоҳони рокшасаҳо ҳастанд, қобили тавачҷуҳ аст. Дар пешдаромад нависанда будоҳои се замон, қонун, роҳҳои будоҳои се замон, анҷумани роҳибон, се гавҳари бартар, раҳонандагони ҳама мавҷудот, омӯзаи «на худ», нирвона ва растагорино намоз мебарад.<sup>2</sup>

## V1.3. Китоби «Вималакирти»

Ин китоб мунтахаби манзум ё худ донишномаи манзуме дар бораи таълимҳои мактаби маҳоёна дар шакли пурсишу посух ба забони хутани нав аст, ки бо нақлу қавлҳо аз матнҳои дигар фароҳам омадааст. Номи «Вималакирти» панҷ бор, гоҳ ба унвони гуянда дар матн такрор ёфтааст, шояд номи китоб аз ин ҷо гирифта шудааст. Гарчанде аз ду нусхаи ин матн ду ҳазор сатр боқӣ мондааст, вале аввалу охири китоб аз байн рафтааст. Китоб бо ном бурдан аз буми чаҳорум аз даҳ бум оғоз мешавад:

*«1. Чаҳорумин (бум) Арнчимати (рахшон) аст, то он ки ҳамаи килиша (нопокӣ)-ро бисӯзонад. 2... Судурҷаё (бисёр душвор) панҷумин бум аст, ки бар ҳама килишаҳо галаба мекунад, ки галаба бар онҳо бисёр душвор аст. Буми шашум Абимуки (рӯбарӯ) ном дорад. Ҳама будоҳо ин ҷо ошкор ҳастанд. 3. Дарангамо- ҳафтумин бум аст. Дар ин мақом чархаи ҳастӣ аз ӯ (Буди сутӯҳ) дур мешавад. Бояд «Аҷало» (бечунбиш)-ро ҳаштумин бум шумурд. Дар ин бум тани дарма (қолбади қонун) бечунбиш аст...»<sup>3</sup>*

---

<sup>1</sup> Мануро Мҷӣ. Адибиат хттӣ//адибиат иран пӣш аз ислам, в. 396.

<sup>2</sup> Мӣрфхрایی, м. Адибиат хттӣ//тاریх җаме иран, в. 546 Мануро Мҷӣ. Адибиат хттӣ, в. 406.

<sup>3</sup> Мануро Мҷӣ. Адибиат хттӣ//адибиат иран пӣш аз ислам, в. 407.

Мӣрфхрایی, м. Адибиат хттӣ//тاریх җаме иран, в. 546-547.

## V1.4. Адабиёти авадона ё дostonҳои ривой

Авадона дар санскрит ба маънии дастовардхост. Як навъи адабиест, ки мактаби маҳоеънаро бо дини будоии аввалия пайванд медиҳад. Ин гурӯҳ шомили дostonҳои ахлокии маҳоеъна бо мақсади нишон додани оқибатҳои амалу қорҳои неку бади инсон ва таъкидгузори ба ормони Будои сутӯҳ нигошта шудааст, яъне Будои оянда, ки аз рӯйи хираду дилсӯзи хомӯшии худро бо ҳадафи начоти мавҷудоти ранҷкашида ба таъхир меандозанд.

Авадонаҳо дар қолаби назму наср таълиф шудаанд. Хусусияти хосси ривоятҳои хутанӣ мӯҷазбаёнест, ки дostonро басо зинда чилва медиҳад. Авадонаҳо дорои дostonҳои ошиқона, монанди дostonи Ромояна ва маҷмӯаи чатақаҳо (дostonҳои зиндагиҳои пешини Будо) низ ҳастанд.

### V1.4. 1. Дostonи Судана

Аз матни «Авадона Судана» шаш қитъа боқӣ мондааст. Дoston ба бозгӯии яке аз зиндагиҳои пешини Будо, аз забони худи ӯ барои ҳамсари собикаш-Яшудҳаро мепардозад, ки дигар таҳаммули ҷудой аз Будоро надорад. Ин дostonи манзум саргузашти ишқи шоҳзода Судана ва шоҳдухтари париён Манухаро, ҷудоии он ду ба сабаби фитнаи бараҳмани бадкор, сафари пурмочарои Судана ба сарзамини париён дар ҷустуҷӯи ҳамсараи ва пайванди дубораи онҳост.<sup>1</sup>

### V1.4. 2. Дostonи Ашука

«Ашуковадона»-и хутанӣ асари мансур аст. Дoston дар бораи охири рӯзҳои зиндагии ин подшоҳи Ҳинд аст. Таҳрири хутанӣ пас аз муаррифии кӯтоҳи Ашука, таваллуди писараш Куноларо ривоят мекунад ва шарҳ медиҳад, ки «чун чашмҳои обии писар ба зебоии чашмони парандаи Кунола аст, ба ин ном хонда шудааст».<sup>2</sup> Сипас мухтасар дар бораи омӯзиши динии Кунола тавассути муршидаш - Упагупта мепардозад ва шарҳ медиҳад, ки чӣ гуна Ашука вазири бедини худ -Яшасро таҳқир кард. Саранҷом, ба шарҳи шӯриши шаҳри Таксило, рафтани Ашука ба Таксило, кӯшиши малика Тишуяракашито аз роҳ бурдани шоҳзода ва худдорӣ ӯ, бозгашти Ашука ва фитнаи малика барои интиқом гирифтани аз шоҳзода ба ёрии Яшаси вазир меояд.<sup>3</sup> Дoston дар ин ҷо қатъ мешавад. Муҳаққиқи адабиёти хутанӣ М. Маҷчи муътақид аст, ки бахши гумшудаи ин дoston мумкин аст ишороте ба афсонаи поягузори Хутан дошта, ки дар манбаъҳои тиббетӣ

<sup>1</sup>Мануро Мҷӣ.Адабиат хтнӣ//Адабиат иран пш аз اسلام،ص:558. ميرفخرايى،م. ادبيات ختنى//تاريخ جامع ايران،ص410

<sup>2</sup>Мануро Мҷӣ.Адабиат хтнӣ//Адабиат иран пш аз اسلام،ص411

<sup>3</sup>همان جا،ص412.

ва чинӣ ба Ашука мансуб аст. Ӯ ишора мекунад, ки дар худӣ дoston низ «бозтоби суннати ҳамосии эронӣ»<sup>1</sup> дида мешавад. Воқеан, саргузашти шоҳзода Кунола ва малика Тишуяракашито назари дostonи Сиёвуш ва Судобаи «Шоҳнома»-и Фирдавси.

#### V1.4. 3. Дostonи Канишка

Дostonи яке дигар аз подшоҳони бузург дар «Канишкавадона» омада, ки оғози он дар як дастнавис маҳфуз мондааст. Қисмати боқимонда ба наср ва дорои ду дoston аст. Дostonи аввал дар бораи Лукаполаҳо, эзадони ниғаҳбони чаҳор ҷиҳати аслии чаҳон аст, ки ба шакли писароне зоҳир мешаванд ва як ступа (маконест будой, ки маъмулан барои ниғаҳдории ёдгорҳо месозанд, ёдмони будой) аз гил месозанд. Дostonи дувум дар бораи Канишка аст, ки фармон медиҳад ступа ва дайре сохта шавад. Дostonи гусастае ҳам аз муршид, ройзани маънавии Канишка - Ашвахгуша боқӣ мондааст, ки мушти гилро дар ступаи тозасозе ба қолаб мезанад ва пас аз он тасвири Будо зоҳир мешавад ва бедории Ашвахгушаро дар даврони кунунӣ таъйид мекунад. Дostonҳое монанди ин дoston дар манбаъҳои санскрит, чинӣ ва тибетӣ дида мешаванд, аммо чунин ба назар мерасад, ки танҳо таҳрири хутании ин дoston онро дар ривояти тӯлонитаре ҷой дода бошад.<sup>2</sup>

#### V1.4. 4. Дostonи Нанда

«Нандавдона» (авдонаи Нанда) асари мансур аст, ки нимаи аввали он дар як дастнавис боқӣ мондааст. Дар ин дoston чигунагии подоши саховату ҷавонмардӣ ва кайфару укубати хирсу озу тамаъ шарҳ ёфтааст. Дoston дар бораи тоҷири сарватманд, аммо бисёр хасис ба номи Нанда ва ҷавонмардии яке аз хидматгоронаш мебошад. Хидматгор ба шакли Чандана, фарзанди сарватманди Нанда, аммо Нанда ба сурати писари кӯр ва ноқисулхилқай зани гадову нобино аз нав зода мешаванд. Дастанвис ҷое, ки модар писари дувоздаҳсолаашро барои гадоӣ ба деҳа мефиристад, ногаҳон қатъ мешавад:

*«Эй писар, ман туро бо ранҷу сахтӣ ва гадоӣ бузург кардам ва ту акнун бузургу ман тир шудаам ва дигар наметавонам барои рӯзӣ ба русто биравам. Писарам, аз ин пас аз модарат ниғаҳдорӣ кун!»*

*Пас фарзанди нобино ба модари меҳрубонаш гуфт:*

*-Модар, ман аслан намедонам аз кадом роҳ ва ба кучо биравам.*

*Модар бад-ӯ чунин гуфт:*

*-Писарам, ин асоро бигир. Аввал, масири роҳи ҳамвору гавдолҳоро бисанҷ. Асоро дар дасти ту гузоштам. Дар гор барои сафари ту либос*

---

<sup>1</sup> همان جا، همان صفحه.

<sup>2</sup> میرفخرایی، م. ادبیات ختنی//تاریخ جامع ایران، ص. 560.

дӯхтам. Ва дар идома чунин гуфт: «Ба ҳаёте мерасӣ ва чунин бигӯ: Ҳар касе он ҷо ҳаст...»<sup>1</sup>

## V1.5. Достонҳои ошиқона

Достонҳои дилангезе, аммо гусаста, ба назм дар дастанависи кӯтоҳ дар бораи ишқи писари хидматгор ва духтари вазир боқӣ монда, ки М.Маччи онҳоро ба хотири муҳтавояшон «ишқнома» номидааст.<sup>2</sup> Қисмати кӯтоҳе аз достон боқӣ монда, ки маълум нест, ки кадом бахши он аст, зеро шабеҳи он дар дигар забонҳо ба назар намерасад. Саҳнаи ошиқ шудани ин ду писари хидматгор ва духтари вазир ин гуна тасвир шудааст:

«10..Дар он ҳангом духтари зебову бошукӯҳ аз ҷой бархост, 11.ки комил фараҳманду тасвирнокарданӣ буд, чун ҳамтое дар ҷаҳон надорад. Духтар, ки каме ошуфта буд, писари хидматгорро дид, ки зоҳири дилнишин дошт.12. Дар он лаҳза, писар бо ҷомаи зебо, ораста ва бисёр покиза, бо тири заҳрогини ишқ қалби (духтар)-ро ишикофт. 13. Духтари волаву шайдо ҳалқаи гули зебо ба сӯйи ӯ партоб кард. Вақте писар ба атроф нигарист, мутаваҷҷеҳ шуд, ки чӣ касе ҳалқаи гулро ба сӯйи ӯ партоб кардааст. 14. Дар ҳамон лаҳза ҳалқаи гул ва духтарро дид, ки муқобили панҷара буд. Он гоҳ духтар пайкараширо, ки бисёр зебо буд, то нима аз панҷара хориҷ кард.15. Дуруст ҳамон гуна, ки ошиқ маъшукро дар баробари чаимонаш зебо мебинад, Вишвакарман (офаридгори ҷаҳон) ё Комадива (эзади ишқ) худ ӯро сохта ва пардохта буд. 16. Духтар бо сифоти неки занона, бо ишқ бад-ӯ лабҳанде зад. Ба маҳзи он ки духтарро дид, чунон бенақс ақл аз каф дод. 17. Дар банди ишқи духтар наметавонист аз он ҷо дур шавад, дуруст ҳамон ҷо, баробари ӯ нишаст. Муқобили панҷара, шодмона соз менавохтанду гамгинона якдигарро менигаристанд. 18. Сипас духтар зани тиреро назди писар фиристод, то пинҳонӣ ба писар бигӯяд: Имиаб ин ҷо, назди ман бихоб. 19. Акнун шоҳ Прасенҷит саргарми хушгузаронист. Вазир шаи рӯзи тамом назди падарам дар қаср хоҳад монд. 20. Пас, дар он чанд рӯз аз самими дил бо духтар ком ронд. Бисёр шод буд. Ба духтар гуфт: Пас, ту маҳбуби ман ҳастӣ».<sup>3</sup>

### V1.5.1. Достони Ромояна

Аз он ҷо, ки Хутан дар ҳазораи аввали мелодӣ маркази таълимоти будой буд, ин дин ба матнҳои адабии ғайритаълимӣ низ таъсир гузоштааст. Чунончи, ҳатто достони хунарии ҳиндӣ «Рома ва Сито» низ ба як авадонаи хутанин чадид тағйир ёфтааст. «Ромояна»-и хутанӣ бо ситоиши даврони тӯлонии таълими Будо оғоз мешавад, ки натиҷаи муҷоҳидатҳои ӯ тайи таваллудҳои пешин, аз ҷумла зиндагии ӯ ба

<sup>1</sup>Мирфараҳӣ, М. Адибиат хтнӣ//Тарихи ҷамъи Ҷамаъи Иран, 561: 561. М. Адибиат хтнӣ//Адибиат Ирани пеш аз ислам, 414.

<sup>2</sup>Манорро М. Адибиат хтнӣ//Адибиат Ирани пеш аз ислам, 414.

<sup>3</sup>Манорро М. Адибиат хтнӣ//Адибиат Ирани пеш аз ислам, 414.

унвони Рома аст. Муҳтавои дoston чуниn аст: Парашурома бо куштани шох Дашаратха- падари Рома интиқоми падари худро мегирад ва баъд аз ин пайваста шоҳонро мекушаду бараҳмононро ёри медиҳад. ӯ худ ба дасти Рома ва Лакшамана кушта мешавад. Дашагрива Рогшаса - духтари худро сари роҳ мегузорад, зеро пешгӯӣ карда буданд, ки ӯ боиси сукути шаҳр мешавад. Зоҳиде духтарро бузург мекунад, Рома ва Лакшамана ба ӯ ошиқ мешаванд, аммо Дашагрива духтарро медуздад ва ду бародар бо ёрии маймунҳо ба роҳбарии Нанда аз укёнус мегузаранд, Ланкоро тасарруф мекунанд ва Дашагриваро шикаст медиҳанд. Сито барои пок мондани худ ба замин фуруд меояд ва онҳо ба Чамбудвипа бозмегарданд. Пас аз бозгашт ба Чамбудвипа Рома Амбариша ва Маҳодеваро шикаст медиҳад.<sup>1</sup>

Муҳаққиқон бар онанд, ки ҳадафи ин гуфта он аст, ки Рома бо Будои таърихӣ яке дониста шуда ва бар Шива ва Вишну-эзадони бузурги эзадкадаи ҳиндувон пирӯз гаштааст. Дoston комилан зинда, он гуна ки маъмули авадонаҳои хутанист, ривоят мешавад ва пур аз мазмунҳои афсонавист. Дар ин дoston маймунҳо, мӯрчагон ва зоғону харҳо низ ширкат мекунанд.

Қитъае аз мочарои рабуда шудани Сито ба дасти Дашагрива аз ин дoston:

*«Нандаи маймун ин гуна фармон дод: «Сито дар Чамбудвипа гум шудааст. Ҳафт рӯзи тамои ӯро бичӯед ва замоне, ки ӯро ёфтед, гузориш диҳед. Пас, (агар) Ситоро наёфтед, посухе аз ӯ нашунидед, ҳама ин ҷо гирд оед. Чашимони ҳамаи шуморо берун оварда, хӯроки зогон хоҳам кард». Маймунҳо ба ҳар тараф ҳаракат карданд (ва) бисёр ба дунболи Сито гаштанд. Намедонистанд барои ёфтани Сито кучоро ҷустуҷӯ кунанд. (Бо худ андешиданд:) Поёни ҳафт рӯз фаро расидааст. Фардо чашимони моро дар хоҳанд овард». Як маймун бо номи Пуҳушо бархост. Ба дунболи дарахти бодоми дарунхोलӣ гашт. Дар болои дарахти бодом лонаи зоге ёфт, ки холӣ буд ва зог ба дунболи гизо аз он ҷо хориҷ шуда буд. Бачазогони кӯчак аз гуруснагӣ барои модарашон сару садо мекарданд. Маймун ба онҳо гуфт: «Нигарон набошед! Фардо гизои шумо чашимони гарми маймунҳо хоҳад буд». Бачазогон пурсиданд: «Аз кучо чашимони маймунҳоро барои мо гизо меоваранд?» Маймун гуфт: «Сито гум шуда ва Дашагрива ӯро рабуда ва бо худ ба шаҳри Ланкопура бурда. Маймунҳо муқассир хоҳанд буд. Онҳо чашимони маймунҳоро дар хоҳанд овард». Пуҳушои маймун бо шунидани ин суханон якбора роҳ афтод ва розӣ шуд, ки роҳи худро биравад (Ромоёна,109-121)<sup>2</sup>*

Ба ҳамин минвол аз адабиёти хутанӣ вобаста ба дини будоӣ дostonҳову ашъори парокандае дар қолабҳои гуногун боқӣ мондааст. Монанди достони «Қатакаساتва», сутроҳои маҳоёнаи

<sup>1</sup>Мирфхرايى،م. ادبيات ختنى//تاريخ جامع ايران،ص. 563

<sup>2</sup>مانورو مجى.راماينه//ادبيات ايران پيش از اسلام،ص.415-416.

мухталиф ва аз осори ғайритаълимӣ ашъори ғиноӣ, номаҳои манзум, ҳазлиёт, мадҳ, сафарнома ва мисли инҳо, ки баъзе комил ва баъзе ноқис бар чой мондаанд. Илова бар ин ба забони хутанӣ матнҳое доир ба илми тиб, луғатномаҳо боқӣ мондаанд, ки дар шинохти адабиёт ва фарҳанги он манбаи муҳим ба шумор мераванд.

Бояд зикр кард, ки ашъори ғиноии хутанӣ бар бузургдошти ишқ ихтисос дорад, ки баъзе аз онҳо хеле зебо ҳастанд. Нуҳ байт дар бораи ишқ дар тӯморе аз Дунхуан ба даст омадааст. Дар маҷмӯаи аслии байтҳои ғиноӣ мавсум ба «шеъри ғиноӣ», ки аз Дунхуан ба даст омадааст, дар бораи омадани баҳор, гулҳои гуногун, парандагон, мочарои ошиқони чавонон сухан меравад. Гурӯҳи дигар матнҳои бадастомада, ки пажӯҳандагон онро «номаҳои манзум» номиданд, ба шакли номаҳое ҳастанд, ки ба воситаи мусофирон ҳангоми сафарҳояшон навишта шуда ва хитоб ба хонаводаву дӯстону пайвандонашон дар ватан аст. Ин гурӯҳи осор шомили теъдоди зиёди номаҳо ба назм дар чандин дастнавис аз ноҳияи Хутан аст. Бино ба таъкиди пажӯҳандагон, ин «номаҳои манзум» ба сифати мактуб нестанд, ки ба касе фиристода шуда бошанд, балки «осори адабии устодона ва фохире ҳастанд, ки мазмуни дури аз ватанро баён мекунанд».<sup>1</sup>

### Намунае аз оғози яке аз номаҳои манзум:

*«1. Ҷӯёи (тандурусти) хешон, бародари кӯҳӣ аз фазилатҳо, мардвор, шуҷоъ, зирак, пуровоза, хушзавқ, хушгуфтор, 2. Устувор, боҳуш, бебок, ботақво, маҳбуби ҳамагон, маҳшивара ба амалу ба дидор, ҳамсони Рома ва Лақимана. 3. Ҷанганда дар ҳар сарзамину кишвар, машҳур ба андозаи шаҳире дар як достон, барҳамзанандаи назми душман, ҳофизи номи нек»<sup>2</sup>.*

Аз осори ҳазлиёти хутанӣ қитъае дар даҳ сатр дар даст ҳаст, ки тавассути Kima-Sana навишта шудааст. Аз ашъори мадҳии хутанӣ се мадеҳа дар бузургдошти шахсият ва аъмоли се тан аз подшоҳони силсилаи Вишай Хутан боқӣ мондааст. Муҳаққиқон бар онанд, ки гарчи ин мадҳияҳо ба шахсони таърихӣ ва воқеаҳои ҳамзамон бо нигориши онҳо ишора мекунанд ва метавон онҳоро асноди таърихӣ ба шумор овард, аммо оҳанги балоғӣ ва сабки устодонаи онҳо ёдовари прашастихо, мадҳияҳои катибаии санскрит аст.<sup>3</sup>

---

<sup>1</sup>Мирфхрайи, м. ادبيات ختنی//تاریخ جامع ایران، ص. 567.

<sup>2</sup>Мирфхрайи, м. ادبيات ختنی//تاریخ جامع ایران، ص. 567.

<sup>3</sup>همان جا، ص. 568.



## ФАСЛИ ҲАФТУМ

### VI. Адабиёти балхӣ

Сарзамини Балх дар асл шомили дашти густардае миёни Ҳиндукуш ва Омударё ҳаст, ки аз дер боз нақши асосӣ дар таърихи Осиёи Миёна ифо кардааст. Ин сарзамин дар катибаҳои Ҳахоманишиён «Бохтриш» (Baxtris) ва дар матнҳои юнонӣ «Боктариё» номида шудааст. Гузориши муаррихони юнонӣ аз ин сарзамин дар охири асри нухум ва аввали асри ҳаштуми то мелод аз он шаҳодат медиҳад, ки Балх подшоҳии сарватманд ва дорои шаҳрҳои зиёде будааст. Ковишҳои бостоншиносӣ нишон медиҳад, ки ин сарзамин дорои низоми пешрафтаи обёрӣ буда, бо сарзаминҳои дигар иртиботи тичорӣ ва фарҳангӣ доштааст. Дар «Авесто» низ сухан аз ин сарзамин рафтааст. Дар аҳди Ҳахоманишиён Балх дувоздахумин шаҳраби ин сулола буд ва шаҳрбони Балх аз ҷумлаи пайвандони ҳахоманишиӣ будааст. Қаламрави юнонӣ-балхӣ аз сӯи ҷануб ба Ҳиндукуш, аз шарқ ба кӯҳҳои Бадахшон, аз сӯи ғарб ба воҳаи Марв дар ҳавзаи Порт ва аз сӯи шимол ба кӯҳҳои Ҳисор, миёни Ҷайхун ва водии Зарафшон маҳдуд мешуд. Баъдҳо сарзамин Суғд низ ба он пайваст. Баъд аз юнониҳо Кушониён дар Балх ҳукумат доштанд. Мутаассифона, таърихи Кушониён ба дурустӣ равшан нест. Ба ҳар ҳол, Балх дар давраи Кушониён аз арзишҳои иқтисодӣ фарҳангӣ бархурдор буд ва роҳи абрешим аз он мегузашт. Кушониён баъд аз истилои Балх нахуст шеваи суннати истифода аз хатти юнониро дар навиштаҳо ва забони балхиро ба сифати забони гуфтугӯӣ ба кор бурданд. Баъдҳо танҳо забони балхиро дар навиштори корҳои идорӣ ва ҳадафҳои сиёсӣ ва дар ниҳоят ба унвони забони миллий ба кор гирифтанд. Чунончи, қадимтарин асар ба забони балхӣ мутааллиқ ба асри дувуми мелодист ва он катибаест дар 25 сатр, ки дар мадхали маъбаде дар Сурхкӯтал дар ҷануби шарқи Бағлон ба даст омадааст. Чанд даҳа баъд, дар оғози давраи Канишкаи аввал забони балхӣ ҷойгузини юнонии рӯи сиккаҳо шуд. Пас аз ин давра забони юнонӣ дигар ба унвони забони расмӣ дар Балх истифода нашуд.<sup>1</sup>

Тавре ки зикраш рафт, куҳантарин катиба ба забони балхӣ катибаи Сурхкӯтал аст, ки дар он аз амалиёти сохтмонӣ сухан меравад. Катибаҳои кӯтоҳтаре низ аз ин ноҳия кашф шудааст. Катибаҳои хурдтаре ба забони балхӣ дар Афғонистон ва Ўзбекистон низ ба даст омадааст. Ин осор ба хатти юнонӣ навишта шудааст. Илова бар ин катибаҳо ҳашт қитъаи дастнавишта низ ба хатти

<sup>1</sup> محمود جعفرى دهقى. زبان بلخى//تارىخ جامع ايران، ص. 577-580

юнонӣ-балхӣ дар Туркистони Чин ба даст омадааст ва ба назар мерасад, ки мутааллиқ ба будоӣён будааст. Қитъае ба забони балхӣ ва ба хатти монавӣ низ дар даст ҳаст.<sup>1</sup>

Илова бар катибаҳо сиккаву муҳрҳо аз шоҳони кушонӣ ба забони балхӣ ва гоҳе балхию юнонӣ кашф шудааст, ки бештари онҳо ба Канишка тааллуқ доранд. Баъд аз тасаллути Ҳафтолиён ба Балх дар сиккаву муҳрҳо тағйироту дигаргуниҳои забонӣ ба назар мерасад. Дар ин давра унвонҳои ҳиндӣ ва хатто лотинӣ ҳамроҳ бо унвонҳои балхӣ ба форсии миёна дар сиккаҳо ба кор рафтааст. Донишмандон дастнавиштаҳои балхӣ бадастомадаро ба се гурӯҳ чудо кардаанд: Санадҳои иқтисодӣ, санадҳои ҳуқуқӣ ва дастнавиштаҳои балхӣ бо хатти монавӣ. Забоншиносон саъй намудаанд вожаҳои забони балхиро дар дигар забонҳо таҳлил диҳанд. Масалан, калимаи «хадев»-и форсӣ аз вожаи балхӣ «xoadeo» (худованд, сарвар) гирифта шудааст ва ғайра.<sup>2</sup>

---

<sup>1</sup> اتفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام، ص. 367

<sup>2</sup> محمود جعفری دهقی. زبان بلخی//تاریخ جامع ایران، ص. 577

## ФАСЛИ ҲАШТУМ

### Адабиёт хоразмӣ

Забони хоразмӣ аз забонҳои эронии миёнаи шарқист, ки то охири асри чаҳордаҳум дар Хоразм ривоч дошт. Аз забони хоразмӣ бостон ҳеч санаде боқӣ намондааст ва он чи имрӯз дар даст дорем, мансуб ба забони хоразмӣ миёна аст. Осори боқимондаи хоразмиро муҳаққиқон ба ду даста тақсим кардаанд: осори куҳани хоразмӣ, ки ба хатти оромӣ ва осори хоразмӣ охир, ки ба хатти арабӣ навишта шудаанд.<sup>11</sup> Осори ин ду хатро акнун ба тартиб оромӣ-хоразмӣ ва арабӣ-хоразмӣ меноманд. Осори боқимонда ба хатти оромӣ-хоразмӣ иборатанд аз:

1. Ду катибаи бисёр кӯтоҳ бар ду зарфи сафолӣ, ки ба асрҳои сеvim ё дувуми пеш аз мелод тааллуқ дорад.

2. Навиштаҳои кӯтоҳ бар сиккаҳои ҳукуматдорони Хоразм (асрҳои сеvim ё дувуми пеш аз мелод).

3. Навиштаҳои рӯи чӯбу чарм, ки эҳтимол ба садаи дувуми пеш аз мелод мансуб аст.

4. Катибаҳои кӯтоҳ бар чанд зарфи симин, ки эҳтимолан ба асрҳои шашум то ҳаштуми мелодӣ тааллуқ доранд.

5. Чанд катибаи санги мазор, ки эҳтимолан ба садаи ҳафтуми мелодӣ тааллуқ дорад.

6. Катибаи кӯтоҳ бар як сафолина аз Хумбузтеппа.<sup>2</sup>

Бино ба таҳқиқи И.М.Оранский, хатти арабӣ-хоразмӣ эҳтимолан аз асри X барои навиштани забони хоразмӣ ба кор мерафтааст.<sup>3</sup> Қадимтарин осори боқимондаи хоразмӣ ба ин хат калимотест, ки Абӯрайҳони Берунӣ дар баъзе осори худ ба кор бурдааст, аз ҷумла дар «Осор-ул-боқия» номи чанд подшоҳи хоразмӣ, калимаҳо ва истилоҳоти тақвимӣ ва нучумӣ, номи чанд дору, гиёҳ, ҷонвар дар асари дигараш доир ба тиб.<sup>4</sup> Дигар осори бозмондаи хоразмӣ ба хатти арабӣ-хоразмӣ иборатанд аз: 1.Тарҷумаи хоразмӣ «Муқаддима-ул-адаб»-и Абулқосим Маҳмуд ибни Умари Замахшарӣ. 2. Чанд калима ва ҷумлаи хоразмӣ дар китоби фикҳии «Ятимат-уд-даҳр»-и Муҳаммад ибни Маҳмуд Алоуддин Маликии Хоразмӣ. 3. Чанд калима ва ҷумлаи хоразмӣ дар китоби фикҳии «Қунайт-ул-мунайх»-и Начмуддин Абӯраҷо Мухтор ибни Маҳмуд

---

اتفضلى. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام، ص. 366.

<sup>2</sup>Henning W.B,1965, The Choresmian Documents // Asia Major5.- P. 43-49.

نقل از حسن رضایی باغبیدی. زبان خوارزمی //تاریخ جامع ایران، ص. 597-598.

<sup>3</sup>Оранский И.М. Иранские языки в историческом освещении.-Москва, 1979,-с.,91.

<sup>4</sup>Берунӣ Абӯрайҳон. Осор-ул-боқия .-Душанбе:Ирфон, 1990.-С. 259-267.

Зоҳиди Ғазминӣ. 4. Рисолае бо номи «Рисолат-ул-алфоз ул-хоразмия» асари Камолиддин Имоди Ҷурҷонӣ, ки дар шарҳи луғоти хоразмист.<sup>1</sup>

Аҳмади Тафаззулӣ бар он аст, ки ҳеч кадоме аз ин асарҳо аз назари адабӣ арзиши чандоне надоранд, вале аз диди забоншиносӣ хеле муҳимманд.<sup>2</sup>

Бояд зикр кард, ки забони хоразмӣ то асрҳои XII-XIII дар Осиёи Миёна ҳамчун забони гуфтугӯӣ ба қор мерафтааст, вале шуруъ аз асри XI ба сифати забони адабиёт нақшастро аз даст додааст. Донишмандон, аз ҷумла Е.Э. Бертелс бо таъя ба суҳанони Абӯрайҳони Берунӣ, ки забони модарияш хоразмӣ буд, ба ин натиҷа расидаанд, ки забони хоразмӣ бо забони суғдӣ хеле наздик буда ва ҳар хоразмӣ босавод аз адабиёти суғдӣ баҳраманд буда ва худ низ ба ин забон менавиштааст.<sup>3</sup>

---

1حسن رضاي باغبیدی. زبان خوارزمی//تاریخ جامع ایران،ص. 597-598.

2تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام،ص. 367.

3Бертелс Е.Э. История персидско-таджикской литературы. -С. 73.

## ФАСЛИ НУҲУМ

### IX. Таъсири адабиёти Давраи бостон ба адабиёти Асрҳои миёна

Бояд зикр кард, ки баъд аз қабули дини ислом ва то ба майдон омадани адабиёти форсии тоҷикӣ қариб се аср адабиёт ба забонҳои маҳаллии Хуросону Мовароуннаҳр ва Эрон идома ёфт. Аз сӯйи дигар, таъсири назарраси адабиёти қадимро ба адабиёти асрҳои миёна мушоҳида мекунем. Ин ҷо ба таври мухтасар доир ба идомаи суннатҳои адабиёти қадим дар давраҳои аввали адабиёти форсии тоҷикӣ ва таъсири адабиёту фарҳанги бостон ба он маълумот медиҳем.

Бино ба таъкиди муҳаққиқон, то се аср баъд аз вуруди ислом, бо он ки ниёкони мо исломро пазируфта буданд, дину мазҳабҳои қадими онҳо, монанди зардуштӣ, будой, монавӣ, насронӣ, маздакӣ ва ҳатто яҳудӣ дар ғӯшаҳои мухталифи Мовароуннаҳру Хуросон ва Эрон пайравон доштанд ва сипас, заволи тадриҷии онҳо сабаб шуд, ки баъзе аз андешаву эътиқодоти марбут ба онҳо дар мазҳабҳое, ки баъдан дар ин сарзаминҳо пайдо шуд, таъсир расонад. Дар се асри аввал, яъне асрҳои ҳафт, ҳашт ва нӯҳ ба сабаби он ки динҳои ислом, зардуштӣ, монавӣ, будой ва масеҳӣ дар Эрон ва Мовароуннаҳру Хуросон нуфуз доштанд, забонҳои арабӣ, паҳлавӣ, суғдӣ, сурёнӣ ва дигар забонҳои маҳаллӣ низ роиҷ буданд. Ба таъбири дигар, баъд аз вуруди ислом ва нуфузи забони арабӣ дар фарҳангу адаби мардуми эронитабор баъзе аз адибони ин мардум ба забони арабӣ асарҳо менавиштанд, ғурӯҳи дигар аз равшанфикрон ва сарсупурдагони миллат ба тарҷума ва офаридани осор ба забонҳои суғдӣ, паҳлавӣ ва дигар забонҳои маҳаллӣ машғул буданд. Дар ҳамин ҳол адабиёти маҳаллӣ раванди такомули табиӣ худро тай мекард ва шеваву лаҳҷаҳои маҳаллӣ дар омезиш бо забони арабӣ таҳаввул меёфт. Дар Самарқанду Бухоро, Марву Балх ва дигар шаҳрҳои Мовароуннаҳру Хуросон лаҳҷаҳои маҳаллӣ, монанди дарӣ омодаи он мешуд, ки дорои адабиёти пурвусъате гардад. Чунончи, саранҷом дар охири асри IX ба унвони як забони адабии мустақил даромад ва то имрӯз ҳамчун забони расмии адабию сиёсии Тоҷикистон ва Эрон Афғонистон боқӣ монд.

Забонҳои эронии давраи миёна, монанди суғдӣ, паҳлавӣ, балхӣ, хоразмӣ ва ғайра, ки то вуруди ислом забонҳои расмӣ ва сиёсии Эрону Осиёи Миёна буданд, бо тасаллути арабҳо на танҳо аз байн нарафтанд, балки то чанд аср пас аз он дар баъзе минтақаҳои ин сарзаминҳо ривож доштанд ва китобу катибаҳое бо ин забонҳо нигошта шуданд. Дар миёни зардуштиён то охири асри X тафсириҳои «Авесто» ва китобу рисолаҳои дигари дини зардуштӣ ба забони паҳлавӣ буд, ки дар се қарни баъдӣ навишта шудаанд. Ҳамчунин, чунон ки зикраш рафт, дар ин се аср ба забонҳои суғдӣ,

хоразмӣ ва балхию хутанӣ низ асарҳо эҷод шудаанд, ки дар боби пешин аз онҳо ёд кардем.

Арабҳо, ки аз низоми давлатдорӣ беҳабар буданд, дар ибтидо ҳамон низоми муназзами кишвардорӣ Сосониёнро идома доданд ва забони паҳлавӣ то аҳди ҳукумати Ҳаҷҷоҷ ибни Юсуфи Сақафӣ забони расмӣ коргузорӣ дар Эрон буд. Бино ба гуфтаи сарчашмаҳо, яке аз котибони эронӣ бо номи Солеҳ ибни Абдуррахмон азм кард, ки забони идорӣ девонро аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума намояд. Ин Солеҳ шогирд ва зердасти Зодонфаррух буд, ки баъд аз марги устодаш ҷойи ӯро соҳиб шуда буд. Писари Зодонфаррух - Мардоншоҳ хост Солеҳро аз ин амал боздорад, аммо муваффақ нашуд ва гӯянд ӯро нафрин карду гуфт: «Худованд решаи туро аз ҷаҳон бибуррад, ҳамчунон ки решаи форсиро бурид!»<sup>1</sup> Ибни Надим дар «Ал-фехрист» навиштааст, ки эронӣ ҳозир шуданд сад ҳазор дирҳам бад-ӯ бидиҳанд, то аз ин кор изҳори аҷз кунад, вале ӯ напазируфт.<sup>2</sup> Бо вучуди хиёнати Солеҳ ибни Абдуррахмон ҳатту забони паҳлавӣ то асри XI каму беш роиҷ буд, ки осори дар ин даврон таълифгардида гувоҳи ин матлаб аст.

Сарсупурдагони фарҳангу суннат ва адабиёти миллӣ, монанди Абдуллоҳ ибни Муқаффаъ, Навбаҳти Аҳвозии Мунаҷҷим ва писаронаш, Мӯсо ибни Холид, Юсуф ибни Холид, Муҳаммад ибни Ҷаҳими Бармакӣ, Баҳром писари Мардоншоҳ ва дигар намояндагони неҳзати шуубия барои аз нобудӣ эмин нигоҳ доштани осори ниёкон баҳше аз онҳоро ба арабӣ тарҷума карданд, ки ҳам ба адабиёти араб ва ҳам ба адабиёти навини форсии тоҷикӣ таъсири басазо расондааст. Бархе аз ин асарҳо дар даврони баъд ба форсӣ ҳам тарҷума шудаанд, ки заминае барои равнаки суннатҳои адабиёти бостон гаштанд. Яке аз муҳимтарини онҳо «Худойнома» аст, ки дар охири аҳди Сосониён бо гирдоварии афсонаву ривоятҳои миллӣ шакл гирифта буд ва дар навиштаҳои осори асрҳои миёна бо номҳои «Сияру мулук-ил-Аҷам» ё «Сияр-ул-мулук» ва дар адабиёти форсӣ «Худойнома» (Шоҳнома) хонда шудааст. Матни аслии «Худойнома»-и паҳлавӣ ва тарҷумаи Ибни Муқаффаъ ва тарҷумаву иқтибосҳои дигарон, ки аз Ибни Муқаффаъ кардаанд, аз байн рафтааст, аммо аз рӯи он тарҷумаҳо чандин «Шоҳнома» ба майдон омад, ки яке аз онҳо «Шоҳнома»-и мансури Абӯмансурист, ки муқаддимаи он боқӣ мондааст. Ҳамчунин дар асоси «Худойнома» ва «Шоҳномаи Абӯмансурӣ» ва дигар «Шоҳнома»-ҳо ҳамосаи бузурги миллӣ-«Шоҳнома»-и Ҳаким Фирдавсӣ ба майдон омад. Достони ошиқонаи «Вису Ромин», ки асли ашкони дорад, «Синдбоднома», «Калилаву Димна», «Бахтёрнома» ё қиссаи даҳ вазир», «Достони Рустаму Исфандёр», «Маздакнома», «Достони Шаҳрбароз бо

1. نقل از همایی، ج. تاریخ ادبیات ایران، ص. 23.

2. صفاء، ذبیح الله. تاریخ ادبیات ایران. خلاصه جلد اول و دوم تاریخ تدبیات در ایران، تهران، 1383، ص. 31.

Парвиз», «Достони Хусраву Ширин», «Достони Доро ва бути заррин», «Корномаи Анӯшервон», «Лухроспнома» ва чандин дигар достону ҳикоятҳо, ки реша дар адабиёти бостон доранд, ба арабӣ ва форсӣ тарҷума шуда, сабаби ривочи суннатҳои адабии аҳди Бостон дар даврони баъдӣ гаштаанд. Дар ривочи андарзнависӣ ва фарҳангшиносии асрҳои миёна низ китобу рисолаҳои адабиёти аҳди қадим, ки қаблан аз онҳо ёд кардем, хеле муассир будаанд.

Дар баробари осори ғайридинӣ осори динии зардуштӣ, будой ва хусусан монавӣ дар ривочи ҳикмату фалсафа ва мантиқ, таъриху адаби давраи исломӣ, ки ба забонҳои суғдӣ, паҳлавӣ ва дигар забонҳои маҳаллӣ эҷод шуда буданду баъдан онҳоро ба арабию форсӣ тарҷума кардаанд, таъсири зиёд гузоштаанд. Мутаассифона, мутарҷимони осори динӣ, алалхусус мутарҷимони китобҳои монавӣ аз бими ҷон номи худро ошкор накардаанд.

Хулоса, осори адабиёти қадими форсии тоҷикӣ заминаи асосии рушди адабиёти даврони асримӣнагии мардуми мо буда, баҳрабардорӣ аз ин адабиёт дар ҳаҷ давроне қатъ нагардидааст. Мутаассифона, аз он осори адабии пурбор теъдоди ночизе то ба рӯзгори мо расидааст.

## БОБИ ДУЮМ

### АДАБИЁТИ АРАБИЗАБОНИ ХАЛҚҲОИ ЭРОНӢ ДАР САДАҲОИ VIII-IX

Таҷрибаи адабиёти умумичахонӣ далел бар он аст, ки дар таърихи халқҳои гуногун давраҳои будаанд, ки адибони он халқҳо ба тақозои шароити таърихӣ осори худро на ба забони қавми худ, балки ба забони бегона эҷод кардаанд. Ба қавли И.Г. Неупокоева, «ин ҳолат дар шароити истилоачнабиён, ки бо манъи забони миллӣ ва ё маҳдуд гардонидани он тавбаам буд, рӯй менамуд. Дар ин шароит адибони миллӣ дар марҳалаи начандон тӯлонӣ забони бегонаро ба ҳайси воситаи ягонаи нашри афкори худ ба кор мегирифтанд»<sup>1</sup>.

Дар таърихи адабиёти форсии тоҷикӣ низ ҳамин гуна як марҳалае буд, ки он пас аз истилои араб оғоз ёфта, то пайдоиши адабиёти форсии дарӣ дар замони Сомониён идома ёфтааст. Дар тӯли ин давра, яъне, дар асрҳои VIII-IX, забони арабӣ ба ҳайси забони адабӣ тасаллут пайдо кард ва адибони маҳаллӣ осори худро дар қолаби он офариданд. Ин ҳолат тадқиқ ва таъйини риштаҳои пайванди адабиёти қадими тоисломиро бо адабиёти форсии тоҷикӣ душвор гардонид, боиси пайдоиши тасавури ғайривоқеъ гаштааст, ки гӯё тараккии адабиёти халқҳои эронӣ пас аз истилои араб қатъ гардидааст, гӯё мардуми Эронзамин дар дарозии зиёда аз дусад сол аз эҷоди адабиву бадеӣ маҳрум буданд. Аз ин ҷост, ки дар осори бархе аз мусташироқон давраи мазкур чун “вазъи ғайрзабонӣ” ё “вазъи дигарвучудӣ”, «лавҳи сафед» ва «ду қарни сукут» дар таърихи адабиёти халқҳои эронӣ арзёбӣ гардида, ташаккул ва раванқи адабиёти оламгири аҳди Сомониён бештар ба таъсир ва нуфузи суннатҳои адабиёти араб марбут доништа шудааст.

Таърихи тамаддуни башарӣ гувоҳ бар он аст, ки ҳеч падидаи бузурги фарҳангӣ дар ҷои холӣ ва бидуни фароҳам омадани заминаҳои мусоиди сиёсӣ ва иҷтимоӣ ва маънавӣ ба вучуд наомадааст ва намеояд.

Гузашта аз ин, ҳама гуна падидаҳои бузурги адабиву фарҳангӣ, пеш аз ҳама, дар заминаи анъанаву суннатҳои гузаштаи худӣ зухур мекунанд ва такомул меёбанд. Бад-ин маънӣ нашъунамо ва раванқи ҳар як адабиёт дар ин ё он давра натиҷа ва маҳсули инкишофи қаблии он адабиёт аст. Албатта, ангеаҳои «бегона» низ дар рушди адабиёт муассир буда метавонанд, вале дар ин маврид асли ва ҳалқунанда шудани нақши онҳо аз эҳтимол дур аст.

---

<sup>1</sup>Неупокоева И.Г. История всемирной литературы. Проблема системного и сравнительного анализа.– Москва: «Наука», 1986.–С.250.



Пас аз истилои араб қавмҳои эронӣ исломро пазируфтанд ва аз пайи он забони ӑрбро ба ҳайси забони расмӣ қабул карданд. Бар асари ин, забони арабӣ дар дарозии қариб дусад сол ба воситаи ягонаи ифодаи афкори адабиву бадеӣ ва илмиву фарҳангии эронӣ табдил ёфт. Қабули ислом ва забони арабӣ боиси дар байни халқҳои эронӣ интишор ёфтани алифбои арабӣ гардид. Вале бо вучуди он, ки ин се рукни муҳими тамаддун, яъне дин, забон ва алифбо тағйир пазируфт, халқҳои эронӣ тавонистанд, ки ҳувияти милли ва асолати фарҳангу тамаддуни хешро нигоҳ доранд.

Халқҳои эрониро таҷриба ва собиқаи бузурги фарҳангиашон аз «араб шудан» наҷот бахшид. Фарзандони бедори Эронзамин - ҳомилони он фарҳанги бузург ба мубориза баҳри растагории маънавии Аҷам ба по хестанд ва ба майдони набарди фикрӣ ва муоразии фарҳангӣ бо арабҳо ворид гардиданд. Гурӯҳе аз онҳо забони арабиро дар ғояти камол омӯхтанд ва муҳимтарин дастовардҳои адабиёту таъриху фарҳанги аҷдоди тоисломии худро ба ин забон тарҷума карданд ва ба онҳо умри дубора бахшиданд. Гурӯҳи дигар дар назму насри арабӣ ба мартабаи устодӣ расиданд ва дар навиштаҳои худ анъанаву суннатҳои адабии эрониро ворид карданд.

Осори шоирон ва нависандагони арабизабони эронинаҷод, қабл аз ҳама, ба ҳукми он, ки ба забони арабӣ навишта шудааст, як қисми таркибии адабиёти арабиро ташкил мекунад ва бидуни он тасаввур кардани таърихи адабиёти араб, хосса тан ҳамон марҳалаи инкишофи он, ки ба давраи «таҷаддуд» маъруфият дорад, номумкин аст. И.М. Фильштинский барҳақ навиштааст, ки эҷодгарони адабиёти араби давраи таҷаддуд «ғолибан аз миёни эронӣ ва соири халқҳои навмусулмон бархоста буданд»<sup>1</sup>. Аммо чунин гузориши масъала ба ҳеҷ ваҷҳ маъноӣ онро надорад, ки халқҳои эронӣ дар давраи истилои араб то пайдоиши адабиёти навини форсӣ аз эҷоди адабиву бадеӣ маҳрум буданд. Гузашта аз он, ки эҷодиёти бадеии шифоҳии халқҳои эронӣ дар давраи истилои араб қатъ нагардида буд ва дар заминаи анъанаҳои пешин ба забонҳои маҳаллӣ инкишоф меёфт, анъана ва суннатҳои адабиву бадеии эронӣ дар адабиёти арабизабон, бавижа дар эҷодиёти адибони эронинаҷод мақом ва вусъати беш аз пеш пайдо мекард.

Аз ин рӯ, адабиёти арабизабони садаҳои VIII-IX, ки маҳсули каламу эҷоди эронӣ ва ифодагари ҳусни тавачҷуҳи онҳо ба анъанаҳои адабиву бадеии тоисломист, ба тамоми маънӣ як қисми таркибии адабиёти форсии тоҷикӣ ба шумор меравад.

---

<sup>1</sup>Фильштинский И.М.История арабской литературы.V-начало X века.-Москва: «Наука», 1985.-С.289.

## ФАСЛИ ЯКУМ

### ОМИЛҲОИ ТАШАККУЛИ АДАБИЁТИ АРАБИЗАБОНИ ХАЛҚҲОИ ЭРОНИ

Оқибати истилои араб барои фарҳангу маданияти халқҳои ориёӣ бисёр гарон афтод. Бодиянишинони араб осори адабиву маданияти кишварҳои фатҳкардаи худро бо баҳонаи «осори аҳли куфру залол» будани он бераҳмона нобуд мекарданд. Аз ҷумла, Ибни Халдун дар «Муқаддима»-и худ ба ҳодисаи бо фармони халифа Умар нест кардани осори эронӣ чунин ишора кардааст: «Кучо шуд илму дониши Эрон, ки Умар дар хангоми фатҳ ба нобуд кардани онҳо фармон дод?»<sup>1</sup>. Тафсили ин ҳодисаро Ҳочӣ Халифа баён кардааст, ки «вақте лашкари араб бо сардории Саъд ибни Абӯваққос кишвари Эронро фатҳ намуд, китоби бисёре ба дасти аъроб афтод. Саъд ба Умар нома навишта, раъйи ӯро дар бораи китобҳо бихост. Умар дар ҷавоб навишт: «Китобҳоро дар об афканед, зеро агар онҳо боиси роҳнамоӣ бошанд, мусулмононро роҳнамое беҳтар аз Қуръон нест ва агар далели гумроҳӣ бошанд, мо аз он бениёзем»<sup>2</sup>. Пас аз ин сарбозони Саъд китобҳоро дар об рехтанд. Муаррихи дигар Абӯрайҳони Берунӣ ҳамин гуна муносибати ваҳшиёнаи муҳочимони арабро нисбат ба осори адабиву фарҳангии хоразмиён дар «Осор-ул-боқия» зикр кардааст. Бино ба навиштаи ӯ, вақте Қутайба ибни Муслими Боҳилӣ (сарлашқари араб – Н.З.) бар мардуми Хоразм даст ёфт, «нависандагону хирбадони Хоразмро аз дами шамшер гузаронид. Ва он чи мактубот аз китобу дафтар доштанд, ҳамаро туъмаи оташ кард. Ва аз он вақт хоразмиён омӣ ва бесавод монданд ва танҳо эътимоди эшон дар ниёзмандиҳои таърих ба нерӯи ҳофиза аст»<sup>3</sup>. Дар ҷои дигар аз ҳамин китоб Берунӣ аз дасти Қутайба ибни Муслим ба ҳалокат расидани онҳоеро, ки хатти хоразмӣ медонистанд, хабар дода, афзудааст, ки «бад-ин сабаб ахбори Хоразм тавре пӯшида монд, ки пасаз ислом намешавад онҳоро донист»<sup>4</sup>.

Нобуд кардани осори адабиву фарҳангии мардуми эронинаҷод на танҳо хангоми кишваркушоии арабҳо, балки баъдтар низ воқеъ гардидааст. Аз ҷумла, соли 923 дар асари мубориза бар зидди монавиён дар Бағдод акси Монӣ ва чаҳордаҳ ҷувол китоби пайравони ӯ, ки ҳама бо нақшу тасвирҳо ораста буданд, сӯзонида шуданд<sup>5</sup>. Бино ба хабари Давлатшоҳи Самарқандӣ, Абдуллоҳи

<sup>1</sup> ابن خلدون. مقدمة ابن خلدون. بيروت، دار الفكر العربي، 1997. ص. 112.

<sup>2</sup> حاجي خليفة. كشف الظنون عن اسامي الكتب و الفنون. ج. 1. دار الفكر للطباعة و النشر و التوزيع، بيروت، 1406 - ص. 66.

<sup>3</sup> Берунӣ, Абӯрайҳон. Осор ул-боқия. – С. 71.

<sup>4</sup> Берунӣ, Абӯрайҳон. Ҳамон асар. – С. 56.

<sup>5</sup> محمدى، محمد. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام و آثار آن در تمدن اسلامی و ادبیات

Тоҳирӣ китоби «Вомику Азро»-ро ба эътибори осори маҷусӣ буданаш дар об андохта ва дастур додааст, ки ҳар чӣ аз он гуна биёбанд, нобуд созанд<sup>1</sup>. Ҳарчанд ки В.В. Бартольд ҳақиқати ин хабарро зери шубҳа гузоштааст<sup>2</sup>, он ва далелҳои дар боло оварда сарнавишти осори адабиву фарҳангии гузаштагони моро пас аз истилои араб ба ҳубӣ инъикос мекунад.

Дар баробари китобсӯзиҳои аъроб ва ҳодисаҳои давраи истило иллати дигари аз байн рафтани китобу расоили тоисломии форсу тоҷик тағйири алифбо ва хат буд. Бо густариши ислом ва устувор гаштани пояҳои ҷаҳоншиносии нави ваҳдонӣ хатти паҳлавӣ тадриҷан азмаърази истифодаи умум хориҷ шуд ва ҷои худро ба хатти арабӣ вогузошт. Дар натиҷа қорбасту истифодаи хатти паҳлавӣ танҳо мунҳасир ба доираи пайравони зардуштия ва тоифаи мӯбадону ҳирбадон гардид. Бо мурури замон ин хат ва мероси мактуб ба он барои аксарияти мардум ноошно гардида, ба гӯшаи фаромӯши афтод ва аз миён рафт. Тағйири хат мобайни фарҳангу тамаддуни тоисломӣ ва давраи исломии Эронзамин фосилае ба вучуд овард, ки убур аз он ба қисмате аз осори адабиву фарҳангӣ ба сабаби бегонагии хат ба «муштариён»-и баъдӣ муяссар нагардид.

Бо вучуди он ки бар асари истилои араб се рукни муҳимми тамаддуни эронӣ, яъне дин, забон ва хат тағйир пазируфт, қисмате аз мероси маънавӣ ва обидаҳои фарҳангии тоисломӣ нобуд гаштанд, халқҳои Эронзамин ҳувияти миллӣ ва асолати фарҳангии хешро ҳифз карданд, зеро омилҳои мавҷуд буданд, ки заминаҳои пайдорӣ ва идомаи суннатҳои адабу фарҳанги тоисломиро дар муҳити ислом фароҳам оварданд. Ин омилҳо ба масобаи пули фарҳангии буданд, ки Аҷами тоисломиро бо Эронзамини исломӣ пайвастанд.

Яке аз ин гуна омилҳо ҳастии забони форсӣ ва лаҳҷаву гӯишҳои маҳаллӣ буд. Поя ва мояи аслии адабу фарҳанги Эронзамин дар қолаби забону лаҳҷаҳои, ки мардуми одӣ ба он сухан мегуфтанд, таърих ва саргузаштҳои шоҳону паҳлавонони худро мехонданд, дostonҳо ва афсонаҳои куҳанашонро ривоят мекарданд, боқӣ монд ва идома пайдо кард.

Омили дигаре, ки мӯҷиби интиқоли қисме аз осори фарҳангии тоисломӣ ба муҳити исломӣ гардид, фаъолияти пайравони кешу мазҳабҳои маҳаллӣ, хоссатан зардуштия буд, ки ҳадафи «гирд кардану гиромӣ доштан»-и мероси маънавии Аҷамро дар пай дошт. Пайравони зардуштия дар қарнҳои нахустии ислом дар ҳаёти иҷтимоиву фарҳангии Эронзамин соҳиби таъсиру нуфуз буданд. Бино ба навиштаи муаррихони асрҳои миёна, аксарияти аҳолии баъзе

---

عربی. انتشارات توس، تهران، ۱۳۶۴ - ص ۲۳.  
ادولت شاه سمرقندی. تذكرة الشعراء. به تصحيح و تحقيق محمد عباس. تهران،  
۱۳۳۷ - ص. ۲۵.

<sup>2</sup>Бартольд В.В. Тахириды. Соч.: Т. VIII. – Москва: “Наука”, 1971. – С. 508-509.

ноҳияҳо, аз ҷумла Кирмон, Шероз, Форс, Табаристон ва ғайра то дусе қарн пас аз пайдоиши ислом зардуштӣ мондаанд<sup>1</sup>.

Аз хидматҳои мӯбадону донишмандони зардуштӣ буд, ки дар қарнҳои нахусти ислом риштаи таълифу тадвин ба забон ва хатти паҳлавӣ канда нашуд ва китобу рисолаҳои дар масъалаҳои мазҳаб, ахлоқ, адаб, таърих ва ҷуғрофиё рӯй намуданд. Дар ин радиф бояд аз китобҳои «Динқарт», «Бундаҳишн», «Додистони диник», «Ривоёти паҳлавӣ», «Шиканд гумоник визор» ва ғайра ёдовар шуд, ки ҳамагӣ дар қарнҳои VIII ва IX аз ҷониби хирбадон ва донишмандони муътабари зардуштӣ таълиф шудаанд<sup>2</sup>. Китобҳои мазкур дар баробари масъалаҳои мазҳабӣ ҳамчунин мазмунҳои таърихӣ ва қиссау ривоёти бостониро дар бар гирифтаанд ва бино бар ин дар идомаи суннатҳои фарҳангу адаб ва кешу мазҳаби тоисломӣ нақше корсоз доштаанд.

Омили сеवуме, ки ба идомаи суннатҳои фарҳангу адаби тоисломии эронӣ боис гардид, эҳсоси ватанпарастиву эронгарой ва рӯҳияи истиклолҳои мардуми Эронзамин, хоссатан намояндагони илму адаби он буд, ки дар қарнҳои нахусти ислом дар баробари таассуби наҷодӣ ва фишори маънавии аъроб ба ташаккул ва густариши ҳаракати шуубия дар Хилофат мусоидат намуд. Хилофати Умавиён рӯҳияи ғолиби арабиву бадавӣдошта ва ба асабияти қабилавии аъроб ва ихонату таҳқири халқҳои ғайриараб, аз ҷумла мардуми Эронзамин асос ёфта буд. Чунин нобаробарии сиёсӣ иҷтимоӣ ва асабияти бадавӣ аъроб боиси норозигӣ ва эътирози шадиди эронӣ гардид, ки он дар ҳаракати шуубия ифодаи худро пайдо кард. Дар ин ҳаракат намояндагони халқҳои гуногуни Хилофат иштирок кардаанд, вале азбаски ақидаи шуубӣ пештар ва бештар аз ҳама дар байни халқҳои Эронзамин роиҷ буд, ин ҳаракат ғолибан оҳанги муоразаи арабиву эрониро касб кардааст.

Шуубиён шеваи муассир ва василаи ҳадафраси мубориза алайҳи фишори маънавии аъробро ба кор гирифтанд. Гурӯҳе аз онҳо дар назму насри арабизабон ба мартабаи устодӣ расиданд ва дар навиштаҳои худ анъанаву суннатҳои тоисломии адабиёти форсу тоҷикро ворид карданд. Гурӯҳе дигар забони арабро дар ғояти камол омӯхта, муҳимтарин дастовардҳои адабиёту таъриху фарҳанги ниёгони тоисломии худро ба ин забон тарҷума карданд ва бад-ин васила ба онҳо умри дубора бахшиданд. Хулласи калом, шуубия неҳзати бузурги фарҳангиву маънавие буд, ки сукути иҷбориву муваққатии забонҳои эрониро дар садаҳои VIII-IX бо хурӯши афкори эронӣ дар забони арабӣ иваз кард.

Омили чаҳоруми бақо ва идомаи суннатҳои адабу фарҳанги тоисломӣ борварии андешаи сиёсӣ ва ғаномандии таҷрибаи

---

<sup>1</sup> اصطخرى، ابواسحق ابراهيم. ممالك و مسالك. ترجمه محمد ابن اسعد ابن عبدالله تسترى. به كوشش ايرج افشار. تهران، ۱۳۷۳. ص. ۸۷-۱۶۰.

<sup>2</sup> تفضلى، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۱۲۸-۱۵۸.

кишвардории халқҳои эронӣ аст, ки бузургтарин дастоварди он низоми девонсолорӣ буд. Аъроб, ки дар давлатдорӣ собиқа ва таҷрибаи таърихӣ надоштанд ва, ба қавли Ибни Халдун, «нисбат ба ҳамаи миллатҳо аз сиёсати кишвардорӣ дур буданд»<sup>1</sup>, дар бунёди ниҳодҳо ва сохторҳои идории Хилофат низоми девонсолории Сосониёнро сармашқи кори худ қарор доданд. Аз ҷумла, нахустин девонҳое, ки дар Хилофат таъсис ёфтанд, пайравии маҳз аз девонҳои сосонӣ буд. Гузашта аз ин, забони коргузорӣ дар девонҳо дар ҳудуди бештар аз сад сол пас аз пайдоиши ислом ҳамон забони форсӣ (пахлавӣ) буд ва коргузори низ аксар мардуми эронӣ буданд. Баъдтар ҳамзамон бо инкишофи тараққи Хилофат дар аҳди Умавиён девонҳои дигар низ таъсис ёфтанд ва коргузорӣ, чунон ки қаблан зикр шуд, ба забони арабӣ нақл гардид. Вале азбаски ин девонҳо ба василаи эронӣ ва ба тақлид аз девонҳои сосонӣ ташкил шуда буданд, рӯҳи ғолиби эронии онҳо боқӣ монд.

Дар замони Аббосиён, илова ба тавсияи девонҳо, мансаби вазорат таъсис ёфт, ки он, ба ақидаи А.Кристенсен, тақлиди маҳз аз мансаби «вузург-фрамадор» - вазири аъзами давлати Сосониён буд<sup>2</sup>. Дар садсолаи аввали ҳукмронии Аббосиён мансаби вазоратро ғолибан намояндагони хонадонҳои бузурги эронӣ бар уҳда доштанд. Аз ҷумла, вазири хилофат дар аҳди Ҳорунааррашид – Яҳё ибни Холиди Бармакӣ буд. Дар аҳди Маъмун ду бародар аз дудмони Саҳли хуросонӣ – Фазл ва Ҳасан паси ҳам ба вазорат расида буданд. Чунон ки аз пажӯҳиши муаллифи мазкур бармеояд, вазирони эронии хилофат аз ҳайси қудрат ва нуфуз аз бисёр ҷиҳатҳо бо шахси халифа баробар буданд<sup>3</sup>.

Котибон ва вазирони эронии Хилофат на танҳо омили муҳимтарини эҳёи анъанаҳои давлатдории сосонӣ, балки умуман расму русуми иҷтимоӣ ва суннатҳои адабиву фарҳангии тоисломии эронӣ дар давраи ислом гардиданд. Пас аз ташкили Хилофат ва қабули низоми девонҳои сосонӣ котибони девонҳои Хилофат, ки аксаран эронинаҷод буданд, аз ҳамон равиши дабирони сосонӣ пайравӣ карданд. Ҳарчанд ки котибони эронӣ дар коргузорӣ забони арабиро истифода мебарданд, фарҳанги умумии онҳо ҳамон фарҳанги эронӣ буд. Бесабаб набуд, ки аввалин мутарҷимони осори пахлавӣ ба арабӣ, бештари шоирону адибони арабизабон ва аксари пайравони шуубия маҳз аз ҳамин табақаи дабирони эронӣ буданд.

Вазирони эронии Хилофат, алалхусус Бармакиён ва Фазл ибни Саҳлу бародараш Ҳасан ибни Саҳл, тамоюли зинда кардани анъана ва суннатҳои тамаддуни тоисломии эрониро дастгирӣ мекарданд. Онҳо аз нуфузи худ дар дастгоҳи идории Хилофат истифода бурда,

---

<sup>1</sup> ابن خلدون. همان اثر. - ص. ۱۰۸.

<sup>2</sup> کریستن سن، آرتور. ایران در زمان ساسانیان. - ص. ۱۷۳.

<sup>3</sup> کریستن سن، آرتور. همان اثر. - ص. ۱۷۲.

халифаҳои арабро низ ба пазируфтани суннатҳои қадими эронӣ вомедоштанд. Дар натиҷа, дар замони Аббосиён вазъи зоҳирии дарбор ҳамранги дарбори Сосониён гардида буд<sup>1</sup>. Вазирон шоирону адибони арабизабони эрониро ҳимоят ва дастгирӣ мекарданд. Аз ҷумла, Бармакиён маҳфили адабие ташкил карда буданд, ки асосан аҳли адаби эрониясро муттаҳид мекард. Барои ҳар як узви ин маҳфил ротиба муқаррар шуда буд<sup>2</sup>. Гузашта аз ин, Бармакиён ва баъдан Фазл ибни Саҳл адибони эрониро ба тарҷума ва ба риштаи назм кашидани осори тоисломии эронӣ тарғиб мекарданд. Анъана ва суннатҳои тоисломии мардуми эронинаҷод на танҳо дар дарбори хулафо ва байни аҳли сиёсату фарҳанг интишор ёфт, балки дар соҳаҳои дигари ҳаёти иҷтимоии Хилофат низ нуфуз кард. Дар байни арабҳо пӯшидани либосҳои эронӣ ба расмият даромад. Идҳои тоисломии эронӣ аз қабилҳои Наврӯз, Меҳргон ва Ромрӯз дар замони Аббосиён аз нав зинда гашта, бо ҳамон суннатҳои бостонӣ ҷашн гирифта мешуданд<sup>3</sup>.

Дар радифи омилҳои, ки дар ҳифзу эҳёи фарҳангу адабиёти тоисломии форсу тоҷик нақши муҳим бар уҳда дошт, бояд неҳзати тарҷумаи осори тоисломиро низ ба забони арабӣ таъкид кард. Дар давраи сукути забони форсӣ ва тасаллути комили забони арабӣ дар паҳноии таълифу тадвин тарҷумаи осори мактуби Эронзамини тоисломӣ василаи ягона барои аз нобудӣ эмин мондани он осор буд. Мутарҷимони эронӣ ин рисолати таърихро ба дӯш гирифта, аз солҳои сиюми асри VIII то солҳои сиюми асри IX муҳимтарин дастовардҳои завқу тафаккури халқҳои эрониро ба забони арабӣ нақл карданд, ки дар ин бора баъдтар батафсил сухан хоҳад рафт.

Ҳамин тариқ, омилҳои, ки зикр гардиданд, дар маҷмӯъ бақову пойдорӣ ҳасти маънавии халқҳои эронӣ ва тадовуми суннатҳои адабу фарҳанги тоисломии эрониро дар қарнҳои нахустии ислом таъмин намуданд.

---

<sup>1</sup> Мец А. Мусульманский ренессанс.-Москва: «Наука», 1966. – С.118-129.

<sup>2</sup> Зоҳидов Н. Адабиёти арабизабони форсу тоҷик аз истилои араб то аҳди Сомониён. - Хучанд: «Раҳим Ҷалил», 1999. – С.121-122

<sup>3</sup> Мец А. Ҳамон асар. – С. 328-336.

## ФАСЛИ ДУЮМ

### НАЗМИ АРАБИЗАБОНИ САДАҲОИ VIII-IX

#### 2.1. ШОИРОНИ ЭРОНИНАЖОД ДАР САДАҲОИ VIII-IX

Чунонки дар боби аввал зикр гардид, пас аз истилои араб ва наشري ислом дар Эронзамин, дар асрҳои VIII-IX намояндагони аҳли адаби эронӣ забони арабиро чун воситаи наشري афкори илмиву адабӣ ва таърихиву фарҳангии миллии худ истифода карданд. Ин амр мӯчиб гардид, ки дар назми арабизабони қарнҳои нахустӣ ислом як идда шоирони эронӣ насл нуфуз ёбанд. Аксари онҳо дар баробари он, ки забону адаби арабиро дар ғояти камол омӯхта буданд, аз забону адабиёт ва фарҳангу тамаддуни ниёгони хеш вуқуфи комил доштанд ва анъанаву суннатҳои онро посдорӣ мекарданд. Ашъори онҳо боис гардид, ки маъниҳову мазмунҳо ва рӯи эронӣ ба шеъри арабӣ ворид гардад ва он дар давраи хулафои аббосӣ бо рангомезиҳои ҷадид ҷилва намояд.

Аз таҳқиқи сарчашмаҳо бармеояд, ки фаъолияти адабии аввалин шоирони маҳаллии арабизабон ба охири садаи VII -аввали садаи VIII, яъне ба давраи хилофати хонадони Умавиён (661-750) оид аст. Дар давраи мазкур ду шоир – Зиёди Аъҷам (ваф. тахминан с.718) ва Собити Қутнат (с.729 кушта шудааст) зиндагӣ ва эҷод кардаанд. Зиёди Аъҷам зодаи Исфаҳон буд, вале дар ҷавонӣ ба Хуросон омада, то охири умр дар ҳамин ҷо мондааст. Сабаби бо лақаби «Аъҷам» машҳур шудани он буда, ки ҳарфҳои арабии «айн», «сод» ва ғайраро дуруст талаффуз карда наметавонистааст. Дар бораи зодгоҳ ва аслу насаби Собити Қутнат дар маъхазҳо маълумоти ихтилофмез сабт шудааст, вале бо Хуросон пайванд будани зиндагиву эҷодиёташ бетардид аст.

Аз ҷиҳати рӯҳ ва мазмуну муҳтаво ашъори Зиёди Аъҷам ва Собити Қутнат бо ҳам қаробати том дорад ва дар пайравии равияву суннатҳои назми он вақти араб навишта шудааст. Ҳар ду шоир мавлои қабилаҳои арабие, ки Хуросонро истило карда буданд, ба шумор мерафтанд ва дар шеърҳои онҳо волиёни умавӣ ва намояндагони қабилаҳои пуштибони худро мадҳ ва муҳолифони онҳоро ҳаҷв мекарданд<sup>1</sup>. Ашъори ин ду шоир зодаи давраи зафарҳои силоҳи араб ва «таърихча»-и манзуми худвижаи давраи истило буд. Аз ин рӯ, дар он «эроният»-и Зиёди Аъҷам ва Собити Қутнат танҳо

<sup>1</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ١٤ - ص. ٢٦٣-٢٨٢؛ ج. ١٥ - ص. ٣٨٠-٣٩٤.

дар чанд вожаву номи форсӣ зоҳир гаштааст. Бо вучуди ин, назми шоирони мазкур чун сароғози адабиёти арабизабони халқҳои эронӣ аз аҳаммият холи нест.

Аз маъхазҳо бармеояд, ки пас аз Зиёди Аъҷам ва Собити Қутнат шоирону адибони минбаъди эронӣ асосан дар шаҳрҳои марказии Хилофат зиндагӣ ва эҷод кардаанд. Ин, албатта, бесабаб набуд. Ҳангоми истилои араб дар Хуросону Мовароуннаҳр дар назди сарлашқару волиёни араб шоирону адибон чамъ омада буданд ва Зиёди Аъҷаму Собити Қутнат низ дар шумори онҳо буданд. Пас аз анҷоми истило ва бозгашти аксари истилогарон ба Арабистон, дар Хуросону Мовароуннаҳр «харидорон»-и назму насри араб кам шуданд, вале адабиёти арабизабон дар шаҳрҳои марказии Хилофат раванқ пайдо кард. Ин буд, ки шоирону адибони арабизабони маҳаллӣ низ ба ин марказҳо рӯй оварданд.

Аз ҷумла, фаъолияти ду шоири дигари арабизабон Мӯсои Шаҳавот ва Абулаббоси Аъмо, ки дар нимаи аввали асри VIII зистаанд, дар Мадина сурат гирифтааст. Бино ба хабари Ибни Қутайба, ҳар ду шоир зодаи Озарбодғони Эрон буданд<sup>1</sup>. Ашъору ахбори онҳо, ки асосан дар «Китоб-ул-ағонӣ» зикр шудааст, далел бар он аст, ки ҳар ду шоир дар навъҳои анъанавии назми араб шеър мегуфта ва дар назди халифаҳои умавӣ ва сарони Мадина обрӯву нуфуз доштаанд<sup>2</sup>.

Ҳамзамон бо ду шоири мазкур дар Мадина шоир, котиб ва хунёгари номӣ Юнуси Котиб низ зиндагӣ ба сар бурда ва эҷод кардааст. Ӯ аслан аз вилояти Форс буд ва, бино ба навиштаи Абулфараҷи Исфаконӣ, «шеърҳои хуб» менавишт, ки аз онҳо танҳо пораҳои мутафарриқа боқӣ мондаанд<sup>3</sup>. Самти дигари фаъолияти ӯ – ҷамъоварии шеърҳои сурудҳои арабӣ ва ахбори муаллифони онҳо – дар таърихи адабиёти арабизабон нақши муҳим гузоштааст. Ӯ аввалин шуда «Китоб-ул-ағонӣ»-ро тартиб додааст ва минбаъд таҳияи ин гуна китобҳо дар адабиёти араб ба ҳукми анъана даромадааст. Ғайр аз ин, Юнуси Котиб боз ду китобе бо номҳои «Китоб-ул-қийон» (Китоби мутрибаҳо) ва «Китоб ун-нағам» (Китоби нағмаҳо)-ро таълиф карда, ки онҳо низ аз байн рафтаанд.

Шоир ва адиби дигари эронӣ Ҳаммоди Ровӣ (695-774) низ мисли Юнуси Котиб дар ҷамъовариву тадқиқи осори адабиву мусиқии араб

<sup>1</sup> ابن قتیبہ. کتاب الشعر و الشعراء. - ص. ۳۶۶.

<sup>2</sup> الاصفهانی، ابوالفرج. کتاب الآغانی. ج. ۳. - ص. ۳۵۱-۳۶۸؛ ج. ۱۶. - ص. ۲۸۹-۳۰۶.

<sup>3</sup> الاصفهانی، ابوالفرج. کتاب الآغانی. ج. ۴. - ص. ۳۹۸.



сахми калон гузоштааст. Бино ба ахбори сарчашмаҳо, ӯ аз Дайлам буда, чавонияш дар Кӯфа дар фақру тангдастӣ гузаштааст. Баъдтар ӯ забони арабиро дар ғояти камол аз худ карда, яке аз бузургтарин донандагони адабиёту таърихи араб гардидааст ва лақаби «ровӣ»-ро касб кардааст. Ҳаммод то ба дараҷае назми гузаштаи арабро омӯхта будааст, ки дар пайравии услуби шоирони пешин шеърҳо меофарид ва онҳоро ба гузаштагон нисбат меодааст. Инро ҳатто бехтарин ноқидони шеър пай намебурдаанд, магар ки ӯ худ қоил мешудааст<sup>1</sup>.

Ҳаммод яке аз аввалин мачмӯаҳои ҳафт қасидаи бехтарини шоирони тоисломии арабро, ки бо номи «Ҳафт муаллақа» машхуранд, тартиб дода ва бо ин ба равнақи илми филологияи асримиёнагии араб мусоидат кардааст. Дар айни замон Ҳаммод ба суннат ва ойинҳои қадими эронӣ низ хусни таваҷҷуҳ доштааст. Аз ин қост, ки ӯ дар фарҷоми умр ба зиндиқа ва монавият муттаҳам шудааст<sup>2</sup>.

Бар хилофи аксари шоирону адибони эронисли давраи умавӣ, ки ба ҳукми асорат ва ё бо хоҳиши худ ба кишвари араб рафтаанд, шоири дигари ин давра Ваззоҳи Яман аз авлоди эроние буд, ки соли 575-и мелодӣ ҳамроҳи Ваҳриз - сарлашқари сосонӣ барои озод кардани Яман аз ҳабашиён ба имдоди яманиён расида ва баъдан дар ҳамон ҷо муқим шуда, бо номи «ал-абно» ва «ал-аҳрор» машхур гаштаанд.

Дар таърихи адабиёти араб Ваззоҳ ҳамчун шоири ғазалсаро шуҳрат дорад. Таваллуд ва камолоти ӯ дар Яман сурат гирифта бошад ҳам, муҳити тарбияташ эронӣ буд. Аз ин қост, ки анъанаҳои адабиёти тоисломии эронӣ дар ғазалҳои шоир нақши бориз гузоштаанд. Муҳаққиқони адабиёти араб Ваззоҳро чун яке аз аввалин ҳомилони унсурҳои адабии эронӣ ба назми араб шинохта ва густариши ғазалҳои дар шакли саволу ҷавоб ва мунозира навишташударо дар эҷодиёти Ваззоҳ ва умуман назми араб натиҷаи таъсири ҳамин унсурҳо донистаанд<sup>3</sup>.

Дар аксари ғазалҳои шоир ишқи ӯ ба Равзо ном маъшуқа тараннум ёфтааст. Чанд ғазали Ваззоҳ дар васфи зани халифаи умавӣ Валиди 1 (705-715) – Умм ал-Банин низ суруда шудааст. Тибқи ривоят, халифа аз ин ғазалҳо хабар ёфта, соли 712 шоирро ба қатл маҳкум кардааст. Ғазалҳои Ваззоҳ ба дараҷае шуҳрат ёфта буданд, ки

<sup>1</sup>الاصفهانى، ابو الفرج. كتاب الآغانى. ج. ٦. - ص. ٨٩.

<sup>2</sup>الاصفهانى، ابو الفرج. كتاب الآغانى. ج. ٦. - ص. ٧٤.

<sup>3</sup>Эберман В.А. Персы среди арабских поэтов эпохи Омейядов //ЗКВ, т. II, выпуск 1.- Ленинград: «Изд-во АН СССР», 1926.- С.136.

дар асоси онҳо пас аз вафоти шоир ду достони романтикӣ – яке дар бораи Ваззоҳ ва Равзо ва дигаре дар бораи Ваззоҳ ва Умм ал-Банин пайдо шуданд. Дар ин достонҳо воқеаҳои ҳақиқии ҳаёти шоир бо ҳаёлпардозии мардумӣ омезиш ёфта ва дар натиҷа шахсияти шоир ҳамчун шахси таърихӣ мавриди шубҳаи баъзе муҳаққиқон, аз ҷумла Тоҳо Хусайн, қарор гирифтааст<sup>1</sup>. Баъдтар ин шубҳа аз ҷониби В.С.Фотиева бо санадҳои қотей рафъ карда шуд<sup>2</sup>.

Шоири дигари эроннасле, ки дар ҷавонӣ ба асорати арабҳо афтада ва дар нимаи аввали асри VIII дар Мадина зиндагӣ ва эҷод кардааст, Исмоил ибни Ясор мебошад. Исмоил намояндаи ашадии ҷараёни шуубия буда, ба муқобили арабҳои истилогар муборизаи мафкуравии беамон бурдааст. Эронпарастии ӯ то андозае бузург буда, ки ҳатто дар ҳузури халифаи араб Ҳишом ибни Абдулмалик (724-743) дар ситоиши ниёғони эронии худ ва мазаммати арабҳо бебоконе қасидаҳо сурудааст ва ба азобу шиканҷа дучор гаштааст<sup>3</sup>. Ин қасидаҳо ба инъикоси бадеии мафкураи шуубӣ дар назми арабизабон ибтидо гузоштаанд.

Исмоил ибни Ясор дар сурудани мадҳия, марсия, фаҳрия ва ғазал шоири тавоно будааст. Эҷодиёти ӯ аз лиҳози мазмун ва воситаҳои тасвири бадеӣ аз ашъори ҳамзамонаш то андозае фарқ мекунад ва бештар ба назми равияи таҷаддуд, ки дертар дар зери таъсири анъанаҳои адабиву бадеии эронӣ ташаккул ёфтааст, ҳамоҳанг аст.

Исмоил ибни Ясор дар охири ҳукумати Умавиён, каме пештар аз ба сари ҳукумат омадани Аббосиён дар соли 750 вафот кардааст. Аксари аъзои хонаводаи Исмоил шеър мегуфтаанд. Аз ҷумла, писараш Иброҳим низ шоири шуубимазҳаб буд ва чанд байти қасидае, ки ӯ дар васфи эронӣ сурудааст, дар «Китоб-ул-ағонӣ» зикр шудааст<sup>4</sup>.

\* \* \*

Дар табақабандии таърихи адабиёти араб адабиётеро, ки дар давраи ҳукмронии Аббосиён арзи вучуд кард, адабиёти давраи аббосӣ ва сад соли аввали онро (солҳои 750-850) адабиёти давраи «таҷаддуд» меноманд. Албатта, адабиёти «таҷаддуд» давоми адабиёти давраи

---

<sup>1</sup>طه، حسين. حديث الاربعة. ج. ۱، ۲۲۷-۲۳۴.

<sup>2</sup>Фотиева В.С. К вопросу об историчности Ваддаха ал-Йамана // Письменные памятники Востока. Историко-филологические исследования. Ежегодник.1975. - Москва: «Наука», 1982.- С.136-162.

<sup>3</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ۴. - ص. ۴۰۴.

<sup>4</sup>. Асари мазкур.-С. 427.

умавист ва онҳоро аз ҳам бо садди чинӣ чудо кардан нашоёд. Вале ин чиз ҳам мусаллам аст, ки адабиёти таҷаддудмарҳалаи сифатан нави инкишофи адабиёти араб буд ва аз бисёр ҷиҳатҳо аз адабиёти давраи умавӣ фарқ мекард. Яке аз омилҳои муҳимтарине, ки сифати нави адабиёти таҷаддуд ва ҷиҳатҳои хоси онро муайян кард, бениҳоят густариш ва тавсия ёфтани мақому таъсири унсури эронӣ дар назми давраи таҷаддуд буд.

Дар давраи мазкур миқдори шоирони эронинаҷод на танҳо аз пеш бештар гардид, балки аз байни онҳо як идда бузургони адабиёти арабизабон ба камол расиданд. Эҷодиёти онҳо аз як тараф ба таҷаддуди адабиёти араб заминаи мусоид фароҳам оварда бошад, аз тарафи дигар, боиси эҳёи анъана ва суннатҳои адабиву бадеии тоисломии эронӣ гардид.

Дар сарғаҳи назми давраи таҷаддуд шоири бузурги арабизабон, яке аз шуубиёни гузарои эронӣ Башшор ибни Бурд (714-783) меистад.

Асли Башшор аз Тахористон буда, бобо ва падари ӯро арабҳо асир гирифтаанд ва иҷборан ба Басра бурдаанд. Башшор дар ҳамин шаҳр ба дунё омадааст. Дар баъзе тазкираҳо овардаанд, ки Башшор аз модар нобино таваллуд шудааст. Тибқи ривояти дигар, Башшор кӯри модарзод набудааст ва дар асари беморие дар се-чорсолагиаш аз басират маҳрум шудааст. Мусаллам он аст, ки ин иллати ҷисмонӣ ба рӯҳияи Башшори камолёфта ва муносибати ӯ ба одаму олам таъсири худро гузошта ва дар ашъораш низ зоҳир шудааст.

Башшор ибни Бурд, ба эътирофи нақди асримиёнагии араб, шоири «фахл» буд, яъне, дар эҷоди шеър дар тамоми навъҳои маъмули назми араб муктадир буд, вале ашъори ошиқона ва ҳаҷвиёташ шуҳрати бештар касб карда буданд. Бино ба хабари Ҷоҳиз, Башшор соҳиби рисолаҳои мансур ва ашъори муздавиҷа низ буд<sup>1</sup>. Рисола ва муздавиҷаҳои Башшор то замони мо нарасида бошанд ҳам, дар асоси ин хабар ӯро метавон яке аз аввалин шоироне донист, ки шакли шеърии муздавиҷа (маснавии форсии тоҷикӣ)-ро истифода бурдаанд. Ба пиндошти муҳаққиқон, муздавиҷа (маснавӣ) аз анъанаҳои назми тоисломии эронӣ сарчашма гирифтааст. Дар ин шакл шеър офаридани Башшор аз тавачҷуҳаш ба анъанаҳои адабиёти гузаштаи эронӣ гувоҳӣ медиҳад.

Башшор шоири хеле сермаҳсул буд. Ба эътирофи худаш, ӯ 12 ҳазор «қасоиди тивол» (яъне, қасидаҳои калонҳаҷм) доштааст. Вале

---

<sup>1</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب البيان و التبيين. ج. ٣. ص. ٥٣.

то ба қарибиҳо аз ин мероси бузург танҳо ҳазору анде байти дар тазкираҳо сабтшуда маълум буду бас. Дар аввали солҳои панҷоҳуми садаи бистум дар Тунис девони нотамоми Башшор ёфт шуд, ки шеърҳои шоирро аз рӯи тартиби алифбо шомил буда, дар қофияи «ро» қатъ ёфтааст ва қариб ҳафт ҳазор байтро дар бар гирифтааст. Минбаъд ин девон ду бор (нахуст дар се ва пас дар чаҳор муҷаллад) ба нашр расид<sup>1</sup>.

Башшор яке аз аввалин тархрезони назми таҷаддуд ва, ба таъбири Асмаӣ, дар эҷоди шеър «солики роҳе буд, ки то ӯ касе онро напаймудааст»<sup>2</sup>.

Ба шаҳодати Абулфараҷи Исфаконӣ, Башшор дар парастии Аҷам ва ситоиши гузаштаи Эрон таассуби хос зоҳир мекард<sup>3</sup>. Ин амр азашъораш низ пайдост. Дар як қатор шеърҳои ӯ афкори зиддиарабӣ ва зиддихилофатии халқҳои эронӣ таҷассуми бадеии худро ёфтаанд. Аз ин ҷиҳат Башшор анъанаҳои назми шуубияро, ки нахуст дар эҷодиёти Исмоил ибни Ясор зуҳур карда буданд, давом ва раванг додааст. Гузашта аз ин, шоир дар баъзе шеърҳои худ фароиз ва муқаррароти исломро мавриди тамасхур қарор дода, бар хилофи ин оғӯҳои дини зардуштиро мадҳ кардааст. Майлони сиёсии Башшор ва таваҷҷуҳаш ба дину оғӯи гузаштаи эронӣ боиси он гаштанд, ки шоир ба қуфру зиндиқа муттаҳам гардид ва бо амри халифа Маҳдӣ (775-785) кушта шуд.

Ҳамзамон бо Башшор ибни Бурд дӯсти ӯ – шоири эронинаҷод Солеҳ ибни Абдулқуддус (соли қатлаш-783) дар Басра зиндагӣ ва эҷод кардааст. Тибқи ривояти «Китоб-ул-ағонӣ», Солеҳ ва Башшор аз ҷумлаи шаш нафар мутақаллимони маъруфи Басра буданд, ки дар хонаи ал-Аздӣ ном шахсе чамъ омада, дар атрофи масъалаҳои динӣ мубоҳаса ва муҷодала мекарданд. Аъзои ин маҳфил таҳти таъсири ақидаҳои мухталифи динӣ қарор гирифта буданд. Ба ин муносибат дар «Китоб-ул-ағонӣ» омадааст, ки «Солеҳ дар зоҳир тариқи тавбаро ихтиёр кард, вале Башшор ҳамоно дар қайди иштибоҳот боқӣ монд»<sup>4</sup>. Ғайр аз мубоҳисаҳо пиромони масоили динӣ Солеҳ ибни Абдулқуддус ба воизӣ машғул буд ва дар масҷидҳои Басра ваъз мекуфт.

---

<sup>1</sup>إبشاربنبرد. ديوان. ج. ۱ - ۴. الجزائر. (ب.ت)

<sup>2</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ۳ - ص. ۴۸.

<sup>3</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ۳ - ص. ۱۳۹.

<sup>4</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ۳ - ص. ۱۴۶-۱۴۷.

Аз ашъори Солеҳ ибни Абдулқуддус танҳо пораҳои пароканда боқӣ мондаанд, ки онҳоро адабиётшиноси араб Абдуллоҳ ал-Хатиб аз маъхазҳои гуногун чамъ оварда, ба тадқиқоти худ доир ба зиндагиву эҷодиёти шоир илҳоқ кардааст<sup>1</sup>.

Бино ба ишораи муаллифи «Табақот-уш-шуаро», «тамоми ашъори Солеҳ ибни Абдулқуддус аз зарбулмасал, мақол ва ҳикмат иборат будааст»<sup>2</sup>. Ашъори боқимондаи шоир далел бар он аст, ки оҳангҳои тарбиявину ахлоқӣ дар эҷодиёти ӯ мақоми асосӣ доштаанд ва мазмуни китаоту қасоидашро сартосар фароҳам овардаанд. Аз ин ҷиҳат эҷодиёти Солеҳ ибни Абдулқуддус дар назми араб, ки дар он панду мавъиза зимни байтҳои ҷудогона ба таркиби қасидаву китъаоти бисёрмавзӯӣ дохил мешуд, падидаи ғайримаъмул буд ва мавриди эроди ноқидони шеъри араб қарор гирифт. Аз ҷумла, Ибни Рашиқ навишта буд, ки «шеър набояд сирф аз зарбулмасалу мақол ва панду андарз иборат бошад, ҳамон тавр ки шеъри Солеҳ ибни Абдулқуддус ҳаст»<sup>3</sup>.

Аз ҷониби дигар, агар назми Солеҳ ибни Абдулқуддус дар раванди умумии адабиёти пандуандарзии форсии тоҷикӣ арзёбӣ шавад, падидаи табиӣ будани он аён мегардад. Шоир аз анъанаҳои адабиёти андарзии паҳлавӣ воқиф буд ва онро дар фаъолияти воизиву шоирӣ худ истифода мебард. Шаҳодати басо возеху раднопазири пайванди эҷодиёти Солеҳ ибни Абдулқуддус бо он анъанаҳо истифодаи фаровони ӯ аз зарбулмасалу мақолҳои халқҳои эронӣ дар ашъораш аст.

Фаъолияти эҷодии шоир ва адиби дигари эронинажод – Ҳаммоди Аҷрад (соли қатлаш–778) дар ҳаёти адабии Хилофат нақши бориз гузошта буд. Солҳои зиёди умри Ҳаммод дар Кӯфа гузаштааст. Дар ин ҷо ӯ ҳамчун шахси озодандеш ва лоубол шуҳрат ёфта буд. Баъдтар Ҳаммод ба Басра омада, маҳфили адабие ташкил кардааст, ки бештар адибони эронинажодро муттаҳид мекард. Ӯ бо аксари аъзои ин маҳфил, ки ба сабаби озодандешӣ ва тавачҷуҳашон ба фарҳангу ойнҳои эронӣ ба кӯфру зиндиқа муттаҳам шуда буданд, дар аввали аҳди халифа Маҳдӣ (775-785) ба Бағдод рафтааст. Дар замони халифаи мазкур сиёсати таъқиби ҳамагуна озодфикриву бидъат ва зиндиқа, ки интишори он дар олами ислом аксаран ба таъсири ойнҳои эронӣ, бавижа монавиёт, алоқа дошт, авҷ гирифта ва боиси саркӯбии бисёре аз аҳли адаби эронӣ гардида буд. Ҳаммоди Аҷрад

---

<sup>1</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبدالقدوس حياته و شعره. بغداد، ۱۹۶۷. ص. ۱۱۶-۱۵۲.

<sup>2</sup> ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. ص. ۹۱.

<sup>3</sup> ابن رشيق. العمدة فى صناعة الشعر و نقد. ج. ۱. ص. ۱۹۳.

низ, ки чун пайрави дини монавӣ шуҳрат ёфта буд, қурбони ин сиёсат гашт. Гузашта аз ин, агар шаҳодати Абӯнӯвос ҳақиқат дошта бошад, Ҳаммоод сарвари чамъияти монавиён ва муаллифи муздавичеае буд, ки онро ҳамкешонаш ҳангоми намози худ мехонданд. Абӯнӯвос гӯё бо гӯши худ аз тарафи монавиён сурудани ин муздавичаро шунида будааст<sup>1</sup>. Ба ҳар ҳол, Ҳаммоод аз Бағдод фирор кард ва чанд соли охири умри худро дар Хузистон гузаронд, вале дар ин чо низ амон наёфта ва аз қониби қотили зарҳариде кушта шуд.

«Эроният»-и Ҳаммооди Аҷрад на танҳо дар тавачҷуҳаш ба монавият зоҳир гаштааст, балки дар чанде аз ашъораш низ, ки ба мадҳи тамаддуни эронӣ ва суннатҳои майгусории эронӣ бахшида шудааст, нақши равшан гузоштааст. Ғайр аз ин, ӯ нисбат ба арабҳо ва ислом ҳисси бадбинӣ дошт ва «барои қайсари Рум китобе оид ба масолиби арабҳо ва нуқсонҳои ислом таълиф карда буд»<sup>2</sup>.

Дар равнақи назми арабизабони нимаи дууми садаи VIII – аввали садаи IX шоир Абӯяъқуби Хураймии Сугдӣ (ваф. с. 829) низ саҳм доштааст. Аз ашъори боқимондаи шоир (зиёда аз 500 байт), ки ба кӯшишу ҳиммати муҳаққиқони араб Алӣ Қавод ат-Тоҳир ва Муҳаммад Қаббор ал-Муайбад ба нашр расидааст<sup>3</sup>, бармеояд, ки Абӯяъқуб дар эҷоди мадҳия, марсия ва фаҳрия даст тавоно доштааст. Шерҳое, ки дар онҳо Абӯяъқуби Хураймӣ бо асли сугдӣ худ ва тамаддуни гузаштаи эронӣ фаҳр кардааст, аз намунаҳои беҳтарини ашъори ватанхоҳонаи шоирони шуубӣ ба ҳисоб мераванд.

Яке аз донишмандони маъруфи назми араб ва сарфу наҳви забони арабӣ Халафи Аҳмар (ваф. с. 796) аз Фарғона буд. Арабҳо ӯро ҳамроҳи волидонаш асир гирифта, ба Басра бурда буданд. Дар Басра ӯ дар назди устодаш Ҳаммооди Ровӣ нозуқиҳои забону адабиёти арабро омӯхт ва минбаъд худ устои адибону олимони Басра гардид.

Девони ашъори Халаф, ки ба он Ёқути Ҳамавӣ ишора кардааст<sup>4</sup>, то замони мо нарасидааст, вале баъзе асарҳои ӯ, аз ҷумла китобе оид ба наҳви арабӣ боқӣ мондааст ва рӯи ҷопро дидааст.

Яке аз бузургтарин шоирони арабизабон Ҳасан ибни Ҳонимулаққаб ба Абӯнӯвос(тав. байни с.756-762 - ваф. байни с.813-815) аст, ки дар шаҳраки Аҳвози вилояти Хузистон аз зани эроние бо

---

<sup>1</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ۱۴. - ص. ۱۴۶-۳۲۴.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. بتصحيح رضا تجدد. تهران، ۱۳۹۳/۱۹۷۳. - ص. ۱۰.

<sup>3</sup>الخرمى، ابويعقوب. ديوان. بيروت، ۱۹۷۱.

<sup>4</sup>ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ۳. - ص. ۶۸.

номи Гулнор таваллуд шудааст. Роҷеъ ба асли падари Абӯнӯвос маълумоти дақиқе мавҷуд нест. Баъзе сарчашмаҳо ӯро аслан эронӣ, маъхазҳои дигар араб хондаанд. Мусаллам он аст, ки ӯ дар шашсолагии Абӯнӯвос аз олам гузаштааст<sup>1</sup>.

Абӯнӯвос мактаби шеърро шоириро дар назди шоири кӯфагӣ Волиба ибни Хубоб ва баъдан дар назди Халафи Аҳмар гузашта, санъати шеъри арабро аз худ кард, назми шоирони ҷоҳилияро омӯхт ва маҳорати шоирии худро сайқал дод. Ӯ муддате дар бодияи араб байни бадавӣҳо зиста, забони арабии холисро дар ғояти камол аз бар кард. Дар баробари ин, Абӯнӯвос маълумоти хуби форсӣ низ гирифта буд. Ҳарчанд дар ин бора муаллифони тазкираҳо чизе нагуфтаанд, аз шеърҳои Абӯнӯвос бармеояд, ки ӯ забони модарии худ, фарҳанги тоисломии эронӣ ва адабиёти паҳлавиро ба таври комил медонист. Аз ин ҷост, ки ҳамбастагии унсурҳои фарҳангии Аҷаму Араб дар эҷодиёти Абӯнӯвос нисбат ба ашъори шоирони дигари арабизабони эронинажод дар сурати равшантар ва возеҳтар намоён гардидааст.

Абӯнӯвос дар тамоми навъҳои маъмули назми араб шеър гуфта ва устодияш мавриди эътирофи умум қарор гирифтааст, вале ҳамриёташ ба ӯ шуҳрати бештар овардааст. Ҳамриёт пеш аз Абӯнӯвос ҳам дар назми араб маъмул буд ва одатан дар шакли чанд байт қисмате аз қисматҳои қасидаро ташкил мекард. Абӯнӯвос дар мавзӯи маю майгусорӣ шеърҳои том офарид, ҳудуди оҳанг ва мавзӯҳои ҳамриётро ба дараҷае тавсия ва тараққӣ дод, ки минбаъд ҳар ҳамриёро, ки муаллифаш гумном буд, ба ӯ нисбат меоданд. Анъана ва одатҳои майгусории тоисломии эронӣ дар ҳамриёти Абӯнӯвос ва умуман дар ҳамриёти арабӣ таъсири амиқ гузоштаанд ва бад-ин васила ба адабиёти форсии тоҷикӣ интиқол ёфтаанд. Аҳаммият ва мақоми ашъори Абӯнӯвос низ дар раванди умумии анъанаҳои адабиву бадеии форсии тоҷикӣ пеш аз ҳама дар ин амр зоҳир мегардад.

Абӯнӯвос шоири шуубимазҳаб буд. Ӯ ба тамаддун ва тарзи ҳаёти аъроби бадавӣ танаффур дошт ва дар ашъораш ситоиши анъанаву одатҳои эрониро ба он муқобил гузоштааст.

Ҳамзамон бо Абӯнӯвос шоири дигари эронинажод Абон ибни Абдулҳамиди Лоҳикӣ (ваф.с.815) зиндагӣ ва эҷод кардааст. Бино ба эътирофи ҳуди Абони Лоҳикӣ, истеъдоди шоирии ӯ бештар дар эҷоди асарҳои манзуми эпикӣ зоҳир гаштааст. Агар нависандаи бузурги

---

<sup>1</sup> ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. - ص. ۱۹۴.

эронинажод Ибни Муқаффаъ (722-759) пешво ва асосгузори мактаби тарҷумаи мансури осори тоисломии эронӣ ба забони арабӣ ба ҳисоб равад, Абони Лоҳикӣ аксари тарҷумаҳои Ибни Муқаффаъро ба риштаи назм кашида, ба мактаби ба худ хоси тарҷума ва ё нақли манзуми он осор асос гузошт. Анъанаҳои ин мактаб минбаъд дар эҷодиёти шоирони арабизабону форсизабон вусъат ва раванқ ёфтанд.

Ба қалами Абони Лоҳикӣ, ба ҷуз аз нақли манзуми осори тоисломии эронӣ, инчунин мадҳия, ғазал, ҳаҷвия ва марсияҳо, ки намунаи онҳо ба миқдори бештар дар «Китоб-ул-авроқ»-и Сулӣ<sup>1</sup> сабт шудааст, тааллуқ доштанд. Баъзе шоирони ҳамзамони Абони Лоҳикӣ, аз ҷумла Абӯнӯвос, дар ҳаҷвиёти худ ўро ба зиндиқа ва пайравии монавият муттаҳам кардаанд<sup>2</sup>. Гарчанде Сулӣ ба сикҳати исломи Абони Лоҳикӣ далелҳо овардааст, шоир дар замони худ ва минбаъд низ чун зиндиқ шуҳрат доштааст. Эҳтимол, майлу рағбати ў ба нақлу тарҷумаи манзуми осори тоисломии эронӣ то дараҷае ба ин боис шуда бошад.

Абони Лоҳикӣ аз оилаи эроние буд, ки аксари намояндагони он аз даврони сосонӣ ҳамчун аҳли адаб машҳур буданд. Бино ба ишораи Ҷохиз, ниёғони Абони Лоҳикӣ хатибони маъруфи дарбори шохони сосонӣ буданд ва пас аз интишори ислому забони арабӣ дар Эрон фаъолияти эҷодии худро ба ин забон идома доданд<sup>3</sup>. Дар тазкираву сарчашмаҳои адабиёти араб ном ва намунаи осори чанд тан аз авлоди Абони Лоҳикӣ, аз ҷумла писараш – Ҷамдон ибни Абон, наберааш Абон ибни Ҷамдон, бародараш Абӯшокир Абдуллоҳ ибни Абдулҳамид ва ғайра, ки ба шеърӯ шоирӣ машғул ва соҳиби девон буданд, зикр ёфтааст. Аз ашъори боқимондаи онҳо, бавижа Ҷамдон ибни Абон бармеояд, ки дар дилбастагӣ ба анъанаҳои эронӣ эшон пайрави ҷадд ва падарашон Абони Лоҳикӣ будаанд<sup>4</sup>.

Бино ба хабари тазкираҳо дар нимаи дувуми асри VIII – аввали асри IX чанд тан аз шоирони дигари эронинажод дар марказҳои фарҳангии Хилофат зиндагӣ ва эҷод кардаанд. Яке аз онҳо Фазл ибни Абдуссамади Раққошӣ (ваф. тахминан с.815) аст, ки дар Рай таваллуд ёфтааст<sup>5</sup>.

---

<sup>1</sup>الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ۵۶.

<sup>2</sup>الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ۱۱-۱۲.

<sup>3</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب البيان و التبيين. ج. ۱۶۳.

<sup>4</sup>الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ۵۳-۶۲.

<sup>5</sup>ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. - ص. ۲۲۶.



Охангҳои риндиву майгусорӣ, ки ба эҷодиёти аксари шоирони эронинажод хос буда, ғолибан ҳамчун эътироз ба муқобили анъанаҳои арабиву бадавӣ садо додаанд, дар ашъори Раққошӣ низ вусъат доштаанд. Ба қалами ӯ манзумаи муздавиче тааллуқ дорад, ки дар он ба дӯстонаш нӯшидани май, иртиқоби зино ва шугли лаҳву қиморро «тавсия» кардааст<sup>1</sup>. Ин муздавиче аз ҷиҳати мазмун ба шеърӣ машҳури Абӯнӯвос, ки дар он чунин «тавсияҳо» аз забони фақеҳ садо медиҳад<sup>2</sup>, монандӣ дорад. Умуман, байни ашъори Раққошӣ ва Абӯнӯвос қаробати маънавие ҳис мешавад, ки ба гумони ғолиб, он аз як тараф, натиҷаи пайравии шоири аввал ба дувум ва, аз тарафи дигар, ҳосили таваҷҷуҳи ҳар ду ба анъанаҳои эронист.

Раққошӣ мисли аксари шуарои эронинажод аз пуштибонии Бармакиён бархурдор буд. Пас аз қатли Бармакиён шоир ба онҳо марсияҳои пурсӯз бахшид ва, аз ин рӯ, ба ғазаби халифа гирифтгор шуда, ба Хуросон фирор кард. Раққошӣ то охири умр дар дарбори Тоҳириён умр ба сар бурд.

Шоир ва адиби дигари эронинажоди ин давра Саид ибни Ваҳб буд, ки таърихи дақиқи таваллуду вафоташ дар маъхазҳо зикр наёфтааст. Ибни Муътазз дар тазкирааш ӯро ҳамчун «шоири хуб» арзёбӣ карда, намунаҳои ашъор ва баъзе лаҳзаҳои рӯзгорашро, ки ба ихлоси самимиаш ба Бармакиён далолат мекунанд, зикр кардааст<sup>3</sup>. Бино ба «ал-Феҳрист»-и Ибни Надим, Саид ибни Ваҳб соҳиби «Китоб-ур-расоил» ва девони ашъори иборат аз 50 варақ будааст<sup>4</sup>.

Ёқут дар «Муъҷам-ул-удабо» аз шоири нобино Руста ибни Абуласвад (ваф. с.791), ки дар Исфаҳон мезист, хабар дода ва пас аз зикри воқеоти сафари шоир ба дарбори Ҳорунарашид ва намунае чанд аз ашъораш ӯро аз ҷиҳати шеърӣ мушобеҳи Башшор ибни Бурд доништааст<sup>5</sup>.

Яке аз бузургтарин адибони эронинажоди давраи мазкур, ки дар инкишофи адабиёти арабизабон нақши муҳим гузоштааст, Саҳл ибни Ҳорун аст. Номи комили ӯ дар манбаъҳои куҳан ба сурати «Абӯамр (ё Абӯмуҳаммад) Саҳл ибни Ҳорун ибни Роҳбун (ё Роҳбунӣ)-и

---

<sup>1</sup> ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. - ص. ۲۲۶.

<sup>2</sup> ديوان. - ص. ۲۶۷. أبونواس

<sup>3</sup> ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. - ص. ۲۵۷ - ۲۶۱.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۲۳۶.

<sup>5</sup> ياقوت الحموي. معجم الادباء. ج. ۱۱. - ص. ۱۴۰-۱۴۱.

Даштимешонӣ» забт шудааст<sup>1</sup>. Ҷ дар ноҳияи Даштимешони вилояти Хузистон дар худуди соли 758 таваллуд шудааст. Бино ба ахбори сарчашмаҳо, ӯ дар ҷавонӣ дар Басра касби камол карда ва баъдан дар Бағдод маскан гузидааст. Дар ин ҷо ӯ бо хонадони Бармакиён наздик мешавад ва вазифаи китобати Яҳёи Бармакӣ – вазири Ҷорунаррашидро ба уҳда мегирад. Пас аз қатли Бармакиён дар соли 803 ӯ дар дарбори Ҷорунаррашид дар девони расоил ифои вазифа намуд. Авҷи шуҳрат Саҳл ибни Ҷорунро дар замони хилофати Маъмун (813-833) даст додааст. Ӯ дар ин давра на танҳо яке аз адибони муқарраби Маъмун мешавад, балки сарвари «Байт- ул-ҳикма» - маркази тарҷума, таълиф ва таҳқиқро, ки дар пайравӣ аз академияи эронии Гундишопур таъсис ёфта буд, ба уҳда мегирад<sup>2</sup>. Дар ин вазифа ӯ то вафоташ, ки, бино ба қавли Ёқути Ҷамавӣ, ба соли 215/830 мусодиф афтод<sup>3</sup>, боқӣ монд. Баъзе аз манбаъҳо вафоти ӯро дар соли 239/853 ва ҳатто 244/858 таъйин кардаанд<sup>4</sup>, ки аз эҳтимол дур ба назар мерасад.

Аксари сарчашмаҳо барҷастагиву кифояти Саҳл ибни Ҷорунро дар донишу ҳикмат таъкид карда, ӯро чун дабир, адиб, ҳаким ва шоир мавриди ситоиш қарор додаанд. Алломаи араб Ҷоҳизовардааст, ки дар эҷодиёти Саҳл ибни Ҷорун шеърро хутба, рисолаву китобҳои бисёрчилдӣ, таъриху ахбори мудавван ба ҳам омада буд<sup>5</sup>. Ибни Надим ҳам номи Саҳл ибни Ҷорунро дар шумори «балеғтарин» адибони арабизабон зикр карда, дар баробари ин аз шоирии ӯ низ сухан гуфтааст ва ҳаҷми девонашро 50 ҷараф таъйин намудааст<sup>6</sup>. Аз назми Саҳл ибни Ҷорун танҳо пораҳои пароканда боқӣ мондаанд. Аз онҳо аён аст, ки Саҳл дар ашъораш майли шуубӣ ва эҳсоси эронпарастии худро баён кардааст. Лозим ба таъкид аст, ки фаъолияти шоирии Саҳл ибни Ҷорун тахтушуъои шуҳрати нависандагии вай қарор гирифта буд. Бино бар ин, дар бораи мақоми адабии вай дар таърихи адабиёти арабизабон дар бахши марбут ба нависандагони арабизабон ба тафсилӣ бештар сухан хоҳад рафт.

<sup>1</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١١. - ص.١٣٣؛ الحصرى، القيروانى.زهر الآداب و ثمر الالباب ج.٢. - ص.٦١٦؛ ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١٠؛ حاجى خليفه.كشف الظنون عن اسامى الكتب و الفنون.ج.٥. - ص.٣٣٦.  
<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق.كتاب الفهرست. - ص.١٣٣؛ ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١١. - ص.٢٦٦.  
<sup>3</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١١. - ص.٢٦٧.  
<sup>4</sup>حاجى خليفه.كشف الظنون عن اسامى الكتب و الفنون.ج.٥. - ص.٣٣٦.  
<sup>5</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر.كتاب البيان و التبيين.ج.١. - ص.٦٣.  
<sup>6</sup>النديم، محمد ابن اسحق.كتاب الفهرست. - ص.١٣٩-١٩١.

Хаёт ва фаёлияти эҷодии адиб ва шоири шуубимазхаби эронинажд Аллон ибни Ҳасан (ба қавле, ибни Мақсуд)-и Варроқи Шуубӣба охири садаи VIII - нимаи аввали садаи IX рост меояд. То саранҷоми фочиабори Бармакиён (с.903) Аллон узви маҳфили адабии онҳо ва аз ҳимояту сарпарастии эшон бархурдор буд<sup>1</sup>. Дар аҳди Ҳорунарашид (786-809) ва Маъмун (813-833) Аллон дар «Байт-ул-ҳикма» ҳамчун варроқ ва нассоҳ кор кардааст. Лақаби аввали Аллон—«ал-Варроқ» ношӣ аз ҳамин пешаи варроқии ӯ буд. Ёқути Ҳамавӣ овардааст, ки Аллон дар наздикии «Боб-уш-Шом»-и Бағдод дукони фурӯш ва истинсохи китобҳо дошт, ки дар он Фирӯзон ном варроқи эронӣ бо ӯ кор мекард<sup>2</sup>.

Аллон, зоҳиран, дар оғози фаёлияти худ як муддат вазифаи дабирии Аҳмад ибни Абӯҳолиди Аҳвалро, ки яке аз амирони аҳди Ҳорунарашид буд, ба уҳда доштааст<sup>3</sup>. Давраҳои ахири зиндагии Аллон ба дарбори Тоҳириён алоқаманд буд. Аз эҳтимол дур нест, ки ӯ охири ҳаёташро дар Марв ва ё Нишопур – марказҳои сиёсӣ фарҳангии замони Тоҳириён гузаронида ва дар ҳамон ҷо ба зиндагӣ падруд гуфта бошад.

Бино ба маълумоти сарчашмаҳо, Аллон намояндаи ашаддии чунбиши шуубия буд ва бад-ин сабаб ба «Шуубӣ» мулаққаб гардидааст. Аз осори ӯ ба чуз аз китобу рисолаҳое, ки сухан перомони онҳо дар пеш аст, пораҳое аз ашъораш боқӣ мондаанд. Ин пораҳо ба намояндагони хонадони Тоҳириён бахшида шудаанд ва эҳсоси меҳанпарастӣ ва эронгароии Аллонро бозтоб мекунад.

Шоир ва адиби дигари арабизабон – Абӯусмон Саид ибни Ҳумайд ибни Бухтакон (вафоташ с. 854/1450) аз авлоди аъёни эронӣ буд ва, ҳамчунон ки соҳиби «ал-Фехрист» навиштааст, таассуби шадид алайҳи арабҳо дошт<sup>4</sup>. Ибни Халликон аслан тӯсӣ будани Саид ибни Ҳумайдро таъкид карда, ӯро дабир ва нависандаи фасеҳбаён номидааст<sup>5</sup>.

Дар сарчашмаҳо ба девони ашъори ӯ ишора рафта ва ҳаҷми он дар ҳудуди 50 варақ таъйин шудааст<sup>6</sup>. Намунаҳои ашъори ӯ, ки дар «Китоб-ул-ағонӣ» ва «Заҳр-ул-одоб» зикр шудаанд, иборат аз ғазалҳо буда, дар

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١١٨؛ ياقوت الحموي. معجم الادباء. ج. ١٢؛ حاجي خليفه. كشف الظنون عن اسامي الكتب و الفنون. ج. ٥. - ص. ٥٣٥.

<sup>2</sup>ياقوت الحموي. معجم الادباء. ج. ١٢. - ص. ١٩٢.

<sup>3</sup>ياقوت الحموي. معجم الادباء. ج. ١٢. - ص. ١٩٣.

<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٣٧.

<sup>5</sup>ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ٣. - ص. ٧٩-٨٠.

<sup>6</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٩١.

онҳо қиссаи ишқи ӯ бо шоираи арабизабон Фазл-ул-Басрия (ваф. 874/1469) таҷассуми бадеии худро ёфтааст. Бино ба ишораи аглаби манбаъҳо, ӯ ду китоб дар бораи фазилатҳои эронӣ ва бартари Аҷам бар Араб таълиф карда, ҳамчунин соҳиби девони номаҳо будааст, ки теъдоде аз онҳо дар «Уюн-ул-ахбор», «Заҳр-ул-одоб» ва «Вафаёт-ул-аъён» дарҷ шудааст<sup>1</sup>.

Эҷодиёти шоир ва адиби арабизабони асри IX Аҳмад ибни Яҳё ибни Ҷобир ибни Довуди Балозурӣ (ваф.с.891) низ бо анъанаҳои адабиёти тоисломии эронӣ робитаи қавӣ дошт.

Балозурӣ аслан эронитабор буда, дар оғози қарни IX таваллуд шудааст ва дар Бағдод ба камол расидааст. Ҷадди ӯ – Ҷобир дар аҳди Ҳорунарашид (766-809) дабирии волии Миср – Хасибро бар уҳда дошт<sup>2</sup>.

Балозурӣ пас аз касби камол ва иштиҳор ёфтаниш ба ҳайси шоир, адиб ва муаррих ба дарбори халифа Мутаваккил (847-861) пайваст ва аз надимони ӯ гардид<sup>3</sup>. Бино ба ахборе, ки дар «Вафаёт-ул-аъён» нақл шудааст, Балозурӣ пас аз Мутаваккил бо халифа Муътасим (862-866) низ робитаҳои хуб дошта ва аз ӯ бар ивази қасидаҳои ӯ силаҳое гарон мегирифтааст<sup>4</sup>. Дар замони хилофати Муътазз (866-869) Балозурӣ тарбияти фарзанди ӯ – Абдуллоҳро, ки баъдан яке аз шоирон ва суҳансанҷони бузурги араб гардид, бар уҳда дошт. Дар фарҷоми зиндагии хеш Балозурӣ ба бемории васвос мубтало гардид ва дар охири хилофати Муътаид дар соли 892 аз олам ҷашм пӯшид<sup>5</sup>.

Балозурӣ муаллифи теъдоде аз китобҳои адабӣ, таърихӣ ва ҷуғрофӣ буда, ба ҳайсияе аз мутарҷимони осори паҳлавӣ ба забони арабӣ низ шинохта шудааст.

Ба ҳайси шоири арабизабон Балозурӣ «Аҳд Ардашир» (Васиятномаи Ардашер)-ро ба қолаби назми арабӣ дароварда<sup>6</sup>, бо ин хидмате дар ҷодаи хифзу идомаи суннатҳои адабиёти тоисломии эронӣ дар қарнҳои нахустии ислом анҷом додааст.

---

<sup>1</sup> ابن قتيبة. عيون الاخبار. ج. 3. دار الكتاب العربي. بيروت 1418 / 1997. ص. 67؛ الحصرى، القيروانى. زهر الآداب و ثمر اللباب ج. 4. ص. 110-1100.

<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. ص. 125.

<sup>3</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. 89-90.

<sup>4</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. 6. ص. 24.

<sup>5</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. 5. ص. 90.

<sup>6</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. ص. 126.

*Шоирони арабизабони аҳди Тоҳириён.* Таъсис ёфтани давлати Тоҳириён (821-873) ва назму насрро ба забони арабӣ ташчеъ кардани онҳо ба ташаккули адабиёти арабизабон дар марказҳои Эрон ибтидо гузошт. Чанде аз намояндагони сулолаи Тоҳириён ба ҳайси шоирону нависандагони арабизабон шуҳрат доштанд. Аз ҷумла, муаллифони тазкираҳо аз осори манзуму мансури Тоҳир ибни Ҳусайн, Абдуллоҳ ибни Тоҳир, Убайдуллоҳ ибни Абдуллоҳ, Мансур ибни Талҳа ибни Тоҳир ёд кардаанд<sup>1</sup>. Соҳиби «Китоб-ул-ағонӣ» намунаҳои ашъори Абдуллоҳ ибни Тоҳир ва писари ӯ – Убайдуллоҳро зикр кардааст<sup>2</sup>. Убайдуллоҳ ҳамчун хунёгар ва мусиқишинос низ маъруф буд ва ба каламаш рисолае дар илми мусиқӣ бо унвони «Китоб-ул-адаб-ар-рафиъа» тааллуқ дошт<sup>3</sup>.

Тоҳириён таваччуҳи худро ба тамаддуну забони арабӣ пинҳон намедоштанд. Дар баробари ин онҳо муборизаи шуубиёни эрониро ба муқобили Хилофат ва кӯшиши онҳоро баҳри эҳёи анъанаву суннатҳои эронӣ дастгирӣ мекарданд, зеро ҳадафҳои шуубиён ба мақсади истиқлолҷӯии Тоҳириён созгору мусоид буд. Чунин сиёсати фарҳангӣ боис шуд, ки забони форсӣ ва назми форсизабон ба дарбори Тоҳириён роҳ ёбад. Дар натиҷа, дар аҳди Тоҳириён аввалин бор дар таърихи адабиёти халқҳои эронӣ ҳамзистиву муносибати ҳамрӯии назму насри арабизабон ва форсизабон зери пуштибонии расмии дарбор, ки анъанаҳои баъдан то асри XX давом кард, оғоз ёфт. Дар ин давра дар радифи аввалин шоирони порсигӯй Маҳмуди Варроқ ва Ҳанзалаи Бодғисӣ як даста аз шоирону носирони арабизабон зиндагӣ ва эҷод кардаанд. Ҷолиб он аст, ки қисме аз онҳо, аз қабили Аллони Шуубӣ, Фазл ибни Абдуссамади Раққошӣ пас аз қатли Бармакиён Бағдодро тарк гуфта, дар Хуросон ба Тоҳириён пайвастанд.

Дар доираи адабии Тоҳириён суннати сирф эронии гузиниши сарвари доираи адабӣ («маликушшуаро»-и баъдӣ) роиҷ буд ва ин вазифаро шоир ва надими Абдуллоҳи Тоҳирӣ – Авф ибни Муҳаллими Ҳузай (753-тахм. 835) дар уҳда дошт<sup>4</sup>. Муҳтавои ашъори дар сарчашмаҳо сабтшудаи шоирро, ба ҷуз мадҳи Тоҳириён инчунин ситоиши қасрҳои Шозёху Мийён, ки ҳамчун рамзи қудрат ва бузургии давлати тоҳирӣ қаламдод шудаанд, фароҳам овардааст.

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٧٠.

<sup>2</sup>الاصفهانى، ابو الفرج. كتاب الآغانى. ج. ٧. - ص. ١٠١-١٠٦.

<sup>3</sup>الاصفهانى، ابو الفرج. كتاب الآغانى. ج. ٩. - ص. ٤٠-٤٨.

<sup>4</sup>ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. ص. ١٨٦-١٩٣.

Намояндаи дигари адабиёти давраи Тоҳириён – шоир ва нависанда Абуламайсал Абдуллоҳ ибни Хулайд (ваф. с. 854) аслан аз Рай буд<sup>1</sup>. Аз осори ӯ, ба чуз аз ашъори пароканда ҳамчунин китобе оид ба илми забон боқӣ монда ва рӯи чопро дидааст<sup>2</sup>.

Ба гурӯҳи шоиру нависандагоне, ки аз сарпарастии Тоҳириён бархурдор буданд, Аҳмад ибни Абӯҳолиди ЗарирваМуҳаммад ибни Алии Синӣ низ дохил буданд. Намунаҳои ашъор ва баъзе лаҳзаҳои ҳаёти ин ду шоир дар «Муъҷам-ул-удабо»-и Ёқут ва «Табакот уш-шуаро»-и Ибни Муътаз зикр шудаанд<sup>3</sup>.

Ба гурӯҳи шоирони давраи Тоҳириён ҳамчунин шоира Сакан (ваф. с. 844) дохил буд. Дар сарчашмаҳо канизаки Маҳмуди Варроқ будани ӯ зикр шудааст. Бино бар «Табакот-уш-шуаро»-и Ибни Муътаз, Сакан соҳибчамолу фозила ва шоираи хуб буда, бар замми ин овози фораму дилнишин доштааст. Аз ахбори тазкираҳо пайдост, ки Маҳмуди Варроқ ва Сакан ҳамдигарро дӯст медоштаанд. Вақте ки яке аз Тоҳириён Саканро ба канизӣ меҳоҳад бихарад, аз муносибати ошиқонаи онҳо боҳабар мегардад, канизакро ба Маҳмуди Варроқ мебахшад. Намунаҳои ашъори Сакан дар тазкираҳо зикр шудааст ва аз шоираи хуб будани ӯ гувоҳӣ медиҳад.

*Шоирони арабизабон дар аҳди Саффорӣён.* Пас аз инқирози давлати Тоҳириён ва ба майдон омадани Саффорӣён вусъати адабиёти арабизабон то андозае маҳдуд гардид, вале аз байн нарафт. Ба Саффорӣён алоқаманд будани фаъолияти шоир ва котиби маъруфи арабизабон – Иброҳим ибни Мамшоди Мутаваккилӣ далел бар он аст, ки назму насри арабизабон дар дарбори Саффорӣён низ, сарфи назар аз он ки муаррихон ва тазкиранигорон онҳоро ба забони арабӣ ноошно донистаанд, мавқеъ дошт. Иброҳим ибни Мамшод зодаи Исфаҳон буд ва дар хилофати Мутаваккил (847-861) ба дараҷаи сардабир ва надими ӯ расида буд. Нисбати «Мутаваккилӣ» доштаниаш низ аз ҳамин ҷост. Пас аз кушта шудани халифаи мазкур Иброҳим ибни Мамшод ба Саффорӣён пайваст ва аз эҳтирому инояти Яъқуб ибни Лайс (867-879) бархурдор гашт. Аз номи Яъқуб шоир ба халифа Муътаmid (870-892) рисолаи манзуми машхуре навиштааст, ки он дар рӯҳи анъанаҳои ашъори шуубиёни пешин эҷод шудааст<sup>4</sup>.

<sup>1</sup> ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. - ص. ۲۸۷-۲۸۸.

<sup>2</sup> بروكلمان، كارل. تاريخ الادب العربي. ج. ۲. - ص. ۲۵۷.

<sup>3</sup> ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. - ص. ۳۰۴-۳۰۵؛ ياقوت

الحموى. معجم الادباء. ج. ۳. - ص. ۱۵-۲۶.

<sup>4</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ۲. - ص. ۱۶-۱۷.

Ҳамин тавр, аз охири садаи VII то охири садаи IX шоирони эронинажоди зиёде дар эҷоди назми арабизабон ширкат варзидаанд. Ба ин маънӣ, намояндагони халқҳои эронӣ яке аз офарандагони асосии назми арабизабони асрҳои VIII-IX буданд. Вале мақом ва нақши шоирони эронинаждо дар равнақи назми арабизабон танҳо вусъати доираи иштироки онҳо муайян намекунад. Муҳимтар аз ин он аст, ки дар натиҷаи иштироки шоирони эронинаждо дар шеъри арабизабон мазмуну оҳанг ва воситаҳои нави тасвири бадеӣ, ки хоси адабиёту фарҳанги тоисломии эронӣ буданд, нуфуз пайдо карданд.

## **2.2. ОҲАНГҲОИ ЭРОНӢ ДАР ШЕЪРИ АРАБИЗАБОНИ САДАҲОИ VIII-IX**

Шоирони эронинаждо анъанаҳои назми арабро дар ниҳояти камол омӯхта ва дар эҷодиёти худ ба онҳо пайравӣ мекарданд. Аз ин ҷост, ки номи ағлаби онҳо дар сарҳатти шеъри арабии қарнҳои нахустӣ ислом ба ҳайси устодони назми даврон қарор дорад. Дар баробари ин, шоирони мазкур ҳамонро зода ва парвардаи муҳити фарҳангии эронӣ буданд. Аз ин рӯ, дар ашъори онҳо унсурҳои тамаддун ва суннатҳои адабиву бадеии халқҳои эронӣ бо анъанаҳои назми араб омезиш ёфта, завқуқариҳа ва андешаву афкори эронӣ дар ҷаҳорҷӯби вазну қофияи шеъри арабӣ зуҳур кардааст.

### **2.2.1. Оҳангҳои ватанпарастӣ ва ғояҳои шуубӣ дар назми арабизабон**

Аксари шоирони эронинажоди садаҳои VIII-IX пайрави неҳзати шуубия буданд ва дар ашъори худ марому мақсадҳои онро инъикос кардаанд. Аз ин ҷост, ки дар назми арабизабони давраи мазкур талқини ғояҳои шуубия, ифодаи фикру ақидаҳои ватанпарастиву эрондӯстӣ ва баёни ҳусни тавачҷуҳ ба гузаштаи пурифтиҳори Эрон вусъат пайдо карданд.

Яке аз оҳангҳои маъмултарини ашъори дар равияи шуубия сурудаи шоирони арабизабон ифтиҳор аз аслу насаб ва мадҳи аҷдоди эронии худ аст. Оҳанги мазкур дар шароити ҳукмфармоии сиёсӣ ва мазҳабии арабҳо, ки ба бартариву афзалияти худ нисбат ба дигар халқҳо исрор мекарданд, ранги ошкоро зиддихилофатӣ ва ғошқунанда касб мекард. Онро низ бояд ба назар гирифт, ки дар равияи навъи маъмули назми араб – ғажрия ва дар қолаби қасидаҳои

арабӣ пайрезӣ шудани ифтихорномаҳои шоирони шуубимазҳаб рӯҳи шикастнопазири эрониро боз ҳам нишонрастар ва хадафгиртар ифода мекард. Аз ҷумла, Исмоил ибни Ясор аз асли эронии худ ифтихор карда ва байни вожаҳои «форсӣ» ва «форис» айният дидааст:

ماجدٍ مُجْتَدِيٍّ كَرِيمِ النَّصَابِ رَبِّ خَالٍ مُتَوَجِّحٍ لِي وَعَمِّ  
مِضَاهَاةٍ رَفَعَتِ الْأَنْصَابَ إِنَّمَا سَمِيَ الْفَوَارِسَ بِالْفَرَسِ  
Ҷон, бингар, ки басест маро холу аммҳои тоҷвар,  
Асилзодаву наҷибу шарафманду номвар,  
Чобуксаворони далерро «форис» ба маҳзи «форсӣ» гуфтаанд,  
Зеро ки дар начобатанд ҳар ду ба ҳам баробар<sup>1</sup>.

Башшор ибни Бурд низ дар ашъораш борҳо бо асли эронӣ, дақиқтараш, хуросонии худ ифтихор кардааст:

وَأَدِي الْمَسْعَاةِ فَرَعِي قَدْ سَبَقَ مِنْ خُرَاسَانَ وَبَيْتِي فِي الدَّرِي  
Аз Хуросонам, аҷдодам соҳиби шаъну шавкат,  
Дар нақӯкорӣ барам ман гӯйи сабқат<sup>2</sup>.

\*\* \*

كِرَامٍ، وَفَرَعِي فَهْمٌ نَاضِرٌ بَسَقَ وَ إِنِّي لَمِنَ قَوْمِ خُرَاسَانَ دَارُهُمْ  
Ман аз он қавми родмардонам, ки Хуросон маскани онҳост,  
Гӯй, онҳо дарахтанду ман шоҳае сарсабз аз он дарахт<sup>3</sup>.

Шоир Абӯяъкуби Хураймӣ аз нажоди эрониву асли суғдии худ ифтихор кардааст:

عَرَقِ الْأَعَاجِمِ جَلْدًا طَيْبَ الْخَبْرِ أَنِي أَمْرُ مِنْ سِرَاةِ الصَّغْدِ الْبِسْنِي  
Ман марде аз озодағони Суғдам,  
Рангу пӯстам аз нажоди поки аҷамист<sup>4</sup>.

Дар шеъри дигар шоир асли суғдии худро бартар аз насаби арабӣ доништааст:

عَلَى كُلِّ فَرَعِي التَّرَابِ لَهُ أَصْلٌ هُمْ فَاعْلَمُوا أَعْلَى أَصْلِي الَّذِي مِنْهُ مِنْبَتِي  
وَلَمْ تَشْتَمَلْ جَرْمَ عَلِيٍّ وَلَا عَقْلَ وَ مَا ضَرْنِي أَنْ لَمْ تَلْدُنِي يَخَابِرُ

<sup>1</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ٤٠ - ص. ٤١١.

<sup>2</sup>بشاربنبرد. ديوان. ج. ٤٠ - ص. ١٣٤.

<sup>3</sup>بشاربنبرد. ديوان. ج. ٤٠ - ص. ١٣٥.

<sup>4</sup>الخرمى، ابويعقب. ديوان. بيروت، ١٩٧١ - ص. ٣٨.



Сугдиён – бидонед инро! – решаи мананд, ки аз он рустаам,  
Ҳар дарахтеро дар хок решае ҳаст.  
Боке надорам аз он, ки зодаи Юҳобир нестам,  
На ба Ҷарму не ба Уқл нисбате надорам<sup>1</sup>.

Шоирони шуубимазҳаб дар мавриди ифтихор аз аслу насаб аксаран худро аз нажоди шоҳони эронӣ донистаанд ва ҳатто қайсарони Руму хоқонҳои Туркро гоҳе ақрабони хеш хондаанд. Чунончи, Башшор гуфтааст:

عَنْى جَمِيعُ الْعَرَبِ هَلْ مِنْ رَسُولٍ مُخْبِرٍ  
وَ مَنْ نُؤَى فِي التُّرْبِ مَنْ كَانَ حَيًّا مِنْهُمْ  
كَسْرَى، وَ سَاسَانَ أَبِي جَدِّي الَّذِي أَسْمُو بِهِ  
عَدَدْتُ يَوْمًا نَسَبِي وَ قَيْصَرَ خَالِي إِذَا

Кучост он қосиде, ки хабари ман расонад ба чамеъи аъроб,  
Ҳам ба он, ки зинда дар рӯи замин асту ҳам ба он, ки ёфта маскан  
зери тӯроб.

Ҷадди ман, ки сарфарозӣ дорам аз ӯ, Хусрав асту Сосон-падар  
В-ар аҷлод чун бишмарам, донӣ, ки хол аст маро қайсар<sup>2</sup>.

Абӯяъкуби Ҳураймӣ низ гуфтааст:

وَ خَاقَانَ لِي لَوْ تَعَلَّمِينَ نَسِيبَ وَ انْ أَبِي سَاسَانَ كَسْرَى بِنِ هَرْمَزِ  
Падарони ман – Хусрав писари Ҳурмузи Сосон аст,  
Ва Хоқон - гар ту донӣ, - хеши ман!<sup>3</sup>

Дар фахрияи Аллони Шуубӣ омадааст:

غَرَّرَ زَهْرَ مَقَاوِيلِ كَسْرَوِيَّاتِ ابوتنا

Падари мо Хусравонанд, ҳамон шаҳрёроне,  
Ки сафедрӯву кушодазабону арҷманд буданд<sup>4</sup>

Ва ё дар шеъри Мутаваккилӣ омадааст:

وَ حَازَ ارْثَ مَلُوكِ الْعَجْمِ انا ابن الاكارم من نسل جم

Ман зодаи родмардонам аз дудмони Ҷам,  
Вориси тахту тоҷи шаҳрёрони Аҷам<sup>5</sup>.

<sup>1</sup> الخريّمى، ابويعقّب. ديوان. - ص. ۴۹-۵۰.

<sup>2</sup> بشار بن برد. ديوان. ج. ۱. - ص. ۳۸۹.

<sup>3</sup> الخريّمى، ابويعقّب. ديوان. - ص. ۱۴.

<sup>4</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ۱۲. - ص. ۱۹۵.

<sup>5</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ۱۲. - ص. ۱۸.

Албатта, чунин «насабномаҳо» ба воқеияти аслу ачдоди шоирони мазкур айнан мувофиқат намекарданд ва онҳоро набояд ҳарф ба ҳарф чун ҳақиқати ҳол қабул кард. Баръакс, худро аз дудаи шаҳрёрони эронӣ қаламдод кардани шоирон маънои рамзӣ дошта, ғараз аз он ифодаи ду мазмун буд: якум, пайвастагии ногусастани шоир бо фарҳанг ва тамаддуни эронӣ: дувум, дурӣ чувстани ӯ аз мансубият ба аъроби бадавӣва анъанаву суннатҳои тоисломии арабӣ. Яъне, вақте Башшор, Хураймӣ ва шоирони дигар Хусравро падари худ мехонанд ва қайсар ё хоқонро хеш медонанд, ин маънои онро дорад, ки онҳо бо асли эронии худ менозанд, алоқамандие бо тамаддунҳои румиву туркӣ дошта метавонанд, вале нисбате ба фарҳангу тамаддуни тоисломии аъроб надоранд.

Дар ашъори шоирони арабизабон ифтихор аз аслу наҷоди худ бо ситоиши тамаддуни эронӣ, рӯҷӯ ба гузаштаи пуршукӯҳ ва ёдоварӣ аз воқеаҳои хотирнавози таърихи тавҷам аст. Таърихи Эрон, бавижа шоҳаншоҳии Сосониён моёи ифтихори шуубиён буд ва дар муоразаи адабӣ бо арабҳо ҳамчун муттақои қавӣ хидмат мекард. Ин буд, ки шуубиён ба гузаштаи на чандон дури таърихи Эрон мурочиат мекарданд, дар ситоиши он ба муболиға роҳ медоданд, аз он барои дифоъ аз шарафи худи ҳамқавамонашон далелу бурҳон мечустанд. Дар натиҷа, дар ашъори онҳо рӯҷӯ ба гузашта ва ситоиши он ба хотири изҳори афсӯсу надомат ва инъикоси аҷзу нотавонии кунунӣ набуд, балки чун воситаи мубориза ва эътирози шоирона бар зидди истилогарон хидмат мекард. Ин мазмунро дар фаҳрияи Исмоил ибни Ясор, ки худро ворису ҳомии азамати гузаштаи ниёгонаш донистааст, метавон пай бурд:

أصلي كريم و مجدى لا يقاسن به	ولى لسان كحد السيف مسموم
أحمى به مجد أقوام ذوى حسب	من كلّ قرم بتاج الملك معوم
جحا حج ساذة بلج مرازبة	جرّد عتاق مسامح مطاعيم
من مثل كسرى و سابور الجنود معا	والهزمزان لفجر أو لتعظيم
أسد الكتائب يوم أروع إن زحفوا	و هم اذلوا ا ملوك الترك و الروم

Наҷоди ман некӯсту азамати қавми ман беназир,

Забонест маро, ки гӯӣ, теғи заҳрогин аст.

Дифоъ кунам ман кунун бо ин забон,

Аз шухрати ҳамқавамони худи тоҷварони номвар,

Ки ҳама асилзода буданду кариму чобук.

Ва саховату меҳмоннавозӣ аз сифоти онҳо буд.

Кист, бигӯӣ, бо Хусраву Шопури лашкаркашу Хурмузон

Бошад баробар дар бузургиwu ифтихор?

Онҳо ҳангоми ситез, гар ҳамла кунанд, шабеҳи шеронилашкаранд,

Ҳамон шероне, ки Турку Рум аз дасти онҳо хор гашта буданд<sup>1</sup>.

Ҳамин гуна оҳангҳо дар шеъри Ҳураймӣ, ки сабаби эҷодаш воқеае аз рӯзгори шоир будааст, садо медиҳанд. Иззати нафси озордидаи Ҳураймӣ эҳсосоти эрондӯстии ӯро барангехтааст ва шоир аз замоне, ки қабоили араб мутеъи Сосониён буданд, ёд кардааст. Ҳамзамон ӯ бо шуҳрати Марву Балх, ки на танҳо гаҳвораи тамаддуни қадими эронӣ буданд, балки дар ҳаёти фарҳангиву адабии халқҳои эронӣ пас аз ислом низ мавқеи намоён доштанд, ифтихор кардааст:

بقا ليقلا و المقربات تثوب	الا هل اتى قومي منكري و مشهدي
و قحطان منها حالب و حليب	تداعت معد شيبها و شبابها
حسام رقيق الشفرتين خشيب	لينتهبوا مالي و دون انتهابه
لهم حسب في الاكرمين حسيب	و ناديت من مرو و بلخ فوارسنا
لنا طابع طوع القياد جنيب	ملكنا رقاب الناس في الشرك كلهم

Ало! Расидааст оё ба хешонам хабари набарди ман

Дар Қолиқало, он дам, ки аспони хушзот бармегаштанд?

Қабилаи Маъад пиру чавони худро фарёд кард,

Қабилаи Қаҳтон – кӯдакони ширхораву пирони худро,

То ба яғмо баранд моли маро, лек монетҳои яғмо

Теги дудами буррову мучалло.

Нидо кардам ман аз Марву Балх саворагони мохирро,

Ки онҳоро байни бузургон шарафу шуҳрат аст

...То зуҳури ислом ҳамагон бандаи мо буданд,

Фармони моро мисли аспии ромшудае, ки мутеъи лачом аст, иҷро мекарданд<sup>2</sup>.

Халқҳои эронӣ то истилои араб таҷрибаи сиёсату маданияти фаровоне андӯхта буданд, ки исботи бартари он аз тарзи зиндагии одӣ ва маданияти содаву бетақаллуфи қабилаҳои аъроб аз нигоҳи таърих ба далелу бурҳон ниёз надошт. Шоирони шуубимазҳаб инро ба асос гирифта, тамаддуни эрониву арабиро ба доираи муқоиса мекашиданд, аввалиро ситоиш ва дувумро

<sup>1</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ۴. - ص. ۴۲۳.

<sup>2</sup>الخرىمى، ابوعقب. ديوان. - ص. ۱۴-۱۵.

мазаммат мекарданд. Ин амр боис шуд, ки муқобала ва муқоисаи ботиниву зоҳирии Ачаму Араб яке аз оҳангҳои маъмули назми шуубия гардид. Як идда ашъори шоирони шуубимазҳаб тақрибан дар ҳамин заминаи мундариҷавӣ тарҳрезӣ шудаанд, ки шеърӣ зерини Башшор яке аз онҳост:

<p>وَ عَنهُ حِينَ بَارَزَ لِلْفَخَارِ تَنَازَعْنِي الْمَرَازِبُ مِنْ طَخَارِ وَ نَشْرَبُ فِي اللَّحَيْنِ وَ فِي النَّظَارِ وَ فِي الذِّيْبَاجِ لِلْحَرْبِ الْكِبَارِ وَ سَقَلْنَا بِالْبَطَارِيقِ الْكِبَارِ وَ نَادَمْتُ الْكِرَامَ عَلَى الْغَفَارِ وَ أُعْطِيتِ الْبَنَفْسِجَ فِي الْخُمَارِ بَنَى الْإِحْرَارَ حَسْبُكَ مِنْ خَسَارِ شَرَحْتُ الْكَلْبَ فِي ذَاكَ الْإِطَارِ وَ لَا تُعْنَى بِذِرَاعِ الدِّيَارِ وَ يُنْسِيكَ الْمَكَارِمُ صَيْدُفَارِ تَرُوحُ إِلَيْهِ مِنْ حُبِّ الْقِتَارِ عَلَى مِثْلِي مِنَ الْخَدَثِ الْكِبَارِ فَلَيْتَكَ غَائِبًا فِي حَرِّ نَارِ</p>	<p>سَأخْبِرُ فَاخِرَ الْأَعْرَابِ عَنِّي أَنَا أُبْنُ الْأَكْرَمِينَ أَبَا وَ أُمَّأ نُعَاذِي الدَّرْمَكَ الْمَنْفُوطَ عِزًّا وَ تَرْكِبُ فِي الْفَرِيدِ إِلَى النَّدَامِي إِذَا انْقَلَبَ الزَّمَانُ عَلَا لِعَبْدِ أَحِينٍ لَيْسَتْ بَعْدَ الْعُرَى خِزًّا وَ نَلْتُ مِنَ الشُّبَارِقِ وَ الْفَلَايَا تُفَاخِرُ يَابْنَ رَاعِيَةَ وَ رَاعِ وَ كُنْتُ إِذَا ظَمْتُ إِلَى قِرَاحِ وَ تَقَضَّمُ هَامَةَ الْجُعْلِ الْمَصَلَى وَ تُذَلِّجُ لِلْقَتَا فِذْ تَدْرِيبِهَا وَ تَغْبِطُ شَاوَى الْحَرْبَاءِ حَسَى وَ فَخْرُكَ بَيْنَ يَرْبُوعِ وَ ضَبِّ مَقَامِكَ بَيْنَنَا دَنْسٌ عَلَيْنَا</p>
---	---

Меҳоҳам ба араби худсито бифаҳмонам кӣ будани худрову ўро, чун ў даҳон ба лоф кушодааст.

Ман вориси падару модари киромам. Дар Тахористон марзбонон ҳамзӯр бо ман буданд.

Ғизои мо буд кулчаҳои ширмол в-аз соғари симин буд шурби мо.

Хилъати мурассаъ ба ҷавоҳир либоси базмии мо буд. Ҷомаи фоҳири мо буд рашки бурди ямонӣ.

Рӯзгор, ки кунун дигар гаштааст, ғуломро ба арш нишонду волоғуҳарро ба фарш.

Магар акнун, пас аз он, ки бараҳна будӣ ва имрӯз ҳарир ба бар кардаӣ ва май бо каримон мепаймой.

Ва дирҳаме чанд дар чайб пайдо кардаӣ, қалъа меҳӯрӣ ва хумор бо майи бунафш мешиканӣ,

Ту, эй ҷӯпонзода, магар пеши қавми озодагон меболӣ? Бас аст, сухан бар газофа мағӯй!

Магар фаромӯш кардӣ, ки пештар, чун ташна ба оби гувор шудӣ, сагро дар нӯшидани оби гандидаи назди манзилат шарик будӣ?

Хӯрдани сари гамбуски бирён туро одат буд ва аз гӯшти дурроҷ ҳазар доштӣ.

Шаб ба шикори хорпушт мебаромадӣ, рӯз сайди муш туро аз корҳои нек пайваста дур медошт.

Ҳасад мебурдӣ ба оне, ки бӯқаламун бирён мекард ва бӯй бурда ба наздаш ҳозир мешудӣ.

Болидани ту назди ман болидани муши даштиву калтакалосро мемонад.

Вучуди ту байни мо нанг аст. Эй кош, коми оташи дӯзах туро фурӯ мекашид<sup>1</sup>.

Дар байтҳои Саҳл ибни Ҳорун низ исботи баргари тамаддуни эронӣ бар арабӣ ба муқоисаи зоҳираҳои маишату рӯзгор ва пурсише, ки посухаш аён аст, асос ёфтааст:

اجعلت بيتا فوق رابية  
كبييت شعر وسط مجهلة  
فرع النجوم كأنه نجم  
بفئانه الجعلان و البهم؟

Оё кохе баландмартаба, ки сар ба ахтарон кашида ва монанди ситора аст,

Ва чодари пашмин, ки дар мобайни биёбони хушк қарор гирифта ва чуялу ҳашарот дар соҳаташ вучуд доранд, якест?<sup>2</sup>.

Инъикоси бадеии ғояҳои шуубӣ дар ашъори Абӯнӯвос низ мисли шоирони дигар ба муқобалаву муқоисаи тарзи зиндагӣ, анъанаву суннатҳо ва фарҳангу тамаддуни Аҷаму Араб асос ёфта буд. Фарқ дар он аст, ки дар шеъри Абӯнӯвос оҳангҳои шуубӣ ва зиддиарабӣ бо ситоиши маю майпарастӣ ва ақидаҳои ҳаётдӯстонаи риндӣ дар ҳам омадаанд. Тараннуми фараҳу хушиҳои зиндагӣ, ки ба чунин шеърҳои Абӯнӯвос хос аст, чун эътироз ба муқобили расму одатҳои арабии бадавӣ садо медиҳанд:

وخللراكب الوجناء أرضاً  
بلاد نبثها عسراً وطلح  
تخبُّ بها النجبية والتجيبُ  
ولا تأخذ عن الأعراب لهواً  
وأكثر صيدها ضبعٌ وذيبٌ  
دع الألبان يشربها رجالٌ  
ولا عيشاً فعيشهمٌ جديبٌ  
إذا راب الحليب قبل عليه  
رفيق العيش بينهمٌ غريبٌ  
فأطيب منه صافيةٌ شمولٌ  
فلا تُخرجُ فما في ذلكٌ حوبٌ  
يطوف بكأسها ساقٌ أديبٌ

Бигзор, то ба уштурсаворон насиб кунад замине, ки дар он танҳо уштурони нару мода мечаранд.

Ва маконе, ки дар он чизе, ба ҷуз шӯраву хор нарӯяд ва сайде, ба ҷуз кафтору гург набошад.

На ба лаҳву не ба айши аъроб пайравӣ макун, зеро зиндагии эшон ҳамсони шӯрабум аст.

Шири шутурро бигзор онҳое бинӯшанд, ки латифтабиатон байни эшон бегонаанд.

<sup>1</sup>بشاربنبرد. ديوان. ج. ۳۰ - ص. ۲۰۷.

<sup>2</sup>الحصرى، القيروانى. زهر الآداب و ثمر الالباب. ج. ۱ - ص. ۱۹۰.

Шири шутур гар ба таъбат нафорад, бавл кун ба он ва бок мадор,  
ки гуноҳ набошад ин кор.

Бехтар аз шир аст шароби ноби рӯхафзо, ки сокии муаддаб дар  
даври маҷлис бипаймояд<sup>1</sup>.

Дар ин қабил шеърҳои Абӯнӯвос одатан май чун зоҳираи  
тамаддуни эронӣ ва рамзи зиндагии борафоҳият ба тарзи зиндагонии  
дурушту муҳити хушки бодияи араб муқобил гузошта шудааст:

كانت على عهد نوح في	من حُرِّ شحنتها، والأرضَ طوفانٌ
سفينته	
فلم تزل تُعْجِمُ الدنيا، وتعجمها	حتى تَحْيِرُها لِلْخَبءِ دهقان
فَصانها في مغارِ الارض	على الدَّفِينَةِ أَزْمَانٌ وَأزْمَانٌ
فاختلقتْ	
ببلدةٍ لم تَصِلْ كُلُّبٌ بِها طَنْباً	إلى خِباءِ، ولا عَبَسَ وَذَبِيانٌ
لَيْسَتْ لَزْهَل، ولا شَيْبَانِها	لكنها لَبْنى الاحرارِ اوطانٌ
وَطَنْاً	
أَرْضٌ تَبْنى بِها كَسْرى	فما بها من بنى الرَعناء انسانٌ
دساكره	و لا بها من غداء العرب خطبانٌ
و ما بها من هشيم العرب	
عرفجة	
لكن بها جنارٌ قد تَفَرَّعة	آسٌ، وكَلَّه وَرَدٌ وسوسانٌ

Ин майи гулгун беҳтарини он чизҳое буд, ки дар аҳди Нӯҳ ба  
сафинаи ӯ ҳамл гардид, то аз тӯфон халосӣ ёбад.

Ва он дар дастхуши ҳаводис боқӣ монд то даме, ки деҳқони эронӣ  
ҳифз карданаширо ихтиёр кард.

Ва дар зери замин пинҳон кард. Солҳо гузаштанду он мадфун  
буд,

Дар диёре, ки дар он на Калбу на Абсу на Зубёнтаноби хаймаи  
худро накашидаанд,

Ва Зухлу Шайбонро низ дар он манзил набуд, балки Банӣ Аҳроп  
(-эрониён)-ро он ватан буд.

Дар он диёр қасрҳое қомат афрохтаанд, ки Хусрав сохтааст. Дар  
он макон аз Банӣ Раъно (-арабҳо) нафаре вонахӯрад.

Афрача, ки аз рустаниҳои араб аст, он ҷо дучор наояд. Ва аз  
ғизои араб хутбон низ он ҷо бегона аст.

<sup>1</sup>أبونواس. ديوان. ص. ۳۷-۳۵.

Валекин он чо гулнор асту болои он гули ёс ва дар атрофи онҳо садбаргу савсан бишкуфтаву хуррамӣ доранд<sup>1</sup>.

Муборизаи шуубиён ба муқобили Хилофат баъзан шоирони эрониҷадро ба тавсифи расму ойин ва унсурҳои эътиқодоту дини қадимаи эронӣ водоштааст. Гузашта аз ин, баъзе шоирони шуубимазҳаб муқаддасоти динии халқҳои эрониро қушоду равшан ба ислом муқобил гузоштаанд. Аз ҷумла, Башшор ибни Бурд оташро, ки эронӣни қадим парастишаш мекарданд, аз ҳок афзалтар донистааст:

الارض مظلمة والنار مشرقة والنار معبودة مذ كانت النار

Замин тираву оташ равшан аст. Аз он даме, ки оташ пайдо шуд, он мавриди парастиш буд<sup>2</sup>.

Дар байтҳои дигари ҳамин шоир Иблису Одам ва оташу ҳок ба ҳам муқобил гузошта шудаанд:

إبليسُ خير من أبيكم آدم  
فابتبهاوا يا معشر الفجار  
إبليس من نار و آدم من طينة  
والأرض لا تسمو سُمُو النار

Иблис бартар аз падари шумо – Одам аст,

Бедор шавед, эй ҷамоати фочирон!

Иблис аз оташу Одам аз ҳок аст,

Ҳокро баландии оташ набувад!<sup>3</sup>.

Оҳангҳои эътироз ба муқобили расму русуми динӣ дар ашъори шоирони шуубӣ, бавижа Абӯнӯвос, инчунин ба воситаи муқобилгузории май ва муқаррароти шариати ислом ифода ёфтаанд. Азбаски шариат нӯшидани майро манъ карда буд, дар ашъори «майгусорона»-и Абӯнӯвос эътироз ба муқобили ин таҳрим ва даъват ба риоя нанамудани он шунида мешавад. Оҳангҳои васфи маю майпарастӣ ва беътиной нисбат ба муқаррароти динӣ дар ин қабилшеърҳо маъноӣ васеътаре касб кардаанд ва чун мазаммати расму ойинҳои бадавиву ситоиши тамаддуни эронӣ садо додаанд:

أبخلُّ على الذار بتكليم  
فما لديها رجع تسليم  
والعن غراب السبين بغضاً له  
فاتنه داعية الشوم  
وعج إلى النرجس عن غوسج  
والأس عن شبح وقيصوم

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٦٠٦-٦٠٧.

<sup>2</sup> بشار بن برد. ديوان. ج. ٤٠ - ص. ٩٣.

<sup>3</sup> بشار بن برد. ديوان. ج. ٤٠ - ص. ٩٢.

لا تمتنع عنها لتحريم  
عاش طليحاً عيناً محروم

واغذ الى الخمر بابانها  
فمن عدا الخمر الى غيرها

Дар назди харобаҳои манзил сухан камтар бигӯ, зеро аз ду сар ба салому таҳийётат ҷавоб нахоҳӣ гирифт.

Гуробулбайро аз бугзе, ки нисбат ба ӯ дорӣ, лаънат бикун, зеро дидани ӯ аломати бадбахтиҳост.

Ба наргис майл бикун, аз авсаҷ рӯй бипеч, гули ёсро аз шайху қайсум афзал бидон!

Сабӯҳӣ бизан дар сабоҳу худдорӣ макун аз хӯрдани май, аз таҳрими он бок мадор!

Ҷар кас, ки аз май чизеро бартар бидонад, ҳаққо ки бетолеъу бадбуна бошад!

Муқобилгузори Аҷаму Араб дар ашъори шуубия танҳо бо муқоисаи тарзи зиндагӣ, расму русум ва зоҳираҳои маишату дини эронӣ ва арабҳо маҳдуд нашудааст, балки аз сатҳи маишаву мазҳабӣ ба сатҳи эстетикӣ бардошта шуда, дар муносибати шоирони эронинаҷод ба суннатҳои назми ҷоҳилия низ зоҳир шудааст. Назми ҷоҳилия мояи ифтихори арабҳо буд ва суннатҳои он мавриди парастӣ пайравии шоирони араби асрҳои VIII-IX низ қарор гирифта буд. Шоирони суннатгарои давраи мазкур қасидаҳои худро бо мавзӯи маъмули назми ҷоҳилият - «атлолу даман», яъне, тавсифи бо харобаҳои манзили маъшуқаи маҳмилбаста рӯ ба рӯ шудани ошиқ дар бодия, рӯзҳои бо маъшуқа гузаронидаро ба ёд овардан ва гиристанӣ ӯ дар сари осоре, ки пас аз кӯч бастанӣ қабилани маъшуқа боқӣ мондааст, сар мекарданд. Суннатгароии мазкур дар шароити таракқии пуравчи шаҳрҳои тамаддуни шаҳрӣ аз тақлиди маҳз ба гузашта беш набошад ҳам, дар айни замон рӯҳи арабиву бадавиро дар назми асрҳои VIII-IX ифода мекард ва аз ҷониби муҳолифони шуубия тақвият меёфт. Ин буд, ки шоирони эронинаҷод дар ашъори худ мавзӯҳои қасидаҳои назми ҷоҳилия, пеш аз ҳама «атлолу даман»-ро ҳадафи муоразани адабии худ бо арабҳо қарор дода, аз он бо истехзову тамасхур ёд кардаанд.

Дар ин қабил шеърҳо эҳсоси ватанпарастии шоирони эронинаҷод дар омезиши оҳангҳои шуубӣ бо майлонҳои зидди суннатгароии арабӣ зухур кардааст. Ин падида алалхусус ба шеъри Абӯнӯвос хос аст. Дар аксари шеърҳои ӯ масхараву мазоҳи суннат ва қолабҳои

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. -ص. ٥٤٨-٥٤٩.



насиби анъанавии қасидаҳои шоирони ҷоҳилия худ ба анъана табдил  
ёфтааст, ки чанд намунаи зер ба ин далел аст:

وَعَجْتُ اسْأَلُ عَنْ خَمَارَةِ الْبَلَدِ	عَاجَ الشَّقَى عَلَى دَارِ يُسَائِلُهَا
وَلَا شَفَى وَجَدَ مَنْ يَصْبُو إِلَى وَتَدِ	لَا بُرْقَى اللَّهُ عَيْتِي مِنْ بَكِي حَجْرًا
وَبَيْنَ بَاكَ عَلَى نَوِيٍّ، وَمُنْتَضِدِ	كَمْ بَيْنَ مَنْ يَشْتَرِي خَمْرًا يَلْذِبُهَا

Аърбии бадбахт ба сӯи харобаҳои манзил рӯй овард, то ки хабари аҳли он бипурсад. Ман низ аз роҳ ба канор шудам, вале ба хотири пайдо кардани хамморхонаи ин маҳал.

Худо оби чашми ҳамонеро хушк накунад, ки назди ҳар санги манзили таркгуфтаи маъшуқа ашк мерезад. Ва даво набахшад ба дарди ҳамоне, ки аз дидани ҷӯбаки хайма навҳа мекунад.

Аз замин то осмон дон фарқро байни оне, ки шароб харидаву лаззат мебарад аз он ва оне, ки оби дида мерезад бар хандақи атрофи хаймагоҳ<sup>1</sup>.

واقفاً، ما ضرَّ لو كان جلس	قل لمن يبكٍ رسمٍ درسن
واصطبح كرخية مثل القبس	اترك الربيع، وسلمى جانباً

Ба ҳамоне, ки назди осори азбайнрафтаи манзили маъшуқааш рост истода мегиряд, бигӯй, ки нишаста гиря кунад ҳам, зараре намебинад.

Рубъу Салморо як сӯ гузору сабӯҳӣ бикун бо майи кархии оташгуҳар<sup>2</sup>.

Абӯнӯвос дар ашъораш бар зидди мавзӯоти бадавӣ, аз як тараф, ба хотири «куҳна» шудани он дар шароити нави таърихӣ эътироз карда бошад, аз ҷониби дигар, таҷассумкунандаи рӯҳи аслии арабиву бадавӣ будани он мавзӯот эҳсоси шуубии ўро барангехтааст. Ва, баръакс, мавзӯоти «нав»-ро Абӯнӯвос на танҳо ба хотири «нав» буданаш, балки ба сабаби пайванду иртиботи он бо тамаддуни эронӣ дар ашъораш бар мавзӯоти анъанавӣ тарҷеҳ додааст:

يُقَاسِي الرِّيحَ وَالْمَطْرَا	دع الرسم الذي دثراً
م في اللذاتِ والخَطْرَا	وكن رجلاً اضاع العن
وسابورٍ لمن غبِرا	ألم تر ما بنى كسرى
فَراثِ تَفْيَاثِ شَجْرَا	مَنَازِرِهِ بَيْنَ بَجْتَةَ وَال
مَنْ عَنِهَا الطَّلْحَ وَالْعُشْرَا	بَارِضِي بَاعَدَ الرَّحْمَا

Бигзор, ки осори манзили маъшуқа аз боду борон газанд биёбад.

<sup>1</sup> Абӯнӯвос. Дивон. - с. 181.

<sup>2</sup> Абӯнӯвос. Дивон. - с. 366.

Ба сони марде бош, ки илми порсоиро ба лаззату лаҳв иваз кардааст.

Магар намебинӣ коххоеро, ки Хусраву Шопур байни ДаҷлавуФурот зери сояи анбӯҳи дарахтон барпо карда буданд.

Он кохҳо дар заmine қад афрохта буданд, ки Яздон аз он талхаву шӯраро дур карда буд<sup>1</sup>.

Беъятиноӣ нисбат ба насиби анъанавии қасидаҳои чоҳилия дар ашъори шоирони дигари эронинаҷод низ ба чашм мерасад. Чунончи, Башшор ибни Бурд дар байтҳои зер порсоии исломиро чун мавзӯи лоиқи шеър ба ашъори ошиқонаи давраи тоисломӣ тарҷеҳ додааст. Дар ин маврид муносибати нописандонаи шоир нисбат ба суннатҳои ашъори чоҳилия ранги эътирози диниро гирифтааст:

كيف يبكى لمحبس في ظلّول من سيقضى لحبس يوم طويل  
ان في الحشر و الحساب لشغلا عن وقوف بكل رسم محيل

Чӣ гуна метавонад оби дида резад бар сангчаи биркаи назди харобаҳои манзили маъшуқа марде, ки фардои қиёмату ҳисоби аъмолаш ўро дар пеш аст.

Ҳаққо, ки рӯзи қиёмату ҳисоб хоҳири маро нисбат ба таваққуф назди харобаҳои ҳар манзил бештар машғул медорад<sup>2</sup>.

Байти зерини Башшор низ далели беъятиноии ӯ нисбат ба тағаззули шоирони чоҳилия ва «маъшуқаҳо»-и эшон аст:

لَيْسَ مِنِّي الْمَقَامُ أَبْكَى عَلَى الرَّبِّعِ  
إِنَّ فِي نَدْوَةِ الْمَلُوكِ لَشَغْلًا  
خَلَا أَهْلُهُ لِبَتْنِ شَطِيرِ  
عَنْ رِيَابٍ وَ زَيْنَبٍ وَقُدُورِ

Маро нашоҷад гиря кардан бар харобаҳои манзиле, ки маъшуқа онро тарк гуфтааст,

Зеро дар маҳфили шаҳрёрон чизхое муҳимтар аз ёдкарди Рабобу Зайнабу Қазур ҳаст<sup>3</sup>.

Дар байтҳои Хураймии Суғдӣ тафзили хоҳираҳои давраи ҷавонии шоир бар мавзӯи «атлолу даман» оҳанги муоразаи шуубиро касб кардааст:

لم ترعنى دار عفت بالجناب  
انما راعنى لذكرى اى حالى  
دارس آيها كخط الكتاب  
بسجستان خادم الكتاب

Ба вачд наорад маро вохӯрдани манзили ёр дар (води) ал-Ҷаноб,  
Ки осораш мисли хатҳои китоби кӯҳна норавшан гаштаанд.

Лек ба вачд оям ман, чун ёд кунам аз рӯзгори худ

Дар Систон, ки он дам шогирди котибон будам<sup>1</sup>.

<sup>1</sup>أبونواس. ديوان. - ص. ۳۳۸.

<sup>2</sup>بشاربنبرد. ديوان. ج. ۴. - ص. ۱۷۳.

<sup>3</sup>بشاربنبرد. ديوان. ج. ۳. - ص. ۱۸۶.

Дар байни арабҳо аз қадим чунин расм буд, ки ҳар қабила бо фазилатҳои адабу рафтору кирдор, ҷасорату мардонагӣ ва меҳмоннавозии худ фахр мекард. Ин фазилатҳо дар осори шоирону адибони қабила сабт гардида, бо номи «маноқиб»-и қабила, яъне, маҷмӯи хислатҳои неке, ки бо он қабила шуҳрат ёфтааст, ёд мешуданд. Ва, баръакс, нуқсонро айбҳое, ки ба ин қабила муҳолифонаш нисбат меоданд, «масолиб»-и онро ташкил мекарданд. Шуубиёни эронӣ дар асрҳои VIII-IX ин анъанаи арабиро ба муқобили худ арабҳо истифода бурда, силсилаи шеърхоеро офариданд, ки муҳтавои онҳо аз мазаммату таҳқири қабилаҳои арабӣ ва зикри масолиби онҳо фароҳам омадааст. Байтҳои зерини Башшор ибни Бурд намунаест аз ин қабил шеърҳо:

لَهُ نَسَبًا غَيْرَ الَّذِي يَنْسَبُ	إِذَا لَمْ تَرَ الذَّهْلَى أَنْوَكَ فَالْتَمَسْ
كَثِيرٌ وَ لَكِنْ دَرَاهِمُ الْقَوْمِ كَوَكْبُ	وَ أَمَا بَنُو قَيْسٍ فَإِنَّ بَنِي دُهُمِ
هَزَبٌ وَ أَمَا فِي اللَّقَاءِ فَتَعَلَبُ	وَ سَيِّدُ تَيْمِ اللَّاتِ عِنْدَ غَدَائِهِ

Агар дар байни зухлиён касро ёбӣ, ки аҳмақ набошад, пас бидон, ки ӯ аз ин қабила нест.

Банӣ Қайсро набид фаровон аст, вале дирҳами эшон мисли ситора (дастнорас) аст.

Сарвари қабилаи Тайм- ул-лот ҳини ғизо хӯрдан шери жаён, вале дар набард мисли рӯбоҳ аст<sup>2</sup>.

Ҳаҷви қабилаҳои арабӣ ва зикри масолиби онҳо дар шеърҳои шуубии Абӯнӯвос низ аз оҳангҳои маъмул буд. Абӯнӯвос бештар қабилаҳои шимоли Арабистонро мавриди таҳқир қарор додааст, зеро намояндагони онҳо дар набардҳои сиёсии Хилофат чун ҳомилону ҳомиёни рӯҳу манфиатҳои «асил»-и арабиву бадавӣ зухур мекарданд ва аз ин ҷиҳат ба қабилаҳои ҷанубӣ, ки аз қадим бо тамаддуни эронӣ ва империяи Сосониён иртибот доштанд, муқобил меистоданд. Ин амр тобиши шуубии шеърҳои мазкури Абӯнӯвосро возеҳтар гардонидааст:

مَا شَلَّشَلَّ الْعَبْدُ فِي شَوَارِبِهَا	أَمَا تَمِيمٌ فَغَيْرِ دَاخِضَةٍ
مِنَ الْمُخَازِي سُوَيْمَحَارِبِهَا	وَقَيْسَ عَيْلَانَ لَا أُرِيدُ لَهَا
إِلَّا بِحَمَقَانِهَا وَكَأَذْبِهَا	وَمَا لِبَكْرِبْنَ وَائِلِ عَصَمِ

<sup>1</sup> الخريمى، ابويعقوب. ديوان. - ص. ١٩٠.

<sup>2</sup> بشار بن برد. ديوان. ج. ١٠. - ص. ٣٥٨.

Чун сухан дар ҳаққи Тамимиён равад, он чиз бебаҳс аст, ки ғуломе боре ба мӯйлаби онҳо обе нарехтааст (яъне, онҳо табиатан чиркинанд).

Аз бешарафиҳои қабилаи Қайси Айлон ҳамин кофист, ки маҷлисҳои эшон зикр шаванд.

Қабилаи Бакр ибни Воилро мададгору муттақое набошад ба ҷуз аҳмақу дурӯғгӯи ӯ.

Тағлибиён бар атлолу даман ашк резанд, вале ба интиқоми ҷавонмардони худ рӯзи ҷанги Заноиб қодир набошанд<sup>1</sup>.

Ҷар қадар, ки замони истилои араб дуртар мерафт, ҳамон қадар муборизаи халқҳои эронӣ бар зидди Хилофат вусъатноктар ва бошиддаттар мегашт. Ин амр ба инъикоси ғояҳои ватанпарастӣ дар назми шоирони шуубӣ таъсири бевосита мегузошт. Мояи ифтихори шоирони шуубӣ акнун танҳо гузаштаи пурифтхору азамати азбайнафтаи халқҳои эронӣ набуд. Баръакс, аз нимаи асри VIII сар карда воқеоти сиёсии замон, ки аз болоравии нуфуз ва вусъати мақоми унсури эронӣ дар Хилофат шаҳодат меоданд, бештар мавриди тавачҷуҳи шоирон қарор мегирифтанд. Инъикоси бадеии ин воқеот дар шеъри шоирони эронинаҷод оҳанги ошқори шуубӣ ва зиддихилофатӣ касб мекард. Чунон ки маълум аст, Аббосиён маҳз бо ёриву дастгирии қотеи хуросониён ба маснади Хилофат расида буданд ва минбаъд дар давлатдорӣ худ низ ба онҳо таъҷиб мекарданд. Башшор ибни Бурд дар ҷанд шеъри худ ба ин ҳақиқати таърихӣ ишора карда, зимни он Хуросону хуросониёнро, ки бо сарвари Абӯмуслим сипоҳи гароне ташкил ва давлати арабгарои Умавиёнро шикаст дода буданд, ситоиш кардааст:

وَمِنْ خُرَاسَانَ جُنْدٌ بَعْدَ أَجْنَادِ	دُونَ الْخَلِيفَةِ مَنَاطِلٌ مَأْسَدَةٌ
وَسَبَبَتِ الْحَرْبُ نَاراً بَعْدَ إِخْمَادِ	لِللَّهِ دَرَهُمُ جُنْدًا إِذَا حَمِسُوا
إِذَا عَلَا زُرُؤُ اسَادِ لِإِسَادِ	لَا يَفْسَلُونَ وَ لَا تُرْجَى سَقَاطُهُمْ
رَكْضُ الْجِيَادِ وَ هَزَّ الْمُنْصِلُ الْبَادِي	إِنَّا سَرَاةٌ بَنَى الْأَحْرَارُ وَ قَرْنَا

Аз халифа ончунон дифоъ кунем, ки пиндорӣ, ӯ дар паноҳгоҳи шерон аст ва он шерон сипоҳиёни Хуросонанд...

...Зихӣ лашкаршугуфоне, ки чун оташи ҷанг барафрӯхта гардад, Лашкар бишкананду лек худ аз ҳазимат эмин бошанд.

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٨٨-٨٩.

Ҳаққо, ки мо, - чавонмардони Бани Аҳрорро (-яъне, эрониёнро) асптозиву шамшерзанӣ шукӯху салобат бахшидааст<sup>1</sup>.

Мурочиат ба воқеоти сиёсии замон дар ашъори шуубии Абдуллоҳ ибни Тоҳир – яке аз намояндагони бузурги хонадони Тоҳириён оҳанги ифтихор аз нажоду насаби эрониро касб карда, ҳамчун василае барои мадҳи хуросониён хидмат кардааст. Мояи ифтихори шоир иштироки падараш – Тоҳир ибни Ҳусайн ба ҳайси сарлашкар дар воқеаҳои хунини соли 813 аст. Дар ин сол Маъмун, ки модараш эронӣ буд ва худ низ дар байни аъроб ба эронгароӣ шухрат дошт, бо ёрии сарбозони хуросонии Тоҳир ибни Ҳусайн шаҳри Бағдодро муҳосира кард ва бародараш Аминро ба қатл расонида, ба тахти Хилофат нишаст. Дар ашъори Абдуллоҳ ибни Тоҳир майлҳои шуубиву ватанхоии ӯ ва падараш аз тариқи тасвири ин воқеот равшан ифода ёфтааст:

اقصرى عما لهجت به فغراغى عنك مشغول  
انا قد تعرفنى نسبي سلفى الغر البهاليل  
و ابى من لا كفاء له من يساوى مجدهقولا  
انظر المخلوع كلكله و حواليه المقاول  
فثوى و الترب مضجعه غلا عنه ملكه غول  
قاد جيشنا نحو نائلة ضاق العرض و الطول  
من خراسان مصمصهم كليوث ضمها غيل

Бас кун ончиро, ки мояи сухани худ кардаӣ, зеро ман вақту фароғате барои гӯш кардани он надорам.

Ман касе ҳастам, ки насаби маро ту мешиноӣ. Ниёғони ман сафедрӯву бузург, начибу карим буданд.

Падари ман назир надошт. Дар бузургвориву азамат кӣ монанди ӯст?! Ҳон, бигӯед!

Нигоҳ кунед ба синаи чок-чоки он махлӯъ (яъне, Амин-Н.З.), ки дар атрофаш сарбозони далер чамъ шудаанд.

Ӯ ба замин афтодасту хок оромгоҳаш гаштааст. Мулки ӯро марғу бало даррабудааст.

Падарам сипоҳе барои саркӯбии он бут кашид, ки замин бар он сипоҳ танг шуда буд...

Он сипоҳиёни шамшербадаст далерони Хуросонанд, ки шерони бешаро мемонанд<sup>2</sup>.

<sup>1</sup>بشاربنبرد. ديوان. ج. ۲۰ - ص. ۲۱۲.

<sup>2</sup>الدورى، عبدالعزيز. الجذور التاريخية للشعبوية. - ص. ۴۱.

Нақши воқеоти сиёсии замон дар оҳанги фахрияи Иброҳим ибни Мамшоди Мутаваккилӣ низ, ки аз номи Яъқуб ибни Лайси Саффорӣ ба халифа Муътаид (870-892) навишта шудааст, аён аст. Яъқуб ибни Лайс душмани ашаддии Хилофат буд ва ҳатто мақсад дошт, ки тахти халифаи Бағдодро вожгун созад. Танофури ӯ нисбат ба Хилофат дар фахрия тавассути таҳдиди ошкоро ба халифаҳои араб, ки бо номи хонадонашон–Банӣ Ҳошим номбар шудаанд, ифода ёфтааст. Қаҳрамони фахрия худро вориси қору азамати шоҳони Аҷам медонад ва бо ин ба воқеан ҳам мустақил будани давлати Саффорӣ аз Хилофати араб ишора мекунад. Дар фахрия аз дирафши ковиёни ва гузаштаи Эрон ёд шудааст, вале ин рӯчӯи таърихӣ ифтихори таассуфомез аз бузургиву азамати азбайрафта набуда (чунонки дар ашъори шуубии шоирони пешин буд), балки пайванди дирӯзу имрӯзи Эронзамини аз чанголи арабҳо раҳоебанд, таъкиди эҳёи ҳастии сиёсиву маънавии халқҳои эронӣ буд:

و حانز ارث ملوك الاجم	انا ابن الاكارم من نسل جم
و عفى عليه طوال القدم	و محيي الذى باد من عزهم
فمن نام عن حقهم لم انم	و طالب اوتادهم جهرة
به ارتجى ان اسود الامم	معى علم الكابيات الذى
هلموا الى الخلع قبل الندم	فقل لبنى هاشم اجمعين
ح طعنا وضرباً بسيف حزم	ملكناكم عنوة بالرما
فما ان وفيتم بشكر النعم	و اولاكم الملك اباونا
لاكل الضباب و رعى الغنم	فعودوا الى ارضكم بالحجاز
بحد الحسام و حرف القلم	فاتى ساعلو سرير الملوك

*Ман зодаи бузургон, аз дудмони Ҷам ва вориси тахту тоҷи Аҷам ҳастам.*

*Ман зиндақунандаи қасоне ҳастам, ки иззаташон аз даст рафта ва рӯзгори қуҳан осорашонро аз миён бурдааст.*

*Ман ошкоро кинахоҳи онҳо ҳастам ва толиби интиқомам.*

*Агар ҳар кас аз ҳаққи онҳо бигзарад, ман нахоҳам гузаши.*

*Дирафши ковиёни ҳамроҳи ман аст, ончунон дирафше, ки бар ҳама милал умеди сарварӣ дорам.*

*Ба Банӣ Ҳошим бигӯед: пеш аз он ки пушаймон шавед, қанор биравед!*

*Зӯри найза ва шамшерҳо буд, ки шуморо ба давлат расонид.*

*Падарони мо шуморо соҳиби давлат ва салтанат карданд.*

*Шумо поси хидмати онҳоро нигоҳ надоштед ва шукри неъмат ба ҷой наовардед.*

*Аз ин пас ба Ҳичоз – сарзамини аслии худ баргардед ва ба чарондани  
гӯсфанд ва хӯрдани сусмор бипардозед.*

*Ҳаққо, ки ба зудӣ ба зӯри тегу нӯги хома бар тахти подшоҳон  
хоҳам нишаст<sup>1</sup>.*

Ҳамин тариқ, оҳангҳои ватанпарастиву эрондӯстӣ ва васфи рӯҳи шикастнопазири эронӣ дар назми арабизабони асрҳои VIII-IX мавқеи густарда дошт. Шоирони эронинажоди шуубимазҳаб тавассути баргардони саҳифаҳои ифтихорангези таърихи Эрон ва таъкиди бузургию азамати фарҳанги Аҷам ба ғурури истилогарони араб пайваста зарба мезаданд, дар ниҳоди халқҳои эронӣ ҳисси ватанпарастиро бедор карда, заминаҳои пирӯзии онҳоро дар набарди фарҳангиву мафкуравӣ фароҳам меоварданд.

### 2.2.2. Оҳангҳои эронӣ дар ашъори мадҳия

Қасидаи мадҳия яке аз шаклҳои маъмултарини назми арабизабони асрҳои VIII-IX буд ва аз ҷиҳати сохтору мавзӯоти қорбастшаванда бо анъанаҳои назми пешини араб иртиботи қавӣ дошт. Шоирони эронинажод низ ба таври умум ба он анъанаҳо пайравӣ мекарданд, вале бино ба ҳукм ва дараҷаи пайванди худ бо фарҳанги гузаштаи Эрон ва гароишашон ба чараёни шуубия ба ин навъи қуҳнаи назми араб унсурҳои адабиву фарҳангии тоисломии эрониро ворид менамуданд. Далели равшани ин ба назми мадҳӣ роҳ ёфтани ташбеҳи мамдӯҳ ба қаҳрамонони таърихӣ ва ҳамосии тоисломии эронӣ аст.

Чунончи, Исмоил ибни Ясор дар мадҳияе, ки ба ал-Ғамр ибни Язид – бародари халифаи умавӣ Валиди II (734-744) бахшидааст, ўро ба Хусрав ва чокаронашро ба муқаррабони шоҳи Эрон монанд кардааст:

على الغمّر الا وهو في الناس غامر  
كما حشّت يوماً لكسرى الأساور

فما مرّ من يوم على الدهر واحد  
تراهم خشوعاً حين يبدو مهابة

*Нест рӯзе дар айём, ки ал-Ғамрро анбӯҳи одамон фаро нагирифта  
бошад,*

*Чун бибинӣ эшонро, ки сар ба зер пеши ӯ истодаанд, пиндорӣ, ки ӯ  
Хусрав асту эшон тобеони ӯ<sup>2</sup>.*

<sup>1</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١٢.ص.١٨.

<sup>2</sup>الاصفهانى، ابوالفرج.كتاب الآغانى.ج.٤٠.ص.٤٢٤.

Таъкид чоиз аст, ки дар давраи Умавиён арабҳо ба бартарии худ нисбат ба халқҳои дигар қоиладар буданд ва ҳама гуна кӯшиши монанд кардани ҳокимони умавиро ба шоҳону ҳукмфармоёни ғайриараб қатъан рад мекарданд. Чунончи, халифаи умавӣ Абдулмалик (685-705) шоири араб Ибни Қайс ар-Руқайётро танҳо барои дар мадҳияаш ўро тоҷдор тасвир кардан танбеҳ дода, гуфта буд. «Эй Ибни Қайс, чаро маро бо тоҷ мадҳ мекуни, гӯе ман шоҳи аҷамӣ бошам?»<sup>1</sup>.

Аммо баъдтар дар давраи густариши чунбиши шуубия ва вусъати нуфузи унсури эронӣ муносибат ба қахрамонони ҳамосиву таърихии тоисломии эронӣ тағйир ёфт ва ташбеҳоти мазкур дар ашъори шоирони давраи аббосӣ маъмул гардид. Чунончи, Аллони Шуубӣ мамдӯҳи худро ба Рустам монанд кардааст:

رستمى فى ذرى شرف      زانه تاج و اكليل  
 Ба сони Рустам аст ў дар шаъну шавкат,  
 Тоҷу иклил ўро зинат медиҳанд<sup>2</sup>.

Дар байти зерини Ибни Румӣ Рустам рамзи кудрату тавоноӣ ва Бузургмеҳр рамзи хираду дониши мамдӯҳ аст:

بزرجمهر بنى العباس رستمهم      جلمود خطين ما صكوا  
 به رضحا  
 ماضى الاداتين من سيف و قلم      كبش الكتابة كبش  
 الحرب ان نطحا

Ў Бузургмеҳри хонадони Аббосӣ аст, Рустами онҳост.

Шамшеру қалам силоҳҳои ўянд, ки яке дар ҳарбу дигаре дар китобат далели маҳораташ мебошанд<sup>3</sup>.

Байти мазкур шаҳодати он аст, ки ба доираи маноқиби мамдӯҳи шоирони шуубимазҳаби давраи аббосӣ фазилатҳое ворид шудаанд, ки мамдӯҳи шоирони тоисломии араб онҳоро доро набуд. Гап дар сари он аст, ки дар байни аъроб «соҳибқалам» будан фазилат ҳисоб намешуд. Масалан, шоири умавӣ Зу-р-Румма (ваф.с.735) хатту савод доштани худро пинҳон медошт ва мегуфт, ки «ин дар байни мо айб

<sup>1</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ۵. - ص. ۷۹.

<sup>2</sup>ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ۱۲. - ص. ۱۹۵.

<sup>3</sup>موافى، عثمان. التيارات الاجنبية فى الشعر العربى منذ العصر العباسى حتى نهاية القرن الثالث الهجرى. - ص. ۱۵۴.



аст»<sup>1</sup>. Аммо дар мадҳияи Ибни Румӣ ин «айб» ба фазилат табдил ёфтааст.

Шоири араб Абӯтаммом (788-845) низ бо вучуди аз пайравони гузарои анъанаҳои адабиёти қадими араб буданаш дар ашъори худ ба оҳангҳои эронӣ рӯй овардааст ва мамдӯҳашро ба Фаридун ва душмани мамдӯҳро ба Заҳҳок монанд кардааст:

بل كان كالضحاك في سطواته بالعالمين و انت  
افریدون

Ў дар чавраш ба одамон мисли Заҳҳок буду ту дар адл мисли Фаридунӣ<sup>2</sup>.

Шоир ва адиби бузурги араб Ибни Муътаз дар мадҳияе, ки ба халифа Муътазид (892-902) бахшидааст, аз ошӯбу низоъ ва нобасомониҳои рӯзгор дар Хилофат сухан ронда, чунин мешуморад, ки маҳз ба туфайли ба Хилофат расидани Муътазид мамлакат аз нав ба тартибу низоми омад. Шоир ин мавзӯро инкишоф дода, байни мамдӯҳ ва Ардашер – асосгузори давлати Сосониён хатти мувозӣ мекашад:

كان لنا كأردشير فارس اذ جد في تجديد ملك دارس

*Барои мо ӯ мисли Ардашери Эрон буд, чун баҳри таҷдиди мулки футурафта ҷидду ҷаҳд кард<sup>3</sup>.*

Шоири номаълуми давраи аббосӣ мамдӯҳи худро, ки ба филе савор буд, ба Таҳмурас, ки тибқи ривоёти эронӣ Аҳриманро мағлуб гардонид, ба он савор шуда буд, ташбеҳ кардааст:

يا ليت ملكي اصبحت له المعالي خيسا  
و راكبا من فيله مستشرقاً نفيسا  
كأنه طهمورث لما امتطى ابليساً

*Меҳоҳам малики маро азамат ончунон қарин бошад, ки шери жаёнро ошёнӣ ӯ қарин аст,*

<sup>1</sup> محمدى، محمد. كتاب التاج في سيرة انوشيروان. مجلة الدراسات الادبية. السنة الثالثة، العدد الثالث. حريف ١٩٦١. ص. ٥٦.

<sup>2</sup> ثعالبي مرغنى. شاهنامه كهن. پارسى تاريخ غرر السير. پارسى گردان سيد محمد روحانى. مشهد، ١٣٧٢/١٩٩٤. - ص. ١٦.

<sup>3</sup> ابن المعتز. ديوان. دار الصادر للطباعة والنشر، بيروت ١٣٨١ / ١٩٦١. - ص. ٤٦٤.

*Ва ба пушти филе, ки маркаби азими ӯст, бинишинад, ҳамчунон ки Таҳмурас бар пушти Аҳримаи менишаст<sup>1</sup>.*

Дар баъзе қасидаҳои шоирони арабизабон мадҳ бо панду насихати мамдӯҳ омезиш ёфтааст. Дар ин гуна қасидаҳо шоир аксаран бо дидаи ибрат ба гузашта назар кардан ва аз он панд гирифтандро ба мамдӯҳ талқин мекунад ва ба тариқи мисол аз тақдири шоханшоҳии Сосониён ва хусравони эронӣ ёдовар мешавад. Айни ин ҳолатро дар байтҳои зерини Башшор ибни Бурд мебинем:

أَبَا جَعْفَرَ مَطْوُولٌ عَيْشٍ وَلَا سَالِمٌ قَلِيلٍ  
بِدَائِمٍ يَسَالِمُ عَلَى الْمَلِكِ الْجَبَّارِ يَقْتَجِمُ وَيَصْرَعُهُ فِي الْمَأْزِقِ  
الرَّذِيِّ الْمُتْلِحِ كَأَنَّكَ لَمْ تَسْمَعْ بِقَتْلِ عَظِيمٍ وَلَمْ تَسْمَعْ بِفَتْكِ  
مُتَوَجِّحٍ تَقَسَّمَ كَسْرِي زَهْطُهُ بِسُيُوفِهِمُ  
الأعاجم

*Абӯҷаъфар, зиндагӣ бақо надорад ва он касе, ки имрӯз сиҳҳату солим аст, пас аз лаҳзае бемору нотавон хоҳад шуд.*

*Ба шоҳи абарқудрат ҳам марг ҳамла меорад ва дар фурсати танге ӯро аз байн мебарад.*

*Гӯиё ту аз қатли тоҷвари бузург (яъне, охирин шоҳи сосонӣ – Н.З.) хабар надорӣ ва шикасти Аҷамро нашиндаӣ ва намедонӣ, ки чӣ гуна хонадони Хусравро шамшерҳо парокандаанд<sup>2</sup>.*

Оҳангҳои эронӣ на танҳо дар қасидаҳои, ки ба мадҳи шахсиятҳои алоҳида бахшида шудаанд, балки дар қасидаҳои низ, ки дар онҳо ин ё он қабилаи араб ва ё гурӯҳи қабилаҳо мадҳ шудаанд, садо додаанд. Дар ин маврид **иртибот ва бархӯрди таърихӣ ва устуравии қабилаи мадҳшаванда бо Эрон ва эронӣён ҳамчун ҳуччати бузургӣ ва мояи ифтихори он қабила** маънидод мешавад. Аз ҷумла, дар қасидае, ки Абӯнувос дар мадҳи яманиён сурудааст, ба воқеаи дар Яман зиндонӣ шудани Кайковус ишора шудааст. Воқеаи мазкур, ки дар «Шохнома» батафсил нақл шудааст, дар шеъри Абӯнувос чун далели азамати Яман тавҷеҳ ёфтааст:

<sup>1</sup>ثعالبي مرغني. شاهنامه كهن. پارسى تاريخ غرر السير.  
<sup>2</sup>بشاربنبرد. ديوان. ج. ۴۰ - ص. ۱۹۰-۱۹۱.

وفاظ                      سِنِينَ      سَبْعاً  
 قابوُسُفِي سَلَسِلِنَا      وَفَتٍ لِحَاسِبِهَا

...*Ва Ковус дар занҷирҳои мо ҳафт соли тамои ранҷи кашид*<sup>1</sup>.

Қабилҳои арабии ҷанубӣ – Қаҳтониён таърихан бо Эрон иртиботи қавӣ доштанд. Дар қасидае, ки Абӯнӯвос дар таҷлили Қаҳтониён сурудааст, ин иртибот ҳамчун мояи ифтихору бузургии онҳо тафсир шуда, зимни он аз воқеаи таърихӣ – дар ҷанги байни Эрону Рум аз Қаҳтониён мадад пурсидани шоҳи сосонӣ Хусрави Парвиз бо ҷузъиёташ ёдрас шудааст:

و يَوْمٌ سَاتِيْدٌ وَالْمَوْثُ  
 مَا ضَرَبْنَا بَنِي فَي كَتَائِبِهَا  
 الْأَصْفَرُ  
 إِذْ لَأَدْ بَزْوَاؤُ وَالْخَرْبُ تَمْرِي  
 يَوْمَ ذَاكَ بَنَّا بِكَفِّ حَالِبِهَا  
 يَذُوْدُ عَنهُ وَالْبَيْضُ  
 بَنُو قَبِيصَةَ مِنْ قَوَاضِبِهَا  
 بِالْخَطِي

*Мо Банӣ Асфорро (яъне, румиёро – Н.З.) дар домани кӯҳи Сотидмо шикаст дода ва селани марғро ба дастаҳои онон равона карда будем.*

*Ин ҳамон рӯз рух дода буд, ки Парвиз аз мо истимдод кард ва хун дар майдони ҳарб ба сони шири шутур дар кафи ширдӯши фаровон мешорид.*

*Ва Банӣ Қабиса аз ӯ бо найзаҳои хаттӣ ва шамшерҳои тезашон ҳимоя карда буданд*<sup>2</sup>.

### 2.2.3. Оҳангҳои эронӣ дар ашъори ишқӣ

Анъана ва суннатҳои адабиёву фарҳангии тоисломии эронӣ дар мазмун ва шакли ашъори ошиқонаи асрҳои VIII-IX нақши худро гузоштаанд. Ба ворид шудани ин анъанаву суннатҳо ба шеърӣ арабизабон омилҳои гуногун сабаб шудаанд, ки яке аз онҳо густариши мусиқии эронӣ дар байни арабхост. Чунон ки аз «Китоб-

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٨٧.

<sup>2</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٨٧.

ул-ағонӣ»-и Абулфараҷи Исфаҳонӣ бармеояд, ромишгарону хунёгарони эронӣ, ки ба ҳайси асир дар давраи истилои Эрон ба Арабистон бурда шуданд, шеъри арабиرو дар қолаби мусиқии эронӣ мехонданд. Чунбиши мусиқие, ки ба туфайли ҳунари ромишгарони эронӣ дар Хилофат доман густард, аз бисёр чихатҳо на танҳо мусиқӣ, балки шеъри ғиноии арабро низ тағйир дод. Шохе аз шеъри шоирони араби асри VII (мактаби шоирони Мадина) аз чихати маонӣ хеле содаву оммафаҳм ва дар вазнҳои ғайримаъмул суруда шудааст, то ба фаҳми хунёгарони эронӣ созгор ва ба оҳангҳои эронӣ мувофиқ бошад. Гузашта аз ин, аксари ромишгарону хунёгарони маъруфи Хилофат, чи дар давраи Умавиён ва чи дар давраи Аббосиён, эронинасл ва парвардаи мактаби мусиқии эронӣ буданд<sup>1</sup>. Агар пайванди мустаҳкамҳои шеъру мусиқӣ ва таъсири ҳамроҳии онҳоро дар фарҳанги асримиёнагии халқҳои арабу эронӣ ба назар гирем, пас, ба нуфузи анъанаҳои эронӣ (ба воситаи мусиқӣ ва мусиқорҳои эронӣ) ба шеъри ғиноии араб умуман шакку шубҳае нест.

Тадқиқи ашъори ошиқонаи арабизабон имкон медиҳад, ки чанде аз зухуроти мушаххаси унсурҳои эронӣ дар он ба ҳадди имкон муайян карда шавад. Аз ин нигоҳ диққати муҳаққиқонро пеш аз ҳама **ба ашъори ошиқонаи давраи аббосӣ ворид шудани маъшуқаи нав** ба худ ҷалб мекунад. Дар ашъори ишқии давраи тоаббосӣ шарафи маъшуқа будан ва дар ғазал васф шудан танҳо ба бадавизане насиб мешуд, ки аслан аз табақаи аъёну ашроф ва гоҳе шавҳардор буд. Ин фазилатҳо ба маъшуқаҳои тамоми шоирони араб, аз Имруулқайс то Умар ибни Абӯрабиа хос буд<sup>2</sup>. Аз давраи аббосӣ сар карда, фазилатҳои маъшуқаи шоирони араб, ки ба аслу мавқеи иҷтимоии ӯ тааллуқ доштанд, тағйир меёбад. Маъшуқа дар ғазалҳои ин давра асосан канизак ва аксаран ачамист. Одатан ӯ зебо ва бомаърифат буда, мутрибаи хушовоз ё раққосаи афсунгар аст. Башшор ибни Бурд яке аз нахустин шоироне буд, ки дар ғазалҳояш ин гуна маъшуқаро васф кардааст:

يَا عَبْدَ لَا                      إِنَّ تُطَلِّبِي بَدْمِي لَا  
 تَقْتُلِينِي إِنَّنِي رَجُلٌ        تَسِيْقِي ثَارِي  
 قَالَتْ وَلَا ذَنْبَ لِي              قَدْ حُصِنِي بِالْجَمَالِ  
 إِنَّ كُنْتُ جَارِيَةً              الْخَالِقُ الْبَارِي

<sup>1</sup>Фильштинский И.М.История арабской литературы.V-начало X века.– С.169.

<sup>2</sup>Юлдашев А.К.Эволюция арабской любовной лирики (ал-газал).VI-середины VIII вв.Автореф дисс.канд.филол.наук.- Москва,1987.–С.16-19.

إِذَا بَدَيْتُ يَزْمُونَ نَحْوَى  
 رَأَيْتُ النَّاسَ كُلَّهُمْ بِأَسْمَاعٍ وَأَبْصَارِ  
 قَتَلْتُ مَنْ كَانَ وَجَنَ مَنْ كَانَ خَلْفِي  
 قُدَّامِي بِحَسْرَتِهِ عِنْدَ إِدْبَارِي

*Эй Абда, зинҳор аз қатли ошиқ ҳазар кун, ки хунбаҳоям ситонида хоҳад шуд.*

*Дар ҷавоб ӯ гуфто: «Айби ман нест, ки ман канизакам. Офаридгор маро ҳусни беҳамто баҳшидааст.*

*Чун ба одамон худро бинамоям, ақлу ҳуш аз онҳо бирабоям.*

*Аз дарди ҳичрон бимирад он кас, к-аз пеши ман меравад, аз ақл бегона мегардад он кас, к-аз қафоям меравад»<sup>1</sup>.*

Дар ашъори ошиқонаи давраи мазкур пайдо шудани маъшуқае, ки аз нигоҳи мавқеи иҷтимоӣ аз маъшуқаҳои шоирони пешини араб фарқ мекард, инхироф аз анъанаҳои назми тоаббосӣ буд. Дар айни замон он инъикоси худвиҷаи муборизаи озодихонаи халқҳои тобеи Хилофат ба муқобили аъроб буд. Маҳз дар ҳамин давраи вусъати ҳаракати шуубия канизакони аҷамӣ, ки ба ҳайси шоира, сароянда, навозанда ва ё раққоса дар ҳаёти фарҳангии Хилофат торафт бештар мавқеъ ва нуфуз пайдо мекарданд, имкон ёфтанд аз забони шоирони арабизабон, ки онҳо низ аксаран аҷамӣ буданд, афзалияти худро аз маъшуқаи шеъри пешини араб эълон кунанд.

Минбаъд, ин инхироф аз анъана ба анъана табдил ёфт ва канизакон ҳаққу ҳуқуқи комили маъшуқаи шеъри ошиқонаи араб буданро пайдо карданд. Ба тариқи мисол метавон аз маъшуқаи ғазалиёти Абӯнӯвос канизаки соҳибҷамолу фозила ва шӯхтабъу шоиртабиат Ҷинон ёд кард. Ҷикоят дар бораи муносибати Абӯнӯвосу Ҷинон ва силсилаи шеърҳои ба ӯ бахшидаи шоир боби алоҳидаро дар «Китоб-ул-ағонӣ» ташкил кардааст ва метавонад баъзе ҷиҳатҳои масъалаи ба шеъри давраи мазкур ворид шудани маъшуқаи навро равшан кунад<sup>2</sup>.

Назарияву амалияи ашъори ошиқонаи араб далел бар он аст, ки ошиқи шайдо пайваста ҷӯёи висоли маъшуқа аст, дарди ҳичрон мекашад, бечораву ранҷур аст, вале маъшуқаи соҳибҷамолу танноз сангиндилу бераҳм аст ва барои ошиқ доимо дастнорас мемонад. Ба ибораи дигар, дар шеъри ошиқона ошиқ толиб асту маъшуқа матлуб

<sup>1</sup>بشاربنبرد. ديوان. - ص. ۱۵۲، ۱۱۱-۱۵۳.

<sup>2</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الاغانى. ج. ۱۵ - ص. ۲-۸.

ва халалнопазирии бинои муҳаббати онҳо низ ба ин асос ёфтааст. Вале чунин тарҳи анъанавии муносибати ошику маъшуқа аз шеъри Умар ибни Абӯрабиа сар карда дар як қисми ашъори ишқии араб тағйир ёфтааст. Дар аксари ғазалҳои Ибни Абӯрабиа маъшуқа ҷӯеи ошиқ ва дар ишқварзӣ ташаббускор тасвир ёфтааст. Ин гуна ғазалҳои шоир маҳз барои дар онҳо риоя нашудани асли «дастнорасӣ»-и маъшуқа барои ошиқ мавриди накӯҳиши муосирон қарор гирифта буд<sup>1</sup>. Ҳамин гуна рафтори ғайрианъанавӣ ба маъшуқаи баъзе ғазалҳои Башшор ибни Бурд низ хос аст, Чунончи:

فجئت على خوف كأن فؤادهما جناح السعاني  
يرعوى و يحيد  
فما كان الا الانس بينى و بينها و شدو  
غناء تارة و نشيد  
فلما ذكت عين و اشرفت العدى و جاهرنا واش و  
دب حسود  
و قدقلت تأديب له و صبابة اليها و من دون  
اللقاء و عييد  
اطيعى عدوا و احذرى عين حاسد عقاربه تسرى و  
نحن قعود  
فقلت بنا شوق اليك و انما نصادى عيوننا  
تنثنى و نعود

*Ū nazdi man omad va qalbai az xavfi raqib chunon mezad, ki gūē bolxoi paranda boiad.*

*Байни ману ū ба ҷуз ҳамдамиву муонасат ва ҳамовозӣ дар суруд чизе дигар набуд.*

*Вале чаими рақиб ба мо афтоду душман аз пайи мо шуд, суханчин рози мо ошкор карду ҳосид тухми бадҳоҳӣ кошт.*

*Дар ҳоле, ки муштоқи суҳбати ёр будам, вале чун хатар ба мо таҳдид мекард, ба ū гуфтам:*

*«Аз душман ҳазар куну аз чаими ҳосид дур бош, ки чун ба ҳам бирасем, метавонанд дар ҳаққи мо бадгӯӣ кунанд».*

*Гуфто: «Маро шавқи беандоза нисбат ба туст, аз ин рӯ чаими рақибонро хато карда, ба назди ту хоҳам баргаишт»<sup>2</sup>.*

*Дар ғазали дигари Башшор ибни Бурд маъшуқа аз ғиёби рақиб истифода бурда, шоирро ба назди худ даъват мекунад. Онҳо вақтро*

<sup>1</sup> ابن رشيق. العمدة في صناعة الشعر و نقد. ج. ٢. - ص. ٩٩-١٠٠.

<sup>2</sup> بشار بن برد. ديوان. - ص. ١٥٢، ١١١، ١٥٣.

бо сурудхониву дилхушӣ мегузаронанд, вале бонги муаззин аз лаҳзаи  
чудой гувоҳӣ медиҳад. Маъшуқа бо дидаи гирён бо шоир видоъ  
мекунад<sup>1</sup>. Дар ин ва дигар ғазалҳои Башшор ибни Бурд қаҳрамони  
лирикӣ бар хилофи анъана аз сангиндиливу бераҳмии маъшуқа  
наменолад, аз дастнорасии ӯ ба фиғон намеояд. Баръакс, худи  
маъшуқа чӯё ва толиби қаҳрамони лирикист. Чунин навъи ғазалро  
метавон ғазал-фаҳрия номид, зеро он дар мавзӯи ишқ навишта шуда  
бошад ҳам, баёни ҳиссиёти ишқӣ бо худситоиву нозидани ошиқ аз  
комгории худ дар ишқварзӣ бо маҳбубаи «дастрас» омезиш ёфтааст.  
Чунин шеваи тасвири маъшуқа имкони дар роҳи ишқ ба ранҷу азобҳо  
мубтало гардидани маъшуқро, ки ба ақидаи ноқидони асримиёнагии  
араб бояд мавзӯи асосии ғазал бошад, аз байн мебард. Аз ин ҷо,  
накди адабии араб ғазалҳоеро, ки дар онҳо маъшуқа «дастрас» аст,  
маҳсули таъсири анъанаҳои эронӣ мешумурд. Ба шаҳодати Ибни  
Рашиқ (асри X) «одати араб он аст, ки шоир худро дӯстдор ва дар  
роҳи ишқ гирифтори ранҷу азобҳо тасвир мекунад. Одати аҷамиён он  
аст, ки занро дар ишқ толиб ва чӯёи ошиқ тасвир мекунанд»<sup>2</sup>.  
Пораҳои парокандае, ки аз назми тоисломии эронӣ то имрӯз маҳфуз  
мондаанд, имкон намедиханд, ки гуфтаҳои мазкурро инкор ё тасдиқ  
кунем. Вале он чиз мусаллам аст, ки Ибни Рашиқ «одати аҷамиён»  
гуфта, анъанаҳои адабиву бадеии эрониро дар назар доштааст ва  
таъсири онҳоро дар шеъри ошиқонаи араб, бавижа, ғазалҳои Умар  
ибни Абӯрабаи сароҳатан баён кардааст.

Анъанаи мазкур минбаъд дар заминаи шеъри ошиқонаи форсии  
точикӣ идома ёфт. Чунончи, аҳли таҳқиқ ба як рӯбоиву як дубайтии  
устод Рӯдакӣ ишора кардаанд, ки дар онҳо маъшуқа чӯёи қаҳрамони  
лирикист<sup>3</sup>. Бино ба таъкиди С.Саъдиев, «образии маъшуқаи фаъл»,  
«чӯяндаи васли ошиқи худ» ва «тарзи баёни «сюжетдор»-и  
саргузаштҳои ишқӣ байни ошиқу маъшуқа» ба тағаззулоти шоири  
номдори нимаи дувуми асри XI-аввали асри XII Мухтории Ғазнавӣ  
хос аст. «Ҳодисаи мазкур, - навиштааст С.Саъдиев, -дар эҷодиёти  
шоирони давраи аввали аҳди ғазнавӣ маъмул буда, қариб ҳамаи  
қасидасароёни давраи салҷуқӣ аз он пайравӣ кардаанд»<sup>4</sup>. Бамаврид

---

<sup>1</sup>بشاربنبرد. ديوان. - ص. ۲۳۱، ۱۱.

<sup>2</sup>ابن رشيق. العمدة فى صناعة الشعر و نقد. ج. ۲. - ص. ۱۰۰.

<sup>3</sup>Юлдашев А.К. Эволюция арабской любовной лирики (ал-ғазал). VI-середина VIII вв. -С.10.

<sup>4</sup>Абдуллоев А., Саъдиев С. Адабиёти форсу тоҷик дар нимаи дувуми асри XI ва аввали асри XII. -С.188.

аст, таъкид кунем, ки дар «Шоҳнома» низ, вақте суҳан дар бораи ишқу ошиқӣ меравад, ҳиссиёти ошиқӣ аксаран дуҷониба тасвир ёфта, занон дар изҳор ва дифоъ аз муҳаббати худ мисли мардон фидокоранд. Ин далел низ метавонад мулоҳизаи Ибни Рашиқро доир ба асли эронии падидаи мазкури шеъри ошиқонаи араб тақвият диҳад. Пас, бо назардошти он чи қайд гардид, метавон ҳадс зад, ки дуҷонибагии ҳиссиёти ишқӣ ва фаъол будани маъшуқа дар изҳори муҳаббат аз унсурҳои мундариҷавии ашъори ошиқонаи тоисломии эронӣ будааст. Ин унсур дар ғазалҳои шоирони арабизабони асрҳои VIII-IX инъикос ёфта ва баъдтар дар заминаи шеъри навини дарӣ идома ёфтааст.

Нақши анъанаҳои адабиву бадеии тоисломии эрониро ҳамчунин дар тасвири хусну ҷамоли маъшуқаи ашъори ошиқонаи асрҳои VIII-IX метавон ташхис дод. Ташбеҳоте, ки шоирони пешини араб дар тавсифи зебоии зохирии маҳбуба истифода мебарданд, маҳсули зиндагии содаву ораи аз таҷаммул буд ва аз муҳити бодия гирифта шуда, завқи бадеиву зебоипарастии арабҳои сахронишинро ифода мекард. Ба тариқи мисол аз Имруулқайс, ки ангуштони маҳини маҳбубаашро ба кирм ва мисвок ташбеҳ кардааст<sup>1</sup> ва ал-Аъшо, ки байни роҳ гаштани маъшуқа ва қадаммонии уштури мода дар роҳи пурлой<sup>2</sup> монандие дидааст, метавон ёд кард. Табиист, ки дар асрҳои VIII-IX, дар шароити тараққи босуръати тамаддуни шахриву шахрдорӣ ва ба сахнаи адабиёт омадани шоироне, ки дар муҳити эронӣ парвариш ёфта буданд, ин ташбеҳот дурушту дағал ва ғайриодиву гӯшхарош садо мебарданд. Аз ин рӯ, ҷои ин гуна оҳангҳоро дар эҷодиёти шоирони арабизабон ташбеҳоте гирифтаанд, ки рӯҳияи замони навро ифода карда, ба завқи бадеӣ ва суннатҳои адабии эронӣ созгор буданд. Масалан, Абӯнӯвос ангуштони ҳинокардаи маъшуқаашро, ки дар маросими мотами шахсе вохӯрдааст, ба унноб, сиришки ўро ба марворид, чашмонашро ба наргис ва рӯяшро ба гули садбарг монанд кардааст:

يَبْكِي فَيَذَرِي وَيَلْطُمُ الْوَرْدَ  
الدَّرَّ مِنْ نَرَجِسٍ بِغُنَابٍ

*Ў гирён асту аз наргисаи марворид мерезад ва гули садбаргро бо шохчаи унноб мезанад<sup>3</sup>.*

<sup>1</sup> امريء القيس. ديوان. - ص. ٤٦١.

<sup>2</sup> الأعرشى. ديوان. - ص. ١٤٤.

<sup>3</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٥٣.



Ва ё байте дигар аз шоир Ибни Муътазз, ки дар он тавсифи ангуштонуну нохунҳои рангкардаи зеборухон омадааст:

أشرن على خوف باغصان فضة مقومة اثمارهن عقيق

*Аз хавфи рақиб онҳо танҳо бо шохчаҳои симин, ки дар нӯгашон меваҳои ақиқин доштанд, шиорае карданд.<sup>1</sup>*

Дар назми тоисломии араб дар тавсифи зебоии маъшуқа гул ба хайси монандкунанда қариб тамоман истифода нашудааст. Бар хилофи ин, дар шеъри арабизабони асрҳои VIII-IX ташбеҳи маҳосини зоҳирии маъшуқа ба гулҳои гуногун аз маъмултарин оҳангҳо ба ҳисоб меравад. Барои равшан шудани матлаб метавон ба ташбеҳоте мурочиат кард, ки дар онҳо ташбеҳкунанда «вард»-гули садбарг аст. Ба шаҳодати шеършиносони араб вожаи «вард» ба маънои садбарг дар назми пешини араб то шоири умавӣ Умар ибни Абӯрабиба ба назар намерасад<sup>2</sup>. Вале аз шеъри Абӯнувос сар карда, «вард» - садбарг ҳамчун ташбеҳкунанда дар тасвири хусни маъшуқа мақоми бориз пайдо кардааст. Аксаран, рухсораи маъшуқа ба гул монанд карда мешавад, чунонки дар байти зерини Абӯнувос омадааст:

تخال خديهِ لإخمرارِهما يُفْتَحُ الوَردُ فيهما الخجل

*Ду гунаи аз шарм сурхшудаи ӯ садбаргҳои шукуфтаро мемонданд<sup>3</sup>.*

Ва ё дар байти Саид ибни Хумайди Бахтакон:

و كأنما اثر الدموع بخدها طل تساقطفوق ورد يانع

*Донаҳои ашк дар рухсораҳои ӯ гӯиё шабнам аст, ки ба гулҳои садбарг рехтааст<sup>4</sup>.*

Ташбеҳи рухсораи маъшуқа ба садбарг дар қитъаи зерини Абдуллоҳ ибни Тоҳир низ омадааст:

حيى صحك قالت عنه مرت و فى كفها ورد فقلت لها  
لى شغل

<sup>1</sup> ابن رشيق. العمدة فى صناعة الشعر و نقد. ج. ١. - ص. ٢٠٤.

<sup>2</sup> قصى، مصطفى. كتابالورد. تونس، ١٩٨١. - ص. ١١٩-١٢٠.

<sup>3</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٥١٢.

<sup>4</sup> قصى، مصطفى. كتابالورد. - ص. ١٥٧.

وردا جنيا و ذا فقلتبخلا فقالت قد وهبت له  
بالكف يبتذل  
فقد جنته له ان كان لم تجنه منه انامله  
الالحاظ و المقل

*Ū az nazdi man bo guли sadbarг dar даст meгуzaиt, ки гуфтамаиш:  
«Гулро ба ошиқ ҳадыя бикун!» Гуфто: «Гул ба худи ман лозим аст».*

*Гуфтамаиш: «Чӣ хасисист ин?!» Гуфто: «На. Ҳадыя ба ошиқ  
садбарги тар аст. Лек гуле, ки дар дастам аст, одист ва зуд пажмурда  
хоҳад шуд.*

*Он гулро ба ошиқ надода бошам ҳам, чашмони ū аз он гул лаззат  
бурдаанд»<sup>1</sup>.*

Дар ташбеҳоте, ки шоирон дар тасвиру ситоиши хусни зоҳирии  
маъшуқа ба кор бурдаанд, гулҳои дигар низ мавқеъ доранд. Аз ҷумла  
Абӯнӯвос сурхии рухсораи маъшуқаро ба гулнор ташбеҳ додааст:

وَبوَجْنَتَيْهِ يَا مَنْ بِمُقَلَّتِهَا الْعُقَارُ  
الْجُنَانُ

*Эй он, ки дар чашмонаш шарбу дар рухсораҳои гулнор аст!<sup>2</sup>.*

Дар байти Ибни Муътаз ташбеҳи чашм ба наргис омадааст:

يحكى بمقلته ذبول و سنان من خدع النعاس جفونه  
النجس

*Чун хоб бар ū голиб ояд ва мижаҳои ба ҳам расанд, чашмонаш  
наргиси нашқуфтаре мемонад<sup>3</sup>.*

Дар шеърҳои Абӯнӯвос, ба ҷуз садбарг, наргис, гулнор ва ёсуман  
боз гулҳое, ки номҳои сирф эронӣ доранд; аз қабилҳои боднӯш, озаргун  
ва ғайра ба ҳайси монандкунанда ба кор бурда шудаанд<sup>4</sup>.

Ба доираи зебоҳои зоҳирии маъшуқаи шеъри давраи мазкур  
унсурҳое ворид шуданд, ки маҳсули муҳити нави эрониву арабӣ  
буданд ва чун мазҳари хусн дар шеъри пешини араб ба чашм  
намерасиданд. «Зулфи муақраб» яке аз ин унсурҳост, ки аз ғазалҳои  
Абӯнӯвос ва ҳамасрони ū сар карда, дар шеъри араб ва баъдан дар

<sup>1</sup>اقصرى، مصطفى. كتابالورد. - ص. ۱۴۵.

<sup>2</sup>أبونواس. ديوان. - ص. ۲۹۸.

<sup>3</sup>ابن المعتز. ديوان. - ص. ۲۶۵.

<sup>4</sup>أبونواس. ديوان. - ص. ۶۳۸.

назми форсии тоҷикӣ ба аломати доимии ҳусну ҷамоли маъшуқа табдил ёфт. Чунончи, маъшуқаи ғазалҳои Абӯнӯвос аксаран эронинаҷод аст ва ё ба тарзи эронӣ либос пӯшидааст. Одатан, зулфи муақраб ба ҳусни ӯ ҳусн зам мекунад. Чунончи:

فِي قَرَطِقٍ زَانَهُ تَخْرُسُنْهَا قَدْ عَقْرُبَتْ ضُدَّعَهَا مَدَارِيهَا  
 ...Вай аз он боз зеботар шудааст, ки қурташиро ба тарзи хуросонизанҳо пӯшидааст ва зулфонаширо ба сони ақраб шона задааст<sup>1</sup>

Байтҳои дигари шоир ба васфи духтарони соҳибҷамоле, ки аз рӯи мӯди рӯз либос пӯшида ва худро зебу зинат додаанд, бахшида шудааст:

طِقِ وَالْخَنَاجِرِ وَمُوقِرَاتٍ فِي الْقُرَا  
 فِي الْخُصُورِ أَضْدَاغِهِنَّ مُعْقِرِبَا  
 مِنَ عَبِيرِ

Соҳибҷамолони бовиқорро, ки қуртаҳо (-и эронӣ) пӯшидаанд ва дар паҳлӯяшон ханҷарҳо овехтаанд.

Зулфон муақрабу хатҳо аз абир аст<sup>2</sup>.

Зулфони муақраб дар шеъри Ибни Муътаз ба чавгон (шакли арабиаш – «савлаҷон»), ки олати бозии эронӣ аст, ташбеҳ шудааст:

كصولجان يرد و الصدغ قد مدعن عن محاسنه  
 ضربته

Ҳамаи зулфи ӯ дар муқобили рӯи зебоиаш чавгонро мемонад, ки ба гӯй муҳолиф аст<sup>3</sup>.

Дар ашъори давраи мазкур зулфони муақраб ҳамчунин ба харфҳои алифбои арабӣ «нун» ва «коф» монанд карда шудаанд.

Қомати мавзунӣ маъшуқа низ мавриди ситоишу муқоисаи шоирони арабизабон қарор гирифтааст ва аксаран ба дарахти бон, ки танай мутаносибу зебо дорад, монанд карда мешавад. Чунончи, Абӯнӯвос гуфтааст:

لَاسِيمَا اِنْ اَوْ مُرْهِفِ  
 اُدَيْرْتُ مِنْ مُقْرَطَقَةٍ كَقَضِيْبِ  
 مَيَّاسِ

<sup>1</sup> Абӯнӯвос. Диوان. - с. ۶۷۲.

<sup>2</sup> Абӯнӯвос. Диوان. - с. ۳۲۳-۳۲۴.

<sup>3</sup> ابن المعتز. ديوان. - с. ۱۰۰.

Май хушгвор бошад он дам, ки онро аз дасти зеборухе бигирӣ, ки курта (-и эронӣ) пӯшида бошад ва ё соқие онро бидиҳад, ки қомати мавзунаш мисли бон бичунбад<sup>1</sup>.

\* \* \*

أَضْحَكْنِي وَهَاجَ شَوْقِي  
الْحَبِّ، وَابْكَانِي طَوْلُ كِتْمَانِي  
مَنْ حَبَّ حَوْرَاءَ كَانَهَا  
رِصَافِيهِ غَصْفٌ مِنَ الْبَانِ

Иштиёқи ман ба шаҳлочаише, ки аз Русофа асту қоматаш бонро мемонад, афзунтар мешавад аз он, ки ман онро пинҳон медорам<sup>2</sup>.

Чунон ки маълум аст, шоирони форсу тоҷик қомати маҳбубаро голибан ба сарв монанд кардаанд. Ин гуна ташбеҳ дар шеъри Ибни Муътазз, ки эҷодиёташ ба замони пайдоиши назми навини форсии тоҷикӣ рост меояд, ба чашм мерасад:

كَمَا تَثْنَتْ فِي الرِّيحِ سُرُوتَ تَمِيلَ فِي رَقْصِهِمْ قُدُودَهُمْ

Хам шудани қадҳои латифи онҳо ҳангоми рақс хам шудани сарвҳоро дар ҳангоми вазидани шамол мемонад<sup>3</sup>.

Ташбеҳи маъшуқа ба бут низ аз ташбеҳотест, ки дар шеъри арабизабони асрҳои VIII-IX ва баъдан дар сурудаҳои шоирони порсигӯй интишор ёфт. Чунончи, Башшор ибни Бурд маҳбубаи зеборо ба бут монанд кардааст:

رِيَا الْبِنَانَ كَدْمِيَّةٍ وَ دَوَاءَ عَيْنِي قَدْ عَلِمْتَ وَ دَاءِهَا  
المحراب

Маро яқин гаит, ки ҳам дармону ҳам бемории чашимони ман зеборухест, ки ангуштони дарозу нарм дорад ва бути меҳробро мемонад<sup>4</sup>.

Ҳамин гуна оҳанг дар байти Абӯнӯвос садо медиҳад:

عَيْنَايَ تَشْهَدُ يَا ذُمِّيَّةَ ضُورُوهَا  
إِنِّي عَاشِقٌ لَكُمْ فِي الْمَهَارِبِ

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۳۶۹.

<sup>2</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۶۲۷.

<sup>3</sup> ابن المعتز. ديوان. - ص. ۱۲۰.

<sup>4</sup> بشار بن برد. ديوان. ج. ۱. - ص. ۲۴۲.

*Чашмони ман шаҳодат медиҳанд, ки ман ошиқи туам, эй он, ки ба зебой ҳамсони санамӣ<sup>1</sup>.*

Намунаи оҳангу ташбеҳотеро, ки дар шеъри ошиқонаи арабизабони асрҳои VIII-IX дар натиҷаи таъсир ва нуфузи анъанаҳои адабиву бадеии эронӣ маъмул гаштанд ва ё зодаи муҳити фарҳангии муштраки арабиву эронӣ буданд, метавон идома дод. Аммо моҳияти масъала танҳо дар ташхиси ин ё он оҳанг ё ташбеҳи эронӣ дар шеъри ин ё он шоири арабизабон нест. Муҳимтар аз ин он аст, ки худи иштироки шоирони эронинаҷод дар эҷоди шеъри арабизабон боиси дар шеъри давраи мазкур пайдо шудани услуби нав гардид. Яъне, агар дар шеъри давраи чоҳилияи араб ҳар як чиз аз олами бодия метавонист ба ҳайси ташбеҳқунанда дар тавсифи ҳусни маъшуқа корбаст шавад, пас, ба шеъри ошиқонаи асрҳои VIII-IX интиҳоби услубии ташбеҳқунандаҳо хос аст. Ин амр дар даст кашидани шоирон аз оҳангҳои дурушти шеъри қадими араб ва мурочиати онҳо ба оҳангҳое, ки ба завқи зебописандии халқҳои эронӣ созгор буданд, зоҳир шудааст.

Анъанаҳои адабиву бадеии эронӣ на танҳо дар мазмун, балки дар баъзе хусусиятҳои шакли ашъори ошиқонаи асрҳои VIII-IX низ нақши худро гузоштаанд. Далели ин дар назми давраи мазкур маъмул гаштани шеърҳои ошиқона дар шакли мунозира ва ё муқолима аст. Ин гуна шеъри ошиқона дар адабиёти арабизабон аввалин бор аз ҷониби шоири эронинаҷод Ваззоҳи Яман суруда шудааст, ки дар зер тарҷумаи матни комили онро меорем:

يا روض جيرانكم الباكر	فالقلب لا لاه و لا صابر
قالت الا لا تلخن دارنا	ان ابانا رجل غائر
قلت فاني طالب غرة	منه و سيفي صارم باثر
قالت فان القصر مندونا	قلت فاني فوقه ظاهر
قالت فان البحر من دوننا	قلت فاني ساجح ماهر
قالت فحولى اخوة سبعة	قلت فاني غالب قاهر
قالت فليث رابض بيننا	قلت فاني اسد عاقر
قالت فان الله من فوقنا	قلت فربي راحم غافر
قالت لقد اعيتنا حجة	فأت اذا ما هجع السامر
فاسقط علينا سقوط الندى	ليلة لا ناه و لا زاجر

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٤١.

*Эй Равза, ҳамсоҷаҳои шумо субҳ ба роҳ мебароянд, аммо қалби маро тавони сабру интизорӣ нест.*

*Гуфто: «Зинҳор, ба хонаи мо наздик нашавӣ, ки падарамон марди бадрашк аст»,*

*Гуфтам: «Ман ӯро дар гафлат хоҳам гузошт ва шамшерам ҳам мустаҳкаму буррост»,*

*Гуфто: «Деворҳои қаср байни мост». Гуфтамаиш: «Ман аз болои он хоҳам парид»,*

*Гуфто: «Пеши девор баҳрест дамон». Гуфтам: «Ман шиновари моҳирам».*

*Гуфто: «Дар атрофи ман ҳафт бародарам ҳастанд». Гуфтам: «Ман далеру бадқаҳрам».*

*Гуфто: «Дар байни мо шере хуфтааст». Гуфтам: «Ман яли шергирам».*

*Гуфто: «Худо дар болои мост». Гуфтам: «Парвардгори ман бахшандаву меҳрубон аст».*

*Гуфто: «Далелҳои маро заиф гардондӣ. Пас, биё вақте, ки шабзиндадорон ба хоб мераванд.*

*Ва ҳамчунон ки шабнам ноаён мерезад, ту низ шабона ба наздам даро, ки касе моро набинад ва маломат накунад»<sup>1</sup>.*

Муҳаққиқони назми араб П. Швартс ва В.А.Эберман ақида доштанд, ки шеъри мазкури Ваззоҳи Яман бо таъсири ашъори ғиноии тоисломии эронӣ эҷод шудааст<sup>2</sup>. Дар ҳақиқат дар назми тоисломии араб шеъре, ки сар то по дар шакли мунозира навишта шуда ва мундариҷааш аз муколамаи ошику маъшука фароҳам омада бошад, ба назар намерасад. Гузашта аз ин, навъи мунозира дар адабиёти тоисломии араб, бар хилофи адабиёти тоисломии халқҳои эронӣ, мавқеъ надошт. Инро ба асос гирифта муҳаққиқони мазкур ба хулоса омаданд, ки шакли мунозира аз шаклҳои маъмули шеъри ғиноии тоисломии эронӣ (бо таъбири В.А.Эберман «сурудҳои тоисломии эронӣ») буд ва баъдан дар ғазалҳои шоирони форсу тоҷик, ки дар онҳомисраъҳои аввали байт бо «гуфто» ва мисраъҳои сонӣ бо «гуфтам» оғоз меёбанд, зоҳир шуд.

Пас аз Ваззоҳи Яман эҷоди ашъори лириқӣ дар шакли мунозира дар назми арабизабон роиҷ гашт. Ҷолиб он аст, ки ин шаклро бештар

<sup>1</sup>الاصفهانى، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ۶. - ص. ۲۱۶.

<sup>2</sup>Фотиева В.С.К вопросу об историчности Ваддаха ал-Йамана.- С.136; Эберман В.А.Персы среди арабских поэтов эпохи Омейядов.- С.126.

аз дигарон Абӯнувос истифода бурдааст. Инак, яке аз ин гуна шеърҳои ӯ:

أَنْتَ	عَزَالَ	بِهِ	يَتِيهِ
قَالُوا	فَصِيفُهُ	قُلْتُ:	فِي
عَنْجُ	الْجَبِ	وَجُنَّةٍ	مِنْهُ
قَالُوا	فَزِدْ.	وَجُنَّةٍ	مِنْهُ
قَالُوا	فَزِدْ.	عَيْنَيْنِ	مِنْهُ
قَالُوا	فَزِدْ.	سِنَانٍ	مِنْهُ
قَالُوا	فَزِدْ.	كَشْحَيْنِ	مِنْهُ
قَالُوا	فَزِدْ.	أَكْثَرُ	مَنْ ذَا
		تَهُم	سَمْعُ!

*Ту гизоли раъностӣ, раъноӣ бинозад бо ту.*

*Гуфтанд: «Үро васф бикун». Гуфтам: «Рӯяи мисоли зебоист».*

*Гуфтанд: «Илова кун». Гуфтам: «Дар гунаҳояш шодмониву масаррат ҳувайдост».*

*Гуфтанд: «Илова кун». Гуфтам: «Чашмонаш шаҳлоянд».*

*Гуфтанд: «Илова кун». Гуфтам: «Дандонҳояш гушодаанд».*

*Гуфтанд: «Илова кун». Гуфтам: «Паҳлӯҳояш мустаҳкаму зебоянд».*

*Гуфтанд: «Илова кун». Гуфтам: «Бас аст, ки аз ин зиёдаш зишті хоҳад буд»<sup>1</sup>.*

Корбасти шакли мунозира минбаъд дар назми форсии тоҷикӣ низ роиҷ гашт. Нахустин намунаҳои он ба қалами Унсурӣ ва Фаррухӣ тааллуқ доранд. Баъдтар он дар эҷодиёти ғазалсароёни маъруф Саъдӣ, Ҳофиз, Камол ва дигарон густариш пайдо кард.

#### 2.2.4. Оҳангҳои эронӣ дар ашъори хамрия

Оҳангҳои эронӣ дар хамрияҳои шоирони арабизабони асрҳои VIII-IX нисбат ба дигар навъҳои назми давраи мазкур нуфуз ва

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۱۴۲.

мақоми бештар доранд. Ин ҳолат чанд сабаб дорад. Аввалан, дар назми арабии асрҳои миёна тамоюли суннатгарой хеле пурқувват буд. Бино бар ин, ҳар чизи нав, аз ҷумла оҳангҳои эронӣ низ, пеш аз ҳама ва беш аз ҳама дар ҳамон навъҳои зуҳур мекарданд, ки пайванди онҳо бо ойину суннатҳои назми тоисломии араб сустрар бошад. Хамриёт аз ҳамин гуна навъҳо буд ва шоирон низ дар истифодаи оҳангҳои нав аз банду қайдҳои анъанаҳои назми қадими араб озодтар буданд. Сониян, дар тамаддуни тоисломии халқҳои эронинажод май ва ойинҳои майгусорӣ вусъати тамом дошанд. Чунонки маълум аст, зардуштия нӯшидани май-шарбати гиёҳи муқаддаси «хаома»-ро мукаррам гардониданд<sup>1</sup>. Аз ин ҷост, ки дар Эрони тоисломӣ қадаҳи май мазҳари озодагиву озодаманишӣ ва майнӯшӣ сифати озодагону қахрамонон буд. Табиист, ки шоирони эронинажод дар хамрия-ҳояшон ба анъанаҳои бо май ва майгусорӣ вобастаи тамаддуни аҷдоди худ муроҷиат мекарданд. Ин чиз ба вусъати оҳангҳои эронӣ дар хамрияи давраи мазкур сабаб мешуд.

Рушду нумӯи ашъори хамрия дар назми асрҳои VIII-IX пеш аз ҳама ба эҷодиёти Абӯнӯвос алоқаманд аст. Таъкид ҷоиз аст, ки ашъори хамрия дар назми араб то Абӯнӯвос низ маълум буд, вале он ҳамчун як ҷузъи ғайриасосӣ ба сохтори қасида ворид мешуд. Аммо дар эҷодиёти шоири мазкур ситоиши май ва тавсифи ойину суннатҳои майгусорӣ ба ҳадафи аслии табдил ёфт. Ашъори хамрия ҳамчун навъи мустақил арзи вуҷуд кард. Ин падида ро муаррихони адабиёти араб ба таъсири анъанаҳои эронӣ вобаста кардаанд. Аз ҷумла, И.М.Филштинский навиштааст, ки «ба навъи мустақил табдил ёфтани ашъоре, ки дар он нишоту тараби базм суруда мешавад, ба гумони ғолиб, натиҷаи таъсири маданияти мусиқии эронӣ буд, ки анъанаҳои он якҷо бо расму одатҳои базмҳои пуршукӯҳ ва маҷлисҳои айшу тараби дарбори Сосониён аз ҷониби дарбори аббосӣ қабул гардида буд»<sup>2</sup>. Агар аз ин мулоҳизаҳои маъмул, ки ба таври умум, бидуни ворид шудан ба ҷузъиёти масъала баён шудааст, бигзарем ва бевосита ба ашъори хамрияи давраи мазкур муроҷиат кунем, пеш аз ҳама аён мегардад, ки шаробе, ки мавриди ситоиши Абӯнӯвос ва пайравони ӯ қарор гирифтааст, шароби эронист. Чунончи, Абӯнӯвос аксаран «шароби хусравӣ»-ро ситоиш мекунад:

---

<sup>1</sup>معين، محمد.مزد يسنا و ادب پارسی. - ص.۴۳۲-۴۳۳.

<sup>2</sup>Филштинский И.М.История арабской литературы.V-начало X века. -С.315.



داو يحيى من خماره      بابنة الدن و قاره  
من شراب خسروى      ما تعنوا باعتصاره

*Даво бикун хумори Яхёро бо духтари хуми қирандуд –*

*Бо шароби хусравӣ, ки ба вақти фишурдани шираи ангури он ранҷ  
накашидаанд<sup>1</sup>.*

Оҳанги «май – духтари Хусрав» низ ишораи шоиронаи Абӯнӯвос  
ба асли эронии шаробест, ки ӯ ситудааст:

و لا تَسْقِيَانِي      كما عُصِرَتْ لَمْ يَنْسَ  
بِنْتَعَشِرٍ، فَإِنَّهَا      فُرْقَتْهَا الْكَرْمُ  
ولكن عَجُوزاً، بنت      مَعْتَقَةً قَدْ دَبَّ  
كسرى، قَدِيمَةً      فِى طَيْهَا الْجَلْمُ

*Соқӣ, мадеҳ ба ман майи даҳсоларо, ки он ҳоло фироқи худро бо раз  
фаромӯш накардааст.*

*Майи кӯҳнаву дерин - духтари Хусравро биёр, ки он таскин ёфтаву  
ром гаштааст<sup>2</sup>.*

Беҳтарин май барои Абӯнӯвос ҳамон аст, ки барои шоҳи сосонӣ  
ҳозир карда буданд:

تَخَيَّرَهَا لِكسرى رائداهُ      لها حِظَانٌ مِّنْ لُّونٍ و  
ريح

*Ин шаробест, ки онро бо супориши Хусрав барояи баргузида  
буданд. Онро баҳра ҳам аз рангу ҳам аз бӯй аст<sup>3</sup>.*

Дар шеъри шоирони арабизабон солхӯрдагӣ ва деринагӣ аз  
сифатҳои мумтози майи эронист. Майи солхӯрда дар тасавури онон  
ҳамон аст, ки ба замони шоҳони сосонӣ нисбат дорад. Чунончи,  
Абӯнӯвос гуфтааст:

سُلَافَةٌ لَمْ تَغْتَصِرْهَا يَدُ      و لَمْ تُدْنَسْهَا الْأَعْيَاصِيرُ  
كريمَةً أَصْغَرَ آبَائِهَا      إِنَّ نُسَبَتَ كِسْرَى و سَابُورُ

*Зиҳӣ майи ноб, ки ҳангоми фишурдани шираи ангур дасти бегона ба  
он нарасида ва гирдбоди биёбон онро олуда накардааст.*

<sup>1</sup> Абӯнӯвос. Диوان. - с. ۲۴۹.

<sup>2</sup> Абӯнӯвос. Диوان. - с. ۵۴۲.

<sup>3</sup> Абӯнӯвос. Диوان. - с. ۱۵۱.

*Карима аст он, ки наздиктарин аҷдодаш, чун насабааш бешмарӣ, Хусраву Шонур аст<sup>1</sup>.*

Тавсифи май ҳамчун «арӯсе, ки Хусрав ӯро падарандар буд», дар шеъри дигари Абӯнӯвос барои ифодаи ҳамон маънии деринагии май омадааст. Ваҷҳи ба арӯс монанд кардани май он аст, ки хаммор хуми майро дар таҳхона ҳифз мекунад, мисли он, ки арӯсро дар паси парда пӯшида медоранд:

فقال عروس كان كسرى ربيبها معتقة من دونها الباب و  
الستر

*(Хаммор) гуфт: Арӯсро бигиред, ки Хусрав ӯро падарандар буд. Он солхӯрдааст ва паси дару парда солҳо мастур буд<sup>2</sup>.*

Абӯнӯвос майро «ганҷи Хусрав» меномад ва ба ин тариқ низ деринагии майро таъкид мекунад, чунончи:

ذخائر كسرى لاولاده

.....  
*(Май) – ганҷест, ки онро Хусрав ба авлоди худ мерос гузоштааст<sup>3</sup>.*

Айни ҳамин маъниро Ибни Муътаз ба ин тарз баён кардааст:

سلافة ورثتها عاد عن ارم كانت ذخيرة كسرى عن  
اب و اب

*Май, ки онро Од аз Ирам гирифта буд, ганҷи Хусрав аст, ки аз аҷдодаш ба ӯ мерос мондааст<sup>4</sup>.*

Ин чанд байте, ки аз хамрияҳои Абӯнӯвос ва беҳтарин пайрави ӯ дар ин навъи ашъор – Ибни Муътаз оварда шуд, далел бар он аст, ки дар хамриёти давраи мазкур асосан майи эронии дерина васф мешавад. Ҳаминро ҳам бояд илова кард, ки дар аксари хамрияҳои Абӯнӯвос майи эронӣ аз ашъи тасвиру тавсиф ба мояи ифтихори шоир табдил меёбад, яъне, ӯ бо он фахр мекунад, ки ин май як ҷузви мероси тамаддуни тоисломии эронист. Гоҳе оҳанги ифтихор бо майлу

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۲۴۰.

<sup>2</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۲۵۰.

<sup>3</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۲۷۴.

<sup>4</sup> ابن المعتز. ديوان. - ص. ۷۶.

мароми шуубии шоир омезиш меёбад ва  $\bar{u}$  ба ин мерос заррае иртибот  
надоштани аъробро бо сароҳат таъкид мекунад:

تراث أنوشزوان مواريث ما أبقث  
كسرى، و لم تكن تميم و لا بكر

*Май мероси Хусрави Анӯшервон аст, ки ба он на Тамим ва на Бакр  
ҳақ надоранд<sup>1</sup>.*

Дар хамриёти давраи мазкур на танҳо май мероси эронӣ аст,  
балки чехраи доимии ин навъ ашъор – соқӣ низ ғолибан  
эрониаслмебошад. Парвардаи анъанаҳои майгусории тоисломии  
эронӣ будани соқӣ аз фазилатҳоест, ки шоирон онро дар баробари  
неқӯии зоҳирӣ ва хулқу хӯи муҳассани  $\bar{u}$  таъкид мекунанд. Чунончи,  
Абӯнӯвос дар ситоиши соқӣ гуфтааст:

و ساق، غرير ربيب ملوك، كان  
الطرف والدل، فاتن، والدهم كسرى

*Соқии шӯхчаиму ишвагару фаттон парвардаи шоҳонест, ки  
падарашон Хусрав буд<sup>2</sup>.*

Таъкиди асли эронии соқӣ дар хамрияи Ибни Муътаз аз он  
чихат қолиб аст, ки шоир ба қиссаи маъруфи ишқи Хусраву Ширин  
ишора кардааст. Ин ишора аз қадимтарин далелҳои ташаккули  
қиссаи мазкур дар байни халқҳои эронист. Аз он бармеояд, ки Ибни  
Муътаз бо ин қисса ошноӣ доштааст:

فجاء بالراح يحكى ورد وجنته مفرط من بنى كسرى  
و شيرين

*Соқӣ шаробе дод, ки ранги он шабеҳи садбарги рӯяш буд.  $\bar{U}$  куртаи  
эронӣ дар бар дошт ва худ аз авлоди Хусраву Ширин буд<sup>3</sup>.*

Дар ашъори хамрияи давраи мазкур тасвири қоми мусаввари  
эронӣ мақоми назаррас дошт. Тасвири қоми эронӣ мантиқан аз  
ситоиши майи эронӣ ва васфи соқии эрониасл бармеояд. Бадеҳист, ки  
дар ин бобат низ Абӯнӯвос муқаддамтар аз шоирони дигар аст. Дар

<sup>1</sup> Абӯнӯвос. Диوان. – с. ۲۵۲.

<sup>2</sup> Абӯнӯвос. Диوان. – с. ۲۹.

<sup>3</sup> ابن المعتز. ديوان. – с. ۴۳۹.

девони ӯ чаҳор шеъри хамрия мавҷуд аст, ки дар онҳо ҷомҳои эронии мунаққаш ба тасвир омадаанд<sup>1</sup>.

Дар яке аз ин шеърҳо ҷоми тилоие мавриди тасвири шоир қарор гирифтааст, ки дар он сурати шоҳи Эрон ва лашкариёни ӯ хангоми шикор кашида шудааст:

تُدارُ علينا الراح في عَسْجِدِيَةِ حَبْتِهَا بِأَلْوَانِ التَّصَاوِيرِ  
فَارِسُ  
قَرَارَتِهَا كَسْرِي، وَ فِي جَنْبَاتِهَا مَهَأً تَدْرِيهَا بِأَلْقَيْسِيَّ  
الْقَوَارِسُ  
فَلِلْخَمَزِ مَا زُرَّتْ عَلَيْهِ جِيُوبُهَا وَ لِلْمَاءِ مَا دَارَتْ عَلَيْهِ  
الْقَلَانِسُ

*Байни мо давр гаит шароб дар ҷоми заррине, ки онро ҳунармандони Эрон бо тасвирҳои гуногун музайян кардаанд.*

*Дар зери он ҷом расми Хусрав асту дар атрофаи сурати гизолоне, ки онҳоро саворагони камонбадаст таъқиб мекунанд.*

*Сатҳи шароб дар ҷом то гиребони саворагон расида ва обе, ки ба шароб мамзуч шуда, аз кулоҳҳояшон гузаштааст<sup>2</sup>.*

Шеъри дигари Абӯнӯвос ба тавсифи ҷоми бахшида шудааст, ки дар он шоҳи Эрон – Хусрав дар мобайни лашкар тасвир ёфтааст. Зоҳиран, дар ҷоми мусаввар лаҳзае аз мавкиби шоҳи акс ёфта буд:

فَحَلٌّ بُزَالِهَا فِي قَعْرِ كَأْسٍ مَحْفَرَةٍ الْجَوَانِبِ وَ  
الْقَرَارِ  
مَصُورَةٌ بِصُورَةِ جُنْدٍ كَسَرُو كَسْرِي فِي قَرَارِ  
الطَّرْجِهَا  
وَ جُلُّ الْجُنْدِ تَحْتَ رِكَابِ كَسْرِي بِأَعْمَدَةٍ وَ أَقْبِيَةِ  
قِصَارِ

*Соқӣ аз кӯза ба ҷоми май бирехт, ки атрофи таҳи он бо тасвирҳои ороши ёфтаанд.*

*Сурати лашкари Хусрав аз ҷонибу сурати Хусрав дар мобайн мусаввар аст.*

*Сарони лашкар зери рикоби Хусрав истодаанд. Эшон дар даст гурз доранду қабои кӯтоҳ ба бар кардаанд<sup>3</sup>.*

<sup>1</sup>Крачковский И.Ю. Абу Нувас о сасанидской чаше с изображениями // Избранные сочинения – Т.2. -Москва-Ленинград: «Изд-во АН СССР», 1956.- С.169.

<sup>2</sup>Абӯнӯвос. Диван. – С. 361.

<sup>3</sup>Абӯнӯвос. Диван. – С. 247.

Дар хамрияи севум Абӯнӯвос шахсони дар чом тасвирёфтаро «авлоди Бобак» номидааст ва тавсифи чомро ба хайси ашъи васф бар мавзӯоти анъанавии назми араб тарҷеҳ додааст:

نَزَّوَجُ الخَمْرَ من الماءِ ، طاساتٍ تَبْرُ ، خَمْرُها  
 فِي مُنْطَقَاتٍ بِتصاويرِ ، تَسْمَعُ للدَّاعِي ولا تَنْطِقُ  
 وَيَفْهَقُ  
 على تماثيلِ بَنِي مُخْتَفَرٍ ما بَيْنَهُمْ  
 بِأَبِكِ خَنْدَقُ  
 كَأَنَّهُمْ وَالخَمْرُ من كِتَابٍ فِي لُجَّةِ  
 فَوْقَهُمْ تَغْرَقُ  
 فَالْنَعْتُ ذَا لا نَعْتُ دارِ يَهيمُ فِي أَطْلالِها  
 خَلَّتْ أحمقُ

*Мо майро бо об дар чомҳои заррин мамзуч мекунем.*

*Ва ин чомҳо бо суратҳои ороиш ёфтаанд, ки сухани гӯяндаро намушунаванду худ низ сухане намегӯянд.*

*Онҳо авлоди Бобаканд. Мобайни эшон хандаке кофта шудааст.*

*Ва онон, чун май аз сари эшон бигзарад, дастаи ҷанговаронро мемонанд, ки дар қабри об гарқ мешаванд.*

*Ин аст васф, на васфи манзили холишудаи ёр, ки дар вайронаҳои аҳмаке саргардон аст<sup>1</sup>.*

Дар хамрияи чаҳоруми Абӯнӯвос тавсифи ҷоме омадааст, ки дар он Хусрав хангоми базм тасвир ёфтааст. Ташбеҳоте, ки шоир дар ин хамрия овардааст, бисёр қолибанд. Чунончи, сатҳи май дар чом ба осмон ва ҳубобчаҳои рӯи май ба ситорагон монанд карда шудаанд:

بَنِينا على كسرى سماءِ مُدَامَةً مَكَلَلَةٌ حافاتُها  
 بِنجُومِ

*Мо болои сари Хусрав осмони шароб бино кардем, ки дар он ситораҳо чашмак мезананд<sup>2</sup>.*

Чунонки аён аст, дар ҳамаи ин пораҳои шеърӣ сухан аз тавсифи чомҳои эронии мусаввар рафтааст. Ташбеҳ ва қиёсҳои шоир ба он асос ёфтаанд, ки сатҳи май то кадом андоза мусаввараҳои чомро

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۴۳۹.

<sup>2</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۵۷۷-۵۷۸.

пӯшонидааст. Ба назар чунин мерасад, ки Абӯнувос ин гуна чомҳои давраи сосониरो худ дидааст ва ташбеҳоту қиёсҳои ӯ заминаи воқеӣ доранд. Аз ҷониби дигар дар назми араб бесобиқа будани тасвиrotи чомҳои мунаққаш касро ба андешае водор мекунад, ки дар ин қабил шеърхояш Абӯнувос ба анъанаҳои ашъори хамрияи тоисломии эронӣ бояд пайравӣ карда бошад.

Тавсифи ҷоми мусаввари эронӣ дар ашъори Абӯнувос минбаъд мавриди пайравии бисёр шоирони арабизабон қарор гирифт. Дар натиҷа, дар назми арабизабони асрҳои IX-XII як қатор хамрияҳое суруда шудаанд, ки дар онҳо чомҳои бо сурати Хусрав ва сипоҳиёни ӯ ороишёфта тасвир шудаанд. Аксари ин шеърҳо тақлиди маҳз ба тасвиrotи Абӯнувос ва такрори ташбеҳу қиёсҳои ӯ буда, аз ҷониби муҳаққиқони шеъри араб шарҳу тавзеҳ ёфтаанд<sup>1</sup>.

Дар хамриёти давраи мазкур тавсифи расму одатҳои майгусорӣ ва одоби мунодамати эронӣ мақоми намоён дорад. Чунонки аз муҳтавои пандномаву андарзномаҳои сосонӣ пайдост, дар Эрони тоисломӣ маданияти маҳсули майнӯшӣ ташаккулёфта буд. Аз худ қардани расму одатҳои анъанавии майнӯшӣ ва қоидаву қонунҳои маъмули маҷлиси шароб аз унсурҳои муҳимми тарбияи ҷавонон ба ҳисоб мерафт. Ин расму русум ва одоби шаробнӯшиву мунодамати тоисломии эронӣ пас аз зуҳури ислом бо вучуди таҳрими май на танҳо аз байн нарафт, балки ҳамчун як ҷузъи маданият ва одоби ахлоқ дар давраи нав низ ҳуқуқи бақо пайдо кард, ки қисматҳои дахлдори адабиёти пандуандарзии арабиву форсӣ далел ба ин гуфтаҳоианд<sup>2</sup>.

Бадеҳист, ки шоирони арабизабони асрҳои VIII-IX, пеш аз ҳама Абӯнувос, дар хамрияҳои худ ғолибан ҳамин расму одатҳои майгусориро тавсиф ва талқин кардаанд. Чунонки аз тасвири маҷлисиҳои айш дар «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ бармеояд, дар Эрони тоисломӣ бодапаймоӣ бо шунидани мусиқӣ ва суруд тавъам будааст<sup>3</sup>. Аз ин ҷост, ки пайванди май ва мусиқӣ яке аз мавзӯҳои асосии ашъори хамрия гардидааст. Барои Абӯнувос низ нӯшидани май бе мусиқиву суруд тасаввурнопазир аст ва ӯ чунин дастур додааст:

---

<sup>1</sup>Крачковский И.Ю. Абу Нувас о сасанидской чаше с изображениями. - С.391.

<sup>2</sup>Кабус-Наме.Перевод, статья и примечания Е.Э.Бертельса. -С.57-64; Сиасет-наме.Книга о правлении вазира XI столетия Низам ал-мулка. -С.126-127.

<sup>3</sup>Розенберг Ф.А. О вине и пирях в персидской национальной эпосе // Сборник музея антропологии и этнографии при Российской Академии наук, т.У.-Петроград, 1918. -С.383.

وَلَا تَشْرَبُ بِلَا طَرَبٍ وَ لَهْوٍ فَإِنَّ الْخَيْلَ تَشْرَبُ بِالصَّفِيدِ

*Бе садои мусиқиву суруд бода мапаймой, ки ҳатто асп ҳам то сафираш назанӣ, об нахӯрад<sup>1</sup>.*

Дар баробари мусиқиву суруд дар ҳамриёти Абӯнӯвос гулу раёҳин низ аз унсурҳои ҳатмии шодиву тарабафзои маҷлиси майгусорон аст. Муҳити ин маҷлис бо гулҳои гуногун ороиш ёфтааст, насими атрогини раёҳин офокро муаттар гардонидааст, садои форами мусиқӣ ва савти дилкаши мутриб ба гӯш мерасад. Ин ҳамбастагии май, мусиқӣ ва гулу раёҳин, ки аз ҳамон анъанаи тоисломии майнӯшӣ сарчашма гирифтааст, дар ҳамриёти шоир бо рангу тобишҳои гуногун зоҳир шудааст. Байтҳои зерини шоир гунае аз ин ҳамбастагири ифода кардаанд:

لَوْرُدٌ يَضْحَكُ، وَالْأوتَارُ وَالنَّائِ يَنْدُبُ  
تَمْطِحُ أحياناً و يَنْتَحِبُ

*Гули садбарг механдад, торҳо суруд мехонанд, най гоҳ паст нола мекашад, гоҳ бо овози баланд мегиряд.*

*Майгусорон дӯстони содиқанд ва риштаҳои маваддат, ки онҳоро ба ҳам пайваستاанд, аз муносибатҳои авлодӣ муҳкамтаранд<sup>2</sup>.*

Ба андоза нӯшидани шароб аз масъалаҳои муҳимми одоби майнӯшист. Абӯнӯвос дар ин бора чунин ақида дорад:

وَجَدْتُ طَبَائِعَ الْإِنْسَانِ أَرْبَعَةً هِيَ الْأَمْثَلُ  
فَأَرْبَعَةٌ لِأَرْبَعَةٍ لِكُلِّ طَبِيعَةٍ رَطْلٌ

*Ман дарёфтам, ки табиҳои инсон чаҳор навъ аст, ки онҳо асосанд.*

*Чаҳор бар чаҳор, ин аст меъёр! Барои ҳар як навъ - як ратл май!<sup>3</sup>.*

Май барои Абӯнӯвос неъматест, ки на ҳар кас сазовори он аст. Шоир нӯшидани майро танҳо ба марди карим ва шахси шоиста муҷоз медонад ва ин маъниро бо роҳи таъйини таносуб байни вожаҳои «карим» (ангур) ва «карим» ифода мекунад:

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۲۷۵.

<sup>2</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۱۹۲.

<sup>3</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۴۸۵.

ولا تَسْقُ المِدامَ فَلَسْتُ أَجِدُّ  
 فتىً لئيماً هذى لئيمٍ  
 لأن الكرمَ من و ماء الكرم  
 كرم وجودٍ للرجل الكريم

*Май ба марди лаим мадеҳ, ки ӯ онро шоиста нест.*

*Чун карм (ангур) бо карам ҳамреша аст, шираи кармро месазад шахси карим бинӯшад<sup>1</sup>.*

Аз шартҳои дигаре, ки Абӯнӯвос барои майнӯшӣ зарур мешуморад, виқор ва чиддияти шахси майхур аст. Аз ин ҷост, ки ӯ чунин дастур медиҳад:

و وقّر الكأسَ فإنَّ  
 عن سفيه آيينها  
 الوقار

*Соғари майро эҳтиром кун ва онро ба сифлаву нодон мадеҳ.*

*Ҳаққо, ки виқори боданӯш оини соғари май аст<sup>2</sup>.*

Баъзе аз дастур ва тавсияҳои Абӯнӯвос ба сифатҳои ахлоқии шахси боданӯш дахл доранд. Аз назари шоир, шахсе лоиқи ҳузур дар маҷлиси бодапаймоён аст, ки дар ҳаққи дигарон бадгӯӣ накунад, аз хархашаву ҷанҷол парҳез кунад ва дӯстиву рафоқатро аз айбҷӯиву кинахоҳӣ авло донад:

فاذا خلوتُ بِبشرِها فاكفُفْ لسانك عن  
 في مجلس عيوب الناس  
 في الكأس مشغلة و فاجعل حديثك كله  
 في لذاتها في الكأس  
 صفو التعاشر في و علي  
 مُجانبة الأذى اللئيب تخير  
 الجلاس

*Чун дар маҷлисе ба шаробнӯшӣ пардохтӣ, даҳон аз айби дигарон бипӯшон.*

*Дар соғари май ва лаззатҳои он бичӯй мавзӯи суҳбатро ва ҳадис аз соғари май гӯву бас.*

*Сафои дӯстӣ он аст, ки дигареро наранҷонӣ. Марди оқил ҳамнишинро бибояд гузид<sup>3</sup>.*

Абӯнӯвос дар ҳамриёташ худ ба он ишора кардааст, ки маъҳазӣ расму одат ва одоби майнӯшии тасвиркардааш маданияти майнӯшии

<sup>1</sup>Абӯноас. Диван. - с. 545.

<sup>2</sup>Абӯноас. Диван. - с. 246.

<sup>3</sup>Абӯноас. Диван. - с. 372.



тоисломии эронист. Аз ин чиҳат хамрияе, ки дар он шоир «иштирок»-и худро дар маҷлиси бодапаймоии эронӣ ба тасвир гирифтааст, хеле ҷолиб аст ва шоир тамоми он сифат ва хислатҳои маънавию ахлоқиро, ки дар шеърҳои фавқуззикр барои майгусорон зарур ва хатмӣ шуморидааст, дар одоби муошират ва мунодамати ҳамқадаҳони эронии худ ба мушоҳида гирифтааст. Абӯнӯвос асли эронӣ ва кешӣ зардуштии аҳли маҷлисро бо таъбири «музамзим», ки ишора ба одати «замзама»-и зардуштист, таъйин кардааст. Инак, шеъри ӯ:

رَاحَ الشَّقِيُّ عَلَى الرَّبْوَعِ يَهِيمُ وَالزَّاحُ فِي رَاحِي، وَرَحْتُ  
 بُمَزْمِزِمِينَ غَدَا بِسَدْفَةِ لَيْلَةٍ وَاللَّيْلُ  
 الْمُتَلَتِّيسُ  
 مَتَوْقِرِينَ كَلَامُهُمْ مَا بَيْنَهُمْ وَالظَّلَامُ، بِهِمْ  
 مَفْهُومُ  
 نَادَمْتُهُمْ، أَرْتَاضُ فِي آدَابِهِمْ فَالْفَرَسُ عَادَى سَكْرَهُمْ  
 مَحْسُومُ  
 وَلِفَارِسِ الْأَحْرَارِ أَنْفَسُ أَنْفَسُ وَفَخَارُهُمْ فِي عَشْرَةِ  
 مَعْدُومِ

*Аъробии шӯрбахт аз шавқе, ки ба харобаҳои манзил дошт, ба сӯи онҳо раҳсипор гашт, аммо ман шароб дар даст равон гаштам.*

*Ба сӯи онҳое, ки дар тори шаб маҷлиси шароб доранд, зери лаб замзама мекунанд, аммо шабмисли қир сиёҳу зулмонӣ буд.*

*Онҳо бо виқору тамкин менишастанд, дар ҳаққи дигарон бадгӯӣ намекарданд, зери лаб замзама доштанд.*

*Бо онҳо ҳамнишин гаштам ва кӯшидам, ки одобашонро риоя кунам. Аз одоби эронӣ кина наварзидан ба ҳамнишинон аст.*

*Озодагони эронӣ соҳиби шаъну иззати нафсанд, вале худситоиву гурур дар ишрат ба онҳо бегона аст<sup>1</sup>.*

Дар байтҳои баъдӣ шоир ба ҳамон шеваи муқобилгузори Аҷаму Араб, кибарии шеърҳои дар равияи шуубия сурудааш хос буд, бармегардад ва одоби майнӯшии ҳамқадаҳони эронияшро бо расму одатҳои маҷлиси шароби арабҳо ба доираи муқоисаву муқобила мекашад. Шоир тозиёнаи танкиди худро ба муқобили ифтихори қабилавӣ, ки арабҳо онро аз фазилатҳои анъанавии худ мешумурданд, равон месозад, то газанде аламовар ба ғурури қабिलाҳои араб ворид созад:

وَإِذَا أَنْأَدَمُ عُمْبَةً بَدَرْتُ إِلَى ذِكْرِ الْفَخَارِ

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ۵۵۲.

عَرَبِيَّةٌ	وَعَدَّتْ إِلَى قَيْسٍ،	وَعَدَّتْ قَوْسَهَا	سَيَّيْتُ	تَمِيمٌ،	وَجَمَعَهُمْ	تَمِيمٌ
وَبُنُّوا	لِأَعَاجِمٍ	لَا	أَحَاذِرُ	شَرًّا:	فَمَنْطِقُ	شَرِبَهُمْ
لَايَبْدَخُونَ	عَلَى	النَّدِيمِ	إِذَا	وَلَهُمْ	إِذَا	العَرْبُ
وَجَمِيعَهُمْ	لِي	حِينَ	أَقْعُدُ	بِتَدَلِّيوتِهِيُّب	مَوْسُومُ	تَسْلِيمُ
		بَيْنَهُمْ				

*Вале чун бо гурӯҳи аъроб ҳамқадаҳ гардам, тамимӣ ба зикри мафхарати қабилааш мепардозад.*

*Ва чун навбат ба қайсӣ бирасад, ӯ лоф аз камони қабилааш мезанад.*

*Ҳам рӯи Тамиму ҳам рӯи дигараш сиёҳ бод!*

*Аммо аз авлоди аҷамиён сухани бад кас нашнавад, зеро лофзани Ҳангоми бодагусорӣ байни эшон мазмум аст.*

Эшон, чун сархуш шаванд, пеши ҳамқадаҳ кибру гурур накунад ва бар хилофи аъроб, ки ба чунин ҳолат кинапарвар ҳастанд, меҳрубонтар гарданд.

Ва ба ман, чун байни эшон нишастам, ба ғояти фурӯтаниву эҳтиром муносибат мекунамд<sup>1</sup>.

Аз мавзӯоти дигари ашъори ҳамрияи Абӯнӯвостарзи тайёр кардани май аст. Ин мавзӯ дар як қасидаи шоир, ки аз 27 байт иборат аст, дар перояи бадеӣ тасвир ёфтааст. Муҳтавои насиби қасида иборат аз даъват ба майнӯшӣ ва тавсифи шоиронаи май аст. Қисмати мазкур бо байти таҳаллус анҷом меёбад. Дар он шоир тасрех медиҳад, ки ин май на аз хурмову на аз ангур, балки аз асалу об тайёр шудааст. Сипас шоир ба тавсифи занбӯрони асал ва маликаи онҳо пардохтааст. Пас аз ин амалиёти тайёр кардани майи асал бо обу ранги бадеӣ нақл шудааст. Интиҳои қасида мисли ибтидои он даъватро ба майнӯшӣ ва лаззат бурдан аз садои форами мусиқӣ дар маҷлиси айшу тараб дар бар гирифтааст<sup>2</sup>. Қисмати ба мавзӯи баҳси мо дахлдори қасида иборат аз байтҳои зер аст:

وَصَفَقَوْهَا بِمَاءٍ فِي قِدْرٍ قَسَّ كَجَوْفِ  
النَّيْلِ إِذْ بَرَزَتْ الْجَبِّ رَوْحَاءِ  
حَتَّى إِذَا نَزَعَتْ وَأَقْصَتِ النَّارُ

<sup>1</sup>Абӯноас. Диوان. - с. 553.

<sup>2</sup>Абӯноас. Диوان. - с. 9-12.

الزُّواذُ رَغْوَتُهَا	عنها كل ضراءٍ
استودعوها	من أغبرٍ
رواقيداً مُزَفَّتَةً	قاتم منها وغبراءٍ
أفواهُها	من حرّ طينة
دهراً على ورقٍ	أرضٍ غيرمِيثاءٍ
حتى إذا سَكَنَتْ فِي	من بعد دَمْدَمَةٍ
ذَتِهَا وَهَدَّتْ	منها وَضُوضاءٍ
جاءت كشمس ضحا في	من برجٍ لِهَوٍ،
يوم أسعدها	الى آفاقٍ سَراءٍ
كأنها ولسانٌ	نارٌ تَأَجَّجُ فِي
الماء يقرؤها	أجام قَضاءٍ

*Ва асалро бо оби Нил мамзуч карданд ва онро дар деги роҳиб, ки васеъ ва ба сони чоҳ амиқ буд, ҷӯшониданд.*

*Пас кафкро аз рӯи он бардоштанд ва отаи онро аз ғашу гил холис гардонд.*

*Баъд онро дар хумҳои калони қирандуд ва губоролуда ҳифз карданд.*

*Сари хумҳоро бо лойи гарму сахт бастанд ва то абад муҳр карданд.*

*Пас аз ҷӯшидану хурӯшидан он дар хумҳо хомӯш ғашту таскин ёфт.*

Баъд аз ин май ба сони офтоби саҳаргоҳон дар бурчи лаззот дар осмони фараҳ буруз кард<sup>1</sup>.

Амалиёти тавлиди май дар қитъаи мазкур воқеъбинона, бо тавзеҳи ҷузъиёт тасвир ёфтааст. Ин имкон медиҳад, ки хонанда амалиёти мазкурро аз аввал то охир ба таври равшан тасаввур кунад.

Абӯнӯвос дар қасидаи мазкур, бешубҳа, «амалиёт»-и майсозии замони худро ба тасвир гирифтааст. Вале барои баҳси мазкур на ин ҷихати масъала, балки тарафи дигари он – дар қасидаи боло инъикос ёфтани анъанаи таҷассуми бадеии амалиёти тавлиди май муҳим аст. Реша ва буни анъанаҳои мазкур ба адабиёт ва фаҳлавиёти қадимаи халқҳои эронӣ мерасад. Дар байни халқҳои эронӣ аз қадим афсона дар бораи падид омадани май маълум буд. Чанд ривояти ин афсона дар «Ҷомеъ-ул-ҳикоёт»-и Муҳаммад Авфӣ, «Нафоис-ул-фунун фӣ ароис-ил-уюн»-и Муҳаммад ибни Маҳмуди Омӯлӣ, «Наврӯзнома»-и мансуб ба Умари Хайём ва «Роҳат-ус-судур»-и Ровандизикр шудааст<sup>2</sup>.

<sup>1</sup> Абӯнӯвос. Дивон. - с. 11.

<sup>2</sup> Мейн, Маммад. Мазд Ҷисна ва адаб Ҷарси. - с. 444-434.

Тибқи як ривоят май бори аввал дар давраи шоҳии Ҷамшед тайёр карда шудааст (Ривоятҳои Авфӣ, Омӯлӣ ва «Наврӯзнома»). Дар ривояти дигар истехсоли нахусти май ба давраи ҳукмронии Кайкубод мансуб доништа шудааст (ривояти Ровандӣ). Ривоятҳои гуногуни афсона бо ҷузъиёти бадеӣ ва шахсиятҳои худ аз ҳам фарқ мекунанд, вале қиссаи «хабс»-и ангур, ба ғалаёну хурӯш омадани шарбати он, гуфтор дар бораи ҷилову дурахш ва нақҳати май ва фазилатҳои он дар ҳамаи ривоятҳо тақрор ёфтаанд. Зоҳиран, ҳамин унсурҳои тақроршаванда мабдаи тамоми ривоеҳои афсона дар бораи тавлиди май будаанд.

Афсонаи мазкур ва ривоятҳои гуногуни он тасаввуроти асотирии халқҳои эрониро дар бораи пайдоиши май инъикос карда, ба анъанаи таҷассуми бадеии раванди тавлиди май асос гузоштаанд.

Анъанаи мазкур дар назми арабизабон бори нахуст дар қасидаи фавқуззикри Абӯнӯвос зухур кардааст. Бояд иқрор кард, ки дар тасвири шоир бартарӣ доштани рангҳои воқеӣ то андозае пай бурдани алоқаи қасидаи ӯро бо афсонаи қадими эронӣ дар бораи падид омадани май душвор гардидааст. Вале чеҳраи «духтари Хусрав/ Кисро», ки дар ҳамриёти шоир хеле маъмул аст ва мурод аз он май мебошад, нишоне возеҳ аз он афсонаи куҳан дорад. Ин тасвир айнан ҳамон бори маъниро мекашад, ки дар назми форсии тоҷикӣ, алаҳхусус дар ашъори ҳамрияи Манучехрӣ барои ифодаи он ибораи «духтари Ҷамшед» қорбаст шудааст. Гап дар сари он аст, ки дар адабиёти араб «Хусрав», ки номи чанде аз шоҳони сосонӣ буд, дар шакли муарраби «Кисро» ба исми ҷомеъи тамоми шоҳони эронӣ табдил ёфтааст. Аз ин ҷо, таъбири «духтари Хусрав»-и ҳамриёти Абӯнӯвос маънои «духтари шоҳи эронӣ»-ро касб карда, алоқаи худро бо афсонаи қадими эронӣ дар бораи падид омадани май дар давраи шоҳии Ҷамшед (ё Кайкубод) ошкор месозад.

Минбаъд, анъанаи таҷассуми бадеии ҷараёни тавлиди май дар ашъори шоирони форсигӯӣ Рӯдакӣ, Башшори Марғазӣ ва Манучехрӣ ривочу раванқи тоза пайдо кард. Муҳаққиқони пайвандҳои адабии арабиву форсӣ аксаран умумияти мавзӯӣ ва қаробати воситаҳои тасвирро дар шеърҳои Абӯнӯвос ва шоирони мазкури форсигӯӣ ба назар гирифта, шоирони баъди ро пайрави шоири арабизабон доништаанд<sup>1</sup>. Таъкиди авлавияти суҳанваре дар қорқарди ин ё он

---

امصفي، بوالفضل. رسم نثار. - ص. ۱۲۶-۱۳۲؛ الكيك، فكتور. تأثير فرهنگ عرب در اشعار منوچهر بن دامغانی. بیروت-۱۹۸۱. - ص. ۱۳۸-۱۵۳.

мавзӯъ, албатта, беаҳаммият нест, вале дар ин маврид он моҳияти масъаларо ба тамои ошкор намекунад. Умумияту қаробате, ки дар байни қасидаи Абӯнӯвос ва хамриёти Рӯдакӣ, Башшори Марғазӣ, Манучехрӣ ба назар мерасад, аз он сар задаанд, ки шеърҳои ҳар чаҳор устои суҳан зода ва маҳсули ҳамаи анъанаи қадимаи эронии таҷассуми бадеии тарзи тавлиди май мебошанд. Бадеҳист, ки умумияти анъана умумияти мавзӯъ ва шабоҳати оҳангу воситаҳои тасвирро тақозо мекунад.

Анъанаҳои адабиву бадеии эронӣ дар хамриёти садаҳои VIII-IX дар сатҳи ташбеҳ ва қиёсоти шоирона низ зоҳир шудаанд. Ин ташбеҳ ва қиёсот мантиқан аз тавсифи шароби эронӣ, тасвири соқии эрониясл ва тарғиби одоби мунодамати эронӣ бармеояд. Абӯнӯвос ва шоирони дигари хамриясаро ҳар гоҳ, ки ба тасвири маҷлиси шароб мепардозанд ва мехоҳанд, ки ашӯ ва маводи маҷлисро ба доираи муқоиса бикашанд, монандкунандаҳоро дар тамаддуни гузаштаи эронӣ меҷӯянд ва пайдо мекунанд. Ин тарзиташбеҳонидан идомаи анъанаҳои гузаштаро дар хамриёти давраи маҷкур амалан таъкид карда, рӯҳияи эронии ашӯри Абӯнӯвос ва пайравони ӯро боз ҳам пурқувваттар гардониданд. Далели ин нуқта хамрияи зерини Абӯнӯвос мебошад, ки дар он шоир дар талаби май ба ҳонаи хаммор рафтани худ ва ёронашро ба тасвир гирифтааст. Шоир ашӯи бечони тасвир – майро бо роҳи ҷонбахшоию шахсиятбахшӣ дар сурати маҷсудухтари эронӣ ҷилвагар кардааст:

خطبنا الى الدهقانبعض بناته فزوجنا  
 منهن في خدره الكبرى  
 مجوسية، قد فارقنا أهل دينها لبغضتها النار  
 التي عندهم تُذكي  
 رأث عندنا ضوء السراج، فراغها فما سكتت  
 حتى أمرنا به يُطفئ  
 إذا أصبحت أهدت إلى الشمس سجدة وتسجد آخرى حين  
 تسجد للمسرى

*Мо аз деҳқон яке аз духтаронашро хостгорӣ кардем ва ӯ моро дар ҳонаи калоне бо духтари бузургсолаш ба никоҳ овард,*

*Маҷсудухтарест ӯ, ки аҳли динашро ба сабаби он, ки ба оташи бугз дорад, вале ҳамадинонаш онро мепарастанд, тарк гуфтааст.*

*Назди мо оташи чароғро дида ба ларза омад ва таскин наёфт, то даме ки онро хомӯш кардем.*

*Аввал ӯро мо дар асорати ёрони ҳамқадаҳ бидидем, вале чун ба онҳо коргар шуд, эшон худ асири ӯ шуданд.*

*Субҳгоҳон бо сачда пешвоз гирад ӯ тулӯи хуршедро ва сачдаи дигар орад ӯро, даме ки майли гуруб кунад<sup>1</sup>.*

Тозагию бакорати тасвири май дар ин хамрия пеш аз ҳама ба ташбеҳу қиёсҳое, ки заминаи эронӣ доранд, асос ёфтаанд. Шоир бо монанд кардани май ба «духтари бузургсоли деҳқон» солхӯрдагӣ ва асли эронии шароби мавсуфро ифода кардааст. Ин «духтари бузургсол» дар тасвири шоир мачусикеш аст, ки ба хуршед сачда меорад. Бо ин ташбеҳ Абӯнӯвос гуфтанист, ки шароби мавсуфи ӯ дар зери офтоб оҳиста расидааст. Дар айни замон шоир таъкид карданист, ки шароби ӯро дар оташ напухтаанд. Барои ифодаи ин маънӣ шоир «мачусидухтар»-ро аз назди ҳамкешонаш «мебарад», зеро онҳо оташро муқаддас медонанд, вале ӯро ҳатто шуълаи чароғ ба тарсу ларза меорад. Чунонки аён аст, оинҳои кеши зардуштӣ дар тору пуди маъниҳои хамрияи Абӯнӯвос зоҳир шудаанд. Дар натиҷа, шаробе, ки шоир мавриди тасвир қарор додааст, дар либоси бадеии эронӣ ба чилва омадааст.

Тасвири шоиронаи дигари Абӯнӯвос низ ба анъанаи қадимаи зардуштӣ, ки дар адабиёти форсии тоҷикӣ бо номи «замзамаи мачус» маъруф аст, асос ёфтааст:

كَأَنَّ إِبْرِيْقَنَا فِي الْكَأْسِ شَيْخٌ  
إِذَا صُنْفَقَتْ مُزْمِمْ شَرِقٌ

*Ибриқи мо даме, ки май аз он ба чомҳо бирезанд, зардуштии пиреро мемонад, ки замзама дорад<sup>2</sup>.*

Ин ташбеҳ ба одати зардуштиён, ки ҳангоми ошомидану хӯрдан зери лаб оҳиста дуохоро замзама мекарданд, асос ёфтааст. Абӯнӯвос садои рехтани майро аз ибриқ ба чомҳо бо замзамаи мачусии солхӯрда ба муқоиса кашидааст.

Анъанаи қадими эронӣ ба Ибни Муътаз ташбеҳи зерро талқин кардааст:

و دنان مثل صف رجال قد اقيموا ليرقصوا دستبندا

<sup>1</sup>Абӯнӯвос. Диوان. - с. ۲۸-۲۹.

<sup>2</sup>Абӯнӯвос. Диوان. - с. ۴۳۶.

*Кӯзаҳои май, гӯӣ, одамонанд, ки саф кашида ва рақси «дастбанд»-ро иҷро мекунанд<sup>1</sup>.*

Бино ба тавзеҳи муаллифи «Ғиёс-ул-луғот» «дастбанд» навъе аз рақс аст, ки «раққосон дасти якдигар бо ҳам гирифта рақс мекунанд»<sup>2</sup>. Ибни Муътаз қатори кӯзаҳои майро ба сафи одамоне, ки рақси халқии эрониро иҷро мекунанд, қиёс кардааст.

Тасвири зерини Абӯнӯвос низ аз чихати ба доираи муқоисаи шоирона кашидани зоҳираҳои тамаддуни гузаштаи эронӣ ҷолиб аст:

كَأَنَّ سَطُورًا تَكَادُ وَإِنْ طَالَ  
فَوْقَهَا فَارْسِيَّةَ الزَّمَانِ تَبِينُ

*Рӯи май, гӯӣ, сатрҳои форсӣ мактубанд, ки бо вучуди тӯли замону деринагии худ то ҳол аёну хоноянд<sup>3</sup>.*

Дар ин байт шоир чинҳои сатҳи майро дар ҷом ба хатти форсӣ, ки мисли май қадим аст, монанд кардааст. Ҳамин гуна ташбеҳдар байти зерини Абӯнӯвос низ ба мушоҳида мерасад:

صَفَاءَ سِلْكٍ أَلْفَاثَ كَاتِبِ  
جَمَانَ لَوْلُؤَهَا سَيْدِ الْفَرْسِ

*Силки шаддаи марвориди рӯи майи тилоранг, гӯӣ, ҳарфҳоеанд, ки котиби форсӣ рӯи коғаз меоварад<sup>4</sup>.*

Дар ин ҷо шоир ҳубобҳои рӯи майро ба донаҳои марворид ва чинҳои сатҳи майро ба ҳарфҳое, ки котиби эронӣ ба рӯи коғаз меоварад, ташбеҳ кардааст.

### 2.2.5. Оҳангҳои эронӣ дар ашъори васфӣ

Анъанаҳои адабиву бадеии эронӣ дар ҷунин навъи маъмули назми арабизабони садаҳои VIII-IX, мисли васф низ инъикос ёфтаанд. Таъкид зарур аст, ки васф дар адабиёти араб аз давраи тоисломӣ

<sup>1</sup>موافى، عثمان. التيارات الاجنبية فى الشعر العربى منذ العصر العباسى حتى نهاية القرن الثالث الهجرى. - ص. ۳۲۹.

<sup>2</sup>Ғиёс-ул-луғот. Таҳияи матн бо пешгуфтор, мулҳақот, тавзеҳот ва феҳристи А.Нуров, ҷ.1.- Душанбе: «Адиб», 1987.-С.334-335.

<sup>3</sup>أبونواس. ديوان. - ص. ۵۹۹.

<sup>4</sup>أبونواس. ديوان. - ص. ۳۷۰.

маълум буд. Қисмати васфи қасидаи тоисломии арабӣ тавсифи мушкилоти сафари шоирро дар бодия, тасвири маркаби ӯ ва ҳайвоноти биёбон, нигориши манзараҳои осмон, васфи абру борон ва умуман ҳар чизеро, ки ба муҳити бодияи араб хос буд, дар бар мегирифт. Аммо тағйироте, ки дар ҳаёти фарҳангии арабҳо дар натиҷаи бархӯрди онҳо бо таҷрибаи таърихиву маданияи халқҳои истилошуда ба вучуд омаданд, мӯчиби дигаргун шудани мавзӯ ва муҳтавои васфи назми арабизабони садаҳои VIII-IX гардиданд. Азбаски ин тағйирот аксаран ба таъсири фарҳангу тамаддуни халқҳои мағлуб вобаста буд, дар васфи ин давра анъанаҳои ғайриарабӣ, аз ҷумла анъанаҳои эронӣ, мутаносибан мақом ва вусъати бештаре пайдо карданд.

Мазияти дигари васфи ин давра дар муқоиса бо васфҳои шоирони пешини араб дар фузунӣ ёфтани ашъи тавсиф ва миқдоран зиёд шудани ашъори васфия зоҳир шудааст. Шоирон акнун бештар лавозимоти ҳаёти фараҳбахшу нишотангез, аз қабилҳои ҷашнҳову базмҳои дарборӣ, иморатҳои зебои шаҳрҳо, қасрҳои пуршукӯху боҳишмат, фароғатгоҳҳои хушманзараи ҳокимони давр, эҳёи табиат ҳангоми баҳорон, боғҳои пурсоя, гулҳои рангоранг, хониши фараҳафзои парандагон ва ғайраро рассомона ва шоирона ба тасвир гирифтаанд. Ин қабил тасвирҳо дар ашъори васфия аз нимаи дувуми асри VIII, вақте ки ба таъкиди В.А.Эберман «дар ҳусниёти назми араб бо таъсири Абӯнӯвоси эронӣ таҳаввуле аз тасвири манзараҳои якнавохту қолабии бодия ба нигориши зебоиҳои дигар – зебоиҳои зиндагии бошукӯх, шикору боғҳо ва талаввунӣ гулҳо эҳсос мешавад»<sup>1</sup>, роиҷ гардид.

Унсурҳои эронӣ дар ашъори васфия аксаран бо роҳи ғайримустақим, ба воситаи тасвири ҳамон ашъу маводи таҷаммулу ҷалол, ҳамон муҳтасоти ҳаёти маданияи Хилофат, ки сарчашмаи интишори онҳо дар муҳити арабӣ анъанаву суннатҳои фарҳангу тамаддуни халқҳои эронӣ буданд, тазоҳур карданд. Далели равшани тазоҳури билвоситаи унсурҳои эронӣ қасидаи «синия»-и маъруфи шоири араб Бухтурӣ (821-897) аст, ки дар он асари барҷастаи санъати меъмории эронӣ – қасри Мадоин мавриди тасвир қарор гирифтааст. Деворнигораҳои ин қаср то замони мо нарасидаанд, вале аз рӯи тасвири шоир мо метавонем таркибу сохти онҳоро ба тақриб тасаввур кунем. Шоири араб дар деворнигораҳо се лавҳаи алоҳидаро

---

<sup>1</sup>Эберман В.А. Персы среди арабских поэтов эпохи Омейядов. – С.153.



ташхис додааст. Лавҳаи аввал лаҳзаи набардро инъикос кардааст: шаҳаншоҳи сосонӣ савори асп ба сарбозоне, ки либосҳои чангӣ пӯшидаанд, сарварӣ мекунад. Сарбозон ба душман бо найза ҳамла меоранд ва худро бо сипар муҳофизат мекунанд. Лавҳаи дувум лаҳзаи базм ва лавҳаи сеум лаҳзаи қабули сафирони хориҷиро дар ҳузури шоҳаншоҳ инъикос кардаанд. Аз тасвири Бухтурӣ аён аст, ки деворнигораҳои қасри Мадоин бо услуби бадеии «базму разм», ки дар санъати меъмории тоисломии эронӣ маъмул буд, офарида шудаанд. Оҳангҳои эронӣ дар қасида танҳо бо тасвири деворнигораҳои қаср маҳдуд нест. Шоир дар байтҳои хотимавӣ аз барҳам хӯрдани давлати Сосониён изҳори таассуф карда, бебақоии дунёро дар мисоли фано ёфтани азамату шукӯҳи дудмони сосонӣ нишон додааст<sup>1</sup>. Ҳамин тавр, тасвири қасри Мадоин боиси ба шеъри шоири араб Бухтурӣ ворид гардидани оҳангҳои эронӣ гардидааст. Аммо ин оҳангҳо на ба таври мустақим, балки ба воситаи тасвири деворнигораҳои қаср ва ҳамчун далели фанопазирии олами моддӣ зухур кардаанд.

Дар ашъори васфияи садаҳои VIII-IX як қатор оҳангҳои низ роиҷ гаштанд, ки ба таври мустақим бо анъанаву суннатҳои адабиёти тоисломии халқҳои эронӣ алоқаманд ҳастанд. Дар радифи ин оҳангҳо мавқеи асосиро мавзӯоти марбут ба фасли баҳор – нигориши манзараҳои табиат, васфи зебоии боғу роғ, сифати гулҳо ва ғайра ишғол мекунанд. Дар ин қабил ашъор шоирон бештар ба “сураткашӣ” машғул шуда, кӯшидаанд зебоиҳои табиатро бо сеҳри сухан ба чилва оранд. Ин тасвирот ғолибан мӯҷаз буда, шоирон дар чанд байт як лаҳзаи нотакрор, як манзараи масарратбахши баҳорро ба қалам овардаанд. Байтҳои зерини Абӯнӯвос намунае аз ин қабил баҳорияҳо мебошанд:

طاب الزمانُ، ومضى الشتاء  
 وأورق الأشجارُ وقد أتى آذارُ  
 وكسا الربيعُ الأرضَ وشياً تحارُ  
 من أنوارِهِ لحسنِهِ الأبصارُ

*Айём фараҳбахшу дарахтон сабзранг гаштаанд, зимистон бирафту ҳамаломад.*

<sup>1</sup>البحتري. ديوان. ج. ١٠. ص. ١٩٠-١٩٤.

Баҳор заминро қабое аз рангҳои худ пӯшонид, ки аз зебои он дидагон ба ҳайрат меоянд<sup>1</sup>.

Сифати гулҳо аз мавзӯҳои маъмули ашъори васфия аст. Дар боғҳое, ки шоирон тасвир кардаанд, одатан ҳама навъи гулҳо атрафшонӣ мекунанд. Аксари ин гулҳо ба арабҳои пешин маълум набуданд ва бадеҳист, ки дар назми онҳо низ зикр нашудаанд. Баръакси ин, аз нимаи дувуми асри VIII сар карда, шоирони арабизабон ба зикри гулҳо ва васфи онҳо рағбати беандоза зоҳир кардаанд. Дар натиҷа, баҳорияи онҳо голибан мусаввараҳоеро мемонанд, ки дар қолаби каломи бадеъ офарида шудаанд ва молмоли рангҳову саршор аз бӯю накҳати диловез ҳастанд. Ҳамин гуна тасвир ба аксари баҳорияҳои Абӯнӯвос хос аст. Инак намунае аз онҳо:

أَوْ مَا تَرَى أَيْدِي حُلُلِ الثَّرَى  
السَّحَابِ رَفَشَتْ بِدَائِعِ الرِّيحَانِ  
مَنْ سَوَسِنِ غَفًّا بِنَفْسِجٍ، وَشَقَائِقِ  
الْقَطَافِ، وَخُزْمِ النِّعْمَانِ  
وَجَنَى وَزِدٍ مِثْلَ الشَّمْسِ طَلَعْنَ  
يَسْتَبِيكَ بِحَسَنِهِ مِنْ أَغْصَانِ

Оё намебинӣ, ки дасти абрҳо қабои замини намро чӣ гуна бо гулу раёҳин пероя баст?!

Перояе аз савсани навшукуфтаву сунбул, бунафшаву лола,

Ва садбаргҳои сурхи латифе, ки ҳусни онҳо касро мафтун кунанд.

Онҳо, гӯй, офтобҳоянд, ки дар шоҳаҳо тулӯъ кардаанд<sup>2</sup>.

Васфи гулҳо дар ашъори Ибни Муътаз низ фаровонба назар мерасад. Ба ғайр аз ин, дар девони шоир қасидаи тӯлонӣ - урчузае ҳаст, ки дар он қариб тамоми гулҳои дар замони ӯ маълум тасвир ёфтаанд<sup>3</sup>. Шоири дигар Ибни Румӣ то ҳадде шефтаи гулҳо буд, ки шеърҳои комилро ба васфи гулҳои алоҳида бахшидааст<sup>4</sup>. Дар баробари ин, дар ашъори шоирони арабизабон зебоии гулҳову накҳати раёҳин ҳамчун мазҳаре аз мазоҳири маданияти моддии эронӣ

<sup>1</sup>أبونواس.ديوان. - ص. ۲۷۸.

<sup>2</sup>أبونواس.ديوان. - ص. ۶۱۷.

<sup>3</sup>مؤافى، عثمان. التيارات الاجنبية فى الشعر العربى منذ العصر العباسى حتى نهاية القرن الثالث الهجرى. - ص. ۴۷۳-۴۸۰.

<sup>4</sup>الحمري، القيروانى. زهر الآداب و ثمر الالباب. ج. ۲. - ص. ۵۳۱-۵۳۲.

каламдод шуда, ба зухуроти табиати бодияи араб муқобил гузашта шудааст. Байтҳои зерини Абӯнӯвос далел бар ин гуфтаҳоианд:

أَرْضٌ تَبَتَّى بِهَا كَسْرِي      فَمَا بِهَا مِنْ بَنِي  
 دَسَاكِرِهِ      الرِّعْنَاءِ إِنْسَانٌ  
 وَمَا بِهَا مِنْ هَشِيمِ الْعُرْبِ      وَلَا بِهَا مِنْ غِذَاءِ  
 عَرْفَجَةَ      الْعُرْبِ خُطْبَانٌ  
 لَكِنْ بِهَا جُلْنَارٌ قَدْ      آسُ وَكَلَلَةٌ وَرَدٌ  
 تَفَرَّعَتْ      وَسَوْسَانٌ

*Дар ин замин қасрҳои қомат афрохтаанд, ки Хусрав сохтааст.  
 Дар ин макон аз қавми Банӣ Раъно – аъроби нодон нафаре вонахӯрад.*

*Афрача, ки аз рустаниҳои араб аст, ин ҷо дучор наояд. Ва аз гизои араб хутбон низ ин ҷо бегона аст.*

*Валекин ин ҷо гулзор асту болои он гули ос ва дар атрофи онҳо садбаргу савсан бишқуфтаву хуррамӣ доранд<sup>1</sup>.*

Осори мансури арабизабон низ аз гулу раёхинро парастии кардани эронӣ шаҳодат медиҳад. Аз ҷумла, адиби араб ал-Хусрӣ дар «Заҳр-ул-адаб» ном китобаш дар асоси осоритойсломии эронӣ хабар додааст, ки Хусрави Анӯшервон шефтаи наргис буд ва онро чунин васф мекард: «Наргис ба ёқути зарди байни марворидҳои сафед мемонад, ки болои зумурради сабз насб шудааст»<sup>2</sup>. Худи ҳамин муаллиф ривоят кардааст, ки Ардашери Бобакон аз ҳамаи гулҳо садбаргро бештар дӯст медошт ва дар тавсифи он чунин мегуфт: «Садбарг гӯй, марворидҳои сафед ва пораҳои ёқути сурх аст, ки болои курсие аз забарҷади сабз насб шудаанд ва мобайни онҳо зарраҳои тило пошида шудаанд. Садбаргро латофати май ва хушбӯии атр хос аст»<sup>3</sup>.

Қобили зикр аст, ки ин тасвирот ба ашъори шоирони арабизабон воридгардидаанд. Чунончи, Абӯнӯвос дар васфи садбарг гуфтааст:

حمرأً وبيضاً      ومملوناً  
 يُجْتَنَيْنِ، وَأَصْفَرًا      ببدائع  
 اللؤلؤان      الأوسطهنّ  
 كعقودٍ ياقوتٍ

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٦٠٦-٦٠٧.

<sup>2</sup> الحمري، القيرواني. زهر الآداب و ثمر الالباب. ج. ٢. - ص. ٥٣١.

<sup>3</sup> الحمري، القيرواني. زهر الآداب و ثمر الالباب. ج. ٢. - ص. ٥٣٣.

نظمن ولؤلؤ فرائد العقيان

Чун аз ин садбаргҳои сурху сафеду зард ва дорои рангҳои нодир дастагуле бисозӣ,

Онҳо ба гарданбандҳо мемонанд, ки аз ёқуту марворид мураккаб шудаанд ва дар мобайнашон тилои нодир гузошта шудааст<sup>1</sup>.

Дар байтҳои Муҳаммад ибни Абдуллоҳ ибни Тоҳир низ ташбеҳу қиёсои мазкур мавриди истифода қарор гирифтаанд:

كَأَنَّهُنَّ يَوَاقِيتُ يَطِيفٌ بِهَازِمِرْدٍ وَسَطُهُ شَذْرٌ مِنَ الذَّهَبِ

Садбарг ёқутпораҳоест, ки онҳоро зумуррад давр кашида ва мобайнашон тилорезаҳо пошида шудаанд<sup>2</sup>.

Дар фузунӣ ёфтани васфи гулҳо дар назми арабизабон баъзе ойину одатҳои эронӣ, ки ба гулу раёҳин вобастаанд, бетаъсир нестанд. Аз ин одатҳо яке гулафшонист, ки аз навъҳои расми нисор ба ҳисоб меравад. Расми нисор аз қадимулайём дар байни халқҳои эронӣ роиҷ буд. Чунонки аз «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ, «Вису Ромин»-и Гургонӣ бармеояд, дар дарбори подшоҳони эронӣ ба муносибати маросими тоҷгузорӣ, таваллуди фарзанд, никоҳ, пирӯзӣ дар ҷанг, вуруди сафирон, ҷашнҳои Наврӯзу Меҳргон ва тантанаҳои дигар тангаҳои тилову нуқра, мушк, марворид, гулу раёҳин, заъфарон ва ғайра нисор мекарданд<sup>3</sup>.

Расми нисор дар назми арбизабон ва минбаъд дар назми форсии тоҷикӣ низ бозтоби густарда пайдо кард ва боиси эҷоди таркибу ташбеҳоти зебои шоирона шуд. Чунончи, Абӯнӯвос гуфтааст:

زَهْرٌ يَطِيرُ كَتَسَاقِطِ  
فَرَاشَةُ الدَّرِّ النِّثِيرِ

Чун аз гулҳо парвонаҳо бипаранд, пиндорӣ, ки марворидҳои бисёр нисор шудаанд<sup>4</sup>.

Байти зерини Ибни Муътазз низ ишораи равшан ба расму нисор аст:

<sup>1</sup>أبونواس.ديوان. - ص. ٤١٧.

<sup>2</sup>الحمري، القيرواني. زهر الآداب و ثمر الآلباب. ج. ٢. - ص. ٥٣٣.

<sup>3</sup>مصفي، ابوالفضل. رسم نثار. نشریه دانشکده ادبیات و علوم انسانی تبریز، سال ٢٤. شماره مثلث ٩٧ - ١٠٠. سال ١٣٥٠/١٩٧١. ص. ٢٨٩ - ٣١٦.

<sup>4</sup>أبونواس.ديوان. - ص. ٣٢٤.

فكأن الربيع يجلو عروسا و كأنا من فطره فى نثار

*Баҳор, гӯй, арӯсест ораста ва мо онҳоем, ки чизҳои ба арӯс нисоришударо мечинанд*<sup>1</sup>.

Таҷассуми шоиронаи одати гулпошӣ дар байти зерини Ибни Муътазз омадааст:

و اغرورقت لانسكاب الماء مقلتها جاءت بثلج كورد ابيض  
نثرا

*Чашмони осмон пурнам гашианд ва аз онҳо барф биборид, гӯй, ки садбаргҳои сафедро нисор карда бошанд*<sup>2</sup>.

Як қатор шеърҳои шоирони арабизабон ба муносибати чашнҳои қадими эронӣ - Наврӯз ва Меҳргон эҷод шудаанд. Дар ин шеърҳо расму одатҳои тоисломӣ, ки бо ин чашнҳо марбут буданд, тасвир ёфтаанд. Аз ҷониби дигар, таҷлили ин чашнҳо дар дарбори хулафои аббосӣ ба ҳукми анъана даромада буд<sup>3</sup>. Бино бар ин, наврӯзнома ва меҳргонномаҳои шоирони давр дар айни замон идомаи анъанаи куҳанро дар замони нав - давраи аббосӣ бозтобӣ кардаанд. Дар шеърҳои ба Наврӯз бахшидашуда шоирони арабизабон манзараҳои табиати афсункори баҳорро бо ҳазор рангу бӯи хушаш ба тасвир кашидаанд. Ин қабил шеърҳо молмоли шодиву фараҳ буда, дар онҳо одатан даъват ба хуш гузаронидани вақт ва лаззат бурдан аз қадаҳи май садо додааст. Чунончи, дар пораи зер аз шеъри Абӯнӯвос оҳангҳои ҳаётдӯстиву риндона, ки ба аглаби ашъори шоир хос аст, бо рӯҳияи нишотангези чашнӣ мутобиқ афтадааст:

يباكرنا النوروز فى غلس الدجى بنور على الاغصان  
كالانجم الزهر  
يلوح كاعلام المطارف وشيه من الصفرة فوق البيض و  
الخضر و الحمر  
اذا قابلته الريح او ما برأسه الى الشرب ان  
سروا و مال الى السكر

*Наврӯзро мо дар тирагии субҳ пешвоз гирифтаем. Гулҳои шукуфта дар шоҳаҳои дарахтон ситораҳои фурузонии осмонро мемонданд.*

<sup>1</sup> ابن المعتز. ديوان. - ص. ۲۳۲.

<sup>2</sup> ابن المعتز. ديوان. - ص. ۲۵۲.

<sup>3</sup> Мец А. Мусульманский ренессанс.-Москва: «Наука», 1966. -С.333.

*Нақишҳое, ки Наврӯз дар рӯи замин бо гулҳои зарду сафед, сабзу сурх кашидааст, ба сони нақишҳои пардаи ҳарир медурахшанд.*

*Чун шамол ба гулҳо бивазад, гӯӣ, онҳо бо сар ба ҳамқадаҳон ишора мекунанд, ки «шодӣ кунед» ва майл ба сӯи мастшудагон мекунанд<sup>1</sup>.*

Дар ашъори васфияи давр шеърҳое, ки ба чашни Меҳргон бахшида шудаанд, миқдоран аз наврӯзнамаҳо камтаранд, вале аз лиҳози тасвири манзараҳои табиат, ташреҳи шоиронаи он манзараҳо тавассути тасвирҳои бадеӣ ва фароғирии суннатҳои қадимаи чашнӣ бо наврӯзнамаҳо дар як поянд. Ба тариқи мисол метавон шеъри шоири садаи IX ас-Сарвонино зикр кард, ки дар он на танҳо ба одати таҷлили Меҳргон бо май ва мусиқӣ ишора шудааст, балки аз шохону номоварони Эрони тоисломӣ ёд шуда ва бад-ин васила решаҳои эронии ин чашни фархунда бо сароҳати тамом таъкид гардидааст:

المهرجان	الدخول	على	اتاك
		تشيعها المعازف القيان	
و	بها	تسير	و زفت نحوك الصهباء صرفا
			تحملها الدنان
الايام	على	لهذا اليوم فضل مستبين	تعرفهو شان
اكرمك	و	اذا اوقرتة عظمت كسرى	الشريفالهرمزان
رضاك	سارعى	و	و اصفاك الهواء بهرام جور
			الفيروزان
به	دان	و	لتعظيم الذى عظموه
			اوائلهم و دانوا

*Хуш бош, ки Меҳргон бо дафу чанг ва рақсу суруд наздат меҳмон меояд.*

*Майи софу бегаширо сӯят меоранд, гӯӣ, он арӯс асту назди домод мебарандаш. Ва ин арӯс дар кӯзаҳо мастур аст.*

*Бартариву шаъни ин рӯз нисбат ба рӯзҳои дигар ба ту равшан аст.*

*Гар ту ин рӯзро эҳтиром доштаӣ, пас, Хусравро муҳтарам донистаӣ ва сазовори иқроми Ҳурмузони шариф гардидаӣ.*

*Баҳроми Гӯр ба ту лутфу эҳсон карда ва Фирӯзон дар ризои ту кӯшидааст,*

<sup>1</sup>أبونواس.ديوان. - ص. ۲۷۱-۲۷۲.

Ба хотири гиromӣ доштани чашноро, ки аҷоддашон онро парастии мекарданд ва эшон низ аз он дунбол кардаанд<sup>1</sup>.

Ба ғайр аз Наврӯзу Меҳргон дар ашъори шоирони арабизабон чашни дигари қадими эронӣ-Ромрӯз низ мавриди ситоиш қарор гирифтааст. Бар хилофи ду чашни аввал, ки дар ҷомеаи исломӣ ҳаққи бақо пайдо карданд ва ба таври васеъ ид карда мешуданд, Ромрӯз бисту якуми ҳар моҳи соли шамсӣ асосан дар доираи пайравони дини зардуштӣ таҷлил мегардид. Бадехист, ки ситоиши чунин як чашне, ки чанбаи сирф эронии зардуштӣ дошт, далели равшани садоқат ба анъанаҳои тоислоимии эронӣ буд. Ин гуна садоқат, ки тору пуди эҷодиёти Абӯнӯвосро фаро гирифта буд, дар пораи зер аз як шеъри ӯ низ ба зуҳур омадааст:

اسقنا، إنَّ يومنا	ولرام فضلٌ على
يوم رام	الايام
من شرابِ الذِّمِّ	شوق في وجهِ عاشق
نظر المع	بابتسام
في رياضِ ربيعة بكر	عليها بمستهل
النو	الغمام
فتوشَّت لكلِّ نورٍ	من فرادى نباته و
أنيقٍ	ثوأم
فترى الشربِ كالأهله	يتحسّونحسروئى
فيها	المدام

Соқӣ, шароб бипаймой, ки имрӯз рӯзи Ром аст ва он афзал аз дигар айём аст.

Шароби ноб бипаймой, ки аз табассуми маъшуқа ба ошиқ лазизтар аст.

Дар боғҳое, ки абри найсон саҳари зуд ба сари сабзаҳо донаҳои марворид фурӯ рехтааст.

Ва гулҳои рангоранг аз ҳар навъ бишқуфта ва офоқро муаттар сохтаанд.

Майгусорон дар ин боғҳо ҳилолонро мемонанд, ки аз шароби хусравӣ нӯш мекунанд<sup>2</sup>.

<sup>1</sup>موافى، عثمان. التيارات الاجنبية فى الشعر العربى منذ العصر العباسى حتى نهاية القرن الثالث الهجرى. - ص. ۲۱۰.

<sup>2</sup>أبنواس. ديوان. - ص. ۵۴۰.

Чашнҳои Наврӯз, Меҳргон ва Ромрӯз на танҳо фурсати муносиб барои тасвири манзараҳои мафтункунандаи табиат, на танҳо лаҳзаи мусоид барои ворид кардани анъанаву суннатҳои қадими эронӣ ба назми арабизабон буданд, балки ба як қатор ташбеҳу қиёсоти шоирона асос гузоштаанд. Чунончи, Абӯнӯвос саховату ҷавонмардии мамдӯхро мавриди ситоиш қарор дода, рӯзҳои дар меҳмонии ӯ гузаронидаашро ба рӯзҳои Наврӯзу Меҳргон монанд кардааст ва ин чашнҳои «маҷусӣ»-и эрониро дар як саф бо чашнҳои исломии арабӣ гузоштааст:

فتى يَوْمَاه لى ونيروز يُعَدُّ و  
فطرٌ وأضحى مهرجان

*Родмарде, ки ду рӯзам дар ҳузури ӯ, гӯӣ, рӯзҳои иди Фитру иди Қурбон ва ё Наврӯзу Меҳргон буд<sup>1</sup>.*

Ҳамин гуна ташбеҳ дар шеъри Ибни Муътаз низ, ки ба васфи сокии моҳрӯ бахшида шудааст, ба назар мерасад. Шоир шодиву суруреро, ки ӯ ва дӯстонаш дар меҳмонии соқӣ эҳсос кардаанд, бо хурсандиву нишоти рӯзҳои Наврӯзу Меҳргон қиёс кардааст:

و نحن منه و فىيامه ابدافى مهرجان نعاد به و نيروز  
*Ҳар рӯз, ки мо наздаш меоем, гӯӣ, он рӯзҳо Наврӯзанду Меҳргон<sup>2</sup>.*

Чунон ки аз ин мисолҳо пайдост, чашнҳои эронӣ омили фаъоли вуруди анъанаҳои адабиёту фарҳанги тоисломии эронӣ ба ашъори васфияи арабизабон гардидаанд. Таъсири ин омил хусусан дар назми нимаи дувуми асри IX ва асри X вусъати тамоми пайдо кард. Дар натиҷа, дар адабиёти ин давра навъи маҳсули «наврӯзиёт», яъне, силсилаи шеърҳои ба Наврӯз бахшидашуда пайдо шуд. Гузашта аз ин, тартиб додани маҷмӯаҳои ашъоре, ки ба ситоиши Наврӯзу Меҳргон бахшида шудаанд, дар адабиёти арабизабон ба ҳукми анъана даромад. Ба тариқи мисол, метавон аз маҷмӯаи «ал-Ашъор ас-соира фи-н-Найруз ва-л-Меҳраҷон», ки Берунӣ онро зикр кардааст<sup>3</sup>, ёдовар шуд.

Ҳамин тавр, васфи Наврӯзу Меҳргону Ромрӯз доираи мавзӯоти ашъори васфияи асрҳои VIII-IX-ро тавсия бахшид ва бад-ин васила анъанаву суннатҳои марбут бо ин чашнҳои қадимаи тоисломӣ,

<sup>1</sup>أبونواس.ديوان. - ص. ۶۵۴.

<sup>2</sup>ابن المعتز.ديوان. - ص. ۲۶۲.

<sup>3</sup>Берунӣ, Абӯрайхон. Осор ул-боқия. - С. 43.



оҳангҳои эронӣ ва рӯҳу тафаккури эрониро дар қолаби назми арабизабон ба ҷилва овард.

### 2.2.6. Анъанаҳои ҳамосасарони эронӣ ва кӯшишҳои эҷоди дoston дар назми арабизабон

Анъанаҳои адабиву фарҳангии эронӣ на танҳо дар таҷдиди навъҳои аз давраи ҷоҳилия маъмули назми араб нақши муҳим гузоштаанд, балки ба пайдоиши навъҳои нав дар он боис гардидаанд. Ба қатори чунин навъҳо, пеш аз ҳама, дoston дохил аст, ки дар адабиёти қадими араб мавқеъ надошт.

Кӯшишҳои нахустини эҷоди дoston дар назми арабизабон ба нимаи дувуми асри VIII – аввали асри IX рост меоянд ва бо роҳи ба риштаи назми араб кашидани осори ҳамосии эронӣ ва эронию ҳиндии давраи тоисломӣ сураат гирифтаанд. Ин кӯшишҳо асосан ба фаъолияти адабии шоири эронинаҷод Абони Лоҳиқӣ марбут буданд. Шоири мазкур ба назм даровардани осори ҳамосии ниёгонашро рисолати худ медонист ва дар ин соҳа истеъдоди баланд дошт. Ба шаҳодати Сулӣ (ваф.с.946), вақте аз Абони Лоҳиқӣ ғазалнависиро «ба сони Абӯнӯвос» талаб кардаанд, ӯ гуфтааст: «Аммо Абӯнӯвос китобҳои комилро ба назм надаровардааст, чунон ки ман кардам. Ман мувофиқи қариҳаи худ шеър менависам»<sup>1</sup>.

Машхуртарин асари Абони Лоҳиқӣ «Калила ва Димна»-и манзуми ӯст, ки каме пештар аз ҷониби Ибни Муқоффаъ аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума шуда буд. Тибқи хабари Сулӣ, Абон «Калила ва Димна»-ро махсус барои Бармакиён ба назм дароварда буд, то «ҳифзаш ба эшон ба осонӣ даст диҳад». Шоир ин корро дар се моҳ ба анҷом расонида, аз Яҳеи Бармакӣ 10 ҳазор, аз Фазли Бармакӣ 5 ҳазор динар сила гирифтааст. Ҷаъфари Бармакӣ ба Абон чизе ато накарда, гуфтааст: «Оё кофӣ нест, ки ман ровии шеъри ту бошам?!»<sup>2</sup>.

Бино ба ривояти Сулӣ «Калила ва Димна»-и Абони Лоҳиқӣ аз 14 ҳазор байт иборат будааст<sup>3</sup>. Аммо Ибни Муътаз микдори байтҳои онро 5 ҳазор таъйин кардааст<sup>4</sup>. Ҳаҷми ҳақиқии дostonро имрӯз

<sup>1</sup> الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ۳۹.

<sup>2</sup> الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ۲۰.

<sup>3</sup> الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ۱۰.

<sup>4</sup> ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. - ص. ۲۴۱.

муайян кардан душвор аст, зеро аз он ҳамагӣ 76 байт дар «Китоб-ул-авроқ»-и Сулӣ боқӣ мондаасту бас<sup>1</sup>.

Аз рӯи пораи начандон калоне, ки аз ин асари Абони Лоҳиқӣ боқӣ мондааст, доир ба чигунагии назми «Калила ва Димна» ва то чӣ дараҷа дар он комилу дақиқ бозгӯ шудани тарҷумаи мансури ин асар қазоват кардан душвор аст. Бино бар ин, таъкиди Ибни Муътазро доир ба ин масъала махсус бояд зикр кард, ки гуфтааст: «Касе натавонист, ки Абонро барои саҳве дар назми китоб сарзаниш кунад ва ё гӯяд, ки ӯ чизеро дар шакл ё мундариҷаи китоб ҳазф кардааст»<sup>2</sup>.

Асари мазкури Абони Лоҳиқӣ мавриди пайравии аҳли қалам қарор гирифт ва мӯчиби пайдоиши як қатор «Калила ва Димна»-ҳои манзум дар забони арабӣ гардид. То охири садаи VIII – аввали садаи IX се бозгӯи манзуми «Калила ва Димна» пайдо шуд, ки яке ба Алӣ ибни Довуд, дигаре ба Фазл ибни Навбахт–намояндаи дудмони маъруфи тарҷумонҳои эронии Навбахтиён ва севумӣ ба Бишр ибни Муътамир – муътазилии маъруф тааллуқ дошт<sup>3</sup>.

Абони Лоҳиқӣ ҳамчунин як қатор асарҳои дигарро низ дар қолаби назми араб бозгӯ кардааст, ки яке аз онҳо «Адаб»-и Ибни Мукаффаъ аст. Сулӣ нигоштааст, ки Абони Лоҳиқӣ ин асарро низ барои Бармакиён ба назм даровардааст<sup>4</sup>. Чунонки маълум аст, Ибни Мукаффаъ соҳиби ду рисола: «ал-Адаб ас-сағир» ва «ал-Адаб-ал-кабир» буд. Азбаски манзумаи Абони Лоҳиқӣ то замони мо нарасидааст, маълум нест, ки ӯ кадом «Адаб»-и Ибни Мукаффаъро ба риштаи назм кашидааст.

Аз дигар осори пандуахлоқии аслан эрониву ҳиндӣ Абони Лоҳиқӣ «Китоби Булуҳар ва Будосаф» ва «Китоби Синдбод»-ро ба назм даровардааст. Чунонки аз «ал-Фихрист»-и Ибни Надим бармеояд, ривоят дар бораи Синдбоди ҳаким аз паҳлавӣ ба арабӣ накл шуда буд ва дар ду шакл – комил («Синдбод-ал-кабир») ва мухтасар («Синдбод-ас-сағир») вуҷуд дошт. Бино ба таҳқиқоти А.Е. Кримский, мутарҷими «Синдбод-ал-кабир» дӯсти Абони Лоҳиқӣ – Асбағи Систонӣ буд ва ҳамин тарҷума асоси манзумаи Абонро ташкил кард<sup>5</sup>.

---

<sup>1</sup>الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ۴۶-۵۵.

<sup>2</sup>ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. - ص. ۲۴۱.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>4</sup>الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ۳۷.

<sup>5</sup>Крымский А.Е. Абан Лахыкый, манихействующий поэт (ок.750-815 гг.). Очерк из истории арабской повествовательной литературы индоперсидского характера VIII-

Ба қалами Абони Лоҳикӣ ҳамчунин бозгӯи манзуми се асари хамосии сирф эронӣ – «Сират Ардашер» (Корномаи Ардашер), «Сират Анӯшервон» (Корномаи Анӯшервон) ва «Китоби Маздак» тааллуқ дорад. Ба шаҳодати Ибни Надим, ҳамаи ин асархоро Ибни Муқаффаъ аз паҳлавӣ ба арабӣ баргардонида буд<sup>1</sup>. Аз ин рӯ, тахмин меравад, ки Абони Лоҳикӣ ҳангоми ба риштаи назм кашидани асарҳои мазкур ҳамон тарҷумаҳои мансури Ибни Муқаффаъро ба асос гирифтааст.

Сулӣ дар «Китоб-ул-авроқ»-и худ ба Абони Лоҳикӣ манзумаи «Зот-ул-хулал»-ро мансуб доништа, зикр кардааст, ки «дар он (Абон) ибтидои офариниши дунё ва сохти он, баъзе чизҳо аз мантиқ ва ашёи дигарро зикр кардааст. Ин достон машҳур аст ва ҳарчанд баъзеҳо онро ба Абулатоҳия мансуб доништаанд, дар амал моли Абон аст»<sup>2</sup>. Порае аз ин достон, ки ҳамагӣ панҷ байтро дар бар мегирад, ба воситаи «Муруч-уз-заҳаб»-и адиб ва муаррихи маъруф Масъудӣ (ваф.с. 956) то замони мо расидааст<sup>3</sup>. Аз муҳтавои он бармеояд, ки Абон дар достон дар қатори мавзӯҳои, ки Сулӣ зикр кардааст, ҳамчунин баъзе андешаву афкори тиббии хиндиро баён карда будааст.

Сулӣ ҳамчунин овардааст, ки Абони Лоҳикӣ «Китоб-ул-мантиқ»-ро барои Яҳёи Бармакӣ ба назм даровардааст. Дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим дар номгӯи осори Абони Лоҳикӣ «Зот-ул-хулал» ва «Китоб-ул-мантиқ» умуман зикр нашудаанд, вале ду асари дигари ӯ: «Китоб расоил» ва «Китоб-ҳилм ал-ҳинд» зикр шудаанд<sup>4</sup>, ки аз онҳо Сулӣ ёде накардааст. Дар асоси баъзе қаринаву далелҳо А.Е. Крымский тахмин карда буд, ки «Китоб-ул-мантиқ», «Китоб-расоил» ва «Китоб-ҳилм ал-ҳинд» номҳои дигари ҳамон як достони «Зот-ул-хулал» - «доиратулмаорифи манзуми хиндӣ» мебошад<sup>5</sup>. Азбаски аз ин таълифоти Абон, ба ҷуз аз «Зот-ул-хулал», асаре боқӣ намондааст,

---

IX вв.// Труды по востоковедению, издаваемые Лазаревским Институтом Восточных языков. Выпуск 37. -Москва, 1913.-С.17-18.

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۲.

<sup>2</sup>الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ۱.

<sup>3</sup>مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج ۱، ترجمه ابو القاسم پاينده. - ص. ۱۷۳-۱۷۴.

<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۲.

<sup>5</sup>Крымский А.Е. Абан Лахькый, манихействующий поэт (ок.750-815 гг.). Очерк из истории арабской повествовательной литературы индоперсидского характера VIII-IX вв.//Труды по востоковедению, издаваемые Лазаревским Институтом Восточных языков. Выпуск 37.-Москва, 1913. -С.30-31.

берун кашидани ин масъала аз доираи тахмин ва фарзиёт ҳоло имконнопазир аст. Вале муҳим ин чо он аст, ки Абони Лоҳиқӣ бо асар (ё асарҳо)-и мазкураш анъанаи дар қолаби назм пайрезӣ кардани донишҳои илмиву энциклопедиро асос гузоштааст. Ин анъана минбаъд дар назми араб ва форсии тоҷикӣ ривочу раванқ ёфт ва самараҳои хуб ба бор овард.

Чунон ки аён гашт, ҳамаи асарҳои зикршудаи Абони Лоҳиқӣ амалан бозгӯи манзуми осори аслан эронӣ ва ё ҳиндуэронӣ мебошад ва аз он шаҳодат медиҳад, ки нахустин кӯшишҳои дostonсароӣ ба забони арабӣ бо роҳи ба риштаи назм кашидани ёдгорҳои адабиёту фарҳанги тоисломии Эронзамин амалӣ гаштаанд. Дар баробари ин, яке аз аввалин дostonҳои арабӣ, ки дар заминаи маводи исломӣ эҷод шудааст, низ ба қалами Абони Лоҳиқӣ тааллуқ дорад. Ин дostonро Сулӣ «Фи-с-сиём ва-з-закот» (Доир ба рӯза ва закот) ва Ибни Надим «Китоб-ус-сиём ва-л-эътиқоф» (Китоб доир ба рӯза ва гӯшанишинӣ) номидаанд<sup>1</sup>. Поре аз ин дoston, ки иборат аз 27 байт аст, дар «Китоб- ул-авроқ»-и Сулӣ маҳфуз мондааст<sup>2</sup>. Дар он шоир таълимоти исломро доир ба рӯза аз забони фақеҳи маъруф Абӯюсуф (ваф.с.798) баён кардааст.

Анъанаи дostonсароиро дар назми арабизабон пас аз Абони Лоҳиқӣ шоир, адиб ва муаррихи маъруфи эронинаҷод Аҳмади Балозурӣ (ваф.с.892) идома дод. ӯро Ибни Надим «яке аз мутарҷимони осори эронӣ ба забони арабӣ» номидааст ва дostonи «Аҳди Ардашер»-ро маҳсули қалами ӯ донистааст<sup>3</sup>. Дар «ал-Фихрист», дар бобе, ки осори пандуахлоқии эронӣ, ҳиндӣ ва арабӣ қайд шудааст, асаре бо номи «Аҳд Ардашер Бобакон ило ибниҳи Собур» (Китоби васияти Ардашери Бобакон ба писараш Шопур) қайд шудааст<sup>4</sup>. Бархе аз аҳли таҳқиқҳадс задаанд, ки Балозурӣ ҳамин китобро ба назм даровардааст.

Ҳамин тавр, эҷодиёти Абони Лоҳиқӣ, Балозурӣ ва дигар шоирони зикршуда мӯҷиби дар назми арабизабони нимаи дувуми асри VIII пайдо шудани ду самти дostonсароӣ – дostonҳои пандуахлоқӣ (тарҷумаҳои манзуми «Калила ва Димна», «Булухар ва Будосаф», «Адаб»-и Ибни Муқаффаъ, «Китоби Синдбод», «Аҳд Ардашер») ва дostonҳои таърихиву қаҳрамонӣ («Сират Анӯшервон»,

<sup>1</sup>الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ٥١.

<sup>2</sup>الصولى، ابوبكر. اخبار الشعراء المحدثين من كتاب الاوراق. - ص. ٥١-٥٢.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٢٦.

<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ٣٧٧-٣٧٨.

«Сират Ардашер», «Китоб Маздак») гардид. Ҳамин ду самти дostonсарой дар давраи аввали ташаккули назми форсии тоҷикӣ мавқеи намоён пайдо кард. Чунончи, «Шоҳнома»-и Масъудии Марвазӣ аз намунаҳои нахустини дostonҳои таърихиву қаҳрамонӣ ба ҳисоб равад, «Калила ва Димна», «Синдбоднома»-и Рӯдакӣ, «Офариннома»-и Абӯшақри Балхӣ дар равияи дostonҳои пандуахлоқӣ эҷод шуда буданд. Аз ин ҷо метавон ҳадс зад, ки дostonҳои шоирони арабизабон Абони Лоҳикӣ, Балозурӣ ва дигарон ҳалқае буд, ки адабиёти ҳамосии тоисломии эрониро бо адабиёти форсии тоҷикӣ пайваст. Ин ҳалқа бо вучуди он ки ранги арабӣ дошт, ҷузъе аз занҷираи умумии тараққиёти афкори адабии халқҳои эронӣ буд ва бо анъанаҳои адабиёти араб иртибот надошт. Ин буд, ки кӯшишҳои нахустини эҷоди дoston минбаъд дар байни шоирони араб пайравони худро пайдо накард ва дostonсарой дар адабиёти араб реша надавонд. Ва, баръакс, бо пайдоиши назми дарӣ заминаи мусоиде барои дostonсарой фароҳам омад ва ин навъи эҷоди бадеӣ ба авҷи тараққиёт расид.

Айни ҳамин ҳолат ба шакли шеърӣ низ дахл дорад, ки дар қолаби он осори тоисломии эронӣ ба риштаи назми арабизабон кашида шуд. Ин шакли шеърӣ дар назмшиносии араб «қасидаи муздавича», «урҷузаи муздавича» ва ё мухтасаран «муздавича» меноманд. Муздавича шакли шеъриест, ки дар он, бар ҳилофи навъҳои маъмули назми араб, на байтҳо, балки мисраъҳои ҳар байт ҳамқофияанд. Бо ибораи дигар, «муздавича» номи арабии шакли маъруф ва маъмули форсии тоҷикии «маснавӣ» аст.

Ҳамчунон ки аз тадқиқоти Г.Грюнебаум бармеояд, нахустин муздавичаҳо дар назми араб дар ибтидои асри VIII, яъне ҳамон вақте, ки унсури эронӣ ба адабиёти араб ворид гардид, пайдо шудаанд<sup>1</sup>. Баъдтар ин шакли шеърӣ ба таври васеъ Абони Лоҳикӣ ва пайравони ӯ дар бозгӯи манзуми осори тоисломии эронӣ истифода бурдаанд. Мавридҳои истифодаи шакли муздавича дар назми арабизабони асрҳои VIII-IX ба ду чиз далолат мекунад. Яқум, ба ин шакли шеърӣ ғолибан шоирони эронинаҷод ва ё шоирони огоҳ аз анъанаҳои адабии эронӣ рӯй овардаанд; дувум, ин шаклро асосан барои тарҷумаи манзуми осори тоисломии эронӣ ва ё барои таҷассуми бадеии мавзӯот ва оҳангҳои эронӣ истифода будаанд. Пас аз асри IX истифодаи шакли муздавича дар адабиёти араб нисбатан

---

<sup>1</sup>Grunebaum G.E. On the origin and early development of Arabic muzdavij poetry. – “Journal of Near Eastern studies”. – Chicago, 1947. Vol. 3, number 1. – P. 10.

маҳдуд гардид. Баръакси ин, дар назми форсии тоҷикӣ истифодаи маснавӣ ҳамчун шакли маъмули дostonсароӣ вусъати тамоми пайдо кард. Ин амр низ далеле дигар бар он аст, ки ҳам шакли муздавича ва ҳам кӯшишҳои дostonсароӣ дар назми арабизабони асрҳои VIII-IX бозтоби анъанаву суннатҳои адабиву бадеии эронӣ буданд.

### 2.2.7. Зарбулмасалу мақол ва ҳикматҳои эронӣ дар назми арабизабон

Анъанаҳои эронӣ дар назми арабизабони асрҳои VIII-IX аз ҳама возеҳтар ва бармалотар дар истеъмоли зарбулмасалу мақол ва ҳикматҳои эронӣ зоҳир шудаанд. Дар адабиёти давраи сосонӣ қисми асосии зарбулмасалу мақол ва ҳикматҳои халқӣ дар асарҳои пандуахлоқӣ, аз ҷумла дар «панднома» ва «андарзнома»-ҳои паҳлавӣ инъикос ёфта буданд. Аксари ин пандномаву андарзномаҳои сосонӣ дар нимаи дууми асри VIII ба забони арабӣ тарҷума шуданд ва бадин восита зарбулмасалу мақол ва ҳикматҳои дар онҳо дарҷёфта дар олами араб ва дар адабиёти арабизабон шоеъ гаштанд. Дар натиҷа истеъмоли онҳо дар шеърҳои арабизабон ба ҳукми анъана даромад. Аз ҷониби дигар, ҳуди шоирони эронинаҷод низ ҳомилони зарбулмасалу мақол ва ҳикматҳои аҷдоди худ буданд ва онҳоро дар ашъори худ дар тарҷумаи арабӣ ба қор бурда, боиси умри дубора пайдо кардани ин қисми мероси маънавии эронӣ дар муҳити арабӣ мешуданд.

Як гурӯҳ зарбулмасалу мақол ва ҳикматҳои эронӣ ва арабӣ ба сабаби равобити наздики сиёсӣ, иқтисодӣ ва фарҳангии ин халқҳо ба ҳам шабоҳат доранд ва моҳиятан мероси муштараки маънавии онҳо ба ҳисоб мераванд. Аз ин рӯ, дар аксари мавридҳо гузоштани ҳадди қотей дар байни зарбулмасалу мақол ва афоризмҳои эрониву арабӣ аз имкон берун аст. Бесабаб нест, ки бисёр муаллифони арабизабони асрҳои миёна дар асарҳои пандуахлоқии худ зарбулмасалу мақолҳоро оварда, онҳоро «арабию форсӣ» унвон кардаанд, вале байнашон фарқи нагузоштаанд<sup>1</sup>. Ҳамин гуна душворӣ ҳангоми таҳлили зарбулмасалу мақол ва ҳикматҳои эронӣ дар осори шоирони арабизабон низ пеш меояд. Хушбахтона, дар баъзе мавридҳо ҳуди шоирон ба асли эронии зарбулмасалу мақолҳои қорфармудаашон ишора кардаанд. Чунончи, Абӯнӯвос гуфтааст:

---

<sup>1</sup> الحمري، القيروانى. زهر الآداب و ثمر الآليات. ج. ٤. - ص. ١٠٦٢-١٠٦٤.

سَأَلْتُهَا قَبْلَهُ فَفَزَتْ بِهَا بَعْدَ امْتِنَاعِ  
 وَشِدَّةِ التَّعَبِ  
 فَقُلْتُ بِاللَّهِ يَا مُعَذِّبَتِي جُودِي بِأُخْرَى أَقْضَى بِهَا  
 أُرْبِي  
 فَابْتَسَمَتْ ثُمَّ أَرْسَلَتْ مِثْلًا يَغْرِفُهُ الْعُجْمُ لَيْسَ  
 بِالْكَذِبِ  
 لَا تُعْطِينَ الصَّبِيَّ وَاحِدَةً يَطْلُبُ أُخْرَى بِأَعْنَفِ  
 الطَّلَبِ

*Бӯсае хостам аз ӯ ва ситонидамаш онро бо сад азобу зориву илтиҷо,*

*Гуфтам: «Ба Худо қасам, эй дилозори ман, бӯсае дигар бароям қурбон кун, то ҳоҷатам барояд».*

*Табассуме карду масале бизад, ки сихҳати онро эронийн хуб донанд:*

*«Чу кӯдакро бидодӣ бозичае, ба исрор талаб кунад бозичае дигар»<sup>1</sup>.*

Дар мавриди дигар Абӯнӯвос зарбулмасали овардаашро ба Хусрав нисбат додааст:

أَمْشَى إِلَى عِمْدًا وَمَا  
 جَنْبَهَا أَزَاجِمُهَا بِالطَّرِيقِ مِنْ ضَيْقِ  
 كَقَوْلِ كَسْرَى مِنْ فَرَسِ اللَّصِّ  
 فَيَمَا تَمَثَّلَهُ ضَجَّةَ السُّوقِ

*Баробараи қадам мезанаму қасдан ӯро тела медиҳам, ҳарчанд ки роҳ танг нест.*

*Рафтори ман дар ин ҳолат қавли Хусравро мемонад, ки гуфта буд: «Тангии бозор фурсати муносиб барои дузд аст»<sup>2</sup>.*

Вале дар аксари шеърҳо ба асли зарбулмасалу мақолҳо ишора нашудааст. Дар ин мавридҳо ташхису таъйини зарбулмасалу мақолҳои эронӣ бо роҳи муқоисаи онҳо бо муродифҳои форсии тоҷикиашон, ки имрӯз ҳам дар байни тоҷикон, эронийн ва афғонҳо маъмул аст, имконпазир мегардад. Чунончи, дар байти зерини Башшор ибни Бурд яқинан зарбулмасали эроние корбаст шудааст, ки он тарҷумаи зарбулмасали машҳури «Шаб обистан аст, то чӣ зояд саҳар» аст:

<sup>1</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٥٧.

<sup>2</sup> أبونواس. ديوان. - ص. ٤٥٣.

ترجوغدا و غد كحاملة فى الحى لا يدرون  
ما تلد

*Ба фардо умед мебандӣ, аммо фардо мисли ҳомила аст -  
намедонанд, ки чӣ мезояд<sup>1</sup>.*

Ё худ байти зерини Абӯнӯвосро гирем:

زال الحمار وكانت فى الطين أن  
تلك منيته حمار السوء موحول

*Хар дар лой бозмонд ва ин ҳукми тақдир буд, зеро хари бад ҳатман  
дар лой мемонад<sup>2</sup>.*

Ба гумони ғолиб, дар ин байт шоир мақоли маъруфи форсии тоҷикии «Мисли хар дар шилко»-ро дар тарҷумаи арабӣ кор фармудааст, ки он дар ашъори Рӯдакӣ низ вомахӯрад (Чу гирд оранд кирдорат ба маҳшар / Фурӯ монӣ чу хар ба м-ёни шилко).

Зарбулмасалу мақолҳои эрониро шоирони дигар низ дар ашъори худ фаровон ба кор бурдаанд<sup>3</sup>. Ҳамаи ин аз он шаҳодат медиҳад, ки мурочиати шоирони асрҳои VIII-IX ба дурдонаҳои ҳикмати халқҳои эронӣ аз падидаҳои хоси назми арабизабони давраи мазкур буд. Ин падида дар ашъори Солеҳ ибни Абдулқуддус боз ҳам возеҳтар ва равшантар ба зуҳур омадааст. Адиби маъруфи асри X Абӯаҳмади Аскарӣ аз забони Абӯбакр ибни Дурайд, ки аз машхуртарин суҳансанҷони араб буд, овардааст: «Дар девони Солеҳ ибни Абдулқуддус, ки яке аз шоирони онҳо (эронӣ-Н.З) буд, ҳазор зарбулмасалу мақоли арабӣ ва ҳазор зарбулмасалу мақоли форсӣ гирд омадааст»<sup>4</sup>. Ҳақиқати ин суҳанонро муқоисаи баъзе байтҳои шоир бо зарбулмасалу мақолҳои тоҷикӣ таъйид мекунад, чунончи:

و لئن يعادى عاقلا خير له  
احمق  
من ان يكون له صديق

*Душманӣ варзидан бо оқил беҳтар аз дӯстӣ кардан бо аҳмақ аст<sup>5</sup>.*

<sup>1</sup>Ишаринберд. Дивон. Ҷ. 3. - с. 65.

<sup>2</sup>Абунуас. Дивон. - с. 509.

<sup>3</sup>Мувафӣ, عثمان. التيارات الاجنبية فى الشعر العربى منذ العصر العباسى حتى نهاية القرن الثالث الهجرى. - с. 230-235.

<sup>4</sup>العسكرى، ابو احمد. فى تفضيل بين بلاغتي العرب و العجم. - с. 217.

<sup>5</sup>الخطيب، عبدالله. صالح بن عبدالقدوس حياته و شعره. بغداد، 1967. - с. 121.



Муқоиса шавад бо зарбулмасалҳои форсии тоҷикии зер:  
«Душмани доно бех аз дӯсти нодон» ё «Бади доно зи неки нодон бех».

Байти дигар:

و اختر قرينك واصطفيه تفاخرا  
المقارن ينسب  
ان القرين الى

*Дар дӯстӣ ҳамонро гузин, ки ҳамқаринат бошад, зеро дӯстро аз  
рӯи дӯстаи мешиносанд<sup>1</sup>.*

Муқоиса шавад: «Бо моҳ шинӣ, моҳ шавӣ, бо дег шинӣ, сиёҳ  
шавӣ» ё «Дӯстон оинаи якдигаранд».

Байт:

و احفظ لسانك ان تقول فتبتلى  
بالمناطق  
ان البلاء موكل

*Забонро нигоҳ дор, то бар гуфта худро ба доми бало наандозӣ,  
Ҳаққо, ки бало вакили забон аст<sup>2</sup>.*

Муқоиса шавад: «Одамӣ аз забони худ ба балост» ё «Забонам -  
зиёнам».

Байт:

وزن الكلام اذا نطقت فانما  
العقول المنطق  
يبدى عقول ذوى

*Сухан санҷида гӯй, ки хиради оқил дар сухани пайдост<sup>3</sup>.*

Муқоиса шавад: «Гавҳари ҳар кас аз сухани ӯ пайдост».

Байт:

و اذا امروء لسعته افعى مرة  
الحبل يفرق  
حين يجر  
تركته

<sup>1</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبد القدوس حياته و شعره. - ص. ۱۲۵.

<sup>2</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبد القدوس حياته و شعره. - ص. ۱۴۷.

<sup>3</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبد القدوس حياته و شعره. - ص. ۱۲.

*Афъӣ агар касеро газида бошад, маҷбур мекунад, ки ӯ аз ресмон битарсад<sup>1</sup>.*

Муқоиса шавад: «Афъигазида мерамад аз шакли ресмон» ё «Моргазида аз ресмони ало метарсад».

Байт:

و السرفاكتمه و لا تنطق به ان الزجاجة كسرهما لا  
يشعب

*Сирро нигоҳ дору мақшоӣ онро, ки шишаи бишкастаро ба ҳам овардан номумкин аст<sup>2</sup>.*

Муқоиса шавад: «Шикаста нашояд дигарбора баст» ё «Шишаи бишкастаро пайванд кардан мушқил аст».

Байт:

إذا وترت امرءاً فاحذر عداوته من يزرع الشوك لا  
يحصده عنباً

*Гар биранҷондӣ касеро, аз душманияи барҳазар бош, ки агар хор кориди бошӣ, ангур нахоҳӣ гирифт<sup>3</sup>.*

Муқоиса шавад: «Агар бад кунӣ, чашми некӣ мадор, ки гар хор корӣ, суман надравӣ» ё «Аз мукофоти амал ғофил машав, Гандум аз гандум бирӯяд, чав зи чав».

Байт:

ان الغصون اذا قومتها اعتدلت و لا يلين اذا  
قومته الخشب

*Ниҳолро гар рост кунӣ, рост шавад, вале чӯби хушкро рост кардан нативонӣ<sup>4</sup>.*

Муқоиса шавад: «То ниҳол тар аст, бояд рост кард» ва ё «Чӯби тарро чунон ки хоҳӣ, печ, нашавад хушк чуз ба оташ рост».

Байт:

و للصمت خير من كلام بما ثم فكن صامتا تسلم و ان قلت  
فاعدل

<sup>1</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبدالقدوس حياته و شعره. - ص. ۱۲۲.

<sup>2</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبدالقدوس حياته و شعره. - ص. ۱۳۳.

<sup>3</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبدالقدوس حياته و شعره. - ص. ۱۳۶.

<sup>4</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبدالقدوس حياته و شعره. - ص. ۱۳۳.

*Хомӯшӣ беҳ аз калом аст, агар аз бало эмин будан хоҳӣ. Пас, хомӯш бош, то саломат бимонӣ, вале агар сухан гуфтӣ, рост бигӯӣ!*<sup>1</sup>

Муқоиса шавад: «Беҳ аз хомушӣ ҳеҷ пироя нест» ва ё «Ростӣ растӣ».

Байт:

و ان لسان المرء مفتاح قلبه اذا هو ابدى ما يجن  
من لغم

*Забони инсон калиди қалби ӯст. Ҳар чӣ дар қалб ниҳон аст, забон аён кунад*<sup>2</sup>.

Муқоиса шавад: «Забон тарҷумони дил аст» ва ё «Забон ҷосуси дил аст».

Ин байтҳои Солеҳ ибни Абдулқуддус ва муқоисаву муқобалаи онҳо бо зарбулмасалу мақолҳои форсии тоҷикӣ гувоҳ бар онанд, ки назми ин шоири арабизабон бо ҳикмати дар тӯли асрҳо андӯхтаи мардуми эронинаҷод робитаи узвӣ доштааст. Аз ин лиҳоз, девони ӯро метавон мачмӯаи зарбулмасалу мақол ва ҳикматҳои эронӣ номид.

Дар истифодаи зарбулмасалу мақолҳои эронӣ фаъолияти махсуси тарҷумонии Солеҳ ибни Абдулқуддус ва шоирони дигари арабизабон зоҳир гаштааст. Метавон ҳадс зад, ки шоирон на ҳамаи зарбулмасалу мақолҳоро аз тарҷумаҳои арабии осори гузаштаи тоисломии эронӣ гирифтаанд. Пас, қисми муайяни он зарбулмасалу мақолҳоро худи онҳо бояд ҷамъ оварда ва ба арабӣ тарҷума карда бошанд.

Ҳамин тавр, шоирони арабизабони асрҳои VIII-IX, алалхусус, Солеҳ ибни Абдулқуддус, ба анъанаи тарҷума ва коркарди шоиронаи зарбулмасалу мақол ва ҳикматҳои форсии тоҷикӣ асос гузоштаанд. Ин анъана минбаъд дар назми арабизабон ва форсизабони давраи Сомониён ва баъд низ идома ва тараққӣ ёфт<sup>3</sup>.

<sup>1</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبدالقدوس حياته و شعره. - ص. ۱۴۷.

<sup>2</sup> الخطيب، عبدالله. صالح بن عبدالقدوس حياته و شعره. - ص. ۱۴۷.

<sup>3</sup>Османов М.Н. Пословицы и поговорки в поэтическом наследии Рудаки // Рудаки и его эпоха.- Сталинабад: «Таджикгосиздат», 1958. -С.-168-184.

## ФАСЛИ СЕЮМ

### ОҒОЗИ НАСРИ АРАБИЗАБОН: НАСРИ ТАРАССУЛ

#### 3.1. НУФУЗИ УНСУРИ ЭРОНИ ДАР НАСРИ АРАБИЗАБОН

Дар баробари теъдоди зиёди шоирон, иддае бузург аз адибону нависандагони эронинажод низ дар эҷоди адабиёти арабизабони садаҳои VIII – IX саҳм гузоштанд ва тавассути фаъолияти адабии онҳо анъанаву суннатҳои адабиву фарҳангии Эронзамини тоисломӣ дар насри арабӣ дар қиёс бо назм нуфуз ва тавсияи бештаре пайдо кард.

Дар даврае, ки нахустин нависандагони эронинажод даст ба эҷоди осори мансур заданд, доираи насри арабӣ асосан бо фанни хитоба маҳдуд буд. Хитоба бо он ҳама раванге, ки байни аъроб дошт, аз навъҳои насри шифоҳӣ ба шумор меомад. Насри мактуби арабии он давронтанҳо аз номаҳои кӯтоҳе иборат буд, ки ҳаҷми онҳо ба иллати гароиши аъроб ба иҷозу ихтисор ва айни балоғат шуморидани он гоҳе аз чанд сатр беш набуд ва бадеҳист, ки чунин ҳаҷми маҳдуд маҷоле барои зуҳури ҳунари нависандагӣ боқӣ намегузошт. Сониян, номанависӣ ва умуман ҳунари нависандагӣ дар байни аъроб дар қарни нахусти ислом ба хирфаи маҳсус, ки ба ашхоси дорои омодагӣ ва саликаи хос ихтисос дошта бошад, табдил наёфта буд. Бино ба ишораи яке аз муҳаққиқони маъруфи араб Анис ал-Макдисӣ, насри арабӣ дар ин давра дар маҷрои табиӣ сайр мекард ва барои он қоидаҳои вазъ накарда буданд ва риояти ойин ва русумро лозим намешумурданд<sup>1</sup>. Бар муқобили ин, дар Эрони пеш аз ислом насри мактуб аз фанҳои пешрафтаи адабӣ ва ҳунари нависандагӣ аз ойинҳои шоиста ҳисоб мешуд, табақаи дабирон, ки ин фан ва ин ҳунар ба эшон ихтисос дошт, дар радифи табақоти мумтози иҷтимоӣ қарор доштанд. Низомии муқаррар ва мукаммали тарбияи дабирон, ки дар даврони Сосониён мавҷуд буд, ҳадафи ба шугли дабирӣ чалб намудани ашрофзодагони дорои маърифату дониши муносиб ва саликаи шоистаи нависандагиро дар пай дошт.

А.Кристенсен доир ба нуфузи дабирон ва шеваи нигориши номаҳо дар он даврон чунин овардааст: «Эрониён ҳамеша орастагии сурати зоҳири умурро муҳим мешумурдаанд. Асноди расмӣ ва номаҳои хусусӣ ҳамеша мебоист ба сурати маснӯъ ва сабки муқаррар таҳрир гардад. Дар ин номаҳо нақли қавли бузургон, насоеҳи ахлоқӣ, пандҳои динӣ, ашъор, муаммиёт, латифа ва амсоли он ворид мешуд ва маҷмӯаи бисёр зариферо ташкил меод. Мақом ва рутбаи мухотаб ва нависандаро дар тарзи истеъмоли калимот комилан риоят

---

<sup>1</sup> المقدسى، انيس. تطور الاصاليب النثرية فى الادب العربى. - ص. ۹.

менамуданд. Ҳамон иборатпардозӣ ва тасаннуоти адабӣ, ки дар аглаби китобҳои паҳлавӣ ва дар аксари баёноти подшоҳон Ҳангоми чулус мебинем, дар мукотиботе, ки зимомдорони бузурги давлати сосонӣ фимобайни худашон ё бо дували хориҷа мекардаанд, ошкор аст»<sup>1</sup>. Аз суҳанони пажӯҳишгар бармеояд, ки дар даврони Сосониён наср ҷанбаи Ҳирфай ва Ҳунари касб карда буд ва он аз ҷониби дабирон дар иншои номаҳои расмӣ, фармонҳои шоҳон, Ҳитобаҳои тоҷгузорӣ, андарзномаҳо ва таълифоти адабӣ ба кор гирифта мешуд. Дар аҳди Сосониён низоми девонсолорӣ, ки дастоварди бузурги давлатдории халқҳои эронӣ пеш аз ислом ба шумор меояд, ба Ҳайси як ниҳоди идории мурағтабу муназзам рушду нумӯ кард ва кишвардории Сосониёнро ҷун оинаи ибрат ва сармашқи давлатдорӣ дар назари пасовандон ҷилвагар намуд.

Аъроб низ бо басту тавсия ёфтани Ҳилофат рӯи ниёз ба ойинҳои давлатдории тоисломии эронӣ оварданд ва аз низоми девонсолориву созмони идории сосонӣ истиқбол намуданд. Дар таъйиди ин нуқта метавон ба алломаи араб Ҷоҳиз (ваф.869) истинод кард, ки ҷунин эътироф кардааст: «... ва мо ойин ва қавонини кишвар ва кишвардорӣ ва тартиб додани табақоти вижагон ва Ҳавос ва соири табақоти оммаро аз онҳо (Сосониён –Н.З.) гирифта ва сиёсатмадорӣ ва мардумнавозӣ аз онон омӯхтаем»<sup>2</sup>. Ин буд, ки ойинҳои давлатдории тоисломии халқҳои эронӣ ба ҷомеаи нави исломӣ ворид шуданд ва аз паси худ бисёр суннатҳои фарҳангу тамаддуни гузаштаи Эронзаминро ба муҳити ислом ва ҷомеаи мусулмонӣ кашиданд. Ҳифзи суннатҳои насри мактуби тоисломӣ ва таҳаввули онҳо дар муҳити нави исломӣ маҳз дар батни Ҳамин низоми девонсолории асрҳои VIII – IX ва ба дасти дабирони арабизабони эронӣ сурат гирифт. Бо вуруди низоми девонсолорӣ ба созмони идории Ҳилофат котибони девонҳо дар аркони давлатдорӣ аз нуфуз ва мақоми воло бархурдор гаштанд.

Нахустин нависандагони номвар, ки дар осори худ суннатҳои адабу фарҳанги тоисломии эрониро Ҳифз карда ва бад-ин васила насри арабиро бо мазмуну матолиби ҷадид Ҳаноманд Ҳардониданд, аз миёни Ҳамин котибони девонҳои Ҳилофат бархоста буданд. Ба василаи осори котибони эронӣ дар насри он даврон «услуби форсии китобат» шуҳрат пайдо кард. Таъсири услуби форсӣ боис Ҳардид, ки насри арабӣ ба марҳалаи таҳаввул ворид Ҳардад, аз қолаби эҷозу ихтисор берун ояд ва сӯи итнобу насри мурсал роҳ паймояд. Ҷунин таҳаввулоти шакливу услубӣ нахуст дар номанигории арабии нимаи аввали асри VIII мелодӣ рӯ намуда, баъдан дар шоҳаҳои дигари насри арабизабон Ҳустариш пайдо кард.

<sup>1</sup> کریستنسن، آرتور. ایران در زمان ساسانیان. - ص. ۱۹۶.

<sup>2</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. کتاب التاج. ترجمة محمد علی خلیلی. - ص. ۶۷.

Агар замони чуни як таҳаввулро дақиқан таъйин кардан тақозо шавад, бояд онро ба чанд далел ба даврони хилофати Ҳишом ибни Абдулмалик (724-743) мансуб донист. Аввалан, Ҳишом арабикунонии девонҳои Хилофатро, ки дар аҳди падараш оғоз ёфта буд, ба охир расонид ва муҳити ягонаи забониро дар низоми девонсолории давлат таъмин намуд. Сониян, низоми девонии Хилофатро ба ҳайси як дастгоҳи муназзами идорӣ такмил дод ва бад-ин васила пойгоҳе барои рушди баъдии низоми девонсолорӣ дар аҳди Аббосиён фароҳам овард. Солисан, Ҳишом бо таҳриқи дабирони эронии дастгоҳи идории хеш ба таъриху фарҳанг ва ойинҳои кишвардории эронӣ тавачҷуҳ зоҳир мекард ва аз таҷрибаи онон дар ҳалли масъалаҳои даврони хеш истифода мекард. Ҳамчунон ки Масъудӣ навиштааст, ӯ дар Истахр дар хонадони яке аз ашрофи эронӣ китоберо дидааст, ки он таърихи подшоҳони сосонӣ ва тасвирҳои ҳар яке аз ононро дар бар дошт. Масъудӣ таъкид кардааст, ки ин китобро аз рӯи китобе, ки дар хазоини подшоҳони эронӣ ёфт шуда буд, фароҳам оварда ва дар ҷумудиюлохири соли 113/731 барои Ҳишом ибни Абдулмалик аз форсӣ ба арабӣ нақл кардаанд<sup>1</sup>.

### 3.2. АБУЛАЛОИ СОЛИМ

Яке аз котибоне, ки ба вуруди суннатҳои насри тоисломии эронӣ ба насри арабизабон ва бар асари ин тадриҷан таҳаввул ёфтани он аз лиҳози мазмуну муҳтаво ва сабқу услуб мусоидат намуд, нависанда ва мутарҷими осори тоисломии эронӣ ба забони арабӣ Абулалои Солимаст.

Абулалои Солим дар ағлаби сарчашмаҳои адабиву таърихӣ ҳамчун котиби девони расоили халифаи умавӣ Ҳишом ибни Абдулмалик (724-743) зикр шудааст<sup>2</sup>. Дар сарчашмаҳои таърихӣ доир ба аслу насаби Солим ишорае наарафтааст, вале Табарӣ ӯро мавлои Анбаса ибни Абдулмалик<sup>3</sup>, Ибни Халликон ӯро мавлои Ҳишом ибни Абдулмалик<sup>4</sup> хондаанд. Дар ҳар сурат, мавлои хонадони хулафои умавӣ будани Солим мусаллам аст.

Бо тақя ба санад ва далелҳои, ки дар «Таърих»-и Табарӣ омадааст, номи комили Солими Котибро метавон ба гунаи Абулало Солим ибни Абдурраҳмон забт намуд. Бино ба нигоштаи муаллифи «ал-Вузаро ва-л-кутуб», ки аз осори қадим ва муътамад доир ба вазирон ва дабирони Хилофат мебошад, Солим пас аз вафоти халифа Ҳишом

<sup>1</sup>مسعودی، علی بن حسین. التنبيه و الاشراف. ترجمه ابو القاسم پاینده. ص. ۹۹۰.

<sup>2</sup>طبری، محمد جریر. تاریخ الرسل و الملك. ج. ۱۰. ص. ۴۲۳۱.

<sup>3</sup>طبری، محمد جریر. تاریخ الرسل و الملك. ج. ۱۰. ص. ۴۲۳۲.

<sup>4</sup>ابن خلکان. وفيات الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. ۳. ص. ۲۳۰.

низ як муддат дабирии девони расоили Валид ибни Язидро бар уҳда доштааст<sup>1</sup>.

Писари Солим низ пешаи дабирӣ дошт. Чаҳшиёрӣ номи ўро Абдуллоҳ забт карда, дабири девони расоили Валид ибни Язид будани ўро хабар додааст<sup>2</sup>.

Дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим дар миёни мутарҷимоне, ки аз форсӣ ба арабӣ нақл кардаанд, номи писари Солим-Ҷабала ибни Солим қайд гардида<sup>3</sup> ва дар ҷои дигари ҳамин китоб тарҷумаи дostonҳои «Рустам ва Исфандёр» ва «Бахроми Ҷубин» ба ў нисбат дода шудааст<sup>4</sup>.

Бо таваҷҷуҳ ба сароҳати таъбири Чаҳшиёрӣ ва Ибни Надим бояд бипазирем, ки Абулалои Солим ибни Абдуллоҳ – котиби девони расоили халифа Ҳишом ибни Абдуллоҳ ду писар дошта, ки яке Абдуллоҳ ибни Солим дар китобати расоил ва дигаре Ҷабала ибни Солим дар тарҷумаи осори тоисломии эронӣ ба арабӣ шуҳрат доштаанд.

Ибни Надим Абулалои Солимро аз фасеҳтарин ва балеғтарин нависандагони аср доништа ва маҷмӯаи рисолаҳои ўро дар ҳудуди сад varaқ муайян кардааст<sup>5</sup>. Соҳиби «ал-Фихрист» дар мавридҳои дигар низ ба ҳунари салиқаи нависандагии Абулалои Солим арҷи бисёр ниҳода, номи ўро на танҳо дар радифи номи суҳанварони шеваи арабигӯ зикр кардааст<sup>6</sup>, балки дар қатори Ибни Мукаффаъ ва дигарон яке аз даҳ нафар балеғтарин нависандагони араб ба шумор овардааст<sup>7</sup>.

Фаъолияти Абулалои Солим ба ҳайси нависанда ва дабир танҳо бо номанигорӣ маҳдуд набуд. Ба шаҳодати Ибни Надим, ў «номаҳои Арастуро ба Искандар тарҷума намуд ва (ё) барояш тарҷума карданд ва ў ислоҳ кардааст»<sup>8</sup>.

Бино ба навиштаи Ибни Надим, «эронӣён дар қадим аз фалсафа ва мантиқ чизҳоеро ба порсӣ дароварда буданд, ки Абдуллоҳ ибни Мукаффаъ ва дигарон онҳоро ба арабӣ тарҷума кардаанд»<sup>9</sup>. Ба гумони ғолиб, Абулалои Солим низ номаҳои Арастуро аз форсӣ (пахлавӣ) ба арабӣ даровардааст, ки онҳо то замони мо нарасидаанд.

Аз рисолаҳои Солим танҳо чанд нома дар «Таърих»-и Табарӣ боқӣ мондаасту бас. Албатта, аз рӯи ду-се номаи боқимонда доир

<sup>1</sup> الجھشیاری، محمد بن عبدوس. کتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۰۲.

<sup>2</sup> الجھشیاری، محمد بن عبدوس. کتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۰۲.

<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>5</sup> النديم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۳۱.

<sup>6</sup> النديم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۳۹.

<sup>7</sup> النديم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۴۰.

<sup>8</sup> النديم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۳۱.

<sup>9</sup> النديم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۰۳.

бавижагиҳои услуби номанигории Абулалои Солим ҳукм кардан ғайримумкин аст. Вале онро бояд ба назар гирифт, ки аглаби номаҳое, ки аз номи Ҳишом ибни Абдулмалик навишта шудаанд, ба қалами Солим ва шогирдонаш мутааллиқанд ва дорои услуби ягонаи таҳрир ҳастанд. Ҳақ бар ҷониби Шавқӣ Зайф аст, ки девони расоили халифа Ҳишомро бо сарвари Солим «мактаби бузурги номанигорӣ» номидааст<sup>1</sup>. Дар ҳамин мактаб, ки писарони Солим – Абдуллоҳ ва Ҷабала ва домодаш – Абдулҳамид касби камол кардаанд, заминаҳои таҳаввул ва тачаддуди насри фаннии араб фароҳам омад.

Як номаи нисбатан муфассали Солим аз номи Ҳишом ба волии Ироқ Холид ал-Қасрӣ дар «Таърих»-и Табарӣ сабт ёфтааст<sup>2</sup>. Нома ба сабаби яке аз бузургони хонадони Ҳишомро таҳқир кардани Холид ал-Қасрӣ ба таҳрир омада, дар он халифаи мазкур Холидро барои ин гуноҳ саҳт накӯҳиш кардааст. Тибқи расми маъмул, номаи халифаро аз номи ӯ дабири девон менавишт, бино бар ин дар нома аз халифа ба ҳайси шахси ғоиб ёд мешуд, бад-ин тарз, ки «амири муъминон ба ту менависад»... Дар номаи Солим низ ин расм риоят шуда, дар оғоз аз боби эътимод, ки халифа ба Холид дошт, сухан рафтааст ва хитобан ба Холид зикр шудааст, ки «амири муъминон хосони хонадони хешро фарши ту накарда, ки по бар он ниҳӣ ва чашм бад-он хира кунӣ». Пас аз он ки тамоми айбу гуноҳҳои Холид ва носипосихии ӯ як ба як таъкид мешавад, халифа бо таҳдиду ваид ба ӯ амр медиҳад, ки барои узрҳои ба назди он шахси таҳқирдида биравад, то ӯ гуноҳи Холидро бибахшад ё ҷазояш бидиҳад, ки дар ҳар ду маврид ҳам халифа монев нахоҳад шуд.

Номаи мазкур аз лиҳози алфозу таркибҳо, истифодаи санъатҳои издивочу сачъ ва ташбеҳу истиора ба намунаҳои насри арабии қарни аввали ҳиҷрӣ мушобихат дорад.

Дар айни замон миёни номаҳои Солим ва пешгузаштагони ӯ тафовут низ ба назар мерасад, ки он дар тамоюли номанигории аҳди Солим ба сӯи тафсилу итноб зоҳир шудааст. Дар номаҳои қарни аввали ҳиҷрӣ сабки ғолиб равиши ихтисору эҷоз буд, ки на танҳо дар оғозу анҷоми номаҳо, балки дар рукни аслии он, яъне, баёни матлаб низ дар ҳадди ниҳоят риоя мешуд. Гароиши аъробро ба ин сабк сабаб он буд, ки кӯтоҳбаёнӣ эҷоз дар назди онҳо айни балоғат ба ҳисоб мерафт. Бо ишора ба ин матлаб яке аз донишмандони маъруфи асрҳои миёна Ибн Абд Раббихи чунин навиштааст: «Араб таҳфифу ҳазфро меписандид ва қасри мамдудро бартар аз мадди максур ва таскини мутаҳаррикро беҳтар аз таҳриқи сокин медонист... ва ба ихтисор ва эҷоз бештар меандешид»<sup>3</sup>.

---

<sup>1</sup>اضيف، شوقى. الفن و مذاهبه فى النثر العربى. دار المعارف بمصر. ۱۹۸۱ - ۴۷۰ ص.

<sup>2</sup>طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۱۰. - ص. ۴۲۶.

<sup>3</sup>ابن عبد ربه. كتاب العقد الفريد. ج. ۳. - ص. ۲-۳.



Аз оғози қарни дувуми ҳичрӣ, аз замоне, ки Абулалои Солим ва дигар дабирони эрониасл даст ба китобати расоил заданд, дар номанигорӣ ҷои ихтисору эҷозро батадриҷ равиши тафсилу итноб гирифт. Зоҳираҳои ҷунин як таҳаввулро дар номаи зикршудаи Абулалои Солим метавон мушоҳида кард. Ҷунон ки қаблан ишора шуд, номаи мазкур нисбатан тӯлонӣ буда ва ҳамин вусъату тӯли нома ба муаллиф имкони басту таъкиди маъниро фароҳам овардааст. Дар натиҷа, матлабҳои, ки котиб хостааст ба мактуб илайҳи арза дорад, бо тафсилу тасалсули мантиқӣ ва дар пайвастагӣ бо ҳам баён шудааст.

Дар сарчашмаҳо як мактуби писари Солим – Абдуллоҳ ибни Солим, ки таҳти сарварии падараш дар дарбори Ҳишом ба ҳайси дабир ифои вазифа мекард ва дар аҳди Валид ибни Язид (743-744) сарварии девони расоилро ба уҳда дошт<sup>1</sup>, боқӣ мондааст, ки он дар соли 119/737 аз номи Ҳишом ба волии саркаши Ироқ – Холид ал-Қасрӣ иншо шудааст<sup>2</sup>. Нома бо сабки итноб ба таҳрир омада, муаллиф матлабҳои хешро бо басту таъкид ва тафсил баён кардааст. Ба таври умум, ин номаи тӯлонӣ таърихчаи вилоятдории Холид ал-Қасрӣро мемунад, ки мисли номаи зикршудаи Солим бо тӯлу вусъат ва сабки итноби худ аз номаҳои қарни аввали ҳичрӣ тафовут дорад.

Донишмандони гузаштаву муосири араб ин тафовутро натиҷаи таъсири анъанаҳои номанигории тоисломии эронӣ ва ё, ба иборати дигар, маҳсули густариши «услуби форсӣ» дар расоили арабӣ донистаанд. Аз ҷумла, яке аз пажӯҳишгарони насри классикии араб Муҳаммад Курд Алӣ навиштааст, ки дар қарни дувуми ҳичрӣ таҳти таъсири услуби форсӣ номаҳо ба дарозӣ кашиданд. Ба ақидаи муҳаққиқи мазкур, «ҳамин дароз кардани номаҳост, ки он ба иловаи афкори ҷадида, ки аз роҳи тарҷума ва ихтилоти қавмҳо ворид шудааст, номанигории қарни дувумро аз қарни аввал фарқ кунонид»<sup>3</sup>. Аз навиштаи Муҳаммад Курд Алӣ аён аст, ки ӯ таъсири услуби форсиро танҳо дар тӯлонӣ гаштани номаҳо донистааст. Таъкид ҷоиз аст, ки таҳаввуле, ки дар номанигории қарни дувум рӯй намуд, маҷмӯи падидаҳои мухталифи маънавиву лафзӣ буд, ки боиси тағйир пазируфтани сабки насри арабӣ гардид. Аз ин рӯ, ин таҳаввули бунёдиро танҳо ба тӯлонӣ гаштани номаҳо вобаста кардан нашоҷад. Баръакс, тӯлу вусъати нома яке аз зоҳираҳои нахустини сабки ҷадид ба шумор омада, ба нависанда на танҳо имкони баёни мусалсал ва мантиқии мазмун ва мухтаво, балки маҷоли тафаннун ва тазйини каломро низ фароҳам меовард. Бино бар ин, таҳаввули номанигории қарни дувуми ҳичрӣ, ки таҳти таъсири услуби форсӣ

---

<sup>1</sup> الجھشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۰۲.

<sup>2</sup> المبرد. الكامل فى اللغة و الادب. ج. ۲. - ص. ۷۹۰.

<sup>3</sup> كرد على، محمد. امراء البيان. ج. ۲. - ص. ۲۱.

сурат гирифт, маънои танаввуъи мазмуну маонӣ, тафаннуни лафзӣ ва таҷаддуди сохтории номаҳоро дошт.

Чанд номае, ки аз Абулалои Солим ва писараш- Абдуллоҳ боқӣ мондааст, гувоҳ бар он аст, ки дабирони мазкур бо тафсил ва татвили номаҳо роҳро барои таҳаввули номанигории арабӣҳамвор карданд. Ҳамин роҳ буд, ки бо паймудани он шогирд ва домоди Абулалои Солим – Абдулҳамиди Котиб таҳаввул ва таҷаддуди номанигории арабро ба ғояти камол расонид.

### 3.3. АБДУЛҲАМИДИ КОТИБ

Бино ба шаҳодати сарчашмаҳо, номи комили ин нависандаи тавоно Абӯғолиб Абдулҳамид ибни Яҳё ибни Саъд аст<sup>1</sup>. Соли таваллуди Абдулҳамид дар баъзе аз тадқиқот ба тақриб соли 60/680 таъйин шудааст<sup>2</sup>, вале ба ҳар ҳол ин сана барои таваллуди ӯ барвақт ба назар мерасад ва ба охири асри VII бурдани он шояд наздик ба воқеияти рӯзгораш бошад.

Асли эронии Абдулҳамид дар сарчашмаҳо таъйид шудааст. Аз ҷумла, Истаҳрӣ дар «Мамолик вамасолик» ҳини суҳан аз мардуми Форс чунин овардааст: «Аммо касоне, ки аз ин қавм бархоста ва дар илму ҳилм вағайра яғона ва ваҳиди даҳр буданд,... яке аз эшон Абдулҳамид ибни Яҳё буд ва ӯ дар асри худ беназир ва муфрад будааст ва дар Банӣ Умайя ӯро қаробат буд, ки эшонро ба вай нисбат мебурданд ва дар илму китобат ва фаҳму фитнат аз ақрони худ қасабуссабк рабуда ва мумтоз гашта буд»<sup>3</sup>. Бино ба шаҳодати Ибни Халликон, Абдулҳамид дар шаҳри Анбор, ки яке аз шаҳрҳои эронии аҳди Сосониён буда, дар наздикии Куфа дар Ироқ мавқеъ дошт, таваллуд шудааст ва баъдан даршаҳри Раққайи Шом маскан гузидааст<sup>4</sup>.

Бино бар маълумоти «Вафаёт-ул-аъён», дар оғози фаъолият Абдулҳамид ба таълими кӯдакон пардохта ва бо ин пеша даршаҳрҳои гуногуни Ироқ касби маош кардааст<sup>5</sup>. Пас аз ин, ӯ ба Шом рафт ва ба хидмати девони Язид ибни Абдулмалик (720-724) ва баъдан Ҳишом ибни Абдулмалик (724-743) шуғл варзид. Дар ин чо ӯ тахти роҳнамоии Абулалои Солим маҳорат ва истеъдоди худро дар китобати арабӣ сайқал дод вадар ин фан табаххуритамом пайдо кард. Сипас ӯ ба охири халифаи умавӣ Марвон ибни Муҳаммад (744-750) пайваст ва хангоме ки ӯ волии Арманистон буд, ҳамроҳаш ба он

<sup>1</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ۳. - ص. ۲۲۸.

<sup>2</sup> عمر، فروغ. تاريخ الادب العربي. ج. ۱. - ص. ۷۲۳.

<sup>3</sup> اصطخرى، ابواسحق ابراهيم. ممالك و مسالك. ترجمه محمد ابن اسعد ابن عبدالله تسترى. به كوشش ايرج افشار. تهران، ۱۳۷۳. - ص. ۱۳۶.

<sup>4</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ۳. - ص. ۲۳۰.

<sup>5</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ۳. - ص. ۲۲۸.

диёррафт, дар наздашсохиби мақому эътибори махсусгардид. Баъд аз он ки Марвон зимоми хилофатро ба даст гирифт, Абдулҳамид аз зумраи нахустин шахсоне буд, ки ҳамроҳи Марвон ба Шом баргаштанд. Табиист, ки Марвон сарвари девони расоили Хилофатро ба Абдулҳамид супорид ва фузун бар ин ўрояке аз муқаррабон ва мушовирони худ гардонд. Даврони хилофати Марвон охири солҳои кишвардории Умавиён буд. Давлати ин сулола, ки бар бузургманиши арабӣ ва ихсонати ақвоми ғайриараб бунёд ёфта буд, тахти фишори сиёсату аскарӣ хонадони Аббосиён, ки аз дастгириҳои эронӣ бархурдор буданд, соли 750 бо қатли Марвон аз миён рафт. Абдулҳамиди Котиб низ, ки то охири умраш ба Марвон содиқ монд, дар ноҳияи Бусир рӯзи душанбеи саздаҳуми зулҳиҷҷаи соли 132/5 августи соли 750 мелодӣ кушта шуд<sup>1</sup>.

Бино ба шаҳодати сарчашмаҳо, маъмурони аббосӣ Абдулҳамидро батаври ваҳшиёна ба қатл расониданд. Тибқи ривояте, ки дар «Китоб-ул-вузаро ва-л-кутуб» омадааст, пас аз даст ёфтани ба Абдулҳамид ўроба назди Абулаббоси Саффоҳ - нахустин халифаи аббосӣ (750-754) бурданд ва ӯ ба қатли пешвои нависандагони давр амр дод. Таштеро рӯи оташ тафсониданд ва бар сари Абдулҳамид гузоштанд ва ин амали ваҳшиёнаро то вақте такрор карданд, ки вай чон ба Ҳақ таслим кард<sup>2</sup>.

Бозмондагони Абдулҳамид, ки пас аз сари ӯ ба Миср муҳочират карданд ва ба «Банӣ Муҳочир» шуҳрат ёфтанд, аз пайи касби падар рафтанд ва ба ҳайси дабирони тавоно шинохта шуданд. Соҳиби «Вафаёт-ул-аъён» аз писари ӯ Исмоил ёдовар шуда ва ўро чун дабири чирадаст ва фозил муаррифӣ кардааст<sup>3</sup>. Чаҳшиёри чаҳор тан аз авлоди Абдулҳамидро ном бурдааст, ки ҳамагӣ дар хидмати амири Миср Аҳмад ибни Тулун буданд ва дар назди мақому манзилати хосса доштанд<sup>4</sup>.

Осори Абдулҳамиди Котиб. Фаъолияти эҷодии Абдулҳамиди Котиб ба оғози марҳалаи тоза дар насри арабӣ ва таҳаввули сифатии он асос гузошт. Абдулҳамид бо расоили худ насри содаву бепирояи арабиро ба сурати насри фанӣ даровард. Равиши китобат ва сабке, ки вай ибдоъ кард, ба зудӣ дар қаламрави насри арабизабон шуҳрати тамом вапайравони зиёд пайдо намуд. Ибни Надим зимни шарҳи мухтасари ҳоли ӯ овардааст, ки «номанигорон аз вай омӯхтанд ва равию ўро пайравӣ карданд. Ва ӯ касест, кироҳи балоғатро дар номанигорӣ ҳамвор кард ва дар ин бобягонаи даврон буд»<sup>5</sup>. Аксари донишмандони мутақаддим дар тасвири Абдулҳамид ва

<sup>1</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ۳. - ص. ۲۲۹.

<sup>2</sup> الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۱۴.

<sup>3</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ۳. - ص. ۲۳۱.

<sup>4</sup> الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۱۷-۱۱۸.

<sup>5</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۱.

аҳаммияतिकоре, ки  $\bar{u}$  дар номанависии арабизабон анҷом дод, вожаи «нахустин»-роба кор бастаанд. Чунончи, Масъудӣ дарҳаққи ин нависандаи бузург овардааст: «Абдулҳамид ибни Яҳё нависандаи номаҳои балеғ буд. Вай нахустин кас буд, ки номаи муфассал навишт ва ҳамду ситоишро дар матни номаҳо ҷой дод ва пас аз вай нависандагон аз  $\bar{u}$  пайравӣ карданд»<sup>1</sup>. Дар ҳамовозӣ бо адиби мазкур донишманди дигар аз қудамо – Ибн Абд Раббихи чунин тасрех кардааст: «Абдулҳамид - соҳиби рисолат ва балоғат – аввалкасе буд, ки дарнастри арабӣ равиши итноб ба кор бурд ватаҳмидотро дар фусули номаҳоҷой дод ва пас аз вай мутарассилон роҳи  $\bar{u}$ ро пеш гирифтанд»<sup>2</sup>.

Бино ба ахбори Ибни Надим, маҷмӯаи расоили Абдулҳамид, ки мудавван гардида буд, беш аз ҳазор сафҳаро дар бар мегирифт<sup>3</sup>. Мутаассифона, он то замони мо нарасидааст. Иддае аз расоили  $\bar{u}$ , ки дар батни матнҳои мухталифи таърихиву адабӣ гунҷоиш ёфта ва бад-ин васила имрӯз дар дастраси муҳаққиқон аст, аз лиҳози ҳаҷм ба маротиб камтар аз он рақам аст, ки Ибни Надим таъйин карда буд. Расоили бозмонда дар мавзӯоти сиёсӣ, иҷтимоӣ ва шахсӣ иншо шуда, аз лиҳози ҳаҷм яқсон нестанд. Дар миёни онҳо ду номаи тӯлонӣ: яке нома аз ҷониби халифай умавӣ Марвон ба писар ва валиаҳди  $\bar{u}$  ва дигар «Рисола-ила-л-куттоб», яъне, нома ба дабирон барои таъйину ташхиси хусусиятҳои номанигории Абдулҳамид ва мақоми  $\bar{u}$  дартаърихи настри арабизабон аз аҳаммияти вижа бархурдоранд. Номаи аввал, кидар миёни расоили бозмондаи нависандатӯлонитарин аст, беш аз чихил сафҳаи чопиро фаро гирифта, ба василаи «Субҳ-ул-аъшо»-и Қалқашандӣ то замонимо расидааст. Номаи дувум – «Рисола ила-л-куттоб» дар чунин манбаъҳои муътабар, аз қабилӣ «ал-Вузаро ва-л-куттоб»-и Ҷаҳшиёрӣ, «Муқаддима»-и Ибни Халдун ва асаримазкури Қалқашандӣ дарҷ ёфта, ҳаҷмион дар ҳудуди даҳ сафҳаи чопист.

Ба ҷуз ин, сию нух номаи нисбатан кӯтоҳи Абдулҳамид дар сарчашмаҳои ёдшуда ва китобҳои дигари адабиву таърихӣ иқтибос шудаанд ва дар мавзӯоти гуногун, аз ҷумладар наҳӣи шатранҷ, дар васфи бародарӣ, доир ба шикор, дар таслияти хонаводаи хеш, дар расонидани хабари фатҳ, дар милоди фарзанди хеш, дар бурузи фитнае, дар таҳзир ба яке аз тоғиёни ҳукумат ва ғайра навишта шудаанд.

Фузун ба ин, дар сарчашмаҳои мухталиф ҷумлаҳои кӯтоҳ ва суханони мӯҷаз аз Абдулҳамид дар мавзӯҳои гуногун нақл шудаанд. Онҳо зоҳиран ё номаҳои мустақили кӯтоҳанд ё ҷузъе аз номаҳои дигаранд. Ағлаби номаҳои Абдулҳамид дар радифирисолаҳои

---

<sup>1</sup>مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۲. - ص. ۲۵۲.

<sup>2</sup>ابن عبد ربه. كتاب العقد الفريد. ج. ۲. - ص. ۲۰۶.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۱.

нависандагони дигариарабизабон дар маҷмӯаҳои «Расоил ул-булағо» ва «Ҷамҳарат расоил-ал-араб» бо саъю эҳтимоми муҳаққиқони маъруфи мисрӣ Муҳаммад Курд Алӣ ва Аҳмад Зақӣ Сафват гирд оварда шудаанд<sup>1</sup>.

Дар иддае аз тадқиқоти олимони муосири араб бо истинод ба сарчашмаҳои куҳан ишорате бад-ин мазмун рафтааст, ки Абдулҳамид осори аҳди сосониरो ба арабӣ тарҷума кардааст. Аз ҷумла, Шавқӣ Зайф бо тақя ба навиштаҳои Ҷоҳиз ва Абӯҳилоли Аскарӣ чунин тахминро пеш рондааст<sup>2</sup>. Бояд таъкид кард, ки дар сарчашмаҳои куҳан, аз ҷумла дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим, ки номгӯи мутарҷимони осори паҳлавӣ ба арабӣ таъкидшудааст, аз Абдулҳамид ба ҳайси тарҷумон ном набурдаанд ва мушаххасан китоберо, ки ӯ тарҷума кардааст, зикр накардаанд. Аз навиштаҳои Ҷоҳиз ва Аскарӣ, ки Шавқӣ Зайф ба онҳо истинод кардааст, чунин маънӣ бармеояд, ки Абдулҳамид ба осори тоисломии эронӣ вуқуфи комил дошт ва услуби расоили хешро аз онҳо гирифтааст<sup>3</sup>. Пас, метавон ба хулоса омад, ки Абдулҳамид мустақиманба тарҷумаи осори ниёкони хеш напардохтааст, вале дар пайравӣ аз он осоре офаридааст, ки боиси идомаи суннатҳои адабиёти куҳан дар замон ва муҳити ҷадид гардидааст.

Дар манбаъҳои қарнҳои нахустини исломӣ ба қалами Абдулҳамид абёт ва ашъоре ҷудоғона нисбат дода шудааст<sup>4</sup>. Ибни Қутайбадар тазкираи хеш «Китоб-уш-шеър ва шуаро» дар радифи шуароидигар башеъри Абдулҳамид низ таваққуф карда вараҷазеро аз ӯ дарҷ кардааст<sup>5</sup>, ки ин амр дархури тавачҷух будани фаъолияти шоирии Абдулҳамидро таъйид мекунад.

**Расоили Абдулҳамид.** «Рисола ила-л-қуттоб» (Нома ба дабирон) аз маъруфттарин рисолаҳои Абдулҳамид мебошад. Дар аҳаммият ва арзиши ин нома муаллифи «ал-Вузаро ва-л-қуттоб» чунин нигоштааст: «Номае аз Абдулҳамид... ёфтам, ки хитоб ба дабирон навишта шудааст. Ин нома муфассал, аммо бо баёне шево таҳрир ёфтааст. Аз ин рӯ, нахостам қисмате аз онро ҳазф кунам ва тамомионро бо ҳамаи тафсил нақл намудам, зеро нависанда ва дабир аз назоири он бениёз нахоҳад буд»<sup>6</sup>.

---

<sup>1</sup>رسائل البلغاء. عنى بجمعها محمد كرد على. القاهرة، دار الكتب العربية الكبرى، ۱۹۱۳/۱۳۲۱ - ۳۲۰ ص.

<sup>2</sup>ضيف، شوقى. الفن و مذاهبه فى النثر العربى. - ۱۱۶ ص.

<sup>3</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب البيان و التبيين. ج. ۳. - ص. ۷۲۲؛ العسكري، ابو هلال. كتاب الصناعتين. ج. ۱. - ص. ۴۲.

<sup>4</sup>الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۱۴؛ ابن قتيبه. عيون الاخبار. ج. ۱. - ص. ۶۸.

<sup>5</sup>ابن قتيبه. كتاب الشعر و الشعراء. - ص. ۵۵۳.

<sup>6</sup>الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۰۸.

Нома аз лиҳози мавзӯъҳое, ки дар бар гирифтааст, дар адабиёти араб бесобиқа аст. Дар он Абдулҳамид, кисарвари табақаи нависандагони замонро ба уҳда дошт, ба ҳампешагони хешдоир ба шароити фанни дабирӣ ва маҷмӯи сифату хислатҳои барои эшон зарурӣ дастур додааст. Аз ин лиҳоз, миёни ӯ ва раиси табақаи дабирони аҳди сосонӣ – «эрондабирпат» метавон хатти мувозие кашид, зеро дабири девони расоили умавӣ бо номаи хеш ҳамон рисолати ҳидоятгарӣ ва раҳнамоии табақаи дабиронро, ки дар аҳди сосонӣ «эрондабирпат» бар уҳда дошт, ба иҷро мерасонад.

Мавзӯъҳоеро, ки дар нома омадааст, метавон чунин дастабандӣ кард:

**Таъйини мақому манзилати иҷтимоии дабирон.** Дар ифтитоҳи нома Абдулҳамид кӯшидааст, ки бадабирон мақоми волоеро, ки дар низоми табақоти ҷомеа насиби онҳост, талқин намояд. Ҷои тардид нест, ки Абдулҳамид дар ин амр аз низоми табақоти ҷомеаи Сосониён илҳомгирифтааст ва сарони ҷомеаи замони худро ба пайравӣ аз ин суннати тамаддун ва фарҳанги Эрони тоисломӣ таҳрик кардааст.

**Сифат ва хислатҳои муҳим барои дабирон.** Абдулҳамид дар рисола ба ҳампешагони хеш зарурати ораста будан ба сифат ва хислатҳои ҳамидаро талқин кардааст. Муқтазиёти пешаи дабириро ӯ чунин таъйин намудааст: «Дабирро зарур аст, ки дар ҷои бурдборӣ бурдбор ва дар ҳангоми қазоват дар масоили душвор кордону мудаббир бошад; ҷое, ки пеш рафтани лозим аст, далерона пеш равад ва агар зарурати бозистодани пеш ояд, хештандор бошад; покдоманивуадлу инсофро баргузинад: розҳоро ниғаҳдор ва дар саҳтиҳо вафодор бошад»<sup>1</sup>.

**Маърифати умумии дабирон.** Дабиронро барои анҷоми вазифаву рисолати хеш ба ҷуз аз сифатҳои хислатҳои ҳамидаро ҳамчунин донишу маълумоти фаровон зарур аст. Аз ин рӯ, Абдулҳамид дар нома ба дабирон тавсия кардааст, ки «дар ривояти ашъор бикӯшед ва маънову мушкилоти онҳоро бишносед, таъриху ахбори Арабу Аҷам ва достону корномаҳои онҳоро биёмӯсед, зеро ин гуна маълумот шуморо дар ҳадафи баланде, ки бад-он ҳиммат гуморидаед, ёрӣ хоҳад кард»<sup>2</sup>. Барои дабирон вуқуф аз улуми дақиқ, аз ҷумла фаро гирифтани ҳисоб низ зарур аст, зеро тавфиқи кори дабирони хироч ба донишгари ин навъи дониш вобаста аст.

**Одоб ва ахлоқи ҳирфаии дабирон.** Абдулҳамид дар номаи хеш ба дабирони давр ба ҳайси як табақаи иҷтимоӣ, ки аҳли онро тааллуқи эшон ба ҳунар ва ҳирфаи нависандагӣ ба ҳам муттаҳид мекунад, муроҷиат кардааст. Ба андешаи муаллифи нома, дар дохили ин иттиҳодияи дабирон бояд одоб ва ахлоқи писандаи ҳирфай, ки он ба

<sup>1</sup> القلقشندی. صبح الاعشى في صناعة الانشاء. - ص. ۲۵.

<sup>2</sup> القلقشندی. صبح الاعشى في صناعة الانشاء. ج. ۱. - ص. ۸۶.

меҳрубонӣ ва дастгирии якдигар, сидку сафо ва самимият нисбат ба хампешагон бунёд ёфтааст, чорӣ бошад.

**Одоби мусоҳибат ва муошират бо салотин ва омма.** Азбаски дабир ба ҳайси унсури асосии дастгоҳи идории кишвар пайваста бо салотин ҳамнишин ва мусоҳиб аст ва дар айни замон бо оммаи мардум сарукор дорад, Абдулҳамид дарномаи хеш вочиботи мусоҳибату муомилатро бо ин ду қутби иҷтимоии ҷомеа, яъне, салотину омма, ба дабирон арза доштааст.

**Таҳзир аз кирдор ва рафтори нохушоянд.** Абдулҳамиддар нома дабиронро аз равишҳо ва амалҳои нописандида, ки метавонад мӯҷиби нокомӣ ва табоҳии ҳоли онҳо гардад, барҳазар медорад<sup>1</sup>.

Ҳамин тавр, ӯдар номаи хеш дабиронро ба одобурусуми нависандагӣ ва вазифаву рисолате, ки эшон бар уҳда доранд, роҳнамоӣ кардааст. Нома дар миёни дабирону адибони муосири Абдулҳамид ва адвори баъдӣ истиқболитамом пайдо кард ва, ба шаҳодатияке аз удабои маъруфи куруни вусто Қалқашандӣ, манбаи тамоми одоб ва русуме шуд, ки дабирони дарбори Хилофат риояти онро зарур мешумориданд<sup>2</sup>. Сабаби чунин шуҳрат пайдо кардани «Нома ба дабирон», пеш аз ҳама, вобаста ба он буд, ки мазмуну матолиб ва рӯҳу оҳанги навиштаи Абдулҳамид барои муҳити арабӣ тоза ва дар таърихи фарҳанги эшон бесобиқа буд. Баръакс, он чи дар ин нома аз қалами муаллиф таровидааст, маҳсулификру андешае буд, ки аз манбаъҳои дигари қадимтару ғаномандтар – таҷрибаи таърихиву фарҳангии Эронзамини тоисломӣ сарчашма гирифта ва ба муқтазиёти замони Абдулҳамид ҷавобгӯ ва мувофиқ афтодааст.

**Рисола аз номи халифа Марвон ибни Муҳаммад ба валиаҳдаш Абдуллоҳ.** Дар миёни рисолаҳои бозмондаи Абдулҳамиди Котиб номае, ки ӯ аз ҷониби халифа Марвон ба фарзанд ва валиаҳдаш Абдуллоҳ навиштааст, тӯлонитарин аст.

Бо тавачҷуҳ ба мавзӯъ ва муҳтавои нома онро метавон чун аҳднома ё насиҳатнома арзёбӣ кард, ки дар ойину одоби кишвардорӣ, мазмунҳои ахлоқӣ ва дастуру фармонҳои ҷангӣ ба унвони валиаҳди хилофат навишта шудааст. Таълифи рисола ба воқеаи ҳучуми Заҳҳок ибни Қайс, ки дар авохири давлатдорӣ Умавиён ҳаракати аҳли хаворичро сарварӣ мекард, вобаста аст (Соли 747 Марвон валиаҳди хеш- Абдуллоҳро ба набарди шӯришгарон гусел намуд<sup>3</sup>. Бад-ин муносибат Абдулҳамид номаи мазкурро иншо кард, то ба василаи он валиаҳди халифаро дар набард бо хоричиён раҳнамоӣ кунад ва ба таври умум ӯро ба иҷрои рисолати хилофат омода созад.

<sup>1</sup>القلقشندى.صبح الاعشى فى صناعة الانشاء.ج.١. - ص.٨٨.

<sup>2</sup>القلقشندى.صبح الاعشى فى صناعة الانشاء.ج.١. - ص.٨٤-٨٥.

<sup>3</sup>Беляев Е.А.Арабы, ислам и арабский халифат в раннее средневековье. Второе издание.- Москва: «Наука», 1966. -С.200-203.

Мазияте, ки рисолаимазкурва осори дигари Абдулхамидродар муҳитион замонбадеъва барчааста намоён мекард, он буд, кимуаллифзабон ва қолаби насри арабиро барои ифодаи мазмуну муҳтавои чадида, мазмуну муҳтавое, ки то кунун барои аъроб номаълумва номаълунус буд, ба кор гирифтааст. Сармашқиқори ӯ дар ин равиш, бидуни тардид, суннатҳоиаҳдноманависии адабиёти тоисломии эронӣ буд.

Низоми маврусияти салтанат дар Эрони тоисломӣ, ки тибқи он тахту тоҷи шоҳаншоҳӣ аз падар ба фарзанд ва ё яке дигар аз аҳли хонадони ӯ мегузашт, боис гардида буд, ки шоҳони эронӣ панду насоеҳ ва дастуроти хешро дар шакли нома ба чоғишани хеш чиҳати иқтидо ва риояти онҳоба чо мегузоштанг. Чунинандарзномаҳо дар адабиёти аҳди исломӣ номи «васоё» ва «ухуд», яъне «васиятнома» ва «аҳднома»-роба худгирифтанд. Намуна ва ё номҳои чунин андарзномаҳо, ки ҳам бевосита аз адабиётитоисломииэронӣ ва ҳамба василаитарҷумава ё бозгӯиву бознависӣ дар адабиёти арабикурунинахустини исломӣ то замони морасидаанд, метавонанд густаришу ривочи суннати аҳдноманависиро дар адабиётитоисломииэронӣ ба субутрасонанд. Рисолаимазкури Абдулхамид дар пайравӣ ва истиқбол аз ҳамин суннати пандноманависии адабиёти тоисломии эронӣтаълифшудааст. Агар он бо бозмондаипандномаҳои тоисломӣ ба доираимуқобалаву муқояса кашада шавад, рӯху оҳангиумумӣ миёни онҳо ва дар доираи талаботияк суннати ягонаи адабӣ таълиф шуданашонбармалоба назар мерасад.

Абдулхамид, ки эронинаҷод ва парвардаи адабу фарҳанги тоисломии эронӣ мебошад, забону адаби арабиро дар ғояти камол омӯхта ва дар муҳити исломӣ фаъолият доштааст. Аз ин рӯ, расоили ӯ, қабл аз ҳама, зодаи фарҳангу тафаккури эронист, ки ба муҳит ва таълимоти чадидаи исломӣ ҳамоҳанг ва дар қолаби забони арабӣ пайрезӣ гардидааст.

**Сабк ва услуби расоили Абдулхамид.** Абдулхамиди Котиб дар таърихи адабиёти арабизабон бунёдгузори сабки наве дар насри арабӣ эътирофшудааст.

Ба тасреҳи иддае аз донишмандони қадим, сармашқи қори Абдулхамид дар ибдои сабки нав шеваи насрнависии тоисломии эронӣ буд. Аз ҷумла, донишманди маъруфи қарни X-и мелодӣ Абӯҳилоли Аскарӣбад-ин маънӣ навиштааст: «Қасе, ки тартиби маонӣ ва истеъмоли алфозро ба вучӯҳи муҳталиф дар забоне аз забонҳо шинохт ва сипас забони дигар омӯхт, метавонад дар таркибикалом қавоиди якоро дар дигаре ба кор барад, чунон ки Абдулхамиди Котиб услубикитобатихудро, ки пас аз ӯ пайравонизиеде ёфт, аз форсӣ аҳз намуд ва дар арабӣ ба кор бурд»<sup>1</sup>.

---

<sup>1</sup>العسكري، ابو هلال. كتاب الصناعتين. ج. ١٠ - ص. ٥٢.



Мурочиати бевосита ба осори бозмондаи Абдулҳамид, хоссатан ду рисолаимазкури ӯ, чиҳати таъйини мазиятҳои сабки вай фикру андешаи донишмандони мутақаддимро доир ба сарчашмаи эронии равиши нигориши нависанда таъйид мекунад. Дар ҳақиқат нахустин падидае, ки дар расоили Абдулҳамид ба чашм меҳӯрад ва онро аз мактуботи арабии пешин тафовут медиҳад, татвили рисола ва тафсил дар баёни матолиби он аст. Чунон ки қаблан зикр шуд, дар роҳи татвил ва басти калом қадамҳои нахустинро Абулалои Солим гузошта буд. Дар расоили Абдулҳамид ба тӯл анҷомидани риштаи калом ба вижагии сабк табдил ёфт. Падидаи нахустини ин вижагӣ тӯлонӣ будани рисолаҳо мебошад. Абдулҳамид дар ағлаби рисолаҳои хеш аз роҳи эҷозу ихтисор, ки хоси мактуботи пешини арабӣ буд, ба сӯи баёни муфассалу мутававали матолиб ва риояти тасалсули мантиқӣ дар пайомади афқору андеша гаравидааст. Дар натиҷа, расоили ӯ, хоссатан рисола аз ҷониби халифа Марвон ба валиаҳди ӯ, аз тӯлонитарин рисолаҳои насри арабизабон ба шумор омадаанд.

Амалан, рисолаҳои Абдулҳамид бо мавзӯ ва муҳтавое, ки фарогири он ҳастанд, аз доира ва ҳудуди маъмулии номанигорӣ хориҷ шуда, ба сӯи китобу рисолаҳои мустақили адабӣ майл кардаанд.

Ба тӯл кашидани номаҳо ва тафсил дар ироаи матлаб дар онҳо ба се чиз мусоидат кард. Нахуст, номанигории арабизабон барои истиқбол аз мавзӯот ва матолиби пурдомане, ки дар адабиёти тоисломии эронӣ роиҷ буд ва ифодаи онҳо басти суҳан ва вусъати маҷоли тафаннунро тақозо дошт, омода гардид.

Сониян, ба тӯл кашидани номаҳо боиси ба қисмҳои муҳталиф ҷудо шудани онҳо вобаста ба мавзӯ гардид. Дар номаҳои пешини арабӣ пас аз салом дарҳол ба баёни матлаб мегузаштанд ва бо ҳамин нома ба итмом мерасид. Дар расоили Абдулҳамид қабл аз баёни матлаб муқаддимае меояд, ки он маъмулан фарогири ҳамду наъти Худованд ва шукри неъматҳои ӯст. Бад-инсабаб аст, ки донишмандони қуруни вусто Абдулҳамидро ба ҳайси нависандае шинохтаанд, ки бори нахуст таҳмидотро дар номаҳои истифода кардааст<sup>1</sup>.

Овардани таҳмидот дар оғози нома ба қавли М.Муҳаммадӣ, «дар миёни аъроб на дар чоҳилият ва на дар садри ислом маъмул набуд»<sup>2</sup>. Баракси ин, иншои муқаддамоти муфассал ба ҳамон сурати таҳмидоти расоили Абдулҳамид дар номаҳои девонии аҳди Сосониён расме мутадовил ва роиҷ будааст. Байҳаққидар «ал-Маҳосин ва-л-масовӣ» ривоятеро нақл кардааст, ки он вучуди муқаддимаро дар

---

<sup>1</sup> ابن عبد ربه. كتاب العقد الفريد. ج. ۲. - ص. ۲۰۶.

<sup>2</sup> محمدی، محمد. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام و آثار آن در تمدن اسلامی و ادبیات عربی. - ص. ۳۴۶.

номаҳои аҳди сосонӣ ва эҳтимоми шоҳони эрониро ба зебӣ ва камоли ин гуна муқаддимаҳо собит мекунад<sup>1</sup>.

Солисан, ба тӯл анҷомидани риштаи калом дар номаҳои Абдулҳамид заминае барои зуҳури завқи хунари дар расоили арабизабон фароҳам овард.

Ҳамин тариқ, басти калом ва тафсил дар ироаи матолиб, ки аз боризтарин вижагиҳои сабки ниғориши Абдулҳамид махсуб мешаванд, ба омодагии насри арабизабон ба қабули агроз ва матолиби ҷадид, тақсим шудани нома ба аркони мухталиф, дар оғози он ҷойгузин шудани таҳмидот ва мунтаҳо ба зуҳури завқи хунари дар насри арабизабон мусоидат карданд. Ин се амр, ки моҳиятан идомаи анъанаҳои насри тоисломии эронӣ ва имтизоҷи онҳо бо дастовардҳои насри арабӣ дар осори Абдулҳамид мебошанд, муҳимтарин абъод ва аркони таҳаввуло, ки дар насри арабизабон ба василаи эҷодиёти ӯ ва нависандагони дигари эронинаҷод падида омад, таъйин карданд.

Мақому манзилати рафеи Абдулҳамидро дар поягузории насри арабизабон иборати зер, ки дар китобҳои адаби арабӣ аз он ба касрат ёд мешавад ва ҳукми зарбулмасалро ба худ гирифтааст, дар бехтарин вачҳ инъикос мекунад: «Футихат-ил-китобату би Абдилҳамиди...», яъне, «нависандагӣ бо Абдулҳамид оғоз ёфт». Дар ҳақиқат Абдулҳамид бо расоили хеш ба насри фаннии арабизабон ибтидо гузошт, ки ин ибтидо, бо таваҷҷуҳ ба иртиботи вай ба фарҳангу адаби тоисломии эронӣ, дар айни замон давоми суннатҳои насри паҳлавӣ дар муҳити исломӣ махсуб мешавад.

---

<sup>1</sup>خطیبی، حسین. فن نثر در ادب پارسی. - ص. ۳۰۰-۳۰۱.

## ФАСЛИ ЧАҲОРУМ

### НАҲЗАТИ ТАРҶУМАИ НАСРИ ПАҲЛАВӢ БА АРАБӢ ДАР САДАҲОИ VIII-IX

#### 4.1. ОМИЛҲОИ ГУСТАРИШИ НАҲЗАТИ ТАРҶУМА

Ба ислом ва чаҳоншиносии нави ваҳдонӣ рӯй овардани аксарияти мардуми Эронзамин, аз сахнаи таърих хорич шудани зардуштия ва соири мазҳабҳои маҳаллӣ, ҷойгузини хатти паҳлавӣ гардидани расмулхатти арабӣ, тасаллути забони арабӣ дар паҳнаи эҷоди адабиву илмӣ дар баробари сукути иҷбориву муваққатии забонҳои эронӣ дар қарнҳои VIII-IX аз умдатарин таҳаввулоте буданд, ки пас аз истилои араб дар ҳаёти сиёсиву иҷтимоӣ ва маънавию фарҳангии халқҳои эронӣ сурат гирифтанд. Бар асари чунин таҳаввулот риштаи инкишофи муътадилу муқаррарии забону адаб ва фарҳанги Эронзамин гусаста шуд ва ҳастии маънавии он дар вартаи нобудӣ қарор гирифт.

Қадами нахустин дар роҳи наҷоти адабу фарҳанг ва тамаддуни Эронзамин аз ин вартаи нобудии маънавӣ тарҷумаи осори мактуби тоисломии эронӣ ба забони арабӣ буд. Бо дарки ин ҳақиқат ва зарурати таърихӣ намояндагони аҳли адабу фарҳанг ва илми Эронзамин ба тарҷумаи муҳимтарин осори тоисломии эронӣ ба забони арабӣ пардохтанд.

Оғози тарҷумаи китобу расоили паҳлавӣ ба забони арабӣ ба аҳди Умавиён (661-750) оид аст. Аввалин китобҳое, ки тарҷума шуданд, аз лиҳози мавзӯю матолиб ба таърихи Эрон ва таҷрибаи кишвардорӣ шоҳони эронӣ марбут буданд. Аз ҳамин зумра аст тарҷумаи китобе дар ҷуғрофиёи Эрон аз паҳлавӣ ба арабӣ, ки ба қалами яке аз нахустин дабирон ва мутарҷимони эронии Хилофат Зодонфаррухи Каскарӣ (ваф.701) тааллуқ дошт. Тарҷумаи китоби мазкур аз байн рафтааст, вале ба шарофати Ибни Фақеҳ, ки дар «Китоб-ул-булдон»-и хеш борҳо тарҷумаи Зодонфаррухро мавриди истинод қарор додааст, пораҳо ва матолибе аз он имрӯз дар даст аст<sup>1</sup>.

Дар радифи нахустин осоре, ки ба арабӣ тарҷума гардид, ҳамчунин бояд китоби бузургеро доир ба таърихи шоҳони сосонӣ мавсум ба «Китоб-ус-сувар» зикр кард. Ин китоб дар нимаи ҷумодиюлохири соли 113/731 барои Ҳишом ибни Абдулмалик аз порсӣ ба арабӣ нақл гардида буд<sup>2</sup>. Бо таваҷҷуҳ ба санаи мазкур метавон ҳадс зад, ки ин китоб аз нахустин тарҷумаҳо аз забони паҳлавӣ ба арабӣ ба шумор меояд.

<sup>1</sup> ابن الفقيه الهمداني. مختصر كتاب البلدان. - ص. ۲۰۹-۲۱۱.

<sup>2</sup> مسعودی، علی بن حسین. التنبيه و الاشراف. - ص. ۹۹.

Интиқоли зимоми хилофат аз сулолаи Умавиён ба дудмони Аббосиён дар густардани ҳаракати тарҷума ба таври умум ва баргардони осори мансури паҳлавӣ ба арабӣ хоссатан нақши созгор ба уҳда дошт. Хирадгароӣ ва тамоюл ба илму дониш, дастгирӣ аз рушди адаб ва фарҳанг, ки аз мазиятҳои боризи сиёсати давлат дар аҳди хулафои аббосӣ, бавижа дар сад соли аввали ҳукмфармоии ин хонадон буд, боиси равнақи бозори тарҷума ва фароҳам омадани муҳити доду ситади фикриву маънавӣ дар қаламрави Хилофат гардид. Дар натиҷа, теъдоди азими китобу рисолаҳои паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума шуд ва дар муҳити доду ситади фарҳангӣ мавриди ҳусни қабул ва пайравӣ қарор гирифт. Як назари умумӣ ба вусъати ҳаракати тарҷума дар он даврон собит мекунад, ки аз солҳои сиюми асри VIII то солҳои сиюми асри IX тақрибан ағлаби дастовардҳои фикру қарихаи халқҳои ориёӣ ба забони арабӣ тарҷума гардид. Бино бар ин, марҳалаи мазкурро дар таърихи насри халқҳои эронӣ метавон ба «асри тарҷума» номзад кард.

Ба вусъати ҳаракати тарҷума ангеа ва омилҳои таъсир доштанд, ки ишораи мухтасар ба онҳо ҷиҳати дарки беҳтари моҳият ва муҳтавои ин ҳаракати маънавӣ зарур аст.

Нахустин, балки асоситарин ангеаи тарҷумаи осори тоисломии эронӣ ба забони арабӣ талоши аҳли шуубия – дабирону нависандагони эронинаҷод бар ҳифзу эҳёи адабу фарҳанги ниёгонашон буд. Намояндагони наҳзати шуубия дар садаи он буданд, ки аз байн рафтани кудрати Эронзаминро дар сахнаи сиёсату мазҳаб бо пирӯзии маънавияту рӯҳонияти он дар майдони илму дониш ва фарҳанг ҷуброн кунанд. Аҳли шуубия бо тарҷумаҳо аз паҳлавӣ ба арабӣ на танҳо аз хидматгузори адабу фарҳанги Эронзамин буданд, балки барои ғаномандии адабиёти араб, аз ҷумла насри арабизабон низ хидмати шоиста ба анҷом расонидаанд.

Омили дигаре, ки дар вусъати тарҷума аз паҳлавӣ ба арабӣ нақши зоҳир дошт, кӯшиши посух гуфтан ба ниёзҳои фикрӣ ва ҳунарии замон ва ҷомеа аст. Ҳамчунон ки зикр шуд, аъроб дар кишвардорӣ ва умури идорӣ собиқа ва таҷрибаи кофӣ надоштанд. Аз ин рӯ, хулафо ва зиммдорони давлат ба андӯхтаҳои халқҳои эронӣ дар боби тадбири мулк ва сиёсат ниёз доштанд, то онро сармашқи кори худ қарор диҳанд. Ҷоҳиз ниёзеро, ки дар ҷомеаи исломии он даврон ба таҷрибаи кишвардорӣ Эронзамини тоисломӣ вучуд дошт, чунин тавсиф кардааст: «Бояд аз шоҳони Эрон оғози сухан кунем, ки пешгоми ин кор буданд ва мо қавонини ҳукумат ва кишвардориро аз онҳо гирифтём ва чигунагии идораи мардум ва интизоми табақоти хавосу авом ва водоштани ҳар табақаро ба кори худ аз онон омӯхтем»<sup>1</sup>. Ҳамин ниёзи сиёсиву фарҳангӣ буд, ки боиси ба миён

---

<sup>1</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب التاج. - ص. ۲۳.

омадани тарҷумаҳои осори мутааддиди тоисломӣ дар боби сиёсату одоби кишвардорӣ гардид.

Омилидигари густариши тарҷума дастгирӣ ва тақвияти он аз ҷониби хулафо ва вузарои Хилофат аст. Ба шаҳодати манбаъҳои адабиву таърихӣ, нахустин хулафои аббосӣ ба осори маънавии эронӣ, юнонӣ, хиндӣ ва халқҳои дигар рағбат ва тавачҷуҳ доштанд ва аҳли илму адабро батарҷумаву нақли он ташвиқ ва таҳрик мекарданд. Муҳаммади Фуфронӣтаваҷҷуҳи хулафоро ба тарҷума «гароише омм» номида ва оғози ин гароишро ба замони халифаи аббосӣ Мансур (754-776) нисбат додааст<sup>1</sup>.

Дар замони Ҳорунарашид (776-809) дар Бағдод китобхонае бо номи «Дор-ул-ҳикма» таъсис ёфт, ки дар он дар баробари ҳифзи китобҳо ба кори тарҷумаву таълиф низ мепардохтанд. Ин амр дар замони хилофати Маъмун (813-833) ривочи тамом пайдо кард. Халифаи мазкур дар Бағдод нахустин муассисаи ислומии тарҷумаву таълифро бо номи «Байт-ул-ҳикма» ё «Хизонат-ул-ҳикма» таъсис дод, ки он маркази таҷаммуи нависандагону мутарҷимон ва нассохону саҳҳофони эронӣ буд.

Мутарҷимону адибони эронӣ дар фаъолияти «Байт-ул-ҳикма» нақшикорсозро бар уҳда доштанд. Аз ҷумла, Саҳл ибни Ҳорун ва Салм солҳо ҳамраисони ин муассиса буданд ва ба шумули мутарҷимони осори паҳлавӣ ворид ҳастанд<sup>2</sup>. Ҷурҷӣ Зайдон ҳамин мақому манзилати донишмандони эронисро дар фаъолияти тарҷумаву таълифи «Байт-ул-ҳикма» ба назар гирифта, чунин нигоштааст: «Байт-ул-ҳикма» ба дасти эронӣён таъсис шуд ва ба дасти онон идора мешуд ва касоне, ки ба он ҷо омадушуд доштанд, бештарашон эронӣ буданд ва бештарашон шуубӣ буданд»<sup>3</sup>.

Дар доман густардани нахзати тарҷумааз форсӣ нақши вазирони Хилофат, ки аксаран эронисл ва эронгаро низ буданд, хеле бузург аст. Намунаи беҳтарини ривочи тарҷума ва майл ба эҳёи мероси тоисломии Эронзамин ҳамон фаъолияти вазирони маъруф аз хонадони Бармакиён буд. Муҳаққиқи араб Исо ал-Окуб талош ва ғайрати Бармакиёнро дар зинда кардани мероси маънавии эронӣ ва ба кори тарҷумаи он таҳрик кардани мутарҷимонро чунин хулоса кардааст: «Бармакиён ҳар касро, ки тавони анҷоми хидмате ба фарҳанги Эрон ва мероси сосонӣ дошт, гирди худ ҷамъ мекарданд»<sup>4</sup>.

Ангезаи дигари равнаки бозори тарҷума ва доду ситади фарҳангиро метавон чун омодагии тамаддуни навтаъсиси исломӣ ба

<sup>1</sup> غفرانی خراسانی، محمد. عبد الله بن المقفع. - ص. ۳۵.

<sup>2</sup> محمدی، محمد. تاریخ و فرهنگ ایران در دوران انتقال از عصر

ساسانی به عصر اسلامی. ج. ۴. - ص. ۱۲۱-۱۲۲.

<sup>3</sup> زیدان، جرجی. تاریخ تمدن اسلام. ج. ۳. - ص. ۶۳۲.

<sup>4</sup> العاکوب، عیسی. تاثیر پند پارسی بر ادب عرب. - ص. ۱۰۳.

қабули дастовардҳои нубуғи адабиву фарҳангӣ ва илмии халқҳои мухталиф арзёбӣ кард. Фарҳангу тамаддуни ҷадиди исломӣ маҳсули пайванду омезиши нерӯу тавоноии маънавии халқҳои мухталиф дар партави ҷаҳоншиносии ваҳдонӣ мебошад. Тааммул бар номгӯи китобу рисолаҳои, ки дар қарнҳои VIII-IX ба забони арабӣ нақл гардид, далел бар он аст, ки дар таквини тамаддуни муштаракӣ исломӣ ба ғайр аз мероси арабӣ осори фикрии эронӣ, Ҳиндӣ ва юнонӣ ҳар яке дар бахшҳои хосе таъсир гузоштаанд. Адабиёту фарҳанги тоисломии эронӣ яке аз пояҳои асосӣ ва рӯкҳои созанда дар ташаккули тамаддуни арабӣ-исломӣ маҳсуб мешавад. Осоре, ки аз паҳлавӣ тарҷума гардид, бештар ба соҳоти таърих, адабиёт, сиёсат, кишвардорӣ, нучум, баъзе аз риштаҳои тиб ва ғайра марбут буд ва дар бахшҳои зиндагии сиёсӣ, иҷтимоӣ ва адабии Хилофат таъсир ва нуфуз дошт. Ба қавли М.Муҳаммадӣ, «дар асре, ки адабиёти араб густариш меёфт, адабу фарҳанги эронӣ муҳимтарин адабу фарҳанги хориҷӣ буд, ки бо он пайванд ёфт. Ба иборати дигар, эронӣ ҳам худ соҳибони осори фикрӣ ва ҳам тарҷумакунандагони он осор ба арабӣ ва ҳам бавучудоварандаи назоири онҳо дар арабӣ будаанд»<sup>1</sup>.

Ҳамин тариқ, ангега ва омилҳои фавқуззикр мавҷитарҷумаи осори мансури паҳлавиро ба арабӣ тақвият бахшида, боиси ба тарҷумаву нақл рӯй овардани на танҳо мутарҷимони ҳирфай, балки номоваргарин адибону нависандагони эронӣасли қарнҳои VIII-IX гардиданд.

#### 4.2. МУТАРҶИМОНИ ОСОРИ ПАҲЛАВӢ

Муҳимтарин ва ҷомеътарин маъхазе, ки он номи иддае аз мутарҷимони осори мансури паҳлавӣ ва ановини баъзе аз китобу рисолаҳои тарҷумакардаи онҳоро дар бар гирифтааст, китоби «ал-Фихрист»-и Ибни Надим мебошад. Дар ин асар дар бахши «Номи мутарҷимон аз форсӣ ба арабӣ» номи 16 тан ва дар соири бахшҳои номи 4 тани дигар зикр шудааст<sup>2</sup>. Ба ҷуз аз «ал-Фихрист», бояд аз «Муъҷам-ул-удабо»-и Ёкути Ҳамавӣ, «Ҷовидон хирад»-и Мисқвайҳи Розӣ ва ғайра ёдовар шуд, ки номгӯи мутарҷимони мазкур дар «ал-Фихрист»-ро бо номҳои ҷадид такмил додаанд. Дар иртибот бо тарҷумаи «Худойнома»-и паҳлавӣ номи чанд тан аз мутарҷимони ин китоб дар «Таърих синий мулук-ал-арз ва-л-анбиё»-и Ҳамзаи Исфаҳонӣ, «Муқаддимаи «Шоҳномаи Абӯмансурӣ», тарҷумаи «Таърихи Табарӣ»-и Балъамӣ, «Осор-ул-боқия»-и Берунӣ ва «Муҷмал- ут-таворих ва-л-қисас»-и маҷхулумаллиф зикр шудааст.

---

<sup>1</sup>محمدى، محمد. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام و آثار آن در تمدن اسلامی و ادبیات عربی. - ص. ۱۳۶.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۳۴.

**Абдуллоҳ ибни Муқаффаъ.** Ба иттифоқи донишмандони гузаштаву имрӯз, Ибни Муқаффаъ дар раъси мутарчимони осори паҳлавӣ ва дар шумули бузурgtарин нависандагони арабизабон қарор дошт. Бино бар он чи дар манбаъҳои куҳан таъкид шудааст, номи форсии нависанда то даме, ки ислом овард, Рӯзбеҳ ва куняаш Абӯамр буд<sup>1</sup>. Рӯзбеҳ дар оилаи ашрофи эронӣ, ки дар рустои Ҷур (Фирӯзободи кунунӣ)-и вилояти Форс иқомат дошт, дар ҳудуди солҳои 722-724 ба дунёмад<sup>2</sup>. Номи падарашро Ибни Халлиқон «Додуя» (Додувайҳ?) ва Абӯалии Мисқвайҳ «Додчушнас» зикр кардаанд<sup>3</sup>. Додуя (Додчушнас) дар аҳди Умавиён, дар замоне ки Ҳаҷҷоҷ ибни Юсуф волии Ироқ буд, маъмури хироҷи Форс таъйин гардид ва барои содир кардани гуноҳе дар ҷамъи амвол мавриди шиканҷаи Ҳаҷҷоҷ қарор гирифт. Бар асари ин укубат дасташ «муқаффаъ» шуд, яъне, хушқид ва худӣ ӯ ба ин сифат мулаққаб гашт<sup>4</sup>. Додуя зоҳиран исломро напазируфта, ба ойини зардуштиву суннатҳои тоисломӣ содиқ мондааст ва писараш Рӯзбеҳро низ дар рӯҳи садоқат ва ҳусни ихлос ба ин ойину суннатҳо тарбия кардааст. Рӯзбеҳ забону адаби паҳлавиро дар Форс аз бар қард ва баъдан дар Басра ва Куфа касби илм намуда, забони арабиро дар ғояти камол омӯхт ва мунтаҳо худ дар радифи даҳ тан аз балеғтарин нависандагони арабизабон ҷой гирифт<sup>5</sup>.

Рӯзбеҳ фаъолияти худро дар охириҳои ҳукумати Умавиён ба ҳайси дабири ҳокими шаҳри Шопур – Масеҳ ибни Ҳаворӣ оғоз карда, баъдан дар Кирмон вазифаи дабирии волии он ҷой – Довуд ибни Язид ибни Умар ибни Хубайраро ба уҳда дошт<sup>6</sup>. Пас аз он ки зимоми Хилофатро дудмони Аббосиён ба даст гирифтанд, Рӯзбеҳ ба онон пайваст ва дабири амми халифаи аббосӣ Мансур (754-772) – Исо ибни Алӣ гардид. Бо исрори Исо ибни Алӣ ӯ расман ислом оварда, номи мусулмонии Абдуллоҳ ва куняи Абӯмуҳаммадро ба худ қабул кард<sup>7</sup>. Вале бо вучуди ин, ӯ ҳам дар зоҳир ва ҳам дар ботин ойинҳои эрониро парастии мекард. Ин буд, ки саранҷом ӯ ба куфру зиндиқа муттаҳам гардид. Аз ҷумла, ӯро ба тарҷумаи китобҳои зиёди монавӣ аз паҳлавӣ ба арабӣ, тақлиди Қуръон ва интиқоди он айбдор

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۲.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۳؛ الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۴۸.

<sup>3</sup>ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناى الزمان. ج. ۲. - ص. ۱۵۵.

<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۲؛ ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناى الزمان. ج. ۲. - ص. ۱۵۵.

<sup>5</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۴۰.

<sup>6</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۲؛ الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۴۴.

<sup>7</sup>ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناى الزمان. ج. ۲. - ص. ۱۵۱.

кардаанд<sup>1</sup>. Ғайр аз ин китоби Қосим ибни Иброҳим ном муаллифе таҳти унвони «Китоб-ур-рад ала-з-зиндиқ-ал-лаъин Ибн-ал-Муқаффаъ» («Китоби эътироз ба зиндиқи лаин Ибни Муқаффаъ») низ боқӣ мондааст, ки, бино ба навиштаи муаллифаш, бар зидди китоби дар ситоиши монавият навиштаи Ибни Муқаффаъ таълиф шудааст<sup>2</sup>.

Иттиҳомҳои Ибни Муқаффаъ бар зиндиқа ва монавият яке аз сабабҳои қатли ин нависандаи озодандеш гардид. Дар сарчашмаҳои куҳан сабабҳои дигари қатли Ибни Муқаффаъ, аз қабилҳои амонномаи дар дифои Абдуллоҳ ибни Алӣ аз халифа Мансур навиштаи ӯ, ки боиси хашми халифа гардид, ҳамчунин кинаи волиии Басра – Суфён ибни Муовияи Муҳаллабӣ нисбат ба ӯ зикр гардидаанд<sup>3</sup>. Дар радифи омилҳои, ки дар қатли Ибни Муқаффаъ муассир будаанд, аҳли таҳқиқ муҳтаво ва мундариҷаи «Рисолат-ус-саҳоба»-и ӯро низ зикр кардаанд<sup>4</sup>. Дар ҳар ҳол, маҷмӯи сабаб ва омилҳои мазкур бахонаи кофиро барои қатли нависанда ба ихтиёри бадхоҳону душманони ӯ вогузоштанд. Онҳо бо истифода аз ин фурсат Ибни Муқаффаъро соли 759 дар синни 36-солагӣ ба таври ваҳшиёна ба қатл расониданд, ки қиссаи он дар китоби «ал-Вузуро ва-л-кутуб»-и Ҷаҳшиёрӣ ва «Вафаёт-ул-аъён»-и Ибни Халликон нақл шудааст<sup>5</sup>.

Ҷаҳолияти адабии кӯтоҳмуддат, вале хеле пурсамари Ибни Муқаффаъ дар ду самти асосӣ ҷараён дошт: якум, тарҷумаи осори тоисломии эронӣ ба забони арабӣ; дувум, таълифи осор дар рӯҳ ва равияи анъанаҳои адабиву бадеии халқҳои эронӣ.

Ибни Муқаффаъ аз аввалин ва пурмахсултарин мутарҷимони эронӣ мебошад. Муаллифи «ал-Фихрист» тарҷумаи чунин осори муҳимми адабиву таърихӣ Эрони тоисломӣ, аз қабилҳои «Худойнома», «Ойиннома», «Калила ва Димна», «Китоби Тоҷ дар сирати Анӯшервон»-ро ба қалами ӯ нисбат додааст<sup>6</sup>. Иддае аз тарҷумаҳои Ибни Муқаффаъ дар сарчашмаҳои дигар низ зикр шудаанд. Чунончи, Масъудӣ дар «Муруҷ-уз-заҳаб» аз китобҳои бо номи «Сакисарон» ва «Банкаш» (Пайкор?) ёд карда ва мутарҷими онҳоро Ибни Муқаффаъ доништааст<sup>7</sup>. Дар «Таърихи Табаристон»

<sup>1</sup> المرتضى. امالى. ج. ۱. - ص. ۹۳-۹۵.

<sup>2</sup> ضيف، شوقى. الفن و مذاهبه فى النثر العربى. - ص. ۱۳۶-۱۳۷.

<sup>3</sup> الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۴۴-۱۴۶؛ ابن

خلکان. وفيات الاعيان و انباء ابناؤ الزمان. ج. ۲. - ص. ۱۵۲.

<sup>4</sup> آرنوش، آرتاش و زرياب، عباس. ابن مقفع. ج. ۴. - ص. ۶۶۵.

<sup>5</sup> الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۴۵-۱۴۶؛ ابن

خلکان. وفيات الاعيان و انباء ابناؤ الزمان. ج. ۲. - ص. ۱۵۳.

<sup>6</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۲.

<sup>7</sup> مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۱۹۰.



тарҷумаи «Рисолаи Тансар» аз паҳлавӣ ба арабӣ ба Ибни Муқаффаъ мансуб дониста ва тарҷумаи форсии он нақл шудааст<sup>1</sup>.

Дар китоби «Сифат-уд-давоат ва-л-қалам ва тасрифухо», ки нигоштаи Абулқосим Абдулазизи Бағдодии Нахвӣ – адиби қарни IX аст, ба қалами Ибни Муқаффаъ ба чуз аз «Калила ва Димна» ва «Китоби Маздак» ҳамчунин тарҷумаи китобҳои «Ҳазор афсона», «Аҳди Ардашер» ва «Корванд» нисбат дода шудааст<sup>2</sup>.

Аз ин тарҷумаҳо танҳо «Калила ва Димна», ки ба Ибни Муқаффаъ шуҳрати оламгир овардааст ва «Рисолаи Тансар» дар тарҷумаи минбаъди форсӣ то имрӯз боқимондаанд. Тарҷумаҳои дигари Ибни Муқаффаъ аз байн рафтаанд, вале аз онҳо, алалхусус аз «Худойнома» ва «Ойиннома», дар осори адабиву таърихӣ муаллифони арабизабони асрҳои миёна пораҳои пароканда боқӣ мондаанд.

Абдуллоҳ ибни Муқаффаъ на танҳо аз пешоҳангони ҳаракати тарҷума, балки яке аз нависандагони бузург ва поягузори насли арабизабон низ буд. Ба қалами ӯ як идда китобу рисолаҳо, аз қабили «ал-Адаб-ал-кабир», «ал-Адаб-ас-сағир», «ал-Ятима», «Рисолат-ус-саҳоба», «ал-Адаб-ал-ваҷиз ли-л-валад ас-сағир» навишта шудаанд.

Дар сарчашмаҳои адабиву таърихӣ абёте чанд аз Ибни Муқаффаъ нақл шуда ва дар «ал-Фихрист» низ ба шеърӯ шоирии ӯ ишора рафтааст<sup>3</sup>. Ҳамчунин ба қалами ӯ қасидае дар шарҳи моҳҳои румӣ ва боду ҳавои он моҳҳо дар 40 байт мансуб аст. Ховаршинос О.Решер қасидаи мазкурро аз рӯи нусхаи хаттӣ, ки дар китобхонаи Аясофияи Истанбул маҳфуз аст, ҳамроҳ бо тарҷумаи олмонии он ба чоп расонидааст<sup>4</sup>.

Абдуллоҳ ибни Муқаффаъ яке аз аввалин шуубиёни эронӣ буд, ки фаъолияти эҷодияш на танҳо ба нашр ва нуфузи шуубия дар Хилофат мусоидат кардааст, балки мақсад ва мароми ин чунбишро дар бехтарин шаклу сиға инъикос намудааст. Агар эҳсосу ангезаи шуубии аксари шоирону адибони эронӣ дар ситоиши гузаштаи Эрон ва мазаммату таҳқири арабҳо зоҳир гашта бошад, Ибни Муқаффаъ дар посдории фарҳангу тамаддуни тоисломии Аҷам ва таъмини ҳастии он дар шароити ҳукмфармоии ислом василае нишонрастар аз онро истифода бурдааст, яъне, бузургиву шаҳомати фарҳангу тамаддуни Эрони тоисломиро ӯ на бо роҳи муораза бо арабҳо, балки бо тарҷумаи бевоситаи осори тоисломӣ ва таълифи асарҳо дар рӯи он осор исбот кардааст.

<sup>1</sup>تاریخ سیستان.بتصحیح ملك الشعراء بهار. - ص.۱۲-۴۱؛ نامه تنسر به گشنسپ.به تصحیح مجتبی مینوی. - ص.۳۸.

<sup>2</sup>ابن المقفع، عبدالله. المنطيق. ابن بهريز، حدود المنطق. - ص.۶۳.

<sup>3</sup>گرگانی، فخر الدين.ويس و رامن.به اهتمام محمد جعفر محجوب، تهران ۱۳۳۷. - ص.۱۹۱.

<sup>4</sup>آزنوش، آرتاش و زریاب، عباس. ابن مقفع.ج.۴. - ص.۶۷۹.

Тарчума ва таълифоти Ибни Муқаффаъ боиси хифз ва умри дубора пайдо кардани осори тоисломии эронӣ ва ривочи анъанаву суннатҳои гузашта дар чомеаи нав гаштанд. Тарчумаи «Худойнома» аз паҳлавӣ ба арабӣ ва минбаъд яке аз сарчашмаҳои асосии «Шоҳнома» қарор гирифтани он худ далели равшани аҳаммиятифаъолияти Ибни Муқаффаъ ҳамчун нависандаи шуубимазҳаб аст ва тадовуми суннатҳои осори мансури тоисломиро дар насри арабизабони қарнҳои VIII-IX ва адабиёти навини форсӣ таъйид мекунад.

Барои дарки моҳияти афкор ва маслаки шуубии Ибни Муқаффаъ ба назар гирифтани он чиз низ муҳим аст, ки ба ӯ таассуби наҷодие, ки ба баъзе шуубиён хос буд, бегона аст. Ибни Муқаффаъ ба фасоҳату балоғати забони арабӣ ва суннатҳои адабиёти чоҳилия қоил буд. Гузашта аз ин, ӯ ҳамчун адиби маърифатпарвар фаъолияти тарҷумонии худро танҳо бо тарҷумаи осоре, ки асли эронӣ доранд, маҳдуд накардааст, балки дар қатори он иддае аз китобҳои фалсафии Юнони қадимро ба арабӣ нақл карда ва дар ошно сохтани аҳли фарҳанги Хилофат бо дастовардҳои тафаккури фалсафии Юнон низ саҳм гузоштааст. Аз миёни ин осор китоби «ал-Мантиқ»-и Ибни Муқаффаъ то замони мо расида ва рӯи чодро низ дидааст, ки он шомили «Исоғучӣ», «Қотигуриус» (Макулот), «Бори арминос» (Китоб-ул-ибора) ва «Анолутиқо» (Қиёс) аст. Се китоби ахир ба ҳақими юнонӣ Арасту ва китоби аввал ба шогирди ӯ – Порфирий тааллуқ дорад<sup>1</sup>. Ин китобҳоро Ибни Муқаффаъ на аз юнонӣ, балки аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума карда, зеро ба ишораи Ибни Надим «эронӣ дар қадим аз мантиқ ва тиб китобҳоеро ба порсӣ дароварда буданд, ки Абдуллоҳ ибни Муқаффаъ ва дигарон онҳоро ба арабӣ тарҷума кардаанд»<sup>2</sup>.

**Хонадони Навбахтиён.** Дар бахше аз «ал-Фихрист», ки ба номи мутарҷимони осори паҳлавӣ ба арабӣ ихтисос дорад, Ибни Надим «Оли Навбахт»-ро зикр карда ва «аксари онҳо»-ро аз зумраи мутарҷимон донистааст<sup>3</sup>.

Навбахтиён асли обову аҷдоди хешро ба дудмони паҳлавони асотирии эронӣ Гев писари Гударз, ки ном ва пайкораш дар «Шоҳнома» низ зикр шудааст, нисбат меоданд. Ҳамин маънӣ дар яке аз мадҳияҳои шоири номвари араб Бухтурӣ дар ҳаққи Навбахтиён таъкид шудааст<sup>4</sup>.

---

<sup>1</sup> ابن المقفع، عبدالله. المنطيق. ابن بهريز، حدود المنطق. - ص. ۹۳-۱.

<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۳.

<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

<sup>4</sup> محمدى، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساسانى به عصر اسلامى. ج. ۴. - ص. ۱۳۸.

Намояндагониин хонадондар тӯли ду-сеқарн дар ҳаёти адабиву фарҳангӣ ва илмии Хилофат нақше муҳим аз худ ба ёдгор гузошта ва ба эронгароиву эрондӯстимаъруф гардидаанд.

Саромади ин хонадон Навбахти Аҳвонӣ дар нимаи дувуми қарни VIII ба ҳайси мунаҷҷим ва донишманди маъруфи илми нучум шуҳрат дошт.

Навбахт ва пас аз ӯ писараш – Абӯсаҳл аз мунаҷҷимони хоси халифа Мансур буданд, ки ба илми нучум ва аҳкоми он тавачҷуҳи афзун дошт. Дар сарчашмаҳо китобеаз Навбахт ва ё тарҷумае аз ӯ зикр нагардидааст, вале шарҳи ҳоли мухтасар ва номгӯи китобҳои писари ӯ – Абӯсаҳл дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим ва манбаъҳои дигар зикр шудааст. Бино ба манобеи мазкур, Абӯсаҳли Навбахтӣ дар аҳди Ҳорунарашид (766-809) аз ҷумлаи коргузори «Дор-ул-ҳикма» (Байт-ул-ҳикма) буд ва дар он ба таълифу тарҷумаи китобҳо иштиғол меварзид. Дар сарчашмаҳо омадааст, ки вақте Абӯсаҳл бори нахуст ба ҳузури халифа Мансур омад, худро бо ному насаби тӯлонии форсӣ муаррифӣ кард. Талаффузи он барои Мансур гарон омад, аз ин рӯ, халифа ӯро «Абӯсаҳл» номид. Аз ному, ки Абӯсаҳл барои худ зикр кард ва он ба иллати таҳриф аз аслаш дур афтодааст<sup>1</sup>, метавон истинбот кард, ки ӯ то он дам ба ойини зардуштӣ содиқ монда ва ислом наоварда будааст. Дар сарчашмаҳо барои падараш низ номи исломӣ зикр нашуда ва аҳли таҳқиқ ҳақс задаанд, ки «Навбахт» на ном, балки лақаби ӯ будааст<sup>2</sup>. Бино ба ахбори Масъудӣ дар «Муруҷ уз-заҳаб», Навбахт низ то пайвастанаш ба дарбори Мансур зардуштӣ мондааст ва ба дасти ин халифаи аббосӣ ислом овардааст<sup>3</sup>. Ибни Надим бо таъкиди он, ки Абӯсаҳл «тарҷумаҳое аз форсӣ ба арабӣ дорад ва пояи дониши ӯ бар китобҳои эронӣ аст», номгӯи китобҳои ӯро бад-ин тарз зикр кардааст:

Китоб-ан-Наҳамтон (Наҳмутон?) фи-л-маволид. 2. Китоб ал-фаъл ан-нучумӣ. 3. Китоб ул-маволид. 4. Китоб таҳвил синӣ ал-маволид. 5. Китоб-ул-мадҳал. 6. Китоб-ут-ташбиҳ ва-т-тамсил. 7. Китоб ул-мунтаҳал мин ақовил-ал-мунаҷҷимин фи-л-аҳбор ва-л-масоил ва-л-маволид ва ғайра<sup>4</sup>.

Ибни Надим дақиқан таъйин накардааст, ки кадоме аз китобҳои мазкур тарҷума ва кадоме аз таълифоти Абӯсаҳл аст, вале аз ишораи ӯ ба он, ки Абӯсаҳл тарҷумаҳо аз форсӣ дорад ва пояи илмаш бар китобҳои эронӣ устувор аст, чунин бармеояд, ки ағлаби китобҳои

<sup>1</sup> محمدى، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساسانى به عصر اسلامى. ج. ۴. - ص. ۱۴۱.

<sup>2</sup> زرياب، عباس. آل نوبخت - دائرة المعارف بزرگ اسلامى. جلد دوم. - ص. ۱۷۰-۱۷۸.

<sup>3</sup> مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۲. - ص. ۶۹۵.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۳۳.

мазкур ё тарчума аз паҳлавӣ ҳастанд ва ё бо истифода аз маъхазҳои кӯхани эронӣ навишта шудаанд.

Афроде аз хонадони Навбахтиён, мисли Абӯабдуллоҳ Аҳмад ибни Абдуллоҳи Навбахтӣ ва Абулхусайн Алӣ ибни Хусайни Навбахтӣ, ки дар қарни IX зистаанд, ба ҳайси дабирону нависандагон шуҳрат доштанд ва дар айни замон шеър низ мегуфтанд. Ибни Надим ҳаҷми девонҳои шеъри онҳоро 200 варак таъйин кардааст<sup>1</sup>.

Ҳамин тариқ, намояндагони ин хонадони пуровозаи эронӣ дар қарнҳои VIII-IX ба тарҷумаи осори нучумӣ ва фалсафӣ аз паҳлавӣ ба арабӣ пардохта, дар идомаи суннатҳои насри тоисломӣ дар ин навъ осори қуруни нахустини исломӣ саҳми бориз гузоштаанд.

**Мӯсо ва Юсуф – писарони Холид.** Ибни Надим дар бахше аз «ал-Фихрист», ки номи мутарҷимони осори паҳлавиро зикр кардааст, номи Мӯсо ва Юсуф – писарони Холидро оварда ва танҳо бо иловаи он, ки «ин ду нафар дар хидмати Довуд ибни Абдуллоҳ ибни Хумайд ибни Қахтаба буданд ва барои ӯ аз форсӣ ба арабӣ тарҷума мекарданд», иктифо кардааст<sup>2</sup>. Хумайд ибни Қахтаба, ки Ибни Надим ин ҷо зикр кардааст, яке аз сарварони аббосӣ дар ҷанг бо Умавиён буда, дар аҳди халифаи аввали аббосӣ – Абулаббоси Саффоҳ (750-754) ҳокими Миср буд. Ӯ аз ин вазифа дар аҳди халифа Мансур (754-775) маъзулгардид<sup>3</sup>. Пас, замони зиндагии набераи ӯ – Довуд ибни Абдуллоҳ, ки барои ӯ Мӯсо ва Юсуф китобҳои аз паҳлавӣ тарҷума мекардаанд, бояд ба нимаи аввали асри IX мувофиқ бошад.

Дар сарчашмаҳои адабиву таърихӣ доир ба Мӯсо ва Юсуф ва китобҳои, ки онҳо тарҷума кардаанд, ҳамчунин доир ба падари онҳо – Холид маълумоте дақиқ ба қайд наомадааст. Танҳо Ибни Қифтӣ дар «Таърих-ул-ҳукамо»-и хеш ишорае бад-ин мазмун дорад, ки Мӯсо ибни Холид маъруф ба «ат-Тарҷумон» қисме аз «Шонздаҳ китоб»-и Ҷолинусро ба арабӣ нақл кардааст<sup>4</sup>. Ҷурҷӣ Зайдон дар «Таърихи тамаддуни ислом» бидуни зикри маъхаз овардааст, ки «Хунайн ибни Исҳоқ дар замони Мутаваккил (847-861) раиси мутарҷимон гашт ва иддае аз мутарҷимон, монанди Истефан ибни Босил ва Мӯсо ибни Холид тарҷумаҳои худро барои ислоҳ ба Хунайн меоданд»<sup>5</sup>.

Хунайн ибни Исҳоқи мазкур аз табибони масеҳимазҳабе буд, ки дар аҳди Маъмун ба дарбори хулафои аббосӣ пайваст ва дар тарҷумаву таълифи осори тиббӣ ва табобат шуҳрат пайдо кард. Агар Мӯсо ибни Холид бо ӯ ҳамкорӣ карда бошад, пас, ин ҳамкорӣ дар заминаи тарҷумаи осоре сурат гирифтааст, ки ба илми тиб марбут

---

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۹۳-۱۹۴.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

<sup>3</sup>ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ۶. - ص. ۳۲۳.

<sup>4</sup>ابن القفطى. تاريخ الحكماء. لىپسيك. ۱۹۰۳. - ص. ۱۷۱.

<sup>5</sup>زيدان، جرجى. تاريخ تمدن اسلام. ج. ۲. - ص. ۵۶۲.

буд. Осори илми тиб дар он даврон асосан аз забони юнонӣ ва сурёнӣ ба арабӣ нақл мегардид. Ҳунайн низ китобхоёро аз ҳамин забонҳо тарҷума мекард. Ибни Надим Мӯсо ибни Холидро дар радифи мутарҷимон аз паҳлавӣ ба арабӣ зикр кардааст. Дар баробари чунинтанокӯз, метавон ду тахминро пеш овард: якум, Мӯсо забони юнонӣ ё сурёниро медонист ва китобҳои Қолинусро аз ҳамин забонҳо тарҷумакард ва дар айни замон аз паҳлавӣ низ осореро ба арабӣ даровард; дувум, ӯ китобҳои тиббии Қолинусро аз тарҷумаи паҳлавии онҳо ба арабӣ нақл кард. Ба ҳар оин, фаъолияти тарҷумонии Мӯсо ибни Холид амри мусаллам аст ва наметавонад боиси эҷоди тардиде гардад.

Дар бораи фаъолияти бародари Мӯсо – Юсуф низ маълумоте дақиқ дар дастраси муҳаққиқон қарор надорад. К.А.Иностранцев ин ду бародарро аз мутарҷимони осори нучумии тоисломӣ ба шумор овардааст, вале далеле барои таъйиди назари худ зикр нанамудааст. Забехуллоҳ Сафо дар «Таърихи адабиёт дар Эрон» бидуни зикри маъхаз аз «Юсуф-ан-ноқил» ёдовар шуда, ӯро шогирди Исо ибни Чаҳорбухт – пизишки маъруфи қарни IX ва тарҷумони осори Қолинус номидааст. Сафо навиштааст, ки Юсуф «бештар ба тарҷумаи китобҳои тиббӣ иштиғол дошт», вале ба он, ки ӯ бародари Мӯсо ибни Холид аст, ишорае накардааст<sup>1</sup>.

Ҳамин тарик, лаҳзаҳои рӯзгор ва навъи осоре, ки Мӯсо ва Юсуф – писарони Холид ба тарҷумаи он пардохтаанд, дар пардае аз ибҳом қарор дорад ва то замоне, ки асаре аз тарҷумаҳои ин ду нафар ва ё иттилооти дақиқ дар бораи зиндагии онҳо ба даст наояд, ин ибҳом боқӣ мемонад. Алҳол нуктае, ки мусаллам аст, ин он аст, ки Мӯсо ва Юсуф – писарони Холид аз мутарҷимон ва ноқилони китобҳои тоисломӣ ба забони арабӣ буданд.

**Алӣ ибни Зиёди Тамимӣ.** Ибни Надим дар радифи мутарҷимони осори паҳлавӣ Абулҳасан Алӣ ибни Зиёди Тамимиро зикр карда, тарҷумаи «Зичи шаҳрёр»-ро ба ӯ мансуб донистааст<sup>2</sup>.

Китобе, ки Алӣ ибни Зиёди Тамимӣ тарҷума кардааст, бино ба арзиш ва аҳаммияте, ки он дар таквини илми нучуми исломӣ доштааст, мавриди таваҷҷуҳи донишмандони қарнҳои нахустии ислом қарор гирифтааст. Ҳамзаи Исфаконӣ бо истинод ба китоби «Ихтилоф-уз-зичот»-и Абӯмаъшар Қаъфар ибни Муҳаммади Балхӣ (ваф. 885) - донишманди маъруфи илми нучум ва фалак ривояте нисбатан муфассалро зикр кардааст, ки дар он таҳияи «Зичи шаҳрёр» ба даврони подшоҳи асотирии Эрон – Таҳмурас марбут дониста шудааст<sup>3</sup>.

<sup>1</sup>صفاء، ذبيح الله. تاريخ ادبيات در ايران. ج. ۱. - ص. ۱۱۰.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

<sup>3</sup>حمزه اصفهانی. سنی ملوك الارض و الانبياء. تاريخ پیامبران و شاهان. - ص. ۱۸۲.

Айни ҳамин ривоятро Ибни Надим низ нақл карда ва вай низ ба китоби Абӯмаъшари Балхӣ истинод кардааст<sup>1</sup>. Ривояти мазкур ду нуктаро собит мекунад: аввалан, «Зичи шахрёр», ки дастоварди илми нучуми тоисломии эронист, дар тӯли таърих манбаи асосии гоҳшумории халқҳои эронӣ буда ва дар миёни соири қавмҳои Шарк низ шуҳрат доштааст; сониян, он муҳимтарин китобе аз китобҳои нучумии Эрони тоисломӣ буда, ки бо тарҷума шуданаш ба забони арабӣ ба идомаи суннатҳои ин навъи осорикуҳани эронӣ дар муҳити исломӣ мусоидат кардааст. Фазли тарҷумаи ҳамин китоб буда, ки номи Алӣ ибни Зиёди Тамимӣ дар сафаҳоти таърихи фарҳанги форсу тоҷик ва тамаддуни арабӣ – исломӣ нақш бастааст.

**Ҳасан ибни Саҳл.** Дар «ал-Фихрист» дар ҷузви мутарҷимон аз паҳлавӣ ба арабӣ номи «Ҳасан ибни Саҳл» ба қайд омадааст<sup>2</sup>, ки ба эҳтимоли наздик ба яқин, бояд вазири Маъмун – Ҳасан ибни Саҳл ибни Зодонфаррухи Сарахсӣ (ваф. 849/850) бошад.

Ҳасан ибни Саҳл ва бародараш – Фазлибни Саҳл аз хонадони маъруфи эронӣ бархостаанд, ки дар он суннатҳои адабу фарҳанг ва кеши тоисломии эронӣ посдорӣ мешуданд. Бино ба ривояти Ҷаҳшиёрӣ, падари ин хонадон – Саҳл ибни Зодонфаррух дар замони халифа Маҳдӣ (775-784) бо даъвати Бармакиён исломовард ва дар назди онҳо аз мақому манзилати воло бархурдор гардид. Ду писари Саҳл – Ҳасан ва Фазл низ ба хидмати Бармакиён камар бастанд<sup>3</sup>. Тибқи ахбори Ибни Халликон, Фазл ва Саҳл низ мисли падарашон то дер дар кеши зардуштии хеш боқӣ монда ва соли 805 ба дасти Маъмун, ки ҳоло ба хилофат нарасида буд, ислом овардаанд<sup>4</sup>. Пас аз кушта шудани Бармакиён Фазл ва Ҳасан ба хидмати Маъмун пайвастанд ва нахуст Фазл ва баъд Ҳасан ба мансаби вазири расиданд. Ҳасан ибни Саҳл соли 818 аз ин мансаб ба иллати беморӣ канора гирифт.

Дар манбаъҳои куҳан ба муносибати бевоситаи Ҳасан ибни Саҳл ба илми нучум чанд далели ғайримустақим вучуд дорад, ки аз алоқаи ӯ ба ин илм ва аҳли он паём мерасонад<sup>5</sup>. Аз ин рӯ, ӯро дар шумори мунаҷҷимон овардани Ибни Надим бояд асосе муҳкам дошта бошад.

Сониян, аз ахборе, ки Ибни Халликон доир ба бародари Ҳасан – Фазл зикр кардааст, ба хубӣ пайдост, ки Фазл яке аз мунаҷҷимони маъруф ва дар пешгӯиҳои хеш соиб будааст<sup>6</sup>. Пас, дур аз имкон нест, ки мунаҷҷимӣ фазилати хонаводагии эшон ва Ҳасан низ мисли Фазл мунаҷҷим ва ошно ба аҳкоми нучум бошад.

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۱-۳۰۲.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

<sup>3</sup>الجهشياري، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۹۳.

<sup>4</sup>ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. ۴. - ص. ۴۱-۴۲.

<sup>5</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۳۳-۳۷۷.

<sup>6</sup>ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. ۴. - ص. ۴۱-۴۲.

Ҳасан ибни Саҳл дар иншои расоил ва шеърғӯй низ дасти тавоно доштааст. Намунаҳое аз ашъор ва расоили ӯ дар китобҳои адабиву таърихӣ, аз қабилӣ «Уюн-ул-ахбор»-и Ибни Қутайба, «Заҳр-ул-одоб»-и Хусрӣ, «Вафаёт-ул-аён»-и Ибни Халликон ва ғайра зикр шудаанд. Ибни Надим низ ба расоили мудавван ва девони ашъори уишора карда, ҳаҷман хурд будани онҳоро таъкид кардааст<sup>1</sup>.

Гузашта аз далелу санадҳои фавқуззикр, ки алоқаи Ҳасан ибни Саҳдро ба илми нучум ва шеъру адаб таъйид мекунад, далели қотеи дигар мавҷуд аст, ки бо тарҷумаи осори тоисломии эронӣ иштиғол варзидани ӯро ба субут мерасонад. Бино ба ахборе, ки Мисқвайҳ дар муқаддимаи китоби «Ҷовидон хирад» нақл кардааст, асли паҳлавии ин китобро Ҳасан ибни Саҳл ба арабӣ тарҷума карда ва Мисқвайҳ онро такмил додааст<sup>2</sup>. Тарҷумаи китоби мазкур, ки муҳтавои онро панду андарз фароҳам овардааст, аз он хабар медиҳад, ки Ҳасан ибни Саҳл ба ҷуз он метавонист китобҳои дигареро низ дар илми нучум ба арабӣ нақл кунад, ҳамчунон ки Ибни Надим дар «ал-Фихрист» инро иқрор мекунад.

**Балозурӣ.** Аҳмад ибни Яҳё ибни Ҷобир ибни Довуди Балозурӣ, ки Ибни Надим номи ӯро дар ҷузви мутарҷимон аз паҳлавӣ ба арабӣ овардааст, аз адибону муаррихон ва шоирони маъруфи қарни IX мебошад. Ибни Надим ва дар пайравӣ аз ӯ Ёқути Ҳамавӣ номи муаллафоти ӯро бад-ин тарз зикр кардаанд: «Китоб-ул-булдон ас-сағир», «Китоб-ал-булдон ал-кабир» (нотамом), «Китоб-ал-ахбор ва-л-ансоб», «Китоб Аҳд Ардашер», ки онро ба назм тарҷума кардааст<sup>3</sup>. «Китоб-ал-булдон-ас-сағир» ҳамон китоби «Футуҳ-ул-булдон» аст, ки таърихи кишваркушоиҳои аъробро дар бар гирифта ва номи Балозуриро ба ҳайси муаррихи дақиқназар ва мунсиф машҳур гардондааст. Дар баробари ин китоб зикр шудани «Китоб ал-булдон ал-кабир», ки нотамом мондааст, далолат бар он дорад, ки Балозурӣ дар садаи такмилу тафсили китоби аввал, яъне «Футуҳ-ул-булдон» буда, вале ин кор нотамом мондааст. Китоби дигари Балозурӣ – «Китоб-ул-ахбор ва-л-ансоб» имрӯз бо номи «Ансоб-ул-ашроф» маъруф буда, ба кӯшиши Абдулазизи Даврӣ ба нашр расидааст<sup>4</sup>.

Ибни Надим тарҷумаи манзуми «Аҳди Ардашер»-ро ба қалами Балозурӣ нисбат дода ва дар ду маврид ӯро аз мутарҷимони осори паҳлавӣ ба арабӣ муаррифӣ кардааст<sup>5</sup>. Аз ин таъкид пайдост, ки

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۵.

<sup>2</sup>مسكويه، ابو على. الحكمة الخالدة. (جاويدان خرد). حققه و قدم له عبد الرحمن بدوى. مكتبة النهضة المصرية، القاهرة. ۱۹۵۲. - ص. ۳.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۲۶.

<sup>4</sup> احمد ابن يحيى. انساب الاشراف. عنى بنشره عبد العزيز الدورى. بيروت ۱۳۹۸ / ۱۹۷۸. - ص. ۲۲۵.

<sup>5</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵، ۱۳۶.

Балозурӣ чанд китоберо аз адабу фарҳанги тоисломии форсу тоҷик тарҷума кардааст, вале аз ин тарҷумаҳоним ва асаре то кунун пайдо нашудааст.

**Ҷабала ибни Солим.** Яке аз нахустин мутарҷимоне, ки ба тарҷумаи осори тоисломии форсу тоҷик ба забони арабӣ пардохтанд, Ҷабала ибни Солим намояндаи хонадони дабирони эронист, ки дар нимаи аввали асри VIII дар ҳаёти фарҳангии Хилофати Умавиён нақше фаъол доштанд. Сарвари ин хонадон – Абулалои Солим дабири халифа Ҳишом ибни Абдулмалик (724-743) буд.

Ибни Надим дар «ал-Фихрист»-и худ номи Ҷабала ибни Солимро нахуст дар ҷузъи мутарҷимони эронӣ зикр кардааст ва баъд дар баҳши «Китобҳое, ки эронӣ дар шарҳи ҳол ва дostonҳои саҳеҳи подшоҳони худ таълиф кардаанд», тарҷумаи дostonҳои «Рустам ва Исфандёр» ва «Баҳроми Ҷубин»-ро ба ӯ нисбат додааст<sup>1</sup>. Ба ҳадси М.Муҳаммадӣ, китобе, ки Масъудӣ онро дар Истахр дида ва он ҳовии ахбору ақволи 27 тан аз подшоҳони сосонӣ ва суратҳои онҳо буд, ҳамчунин аз ҷониби Ҷабала ибни Солим барои халифа Ҳишом ибни Абдулмалик дар соли 730 тарҷума шудааст<sup>2</sup>.

Аз он чи зикр шуд, бармеояд, ки Ҷабала ибни Солим ба тарҷумаи осори ҳамосии эронӣ ихтисос дошт ва башарофати тарҷумаҳои ӯ дostonҳои мазкур аз нобудӣ эмин монда ва ба даврони исломӣ интиқол ёфтанд.

**Исҳоқ ибни Язид.** Дар «ал-Фихрист» дар қатори мутарҷимон аз форсӣ (пахлавӣ) ба арабӣ номи «Исҳоқ ибни Язид» зикр шуда ва таъкид гардидааст, ки «яке аз китобҳои тарҷумакардаи ӯ «Сияр-ул-фурс» маъруф ба «Ихтиёрнома» аст»<sup>3</sup>. Аз оғоз муҳаққиқон, аз ҷумла В.Р.Розен, К.А.Иностранцев, М. Муҳаммадӣ ва М.Н. Усмонов бо таваҷҷуҳ ба он, ки «Худойнома»-и пахлавӣ дар арабӣ бо номҳои «Сияр-ул-мулук» ва «Сияр-мулук-ал-фурс» маъруф аст, бар он ақида буданд, ки китоби тарҷумакардаи Исҳоқ ибни Язид «Сияр-ул-фурс» ҳамон «Сияр мулук ал-фурс» ва «Ихтиёрнома» таҳрифе аз «Худойнома» мебошад<sup>4</sup>. Бино бар ин, дар миёни аҳли таҳқиқ Исҳоқ ибни Язид яке аз ҳашт мутарҷими «Худойнома» ба забони арабӣ пазируфта шуд. Вале ахиран ин ақида ба ду далел мавриди тардид қарор гирифт: аввалан, номи мутарҷимони «Худойнома» ба ҷуз аз

---

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴، ۳۰۵.

<sup>2</sup>محمدی، محمد. تاریخ و فرهنگ ایراندر دوران انتقال از عصر ساسانی به عصر اسلامی. ج. ۴۰ - ص. ۱۵۱.

<sup>3</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

<sup>4</sup>Розен В.Р. К вопросу об арабских переводах «Худай-нама» // Восточные заметки. - СПб., 1895. - С. 177; Иностранцев К.А. Сасанидские этюды. - СПб., 1909. - С. 32; Османов М.Н. Сводь иранского героического эпоса («Худайнаме» и «Шахнаме») как источники «Шахнаме» Фирдоуси. // Ученые записки Института востоковедения. Том XIX. - Москва, 1958. - С. 161.



«ал-Фихрист» дар китоби Ҳамзаи Исфаҳонӣ «Синий мулук-ал-арз вал-анбиё», тарҷумаи «Таърихи Табарӣ»-и Балъамӣ, «Муқаддимаи «Шоҳномаи Абӯмансурӣ» ва «Мучмал-ут-таворих»-и маҷхуллул-муаллиф зикр шудаанд, вале дар ҳеч як аз онҳо номи Исҳоқ ибни Язид наомадааст. Сониян, дар «ал-Фихрист» пас аз номи Исҳоқ ибни Язид номи шаш тан аз мутарҷимони «Худойнома» омадааст ва дар муқобили номи ҳеч як аз онҳо зикре аз китобе, ки дар муқобили номи Исҳоқ ибни Язид омадааст, нест. Бино бар ин ду далел, «Ихтиёрнома» китобе ғайр аз «Худойнома» доништа шуд<sup>1</sup>. Дар ҷустуҷӯи асли китобе, ки Исҳоқ ибни Язид тарҷума кардааст, аҳли таҳқиқ ба достоне ишора карданд, ки ахиран бо номи «Бахтёрнома» бо кӯшиши Забеҳуллоҳ Сафо ба нашр расидааст<sup>2</sup>.

Таҳрирҳои арабии «Бахтёрнома», ки ба ҳадси Сафо аз нусхаи тарҷумашудаи ин китоб аз паҳлавӣ дур нестанд, бо номи «Қиссат ул-ашара вузаро ва мо ҷаро лаҳум маъа ибн-ал-малик Озодбахт» (қиссаи даҳ вазир ва он чи байни онҳо ва писари шоҳ Озодбахт гузашт) дар Аврупо ва Миср ба чоп расидаанд.

Дар «Таърихи Систон» аз «Бахтёрнома»-е сухан рафтааст, ки мухтавои он зоҳиран аз корномаи Бахтёр – паҳлавони даврони Хусрави Парвиз фароҳам омада буд. Мусаҳҳеҳи китоби «Таърихи Систон» - Маликушшуаро Баҳор, ин «Бахтёрнома»-ро ғайр аз «Бахтёрнома»-е ба шумор овардааст, ки дар Бомбай ба нашр расида ва қиссаи подшоҳро бо писари гумшудааш нақл мекунад<sup>3</sup>. Яке аз таҳрирҳои «Бахтёрнома»-ро Е.Э.Бертелс низ ба чоп расонида буд. Ҷунон ки аён аст, таҳрирҳои мухталифи «Бахтёрнома» аз лиҳози мухтаво низ аз ҳам фарқ дорад ва агар бипазирем, ки Исҳоқ ибни Язид ҳамин достони «Бахтёрнома»-ро ба арабӣ даровардааст, пас, имрӯз қатъан наметавон гуфт, ки кадоме аз ин таҳрирҳо асоси китоби тарҷумакардаи Исҳоқ ибни Язид будааст. Ба ҳар оин, «Худойнома» набудани асаре, ки Исҳоқ ибни Язид тарҷума кардааст, наздик ба яқин мебошад.

**Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ** аз зумраи мутарҷимони осори паҳлавӣ ба арабист, ки номашон дар «ал-Фихрист» зикр шудааст<sup>4</sup>. Фаъолияти ӯ танҳо мунхасир ба тарҷума набуда, балки дар илми нучум ва шеъри арабӣ низ дасти тавоно доштааст.

---

<sup>1</sup> محمدى، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساسانى به عصر اسلامى. ج. ۴. - ص. ۱۵۳.

<sup>2</sup> راحة الارواح فى سرور المفراج، بختيارنامه. انتشارات دانشگاه تهران. شماره ۱۰۵۶، سال ۱۳۴۵ - ۱۶۸ ص.

<sup>3</sup> تاريخ سيستان. بتصحيح ملك الشعراء بهار. - ص. ۸.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

Аз ахбори сарчашмаҳо бармеояд, ки Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ дар нимаи аввали асри IX дар Бағдодзиста ва дар дарбори Маъмун (813-833) соҳиби мақом ва нуфузе будааст<sup>1</sup>.

Бино ба нақли Ибни Халликон, Муҳаммад ибни Чаҳм дар аҳди Муътасим (833-842) мавриди ғазаби халифаи мазкур қарор гирифта, ба куштан маҳкум шудааст, вале дар лаҳзаи ахир аз марг наҷот ёфтааст<sup>2</sup>. Дар вафоти Муҳаммад ибни Чаҳм ду ақида мавҷуд аст: якум, ӯ дар соли 833 пас аз ба хилофат расидани Муътасим аз олам чашм пӯшид<sup>3</sup>. Сониян, Қоҳиз дар «ал-Баён ва-т-табйин» ахборе овардааст, ки далел бар зинда будани Муҳаммад ибни Чаҳм дар замони хилофати Восиқ (842-847) аст<sup>4</sup>.

Қадимтарин маъхаз, ки доир ба фаъолияти тарҷумонии Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ санадеро шомил аст, таърихномаи Ҳамзаи Исфаҳонӣ «Синий мулук-ал-арз ва-л-анбиё» ба шумор меояд. Ҳамза овардааст, ки ӯ бо мақсади навиштани таърихи табакоти чаҳоргонаи подшоҳони Эрон ва муайян кардани солҳои салтанати эшон ҳашт китобе дар ин боб чамъ овардааст, ки яке аз онҳо китоби «Сияр мулук-ал-фурс», яъне, «Худойнома»-и паҳлавӣ ба тарҷумаи Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ буд<sup>5</sup>.

Номи Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ ба ҳайси мутарҷими «Худойнома» ба чуз аз «ал-Фихрист»-и Ибни Надим ҳамчунин дар «Муқаддимаи «Шоҳномаи Абӯмансурӣ»<sup>6</sup>, тарҷумаи «Таърихи Табарӣ»-и Балғамӣ<sup>7</sup>, «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас»-и маҷҳул-муаллиф<sup>8</sup> ва ғайра зикр шудааст.

Муаллифи китоби «ал-Бадъ ва-т-таърих» Мутаҳҳар ибни Тоҳири Мақдисӣ (асри X) дар се маврид аз «Ибни Чаҳм» ёдовар шуда 19 байтеро аз ӯ иқтибос овардааст, ки ҳамагӣ дар мавзӯи таърих иншо шудааст. Чунин ба назар мерасад, ки Ибни Чаҳми мазкур таърихномае манзум дошта ва дар он баёни таърих аз офариниши Одаму Ҳавво сар шуда, бо сукути Сосониён ба интиҳо мерасидааст. Пас, муаллифи ин абёт – Ибни Чаҳм кист? Манбаъҳои адабиву

---

<sup>1</sup>طبیری، محمد جریر. تاریخ الرسل و الملك. ج. ۱۳. - ص. ۵۷۹۵.

<sup>2</sup>ابن خلکان. وفيات الاعیان و انباء ابناء الزمان. ج. ۲. - ص. ۸۲-۸۳.

<sup>3</sup>محمدی، محمد. تاریخ و فرهنگ ایران در دوران انتقال از عصر ساسانی به عصر اسلامی. ج. ۴. - ص. ۱۶۲.

<sup>4</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. کتاب البیان و التبیین. ج. ۲. - ص. ۶۰۱.

<sup>5</sup>حمزه اصفهانی. سنی ملوک الارض و الانبیاء. تاریخ پیامبران و شاهان. - ص. ۷۰.

<sup>6</sup>قزوینی، محمد. مقدمه قدیم شاهنامه / هزاره فردوسی. تهران ۱۹۴۴، ص. ۱۲۳ - ۱۴۸.

<sup>7</sup>Балғамӣ. Таърихи Табарӣ. Дар ду ҷилд. Бо муқаддима ва тавзеҳоти М. Умаров ва Ф. Бобоев, ҷ. 1. – Техрон: «Замон», 1380/2001. – С. 4.

<sup>8</sup>مجل التواریخ و القصص. به تصحیح ملک الشعرا بهار. چاپ دوم. تهران (د. د). - ص. ۲۰.

таърихӣ дар бораи се «Ибни Чаҳм», ки дар асри IX зистаанд, иттилоъ медиҳанд. Яке аз ин се тан Абӯбакр Муҳаммад ибни Чаҳм – фақеҳи маъруфи мазҳаби моликӣ ва соҳиби таълифотест, ки дар «ал-Фихрист» зикр шудаанд<sup>1</sup>. Пайванди ин Ибни Чаҳм бо шеърӯ шоирӣ дар маъхазҳои шора нашудааст, аз ин рӯ, ӯ наметавонад муаллифи абёти мазкур бошад. «Ибни Чаҳм»-и дувум Алӣ ибни Чаҳм (804-863) – шоири номдори арабизабон аст, ки аҷдодаш аз ғурӯби Баҳрайн будаанд, вале ба Марв муҳоҷират карда, дар авоили ҳилофати Аббосиён ба Бағдод баргаштаанд<sup>2</sup>. Шафеии Кадканӣ, ки китоби «ал-Бадъ ва-т-таърих»-ро ба форсӣ тарҷума карда ва онро бо муқаддимаи муфассале ба чоп расонидааст, «Ибни Чаҳм»-и мазкур дар ин китобро Алӣ ибни Чаҳм доништа ва ашъори мавриди назарро низ ба ӯ нисбат додааст<sup>3</sup>, ҳарчанд ки ин абёт дар девони нашршудаи ӯ ба назар намерасанд. «Ибни Чаҳм»-и сеюм Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ – шоир ва мутарҷими «Худойнома» аст, ки ин ҷо сухан дар бораи ӯ меравад. Муҳаммад Қазвинӣ ва М.Н. Усмонов ашъори мазкур дар «ал-Бадъ ва-т-таърих»-ро на аз Алӣ ибни Чаҳм, балки аз ҳамин Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ доништаанд<sup>4</sup>.

Бо тавачҷуҳ ба он, ки Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ «Худойнома»-ро ба арабӣ нақл карда ва ин чиз шакку шубҳаеро эҷод намекунад, мансуб доништани абёти мазкур ба вай ба назармантиқитар менамояд. Вале дар ин маврид суоле метавонад матраҳ шавад, ки оё ӯ «Худойнома»-ро ба назм тарҷума карда буд, ҳамчунон ки Балозурӣ «Аҳди Ардашер»-ро ба назми арабӣ даровард? Он 19 байте, ки боқӣ мондааст, имкон намедихад, ки ба ин суол ҷавоби мусбат дода шавад. Агар «Худойнома»-и тарҷумакардаи Муҳаммад ибни Чаҳм манзум мебуд, муаллифони сарчашмаҳо ҳатман ба он ишора мекарданд, ҳамон тавр ки Ибни Надим ба назм тарҷума шудани «Аҳди Ардашер»-ро аз ҷониби Балозурӣ ва «Калила ва Димна», «Корномаи Анӯшервон» ва «Корномаи Ардашер»-ро аз ҷониби Абони Лоҳикӣ махсус таъкид кардааст<sup>5</sup>. Сониян, Ҷамзаи Исфаҳонӣ ва муаллифоне, ки дар пайравӣ аз ӯ номи мутарҷимони «Худойнома»-ро зикр кардаанд, китоби тарҷумакардаи Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакиро дар баробари тарҷумаҳои Ибни Муқаффаъ ва дигарон, ки дар мансур будани онҳо тардида нест, гузоштаанд ва бад-ин васила мансур будани онро низ таъйид кардаанд. Бино бар далелҳои мазкур метавон бар мансур будани «Худойнома» (Сияр

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۲۵۳.

<sup>2</sup>عمر، فروخ. تاریخ الادب العربی. ج. ۲. - ص. ۲۸۹.

<sup>3</sup>مقدسی، مطهر بن طاهر. آفرینش و تاریخ. در دو کتاب و شش مجلد. مقدمه، ترجمه و تعلیقات از محمد رضا شفیعی کدکنی. تهران، ۱۳۷۴. - ص. ۵۲۲.

<sup>4</sup>Османов М.Н. Сводь иранского героического эпоса («Худайнаме» и «Шахнаме») как источники «Шахнаме» Фирдоуси. - С. 162.

<sup>5</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۳۲، ۱۲۶.

мулук-ал-фурс)-и тарчумакардаи Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ ҳукм кард ва эҳтимол дод, ки ӯ, чун худ шоир буда, баъзе ҳаводиси таърихи ба назм дароварда, онро дар чо-чои тарчумаи хеш гунҷондааст.

**Ҳишом ибни Қосим** яке дигар аз мутарҷимони осори паҳлавӣ ба арабист, ки номаш дар «ал-Фихрист» омадааст<sup>1</sup>. Ҳамзаи Исфаконӣ номи ӯро бо нисбааш, яъне, Ҳишом ибни Қосими Исфаконӣ зикр карда ва унвони китобе, ки ӯ тарҷума ва ё таълиф кардааст, «Таърих мулук Банӣ Сосон» (Таърихи подшоҳони хонадони Сосониён) номидааст<sup>2</sup>. Аз унвони мазкур бармеояд, ки «Худойнома»-и ба арабӣ нақлкардаи Ҳишом ибни Қосим таърихи аҳди Сосониёнро дар бар мегирифтааст.

Яке аз мутарҷимони «Худойнома»-и паҳлавӣ будани Ҳишом ибни Қосими Исфаконӣ ба чуз аз осори Ҳамза ва Ибни Надим ҳамчунин дар «Муқаддимаи «Шоҳнома»-и Абӯмансурӣ<sup>3</sup>, «Осор-ул-боқия»-и Берунӣ<sup>4</sup> ва «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас»-и маҷхулулмуаллиф<sup>5</sup> таъкид шудааст. Дар қиёс бо замони зиндагии мутарҷимони дигари «Худойнома» метавон ҳадс зад, ки ӯ дар нимаи дувуми асри VIII – аввали асри IX зистааст.

**Мӯсо ибни Исои Қисравӣ** яке аз мутарҷимони осори паҳлавӣ ба забони арабист, ки доир ба рӯзгор ва осораи дар сарчашмаҳои куҳан дар қиёс бо мутарҷимони дигар маълумоти бештар зикр шудааст. Бино ба ахбори Ҳамзаи Исфаконӣ, ки дар таърихномаи хеш «Синий мулук-ал-арз ва-л-анбиё» поре аз китоби Мӯсо ибни Исои Қисравиро иқтибос кардаву шарҳ додааст, Қисравӣ чанде аз нусхаҳои «Худойнома»-ро бо ҳам муқобалаву муқояса карда ва дидааст, ки ҳамаи онҳо бо ҳамдигар ихтилоф доштаанд ва ду нусхаи мутобиқ бо ҳамдигарро наёфтааст. Ӯ ин ихтилофотро натиҷаи тарҷумаи ин китоб аз як забон ба забони дигар дониста ва барои ислоҳи он дар Мароға бо донишманди илми нучум Ҳасан ибни Алии Ҳамадонӣ дар ҳузур ҳокими шаҳри Мароға Ало ибни Аҳмад мулоқот кардааст. Дар натиҷа Қисравӣ, ба иддиои худ ӯ, хатоҳоеро, ки дар нусхаҳои «Худойнома» дар солҳои салтанати Сосониён рафтааст, дар китобаш ислоҳ кардааст<sup>6</sup>. Ҳамзаи Исфаконӣ баъди иқтибоси ин пора аз гуфтаҳои Қисравӣ навиштааст, ки «иддиои Қисравӣ дар мавриди сикҳати санавоти Сосониён нодуруст аст ва бо баёни таърихи

<sup>1</sup> گرگانى، فخر الدين. ويس و رامن. - ص. ۳۰۵.

<sup>2</sup> حمزه اصفهاني. سنى ملوك الارض و الانبياء. تاريخ پیامبران و شاهان. - ص. ۷۰.

<sup>3</sup> قزوینی، محمد. مقدمه قدیم شاهنامه / هزاره فردوسی. - ص. ۱۴۱-۱۴۲.

<sup>4</sup> Берунӣ, Абӯрайхон. Осор ул-боқия. - С. -124.

<sup>5</sup> مجمل التواريخ و القصص. به تصحيح ملك الشعرا بهار. - ص. ۲۰.

<sup>6</sup> حمزه اصفهاني. سنى ملوك الارض و الانبياء. تاريخ پیامبران و شاهان. - ص. ۱۳۰.

Искандар созгор нест, зеро дар шархе, ки дода, шумораи солхоро ба 692 солу 9 рӯз расонида, ҳол он ки солҳое, ки ман аз зич истихроҷ кардаам, бо солҳои истихроҷкардаи Кисравӣ 90 солу 9 моҳу 10 рӯз фарқ дорад»<sup>1</sup>.

Иқтибоси Ҳамза аз навиштаҳои Кисравӣ ва шарҳи Ҳамза бар онҳо барои таъйини замони зиндагии Кисравӣ ва хусусиятҳои китоби ӯ аз чанд ҷиҳат муҳим аст. Нахуст, ин иқтибос яке аз мутарҷимони «Худойнома» будани Кисравиро ба субут мерасонад. Сониян, аз ишораҳои худӣ Кисравӣ бармеояд, ки китоби ӯ тарҷумаи ҳарф ба ҳарфи «Худойнома» набуда, балки тарҷумаи озоди он бо ворид кардани ислоҳот ва тағйиру иловаҳо ва ё таълифе мустақил бар асоси «Худойнома» будааст. Севум, китобе, ки Кисравӣ тарҷума ва ё таълиф кардааст, фарогири таърихи даврони салтанати Сосониён будааст. Чаҳорум, аз ишораи Кисравӣ ба мулоқоти ӯ бо ҳокими шаҳри Мароға Ало ибни Аҳмад бармеояд, ки ин мулоқот имкон дошт дар соли 251-252 / 865-866 сурат гирифта бошад, зеро маҳз дар ҳамин солҳо Ало ибни Аҳмад дар таърихномаҳо ба ҳайси ҳокими Озарбойҷон муаррифӣ шуда ва санаи қатлаш соли 260/873 таъйин шудааст<sup>2</sup>. Пас, аён аст, ки Мӯсо ибни Исои Кисравӣ дар миёнаҳои қарни IX зиндагӣ ва эҷод кардааст.

Ба ҷуз аз таърихномаи Ҳамза, номи Кисравӣ ва ривоёт аз ӯ доир ба таърих ва суннатҳои фарҳангии Эронзамин дар китоби «ал-Маҳосин ва-л-аздод»-и Қоҳиз дар се маврид нақл шудаанд<sup>3</sup>, ки имкон медиҳанд санаи тарҷумаи «Худойнома» аз ҷониби Кисравӣ таъйин гардад. Муаллифи «ал-Маҳосин ва-л-аздод» Қоҳиз соли 255/869 аз олам гузаштааст ва китоби мазкурашро дар охири умраш таълиф кардааст. Пас, китоби Кисравӣ бояд то ин сана ва пас аз соли 252/866, ки Кисравӣ бо ҳокими Мароға мулоқот карда буд, ба арабӣ нақл шуда бошад. Аз ин рӯ, эҳтимол меравад, ки Кисравӣ тарҷумаи «Худойнома»-ро соли 253/867 ба охир расонидааст.

Муаллифи маҷҳули «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» низ Мӯсо ибни Исои Кисравиро дар чанд маврид зикр кардааст. Гузашта аз ин, ӯ ба қиссаи шоҳи сосонӣ Балаш ва духтари шоҳи Ҳинд, ки онро Қоҳиз аз қавли Кисравӣ нақл карда буд, ишора намуда ва таъкид кардааст, ки ин қиссаро дар «Сияр-ул-мулук» хондааст<sup>4</sup>.

Дар «Осор-ул-боқия»-и Абӯрайҳони Берунӣ низ матлабе дар бораи Меҳргон ва сабаби ин рӯзро «Мурон» номидани эронӣ аз

---

<sup>1</sup> حمزه اصفهانی. سنی ملوک الارض و الانبیاء. تاریخ پیامبران و شاهان. - ص. ۱۸.

<sup>2</sup> تقی زاده. شاهنامه فردوسی. / هزاره فردوسی. تهران ۱۹۴۴. - ص. ۳۳.

<sup>3</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. المحاسن و الاضداد. قدم له و راجعه عاصمیتانی، بیروت، دار احیاء العلوم، ۱۴۱۹ / ۱۹۹۹. - ص. ۴۱، ۱۶۲.

<sup>4</sup> مجمل التواریخ و القصص. به تصحیح ملک الشعراء بهار. - ص. ۷۲.

қавли Кисравӣ нақл шудааст<sup>1</sup>. Таваҷҷуҳи Ҷоҳиз ва Берунӣ ба ахбори Кисравӣ дар бораи Наврӯзу Меҳргон бесабаб набуд, зеро Кисравӣ китобе бо номи «Найрӯз ва Меҳраҷон» таълиф кардааст, ки он дар «Таърихи Табаристон»-и Ибни Исфандёр омадааст. Аз ишораи муаллифи «Таърихи Табаристон» пайдост, ки Кисравӣ дар китоби худ қиссаи Беварасп - Заҳҳокро оварда будааст. Ибни Исфандёр навиштааст, ки ин қисса «чун аз ақл дур аст ва аз ахбори асҳоби шариат манқул нест, тарк кардам, то хонандагон бар тақозиб ҳама накунанд»<sup>2</sup>.

Ибни Надим дар шарҳи ҳоли мухтасар аз Кисравӣ ду китоби ин нависанда ва мутарҷими эронинаҷодро зикр кардааст. Китоби аввал «Хубб-ул-автон» (Муҳаббат ба ватан) ном дорад. М.Муҳаммадӣ номи онро дар шакли «ал-Ҳанин ила-л-автон» зикр карда, таъкид намудааст, ки нусхаи дастнависи он дар китобхонаи Истанбул маҳфуз аст<sup>3</sup>.

Китоби дувуме, ки ба номи ӯ зикр шудааст, «Китоб муноқазоти ман заъама аннаҳу ло янбағи ан яқтади ал-қузоту фи матоъимиҳим би-л-аиммати ва-л-хулафо» (Ихтилофоти онҳое, ки мегӯянд қозийён набояд дар хӯрданиҳои худ ба имомон ва халифагон пайравӣ кунанд) ном дорад<sup>4</sup>. Ибни Надим ин китобро зимни муаллафоти Кисравии дигар, яъне, Алӣ ибни Маҳдӣ низ оварда ва гуфтааст, ки он ба Кисравии Котиб, яъне, Мӯсо ибни Исо нисбат дода шудааст<sup>5</sup>. Аз ин бармеояд, ки мансубияти китоби мазкур ба яке аз ин ду Кисравӣбарои худ Ибни Надим низ норавшанмондааст, вагарна, ӯ онро зимни шарҳи ҳоли ҳар ду нависанда зикр намекард.

Ҳамин тариқ, фаъолияти тарҷумонӣ ва адабии Мӯсо ибни Исои Кисравӣ, ки дар миёнаҳои қарни IX ҷараён дошт, далел бар он аст, ки ӯ бо гароиш ва дилбастагӣ ба осор ва суннатҳои тамаддуни тоисломии халқҳои эронӣ дар ҳифзу эҳёи мероси маънавии ниёгонаш саҳми бориз гузоштааст.

**Зодуя ибни Шоҳуяи Исфаҳонӣ** яке аз мутарҷимони осори паҳлавӣ ба арабӣ аст, ки зикраш дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим омадааст<sup>6</sup>. Ҳамзаи Исфаҳонӣ номи Зодуя ибни Шоҳуяро дар шумори мутарҷимони «Худойнома» баршумурда ва тарҷумаи ӯро «Сияр

---

<sup>1</sup>Берунӣ, Абӯрайҳон. Осор ул-боқия.-С.-243.

<sup>2</sup>ابن اسفنديار. تاريخ طبرستان. بتصحيح عباس اقبال آشتياني. تهران، كلاله خاور، ۱۳۶۶. - ص. ۸۳.

<sup>3</sup>محمدی، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساساني به عصر اسلامي. ج. ۴. - ص. ۱۶۴.

<sup>4</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۴۲.

<sup>5</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۶۷.

<sup>6</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

мулук-ал-фурс» номидааст<sup>1</sup>. В.Р.Розен бо таваччуҳ ба вожаи «нақл», ки Ҳамза дар шарҳи кори Зодуя дар баргардони «Худойнома» истифода кардааст, бар он ақида аст, ки Зодуя мисли Ибни Муқаффаъ ва Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ матни «Худойнома»-ро ҳамон тавр, ки буд, бидуни илова, ислоҳ ва ё тағйири матн ба арабӣ даровардааст<sup>2</sup>.

Китоби тарҷумакардаи Зодуя ибни Шоҳуя ҳамчунин дар «Муқаддимаи «Шоҳнома»-и Абӯмансурӣ<sup>3</sup>, тарҷумаи «Таърихи Табарӣ»-и Балъамӣ<sup>4</sup> ва «Мучмал ут-таворих ва-л-қисас»<sup>5</sup> зикр шудааст.

Дар маъхазҳои куҳан ба қалами Зодуя ибни Шоҳуя ба чуз тарҷумаи «Худойнома» таълифи китобе доир ба чашнҳо ва идҳои қадимаи эронӣ мансуб доништа шуда ва Абӯрайҳони Берунӣ дар «Осор ул-боқия»-и хеш дар се маврид аз он матолиберо роҷеъ ба рӯзу моҳҳои эронӣ қадим, чашни Наврӯз ва моҳи «Шаҳревар»-у рӯзи «Озарчашн» нақл кардааст<sup>6</sup>. Мутаассифона, доир ба замони зиндагӣ ва фаъолияти эҷодии Зодуя ибни Шоҳуяи Исфаҳонӣ маълумоте дар сарчашмаҳо зикр нашудааст. К.Брокелман ўро мисли аксари мутарҷимони «Худойнома» ҳамасри Ибни Муқаффаъ номидааст<sup>7</sup>. Ба ҳар оӣин, замони зиндагии Зодуя ибни Шоҳуяро нимаи дувуми асри VIII-аввали асри IX, ки давраи авҷи наҳзати тарҷумаи осори паҳлавӣ ба арабӣ буд, таъйин кардан аз савоб дур нахоҳад буд.

**Муҳаммад ибни Баҳром ибни Матери Исфаҳонӣ.** Ибни Надим дар «ал-Фихрист» Муҳаммад ибни Баҳром ибни Матери Исфаҳониро яке аз мутарҷимони осори паҳлавӣ ба арабӣ муаррифӣ кардааст<sup>8</sup>. Аз ахбори Ҳамзаи Исфаҳонӣ бармеояд, ки Муҳаммад ибни Баҳром «Худойнома»-ро ба арабӣ таҳти унвони «Сияр мулук-ал-фурс» баргардондааст<sup>9</sup>. Ҳамза баргардони ўро бо таъбири «тарҷума ё таълиф» тавзеҳ додааст. Бино бар ин, В.Р.Розен дуруст ҳаде задааст, ки Муҳаммад ибни Баҳром дар баргардони «Худойнома» аз пайи тарҷумаи ҳарф ба ҳарфи матни паҳлавии китоб нарафта, ба он

---

<sup>1</sup> حمزه اصفهانی. سنی ملوك الارض و الانبياء. تاريخ پیامبران و شاهان. - ص. ۷۰.

<sup>2</sup> Розен В.Р. К вопросу об арабских переводах «Худай-нама». - С.183.

<sup>3</sup> قزوینی، محمد. مقدمه قدیم شاهنامه / هزاره فردوسی. - ص. ۱۴۱-۱۴۲.

<sup>4</sup> Балъамӣ. Таърихи Табарӣ. - С.4.

<sup>5</sup> مجمل التواریخ و القصص. به تصحیح ملك الشعرا بهار. - ص. ۲۰.

<sup>6</sup> Берунӣ, Абӯрайҳон. Осор ул-боқия. - С.66, 235, 241.

<sup>7</sup> بروكلمان، كارل. تاريخ الادب العربی. ج. ۱. - ۳. الطبعة الثانية، دار المعارف بمصر، ۱۹۶۹. ج. ۳. - ص. ۴۳.

<sup>8</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

<sup>9</sup> حمزه اصفهانی. سنی ملوك الارض و الانبياء. تاريخ پیامبران و شاهان. - ص. ۷۰.

иловаҳое ворид кардааст<sup>1</sup>. Муаллифи «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» низ аз Муҳаммад ибни Баҳром ба ҳайси мутарчими «Худойнома» ёд кардааст<sup>2</sup>.

Дар сарчашмаҳо маълумоте доир ба замони зиндагӣ ва шарҳи ҳоли Муҳаммад ибни Баҳром ибни Матёри Исфаконӣ ба назар намерасад. Ба ҳадси М.Муҳаммадӣ, имкон дорад, ки мутарчими мазкур аз хонадони Матёр ном деҳқони Исфакон бархоста бошад. Қиссаи Матёр, ки дар солҳои нахусти истилои араб дар Исфакон бо гурӯҳи истилогарони араб задухӯрде дошт, дар «Таърих»-и Табарӣ нақл шудааст<sup>3</sup>.

**Баҳром ибни Мардоншоҳ.** Ибни Надим дар «ал-Фихрист» дар радифи мутарчимон аз форсӣ ба арабӣ аз Баҳром ибни Мардоншоҳ - «мӯбади шаҳри Нишопур аз билоди Форс» ёд кардааст<sup>4</sup>. Аён аст, ки дар ин иборат «Нишопур» таҳрифе аз «Шопур» аст, зеро шаҳре, ки дар билоди Форс мавқеъ дорад, «Шопур» аст, на «Нишопур». Ҳамзаи Исфаконӣ номи китоби ӯро бад-ин тарз сабт кардааст: «Таърихи мулуки Банӣ Сосон», ислоҳи Баҳром ибни Мардоншоҳ - мӯбади шаҳри Шопур аз билоди Форс<sup>5</sup>.

Дар муаррифии Ҳамзаи Исфаконӣ аз китоби Баҳром ибни Мардоншоҳ ду чиз таваҷҷуҳро ба худ ҷалб мекунад. Якум, аз унвони китоби мӯбади шаҳри Шопур бармеояд, ки он ба таърихи подшоҳони хонадони Сосониён ихтисос ёфта будааст. Дувум, Ҳамза китобимазкурро на тарҷума, балки «ислоҳ»-и Баҳром ибни Мардоншоҳ хонда ва аз ин иборат бармеояд, ки «Таърих мулук Банӣ Сосон»-и Баҳром ибни Мардоншоҳ тарҷумаи мустақим аз «Худойнома»-и паҳлавӣ набуда, балки баргардони он китоб бо тағйири ислоҳи матни аслист.

Бар мабнои далел ва санадҳои мавҷуда метавон ҳадс зад, ки китоби Баҳром ибни Мардоншоҳ танҳо ба таърихи шоҳони сосонӣ ихтисос надошта, он воқеан ҳам таърихи тамоми подшоҳони эронӣ аз оғоз то истилои араб буда ва «Таърихи подшоҳон» номгузорӣ шудани он дар китоби «Мучмал-ут-таворих» бесабаб набудааст. Ҳамзаи Исфаконӣ ягона муаллифест, ки номи китоби Баҳроми мӯбадро «Таърихи подшоҳони сосонӣ» номида ва зоҳиран ин иштибоҳест, ки аз ӯ ё носихони баъдӣ сар задааст. Номи Баҳром ибни Мардоншоҳ дар муқаддимаи «Шоҳнома»-и Абӯмансурӣ<sup>6</sup> ва «ал-

<sup>1</sup>Розен В.Р.К вопросу об арабских переводах «Худай-нама». -С.184-185.

<sup>2</sup>مجمّل التوارىخ و القصص. به تصحىح ملك الشعرا بهار. - ص. ۲.  
<sup>3</sup>محمّدى، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساسانى به عصر اسلامى. ج. ۴. - ص. ۱۶۶.

<sup>4</sup>الندىم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.  
<sup>5</sup>حمزه اصفهانى. سنى ملوك الارض و الانبىاء. تاريخ پیامبران و شاهان. - ص. ۷.

<sup>6</sup>قزوینى، محمد. مقدمه قدیم شاهنامه / هزاره فردوسى. - ص. ۱۴۱.



Осор-ул-бокия»-и Берунӣ<sup>1</sup> низ бидуни таъйини унвони китобаш зикр шудааст.

Дар бораи замони зиндагӣ ва шарҳи ҳоли Баҳром ибни Мардоншоҳ иттилоъе дар даст нест. М.Муҳаммадӣ тахмин кардааст, ки шояд ӯ писари Мардоншоҳ писари Зодонфаррух бошад, ки ҳар ду аз дабирони номвари аҳди Умавиён маҳсуб мешаванд ва алоқаи онҳо ба адабу фарҳанги тоисломии эронӣ дар манбаъҳо ба қайд омадааст<sup>2</sup>. Ин ҳадс воқеан наздик ба ҳақиқат аст. Бо пазируфтани он метавон иқрор кард, ки Баҳром ибни Мардоншоҳ дар нимаи дувуми асри VIII зиста ва ба баргاردони «Худойнома» иштиғол варзида будааст.

**Умар ибни Фаррухон** яке аз мутарҷимони осори паҳлавӣ ба забони арабӣ ва дар айни замон аз донишмандони маъруфи илми нучум ва фалсафа дар охири асри VIII ва аввалҳои асри IX ба шумор меояд. Қифтӣ дар «Таърих-ул-хукамо»-и хеш шарҳи ҳоли мухтасари ӯ ва унвони китобҳои зикр карда, вайро «яке аз руасои мутарҷимон ва муҳаққикон дар илми ҳаракоти нучум ва аҳкоми он» номидааст<sup>3</sup>. Ибни Соиди Андалусӣ ба суҳанони Абӯмаъшари Балхӣ истинод кардааст, ки ӯ Умар ибни Фаррухонро яке аз чаҳор нафар олимони машҳури нучум дар баробари Ҳунайн ибни Исҳоқ, Яъқуб ибни Исҳоқи Киндӣ ва Собит ибни Курраи Ҳарронӣ ба ҳисоб овардааст<sup>4</sup>.

Ибни Надим низ Умар ибни Фаррухонро дар «ал-Фихрист» дар бахшҳои мутарҷимон ва мунаҷҷимон зикр карда ва бо баршумурдани китуби ӯ дар илми нучум ва фалсафа шухраташро дар ин соҳа таъйид кардааст<sup>5</sup>. Аз манбаъҳои мазкур бармеояд, ки номи комили ин мутарҷим ва донишманди маъруфи эронитабор Абӯхафс Умар ибни Ҳафс ал-Фаррухон ат-Табарӣ аст ва нисбааш далолат бар он дорад, ки вай аз Табаристон бархостааст. Ӯ бо хонадони маъруфи эронии Бармакиён, хосса тан бо Ҷаъфари Бармакӣ алоқаи наздик дошт ва барои онҳо китобҳоеро дар илми нучум ва фалсафа тарҷума мекард. Пас аз кушта шудани Бармакиён дар соли 803 Умар ибни Фаррухон зоҳиран ба зодгоҳаш - Табаристон баргаштааст. Бино ба навиштаи Қифтӣ ба нақл аз Абӯмаъшари Балхӣ, вазири эронитабор ва эронигарои Маъмун – Фазл ибни Саҳли Зурриёсатайн ӯро аз Табаристон бозпас хонда, ба хидмати Маъмун гумошт<sup>6</sup>.

<sup>1</sup>Берунӣ, Абӯрайҳон. Осор ул-бокия.-С.124.

<sup>2</sup>محمدى، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساسانى به عصر اسلامى. ج. ۴. - ص. ۱۶۸.

<sup>3</sup>ابن القفطى. تاريخ الحكماء. - ص. ۲۴.

<sup>4</sup>محمدى، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساسانى به عصر اسلامى. ج. ۴. - ص. ۱۷۰.

<sup>5</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۲۲، ۳۰۵.

<sup>6</sup>ابن القفطى. تاريخ الحكماء. - ص. ۲۴۲.

Аз ишороте, ки дар сарчашмаҳо ба осори Умар ибни Фаррухон рафтааст, метавон се самти фаъолияти ӯро ташхис дод. Самти аввал тафсири осори нучумӣ ва фалсафии донишмандони Юнони қадим аст. Бино ба ишораи Ибни Надим, Умар ибни Фаррухон китобҳои нучумии Зурусиус (Дорофей Сидоний) ва «Китоб-ул-арбаъа»-и Батлимус (Птоломей)-ро дар тарҷумаи дигарон мавриди тафсир қарор додааст<sup>1</sup>. Самти дигари фаъолияти Умар ибни Фаррухон таълифи осори нучумист. Ибни Надим яке аз чунин китобҳои ӯро бо номи «Иттифоқ-ул-фалосифа ва ихтилофуҳум фӣ хутут-ал-кавокиб» зикр кардааст<sup>2</sup>. Дар манбаҳои арабизабон ба қалами ӯ ҳамчунин китобҳои «Чавомеъ-ул-асрор фӣ илм-ин-нучум», «Мухтасар Мадхал ал-Қайсаронӣ фӣ аҳком-ин-нучум» ва чанд рисолаи дигар мансуб доништа шудааст<sup>3</sup>. Самти сеуми фаъолияти Умар ибни Фаррухон иборат аз тарҷумаи осори тоисломии эронӣ ба забони арабист. Шакке нест, ки ӯ китобу расоили нучумии паҳлавиро ба забони арабӣ даровардааст. Халифа Маъмун ва хонадони Бармакиён ба ин гуна китобҳо рағбат дошанд ва Умар ибни Фаррухон, ки дар хидмати онҳо буд, тарҷумаҳои аз ин навъ барояшон пешкаш мекард. Фузун бар ин, Фазл ибни Саҳли вазир, ки яке аз ҳомиёни Умар ибни Фаррухон буд, худ аз илми нучум баҳраи вофир дошт ва табиист, ки Умарро низ ба тарҷумаву таълифи осори нучумӣ ташчеъ мекард.

Аз ин ҷост, ки Ибни Надим номи Умар ибни Фаррухонро дар шумори асоситарин мутарҷимон аз паҳлавӣ ба арабӣ зикр кардааст<sup>4</sup>. Ба ақидаи К.А.Иностранцев, номи Умар ибни Фаррухон дар «ал-Фихрист» танҳо ба хотири тарҷумаи осори нучумӣ наомадааст, балки тарҷумаи навъи дигаре аз осори тоисломии эронӣ ба ин чиз сабаб шудааст. Ин навъи осор, ба таъйини ӯ, китобҳои адабиву ахлоқии тоисломист, ки дар онҳо хислатҳои нек ва манишҳои писандида дар баробари сифатҳои мазмум ва равишҳои бад баён мешуданд. Ин навъ китобҳо дар адабиёти тоисломии эронӣ бо унвони «Шойист-нашойист» маълуманд. К.А.Иностранцев муътақид аст, ки «Китоб-ул-маҳосин», ки дар радифи асарҳои Умар ибни Фаррухон дарҷ гардидааст, тарҷумаи китобе аз ҳамон навъи китобҳои тоисломии эронӣ аст<sup>5</sup>. Пас аз Умар ибни Фаррухон дар насри арабизабон таълифи китобҳо таҳти унвони «ал-Маҳосин ва-л-аздод» ва «ал-Маҳосин ва-л-масовӣ» ба ҳукми анъана даромад. Одатан дар ин қабил китобҳо матолиби эронӣ ба касрат ба назар мерасанд ва ин худ гувоҳбар решаҳои эронии ин навъ осори адабиву ахлоқист. Ба пиндори К.А.Иностранцев, Умар ибни Фаррухон бо тарҷумаи китобе

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۲۸.

<sup>2</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۳۲.

<sup>3</sup>صفا، ذبیح الله. تاریخ ادبیات در ایران. ج. ۱. - ص. ۱۱۶.

<sup>4</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۰۵.

<sup>5</sup>Иностранцев К.А. Сасанидские этюды. - С. 34-38;

бо номи «Китоб-ул-маҳосин» боиси дар қаламрави насри арабизабон идома пайдо кардани суннатҳои навъи мазкури осори адабиву ахлоқии Эрони тоисломӣ гардид.

Фарзанди Умар ибни Фаррухон – Абӯбақр Муҳаммад ибни Умар низ аз паси падар рафта ва дар илми нучум аз уламои соҳибном будааст. Ибни Надим ўро «яке аз мунаҷҷимони бофазл» номида, унвони дувоздаҳ китобашро дар илми нучум зикр кардааст<sup>1</sup>.

**Салм – раиси «Байтулҳикма».** Номи Салм (ё Солим дар баъзе нусхаҳо) дар «ал-Фихрист» дар баҳши мутарҷимон аз форсӣ ба арабӣ ба қайд наомадааст, вале дар чанд ҷои дигар аз ин китоб ба ӯ ишора рафтааст. Аз ҷумла, дар баҳши нависандагон, хатибон, дабирони девони хироч ва номанигорон дар бораи Салм чуниномадааст: «Салм – ҳамраиси «Байт-ул-ҳикма» бо Саҳл ибни Ҳорун. Ва ўро тарҷумаҳо аз форсӣ ба арабист»<sup>2</sup>. Аз ин ишораи Ибни Надим бармеояд, ки Салм ҳамроҳ бо Саҳл ибни Ҳоруни Даштимешонӣ (758-830), ки шарҳи ҳоли ӯ дар бобибаъдии ин китоб баён хоҳад шуд, «Байт-ул-ҳикма»-росарварӣ мекардааст. Чунон ки қаблан зикр шуд, «Байт-ул-ҳикма» дар замони Ҳорунаррашид ба ҳайси китобхона таъсис гардид ва баъдан дар замони Маъмун бо тавсиаи фаъолияти худ ба маркази тарҷума, таҳқиқ ва таълиф табдил ёфт. Азраёсати «Байт-ул-ҳикма»-ро ба уҳда доштани Салм ва бо Саҳл ибни Ҳорун ҳамзамон будани ӯ метавон истинбот кард, ки фаъолияти ӯ дар охири асри VIII – аввали асри IX ҷараён доштааст. «Байт-ул-ҳикма» голибан ҷои таҷаммуи нависандагони эронитабор ва эронигарой буд, ки ботарҷумаи осори фарҳангии Эронзамини тоисломӣ иштиғол меварзиданд. Бино бар ин, тарҷумаҳои аз форсӣ доштани Салм, ки ба он Ибни Надим ишора карда, вале аз зикри унвони онҳо худдорӣ кардааст, табиӣ ба назар менамояд.

Ибни Надим дар шарҳи ҳоли Батлимус ва муаррифии китоби ӯ – «ал-Мачистӣ» навиштааст, ки «ин китоб аз сиздаҳ мақола иборат аст ва аввалин касе, ки ба тафсир ва тарҷумаи он ба арабӣ ҳиммат гумошт, Яҳё ибни Холиди Бармакист. Гурӯҳе он китобро барои вай тафсир карданд, вале аз уҳдааш барнаоманданд ва ўро писанд наафтанд. Пас ӯ ин корро ба Абӯҳасан ва Салм – сарвари «Байт-ул-ҳикма» супорид. Эшон ин супоришро ба хубӣ иҷро карданд. Онон ба ин кор мутарҷимони варзидаро ҷалб карданд ва сипас тарҷумаҳои онҳоро санҷиданд ва фасехтарину саҳехтарини онҳоро баргузиданд ва дар тасхеҳи он кӯшиши фаровон ба кор бурданд»<sup>3</sup>.

Аз иқтибоси мазкур бармеояд, ки Салм дар илми нучум ва риёзиёт дониши фарох доштааст, вагарна, тасхеҳи китоби «ал-Мачистӣ» бад-он хубӣ, ки Ибни Надим зикр кардааст, барояш

---

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۳۳.

<sup>2</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۳۴.

<sup>3</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۲۷.

муяссар намешуд. Зохиран Салм дар баробари табаххур дарзабони арабӣ юнониро низ медонистааст. Ба ин амр на танҳо тасҳеҳи тарҷумаи китоби мазкури Батлимуc, балки ирсоли ӯ аз ҷониби Маъмун ба Рум низ далолат мекунад. Ибни Надим дар ин хусус навиштааст, ки Маъмун ба малики Рум нома навишт ва барои баҳрабардорӣ аз донишҳои пешиниён, ки дар кишвари Рум маҳфуз буд, иҷозат хост. Малики Рум пас аз чанде худдорӣ ин хоҳишро пазируфт. Маъмун ҷамоатеро аз олимони маъруфи Бағдод ба Рум фиристод, ки Салм низ миёни онҳо буд. Эшон баргузидаи донишҳо ва китобҳоеро, ки пайдо карданд, ба Бағдод оварданд ва ба амри Маъмун ба тарҷумаи онҳо пардохтанд<sup>1</sup>.

Бино ба ишорае, ки дар поёни нухаи тарҷумаи арабии китоби «Мантик»-и Арасту омадааст, Салмпас аз Ибни Муқаффаъ ин асари Арастуро барои Яҳё ибни Холиди Бармакӣ тарҷума кардааст. Дар ҳамин нуха номи Салм бо нисбаи ӯ - «Харронӣ» омадааст<sup>2</sup>. Дар қиёс бо он, ки Ибни Муқаффаъ китоби «Мантик»-ро аз форсӣ тарҷума кардааст, метавон тахмин кард, ки Салм низ ин китобро аз тарҷумаи паҳлавии он ба арабӣ даровардааст.

Фаъолияти тарҷумонии Салм мунҷасир ба нақли китобҳои нуҷумӣ ва фалсафӣ набуда, балки тарҷумаи китобҳои адабиву ахлоқии паҳлавиро низ фаро гирифтааст. Бо ишора ба ин ҷанбаи фаъолияти Салм, Ибни Надим навиштааст, ки «нависандагоне, аз қабиле Ибни Муқаффаъ, Саҳл ибни Ҳорун ва Салм – сарвари «Байтул-ул-ҳикма» аз китоби «Калила ва Димна» маҷмӯаҳо ва баргузидаҳои фароҳам овардаанд»<sup>3</sup>.

Манбаҳои таърихиву адабӣ аз аслу насаб ва рӯзгору хонадони Салм маълумоте зикр накардаанд. Эронитабор будани Салм тардидеро эҷод намекунад, хосса тан, ки вайро Ибни Надим соҳиби тарҷумаҳо аз форсӣ номида ва алоқаашро бо хонадони Бармакиён таъкид кардааст. Дар муаррифии Салм сарчашмаҳои куҳан аксаран таъбири «раиси Байтулҳикма»-ро ба қор гирифтаанд. Ин худ гувоҳ бар он аст, ки фаъолияти ӯ асосан дар доираи ҳамин маркази тарҷумаву таҳқиқ ва таълиф ҷараён доштааст.

**Фазл ибни Саҳл**вазир халифаи аббосӣ Маъмун (813-833) ва бародари Ҳасан ибни Саҳл аст. Падари Фазл ва Ҳасан – Саҳл ибни Зодонфаррух аз ғумоштагони хонадони Бармакиён ба шумор меомад ва бо даъвати онҳо дар даврони хилофати Маҳдӣ (775-784) ба ислом гаравида буд. Ӯ писарони худро низ водошт, ки ба хидмати Бармакиён рӯй оваранд. Бо ишора ба ин матлаб Ҷаҳшиёрнигоштааст: «Фазл ибни Саҳл рисолае аз форсӣ ба арабӣ барои Яҳё ибни Холиди Бармакӣ тарҷума намуд. Яҳё аз дуруст фаҳмидани матн ва зебо пардохтани тарҷумаи Фазл ба шигифт

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۰۴.

<sup>2</sup>ابن المقفع، عبدالله. المنطيق. ابن بهريز، حدود المنطق. - ص. ۷۸.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

омад»<sup>1</sup>. Пас аз ин Яхё ба воситаи писараш – Чаъфар, ки вазири Ҳорунаррашид буд, Фазлро ба Маъмун – халифаи оянда муаррифӣ кард. Фазл ба дасти Маъмун ислом овард. Бино ба навиштаи Чаҳшиёрӣ, ба ислом гаравидани Фазл то кушта шудани Бармакиён дар соли 803 сурат гирифтааст<sup>2</sup>. Вале Ибни Халликон санаи ислом овардани Фазлро ба дасти Маъмун соли 190/805, яъне баъди қатли Бармакиён таъйин кардааст<sup>3</sup>. Ба ҳар оин, Фазл ибни Саҳл, мисли падар ва бародараш, навмусулмон буда ва то дер дар кеши зардуштии ниёғони хеш боқӣ мондааст. Пас аз фочиаи Бармакиён Фазл ба хидмати Маъмун пайваст ва дар замони Хилофати ӯ мақоми вазириро соҳиб гашт. Бино ба ахбори сарчашмаҳо, Фазл дар ин мансаб то ба дараҷае мақом ва нуфуз пайдо кардааст, ки бар Маъмун чира гашта, ӯро ба танг овардааст. Маъмун, ҳамчунон ки падараш - Ҳорунаррашид Бармакиёнро ночавонмардона ба қатл расонида буд, нисбат ба Фазл ибни Саҳл низ ночавонмарди ро раво дошт ва ӯро ба дасти гумоштаҳои худ дар Сараҳс – зодгоҳи Фазл дар ҳаммом ба қатл расонид. Қатли ӯро Ибни Халликон соли 202/817 ва синнашро 48 ва ба қавле 41 таъйин кардааст<sup>4</sup>. Табарӣ ҳодисаи қатли Фазл ибни Саҳлро бо тафсили бештаре ба қалам дода ва аз он бармеояд, ки Фазл дар синни 60-солагӣ ба қатл расидааст<sup>5</sup>.

Аз шарҳи ҳоли Фазл ибни Саҳл, ки Ибни Халликон дар «Вафаёт-ул-аён»-и хеш овардааст, пайдост, ки ӯ аз илми нучум ва аҳкоми он баҳраи вофир дошта ва дар пешгӯиҳои хеш соиб будааст. Фазлхатто фарҷоми зиндагии худро низ бар асоси аҳкоми нучум пешгӯӣ карда буд, ки он амри воқеъ гардидааст<sup>6</sup>.

Фазл ибни Саҳл дар насру назми арабизабон низ дасти тавоно дошт. Бад-ин вачҳ аст, ки Ибни Надим ӯро дар радифи нависандагон ва шоирон зикр ва таъкид кардааст, ки номаҳояш мудавван ва теъдодаш зиёд, вале ашъораш нисбатан кам аст<sup>7</sup>. Фазл ибни Саҳл ба хусни хат низ маъруф буда ва қаламеро ихтироъ кардааст, ки он, ба ишораи Ибни Надим, аз беҳтарин қаламҳо ва мавсум ба «ал-қалам-ар-риёсӣ» будааст<sup>8</sup>.

Фузун бар фазилатҳои мазкур, Фазл ибни Саҳл ба фарҳангу тамаддуни ниёғони хеш алоқаву рағбати шадид дошт ва онро бо ҳар роҳу шева эҳё ва посдорӣ мекард. Сарчашмаҳои адабиву таърихӣ дар бораи он, ки Фазл забони форсиро хуб медонист ва адабу ҳикмат ва

<sup>1</sup> الجھشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۲۹۳-۲۹۴.

<sup>2</sup> الجھشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۲۹۴.

<sup>3</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. ۴. - ص. ۴۱.

<sup>4</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. ۴. - ص. ۴۴.

<sup>5</sup> طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۱۳. - ص. ۵۶۷۱.

<sup>6</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. ۴. - ص. ۴۱.

<sup>7</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۶۰.

<sup>8</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۱.

панду ахлоқи тоисломии эрониро арчи бисёр мениҳод, санаду шоҳиди зиёд нақл кардаанд <sup>1</sup>.

Давраи зиндагии Фазл ибни Саҳл – авохири асри VIII – авоили асри IX давраи авчи тарҷумаи китобҳои нучумӣ, адабиву таърихӣ ва пандуахлоқии Эронзамини тоисломӣ буд. Бино бар ин, рисолае, ки, ба навиштаи Ҷаҳшиёрӣ, Фазл ибни Саҳл барои Яҳёи Бармакӣ аз форсӣ ба арабӣ тарҷума кард, метавонад дар яке аз ҳамин заминаҳо бошад.

**Ҷабал ибни Язид.** Номи Ҷабал ибни Язид ба ҳайси мутарҷим дар китоби «ал-Фихрист»-и Ибни Надим ба тарзи зер зикр шудааст: «Ҷабал ибни Язид – котиби Имора ибни Ҳамза аз мутарҷимон аст. ӯ аз маъдуди суҳанварон ва саромадони забонавар мебошад»<sup>2</sup>. Имора ибни Ҳамза, ки Ҷабал ибни Язид котиби ӯ хонда шудааст, аз адибони маъруфи арабизабон ва соҳиби таълифотимутааддид, аз ҷумла рисолаи машҳури «ал-Моҳония» аст. ӯ аз гумоштагони хулафои нахустини аббосӣ – Абулаббоси Саффоҳ (750-754), Мансур (754-775) ва Маҳдӣ (775-783) мебошад. Дар китоби «ал-Вузуро ва-л-кутуб»-и Ҷаҳшиёрӣ<sup>3</sup> ва «Муъҷам-ул-удабо»-и Ёқути Ҳамавӣ<sup>4</sup> таъкид шудааст, ки ӯ бо Абдуллоҳ ибни Мукаффаъ дӯсти наздик буд. Аз ин мадорик бармеояд, ки Ҷабал ибни Язид дар миёнаҳо ва нимаи дувуми асри VIII зистааст.

Ибни Надим ба ҷуз ишора ба мутарҷим будани Ҷабал ибни Язид номи вайро ҳамчунин дар миёни даҳ тан аз суҳанварони забардаст дар радифи Ибни Мукаффаъ, Абулалои Солим ва дигарон зикр кардааст<sup>5</sup>. Соҳиби «ал-Фихрист» аз баёни он, ки Ҷабал ибни Язид аз кадом забон ва кадом навъи осорро тарҷума кардааст, худдорӣ намудааст. Аз китоби «Ихтиёр-ал-манзум ва-л-мансур»-и Ибни Тайфур бармеояд, ки Ҷабал ибни Язид ду китоб дар «ойини бародарӣ» навишта будааст. Ибни Тайфур пораеро аз яке аз ин китобҳо нақл кардааст<sup>6</sup>.

Мавзӯи ойини бародарӣ аз мавзӯҳои маъмули китобҳои ахлоқии эронӣ ба шумор меравад. Қаблан ба номаи Абдулҳамиди Котиб дар «Васфи бародарӣ» ишора рафта буд. Пас аз Абдулҳамиддар насри арабизабони асрҳои VIII-IX таълифи китобҳои мустақил дар ин мавзӯ ба ҳукми анъана даромад. Матолибе, ки дар ин китобҳо баён шудааст, амалан идомаи мавзӯи мазкури осори ахлоқии паҳлавист, ки бо муҳит ва арзишҳои нави исломӣ ҳамоҳанг гардидааст.

Пас, ду китоби Ҷабал ибни Язид дар мавзӯи «ойини бародарӣ» низ, ба гумони наздик ба яқин, дар идомаи ҳамон суннати осори

<sup>1</sup> الحصرى، الفيروانى. زهر الآداب و ثمر الآداب. ج. ٤. - ص. ٩٥١-٩٥٢.

<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٣٢.

<sup>3</sup> الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ١٢٦.

<sup>4</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ١٥. - ص. ٢٤٢-٢٥٧.

<sup>5</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٣٩.

<sup>6</sup> صفوة، احمد زكى. جمهرة رسائل العرب. ج. ٣. - ص. ١٣٧.

ахлокии тоисломии эронӣ навишта шудаанд ва ё тарҷумаи мустақими он осор аз паҳлавӣ ба арабиянд.

**Хизр ибни Алӣ** аз мутарҷимони осори паҳлавӣ ба арабист, ки зикре аз онҳо дар китобҳои ғайр аз «ал-Фихрист» омадааст. Қаблан дар шарҳи ҳоли Ҳасан ибни Саҳл ишора рафт, ки ӯ шарики Ҳасан ибни Саҳл дар баргардони «Ҷовидон хирад» аст. Мисқвайҳи Розӣ дар қиссаи тарҷумаи «Ҷовидон хирад» ба нақл аз Ҳасан ибни Саҳл овардааст, ки ӯ, яъне, Ҳасан бо амри Маъмун ба тарҷумаи «Ҷовидон хирад» пардохтааст. Ӯ баргҳои алоҳидаи ин китобро, ки ҳамагӣ аз сад барг иборат будааст, аз Зӯбон – ҳакими фиристодаи подшоҳи Кобулистон гирифта, бо ҳадафи тарҷума ба он назар кардааст, валематолиби онро аз зехни худ дур ёфтааст. Пас Хизр ибни Алиро даъват кардааст. Хизр он баргҳоро хонда ва тафсир кардааст ва Ҳасан онро ба рӯи коғаз овардааст. «Пас аз он, - нақл кардааст Ҳасан ибни Саҳл, - онбаргро баргардондам ва барги дигаре аз Зӯбон гирифтам ва Хизр ҳамчунон назди ман мебуд, ӯ мехонд ва ман менавиштам ва бад-ин наҳв то сӣ барг аз ӯ (яъне Зӯбон) гирифтам»<sup>1</sup>.

Мутаассифона, аз Хизр ибни Алӣ иттилоъе дар сарчашмаҳо наомадааст. Аз қиссаи тарҷумаи «Ҷовидон хирад» бармеояд, ки Хизр ибни Алӣ дар нимаи аввали асри IX фаъолият доштааст. Сониян, аз қиссаи мазкур пайдост, ки вай дар осори пандуахлокии тоисломӣ ва забони паҳлавӣ табаҳхури комил доштааст, вагарна, Ҳасан ибни Саҳл дар тарҷумаи «Ҷовидон хирад» ба ӯ рӯи ниёз намеовард ва дар ин кор шарикаш намекард.

**Зодонфаррух ибни Пирии Каскариро** бино ба замони зиндагӣ ва фаъолият, ки ба нимаи дувуми асри VII мувофиқ меояд, метавон аз нахустин мутарҷимони осори паҳлавӣ ба арабӣ ба шумор овард.

Зодонфаррух нахуст дабири девони хирочии волии Ироқ – Зиёд (ваф. 687) ва писари ӯ – Убайдуллоҳ буда, баъдан вазифаи дабирии волии дигари Ироқ Ҳачҷоч ибни Юсуф (694-714)-ро бар уҳда дошт<sup>2</sup> ва ҳангоми шӯриши сипоҳиёни Ибни Ашъас ба муқобили Ҳачҷоч, ки дар соли 701 рӯй намуда буд, дар Басра кушта шуд.

Зодонфаррух аз номвартарин дабирони девони хироч ва соҳиби тариқай хос дар ин амал маҳсуб мешуд. Бесабаб нест, ки Ҷоҳиз дар амали хироч ва сабту забти он ба ӯ масал задааст ва дабири маъруф – Иброҳими Синдиरो ба он ситудааст, ки вай дар тадбири девони хироч ба тариқай хоси Зодонфаррухи «аъвар» (яъне якҷашм) амал мекард<sup>3</sup>.

Ба Зодонфаррух тарҷумаи китобе дар чуғрофиёи Эрон аз паҳлавӣ ба арабӣ тааллуқ дорад, ки Ибни Факеҳ дар «Китоб-ул-булдон»-и хеш аз он матолиберо нақл намудааст. Ибни Факеҳ тазаккур додааст, ки китоби мазкур ҳангоми ғалабаи аъроб бар лашкариёни Фирӯз писари Яздгирд дар чузви ғаниматҳо ба даст омад ва ба Ҳачҷоч

<sup>1</sup>مسكويه، ابو على. الحكمة الخالدة. (جاويدان خرد). - ص. ۲۱۰.

<sup>2</sup>الجهشياري، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۵۴.

<sup>3</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب البيان و التبيين. ج. ۱. - ص. ۳۱۶.

фиристода шуд<sup>1</sup>. Ҳаҷҷоч чун дид, ки китоб ба форсист, ба дабири худ – Зодонфаррухи Каскарӣ амр кард, ки онро ба арабӣ тарҷума кунад ва вай низ ин амрро ба иҷро расонид<sup>2</sup>.

Аз ишороти Ибни Фақеҳ ба китоби тарҷумакардаи Зодонфаррух бармеояд, ки онба «Шаҳристонҳои Эрон», ки ба забони паҳлавӣ дар охириҳои аҳди Сосониён таълиф шуда, дар асрҳои VIII-IX ба он иловаҳои ворид шудааст<sup>3</sup>, то андозае шабоҳат доштааст.

Гароиши Зодонфаррух ва хонадони ӯ ба фарҳанги суннати эронӣ аз он низ пайдост, ки ӯ, писараш, наберааш ва аберааш, ки яқояк шугли дабири доштаанд, дар манбаҳои номҳои сирф эронӣ зикр шудаанд. Чунончи, Чаҳшиёрӣ номи абераи ӯро, ки дар замони охири халифаи умавӣ – Марвон ибни Муҳаммад (744-750) дабири Сулаймон ибни Ҳабибробар уҳда доштааст, дар шакли «Мочасбас ибни Баҳром ибни Мардоншоҳ ибни Зодонфаррухи якҷашм» овардааст<sup>4</sup>. Аз ин бармеояд, ки намояндагони ин хонадон паси ҳам дар чаҳор насл дар кеши зардуштӣ боқӣ мондаанд, дар акси ҳол дар сарҷашмаҳо номи исломӣ барояшон нақл мегардид.

Нисбаи Зодонфаррух – «Каскарӣ» далел бар он аст, ки ӯ аз ноҳияи Каскар, воқеъ дар қарибиҳои Хузистон, бархоста будааст.

**Абдуллоҳ ибни Алӣ** аз мутарҷимони осори илмӣ паҳлавӣ ба забони арабӣ мебошад. Ибни Надим дар бахше аз «ал-Фихрист», ки ба китобҳои ҳиндӣ тиббӣ дар забони арабӣ ихтисос дорад, овардааст, ки Абдуллоҳ ибни Алӣ китобро бо номи «Сирак» (Сайрак?) аз паҳлавӣ ба арабӣ даровардааст. Ӯ афзудааст, ки асли ин китоб ҳиндӣ буда, қаблан аз ҳиндӣ ба паҳлавӣ тарҷума шудааст.

**Исҳоқ ибни Алӣ ибни Сулаймон.** Ибни Надим дар бахше аз «ал-Фихрист», ки ба «китобҳои соҳаи байторӣ, дармони ҳайвонот ва сифоти аспу интиҳоби он» ихтисос ёфтааст, ба китобе дар мавзӯи «муолиҷаи ҳайвонот, асп, астар, гов, гӯсфанд, шугур ва шиноҳти арзишу суми онҳо» ишора карда ва тазаккур додааст, ки онро Исҳоқ ибни Алӣ ибни Сулаймон аз форсӣ ба арабӣ даровардааст<sup>5</sup>. Маълумоти дигар дар бораи ин мутарҷими осори илмӣ паҳлавӣ ба забони арабӣ дар даст нест.

**Абулаббоси Думаӣрӣ.** Яке дигар аз мутарҷимони осори паҳлавӣ Абулаббос Муҳаммад ибни Марзбони Думаӣрист, ки соли 309/921 аз олам гузаштааст. Зимни баёни ҳоли ӯ Ёқути Ҳамавӣ дар «Муъҷам ул-удабо»-и хеш навиштааст: «Абулаббоси Думаӣрӣ марде фозил, адибе суҳанвар ва аз муаррихону олимони забонавар буд ва аз ӯ китобҳои бузург содир мешуд. Вай яке аз мутарҷимон буд, ки китобҳои

---

<sup>1</sup> ابن الفقيه الهمداني. مختصر كتاب البلدان. - ص. ۲۰۹.

<sup>2</sup> محمدی، محمد. تاریخ و فرهنگ ایران در دوران انتقال از عصر ساسانی به عصر اسلامی. ج. ۴. - ص. ۱۷۲.

<sup>3</sup> تفضلی، احمد. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام. - ص. ۲۶۴-۲۶۷.

<sup>4</sup> الجھشیاری، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۱۳۶.

<sup>5</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۷۷.



форсиро ба арабӣ нақл мекард. ӯро беш аз панҷоҳ тарҷума аз китобҳои эронӣён аст. Даҳҳо китобдар авсоф ба қалами ӯ тааллуқ дорад, ки китобҳои «Васфи савор ва асп», «Васфи шамшер», «Васфи қалам» аз он ҷумла аст»<sup>1</sup>. Абулаббоси Думаӣрӣ дар улуми қуръонӣ низ табаҳхури тамом дошта ва китоберо бо номи «ал-Ҳовӣ фӣ улум ил-Қуръон» таълиф карда, ки аз бисту ҳафт ҷузъ иборат будааст. Фузун бар ин, Ёқут китобҳое, аз қабиле «Китоб-ул-ҳамоса», «Китоби ахбори Абдуллоҳ ибни Ҷаъфар ибни Абӯтолиб» ва ғайраро ба ӯ нисбат додааст<sup>2</sup>.

Шарҳи ҳоле аз Абулаббоси Думаӣрӣ ҳамчунин дар китоби «Буғят-ул-вуъот» омадааст. К.Брокелман бо истинод ба ин китоб як идда рисолаҳои дигари Абулаббоси Думаӣрӣро зикр кардааст, ки дар миёни онҳо «Китоби Искандар» қабиле зикр аст. Ӯ ҳаде задааст, ки ин китоб шояд яке аз ҳамон панҷоҳ китобест, ки Абулаббоси Думаӣрӣ аз паҳлавӣ ба арабӣ нақл кардааст<sup>3</sup>.

**Муриди Асвад.** Ибни Надим ҳини сухан аз китоби «Калила ва Димна» таъкид бар он дорад, ки «аз ин китоб маҷмӯаҳо ва баргузидаҳои ҳаст, ки онҳоро адибоне, мисли Ибни Муқаффаъ, Саҳл ибни Ҳорун, Салм – раиси «Байт-ул-ҳикма» ва Муриди Асвад, ки ӯро Мутаваккил (847-861) дар замони хилофаташ аз Форс ба ҳузури ҳеш даъват карда буд»<sup>4</sup>, анҷом додаанд. Аз ин ишораи Ибни Надим метавон истинбот кард, ки Муриди Асвад дар миёнаҳои қарни IX дар Форс мезиста ва аз адабу фарҳанги тоисломии эронӣ вуқуфи тамом доштааст.

Зикр шудани номи ӯ дар радифи Ибни Муқаффаъ, Салм ва Саҳл ибни Ҳорун, ки ҳам ба тарҷумаи китобҳои паҳлавӣ ва ҳам ба таълифи китобҳо дар рӯи осори тоисломии эронӣ маъруфият доранд, гувоҳ бар он аст, ки фаъолияти ӯ низ дар ҳамин ду самт ҷараён доштааст.

\*\*\*

Номгӯи мутарҷимон ва осори тарҷумакардаи онҳо, ки дар ин бахши китоб ба қайд омаданд, вусъати наҳзати тарҷумаи осори паҳлавиро дар асрҳои VIII-IX ба субут мерасонад. Ҷои тардид нест, ки дар садаҳои мазкур мутарҷимони дигар низ ба нақли осори тоисломии эронӣ ба забони арабӣ пардохта буданд, вале номашон дар сарчашмаҳои қуҳан зикр нашудааст. Ин нуқтаро даҳҳо китоби паҳлавие, ки мутарҷимашон ба забони арабӣ маълум нест, таъйид мекунанд.

Бар мабнои он чи зикр шуд, метавон ба бардоште расид, ки тарҷумаи осори алоҳидаи паҳлавӣ дар охири асри VII – аввали асри VIII (тарҷумаи китоби ҷуғрофияи Эрон аз ҷониби Зодонфаррух) сурат гирифтааст, вале авҷи наҳзати тарҷума ба нимаи дувуми асри VIII – нимаи аввали асри IX рост омадааст. Маҳз дар ҳамин давра

<sup>1</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١٩٠- ص.٥٢.

<sup>2</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١٩٠- ص.٥٢.

<sup>3</sup>بروكلمان، كارل.تاريخ الادب العربى.ج.١- ص.٢٣٩.

<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق.كتاب الفهرست. - ص.٣٦٤.

аглаби осори тоисломии эронӣ ба забони арабӣ баргардон шуда, бад-ин васила дар муҳити нави забонӣ ва дар партави ҷаҳоншиносии ваҳдонӣ умри дубора пайдо кардаанд.

Тарҷумаи осори паҳлавӣ дар нимаи дувуми асри IX (тарҷумаҳои Абулаббоси Думаӣрӣ) низ сурат гирифта ва дар адвори баъдӣ идома ёфтааст.

### 4.3. ТАРҶУМАИ ОСОРИ ТАЪРИХӢ

Дар миёни китобҳои паҳлавие, ки дар қарнҳои аввали ислом ба арабӣ тарҷума шудаанд, таърихномаҳо ва ба таври умум осоре, ки таҷрибаи таърихӣ қавмҳои ориёӣ дар онҳо баён ёфта буданд, бартарӣ доштанд. Чунин як тавачҷуҳи вижа ба тарҷумаи китобҳои таърихӣ бесабаб набуд ва ангезаву омилҳои худро дошт, ки ишора ба онҳо ҷиҳати дарки мақоми илми таърих ва таърихнигорӣ дар тамаддуни бостонии халқҳои эронӣ ва идомаи ин раванд дар қарнҳои нахустии ислом муфид хоҳад буд.

Нахуст бояд таъкид кард, ки забту сабти вақоии таърихӣ, ки таърихнигорӣ аз он ибтидо мегирад, дар миёни қавмҳои ориёӣ аз даврони қуҳан мутадовил буд. Шохони қадими эронӣ ба сабти муҳимтарин воқеаҳои рӯзгори худ ҷиҳати ҳифз ва иштиҳори ному амалашон тавачҷуҳ ва алоқии вижа доштаанд. Дар дарбори шохони ҳахоманишӣ дафтарҳои махсусе мавҷуд будаанд, ки дар онҳо воқеаҳои муҳими таърихӣ ба қайд меомаданд<sup>1</sup>.

Дар аҳди Сосониён тавачҷуҳ ба дониши таърихӣ боз ҳам бештар гардида, таърихнигорӣ дар тамаддуни он даврон аз мақому манзилати шоиста бархурдор гардид. Дар заминаи солномаҳои дарбори шохони сосонӣ таҳия шудани «Худойнома» дар охириҳои салтанати ин дудмон ва тарҷумаву бозгӯиҳои пайвастаи асари мазкур дар асрҳои VIII-IX, ки суҳан дар ин бора дар пеш аст, худ гувоҳ бар он аст, ки бузургдошти таърих ва ибратпазирӣ аз он аз даврони моқабли ислом аз хусусиятҳои тафаккур ва ҷаҳоншиносии қавмҳои эронӣ мебошад.

Сониён, тааммул бар таърихномаҳое, ки дар густараи тамаддуни эронӣ таълиф шудаанд, - аз «Худойнома» сар карда, то таърихномаҳои бешумори асрҳои миёна, - баёнкунандаи он матлаб аст, ки ҳадафи таърихнигории эронӣ танҳо воқеанигории сирф ва зикри асноду шавоҳид набуда, балки муҳимтар аз он дарёфти моҳияти ахлоқиву маънавии рӯйдодҳои сиёсӣ ва равандҳои таърихӣ маҳсуб мешудааст. Дар таъйиди чунин наҳви нигариш ба таърихтанҳо бо иқтибосе аз суҳанони Хусрави Анӯшервон иқтифо мекунем, ки гуфтааст: «Он гоҳ ба шеваҳо ва ойинҳои пешин рӯй биёвардем ва бад-он чи барои мо ва сипоҳ ва мардуми мо судмандтар

---

<sup>1</sup>محمدی، محمد. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام و آثار آن در تمدن اسلامی و ادبیات عربی. - ص. ۱۴۹-۱۵۲.

буд, оғоз кардем. Дар шеваҳои ниёгон аз Гуштосп то шаҳрҳои Қубод – наздиктарин падари хеш нек нигаристем ва он чидуруст буд, баргирифтем ва он чи нодуруст буд, аз он рӯй бигардонидем. Ва дар ин кор меҳри падарон ҳаргиз моро ба пазируфтани шеваҳои носудманд барнаангехтааст, ки меҳри Яздон ва сипосу фармонбардории ӯро бартар доштаем. ... Аз он пас ба шеваҳои Руму Ҳинд пардохтем, ойинҳои онро бо санҷаи хирад бисанҷидем ва ситудаҳои онро баргузидем ва аз миёни онҳо бад-он чи зевари шаҳрёримон буд, чанг задем ва онро хӯву шеваи хеш кардем ва ҳаргиз бад-он чи ҳавои нафс ба сӯи он мекашид, нагаравидем»<sup>1</sup>.

Ин суҳанони Хусрави Анӯшервон воқеан баёнғари муносибат ва нигариши ниёғони мо ба таҷрибаи таърихии гузаштагон аст, ки он аслан ҳадафи шинохти ҳикмати ахлоқии таърих ва дар ин замина фароҳам овардани василаҳои камолоти маънавии шаҳрёр ва ҷомеаро пайғирӣ мекард. Аз ин ҷост, ки дар «Худойнома» ва таърихномаҳои баъдӣ чанбаҳои ахборӣ, фалсафӣ, ахлоқӣ ва адабӣ ба ҳам омадаанд ва ин амр боиси густириш ва ривочи донишҳои таърихӣ дар ҷомеаи эронӣ гардидааст.

Солисан, нависандагони эронитабори қарнҳои нахустини исломӣ, хосатан онҳое, ки пайрави мазҳаби шуубия буданд, чиҳати ҳифз ва эҳёи мероси маънавии ниёғонашон, қабл аз ҳама, ба осори таърихии паҳлавӣ, хосатан «Худойнома» рӯй оварданд, зеро маҳз дар ҳамин навъ китобҳо ҳувияти маънавию ахлоқиҳои эронӣ бештар ва бештар аз дигар навъҳои мероси мактуб мунъакис гардида буд. Бесабаб набуд, ки шуубиён «Худойнома»-ро ганҷинаи донишу хиради эронӣ медонистанд ва бо он ба ҳайси василаи ислоҳи сиёсӣ иҷтимоӣ ва ахлоқӣ маънави менозиданд. Чунончи, Ҷоҳиз аз забони аҳли шуубия овардааст: «Ва ҳар кӣ ҷӯеи хираду адаб, илму дониш, панду насихат, суҳанҳои арҷманд ва маъниҳои воло бошад, бигзор ба «Сияр-ул-мулук» («Худойнома») рӯй оварад»<sup>2</sup>.

Дар ҳамин поя шинохтани арзиши «Худойнома» аз ҷониби нависандагони шуубимазҳаб боис гардид, ки онҳо ба тарҷумаву бозгӯ ва ислоҳу таҳзиби муқаррари он ва осори дигари таърихии тоисломии эронӣ рӯй оваранд. Дар натиҷаи фаъолияти онҳо дар қарнҳои VIII-IX дар маркази Хилофат мактаби таърихнигории эронӣ ташаккул ёфт<sup>3</sup>. Гурӯҳе аз намояндагони ин мактаб бо тарҷумаи осори таърихии эронӣ ба арабӣ саруқор доштанд, қисми дигар дар заминаи истифодаи матлаб ва маводи «Худойнома» вақитҳои дигари таърихии тоисломӣ ба таълифи таърихномаҳо даст заданд. Ҳосили кори мактаби мазкур буд, ки таърихи Эронзамин на танҳо бо сармоя ва дороиҳои маънавию ахлоқияш ба матну батни тамаддуни ҷадида

<sup>1</sup>مسكويه، ابو على. تجارب الامم. ج. ۱۰. ترجمه ابوالقاسم امامی. انتشارات سروش، تهران ۱۳۶۹. ص. ۱۸۰.

<sup>2</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب البيان و التبیین. ج. ۳. - ص. ۷۱۰.

<sup>3</sup>صادق آئینه وند. علم تاریخ در گستره تمدن اسلامی. مجلد اول، پژوهش گاه علوم انسانی و مطالعات فرهنگی. تهران ۱۳۷۷ / ۱۹۹۸ - ص. ۵۶۵-۵۶۶.

исломӣ ворид гардид ва расмияту арзиши сиёсиву динӣ пайдо кард, балки ба густаришу равнаки таърихнигории исломӣ мусоидат намуд.

Ҳамин тариқ, дар қарнҳои нахусти ислом бо ҳиммати мутарҷимони эронӣқисмати аъзами осори таърихии тоисломии Аҷам ба забони арабӣ баргардон шуданд, ки китобҳои зер дар шумули онҳо буданд:

«Худойнома». Муҳимтарин асари таърихӣ, ки дар қарнҳои нахусти ислом аз паҳлавӣ ба забони арабӣ тарҷума гардид, «Худойнома» ба шумор меояд. Ин китоб дар заминаи солномаҳое, ки дар дарбори шоҳони эронӣ аз қадим вучуд дошт, дар охириҳои даврони салтанати Сосониён тадвин шудааст.

Замони дақиқи таълифи «Худойнома»-ро ағлаби муҳаққиқон аҳди Хусрави Анӯшервон (531-579), ки даврони гирд кардану гиромӣ доштани донишу хирад ва нахзати адабиву фарҳангӣ маҳсуб мешавад, таъин кардаанд<sup>1</sup>. Минбаъд, дар давраи салтанати охириин шоҳаншоҳи сосонӣ – Яздгирди III (ваф. 651) ин китоб такмил ёфтааст<sup>2</sup>.

«Худойнома» таърихи халқҳои эрониро аз ибтидои офариниш то сукути дудмони Сосониён дар бар гирифта, дар онтаърихи воқеӣ бо устураву ривоёт ва дostonҳои куҳан омезиш ёфтааст. Ба ҷуз аз матолиби таърихиву афсонавӣ, «Худойнома» ҳамчунин урфу одатҳои мардумӣ, ахлоқу маънавиёт ва ақоиду боварҳои динӣ, хоссатан усули мазҳаби зардуштиро дар матни худ гунҷонидааст<sup>3</sup>. Ба ин маънӣ, «Худойнома» ба масобаи як қомуси таърих, адабиёт, фарҳанг, ахлоқ ва дину фалсафаи Аҷами тоисломӣ буд, ки ҳувияту ҳайсијатаърихиву маънавии халқҳои эрониро дар ҷомеътарин шакл бозтобӣ мекард. Аз ин ҷост, ки инкитоб дар қарнҳои нахусти ислом ҳамвора мавриди тарҷума ва иқтибосу истифода қарор гирифт ва зиндагии худро дар муҳити нави исломӣ бо номҳои «Таърих мулук-ал-фурс» ё «Сияр-ул-мулук» идома дод.

Қадимтарин маъхазе, ки доир ба тарҷумаҳои арабии «Худойнома» ва ҷузъиёти умри дубораи ин китоб дар даврони исломӣ маълумотеро шомил аст, таърихномаи Ҳамзаи Исфаҳонӣ «Синий мулук-ал-арз ва-л-анбиё» мебошад, ки қабл аз соли 346/957 таълиф шудааст.

Аз матолибе, ки Ҳамзаи Исфаҳонӣ зикр кардааст, аён мешавад, ки «Худойнома» дар қарнҳои VIII-IX борҳо ба арабӣ тарҷума гардида ва миёни тарҷумаҳои ин китоб тафовутҳо ба назар мерасидааст. Чунончи, Ҳамза суҳанони яке аз мутарҷимони «Худойнома» – Мӯсо ибни Исои Кисравиро овардааст, ки мегӯяд: «Ба китоби мавсум ба «Худойнома», ки чун аз форсӣ ба арабӣ тарҷума шуд, ба «Таърих мулук-ал-фурс» мавсум гардид, нигаристам

<sup>1</sup> تفضلی، احمد. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام. - ص. ۲۷۰.

<sup>2</sup> کریستن سن، آرتور. ایران در زمان ساسانیان. - ص. ۹۷.

<sup>3</sup> کریستن سن، آرتور. ایران در زمان ساسانیان. - ص. ۱۰۰.

ва дар нусхаҳои он чандин бор диққат ва истиксо кардам, ҳамаи онҳо бо якдигар ихтилоф доштанд, то он ҷо, ки ду нусхаи якнавохт ва мутобиқ наёфтам. Ва ин ихтилоф дар натиҷаи иштибоҳи мутарҷимон аз забоне ба забони дигар ба вучуд омада буд»<sup>1</sup>.

Ҳамза дар мавриди дигар низ ба касрат ва тадовули нусхаҳои «Худойнома»-и паҳлавӣ ва тарҷумаҳои он ба арабӣ дар қарнҳои аввали исломӣ ишора намуда, аз забони мутарҷими дигари ин китоб – Баҳром ибни Мардоншоҳ овардааст: «Бисту анд нусха аз китоби «Худойнома»-ро ба даст овардам ва санавоти таърихии подшоҳони Эронро аз замони Каюмарс – падари башар то поёни рӯзгори онон ва заволи ҳукумати эшон бо дасти тозиён ислоҳ кардам»<sup>2</sup>. Чизе ки, қабл аз ҳама, дар ин иқтибосот таваҷҷуҳро ба худ ҷалб мекунад, ишорати муқаррар ба тафовутҳои миёни нусхаҳои «Худойнома» аст. Вучуди тафовутҳои миёни нусхаҳо далел бар он аст, ки «Худойнома» аз роҷтаҳин ва мутадовилтарин осори таърихии тоисломии эронӣ дар қарнҳои аввали ислом будааст.

Касрат ва тафовути нусхаҳои тарҷумаи арабии «Худойнома» дар назди муаррихоне, ки ба таърихи тоисломии Эрон пардохта ва ин китобро мавриди истифода қарор дода буданд, вазиғи ҷамъоварӣ, муқояса ва тартибу талфиқи онҳоро пеш мегузошт. Ҳамзаи Исфаконӣ низ, вақте хостааст таърихномаи хешро таълиф кунад, дар баёни таърихи тоисломии Эрон ба тарҷумаҳои арабии «Худойнома» рӯй оварда ва ҳашт тарҷумаи мухталифи онро гирд овардааст, ки бад-ин қарор буд:

«Сияр мулук-ал-фурс», тарҷумаи Ибни Муқоффаъ;

«Сияр мулук-ал-фурс», тарҷумаи Муҳаммад ибни Ҷаҳми Бармакӣ;

«Таърих мулук-ал-фурс», аз ганҷинаи халифа Маъмун (813-833);

«Сияр мулук-ал-фурс», тарҷумаи Зодуя ибни Шоҳуяи Исфаконӣ;

«Сияр мулук-ал-фурс», тарҷумаи таълифи Муҳаммад ибни Баҳром ибни Матери Исфаконӣ;

«Таърих мулук Банӣ Сосон», тарҷумаи таълифи Ҷишом ибни Қосими Исфаконӣ;

«Таърих мулук Банӣ Сосон», ислоҳи Баҳром ибни Мардоншоҳ, мӯбади вилояти Шопур аз билоди Форс.

Чунон кинайдост, Ҳамза ҳафт тарҷумаи «Худойнома»-ро зикр кардааст, ҳол он ки ӯ худ ҷамъ овардани ҳашт тарҷумаро таъкид карда буд. Чунин номувофиқатиро В.Р.Розен барҳақ аз саҳви хаттотону носихони таърихномаи Ҳамза ба шумор оварда, бар он ақида буд, ки аз ин номгӯйӣ ҳафтнафара номи мутарҷими дигари

---

<sup>1</sup> حمزه اصفهانی. سنی ملوک الارض و الانبیاء. تاریخ پیامبران و شاهان. ص. ۱۳.

<sup>2</sup> حمزه اصفهانی. سنی ملوک الارض و الانبیاء. تاریخ پیامبران و شاهان. ص. ۱۹.

«Худойнома» – Мӯсо ибни Исои Кисравӣ афтодааст<sup>1</sup>. Сихҳати ақидаи ин донишмандро ду чиз таъйид мекунад: якум, худи Ҳамза дар саҳафоти баъдӣ аз Мӯсо ибни Исои Кисравӣ чун мутарҷими «Худойнома» ёд кардааст. Дувум, муаллифи маҷхули «Муҷмал-ут-таворих ва-л-қисас» бо таъя ба таърихномаи Ҳамзаноми мутарҷимони «Худойнома»-ро зикр кардааст, ки Мӯсо ибни Исои Кисравӣ дар радифи онҳо ҷойгузин аст<sup>2</sup>.

Номгӯи мутарҷимони «Худойнома» аз паҳлавӣ ба арабӣ ҳамчунин дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим, «Муқаддимаи «Шоҳнома»-и Абӯмансурӣ»<sup>3</sup>, «Таърихи Табарӣ»-и Абӯалии Балъамӣ<sup>4</sup> ва «Осор-ул-боқия»-и Абӯрайҳони Берунӣ<sup>5</sup> бо баъзе тафовут дар ҷузъи иддае аз номҳо зикр шудааст.

Бино бар ахбори сарчашмаҳои мазкур метавон ба бардоште расид, ки дар қарнҳои VIII-IX ҳафт тан аз мутарҷимону нависандагони эронитабор «Худойнома»-ро ба арабӣ баргардон ва тасниф карда буданд. Як тарҷумаи дигар, ки Ҳамзаи Исфahонӣ онро «бадастомада аз ганҷинаи Маъмун» муаррифӣ кардааст, бидуни номи мутарҷим зикр шудааст. Бино бар ин, метавон бар вучуди ҳашт тарҷума ё таҳрири «Худойнома» дар қарнҳои нахустӣ ислом қоилад буд.

Мусташири олмонӣ Т.Нёлдеке ақида дошт, ки нахустин тарҷумаи мустақим аз «Худойнома»-и паҳлавӣ тарҷумаи Ибни Муқаффаъ буда, тарҷумаҳои дигар аз рӯи он сурат гирифтаанд<sup>6</sup>. Ин ақида то замоне, ки В.Р.Розен ба таҳқиқи тарҷумаҳои «Худойнома» рӯй овард, қоим буд, вале натиҷаи пажӯҳишҳои донишманди рус онро мавриди тарғид қарор дод. В.Р.Розен бо тавачҷуҳ ба он, ки мавҷудияти ихтилофҳо миёни тарҷумаҳои «Худойнома» дар манобеи арабӣ, хосса тан таърихномаи Ҳамза муқарраран таъкид шудааст, ба чунин хулоса омад, ки далеле кофӣ барои тасдиқи он, ки мутарҷимони дигар аз тарҷумаи Ибни Муқаффаъ пайравӣ ва истифода кардаанд, вучуд надорад. Баръакс, аз миёни нусхаҳои зиёди тарҷумаҳои «Худойнома» ду нусхаи ба ҳам мувофиқро пайдо накардани Мӯсо ибни Исои Кисравӣ, ки қаблан ба он ишора шуд, гувоҳ бар он аст, ки ҳар яке аз мутарҷимони ин китоб дар қори тарҷума аз Ибни Муқаффаъ то андозае мустақил будаанд<sup>7</sup>.

В.Р. Розен бо диққати назар ба маълумоте, ки Ҳамзаи Исфahонӣ дар бораи тарҷумаҳои «Худойнома» зикр кардааст, пай бурдааст, ки муаррихи мазкур дар тавсифи тарҷумаҳо се таъбири гуногунро ба қор

<sup>1</sup>Розен В.Р.К вопросу об арабских переводах «Худай-нама». -С.174.

<sup>2</sup>مجمّل التوارىخ و القمص. به تصحىح ملك الشعرا بهار. - ص. ۲۰.  
<sup>3</sup>قزوینى، محمد. مقدمه قديم شاهنامه / هزاره فردوسى. - ص. ۱۴۱-۱۴۲.

<sup>4</sup>Балъамӣ. Таърихи Табарӣ. -С.4-5.

<sup>5</sup>Берунӣ, Абӯрайҳон. Осор ул-боқия. -С.124.

<sup>6</sup>كريستن سن، آرتور. ايران در زمان ساسانيان. - ص. ۹۹.

<sup>7</sup>Розен В.Р.К вопросу об арабских переводах «Худай-нама». -С.182-183.

гирифтааст. Чунончи, «Сияр мулук-ал-фурс»-и Ибни Мукаффаъ ва асарҳои ҳамноми Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ ва Зодуя ибни Шохуяи Исфаконири Ҳамза «нақл», яъне, тарҷумаи «Худойнома» номидааст. Дар таърифи «Сияр мулук-ал-фурс»-и Муҳаммад ибни Баҳром ибни Матери Исфакони ва «Таърих мулук Бани Сосон»-и Ҳишом ибни Қосими Исфакони таъбири «нақл ав чамъ», яъне, «тарҷума ё таълиф»-ро истифода кардааст. Асари Баҳром ибни Мардоншоҳи мӯбад «Таърих мулук Бани Сосон»-ро Ҳамза «ислоҳ», яъне, таҳрири «Худойнома» номидааст. В.Р. Розен тарҷумаи Мӯсо ибни Исои Кисравиро низ, ки мисли Баҳром ибни Мардоншоҳ чандин нусхаи «Худойнома»-ро муқоиса ва ба даъвои ҳуди вай, ислоҳ карда будааст, ба ҳамин гурӯҳи севум дохил намуд<sup>1</sup>. Ба ақидаи В.Р.Розен, Ҳамзаи Исфакони се навъ таъбирро барои таърифи тарҷумаҳои «Худойнома» бебабаб ба қор нагирифтааст, яъне, ҳар як аз ин таъбирҳо ифодакунандаи як навъи мушаххаси тарҷума ва ё як дастаи мутарҷимони «Худойнома» аст. Аз ин рӯ, В.Р.Розен мутарҷимони «Худойнома»-ро ба се даста тақсим кард: дастаи аввал аз Ибни Мукаффаъ, Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ ва Зодуя ибни Шохуяи Исфакони иборат аст, ки матни китоби мазкурро дар шакли наздик ба асл тарҷума кардаанд. Албатта, тарҷумаи онҳо баргардони ҳарф ба ҳарф набуда, балки дар он ҳазфу ихтисори матолиби китоб вучуд доштааст. Ба дастаи дувуми мутарҷимон Муҳаммад ибни Баҳром ибни Матери Исфакони ва Ҳишом ибни Қосими Исфакони вориданд. Онҳо дар тарҷума пайрави матни асл будаанд, вале мазмунҳои таърихиву афсонавиро аз китобҳои дигари паҳлавӣ бар он афзудаанд. Дастаи сеуми мутарҷимонро Баҳром ибни Мардоншоҳ ва Мӯсо ибни Исои Кисравӣ ташкил мекунанд. Онҳо тарҷумаҳои мухталифи «Худойнома»-ро бо якдигар муқоиса намуда, кӯшидаанд, ки як матни ҳамоҳанги китобро ба вучуд оваранд ва ихтилофоти миёни онҳоро аз байн баранд. Дар пайи ин ҳадаф онҳо қиссаи ривоёти ҷаълиро бар матн афзуда ва матолиберо аз он ҳазф кардаанд. В.Р.Розен чанд намуна аз ин «ислоҳ»-ҳои Мӯсо ибни Исои Кисравиро бар мабноси аҳборе, ки дар китоби «ал-Маҳосин ва-л-азод»-и Қоҳиз боқӣ мондааст, зикр намудааст<sup>2</sup>. Вучуди ҳамин се даста аз мутарҷимон ва се навъ аз тарҷумаҳои «Худойнома» боис шуда, ки ихтилофоти мавҷуда миёни нусхаҳои китоби мазкур на танҳо рафъ нагардад, балки боз ҳам бештар рӯй намояд ва мунтаҳо ба таърихномаҳои аҳди исломӣ ворид шавад.

Ҳашт тарҷумаи мазкури «Худойнома»-ро аз лиҳози фарогирии матолиби таъриҳӣ метавон ба ду гурӯҳ тақсим кард: гурӯҳи аввал тарҷумаҳои буданд, ки таъриҳи ақвоми эрониро аз оғоз то суқути хонадони Сосониён дар бар мегирифтанд ва ба масобаи таъриҳҳои

---

<sup>1</sup>Розен В.Р.К вопросу об арабских переводах «Худай-нама». -С.184.

<sup>2</sup>Асари мазкур. -С.183-188.

комили Эрон буданд. Ба ин гурӯҳ бар асоси унвони тарҷумаҳо ва ишороти мавҷуда ба матолиб ва муҳтавои онҳо метавон тарҷумаҳои зеро ворид кард:

«Сияр мулук ал-фурс»-и Ибни Муқаффаъ;

«Сияр мулук ал-фурс»-и Муҳаммад ибни Чаҳми Бармакӣ;

«Таърих мулук-ал-фурс» аз хизонаи Маъмун;

«Сияр мулук-ал-фурс»-и Зодуя ибни Шоҳуяи Исфаҳонӣ;

«Сияр мулук-ал-фурс»-и Муҳаммад ибни Баҳром ибни Матёри Исфаҳонӣ.

Гурӯҳи дувуми тарҷумаҳои «Худойнома» аз рӯи унвонашон, ки дар таърихномаи Ҳамза зикр шудаанд, ба баёни таърихи хонадони Сосониён ихтисос доштанд. Чунончи:

«Таърих мулук Банӣ Сосон»-и Ҳишом ибни Қосими Исфаҳонӣ;

«Таърих мулук Банӣ Сосон»-и Мӯсо ибни Исои Кисравӣ.

Тарҷумаи Баҳром ибни Мардоншоҳ, ки дар таърихномаи Ҳамза чун «Таърих мулук Банӣ Сосон» ёд шудааст, аз рӯи унвонаш мебоист мунҳасир ба баёни таърихи Сосониён бошад. М.Н. Усмонов низ ба таърихи шоҳони сосонӣ ихтисос доштани ин тарҷумаро ҷонибдорӣ кардааст<sup>1</sup>. Аммо ишороти муаллифи «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» ва манбаъҳои дигар таърихномаи ҳоси замони салтанати Сосониён будани китоби Баҳром ибни Мардоншоҳро зери шубҳа мегузоранд. Метавон ҳадс зад, ки тарҷумаи Баҳром ибни Мардоншоҳ низ аз таърихномаҳои комили Эронзамин будааст.

Тарҷумаҳои арабии «Худойнома», ки ғолибан дар нимаи дувуми асри VIII ва нимаи аввали асри IX ба миён омаданд, куллан аз байн рафтаанд. Сабаби ин амр, аз як тараф, ҳодисаҳои рӯзгор аст, ки тарҷумаҳои «Худойнома»-ро мисли осори дигари тоисломии эронӣ мавриди дастбурди хеш қарор дод. Аз ҷониби дигар, пас аз он ки муҳтавои «Худойнома» ба василаи тарҷумаҳои арабии он ба матну батни таърихномаҳои исломӣ ворид гардида, таърихи Эронзамин расмият пайдо намуд ва мунтаҳо «Шоҳнома»-и безаволи Фирдавсӣ арзи ҳастӣ кард, ниёзи иҷтимоиву фарҳангӣ ба вучуди тарҷумаҳои «Худойнома» ба таври умум аз миён рафт. Ба иборати дигар, тарҷумаҳои арабии «Худойнома» бо он ки муҳтавои онҳо мавриди истифодаи пайвастаи муаррихони исломӣ қарор гирифт ва заминае барои рушди таърихнигории исломӣ фароҳам омад, рисолати хешро дар баробари таърихи бузурги Эронзамин ба иҷро расониданд ва дар ғӯшаи нисёни таърих ҷой гирифтанд.

Бо вучуди ин, дар осори адабиву ахлоқии арабизабон, аз қабили «Уюн-ул-ахбор» ва «Китоб-ул-маориф»-и Ибни Қутайба, «ас-Саъода ва-л-исъод»-и Абулҳасани Омирӣ иқтибосоти зиёде аз «Худойнома»-и тарҷумашуда ба арабӣ ба назар мерасанд. Чунончи, Абулҳасани

---

<sup>1</sup>Османов М.Н.Своды иранского героического эпоса («Худайнаме» и «Шахнаме») как источники «Шахнаме» Фирдоуси. -С.169.



Омирӣ дар «ас-Саъода ва-л-исъод»-и худ нуҳ бор матолиби ахлокиро аз «Худойнома» иқтибос карда ва ҳар бор нақли қавлро бо ҷумлаи «дар «Худойнома» мазкур аст» оғоз намудааст<sup>1</sup>.

Ибни Кутайба низ дар «Уюн-ул-ахбор» дар чаҳор маврид бо тасреҳи номи китобпораҳоеро аз «Худойнома» нақл кардааст, ки дар онҳо мутаносибан сухан дар бораи шукргузори мардум ба Ардашер, қиссаи шоҳи Ҳайтолиён Хушнавоз бо Фирӯз ибни Яздгирд, қиссаи Баҳроми Гӯр бо канизаки ӯ перомуни сайди оху, қиссаи Ардашер ва духтари шоҳи Савод меравад<sup>2</sup>.

Истифодаи фаровон аз матолиби тарҷумаҳои арабии «Худойнома» дар таърихномаҳои асрҳои миёна, иқтибосоти такрорӣ ин китоб дар осори адабиву ахлокии арабиву форсӣ далели мақом ва эътибори волои он дар назди донишмандони гузашта аст. Фузун бар ин, маъхази аслии «Шоҳнома»-ҳои мансур ва манзуми форсӣ, аз ҷумла асари безаволи Фирдавсӣ будани тарҷумаҳои арабии «Худойнома» худ гувоҳи аҳаммият ва арзиши қори мутарҷимони эронии қарнҳои VIII-IX аст.

«Точнома». Гузашта аз «Худойнома», осори дигари таърихиву адабии паҳлавӣ, ки дар қарнҳои нахустини исломӣ ба забони арабӣ тарҷума гардида, мавриди истиқбол ва истиноду иқтибоси донишмандони арабизабон қарор гирифт, силсилаи китобҳо бо номи умумии «Точнома» мебошад. Лозим ба таъкид аст, ки миёни донишмандон доир ба китобҳои мавсум ба «Точнома» ихтилофи назар вучуд дорад. Ин ихтилоф ношӣ аз он ҷост, ки қисме аз муҳаққиқон «Точнома»-ро дар адабиёти даврони Сосониён як китоби ягона ва мунҳасир ба фард пиндоштаанд. Чунончи, Ф.Габриэли дар ҳамин ақида буд ва ду китоби «Точнома»-ро, ки дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим зикр шудааст, бино ба назарияи хеш як китоб ба шумор меовард<sup>3</sup>. Ховаршиносон А. Гутшмидт, И.Ю. Крачковский ва К.А.Иностранцев низ ба ягонагии «Точнома»-и паҳлавӣ қоил буданд<sup>4</sup>. А.Кристенсен аз нахустин муҳаққиқоне мебошад, ки дар як китоб будани «Точнома» тардид кард ва эҳтимол дод, ки ба ҷуз аз «Точнома»-и умумӣ ҳамчунин «китобҳои хосе ҳам ба номи «Точномак» мавҷуд будааст»<sup>5</sup>. Пажӯҳишҳои муҳаққиқони баъдӣ, ҳамчунин дарёфт ва ба доираи таҳқиқ қашида шудани пораҳои китобҳои мавсум ба «Точнома» собит карданд, ки «Точнома» мисли унвони дигар осори адабиёти аҳди Сосониён, аз қабилӣ «Ойиннома»,

<sup>1</sup> العامرى، ابو الحسين. السعادة و الاسعاد. بكتابة و مباشرة مجتبى مینوی، ويسپادن - آلمان ۱۳۳۶. ص. ۲۹۸، ۲۹۶.

<sup>2</sup> ابن قتيبه. عيون الاخبار. ج. ۱. ص. ۱۳۶. ج. ۲. ص. ۴۰۴.

<sup>3</sup> کریستن سن، آرتور. ایران در زمان ساسانیان. - ص. ۱۰۶.

<sup>4</sup> Иностранцев К.А. Сасанидские этюды. - СПб., 1909. - С. 2931.

<sup>5</sup> کریستن سن، آرتور. ایران در زمان ساسانیان. - ص. ۱۰۵.

«Андарзнома», «Панднома» номи умумии силсилае аз китобҳо будааст, ки дар мавзӯи муайян таълиф шудаанд.

Қадимтарин маъхазе, ки дар он «Точнома» дар шакли «Китоб-ут-Тоҷ» зикр шудааст, «Уюн-ул-ахбор»-и Ибни Қутайбаи Динаварӣ аст. Муаллифи мазкур, ки зода ва парвардаи хонадони эронӣ ва баҳравар аз маърифати осори адабии тоисломии ниёгонаш буд, дар асари худ ҳашт пора аз «Точнома»-ро, ки ғолибан бо ҷумлаи «Дар «Точнома» хондам» оғоз меёбанд, нақл кардааст<sup>1</sup>.

Фузун бар ин, Ибни Қутайба панҷ пораи дигар, бидуни он ки номи «Точнома»-ро зикр кунад, иқтибос кардааст. Дар ин пораҳо Хусрави Парвиз, дар ҳоле ки дар ҳабси писараш – Шерӯя буд, ба ӯ мутаносибан дар бораи интиҳоби омили хироҷ, аҳаммияти машварат дар корҳо, зарурати ҷазои хиёнат, нигоҳ доштани ғазабу фуру нишондани хашм, риояти ҳадди эътидол дар умури кишвардорӣ панду андарз додааст<sup>2</sup>.

Ин пораҳо ҳамагӣ аз номаи Хусрави Парвизба писараш – Шерӯя нақл шудаанд ва яқинан ҷузъе аз «Точнома»-и мавриди истифодаи муаллиф будаанд, зеро дар миёни ҳашт поре, ки аз «Точнома» будани онҳо сароҳатан зикр шудааст, ду пора (пораҳои дувум ва сеум) аз ҳамин номаи Хусрави Парвиз ба писараш – Шерӯя иқтибос шудааст.

Ҳамчунин дар «Уюн-ул-ахбор» насихати Хусрави Парвиз ба ошпаз ва шаробдори ӯ бидуни зикри маъхаз нақл шудааст<sup>3</sup>. Дар қиёс бо он, ки дар пораҳои панҷум, шашум ва ҳафтум Хусрави Парвиз ба котиб, хозин ва пардадори худ насихат карда ва ба тасреҳи Ибни Қутайба ин пораҳо маъхуз аз «Точнома» ҳастанд, метавон ҳадси наздик ба яқин зад, ки насихати шоҳи сосонӣ ба ошпаз ва шаробдораш низ ҷузъе аз «Точнома» буда ва аз он дар «Уюн-ул-ахбор» нақл шудааст.

Ҳамин тарик, аз чаҳордах поре, ки Ибни Қутайба аз «Точнома» иқтибос кардааст, ёздаҳтои он аз забони Хусрави Парвиз нақл шудааст. Дар се пораи дигар нақли қавл аз забони «яке аз шоҳон» омада, номи Хусрави Парвиз таъкид нашудааст. Бино бар ин, метавон ба бардоште расид, ки «Точнома»-и мавриди истифода ва иқтибоси Ибни Қутайба китобе будааст, ки ба шарҳи ҳол ва андарзу васиятҳои яке аз маъруфтариншоҳони сосонӣ – Хусрави Парвиз ихтисос доштааст.

Пас аз Ибни Қутайба муаллифи дигаре, ки аз китобҳои мавсум ба «Точнома» ба сароҳат ёд кардааст, Ибни Надим мебошад. Ӯ дар «ал-Фихрист»-и хешдар ду маврид ин китобро зикр кардааст: нахуст, дар радифи китобҳои тарҷумакардаи Ибни Муқаффаъ асаре бо номи

---

<sup>1</sup> ابن قتيبه. عيون الاخبار. ج. ١. - ص. ١٠١، ٨٨، ٦٩، ٥٨، ٥٠.

<sup>2</sup> ابن قتيبه. عيون الاخبار. ج. ١. - ص. ١٠٠، ٧١، ٥٩.

<sup>3</sup> ابن قتيبه. عيون الاخبار. ج. ٢. - ص. ٢١٦.

«Китоб-ут-тоҷ фӣ сирати Анӯшервон» (яъне, Точнома дар сирати Анӯшервон) сабт шудааст<sup>1</sup>, сониян, дар боби китобҳое, ки эронӣ дар саргузашт ва дostonҳои саҳеҳи шоҳони хеш таълиф кардаанд, китобе бо номи «ат-Тоҷ ва мо тафоалат фиҳи мулукухум» (яъне, Точнома ва фолҳое, ки шоҳони эронӣ бад-он мезаданд) зикр ёфтааст<sup>2</sup>. Ф. Габриэли бар мабной назарияи худ дар бораи мунҳасир ба фард будани китоби «Точнома»-и паҳлавӣ ин ду асарро як китоб мешуморад. Вале аз унвони китобҳои мазкур низ пайдост, ки китоби аввал, яъне «ат-Тоҷ фӣ сирати Анӯшервон», ки онро Ибни Муқаффаъ тарҷума кардааст, ба шарҳи ҳол ва корҳои Анӯшервон ихтисос дошт. Китоби дувум, яъне, «ат-Тоҷ ва мо тафоалат фиҳи мулукиҳим», чунон ки аз номаш маълум мешавад, дар мавзӯи пешгӯиҳо ва фолгири дар заминаи ситорашиносӣ, толебинӣ, хобгузорӣ ва ғайра, ки дар дарбори Сосониён ривоч ва эътибор доштаанд, таълиф шудааст. М.Муҳаммадӣ муътақид аст, ки «ҳикоёту дostonҳои мутааддиде дар бораи пешгӯиҳо аз шоҳони сосонӣ ривоят мешуда ва ҳамин ҳикоёту дostonҳо буда, ки шояд ба замимаи иттилооти дигаре дар ҳамин замина мавзӯи ин китоб будааст»<sup>3</sup>.

Ба ҷуз аз «Уюн-ул-аҳбор» ва «ал-Фихрист», номи «Точнома» ва ду пора аз он дар китоби «ас-Саъода ва-л-исъод»-и Абулҳасани Омири низ сабт ёфтааст<sup>4</sup>. Муаллифи мазкур, ки аз Нишопур бархоста ва бо осори тоисломии эронӣ ошноии комил доштааст, дар асари худ аз китобҳои адабиву таъриҳии сосонӣ иқтибосоти зиёде карда ва зоҳиран он китобҳо, аз ҷумла «Точнома»-ро дар даст доштааст.

Пораҳое аз «Точнома» ҳамчунин дар «ал-Иқд-ал-фарид»-и Ибн Абд Раббихи ва «Сироч-ул-мулук»-и Тартушӣ нақл гардидааст<sup>5</sup>. Бино бар он, ки пораҳои мазкур қаблан дар «Уюн-ул-аҳбор» низ дарҷ ёфта буд, метавон ҳадс зад, ки Ибн Абд Раббихи ва Тартушӣ онҳоро аз китоби Ибни Қутайба нақл кардаанд.

Гузашта аз ин, дар қарнҳои нахустии ислом «Точнома»-нависӣ ба ҳукми анъана даромад ва чанде аз нависандагони араб ва арабизабон бо истиқбол аз ин суннат китобҳое бо номи «ат-Тоҷ» навиштаанд. Яке аз ин китобҳо таҳти унвони «ат-Тоҷ фӣ ахлоқ-ил-мулук», яъне, «Точнома дар ахлоқи шоҳон» то замони мо расидааст, ки таълифи онро ба қалами Ҷоҳиз мансуб медонанд. Дар мавриди интисоби китоби мазкур ба Ҷоҳиз миёни муҳаққиқон ихтилофи назарвучуд дорад, вале алҳол аҳаммият ва арзиши ин китоб на дар муаллифи он, балки дар маҳзи вучуди он аст. Мундариҷаи бахшҳои китоби

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۲۲.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>3</sup>محمدی، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساسانی به عصر اسلامی. ج. ۴. - ص. ۲۰۶.

<sup>4</sup>العامری، ابو الحسين. السعادة و الاسعاد. - ص. ۴۳۵.

<sup>5</sup>ابن عبد ربه. كتاب العقد الفريد. ج. ۱. - ص. ۲۷.

мазкурро метавон ба се қисмат чудо кард. Дар қисмати аввали ҳар як бахш расму русум ва одоби дарбори шоҳони эронӣ ва суннату қоидаҳое, ки дар маҷлисҳои хусусиву расмии онҳо мавриди риоят буд, ҳамчунин вочибот ва вазифаҳое, ки аҳли дарбор нисбат ба шоҳ ва шоҳ нисбат ба ҳар яки онон доштааст, шарҳу баён ёфтаанд. Дар қисмати дувум ҳикоёт ва қиссаҳое аз рӯзгори шоҳони эронӣ нақл шудааст, ки шоҳиди риояти суннату қоидаҳои мазкур дар бахши аввал аст. Дар қисмати сеум ҳамин гуна қиссаву ривоёт аз рӯзгори хулафои исломӣ оварда шудааст. Аз ин лиҳоз, китоби «ат-Тоҷ фӣ ахлоқ-ил-мулук» маъхази гаранбаҳое ҷиҳати таҳқиқи тадовуми афкор ва андешаи сиёсиву ахлоқии тоисломии эронӣ дар муҳити ҷаҳоншиносии исломӣ ба шумор меояд. Ба эҳтимоли қавӣ, муаллифи китоби мазкур дар қисмати аввали бахшҳои он ғолибан ва дар қисмати дувум ҷузъан аз маводи «Тоҷнома»-ҳои сосонӣ истифода кардааст. Чунин як эҳтимолро на танҳо мувофиқати мавзӯоти «Тоҷнома»-ҳои сосонӣ бо матолиби қисматҳои аввалу дувуми бахшҳои ин китоб, балки ба ҳайси унвони китоб пазируфта шудани вожаи «ат-Тоҷ» («Тоҷнома») низ таъйид мекунад.

Ҳамин тариқ, дар заминаи маълумоте, ки доир ба «Тоҷнома»-ҳо дар сарчашмаҳо омадааст, метавон бар вучуди тарҷумаҳои арабии дасти кам ҷаҳор китоби мустақили «Тоҷнома» дар қарнҳои нахусти ислом қоил буд:

Китоби аввал ҳамон «Тоҷнома»-ест, ки дастраси Ибни Қутайба буд ва, бино ба пораҳои боқимонда аз он дар «Уюн-ул-ахбор», ба шарҳи ҳол, суҳанони ҳикматомез ва панду андарзҳои Хусрави Парвиз ихтисос дошт.

Китоби дувум ҳамон «Тоҷнома»-ест, ки дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим таҳти унвони «ат-Тоҷ фӣ сирати Анӯшервон» ба қайд омада ва мутарҷими он Ибни Муқоффаъ таъйин шудааст. Ин тарҷума то охири қарни даҳум вучуд дошта ва мавриди иқтибосу истифодаи донишманди маъруфи асри мазкур Абӯалии Мисқвайҳ қарор гарифтааст<sup>1</sup>. Ховаршиноси маъруф М.Гриняски дар солҳои шастуми асри гузашта дар яке аз китобхонаҳои Истанбул дастнависеро пайдо кард, ки он шомили тарҷумаи арабии чанде аз асарҳои паҳлавӣ буд. Ин асарҳо дар мавзӯи расму русум ва қавонини кишвардорӣ ва одоби дарбору аҳли он таълиф шуда ва аз андарзнамаҳои сиёсӣ ба шумор меоянд. Ба ақидаи донишманди мазкур, яке аз қитъаҳои пайдошуда, ки дар он аз одоби бори наврӯзӣ, суҳанронҳои бузургон, монанди раиси дабирон, мӯбадонмӯбад, вазири бузург, раиси сипоҳ хитобан

---

<sup>1</sup>محمدی، محمد. تاریخ و فرهنگ ایران در دوران انتقال از عصر ساسانی به عصر اسلامی. ج. ۴. - ص. ۲۱۴-۲۲۸؛

ба шоҳ ва посухи шоҳ ба онон сухан рафтааст, аз ҳамин китоби «ат-Тоҷ фӣ сирати Анӯшервон» аст<sup>1</sup>.

Китоби севум ҳамон «Тоҷнома»-ест, ки Ибни Надим онро тахти унвони «ат-Тоҷ ва мо тафоалат фиҳи мулукухум» овардааст. Аз ин китоб то имрӯз поре ба даст наёмадааст, вале аз рӯи унвони он ва дар қиёс бо осори дигаре, ки матлабҳоеро доир ба равнақи пешгӯиҳо ва фолзаданҳо дар дарбори Сосониён шомил ҳастанд<sup>2</sup>, метавон ҳақс зад, ки ин «Тоҷнома» ҳикоёт ва дostonҳоеро, ки дар ин замина аз подшоҳони эронӣ ривоят мешудааст, дар бар доштааст.

Китоби чаҳорум ҳамон «Тоҷнома»-ест, ки он мавриди истифодаи муаллифи «ат-Тоҷ фӣ ахлоқ-ил-мулук» қарор гирифта буд. «Тоҷнома»-ҳо дар даврони исломӣ мавриди истиқбол, тарҷума ва пайравии адибони арабизабон қарор гирифтанд. Дар натиҷа, чанде аз осори ин силсила ба забони арабӣ баргардон шуда ва бо ин бахше аз таърих, афкори ахлоқӣ ва таълимоти сиёсии Эронзамини тоисломӣ ҳаққи бақо ва тадовум дар муҳити исломӣ пайдо кард. Номи яке аз мутарҷимони «Тоҷнома»-ҳои паҳлавӣ ба арабӣ – Абдуллоҳ ибни Мукаффаъ ва китоби тарҷумакардаи ӯ маълум аст. Мутарҷимони «Тоҷнома»-ҳои дигар маҷхул мондаанд. Вале муҳим он аст, ки тавассути тарҷумаҳои «Тоҷнома» анъанаҳои навъе аз анвои насри паҳлавӣ дар муҳити чадид идома пайдо кард.

«Ойиннома» ба дастае аз китобҳои аҳди Сосониён итлоқ мешавад, ки мавзӯи онҳоро «одобу русуми дарбор, маротиб ва мақомоти бузургони давлат ва намояндагони табақоти иҷтимоӣ, қаваид ва русуми бозиҳо ва саргармиҳо, одоби ҷанг, ойинҳои баргузори ҷашнҳои эронӣ, монанди Наврӯз, Меҳргон ва Сада, мавзӯоти динӣ ҳамроҳ бо зикри устураҳо, дostonҳо, латифаҳо ва суханони ҳикматомез»<sup>3</sup> дар бар мегирифтааст. Ба ин маънӣ, «Ойиннома» низ мисли «Тоҷнома» китобе мунҳасир ба фард набуда, балки унвони умумии силсилаи китобу рисолаҳо доир ба одоб ва русуми илм, фан, ҳунар ё падидаест, ки ба таври умум бо умуру вазифаҳои кишвардорӣ ва дарбори салтанатӣ алоқаманд мебошад. Дар ҷомеаи табақотии Сосониён аз ҳар шахс, ки ин ё он мақом ва вазифаро дар ниҳоди идории кишвар ишғол мекард, талаб карда мешуд, ки ойин ва русуми марбут ба вазифаи худро, ки дар «Ойиннома»-и хоси он мақом ва мартаба маҷмӯъ гардида буд, бидонад ва онҳоро риоят кунад. Аз ин ҷост, ки дар аҳди Сосониён ойинномаҳои мутааддид мавҷуд буданд ва ба иддае аз онҳо дар

<sup>1</sup>Grignaschi M. Quelgues specimens de la litterature Sassanide // Journal asiatique, 1966, t.254.- P.1-142.

<sup>2</sup>محمدى، محمد. الترجمة و النقل عن الفارسية في القرون الإسلامية الأولى. منشورات توس، تهران ۱۳۷۴/۱۹۹۵. ص. ۱۹۸.

<sup>3</sup>تفضلى، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۴۵.

китобу рисолаҳои паҳлавие, ки то замони мо расидаанд, ишороте рафтааст<sup>1</sup>.

Ойинномаҳои паҳлавӣ бино бар иштимолҳои худ бар одоб ва қоидаву ойини кишвардорӣ, ки ҳокимони хилофати исломӣ дар марҳалаи бунёдгузори давлати худ ба маърифат ва баҳрабардорӣ аз он ниёзманд буданд, дар қарнҳои VIII-IX мавриди тарҷумаву бозгӯиҳо қарор гирифтанд. Бино ба ахбори муаллифи «ал-Фихрист», Ибни Муқаффаъ «Ойиннома фи-л-ойин», яъне, «Ойиннома дар бораи ойинҳо»-ро ба арабӣ тарҷума кардааст<sup>2</sup>. Тарҷумаи ин китоб дар баҳши дигари «ал-Фихрист» низ, ки сухан дар он дар бораи китобҳои таълифкардаи эронӣ дар таърих ва саргузашти саҳеҳи шоҳони онҳо меравад, таъйид шудааст. Ҳам асли китоб ва ҳам тарҷумаи Ибни Муқаффаъ аз байн рафтааст, вале дар қарни даҳум нусхаи паҳлавии «Ойиннома» вучуд дошта ва донишманди он даврон Масъудӣ онро дида ва чунин тавсиф кардааст: «Эронӣ китобе доранд бо номи «Гоҳнома», ки мансабҳои мамлақати Эрон дар он ҳаст ва онро ба шашсад мансаб мураттаб кардаанд. Ва ин китоб чузви «Ойиннома» аст ва маънии «Ойиннома» «китоби русум» аст. Ва китобе бузург аст дар чанд ҳазор варақ, ки чуз ба назди мӯбадон ва дигар соҳибони мақомоти муътабар ёфт нашавад»<sup>3</sup>. Аз қавли Масъудӣ бармеояд, ки ин «Ойиннома»-и бузург китоби «Гоҳнома» - чадвали унвони шашсад мансабу вазифаи идории замони Сосониёро низ дар бар мегирифтааст. Аҳли таҳқиқ бар онанд, ки ҳамин асар буда, ки онро Ибни Муқаффаъ тарҷума кардааст<sup>4</sup>.

Ба чуз аз ин «Ойиннома»-ибузург, дар асрҳои VIII-IX боз чанд ойинномаи дигар ба арабӣ баргардон шуда буданд. Аз ҷумла, Ибни Надим дар боби марбут ба китобҳои, ки дар ҳунари асптозӣ, силоҳдорӣ, олотии ҳарбӣ ва ғайра таълиф шудаанд, аз тарҷумаи ду «Ойиннома»-и паҳлавӣ ном мебарад. Яке аз ин китобҳо «Ойин ар-рамӣ ли Баҳром Чур ва қила ли Баҳром Шубин» (Ойини тирандозӣ аз Баҳроми Гӯр ва гӯянд аз Баҳроми Чӯбин) аст<sup>5</sup>. Чунон ки аз унвони китоб пайдост, интисоби он ба яке аз ду шахси таърихии Эронзамин мавриди тардиди Ибни Надим қарор гирифтааст. Таъкид ҷоиз аст, ки ҳар ду Баҳром дар шӯҷоату қаҳрамонӣ шӯҳрати афзун доранд. Вале бо таваҷҷуҳ ба он, ки маҳорати Баҳроми Гӯр дар шикору тирандозӣ мавзӯи дostonero фароҳам овардааст, интисоби ин «Ойиннома» ба ӯ беасос нест. Мутарҷими китоб ва муҳтавои он маълум нест, аммо бар асоси унвонаш метавон ҳадс зад, ки он дастур ва қоидаҳои доир ба навҳои мухталифи тирандозӣ шомил будааст.

---

<sup>1</sup> تفضلی، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۲۸.

<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۲.

<sup>3</sup> مسعودی، علی بن حسين. التنبيه و الاشراف. - ص. ۹۷-۹۸.

<sup>4</sup> تفضلی، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۶۲.

<sup>5</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۷۶.

«Ойиннома»-и дигаре, ки дар «ал-Фихрист» ба қайд омадааст, «Ойин-аз-зарб би-с-саволича» (Ойини чавгонбозӣ) ном дорад<sup>1</sup>. Чавгонбозӣ аз навъҳои маъруфи варзиши эронӣ ба шумор меомад. Он аз давраи Ҳорунарашид (783-809) сар карда дар Хилофати аббосӣ низ маъмул гашт. Метавон ҳадс зад, ки «Ойиннома»-и мазкур низ дар ҳамин давра аз ҷониби мутарҷими номаълум аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума гардид, то ниёзи мухлисони мусулмони ин бозиро ба маърифати қонуну қоидаҳои он қонё гардонад. Ин ду «Ойиннома» зоҳиран ҷузъе аз «Ойиннома»-и бузург ба шумор намеомада ва бар сари худ мустақил будаанд, вагарна, Ибни Надим ҳар яки онҳоро алоҳида ба қайд намеовард.

Як «Ойиннома»-и дигаре, ки ба бунёнгузори салтанати Сосониён – Ардашер ихтисос дорад, то замони мо расидааст. Матни кӯтоҳи онро М.Гриняски дар яке аз дастнависҳои арабии китобхонаи Истанбул дарёфта буд. Матни мазкур, ки «Ойин ли Ардашер» номгузорӣ шудааст, дастуроти ин шоҳаншоҳро доир ба одоб ва русуми табақаи ашроф ва панду ҳикматҳои ӯро дар бар гирифтааст<sup>2</sup>.

Аз тарҷумаи «Ойиннома»-ҳо пораҳои дар китобҳои таърихиву адабии қарнҳои нахустии ислом нақл шудаанд. Аз ин лиҳоз китоби «Уюн-ул-ахбор»-и Ибни Қутайба бар манбаъҳои дигаримтиёз дошта, ёздаҳ қитъаро аз «Ойиннома» дар бар мегирад<sup>3</sup>. Ин қитъаҳо, ки ҳамагӣ бо ҷумлаи «Дар китоб- ал-Ойин (= Ойиннома) хондам» сар мешаванд, матлабҳои гуногунро фаро гирифтаанд.

Қитъаи зер аз «Ойиннома» дар «Фурар-ус-сияр»-и Саолабӣ низ иқтибос шудааст: «Дар китоби «Ойин» омадааст, ки мардум дар замони Ҷам бар пояи дарозии зиндагӣ радабандӣ мешуданд ва ҳар кӣ солхӯрдатар буд, пойгоҳе волотар дошт. Пас аз он дар рӯзгори Заҳҳок пойгоҳи мардум аз рӯи дорой санчида мешуд ва дар ҳангоми подшоҳии Фаридун ба дорой ва пешина буд. Дар замони Манучеҳр ба решаҳо ва пешинаҳо нигариста мешуд ва дар рӯзгори подшоҳии Кайковус ба дониш ва хирад, дар замони Кайхусрав ба диловарӣ ва ба рӯзгори Луҳросп ба диндорӣ ва покдоманӣ. Дар замони шоҳони пас аз ӯ андозаи бузургӣ ба шарофату бузургворӣ буда ва дар замони подшоҳии Анӯшервон ба ҳамаи инҳо, ҷуз дорой, нигариста мешуд, ӯ дороиро дар шумор намеовард»<sup>4</sup>. Абӯрайҳони Берунӣ низ дар осори худ ду бор ба китоби «Ойиннома» истинод карда ва матолиберо аз он зикр намудааст<sup>5</sup>.

---

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۷۶.

<sup>2</sup>Grignaschi M. Quelques specimens de la litterature Sassanide. - P.91-102.

<sup>3</sup>ابن قتیبہ. عيون الاخبار. ج. ۱. - ص. ۱۵۲، ۱۵۰، ۱۰۳، ۵۳، ج. ۲. - ص. ۲۶۰، ۲۲۱.

<sup>4</sup>ثعالبي مرغني. شاهنامه كهن. پارسى تاريخ غرر السير. - ص. ۴۶.

<sup>5</sup>تفضلي، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۴۷.

Ба ҷуз аз иқтибосоти мустақим аз «Ойиннома» як идда аз муаллифони китобҳои таърихиву адабии қарнҳои нахустини исломӣ бидуни он, ки номи «Ойиннома»-ро зикр кунанд, матлабҳоеро аз он китоб нақл кардаанд. Чунончи, аҳли таҳқиқ муттафиқ бар онанд, ки матолиби марбут ба чашнҳои бостонии эронӣ дар «ат-Тоҷ фӣ ахлоқ-ал-мулук»-и Ҷоҳиз, «ал-Осор-ул-боқия»-и Берунӣ, «Аҷоиб-ул-маҳлуқот»-и Қазвинӣ ва «Наврӯзнама»-и мансуб ба Хайём аз тарҷумаҳои арабии «Ойиннома»-ҳои паҳлавӣ гирифта шудааст<sup>1</sup>. Ҷамчунин матлабҳои, ки дар бораи табақоти иҷтимоӣ ва мансабу мартабаҳои аҳди Сосониён дар «Таърих»-и Яъқубӣ, «ат-Танбиҳ ва-л-ишроф» ва «Муруҷ-уз-заҳаб»-и Масъудӣ, «Форснома»-и Ибни Балхӣ ва китобҳои дигари арабиву форсии асрҳои миёна зикр шудааст, аз тарҷумаи арабии «Ойиннома»-ҳои паҳлавӣ, дақиқтараш аз «Гоҳнома»-е, ки ба таркиби он ворид буд, маъхуз аст<sup>2</sup>.

Ҷамин тариқ, муаллифони осори таърихиву адабии қуруни вусто тарҷумаҳои арабии «Ойиннома»-ҳоро мавриди иқтибосу истинод ва бозгӯии мукаррар қарор додаанд, вале, мутаассифона, маъхази худро таъйин ва ташхис накарда ва мисли Ибни Қутайба дар китбаҳои фавқуззикр бо ҷумлаи «Дар «Ойиннома» хондам» иқтифо намудаанд. Метавон эҳтимол дод, ки маъхази аксари муаллифон ҳамон тарҷумаи «Ойиннома»-и бузург буда, ки онро Ибни Муқаффаъ ба арабӣ даровардааст. Ҷаминро низ бояд дар назар дошт, ки ба ҷуз аз тарҷумаи Ибни Муқаффаъ «Ойиннома»-ҳои хоси дигар низ вучуд дошта ва дар нахустин садаҳои исломӣ бо ҳиммати мутарҷимони маҷхул ба арабӣ баргардон шудаанд. Метавон тахмин кард, ки тарҷумаи ин «Ойиннома»-ҳо низ дар дастраси муаррихону адибони қуруни вусто ва мавриди истифодаи онҳо қарор доштааст.

Ба ҳар оӣин, тарҷумаҳои арабии «Ойиннома»-ҳо дар асрҳои VIII-IX боиси ҳифзу тадовуми суннатҳои як шоҳаи махсуси насри паҳлавӣ дар муҳити исломӣ гардиданд. Осори ин шоҳаро Ибни Надим бесабаб дар шумори китобҳои таърихӣ ба қайд наовардааст. «Ойиннома»-ҳо бо вучуди дар муҳтавои онҳо имтиёз доштани мавзӯоти марбут ба расму русум ва одобу қоидаҳо дар назари муаллифони нахустин садаҳои исломӣ арзиши таърихӣ доштанд ва барои омӯхтани гузаштаи Эронзамин ва баҳра бардоштан аз он маъхази муътабар мебошанд.

«Китоб-ус-сувар». Китоби дигаре, ки аз насри таърихӣ паҳлавӣ дар нахустин садаҳои исломӣ ба арабӣ тарҷума шуд, мавсум ба «Китоб-ус-сувар» ё дар шакли комилаш «Китоб сувар мулук Банӣ Сосон» (Китоби суратҳои шоҳони хонадони сосонӣ) аст. Тавсифи ин китобро муаррих ва ҷуғрофидони бузурги араб Масъудӣ (ваф. 956)

<sup>1</sup> تفضلى، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۴۸.

<sup>2</sup> محمدى، محمد. الترجمة و النقل عن الفارسية فى القرون الاسلامية الاولى. - ص. ۲۶۱-۲۷۱.



дар китоби «ат-Танбиҳ ва-л-ишроф»-и худ бад-ин тарз овардааст: «Ба соли 303 (915-916 мелодӣ) дар шаҳри Истаҳри Форс ба назди яке аз бузургзодагони Эрон китобе бузург дидам, ки аз улуму ахбор ва биноҳо ва тадбирҳои эронӣ матолиби фаровон дошт, ки чизе аз онро дар китобҳои дигар чун «Худойнома» ва «Ойиннома» ва ғайра надида будам. Тасвири бисту ҳафт тан аз мулуки Эрон аз хонадони сосонӣ – бисту панҷ тан марду ду зан дар он буд. Ва ҳар якеро ба рӯзи марг, пир буда ё чавон, бо зевару тоҷ ва ришу чехра тасвир карда буданд бо қайди ин, ки инон чаҳорсаду сию се солу як моҳу ҳафт рӯз подшоҳӣ кардаанд. Ва расм чунон буда, ки вақте яке аз шоҳон бимурдӣ, тасвири ўро кашида, ба хазина месупурданд, то зиндагон аз васфи мурдагон беҳабар намонанд. Сурати подшоҳе, ки дар чанг буд, истода ва подшоҳе, ки ба қорҳои мамлакат мепардохт, нишаста менигоштаанд, бо зикри саргузашти ҳар подшоҳ ва рафтори вай бо хавосси ёрон ва авоми райят ва ҳодисаву воқеоти муҳим, ки ба даврони подшоҳии вай иттифоқ афтада буд»<sup>1</sup>.

Ин китоб, бино ба ахбори Масъудӣ, дар нимаи чумодиюлохири соли 113/731 аз рӯи санадҳои хазоини шоҳони эронӣ тадвин шуда ва барои халифай умавӣ Ҳишом ибни Абдулмалик (724-743) ба арабӣ баргардон шудааст. Масъудӣ сурати ду тан аз подшоҳони сосонӣ – шоҳи нахуст аз ин хонадон – Ардашер ва шоҳи охир – Яздгирдро дар китоби худ тавсиф кардааст. Масъудӣ афзудааст, ки суратҳо «бо рангҳои шигифт, ки акнун назири он ёфт намешавад ва бо тилову нуқраи маҳлул ва мис ҳаққокӣ шуда. Сафҳа ба ранги фарфирӣ буд бо сохте аҷиб, ки аз фарти некӯӣ ва диққати сохт надонистам, коғаз аст ё пӯст»<sup>2</sup>. Аз навиштаи Масъудӣ метавон ба хулосаҳои зер расид: яқум, китоби фавқуззикр шомили таърихи подшоҳони сосонӣ буда, саргузашти ҳар яке аз онҳо, шарҳи ободкориву додгустарияшонро ҳамроҳ бо суратҳои рангашон дар бар доштааст. Дувум, ин китобро эронӣ эҳтиром ва тамҷид мекардаанд ва он танҳо дар хонадонҳои бузургон ва ашрофи эронӣ ниғаҳдорӣ мешудааст. Севум, суратҳои шоҳони сосонӣ бо санъати олиӣ пайкаранигорӣ ва рангҳои маҳсусе, ки дар асри Масъудӣ ёфт намешудаанд, ҳамчунин дар коғазӣ босифате, ки онро аз пӯст фарқ кардан душвор буд, кашида шуда будаанд. Чаҳорум, арзиши таърихӣ ин китобро Масъудӣ ҳамсанг бо «Худойнома», «Ойиннома» ва «Гоҳнома» доништа, вале таъкид кардааст, ки он асаре ғайри ин китобҳо будааст. Панҷум, Масъудӣ тарҷума шудани ин китобро ба забони арабӣ барои халифай умавӣ Ҳишом шарҳ додааст, вале унвони китобро таъйин накардааст.

Ба ин китоб, чуз аз таърихномаи Масъудӣ, дар маъхазҳои дигар низ ишора шудааст. Яке аз ин маъхазҳо «Синий мулук-ал-арз ва-л-анбиё»-и Ҳамзаи Исфаконӣ ва дигаре «Мучмал-ут-таворих ва-л-

---

<sup>1</sup>مسعودی، علی بن حسین. التنبيه و الاشراف. - ص. ۹۹.  
<sup>2</sup>مسعودی، علی بن حسین. التنبيه و الاشراف. - ص. ۱۰۰.

қисас»-и форсиимуаллифи номаълум аст, ки дар пайравӣ аз китоби арабии Ҳамзаи Исфохонӣ ва бо истифода аз матлабҳои он таълиф шудааст. Ҳамза дар чанд маврид ба китобе, ки Масъудӣ шарҳ додааст, истинод намуда ва номи он китобро низ ба сароҳат «Сувар мулук Банӣ Сосон» таъйин кардааст. Муаррихи мазкур ҳини сухан аз салтанати Сосониён саргузашти ҳар як подшоҳ ва шаҳрхоеро, ки ӯ бунёд ниҳодааст, зикр карда, сипас бо истинод ба китоби мазкур сурати онҳоро яқояк васф намудааст. Ба ин маънӣ, матлабҳое, ки Ҳамза доир ба ҳар як подшоҳ зикр кардааст, ҳамоҳангии том бо муҳтавои китобе дорад, ки онро Масъудӣ шарҳ додааст.

Чунон ки қаблан ишора шуд, «Китоб-ус-сувар» бо супориши халифа Ҳишом ибни Абдулмалик соли 113/731 ба арабӣ баргардон шудааст, вале дар ҳеч маъхазе номи мутарҷими он наомадааст. Забехуллоҳи Сафо бидуни зикри далеле эҳтимол додааст, ки мутарҷими китоб метавонад Ҷабала ибни Солим бошад<sup>1</sup>. Бо назардошти он, ки дар аҳди халифа Ҳишом теъдоде аз мутарҷимони эронӣ ба кори тарҷума пардохта буданд ва аз миёни онон Ҷабала ибни Солим ба нақли осори таърихии эронӣ ихтисос дошт, чунин эҳтимол дур аз ҳақиқат наменамояд.

«Сакисарон». Асари дигари таърихӣ, ки аз насри паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума шуд, китобе мавсум ба «Сакисарон» аст, ки онро Масъудӣ дар «Муруч-уз-заҳаб ва маодин-ул-ҷавҳар»-и хеш зикр кардааст. Номи ин китоб дар нусхаҳои «Муруч-уз-заҳаб» дучори таҳриф шуда ва Барбе де Менар – мусахҳеҳи китоби Масъудӣ, ҳамчунин А.Кристенсен ва А.Тафаззулӣ онро дар ҳамин сурати «Сакисарон», ки он маънии «Сарони Систон»-ро ифода мекунад, овардаанд<sup>2</sup>. Забехуллоҳи Сафо ва М.Муҳаммадӣ эҳтимол додаанд, ки асли ин калима шояд «Саксийӣ» ё «Саксикин» ба маънии сақоӣ – систониҳо бошад<sup>3</sup>. Ба ҳар оӣин, аҳли таҳқиқ бар онанд, ки робитае миёни унвони китоби мазкур ва силсилаи аҳбору вақоеи сақоӣ вучуд дорад. Ишораи зерини Масъудӣ ба муҳтавои китоб низ ин робитаро таъйид мекунад: «Эрониён дар бораи кушта шудани Афросиёб ва чигунагии қатли ӯ ва пайкорҳое, ки миёни эрониёну туркон буд ва кушта шудани Сиёвуш ва ҳикояти Рустам писари Дастон сухани бисёр доранд ва ин ҳама дар китоби мавсум ба «Сакисарон», ки Ибни Муқаффаъ аз форсии қадим (паҳлавӣ – Н.З.) ба арабӣ тарҷума карда, ба шарҳ омадааст бо ҳикояти Исфандёр писари Гуштосп писари Лухросп ва кушта шудани ӯ ба дасти Рустам

---

<sup>1</sup>صفاء، ذبيح الله. حماسه سرايي در ايران . انتشارات امير كبير، تهران، ۱۳۶۶ - ص. ۵۸.

<sup>2</sup>تفضلي، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۶۹؛ كريستنسن، آرتور. كيانيان. - ص. ۱۶۳.

<sup>3</sup>صفاء، ذبيح الله. حماسه سرايي در ايران. - ص. ۴۶.

писари Дастон ва кушта шудани Рустам ба дасти Баҳман писари Исфандёр ва дигар аҷоиб ва ахбори эронӣни қадим»<sup>1</sup>.

Масъудӣ бори дувум аз ин китоб ҳини сухан аз подшоҳии Кайхусрав ёдовар шуда ва матлаби зерро баён намудааст: «Ба назари эронӣён, чунон ки дар китоби «Сакисарон» ҳаст, пеш аз Кайхусрав чадди падарии ӯ – Кайковус подшоҳӣ дошт ва доништа нест, ки ӯ писари кист. Кайхусрав фарзанд надошт ва шоҳӣ ба Лухросп дод»<sup>2</sup>.

Бо таваҷҷуҳ ба матолибе, ки китоби «Сакисарон» дар бар мегирифтааст, онро метавон яке аз манбаъҳои муҳимми достону ривоятҳои кӯҳани эронӣ ва таърихи ҳамосии аҳди Каёнӣён ба шумор овард. Масъудӣ таъкид кардааст, ки эронӣён ин китобро, бино ба шомили ахбори гузаштагон ва саргузашти шоҳонашон буданаш бузург мешуморидаанд. Мусалламан, ҳамин арзиши адабиву таърихӣ ва шухрату эътибори китоби «Сакисарон» боис шуда, ки Ибни Муқаффаъ ба тарҷумаи арабии он пардохтааст.

«**Китоб ал-Банкаш**» ё китоби «**Пайкор**». Масъудӣ дар «Муруҷ-уз-заҳаб»-и хеш ҳини сухан аз қалъае, ки миёни сарзамини Алан ва кӯҳҳои Қафқоз ҷойгир аст ва онро дар даврони пешин гӯё Исфандёр бунёд ниҳода будааст, таъкид мекунад, ки «Исфандёр дар Машрик бо ақвоми мухталиф чангҳои бисёр дошт, ҳам ӯ буд, ки ба диёри Турк ронд ва шаҳри Суфрро, ки ба сарсаҳтӣ ва муноат миёни эронӣён зарбулмасал буд, вайрон кард. Аъмоли Исфандёр ва он чи бигуфтем, дар китоби маъруф ба «Китоб-ал-Банкаш», ки Ибни Муқаффаъ ба забони арабӣ оварда, мазкур аст»<sup>3</sup>.

Аз суханони Масъудӣ метавон истинбот кард, ки дар мавзӯи чангҳои Исфандёр ботуркон, кушодани Рӯйиндиҷ («Суфр» ба арабӣ – Н.З.) ва корзорҳои дигари ӯ китобе миёни эронӣён вучуд доштааст. Номи он – «ал-Банкаш» мусалламан дучори таҳриф шуда ва маъние аз он барнамеояд. Ҷ.Маркварт ва дар пайравӣ аз ӯ иддае аз муҳаққиқон вожаи «Банкаш»-ро таҳрифе аз «Пайкор» доништаанд ва унвони «Пайкор»-ро мувофиқ бо муҳтавои китоб ба шумор овардаанд<sup>4</sup>. Дар баробари ин М.Муҳаммадӣ муътақид аст, ки «Банкаш» ҳамон китоби «Сакисарон» мебошад ва бар асари тасҳиф номи як китоб ба ду сурат даромадааст. Дар таъйиди ин матлаб ӯ таъкид кардааст, ки аввалан имлои арабии ин ду вожа ба ҳам наздик аст, сониян, матолиби ин ду китоб, бино ба шарҳи Масъудӣ, мушобех ба якдигар аст<sup>5</sup>.

<sup>1</sup>مسعودی، علی بن حسین. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۲۱.

<sup>2</sup>مسعودی، علی بن حسین. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۲۲.

<sup>3</sup>مسعودی، علی بن حسین. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۱۹۰.

<sup>4</sup>صفاء، ذبیح الله. حماسه سرایی در ایران. - ص. ۴۷.

<sup>5</sup>محمدی، محمد. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام و آثار آن در تمدن اسلامی

و ادبیات عربی. - ص. ۱۶۶.

Тааммули амиқтар бар матолибе, ки Масъудӣ дар мавриди ин ду китоб баён кардааст, дур аз савоб будани ақидаи М. Муҳаммадиरो таъйид мекунад. Бино ба шарҳи Масъудӣ бар китоби аввал – «Сакисарон», ки қаблан зикр шуд, метавон ба хулосае омад, ки муҳтавои он як давраи нисбатан тӯлонии таърихи Каёниёнро аз аҳди Афросиёб то кушта шудани Рустам ба дасти Баҳман писари Исфандёр дар бар мегирифт. Аз шарҳе, ки Масъудӣ дар мавриди китоби «Банкаш» ё «Пайкор» овардааст, пайдост, ки ин китоб ба аъмоли Исфандёр ихтисос дошта ва аз лиҳози замони низ воқеоти марҳалаи нисбатан кӯтохро (дар қиёс бо китоби аввал) дар худ гунҷоишдодааст. Сониян, агар ин ду китоб яке мебуданд, ин амр дар наҳваи истиноди Масъудӣ ба онҳо ба ин ё он тарз аён мегардид, ҳол он ки чунин оҳанге дар суҳанони ӯ ба назар намерасад. Бино бар ин, китоби алоҳида ва ғайри «Сакисарон» будани китоби «Банкаш» ба назар мусаллам менамояд, ҳарчанд эҳтимол дорад, ки номҳои ин ду китоби мустақил таҳриф шуда ва аз асл дур афтаданд.

#### 4.4. ТАРҶУМАИ ОСОРИ АХЛОҚӢ

Баҳши аъзами осори фикрӣ ва фарҳангии Эронзамини тоисломӣ, ки дар нахустин садаҳои исломӣ ба забони арабӣ баргардон шудаанд, китобу рисолаҳои ахлоқӣ мебошанд. Сабаби ин, қабл аз ҳама, дар он буд, ки осори ахлоқӣ аз борвартарин ва ғанитарин риштаҳои насри тоисломии эронӣ ба шумор меомад. Теъдоди зиёди пандномаву андарзномаҳо, ки аз даврони куҳан дар миёни қавмҳои эронӣ роиҷ буданд, аз таълимоти ахлоқии Зардушт сарчашма гирифта, ҳадафи нишон додани роҳи растагорӣ ва зиндагии солихро ба афроди ҷомеа доштанд.

Дарунмоя ва меҳвари ин таълимотро дастуроти сегонаи «куниши нек», «гӯиши нек», «маниши нек» ташкил карда буданд. Риояи ин дастурот ва амал аз рӯи онҳо, тибқи тасаввур ва ҷаҳоншиносии зардуштӣ, саодати дунёи фониву бокиро барои мардум замонат меод. Аз ин ҷост, ки роҳнамоӣ ба арзишҳои олии ахлоқӣ, далолати хайр ва ислоҳу салоҳи ахлоқи фардиву иҷтимоӣ рисолати бузург ва вазифаи шоиста ба шумор омад, ки дар ҷомеаи табақоти Эронзамини тоисломӣ он ба уҳдаи подшоҳон, вазирон, ҳакимон ва динмардони зардуштӣ вогузошта шуд. Дар ин замина панду андарзҳои фаровон ва китобу рисолаҳои ахлоқиву тарбиявии мутааддиде арзи вучуд карданд, ки, ғолибан, ба подшоҳони таърихиву афсонавӣ, бузургони давлат ва мӯбадону ҳирбадони зардуштӣ мансуб ҳастанд. Ин ҷо масъалаи сихҳат ва дурустии интисоби он панду андарзҳо матраҳ нест ва лузуме ҳам надорад, ки ин нисбат доданҳо ҳатман воқеият ва ҳақиқат дошта бошад. Баръакс, қонуну қоидаҳои ҳоким бар ҷомеаи табақотӣ худ тақозо мекард, ки сарони ҷомеа ба ҳайси роҳнамо ва мураббии ахлоқиву маънавии

мардум пазируфта шаванд. Тазоҳури ҳамин қонуни нонавишта буд, ки ҳазорон сухани ҳикматомез ва панду андарзҳо дар китобҳои таъриху адаби арабиву форсӣ аз забони шоҳоне, мисли Ардашер, Хусрави Анӯшервон, Шопур, Кубод, Баҳман, Хушанг, Хурмуз, Хусрави Парвиз, Баҳроми Гур ва дигарон нақл шудаанд.

Расму ойини кишвардорӣ низ тақозо мекард, ки подшоҳони эронӣ ҳангоми чулус ба тахти шоҳӣ хитобаҳои пандомез ироа кунанд ва асосҳои ахлоқии сиёсат ва фаъолияти худро эълон доранд. Дар фарҷоми салтанат ё қабл аз марғи шоҳон низ аз забони эшон панду андарзҳо дар масъалаҳои мухталифи марбут ба сиёсати шоҳӣ ва ойини салтанатӣ ривоят мешуд, ки онҳоро метавон васиятномаҳои ахлоқиву сиёсӣ номид. Ҳамин расму ойини пандгузорӣ ва васиятномаҳои подшоҳони бостонӣ дар таърихнигории исломӣ нақши худро гузоштааст. Дар «Таърих-ур-русул ва-л-мулук»-и Табарӣ, «Синий мулук-ал-арз ва-л-анбиё»-и Ҳамзаи Исфохонӣ, «ал-Ахбор ут-тивол»-и Динаварӣ, «Ғурар-ус-сияр»-и Саолибӣ, «Ниҳоят ул-ираб фӣ таърих-ил-фурс ва-л-араб» ва мунтаҳо дар «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ ҳини сухан аз оғози салтанати ҳар яке аз шоҳон суханони ҳикматомези онҳо зикр гардида, пас аз баёни саргузашт ва марғи онҳо низ силсилае аз насихатҳову мавъизаҳои эшон нақл шудааст, ки маъҳази онҳо, ғолибан, ҳамон хитобаҳои тоҷгузорӣ ва васиятномаҳои шоҳон буд.

Яке аз аслҳои ойини салтанатӣ дар Эронзамини тоисломӣ он буд, ки подшоҳон на танҳо худ ба пандуандарзгӯӣ мепардохтанд, балки дастурҳои сиёсии пешгузаштагони худро мавриди омӯзиш қарор медоданд ва пайравӣ аз равиши писандида ва истиқбол аз маниши нақӯи онҳоро мояи салоҳи умури кишвардорӣ ба шумор меоварданд. Намунаи боризи арҷгузорӣ ба ҳикматҳои гузаштагон ҳамон равиши Хусрави Анӯшервон аст, ки худ низ дар таърихи адабу фарҳанги халқҳои эронӣ бо панду андарз ва гуфтори ҳақимона мумтоз аст. Муаллифи «Форснома» ба равиши нақӯи ин шоҳи сосонӣ бад-ин тарз ишора кардааст: «Чун подшоҳӣ бар Кисро Анӯшервони одил қарор гирифт, уҳуди Ардашер ибни Бобак пеш ниҳод ва васиятҳои ӯро, ки дар он уҳуд аст, қор баст. Ва ҳар қучо китобе буд аз ҳикматҳо ва сиёсат, мехонд ва он чи ӯро ихтиёр омад аз он, бармегузид ва қор мебаст»<sup>1</sup>.

Аз далелҳои он, ки зикр шуд, аён аст, ки таваҷҷуҳи омм ва фарогир ба панду андарз яке аз боризтарин вижагиҳои ҳастии маънавии халқҳои эронӣ қабл аз ислом будааст. Ҳамин ҳикматгароӣ ва андарзпазирӣ боис шуда, ки мардуми эронинаҷод ба таърих ва таҷрибаи зиндагии гузаштагони худ аз равшанӣ ахлоқу маънавият ва бо дидаи ибратҷӯӣ назар кунанд, аз таърих ҳикмати ахлоқии онро ҷӯё шаванд, аз ҳодисаву воқеоти гузашта панд бигиранд.

---

<sup>1</sup>Ибн ал-Балхӣ. Форснома. – Душанбе: «Дониш», 1989. -С.88.

Омилҳои мазкур мӯҷиб шуданд, ки дар аҳди Сосониён, хосатан дар авохири салтанати ин хонадон пандномаву андарзномаҳои зиёд рӯи қор омаданд, ки дар маҷмӯъ арзишҳои ахлоқии Эронзамини тоисломиро бозтоби мекунад.

Қисмати зиёде аз ин андарзномаву пандномаҳои паҳлави марбут ба ахлоқи фардӣ иҷтимоӣ, сиёсати шоҳӣ ва одоби кишвардорӣ дар нахустин садаҳои исломӣ бо кӯшиш ва ҳиммати мутарҷимони эронитабор ба забони арабӣ тарҷумаву бозгӯӣ шуданд ва таҳти унвонҳои «ухуд» (яъне аҳдномаҳо) ва «васоё» (яъне васиятномаҳо) дар муҳити исломӣ маъруфият ва маҳбубият пайдо карданд. Донистану ба қор бастанӣ матолиби ин китобҳо василае аз васоили тарбияи ахлоқӣ ва унсуре аз унсурҳои фарҳангу маърифати исломӣ ба шумор омад. Беҳуда нест, ки хулафои аббосӣ ба пурсиши тарбиятгарони фарзандонашон роҷеъ ба он, ки ба онҳо чиро биёмӯзонанд, дастур медоданд эшонро дар баробари омӯхтани китоби Худованд ба хондани «Аҳди Ардашер» ва «Калила ва Димна» водоранд<sup>1</sup>. Бесабаб нест, ки Хусрави Анӯшервон, Бузургмехр ва даҳҳо шоҳу вазир ва ҳақими тоисломии эронӣ, ки саросар маҷусӣ буданд, на танҳо бо ҳуқуқи қомил ба адабиёти исломӣ ворид гаштанд, балки дар паҳнаи ин адабиёт чун рамзҳои ҳикмату адолат ва сиёсати кишвардорӣ шинохта шуданд. Ин ҳама натиҷа ва самараи тарҷумаи китобу рисолаҳои ахлоқии паҳлавӣ ба забони арабӣ дар садаҳои VIII-IX аст.

Муҳимтарин маъхазе, ки доир ба осори ахлоқии тоисломӣ нисбат ба манобеи дигар маълумоти бештарро шомил аст, ҳамоно «ал-Фихрист»-и Ибни Надим ба шумор меояд. Дар баҳши «Китобҳои, ки эронӣ, румӣ, ҳиндӣ ва араб дар мавоиз ва одоб ва ҳикам таълиф кардаанд» Ибни Надим номи 44 асарро зикр кардааст<sup>2</sup>. К.А.Иностранцев 14 асарро аз ин номгӯӣ мусалламан тарҷумаҳои китобҳои паҳлавӣ дониста, як идда таълифоти дигарро ҷузъи осоре ба шумор овардааст, ки дар пайравӣ ва истиқбол аз адабиёти ахлоқии эронӣ иншо шудаанд<sup>3</sup>.

Дувумин маъхазе, ки аз он доир ба пандномаву андарзномаҳои тоисломӣ ва тарҷумаи онҳо ба арабӣ маълумоти пунарзишро метавон пайдо кард, китоби «Ҷовидон хирад» (ал-Ҳикмат-ал-ҳолида)-и Мисқвайҳ (ё Ибни Мисқвайҳ)-и Розист. Арзиши ин китоб ва имтиёзи он бар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим, ки бино ба тақозои табиати асараш танҳо номи осори тарҷумашуда аз паҳлавиро зикр кардааст, дар он аст, ки Мисқвайҳ матни арабии беш аз даҳ асари пандуахлоқии паҳлавиро қомилан ё ҷузъан нақл кардааст<sup>4</sup>.

<sup>1</sup>المبرد. الكامل فى اللغة و الادب. ج. ٢. - ص. ٤.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ٣٧٧.

<sup>3</sup>Иностранцев К.А. Сасанидские этюды. - СПб, 1909. - С.14-21.

<sup>4</sup>مسكويه، ابو على. الحكمة الخالدة. (جاويدان خرد). - ص. ١-٨٨.

Ба теъдоде аз пандномаҳои паҳлавӣ дар сарчашмаҳои дигари арабизабону форсизабон низ ишора рафта ва матолибе аз онҳо нақл гардидааст. Фузун бар ин, дар аксари китобҳои адаби садаҳои нахусти ислом аз забони шоҳону ҳақимони тоисломии эронӣ ҷумлаҳои кӯтоҳи ҳикматомез бидунитаъйини маъхазӣ онҳо оварда шудаанд. Бо тақия бар ин маъхазу манбаъҳо метавон доир ба чанде аз китобу рисолаҳои ахлоқӣ, ки дар даврони мавриди баҳс ба арабӣ баргардон шуда ва аксаран мутарҷимони онҳо номаълуманд, изҳори назар кард:

**Аҳд Ардашер(Аҳдномаи Ардашер).** Ин панднома аз лиҳози муҳтаво васиятномаи бунёнгузори давлати Сосониён ба шоҳони баъд аз вай буда, матолиберо доир баҷанбаҳои ахлоқӣ ва сиёсии одоби кишвардорӣ дар бар гирифтааст. Асли паҳлавии он боқӣ намондааст, вале матни тарҷумаи арабии он дар китоби «ал-Ғурра»-и муаллифи маҷхули нимаи дувуми асри X<sup>1</sup>, дар «Таҷоруб-ул-умам»-и Мисквайҳ<sup>2</sup>, дар «Наср-уд-дурар»-и ал-Обӣ<sup>3</sup> ва дар дастхатте, ки онро М.Гриняски дар китобхонаи Истанбул пайдо кардааст, мундариҷ аст<sup>4</sup>. Дар матнҳои арабӣ номи аҳдномаи мазкур дар шакли комили «Аҳд Ардашер ила-л-мулук-ат-толиййин мин баъдиҳи, яъне «Аҳдномаи Ардашер ба шоҳони пас аз худ» мазкур аст, ки ба муҳтавои рисола мувофиқат дорад ва ҷиҳати фарқ кардани он аз аҳдномаи дигари ин шоҳи сосонӣ, ки ба унвони фарзандаш аст, судманд мебошад.

Муаллифи «ал-Ғурра» ҳини шарҳи муҳтасари рӯзгор ва осори муаррих, ҷуғрофидон ва адиби арабизабон Аҳмад ибни Яҳё ибни Ҷобири Балозурӣ (ваф.892) ёдовар шудааст, ки ӯ китоби «Аҳд Ардашер»-ро ба назм даровардааст<sup>5</sup>. Ибни Надим ҳамчунин «Аҳд Ардашер»-ро дар муқаддимаи рӯихати панҷ китобе, ки ҳамагон бар ҳубии онҳо қоил будаанд, зикр карда ва бо инмақому мартабаи онро дар муҳити адабиву фарҳангии нахустин садаҳои исломӣ таъйид кардааст<sup>6</sup>. «Аҳд Ардашер»-ро бо эътимод ба матне, ки дар китоби «ал-Ғурра» омадааст, Эҳсон Аббос бо муқаддима ва таълиқот дар Бейрут мунташир сохт<sup>7</sup>. Муҳаққиқи мазкур, бино ба супориши халифаи аббосӣ Маъмун (813-833) ба муаллими фарзандаш роҷеъ ба водор сохтани ӯ ба омӯхтани «Аҳд Ардашер» дар баробари

---

<sup>1</sup> اردشير بن بابك. عهد اردشير. حقه و قدم له الدكتور احسان عباس. دار صادر للطباعة و النشر، بيروت، ١٩٦٧. - ص. ٣٥-٣٩.

<sup>2</sup> مسكويه، ابو على. تحارب الامم. ج. ١. ص. ١١٤.

<sup>3</sup> الآبى. نثر الدر. ج. ٥. تصحيح منيره محمد المدنى و حسين نصار. القاهرة ١٩٩٠. - ص. ٨٤-١٠٧.

<sup>4</sup> Grignaschi M. Quelgues specimens de la litterature Sassanide. - P.46-90.

<sup>5</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٢٦.

<sup>6</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٤٠.

<sup>7</sup> اردشير بن بابك. عهد اردشير. حقه و قدم له الدكتور احسان عباس. دار صادر للطباعة و النشر، بيروت، ١٩٦٧. - ص. ١١٢.

«Қуръон», ҳадс задааст, ки аҳдномаи мазкур бояд хеле пештар аз замони Маъмун ва шояд дар авохирӣ аҳди Умавиён (661-750) ба забони арабӣ тарҷума шуда бошад, то битавонад ин дараҷа шуҳрати фаровонро касб намояд<sup>1</sup>.

«Аҳд Ардашер»-ро метавон намунае беҳтарин аз аҳдномаҳои роиҷ дар насри паҳлавӣ ба шумор овард ва ба хотири огоҳӣ аз муҳтавои ин даста аз рисолати ахлоқӣ матолиби онро ба таври иҷмолий бад-ин сурат дастабандӣ кард:

Сиришти шоҳон имтиёз бар сиришти мардум дорад ва тӯли салтанат набояд шоҳонро ба сармастии фармонравой кашад, ки он аз сармастии бода сахттар аст.

Ҳар як шоҳ бояд андӯхтаҳои гузаштагони хешро аз худ кунад ва онро идома диҳад, вагарна, кораш рӯ ба табоҳӣ хоҳад овард.

Шоҳро хосону надимон ва мардуми зиёде ихота мекунанд ва ӯро зарур аст, ки нисбат ба онон равише дурустро ба кор гирад, зеро дурустии шаҳрёр барои мардум аз фаровонӣ беҳтар аст.

Подшоҳиву дин ду бародари ҳамзоданд, яъне, дину давлат ба ҳам вобастаанд. Бино бар ин, фурӯмоягон набояд ба кори дину омӯзиши он пардозанд, ки ин боиси табоҳии на танҳо дин, балки давлат низ хоҳад шуд.

Шоҳ бар тани мардум ҳоким аст, на бар дили эшон. Бино бар ин, ӯро мебояд, ки аз бидъатгузороне, ки така бар дин мекунанд, хушёр бошад. Аҳли динро набояд ба кори шоҳӣ даҳлате бошад. Берун монданиаҳли дин аз фармони шоҳон аз кӯтоҳҳои шоҳон аст.

Шоҳ ба чуз аз хосону муқаррабон ва вазирони худ аҳволи раоёро аз ашхоси дигар низ бипурсад, то дар паси пардаи торикӣ беҳабарӣ намонад.

Шоҳ бояд дар баробари мардум ду дарро кушояд: яке дари дилсӯзиву меҳрубонӣ, бахшандагиву навозиш, хушрӯиву кушодадилӣ; дигаре дари тундиву бим додан, пофишориву сахтгирӣ, танг гирифтани ҷазо додан. Ин ҳар ду моҳиятан дари меҳр ҳастанд.

Ҷанг бо нодурустиҳои сиришту равишҳои мардуми худ бояд муқаддам бар ҷанг бо мардуми бегона бошад, зеро бо дилҳое, ки ҳамнаво нестанд ва дастҳое, ки душмани якдигаранд, бо душманон ҷангидан муҳол аст.

Бекории мардум метавонад боиси табоҳии умури шоҳӣ гардад, зеро аз байни мардуми бекор, бино ба манишҳои мухталифи онҳо, равишҳои номатлуб ва душманиву кинатӯзӣ бархезад.

Шоҳ бояд тақсими мардумро ба чаҳор табақаи сипоҳиён (асворон), рӯҳониён (мӯбадон, ниёишгарон ва ҳирбадон), коргуздорон (дабирон, муначчимон ва табибон), пешагарон (кишоварзон, пешаварон ва бозаргонон) риоят кунад ва гузаштанро аз як табақаи иҷтимоӣ ба табақаи дигар манъ кунад, зеро дигаргунӣ дар пояҳои

---

<sup>1</sup> اردشير بن بابك. عهد اردشير. - ص. ۲۰۰.



мардум боиси рашку оз ва дар ниҳояти кор мӯчиби нобудии шахрёрӣ мешавад.

Агар ситам кардан бар гурӯҳе мояи дурустии кор ва осоишу амонати мардум бошад, шоҳ набояд худро аз чунин ситам кардан барҳазар дорад.

Агар шоҳ мардумро дар табоҳӣ бинад вабехтар кардани ҳоли онҳо аз дасташ наёяд, бояд чомаи шоҳиро аз тан бадар кунад, ҳамчунон ки чомаи шабушинро шитобон аз тан дармеоваранд.

Шоҳ бояд ҷонишини худро ошкоро эълон накунад, то ин боиси сар задани душманӣ миёни шоҳу ҷонишин нагардад. ӯро зарур аст, ки номи ҷонишинро дар ҷаҳор нома бинвисад ва онҳоро муҳр карда, бар ҷаҳор тан аз баргузидагони кишвар бисупорад ва як нусха аз он нома бо муҳри худ дар ҳазина нигоҳ дорад. Пас аз марги шоҳ бояд он номаҳоро кушоянд ва дар ҳолати мувофиқати онҳо номи шоҳро эълон намоянд.

Шоҳ бояд бахилӣ накунад, ки бенавой ба ӯ таҳдид намекунад; дурӯғ нагӯяд, ки касе ӯро ба дурӯғгӯӣ ногузир насозад; беҳуда хашм нагирад, ки пушаймонӣ ба бор орад; бекор нанишинад, ки бекорӣ хоси фурудастон аст; бар касе рашк набарад, ҷуз бар шоҳон ва кишвардории неки онҳо.

Хӯроку пӯшоки шоҳ бояд ҳамонанди хӯроку пӯшоки тӯдаи мардум бошад. Бартарии шоҳ бар мардум дар ин аст, ки шоҳ, ҳар гоҳ ки бихоҳад, некӣ тавонад кард ва тӯда чунин набошад.

Шоҳ бояд аз ифшои роз дар назди кӯдакону хидматгузори худ бипарҳезад, худро аз хашму озу худписандӣ дур дорад, то Аҳриман бар ӯ ғолиб наояд.

Хиради шоҳ бояд бар хоҳишҳои ӯ пирӯз бошад, зеро агар инони хоҳишҳо аз даст равад, хирадро забун кунад.

Шоҳон бо дастаҳои мухталифи мардум сарукордоранд: дастае аз бадӣ кардан ба подшоҳ хушнудтаранд, то ба некӣ кардан; дастае ба ҳама кас бадӣ карда ва бар муқобили сарварон далер шудаанд; дастае дар зоҳир фурутан ва дар ботин худписанданд; дастае дар назди шоҳ дар ҳаққи дигарон бадгӯӣ мекунанд ва аз ин барои худ суд меҷӯянд. Шоҳ бояд дар баробари ҳамаи ин дастаҳо аз мардум равиши матлубро ба кор гирад.

Шоҳ бояд дар бахшандагӣ, сахтгирӣ, сухангӯӣ ва хомӯшӣ миёнаравиро риоят кунад.

Барои ҳар кор, аз қабилӣ кору истироҳат, хӯрдану ошомидан, дониш омӯхтану хушгузаронӣ шоҳро бояд вақте муайян бошад ва соати он бояд мувофиқ шавад.

Шоҳзодагонро бояд ба шоҳӣ баргузид, ки аз фарзанди амуҳои шоҳ таваллуд ёфтаанд. Аз миёни онон касоне шоистаи подшоҳӣ ҳастанд, ки барӯманду бохирад бошанд, сустие дар раъй ва нақсе дар андом ва дини худ надошта бошанд. Дар ин ҳолат даъвогарони мақоми шоҳӣ камтар мешаванд ва ҳар кас ҳадди худро мешиносад.

Шоҳ бояд аз некхоҳону дӯстони қадими худ бар ивази ранчише рӯй нагардонад ва оғӯши худро барои ононе, ки нав дӯст шудаанд, саросар боз накунад.

Дар сари ҳар ҳазор сол балову мусибатҳои иҷтимоӣ фуруд меоянд, мардум тобеи ҳавову ҳавасҳои худ мешаванд, аз пойгоҳҳои хеш қадам фаро мениҳанд ва бар сарварон нофармонӣ мекунанд, он чи ки гузаштагон сохтаанд, вайрон ва он чиро, ки пешиниён устувор кардаанд, суст мегардонанд.

Дар фарҷоми аҳднома Ардашер ба шоҳоне, ки пас аз ӯ меоянд, таманно кардааст, ки Яздон пуштибону ниғаҳбони онҳо бошад, онҳоро бузург ва душманонашонро хор гардонад<sup>1</sup>.

Аз аҳдномаи Ардашер дар таърихномаҳои нахустин садаҳои ислом муқарраран ёд шудааст. Аз ҷумла, Абӯҳанифаи Динаварӣ дар «ал-Ахбор-ут-тивол» овардааст, ки «Ардашер ҳамон касест, ки ... аҳдномаи маъруфи худро барои подшоҳон навишт ва шоҳон аз он пайравӣ мекарданд ва бо ҳифз ва амал ба он табаррук мечустанд ва онро сармашқи кори худ қарор медоданд ва пайваста ба он назар мекарданд»<sup>2</sup>.

Масъудӣ низ дар «ат-Танбиҳ ва-л-ишроф»-и худ бо таъкиди он, ки «Ардашер писари Бобак дар охир аҳдномае барои мулуки аъқоби худ дар бораи тадбири дин ва мулк ба ҷо гузоштааст», суҳанони Ардашерро дар бораи фуруд омадани балоҳои иҷтимоӣ дар сари ҳар ҳазор сол нақл кардааст<sup>3</sup>.

Ҷоҳиз дар рисолаи худ дар мазаммати котибон «Аҳд Ардашер»-ро дар шумули китобҳои аз қабиле «Пандномаи Бузургмехр», расоили Абдулҳамиди Котиб ва Ибни Муқоффаъ, «Калила ва Димна», «Марвакнома» ва ғайра зикр карда, омӯхтан ва аз бар кардани онро ҷузъе аз фарҳанг ва маърифати умумии адибони муосири хеш ба шумор овардааст<sup>4</sup>.

Як идда аз муаррихони гузашта, аз қабиле Табарӣ, Саолибӣ, Ибни Балхӣ ва муаллифи маҷҳули «Муҷмал-ут-таворих ва-л-қисас» мавриди таваҷҷуҳи хос ва қорбасти Хусрави Анӯшервон будани аңдарзҳои «Аҳд Ардашер»-ро овардаанд<sup>5</sup>. Гуфтаҳои мазкур далел бар он аст, ки «Аҳд Ардашер» пас аз тарҷумаи мансур ва манзуми арабӣ дар муҳити исломӣ аз мақому манзилати волое бархурдор гардид ва пайваста мавриди иқтибосу истинод ва истиқбол аз ҳикматҳои қарор гирифт. Дар ағлаби манбаъҳои, ки дар бораи «Аҳд Ардашер»

<sup>1</sup>مسكويه، ابو على. تحارب الامم. ج. ۱. ص. ۱۲۹.

<sup>2</sup>الدينورى، ابوحنيفة. الاخبار الطوال. دار احياء الكتب العربية. القاهرة، ۱۹۶۰. ص. ۶۴۹.

<sup>3</sup>مسعودى، على بن حسين. التنبيه و الاشراف. - ص. ۹۲.

<sup>4</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. رسائل الجاحظ. القاهرة، ۱۹۳۳. - ص. ۱۹۱.

<sup>5</sup>تعالبي مرغني. شاهنامه كهن. پارسى تاريخ غر السير. - ص. ۳۴۶؛ طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۲. - ص. ۶۴۹.

сухан рафтааст, номи тарҷумони он ба насри арабӣ зикр нашудааст, вале ахиран Муҳаммад Донишпажӯх бо истинод ба китоби адиби асри IX Абулқосим Абдулазизи Бағдодии Наҳвӣ – «Китоб сифат-адавоат ва-л-қалам ва тасрифиҳо» тарҷумаи аҳдномаи мазкурро ба Ибни Муқаффаъ нисбат додааст<sup>1</sup>.

Дар “ал-Фихрист”-и Ибни Надим ва сарчашмаҳои дигари адабиву таърихии арабизабон тарҷумаҳои осори ахлоқиизер низ, киба Ардашер – муассиси давлати Сосониён нисбат дода шудаанд, ба қайд омадаанд:

«Аҳд Ардашер Бобакон ило ибниҳи Собур» (Аҳдномаи Ардашери Бобакон ба писараш Шопур)

Андарзномаи Ардашер ба табакоти мухталифи чома

Хитобаи Ардашер ба раият дар панду андарз

Китобу мо амара Ардашер би истихрочиҳи мин хазоин-ил-кутуб, аллатӣ вазаъаҳо ал-хукамоу фи-т-тадбир. (Китоби он чи ба фармони Ардашер аз ганчинаи китобҳои, ки ҳақимон дар бораи тадбир навишта буданд, истихроч шуда).

Номи мутарҷимони асарҳои мазкур ва замони тарҷумаи онҳо дар сарчашмаҳо зикр нашудаанд. Дар мавриди мутарҷимони осори мазкурметавон ҳаде зад, ки онҳо аз доираи ҳамон тарҷумонҳои ҳастанд, ки қаблан савонеҳи рӯзгор ва осорашон зикр шуд, аммо дар мавриди замони тарҷумаметавон эҳтимоли наздик ба яқин дод, ки осори мазкур дар даврони авҷи нахзати тарҷумаи осори паҳлавӣ ба арабӣ, яъне нимаи дувуми асри VIII- нимаи аввали асри IX қисмати забони арабиро ба бар кардаанд.

Пас аз Ардашери Бобакон дувумин шоҳи сосонӣ, ки ба номи ӯ теъдоде аз осори ахлоқӣ нисбат дода шуда ва тарҷумаи онҳо ба забони арабӣ дар сарчашмаҳои арабизабон ба қайд омадааст, Хусрави Анӯшервон мебошад. Яке аз ин гуна аҳдномаҳо дар «ал-Фихрист» дар ҳамон баҳши китобҳои ахлоқӣ таҳти унвони «**Аҳд Кисро ило ибниҳи Хурмуз ювассиҳи ҳина асфоҳу ал-мулка ва ҷавоб Хурмуз иййоҳу**» (Аҳдномаи Хусрав (-и Анӯшервон) ба писараш - Хурмуз, ки дар он ба фарзандаш хангоми бар тахт нишондан андарз гуфт ва посухи Хурмуз ба падар) омада, вале ишорае ба мазмун ва муҳтавои он нарафтааст<sup>2</sup>. Аз номи китоб пайдост, ки он аз ду қисмат иборат буда, қисмати аввал панду андарзҳои шоҳи сосониро ба писараш ва қисмати дувум ҷавобҳои писарро ба падар дар бар гирифта будааст. Дар манбаҳои арабизабон андарзҳои фаровон аз Хусрави Анӯшервон нақл шудааст, вале матни нисбатан комиле, ки ҳам андарзҳои Хусрави Анӯшервон ва ҳам ҷавобҳои Хурмузро ба ӯ дар худ гунҷош дода бошад, ба назар намерасад.

<sup>1</sup> ابن المقفع، عبدالله المنطيق. ابن بهريز، حدود المنطق. - ص. ۶۳.

<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۷۷.

Ба тахмини наздик ба яқин, китоби мавриди баҳс бо он бобҳои «Шоҳнома», ки дар онҳо суҳан аз озмоиши Хурмуз аз ҷониби Бузургмеҳр ва мӯбадону бузургон, посухи Хурмуз ба пурсишҳои онҳо, шод гаштани Анӯшервон аз донишу хиради Хурмуз ва аҳднома навиштани ӯ ба писар меравад<sup>1</sup>, метавонад татбиқ гардад<sup>2</sup>. Ба ин маънӣ, метавон ҳадс зад, ки китоби мавриди баҳс ҳам аҳдномаи навиштаи Хусрави Анӯшервонро ба писараш - Хурмуз ва ҳам ҷавобҳои ӯро ба саволҳои бузургон дар он анҷумани озмоиш дар бар гирифта буд.

Номи мутарҷими ин китоб ва ҳам тарҷумаи арабии он аз байн рафтааст.

**Аҳд Кисро Анӯшервон ило ибниҳи аллазӣ юсаммо «Айн-ул-балоғат»** (Аҳдномаи Хусрави Анӯшервон ба писараш, ки «сарчашмаи балоғат» номида мешавад). Номи ин китобро муаллифи «ал-Фихрист» зимни китобҳои ахлоқии эронӣ, румӣ, ҳиндӣ ва аъроб зикр карда ва бо ин дар қуруни нахустиниисломӣ ба арабӣ тарҷума шудани онро таъйид кардааст<sup>3</sup>.

Аҳдномаи Хусрави Анӯшервон, ки «сарчашмаи балоғат» номида шудааст, метавонад бо ҳамонбахше аз «Шоҳнома», ки «Панд додани Нӯшинравон писари худ Хурмуздӯро» ном дорад ва муштамил бар мавъизаву насоеҳи шоҳи сосонӣ ба писараш аст<sup>4</sup>, иртибот дошта бошад.

Тавсифи «сарчашмаи балоғат», ки дар унвони аҳднома омадааст, зоҳиран, ишора ба балоғати суҳан ва расоии фикр дар аҳдномаи Анӯшервон аст ва онро набояд ба ин маънӣ фаҳмид, ки дар аҳднома суҳан аз усулу қоидаҳои балоғат рафта бошад.

**«Аҳд Кисро ило ман адрака-т-таълима мин байтиҳи»** (Аҳдномаи Хусрав ба касоне аз хонаводааш, ки омодаи таълим будаанд) аҳдномаи дигарест, ки номи он танҳо дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим зикр шудава маълум нест, ки аз қадом китоби паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума шудааст. Бино бар номи китоб, он аз навъи китобҳои таълимии ахлоқӣ будааст, ки ба шоҳзодагони хонадони сосонӣ омӯзонида мешуд. Аз унвони аҳднома пай бурдан душвор аст, ки зери номи «Кисро/Хусрав» қадоме аз ду шоҳи сосонӣ – Хусрави Анӯшервон ё Хусрави Парвиз дар назаранд. Дар ин маврид ҳадси М.Муҳаммадӣ қобили қабул менамояд, ки навиштааст: «Дар ин ҷо эҳтимоли ин ки мурод Хусрави Анӯшервон бошад, бештар аст, зеро он ки дар адабиёти сосонӣ ва пас аз он дар адабиёти арабӣ ва форсӣ бештар ба илму ҳикмат маъруф шуда ва осори мутааддиде дар ин

---

<sup>1</sup>Фирдавсӣ, Абулқосим.Шоҳнома.Ҷ.8. -С.428-437.

<sup>2</sup>محمدى، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساسانى به عصر اسلامى. ج.۴. - ص.۲۸۵.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص.۳۷۸.

<sup>4</sup>Фирдавсӣ, Абулқосим.Шоҳнома.Ҷ.8. -С.336-391.

замина ба  $\bar{u}$  нисбат дода шуда, ҳамин Хусрави Анӯшервон аст, на Хусрави Парвиз»<sup>1</sup>.

**«Китоб-ул-масоил аллатӣ анфазаҳо малик ур-Руми ило Анӯшервон ʔало ʔад Букрот-ар-румӣ»** (Китобипурсишҳое, ки подшоҳи Рум ба василаи Букроти румӣ барои Анӯшервон фиристодааст) яке аз он асарҳои ахлоқиест, ки тарҷумаи он ба арабӣ дар «ал-Фихрист» зикр шудааст<sup>2</sup>. Аҳли таҳқиқ бар он назаранд, ки аз «Китоб-ул-масоил...» бахше тӯлонӣ дар «Ҷовидон хирад»-и Мисквайҳ таҳти унвони «Ҳикам туассар ʔан Анӯшервон» (Ҳикматҳои расида аз Анӯшервон) боқӣ мондааст<sup>3</sup>. Ҳақиқатан қитъае, ки дар «Ҷовидон хирад» омадааст, ба сурати пурсишу посух таълиф шудааст. Ин гуна китобҳо дар арабӣ ба унвони «Китоб-ул-масоил...» хонда мешуданд. Аз ин лиҳоз муҳтавои қитъае, ки дар «Ҷовидон хирад» омадааст, бо унвони китоби мавриди назар мувофиқат дорад. Гузашта аз ин, дар охири қитъаи мазкур ҷумлае бад-ин маънӣ омадааст: «Чун Анӯшервон аз «Китоб-ул-масоил» пардохт, чунин гуфт...»<sup>4</sup>. Ин ҷумла собит мекунад, ки қитъаи мазкур аз ҳамон «Китоб-ул-масоил...»-ест, ки дар «ал-Фихрист» омадааст. Ягона чизе, ки метавонад боиси тардид шавад, он аст, ки дар қитъаи боқимонда аз «Китоб-ул-масоил» ҷое аз малики Рум ва Букроти румӣ ёд нашудааст, ҳол он ки дар унвони комили ин китоб дар «ал-Фихрист» номҳои мазкур ҳузур доранд. Дар ин маврид метавон эҳтимол дод, ки дар матни комили «Китоб-ул-масоил» ин номҳо ҷой доштанд, вале дар қитъае аз ин китоб, ки дар «Ҷовидон хирад» нақл шудааст, онҳо ҳазф шудаанд.

Бар мабной қитъаи боқимондаи «Китоб-ул-масоил...» метавон истинбот кард, ки он саршор аз ҳикматҳои кӯтоҳи Анӯшервон будааст. Назири ҳамин суҳанони ҳакимона аз Анӯшервон дар китобҳои дигар низ фаровон нақл шудаанд. Чунин ба назар мерасад, ки маъҳази аслии онҳо матни комили «Китоб-ул-масоил...» будааст.

Матни паҳлавии «Китоб-ул-масоил...» то замони мо нарасида ва маълум нест, ки унвони паҳлавии он чи сурате доштааст. Тарҷумаи арабии китоб, ки дар садаҳои VIII-IX ба анҷом расидааст, то охири асри X – ибтидои асри XI, яъне, то замони зиндагии Мисквайҳ роиҷ буда ва зохиран дар асрҳои баъдӣ аз байн рафтааст.

Дар иддае аз манбаъҳои қарнҳои нахусти исломӣ аз тарҷумаи осори ахлоқӣ ёд шуда ва пораҳои аз онҳо нақл шудааст, ки ба шӯҳони дигари сосонӣ нисбат доранд. Яке аз ин гуна асарҳо “**Аҳдномаи Шопур ба писараш Ҳурмуз**” аст. Қитъаҳои нисбатан тӯлонӣ аз

<sup>1</sup>محمدى، محمد. تاريخ و فرهنگ ايران در دوران انتقال از عصر ساسانى به عصر اسلامى. ج. ۴. - ص. ۲۸۶.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۷۸.

<sup>3</sup>العاكوب، عيسى. تأثير پند بارسى بر ادب عرب. - ص. ۱۲۵؛ محمدى، محمد. الترجمة و النقل عن الفارسية فى القرون الاسلامية الاولى. - ص. ۴۰.

<sup>4</sup>مسكويه، ابو على. الحكمة الخالدة. (جاويدان خرد). - ص. ۴۹-۶۱.

тарчумаи аҳдномаи Шопур ба писараш Хурмуз дар «Ғурар-ус-сияр»-и Саолибӣ<sup>1</sup>, «ал-Вузаро ва-л-куттоб»-и Ҷаҳшиёрӣ<sup>2</sup>, «Наср уд-дурар»-и ал-Обӣ<sup>3</sup> ва «ас-Саъода ва-л-исъод»-и Абулҳасани Омирӣ нақл шудаанд. Мавзӯоте, ки қитъаҳои боқимондаи аҳдномаи мазкур бар онҳо ихтисос доранд, ба таври умум ба қоида ва тартиби идораи кишвар марбут ҳастанд.

Аз шоҳони хонадони сосонӣ яке дигар Қубод ибни Фирӯз аст, ки дар сарчашмаҳои арабизабон тарчумаи аҳдномае мансуб ба номи ӯ таҳти унвони «Аҳдномаи Қубод» зикр шудааст.

Аз «Аҳдномаи Қубод» пораҳое дар «Ниҳоят-ул-ираб фӣ ахбор-ил-фурс ва-л-араб»<sup>4</sup> ва «Таҷориб-ул-умам фӣ ахбор мулук-ил-араб ва-л-ачам» омадааст<sup>5</sup>, ки матолиберо роҷеъ ба зарурати тақвои парҳезкорӣ, манфиати машварат бо олимони вамавзӯоти дигари роиҷ дар аҳдномаҳои паҳлавӣ дар бар гирифтааст.

Яке аз китобҳои ахлоқӣ, ки дар аҳди Маъмун (813-833) аз паҳлавӣ ба забони арабӣ тарҷума гардид ва шуҳрати зиёд дар муҳити маънавии Хилофат касб кард, «**Ҷовидон хирад**» ё васияти Хушанг ба писараш ва подшоҳони баъдӣ ном дошт. Мисқвайҳ дар китоби ҳамноми худ, ки нашри имрӯзаи он бо унвони «ал-Ҳикмат-ул-холида» низ маъруф аст, иттилоъ додааст, ки вай дар рӯзгори ҷавониаш китобе аз Ҷоҳиз ба номи «Иститолат-ул-фаҳм» хонда ва дар он зикре аз китоби «Ҷовидон хирад» рафта будааст. Пас аз ин Мисқвайҳ дар ҷустуҷӯи китоби «Ҷовидон хирад» саъй намуда, онро дар Форс дар назди мӯбадонмӯбад пайдо мекунад. «Ин китоб, – навиштааст Мисқвайҳ, – васияти Хушангшоҳ ба фарзанд ва подшоҳони баъд аз хеш аст. Ин подшоҳ андаке пас аз тӯфон мезиста ва аз касоне, ки пеш аз ӯ будаанд, на зиндагинома ва на ҳикмат ва на адабе бар ҷой монда, ки аз он суде тавон ҳосил намуд. Аз ин рӯ бар он шудам, ки ин васиятро, чунон ки ҳаст, нусха баргирам ва сипас тамоми он чизҳоеро ҳам, ки аз васоё ва одоби ҷаҳор миллат, яъне, эронӣён, ҳиндӣён, аъроб ва румӣён дар даст аст, бар он биҷамъам»<sup>6</sup>. Сипас Мисқвайҳ матни «Ҷовидон хирад»-ро нақл кардааст, ки он шомили андарзҳо ва суҳанони кӯтоҳи ҳикматомез аз навъи ҳикматҳои амалист. Дар поёни «Ҷовидон хирад» Мисқвайҳ саргузашти игроқомези ин китобро аз «Иститолатул-фаҳм»-и Ҷоҳиз ва Ҷоҳиз аз Воқидӣ ва ӯ аз забони Ҳасан ибни Саҳл, ки дар борааш қаблан дар бахши марбут ба мутарҷимони эронӣ суҳан рафт, ривоят кардааст. Бино бар ин

<sup>1</sup> اعالبي مرغنى. شاهنامه كهن. پارسى تاريخ غرر السير. - ص. ۲۸۶.

<sup>2</sup> الجھشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۳۲-۳۴.

<sup>3</sup> الآبى. نثر الدر. ج. ۵. - ص. ۸۰-۸۲.

<sup>4</sup> نهاية الارب فى اخبار الفرس و العرب. به تصحيح محمد تقى دانشپژوه. انجمن آثار و مفاخر فرهنگى. تهران، ۱۳۷۵. - ص. ۳۰۰-۳۰۱.

<sup>5</sup> مسكويه، ابو على. تحارب الامم. ج. ۱. - ص. ۲۷۲.

<sup>6</sup> مسكويه، ابو على. الحكمة الخالدة. (جاويدان خرد). - ص. ۵-۶.

ривоят, подшоҳи Кобулистон пас аз хондани хутбаи хилофат ба номи Маъмун ҳакимеро мавсум ба «Зӯбон» ба расми ҳадя ба назди ӯ мефиристад. Пас аз фатҳи Ироқ Маъмун хост, ки ба Зӯбон бар ивази маслиҳату машваратҳояш сад ҳазор дирҳам инъом диҳад. Зӯбон инро напазируфт ва хошиш кард, ки ба ҷои он ба ӯ китоберо диҳад, ки он фарогири «макорими ахлоқ ва донишҳои офоқ» буда, дар миёни хазинаҳои шоҳони эронӣ зери Айвони Мадоин мадфун аст. Чун Маъмун ба Ироқ ворид шуд, бо роҳнамоии Зӯбон он китобро, ки иборат аз сад барг ва дар порчае аз дебо дар даруни сандукчае маҳфуз буд, аз зери хок берун оварданд. Ба қавли Зӯбон, он авроқ китоби «Ҷовидон хирад» буда, ки онро Ганҷур – вазири подшоҳи Эроншаҳр аз ҳикмати пешиниён гирд овардааст<sup>1</sup>.

Ба дунболи ин ривоят ҳикояте аз Ҳасан ибни Саҳли вазир ва яке аз мутарҷимони осори паҳлавӣ нақл шудааст ва аз он бармеояд, ки Ҳасан ибни Саҳл бо ҳамдастӣ бо Хизр ибни Алӣ – нависанда ва мутарҷими дигари эронитабор сӣ барг аз китоби «Ҷовидон хирад»-ро аз паҳлавӣ ба арабӣ баргардондаанд, вале қисмати боқимондаи китобро Зӯбон ба онҳо надодааст<sup>2</sup>. Зоҳиран, тарҷумаи ҳамин сӣ барг дар «Истилолат-ул-фаҳм»-и Ҷоҳиз омада ва Мисқвайҳ онро дар китоби худ нақл карда будааст, вале он «Ҷовидон хирад», ки Мисқвайҳ дар назди мӯбадонмӯбад дидааст, матни паҳлавии он будааст. Бино ба навиштаи Мисқвайҳ, Маъмун вақте аз мутолиаи сӣ барги тарҷумашуда аз китоби «Ҷовидон хирад» фориғ мешавад, нидо мекунад, ки «ба Худо, ҳикमत ҳамин аст, на гуфтаҳо ва суханпардозҳои мо!»<sup>3</sup>.

Он чи дар бораи «Ҷовидон хирад» дар манбаъҳои қарнҳои нахустини исломӣ нақл шудааст, далел бар азамат ва шаъни ин китоб дар назди эронӣён ва мусулмонони садаҳои VIII-IX аст. Аз ҷумла, Абулҳасани Омирӣ дар «ас-Саъода ва-л-исъод»-и хеш «Ҷовидон хирад»-ро аз бехтарин китобҳои эронӣён ба шумор оварда, чаҳор пора аз онро нақл кардааст<sup>4</sup>. Ҳамчунин матолибе аз ин китоб бо ситоиш ва арҷгузорӣ бар он дар «Муҳозарот-ул-удабо»-и Роғиби Исфажонӣ, «Сироч-ул-мулук»-и Тартушӣ ва ғайра дарҷ гардидааст<sup>5</sup>.

Дар қарнҳои нахустини исломӣ китобу рисолаҳои дигари ахлоқӣ низ аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума шуда буданд, ки унвон ва пораҳои аз онҳо дар “ал-Фихрист” ва манбаъҳои дигари арабӣ омадаанд. Ин китобҳо ба таври умум ба яке аз шоҳони эронӣ, вазирон ва мӯбадони маъруфи аҳди Сосониён нисбат дода шудаанд. Дар зер унвони ин китобҳо зикр мешавад, то тасаввуре комил доир ба вусъати тарҷумаи

<sup>1</sup>مسكويه، ابو على. الحكمة الخالدة. (جاويدان خرد). - ص. ۱۹۰.

<sup>2</sup>مسكويه، ابو على. الحكمة الخالدة. (جاويدان خرد). - ص. ۲۰.

<sup>3</sup>مسكويه، ابو على. الحكمة الخالدة. (جاويدان خرد). - ص. ۲۲.

<sup>4</sup>العامري، ابو الحسين. السعادة و الاسعاد. - ص. ۴۲۲، ۳۲۰، ۲۹۶.

<sup>5</sup>تفضلي، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۰۸.

осори ахлоқии тоисломии эронӣ ба забони арабӣ дар садаҳои нахусти исломӣ ҳосил гардад:

1. «**Китобу мо катаба биҳи Кисро ила-л-марзубон ва иҷобатиҳи иййоҳу**» (Китоби он чи Хусрав ба марзбон навишт ва посухи марзбон ба ӯ)

2. «**Китоб ирсол малик-ар-Руми ал-фалосифата ило малик-ил-фурси йасъалуху ан ашъи мин ал-ҳикмат**». (Китоби фиристодани подшоҳи Рум файласуфонро ба сӯи подшоҳи эронӣ, ки аз вай панд бипурсанд)

3. «**Китоб Кисро ила зуамо ар-раъияти фи-ш-шукр**» (Номаи Хусрав ба пешвоёни раият дар сипосгузорӣ)

4. «**Китоб Меҳр Озар Чушнас ал-фрамадор ило Бузарчмиҳр ибн ал-Бухтакон**» (Номаи Меҳр Озар Гушнаспи фрамадор ба Бузургмеҳр – писари Бухтакон)

5. «**Китоби Зодонфаррух фи таъдиби валадиҳ**» (Китоби Зодонфаррух дар тарбияти фарзандаш)

6. «**Китоб мӯбадонмӯбад фи-л-ҳикам ва-л-ҷавомеъ ва-л-одоб**» (Китоби мӯбадонмӯбад дар пандҳо, суханони ҳикматомези ҷомеъ ва одоб)

7. «**Сиранома**»-и Худобуд ибни Фаррухзод

8. **Китоб Сакар (?) ибн Мардуях ли Хурмуз ибни Кисро ва ҷавоб Кисро ила Ҷавосб(?)**. Номи ин китоб дар ҳамин сурат дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим дар баҳши китобҳои ахлоқии эронӣ зикр шуда ва аён аст, ки исмҳои хос дар унвони китоб ба гунае таҳриф шудаанд, ки асли онҳоро дарёфттан душвор аст<sup>1</sup>.

9. **Китоб маликин мин-ал-мулк-ил-ҳолия ило ибниҳи фи-т-таъдиб** (Номаи шоҳе аз шоҳони гузашта ба писараш дар таълиму тарбият).

10. **Китоб маликин солиҳин фихи ҷимоъу рууси умури-л-мулки аллатӣ алайҳо тадуру сиёсатуҳо** (Китоби подшоҳе шоиста аз миёни шоҳон, фарогири масоили умдае, ки сиёсати мулк бар пояи он мечарҳад).

11. «**Китоби Мардак**». Дар нусхаҳои мухталифи «ал-Фихрист» номи китоби мазкур дар гунаҳои «Марвак», «Мардак», «Маздак» ва ҳатто «Ҳардак» дарҷ шудааст. Ҳамин гуногунии тарзи навишти ин ном боис шуда, ки аксари муҳаққиқон онро «Маздак» хонанд. Вале, ба ақидаи А.Тафаззулӣ, ин ном бояд «Мардак» бошад, ки яке аз ҳақимони эронӣ буд ва ба Маздаки маъруф иртиботе надошт<sup>2</sup>.

12. «**Мавоизи Озарбод**». Озарбоди Маҳраспандон мӯбадон мӯбади маъруфи замони салтанати Шопури дувум (309-379) ба шумор меояд. Мисқвайҳ дар китоби «Ҷовидон хирад»-и хеш тарҷумаи арабии ин пандномаро нақл кардааст<sup>3</sup>.

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۷۸.

<sup>2</sup>تفضلی، احمد. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام. - ص. ۲۰۹.

<sup>3</sup>مسکویه، ابو علی. الحکمة الخالدة. (جاویدان خرد). - ص. ۲۶.



13. «Одоби Бузургмеҳр». Дар адабиёти аҳди Сосониён ба Бузургмеҳр – вазири фарзонаи Хусрави Анӯшервон андарзномае мансуб доништа шудааст, ки асли паҳлавии он то замони мо расида ва бо номи «Ёдгори Бузургмеҳр» маъруфият дорад. Ҳамин андарзнома дар нимаи дувуми асри VIII – аввали асри IX ба забони арабӣ тарҷума шуд ва тахти унвони «Одоби Бузургмеҳр» шуҳрати тамом пайдо кард.

**Хитобаҳои шоҳон.** Дар қарнҳои нахустини исломӣ ба ҷуз аҳдномаву андарзномаҳо, ҳамчунин хитобаҳои пандомези шоҳони гузаштаи эронӣ низ бо ҳиммати мутарҷимони эронӣ ба арабӣ тарҷума шудаанд. Матни яке аз ин гуна хитобаҳо тахти унвони «Хитобаи Хусрави Анӯшервон» Мисқвайҳ дар «Таҷрибаи-ул-умам»-и ҳеш пас аз нақли зиндагиномаи Хусрави Анӯшервон зикр кардааст<sup>1</sup>. Дар хитобаҳои сосонӣ мардумро ба мубориза ба муқобили «душманони ботинӣ», яъне, ҳасадварзӣ, саркашӣ, суҳанчинӣ ва парокандагӣ, ки аз душманони хориҷии шамшерзану асптоз тавонотаранд, даъват карда ва онҳоро ба дидаи ибрат нигаристан ба таҷрибаи гузаштагон, аз ҷумла ба шикасти Доро аз Искандари Мақдунӣ роҳнамоӣ намудааст<sup>2</sup>. Табарӣ низ ба ин хитоба ишора карда ва муҳтавои онро ба иҷмол нақл кардааст<sup>3</sup>.

Хитобаи нисбатан тӯлонӣ тахти унвони «Хитобаи Ҳурмузд» дар «ал-Ахбор-ут-тивол»-и Абӯҳанифаи Динаварӣ маҳфуз мондааст<sup>4</sup>. Дар он матолиби ахлоқӣ тибқи суннати маъмули андарзнигории сосонӣ дар сурати муқобалаи хислату хӯйҳои шоиста бо сифоти ношоиста баён шудааст, ки ҳадаф аз ин шева тарғиби мардум ба пайравӣ аз фазилат ва парҳез аз разилат мебошад.

Хитобаҳои кӯтоҳи баъзе аз шоҳони дигар дар «Ғураи-ус-сияр»-и Саолибӣ, «Муруҷ-уз-заҳаб»-и Масъудӣ, «Ниҳоят-ул-ираб»-имуаллифи номаълум ва соири таърихномаҳои куҳан ба назар мерасанд. Зоҳиран, ин хитобаҳо дар «Худойнома»-ҳои паҳлавӣ гунҷоиш ёфта буданд. Дар баробари ин, имкон дорад, ки хитобаҳои муфассали баъзе аз шоҳон ҳамчун навиштаҳои мустақил низ вучуд дошта ва дар нахустин садаҳои исломӣ ба арабӣ баргардон шуда, ба матни таърихномаву осори адабии исломӣ роҳ ёфта бошанд.

Хитобаҳои тоҷгузорӣ дар баробари он ки як навъ эълони барномаи фаъолияти шоҳони батахтнишаста маҳсуб мешаванд, ҷанбаи боризи ахлоқӣ доранд ва бо тарҷумаи онҳо маҷмӯи афкор ва назариёти ахлоқиву маънавии Эронзамини тоисломӣ дар ташаккули арзишҳо ва меъёрҳои ахлоқии исломӣ нақши худро гузоштанд.

<sup>1</sup>مسكويه، ابو على. تحارب الامم. ج. ۲. ص. ۱۸۱.

<sup>2</sup>مسكويه، ابو على. تحارب الامم. ج. ۱. ص. ۱۸۶.

<sup>3</sup>طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۲. ص. ۶۴۸.

<sup>4</sup>الدينورى، ابوحنيفه. الاخبار الطوال. دار احياء الكتب العربية. القاهرة، ۱۹۶۰. ص. ۷۵-۷۷.

**Номаҳо дар масоили кишвардорӣ ва одоби салтанатӣ.** Дар манбаъҳои арабизабони қарнҳои нахустини исломӣ як идда номаҳои шоҳони бостонии Эрон комилан ё чузъан нақл шудаанд. Ин номаҳо маъмулан аз номи шоҳон ба коргуздоронашон дар навоҳиву вилоятҳои Эрон, ба вазирон, мӯбадон ва давлатмардони алоҳидаи кишвар ва ё ба шоҳони мамолики хориҷӣ навишта шудаанд. Дар номаҳои мазкур матолиби марбут ба таърих, сиёсати шоҳӣ, умури мухталифи кишвардорӣ, қонун ва қоидаҳои идорӣ ва ғайра баён шудаанд, вале дар онҳо ҳамоно чанбаи ахлоқӣ бартарӣ дорад, зеро ҳадафи асосӣ аз таълифи ин номаҳо ислоҳу салоҳи иҷтимоӣ, далолат ба роҳу равиши неку писандида, талқини одоби ҳамида ба шумор меоянд. Аз қабиле ин гуна номаҳо Табарӣ тарҷумаи номаи Анӯшервонро ба подусбонони Озарбойҷон, Арманистон, Дамованд ва Табаристон нақл карда ва он яке аз чаҳор номае будааст, ки Анӯшервон пас аз ҷулус ба тахти шоҳӣ ба подусбонони чаҳор ноҳияи кишвар навишта буд<sup>1</sup>.

Порое аз номаи Хусрави Анӯшервон ба марзбонони Хуросон дар «Наср-уд-дурар»-и ал-Обӣ иқтибос шудааст<sup>2</sup>. Ҳамчунин дар баҳши китобҳои ахлоқии эронӣ, ки дар «ал-Фихрист» номбар шуда ва қаблан ба онҳо ишора рафт, номаи Хусрав ба пешвоёни раият дар сипосгузорӣ («Китоб Кисро ила зуамо ар-раъияти фи-ш-шукр»), номаи Хусрав ба марзбон ва посухи марзбон ба ӯ («Китобу мо катаба биҳи Кисро ила-л-марзбон ва иҷобатиҳи иййоҳу») ба қайд омадаанд<sup>3</sup>. Матни тарҷумаи ду номаи Баҳроми Гӯр – яке ба бузургон ва ашрофи мамлакат ва оммаи мардуми кишвар пас аз истиқрор ёфтани дар тахти шоҳӣ ва дигаре ба сарони тамоми навоҳии кишвар пас аз ғалаба ба Ҳокони Турк – дар «Ниҳоят-ул-ираб фӣ ахбор-ил-фурс ва-л-араб» нақл шудааст<sup>4</sup>.

Яке аз номаҳои, ки дар ағлаби таърихномаҳои куҳан нақл ё ёдрас шудааст, номаи мансуб ба Хусрави Парвиз дар посухи даъвоҳои писараш – Шерӯя аст. Матни ин нома ба таври муфассал дар «Таърих»-и Табарӣ ва тарҷумаи «Таърихи Табарӣ»-и Балъамӣ, ба гунае мухтасар дар «Ғура-ус-сияр»-и Саолибӣ, «ал-Ахбор-ут-тивол»-и Динаварӣ ва бо иқтифо ба ишорае кӯтоҳ дар «Таҷориб-ул-умам»-и Мисқвайх, «Муруҷ-уз-заҳаб»-и Масъудӣ ва ғайра баён шудааст<sup>5</sup>.

Асли паҳлавӣ ин нома ва соири номаҳои мазкур боқӣ намондааст. Эҳтимол дорад, ки ин номаҳо чун чузъе аз «Худойнома» ва осори дигари паҳлавӣ ба забони арабӣ тарҷума шуда бошанд.

<sup>1</sup>طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۲. - ص. ۶۴۵.

<sup>2</sup>الآبى. نثر الدر. ج. ۷. - ص. ۷۹.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۷۸.

<sup>4</sup>نهاية الارب في اخبار الفرس و العرب. - ص. ۲۶۴، ۲۶۱.

<sup>5</sup>طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۲. - ص. ۷۷۳.

Дар баробари ин, дар садаҳои нахустини исломӣ аз насри паҳлавӣ номаҳои ба сари худ мустақил низ ба арабӣ тарҷума шудаанд. Яке аз ин номаҳо ба унвони «Номаи Тансар ба Гушнасф» машхур аст, ки асли паҳлавии он аз миён рафта ва тарҷумаи арабии он, ки ба қалами Ибни Муқаффаъ тааллуқ дорад, то оғози асри XIII-и мелодӣ дар тадовул будааст. Дар соли 611/1214 муаллифи «Таърихи Табаристон» Ибни Исфандёр тарҷумаи Ибни Муқаффаъро дар Хоразм ба даст оварда, онро ба форсӣ баргардон кард ва дар муқаддимаи таърихномаи худ гунҷоиш дод<sup>1</sup>. Пас аз ин тарҷумаи арабии «Номаи Тансар» низ аз байн рафт ва ҳамин тарҷумаи форсии Ибни Исфандёр боқӣ монд.

Тансар, ки нома мансуб ба ӯст, хирбадонхирбади маъруфи аҳди Ардашері Бобакон ва яке аз шахсиятҳои маъруфе ба шумор меравад, ки дар таҳкими пояҳои давлати Ардашер хидмати басазо кардааст. Дар муқаддимаи Ибни Муқаффаъ ба номаи Тансар омадааст: «Чунин гӯяд Ибн ал-Муқаффаъ аз Баҳром ибни Хурзод ва ӯ аз падари хеш Манучеҳр – мӯбади Хуросон ва уламои Порс»<sup>2</sup>. Аз ин ҷумла, ки аҳли таҳқиқ ба ибҳоми маънии он ишора кардаанд<sup>3</sup>, метавон дарёфт, ки маъҳази аслии тарҷумаи Ибни Муқаффаъ матни паҳлавие будааст, ки онро Баҳром ибни Хурзод тадвин карда ва дар ин амр ба ривояти уламову рӯхониёни зардуштӣ, аз ҷумла падараш – мӯбади Хуросон така кардааст.

«Номаи Тансар» дар баробари он, ки «яке аз муҳимтарин аснод роҷеъ ба ташкилоти аҳди сосонӣ» мебошад<sup>4</sup>, ҳамчунин афкори сиёсиву иҷтимоӣ ва адабиву ахлоқии он давронро бозтобӣ мекунад. Дар он баёни далелу бурҳон ҷиҳати тавҷеҳу исботи дурустии сиёсати Ардашер бо панду андарз гуфтан ва зикри қиссаҳои ибратангези Растину Бирӣ ва бӯзинагон (банди 14) тавъам омада, боиси тақвият ва имтиёзи ҷанбаи ахлоқии номаи мазкур гаштааст.

**Тавқеот.** Яке аз риштаҳои насри паҳлавӣ, ки тавассути тарҷума дар қарнҳои VIII-IX ба насри арабизабон ва муҳити адабиву фарҳангӣ ва ахлоқии исломӣ роҳ ёфт, тавқеоти шоҳони эронӣ мебошад. Тавқеот маъмулан ҷумлаҳои кӯтоҳи ҳикматомезе ҳастанд, ки дар фармонҳову маншуроти шоҳон ва дар аризаву мактубҳои мухталиф ба тариқи посух ва ё дастур навишта мешуданд.

Аз шоҳони тоисломии эронӣ беш аз дигарон Ардашер, Хусрави Анӯшервон ва Хусрави Парвиз бо тавқеоти мӯҷаз ва пурмаънии худ маъруфанд. Тавқеоти тоисломӣ, ки дар охириҳои салтанати дудмони сосонӣ дар маҷмӯаҳои маҳсус фароҳам омада буданд, дар қарнҳои нахустини исломӣ ба забони арабӣ баргардон шуда, мавриди эҷоб ва

<sup>1</sup>طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۱. - ص. ۱۲-۴۱.

<sup>2</sup>نامه تنسر به گشنسپ. به تصحيح مجتبى مينوى. - ص. ۴۵.

<sup>3</sup>نامه تنسر به گشنسپ. به تصحيح مجتبى مينوى. - ص. ۳۶.

<sup>4</sup>کريستن سن، آرتور. ايران در زمان ساسانيان. - ص. ۱۰۲.

истикболи аҳли адаб ва ҳокимони давр қарор гирифтанд. Бино ба ишороте, ки дар манбаъҳо рафтааст, тавқеоти Хусрави Анӯшервон ба ҳайси маҷмӯаи алоҳида аз паҳлавӣ ба арабӣ баргардон шуда ва муаллифи «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» онро дар баробари андарзҳои шоҳи мазкур ба писараш - Хурмузд ва бинои Айвони Мадоин арҷ гузоштааст<sup>1</sup>. Маҷмӯаи арабии тавқеоти Анӯшервон, ки мутарцимаш номаълум аст, дар миёнаҳои асри XVII дар Ҳиндустон мавҷуд буд ва аз ҷониби Мирзо Ҷамолуддин Муҳаммади Таботабой ба форсӣ тарҷума шуда, ба «Дастурномаи Кисравӣ ё тавқеоти Анӯшервон» мавсум гардид<sup>2</sup>.

Ҷамин тариқ, дар асрҳои VIII-IX қисмати бузурги насри ахлоқии тоисломии эронӣ дар сурати андарзномаву васиятномаҳо, хитобаҳои тоҷгузорӣ, номаҳо дар ойину одоби кишвардорӣ, тавқеоти шоҳони бостонӣ ва ғайра ба забони арабӣ тарҷума шуда, аз як тараф, идомаи афкори ахлоқии мардуми Эронзаминро дар муҳити ҷаҳоншиносии нави ваҳдонӣ таъмин кард, аз тарафи дигар, дар ташаккули ахлоқ ва насри ахлоқии исломӣ нақши фаъоли худро гузошт. Дар раванди тарҷума ба забони арабӣ осори ахлоқии тоисломии эронӣ таҳаввул пазируфт ва бо ҳифзи асолати худ ба муктазиёт ва арзишҳои ҷадиди исломӣ ҳамоҳанг ва мунсаҷим гардид.

#### 4.5. Тарҷумаи осори бадеӣ

Яке аз риштаҳои борвари насри паҳлавиро асарҳои фароҳам оварда буданд, ки онҳоро бо таваҷҷуҳ ба меъёрҳои маъмул дар шинохти калом бадеъ метавон чун осори насри бадеӣ арзёбӣ кард. Дар ин маврид манзур аз «насири бадеӣ» дostonҳои тамсилӣ, дostonҳои ҳамосӣ, дostonҳои ишқӣ ва афсонаву ривоёти куҳан аст.

Бархе аз ин осор дар асрҳои VIII-IX ба забони арабӣ тарҷума гардид ва барои ташаккули шоҳаҳои ҷадид дар насри арабизабони давраи мазкур замина фароҳам овард.

Ибни Надим тамоми ин осори тарҷумашударо ба ду бахш: афсонаҳо («ал-асмор») ва саргузашту қиссаҳои ҳақиқӣ («ас-сияр ва-л-асмор-ас-саҳиҳа») тақсим карда, ба бахши дувум, яъне, қиссаву саргузаштҳои ҳақиқӣ дostonҳои қаҳрамонӣ ва ишқӣ, аз қабилҳои дostonи «Рустам ва Исфандёр», «Дostonи Баҳроми Чӯбина», қиссаи «Доро ва бути заррин» ва ғайраро дохил кардааст<sup>3</sup>. Чунин тасниф бозтобе аз хусусияти адабиёти аҳдибостон аст, ки дар он дин, ахлоқ, устура, таърих ва адаб ба ҳам омезиш ёфта ва асарҳои бадеӣ ба маънои томи суҳан аз синкретизми унсурҳои мазкур истиқлол наёфта буд. Бад-ин вачҳ аст, ки дар он даврон дар адабиёти эронӣ мисли соири

<sup>1</sup>مجلد التواريخ و القصص. به تصحيح ملك الشعرا بهار. - ص. ۷۶.

<sup>2</sup>تفضلي، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۴۲.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

адабиётҳои Шарқ<sup>1</sup> устура бо таърих ба ҳам омада ва ривоёти марбут ба қаҳрамониҳои Рустам, Исфандёр ва дигар номоварони таърихи афсонавии Эронзамин чун таърихи воқеӣ пазируфта мешуд. Дар баробари ин, дар баёни корномаҳои воқеии шоҳони таърихи лаҳзаҳои афсонагуна ва воқеаҳои хорикулода ба назар мерасанд, ки онҳо низ чун ҷузъе аз таърихи ҳақиқӣ ҷилва мекунад. Бо назардошти табиат ва мазиятҳои мазкури осоре, ки мавсум ба насри бадеии паҳлавӣ ҳастанд, онҳоро метавон ба ҷаҳор шоҳа: осори бадеии ахлоқӣ, дostonҳои ҳамосӣ, дostonҳои ишқӣ ва афсонаҳо тақсим кард ва ба баррасии тарҷумаи осори ҳар яке аз ин шоҳаҳо ба забони арабӣ пардохт.

#### 4.5.1. Осори бадеии ахлоқӣ

«Калила ва Димна». Дар шумори осори бадеии ахлоқӣ, ки ҳадафи онҳо талқини одобу равишҳои писандида ва панду андарз гуфтан дар қолаби қиссаҳост, нахуст бояд аз тарҷумаи «Калила ва Димна» ёдовар шуд. Қисмати умдаи «Калила ва Димна» асли хиндӣ дорад ва аз ҷониби Барзуя – ҳаким ва табиби Хусрави Анӯшервон аз санскрит ба паҳлавӣ тарҷума шудааст. Маъҳази панҷ боби ин китоб «Панчатантра» ва се боби он ҳамосаи бузурги хиндӣ – «Маҳабхарата» ба шумор меояд. «Калила ва Димна» дар миёнаҳои қарни VIII аз ҷониби Абдуллоҳ ибни Муқаффаъ аз паҳлавӣ ба забони арабӣ баргардон шуд. Ин матлаб на танҳо дар ҳуди матни тарҷума таъкид шудааст, балки дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим низ ба қайд омадааст<sup>2</sup>. Тарҷумаи Ибни Муқаффаъ ба ҳайси як намунаи олии насри фасеҳи арабизабон шуҳрати тамоми пайдо кард ва пайвасти мавриди истинсоҳ қарор гирифт. Дар натиҷа, нусхаҳои зиёде аз ин тарҷума пайдо шуданд, ки миёни онҳо тафовути фаровон ба назар мерасад. Ибни Надим ба ин тафовутҳо мутаваҷҷеҳ гардида, теъдоди бобҳои «Калила ва Димна»-ро 17 ё 18 боб баршумурда ва афзудааст, ки нусхаеро низ дидааст, ки изофатан ду боби дигар доштааст<sup>3</sup>. Нусхаҳои мухталифи ҷопии «Калила ва Димна»-и арабӣ ғолибан 19 бобро фаро гирифтаанд.

Қасрати нусхаҳои тарҷума ва ихтилофот миёни онҳо таъйини бобҳоеро, ки Ибни Муқаффаъ ба матни тарҷумаи паҳлавӣ афзудааст, то андозае душвор мегардонанд, вале муқобалаи тарҷумаи арабӣ бо тарҷумаҳои форсӣ ва сурёӣ ба ин масъала метавонад равшанӣ андозад. Дар ағлаби нусхаҳои тарҷумаи Ибни Муқаффаъ қабл аз бобҳои панҷгонаи «Панчатантра» ҷаҳор боб ба унвони муқаддима омадааст. Боби нахустин аз ин ҷаҳор боб ба «Муқаддима-ул-китоб»

<sup>1</sup>Литература древнего Востока. -С.110-111.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۲۲.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

мавсум аст ва он ба қалами шахсе ба номи Бахнуд ибни Саҳвон маъруф ба «Алӣ ибн аш-Шоҳ ал-форсӣ» мансуб аст. Ин боб дар қадимтарин нусхаҳои тарҷумаи Ибни Муқаффаъ ва дар тарҷумаи форсии Абулмаолии Насруллоҳ вучуд надорад. Бино бар ин, аҳли таҳқиқ муътақиданд, ки ин бобро пас аз ду қарн ё бештар пас аз тарҷумаи Ибни Муқаффаъ ба он афзудаанд<sup>1</sup>.

Боби дувум аз бобҳои муқаддимаи «Баъсату Барзуя ило билод ил-Ҳинд»-и (Мусофирати Барзуя ба кишвари Ҳинд) ном дошта, дар баъзе аз нусхаҳои арабӣ бо ҷумлаи «Бузургмеҳр гӯяд» ва дар тарҷумаи форсии Абулмаолии Насруллоҳ бо ҷумлаи «Чунин гӯяд Абулҳасан Абдуллоҳ ибн ал-Муқаффаъ» шурӯъ шудааст. Аҳли таҳқиқ интисоби ин бобро ба Бузургмеҳр мураҷҷаҳ доништаанд<sup>2</sup>.

Боби сеум «Боб арз-ал-китоб»-и ном дорад ва дар нусхаҳои тарҷумаи арабӣ ба қалами Ибни Муқаффаъ мансуб доништа шудааст. Муҳаққиқон низ бо истинод ба баъзе аз лаҳзаҳои ин боб дар интисоби он ба Ибни Муқаффаъ тардид намекунанд<sup>3</sup>.

Боби чаҳорум, ки «Боб Барзуя, тарҷамат Бузарҷмеҳр ибн ал-Бухтакон» ном дорад, аз рӯи унвонаш бояд пардохтаи Бузургмеҳр бошад. Дар он аз номи Барзуя шарҳи ҳол, сайру сулуки ботиниву вичдонӣ ва кӯшиши ӯ дар роҳи расидан ба саодат ва ҳақиқат баён шудааст. Абӯрайҳони Берунӣ дар китоби «Таҳқиқу мо ли-л-Ҳинд»-и хеш боби марбут ба Барзуяро аз афзудаҳои Ибни Муқаффаъ доништа ва муътақид будааст, ки Ибни Муқаффаъ бо ин амали худ ҳадафи аз дин баргардонидани мардуми сустэтиқод ва ба монавият даъват кардани онҳоро доштааст<sup>4</sup>. Бархе аз муҳаққиқон, аз қабилӣ Т.Нёлдеке ва Ф.Габриэли ин ақидаи Беруниро пазируфта ва ин боб ё ҷузъе аз онро, ки марбут ба шак овардан дар ҳаққонияти динҳои гуногун аст, аз таълифоти Ибни Муқаффаъ доништаанд. Иддае аз пажӯҳишгарони дигар, мисли П. Краус ва Аббоси Зарёб бо истинод ба он, ки афкори озодонаи ин боб бештар ба муҳити замони Анӯшервон ва Барзуя муносибтар буд, боби мавриди назарро аз афзудаҳои Барзуя ва ҷузъе аз матни тарҷумаи паҳлавии «Калила ва Димна» ба шумор меоранд<sup>5</sup>.

Боби дигар аз тарҷумаи арабии китоби мазкур низ, ки мавсум ба «ал-Фаҳс ан амри Димна» («Бозҷуст аз кори Димна») аст, ба назари

---

<sup>1</sup>محجوب، محمد جعفر. در باره کلیله و دمنه. تاریخچه، ترجمه دو باب ترجمه نشده از کلیله و دمنه. تهران، خوارزمی. - ص. ۱۰۱-۱۰۲.

<sup>2</sup>ابن خلکان. وفيات الاعیان و انباء ابناء الزمان. ج. ۴. - ص. ۶۷۳.

<sup>3</sup>ابن خلکان. وفيات الاعیان و انباء ابناء الزمان. ج. ۴. - ص. ۶۷۴.

<sup>4</sup>آزرنوش، آرتاش و زریاب، عباس. ابن مقفع. ج. ۴. - ص. ۶۷۲؛ بیرونی ابوریحان. تحقیق ما للهند. هیدرآباد ۱۳۷۷/۱۹۸۵. - ص. ۱۲۳.

<sup>5</sup>آزرنوش، آرتاش و زریاب، عباس. ابن مقفع. ج. ۴. - ص. ۶۷۲.

аглаби муҳаққикон, аз афзудаҳои Ибни Муқаффаъ махсуб мешавад<sup>1</sup>, вале Фатхуллоҳи Мучтабойбо таваҷҷуҳ ба таъсири расмулхатти паҳлавӣ дар исмҳои хоси ҳикоятҳои ин боб онро аз таълифоти Барзуяи табиб пиндоштааст<sup>2</sup>.

Аз ончи зикр шуд, метавон ба бардоште расид, ки «Калила ва Димна» тарҷумаи ҳарф ба ҳарфи як асари алоҳидаи ҳиндӣ набуда, балки бо роҳи ба матнҳои ҳиндиасл афзудани матолиби эронӣ ва илова кардани чанд боб аз ҷониби Ибни Муқаффаъ фароҳам омадааст. Бино бар ин, китоби мазкурро дар он сурате, ки имрӯз дар даст аст, бо эътирофи асли ҳиндӣ он бояд зодаи муҳити адабиву фикрии сосонӣ ва бозтобе аз вижагиҳои алоҳидаи рӯҳи эронӣ ба шумор овард. Ин матлаб аз назари донишмандони нахустин садаҳои исломӣ низ пӯшида набуд ва иддае аз онҳо ин китобро аз мероси адабии эронӣ донистаанд. Бо ишора ба ин маънӣ Ибни Надим навиштааст: «Аммо дар бораи «Калила ва Димна» ихтилоф аст: ба қавле он сохтаи Ҳинд аст, ки дар муқаддимаи китоб гуфта шуда, ба қавле он сохтаи подшоҳони ашқонист ва ҳиндиён онро ба худ бастаанд, ба қавле онро эронӣ таълиф кардаанд ва ҳиндиён ба худ бастаанд. Ва гурӯҳе гуфтаанд, ки Бузургмеҳри ҳақим поре аз онро сохтааст. Ва Худо донотар аст»<sup>3</sup>.

Тарҷумаи «Калила ва Димна» дар муҳити адабиву фарҳангии қарнҳои нахусти ислом истиқболи тамом пайдо кард. Он яке аз панҷ беҳтарин китоб ба забони арабӣ шинохта шуд ва хондану аз бар карданаш василаи камолоти ахлоқиву маънавии афроди ҷомеа ба шумор омад. Бесабаб нест, ки дар тӯли сад солифармонравиҳои Аббосиён «Калила ва Димна» аз рӯи тарҷумаи Ибни Муқаффаъ чандин бор дар қолаби шеъри арабӣ бозгӯӣ шуд.

Пас аз Ибни Муқаффаъ «Калила ва Димна» бори дигар аз ҷониби Абдуллоҳ ибни Ҳилоли Аҳвозӣ номнависандаи эронитабор ба насри арабӣ тарҷума гардид<sup>4</sup>. Зоҳиран, ин тарҷума аз лиҳози фасоҳат ва нақъи сухан ба пояи тарҷумаи Ибни Муқаффаъ намерасидааст, ки таҳтушшуои он қарор гирифта ва аз миён рафтааст.

**«Синдбоднома».** «Китоби Синдбод» ё «Синдбоднома»-ро дар масири таърих сарнавиште монанд ба сарнавишти «Калила ва Димна» насиб гаштааст. Донишмандони қадим дар таъйини асли ин китоб бо ҳам ихтилофи назар доштаанд. Масъудӣ «Синдбоднома»-ро аз китобҳои ҳиндиён ба шумор оварда, таълифи онро ба замони салтанати шоҳи ҳиндӣ Кураш мансуб донистааст. Бино ба навиштаи

<sup>1</sup>داستان های بید پای. ترجمه محمد عبد الله البخاری. به تصحیح پرویز ناتل خانلری و محمد روشن. تهران، خوارزمی، ۱۳۶۹. - ص. ۱۷.

<sup>2</sup>مجتبائی، فتح الله. ملاحظاتى در باره کلیله و دمنه. مجله زبان شناسی، تهران، ۱۳۶۳، سال اول، شماره ۲، ص. ۳۳-۶۳.

<sup>3</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>4</sup>حاجی خلیفه. کشف الظنون عن اسامی الکتب و الفنون. ج. ۲. - ص. ۴۲۸.

ӯ, «Синдбод китоби «Хафт вазир, муаллим, ғулом ва зани подшоҳ»-ро барои ҳамин шоҳ танзим кард ва он ба номи «Китоби Синдбод» маъруф шуд»<sup>1</sup>.

Иддае аз донишмандони қадим «Синдбоднома»-ро аз таълифоти замони Ашкониён шинохтаанд. Аз ҷумла, Ҳамзаи Исфаҳонӣ чанде аз китобҳои даврони «мулук-ут-тавоиф», яъне, Ашкониёнро, ки дар маҷмӯъ ба 70 китоб мерасида, номбар кардааст, ки миёни онҳо «Китоби Синдбод» низ вучуд дорад<sup>2</sup>. Муаллифи «Муҷмал-ут-тавоиф ва-л-қисас» низ ҳамин маълумотро айнан такрор кардааст<sup>3</sup>.

Ҳамин ихтилофи назари пешиниён дар асли «Синдбоднома» дар ахбори Ибни Надим низ зоҳир аст, зеро ӯ як бор ин китобро дар баҳши қиссаи ривоёт ва афсонаҳои ҳиндиён зикр карда, дар ҷои дигар иттилоъ медиҳад, ки дар интисоби он ба эрониён ва ҳиндиён тартибдоранд ва худ мансубияти китобро ба ҳиндиён наздиктар ба ҳақиқат доништааст<sup>4</sup>. Аҳли таҳқиқ имрӯз бар он ақидаанд, ки «Синдбоднома» бо он ки муъҷази ҳикоятҳои асли ҳиндӣ дорад, дар Эрон ба таҳрир омадааст. Ба ҳадси М.Минавӣ, муаллиф ё муҳаррири он будани Барзуяи табиб аз эҳтимол дур нест<sup>5</sup>.

«Синдбоднома» дар давраи наҳзати тарҷумаи осори паҳлавӣ ба арабӣ, ки ба нимаи дувуми асри VIII – нимаи аввали асри IX рост меояд, ба забони арабӣ дар ду таҳрири муфассал ва мухтасар баргардон шудааст. Муаллифи «ал-Фихрист» таҳрири муфассалро «Китоб Синдбод-ал-қабир» ва таҳрири мухтасарро «Китоб Синдбод-ас-сағир» номида, мутарҷими онҳоро таъйин накардааст<sup>6</sup>, вале ба риштаи назм кашидани «Китоби Синдбод»-ро аз ҷониби шоир Абон ибни Абдулҳамиди Лоҳиқӣ зикр намудааст<sup>7</sup>.

«Синдбоднома» дар асри XI аз арабӣ ба забони юнонӣ тарҷума шуда ва дар нусхаи боқимонда аз он номи муаллиф ё муншии китоб «Мӯсои порсӣ» зикр шудааст. К.Брокелман ва А.Тафаззулӣ «Мӯсои порсӣ»-ро ҳамон Мӯсо ибни Исои Қисравӣ – яке аз мутарҷимони «Худойнома» пиндошта ва ӯро мутарҷими «Синдбоднома» доништаанд<sup>8</sup>. Агар ин пиндор ҳақиқат дошта бошад, пас маълум нест,

---

<sup>1</sup>مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۷۵.  
<sup>2</sup>حمزه اصفهانی. سنی ملوك الارض و الانبياء. تاريخ پیامبران و شاهان. - ص. ۴۱.

<sup>3</sup>مجمّل التواريخ و القصص. به تصحيح ملك الشعرا بهار. - ص. ۹۳-۹۴.

<sup>4</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>5</sup>نامه تنسر به گشنسپ. به تصحيح مجتبى مينوى. - ص. ۱۸۴.

<sup>6</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>7</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۸۶.

<sup>8</sup>بروكلمان، كارل. تاريخ الادب العربى. ج. ۱. - ۳. الطبعة الثانية، دار المعارف بمصر، ۱۹۶۹. ج. ۳. - ص. ۱۰۲، ۲۹۹، ۲۵۵؛ تفضلى، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۹۹.



ки Кисравӣ кадоме аз ду таҳрири «Синдбоднома»-ро тарҷума кардааст.

Хамин тариқ, масъалаи мутарчим ё мутарчимони ду таҳрири «Синдбоднома» ба забони арабӣ дар ҳадди фарзияву тахмин боқӣ мондааст, вале тарҷума шудани ин китоб аз паҳлавӣ ба арабӣ ва баъд ин васила шуҳрати тамои пайдо кардани он дар олами мутамаддин шакку шубҳаеро эҷод намекунад.

«**Булуҳар ва Будосаф**». Ин қисса низ мисли «Калила ва Димна» ва «Синдбоднома» асли ҳиндӣ дорад, вале ба ҳайси китоби мустақил дар охириҳои аҳди Сосониён арзи вучуд кардааст. Мучтабои Минавӣ эҳтимол додааст, ки дар замони салтанати Хусрави Анӯшервон Барзуяи табиб ҳикоятҳои ин қиссаро ба паҳлавӣ баргардон карда, онҳоро ба шакли китобе алоҳида даровардааст<sup>1</sup>.

Асоси китобро саргузашти муассиси дини будой – Будо, ки бо ҳикоят ва суханони ҳикматомез даромехтааст, ташкил мекунад. Лақаби Будо қаблан «Будистава» ба маънои «Будои оянда» буд, ки аз он шакли эронии «Будосаф» паид омадааст<sup>2</sup>. Булуҳар номи зоҳидест, ки Будосафро ҳидоят кардааст. Дар китоби «Булуҳар ва Будосаф» Будосаф бо раҳнамоии Булуҳари зоҳид ва ҳаким ба мақоми ойингустарӣ ва ҳидоятгарии мардум мерасад.

Бино ба ишораи Ибни Надим, китоби «Булуҳар ва Будосаф» дар баробари ду китоби дигар: яке «Китоб ул-Буд» ва дигаре «Китоб Будосаф» (ба танҳои) дар нимаи дувуми қарни VIII ба забони арабӣ тарҷума гардид<sup>3</sup>. Зоҳиран, ин ҳар се китоб пайвандҳое ба ҳам дошта ва лаҳзаҳои муштарак дар онҳо ба назар мерасидаанд.

Пас аз тарҷумаи мансури «Булуҳар ва Будосаф» ин китоб аз ҷониби шоири арабизабони эронӣ Абон ибни Абдулҳамиди Лоҳикӣ (ваф.с.815) ба риштаи назми арабӣ кашида шуд<sup>4</sup>. Аз тарҷумаи мансури арабии китоб ду таҳрир боқӣ мондааст, ки яке аз онҳоро Шайх Садуқ ибни Бобувайҳ (ваф. 991) дар китоби худ «Иқмол-уд-дин ва итмом-ун-неъмат» нақл карда ва Мулло Муҳаммадбоқирӣ Маҷлисӣ (ваф. 1699) онро дар китоби «Айн-ул-ҳаёт»-и хеш ба форсӣ тарҷума кардааст. Ховаршиноси маъруф В.Ҷеннинг дар миёни дастхатҳое, ки дар Турфон ёфт шуданд, як пора аз «Булуҳар ва Будосаф»-ро ба шеърӣ дарӣ ва ба хатти монавӣ ташхис дода, интисоби назми онро ба Рӯдакӣ наздик ба ҳақиқат донистааст<sup>5</sup>.

Дар қарнҳои нахустини исломӣ «Булуҳар ва Будосаф» ба сурӯи ва баъдтар ба лотинӣ ва забонҳои мухталифи аврупоӣ таҳти унвони

<sup>1</sup> بلوهر و بوذاسف. انتشارات امير كبير. تهران، ۱۳۷۶. - ص. ۲۰.

<sup>2</sup> تفضلی، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۳۰۱.

<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۲.

<sup>5</sup> هيننگ و. ب. قديم ترين نسخه شعر فارسي. - مجله دانشكده ادبيات،

شماره ۴. سال پنجم، تيرماه ۱۳۳۷. - ص. ۱-۹.

«Варлаам ва Иосаф» тарчума гардида, мазмуну мухтавои масеҳӣ касб кард.

«**Мушкдона ва Шоҳизанон**». Дар насри паҳлавии охирҳои аҳди Сосониён дар баробари осори ахлоқие, ки мусалламан асли ҳиндӣ доштаанд (мисли «Калила ва Димна», «Синдбоднома», «Булухар ва Будосаф»), қиссаву дostonҳое низ роиҷ будаанд, ки дар заминаи суннатҳои адабиву бадеии эронӣ ба вучуд омадаанд. Дар онҳо баъзан унсурҳои қиссапардозии ҳиндӣ ба қор гирифта шудаанд, вале аз ин амал ранги эронии онҳо қоҳиш наёфтааст.

Пас аз истилои араб аглаби ин қиссаву дostonҳо ба забони арабӣ баргардон шуданд ва мазҳаре аз мазоҳири ҳаёти адабии халқҳои эрониро дар асрҳои VIII-IX фароҳам оварданд. Яке аз ин гуна қиссаҳо қиссаи «Мушкдона ва Шоҳизанон» аст, ки дар охирҳои аҳди Сосониён арзи ҳастӣ карда ва миёни мардум шухрат доштааст. Ибни Надим дар «ал-Фихрист» дар баҳши «Асмор-ул-фурс» (Афсонаҳои эронӣ) номи ин дostonро дар шакли таҳрифшудаи «Мускзанона ва Шоҳизанон» ба қайд оварда<sup>1</sup>, вале ишорае ба мухтавои он накардааст. Дар китоби «ал-Маҳосин ва-л-аздод», ки ба қалами алломаи араб Қоҳиз (775-868) мансуб аст ва бо истифодаи фаровон аз манбаҳои эронӣ ба таҳрир омадааст, дар боби «Маҳосини вафои занон ва акси он» қиссаи бо дастуру тадбири Ширин – ҳамсаримаъруфи Хусрави Парвиз бар мӯбадон мусаллат шудани канизаки *ӯ* – Мушкдона нақл шудааст<sup>2</sup>, ки мусалламан хулосаи мухтавои қиссаи мавриди назар аст. Дар он омадааст, ки мӯбадон (зоҳиран, мӯбадонмӯбад) чун ба назди Хусрави Парвиз ворид мешуд, ҳамвора *ӯ*ро бо суҳанони «Шоҳо! Дар зиндагонӣ саодатманд ва бар душманонат пирӯз бош, хайру саҳо кун ва аз итоати занон иҷтиноб варз!» шодбош мегуфт. Шоҳро ба дурӣ аз занон тарғиб кардани мӯбадон боиси хашмгинии Ширин мегардид. Бино бар ин, *ӯ* ба ҳилаву тадбире даст зад ва ба Хусрави Парвиз гуфт, ки канизаки соҳибҷамоли худ – Мушкдоноро ба мӯбадон, ки назди шоҳ аз манзилати волое бархурдор аст ва алҳол пир гаштааст, меҳоҳад туҳфа бикунад. Хусрави Парвиз ин пешниҳоди Ширинро меписандад ва бо мӯбадон дар ин хусус гуфтугӯ мекунад. Мӯбадон бо огоҳӣ аз ҳусну ҷамоли Мушкдона ва ба пиндори он ки ин подоши хидматҳои *ӯ*ст, канизакро мепазирад. Ширин ба Мушкдона дастур медиҳад, ки бо зебову маҳосинаш мӯбадонро ба худаш мутеъ ва тарғиб кунад ва агар мӯбадон майли наздикӣ бо *ӯ* намояд, шарте пеш гузорад, ки нахуст Мушкдона бар пушти мӯбадон ба сони маркаб савор хоҳад шуд. Ширин ҳамчунин дастур дод, ки агар ин амр барои Мушкдона муяссар гардад, соати онро ба вай қаблан хабар диҳад. Канизак, бино ба супориши Ширин, мӯбадонро чунон ба худ моил намуд, ки *ӯ* пас аз

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>2</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. المحاسن و الاضداد. - ص. ۲۰۱-۲۰۲.

чанд дафъа рад кардани шарти мазкур ахиран сабру тоқатро аз даст дод ва онро пазируфт. Мушкдона бонуи хешро аз ин амр огоҳ кард ва мӯбадонро чаҳорпо гузошта, ба ӯ лаҷому полон пӯшонид, бар болояш савор шуд ва «хар, хар»- гӯён ӯро ба ҳаракат водор кард. Дар ин асно Ширин Хусрави Парвизро ба болои боми хонаи мӯбадон роҳнамоӣ намуд ва ӯ бо дидани ин манзара нидо баровард, ки «эй мӯбадон, ин чӣ ҳол аст, ки ту гирифта шудай?». Мӯбадон сар боло кард ва ҷавоб дод, ки «ин ҳамон итоати зан аст, ки ман туро аз он бар ҳазар медоштам». Хусрави Парвиз хандиду гуфт, ки «Эзад рӯи ту ва касеро, ки минбаъд аз ту маслиҳат мепурсад, сиёҳ гардонад»<sup>1</sup>.

Қиссаи мазкур собит мекунад, ки шакли саҳеҳи номи канизак, ки дар «ал-Фихрист» дар асари таҳриф «Мушкзанона» сабт шудааст, «Мушкдона» аст ва аз «Шоҳизанон» манзур Ширин мебошад, ки, воқеан, дар мақоми шоҳи занони Хусрави Парвиз қарор гирифта буд. Муҳтавои қиссаи мазкур аз зумраи дostonҳо дар хусуси макри занон будани «Мушкдона ва Шоҳизанон»-ро таъйид мекунад. Ин навъ dostonҳо, ки реша дар адабиёти қадими Ҳинд доштанд, дар адабиёти аҳди Сосониён аз ривочи тамом бархурдор буданд. Баид нест, ки бунмои дostonи «Мушкдона ва Шоҳизанон» низ хеле пештар аз замони Хусрави Парвиз ба вучуд омада ва баъдан бо пайвастан ба номи ин шоҳаншоҳи сосонӣ ва ҳамсари ӯ – Ширин рангу мазмуни комили эронӣ пайдо карда бошад. Ба ҳар оин, бар мабнои қиссае, ки дар «ал-Маҳосин ва-л-аздод» нақл шудааст, метавон истинбот кард, ки дар адабиёти аҳди Сосониён қиссае мустақил доир ба тасаллут ёфтани канизаки Ширин бар мӯбадон маъмул буда ва дар қарнҳои аввали ислом ба арабӣ баргардон шудааст.

**Қиссаи шоҳи сосонӣ Балoш ва духтари шоҳи Ҳинд.**Яке аз қиссаҳои, ки, зоҳиран, дар даврони тоисломӣ мутадовил буда ва дар нахустин садаҳои исломӣ ба арабӣ нақл гардидааст, қиссаи Балoш ва духтари шоҳи Ҳинд аст. Муаллифи «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» ҳини суҳан аз салтанати Балoш аз ободкориҳо, шикордӯстӣ ва осори бозмонда аз шикоргоҳи ӯ хабар дода ва чунин афзудааст: «Ва дар «Сияр-ул-мулук» хондам, ки ба Ҳиндустон рафт ва духтари малики Ҳиндро биёвард баъди корзорҳо. Ва он қисса дароз аст миёни Балoш ва духтари шоҳи ҳиндувон ва духтари сутурдори Балoш»<sup>2</sup>. Хулосаи қиссаи мазкур, ки муаллифи «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» аз шарҳи муҳтавои он иҷтиноб варзидааст, дар ду маъҳази арабизабони қарнҳои нахустини исломӣ баён гардидааст. Маъҳази аввал китоби «ал-Маҳосин ва-л-аздод»-и мансуб ба адиби маъруфи араб Ҷоҳиз (775-868) аст, ки дар он фишурдаи қиссаи Балoш ва духтари шоҳи Ҳинд бо истинод ба Мӯсо ибни Исои Кисравӣ нақл гардидааст<sup>3</sup>.

<sup>1</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. المحاسن و الاضداد. - ص. ۲۰۱-۲۰۲.

<sup>2</sup> مجمل التواريخ و القصص. به تصحيح ملك الشعرا بهار. - ص. ۷۲.

<sup>3</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. المحاسن و الاضداد. - ص. ۱۹۳-۱۹۸.

Чунон ки қаблан ишора шуд, Мӯсо ибни Исои Кисравӣ аз мутарҷимони «Худойнома»-и сосонӣ ба арабӣ ба шумор омада, тарҷумаи ӯ шомили таърихи подшоҳони сосонӣ будааст<sup>1</sup>. Бо тавачҷух ба ин матлаб метавон ҳадс зад, ки қиссаи марбут ба Балош дар нухсае аз «Худойнома», ки онро Кисравӣ ба арабӣ тарҷума кардааст, ҷой дошт. Ин ҳадсро ишораи фавқуззикри муаллифи «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» ба он ки ӯ қиссаи Балошро дар китоби «Сияр-ул-мулук», яъне, тарҷумаи арабии «Худойнома» хондааст, низ таъйид мекунад.

Маъхази дувуме, ки қиссаи Балош ва духтари шоҳи Ҳиндро бо тафсиле бештар аз маъхази аввал баён кардааст, китоби «Ниҳоят-ул-ираб фӣ ахбор-ил-фурс ва-л-араб»<sup>2</sup> аст. «Ниҳоят-ул-ираб» дар асри XIV аз ҷониби муаллифе номаълум аз арабӣ ба форсӣ баргардон шуд ва тарҷума номи «Таҷориб-ул-умам фӣ ахбори мулук-ил-араб ва-л-ачам»-ро ба худ гирифт<sup>3</sup>. Дар «Ниҳоят ул-ираб» ва тарҷумаи форсии он Ибни Муқаффаъ ба касрат мавриди истинод қарор гирифтааст. Бо тавачҷух ба ин нукта метавон ҳадс зад, ки қиссаи Балош ва духтари шоҳи Ҳинд дар тарҷумае аз «Худойнома» низ, ки ба қалами Ибни Муқаффаъ тааллуқ дошт, гунҷоиш ёфта буд.

Бино бар маъхазҳои зикршуда, Балош, пас аз он ки ба сарири салтанат нишаст ва мулкаш истиқрор ёфт, ба лаҳву лааб ва муошарат бо занон майл пайдо кард. Рӯзе дар маҷлисе аз ҳусну ҷамоли духтари шоҳи Ҳинд хабар ёфт ва тавассути мактуб ӯро аз падараш хостгорӣ кард. Шоҳи Ҳинд нома ба духтар дод ва ӯро ба издивоҷи Балош тарғиб намуд. Духтар ба сабаби он ки Балош аз занон бо яке, ки бар дигарон дар ҳусну ҷамол ва фазлу камол бартарӣ дошта бошад, қаноат нахоҳад кард, ин талабро рад намуд ва дар таъйиди раъйи хеш ҳикояти подшоҳро овард, ки дар аснои сайр ҷавоҳири зиёде меёбад, ки дар байни онҳо яке дар зебоиву қимат бартар аз дигарон буд. Подшоҳ он ҷавҳари яқторо бо вучуди он ҳама бартариву афзалияташ дар ҷанби сангҳои нафиси дигар мегузорад ва онҳоро якҷо дар силке мекашад.

Подшоҳи Ҳинд узри духтарашро мепазирад ва ба талаби Балош ҷавоби рад медиҳад. Балош ба мулки Ҳинд лашкар мекашад ва дар ҷанге тан ба тан подшоҳи он кишварро мекушад ва ба назди духтараш расул фиристода, ӯро ба издивоҷи хеш даъват мекунад. Духтар розӣ мешавад, вале шарт мегузорад, ки Балош то ба кишвари хеш барнагардад ва дар тахти худ мутамаккин нашавад, майли мулоқот бо ӯ накунад, зеро ӯ бар асари фавти падар ва заволи мулки

---

<sup>1</sup>Османов М.Н.Своды иранского героического эпоса («Худайнаме» и «Шахнаме») как источники «Шахнаме» Фирдоуси. -С.166.

<sup>2</sup>نهاية الارب في اخبار الفرس و العرب. - ص. ۲۸۰-۲۹۴.  
<sup>3</sup>تجارب الامم في اخبار ملوك العرب و العجم. تصحيح رضا انزابي نژاد - يحيى كلانترى. مشهد، ۱۳۷۳/۱۹۹۴. ص. ۲۵۱-۲۶۹.

ӯ дилшикаста ва ҳуснаш коҳидааст ва метарсад, ки Балош аз ҳусни ӯ гайри он чиро, ки шунидааст, мушоҳида кунад ва ӯро аз назари хеш дур бияндозад. Дар тасдиқи узри хеш духтар қиссаи ғаввосеро нақл мекунад, ки дар қаъри баҳр луълӯеро меёбад ва дар истихроҷи он аз садаф саросема мешавад. Дар натиҷа, луълӯъ шикаста, пора-пора мегардад ва қимати хешро гум мекунад.

Балош узри духтарро мепазирад ва ӯро ба кишвараш меорад ва сипас бо ӯ издивоҷ мекунад. Вале пас аз чанде Балош худро аз ҳиндия дур мегирад. Ҳиндия аз беилтифотии Балош нисбат ба ӯ, ки дар талабаш лашкар ба Ҳинд кашида ва ҷони худро ба хатар андохта буд, ҳайрон мешавад. Ба воситаи ҳоҷибҳои хоссаи худ ҳиндия мефаҳмад, ки Балош саргарми яке аз занонаш – духтари охурсолори дарбор аст. Ӯ бо ҳилае худро ба духтари охурсолор наздик мекунад ва мефаҳмад, ки сабаби тавачҷуху шефтагии Балош ба вай иттиботи хидматгузори ва фармонбариву меҳрубонӣ будааст. Ҳиндия бо ҳилае Балошро ба дидорбинии хеш вомедорад ва бо тавассул ҷустан ба хислатҳое, ки аз духтари охурсолор дарёфта буд, дубора дили Балошро ба худ гарм ва ӯро аз духтари охурсолор дур менамояд. Ҳиндия ва духтари охурсолор ҳар яке ба хоҳири хуш гузаштани вақти Балош дар назди ӯ ва бо ҳадафи аз дили шоҳ бадар кардани меҳри рақибии худ бо навбат қиссаҳои гуногунро ба Балош нақл мекунанд.

Дар фарҷом ҳиндия бар рақибии худ – духтари охурсолор ғолиб меояд ва меҳодад ӯро ба издивоҷи ғуломе дароварад, вале духтари охурсолор худро бо заҳр мекушад. Балош низ гӯё баъд аз чандруз вафот мекунад.

Чунон ки пайдост, қиссаи Балош ва духтари шоҳи Ҳинд ба шеваи маъмули масалгузори бо ҳадафи таъйид ва тасдиқи андешаву оро ва рафтору кирдори воқеъгардида асос ёфтааст.

Ҳамин тавр, қиссаи Балош ва духтари шоҳи Ҳинд ҳафт ҳикоятро дар бар гирифтааст, ки чаҳортои онҳо аз забони ҷонварон аст. Ин навъ ҳикоят дар замони Сосониён пас аз тарҷумаи «Калила ва Димна» аз ҳиндӣ ба паҳлавӣ хеле маъмул ва роиҷ гашта буд. Ағлаби қиссаву ҳикоятҳо, ки аз забони ҷонварон ҷиҳати баёни матолиби ахлоқиву иҷтимоӣ ва андешаҳои сиёсӣву фалсафӣ пардохта мешуданд, аслу маншаи ҳиндӣ доштанд, вале бо ворид шудан ба муҳити андешаву оро ва тафаккури мардуми Аҷам ранги эронӣ ба худ гирифтаанд. Дар қиссаи Балош низ ҳикояти тамсилии дохили он асли ҳиндӣ доранд, вале ҳуди қисса маҳсули завқу суннати адабии аҳди сосонист. Он бо ном ва замони салтанати шоҳи воқеии сосонӣ пайванд аст, вале гумон аст, ки бори ҳақиқати таърихро бар дӯш дошта бошад, зеро ба шаҳодати таърихномаҳо Сосониён дар солҳои салтанати Балош ба доираи муҳолифат бо Ҳайтолиён ворид буданд ва баид аст, ки Балош дар он шароит ва дар муддати кӯтоҳи салтанати хеш барои лашкар кашидан ба Ҳинд имконе пайдо карда бошад. Аслан гап дар сари воқеияти таърихӣ доштан ё надоштани

қиссаи мавриди назар нест. Аҳаммияти ин қисса дар маҳзи вучуди он аст, ки дар охирҳои аҳди Сосониён пайдо шуда ва ба василаи тарҷума аз паҳлавӣ ба арабӣ ба муҳити нави исломӣ роҳ ёфт. Осоре, ки аз ин қисса дар китобҳои арабизабону арабихарфи қуруни нахустини исломӣ боқӣ мондааст, аз як тараф, ривочисуннати қиссапардозиро дар адабиёти тоисломии форсии тоҷикӣ таъйид мекунад, аз ҷониби дигар, гувоҳи ҷаҳду талоши мутарҷимоне, аз қабили Ибни Муқаффаъ, Мӯсо ибни Исои Кисравӣ ва дигарон аст, ки ҳифзу бақои осори ниёгони хешро аз тариқи тарҷумаи он ба забони арабӣ дар шароити истилои сиёсиву маънавии аъроб ва тасаллути комили забони эшон таъмин карданд.

Вобаста ба тарҷумаи осори мазкур ба забони арабӣ дар арабшиносӣ ва шарқшиносии Аврупо аксаран чунин ақида талқин мешавад, ки гӯё хидмати эронӣ дар ин маврид танҳо аз интиқоли мероси маънавии ҳиндӣ ба олами ислом иборат асту бас. Албатта, чунин тарҳи масъала баргаштан аз роҳи савоб аст, зеро осори мавриди назар бо он ки решаҳое дар адабиёти қадими ҳиндӣ доштаанд, бо вуруди худ ба олами андешаву орои мардуми Эронзамин рангу рӯҳи эронӣ касб карда буданд. Аз ин рӯ, тарҷумаҳои ин осорро танҳо василаи интиқоли мероси маънавии ҳиндӣ ба муҳити исломӣ ба қалам додан хатоӣ маҳз аст. Баръакс, ҳадаф ва анғезаи ин тарҷумаҳо идомаи суннатҳои ҳамон қисмати насри тоисломии эронӣ буд, ки дарташаққули он пайванду омезиши унсурҳои қиссапардозии ҳиндӣ ва панднигориву ҳикматгароии эронӣ нақши муҳим доштанд.

#### 4.5.2. Достонҳои ҳамосии эронӣ

Бар хилофи қиссаву ривоёти ахлоқии эронӣ, ки ғолибан аз пайванди унсурҳои эрониву ҳиндӣ таркиб ёфтаанд, достонҳои ҳамосии насри тоисломии эронӣ аз устураву ривоёти қухани эронӣ бархостаанд ва дар ташаққули худ ба суннатҳои ҳамосасароии эронӣ таъя кардаанд. Ағлаби достонҳои ҳамосии тоисломӣ ҷузъе аз аҷзои фароҳамоварандаи «Худойнома» буданд ва бо тарҷумаи ин китоб ба забони арабӣ ба муҳити исломӣ роҳ ёфтанд.

Дар баробари ин, дар насри аҳди Сосониён достонҳое низ мутадовил буданд, ки ҳам ба таркиби «Худойнома» ворид будандва ҳам ба ҳайси асаре мустақил аз он ривоч доштанд. Ба ин маънӣ ин достонҳо ду таҳрир доштанд: яке таҳрире, ки ба василаи дохил шудан ба таркиби «Худойнома» расмият ёфта буд ва дувум таҳрири ғайрирасмӣ, ки ғолибан ба ривоёти шифоҳӣ таъя мекард. Бадеҳист, ки миёни таҳрирҳои расмиятёфта ва ғайрирасмӣ дар ҷузъиёту тафосили муҳтавои достонҳо тафовутҳо ҷой доштанд. Ҳамчунин метавон эҳтимол дод, ки дар аҳди тоисломӣ миёни мардуми Эронзамин достонҳое низ роиҷ буданд, ки гунаи катбӣ надоштанд.

Ибни Надим унвони иддае аз дostonҳои ҳамосии тоисломии эрониро дар баҳши китобҳои, ки эронӣ дар бораи «саргузашт ва афсонаҳои рост» (фи-с-сияр ва-л-асмор-ас-саҳиҳа) аз подшоҳони худ таълиф кардаанд, зикр намуда ва онҳоро чузъи китобҳои таъриҳӣ шумурдааст<sup>1</sup>. Ин назар бозтобе аз синкретизми навъҳо дар адабиёти аҳди куҳан аст, ки дар он ханӯз таъриҳ аз ҳамоса чудо нашуда ва дostonи қаҳрамонӣ чун таъриҳи воқеӣ қабул мегардид. Бо таваҷҷуҳ ба баҳши мазкури «ал-Фихрист» иддае аз дostonҳои ҳамосиро, ки дар асрҳои VIII-IX ба забони арабӣ чун осори мустақил баргардон шудаанд, мавриди баррасӣ қарор медиҳем.

**Дostonи Баҳроми Чӯбина.** Ин дoston шарҳи корномаи Баҳром - яке аз сардорони номвари сипоҳи Эронро дар замони салтанати Хурмуз ва писари ӯ - Хусрави Парвиз дар бар мегирифтааст. Қиссаи пирӯзиҳои Баҳроми Чӯбина бар туркон, маъзул шуданаҳ аз фармондихии сипоҳи Эрон, нофармонии ӯ аз Хурмуз ва баъдан аз Хусрави Парвиз, гурехтани Хусрави Парвиз ва тоҷи шоҳӣ ба сарниҳодани Баҳроми Чӯбина, бо мадади императори Рум таҳти шоҳиро дубора ба даст овардани Хусрави Парвиз, паноҳ бурдани Баҳром ба туркон ва охируламр кушта шудани ӯ ба таҳрики Хусрави Парвиз дар «Шоҳнома» дар қолаби назм баён гардида, бозгӯи муҳтавои дostonро нозарур мегардонад.

Шакке нест, ки таҳрири расмӣ ин дoston, ки Баҳром дар он чун сарлашқари исёнгар ва ғосибӣ таҳти шоҳӣ ба тасвир омада буд, дар таъриҳномаи расмӣ Сосониён - «Худойнома» гунҷоиш ёфта ва дар таркиби он ба арабӣ тарҷума шудааст. Дар баробари ин, дар шарҳи корномаи Баҳроми Чӯбин дostonи алоҳида низ дар насри паҳлавӣ вучуд дошт. Ин матлабро Масъудӣ чунин таъйид кардааст: «Эронӣ дар саргузашти Баҳроми Чӯбин ва аъмоли чолиби вай дар диёри Турк дар айёме, ки он чо буд ва начот додани духтари шоҳи Турк аз ҳайвоне ба номи «самаъ», ки ба қадри як гӯрхар бузург буд ва духтарро ҳангоми сайругашт аз миёни канизонаҳ рабуда буд, ҳамчунин дар ҳамаи аҳволи Баҳром аз оғози қор то ҳангоми кушта шудан ва насаби ӯ китобе чудогона доранд»<sup>2</sup>.

Ҳамин китоби чудогона дар миёнаҳои қарни VIII аз ҷониби Чабала ибни Солим ба арабӣ баргардон шуд. Дар «ал-Фихрист» зимни зикри ин тарҷума лақаби Баҳром «Шус» сабт шуда<sup>3</sup> ва пай бурдан душвор нест, ки ин вожа таҳрифе аз «Чӯбин» аст, зеро қаробати имлои арабии ин ду вожа маҳалле барои тардид дар чунин таҳриф боқӣ намегузорад.

«Дostonи Баҳроми Чӯбина» пас аз тарҷума дар миёни муаррихон ва адибони нахустин садаҳои исломӣ маъруф гардида, муҳтавои он дар китобҳои таъриҳи адаб гоҳе батафсил ва гоҳе баиҳтисор мавриди нақлу бозгӯӣ қарор гирифт. Муфассалтарин нақли ин дoston дар

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>2</sup>مسعودی، علی بن حسین. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۷۰.

<sup>3</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

«Ниҳоят-ул-ираб фӣ ахбор-ил-фурс ва-л-араб» ба назар мерасад<sup>1</sup>. Зоҳиран, муаллифи «Ниҳоят ул-ираб» тарҷумаи арабии достони мазкурро дар даст дошта ва онро дар китоби худ ба таври мукамал бозгӯӣ кардааст. Дар таъйиди ин матлаб метавон ду далел овард: аввалан, дар «Ниҳоят-ул-ираб» баъзе лаҳзаҳои дoston омадааст, ки онҳоро дар китобҳои дигар, аз ҷумла дар «Шоҳнома» низ наметавон пайдо кард. Сониян, дар ин асар қиссаи начот додани Баҳром духтари Хоқони Туркро аз ҳайвони даранда нақл шудааст, ки он, ба қавли Масъудӣ, ҷузъе аз китоби ҷудогона доир ба корномаи Баҳром будааст.

Дар «ал-Ахбор-ут-тивол»-и Абӯҳанифаи Динаварӣ ва «Ғура-ус-сияр»-и Саолибӣ муҳтавои «Достони Баҳроми Ҷӯбина» нисбатан муфассал зикр шудааст<sup>2</sup>. Табарӣ, Масъудӣ ва иддае аз муаррихони дигар низ муҳтавои ин дostonро ёдрас шудаанд<sup>3</sup>.

**Достони «Рустам ва Исфандёр».** Яке аз дostonҳои ҳамосӣ, ки дар нимаи аввали асри VIII аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума гардид, «Достони Рустам ва Исфандёр» аст. Ибни Надим ин дostonро ҷудо аз «Худойнома» зикр карда ва бо ин ба ҳайси дostonе мустақил маъмул будани он ишора кардааст. Ин дoston низ мисли «Достони Баҳроми Ҷубин» аз ҷониби Ҷабала ибни Солим тарҷума шудааст. «Рустам ва Исфандёр» дар аҳди Сосониён ва қарнҳои нахустии ислом аз шуҳрати фаровон бархурдор будааст. Дар «ас-Сират-ун-набавия» омадааст, ки яке аз аҳли Макка, ки Назр ибни Ҳорис ном дошт, барои дур кардани мардум аз пайғамбари ислом ва машғул доштани онҳо аз шунидани мавъизаҳои Муҳаммад (с) ба ривояти ахбори подшоҳони эронӣ ва нақли дostonи «Рустам ва Исфандёр» мепардохт<sup>4</sup>.

Асли паҳлавӣ ва тарҷумаи арабии дostonи мустақили «Рустам ва Исфандёр» аз миён рафтааст, вале дар таърихномаҳои исломӣ ишороте ба ин дoston рафта ва ё муҳтавои он ба ихтисор нақл шудааст. Муаллифи «Ниҳоят-ул-ираб» матолиби дostonи мазкурро нисбатан муфассал аз қавли Ибни Муқоффаъ нақл кардааст<sup>5</sup>. Ибни Муқоффаъ дар навбати худ ба «яке аз китобҳои эронӣ» истинод кардааст, ки он, зоҳиран, ҳамон китоби ҷудогонаи «Рустам ва Исфандёр» будааст. Қиссаи ҷанги Рустам бо Исфандёр ва кушта шудани Исфандёр дар ин набард, ки меҳвари дostonи мазкурро

<sup>1</sup>انهاية الارب في اخبار الفرس و العرب. به تصحيح محمد تقى دانشپژوه. انجمن آثار و مفاخر فرهنگى. تهران، ۱۳۷۵ - ص. ۲۵۰-۲۹۲.

<sup>2</sup>تعالی مرغى. شاهنامه كهن. پارسی تاریخ غرر السیر. - ص. ۳۶۵؛ الدينورى، ابوحنيفة. الاخبار الطوال. ص. ۷۹-۱۰۱.

<sup>3</sup>طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۲. - ص. ۷۲؛ مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۶۶.

<sup>4</sup>ابن هشام. السيرة النبوية. قدم لها وعلق عليها وضبطها طه عبد الرووف سعد. ج. ۱. - ص. ۶۱.

<sup>5</sup>انهاية الارب في اخبار الفرس و العرب. - ص. ۸۲-۸۵.



ташкил мекунад, дар «ал-Ахбор-ут-тивол»-и Абӯханифаи Динаварӣ низ нақл шудааст<sup>1</sup>. Масъудӣ чанд бор аз чанги Рустам ва Исфандёр ёдовар шуда, иттилоъ додааст, ки эронӣён ахбори Исфандёр, кушта шудани ӯ ба дасти Рустам ва кушта шудани Рустам ба дасти Баҳманро дар китоби «Сакисарон», ки онро Ибни Муқоффаъ ба арабӣ даровардааст, шарҳ додаанд<sup>2</sup>. Бино бар ин, метавон истинбот кард, ки миёни матолиби ин китоб ва достони «Рустам ва Исфандёр» умумиятҳои вучуд доштаанд. Муфассалтарин нақли достони мазкур ба қалами Саолибӣ<sup>3</sup> ва Фирдавсӣ<sup>4</sup> тааллуқ дорад.

**Достони «Баҳром ва Нарсӣ».** Ибни Надим дар «ал-Фихрист» дар ҳамон бахши китобҳои, ки эронӣён дар бораи саргузашт ва афсонаҳои рости подшоҳони худ таълиф кардаанд, достони «Баҳром ва Нарсӣ»-ро зикр карда, вале ишорае ба мутарҷими ин достон ва муҳтавои он накардааст<sup>5</sup>. Дар сарчашмаҳои қарнҳои нахустини исломӣ низ ишорае сарех ба ин достон ба назар намерасад, вале шарҳи салтанати подшоҳони эронӣ, ки номҳои «Баҳром» ва «Нарсӣ» доштаанд, дар ағлаби таърихномаҳои исломӣ дарҷ аст. Дар миёни ин Баҳромҳову Нарсӣҳо касоне, ки ба тақозои унвони достони мавриди назар ба ҳам дар иртибот бошанд ва гузашта аз ин, саргузашт ва аъмолашон сазовори мавзӯи як достон шуда тавонад, ду нафар шоҳи сосонӣ: Баҳром ибни Баҳром ва бародари ӯ – Нарсӣ ибни Баҳром ҳастанд, ки паси ҳам салтанат рондаанд. Дар «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ дар мавриди салтанати онҳо чизе ҷуз аз панду андарзхояшон ҳини ҷулус ба тахти шоҳӣ зикр нашудааст<sup>6</sup>.

Дар «Муруч-уз-заҳаб» қиссаи тамсилии аз рӯзгори Баҳром ибни Баҳром нақл шуда, ки он боиси ба роҳи адолату инсоф баргаштани ин шоҳи сосонӣ мегардад. Хулосаи қисса ин аст, ки худхоҳӣ ва такаббури Баҳром мулкро ба табоҳӣ ва киштзоронро ба харобӣ овард. Рӯзе хангоми мурур аз харобазоре бонги ду ҷуғзеро шунид ва аз мӯбадонмӯбад шарҳи гуфтори ин ду парандаро пурсид. Мӯбадонмӯбад гуфтори онҳоро тавре тавҷеҳ кард, ки Баҳром аз он панду андарз барои худ гирифт, адлу адолат ва хайру сахоро пеша кард. Мулки ӯ ободон ва харобаҳо гулистон шуданд. Пас аз ӯ бародараш–Нарсӣ ба тахт нишаст ва шеваи кишвардории бародарро пайравӣ кард<sup>7</sup>.

Қиссаи ба роҳи адлу инсоф баргаштани Баҳром дар «Ниҳоят-ул-ираб» низ нақл шуда, вале дар ин ҷо ҳикояте, ки боиси ин роҳро пеш

<sup>1</sup>الدينورى، ابوحنيفة. الاخبار الطوال. ص. ۲۵-۲۶.

<sup>2</sup>مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۲۱.

<sup>3</sup>تعالبي مرغنى. شاهنامه كهن. پارسى تاريخ غر السير. - ص. ۱۷۲.

<sup>4</sup>Фирдавсӣ, Абулқосим. Шоҳнома. Ҷ. 8. - С. 281-428.

<sup>5</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>6</sup>Фирдавсӣ, Абулқосим. Шоҳнома. Ҷ. 7. - С. 300-3066.

<sup>7</sup>مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۴۶.

гирифтани шоҳи сосонӣ мешавад, куллан дигар аст. Тибқи ин ҳикоят, сарони кишвар аз шоҳ канора мегиранд ва касе ба назди ӯ намеравад. Баҳром дар танҳои мефаҳмад, ки шоҳии ӯ бо раият арзиш дорад ва сирату сулуки худро тағйир медиҳад. Пас аз ӯ бародараш – Нарсӣ ба тахт нишаста, «сирату суннати ӯро иктидо мекунад»<sup>1</sup>. Аз имкон дур нест, ки матолиби мазкур мавзӯи достони «Баҳром ва Нарсӣ»-ро замина гузошта бошанд.

**Достони «Доро ва бути заррин».** Яке дигар аз дostonҳои паҳлавӣ, ки тарҷумаи он ба арабӣ дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим ба қайд омадааст, «Доро ва-с-санам-аз-захаб» (Доро ва бути заррин) ном доштааст. Дар китобҳои таъриху адаби қуҳан асаре аз ин дoston ва номи мутарҷими он боқӣ намондааст. Дар ағлаби таърихномаҳои исломӣ қиссаи таваллуди Доро, дар сандуқчае ба об афканда шудани ӯ аз ҷониби модараш - Хумой, онро аз об баровардани козуре ва Дороро тарбия кардани ӯ, расидани Доро ба тахти шоҳӣ, пирӯзҳои вай ба лашкари Рум вакишварҳои дигар баён шудааст<sup>2</sup>, вале маълум нест, ки кадом як лаҳзаи ин қиссаи рӯзгори Доро мавзӯи достони «Доро ва бути заррин»-ро дар бар гирифта будааст. Забехуллоҳи Сафо ба тавачҷуҳ ба ҷанги Доро бо лашкари Шуайби аъробӣ, ки шарҳи он дар «Шоҳнома» омадааст<sup>3</sup>, ҳаде задааст, ки матолиби достони мавриди назар бояд бо ин ҷанг иртиботе дошта ва он бути заррин, ки дар унвони дoston таъкид шудааст, дар сарзамини аъроби аҳди ҷоҳилият ёфта мешудааст<sup>4</sup>.

**Достони «Шаҳрбароз ва Хусрави Парвиз».** Ибни Надим дар бахше аз «ал-Фихрист»-и худ, ки осори таърихиву ҳамосии тоисломии эрониро баршумурдааст, номи китоби «Шаҳрбароз ва Парвиз»-ро низ ба қайд овардааст<sup>5</sup>. Дар нусхаҳои ҷопии «ал-Фихрист» номи «Шаҳрбароз» дар шакли муҳаррафи «Шаҳризод» ба таъъ расида ва аён аст, ки ин таҳриф дар заминаи мушобихати ин ду ном сар задааст. К.А.Иностранцев, ки таҳрифи «Шаҳрбароз» будани вожаи «Шаҳризод»-ро пай набурда, китоби мазкурро аз китобҳои афсонаҳо шуморидааст ва, бино ба наздикии «Шаҳризод» ва «Шаҳрзод»-и афсонавӣ, ба иртиботе миёни ин китоб ва «Ҳазору як шаб» қоиладардааст<sup>6</sup>. М.Муҳаммадӣ дostonи таърихиву ҳамосӣ будани

---

<sup>1</sup>انهاية العرب في اخبار الفرس و العرب. - ص. ۲۱۲-۲۱۷.

<sup>2</sup>تعالی مرغنی. شاهنامه کهن. پاریس تاریخ غر السیر. - ص. ۲۲۷؛ نهاية العرب في اخبار الفرس و العرب. - ص. ۸۸-۸۹؛ الدينوری، ابوحنيفة. الاخبار الطوال. ص. ۲۷-۲۹.

<sup>3</sup>Фирдавсӣ, Абулкосим. Шохнома. Ҷ.6. - С.498-499.

<sup>4</sup>صفا، ذبیح الله. حماسه سرایی در ایران. - ص. ۵۴۴.

<sup>5</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>6</sup>Иностранцев К.А. Сасанидские этюды. – СПб, 1909. - С.28.

«Шахрбароз ва Парвиз»-ро таъкид карда ва ҳадс задааст, ки онро, зоҳиран, Ҷабала ибни Солим ба арабӣ тарҷума кардааст<sup>1</sup>.

Шахрбароз аз сипахсолорони бузурги аҳди Хусрави Парвиз (590-628) буд, ки дар охири замони салтанати шоҳи мазкур ҳамвора дар мадори воқеоти сиёсату аскарӣ қарор гирифт ва дар ҷангҳо, ки миёни Эрон ва Рум ҷараён дошт, нақше муҳим бозид. Ахбор ва аъмоли Шахрбароз ҳам ба василаи тарҷумаи китоби мазкур ва ҳам аз тариқи баргардони «Худойнома» ба забони арабӣ ба манбаъҳои таъриху адабии қарнҳои нахустини исломӣ роҳ ёфт. Ҳамин манбаъҳо буданд, ки баъди аз миён рафтани китобҳои ҷудогонаи «Шахрбароз ва Хусрав» ва «Худойнома» лаҳзаҳои алоҳидаи ин дostonро то андозае нигоҳ доштанд ва вучуди яке дигар аз дostonҳои марғуби тоисломии адабиёти форсу тоҷикро таъйид карданд. Таъкид ҷои аст, ки ахбори манбаъҳои мазкур дар хусуси қарномаи Шахрбароз ва муносибати ӯ бо Хусрави Парвиз гуногун ва дар баъзе маврид мухолиф ба ҳамдигаранд. Зоҳиран, сабаби ин ихтилоф он аст, ки дар ривояти дoston баъзан таҳайюли бадеӣ аз ҳақиқати таърих дур рафта ва дар ин замина миёни онҳо тафовут ва танокӯзе буруз кардааст. Муаллифони манбаъҳои дар баъди ахбори аъмоли Шахрбароз гоҳе ба воқеияти таърих таъя кардаанд ва гоҳе дигар бофтаи ҳаёли ҳақиқат пиндоштаанд.

Ҷои ба таъкид аст, ки дар «Шоҳнома» номи Шахрбароз дар сурати «Гуроз» омадааст ва «Гуроз» шакли форсии вожаи паҳлавии «Вроз» аст, ки пас аз таъриб «Бароз» гардидааст. Сониян «Шахрбароз» номи рутба буда, аслан ӯ, бино бар «Шоҳнома», «Фароин» ном доштааст. Дар қисс ба ахборе, ки дар манбаъҳои қарнҳои VIII-X дар хусуси Шахрбароз зикр шудааст, муаллифи «Шоҳнома»-и безавол дostonи мазкурро ба ихтисор овардааст<sup>2</sup>. Сабаби ин амр, аз як тараф, мӯҷазбаёнӣ ва садро яке гуфтани Фирдавсӣ бошад, аз ҷониби дигар, Ҳакими Тӯсӣ баъзе аз лаҳзаҳои дostonро фурӯгузор кардааст.

Ҳаминро низ бояд зикр кунем, ки муносибати Фирдавсӣ ба Гуроз (яъне, Шахрбароз) хушбинона нест ва ӯ дар тавсифи Гуроз сифотеро аз қабиле «девсар», «бедоду шум» ва ғайра ба қор гирифтааст<sup>3</sup>. Метавон ҳадс зад, ки чунин муносибат ба Шахрбароз аз «Худойнома» - таърихи расмиятҳои Сосониён маншаъ гирифтааст, зеро Шахрбароз бо он ки аз тухмаи шаҳрерон набуд, дасти тааруз ба тахти шоҳӣ дароз кард ва муддате кӯтоҳ салтанат биронд. Аз назари расмии дарбор ин «шоҳи бемоя» (таъбири Фирдавсӣ) ғосиби тахти

---

<sup>1</sup>محمدی، محمد. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام و آثار آن در تمدن اسلامی و ادبیات عربی. - ص. ۱۷۱.

<sup>2</sup>Фирдавсӣ, Абулқосим. Шоҳнома. Ҷ.9.-Душанбе: "Адиб", 1987-1991. -С.319-328.

<sup>3</sup>Фирдавсӣ, Абулқосим. Шоҳнома. Ҷ.9. -С.320.

шоҳӣ ба ҳисоб меравад ва бадеҳист, ки ҳамин назар дар «Шоҳнома»-и Ҳакими Тӯсӣ низ ҳини суҳан аз Гуроз (Шаҳрбароз) тасаллут пайдо кардааст. Дар баробари ин, дар сарчашмаҳои адабию таъриҳӣ лаҳзаҳои аз рӯзгору пайкори Шаҳрбароз омадаанд, ки ўро бар хилофи шоҳи худбини мағрури сосонӣ – Хусрави Парвиз ба ҳайси сипаҳсолори шучоъ ва ҷавонмард муаррифӣ мекунанд. Ба ҳадси ғолиб, чунин лаҳзаҳо аз достони ҷудогона доир ба Шаҳрбароз, ки дар миёни мардум ривож дошт ва дар ҷузъиёту тафсил ва арзёбии корномаи ў аз таъриҳи расмии сосонӣ фарқ мекард, маншаъ гирифтаанд.

Дар заминаи муқобалаву муқоясаи аҳбори манбаъҳои қарнҳои нахустии исломмазмуну муҳтавоидостони «Шаҳрбароз ва Хусрави Парвиз»-ро, ба ҳадде ки ба асл наздик бошад, метавон барқарор кард. Бо тақия бар ин аҳбор, достони Шаҳрбарозро метавон шартан ба се бахш тақсим намуд: бахши аввал оғози қори Шаҳрбароз ва пирӯзиҳои ўро дар ҷанг бо Рум фаро мегирад. Румиён бар қайсари худ Муриқ (ё Мурис), ки падарзани Хусрави Парвиз буд, мешӯранд ва ўро қушта ба ҷояш Фуқоро ба салтанат мебардоранд. Писари қайсар ба Эрон фирор мекунад ва ба шоҳи сосонӣ паноҳ меоварад. Хусрави Парвиз, ки дар вақташ аз қайсар дар мубориза бо Баҳроми Чӯбина дастгирӣ ва мадад ёфта буд, ба кинҳои қайсар бармехезад. Шоҳи сосонӣ яке аз сипаҳсолорони худ - Шаҳрбарозро ба солорини сипоҳ мегуморад ва бародари Шаҳрбароз - Фаррухонро ба ў ҳамроҳ карда, ба набарди румиён мефиристад<sup>1</sup>. Шаҳрбароз бо сипоҳи худ Шомро тасхир кард, Байтулмақаддасро фатҳ намуд ва Қустантанияро ба муҳосира гирифт. Сипаҳсолорони дигар Мисру Искандария ва диёри Нубаро гирифтанд. Шаҳрбароз дар сарзамини румиён тохтутози зиёд кард, шаҳрҳои онҳоро вайрон намуд ва ғаниматҳои зиёде ба даст овард. Дар Байтулмақаддас ў ба ҷӯби салибе, ки, ба ақидаи насронийн, Исоро бар он салб карда будаанд, даст ёфта, онро ба Хусрави Парвиз фиристонд<sup>2</sup>.

Сипоҳиёни Шаҳрбароз румиёнро хеле ба танг оварданд. Онҳо бар қайсари худ – Фуқо шӯриданд ва ба ҷои ў Ҳиракл (Гераклиус) –ро ба тахт нишонданд. Бино ба ишорае, ки дар «Китоб-ут-точ»-и мансуб ба Ҷоҳиз рафтааст, румиён ба Шаҳрбароз пешниҳоди сулҳ карданд, вале аз ў ҷавоби рад гирифтанд<sup>3</sup>. Қайсар хост, ки аз роҳи баҳр бо Шаҳрбароз муқобилат кунад. Аз ин рӯ, ў ҳазор киштӣ омода кард, молу сарвати зиёд ва силоҳу олоти ҷанг ба онҳо интиқол дод<sup>4</sup>. Вале ҳамон шаб тӯфони сахт сурат гирифт ва тундбодде пуршиддат вазид,

<sup>1</sup>طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۲. - ص. ۷۳۸.

<sup>2</sup>مسكويه، ابو على. تجارب الامم. ج. ۱. - ص. ۱۹۵؛ تجارب الامم فى اخبار ملوك العرب و العجم. ص. ۳۴۶.

<sup>3</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب التاج. - ص. ۲۴۱.

<sup>4</sup>مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۷۲.

тамоми киштихоро аз ҷои иташон барканд ва ба ҷонибе ронд, ки лашкаргоҳи Шаҳрбароз буд. Ҳамин тавр, Шаҳрбароз бо ҳукми қазо ба ин киштиҳои пур аз ганҷу амвол даст ёфт ва онро ба Хусрави Парвиз фиристонд. Хусрави Парвиз аз дидани ганҷҳои хазинаи қайсари Рум дар шигифт афтод. Пас, ӯ дастур дод, ки барои ин ғаниматҳо ганҷхонае ихтисос бидиҳанд ва онро «Ганҷи бодовард» хонданд<sup>1</sup>. Пирӯзӣ бар румиён боиси шуҳрати тамоми ҷаҳони Шаҳрбароз ва аз мақоми рафеъ бархурдор шудани ӯ дар назди Хусрави Парвиз гардид.

Пас аз ин воқеае рӯй намуданд, ки онҳоро метавон ба бахши дувуми достони Шаҳрбароз ва Парвиз мансуб донист. Қайсари Рум Ҳиракл пас аз нокомиҳои нахуст дар набард бо сипоҳи Эронмуваффақ шуд, ки қувва ҷамъ намояд ва ағлаби сарзаминҳоеро, ки лашкари Шаҳрбароз истило карда буд, бозпасбигирад. Вайсоли 628 қасри Хусрави Парвизро дар Дастгирд забт намуда, сипас пойтахти шоҳаншоҳии Сосониён – Мадоинро муҳосира кард.

Ҳазимати сипоҳи Эрон дар набард бо Рум боиси хашмгинии Хусрави Парвиз аз сарони лашкари хеш, аз ҷумла Шаҳрбароз гардид ва муҳолифатро миёни эшон барангехт. Дар манбаъҳои адабиву таърихӣ, аз ҷумла дар «Китоб-ут-тоҷ»-и мансуб ба Ҷоҳиз, «Таърих»-и Табарӣ, «ас-Саъода ва-л-исъод»-и Омирӣ, «Таҷориб-ул-умам»-и Мисқайхсабабҳои гуногуни ихтилофи Шаҳрбароз бо Хусрави Парвиз баён шудаанд<sup>2</sup>.

Пас аз ин, Шаҳрбароз ба қайсари Рум рӯй овард ва дар мубориза бо Хусрави Парвиз бо ӯ ҳамраъӣ гардид. Ин лаҳзаидостонро Ҷоҳиз, Табарӣ, Мисқайх ва Абулҳасани Омирӣ бо тафовутҳои андакба қайд овардаанд<sup>3</sup>.

Пас аз ҳамдаст шудан дар ҷанг бо Хусрави Парвиз, тибқи ривояти «Китоб-ут-тоҷ», Шаҳрбароз аз қайсар хоҳиш кард, ки лашкарро ӯ сарварӣ кунад, зеро аз ҳилаву найранги Хусрав огоҳ аст, валеқайсаринхоҳишро напазируфт ва гуфт, ки худ бо Хусрав мечангад ва Шаҳрбароз бояд дар мавқеи худбиистад. Шаҳрбароз инро қабул кард, вале иҷозат хост, ки нақшаи ҷангро тарҳрезӣ кунад, ки риояти он боиси пирӯзӣ хоҳад шуд. Қайсари Рум аз рӯи нақшаи Шаҳрбароз пеш омад ва то Наҳравон расида, он ҷо лашкаргоҳ кард ва ба ҷанг омода шуд. Хусрави Парвиз аз хабари расидани лашкари анбӯҳи Рум, ки иборат аз ҷаҳорсад ҳазор сарбоз буд, музтарибҳол

<sup>1</sup>مسعودی، علی بن حسین. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۷۲؛ الجاحظ، عمرو بن بحر. کتاب التاج. - ص. ۲۴۲.

<sup>2</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. کتاب التاج. - ص. ۲۴۲؛ مسکویه، ابو علی. تحارب الامم. ج. ۱. - ص. ۱۹۳؛ طبری، محمد جریر. تاریخ الرسل و الملك. ج. ۲. - ص. ۷۲۹.

<sup>3</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. کتاب التاج. - ص. ۲۴۵؛ طبری، محمد جریر. تاریخ الرسل و الملك. ج. ۲. - ص. ۷۴۰.

гардид, зеро тавону имкони муқобала надошта, лашкар ва сарони он аз бедодии ӯ пароканда шуда буданд<sup>1</sup>. Пас Хусрави Парвиз даст ба ҳила зад, ки шарҳи он дар «Китоб-ут-точ»-и мансуб ба Ҷоҳиз, «Таҷориб-ул-умам»-и Мисқвайҳ ва «Шоҳнома»-и Фирдавсӣ бо тафсили бештар ва дар «Муруч-уз-заҳаб»-и Масъудӣ мухтасаран омадааст<sup>2</sup>. Ҳилаи ӯ коргар омад ва Қайсари Рум, бидуни он ки бо лашкари парешони Хусрави Парвиз воридаи чанг гардад, ба кишвари худ бозгашт.

Пас аз ин дар манбаъҳои адабиву таърихӣ дар хусуси Шаҳрбароз ахборе зикр шудаанд, ки аз тахтхоҳии ӯ, муддати кӯтоҳи салтанат рондан ва кушта шуданаш ҳикоят мекунад. Бино ба ахбори ағлаби манбаъҳо, подшоҳии Шаҳрбароз ҳамагӣ 40 рӯз идома дошт<sup>3</sup>. Воқеоти мазкурро метавон шартан ба қисмати севумидостони Шаҳрбароз мансуб донист.

Таваҷҷуҳи афзуни муаллифони сарчашмаҳои таърихиву адабии асрҳои миёна ба корномаи Шаҳрбароз гувоҳ бар он аст, ки достони ӯ дар адабиёти охири аҳди сосонӣ ва қарнҳои нахустини исломӣ аз шухрат ва маъруфияти тамоми бархурдор будааст. Ихтилофи сарчашмаҳо дар тасвири лаҳзаҳои ҷудогонаи корномаи Шаҳрбароз, ҳамчунин ривоёти гуногуни ин лаҳзаҳо, ки дар фавқ ба он ишора шуд, далел бар он аст, ки ҳатти суҷаи достони алоҳидаи «Шаҳрбароз ва Хусрави Парвиз» аз ончи дар таърихномаҳои расмӣ дарборӣ, аз ҷумла «Худойнома» дар бораи Шаҳрбароз ва корномаи ӯ омадааст, то андозае тавофут дошт. Ба занни ғолиб, ин тафовут, аз як тараф, маҳсули таҳайюли бадеии эҷодкорони дoston бошад, аз ҷониби дигар, натиҷаи кӯшиши таҳиягарони «Худойнома» бар он будааст, ки нокомиҳои сипоҳи Хусрави Парвиз ба «хиёнат»-и Шаҳрбароз вобаста гардад ва мағлубияти Эрон аз Рум дар сурати қобилитавҷеҳ падидор гардад.

**Достони Шарвини Даштбо.** Дар манбаъҳои адабиву таърихӣ қуҳан ба иддае аз дostonҳои ҳамосии эронӣ ишора рафта, ки дар қарнҳои нахусти ислом мутадовил будаанд, вале номи онҳо дар миёни китобҳои, ки ба арабӣ тарҷума шуданашон дар «ал-Фихрист» зикр шудааст, ба назар намерасанд. Бино бар ин, метавон ҳадс зад, ки ин дostonҳо ба таркиби китобҳои тарҷумашуда, хоссатан «Худойнома» ворид буданд ва ё ба ҳайси осори ба сари худ мустақил дар ривояти шифоҳӣ миёни мардуми эронинаҷод мутадовил будаанд.

Дар ҳар сурат, ин қиссаи дostonҳо падидае аз ҳаёти адабии халқҳои эронӣ дар асрҳои VIII-IX буда, таҳқиқ дар онҳо метавонад

<sup>1</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب التاج. - ص. ۲۴۴.

<sup>2</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب التاج. - ص. ۲۴۶؛ مسكويه، ابو علي. تحارب الامم. ج. ۱. ص. ۲۱۶.

<sup>3</sup> تعالبي مرغني. شاهنامه كهن. پارسى تاريخ غرر السير. - ص. ۴۰۵؛ طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۲. - ص. ۷۸۰.

ҳалқаҳои гумшудаи занҷираи адабиву фарҳангие, ки Аҷами зардуштиро бо Эронзамини исломӣ мепайвандад, барқарор намояд.

Яке аз ҳамин гуна дostonҳо қиссаи «Шарвини Даштбо» аст. Қадимтарин манбаъе, ки ба он ишора рафтааст, қасидае азшоири бузурги арабизабон Абӯнӯвоси Аҳвозӣ (762-813) ба шумор меравад.

Дар қасида шоир дар пайравӣ аз суннати зардуштӣ силсилаи савгандҳоро зикр карда, аз ҷумла бо достони «Шарвини Даштбо» қасам хӯрдааст:

بما يتلون في كتاب زردش دای المڃوس  
البستاة رمزا  
و ما يتلون في و فرجردات رامين و ويس  
شرويندستبى

*Қасам ба ончи аз рамзҳои «Авесто», он китоби Зардушт - пайгамбари маҷусиён мехонанд.*

*Қасам ба ончи аз «Шарвини Даштбо» ва аз фарғардҳо (бобҳо)-и «Ромину Вис» мехонанд...*

Дар ин абёт Абӯнӯвос «Шарвини Даштбо»-ро пас аз «Авесто» ва дар радифи «Вису Ромин» зикр карда, зоҳиран, мактуб ва мудавван будани онро мисли ду китоби дигар таъйид кардааст<sup>1</sup>.

Аз лиҳози қидмати замон дувумин маъхазе, ки роҷеъ ба Шарвини Даштбо иттилое ба даст медиҳад, «ал-Ахбор-ут-тивол»-и Абӯҳанифаи Динаварӣ (ваф. тахминан 895) аст. Динаварӣ Шарвинро аз сарварони аҳди Хусрави Анӯшервон ба шумор оварда, баъди хабари аз ҷониби шоҳи мазкури сосонӣ истило шудани шаҳрҳои мухталифи Шом ва Ҷазира, ки таҳти тасарруфи Рум қарор доштанд, чунин тазаккур додааст: «Сипас қайсар ба Анӯшервон нома навишт ва аз ӯ тақозои сулҳ кард ва аз Анӯшервон хост, шаҳрҳоеро, ки гирифтааст, ба ӯ баргардонад бар ивази он, ки қайсар ҳамасола хироҷ хоҳад пардохт. Нӯшервон хусумат ва душманиро бад медид. Аз ин рӯ, ба ончи қайсар пешниҳод кард, ҷавоби мусбат дод ва Шарвини Даштбой (-Даштбо)-ромаъмур кард, то ҳамасола хироҷи қайсарро бигирад ва ба ӯ бифиристад. Шарвин ҳамроҳи Хуррин-ғуломи маъруфи худ, ки саворкори ҷавонмард ва далер буд, дар дарбори қайсари Рум муқим шуд»<sup>2</sup>.

Дар «Ниҳоят-ул-ираб фӣ ахбори мулук-ил-фурс ва-л-араб» ва тарҷумаи форсии асримиёнагии он - «Таҷориб-ул-умам фӣ

<sup>1</sup>امينوى، مجتبى. احدى فارسىات ابى نواس. مجلة الدراسات الادبية. - ص. ۴۹-۶۷.

<sup>2</sup>الدينورى، ابوحنيفه. الاخبار الطوال. ص. ۶۹.

ахборимулуқ-ил-Ачам ва-л-Араб» роҷеъ ба Шарвин ба истинод ба Абдуллоҳ ибни Муқаффаъ ахборе дарҷ шудааст, ки он бо ривояти овардаи Динаварӣ мушобихати том дорад<sup>1</sup>.

Қиссаи Шарвин бо тафовутҳое чанд дар таърихномаҳои дигар низ ба қайд омадааст. Аз ҷумла, Ҳамзаи Исфаҳонӣ дар «Синий мулуқ-ил-арз ва-л-анбиё»-и хеш бо истинод ба Мӯсои Қисравӣ, ки яқинан ҳамон Мӯсо ибни Исои Қисравӣ – яке аз мутарҷимони «Худойнома»-и паҳлавӣ ба арабист, дар робита ба шоҳи сосонӣ Яздгирд – падари Яздгирди базаҳқор қайд мекунад, ки ӯ сарвари Шарвини Даштбо ва бар хилофи писари хеш - Яздгирди базаҳқор подшоҳи меҳрубону боотифа буд. Ҳамза дар бораи вафо ба аҳди Яздгирд қиссаи зеро нақл кардааст: «Яке аз подшоҳони Рум ба ҳангоми фаро расидани маргаш фарзанди кӯчаки худро ба Яздгирд супурд ва аз вай хост, ки ҷонишине барои ӯ ба билоди Рум фиристад, то уҳдадори корҳои писар бошад, то он гоҳки ба синни мардӣ бирасад. Яздгирд Шарвини Барниён – раиси вилояти Даштборо ба Рум фиристонд ва фармонравиюи он чоро бад-ӯ супурд. Вай пас аз бист соли ҳукумат билоди Румро ба дасти писари подшоҳи Рум супурд, ҷуз шаҳре, ки онро Бошарвон номид ва ин ҳамон шаҳрест, ки пас аз таъриб Бошарвон хонданд»<sup>2</sup>.

Дар «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» ахбори Ҳамзаи Исфаҳонӣ доир ба амонат ва вафо ба аҳди Яздгирд, ирсоли Шарвини Даштбо ба Рум ба муддати бист сол ва бунёди шаҳри Бошарвон аз ҷониби ӯ такрор шудааст<sup>3</sup> ва аён аст, ки ин мазмунро муаллифи «Мучмал-ут-таворих» аз таърихномаи Ҳамза иқтибос кардааст. Дар айни ҳол муаллифи «Мучмал-ут-таворих» матолиберо доир ба достони Шарвин зикр кардааст, ки он дар манбаъҳои дигар ба ҷашм намерасад. Аз ҷумла, дар ҳамон бобе аз китоб, ки суҳан аз бузургони рӯзгори ҳар як аз подшоҳони эронӣ меравад, муаллиф овардааст, ки «Андар аҳди Яздгирд ибни (Ҳур)-муз қиссаи Шарвин ва Хуррин будааст ва он, ки Рум хонанд, (на) Рум будааст. Ва шунидаам, Рум(ро) Ҳулвон хондаанд. Ва он то..., ки Хуррин ӯро бидушт, роҳ (яъне, фосила) доштааст, он ҷо, ки акнун «Тоқи Гарро» хонанд. Ва Шарвинро он зани ҷоду дӯст гирифт, ки «Мариях» хонандаш ва ӯро муддате он ҷо бибаст, ҷунон ки дар қисса гӯянд ва Худой донад кайфияти он. Ва андар «Сияр-ул-мулуқ» гуфтааст, ки Шарвин(ро) Нӯшервони Одил ба Рум бидушт, то хироҷ бистонад... Валлоҳу аълам биҳи»<sup>4</sup>. Дар «Таърихи гузида»-и Ҳамдуллоҳи Муствафӣ низ ба

<sup>1</sup>مسكويه، ابو علي. تحارب الامم. ج. ۱. ص. ۲۹۳؛ نهاية الارب في اخبار  
الفرس و العرب. - ص. ۳۲۵.

<sup>2</sup>حمزه اصفهانی. سنی ملوك الارض و الانبياء. تاريخ پیامبران و شاهان. -  
ص. ۱۵.

<sup>3</sup>مجمّل التواريخ و القصص. به تصحيح ملك الشعرا بهار. - ص. ۸۶.

<sup>4</sup>مجمّل التواريخ و القصص. به تصحيح ملك الشعرا بهار. - ص. ۹۵.



қиссаи Шарвин ишорат рафта, замони зиндагии ӯ ба давраи шоҳии Шопури дувум интисоб ёфтааст<sup>1</sup>.

Ҳамдуллоҳи Муставфӣ достоне маъруф будани қиссаи Шарвинро сарехан таъкид карда навиштааст: «Номи Шарвин дар ашъори паҳлавӣ бисёр аст. Китобест дар ишқномаи ӯ, «Шарвиниён» хонанд»<sup>2</sup>.

Чунон ки аён аст, муаллифони таърихномаҳо дар таъйини замони Шарвини Даштбо ба ҳам ихтилоф варзидаанд. Ин ихтилоф аз гуногунии сарчашмаҳои ахбор сар задааст. Чунончи, муаллифони «ал-Ахбор-ут-тивол», «Ниҳоят-ул-ираб» ба Ибни Муқаффаъ, ки манзур аз ӯ «Худойнома» ё «Сияр ул-мулук»-и ба арабӣ тарҷумакардаи ӯст, истинод кардаанд. Аз ин бармеояд, ки дар «Худойнома»-и мазкур замони зиндагии Шарвин ба аҳди Хусрави Анӯшервон интисоб ёфта будааст.

Муаллифони «Синий мулук-ил-арз ва-л-анбиё» ва «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» бо истинод ба Мӯсо ибни Исои Кисравӣ, ки низ яке аз мутарҷимони «Худойнома» ба арабӣбуд, Шарвинро сардори замони подшоҳии Яздгирд – падари Яздгирди базахкор донистаанд. Ин амр аз ҳамдигар тафовут доштани таҳрирҳои мухталифи «Худойнома»-ро, ки дар таърихномаи Ҳамзаи Исфаҳонӣ низ бад-он ишорат рафтааст<sup>3</sup>, тасдиқ мекунад.

Манбаи ахбори Ҳамдуллоҳи Муставфӣ – муаллифи «Таърихи гузида», ки Шарвинро аз ричолизамони Шопури дувум донистааст, маъхазе чуз аз он будааст, ки муаллифони таърихномаҳои зикршуда ба онҳо истинод кардаанд. Фузун бар ин, Ҳамдуллоҳи Муставфӣ бо он ки аз Қазвин, яъне, аз ҳамон мавзее, ки Шарвин дар аҳди Сосониён сардори он буд, бархостааст, метавонист аз қиссаи ривоятҳо ва ашъоре, ки миёни мардуми Қазвин роҷеъ ба Шарвин мутадовил буд, истифода намояд.

Дар қуллияи манбаъҳои зикршуда корномаи Шарвин бо Рум пайванд аст, вале дар ваҷҳиирсоли Шарвин ба он кишвар муаллифонитаърихномаҳо ба ду даста ҷудо шудаанд: дастаи аввал, ки ба Ибни Муқаффаъ истинод кардаанд, бар онанд, ки Анӯшервон Шарвинро барои ҷамъи хирочи Рум ба он кишвар фиристод. Дастаи дувум бо тақя ба Мӯсо ибни Исои Кисравӣ муқим шудани Шарвинро дар Рум ҷихати уҳдадории корҳои фарзанди қайсар то ба синни булуғ расидани ӯ донистаанд.

Ривояти дастаи аввал ба воқеияти таърих татбиқпазиртар ва бад-ин ваҷҳ ҷанбаи таърихии он қавитар аст, зеро дар таърихномаҳои

---

<sup>1</sup>مستوفى، حمد الله. تاريخ گزيده. چاپ دوم، تهران، انتشارات دنيای کتاب، ۱۳۶۱ - ص. ۱۱۰.

<sup>2</sup>مستوفى، حمد الله. تاريخ گزيده. - ص. ۱۱۰.

<sup>3</sup>حمزه اصفهانی. سنی ملوک الارض و الانبياء. تاريخ پیامبران و شاهان. - ص. ۱۳.

муътабар ба ҳодисаҳои аз ҷониби Анӯшервон истило шудани шаҳрҳои Шом ва Ҷазира, ки таҳти тасарруфи Рум буданд, ҳамчунин ба боч супоридани қайсар ба Анӯшервон борҳо ишорат рафтааст<sup>1</sup>.

Ривояти дастаи дувум, зоҳиран, ба тасаввуроти мардумӣ доир ба рисолати Шарвин дар Румалоқаманд аст. Ин ривоят ҳадафҳои иқомати бистсолаи Шарвинро дар Рум аз лиҳози ахлоқу маънавият нақӯтару писандидатар намоён мекунад ва, ба гумони ғолиб, достоне, ки дар ин замина ташаккул ёфт, бо ҷанбаи адабии ғолиби худ ҷойгузини воқеияти таърих гардидааст.

Дар манбаъҳои таърихӣ дар мавридҳои чанд ба ғуломи маъруфи Шарвин – Хуррин ишора рафта ва Динаварӣ, чунон ки қаблан зикр шуд, ўро «саворкори чавонмарду далер» номидааст. Дар ашъори арабие, ки Ибни Фақех дар «Китоб-ул-булдон»-и хеш дарҷ кардааст, як ҷоаз Шарвин ва Хуррин ба унвони «шерони шучоъ, диловар ва далер» ёд шудава ҷои дигар деворнигорае ба тасвир гирифта шудааст, ки дар он «Шарвин» нишаставу дастор бар сар ва Хуррин «тозонва дар ҳоли ба нишон гирифтани ҳайвони зебо»-е тавсиф шудаанд<sup>2</sup>. Матолиби мазкур далел бар он аст, ки Хуррин пас аз Шарвин дувумин қаҳрамони дoston буда, дар мадори воқеоту ҳаводиси он қарор доштааст.

Бар асоси ончи дар бораи Шарвин дар манбаъҳои адабиву таърихӣ омадааст, бояд эҳтимол дод, ки достони Шарвин достоне таърихиву ишқӣ аз аҳди Сосониён буда, муҳтавои он аз баёни бадеии саргузашти Шарвин дар Рум ва мочароҳои ошиқонаи ӯ фароҳам омадааст. Бар вучуди ҳодисаҳои ошиқона дар дoston чанд нукта далолат мекунад. Аввалан, Абӯнӯвос дар қасидаи зикршудаи худ онро даррадифи достони ошиқонаи «Вису Ромин» оварда ва, зоҳиран, бо ин ба шабоҳати муҳтавои ин ду дoston ишора кардааст. Сониян, Ҳамдуллоҳи Муствафӣ тасреҳ кардааст, ки достони Шарвин «китобест дар ишқномаи ӯ, «Шарвиниён» хонанд».

Ишораи муаллифи «Мучмал-ут-тавориҳ ва-л-қисас» ба зани ҷодуе, ки Шарвинро дӯст дошта ва ўро муддате бастааст, гувоҳ бар он аст, ки дар достони Шарвин мисли дигар дostonҳои таърихии Эрони тоисломӣ саргузашти қаҳрамони асосӣ бо унсурҳои афсонавӣ омезиш ёфта будааст.

Аз тасвири симои Шарвину Хуррин дар деворнигорае ва вучуди силсилаи ашъоре бо номи «Шарвиниён» дар миёни мардум, ки зикраш гузашт, метавон истинбот кард, ки шахсияти Шарвин ва достони марбут ба ӯ дар Эрони тоисломӣ аз шухрати зиёд бархурдор будааст. Ҳарчанд ки асли он аз байн рафтааст, вале нақше аз он дар сарчашмаҳои адабиву таърихӣ боқӣ мондааст.

---

<sup>1</sup>مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۵۹-۲۶۰.  
<sup>2</sup>ابن الفقيه الهمداني. مختصر كتاب البلدان. - ص. ۱۴۰؛ طبرى، محمد جريز. تاريخ الرسل و الملك. ج. ۲. - ص. ۶۴۹.

Ҳамин тариқ, дар асрҳои VIII-IX як идда дostonҳои ҳамосиву таърихии роиҷ дар насри паҳлавӣ ба забони арабӣ тарҷума гардида, дар муҳити исломӣ шуҳрат ёфтаанд. Тарҷумаи осори мазкур яке аз риштаҳои борвари адабиёти мансури паҳлавӣ будани дostonҳои ҳамосиву таърихию ба субут мерасонад. Бояд таъкид кард, ки тарҷумаи ин риштаи насри паҳлавӣ ба арабӣ танҳо мунҳасир ба он дostonҳое нест, ки дар фавқ зикре аз онҳо рафт. Дар осори адабиву таърихии асрҳои миёна ба дostonҳое аз қабиле «Ахбори Баҳман», «Ахбори Искандар», «Пирӯзинома» ва ғайра ишора рафтааст, ки матолиби онҳо ба аҳди тоисломӣ оид аст. Ба арабӣ тарҷума шудани онҳо дар манбаъҳо дақиқан забт нашудааст, вале дар қиёс бо он ки ағлаби осори адабиёти тоисломии эронӣ ба адабиёти форсии дарӣ аз тариқи тарҷума ба арабӣ гузаштаанд, метавон ҳаде зад, ки дostonҳои мазкур низ чун чузви китобҳои дигар, хоссатан «Худойнома» ба арабӣ тарҷума шуда будаанд.

#### 4.5.3. Дostonҳои ишқии паҳлавӣ

Дар миёни осори мансури паҳлавӣ, ки дар садаҳои нахустини исломӣ чун китоби ҷудогонава ё ба ҳайси чузье аз «Худойнома» ба забони арабӣ тарҷума шуда ва баъдан дар адабиёти форсии дарӣ бозсозии манзуми худро дарёфтаанд, чанд дostonи ишқӣ низ буданд. Бино бар ахборе, ки дар китобҳои таъриху адаби куҳан дарҷ ёфтааст, метавон ҳадди ақал бар тарҷума ва тадовули ду дostonи ишқии эронӣ дар муҳити он даврон қоил буд: яке аз онҳо дostonи «Хусраву Ширин» аст.

**Дostonи «Хусраву Ширин».** Қиссаи ишқи Хусраву Ширин, ки мавзӯи дostonи маъруфи Низомӣ ва осори шоирони дигари форсиабонро фароҳам оварда ва дар «Шоҳнома» низ пораҳое аз он накл шудааст, дар миёни мардуми Эронзамин аз охириҳои аҳди Сосониён шуҳрат дошт. Ба ҳадси А.Кристенсен, қабл аз сукути давлати сосонӣ як ё чанд дostonи омиёна роҷеъ ба ин мавзӯъ вучуд доштааст, ки пораҳои онро ба «Худойнома»-ипаҳлавӣ ворид карда будаанд<sup>1</sup>. Бо тарҷумаи «Худойнома» пораҳои ин дoston низ вориди насри арабиабон гардиданд. Ҳамчунин аз эҳтимол дур нест, ки дostonи мазкур ҷудо аз «Худойнома» ба ҳайси китоби мустақил низ ба арабӣ баргардон шуда бошад. Ба ҳар оӣин, чунин як имконро ишорат ба ин дoston ва нақли матолиби он дар манбаъҳои куҳан истисно намекунанд.

Яке аз қадимтарин маъхазҳое, ки дар он ба қиссаи ишқи ХусравуШирин ишора рафтааст, шеъре аз шоири арабиабони садри ислом Ҳолид ал-Файёз (ё Қаннос) мебошад. Шоир лаззати Хусрави Парвизро дар аспаш – Шабдиз, карашмаи Ширин, дебо ва бӯи хуш ба

<sup>1</sup> کریستن سن، آرتور. ایران در زمان ساسانیان. - ص. ۶۱۸.

шумор оварда, баъдан қиссаи вафоти Шабдиз ва расонидани Борбад ин хабарро ба Хусрав дар қолаби шеъри арабӣ баён кардааст<sup>1</sup>.

Дигар аз манбаъҳои куҳан, ки маълумоте дар бораи достони «Хусраву Ширин» дар бар дорад, китоби «ал-Маҳосин ва-л-аздод»-и Ҷоҳиз (775-868) мебошад. Дар ин китоб Ширин чун маҳбуба ва зани Хусрави Парвиз дар се маврид ёд шудааст: нахуст, зимни баёни воқеаи пас аз марги Хусрав Ширинро ба занӣ хостани Шерӯя ва худро ҳалок кардани Ширин<sup>2</sup>; сониян, дар шарҳи чавгонбозии Гурдияро назора кардани Хусрав бо Ширин ва Хусравро аз кайди Гурдия барҳазар доштани Ширин<sup>3</sup>; сеум, зимни баёни қиссаи «Мушқдона ва Шоҳизанон»<sup>4</sup>. Зоҳиран, Ҷоҳизбо тарҷумаи комили ин дoston ошно будааст. Ин матлабро нақли қиссаи ахир, ки дар дostonҳои форсии «Хусраву Ширин» ба назар намерасад, таъйид мекунад.

Дигар маъхази арабизабон, ки дар он ишорае ба ишқи Хусраву Ширин рафтааст, як байт шеъри шоири маъруфи араб Ибни Муътазз (ваф. 908) ба шумор меояд. Шоир дар як ҳамрияи худ зимни таъкиди асли эронии соқӣ ўро аз авлоди Хусраву Ширин дониста ва бо он вукуфи худро бар достони мазкур эълom доштааст:

فجاء بالراح يحكى ورد وجنته مقرطق من بنى كسرى و شيرين

Соқӣ шаробе дод, ки ранги он шабеҳи садбарги рӯяш буд. Ў куртаи эронӣ дар бар дошт ва худ аз авлоди Хусраву Ширин буд<sup>5</sup>.

Дар таърихномаҳои куҳан низ ба қиссаи Хусраву Ширин ишорате рафтааст. Аз ҷумла, дар номаи Хусрави Парвиз ба Шерӯя, ки Абӯҳанифаи Динаварӣ нақл кардааст, Хусрав аз ҳамсараш – Ширин ёд кардааст<sup>6</sup>. Макдиси дар «ал-Бадъ ва-т-таърих» навиштааст: «Абарвиз касест, ки фармон дод, то тасвири ўву аспаш – Шабдиз ва маъшуқааш – Ширинро дар Қармисин (Кирмоншоҳ) нақш кунанд, то ёдгоре аз вай бимонад»<sup>7</sup>. Табарӣ бо шафоати Ширин аз қатли Хусрави Парвиз наҷот ёфтани Яздгирди хурдсолро, ки баъдан ба ҳайси охирин намояндаи дудмони сосонӣ ба тахт нишаст, нақл карда ва дар номаи Хусрави Парвиз ба Шерӯя низ ўро чун ҳамсари Хусрав ёд намудааст<sup>8</sup>.

Саолибӣ қиссаи тадбири Ширинро дар чалби таваҷҷуҳи Хусрави Парвиз, ки як муддат ўро фаромӯш карда буд, нақл карда, ба шарҳи

<sup>1</sup>مقدسى، مطهر بن طاهر. آفرينش و تاريخ ج. ۳. - ص. ۵۲۰.

<sup>2</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. المحاسن و الاضداد. - ص. ۶۷.

<sup>3</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. المحاسن و الاضداد. - ص. ۱۶۹.

<sup>4</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. المحاسن و الاضداد. - ص. ۲۰۱-۲۰۲.

<sup>5</sup>ابن المعتز. ديوان. - ص. ۴۳۹.

<sup>6</sup>الدينورى، ابوحنيفه. الاخبار الطوال. - ص. ۱۰۹.

<sup>7</sup>مقدسى، مطهر بن طاهر. آفرينش و تاريخ ج. ۳. - ص. ۵۲۱.

<sup>8</sup>طبرى، محمد جرير. تاريخ الرسل و الملك ج. ۲. - ص. ۷۶۸-۷۶۹.

арӯсии Шириин бо Хусрав ва тадбири Хусрав дар баробари бадгӯии бузургон аз ин арӯсӣ пардохтааст<sup>1</sup>.

Дар сарчашмаҳо аз миёнаҳои қарни X сар карда дар баробари қиссаи ишқи Хусраву Шириин ба ишқи Фарҳод ба Шириин низ ишораҳо рафтааст. Аз ҷумла, дар як номаи шоири арабизабон Мусъир ибни Муҳалхил, ки бештар бо куняву нисбаи Абӯдулафи Хазраҷӣ ва ба ҳайси яке аз шоирони дарбори Соҳиб ибни Аббод шуҳрат дорад<sup>2</sup>, дар васфи нақшҳои кӯҳи Бесутун суҳан рафта ва амали «Фарҳоди ҳақим» будани он нақшҳо зикр шудааст<sup>3</sup>. Дар тарҷумаи «Таърихи Табарӣ»-и Балъамӣ ва «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» низ ишораи сарех ба муошақати Фарҳоду Шириин рафтааст<sup>4</sup>.

Бо таваҷҷуҳ бар он ки қиссаи ишқи Фарҳод ва Шириин бори нахуст дар манбаъҳои миёнаҳои асри X ба зухур омада ва ин манбаъҳо дар қаламрави Эронзамин ва ба забони форсӣ арзи вучуд кардаанд, метавон истинбот кард, ки дар «Худойнома»-ҳои дар асрҳои VIII-IX ба арабӣ тарҷумашуда суҳан танҳо аз қиссаи Хусраву Шириин рафтааст. Қиссаи ишқи Фарҳод ба Шириин дар асли паҳлавӣ дoston вучуд доштааст, вале дар асрҳои VIII-IX дар ривояти шифоҳӣ миёни мардуми эронинажод роиҷ буда, баъдан дар асри X гунаи катбии худро пайдо кардааст.

**Достони «Вису Ромин».** Аз дostonҳои ошиқонаи дигари насри тоисломии эронӣ, ки асаре аз худ дар маъхазҳои арабизабони асрҳои VIII-IX гузоштаанд, яке «Вису Ромин» аст, ки аз ҷониби Фаҳруддин Асъади Гургонӣ дар асри XI дар қолаби шеъри форсӣ бозгӯӣ шудааст<sup>5</sup>. Асли ин дoston ба забони портӣ буда, дар аҳди Сосониён ба паҳлавӣ баргардон шудааст<sup>6</sup>. Муаллифи «Мучмал-ут-таворих ва-л-қисас» ин дostonро аз пардохтаҳои замони Шопур – писари Ардашери Бобакон дониста ва бад-ин маънӣ овардааст, ки «андар аҳди Шопури Ардашер қиссаи Вису Ромин будааст ва Мӯбад – бародари Ромин соҳиби тарафе буд аз дасти Шопур, ба Марв нишастӣ ва Хуросону Моҳон ба фармони ӯ буд»<sup>7</sup>.

Роҳе, ки достони «Вису Ромин» аз насри паҳлавӣ то шеъри дарӣ паймудааст, дақиқан маълум нест. Тарҷумаи он аз паҳлавӣ ба арабӣ, ки ағлаби осори аҳди Сосониён то расидан ба қаламрави адабиёти форсии дарӣ ин марҳаларо убур кардаанд, дар маъхазҳои куҳан зикр

<sup>1</sup> الثعالبي مرغنى. شاهنامه كهن. پارسی تاریخ غرر السیر. - ص. ۳۸۷.

<sup>2</sup> الثعالبي النسابرى. یتیمۃ الدهر فى محاسن اهل العصر. ج. ۳. - ص. ۳۵۲.

<sup>3</sup> محمدى، محمد. الترجمة و النقل عن الفارسية فى القرون الاسلامية

الاولى. - ص. ۱۴۱.

<sup>4</sup> Балъамӣ. Таърихи Табарӣ. - С. 623.

<sup>5</sup> گرگانى، فخر الدين. ويس و رامن. - ص. ۵۰۴.

<sup>6</sup> مؤذن، جامى، محمد مهدى. ادب پهلوانى: مطالعه اى در تاريخ ادب

ديرينه ايرانى از زرتشت تا اشكانيان. تهران، قطره، ۱۳۷۹. - ص. ۲۱۹.

<sup>7</sup> مجمل التواريخ و القصص. به تصحيح ملك الشعرا بهار. - ص. ۹۴.

нашудааст. Вале дар ҳамон маъхазҳо ишороте ба ин дoston рафтааст, ки аз интишор ва шухрати он дар муҳити асрҳои VIII-IX хабар медиҳад. Аз ҷумла, шоири арабизабони эронитабор Абӯнӯвос (762-813) дар як қасидаи худ, ки ба он қаблан дар мавриди сухан аз достони «Шарвини Даштбо» ишора рафт, дар пайравӣ аз суннати зардуштӣ силсилаи савгандҳоро зикр карда, аз ҷумла бо номи достони мавриди назар қасам хӯрдааст<sup>1</sup>.

Гузашта аз Абӯнӯвос, як шоири дигари арабизабони исфаҳонӣ низ ба китоби «Вису Ромин» дар се байти худ ишора кардааст, ки онҳоро Роғиби Исфаҳонӣ дар «Муҳозарот-ул-удабо» ба қайд овардааст<sup>2</sup>. Ишороти мазкур ба «Вису Ромин» барои таъйиди тарҷумаи ин дoston ба забони арабӣ кофӣ набошад, пас, мутадовил будани онро дар ҳаёти адабии халқҳои эронинаҷод дар қарнҳои нахусти ислом собит мекунамд.

#### 4.5.4. Афсонаҳои тоисломии эронӣ

Риштаи дигаре аз насри паҳлавӣ, ки осори он дар қарнҳои нахусти ислом ба арабӣ тарҷума гардид ва заминае барои ташаккули як шоҳи чадид дар насри арабизабон ба вучуд овард, афсонаҳои тоисломии эронӣ ба шумор меоянд. Ибни Надим бо таваҷҷуҳ ба густариши афсонаҳо дар миёни мардуми эронинаҷод чунин нигоштааст: «Аввалин қасоне, ки ба таснифи афсона пардохтанд ва онро ба сурати китоб дароварда ва дар ҳазоини худ ниғаҳдорӣ карданд ва баъзе аз онҳоро аз забони ҳайвонот нақл намуданд, эронӣни қадим буданд. Пас аз он подшоҳони ашқонӣ, ки севумин табақа аз табақоти шоҳони Эронанд, дар ин маврид игроқ карданд. Дар замони Сосониён чизҳое бар он (афсонаҳо) афзуда шуд. Аърб онҳоро ба арабӣ тарҷума карданд, фусаҳо ва булаҳо ба таҳзиб ва ороستاني он афсонаҳо даст заданд ва афсонаҳои дигаре назари онҳо тасниф карданд»<sup>3</sup>. Аз суханони Ибни Надим пайдост, ки афсонапардозӣ дар миёни қавмҳои эронинаҷод аз қадим маъмул буда, дар аҳди Ашқониён ва Сосониён ривочи тамом доштааст. Ҷолиб он аст, ки Ибни Надим на танҳо ба сурати китоб даромадани афсонаҳо, яъне, гунаи катбӣ пайдо кардани онҳоро таъкид кардааст, балки номи иддае аз китобҳои афсонаҳои эрониро, ки дар қарнҳои VIII-IX аз ҷониби мутарҷимони эронӣ ба арабӣ нақл ва бозгӯӣ

---

<sup>1</sup>Минوى، مجتبى. احدى فارسيات ابى نواس. مجلة الدراسات الادبية. الجامعة اللبنانية، بيروت، ربيع، ١٩٦٠، السنة الثانية. العدد الاول، ص. ٥٤-٥٦.

<sup>2</sup>مينوى، مجتبى. يكي از فارسيات ابو نواس. مجلة دانشكده ادبيات. سال اول، شماره سوم، تهران، ١٣٣٣ - ص. ٧٧.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ٣٦٣.

шудаанд, дар «ал-Фихрист» номбар кардааст<sup>1</sup>. Дар миёни онҳо муҳимтарин китоб аз лиҳози иштиҳор ва таъсири он ба афсонанигорӣ дар олами ислом «**Ҳазор афсон**»-и паҳлавӣ мебошад. Соҳиби «ал-Фихрист» ин китобро аз нахустин китобҳои таълифшуда дар боби афсона доништа, ангезаи пайдоиши онро чунин шарҳ додааст: «Сабаби таълифи «Ҳазор афсон», ки маънояш «Алф хурофа» аст, ин буда, ки яке аз шоҳони эронӣ зане мегирифт ва як шаб бо ӯ мебуд ва фардои он рӯз ӯро ба қатл мерасонид. Ва боре духтаре аз шоҳзодагонро ба номи Шаҳрзод ба занӣ гирифт, ки бисёр хирадманд ва боҳуш буд. Ҳамин ки ӯро ба даст овард, он духтар забон ба гуфтани афсонае боз карда, суханро то поёни шаб расонид, то ин ки подшоҳ ӯро барои дувумин шаб нигоҳ дорад ва бокии афсонаро аз вай бишнавад. Ҳазор шаб ҳамин гуна сипарӣ шуд ва дар ин муддат шоҳ бо ӯ ҳамбистарӣ дошт. Саранҷом Шаҳрзод фарзанде таваллуд кард ва фарзандро ба подшоҳ нишон дода, аз хилааш ӯро огоҳ кард. Подшоҳ хирадмандии ӯро писандид, бад-ӯ дилбастагӣ пайдо кард ва ӯро нигоҳ дошт. Подшоҳро зани коргузоре буд ба номи Динорзод, ки дар он корҳо бо Шаҳрзод ҳамраъӣ буд. Гуфтаанд, ки ин китоб барои Хумой – духтари Баҳман таълиф шуда буд ва дар ин бора ривояти дигаре низ нақл кардаанд»<sup>2</sup>.

Муаллифи «Муруч-уз-заҳаб» пас аз сухан дар бораи «Ирами зот-ул-имод» - шаҳре, ки онро Шаддод ба гунаи ҷаннат дар рӯи замин бино карда буд, ахбореро дар бораи он нақл карда ва он ахборро тақиб намуда навиштааст: «Ин ахбор аз қабили китобҳоест, ки аз форсӣ ва ҳиндию румӣ нақл ва тарҷума шуда ва тартиби таълифи он чун китоби «Ҳазор афсон», яъне, ҳазор «хурофа» аст, ки «хурофа»-ро ба форсӣ «афсон» гӯянд. Имрӯз мардум ин китобро «Алфа лайла ва лайла», яъне, «Ҳазору як шаб» гӯянд, ки ҳикояти подшоҳ, вазир, духтари вазир вақанизи духтар аст, ки Шаҳрзод ва Динорзод ном доранд»<sup>3</sup>.

Ибни Надим ва Масъудӣ мутарҷими «Ҳазор афсон»-ро ба арабӣ таъйин накардаанд, вале Абулқосим Абдулазизи Бағдодии Наҳвӣ, ки дар садаи сеvуми ҳиҷрӣ – нуҳуми мелодӣ қабл аз Ибни Надим ва Масъудӣ зистааст, «Ҳазор афсон»-ро аз китобҳои тарҷумакардаи Ибни Муқаффаъ ба шумор овардааст<sup>4</sup>. Бино ба навиштаи Ибни Надим, китоби «Ҳазор афсон» муштамил бар ҳазор шаб ва камтар аз дусад афсона будааст ва нақли баъзе аз афсонаҳо чандин шаб идома меёфтааст<sup>5</sup>.

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۳.

<sup>3</sup>مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۶۱۰.

<sup>4</sup>ابن المقفع، عبدالله. المنطيق. ابن بهريز، حدود المنطق. - ص. ۶۳.

<sup>5</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۶۳.

Тарчумаи арабии «Ҳазор афсон»-и паҳлавӣ мавриди истиқбол ва пайравии адибони арабизабони исломӣ қарор гирифт. Дар садаи Хмелодӣ адиби маъруфи араб Чаҳшиёрӣ дар садаи чамъ овардани ҳазор афсона аз афсонаҳои арабӣ, эронӣ ва румӣ шуд, вале танҳо 480 афсонаро чамъ оварда тавонист, ки ҳар яке маъмулан дар ҳудуди 50 арақ барои як шаб таълиф шуда буданд.

Ибни Надим ба чуз аз «Ҳазор афсон» ба тарчумаи даҳ китоби дигари афсонаҳои эронӣ низ ишора кардааст, вале номи иддае аз ин китобҳо аксаран дучори таҳриф шудаанд ва пай бурдан ба асли онҳо душвор аст. Ба ҳар ҳол, дар миёни ин китобҳо номҳои «Ҳазор дoston», «Хурофа ва назҳа», «ад-Дуб ва-с-саълаб» (Хирс ва рӯбоҳ), «Рӯзбеҳи ятим», «Китоби Намруд – шоҳи Бобил» наздик ба асл сабт шудаанд<sup>1</sup>. Ибни Надим дар баҳши унвони «Китобҳои подшоҳони Бобил ва мулук-ут-тавоиф» низ ҳафт китобро зикр кардааст, ки голибан маҳсули суннати афсонапардозии эронӣ мебошанд<sup>2</sup>.

Ҳамин тариқ, дар қарнҳои VIII-IX афсонаи зиёде аз паҳлавӣ ба арабӣ тарҷума гардида, суннати афсонанигории насри тоисломии эронӣ дар муҳити исломӣ ва қолаби насри арабизабон идома пайдо кард.

\* \* \* \*

Матлабҳое, ки дар ин баҳш баён гардид, далел бар он аст, ки бо ҳиммату кӯшиши мутарҷимони эронӣ дар қарнҳои VIII-IX осори мутааддиде аз риштаҳои мухталифи насри паҳлавӣ ба забони арабӣ тарҷума ва бозгӯӣ шуд ва дар тадовули аҳли адабу фарҳанги садаҳои нахустини исломӣ қарор гирифт. Мутарҷимони эронӣ мазмуну муҳтавои осори паҳлавиро зимни тарҷума ба арабӣ хатталмақдур нигоҳ медоштанд, вале тарҷумаи онҳоро набояд ба маънии баргардони ҳарф ба ҳарф аз як забон ба забони дигар фаҳмид. Адабиёти паҳлавӣ бар мабнои ҷаҳоншиносии зардуштӣ ташаккул ёфта, муҳимтарин аркони ойини Зардуштро дар худ таҷассум карда буд. Аён аст, ки роҳ пайдо кардани осори ин адабиёт ба муҳити нави маънавию мафкуравӣ, ки дар заминаи ойини муҳаммадӣ пайрезӣ мегардид, бидуни тағайюр ва таҳаввул ғайримумкин буд. Бино бар ин, мутарҷимони осори паҳлавӣ мутуни мавриди тарҷумаи хешро то андозае тағйир медоданд. Ин тағйир бештар аз ҳазфу таҳрири қисматҳое иборат буд, ки асосҳои дини зардуштӣ ва ё бовару эътиқодоти қадимаи носозгор бо муҳити исломиро ба гунаи равшану возеҳ бозгӯ мекарданд. Албатта, чунин равиш матни асари мавриди тарҷумаро куллан тағйир намедод ва ҳадаф аз он то андозае мутобиқ ва мувофиқ кардани он матн ба ҷаҳорҷӯби талаботи замони нав ва ба завқу салиқайи хонандагонӣ давр буд.

---

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۶۴.

<sup>2</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۳۶۵.



Тарҷумаи осори тоисломии эронӣ ба забони арабӣ мазҳаре аз мазохири ҳаёти адабӣ ва тобише аз бозтобиҳои қарихаи адабии халқҳои эронӣ дар шароити истилои араб ва сукути иҷбории забонҳои маҳаллӣ буд. Бо тарҷумаи осори паҳлавӣ намояндагони аҳли адаби эронинаҷод насри вижаеро дар қолаби забони арабӣ ба вучуд оварданд, ки онро метавон ба «насри тарҷума» номзад кард. Насри тарҷума шакли таърихан ногузири идомаи суннатҳои насри тоисломии эронӣ ва дар айни замон василаи вуруди он суннатҳо ба матну батни ҷаҳоншиносии нави исломӣ буд.

## ФАСЛИ ПАНЧУМ

### НАСРИ ТАЪЛИФИИ АРАБИЗАБОН ДАР САДАҲОИ VIII-IX

#### 5.1. НАВИСАНДАГОНИ АРАБИЗАБОНИ САДАҲОИ VIII-IX

Чунон ки таъкид шуд, тарчума мазҳаре аз мазоҳири нубуғи адабии халқҳои эронӣ дар қарнҳои нахустӣ ислом буд. Вале фаъолияти аҳли адаби халқҳои эронӣ дар саҳнаи насри арабизабон танҳо бо кори тарчума маҳдуд набуд. Василай дигари зуҳури андешаву тафаккури адабиву бадеии мардуми эронинаҷод, ки дар баробари тарчума дар ҳифзу эҳёи дорониҳои маънавии Эронзамини тоисломӣ нақше муассир ва фаъол дошт, таълифи осор ё фаъолияти нависандагии адибони эронитабор буд. Агар мутарҷимони эронитабор завқу тафаккур ва одобу ахлоқи мардуми Эронзаминро дар гунаи аслии ё наздик ба асл ба олами исломи садаҳои VIII-IX манзур карда бошанд, пас, нависандагони эронӣ буданд, ки дар фаровардаҳои қалами худ он сарвати маънавиро бо муҳит ва завқу салиқаи исломӣ ҳамоҳанг ва мутаносиб гардониданд ва бад-ин васила дар ҳаққи бақои комил ва расмияти сиёсӣ мафкуравӣ ва адабиву ахлоқӣ касб кардани онҳо дар муҳити ҷаҳоншиносии ваҳдонӣ гоме фаротар аз мутарҷимон ниҳоданд. Дар баробари ин, нависандагони арабизабони эронитабор дар рушду нумӯи насри араб ва борвар гардидани он бо андешаву орои ҷадид ва шаклу қолабҳои нави баён саҳми бориз гузоштанд.

Ағлаби мутарҷимони эронӣ ба ҷуз аз тарчума ба кори таълиф низ иқдом кардаанд ва онҳоро мебояд дар радифи нависандагон низ қарор дод. Бо тавачҷуҳ ба ин матлаб дар зер суҳан аз нависандагоне хоҳад рафт, ки шуҳраташон дар қаламрави насри арабизабон комилан маҷруи нависандагӣ ва таълиф аст. Дар ин маврид танҳо як истисно равоҷ, ки он ба фаъолияти нависандагии **Ибни Муқоффаъ** вобаста аст. Адиби мазкурна танҳо пешвои мактаби мутарҷимони эронӣ буд, балки сарвари мактаби насрнависии эронӣ дар садаҳои VIII-IX низ ба шумор меояд. Азбаски шарҳи ҳоли ӯ зимни суҳан аз мутарҷимон омад ва ҷанде аз таълифоташ баъдан мавриди баррасӣ қарор хоҳад гирифт, дар ин ҷо ба хотири иҷтиноб аз такрори матолиб салоҳ доништа шуд, ки аз таҳсиси баҳши алоҳида роҷеъ ба шахсияти Ибни Муқоффаъ ҷун нависанда сарфи назар карда шавад.

**Саҳл ибни Ҳорун Даштимешонӣ.** Нависандаи дигаре, ки пас аз Ибни Муқоффаъ дар интиқоли суннатҳои насри тоисломии эронӣ ба аҳди ислом ва инкишофи насри арабизабон нақши бориз гузоштааст, Саҳл ибни Ҳорун аст. Истеъдоду маҳорати нависандагӣ, умқи маонӣ ва волоии андеша, фасоҳати забон ва балоғати осори Саҳл ибни Ҳорун ба дараҷае буд, ки бад-он масал мезаданд ва дар ҳаққи ин

сохибсухан мегуфтанд, ки «ӯ ба забони Саҳл ибни Ҳорун суҳан мегӯяд»<sup>1</sup>.

Шавқӣ Зайф Саҳл ибни Ҳорунро аз мутарҷимони осори эронӣ ба шумор овардааст<sup>2</sup>. Вале дар манбаъҳои қадим ҳеч ишорае ба он, ки ӯ дар тарҷумаи осори паҳлавӣ даст дошта, наомадааст. Ба ҳар оин, чизе, ки шубҳаеро эҷод намекунад, дилбастагиву иродати Саҳл ибни Ҳорун ба мероси маънавии ниёғони тоисломияш аст. Ин матлабро номгӯи таълифоти нависанда, ки онро Қоҳиз, Ибни Надим, Ёкути Ҳамавӣ ва Ҳочӣ Халифа бо тафовуте андак дар унвон ва теъдоди осор зикр кардаанд, таъйид мекунад<sup>3</sup>. Тааммул бар номгӯи осори Саҳл ибни Ҳорун, ки мутаассифона ағлаби онҳо аз миён рафтаанд, аз гароиши нависанда ба панду андарз ва эҷоди китобҳои ахлоқӣ хабар медиҳад. Дар ин замина ба Саҳл ибни Ҳорун ду китобе бо номҳои «Саъла ва Афра» ва «ан-Намр ва-с-саълаб» (Паланг ва рӯбоҳ) мансуб аст, ки ҳар ду дар пайравӣ аз «Калила ва Димна» эҷод шудаанд. Аз китоби аввал, ки номаш баъзан дар сурати «Саъола ва Афро» низ ба назар мерасад<sup>4</sup>, танҳо як пораи кӯтоҳ дар «Заҳр-ул-одоб ва самар-ул-албоб»-и Ҳусрии Қайрувонӣ боқӣ мондааст, ки муштамил ба насихате доир ба зарурати додани саривактии бахшишу атоёст. Муаллифи мазкур пас аз зикри ин пора навиштааст, ки «китоби «Саъла ва Афра» саршор аз донишу ҳикмат аст»<sup>5</sup>.

Масъудӣ низ ба ин китоб баҳои баланд дода, онро бо «Калила ва Димна» мавриди муқоиса қарор додааст, чунончи: «Саҳл ибни Ҳоруни дабир барои амирулмуъминин Маъмун китобе ба унвони «Саъла ва Афра» омода намуда ва абвобу амсоли «Калила»-ро татаббуъ карда, ки аз он муназзамтар аст»<sup>6</sup>.

Китоби дувум – «ан-Намр ва-с-саълаб» низ дар шумори осори гумшуда буд, вале ахиран дар яке аз китобхонаҳои Тунис пайдо гардид ва бо ҳиммати Абдулқодирӣ Муҳайрӣ бо тарҷума ба фаронсавӣ ба нашр расид<sup>7</sup>. Иддае аз китобҳои дигари Саҳл ибни Ҳорун низ, зоҳиран, дар қолаби қиссаҳо аз забони ҳайвонот ва

---

<sup>1</sup>Zakeri, Mohsen.Sahl b.Harun b.Rahawayh //The Encyclopaedia of Islam.New edition. Vol. VIII.- Leiden, 1995.- P.839.

<sup>2</sup>ضيف، شوقى.تاريخ الادب العربى.العصر الاسلامى.دار المعارف بمصر ۱۹۷۶. - ص.۵۲۷.

<sup>3</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر.كتاب البيان و التبيين.ج.۱. - ص.۶۳؛ حاجى خليفه.كشف الظنون عن اسامى الكتب و الفنون.ج.۵. - ص.۲۳۶؛ مستوفى، حمد الله.تاريخ گزيده. - ص.۱۳۴.

<sup>4</sup>ضيف، شوقى.الفن و مذاهبه فى النثر العربى. - ص.۱۴۸.

<sup>5</sup>الحصري، القيروانى.زهراآداب و ثمر الالباب.ج.۲. - ص.۶۱۶.

<sup>6</sup>مسعودى، على بن حسين.مروج الذهب و معادن الجوهر.ج.۱. - ص.۷۳.

<sup>7</sup>سهل بن هارون.كتاب النمر و الثعلب. حققه و قدم له و ترجم الى الفرنسية عبدالقادر المهيرى.منشورات الجامعة التونسية، ۱۹۷۳. - ص.۱۷۴.

наботот эҷод шудаанд. Ба ин гуна китобҳо мансуб будани «Китоб-ул-ғизолайн», «Шаҷарат-ул-ақл», «Китоби Надуд, Вадуд ва Ладуд»-и ӯро номҳои ин таълифот то андозае таъйид мекунанд.

Китоби дигари Саҳл ибни Ҳорун – «Китоб-ул-ихвон» низ перомуни масоили ахлоқӣ, аз қабилҳои ойини дӯстӣ, интихоби дӯст, вафодорӣ ба ӯ ва ғайра баҳс мекард. Ин матолиб аз мавзӯоти маъмули насри ахлоқии паҳлавӣ буд ва дар истиқбол аз он нависандагони арабизабон рисолаву китобҳои таҳти унвони «Китоб ул-ихвон» эҷод карданд. Аз унвони асари дигари нависанда – «Китоб тадбир-ал-мулк ва-с-сиёса» бармеояд, ки он ба масъалаҳои одоби кишвардорӣ ва сиёсати давлатӣ ихтисос доштааст. Дар қиёс бо осори ҳамгуни он дар насри паҳлавӣ ва адабиёти исломӣ метавон ҳадс зад, ки асари мазкур дар рӯҳи осори тоисломии эронӣ ва истифодаи фаровон аз он таълиф ёфта буд. Дар яке аз рисолаҳои Ҷоҳиз гуфтори Саҳл ибни Ҳорун дар бораи сифоти хоҷиби дарбор нақл шудааст<sup>1</sup>, ки, зоҳиран, баргирифта аз ҳамин «Китоб тадбир-ал-мулк ва-с-сиёса»-и ӯст.

Бо истинод ба номгуӣ осори Саҳл ибни Ҳорун мазияти дигари эҷодӣ ӯро метавон чун бозгуӣ осори тоисломии эронӣ таъйин кард. Дар ин замина якҷанд китоби ӯ иншо шудааст, ки аз ҷумлаи онҳо яке «Адаб Ашк ибни Ашк» аст. Ба эҳтимоли наздик ба яқин, нависанда дар ин китоб панду андарзҳои, ки, зоҳиран, дар манбаҳои қуҳан ба ин подшоҳи ашконӣ мансуб доништа шудааст, ҷамъ ва бозгуӣ намудааст.

Китоби дигаре аз ин қабил асарҳои Саҳл ибни Ҳорун «Вомиқу Азро»-ст. Бино ба ақидае, он бунмояи паҳлавӣ дошта, дар замони Хусрави Анӯшервон таълиф ва ба ӯ тақдим шудааст<sup>2</sup>. Ба ҳар оин, Саҳл ибни Ҳорун ин дostonро дар қолаби насри арабизабон бозгуӣ кардааст.

Бо тақия ба номи китоби дигари нависанда – «Китоб-ал-Махзумӣ ва-л-Ҳазалия» метавон ҳадс зад, ки он мисли китоби «Вомиқу Азро» ба исми қаҳрамонҳои унвонгузорӣ шуда ва дostonе ишқиро дар бар доштааст.

Дар миёни осори нависанда китобе бо номи «ал-Масоил» зикр шудааст. Бо тавачҷуҳ бар он, ки номи Саҳл ибни Ҳорун дар манбаҳои дар радифи пешвоӣ равиҳои муътазила зикр шудааст, метавон тахмин кард, ки матолиби китоби «ал-Масоил»-и ӯ, агар бозгуӣ китоби «ал-Масоил»-и мансуб ба Анӯшервон набояд, ногузир бояд ба мавзӯоти баҳсу муноқишаҳои ақлонии муътазилиён иртиботе дошта бошад.

Китоби дигари Саҳл ибни Ҳорун, ки «Сират Маъмун» ном дорад, яқинан шарҳи рӯзгор ва кишвардорӣ халифаи мазкури аббосиро дар бар гирифта, дар пайравӣ аз зиндагиномаҳои шоҳони сосонӣ, аз

---

<sup>1</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. رسائل الجاحظ. القاهرة، ١٩٣٣ - ص. ٣٩.

<sup>2</sup>Zakeri, Mohsen. Sahl b. Harun b. Rahawayh. – P.839.

кабили «Сират Ардашер», «Сират Анӯшервон» ва ғайра ба таҳрир омадааст.

Дар маъхазҳои адабии арабизабон баъзе аз рисолаҳо ва суҳанони ҳикматомези Саҳл ибни Ҳорун дарҷ шудаанд<sup>1</sup>, ки дар онҳо низ вуқуфи комили нависанда аз суннатҳои панднигории тоисломии эронӣ аён аст.

Китобу рисолати фавқуззикри Саҳл ибни Ҳорун далел бар он аст, ки нависандаи мазкур дар тарвиҷу таблиғи ҳикмату ахлоқи Эронзамини тоисломӣ ва интиқоли шеваҳои баёни он ба муҳити исломӣ аз пештозони майдони насри арабизабон буд. Бесабаб нест, ки ҳамзамононаш ба ӯ лақаби «Бузургмеҳри ислом»-ро додаанд<sup>2</sup>.

Саҳл ибни Ҳорун, ба таъкиди Ибни Надим, аз шуубиёне буд, ки ба арабҳо адовати шадид дошганд<sup>3</sup>. Аз асарҳои нависанда, ки бевосита зери таъсири афқору ақоиди шуубии ӯ иншо шудаанд, яке бо номи «Рисола фи-л-бухл» ба туфайли комилан иқтибос шуданаш дар «Китоб-ул-бухало»-и Қоҳиз маҳфуз мондааст<sup>4</sup>.

**Алӣ ибни Убайдаи Райҳонӣ.** Аз дигар нависандагони номовари эронӣ, ки аз лиҳози шуҳрат дар паҳнои насри арабизабон ҳамрадифи Саҳл ибни Ҳорун, Қоҳиз ва дигарон буд, Абулҳасан Алӣ ибни Убайдаи Райҳонӣ маҳсуб мешавад. Бино ба ахбори манбаъҳои куҳан, Райҳонӣ аз адибони муқарраби халифа Маъмун (813-833) буда ва «дар таснифоту таълифоти худ тариқаи ҳикмат мепаймудааст»<sup>5</sup>. Донишмандони гузашта ӯро чун дабири забардаст ва яке аз балеғону фасеҳони давр ситоиш намуда, дар ҳусни тасниф ва истеъдоди нависандагӣ ӯро муқаддам бар Қоҳиз низ шуморидаанд<sup>6</sup>. Бино ба ишораи Ҳоҷӣ Халифа, Райҳонӣ соли 219/834 аз олам чашм пӯшидааст<sup>7</sup>. Ибни Надим, Ёкути Ҳамавӣ ва Ҳоҷӣ Халифа номгӯи китобҳои Райҳониро овардаанд, ки теъдоди он беш аз 50 адад аст<sup>8</sup>.

Тааммул дар номгӯи китобҳои нависанда метавонад ба муҳимтарин мавзӯоти осори ӯ ва гароишаш ба мероси маънавии Аҷами тоисломӣ ишора намояд. Аз ин лиҳоз нахустин китобе, ки дар ин номгӯй тавачҷуҳи муҳаққиқро ба худ ҷалб мекунад, «Китоб Кайлуҳросф-ал-малик» аст. Пайдост, ки Райҳонӣ дар таълифи ин китоб аз тарҷумаи «Худойнома»-ҳои паҳлавӣ ва ривоятҳои шифоҳие, ки перомони шоҳи каёнӣ – Луҳросп мавҷуд буд, истифода кардааст.

---

<sup>1</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب البيان و التبيين. ج. ١. - ص. ٦٣: ٢٠، ص. ٤٦٨.

<sup>2</sup> الحموى، القيروانى. زهر الآداب و ثمر الآلباب. ج. ٢. - ص. ٦١٦.

<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٣٣.

<sup>4</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب البخل. ص. ١١-١٥.

<sup>5</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٣٣.

<sup>6</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ١٤. - ص. ٥١.

<sup>7</sup> حاجى خليفه. كشف الظنون عن اسامى الكتب و الفنون. ج. ٥. - ص. ٥٣٧.

<sup>8</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ١٤. - ص. ٥٤.

Як идда китобҳои Райҳонӣ мусалламан дар мавзӯоти панду ахлоқ таълиф шудаанд. Дар таъйиди ин матлаб «Китоби адаби Чавоншер», «Китоб-ул-ихвон», «Китоби ахлоқи Ҳорун», «Китобу шарҳ ал-ҳава ва васф ал-ихо»-ро метавон зикр кард.

Тегдоде аз китобҳои Райҳонӣ, мисли «Китоб-ал-яъс ва-р-раҷо» (Навмедӣ ва умед), «Китоб ал-ақл ва-л-ҷамол», «Китоб-ас-самъ ва-л-басар» (Гӯш ва чашм), «Китоб-ал-муаммил ва-л-маҳиб» (Умедворкунанда ва навмедкунанда), ки бо исмҳои ҷуфти мутазод номгузорӣ шудаанд, зоҳиран, дар мавзӯи баҳсу мунозира эҷод гаштаанд. Мунозира яке аз навъҳои адабии маъмул дар осори ахлоқии паҳлавӣ буд, ки як намунаи боризи он – «Дарахти осурӣ» то замони мо расидааст<sup>1</sup>. Гумон меравад, ки осори фавқуззикри Райҳонӣ дар истиқбол аз ҳамин навъи насри паҳлавӣ иншо шудаанд.

Райҳонӣ мисли Саҳл ибни Ҳорун чанд китоби худро дар шеваи маъмули пандгӯӣ аз забони ҷонварон, ки истиқболе аз сабки «Калила ва Димна» мебошад, эҷод кардааст. Ба ин қабил китобҳо «Китоб-ан-намла ва-л-бауза» (Мӯрча ва магас) ва «Китоб Вуруд ва Вудуд ал-маликайн (ё мокирайн?)»-ро бо истинод ба номҳояшон дохил кардан дур аз савоб нест. Чунон ки қаблан ишора рафт, Саҳл ибни Ҳорун низ китобе бо номи шабеҳ ба асари ахири Райҳонӣ дорад. Дар ҳар ду маврид номи ин китобҳо дар гунаи таҳриффта дарҷ шуда бошад ҳам, ин амр худ далели қаробате миёни эҷодиёти Саҳл ибни Ҳорун ва Райҳонист.

Гароишу дилбастагии Райҳонӣ ба осори тоисломии Эронзамин дар он низ зоҳир шудааст, ки ӯ ба иддае аз таълифоти худ номҳои сирф паҳлавӣ гузоштааст. Одатан ин номҳо дар сарчашмаҳои арабӣ дучори тасҳиф шудаанд ва барқарор кардани аслаш он коре мушқил аст. Аз байни ин гуна асарҳои Райҳонӣ китобе, ки номи он дар баъзе нусаҳои «ал-Фихрист» ва «Муъҷам-ул-удабо» ба сурати «Рӯшаноидил» забт шудааст, диққати аҳли таҳқиқро бештар ба худ ҷалб кардааст. Ба ҳадси К.А.Иностранцев, ки наздик ба ҳақиқат менамояд, номи паҳлавии китоб бояд «Рӯшананибик» (яъне, «Рӯшноинома») бошад. Муҳаққиқи мазкур ин асарро чун ҳалқаи пайванд байни осори ахлоқии сосонӣ ва адабиёти ҳикамии исломӣ дониста, тахмин карда буд, ки нақше аз он дар «Рӯшноинома»-и Носири Хисрав муқарраран боқӣ мондааст<sup>2</sup>.

Унвони паҳлавии китоби дигари Райҳонӣ дар манбаъҳо ба тавре дарҷ шудааст, ки аҳли таҳқиқ дар таъйини асли он ба ҳам ихтилоф варзидаанд. Аз ҷумла, Ризо Тачаддуд онро дар «ал-Фихрист» дар сурати «Китоби Михр Озод Ҷушнас» ва мусахҳеи «Муъҷам-ул-удабо» дар шакли «Китоби Михрзоди Хашиш» ва таҳиягари «Кашфу-уз-зунун» дар сиғаи «Китоби Наҳр орад Ҳасис» забт кардаанд. К.А.Иностранцев ба пайравӣ аз Юсти ин номро «Михр Озар Ҷушнас»

---

اتفضلى، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. - ص. ۲۵۶.

<sup>2</sup>Иностранцев К.А. Сасанидские этюды. – СПб, 1909. - С.39-40.

хонда ва такрор шудани онро дар номи китобе, ки эронӣён дар мавзӯи панд таълиф кардаанд, таъкид кардааст<sup>1</sup>. Чунон ки қаблан ишора рафт, дар қарнҳои нахустини исломӣ аз насри паҳлавӣ асаре бо номи «Китоб Михр Озар Чушнас ал-фрамадор ило Бузарҷмихр ибн ал-Бухтакон» (Номаи Меҳр Озар Гушнаспи фрамадор ба Бузургмеҳр– писари Бухтакон) ба арабӣ тарҷума гардид. А.Тафаззулӣ ҳаде задааст, ки китоби фавқуззикри Райҳонӣ тарҷумаи ҳамин номаи паҳлавист<sup>2</sup>.

Иртиботи ин ду асарро, албатта, наметавон инкор кард, вале бо таваҷҷуҳ ба он, ки асари Райҳонӣ дар куллияи манбаъҳои куҳан на «тарҷума», балки «таълиф» номида шудааст, ногузир бояд иқрор кард, ки китоби Райҳонӣ тарҷумаи мустақими он номаи ахлоқии паҳлавӣ набуда, балки таълифе дар заминаи он номаи куҳан аст.

Дар маъхазҳои арабизабон суҳанони ҳикматомези ин нависандаи номовар дар бораи дӯстӣ ва бародарӣ, дар таърифи ишқ, ҳамчунин ҳикоеҳе аз заковату хушмандӣ ва донишу хиради ӯ нақл шуда, ки дар онҳо ҷилваҳои андешаву тафаккури ахлоқии эронӣ зоҳир аст<sup>3</sup>.

Ба шаҳодати сарчашмаҳо, Алӣ ибни Убайдаи Райҳонӣ ба кӯфру зиндиқа муттаҳам гардидааст. Ба гумони ғолиб, пайвастагиву иродати ӯ ба фарҳанги тоисломии эронӣ ва саъю кӯшишаш дар таблиғу тарвиҷи осори насри паҳлавӣ ба иттиҳом мазкур мӯҷиб шудааст.

**Аллои Шуубӣ.** Аз нависандагон ва шоирони арабизабони нимаи дувуми асри VIII – аввали асри IX яке дигар Аллон ибн ал-Ҳасан (ба қавле ал-Мақсуд) ал-Варроқ аш-Шуубист.

Бино ба маълумоти сарчашмаҳо, Аллон намояндаи мутаассиби чунбиши шуубия буд ва бад-ин сабаб ба «Шуубӣ» мулаққаб гардидааст. Ӯ дониши пурвусъати худро дар таърих ва ансоби арабҳо ҳамчун василаи мубориза ба муқобили Хилофати араб истифода бурда, китобе бо унвони «ал-Майдон фи-л-масолиб» навишта буд, ки ба шаҳодати «ал-Фихрист» фарогири тамоми айбу нуқсонҳои қабилаҳои араб буд<sup>4</sup>. Аллон китоби мазкурро, ки мақсад аз таълифи он мазаммату таҳқири аъроб буд, ба поягузори давлати Тоҳириён – Тоҳир ибни Ҳусайн (ваф. 822) пешкаш намуда, соҳиби инъоми бузург гардидааст.

**Саид ибни Ҳумайд.** Бино ба маълумоти сарчашмаҳо, Абӯусмон Саид ибни Ҳумайд ибни Бухтакон (ваф. с. 240/854) дар баробари шоирӣ дар дабири ва нависандагӣ низ шухрат ёфта буд. Ба қалами ӯ чанд китоб ва девони номаҳо тааллуқ доштааст. Теъдоде аз номаҳои

<sup>1</sup>Иностранцев К.А. Сасанидские этюды. – СПб, 1909. – С.17-18.

<sup>2</sup>تفضلى، احمد. تاريخ ادبيات ايران پيش از اسلام. – ص. ۲۰۳.

<sup>3</sup>الحصري، القيروانى. زهر الآداب و ثمر اللباب. ج. ۱. – ص. ۲۴۱.

<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. – ص. ۱۱۸؛ ابن خلكان. وفيات

الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. ۵. – ص. ۲۴۰.

Саид ибни Хумайд дар «Уюн-ул-ахбор», «Захр-ул-одоб» ва «Вафаёт-ул-аъён» дарч шудаанд<sup>1</sup>.

Дар фаъолияти нависандагии Саид ибни Хумайд як шеваи муборизаи шуубиён, ки иборат аз таълифи осор дар бораи фазилатҳои эронӣ ва бартарии онҳо бар арабҳо буд, инъикоси худро ёфтааст. Ӯ дар асари худ «Интисоф-ул-ачам ала-л-араб» баробарии эронӣро бо арабҳо талқин карда бошад, дар асари дигараш—«Фазл-ул-ачам ала-л-араб ва ифтихоруҳо» ба муқаддам будани эронӣ бар арабҳо аз лиҳози фарҳангу тамаддун қоиладар будааст.

**Абӯубайда.** Яке дигар аз донишмандон ва нависандагони арабизабон, ки дар рушди илму адаб, таърих ва ансоби исломӣ саҳми бориз гузошта ва аз пайравони мутаассиби наҳзати шуубия ба шумор омадааст, Абӯубайда Маъмар ибни Мусанно мебошад.

Бино ба ахбори «ал-Фихрист», ки ба қавли Аллони Шуубӣ истинод мекунад, Абӯубайда аз аҳли Форс буда, лақаби форсии «Сахт» (зоҳиран, муодили «хасис») доштааст<sup>2</sup>. Дар маъхазҳо дар мавриди зодбуми падари Абӯубайда шаҳри Бошарвон низ номбар шуда, асли ӯро аз яҳудиёни эронӣ низ гуфтаанд<sup>3</sup>. Абӯубайда соли 110/728 ва ба қавле соли 114/732 дар Басра таваллуд шуда, дар худуди сад сол зиндагӣ кардааст<sup>4</sup>. Дар санаи вафоти ӯ ихтилоф кардаанд ва солҳои 208/823 то 213/828-ро ба ҳайси соли даргузашти вай нишон додаанд. Зоҳиран, ахбори Масъудӣ дар ин маврид қобили эътимоди бештар аст, ки ӯ дар соли 211/826 аз олам гузаштани Абӯубайда ва чанд нафар аз адибону шоирони дигарро низ ба қайд овардааст<sup>5</sup>.

Дар сарчашмаҳои куҳан дониши беҳамтои Абӯубайда дар таъриху ансоби арабҳо, маҷоз ва алфози ғарибаи Қуръон, аҳодиси набаъӣ таъкид шуда, устодон ва шогирдони ӯ, ки ҳамагӣ аз бузургони адаби арабӣ – мусулмонӣ ба шумор меоянд, номбар шудаанд<sup>6</sup>.

Абӯубайдаро муаллифи тақрибан 200 асар доништаанд, ки номи беш аз 100 адади онҳо дар сарчашмаҳои қадим дарч шудааст<sup>7</sup>. Аз миёни ин мероси бузурги фарҳангӣ як идда китобҳо то замони мо

<sup>1</sup> الحصرى، القيروانى. زهر الآداب و ثمر الآليات. ج. ٢. - ص. ١١٠٠-١١٠١؛ ابن قتيبه. عيون الأخبار. ج. ٣. - ص. ٦٤، ٦٧.

<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ٥٩.

<sup>3</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ١٩. - ص. ١٥٦.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ٥٨؛ ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ٥. - ص. ٢٤٢.

<sup>5</sup> مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ٢. - ص. ٤٥٠.

<sup>6</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ١٩. - ص. ١٥٦.

<sup>7</sup> ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ١٩. - ص. ١٦٠-١٦٢؛ حاجى خليفه. كشف الظنون عن اسامى الكتب و الفنون. ج. ٦. - ص. ٣٦١؛ ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ٥. - ص. ٢٣٨-٢٣٩.



расида ва пораҳое аз осори гумшудаи нависанда дар маъхазҳои адабиву таърихии арабизабон нақл шудаанд<sup>1</sup>.

Номгӯи китобҳои Абӯубайда ҳусни тавачҷуҳи вайро ба таъриху фарҳанги тоисломии эронӣ ва интисобашро ба ҷараёни шуубия таъйид мекунад. Иродат ва тавачҷуҳи Абӯубайда ба мероси фарҳангии Эронзамини тоисломӣ ва эҳсоси эронгароии ӯ дар ду самт зоҳир шудааст: якум, ӯ дар таърихи қавмҳои эронӣ китобҳо навишта, бад-ин васила дар ҳифзи андӯхтаҳои таърихии Аҷами тоисломӣ ва вуруди он ба доираи таърихнигории исломӣ осори арзишманд аз худ ба ёдгор гузоштааст. Аз ин қабил китобҳо яке «Китоби Хуросон» ва дигаре «Ахбор-ул-фурс» (Ахбори эронӣ) аст. Дар бораи китоби аввал дар сарчашмаҳо иттилое наомадааст ва бо истинод ба номаш метавон ҳадс зад, ки он шомили маълумоти таърихӣ ва ҷуғрофиёии марбут ба қисмати шарқии Эрон будааст. Китоби дувум – «Ахбор-ул-фурс» чанд дафъа дар «Муруҷ-уз-заҳаб»-и Масъудӣ мавриди истинод ва иқтибос қарор гирифтааст. Зоҳиран, ин китоб яке аз маъхазҳои асосии Масъудӣ дар мавриди таърихи Эрон будааст. Муаллифи «Муруҷ-уз-заҳаб» доир ба подшоҳии Ҷамшед ва расм шудани ҷашни Наврӯз, дар бораи нахустин подшоҳони ашқонӣ, дар бораи иқомати ҳамаи шоҳони сосонӣ дар Гундишопур то Ҷурмуз ибни Нарсӣ ва дар бораи ба ҷаҳор табақа тақсим шудани шоҳони эронӣ маълумотеро бо истинод ба ҳамин китоби Абӯубайда нақл кардааст<sup>2</sup>. Лозим ба таъкид аст, ки Табарӣ низ беш аз 50 маврид дар таърихномаи худ ба Абӯубайда истинод карда ва аз ин китоби ӯ низ дар баёни таърихи Эрон истифода бурдааст<sup>3</sup>.

Дувум, Абӯубайда низ мисли нависандагони дигари шуубимазҳаб ба таълифи китобҳо дар ситоиши фарҳангу тамаддуни тоисломии қавмҳои эронӣ пардохта, бо ин ҳадафи дар баробари таърихи арабҳо нишон додани шукӯҳу ҷалоли таъриху маънавияти Аҷамро пайғирӣ кардааст. Бидуни тардид, китоби «Ҷазоил-ул-фурс»-и ӯ (Ҷазилатҳои эронӣ) аз ҳамин гуна мазияти ғоявию мундариҷавӣ бархурдор будааст. Бар хилофи ин, муҳтавои баъзе асарҳои Абӯубайда аз мазаммати арабҳо ва зикри «масолиб», яъне, айбу иллатҳои қабिलाҳои араб фароҳам омадааст. Ба шаҳодати муаллифони қуҳан, Абӯубайда дар «Китоб-ул-масолиб»-и хеш ба шаъни аксари қабिलाҳои араб таарруз кардааст<sup>4</sup>. Масъудӣ дар бораи ин китоби Абӯубайда овардааст, ки «дар он ӯ аз фасоди ансоби араб суҳан оварда ва чизҳое ба араб нисбат дода, ки гуфтани он хилофи сиёсат аст ва муносиб нест»<sup>5</sup>.

<sup>1</sup> بروكلمان، كارل. تاريخ الادب العربي. ج. ۱ - ۳. الطبعة الثانية، دار المعارف بمصر، ۱۹۶۹. ج. ۲ - ص. ۱۴۳.

<sup>2</sup> مسعودی، علی بن حسین. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱ - ص. ۲۱۸.

<sup>3</sup> صادق آئينه وند. علم تاريخ در گستره تمدن اسلامي. - ص. ۵۱۴.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۵۹.

<sup>5</sup> مسعودی، علی بن حسین. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۲ - ص. ۴۵۰.

Дар миёни китобҳои мутааддиди Абӯубайда китобе низ ба назар мерасад, ки номаш, зоҳиран, паҳлавӣ аст. Дар «ал-Фихрист» унвони он дар шакли «Равшанқубод» ва дар «Кашф-уз-зунун» ба гунаи «Рустқубоз» ё «Рустақбоз» забт шуда<sup>1</sup> ва аён аст, ки дучори тасхиф гардидааст. Ба эҳтимоли наздик ба яқин, Абӯубайда дар ин маврид ҳамон суннати ба китобҳои арабӣ гузоштани номҳои паҳлавиро, ки ба намунаҳои он дар осори Саҳл ибни Ҳорун ва Алӣ ибни Убайдаи Райҳонӣ қаблан ишора рафт, пайравӣ кардааст.

**Ҳайсам ибни Адий.** Яке аз донишмандони илми таърих ва ансоб, ровӣ ва адиби маъруфи арабизабон Абӯабдурраҳмон Ҳайсам ибни Адий дар соли 130/747 дар Куфа чашм ба олами ҳастӣ кушода ва дар соли 207/822 ва, ба қавле дигар, дар соли 209/824 аз дорулфано ба дорулбако реҳлат кардааст<sup>2</sup>.

Ҳайсам ибни Адий ба шарофати вусъати дониш ва шуҳрати беназираш дар ривояти ахбору ансоб дар аҳди хилофати Мансур (754-775), Ҳодӣ (775-776), Маҳдӣ (775-786) ва Ҳорунарашид (786-809) пайваста аз муқаррабони дарбор буд.

Дар аслу насаби Ҳайсам муаллифони сарчашмаҳо ихтилоф кардаанд. Иддае ӯро аслан араб ва иддае дигар ғайриараб ва аҷамӣ донистаанд. Фузун бар ин, ашъоре аз шоирони ҳамзамони Ҳайсам дар сарчашмаҳо омадааст, ки ҳамагӣ асли ғайриарабии ӯро мавриди таънаву мазаммат қарор додаанд<sup>3</sup>.

Дар маъхазҳои арабизабон номи беш аз 60 асари Ҳайсам ибни Адий дарҷ шудааст<sup>4</sup>, ки тааммул дар унвони онҳо вуқуфи комили нависандаро бар таъриху фарҳанги арабҳо ва халқҳои эронӣ таъйид мекунад. Ба қалами нависанда асарҳои «Таърих ул-Аҷам ва Банӣ Умайя» ва «Ахбор-ул-фурс» тааллуқ доштаанд, ки, бидуни тардид, перомуни таърихи Эрон ва ақвоми эронинажод баҳс мекарданд. Китобҳои мазкур мусалламан бо истифода аз матолиби «Худойнома» ва осори дигари таърихӣ тоисломӣ навишта шудаанд. Ин китобҳо аз нахустин муаллафоти исломӣ перомуни таърихи Аҷами тоисломӣ ба шумор меоянд, ки ба эҷоди пайванд миёни афкори таърихӣ исломӣ ва андешаи таърихӣ тоисломӣ эронӣ мусоидат намудаанд.

Ҳайсам ибни Адий мисли Абӯубайда ва Аллони Шуубӣ чанд китобе дар мазаммати аъроб навиштааст, ки «Китоб-ул-масолиб-ал-кабир», «Китоб-ул-масолиб-ас-сағир» ва «Китоб масолиб Рабиъа» аз ҳамин зумраанд. Ағлаби онҳое, ки ин қабил китобҳо навиштаанд,

---

<sup>1</sup>حاجي خليفه. كشف الظنون عن اسامي الكتب و الفنون. ج. ۶. - ص. ۳۶۲.  
<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۱۲؛ ياقوت الحموي. معجم الادباء. ج. ۱۹. - ص. ۳۰۹؛ حاجي خليفه. كشف الظنون عن اسامي الكتب و الفنون. ج. ۶. - ص. ۳۹۸؛ ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. ۶. - ص. ۱۱۳.

<sup>3</sup>ابن خلكان. وفيات الاعيان و انباء ابناء الزمان. ج. ۴. - ص. ۱۱۲.  
<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۱۲؛ ياقوت الحموي. معجم الادباء. ج. ۱۹. - ص. ۳۱۰.

пайрави шуубия мебошанд. Вале дар мавриди интисоби Ҳайсам ибни Адий ба мазҳаби шуубия дар сарчашмаҳо иттилоъе нарафтааст. Аз ин рӯ метавон ҳадс зад, ки агар ангезаи шуубӣ ўро ба таълифи ин гуна китобҳо вонадошта бошад, пас, ҳусни тавачҷуҳаш ба мероси маънавии халқҳои эронӣ дар таълифи осори мазкур ҳатман нақше аз худ гузоштааст.

**Муҳаммад ибни Лайси Хатиб** яке аз дабирон ва нависандагони арабизабони нимаи дувуми асри VIII – аввали асри IX мебошад, ки дар осораш нақши насри ахлоқии тоисломии эронӣ ошкор аст. Ибни Надим дар бораи ӯ ахбори мухталифҳо зикр кардааст<sup>1</sup>. Аз он бармеояд, ки ӯ аз хонадони решадорӣ эронӣ бархоста ва насабаш ба Доро писари Доро мерасидааст. Табори эронӣ ва табаҳхури Муҳаммад ибни Лайс дар одобу ҳикмати ниёгонаш мӯҷиб шуда, ки Бармакиён ўро мавриди эҳтиром ва инояти худ қарор диҳанд. Дар охири асри VIII ӯ вазифаи дабирии Яҳёи Бармакиро бар уҳда дошт ва пас аз фочиаи хонадони Бармакиён як муддат дар дарбори Ҳорунарашид (786-809) ба китобат машғул буд. Зоҳиран, пас аз ин ӯ аз олам гузаштааст, зеро дар манбаъҳо ба ахборе, ки аз иртиботи ӯ бо дарбори Амин (809-813) ва Маъмун (813-833) гувоҳӣ диҳад, ишора нарафтааст. Лозим ба таъкид аст, ки, тибқи ривояти дигар, ӯ гароише зидди шуубия дошта ва, аз ин рӯ, бо Бармакиён дар таноқуз будааст. Зоҳиран, ин ривоят баъди қатли Бармакиён аз ҷониби Ҳорунарашид пайдо шудааст, зеро баъзе аз адибоне, ки бо Бармакиён робита доштанд, пас аз фочиаи онҳо аз тарси таъкиб иродати худро ба ин хонадон пинҳон карданд. Аз эҳтимол дур нест, ки Муҳаммад ибни Лайс низ ба хотири ҳимояи худ ба ин роҳ рафта бошад.

Унвони китобҳои Муҳаммад ибни Лайс гувоҳ бар он аст, ки ин нависандаи суҳанпардоз бо таълифи осор дар пайравии пандномаҳои аҳди сосонӣ дар идомаи андешаи ахлоқии ниёгонаш саҳм гузоштааст. Ибни Надим ба қалами ӯ ду китобро аз ин қабил осор нисбат додааст, ки яке «Китоб изат Ҳорун-ар-рашид» (Китоби мавъизаҳои Ҳорунарашид) ва дигаре «Китоб Яҳё ибн Холид фи-л-адаб» (Одобномаи Яҳё ибни Холиди Бармакӣ) мебошад<sup>2</sup>.

Китоби дигари Муҳаммад ибни Лайс—«Китоб-ал-хат ва-л-қалам»-ро мусалламан метавон истиқбол аз мунозираҳои маъмул дар насри паҳлавӣ ба ҳисоб овард. Ибни Надим соҳиби номаҳои мутааддид будани Муҳаммад ибни Лайсро зикр намуда, таъкид кардааст, ки дар номаҳои забони панду мавъизаро ба қор мегирифт. Дар «ал-Фиҳрист» ба қалами нависандаи мазкур мансуб будани китоби «ар-Рад ала-з-занодиқа» зикр шуда, дар ҳоле ки муттаҳам ба зиндиқа будани худӣ ӯ ба қайд омадааст. Дар қиёс бо он ки ағлаби адибону шоирони арабизабони садаҳои VIII-IX ба сабаби гароишашон ба

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۴.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۴.

мероси фарҳангии Ачами тоисломӣ ба зиндиқа муттаҳам гардидаанд, иттиҳоми Муҳаммад ибни Лайсро низ на ба маънии зиндиқи воқеӣ, яъне, пайрави дини Монӣ ё куфру илҳод, балки ба маънии эронигароии ӯ тавҷеҳ кардан наздик ба ҳақиқат хоҳад буд.

**Амр ибни Масъада.** Абулфазл Амр ибни Масъада ибни Саъд (ё Саъид) ибни Сул намояндаи хонаводаи маъруфест, ки ниёи он Сул аз шоҳони Гургон буд ва пас аз истилои Гургон аз ҷониби аъроб дар аҳди хилофати Сулаймон ибни Абдулмалики Умавӣ (714-717) ислом овард<sup>1</sup>.

Падари Амр–Масъада дабири волии Умавиён дар Хуросон–Холид ал-Қасрӣ (ваф. 743) буда, пас аз интиқоли хилофат ба Аббосиён китобати Холиди Бармакӣ ва сипас китобати Абӯайюби Мӯриёниро, ки ҳар ду аз нахустин вазирони эронии хулафои аббосӣ буданд, бар уҳда доштааст<sup>2</sup>.

Пас аз фочиаи Бармакиён Амр ибни Масъада ба Маъмун пайваста, чанд сол бо ӯ дар Марв буд. Баъди ба хилофат расидани Маъмун, Амр ибни Масъада ба мансаби раиси девони расоил ва девони хотам мерасад. Мақому манзилати ӯ дар ин давра ба дараҷае мерасад, ки баъзе шоирон зимни ситоиш аз вай ба унвони «вазир» ёд кардаанд ва Ибни Халликон низ ӯро «яке аз вузаро» номидааст, ҳарчанд ки ӯ, бино ба ишораи Ёкути Ҳамавӣ, мансаби вазирӣ надоштааст<sup>3</sup>. Амр ибни Масъада дар соли 214/829 ва, бо қавле дигар, дар соли 217/832 аз олам гузаштааст<sup>4</sup>. Бино ба ишораи Ибни Надим, ӯ соҳиби девони расоил ва девони шеър будааст<sup>5</sup>.

Амр ибни Масъада китобу рисолаҳое дар пайравӣ аз осори ахлоқии паҳлавӣ тадвин карда буд. Яке аз ин гуна китобҳои ӯро бо номи «Китоб-адаб Масъада-ал-Котиб» (Одобномаи Масъадаи Котиб) Ибни Надим зимни китобҳои ахлоқие, ки эрониён, ҳиндиён, румиён ва арабҳо таълиф кардаанд, зикр кардааст<sup>6</sup>.

Шухрати Амр ибни Масъада, қабл аз ҳама, ба номаҳои ӯ оид аст. Дар маъхазҳои куҳан аксаран аз эъҷобу шигифтии Маъмун аз балоғати Амр ибни Масъада сухан рафта ва чанде аз номаҳои ӯ нақл шудаанд<sup>7</sup>. Дар тавсифи истеъдоди суханпардозии Амр ибни Масъада аз забони вазир Фазл ибни Саҳл овардаанд: «Ӯ балеғтарин кас аст. Аз балоғати ӯст, ки ҳар кас суханони ӯро бишнавад, мепиндорад, ки ӯ

<sup>1</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١٠. - ص.١٦٥.

<sup>2</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١٦. - ص.١٢٧.

<sup>3</sup>ابن خلكان.وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان.ج.٣. - ص.٤٧٥.

<sup>4</sup>ابن خلكان.وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان.ج.٣. - ص.٤٧٦؛ ياقوت

الحموى.معجم الادباء.ج.١٦. - ص.١٢٧.

<sup>5</sup>النديم، محمد ابن اسحق.كتاب الفهرست. - ص.١٣٦.

<sup>6</sup>النديم، محمد ابن اسحق.كتاب الفهرست. - ص.٣٧٨.

<sup>7</sup>ابن خلكان.وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان.ج.٣. - ص.٤٧٨؛ ياقوت

الحموى.معجم الادباء.ج.١٦. - ص.١٣٠.

назири онро навишта метавонад, вале чун бад-он даст занад, муяссараш нагардад»<sup>1</sup>.

Муҳимтарин хусусияти номанигории Амр ибни Масъадаро донишмандони гузашта дар истифодаи ҷумлаву ибороти кӯтоҳи ҳикматомез дидаанд, ки онҳо ба тавқеоти шоҳони тоисломии эронӣ ва панду андарзҳои онон шабоҳати комил доранд<sup>2</sup>.

Ин ҳамоҳангӣ натиҷаи истиқбол аз мазмун ва шеваҳои панднигории тоисломии эронист, ки дар фаровардаҳои қалами Амр ибни Масъада ба муктазиёти муҳити исломӣ мутаносиб ва ҳамранг гардидааст. Хидмати нависанда низ дар тадовуми дастовардҳои насри тоисломии эронӣ, қабл аз ҳама, дар ҳамин чиз ба зухур омадааст.

**Саид ибни Ҳурайм.** Дар «Байт-ул-ҳикма»-и Бағдод, чунон ки қаблан ишора шуд, як даста аз нависандагони эронитабор таҳти сарвари Саҳл ибни Ҳорун ба кори тарҷумаву таҳқиқ машғул буданд. Номи яке аз онҳо дар «ал-Фихрист» Саид ибни Ҳурайм ва дар баъзе нусхаҳои ин китоб ба гунаи «Саид ибни Ҳорун» забт шудааст<sup>3</sup>. Дар мавриди ин нависанда он чизе, ки шубҳаеро ба вучуд намеоварад, ҳамкори Саҳл ибни Ҳорун дар «Байт-ул-ҳикма» буданаш аст. Ибни Надим бо зикри ин матлаб таъкид кардааст, ки Саид ибни Ҳурайм «нависандаи балеғ ва фасеҳ буд, ки Ҷоҳиз аз вай нақл кардааст»<sup>4</sup>.

Ба қалами Саид ибни Ҳурайм «Китоб-ул-ҳикма ва манофиъуҳо» мансуб доништа шудааст, ки аз тавачҷуҳаш ба панду ҳикмат гувоҳӣ медиҳад. Дар манбаъҳо ҳамчунин ба мудавван ва маҷмӯъ будани расоили ӯ ишора шудааст<sup>5</sup>.

**Ибни Фузайли Котиб.** Ибни Надим дар «ал-Фихрист» чанде аз адибони эронитаборро номбар кардааст, ки ба ҳайси дабир маъруф будаанд. Яке аз онҳо Абулҳасан Алӣ ибни Фузайл ибни Марвони Котиб аст. Ибни Надим асли эронии ӯ ва ба қаламаш мансуб будани чанд китобро зикр кардааст<sup>6</sup>. Асари ӯ бо номи «Китоб ул-асном ва мо конат ал-араб ва-л-аҷам таъбуду мин дуна-л-лоҳи» (Китоби бутҳо ва ончи аъроб ва эронӣён ба ҷуз Аллоҳ ба он ибодат мекарданд) аз вуқуфи Ибни Фузайл ба таъриху фарҳанги тоисломӣ гувоҳӣ медиҳад. Дар сарчашмаҳо замони зиндагии Ибни Фузайл дақиқ нашудааст, вале аз нависандагони садаҳои VIII – IX будани ӯ мусаллам аст.

Яке дигар аз нависандагоне, ки ба шуғли дабириашон маъруф буданд, **Исҳоқ ибни Салмаи Котиб** ба шумор меояд. Ибни Надим аз шарҳи рӯзгори ӯ сарфи назар карда, танҳо эронитабор буданаш ва

<sup>1</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.١٦٠-ص.١٢٩.

<sup>2</sup>الحموى، القيروانى.زهراآداب و ثمر الالباب.ج.٣- ص.٨٩٣-٨٩٤؛ عمر،

فروخ. تاريخ الادب العربى.ج.٣- ص.٢١٦.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق.كتاب الفهرست.- ص.١٣٤.

<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق.كتاب الفهرست.- ص.١٣٥.

<sup>5</sup>حاجى خليفه.كشف الظنون عن اسامى الكتب و الفنون.ج.٥- ص.٣١٩.

<sup>6</sup>النديم، محمد ابن اسحق.كتاب الفهرست.- ص.١٣٨.

номи китобҳояшро зикр кардааст<sup>1</sup>. Аз номи китоби *ӯ* – «Фазл-ул-ачам ала-л-араб» пайдост, ки муаллиф пайрави шуубия буда, дар осораш аз бартарии фарҳангу тамаддуни эронӣ нисбат ба маданияти аъроб суҳан ба миён овардааст. Бо таваҷҷуҳ ба он, ки ағлаби китобҳои аҳли шуубия дар бартарии эронӣ бар арабҳо дар нимаи дувуми асри VIII – нимаи аввали асри IX таълиф шудаанд, метавон ҳадс зад, ки зиндагии Исҳоқ ибни Салма низ дар ҳамин давра ҷараён доштааст. Бино ба ишораи муаллифи «ал-Фихрист», расоили Исҳоқ ибни Салмаи Котиб мудавван гардида будааст.

**Саид ибни Ваҳби Котиб.** Ибни Надим ба табори эронии Саид ибни Ваҳби Котиб ва дар китобе маҷмӯъ гардидани номаҳои ӯро таъкид кардааст<sup>2</sup>. Ин матлаб дар «Кашф-уз-зунун» низ зикр шудааст<sup>3</sup>. Саид ибни Ваҳб дар шоирӣ низ даст дошта ва девонаш иборат аз 50 ҷараъ таъйин шудааст<sup>4</sup>. Ибн ал-Муътаз дар таъриҳи намунаҳои ашъор ва баъзе лаҳзаҳои рӯзгараширо, ки аз ихлоси самимиаш ба Бармакиён далолат мекунад, зикр кардааст<sup>5</sup>. Иродатмандии Саид ибни Ваҳб ба Бармакиён дар китоби «ал-Вузуро ва-л-кутуб»-и Ҷаҳшиёрӣ низ таъкид шудааст. Бино ба аҳбори ин манбаъ, Саид ибни Ваҳб ягона шахсе будааст, ки Бармакиён дар зиндони Ҳорунарашид дидан ва шунидани суҳанон ва ҳикоеҳои ӯро хостаанд ва ин барояшон муяссар гардидааст<sup>6</sup>. Бар асоси ин аҳбор метавон замони зиндагии Саид ибни Ваҳбро нимаи дувуми асри VIII – аввалҳои асри IX таъйин кард.

**Ҳамд ибни Маҳрони Котиб** яке аз нависандагон ва дабирони эронитаборе мебошад, ки ворид ба доираи адабии Бармакиён ва бархурдор аз марҳамату инояти онҳо буд. Ибни Надим дар бораи ӯ навиштааст, ки «исфаҳонист ва барои Бармакиён дар муддати зиндагонияшон китобат мекард»<sup>7</sup>. Дар сарчашмаҳои соҳиби «Китоби расоил» будани ӯ ишора шудааст.

**Абӯҳасин.** Номи комили ин нависанда Абӯҳасин Муҳаммад ибни Али Исфаҳонӣ Даймартист. Ба номи ӯ муаллифи «ал-Фихрист» чанд китобро мансуб донистааст, ки яке аз онҳо «Китоб масолиб Сақиф ва соир-ал-араб» (Китоби айбҳои қабилаи Сақиф ва қабилаи дигари араб) аст. Ин китоб гувоҳ бар он аст, ки Абӯҳасин аз пайравони шуубия буда, дар муораза бо арабҳо ва баршумурдани айбу ноқисҳои онҳо пайрави Аллони Шуубӣ, Абӯубайда ва дигарон будааст.

---

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۴۲.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۶.

<sup>3</sup>حاجي خليفه. كشف الظنون عن اسامي الكتب و الفنون. ج. ۵. - ص. ۳۱۹.

<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۹۲.

<sup>5</sup>ابن المعتز. طبقات الشعراء المحدثين. - ص. ۲۵۷-۲۶۱.

<sup>6</sup>الجهشيارى، محمد بن عبدوس. كتاب الوزراء و الكتاب. - ص. ۳۱۴-۳۱۶.

<sup>7</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۷.

Таърихи дақиқи таваллуду вафоти Абӯҳасин дар маъхазҳо зикр наёфтааст, вале бо таваччуҳ ба замони ривочи «масолиб»-нависӣ дар насри арабизабон зиндагии ӯро дар нимаи дувуми асри VIII – нимаи аввали асри IX таъйин кардан дур аз савоб нахоҳад буд.

**Чаъфар ибни Аҳмади Марвазӣ.** Номи комили ин нависандаи номвари арабизабон Абулаббос Чаъфар ибни Аҳмад ибни Алӣ ал-Марвазӣ ал-Аҳвозист, ки нисбаи аввали ӯ ишора ба зодгоҳаш Марв буда, нисбаи дувумаш марбут ба зиндагӣ ва фаъолияташ дар Аҳвоз аст.

Муаллифи «ал-Фихрист» иттилоъ додааст, ки «Абулаббоси Марвазӣ яке аз муаллифони китобҳо дар анвои мухталифи улум буд ва китобҳояш хошишманди бисёре дошт. Ӯ аввалкасест, ки дар мавзӯи «Масолик ва мамолик» китобе таълиф кард, вале ба итмом нарасонида, дар Аҳвоз вафот ёфт. Китобҳои ӯро ба Бағдод оварданд ва онҳо дар соли 274 (887м.) дар маҳаллаи Тоқ-ул-ҳарронӣ ба фурӯш рафтанд»<sup>1</sup>. Айни ҳамин матлаб бо истинод ба Ибни Надим дар «Муъҷам-ул-удабо»-и Ёқути Ҳамавӣ низ такрор шудааст<sup>2</sup>.

Ҳочӣ Халифа соли 274/887-ро, ки Ибни Надим чун соли фурӯши китобҳои Абулаббоси Марвазӣ таъйин кардааст, соли вафоти нависанда низ донистааст<sup>3</sup>.

Дар маъхазҳои мазкур номи шаш китоби Абулаббоси Марвазӣ ба кайд омадааст. Дар миёни онҳо ду китоб – «Китоб-ал-одоб-ас-сағир» ва «Китоб-ал-одоб-ал-кабир» далели таваччуҳи муаллифи онҳо ба масъалаҳои ахлоқист. Дар қиёс бо он, ки Ибни Муқоффаъ низ қариб як аср пеш аз Абулаббоси Марвазӣ бо ҳамин гуна номҳо ду китоби ахлоқӣ таълиф карда ва дар онҳо аз матолиби пандномаҳои сосонӣ фаровон истифода кардааст, метавон ҳадс зад, ки китобҳои нависандаи мавриди назар низ дар пайравӣ аз суннати андарзнигории паҳлавӣ иншо шудааст. Китоби дигари Абулаббоси Марвазӣ – «ал-Масолик ва-л-мамолик» дар мавзӯи ҷуғрофиё таълиф ёфта, ба ҳайси нахустин асар дар навъи худ ба рушду ривочи насри ҷуғрофиёии исломӣ замина фароҳам овардааст. Китобҳои дигари Абулаббоси Марвазӣ дар мавзӯҳои марбут ба балоғат, таърихи Қуръон ва ғайра иншо шуда, вусъати дониш ва назари нависандаро таъйид мекунанд.

**Ибни Абӯтоҳири Тайфур.** Номи комили ин нависандаи номовари арабизабон Абулфазл Аҳмад ибни Абӯтоҳири Тайфури Котиб аст. Муаллифони маъхазҳои куҳан асли марврӯдӣ ва аз хонадони давлатмардони Хуросон бархостани ӯро таъйид кардаанд<sup>4</sup>. Ибни Абӯтоҳир дар соли 204/819 таваллуд шуда, дар оғози кор дар

---

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٦٧.

<sup>2</sup>ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ٧. - ص. ١٥١.

<sup>3</sup>حاجى خليفه. كشف الظنون عن اسامى الكتب و الفنون. ج. ٥. - ص. ٢٠٨.

<sup>4</sup>ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ٣. - ص. ٨٧.

мактабҳои умумӣ ба тарбияти котибон машғул будааст ва сипас дар чониби шарқии бозори варроқони Бағдод мактаби хоси худро таъсис додааст. Вафоти Ибни Абӯтоҳирро дар соли 280/893 дар Бағдод таъйин кардаанд<sup>1</sup>.

Ибни Абӯтоҳир ҳам дар наср ва ҳам дар назми арабизабон даст доштааст. Шуҳрати ӯ дар адабиёти арабизабон бештар ба таълифоти мутааддидаш марбут аст. Ибни Надим, Ёкути Ҳамавӣ ва Ҳочӣ Халифа унвони беш аз 50 асари Ибни Абӯтоҳирро ба қайд овардаанд<sup>2</sup>. Як идда таълифоти ӯ ба таърих оид буда, дар миёни онҳо «Таърихи Бағдод» шуҳрат ва аҳаммияти бештар дорад. Аз ин китоб қисми шашуми он, ки ба таърихи хилофати Маъмун ихтисос дорад, то замони мо расида ва рӯи чодро дидааст. Ба ақидаи Е.Босворт, ин китоб аз нахустин падидаҳои нигориши таърих ва фарҳанги шаҳрҳо ба шумор меояд<sup>3</sup>. Номгӯи осори Аҳмад ибни Абӯтоҳир далел бар он аст, ки нависанда ба мероси маънавии Эронзамини тоисломӣ вукуф дошта ва дар ин замина чанде аз китобҳои худро таълиф кардааст. Яке аз ин китобҳо «Китоб тарбият Хурмуз ибн Кисро Анӯшервон» (Китоби тарбияи Хурмуз писари Хусрави Анӯшервон) аст. Ба гумони ғолиб, ин китоб шомили достони таълим ва тарбияти Хурмуз ва кайфияти имтиҳони ӯ дар ҳузури падараш – Хусрави Анӯшервон бояд бошад, ки Фирдавсӣ дар «Шоҳнома» онро батафсил овардааст<sup>4</sup>. Китоби Ибни Абӯтоҳир бояд таълифе мустақил дар асоси ҳамин дoston бошад, на тарҷумаи мустақими он, зеро нависандаи мазкур на бо тарҷума, балки бо таълиф саруқор доштааст. Ба ҳар оин, мухтавои эронии китоби мазкури Ибни Абӯтоҳир тардидеро эҷод намекунад.

Номи китоби дигари нависанда, ки дар пайравӣ аз суннатҳои насри паҳлавӣ иншо шудани он мусаллам аст, дар сарчашмаҳо ба гунаҳои мухталиф забт шудааст. Аз ҷумла, дар «ал-Фихрист» он дар шакли «Хабар-ал-малик-ал-онӣ фӣ тадбир-ил-мамлака ва-с-сиёса», дар «Муъҷам-ул-удабо» дар сифаи «Хабар-ал-малик-ал-оли...» ва дар «Кашф-уз-зунун» дар қолаби «Хабар-ал-малик-ал-одил...» ба қайд омадааст. Гунаи ахири номи китоб, яъне «Хабар-ал-малик-ал-одил фӣ тадбир-ил-мамлака ва-с-сиёса» (Хабари тадбири малики одил дар идораи кишвар ва сиёсат) ба назар дуруст менамояд, зеро таърифи малик бо сифатҳои «ал-оли» ва «ал-онӣ» (хору залил, гирифтгор) дур аз мантиқ аст. Дар баробари ин, таъбири «малики одил» ба ҳайси таъриф аз Хусрави Анӯшервон дар адабиёти исломӣ роиҷ аст. Бо

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۶۲.

<sup>2</sup>تياقوت الحموی. معجم الادباء. ج. ۳. - ص. ۹۲؛ حاجی خلیفه. كشف الظنون عن اسمی الكتب و الفنون. ج. ۵. - ص. ۴۵.

<sup>3</sup>Bosworth C.E. Ebn Abi Taher Tayfur //Encyclopaedia Iranica. Edited by Ehsan Yarshater. - Vol. VII, 1996. - P. 663.

<sup>4</sup>محمدی، محمد. تاریخ و فرهنگ ایران در دوران انتقال از عصر ساسانی به عصر اسلامی. ج. ۴. - ص. ۳۲۴-۳۲۶.



таваччуҳ ба китоби қаблии Ибни Абӯтоҳир, ки огоҳии нависандаро аз ахбори Хусрави Анӯшервон ва писари ӯ - Хурмуз таъйид мекунад, метавон тахмин кард, ки муҳтавои ин китоб бо сиёсати кишвардории Хусрави Анӯшервон робита доштааст.

Ду китоби дигари Аҳмад ибни Абӯтоҳир – «Китоб-ал-малик-ал-бобилий ва-л-малик-ал-мисриййи-л-боғийайни ва-л-малик-ал-ҳалим ар-румий» (Достони шоҳони ситамгари бобиливу мисрӣ ва шоҳи ҳалими румӣ) ва «Китоб-ал-малик-ал-муслиҳ ва-л-вазир-ал-муъин» (Достони шоҳи дурусткор ва вазири ёвар) аз он гувоҳӣ медиҳанд, ки муаллифи онҳо аз суннатҳои афсонанигории тоисломӣ воқиф буда ва ин китобҳоро дар пайравӣ аз он суннатҳо ба риштаи таҳрир кашидааст.

Ба қалами Аҳмад ибни Абӯтоҳир ҳамчунин рисолае бо номи «Муфохарат-ул-вард ва-н-нарчис» (Нозидани гули сурх ва нарчис) мансуб аст, ки он, бешак, аз навъи мунозираҳои маъмул дар адабиёти паҳлавӣ аст. Ин рисола дар ҷузви китоби «ал-Фараҷ баъд-аш-шидда»-и Танухӣ то замони мо расидааст<sup>1</sup>.

Аз номи асари дигари Ибни Абӯтоҳири Тайфур – «Китоб фазл-ал-араб ала-л-ачам» (Китоби бартарии арабҳо бар эронӣён) пайдост, ки муаллиф, бо вучуди эронитабор будан ва ба осори ниёгон ҳусни ихлос доштаниш, афқору ақоиди шуубияро напазируфтааст ва китоби мазкурро дар радди асарҳое, ки Аллони Шуубӣ, Саид ибни Хумайд, Абӯубайда ва дигар пайравони шуубия доир ба бартарии эронӣён бар арабҳо навиштаанд, таълиф кардааст.

Бино ба ахбори манбаъҳои куҳан, писари Ибни Абӯтоҳир – Убайдуллоҳ низ дар ҷодаи таълифу тасниф пайрави падараш буда ва китоби «Таърихи Бағдод»-и вайро такмил дода, баёни вақоеи таърихро то замони халифа ал-Муктадир (907-932) расонидааст. Ба қалами ӯ чанд китоби дигар низ тааллуқ доштааст, ки номи онҳо дар сарчашмаҳо ба қайд омадааст<sup>2</sup>.

**Аҳмади Сарахсӣ**, ки номи комилаш Абулфараҷ Аҳмад ибни Таййиби Сарахсист, яке аз адибоне мебошад, ки дар риштаҳои мухталифи адабу илми замонаш осори мутааддиде таълиф кардааст. Ибни Надим ӯро «нависандаи балеғ ва соҳиби ривояти бисёр» номида, унвони ҷаҳор китоби ӯро зикр кардааст<sup>3</sup>. Ёқут дар бораи Аҳмади Сарахсӣ маълумоти бештаре зикр карда, ба осори ӯ ва саҳмаш дар улуми мухталиф баҳои баланд додааст<sup>4</sup>. Муаллифи «Кашф-уз-зунун» дар зикри куня ва номи падари Аҳмади Сарахсӣ бо

---

<sup>1</sup>ابروكلمان، كارل. تاريخ الادب العربى. ج. ۳. - ص. ۲۸.  
<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۶۴.  
<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۶۶.  
<sup>4</sup>ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ۳. - ص. ۹۸.

Ибни Надим ва Ёкути Ҳамави ихтилоф дорад, вале нисбат ба ин ду муаллиф унвонҳои китобҳои бештари ӯро зикр кардааст<sup>1</sup>.

Бино ба ахбори маъхазҳои мазкур, Аҳмади Сарахсӣ аз надимон ва муқаррабони халифа Муътазид (892-902) будааст, вале баъдан мавриди хашму ғазаби халифа қарор гирифта, ба зиндон меафтад ва дар моҳи сафари соли 286/899 вафот меёбад<sup>2</sup>. Дар мавриди сабаби зиндонӣ шудани Аҳмади Сарахсӣ муаллифи «Муъҷам-ул-удабо» аз забони халифа Муътазид овардааст, ки гӯё ӯ ба илҳод гароиш дошта ва халифаро низ ба он даъват кардааст, вале дар ҷӣ зоҳир шудани илҳоди вай ташхис нашудааст<sup>3</sup>.

Бо истинод ба унвонҳои беш аз чихил китоби Аҳмади Сарахсӣ метавон тазакур дод, ки ӯ дар риштаҳои адаб, мусиқӣ, панду ҳикмат, одобу сиёсати кишвардорӣ, ҷуғрофиё, таърих, тиб, улуми риёзӣ таълифот ва мачмӯаҳо доштааст, ки ғолибан «ихтисороте аз китобҳои мутақаддимин» ба шумор мерафтаанд<sup>4</sup>. Бо таваҷҷуҳ ба унвони ду асари Аҳмади Сарахсӣ – «Китоб-адаб ал-мулук» ва «Китоб ус-сиёса» метавон ба иртиботе миёни онҳо ва рисолати маъмул дар адабиёти паҳлавӣ дар бораи одобу сиёсати кишвардорӣ қоил буд.

**Хонадони Тоҳириён.** Таъсис ёфтани давлати Тоҳириён (821-873) ва насру назро ба забони арабӣ ташҷеъ кардани онҳо ба ташаккули адабиёти арабизабон, аз ҷумла навъҳои мансури он дар марказҳои Эрон ибтидо гузошт. Чанде аз намояндагони дудмони Тоҳириён мисли ағлаби хонадонҳои решадори Эронзамин, аз қабили Бармакиён, Оли Саҳл ва дигарон, дар қарнҳои нахустини исломӣ бо пазириши ислом ва касби табаххур дар забону адаби арабӣ дар қори тарҷума, таълиф ва иншо даст доштанд. Фаровардаҳои қалами онҳо ва номи таълифоташон дар сарҷашмаҳои арабизабон омадаанд, ки аз истеъдод ва ҳунари нигорандагии онҳо хабар медиҳанд. Фузун бар ин, хонадони Тоҳириён дар пайравӣ аз дудмони Бармакиён дар сарпарастӣ ва дастгирии нависандагону шоирони эронитабор, ки таваҷҷуҳ ва иродате ба мероси маънавии Эронзамин доштанд, саъйи зиёд мекарданд. Дар партави иноят ва қарами онҳо дар Марву Нишопури асри IX мачмааи адибону шоирон ташаккул ёфт, ки ба он аксаран аҳли адаби эронитабор ворид буданд. Дар таъйиди ин матлаб ва бо истинод ба ахбори маъхазҳои қуҳан метавон дар бораи нақши намояндагони алоҳидаи сулолаи Тоҳириён дар насри арабизабон суҳан ба миён овард.

Муассиси давлати Тоҳириён–**Тоҳир ибни Ҳусайн ибни Мусъаб ибни Рузайқ ибни Моҳон** аз хонадоне бархоста буд, ки намояндагони он аз аҳди Умавиён сар карда дар ҳаёти сиёсии Хилофат нақш

---

<sup>1</sup>حاجی خلیفه.کشف الظنون عن اسمی الکتب و الفنون.ج.۵. - ص.۴۶.

<sup>2</sup>قیاقوت الحموی.معجم الادباء.ج.۳. - ص.۹۹.

<sup>3</sup>قیاقوت الحموی.معجم الادباء.ج.۳. - ص.۱۰۱.

<sup>4</sup>حاجی خلیفه.کشف الظنون عن اسمی الکتب و الفنون.ج.۵. - ص.۴۶.

доштанд. Ҷадди Тоҳир – Мусъаб шуғли дабирӣ дошт ва дар қиёми Абӯмуслими Хуросонӣ алайҳи Умавиён ширкат карда буд. Падари Тоҳир – Хусайн вилояти Бушанҷро ба уҳда дошт. Тоҳир ибни Хусайн соли 159/775 таваллуд ёфта, соли 207/822 аз олам гузаштааст<sup>1</sup>. Корномаи ӯ ва ҳадиси марғи асроромезаш дар «Таърих»-и Табарӣ, «Вафаёт-ул-аъён» ва соири манбаъҳо баён шуда ва аз ҷониби муаррихони ватаниву хориҷӣ мавриди таҳқиқ қарор гирифтааст<sup>2</sup>.

Тоҳир ибни Хусайн на танҳо давлатмарди бузург буд, балки ба ҳайси нависанда ва адиби суҳанпардоз низ шуҳрат дошт. Ибни Надим ӯро «номанигори балеғ» муаррифӣ карда ва соҳиби рисолаҳои маҷмӯъ буданаширо таъкид намудааст<sup>3</sup>. Чанде аз номаҳои Тоҳир ибни Хусайн дар миёни аҳли адаб ва сиёсат шуҳрат доштанд. Яке аз онҳо, ки дар таърихномаҳо нақл шудааст, номаест аз Тоҳир ибни Хусайн ба халифа Маъмун пас аз фатҳи Бағдод ва халғи халифа Амин аст, ки онро соҳиби «ал-Фихрист» бо иборати «номаи машҳур ва бисёр нақӯ» васф кардааст<sup>4</sup>.

Машхуртарин номаи Тоҳир ибни Хусайн номаест, ки онро перомуни одобу қавонини кишвардорӣ барои писараш–Абдуллоҳ ибни Тоҳир ба муносибати волии Диёри Рабаи таъйин шудани ӯ дар соли 206/821 навиштааст. Ин нома моҳиятан аҳдномаи сиёсиву ахлоқист, ки дар пайравӣ аз пандномаҳои сосонӣ ва номаи Абдулҳамиди Котиб аз ҷониби Марвон ба валиаҳдаш навишта шудааст. Ин нома намое аз табаҳхури Тоҳир ибни Хусайн дар суннатҳои андарзнигории сосонӣ ва мазҳаре аз мазоҳири андешаи сиёсиву ахлоқии тоисломии Эронзамин дар муҳити исломист.

Яке аз номвартарин амирони хонадони Тоҳириён – **Абулаббос Абдуллоҳ ибни Тоҳир** дар айни замон дар паҳнаи назму насри арабизабон низ шуҳрат дошт. Ибни Надим ӯро «аз шуаро ва мутарассилони балеғ» муаррифӣ карда, аз вучуди девони расоили ӯ хабар додааст. Соҳиби «Китоб-ул-ағонӣ» намунаҳои ашъори ӯ ва баъзе лаҳзаҳои рӯзгорашро нақл кардааст<sup>5</sup>. Шарҳи нисбатан муфассали рӯзгори Абдуллоҳ ибни Тоҳир, пораҳои ашъори ӯ ва мадоеҳи шоирони дигар дар ҳаққи вай дар «Вафаёт-ул-аъён» ба назар мерасад<sup>6</sup>. Абдуллоҳ ибни Тоҳир дар соли 230/844 дар Нишопур аз олам гузаштааст.

<sup>1</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ۲. - ص. ۵۲۱.

<sup>2</sup> Гафуров Б. Тоҷикон. Ҷ. I. – Душанбе: «Ирфон». - С. 144-147; История таджикского народа. Том II. Эпоха формирования таджикского народа / Под редакцией Н.Н. Негматова. - Душанбе, 1999. - С. 321; Бартольд В.В. Персидская шуубийя и современная наука. Соч. т. VIII Москва: «Наука», 1971. – С. 506-507.

<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۰.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۰.

<sup>5</sup> الاصفهاني، ابوالفرج. كتاب الآغانى. ج. ۱۲. - ص. ۱۰۶-۱۰۱.

<sup>6</sup> ابن خلكان. وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان. ج. ۳. - ص. ۸۳-۸۹.

**Убайдуллоҳ ибни Абдуллоҳ ибни Тоҳир** мисли падараш – Абдуллоҳ ибни Тоҳир ҳам ба ҳайси яке аз давлатмардон ва ҳам чун шоири тавоно ва адиби суҳанвар шуҳрат дошт. Ибни Надим дар бораи ӯ чунин нигоштааст: «Убайдуллоҳ аз шоирон ва мутарассилони умаро буда, раёсати шуртаи Бағдодро дошт. Ӯ сарвари хонадон ва охири нафар аз Тоҳириён аст, ки бо доштани раёсати шурта аз дунё рафт»<sup>1</sup>. Дар сарчашмаҳо таваллуди ӯро дар соли 223/837 ва вафоташро дар соли 300/912 таъйин кардаанд.

Ба қалами Убайдуллоҳ чанд китоб мансуб аст, ки, ғолибан, ба масъалаҳои шеърӣ, фасоҳат ва бароат ва ғайра тааллуқ доранд. Дар миёни онҳо «Рисола фй-с-сиёсат-ал-мулукийя» (Рисола дар сиёсати шоҳӣ) ба назар мерасад, ки дар иртибот бо ин навъ китобу рисолаҳои аҳди сосонӣ таълиф шуданиаш аз эҳтимол дур нест.

Убайдуллоҳ ҳамчун хунёгар ва мусиқишинос низ маъруф буд ва ба қаламаш рисолае дар илми мусиқӣ бо унвони «Китоб-ул-адаб-ар-рафия» тааллуқ дошт. Намунаҳои ашъори Убайдуллоҳ дар «Китоб ул-ағонӣ», «Вафаёт-ул-аъён» ва соири манобеи адабиву таърихӣ дарҷ шудааст.

Аз намояндагони дигари хонадони Тоҳириён **Мансур ибни Талҳа ибни Тоҳир** аст, ки ӯро «ҳакими Тоҳириён» меномиданд<sup>2</sup>. Мансур ҳокими Марв, Омӯл, Зам ва Хоразм буд ва дар баробари ин ба таълифу тасниф дар фалсафа мепардохт. Аз ҷумлаи китобҳои ӯ яке дар илми мусиқӣ бо номи «Китоб-ул-мӯнис» буд, ки файласуфи маъруф ал-Киндӣ пас аз хондани он гуфтааст: «Ҳамон тавре ки муаллифаш онро номида, дар ҳақиқат мӯниси хонанда аст». Бо зикри ин матлаб Ибни Надим унвони китобҳои дигари Мансурро низ овардааст. Бино ба ишораи Ҳоҷӣ Халифа, Мансур ибни Талҳа дар худуди соли 250/864 аз дунё рафтааст<sup>3</sup>.

Намояндагони дудмони Тоҳириён бо ширкати фаёли хеш дар эҷоди насри арабизабон тавачҷуҳи худро ба тамаддуну забони арабӣ пинҳон намедошанд. Дар баробари ин, онҳо дар сиёсати фарҳангии худ эҳёи анъанаву суннатҳои эрониро дастгирӣ мекарданд. Натиҷаи чунин сиёсат буд, ки дар аҳди Тоҳириён аввалин бор дар таърихи адабиёти халқҳои эронӣ ҳамзистиву муносибати ҳамрӯии назму насри арабизабон ва форсизабон зери пуштибонии расмии дарбор оғоз ёфт.

**Иброҳим ибни Мамшодӣ Мутаваккилии Исфаҳонӣ** - нависанда ва шоири маъруфи арабизабон бо иртиботи худ ба дарбори Саффорӣён шуҳрат ёфтааст.

Муаллифи «Муъҷам-ул-удабо» бо истинод ба муаррих ва адиби маъруфи арабизабон Ҳамзаи Исфаҳонӣ дар бораи Иброҳим ибни Мамшод чунин иттилоъ додааст: «Ӯ аз балеғони Исфаҳон маҳсуб

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۹۳.

<sup>2</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۳۰.

<sup>3</sup>حاجی خلیفه. کشف الظنون عن اسامی الکتب و الفنون. ج. ۶. - ص. ۳۶۶.

мешавад ва аз рустои Чайи ин шаҳр бархостааст»<sup>1</sup>. Иброҳим пас аз касби камол ба Бағдод рафта, ба дабирӣ иштиғол варзидааст. Дар аҳди Мутаваккил (847-861) Иброҳим ибни Мамшод ба дараҷаи сардабир ва надими халифаи мазкур мерасад ва ба нисбаи «Мутаваккилӣ» иштиҳор пайдо мекунад.

Ёқут ишора бар он дорад, ки дар замони Иброҳим ибни Мамшод дар Ироқ балеғтар аз ӯ нависандае набуд ва иддае аз номаҳои ӯ, хосатан рисолаҳои тӯлониаш дар ситоиши корномаҳои халифа Мутаваккил ва яке аз сипаҳсолорони ӯ – Фатҳ ибни Хоқон дар миёни дабирон чун сармашқи эҷод то ҳол (яъне, то замони Ёқут) мутадовил аст<sup>2</sup>. Пас аз кушта шудани Мутаваккил нависанда бо дарбори Аббосиён қатъи алоқа карда, ба Яъқуб ибни Лайси Саффор (867-879) пайваستاаст.

Дар «Муъҷам-ул-удабо» ҳикоете аз рӯзгори Иброҳим ибни Мамшод ва пораҳое аз ашъори ӯ нақл шудааст<sup>3</sup>.

Зоҳиран, Иброҳим ибни Мамшод дар замони аморати Яъқуби Лайс аз дунё гузаштааст, зеро ахборе, ки ба иртиботи ӯ бо ҷонишини Яъқуб – Амри Лайси Саффорӣ ишора кунад, дар манбаъҳо ба қайд наомадааст.

## 5.2. Навъҳои насри таълифӣ

Нависандагони эронитабор, хосатан онҳое, ки эҷодиёташон аз манбаъҳои тафаккуру андешаи ниёгонашон шодоб гардида буд, дар садаҳои VIII-IX осореро таълиф карданд, ки он маҳсули пайравӣ ва истиқбол аз суннатҳои насри паҳлавӣ ва имтизочи он бо дастовардҳои насри арабӣ буд. Дар натиҷа, дар насри арабизабон оҳангу мазмунҳои нав, навъҳову қолабҳои ҷадиди ифода ва вижагиҳои сабкivu хунари тозае рӯй намуданд, ки ба насри тоисломии араб хос набуда, реша дар осори мансури аҳди сосонӣ доштанд. Ҳамин қисмати насри арабизабони асрҳои VIII-IX-ро, ки моҳиятан зодаи тафаккуру андешаи эронӣ ва самараи ҷамоҳангиву мутобиқати томи он бо аркони ҷаҳоншиносии исломист, метавон ҳамчун насри таълифии эронӣ ба забони арабӣ қаламдод кард. Ин наср дар шароити сиёсиву фарҳангӣ ва муҳити забонии асрҳои VIII-IX мазҳари тафаккур ва қариҳаи бадеии халқҳои эронӣ буд. Дар доираи ин наср метавон ба чилваҳои мухталифи афқору андешаи эронӣ ва идомаи суннатҳои насри паҳлавӣ дар қолаби забони арабӣ ишора кард. Дар маҷмӯъ ин чилваҳо ҳалқаи пайванд миёни насри тоисломии эронӣ ва насри форсии дарӣ будани насри арабизабони садаҳои VIII-IX-ро таъйид мекунад.

<sup>1</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.٢٠. - ص.١٦٠.

<sup>2</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.٢٠. - ص.١٦٠.

<sup>3</sup>ياقوت الحموى.معجم الادباء.ج.٢٠. - ص.١٧٠.

### 5.2.1. Густариши насри ахлоқӣ

Тааммул дар насри арабизабони садаҳои нахусти ислом аз густариши бесобиқаи насри ахлоқӣ дар он гувоҳӣ медиҳад. Ҳамон сон ки дар миёни осори тарҷумашуда аз паҳлавӣ пандномаву андарзномаҳо қисмати аъзамро дар бар гирифта буданд, дар насри таълифии он даврон низ осори ахлоқӣ ё китобҳои «адаб» аз лиҳози теъдод бар соири риштаҳои наср бартарӣ доштанд. Муҳаққиқони араб «далеле барои ин падида намеёбанд, чун фаровон шудани китобҳо ва рисолаҳои форсии тарҷумашуда ба арабӣ дар ин шоха аз адабиёт»<sup>1</sup>. Дар ҳақиқат миёни қасрати китобҳои тарҷумашуда аз паҳлавӣ ва фузунии таълифот дар риштаи ахлоқ таносуб ва иртиботи қавӣ ҷой дошт, ки онро наметавон инкор кард. Тарҷумаи пандномаҳои сосонӣ, баргардони «Калила ва Димна», «Синдбоднома» ва қиссаҳои дигар аз паҳлавӣ ба арабӣ дар ҷомеаи он даврон он қадар истиқболи пуршӯрушаафе пайдо карданд, ки нависандагони арабизабонро ба таълифи осори ҳамгун бо истифодаи фаровон аз матолиби онҳо водошт. Дар натиҷа, дар насри он даврон навъҳои мухталифи осори ахлоқӣ арзи вучуд карданд, ки онҳоро метавон ба тариқи зайл дастабандӣ кард:

Осори маъруф бо номи «Китоб ул-адаб» ё «Китоб-ул-одоб»

Осори маъруф бо номи «Китоб-ул-васоъ»

Осори маъруф бо номи «Китоб-ул-ахлоқ»

Осори маъруф бо номи «Китоб-ул-ихвон»

Лозим ба таъкид аст, ки ин дастабандӣ мавзӯоти қуллии осори ахлоқиро дар бар гирифтааст. Дар баробари ин, баъзе аз мавзӯоти ҷузъии ахлоқӣ низ буданд, ки перомуни онҳо ҳам китобу рисолаҳои ҷудогона таълиф шудаанд ва вусъату пахнои насри ахлоқии садаҳои нахустини исломиро бозтобӣ кардаанд.

**Китобҳои «адаб» ё «одоб».** Дастаи аввалро китобҳои «адаб» ё «одоб» фароҳам овардаанд. Ин навъи китобҳои ахлоқӣ аз лиҳози мавзӯю мухтаво ва тарзи баёни матолиби ахлоқӣ дар пайравӣ аз пандномаву андарзномаҳои паҳлавӣ таълиф шудаанд. Мазияти дигари ин навъ китобҳо ин аст, ки муаллифони онҳо аз истифодаи фаровони матолиби осори ахлоқии паҳлавӣ дурӣ наҷустаанд. Ин амр аҳли таҳқиқро баъзан ба он водоштааст, ки ин китобҳоро на таълифи мустақил, балки тарҷумаи мустақим аз паҳлавӣ ба шумор оваранд.

Намунаи барҷастаи ин навъ осор ду китоби Ибни Муқаффаъ бо номҳои «ал-Адаб-ас-сағир» ва «ал-Адаб-ал-кабир» аст. Лозим ба ёдоварист, ки дар масъалаи тарҷума аз паҳлавӣ ё таълифи мустақил будани ин ду асар ва интисоби «ал-Адаб-ас-сағир» ба қалами Ибни Муқаффаъ дар миёни донишмандони Шарқу Фарб, аз қабили О.Решер, Г.Рихтер, Ф.Габриэли, М.К.Алӣ, Эҳсон Аббос ва дигарон ихтилофи назар вучуд дорад. Ба ҳар оӣин, алҳол ақидаи ғолиб дар ин

<sup>1</sup> العاكوب، عيسى. تأثير پند بارسى بر ادب عرب. - ص. ۱۸۲.

боб ин аст, ки ҳар ду асари Ибни Муқаффаъ аз таълифоти ӯянд ва далели қотее дар даст нест, ки интисоби «ал-Адаб-ас-сағир»-ро ба ин нависанда рад кунад.

«ал-Адаб-ас-сағир» мутобик ба номаш рисолае кӯтоҳ аст, ки панду андарзҳои он ба оммаи васеи хонандагон ё, ба қавли Ибни Муқаффаъ, ба ҳар «офарида»-е нигаронида шудааст. Ҳадафи муаллиф аз тарғибу талқини панду андарзҳо низ таҳзиби ахлоқи чома мебошад. Аз ин рӯ, дар рисола таълимот ва дастурҳои ахлоқие дарҷ гардидаанд, ки ба масъалаҳои зиндагии фардӣ ва иҷтимоӣ оиданд. Ҳадафи таълифи рисоларо муаллиф чунин шарҳ додааст: «Ман дар ин китоб суханонеро аз мардум ҳарф ба ҳарф нигоштаам, ки онҳо ба ободониву сайқали дилҳо, равшании дидаҳо, ривочи андешаҳо ва ҷустани тадбирҳо мусоидат мекунанд, ба умури писандида ва ахлоқи ситуда роҳнамоӣ мекунанд»<sup>1</sup>.

Бино ба ақидаи муаллиф, мақсуди мардум ва ниёзҳои эшон салоҳи зиндагӣ ва охираташон аст ва роҳ ба сӯи даст ёфтан ба ин мақсуд доштани ақлу хиради дуруст аст. Ақлу хирад меъёри асосии рафтору кирдор ва василаи ноил шудан ба саломати тан ва саодати рӯҳ аст. Бесабаб нест, ки ағлаби бандҳои ин рисола бо иборати «Ала-л-оқили ан...» (яъне оқилро мебояд, ки...) оғоз мешавад. «Ақлҳо, - навиштааст Ибни Муқаффаъ, - ба воситаи адаб нашъунамо меёбанд ва поку покиза мешаванд»<sup>2</sup>. Бад-ин маънӣ адобу ахлоқи ҳамида инсонро метавонад хушбахт гардонад ва шахсияти ӯро такомил бахшад. Барои ин шарт аст, ки ақлу хиради инсон ҳокими нафсу тани ӯ бошад. Сипас Ибни Муқаффаъ хислату хӯй ва равишу манишҳоеро, ки барои марди оқилу хирадманд заруранд, дар қолаби панду андарз ва суханони ҳақимона баён мекунад.

ӯ ба хирадманд зарурати ҳамнишинӣ бо соҳибони ақлу тамизро талқин мекунад. Барои он ки нафс бар ақл пирӯз нагардад, хирадманд бояд чаҳор соатро барои чаҳор чиз ҷудо намояд ва ҳеҷ кори дигар ин чаҳор соатро ишғол накунад: соате барои хилват бо Худои хеш, соате барои баррасии нафси худ ва шикастани он, соате барои дидор бо дӯстони мавриди итминони худ, ки айбхояшро аз сари сидку дурустӣ ба ӯ мегӯянд ва ба насихату роҳнамоии вай мепардозанд, соате барои лаззатҳо ва сархушиҳои поку писандида.

Шаҳси хирадманд набояд хатое дар раъй, лағзише дар илм ва ғафлате дар корхояшро кӯчак шуморад, зеро хатоҳои бузургу фоҳиш аз ҳамин чизҳои кӯчак сар мешавад.

Ба дастури Ибни Муқаффаъ, хирадманд бояд ду ойина дар даст дошта бошад: бо яке аз онҳо бадихои худро бингарад ва то

---

<sup>1</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. بيروت، مكتبة دار البيان، مؤسسه الزين (د.ت) - ص. ۳۱.

<sup>2</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. - ص. ۳۱.

метавонад, ба ислоҳи хеш бипардозад; бо ойинаи дигар хубихои мардумро бибинад ва то метавонад, аз он хубихо баҳравар гардад.

Дар миёни фазилатҳои ахлоқие, ки Ибни Муқаффаъ аз онҳо ёд мекунад, ҷавонмарди мавқеи хос дорад: «Шаҳси ҷавонмард, вале нодор муҳтарам аст, мисли шери захмин, ки аз он метарсанд, ҳарчанд ки он аз ҷояш намехезад. Вале шахсе, ки ноҷавонмард аст, молу сарвати зиёд дошта бошад ҳам, мавриди ихонат қарор мегирад, монанди саге, ки назди мардум беқадр аст, гарчи гардану пойҳояш бо тавқу занҷири заррин ораста бошанд»<sup>1</sup>.

Мавзӯоти панду андарзҳои Ибни Муқаффаъ дар ин рисола хеле васеъ буда, ағлаби масоили ахлоқии марбут ба рафтору кирдор ва муомилаву муносибати инсонро дар зиндагии фарди ва иҷтимоии ӯ дар бар мегирад.

«ал-Адаб ал-кабир» аз рисолаи аввал ҳаҷман калон буда, ба ду бахш тақсим мешавад. Дар оғози китоб Ибни Муқаффаъ истиноди худро ба донишу таҷрибаи пешиниён ва мақоми эшонро дар андӯхтан ва ба наслҳои баъди интиқол додани он донишҳо дар ибороти зер таъкид кардааст: «Таваҷҷуҳи пешиниёни мо дар бораи донишандӯзи ба ҷое расида буд, ки ҳар гоҳ даре аз илме барои эшон кушода мешуд ё сухани дурусти ҳақимонае мешуниданд, онро бар саҳраҳо ва сангҳо менигошанд, то аз миён наравад ва ба ояндагон ба ёдгор бимонад»<sup>2</sup>.

Ибни Муқаффаъ тасреҳ кардааст, ки дар миёни донишҳои пешиниён ҳикмату андарзҳои латиф низ ба мо арзонӣ шудааст ва бархе аз абвоби онро дар ин китоби худ баён намудааст, то мавриди ниёзи мардум қарор гирад<sup>3</sup>.

Панду андарзҳои бахши аввали «ал-Адаб-ал-кабир» ба масъалаҳои марбут ба ҳокимият, шахси ҳоким ва ҳамнишини ӯ ихтисос ёфтааст. Дар ин бахш муаллиф нахуст доир ба ахлоку одоби ҳоким ва ончи барозандаи ӯст, баҳс мекунад. Андешаҳои ӯро дар ин хусус метавон ба таври иҷмолӣ чунин дастабандӣ кард:

Тақя ба донишмандон дар амри ҳукумат. Ҳоким бояд дар амри ҳукумат ба донишмандон рӯй оварад. Донишмандон ва мардони солеҳу нақӯкор дар миёни ҳар қавму қабила ва дар ҳар шаҳру русто ҳастанд ва онҳо бояд ёвар ва дӯсти ҳоким қарор гиранд, то бо машварат ва суханони ҳикматомези худ ҳокимро ба хайру салоҳи умур далолат кунанд ва аз иқдоми нодуруст барҳазар доранд. Ҳоким бояд дар баробари шунидани насиҳату андарзҳои онон таҳаммул ва шикебой зоҳир кунад ва ба чашидани талҳии гуфтори онон одат кунад. Дар айни замон ӯ роҳи андарзгӯӣ ва сарзаниши

<sup>1</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. ص. ۹۰.

<sup>2</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. ص. ۹۸.

<sup>3</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. ص. ۱۰۰.



худро ба ғайр аз пирони хирад ва соҳибназарони чавонмард ба дигарон боз нагузорад.

Парҳез аз мадху ситоиш. Ибни Муқаффаъ ба ҳокими давр дастур медиҳад, ки аз майл ба мадху ситоиш бипарҳезад. Ба ақидаи муаллифи носеҳ, «шахсе, ки мадху ситоишро қабул мекунад, монанди касест, ки худро мадх мекунад. Агар шахс хоҳад, ки ўро мадх кунанд, бояд мадху ситоишро қабул накунад, зеро радкунандаи мадх худ мавриди ситоиш аст ва қабулкунандаи он мавриди сарзаниш қарор мегирад»<sup>1</sup>.

Дастёбӣ ба хушнудиву ризои мардум. Ҳоким набояд аз паи ризову хушнудии ҳамаи мардум бошад, зеро ин чизест, ки бад-он харгиз даст нахоҳад ёфт. Аз ин рӯ, ў бояд ризои мардуми накўору соҳибхирадро ба даст оварад ва ба ризои мардуми чафокор, гумроҳ ва нодон ниёз надошта бошад.

Равиш ва манишҳои шоистаи ҳоким. Ҳокимро шоиста аст, ки аз корҳои бузурги хеш даст накашад, ки шаънаш паст хоҳад шуд ва ба корҳои хурд саргарм нашавад, ки корҳои бузург нобасомон хоҳад монд. Ҳоким бояд дар подоши некӣ ва сазои бадӣ ҳеч гоҳ шитоб накунад, зеро чунин равиш дар давоми тарси гунаҳкор ва умедвории накўкор бисёр муассир аст.

Парҳез аз ахлоқи ношоиста. Ибни Муқаффаъ барои ҳоким чунин шартҳоро пеш мегузорад: ў набояд зуд ба хашм ояд, зеро бе ин ҳам тавонотар аз ў касе нест; набояд дурӯғ гӯяд, зеро касе ба ў эрод нахоҳад гирифт; набояд хасисӣ кунад, зеро нодорӣ ба ў таҳдид нахоҳад кард; набояд кина варзад, зеро чоҳу манзилаташ бештар ва болотар аз дигарон аст; набояд пайваста қасам хӯрад, зеро гуфтораш бе ин ҳам мавриди қабул хоҳад буд.

Ибни Муқаффаъ дар қисмати дувуми баҳши аввал як силсила масъалаҳоеро, ки ба одоби муошират ва мусоҳибат бо ҳокимон ва ойини дарбори онон алоқа дорад, баррасӣ кардааст. Аз ҷумла, ў таъкид кардааст, ки зердастон ва раоё ба ҳоким бояд итоат намоянд, вале дар баробари ин аз тамаллуқ ва чоплусӣ назди ў барҳазар бошанд. Ибни Муқаффаъ зиён ва хатарҳои ҳамнишиниро бо ҳокимону шохон баршумурда, ба вазир ва шахсони муқарраби дарбор як идда тавсияву дастурҳои ахлоқӣ пешниҳод кардааст, ки онҳо аз ин қабиланд: дур шудан аз ҳокиме, ки хайру салоҳи раияти худро намехоҳад; зуд-зуд дасти ниёз дароз накардан ба ҳоким; назди ҳоким аз густоҳиҳо ва баёни котиҳои ў парҳез кардан; дур будан аз шахсе, ки ҳоким ўро аз худ дур кардааст; парҳез аз дурӯғгӯӣ; ҷавоб надодан ба суоле, ки аз каси дигар пурсида шудааст; кӯшиш накардан бар он, ки ҳамнишинони дигарро бо роҳи бадгӯӣ аз ҳоким дур намоӣ;

---

<sup>1</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. - ص. ۱۰۵.

зарурати пӯшида доштани раъйу рози ҳоким; зарурати ғарра нашудан ба қудрат, мол, мақому ҷавонӣ ва ғайра.

Дар «ал-Адаб-ал-кабир» муаллиф ба масъалаи вазир ва маслиҳатгари донои ҳокимону подшоҳон таваҷҷуҳи махсус зоҳир кардааст. Ба ақидаи ӯ, ҳоким ба вазирони донову ҳакимони маслиҳатгар ниёз дорад. Рисолати вазир далолати ислоҳу салоҳи умури кишвар аст. Бино бар ин, ӯро мебояд, ки дар рафтору гуфтор ва кирдори худ камоли диққат ва инояти комилро риоят намояд, то аз уҳдаи боздоштани ҳоким аз зулму беадолатӣ ва аъмоли носавоб баромада тавонад.

Бахши дувуми «ал-Адаб-ал-кабир» матолиби ахлокиеро шомил аст, ки перомуни дӯстӣ, ахлоқи дӯстон ва одоби муоширату муомилати онон баҳс мекунад. Ибни Муқаффаъ дастур медиҳад, ки дӯст барои дӯст бояд ҷону молашро фидо кунад ва дар муносибат бо ӯ ҷавонмардиро меъёри асосӣ қарор диҳад. Ҳар вақт, ки пешомаде ногувор ба сари дӯст ояд, ӯро бо ҳамдардӣ ва сарфи мол бояд ёрӣ дод ва инро миннат накард. Мартабаи дӯстро Ибни Муқаффаъ чунин арзёбӣ кардааст: «Дӯсту рафиқ ғуломи ту нест, ки ҳар вақт хостӣ, ӯро озод кунӣ ё ҳамсарат нест, ки ҳар гоҳ ирода кардӣ, ӯро талоқ диҳӣ, балки дӯст ба манзилаи обрӯ ва ҷавонмардии туст ва ҷавонмардӣ ва обрӯи шахс ҳамоно дӯстон ва рафиқони ӯянд»<sup>1</sup>. Аз ин ҷост, ки Ибни Муқаффаъ дар гузиниши дӯст шартҳоеро пеш гузошта ва таъкид кардааст, ки «агар дӯстат аз зумраи мардони дин бошад, бояд фақеҳе бошад дур аз риёву озмандӣ ва агар аз ҷумлаи мардони дунё бошад, бояд марди озодае ҳолӣ аз нодонӣ, дурӯғ, шарорат ва зишткорӣ бошад»<sup>2</sup>.

Ибни Муқаффаъ дар баробари зикри сифатҳои ҳамида ва хислату хӯйҳои писандидаи дӯст аз рафтору кирдор ва ахлоқи нақӯҳидаи душман суҳан ба миён оварда ва василаҳои эмин будан аз шарри ӯро баён кардааст. Дар фарҷоми рисола муаллиф симои ахлоқиву маънавии дӯстеро аз дӯстони худ тарсим намудааст, ки он моҳиятан масали аълои дӯст аз назари Ибни Муқаффаъ ва як навъ ҷамъбасти ақидаҳои ахлоқии ӯ дар боби дӯстӣ ба шумор меояд<sup>3</sup>.

Чунон ки аён аст, ин ду рисолаи мазкури Ибни Муқаффаъ дар пайравӣ аз пандномаҳои сосонӣ навишта шудаанд. Ба ишораи ҳуди муаллиф, ӯ дар баёни матлаб ва мазмунҳои ахлоқӣ аз «дониши пешиниён», яъне маъхазҳои паҳлавӣ истифода бурдааст, вале онро ба завқу салиқаи хонандагон ва талаботи ғоявии муҳити нави исломӣ мутаносиб гардондааст. Аз шарҳи муҳтавои рисолаҳо низ пайдост, ки дар он дастурҳои ахлоқии мазҳабӣ ба назар намерасад ва

<sup>1</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. ص. ۱۵۰.

<sup>2</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. ص. ۱۵۱.

<sup>3</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. ص. ۱۸۶-۱۸۷.

матилибе, ки баён шудааст, ҳамагӣ дар доираи ҳикмати амалӣ чарх мезанад. Ҳам дар «ал-Адаб-ас-сағир» ва ҳам дар «ал-Адаб-ал-кабир» масъалаҳои гуногуни ахлоқӣ ба таври муҳокимарониҳои муҷарради ҳақимона баён шудаанд. Агар ба таври дигар гӯем, муаллиф зимни талқини сифатҳои ҳамидаи ахлоқӣ аз овардани қиссаву масалҳо, ки хоси шеваи баёни китобҳои ахлоқии Ҳиндиасл, аз ҷумла «Калила ва Димна» аст, худдорӣ карда, аз ҷиҳати услуби ниғориш низ ба пандномаҳои паҳлавӣ пайравӣ кардааст.

«ал-Адаб-ал-ваҷиз ли-л-валад ас-сағир» китоби дигарест, ки ба Ибни Муқоффаъ мансуб аст. Он дар миёни осори ин нависанда, ки дар «ал-Фихрист» зикр шудаанд, наёмада ва асли арабиаш низ дар даст нест, вале тарҷумаи форсии он боқӣ мондааст. Дар тарҷума асли китоб аз Ибни Муқоффаъ ва тарҷумаи форсияш маҳсули қалами Ҳоча Насируддини Тӯсӣ дониста шудааст<sup>1</sup>. Масъалаи интисоби асли китоб ва тарҷумаи он ба адибони мазкур мавриди тардиди бархе аз муҳаққиқон қарор гирифтааст, вале далели қотее, ки акси онро таъйид кунад, пешниҳод нашудааст.

«ал-Адаб-ал-ваҷиз» шомили панду андарзҳои аз боби ҳикмати амалист, ки аз ҷониби падар ба фарзандаш ҷиҳати раҳнамоии ӯ дар зиндагӣ арза мегардад. Ҳар банди рисола бо хитобаи «Эй писар» оғоз мешавад ва дар он мавзӯе аз мавзӯоти маъмули ахлоқӣ матраҳ мегардад. Ҳадафи таълифи рисоларо муаллиф дар оғози он чунин шарҳ додааст: «Эй писар, чун Худои таоло маро ба вучуди ту мустабшир гардонид ва ба атои ту бар ман миннат ниҳод, ба ин синну дараҷа ва ҳадду мартаба расонид, ки мустаидди қабули адаб ва қобили иддати хунар гаштӣ, бар ман вочиб аст, ки шукри Офаридгори азза ва ало бар ин мавҳибати ханӣ ва атийтии санӣ бигузoram ва бар қазияи каломи раббонӣ, ки «лаин шакартум, мазиданнакум» ба адои шукри мазид истимтоъ ва интифоъ ба бақои ту талаб кунам ва назаре шофиъ ва фикре кофӣ намоям дар иҷтиҳод бо нафси хеш ва базли маҷҳуд ҷиҳати ту, ки ба анвори одоби ман ваъзе ёбӣ ва ҳаззе касб кунӣ, ки бо он мунтафеъ ва мутамааттеъ тавонӣ буд»<sup>2</sup>.

Рисола дар пайравӣ аз пандномаҳои маъмул дар насри паҳлавӣ, ки аз номи падар ба фарзанд навишта мешуданд ва дар адабиёти баъдии исломӣ низ ривож доштанд, таълиф шудааст. Тарҷумаи форсии он ба сабки маснӯи замони Ҳоча Насируддини Тӯсӣ ниғориш ёфта ва бо оёту аҳодис ва ашъору амсоли арабиву форсӣ пероста гардидааст. Гузашта аз ашъори форсӣ, ашъори арабӣ низ ғолибан аз шоиронест, ки баъди замони Ибни Муқоффаъ зистаанд. Ҳамчунон ки аз китобҳои фавқуззикри Ибни Муқоффаъ истинбот мешавад, ин нависанда ба оёту аҳодис ва ашъор истинод намекард ва суннату ойини ниғориши паҳлавиро дар шакле, ки ханӯз бо унсурҳои

<sup>1</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الوجيز للولد الصغير. - ص. ۳.

<sup>2</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الوجيز للولد الصغير. - ص. ۴.

фарҳанги исломӣ имтизочи тамои пайдо накардааст, маҳфуз медашт. Бино бар ин амр ва дар қиёс бо тарҷумаҳои форсии «Калила ва Димна», ки бо оёту аҳодис ва ашъор зинат ёфтааст, метавон ҳадс зад, ки мутарҷими форсии «ал-Адаб ал-ваҷиз» матолиберо ба асли арабии он афзудааст.

Лозим ба таъкид аст, ки дар муҳтавои «ал-Адаб-ал-ваҷиз» ва соири осори ахлоқии Ибни Муқаффаъ умумиятҳое ба назар мерасанд ва маҳсули қалами ҳамин нависанда будани асли ин рисолаҳо таъйид мекунад. Чунончи, дар «ал-Адаб-ас-сағир» омадааст: «Агар марди фақир далеру шуҷоъ бошад, ўро сабулмағз мехонанд; агар бахшанда бошад, ўро исрофкор меноманд; агар ҳалиму бурдбор бошад, ўро заифу нотавон медонанд; агар бовикору тамкин бошад, ўро кундзехн меноманд; агар гўёву забонвар бошад, ўро ҳазёнгу мехонанд; агар сокиту хомӯш бошад, ўро гунгу забонгир меноманд»<sup>1</sup>. Муқоиса шавад бо ин пора аз «ал-Адаб-ал-ваҷиз»: «Дарвеш маҳалли тухмат ва суъи занн бошад. Мардумон шуҷоати дарवेशро ба ҳамоқат ном баранд, саховати ўро бар исрофи вай ҳамл кунанд, ҳилми ўро заъф пиндоранд, виқору суботи ўро балодат шуморанд, фасоҳат ва залоқати ўро ҳазар ва ҳазён хонанд ва камсуханиву хомӯширо гунгиву бастазабонӣ донанд»<sup>2</sup>.

**Китобҳои дигари навъи мазкур.** Дар истиқбол аз суннатҳои пандноманависии насри паҳлавӣ ва дар пайравӣ аз китобҳои адаби Ибни Муқаффаъ дар насри арабизабони асрҳои VIII-IX таълифи китобҳои «адаб» ё «одоб» ба ҳукми анъана даромад. Табиист, ки ин анъана бештар миёни нависандагони эронитабор роиҷ буд. Дар таъйиди ин нукта метавон ёдовар шуд, ки Чаъфар ибни Аҳмади Марвазӣ ду китоби «ал-Одоб-ас-сағир» ва «ал-Одоб-ал-кабир» иншо кард, ки мусалламан ҳам дар ном ва ҳам дар муҳтаво ба Ибни Муқаффаъ пайравӣ кардааст<sup>3</sup>. Муҳаммад ибни Лайси Хатиб рисолае бо номи «Китоб Яҳё ибн Холид фй-л-одоб» навишт ва дар он ба тақлид аз пандномаҳои паҳлавӣ, ки, ғолибан, ба шоҳону вазирон ва ашхоси фарзонаи динӣ нисбат дода мешуданд, матолиби ахлоқиро ба Яҳёи Бармакӣ ихтисос додааст. Муҳаммад ибни Лайс рисолаи дигаре бо номи «Китоб изат Ҳорун-ар-рашид» (Китоби мавъизаҳои Ҳорунааррашид) дорад ва аз унвонаш пайдост, ки он шомили суханони ҳикматомези халифаи маъруфи аббосӣ будааст<sup>4</sup>. Ибни Надим аз китобҳои зиёди адаб, ки дар садаҳои VIII-IX ба риштаи таҳрир кашида шудаанд, иттилоъ медиҳад. Қиҳати огоҳӣ аз касрати ин навъ китобҳо дар он даврон бархе аз онҳоро зикр кардан ба нафъи

---

<sup>1</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الصغير، الادب الكبير، رسالة الصحابه. ص. ۸۸.

<sup>2</sup> ابن المقفع، عبدالله. الادب الوجيز للولد الصغير. ص. ۱۰۰.

<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. ص. ۱۶۷.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. ص. ۱۳۴.

кор хоҳад буд: Масъада. Китоб-ул-адаб; Алӣ ибни Зайд-ан-Насронӣ. Китоб фй-л-одоб ва-л-амсол ало мазоҳиб-ил-фурс ва-р-рум ва-л-араб; Офия ибни Язид ал-Қозӣ. Китоб-ул-одоб; Сафвон ибни Яхё. Китоб ул-одоб; Иброҳим ибни Маҳдӣ. Китоб-ул-одоб; Муҳаммад ибни Исмоили Бухорӣ. Китоб-ул-адаб; Абӯзиё ан-Насибӣ. Китоб-ул-одоб; Ибн-ал-Ҳорун. Китоб-ул-одоб; Воқидӣ. Китоб-ул-одоб; Ибн-ал-Муътазз. Китоб-ул-одоб ва ғайра.

Ағлаби ин китобу рисолаҳо аз байн рафтаанд, вале дар қиёс бо китобҳои адаби Ибни Муқаффаъ метавон истинбот кард, ки онҳо чанбаҳои мухталифи адабу ахлокро фаро гирифта буданд. Аз ин лиҳоз ин китобҳоро метавон «китобҳои адаби омм» номид. Дар баробари ин навъ китобҳо асарҳои зиёде дар он даврон таълиф шуданд, ки ба ахлоку одоби табақаи муайяни иҷтимоӣ ва ё аҳли касбу кор ва ҳирфаи алоҳида ихтисос доштанд. Ин навъ китобҳоро метавон ба «китобҳои адаби хос ё адаби ҳирфай» номзад кард. Дар раъси ин навъи китобҳои адаб осоре қарор доштанд, ки бо унвонҳои «Адаб-ул-мулк» ё «Адаб-ус-султон» маъруфанд. Ҷои тардид нест, ки мухтавои ин китобҳо бо матолиби бахши аввали «ал-Адаб-ал-кабир»-и Ибни Муқаффаъ ҳамоҳангии комил дошта, перомуни ҳислату ҳуӣ ва одобу ахлоқи шоҳону фармонравоеён баҳс мекардаанд. Дар насри давраи мавриди назар ба вучуди теъдоде аз ин навъ китобҳо, аз ҷумла ба «Китоб адаб-ал-мулк»-и Аҳмад ибни Таййиби Сарахсӣ<sup>1</sup>, «Китоб одоб-ус-султон»-и Мадоинӣ<sup>2</sup> метавон ишора кард.

Як даста аз китобҳои адаби хос дар мавзӯи одоби дабирон таълиф ёфтанд, ки «Китоб адаб-ал-котиб»-и Абҳарии Исфаҳонӣ, «Китоб адаб ал-котиб»-и Ибни Қутайбаи Динаварӣ, «Китоб адаб ал-куттоб»-и Абӯмуҳаммад Қосими Анборӣ, «Китоб адаб ал-куттоб»-и Ибни Дурайд ва ғайра аз зумраи онҳоянд. Дар доираи китобҳои адаби хос ҳамчунин китобҳои марбут ба одоби надимон («Китоб адаб -ан-надим») одоби қозӣён (силсилаи китобҳо бо номи «Китоб адаб -ал-қозӣ»), одоби сухангӯён («Китоб адаб-ан-нотик»), одоби сари дастурхон («Китоб адаб-ал-мавоид») ва ғайра таълиф ёфтаанд, ки бо номи муаллифонашон дар «ал-Фихрист»-и Ибни Надим ба қайд омадаанд<sup>3</sup>.

Китобҳои адаби хос аз китобҳои адаби омм сарчашма гирифтаанд ва марҳалаи ҷадидеро дар таҳаввули осори ахлоқӣ бозтобӣ мекунанд.

**Китобҳои васоё.** Дастаи дигари осори ахлоқии насри арабизабони садаҳои VIII-IX аз китобҳои фароҳам меоянд, ки бо номи «Китоб-ул-васоё» (Китоби васиятҳо) маъруфанд. Ривочи ин гуна китобҳо дар насри арабизабон маҳз дар даврае, ки як идда васиятномаҳои шоҳони

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۲۱.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۱۵.

<sup>3</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۹۹.

гузаштаи эронӣ ба забони арабӣ тарҷума гардид, худ гувоҳ аст, ки насри арабизабон дар ин замина таҳти нуфузи осори паҳлавӣ қарор доштааст. Дар маъхазҳои кӯҳан як силсила асарҳо бо номи умумии «Китоб-ул-васоё» ба қалами нависандагону адибони асрҳои VIII-IX Сафвон ибни Яҳё, Абӯҳанифаи Динаварӣ, Аёшии Самарқандӣ, Муҳаммад ибн ал-Ҳасан, Абӯалии Луълӯӣ ва дигарон мансуб доништа шудааст<sup>1</sup>. Теъдод аз «Китоб-ул-васоё»-ҳо дар шумули осори фақеҳону риёзидонҳо низ зикр шудааст. Зоҳиран, онҳо дар баробари матолиби ахлоқӣ ҳамчунин дастурҳоеро марбут ба ҳалли масъалаҳои фикҳиву риёзӣ дар бар гирифта буданд.

**Китобҳои ахлоқ.** Дастаи дигари осори ахлоқии насри арабизабонро осоре ташкил медиҳанд, ки бо номи «Китоб-ул-ахлоқ» маъруфанд. Ин китобҳо аз лиҳози муҳтаво бо китобҳои «адаб» иртиботи қавӣ доранд ва ба ду навъ: китобҳои ахлоқи омм ва ахлоқи хос тақсим мешаванд. Аз китобҳои ахлоқи омм метавон ба «Китоб-ул-ахлоқ»-и Абӯабдурраҳмони Утбӣ<sup>2</sup> ва «Китоб маҳосин-ал-ахлоқ»-и Аёшии Самарқандӣ ишора кард. Дар мавзӯоти марбут ба ахлоқи хос «Китоб ахлоқ ал-мулук»-и Ҷоҳиз, «Китоб ахлоқ-ал-мулук»-и Муҳаммад ибн ал-Ҳорис ас-Саълабӣ, «Китоб ахлоқ-ал-Ҳорун»-и Алӣ ибни Убайдаи Райҳонӣ, «Китоб ахлоқ-аш-шуттор» (Китоби ахлоқи зиракон)-и Ҷоҳиз ва ғайра таълиф шуда буданд.

Аз ин навъ китобҳо яке бо номи «ат-Тоҷ фӣ ахлоқ-ил-мулук» маҳфуз монда ва ба зевари таъб ораста гардидааст. Муҳтавои он аз матолиби марбут ба ахлоқу одоби шоҳон ва ойину қавоиди маъмул дар дарбори онон, аз қабилҳои ойини борёбӣ, гизо хӯрдан бо шоҳон, қоидаҳои мунодамаат бо шоҳон, рафтор ва кирдори муқаррабон ва ҳамнишинони шоҳон, одоби сафорат, равиши подшоҳон дар баррасии қори мардум, додани ҷоиза ва атоё, ҳадяҳои Наврӯзу Меҳргон, расму суннатҳои наврӯзӣ, пазироии шоҳон аз мардуми хосу омм, вазоифи подшоҳон дар тадбири умури кишвар ва ҳангоми бурузи хатарҳои гуногун ва ғайра фароҳам омадааст. Дар ҳар масъалае, ки матраҳ мешавад, муаллиф нахуст аз одобу ахлоқ ва равиши шоҳони эронӣ сухан ба миён оварда, сипас расму ойин ва рафтори халифаҳои умавию аббосиро дар ҳамон масъала шарҳ додааст. Матолиби ахлоқӣ дар китоб ба таври муҷаррад баён нашуда, балки бо овардани қиссаву ҳикоят аз рӯзгори шоҳону халифагон шарҳ ёфтаанд. Аз ин лиҳоз, китоби мазкур на танҳо бозтоби андешаи ахлоқии эронист, балки арзиши таърихӣ низ дорад, зеро бархе аз воқеоте, ки дар он зикр шудааст, дар соири китобҳои таърихи мардуми Эронзамин ба қайд наомадаанд ё ишорае кӯтоҳ ба онҳо рафтаасту бас.

Китоби «ат-Тоҷ фӣ ахлоқ ил-мулук» як намунаи боризи вуруди ахлоқу маънавиёти тоисломии эронӣ ба олами ислом ва мисоли

<sup>1</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۲۴۵، ۱۶۰.

<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۲۱۲، ۱۶۵، ۲۱۱، ۱۳۵.

возеҳи ба ҳам омадан ва омезиш ёфтани андешаи ахлоқии эрониву исломист. Аз ин лиҳоз, китоби мазкур таҳаввули суннатҳои осори ахлоқии эрониро дар қуруни нахустини исломӣ намудор месозад.

Таълифи ин китобро ба қалами Ҷоҳиз, ки табаҳхуре дар фарҳангу маънавиёти тоисломии мардуми эронитабор дошт, мансуб донистаанд. Дар интисоби китоб ба адиби мазкур тардидҳое низ ҷой дорад, вале дар асоси маъхазҳои тоисломии эронӣ ва дар замони Ҷоҳиз, яъне дар асри IX ба риштаи таҳрир кашида шудани он амре мусаллам мебошад.

**Осоре, ки ба «Китоб-ул-ихвон» маъруфанд.** Дастае дигар аз осори ахлоқии насри арабизабон китобҳоеро шомил аст, ки дар мавзӯи дӯстиву бародарӣ ва одобу шурути он таълиф шудаанд. Ин мавзӯ аз мавзӯоти асосии пандномаву андарзномаҳо ва соири осори ахлоқии паҳлавӣ ба шумор меомад. Табиист, ки нависандагони арабизабон низ дар пайравӣ аз осори мазкур ва тарҷумаҳои арабии он дар таълифоти ахлоқии худ ба баррасии ин мавзӯ пардохтанд ва ё дар ин замина осори мустақиле иншо намуданд. Яке аз нахустин рисолаҳо, ки дар мавзӯи дӯстиву бародарӣ ба забони арабӣ таълиф ёфт, ҳамоно «Рисола фӣ васф-ил-ихо» (Рисола дар васфи бародарӣ)-и Абдулҳамиди Котиб аст, ки қаблан дар фасли марбут ба осори ин нависанда ба он ишора рафт. Ибни Муқоффаъ қисмати дувуми «ал-Адаб-ал-кабир»-и худро ба ин мавзӯ тахсис додааст, ки он, бино бар гароиши ошкор ва истиноди сареҳи нависанда ба осори паҳлавӣ, метавонад доир ба муҳтавои ин навъ осори насри тоисломии эронӣ ва таҳаввули суннатҳои он дар таълифоти нависандагони арабизабон тасаввуре кофӣ ба даст диҳад.

Осоре дар ин мавзӯ бо номи «Китоб-ул-ихвон» ба қалами Алӣ ибни Убайдаи Райҳонӣ, Ҷоҳиз ва Ибни Қутайба мутааллиқ аст<sup>1</sup>. Китобе дар мавзӯи интиҳоби дӯст ва шартҳои он дар номгӯи китобҳои Саҳл ибни Ҳорун зикр ёфтааст. Китоби Абулаббоси Саймарӣ таҳти унвони «Китоб-ул-ихвон ва-л-асдиқо» (Китоби бародарон ва дӯстон) низ дар доираи ҳамин мавзӯ қарор дорад<sup>2</sup>.

Вусъати насри ахлоқии садаҳои VIII-IX, ки таҳти нуфузи осори паҳлавӣ ташаккул ёфтааст, бо мавзӯот ва ҷаҳор даста аз китобҳои зикршуда маҳдуд намешавад. Бархе аз муҳаққиқон давоми суннатҳои адабиёти ахлоқии сосониро дар анвои дигари осори насри арабизабон низ ташхис додаанд. Аз ҷумла, К.А. Иностранцев бар он ақида буд, ки «Китоб-ул-маҳосин» (Китоб дар бораи хислатҳо ва равишҳои нақў)-и Умар ибни Фаррухон ва осори ҳамноми соири нависандагони садаҳои нахустини исломӣ бо мавзӯи сифатҳо ва хислатҳои писандидаи ахлоқӣ, ки дар адабиёти тоисломии эронӣ маъмул буд, иртиботи мустақим доранд. Бино бар ин, муҳаққиқи

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۸۵.  
<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۶۹.

мазкур Умар ибни Фаррухонро нахустин нависандае донистааст, ки суннатҳои ин навъ осори паҳлавиро ба насри арабизабон ворид кардааст<sup>1</sup>. Фузун бар ин, К.А.Иностранцев муътақид буд, ки таҳаввули баъдии суннати нигориши китобҳо оид ба ҳислату ҳӯйҳои писандида пайдоиши навъи дигари китобҳоро таҳти унвони «Китоб-ул-маҳосин ва-л-аздод» ва «Китоб-ул-маҳосин ва-л-масовӣ» ба бор овард. Дар ин қабил китобҳо ҳислату ҳӯй ва равишҳои писандида бо зухуроти акси онҳо ба доираи муқобала кашида мешуданд ва аз лиҳози шаклу мавзӯъ бо осори паҳлавие, ки дар қолаби «Шоист - Ношоист» эҷод шудаанд, қаробат доранд<sup>2</sup>. Аз ин навъ китобҳо яке бо номи «ал-Маҳосин ва-л-аздод» ба қалами Ҷоҳиз ва дигаре таҳти унвони «ал-Маҳосин ва-л-масовӣ» ба қалами Иброҳим ибни Муҳаммади Байҳақӣ тааллуқ доранд. Ин ду китоб то замони мо расида, ба зевари табъ ораста гардидаанд. Дар онҳо матолибе, ки маъхазашон осори тоисломии эронист, фаровон ба назар мерасанд ва ҳақиқати назари К.А.Иностранцевро таъйид мекунанд.

Ҳамин тарик, бар мабнои матолиби зикршуда метавон истинбот кард, ки суннатҳои насри ахлоқии аҳди Сосониён дар ташаккули насри ахлоқии арабизабони садаҳои VIII-IX нақши муҳим гузошта, навъҳои мухталифи китобу рисолаҳоро дар мавзӯоте, ки барои насри араб хос набуд, ба бор оварданд.

### ***5.2.2. Рисолаҳо дар ойини кишвардорӣ***

Мардуми Эронзамин аз қадимулайём дар давлатдорӣ ва идораи кишвар таҷрибаву дониши фаровон андӯхта ва онро дар шакли китобу рисолаҳо мудавван карда буданд. Ин китобу рисолаҳо созмони давлати Сосониёро чун намунаи барҷастаи ташкилоти идорӣ намудор мекарданд. Аърб, ки дар давлатдорӣ ва тадбири мулк собиқаи кофӣ надоштанд, пас аз таъсиси Хилофат ба омӯзиш ва пазириши ойину русуми фармонравой ва кишвардории Сосониён рӯй оварданд. Бар асари ҳамин ниёзи сиёсӣ иҷтимоӣ буд, ки ағлаби осори паҳлавии марбут ба масоили тадбири мулк, сиёсати шохӣ ва ойини фармонравой дар садаҳои нахустин ислом ба забони арабӣ баргардон шуданд. Фузун бар ин, нависандагони арабизабон низ ба таълифи осор дар ин заминаҳо пардохтанд ва ҳамон осори тарҷумашударо сармашки кори худ қарор доданд. Дар натиҷа, андешаи сиёсии Эронзамин пас аз суқути давлати Сосониён аз миён нарафт, балки ба василаи ҳамин тарҷумаву таълифот ба муҳити исломӣ интиқол ёфт ва ба пайдоиши шохҳои наво дар насри арабизабони қарнҳои нахустин ислом асос гузошт. Осори ин шохҳо рисолаҳо дар ойини фармонравой ва идораи кишвар дар бар

<sup>1</sup>Иностранцев К.А.Сасанидские этюды.– СПб., 1909. -С.34.

<sup>2</sup>Иностранцев К.А.Сасанидские этюды.– СПб., 1909. -С.35-36.



гирифтаанд. Ин рисолаҳо моҳиятан андарзномаҳои сиёсӣ буданд, ки дастур ва тавсияҳо доир ба тарзи ташкили сохтору ниҳодҳои давлативу аскарӣ, одоб ва вазоифи сардори давлат ва намояндагони дастгоҳи идории кишвар, шева ва усулҳои амалӣ кардани сиёсати шохӣ фаро мегирифтанд. Ин навъ осори насри паҳлавӣ, ки намунаи барҷастаи он «Аҳди Ардашер» мебошад, маъмулан дар сиғаи дастуру роҳнамоиҳо аз номи шох ба валиаҳдаш ва ё шохони баъдӣ таълиф мешуданд. Ҳамин қолаби баёни матлаб дар таълифоти нависандагони арабизабон низ ҳифз гардид. Дар таъйиди ин матлаб метавон ба рисолаи маъруфи Абдулҳамиди Котиб аз номи халифаи умавӣ Марвон ба валиаҳдаш ишора кард. Рисолаи мазкур аз нахустин осорест, ки дар заминаи андарзҳои сиёсӣ ва сиёсати шохӣ дар насри арабизабон таълиф шудааст.

**«Рисолат-ус-саҳоба».** Пас аз Абдулҳамиди Котиб ба ин мавзӯ Ибни Муқаффаъ рӯй овард ва яке аз осори маъруфи худ - «Рисолат ус-саҳоба»-ро таълиф кард. Рисола амалан як барномаи ислоҳоти сиёсиву иҷтимоист, ки муаллиф ба халифаи аббосӣ Мансур (754-775) пешниҳод кардааст. Роҳнамоӣ ва андарзҳои Ибни Муқаффаъ дар ин рисола мавзӯоти зерро шомил ҳастанд:

- Вазъи сипоҳи Хуросон ва тарзи муомила бо он;
- Барҳазар доштани сипоҳ аз ҷамъи андозу хироч;
- Муносибати хайрхоҳона бар мардуми Ироқ;
- Зарурати таҷдиди назар дар умури додхоҳӣ ва ислоҳи он;
- Зарурати мудоро ва хайрхоҳӣ нисбат ба мардуми Шом;
- Гузиниши ёрону муқаррабон ва дарбориён;
- Ислоҳ дар низоми андозу молиёт;
- Пешгирии ҷиноёт ва фасодҳои иҷтимоӣ.

Ибни Муқаффаъ ба ҳайси яке аз фарзонагони замонаш ба халифаи давр таълимоти сиёсии худро дар шакли як барномаи ислоҳоти иҷтимоӣ пешниҳод кардааст. Аз муҳтавои пешниҳодоту тавсияҳои нависанда пай бурдан душвор нест, ки ӯ низоми давлатдорӣ Хилофатро аз бисёр ҷиҳатҳо номақбул дониста, зарурати ба сохтори сиёсиву дастгоҳи идории Сосониён пайравӣ карданро ба миён гузоштааст.

Андешаву афкори Ибни Муқаффаъ дар ин рисола метавонист ба иззати нафси халифаи давр расад. Бесабаб нест, ки бархе аз муҳаққиқон сабаби қатли нависандаро на дар муттаҳам будани ӯ ба куфру зиндиқа, балки маҳз дар таълифи ӯ ҳамин рисола дидаанд<sup>1</sup>.

Матолиби «Рисолат-ус-саҳоба» ба масъалаҳои сиёсиву иҷтимоии замони муаллиф дахл дорад, вале дар рӯҳу оҳанги умумӣ ва қолаби адабӣ он давоми суннати нигориши андарзномаҳои сиёсии маъмул дар аҳди Сосониён мебошад.

---

<sup>1</sup>طه، حسين.من تاريخ الادب العربى.ج.۲.دار العلم للملايين، بيروت، ۱۹۸۰ - ص.۴۴۵.

**«Рисолаи Тоҳир ибни Ҳусайн ба писараш Абдуллоҳ».** Аз насри арабизабони садаҳои VIII-IX асаре дигар аз навъи андарзномаҳои сиёсӣ боқӣ мондааст, ки он аз лиҳози куллийёт ва ҷузъиёти муҳтавои худ бо «Рисолат-ус-саҳоба»-и Ибни Муқаффаъ ҳамоҳанг аст. Ин асар рисолаи Тоҳир ибни Ҳусайн – асосгузори давлати Тоҳирӣ ба писараш Абдуллоҳ ибни Тоҳир аст, ки ба муносибати волии Раққа ва Миср таъйин шудани Абдуллоҳ аз ҷониби падараш навишта шудааст. Ин рисола, бино ба шухрате, ки дар паҳнаи насри арабизабон касб карда буд, дар ағлаби таърихномаҳои куҳан, аз қабили «Таърих»-и Табарӣ, «ал-Комил фй-т-таърих»-и Ибни Асир, «Таърихи Бағдод»-и Аҳмад ибни Абӯтоҳири Тайфур, «Муқаддима»-и Ибни Халдун ва ғайра нақл шудааст. Муаллифи китоби ахир – Ибни Халдун рисолаи мазкурро «аз беҳтарин осор ва ҷомеътарини онҳо» дар навъи худ номида, таъкид кардааст, ки дар он Тоҳир ибни Ҳусайн ба фарзандаш «ҳамаи ниёзмандихое, ки дар давлат ва фармонравии хеш дошт, аз қабили одоби диниву ахлоқӣ ва сиёсати шаръиву кишвардорӣ тавсия кард ва вайро бар макорими ахлоқ ва маҳосини рафтор барангехт, ки аз онҳо ҳеч подшоҳ ё омӣ бениёз нест»<sup>1</sup>.

Матолиби рисола ба ду бахш тақсим мешавад. Бахши аввал дастурот ва андарзҳои марбут ба одоби динӣ ва макорими ахлоқиро дар бар гирифтааст, ки онҳоро метавон чунин дастабандӣ кард:

- Раҳнамоӣ ба одоби динӣ;
- Омӯхтани фикр ва баргузидани фақеҳон ва олимони дин;
- Зарурати миёнаравӣ дар ҳамаи корҳои дунявӣ . Муаллифи

рисола панд медиҳад, ки дар ҳамаи корҳо бояд миёнаравиро пеш гирифт, зеро «он одамиро ба роҳи рост меҳонад, роҳи рост ӯро бо комёбӣ раҳбарӣ мекунад ва комёбӣ роҳнамои вай ба сӯи хушбахтӣ аст»<sup>2</sup>;

- Таҳзиби ахлоқ ва ороста будани фармонраво бо хислатҳои нек;
- Дороию сарват ва сарфи он ба нафъи давлат ва раият.

Бахши дувуми рисолаи Тоҳир ибни Ҳусайн дастурот ва андарзҳоро доир ба идораи кишвар ва ойини мамлакатдорӣ шомил аст, ки онҳоро метавон ба мавзӯоти зер тақсим кард:

- Муносибат ба сипоҳиён;
- Таваҷҷуҳ бар умури доварӣ ва додхоҳӣ;
- Масъалаи хироч ва андоз;
- Таъйини волиёни шоиста ба навоҳиву вилоёт;
- Дастгирӣ ва имдод ба нодорон ва муҳтоҷон;
- Зарурати андӯхтани донишу таҷриба барои фармонраво.

Чунон ки аз ишора ба муҳтавои рисолаи мазкур бармеояд, он дар пайравии андарзномаҳои сиёсии аҳди Сосониён, хосатан «Аҳди Ардашер» таълиф шудааст. Ағлаби матолиби рисолаи Тоҳир ибни

<sup>1</sup> ابن خلدون. مقدمة ابن خلدون. - ص. ۲۱۵.

<sup>2</sup> ابن خلدون. مقدمة ابن خلدون. - ص. ۲۱۵.

Хусайн бо дастуроти Ардашер, ки мавзӯоти он қаблан баррасӣ гардид, ҳамоҳанг ва мушобех ҳастанд. Ин амр далел бар идомаи андешаи сиёсиву ахлокии Эронзамини тоисломӣ дар насри садаҳои VIII-IX аст, ки яке аз ҷилваҳои он ҳамин рисолаи мазкур ба шумор меравад. Аз истикболи тамоми ин андеша дар ҷомеаи исломӣ шуҳрати беназир касб кардани рисолаи мазкури Тохир ибни Хусайн гувоҳӣ медиҳад. Бино ба нақли Ибни Халдун, «вақте ин рисола интишор ёфт, он мавриди эҷоби мардум гардид. Хабарӣ он ба Маъмун расид. Вақте рисола ба ӯ хонданд, гуфт: «Абутаййиб, яъне, Тохир ибни Хусайн чизеро аз умури дунёву дин, тадбири раъй, сиёсат ва салоҳи кишвару раият, ҳифзи қудрат, тоати хулафо ва таҳкими Хилофатро фурӯ нагузошта ва ҳамаро баён карда ва доир ба ҳар як аз он андарзи лозим додааст». Пас Маъмун амр кардааст, ки нусхаҳои онро ба ҳамаи сарварони ноҳияҳо бифиристанд, то аз он пайравӣ кунанд ва андарзҳои онро ба кор гиранд»<sup>1</sup>.

Дар давраи мавриди назар рисолаву китобҳои дигар низ дар тадбири мулк ва сиёсати кишвардорӣ аз ҷониби нависандагоне, ки гароишашон ба суннатҳои фарҳанги тоисломӣ ва насри паҳлавӣ амре мусаллам аст, таълиф ёфтанд. Яке аз ин навъ асарҳо бо номи «Китоб тадбир-ал-мулк ва-с-сиёса» ба қалами Саҳл ибни Ҳорун – сарвари «Байт-ул-ҳикма» тааллуқ дорад<sup>2</sup>. Ба намояндаи дигари хонадони Тоҳириён – Убайдуллоҳ ибни Абдуллоҳ ибни Тохир низ китобе аз ин навъ бо номи «Рисола фӣ сиёсат-ил-мулукия» мансуб аст, ки мисоли дигари иродати ин хонадон ба андешаи сиёсии тоисломии эронӣ махсуб мешавад. Ду китоб бо номҳои «Китоб-ус-сиёсат-ал-қабир» ва «Китоб-ус-сиёсат-ас-сағир» дар номгӯи осори нависандаи арабизабон Аҳмад ибни Таййиби Сарахсӣ ба қайд омадаанд, ки, зоҳиран, ба масъалаҳои сиёсати кишвардорӣ ихтисос доштаанд. Ибни Надим дар «ал-Фихрист» унвонҳои китобҳои дигарро, ки марбут ба сиёсат ҳастанд ва, зоҳиран, масоили назарии сиёсатро ба таври омм фаро мегирифтаанд, зикр кардааст<sup>3</sup>. Аз эҳтимол дур нест, ки андешаи сиёсии Аҷам дар онҳо низ нақше аз худ гузошта бошад. Ҳамин тавр, китобу рисолаҳои, ки перомуни тадбири мулк ва сиёсати кишвардорӣ дар насри арабизабони асрҳои VIII-IX ба риштаи таҳрир кашида шуданд, мазҳари идомаи суннатҳои ин навъ осори насри паҳлавӣ дар муҳити исломӣ ба шумор мераванд.

### 5.2.3. Қиссапардозӣ аз забони ҷонварон

Чунон ки қаблан таъкид гардид, «Калила ва Димна», «Синдбоднома» ва дигар қиссаҳои асли ҳиндиву эронӣ дошта, ки

---

<sup>1</sup> ابن خلدون. مقدمة ابن خلدون. - ص. ۲۲۰.  
<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۴.  
<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۰.

моҳиятан бо ҳадафи роҳнамоии ахлокиву маънавии ҷомеа таълиф ёфта буданд, на як бору ду бор ба насру назми арабӣ баргардон шуданд ва чандин гузидаву ҷавоме аз онҳо падида омаданд. Фузун бар ин, нависандагони арабизабон, голибан онҳое, ки эронитабор буданд, худ ба таълифи қиссаҳо дар муораза ва истиқбол аз суннати қиссанигории тоисломии эронӣ пардохтанд. Дар натиҷа, дар насри арабизабон аз нимаи дувуми асри IX сар карда, қиссаҳои мухталиф аз забони ҷонварон падида омад ва ин амр боис ба пайдоиши як шоҳаи ҷадид дар адабиёти арабизабон гардид, ки онро метавон «қиссапардозӣ аз забони ҷонварон» номид. Муҳаққиқони адабиёти араб низ таъсири тарҷумаи «Калила ва Димна»-ро ба фанни қиссапардозии арабӣ таъкид кардаанд. Аз ҷумла, Муҳаммади Ғуфронӣ навиштааст, ки «пас аз тарҷумаи «Калила ва Димна» ба василаи Ибни Муқаффаъ таҳаввуле бунёдин дар хунари қиссанависӣ ба забони ҳайвонот дар адабиёти араб рух дод. Ин шева барои ироаи хунармандонаи роҳнамоӣҳои ахлокиву иҷтимоӣ, густардани андешаҳои сиёсӣ ва баёни бархе аз орои фалсафӣ мавриди таваҷҷуҳи ҳамагон қарор гирифт»<sup>1</sup>.

Яке аз нависандагоне, ки осораш дар ташаккули қиссапардозӣ аз забони ҷонварон нақши муҳим бозид, Саҳл ибни Ҳорун аст. Ба қалами ӯ чанд қисса мансуб аст, ки дар адабиёти исломии асрҳои миёна маъруфият доштанд. Яке аз онҳо қиссаи «Саъла ва Афра» (Кирмак ва оҳуи мода) аст, ки аз он танҳо иқтибосе дар «Заҳр-ул-одоб ва самар-ул-албоб»-и Ҳусрии Қайрувонӣ боқӣ мондаасту бас. Дар шинохти ин қисса ишораи Ҳусрии Қайрувонӣ бар он, ки вай саршор аз донишу ҳикмат аст, аҳаммият дорад<sup>2</sup>. Масъудӣ дар муоразаву тақлиди «Калила ва Димна» эҷод шудани «Саъла ва Афра» ва аз он муназзамтар буданаширо таъкид кардааст<sup>3</sup>.

Китоби дигари Саҳл ибни Ҳорун, ки ҳамчунин дар қолаби қисса аз забони ҷонварон ва дар муоразаи «Калила ва Димна» таълиф ёфтааст, «ан-Намр ва-с-саълаб» (Паланг ва рӯбоҳ) маҳсуб мешавад. Ин асар низ мисли соири осори Саҳл ибни Ҳорун гумшуда ба шумор мерафт, вале ахиран муҳаққиқи араб Абдулқодири Муҳайрӣ онро пайдо карда, матнашро ҳамроҳ бо тарҷума ба забони фаронсавӣ ба нашр расонид<sup>4</sup>.

Қаҳрамонҳои асосии қисса се тананд: рӯбоҳи ҳақим, гурги мағруру саркаш ва паланги бадхӯву золим. Рӯбоҳ, ки исмаш Марзук буд, дар як водии маъмур ва сарсабз бо занаш зиндагӣ мекард. Рӯзе аз рӯзҳо яке аз дӯстони рӯбоҳ, ки Ториқ ном дошт, ба меҳмони ӯ меояд.

<sup>1</sup> غفرانى خراسانى، محمد. عبد الله بن المقفع. - ص. ۲۱.

<sup>2</sup> الحمري، القيروانى. زهر الآداب و ثمر الالباب. ج. ۲. - ص. ۶۱۶.

<sup>3</sup> مسعودى، على بن حسين. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۷۳.

<sup>4</sup> الحمري، القيروانى. زهر الآداب و ثمر الالباب. ج. ۱. - ۴. مفصل و مضبوط و مشروح بقلم زكى مبارك، دار الجيل، بيروت، ۱۴۱۹ / ۱۹۹۹ - ۱۱۶۸. ص.

Пас аз зиёфат ва изҳори эҳтиром ба ҳамдигар Торик ба Марзуқ мегӯяд, ки ҳама қору бор ва рафтору кирдори дӯсти мизбонашро аз рӯи ақлу тадбир ёфт, ба чуз он ки манзилаш дар ҷои хавфнок воқеъ аст ва аз хатари сел эмин нест. Бино бар ин, ӯ ба Марзуқ тавсия кард, ки ин ҷойро тарк гӯяд ва мавзее амнро барои зиндагӣ ихтиёр намояд. Марзуқ гуфтаи Торикро ба занаш расонид ва зарурати кӯчидан ба ҷои беҳавфро ба миён гузошт. Зани рӯбоҳ ба ин розӣ нашуд ва маслиҳати Торикро ба ҳасаду нотавонбинӣ ҳамл намуда, кӯчиданро рад кард. Торик, пас аз он ки ба дӯсташ зарари ба фикру иродаи зан амал карданро баён намуд, бо вай видеоъ кард ва рафт.

Як муддат Марзуқ бо занаш дар оромиву осоиш ба сар бурданд, вале рӯзе борони сахт борид ва сели даҳшатнок омада, ҳамаро ба коми худ кашид. Зани рӯбоҳ ҳалок гардид. Худи ӯро мавҷи сел бо худ бурд ва пас аз чанд рӯз ба қазирае андохт. Рӯбоҳ ба худ омад ва дид, ки дар қазира касе ба назар намерасад. Аз ранҷу озор ва гуруснагиву танҳой ӯ ба ҳалоки худ яқин ҳосил кард. Дар ин ҳол буд, ки ногоҳ гурге ба ӯ пеш омад. Рӯбоҳ ба гург салом дод ва ному насабашро пурсид. Гург номашро Муқобир гуфта, аз рӯбоҳ суол кард, ки ӯ чӣ тавр ба ин қазира афтодааст, ки дар он барои ӯ хӯрдание пайдо намешавад. Рӯбоҳ саргузашти худро нақл карда, аз гург пурсид, ки барои чӣ ӯро аз туъмае ноумед мекунад. Гург гуфт, ки дар ин қазира ба ғайр аз оҳувон ва говони ваҳшӣ чизе дигар нест, вале сайди онҳоро шоҳи ин қазира – паланги ситамгар Музаффар ибни Мансур ба чуз аз худ барои дигарон манъ кардааст, аз тарси ӯ касе тавони онро надорад, ки ба оҳувон наздик шавад ва ё ҷои худахро тарк намуда, ба мавзеи дигар кӯч бандад. Рӯбоҳ ва гург аз бими он, ки паланг онҳоро бибинад, рӯзи дигар дар ҷои пинҳон аз назари паланг вохӯрданро авло донистанд ва аз ҳам чудо шуданд. Рӯбоҳ аз дарки вазъи худ дар ин қазира ғамгин шуд, вале роҳи наҷотро дар раъйи тадбир дид ва ба худ гуфт, ки фазилати оқил ҳангоми мушкилоту бадбахтиҳо аён мешавад, вале дар ҳоли осоишу оромӣ ҷоҳил бо оқил яксон ҳастанд.

Аз ин рӯ, рӯбоҳ тасмим гирифт, ки даст ба тадбире занад. Рӯзи дигар ӯ чун бо гург вохӯрд, гуфт, ки раҳой аз ин вазъи ногувор дар он аст, ки гург ба пеши паланг рафта, аз ӯ вилоятеро барои худ хоҳиш кунад ва қавл диҳад, ки ҳар чӣ ба даст оварад, ними он аз он паланг хоҳад буд.

Гург аз тарсу ҳарос аз паланги ҷаббор ин пешниҳодро рад кард, вале рӯбоҳи оқил бо овардани ҳуччату бурҳон ӯро ба қабули тадбири хеш розӣ намуд. Гург ба назди паланг рафт ва бо изҳори фурӯтаниву тавозуъ ва баёни садоқату ҳусни ният аз ӯ вилоятеро барои худ талаб кард ва ваъда дод, ки аз суду манфиати он вилоят паланг баҳрае вофир хоҳад дошт. Паланг тамаъ бар ваъдаҳои гург баст ва вилояти мавзеи оҳувонро ба ӯ дод. Гург ба амри вилоят оғоз карда, рӯбоҳро вазири худ таъин намуд. Аз сайди оҳувон ҳоли гургу рӯбоҳ рӯ ба

бехбуд овард, ранчу азоб фаромӯш гардид ва зиндагии пурнозу-неъмат пеш омад. Гург бар ин ҳоли худ мағрур шуд ва ваъдаи худро ба паланг фаромӯш кард. Паланг пас аз муддате интизорӣ амр кард, ки ба гург номае нависанд ва аҳду паймонашро ба хотираш оваранд.

Гург номаро хонд ва бо рӯбоҳ машварат кард. Рӯбоҳ зарурати вафо ба аҳдро ба ӯ таъкид кард, вале гург ин тавсияро напазируфт. Ӯ ба рӯбоҳ амр кард, ки номаи узромеъ ба паланг нависад, вале аз фиристордани молу сарват ба вай худдорӣ кунад. Паланг номаи гургро бо изҳори ҳамду сано дар ҳаққи шоҳи ҷазира ва баёни узру тавба аз ҷониби гург хонд ва интизори ҳадяву тухфаҳои ӯ шуд. Рӯзҳо мегузаштанд, вале аз фиристорағони гург хабаре набуд. Паланг бори дигар ба гург нома навишт ва ӯро маломату таҳдид намуд, вале боз ҳам кушода будани дарҳои тавбаву истиғфорро барои ӯ таъкид кард.

Чун ин нома ба гург расид, ӯ бо рӯбоҳ - вазир машварат ороост ва аз ӯ раъй хост. Рӯбоҳ ба вай ҷустани роҳи ризоят ва мудороро бо паланг маслиҳат дод ва дур будан аз хашм ва парҳез аз душманӣ бо вайро ба салоҳи кор донист. Гург ин маслиҳатро напазируфт ва аз сари ғурур сар фуруд овардан дар баробари палангро барои худ хориву мазаллат донист. Ӯ ба рӯбоҳ амр кард, ки номае ба паланг нависад ва дар он узр аз палангро бо таҳдид бар ӯ ба ҳам оварад.

Чун ин нома ба паланг расид, донист, ки гург ба роҳи саркашӣ ва муҳолифат бо ӯ қадам ниҳодааст. Вазиронро ҷамъ намуд ва аз онҳо раъй хост. Вазири аввал гуфт, ки шоҳ номае дигар ба гург нависад, то тасмими гург ба муҳолифати паланг собит шавад, он гоҳ метавон бо далеле қотей ва ҳуҷҷате возеҳ ба муқобили ӯ лашкар кашид. Вазири дувум маслиҳат дод, ки шоҳ-паланг бо гург муросо кунад ва аз баҳри хирочи ӯ барояд, зеро агар оташи ҷанг барафрӯхта гардад, ба ҷамъи сипоҳиён ва сарфи моле, ки афзунтар аз хирочи вилояти гург аст, эҳтиёҷ меафтад. Вазири сеум гуфт, ки бояд ба муқобили гург зудтар лашкар кашид ва ӯро торумор кард, то ин барои дигар саркашону исёнгарон дарси ибрат гардад.

Паланг маслиҳати вазири аввалро пазируфт ва номае кӯтоҳ ба гург фиристорд ба ин маънӣ, ки агар моил ба сулҳу салоҳ бошӣ, итоат пеш ор, вагарна, ба ҷанг ҳозир шав.

Чун нома ба гург расид, аз вазири худ – рӯбоҳ толиби раъй шуд. Вазир ҷанги гургро бо паланг салоҳ надонист, нокомӣ будани оқибати онро пешгӯӣ кард ва далел овард, ки раият бар ҷанги шоҳон қодир нестанд. Гург далелҳои рӯбоҳро напазируфт ва ба ӯ амр дод, ки ҷавоби номаи палангро нависад ва ҷангро эълон дорад.

Пас аз ин шоҳи ҷазира – паланг ду бор ба муқобили гург лашкар мефиристад, вале ҳар ду дафъа ҳам гург дар ҷанги тан ба тан сардори сипоҳиёни палангро ба қатл мерасонад ва пирӯзӣ насиби ӯ мегардад. Паланг бо вазирони худ дар ин кор машварат мекунад. Вазири аввал маслиҳат медиҳад, ки ба муқобили гург лашкаре бештар ва сарваре эҳтиёткортар фиристора шавад, то зафар ёбанд. Раъйи вазири дувум

бар он буд, ки гургро бар ҳоли худ гузоранд, бо ӯ ваъдаву ваид кунанд, зеро агар гург дафъаи севум тоифаеро аз лашкари паланг шикаст диҳад, то назди дари паланг омаданаш аз эҳтимол дур нест. Вазири севум гуфт, ки агар гургро ба ҳолаш гузоранд, нерӯяш фузунӣ ёбад, макру ҳилааш ба ҳам ояд ва раиятро бар хилофу фасод кашонад. Бино бар ин, шоҳ бояд худ лашкарро сарварӣ кунад ва амиронро хоссон дар ин кор ӯро ҳамрадиф бошанд. Паланг маслиҳати вазири севумро пазируфт ва худ дар раъси лашкар ба ҷанги гург рафт.

Чун хабари лашкар кашидани паланг ба гург расид, аз рӯбоҳ раъй хост. Ӯ маслиҳат дод, ки роҳи савоб фирор аз ҷанги шоҳи палангон аст, зеро гург бо шоҳ қудрати муқовимат ва иститоати муҳолифат надорад. Гург маслиҳати вазирро пазируфтани шуд, вале гургони дигар раъйи рӯбоҳро бар аҳмақии ӯ ҳамл карданд ва шоҳи худро ба ҷанги шоҳи палангон таҳрик намуданд.

Дар набарде, ки миёни ду тараф доир гардид, гургон ва сардори онон – Муқобир кушта шуданд. Вақте ки теги бурранда бар сари рӯбоҳ баланд гардид, ӯ фарёд кард, ки ман ба шоҳ сухане дорам. Шоҳи палангон гуфт, ки «эй хабис, пас аз он ки фитнае бар муқобили мо барпо кардӣ ва дар ҳалоқи мо кӯшидӣ, боз чӣ сухане бар мо дорӣ?». Рӯбоҳ дар ҷавоб гуфт, ки «агар зиёдии мулк ва фароҳии салтанатро хоҳӣ, маро зинда гузор, зеро маро панҷ чизест, ки ҳар яке беҳтар аз моли фузун аст».

Шоҳ аз он панҷ чиз пурсид. Рӯбоҳ гуфт: «Маро насихатест, ки амал бар он шармандагӣ наорад; амонатест, ки хиёнатро намепазирад; тоатест, ки онро маъсият доғдор накунад; хидматест, ки хастагиро надонад; раъйест, ки хато пайгири он набошад».

Шоҳ тасмим гирифт, ки рӯбоҳро зинда гузорад ва ба вазирону ҳақимони худ амр кард, ки ақлу хирад ва раъйу тадбири ӯро имтиҳон кунанд ва агар вай шоистаи ҳамтоӣ ва ҳамнишинӣ бо эшон бошад, мулозими дарбор гардонанд, вагарна, аз дар биронанд.

Сипас дар ҳузури шоҳ имтиҳони рӯбоҳ сурат мегирад. Рӯбоҳи донишманд ба ҳамаи суолҳо ҷавобҳои сахт медиҳад ва барозандагии ақл, шоистагии раъй, зебоии сухан ва тезии ҳуши худро собит мекунад. Шоҳи палангон рӯбоҳро аз муқаррабону ҳосони худ гардонида, дар масъалаҳои душвору мушкилоти сангин аз ӯ раъй мепурсид. Ин равиш то вақте идома ёфт, ки рӯбоҳ аз ҳаёт даргузашт.

Чунон ки аз мухтавои «ан-Намр ва-с-саълаб» пайдост, он мисли «Калила ва Димна» саршор аз панду андарзҳо ва суханони ҳикматомез аст, ки аз забони ҷонварон, хоссатан рӯбоҳи донишманд ва вазирони шоҳи палангон садо медиҳанд. Ба ин маънӣ, «ан-Намр ва-с-саълаб» асари пандуахлоқист, ки дар қолаби қиссаҳо аз забони ҷонварон таълиф шуда ва ҳамон ҳадафи раҳнамоии ахлоқиву маънавиро, ки барои «Калила ва Димна» хос аст, пайгирӣ мекунад.

Дар қиссаи мазкур паланг рамзи шоҳони ҷаббор ва ситамгар аст, ки таърих амсоли онҳоро бисёр дида ва аглаби хулафои замони зиндагии Саҳл ибни Ҳорун низ дар равишу рафторҳои худ мушобех ба онҳо буданд. Гург намое аз волиёну амирони мутамаррид ва исёнкор аст, ки мисли гург аксаран парварда ва дастнишондаи шоҳонанд, вале бо афзун гаштани ҷоҳу неъматашон қадам ба роҳи исён гузоштаанд. Рӯбоҳ ва вазирони шоҳи палангон тимсоли бадеии вазирон ҳастанд, ки ақидаи кӯхани шарқӣ бар уҳдаи онон рисолати далолати хайр ва ислоҳу салоҳи иҷтимоиро вогузоштааст. Мутобиқ бар ҳамин ақидаи кӯхан аст, ки аглаби панду андарзҳо бар забони вазирон ниҳода шудааст.

Саҳл ибни Ҳорун на танҳо дар қолаби бадеии асари худ ба «Калила ва Димна» пайравӣ кардааст, балки як даста панду ҳикматҳое низ овардааст, ки онҳоро айнан ва ё бо андаке тағйир метавон дар «Калила ва Димна» низ пайдо кард.

Чунин шабоҳат ва ҳамоҳангиҳое, ки миёни панду ҳикматҳои асари Саҳл ибни Ҳорун, аз як тараф, ва «Калила ва Димна», аз тарафи дигар, ба назар мерасанд, аз ягонагии сарчашмаи онҳо – осори ахлоқии паҳлавӣ гувоҳӣ медиҳанд. Зоҳиран, истифодаи дурдонаҳо аз он ганҷинаи ахлоқӣ барои тамоми осори адибони арабизабон, ки дар пайравии «Калила ва Димна» таълиф шудаанд, хос будааст.

Муаллифи «ан-Намр ва-с-саълаб» дар ироаи панду андарз ва баёни матолиби ҳикамӣ аз шеваи суолу ҷавоб фаровон истифода кардааст. Чунин қолаби панднигорӣ аз шеваҳои маъмули осори ахлоқии паҳлавӣ буд. Ба ин маънӣ, «ан-Намр ва-с-саълаб» маҳсули истиқбол аз вижагиҳои он осори ахлоқии паҳлавӣ мебошад, ки бо шеваи суолу ҷавоб таълиф шудаанд. Ин ҷанбаи шаклии «ан-Намр ва-с-саълаб», хоссатан дар қисмате аз он, ки ба имтиҳони рӯбоҳ аз ҷониби вазирони паланг ва худи ӯ оид аст, ба вузӯҳи тамом зоҳир мешавад.

Саҳл ибни Ҳорун дар «ан-Намр ва-с-саълаб» унсурҳои номанигориро ба кор гирифта ва муносибатҳоро, ки миёни паланг ва гург сураат гирифт, дар қолаби ҷаҳор номаи паланг ба гург ва ҷаҳор номаи ҷавобии гург ба паланг баён кардааст. Истифодаи унсурҳои номанигорӣ дар қиссаҳои арабизабон бори нахуст дар ҳамин асари Саҳл ибни Ҳорун ба назар мерасад. Аз эҳтимол дур нест, ки муаллиф дар ин шеваи баён аз осори тоисломии эронӣ илҳом гирифта бошад. Дар таъйиди ин нукта метавон ба достони «Вису Ромин» ишора кард, ки дар матни худ даҳ номаи Висро ба Ромин гунҷоиш дода ва дар қарнҳои нахустини исломӣ иштиҳор пайдо карда буд<sup>1</sup>.

---

<sup>1</sup>گرگانی، فخر الدین. ویس و رامین. - ص. ۲۵۹-۲۸۶.



Саҳл ибни Ҳорун ба матни асари худ баъзе аз оёти қуръонӣ, аҳодиси набавӣ, амсол ва ашъори арабиرو низ ворид кардааст<sup>1</sup>. Дар натиҷа, дар «ан-Намр ва-с-саълаб» суннатҳои насри ахлоқии паҳлавӣ бо унсурҳои фарҳанги арабӣ-исломӣ омезиш пайдо карда, ба завқу салиқа ва муқтазиёти замони нав Ҳамоҳангӣ пайдо кардааст.

Қои шакку тардиде нест, ки мазиятҳои мазкури шакливу маъноии «ан-Намр ва-с-саълаб» ба дигар қиссаҳои низ, ки дар давраи мавриди таҳқиқ дар пайравӣ аз «Калила ва Димна» аз забони ҷонварон таълиф ёфтаанд, хос буд. Аз зумраи ин қиссаҳо ду асари дигар низ ба қалами Саҳл ибни Ҳорун мансуб буда, номи яке аз онҳо дар сурати «Надуд, Вадуд ва Ладуд» ва дигаре дар шакли «Китоб-ул-ғизолайн» забт шудаанд<sup>2</sup>. Аз муҳтавои ин китобҳо асаре дар манбаъҳо боқӣ намонда ва имкон дорад, ки унвони онҳо низ дучори таҳриф шуда бошад.

Қиссаҳо аз забони ҷонварон ба нависандаи дигари арабизабон Алӣ ибни Убайдаи Райҳонӣ низ тааллуқ дошт. Номи яке аз онҳо дар маъхазҳо ба ду шакл – «Китоб Варуд ва Вадуд-ал-мокинайн» (Варуд ва Вадуди сарватманд) ва «Китоб Варуд ва Вадуд-ал-маликайн» (Шоҳ Варуд ва шоҳ Вадуд) сабт ёфтаанд<sup>3</sup>. Чунон ки аён аст, номи ин асар ба номи китоби фавқуззикри Саҳл ибни Ҳорун мушобеҳ аст. Зоҳиран, ҳар ду нависанда як қиссаи куҳанро бозгӯӣ кардаанд, ки, мутаассифона, аз асли он ва бозгӯиҳои баъдии вай хабаре надорем.

Китоби дигари Райҳонӣ «Китоб-ан-намла ва-л-баъуза» (Мӯрча ва пашша) ва, ба ривояте дигар, «Китоб сифат ан-намла ва-л-баъуза» (Китоби сифати мӯрча ва пашша) ном доштааст<sup>4</sup>. Агар ривояти аввал ҳақиқат дошта бошад, пас ин китоб аз зумраи қиссаҳо аз забони ҷонварон аст, вагарна аз анвои мунозираҳоест, ки дар онҳо ду ҷонвар баргариӣ худро бо зикри сифоташон таъйид мекарданд.

Ҳамин тариқ, осоре, ки зикр шуд, ба ривочи қиссапардозӣ аз забони ҷонварон дар насри арабизабони садаҳои VIII-IX далолат мекунад. Аглаби ин қиссаҳо дар пайравӣ аз «Калила ва Димна» таълиф шудаанд. Дар шаклу муҳтавои ин қиссаҳо суннатҳои насри ахлоқии паҳлавӣ ба зиндагии худ идома бахшида, дар айни замон бо унсурҳои фарҳанги исломӣ имтизоҷ пайдо кардааст.

---

<sup>1</sup>سهل بن هارون. كتاب النمر و الثعلب. حققه و قدم له و ترجم الى الفرنسية عبدالقادر المهيري. منشورات الجامعة التونسية، ١٩٧٣-٨٠-٢٢.

<sup>2</sup>ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ١١. - ص. ٢٦٧؛ حاجى خليفه. كشف الظنون عن اسامى الكتب و الفنون. ج. ٥. - ص. ٣٣٦.

<sup>3</sup>ياقوت الحموى. معجم الادباء. ج. ١٤. - ص. ٥١؛ حاجى خليفه. كشف الظنون عن اسامى الكتب و الفنون. ج. ٥. - ص. ٥٣٧.

<sup>4</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٣٣.

#### 5.2.4. Ривочи мунозира

Идомаи суннатҳои насри сосонӣ дар садаҳои нахустини исломӣ ва нуфузи он дар насри арабизабон боиси пайдоиши як даста китобҳои гардиданд, ки дар насри пешини араб собиқа надоштанд. Ин китобҳо аз лиҳози муҳтаво ва мавзӯӣ бояд «мунозира» номид. Дар ин қабил асарҳо одатан ду ҷониб ба зикри манфиат ва фазилатҳои худ мепардохтанд, то дар ниҳояти мунозира бартарию яке бар дигаре ба исбот мерасид. Қаҳрамонони мунозираҳо аз миёни инсонҳо, олами ҳайвоноту наботот ва падидаҳои гуногун баргузида мешуданд. Муҳим дар ин маврид он аст, ки ду ҷониби мунозира дар аслу моҳият ва сифоту мазиятҳои худ бо ҳам ихтилоф дошта бошанд ва ин ихтилоф имкони ба доираи муқобалаву мубоҳиса кашидани онҳоро таъмин карда тавонад.

Мунозираҳо моҳиятан осори пандуахлоқӣ ҳастанд, зеро онҳо бо ҳадафи роҳнамоии мардум ба рафтору кирдор ва сиришту хислатҳои ҳамида ва ё манфиату фазилатҳои судманд барои ҷомеа, ки маъмулан ба ғолиби мунозира хос аст, навишта мешаванд.

Намунае аз мунозираҳои маъмул дар насри паҳлавӣ бо номи «Драхти Асурик» маҳфуз мондааст. Фузун бар ин, теъдоде аз ин қабил мунозираҳо дар асрҳои нахустини исломӣ ба забони арабӣ баргардон шуданд. Ибни Надим дар миёни китобҳои ахлоқӣ, ки аз паҳлавӣ ба забони арабӣ баргардон шудаанд, ду мунозираро зикр кардааст<sup>1</sup>. Яке аз онҳо «Китоб ҳадис-ал-яъс ва-р-раҷо ва-л-муҳовара аллатӣ ҷарат байнаҳумо» (Сухани навмедӣ ва умед ва гуфтугӯе, ки миёни онҳо рафт) ва дигар «Китоб ҳадис-ас-самъ ва-л-басар» (Гуфтугӯи гӯш ва чашм) ном доранд.

Тааммул бар осори насри арабизабони садаҳои VIII-IX далел бар он аст, ки бархе аз нависандагони он даврон дар пайравӣ аз ин осор андешаву орои худро дар қолаби мунозира баён кардаанд. Табиист, ки истифодаи ин шева дар эҷодиёти нависандагони эронитабор бештар ба назар мерасад. Аз ҷумла, дар миёни осори Алӣ ибни Убайдаи Райҳонӣ се мунозира – «Китоб-ул-ақл ва-л-ҷамол» (Китоби ақл ва зебӣ), «Китоб-ус-самъ ва-л-басар» (Китоби гӯш ва чашм) ва «Китоб-ал-яъс ва-р-раҷо» (Китоби навмедӣ ва умед) ба қайд омадаанд<sup>2</sup>. Номи ду китоби ахири Райҳонӣ ба номи ду китобе, ки Ибни Надим онҳоро аз осори ахлоқии паҳлавӣ доништааст, шабоҳат дорад. Ин шабоҳат метавонад далел бар он бошад, ки Райҳонӣ дар эҷоди мунозираҳои худ аз ҳамон осори ҳамноми паҳлавӣ илҳом гирифтааст.

Дар сарчашмаҳои куҳан мунозирае бо номи «Китоб-ул-хурра ва-л-ама» (Зани озод ва каниз) ба қалами Алӣ ибни Довуд, ки ба ҳайси

<sup>1</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۳۷۸.

<sup>2</sup>النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۳.

нозими «Калила ва Димна» ва мутамоил ба фарҳанги эронӣ шуҳрат дорад, мансуб доништа шудааст. Нависандаи дигари эронитабор Муҳаммад ибни Лайси Хатиб низ асари худро бо номи «Китоб-ул-хат ва-л-қалам» дар қолаби мунозира пайрезӣ кардааст. Мунозирае бо номи «Китоб муфохарат-ал-вард ва-н-нарчис» (Нозидани гули сурх ва нарчис) ба қалами Аҳмад ибни Абӯтоҳири Тайфур мутааллиқ аст<sup>1</sup>.

Аз нависандагони араб низ чанд тан дар қорбасти шеваи мунозира маъруфанд. Яке аз онҳо аллома Ҷоҳиз аст, ки «Китоб ифтихор-аш-шито ва-с-сайф» (Нозидани зимистон ва тобистон) ва «Китоб ус-судон ва-л-бизон» (Сиёхпӯстон ва сафедпӯстон) аз фаровардаҳои қалами ӯянд<sup>2</sup>.

Лозим ба таъкид аст, ки дар назми арабизабони давраи мавриди назар эҷоди шеърҳо дар қолаби мунозира ривож дошт. Аҳли таҳқиқ пайдоиши ин қабил шеърҳоро ба таъсир ва нуфузи мунозираҳои тоисломии эронӣ вобаста доништаанд<sup>3</sup>. Ин матлаб далеле дигар бар он аст, ки нависандагони арабизабон низ дар эҷоди мунозираҳои зикршуда суннатҳои насри паҳлавиро сармашқи кори худ қарор дода ва мӯчиби пайдоиши як шоҳаи ҷадид дар насри садаҳои VIII-IX гардидаанд.

### **5.2.5. Бозсозии осори тоисломии эронӣ**

Нависандагони арабизабони садаҳои VIII-IX дар роҳи ҳифзу эҳёи дастовардҳои маънавии Эронзамини тоисломӣ, дар баробари тарҷумаи осори паҳлавӣ ва таълифи китобу рисолаҳо дар пайравӣ аз онҳо, аз шеваи дигаре низ истифода карданд, ки онро метавон «бозсозии осори тоисломии эронӣ дар қолаби насри арабизабон» номид. Моҳияти ин шева иборат аз он аст, ки нависандагони садаҳои VIII-IX асаре аз осори тоисломии эронӣ ва ё матолиби ҷудогонаи онро дар қолаби насри арабизабон бозсозӣ мекарданд. Ин амал ба тарҷума наздик аст, вале тарҷумаи мустақим нест, балки таълифе мустақил бар асоси матолиби адабиву таърихии тоисломии эронӣ аст. Намунаҳои ин бозсозӣ дар эҷодиёти ағлаби нависандагони эронитабор ба назар мерасанд. Аз ҷумла, дар миёни осоре, ки ба қалами Алӣ ибни Убайдаи Райҳонӣ мансуб аст, ҳадди ақалл чаҳор китобро, бино ба унвони онҳо, метавон аз зумраи ҳамин навъ асарҳо донист. Яке аз онҳо “Китоб Кайлуҳросф-ал-малик” унвон дорад. Масъудӣ дар “Муруҷ-уз-заҳаб” ба фазилатҳои подшоҳии Луҳросп, Балхро бунёд ниҳодани ӯ, муносибаташ бо Банӣ Исроил, кушта шудани ба дасти туркон ва гирифтани қасоси ӯ ишора карда,

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۶۳.

<sup>2</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۲۱۰-۲۱۱.

<sup>3</sup>Эберман В.А. Персы среди арабских поэтов эпохи Омейядов. – С.126; Фотиева В.С.К вопросу об историчности Ваддаха ал-Йамана. – С.136-142.

афзудааст, ки перомуни ин подшоҳ ҳикоятҳое дар китобҳои қадимии эронӣ омада ва нақли он ба дарозо мекашад<sup>1</sup>. Ба гумони ғолиб, асари мазкури Райҳонӣ бозсозии ҷадиди ҳамон ҳикоятҳои куҳан доир ба саргузашту корномаи Луҳросп аст, ки Масъудӣ ба онҳо ишора кардааст.

Асари дигари Райҳонӣ аз навъи мазкур “Китоб Меҳр Озар Чушнаш” ном дорад. Чунон ки қаблан ишора рафт, исми “Меҳр Озар Гушнасф” дар муаррифии номи баъзе аз китобҳои дигар низ ба назар мерасад. Зоҳиран, шахси ҳомили ин ном яке аз фарзонагони Аҷами тоисломӣ буда ва осоре ахлоқӣ аз забони ӯ ривоят шудааст. Аз эҳтимол дур нест, ки Райҳонӣ дар китоби мазкури хеш панду андарзҳо ва суҳанони ҳақимонаи ӯро бозгӯӣ кардааст.

Китоби дигари Райҳонӣ “Китоб адаб Ҷавоншер”, бино ба унвонаш, бозсозии яке аз асарҳои ахлоқии паҳлавӣ бояд бошад.

Аз номи китоби ҷаҳоруми Райҳонӣ “Равшаноидил”, ки онро К.А. Иностранцев тасхифе аз “Равшананибик” (яъне Рӯшноинома) донистааст, пайдост, ки бо осори тоисломии эронӣ иртиботе мусаллам дошта ва дар асоси яке аз навиштаҳои ахлоқии он даврон таълиф шудааст.

Ду китоб аз навъи бозсозии осори тоисломии эронӣ ба қалами Саҳл ибни Ҳорун дахл дорад, ки яке “Китоб-ул-Вомиқ ва-л-Азро ” ва дигаре “Китоб-адаб Ашк ибни Ашк ” номида мешаванд<sup>2</sup>. Шояд ҷои тардид набошад, ки китоби аввал бозсозии ҷадиди қиссаи куҳани эронӣ аст ва китоби дувум маҷмӯи панду андарзҳои марбут ба шоҳи ашкониرو бозгӯӣ кардааст.

Нависандаи дигари эронитабор Аҳмад ибни Абӯтоҳири Тайфур низ ба таълифи китобу рисолаҳо бар асоси осори тоисломӣ гароиш дошта ва “Китоб тарбият Ҳурмуз ибни Кисро Анӯшервон”-ро иншо кардааст. Се китоби дигари Ибни Абӯтоҳир низ - “Китоб хабар-ал-малик ал-олӣ фӣ тадбир-ил-мамлака ва с-сиёса”, “Китоб-ал-малик-ал-муслиҳ ва-л-вазир-ал-муъин” ва “Китоб-ал-малик ал-бобилӣ ва-л-малик-ал-мисрӣ албоғийайн ва-л-малик ал-ҳалим ар-румӣ” дар мавзӯоти хос ба қиссаҳои тоисломии эронӣ таълиф шуда ва, ба гумони қавӣ, муҳтавои он осорро дар қолаби насри арабиҷабон бозгӯӣ кардаанд.

Нависандаи шуубимазҳаб Абӯубайда низ асареро аз осори тоисломии эронӣ бозсозӣ кардааст, ки он дар феҳристи таълифоти ӯ бо номи “Равшанқубод” ба қайд омадааст. Унвони мазкур аз муҳтавои асар хабаре намедихад, вале вожае эронӣ будани он мусаллам аст.

---

<sup>1</sup>مسعودی، علی بن حسین. مروج الذهب و معادن الجواهر. ج. ۱. - ص. ۲۲۲-۲۲۳.  
<sup>2</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۳۳-۱۳۴.

Нависандагони арабизабон на танҳо осори бадеӣ ва ахлокии Эронзамини тоисломӣ, балки худи таърихи қавмҳои эрониро низ мавриди бозгӯии ҷадид қарор дода буданд.

Аз ҷумла, нависандаи шууби мазҳаби эронӣ Ҳайсам ибни Адий таърихи қавмҳои эрониро дар ду китоби хеш “Ахбор ул-фурс” ва “Таърих ул-Аҷам ва Банӣ Умайя” баён карда буд<sup>1</sup>.

Нависанда ва донишманди илми ансоб Муҳаммад ибни Қосими Тамимӣ, маъруф ба «Абулҳасани Нассоба» низ китобе дар таърихи қавмҳои эронӣ ва насаби онҳо бо номи “Ахбор-ул-фурс ва ансобуҳо” таълиф кардааст<sup>2</sup>. Дар мавзӯи мазкур китобе дигар бо номи “Ҷамҳарат ансоб-ал-фурс” (маҷмӯи насабҳои эронӣ) ба қалами нависанда ва ҷуғрофидони маъруфи эронитабор Ибни Хурдодбех тааллуқ дорад<sup>3</sup>. Ҳишом ибни Муҳаммади Калбӣ – яке аз муаррихони номии қуруни нахустини исломӣ ахбореро аз таърихи шоханшоҳии Хусрави Анӯшервон доир ба гирифтани гаравгонони араб дар китобе бо номи “Китоб ахз Кисро раҳн ал-араб” (Китоби гаравгон гирифтани Хусрав арабхоро) бозгӯ карда буд<sup>4</sup>.

Ҳамин тариқ, дар садаҳои VIII-IX осори мухталифи тоисломии эронӣ дар қолаби насри арабизабон бозсозӣ гардид. Дар зимни ин бозсозӣ матолиби қуҳани эронӣ мувоҷеҳ ба таҳаввул гардида, ба ҷаҳорҷӯби талаботи маънавӣ мафкуравии давр ва завқу салиқаи хонандагони замон мутобиқати том пайдо кард. Бад-ин васила осори тоисломии эронӣ дар муҳити ҷаҳоншиносӣ ваҳдонӣ машрӯиҷати адабиву фарҳангӣ ва ҳаққи бақову идома касб намуд.

### **5.2.6. Ҷилваҳои афкори шуубия дар насри арабизабон**

Садаҳои VIII-IX давраи пайдоишу ташаккул ва густариши фаъолияти ҷунбиши шуубия дар қаламрави Хилофат мебошад. Ҳадафи қиёми фикрии ҳавоҳонаи ҷунбиши шуубия, қабл аз ҳама, таъмини растагории маънавии Эронзамин аз тариқи ҳифзу эҳёи дороиҳои фарҳангу тамаддуни тоисломӣ ва ворид кардани он ба матну батни тамаддуни ҷадиди исломӣ буд.

Дар роҳи расидан ба ин ҳадаф аҳли шуубия ба роҳу усули мухталифи мубориза рӯй оварданд ва вобаста ба ин, ба ду гурӯҳ тақсим шуданд. Гурӯҳи аввал иддаои ҳизби арабгароро доир ба бартариӣ аъроб бар халқҳои дигари Хилофат рад мекарданд ва баробари эронӣ соири халқҳо бо арабҳо талқин мекарданд. Аз ин ҷост, ки дар бархе аз маъхазҳои адабиву таърихӣ пайравони ин гурӯҳро аҳли «тасвия», яъне, «баробарӣ» ва «мусовот» ном

<sup>1</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۱۲.

<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۲۷.

<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۶۵.

<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۰۹.

гузоштаанд ва маънои «шуубӣ»-ро ҳамчун касе, ки байни арабиву аҷамӣ тафзиле наниҳад, зикр кардаанд<sup>1</sup>. Талабу талқини баробариву мусовот байни арабҳо ва халқҳои ғайриараб дар даврае, ки аъроб унсури ҳукмрони Хилофат буданд, як шакли эътироз ва як навъи муқовимат бар зидди онҳо буд.

Гурӯҳи дигари пайравони шуубия ақида доштанд, ки арабҳо аз ҷиҳати фарҳангу тамаддун аз эронӣ ва халқҳои дигари Хилофат пасттар ҳастанд. Бино бар ин, дар баъзе фарҳангҳо ва осори адабиву таърихӣ шуубиёро «аҳли тафзили Аҷам бар Араб» хондаанд<sup>2</sup>.

Пайравони ҷунбиши шуубия, ғолибан, аз миёни аҳли қалам – шоирону нависандагон ва адибони арабизабон бархоста буданд. Аз ин ҷост, ки марому маслаки ин ҷунбиш пештар ва бештар аз ҳама дар адабиёти арабизабони садаҳои VIII-IX ба зуҳур омадааст.

Маслаки шуубии нависандагони садаҳои VIII-IX дар эҷодиёти онҳо ба ду равиш зоҳир шудааст. Равиши аввал тарҷумаи осори тоисломии эронӣ ба забони арабист, ки на танҳо ҳадафи ҳифзу эҳёи он осорро дар қолаби насри арабӣ пайгирӣ мекард, балки мақсади исботи бартарии фарҳангу тамаддуни эрониро бар арабӣ низ дар назар дошт. Ба ин маънӣ ағлаби мутарҷимони эронӣ, ки дар бораи онҳо қаблан суҳан рафт, пайравони ҷунбиши шуубия буданд. Табиист, ки дар тарҷумаҳои худ мутарҷимони эронӣ афқору ақоиди шуубиашонро ошкор карда наметавонистанд, вале анғезаи асосие, ки қалами эшонро ба тарҷума таҳрик кардааст, ҳамон эҳсоси меҳандӯстиву эронгароии шуубиёнаи онон буд.

Равиши дигари зуҳури маслаки шуубии нависандагони арабизабон таълифи осор ҷиҳати баёни ошқорои андешаву ақоиди шуубӣ буд. Ин навъ осорро, ки дар садаҳои VIII-IX арзи вучуд кардаанд, метавон ба се гурӯҳ дастабандӣ кард. Дастаи аввал аз китобу рисолаҳои фароҳам меояд, ки мазмуни онҳо аз талқини мусовоту баробарӣ миёни аъроб ва эронӣ соири халқҳои ғайриараб иборат буд. Дар ин замина китобе бо номи «Интисоф-ул-аҷам мин-ал-араб» (Баробарии эронӣ ба арабҳо) ба қалами Саид ибни Хумайди Бухтакон мансуб аст<sup>3</sup>. Ба баробариву мусовоти аъроб ва эронӣ Қоҳиз низ қоил буда ва ин матлабро рисолаи ӯ «Китоб-ут-тасвия байн-ал-араб ва-л-аҷам» (Китоби баробарии араб ва аҷам) собит мекунад.

Нависандаи дигари аҳди мавриди таҳқиқ Мадоинӣ низ китобе бо унвони «Муфохарат-ул-араб ва-л-аҷам» таълиф кардааст ва шоистагҳои аъробу эронӣро бидуни тафзили яке бар дигаре зикр намуда, бо ин ба талқини баробарии ин ду қавм пардохтааст. Абӯабдуллоҳи Исфҳонӣ мулаққаб ба «Бох» доир ба шуубиёне, ки ақидаи мусовоти Арабу Аҷамро ҷонибдорӣ мекарданд, китобе махсус

<sup>1</sup> ابن عبد ربه. كتاب العقد الفريد. ج. ۲. - ص. ۶۹.

<sup>2</sup> الجاحظ، عمرو بن بحر. كتاب البيان و التبيين. ج. ۳. - ص. ۷۰۹.

<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ۱۳۷.

бо номи «Китоб-ут-тавшиҳ ва-т-таршиҳ фи баъз ат-тасвия байн аш-шуубия» навиштааст<sup>1</sup>.

Дастаи дувум аз осори нависандагони шуубимазҳаб аз китобу рисолахое иборат аст, ки дар паҳнои насри арабизабон бо номи «Китоб-ул-масолиб» маъруфият доранд. Муаллифони ин қабил китобу рисолаҳо, ки голибан аз зумраи шуубиёни зиёдарав буданд, чихати таҳқиру тазлили арабҳо «масолиб», яъне айбу нуқсонҳои онҳоро дар навиштаҳои худ як ба як бармешумурданд.

Нависандагони шуубимазҳаб ду навъ аз ин қабил китобҳо таълиф кардаанд: якум, «Китоб-ул-масолиб»-ҳои омм, ки фарогири айбу навоқиси тамоми қабिलाҳои аъроб буданд; дувум, «Китоб-ул-масолиб»-ҳои хос, ки дар онҳо ношоистагиҳои як қabila ё як шоха аз қабिलाҳои аъроб зикр шудаанд. Ба қалами нависандаи маъруф Абӯубайда аз навъи аввал китобе бо номи «Китоб-ул-масолиб» тааллуқ дорад<sup>2</sup>. Ҳамин нависанда дар навъи дувуми «Китоб-ул-масолиб»-ҳо низ асаре бо номи «Китоб масолиб Боҳила» таълиф кардааст, ки он ба зикри ношоистагиҳои қабилai Боҳила ихтисос дорад<sup>3</sup>.

Китобҳо аз ҳар ду навъи мазкур дар миёни осори мансуб ба Ҳайсам ибни Адий низ ба назар мерасанд. Нависандаи мазкур «Китоб-ул-масолиб ас-сағир» ва «Китоб-ул-масолиб ал-қабир»-и хешро дар равияи навъи аввал ва «Китоб масолиб Рабиъа»-ро дар навъи дувум ба риштаи таҳрир кашидааст<sup>4</sup>. Китобе бо номи «ал-Майдон фи-л-масолиб» ба Аллони Шуубӣ мансуб аст, ки дар он муаллиф зикри масолиби аъробро аз қабилai Қурайш оғоз кардааст. Ибни Надим таъкид кардааст, ки Аллон дар ин китоб «парда аз рӯи масолиби аъроб бардошт ва онҳоро ошкор кард»<sup>5</sup>. Дар «ал-Фихрист» ба қалами нависандаи шуубимазҳаби дигар Абӯҳасин Муҳаммад ибни Алии Исфahонии Даймартӣ низ асаре бо номи «Китоб масолиб Сақиф ва соир-ал-араб» мутааллиқ доништа шудааст<sup>6</sup>.

Ба дастаи севуми таълифоти нависандагони шуубимазҳаби садаҳои VIII-IX китобу рисолахое ворид ҳастанд, ки муҳтавои онҳо аз зикри шоистагиҳои эронӣ ва таъйиди бартарии онон бар аъроб иборат аст. Яке аз китобҳои, ки дар ин замина эҷод шудааст, ба қалами Абӯубайда мансуб буда, «Фазоил-ул-фурс» ном дорад. Дар ҳамин мавзӯ Саид ибни Ҳумайди Бухтакон низ китобе бо унвони «Фазл-ул-ачам ала-л-араб ва ифтихоруҳо» таълиф кардааст<sup>7</sup>. Ақоиди шуубии нависандаи дигари эронитабор-Исҳоқ ибни Салма низ

---

<sup>1</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٥١.  
<sup>2</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ٥٩.  
<sup>3</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ٥٩.  
<sup>4</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١١٢.  
<sup>5</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١١٨.  
<sup>6</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٥٢.  
<sup>7</sup> النديم، محمد ابن اسحق. كتاب الفهرست. - ص. ١٣٧.

қалами ўро ба таълифи китобе дар бартарии эронӣён бар арабҳо бо номи «Китоб фазл-ал-ачам ала-л-араб» таҳриқ кардааст<sup>1</sup>.

Бархе аз осори мансури давраи мавриди таҳқиқ дар мавзӯоте таълиф шудаанд, ки дар назари аввал гӯё ба шуубия иртиботе надоранд, вале агар заминаҳои пайдоиши ин китобҳо мавриди тааммул ва андеша қарор гирад, махсули ақидаву афкори шуубӣ буданашон аён мегардад. Аз зумраи ин қабил асарҳо «Китоб ман тазаваҷа маҷусийятан» (Китоб дар бораи онҳое, ки бо маҷусизанҳо издивоҷ кардаанд)–и Мадоинӣ ва «Китоб ман тазаваҷа мин-ал-маволӣ фи-л-араб» (Китоб дар бораи он маволие, ки бо арабзанҳо издивоҷ кардаанд)–и Ҳайсам ибни Адийро метавон зикр кард<sup>2</sup>. Аз сарчашмаҳои адабиву таърихии садаҳои нахустини исломӣ, ки гурури қабилавию қавмии аъроб ва муносибати эшонро бо эронӣён ва халқҳои дигар бозтобӣ мекунад, аён аст, ки аъроб издивоҷ кардани мардони худро бо занҳои ғайриараб мучоз медонистанд, вале мавлои ғайриараб ҳаққи хонадор шудан бо зани арабро надошт<sup>3</sup>. Ҳамчунин издивоҷ бо маҷусизан барои аъроби мусулмон мамнӯъ эълон шуда буд. Бар хилофи ин дастурҳо, Мадоинӣ ва Ҳайсам ибни Адий китобҳои маҷусӣ хешро таълиф кардаанд, то бад-ин васила зарбае бар гурури ҳизби арабгаро ворид кунанд.

Рисолае дар ситоиши бахилӣ бо номи «Рисола фи-л-бухл» ба Саҳл ибни Ҳорун мутааллиқ аст, ки он дар «Китоб-ул-бухало»–и Ҷоҳиз ба тамомӣ иқтибос шуда ва бад-ин васила то замони мо расидааст<sup>4</sup>. Дар назари аввал ин рисола ҷавоби Саҳл ибни Ҳорун ба онҳое, ки ўро ба бухл мазаммат кардаанд. Муаллиф дар посухи ҳар як эроде, ки ба ў нозил шудааст, равиши худро дар сарфакориву иқтисод дифоъ карда, зарарҳои сарфи бечои дороиву сарват ва саховатмандии бемавридро бо истинод ба ҳикматҳои гузаштагон таъкид кардааст. Лозим ба ёдоварист, ки аъроб дар муораза бо эронӣён саховат ва дасткушодиро аз фазилатҳои суннатии худ мешумориданд ва бухлу хасосатро хос ба эронӣён медонистанд. Рисолаи Саҳл ибни Ҳорун ҳадафи нақӯҳиши тарзи зиндагии аъробро дар пай дорад ва мазмуни шуубиаш низ дар ҳамин ҳадаф зоҳир мегардад.

Китобу рисолаҳои маҷусӣ, ки дар доираи набарди маҷкуравӣ бо аъроб эҷод шудаанд, эҳсоси меҳандӯстӣ ва ҳусни тавачҷуҳи халқҳои эрониро нисбат ба фарҳангу тамаддуни хеш дар қолаби насри арабизабон бозтобӣ мекунанд. Аз ин рӯ, ин қисмати насри арабизабони садаҳои VIII–IX–ро метавон чун насри шуубияи эронӣ ба забони арабӣ қаламдод кард. Насри шуубия дар идомаи афкори меҳанпарастии

<sup>1</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۴۲.

<sup>2</sup>الندیم، محمد ابن اسحق. کتاب الفهرست. - ص. ۱۱۲.

<sup>3</sup>افتخارزاده، محمود رضا. شعوبية ناسيوناليسمايراني. دفتر نشر معارف

اسلامی. تهران، ۱۳۷۶. - ص. ۶۶-۷۴.

<sup>4</sup>الجاحظ، عمرو بن بحر. کتاب البخل. - ص. ۱۱-۱۵.



халқҳои эронӣ ва дифоъ аз арзишҳои фарҳангу тамаддуни Аҷам дар шароити истилои араб нақше муҳим бар уҳда дошт.

\*\*\*

Ҳамин тариқ, таҳқиқи адабиёти арабизабони садаҳои VIII-IX далел бар он аст, ки дар давраи сукути иҷбории забонҳои эронӣ, ки ба ду аср, яъне асрҳои VIII-IX тӯл кашид, намояндагони аҳли адаби Эронзамин забони арабиро чун воситаи ягонаи нашри афкори адабиву бадеии худ истифода карданд. Ин амр мӯҷиб гардид, ки дар каламрави адабиёти арабизабон як идда шоирону нависандагони эронитабор нуфуз ёбанд. Рисолати ҳифзу идомаи суннатҳои адабиёти тоисломии эрониро ҳамин шоирону нависандагони арабигӯ ба дӯши худ гирифта, онро бо истифода аз забон ва қолабҳои адабии арабӣ дар бехтарин вазҳ ба иҷро расониданд.

Асос ва меҳвари маънавии адабиёти арабизабоне, ки шоирону нависандагони эронитабор дар садаҳои VIII-IX ба вучуд оварданд, эҳсоси пайванди рӯҳонӣ бо гузаштаи пурифтихори қавмҳои ориёӣ ва ҳифзи асолати маънавиву фарҳангии Эронзамин буд. Ба ин маънӣ, адабиёти арабизабон давоми мустақими адабиёти паҳлавӣ ва яке аз муҳимтарин манбаъҳои омӯзишу таҳқиқи он аст. Ҳар қадар адабиёти арабизабони асрҳои VIII-IX бехтару хубтар омӯхта шавад, ҳамон қадар ҷеҳраи воқеии адабиёти тоисломии эронӣ равшантар мегардад.

Аз ҷониби дигар, адабиёти арабизабон барои шинохти таҳаввуле, ки осори тоисломии эронӣ дар давраи гузариш ба фарҳангу тамаддуни исломӣ аз сар гузаронид, маъхази асосист, зеро мутобиқ ва ҳамоҳанг шудани арзишҳои адабиву фарҳангии тоисломии эронӣ бо муҳит ва муқтазиёти ҷаҳоншиносии нави ваҳдонӣ дар қолаби ҳамин адабиёт таҳаққуқ пайдо кард. Фузун бар ин, адабиёти арабизабон барои шинохти заминаҳои пайдоиши адабиёти навини форсизабон аҳамияти вижа дорад, зеро ағлаби навъу шаклҳои адабиёти форсии тоҷикӣ дар ҳамин давра пайрезӣ гардидааст.

Бо таваҷҷуҳ бар нуқоти мазкур адабиёти арабизабони асрҳои VIII-IX-ро, ки маҳсули қалам ва зодаи қареҳаи адабии шоирон ва нависандагони эронинаҷод аст, метавон чун халқии пайванд миёни адабиёти тоисломии Эронзамин ва адабиёти навини форсии тоҷикӣ арзёбӣ кард ва дар даврандигарии таърихи адабиёти халқҳои эронӣ онро ба адабиёти давраи арабизабонӣ номзад намуд.

## БОБИ СЕВУМ

### АДАБИЁТ БА ЗАБОНИ ФОРСИИ ТОЧИКӢ ДАР ҚАРНҲОИ VIII–IX

#### ФАСЛИ ЯКУМ

#### ПАЙДОИШ, ТАШАККУЛ ВА ТАҲАВВУЛ

Адабиёти форсии тоҷикӣ то давраи шукуфӣ дар аҳди давлатҳои мустақили Тоҳириён (821-873), Саффорӣён (873-903) ва Сомониён (875-999) марҳалаи душвори ташаккули хешро гузаштааст, ки қобили тааммул ва баррасии вижа мебошад. Аз воқеаҳои муҳими ин давра истилои арабҳо буд, ки дар нахустин рӯёруӣ дар соли 636 дар Қодисия ва шикасти сипоҳи Яздгирди севум бо роҳбарии Рустам писари Фарруххурмуз дар баробари сарлашқари араб Саъд ибни Абӯваққос боиси шикасти охириин шоҳаншоҳи Эрон гашт. Арабҳо соли баъд пойтахти мамлакат Тайсифун (Мадоин) ва бо каме таваққуф соли 641 дар ҷанги Наҳованд ва соли 645 Ҳамадон, Рай ва Озарбойҷонро тасхир намуданд. Дар замони хилофати Усмон (23-35/644-656) арабҳо Форсу Эрони марказӣ, Хуросон ва баъдан Систону Кирмонро забт намуданд. Ихтилофоти дохилии хилофат монеи фатҳи сарзаминҳои шарқии Эрон шуданд. Бори нахуст солҳои 673-674 арабҳо бо роҳбарии Убайдуллоҳ ибни Зиёд ба Бухоро ҳучум карданд. Ҳокими Бухоро дар ин вақт зане буд, ки ба ҷои писари хурдсолар – Туғшода ҳукумат мекард, бо кордонӣ ва тадбир тавонист бо мувофиқаи пардохти боҷ шаҳр ва кудрати худро нигоҳ дорад. Баъд аз он ки Қутайба ибни Муслими Боҳилӣ волии Хуросон таъйин гардид, соли 709 ба ҳамлаи шадид шаҳро забт намуд ва Туғшодаро ба ҳайси Бухорхудот гузошт, ки то соли 739 ҳукумат дошт<sup>1</sup>.

Пешравии босуръати арабҳо чанд сабаб дошт. Аз ҳама муҳим он буд, ки дар ҷомеаи табақоти Эрон, ки фарқи табақаҳо ба ниҳояти худ расида буд ва ноғузир ба ихтилофи байни онҳо сабаб мегардид ва ихтилофоти динии дохили султай Сосониён ҷомеаро ба парокандагӣ гирифтор сохта, дар арафаи ҳамлаи тозиён, ки дар зери ливои оини тозазуҳури ислом сурат мегирифт, чандон устуворӣ нишон додан натавонист.

Султай Сосониён (224-651) баъди ҳукумати беш аз чорсадсолаи хеш суқут кард ва мамлакат ба вазъи харобу ноамн дучор гардид. Табиист, ки дар ҷунин вазъи иҷтимоию сиёсӣ вазъияти фарҳангию адабии як замон шукуфон ба ниҳояти нузул расид ва ҳолати рӯҳии ҷомеаи ҷангзада ба шеър суруд ва хушӣ чандон мусоид набуд. Гузашта аз ин оини тоза ба шеър тарона ва маросими суру шодӣ

---

<sup>1</sup>Таърихи Бухоро. Абӯбакр Муҳаммад ибни Ҷаъфари Наршаҳӣ. Мураттибон: Ғолиб Ғолибов, Кароматулло Олимов, Нурмуҳаммади Амиршоҳӣ. – Душанбе: «Пайванд», 2012.-С. 96.

чандон майл надошт ва бисёре аз осори мактуби мардуми маҳаллиро аз байн бурд, ки дар ин бора сарчашмаҳо гувоҳи медиҳанд<sup>1</sup>. Аз ходисаи аз байн рафтани осори мактуби тоисломӣ гувоҳи равшани дигар он аст, ки номи чанде аз китобҳои давраи сосонӣ дар маъхазҳо боқӣ мондааст, вале худи онҳо ханӯз пайдо нашудаанд.

Сабаби дигари камии осори мактуб аз замони пеш аз ислом он буда метавонад, ки дар ҷомеаи табақоти Сосониён (224-651) савод, дониш ва ҳунар дар инхисори мӯбадону ашрофу бузургони қавм буд, ки бо омадани арабҳо ин тоифаро аз байн бурданд ё онҳо мачбур ба фирор аз зодгоҳи хеш ба ҷойҳои амнтаре, мисли Ҳинд, гардиданд, ки дар пайи он навиштану хондан ҳам аз байн рафт.

Донишомӯзӣ тақрибан мунҳасир ба хонадонҳои ашрофӣ ва рӯхониён ва деҳқонон буд ва дигарон аз ин неъмат истифодае наметавонистанд қард, ногузир ба таҳсил рағбате надоштанд<sup>2</sup>.

Омили дигар дар камбудии осори бадеии мардумони маҳаллӣ ҷойгузин гардидани забони арабӣ ба ҳайси забони дину оини нав қабулкардаи онҳо ва ҳамчун забони расмӣ коргузорӣ дар қаламрави Хилофат мебошад.

Ҳамин ва дигар омилҳо буданд, ки шеърӯ адаби эронӣ дар ду қарни аввали интишори ислом ба таҳаввулоти шадиди сохторӣ ва мазмунӣ рӯ ба рӯ гардид<sup>3</sup>. Вале бо мурури муддате дар баробари муқовиматҳои низомӣ ва сиёсӣ муқовиматҳои зеҳнӣ ва маънавий эронӣ оғоз гардид, ки бо роҳҳои гуногун дар марҳалаҳои таърихӣ ҳаёти фарҳангӣ ва адабии халқҳои эронӣ сурат мегирифтанд, зеро адабиёти форсии бостон ва форсии миёна бо он ҳама густардагӣ дар паҳнаи давлатдорӣ чандҳазорсолаи эронӣ ҳеч мумкин набуд, ки бо вучуди нобудсозии арабҳо куллан аз байн биравад.

Мо нишонаҳои вучуд ва нуфузи адаби эрониро дар се самт аз тариқи осори арабӣ дарёфт қардан метавонем, ки муҳаққиқон дар ин бора ишорат қардаанд<sup>4</sup>. Пеш аз ҳама ғоя, фикр, рӯҳи эронӣ ба воситаи шоирону адибони тозагӯи эронӣ дар шакли бадеӣ вориди адабиёти китобӣ гардида, чараёни адабии асрҳои VIII-IX-ро дигаргун сохт ва аҳли адаб таваҷҷуҳ ба осори гузаштагони хешро

---

<sup>1</sup>Берунӣ, Абӯрайҳон. Осору-л-боқия, сах. 71. Дар ин бора муфассал ниг. Н.Зоҳидов. Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои VIII-IX. – С. 12-13.

<sup>2</sup> صفاء، ضبيح الله. تاريخ ادبيات در ايران. جلد اول. – تهران: فردوس، 1385/2006. ص. 6  
<sup>3</sup> Болдырев З.Р. Коб, عبد الحسين. دو قرن سكوت. – تهران: شركت افست سهامی عام، 2536.  
А.Н.Отражение древних культурных традиций в классической лит-ре Ирана//История Иранского государства и культуры. К 2500-летию Иранского государства.-Москва: «Наука», 1971.-С. 250-261; Брагинский И.С. Иранское литературное наследие.-Москва: «Наука», 1984; Ҳам ӯ: От Авесты до Айни.-Душанбе: «Ирфон», 1981.-С. 44-47; Зоҳидов Н. Арабоязычный период персидско – таджикской литературы. VIII-IX вв.; Ҳам ӯ: Насри арабизабони форсу тоҷик дар асрҳои VIII-IX.; Ҳам ӯ: Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои VIII-IX давраи арабизабонӣ.

<sup>4</sup> ادب پارسی. قسمتی از کتاب فجر الاسلام. ترجمه عباس خلیلی // مهر، سال پنجم، ش. 5، صص. 449-457.

моџи ғурур ва ифтихор қарор дода, интиқол ва раванди созишу ситези равонии чомеаро бармало ва аз суннати адабии бособиқаи ҳамқавамони худ ба ғолибони аз чихати маънавӣ асиргаштаи худ огоҳӣ медоданд. Ин таъсиргузории адибони тозигӯи эронӣ тавре сурат мегирифт, ки арабҳо бо вучуди душманӣ ба мероси ғайриисломӣ чанбаҳои пешқадами ахлоқӣ, бадеӣ, тамсилӣ, тарбиявӣ ва хунарии ин гуна осорро зуд қабул мекарданд, зеро осори адабии шоирону адибони эронии тозигӯ ҳам аз нигоҳи сохтор ва ҳам аз нигоҳи мазмуну муҳтаво барои онҳо наву тоза ва ба ниёзҳои маънавияшон ҷавобгӯ буд. Масалан, Зиёди Аъҷам (ваф. 718), ки лақабаш баёнғари эронӣ будани ӯст, аз нахустин шоирони ин ҷабҳаи идеологӣ будааст, ки бо истеъдоду хунари шоирии хеш гузаштаи дурахшони адабии ниёғони худро барои ҷаҳони ислом намоён месозад ва ин корномаи «эроният»-и ӯ бо зикри «танҳо чанд вожаву номҳои форсӣ»<sup>1</sup> дар осори ӯ хулоса намешавад. Агар ба ашъори ӯ диққат карда шавад, ӯ аз чизҳои дар ин маврид сухан мекунад, ки гӯёи афқору рӯҳи олии инсонӣ дар он замон, ки эрониян доштанд, мебошад. Ашъори зерини ӯ барои имрӯз ҳам аз арзиши баланди маънавӣ ва ватандӯстӣ бархурдор ва бозгӯкунандаи маънавиёти қавми мо дар баробари арабҳои бадавӣ мебошад:

تغنى انت فى ذمى وعهدى  
 و ذمه والدى ان لم تطارى  
 و بينك اصلحيه ولا تخافى  
 على صفر مزغبة صغار  
 فانك كلما غنيت صوتاً  
 ذكرت احبتى و ذكرت دارى  
 فاما بقليلك طلبت ثارا  
 له نبأ لانك فى جوارى

Яъне: «Эй мурғ, тараннум кун, ту дар ҳимояти ман ва риояти падарам ҳастӣ. Ошёнаи худро обод кун, бар ҷўҷаҳои кўчаки зардранги тозаболи худ матарс, ҳар гоҳ ки ту тараннум мекунӣ, сомону ёрони худро ба ёд меоварам. Агар туро бикушанд, интиқоми туро хоҳам кашид, зеро ту ҳамсоя ва дар ҷавори ҳимояти ман ҳастӣ».

Бино ба шаҳодати муаллифи «Фаҷр-ул-ислом» Ҳабиб ибни Муҳаллаб чун ин шеърро шунид, мурғи ӯро кушт. Зиёд ҳам назди Муҳаллаб тазаллум кард ва Муҳаллаб ҳукми дияти мурғро содир намуд. Оё чунин шуур ва эҳсосе, ки миёни аъроб собиқа надошт, ҷадид намебошад, шояд ақидаи Монӣ, ки нисбат ба ҳайвонот ирфоқ намуда, дар ин шеър ҳам асар дошта бошад»<sup>2</sup>. Чунин тафоҳур ва баёни азамати эроният дар ашъори шоирони ин аср ба суннат ва мавзӯи умда табдил ёфта буд, ки гузашта аз шоирони эрониясл ба

<sup>1</sup> Зоҳидӣ Н. Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои VIII-IX (давраи арабизабонӣ). – С.31.

<sup>2</sup> ادب پارسی. قسمتی از کتاب فجر الاسلام. ص. 451.

шоирони арабинажоди муқими қисматҳои шарқии хилофат сироят кард ва онон бо овардани мазмунҳои маҳаллӣ (яъне, Хуросону Эрон) тозагӣ ва писандидагии ашъорашонро таъмин менамуданд. Мо ин суннатро дар ашъори шоирон Тириммоҳ ибн Ҳақим (ваф. 718 м.), Кумайт ибн Зайд ал-Асади (679-734), Абӯнаҷми Рочиз (раҷазгӯ) ва Ҷарир (653-733), Фароздақ (641-732), ки дар Ироқ зиндагӣ мекарданд, Нуҳор ибни Тавсиъа ва Собит ибни Қитна ва Ибни Муфарриғи Ҳимярӣ ва Муғира ибни Ҳино ва дигарон, ки дар Хуросон мезистанд, мушоҳида мекунем, ки муҳити адабии он сарзаминҳо дар афкори тахайюли онҳо комилан ошкор будааст<sup>1</sup>.

Роҳи дигари нуфузи рӯи эронӣ ва адаби форсӣ бар арабҳоро дар хилоли навиштаҳои арабии нависандагоне метавон пайдо кард, ки огоҳона аз калимаву таъбирҳои форсӣ истифода менамуданд. Эронӣён бо собиқай илмие, ки дар нигориши фарҳангномаҳо, тадвини вожаномаҳо ба тартиби алифбо доштанд, ба фарҳанг-нигории арабӣ таъсир гузоштанд ва шумори бештари калимаҳои форсӣ бино бар зарурату эҳтиёҷи баамаломата вориди забони арабӣ гардиданд, ки ҳатто шоирону адибони касбӣ аз ин вожаҳо истифода мекарданд. Аз нахустин фарҳангномаи тафсирии забони арабӣ «Китоб-ул-айн» мансуб ба қалами Абӯабдуллоҳи Халил ибни Аҳмади Фароҳидӣ-арӯздони машхур пайдост, ки вожаҳои форсии дарӣ дар нахустин қарни ислом (муаллиф байни солҳои 100-170 ҳ.к. (719-797 м. зистааст) дар истифодаи шоирони араб будааст.

Дар шеъри шоирони садри ислом омадани калимаву таъбирҳои форсӣ аз чанд ҷиҳат дорои аҳаммияти адабист. Аввалан ин калимаву ҷумлаҳои иқтибосшуда бо санадҳои маълум аз нигоҳи таърихӣ қадимтар аз намунаҳои шеърии форсии дари бадастомада ва ҳатто аз баъзе матнҳои паҳлавии маҳфузмонда мебошанд. Ин вожаҳо аз лиҳози сохтор ва шаклҳои боқимондашон ҳам дархури омӯзиш барои таърихи забони адабии форсии тоҷикӣ буда, бисёр муфиду судманд ва аз ғаниматҳои забон мебошанд. Сониян, ин даста вожаҳои дахил дар забони арабӣ ва хоса дар шеър ва матнҳои бадеӣ баёнгарии возеҳу равшани нуфузу афкори оро ва маънавиёту фарҳанги пешрафтаи эрониянд, ки арабҳои «ғолиб» аз пазириши онҳо ногузир буданд.

Таълифи фарҳангномаҳои тафсирий ба забони арабӣ дар ҳамин давра ривож ёфта, чунин навъи китобҳоро маъмулан «муъҷам» унвон мекарданд, ки яке аз маъноҳои ин калима «китоби луғат, фарҳанги ҳуруфи таҳачҷӣ»<sup>2</sup> мебошад. Дар ин давра ин навъи фарҳангномаҳо, ки дорои алфози форсӣ бошанд, зиёд таълиф шудаанд, ки баъзе онҳо махсуси вожаҳои дахили арабиянд, ки аз унвонашон ҳам ин матлаб ошкор аст.

<sup>1</sup> ادب پارسی. ص. 452.

<sup>2</sup> معین، محمد. فرهنگ فارسی. جلد 3. چاپ 23. - تهران: امیر کبیر، 1385. ص. 4223.

Муҳимтарини ин навъи асарҳо: «Китоб-ул-чим»-и Абӯамри Шайбонӣ (206-294/822-907) «Ғариб-ул-мусанниф»-и Абӯубайд Қосим ибни Саллом (ваф. 224/839), «Ҷамҳарат-ул-луғат»-и Ибни Дурайд (223-321/839-937), «Мақоис-ул-луғат»-и Ибни Форис (ваф. 350/961м), «Девон-ул-адаб»-и Форобӣ (ваф. 350/961м), «Таҳзиб-ул-луғат»-и Азҳарӣ (282-370/895-981 м.), «Ал-муҳит»-и Ибни Аббод (326-385/938-995), «Ал-бореъ»-и Абӯалии Қорӣ Бағдодӣ (288-356/901-967) ва «Сихоҳ»-и Исмоил ибни Ҳаммоди Ҷавҳарӣ (332-393-97/944-1003-1007) ҳастанд, ки то охири асри X таълиф шудаанд. Як қарн баъд Абӯмансури Ҷаволиқӣ «Ал-муарраб мин каломи-л-аъҷамӣ ило ҳуруфи-л-муъаҷҷам»-ро барои ҳамин мавзӯ ихтисос дод, ки арзиши адабии бештареро дорост ва муҳаққиқони ин риштаро аз ҷустуҷӯи калимаҳои форсӣ дар анбӯҳи китобҳои навишташуда ба забони арабӣ то ҳудуди зиёде бениёз мекунад<sup>1</sup>. Бо вучуди ин, «Китоб-ул-айн» аз ҳайси замони таълиф аз ҳамаи ин фарҳангҳо пештар буда, табъан асолати бештар дорад, зеро он чи дар навиштаҳои Халил ибни Аҳмад омадааст, дар китоби Ҷаволиқӣ наметавон ёфт<sup>2</sup>. Муҳаққиқон шеваҳои тасарруфи аъроб дар калимаҳои бегонаро таҳқиқу баррасӣ ва муҳимтарин тағйироти овоии аз забони матлаб ба забони мақсадро муайян карда, заминаҳои маъноии вуруди вожаҳоро нишон дода, эълон доштаанд, ки табиати забони арабӣ онҳоро иваз ва сохторашонро мутобиқи қоидаҳои забони арабӣ тасриф намудааст. Муҳимтарин тағйироте, ки ҳангоми арабӣ кардани калимаҳои форсӣ дар ҳамон ибтидои вуқӯи ин ҳодисаи адабиву фарҳангӣ ба амал омада буд, ба ин тарз аст:

- табдили ҳарфи п (پ) ба ф (ف) мисли «пирӯза» ба «фирӯзач» ё «паранд» ба «фаранд»;

- табдили ҳарфи г (گ) ба ч (ج) мисли «огур» ба «очур» ё «гавхар» ба «чавхар»;

- табдили ҳарфи к (ك) ба қ (ق) мисли «кавола» ба «ҷаволиқ»;

- табдили ҳарфи д (د) ба з (ذ) мисли «устод» ба «устоз», «полуда» ба «фолузач»;

- табдили ҳарфи ш (ش) ба с (ص) мисли «Шопур» ба «Собур», «Нишобур» ба «Нисобур»;

- табдили ҳарфи т (ت) ба т (ط) мисли «тоба» ба «табақ», «танбӯр» ба «танбӯр» – бо т-и итқӣ;

- табдили ч (چ) ба с (س) «чироғ» ба «сироч», «Чин» ба «Син»;

<sup>1</sup> زرقانی، سید مهدی. کلمات فارسی در قدیم ترین فرهنگنامه عربی // جستارهای ادبی. مجله علمی پژوهشی، شماره چهارم، زمستان 1389. ص. 112

<sup>2</sup> زرقانی، سید مهدی. کلمات فارسی در قدیم ترین فرهنگنامه عربی // جستارهای ادبی. مجله علمی پژوهشی، شماره چهارم، زمستان 1389. ص. 112

- агар калимаи форсӣ ба ҳои ғайрималфуз (ه)хатм шавад, ба ч (ج) ё қ (ق)табдил мешуд, мисли «бунафша» ба «бунафсач»<sup>1</sup>, «канда» ба «хандак».

Роҳҳои тағйироти калимаҳои форсиро дар забони арабӣ муҳаққиқони муосир чунин ошкор кардаанд, ки ба талаффузу савти арабҳо мутобиқат кунад:

- аз ибтидо, васат ва поёни калимаи бегона ҳарфҳои ҳазф мекунад, мисли «мористон» дар «бемористон»;

- ҳарфҳои бар калимаи бегона меафзоянд, мисли «фанзач» дар «панча»;

- ҳарфҳои ба ҳарфҳои дигар табдил мекунад, масалан н(ن) ва р(ر)-ро ба л(ل); г(گ)-ро ба ч(ج); к(ك)-ро ба қ(ق); х(خ)-ро ба ҳ(ح); п(پ)-ро ба ф(ف) ё б(ب); ч(چ)-ро ба с(س) ё ш(ش); с(س)-ро ба с(ص); т(ت)-ро ба т(ط); алифҳо ба ʿ(ع) ё ҳ(ح); ш(ش)-ро ба з(ض); з(ز)-ро ба з(ذ); ва мавридҳои бисёри дигаре, ки қоидаи хос ҳам надорад.

- ба охири калимоти муарраб ч(ج) ё қ(ق) меафзоянд ва ин қоида роғлибан дар калимоте, ки ба ҳои ғайрималфуз(ه) хатм мешавад, эъмол мекунад;

- мумкин аст як калимаро ба як ё чанд сурат муарраб созанд ва онро аз сурати аслии худ кам ё зиёд дур кунанд;

- гоҳе калимаеро муарраб мекунад ва сипас аз сурати муаррабшуда сифаҳои феълий месозанд ва гоҳе ҳам афъолро аз ҳамон калимоти бегона муштақ мекунад, масалан аз калимаи «зинҳор» - и форсӣ феъли «занҳара», «юзанҳиру»-ро сохтаанд<sup>2</sup>. Муаллифи мақолаи «Калимоти форсӣ дар нахустин фарҳангномаи арабӣ» пас аз мутолиа ва таҳлили ҳашт ҷилди «Китоб-ул-айн»-и Халил ибни Аҳмади Фароҳидӣ<sup>3</sup> аз хилоли анбӯҳи калимаҳои арабӣ 52 калимаи форсияласро ҷудо ва пас аз овардани тафсири муаллифи «Китоб-ул-айн» барои шинохти маънои дурусту саҳеҳи калимаҳо онҳоро бо ду маъҳази қадимии луғатҳои тафсирий: «Ал-муъарраб мин ал-каломи-л-аъҷамӣ ило ҳуруфи-л-муъаҷҷам»-и Абӯмансури Ҷаволиқӣ (чопи Қоҳира, 1995), «Лисон-ул-араб»-и Ибни Манзур (Бейрут, 2005) ва се фарҳангномаи муосир: «Ал-алфоз-ал-форисия ал-муаррабата» асари Аддӣ Шер (Бейрут, 1907), «Муъҷам-ул-муаррабат ал-форисия» - навиштаи Муҳаммад Алтунҷӣ (Бейрут, 1998), ва «Ал-муарраб ва - даҳил фӣ маъҷим ил-арабия» асари Наср Алӣ Ҷаҳина (Димишқ, 2001) муқоиса ва таҳқиқ намудааст.

<sup>1</sup> بيضون، لبيب. الكلمات الفارسيّة في اللغة العربيّة. الطبع الثانيّة. دمشق: مطبعة ابن زيدون، 2004. به نقل از زرّقاني، صص. 112-113.

<sup>2</sup> اذى شير، الافاظ الفارسيّة في العربيّة. - بيروت: المطبعة الكاتوليكية للاباء اليسوعيين، 1907؛ همچنين التنجي، محمد. المعجم المعرّبات الفارسيّة. - بيروت: مكتبة لينات ناشرون، 1998؛ به نقل از زرّقاني، صص. 113-113.

<sup>3</sup> فراهيدي، ابو عبدالرحمان خليل ابن احمد. كتاب العين. تحقيق مهدي مخدومي و ابراهم سامراي. جلد هاي 1-8. - قم: دار الهجرت، 1405.

Аҳаммияти адабии ин калимаҳои форсӣ дар он аст, ки бештари онҳо шоҳиди намунаҳои шеърӣ ва дар шеър вазифаи бадеӣ ва зебоии каломро таъмин намудаанд ва онҳо дар радифи калимаҳои зиёди дигаре, ки дар дигар фарҳангномаҳо омадаанд, дар заминаҳои анвои хӯрданиҳо, лавозими манзил, меваҳо, гиёҳҳо, либосҳо, номи маконҳо, маводи маъданӣ, сангҳои қиматбаҳо, ҳайвоноту парандагон, воситаҳои тафреҳ ва саргармӣ, абзор ва истилоҳоти пизишкӣ, рангҳо, абзорҳои ҷангӣ, исмҳои хос мебошанд, ки собиқаи истифодаи қисме аз онҳо то даврони ҷоҳилият пеш меравад. Ҳамон гуна ки аз феҳристи ин вожаҳо бармеояд, ҳамаи онҳо дар асоси ғӯиши дари забон вориди забони арабӣ шудаанд, ки баъдан ба унвони забони расмӣ ва умумии қавмҳои гуногуни эронӣ гардид.

Аз тафсиру тавзеҳи вожаҳо бармеояд, ки пояи дониши Халил ибни Аҳмад дар мутолиоти забоншиносӣ кам аз дониши арӯзии ӯ набудааст. Феҳристи ин вожаҳо ба тартиби алифбои форсӣ чунин аст: Ох/ахах/ах, андоза/ҳандоза, айвон/ивон бодинҷон/албозинҷон, боша/албошак, бахт/албахт, бут/албуд, барбат/албарбат, банча (панча) /алфанзач, баҳор/албаҳор, пудина/алфузинач, алфутинач, пайк/алфайч, панҷараҳо/банҷарақот/банҷарақот, тарез/тарез (бо итқӣ), тарак/тарха, Таҳмурас / Тахмурас, ҷум (جُم), хусбон, хурангез / хаварнақ, хушкнон, хавед /хез, алхед, дирам /дирҳам, далла /ман накар/ибни мақраз, Дамованд/Данбованд, даҳ/деҳ – ба маънои хунбаҳо, дубуд/дуабуз/дуёбуз – ҷомае, ки бо ду пуд бофта шудааст, раса/арраса – чизе шабеҳи моҳии кӯчак, ки дар наҳрҳои Басра ёфт мешавад, рӯина/фувваҳ – гиёҳест, ки дар рангразӣ истифода мешавад, зандиқ, зер/аззер – касе, ки бо занон фаровон нишасту барҳост мекунад, сангу гил/сиччил, саҳт/ассаҳт, сарҳора/алмидрӣ – сие, ки занон барои зинат ба мӯй зананд, сарв, саън, самсор, сӯҳон, шоҳин, Шарвин, Аттазар – вожаи хеле қадимӣ аз форсии бостон – тачард – хонаи тобистонист, коғаз – Халил Аҳмад онро вожаи хуросонӣ навиштааст, кашхон, карбос – порчаи матоъ, кӯс – се маъно: ҷӯби андозагирии наҷҷорон, сепоя истодани чорпоён, ба маънии ғарқ; мормоҳӣ, нарғис, нарм, насрин/настаран, нишастач, ҳашт абир/хуштунбур, ҳеч – на ҳеч – нуч, ёрҷон/яраҷ – зевари даст. Дар тавзеҳи ҷандин вожа аз ашъори шоирони қадими араб шоҳид овардааст, ки баёнгари вуруди баъзе аз калимаҳо то давраи ислом мебошад. Бо густариши ислом ва иртиботи забонҳои арабӣ ва форсӣ доираи нуфузи охири ба таркиби луғавии забони расмӣ хеле васеъ гардид ва тамоми сатҳҳои зиндагии мардуми араби қарни нахустини ҳамзистии арабу аҷамро фаро гирифт.

Вале ҳузури вожаҳои форсӣ дар ашъори шуарои арабинависи эронӣ ва ғайриэронӣ дар он даврони «сукут» нишони зинда будани рӯҳи эронӣ дар ҷомеаи тозазухури гуногунқавм мебошад, ки дар ин маврид форсиёти ашъори Абӯнӯвос хеле машҳур ва дархури тааммул аст. Аз он ҷо, ки ин шоири эронинаҷоди арабинавис ба соли 813 ё 815



масехӣ даргузаштааст, осори ӯ бо қидмати ҳифзи вожа, таъбир ва чумлаҳои форсии дарӣ дорои аҳаммияти хос аст, зеро намунаҳои шеъри китобии то ба рӯзгори мо расида бештарашон аз ин таърих ба баъд мебошанд.

Дар бораи форсиёти ашъори Абӯнӯвос аксари муаррихони таърихи адабиёти араб ва форсӣ ишоратҳо кардаанд<sup>1</sup>, вале дар ин бора бори нахуст дар «Таърихи Систон» ишорат шудааст: Муаллифи «Таърихи Систон» ҳикоят мекунад, ки дар мадҳи Яъқуб ибни Лайси Саффорӣ Муҳаммад ибни Васифи Сигзӣ, Бассоми Курд ва дигарон ашъори форсӣ сурудан гирифтанд, сипас мегӯяд: «Пас аз он ҳар касе тариқи шеър гуфтан баргирифтанд. Аммо ибтидо инон буданд ва кас ба забони порсӣ шеър ёд накарда буд, илло Абӯнӯвос, ки миёни шеъри хеш сухани порсии танзро ёд карда буд»<sup>2</sup>.

Он чи Абӯнӯвосро ба истифода аз таъбир ва вожагони форсӣ водоштааст, се омил метавонад бошад, ки имрӯз дар илм равшан шудааст. Нахуст он аст, ки Абӯнӯвос «нимаэронӣ буд, яъне, модараш зане аз аҳли Аҳвоз буд ва форсӣ донишманди ӯ агар ба ҳамин сабаб буда бошад, бас аст»<sup>3</sup>, дигар он ки ӯ дар Басра мезист ва аҳолии ин шаҳр дар он замон форсигӯ ва форсихон буданд ва сеюм он аст, ки ӯ маддоҳи Оли Бармак – сулолаи вазирони эронитабори халифаҳои Аббосӣ (750-1258) буд, ки онҳо аз эрониҳо пуштибонӣ ва дар эҳёи суннатҳои давлатдорӣ, фарҳангӣ ва адабии гузаштаи эронӣ баъд аз ислом хидматҳои зиёде кардаанд, ки дар шеъри форсӣ ва арабӣ ба ҳиммат, саховат, адолат ва чавонмардӣ тамсил шуда буданд. Ашъори дорои форсиёти Абӯнӯвос аз чинси ашъори халқӣ ва содаву танзомез суруда шудаанд, ки шояд аз осори шифоҳии мардумӣ баҳра бурда бошад:

*Ё госил - ат-турҷаҳор\**  
*Лилхандарис-ил-иқор...*  
*Ё нарҷисӣ ва баҳорӣ,*  
*Бидеҳ маро як боре.*

Ин хусусияти ашъори шоирро муҳаққиқони осори ӯ хеле пештар таъкид кардаанд ва нахустин ҷомеаи девони ӯ Ҳамзаи Исфаҳонӣ – муаллифи китоби машҳури «Ал-ағонӣ» ҳангоми тадвини ашъор шеърҳои дорои калима ва таъбирҳои форсиро таҳти унвони «Форсиёт» ҷудо овардааст ва тибқи таҳқиқи Мучтабо Минавӣ дар яке аз нусхаҳои девони шоир мавҷуд дар китобхонаҳои Туркия (таҳти

<sup>1</sup>Зоҳидӣ, Н. Адабиёти форсу тоҷик дар асри VIII-IX (давраи арабизабонӣ). –С.37; صفا، ضبيح الله. تاريخ ادبيات در ايران. جلد اول. – ص. 191.

<sup>2</sup> تاريخ سيستان. بکوشش ملک الشعرا بهار. – تهران: کلاله خاور، 1314. ص. 212.

<sup>3</sup>مينوی، مجتبی. یکی از فارسیات ابونواس//دانشکده ادبیات دانشگاه – تهران، سال اول. – ص. 65.

\*Турҷаҳор – қадаҳи шароб.

шумораи 3775, китобхонаи Фотех) тавзеҳе ҳам ба забони арабӣ барои вожаҳои форсии мустаъмал дар девони Абӯнӯвос аз Ҳамзаи Исфакҳонӣ мавҷуд аст, ки Минавӣ қасидаи синия, тавзеҳи он ва таълиқоти хешро дар мақолаи «Яке аз форсиёти Абӯнӯвос»<sup>1</sup> овардааст. Аз шарҳи Ҳамзаи Исфакҳонӣ ва тавзеҳу ташреҳи Минавӣ чунин бармеояд, ки истифодаи калимоти форсӣ дар замони Абӯнӯвос роиҷ ва маъмул бошад ҳам, калима ва ибораҳои, ки ӯ дар ашъораш истифода кардааст, барои арабҳои он замон қобили фаҳм набудааст, ки ниёз ба тавзеҳу ташреҳи онҳо вучуд доштааст.

Дар ҳамин давра дар осори ҳакимону донишмандони риштаҳои дигари илм ҳам форсиёт истифода мешуд. Бояд зикр намоем, ки зарурати он дар илмҳои дигар, ҷуз адабиёт, бештар ба назар мерасад. Зарурати истифода аз калимаҳои форсӣ дар матнҳои фикҳӣ ва ирфонӣ барои баёни дақиқи масъалаҳои назарӣ ва амалии соҳаҳои ёдшуда сурат гирифтааст. Баёни ин мавзӯро дар мисоли эҷодиёти ҳакиму орифи машҳури давр Ҳаким Тирмизӣ (755-869) пайгирӣ менамоем, ки бар рағми сӯфиёни машҳур, ки аз навиштан парҳез доштанд, осори зиёде ба забони арабӣ боқӣ гузоштааст. Мулоҳизоти мо дар ин замина дар мабноси навишта ва мисолҳои оварда дар мақолаи Муҳаммадалии Муваҳҳид «Форсиёт дар мутуни тозӣ»<sup>2</sup> хоҳад буд. Агарчи сурати чопи баъзе калимаҳои форсӣ ғалатанд, (зеро асли дастхатти китобҳо дар дастраси муаллифи мақола набудааст), вале аз он ҷо ки худи Ҳаким шакли арабии калимаҳоро овардааст, муаллифи мақола онҳоро қиёсан тасҳеҳ намуудааст.

Ҳоло муҳим он аст, ки аз замони ибтидои интишори афкори фикҳии исломӣ ба забони арабӣ дар баёни матолиби дақиқи фикҳӣ Ҳаким Тирмизӣ аз забони модарии хеш барои ҳамқаवмони худ истифода кардааст. Вучуди ин калимаҳо дар он даврони «сукут»-и забони форсии тоҷикӣ барои мо ғанимати боарзиши адабӣ, илмӣ, таърихӣ ва ниҳоят далели исботи аслу маншаи мовароуннахрӣ доштани забони дари роиҷ дар давраҳои баъди ро мерасонад, зеро забони гузаштагони Ҳаким Тирмизӣ мантиқан суғдӣ бояд бошад. Вале ташаккули забони форсии дарӣ дар ин замон ҷараён дошт ва он забони умумии мардумони Осиёи Миёна ва Хуросон гардида буд. Вожаҳои форсии дар осори арабии Ҳаким Тирмизӣ истифодашударо ба чор даста тақсим кардан мумкин аст: 1) вожаҳои маъруф, ки имрӯз низ истифода мешаванд, мисли **подшоҳ**; 2) вожаҳои, ки дар адабиёти гузашта истифода шудаанд, вале имрӯз аз доираи истеъмол берун мондаанд, мисли **андарёб**; 3) вожаҳои, ки агарчи на дар осори мактуби гузашта истифода шудаанд ва на дар фарҳангҳои тафсирий аз онҳо ёд шудааст, вале дар ғӯиши мардум зиндаанд, мисли вожаи

1. Минуи, Мҷтӣ. یکی از فارسیات ابونواس. - صص. 62-77.

2. مؤحد، محمد علی. فارسیات متون تازی. // بنیاد موقوفات دکتر محمود افشار یزدی. گذشته و آینده فرهنگ و ادب ایران. گنجینه، 38. صص. 81-99.

**дошт** дар баробари вожаи **суботи** арабӣ. Мутаассифона, муаллифи мақола онро вожаи маҳчур хонда, «имрӯза мафҳумро, ки Ҳаким дар баробари он овардааст, аз даст дода ва корбурди дигаре пайдо кардаанд, масалан Ҳаким «дошт»-ро дар баробари «субот» -и арабӣ овардааст, ки имрӯз он маъниро дар зехн илқо намекунад: «Қола лаху қоил: ва мо афзал мо аъто ассилин? Қола асубот ва ҳува аддошт би-л-аъчамияти<sup>1</sup> ...». 4) Гурӯҳи вожагоне, ки дар гузашта ва имрӯз истифода нашудаанд, мисли вожаи **фарзад** – ба маънии «алаф», ки ба гумони мо шояд аз вожаҳои боқимондаи забонҳои бостонӣ ё миёнаи шарқии роиҷ дар минтақа бошад. Ҳаким Тирмизӣ барои тавзеҳи ин ё он мафҳуми арабӣ ва дақиқу равшан ифода намудани он мурочиат ба вожаҳои форсӣ мекунад ва барои баёни матлаби хеш баъзан аз ҳар ду забон мафҳумҳоеро дар баробари ҳам истифода менамояд. Намунаи ин ҳолат истифодаи вожаҳои **идрок** ва **андарёб** метавонад бошад, ки «ҳеч як аз ду калимаи форсӣ ва арабӣ вофӣ ба максуди Ҳаким нест. Ў дар мақоми баёни ин нукта аст, ки дарёфтани чизе мутаазаммини маънии шумул ва ихота бар он чиз аст. Зехни мудрик бояд битавонад бар мадрак муҳит гардад ва онро дар ҳитаи шумули худ дароварад. Тамоми иборати Ҳакимро дар ин бора мурур мекунем: «Ва аммо ад-динок фаҳува ал-аҳаз ва ҳува ал-андарёб би-л-аъчамияти ва ҳува би-л-ъарабияти ал-идрок: ал-иштимол. Фа аҳлил чанната анзуруна илайҳи ва ло таштамил абсораҳум ало мо яравна манху мин аззоҳирати. Фа аммо ал-ботини-л - фало қивам ло ҳад ало ан назар вало сабил илайҳи ва ҳува **ҳақарнаки** би-л-аъчамияти (**бечунагӣ** – бояд бошад, ки хато сабт шудааст) ва би-л-арабияти билокайфиятиҳи»<sup>2</sup>.

Ҳамин гуна, Ҳаким Тирмизӣ вожаҳои зиёди форсиро барои баёни матлаб ва дақиқу равшан ифода намудани он истеъмол кардааст, то ҷое, ки барои баъзе вожаҳои форсӣ муодили арабӣ пайдо накарда, онҳоро айнан ба форсӣ меорад, мисли вожаи **ком**, ки онро чунин тавзеҳ медиҳад, ки «он чизест шабеҳи нафс, вале ҳамон нест. Ширинии комро дар баробари ширинии Худованд мегузорад, ки аввалӣ болотарин лаззати дунё, дуввумӣ болотарин лаззати малакут аст»<sup>3</sup>.

Гузашта аз ин, Ҳаким гузориши хобҳои хеш ё дигаронро медиҳад, ки мазмуни онҳо ба форсӣ буда, айни ҷумлаи форсиро пас аз тавзеҳи арабии он меорад, мисли ҷумлаи зер: «Бадӣ напсандед ва дӯст доред нек»<sup>4</sup> (Ҳама ҷо ҳарфи д (د) дар шакли з (ذ) навишта шудааст. - М.Ш.). Маълум мешавад, ки воридоти қалбии ин орифи мутафаккир бо забони форсӣ сураат мегирифтааст, ки аз онҳо дар

<sup>1</sup> موحد، ص. 82.

<sup>2</sup> موحد، ص. 83.

<sup>3</sup> موحد، ص. 83.

<sup>4</sup> موحد، ص. 84.

хилоли навиштаҳояш дар осори шарҳиҳолии хеш «Бадви шонӣ Абиабдуллоҳ» (бо таҳқиқи Усмон Яҳё дар Бейрут, 1965 чоп шудааст) ва китоби «Ал-масоил ал-макнуна» (таҳқиқи Муҳаммад Иброҳими Ҷайш, Димишқ, 1980) бо ҷумлаву ибораҳои комили форсии тоҷикӣ мисли «Фаттакул субҳонал-Лоҳ қаҳон туро ҳаменигаранд», «Нигине ман туро додам», «Се чиз туро додам: Ҷалоли ман, азамати ман ва баҳои ман» ва ниҳоят бо чанд ҷумла ифодаи матлаб: «Эдун чизе ҳаме бибуд ва ҷамши (чунбиши) халқ ҳама аз вай, азамати парӣ, ҳама чизҳо аз вай баҳо саро (? шояд ба ҳар ду саро – М.Ш.) ҳама чизҳо аз вай нахуст фаро осмонҳо дидам уканда...»<sup>1</sup>. Форсиёти Ҳаким Тирмизӣ дар қарни сеvими ҳиҷрӣ/нуҳуми милодӣ нишон аз он медиҳад, ки забони форсӣ дар минтақаҳои Мовароуннаҳр забони зиндаи муомилаву муоширати мардум ва забони дар ҳоли таълиму китобат шудан будааст, ки мо аз ин давраи таърихи забонамон осори мактуб, хосса ба хатти арабӣ хеле кам дар даст дорем ва навиштаҳои форсии Ҳаким Тирмизӣ дар хилоли осори фаровони арабии ӯ аз ғаниматҳо ва нишони адабиёти қарни нуҳуми милодӣ ба забони форсии тоҷикист.

Дигар аз олимони арабинависи ин давра Абӯнастри Форобӣ (870-3-950) мебошад, ки дар навиштаҳои хеш аз вожаву таъбирҳои форсии тоҷикии замонаш истифода кардааст.

Вучуди калимаҳои форсӣ дар осори арабии илмии Форобӣ дар баробари масъалае, ки мавриди гуфтугӯи мост, ба чандин масъалаи дигар, мисли мансубияти миллии шахси донишманд ва хузуру густариши забони форсии дарӣ дар минтақаҳои дурдасти Осиёи Миёна дар он давра равшанӣ мебахшад ва аз далелҳои бисёр муътамад дар заминаҳои ёдшуда мебошанд. Аз он ҷо ки дар замону макони зода шудани Форобӣ осори дигар қавму миллатҳо вучуди камранге дошт, баъзе маъхазҳо ба тааллуқи ӯ ба наҷоди эронӣ таъкид кардаанд<sup>2</sup>.

Аз рӯзгори ин донишманди соҳибнуфузу таъсиргузор ва «муаллими сонӣ» ва омӯзгори ҷумла файласуфони олами ислом маълумоти чандон муваҷҷае нарасидааст. Он чи барои мо дар ин навишта мавриди тааммул аст, наҷоду забон, мансубияти қавмӣ ва таваҷҷуҳи ӯ ба забони форсии тоҷикӣ, ки дар замони ӯ ба мартабаи забони расмии давлатии Сомониён иртиқо ёфта буд, мебошад. Манбаъҳои, ки дар бораи ӯ маълумот медиҳанд, асосан аз қарни VII ҳ.қ./VIII м. ба баъд ва дар Сурияву Ироқу Миср –дур аз зодгоҳи

<sup>1</sup> موحد، ص. 85.

<sup>2</sup> ابن ابى أصيبعة، احمد بن قاسم (درگذشته 1269/668). عيون الانباء فى طبقات الاطباء. جلد 2. بکوشش محمد باسيل عيون الصويد. بيروت، 1419/1998. رضا داوری اردکانی. فارابی/دانشنامه ادب فارسی. جلد 4. تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1391. ص. 749؛

А. Афсаҳзод. Одамушшуаро Рӯдакӣ. –Душанбе: “Адиб”, 2008. –С 33; محیط طباطبای. زبان فارسی در آثار فارابی// بنیاد موقوفات دکتر محمود افشار یزدی. گذشته و آینده فرهنگ ادب ایران. گنجینه، 5. صص. 93-108.

Форобӣ навишта шудаанд ва табиист, ки холи аз иштибоҳот набудаанд, мисли достони дидори ӯ бо Сайфуддавла дар Шом, ки дар хамин замина муаллифони сарчашмаҳо аз ватани ӯ, забони ӯ ва дигар чузъиёти ҳаёташ зикр кардаанд. Ибни Халликон, Ибни Қифтӣ ва Ибни Абиусайбиъа аз қавли Соъиди Андалусӣ ва ривоёти ҳикоёти мардумӣ нақл ва ҳамон халои зиндагии ӯро, ки дар Шому Миср таваққуф карда буд, пур кардаанд. Агар навиштаҳои онҳо бо маъхазҳои қадимтар ва эронӣ муқоиса шавад, онҳо мисли ривоятҳои афсона ба назар меоянд, ки манбаъҳои қарнҳои XIV-XVI бар онҳо афзудаанд, ба ҷои он ки ислоҳ ё таҳқиқ шаванд<sup>1</sup>. Маълум аст, ки бо ғалабаи унсури бегона дар фазои маънавӣ ва фарҳангии Мовароуннаҳр ва фитнаи ғузу қарохитоиҳо ва салҷуқиҳову тегинҳо осори қарнҳои I-IV ҳичрии қ. / VII -X мелодӣ/ аз Мовароуннаҳр махв шуд, он чи навиштаҳои баъдӣ овардаанд, нақлу ривоят ва ҳикоёти мардумӣ дар бораи пешиниён мебошанд. Вақте муаллифони ёдшуда дар бораи Форобӣ менавиштанд, Фороб чузъи қаламрави муғул ва номи он Утрор ва бо Баласоғун ва Кошғар ҳамсоя ва яке аз пойгоҳҳои асосию муҳимми лашкари муғул барои ҳамла ба дохили Эронзамин гардида буд. Дар ҳоле ки дар давраи Сомониҳо Испечобу Фороб шаҳрҳои сарҳадии он давлат ба ҳисоб мерафтанд, «Испечоб маҳалли гирд омадани ғозиён ё муҷоҳидони роҳи дин буд (дар муқобили ақвоми муҷоҳиди турку муғул – М.Ш.) ва работҳои бисёре барои ин ғозиён дар он ҷо сохта шуда буд. Ин работҳо ба василаи мардуми Нахшабу Самарқанду Бухоро барои муҷоҳидони ҳамшаҳрии эшон бино гашта буд»<sup>2</sup>. Аз ҷумла Қаротегин, ки аз тарафи Наср ибни Аҳмади Сомонӣ (914-940) ҳокими Испечоб буд, работе ба номи худ сохта буд<sup>3</sup>. Бунёди работҳо дар Испечоб ба сабаби дар охири нуқта ҷой доштани он мавзё аз ҳудуди давлати Сомониён буд. Фороб ба фосилаи ду-се рӯз роҳ ба самти ғарбии Испечоб ва дар тарафи чапи дарёи Сир ҷой гирифта буд ва Васич зодгоҳи Абӯнаصري Форобӣ аз атбӯи он ба шумор меомад.

Дар «Ашқолу-л-олам»-и Абулқосим ибни Аҳмади Ҷайҳонӣ омадааст: «Аз Зайкат то Испечоб ҷаҳор манзил ва аз Испечоб то Осоникат ду манзил ва аз Осоникат то қасабаи Фороб ду манзили сабук. Ва Васич аз ҷониби ғарбии ҷӯй (яъне, аз дасти чапи дарёи Сир – М.Ш.) аст бар канори зертар аз қасабаи Пороб ва Пороб бар ҷониби шарқии ҷӯй (яъне, дасти ростии дарёи Сир – М.Ш.) ва миёни қасабаи Пороб ва ҷӯй ним фарсанг бошад»<sup>4</sup>. Дар охири асри IV ҳ.қ./X м. бо дарёфти иҷозат аз амири Сомонӣ қабилаҳои ғузу харлуҳ аз оби

<sup>1</sup> محیط طباطبای. زبان فارسی در آثار فارابی -ص. 93-108.

<sup>2</sup> المقدسی، شمس الدین ابو عبدالله محمد. احسن التقاسیم فی معرفة الاقالیم. (سال تألیف 986/375) – لیدن، 1906. – ص. 335

ص. محیط طباطبای. زبان فارسی در آثار فارابی. - ص. 95

<sup>3</sup> محیط طباطبای، ص. 96.

<sup>4</sup> جیهانی، ابوالقاسیم ابن احمد. اشکال العالم. ترجمه علی عبدالسلام کاتب. یا مقدمه و تعلیقات فیروز منصوری. – مشهد:

آستان قدس رضوی، بهشتی، 1368. ص. 100.

Сир гузашта, ба наздикии Васич сокин шуданд ва маҳалли зисти хешро ба тақлид аз мардуми бумӣ Сиютканд – таркибе туркӣ ва сугдӣ ном гузоштанд. Пас аз ҳамин давра зодгоҳи ба тағйироти этникӣ ва забонӣ дучор гардид, то ин ки дар замони Ибни Халликон (ваф. 681/1282) Қифтӣ ва Ибни Абиусайбиъа (ваф. 668 х.қ./1270) бо ишғоли муғулҳо он сарзамин куллан ба турку муғулу тоторнишин ба ҷои хоразмихову сугдиҳо, ки марзи Хуросонро ниғаҳбонӣ мекарданд, табдил гардид. «Ин таҳаввули вазъ, ки инъикоси он сесада сол баъд аз марги Форобӣ дар Димишқ мӯчиби иштибоҳи нависандагони Шомро дар мавриди аслу забон ва ҳатто ҷомаву сарпӯшу танпӯши ўро фароҳам карда, дар Хуросон хеле зудтар мардумро аз ин таҳаввули вазъ ошно сохта буд»<sup>1</sup>. Кор ба он ҷо расид, ки Абулҳасани Байҳақии Хуросонӣ Абӯнастри Форобиро аз Форёби Туркистон навишт, зеро қисмати ғарбии рӯди Сайхун ба тасарруфи туркони соҳили шарқӣ афтада буд<sup>2</sup>.

Аммо Ибни Абиусайбиъа бори аввал пеш аз номи Тархон исми Узлуғро дар силсилаи насаби ў илова мекунад ва Форобро шаҳри туркон дар Хуросон ва падарашро сардори лашкар ва форсинасаб мепиндорад: «Кона абуҳо қоидун чайши ва ҳува форисиюл-мунтасаб»<sup>3</sup>. Дар ҳамин ҷост, ки Ибни Халликон «ўро марде туркӣ... ба забони туркӣ сухан мегуфт... ба дарбори Сайфуддавла дар Димишқ «бар ў ҷомаи туркона даромад, ки либоси ҳамешагии ў буд»– менависад<sup>4</sup>.

Танҳо нуктае, ки аз ин маъхазҳо қобили қабул ва бидуни тардид аст, соли вафоти Форобӣ дар 339 х.қ. / 950 м. аст, ки он ҳам бо собиқаи замони аз «Танбеҳу-л-ишроф»-и Али ибни Хусайни Масъудӣ (ваф. 346) гирифта шудааст<sup>5</sup>. Дар китобҳои дар кишвари мо бачопрасида аз наҷоду забони ў ёд накарда<sup>6</sup>, дар китобҳои марҷаъ ўро «файласуфи бузурги олами ислом»<sup>7</sup>, «бузургтарин мутафаккири асримиёнагии Шарқ»<sup>8</sup> ва гуфтаҳои дигарон («бархе ўро турк» ва

<sup>1</sup> محیط طباطبایی، ص. 97.

<sup>2</sup> محیط طباطبایی، زبان فارسی در آثار فارابی // بنیاد موقوفات دکتر محمود افشار یزدی. گذشته و آینده فرهنگ و ادب ایران. گنجینه، 5. ص. 97.

<sup>3</sup> ابن ابی أصیبیعه، احمد بن قاسم (درگذشته 1269/668). عیون الانباء فی طبقات الاطباء. جلد 2، ص. 134. بکوشش محمد باسل عیون الصوید. بیروت، 1419/1998.

<sup>4</sup> محیط طباطبایی، ص. 97.

<sup>5</sup> مسعودی، علی ابن حسین. التنبيه والاشراف. بکوشش داخویه. لیدن، 1967.

<sup>6</sup> Зиёев И. Форобӣ // Энциклопедияи адабиёт ва санъат.- Душанбе, 2004.- С. 292; Афсаҳзод А. Одамушшуаро. Нашри дувум.- Душанбе: “Адиб”, 2008. – С. 310, 33-37.

<sup>7</sup> رضا داوری اردکانی. فارابی/دانشنامه زبان و ادب فارسی. جلد 4. – تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1391. – صص. 754-748.

<sup>8</sup> Гафуров Б.Г., Касимджанов А.Х. Ал-Фараби в истории культуры.- Москва: «Наука», 1975. – С.2.

баъзе «эронӣ») – ро такрор кардаанд<sup>1</sup>, вале муҳаққиқоне ба эронияти ӯ таъкид кардаанд<sup>2</sup>.

Чурҷӣ Зайдон ба таъсир, нуфуз ва сахми ӯ дар рушди улум баҳои баланд дода, ӯро «аслан эронӣ ва аз аҳолии Фороб» медонад<sup>3</sup>.

Форобу Васичу Испечоб номҳои ҷуғрофии зодгоҳи Форобӣ ҳадди ақал решаи суғдӣ доранд, ки то омадани қабилаҳои ғузу халлух дар қарни X ҳайате эронӣ доштанд ва ӯ худ аз забони форсии дарӣ, ки бо забонҳои роиҷи зодгоҳи ӯ хоразмӣ ва суғдӣ наздик буд, огоҳии комил дошт ва дар замони ӯ Сомониён онро ба дараҷаи забони расмии қаламрави хеш бардошта буданд, вале чун Форобӣ дар чихилсолағӣ ба Бағдод барои таҳсили илм рафта ва бино бар навиштаи Ибни Халликон «аз шаҳри худ берун омад ва ба гардишу сафар пардохт, то ба Бағдод расид. Ӯ забони туркӣ ва чанд забони дигарро илова ба арабӣ медонист ва арабиро дар Бағдод омӯхт ва онро ба дараҷаи итқон расонид»<sup>4</sup>. Муҳаққиқони осораш ӯро ба донишҷӯи се забони илму адаби он рӯзгор форсӣ, юнонӣ ва арабӣ ёд кардаанд<sup>5</sup>.

Асари Форобӣ «Китобу-л-хуруф», ки дар феҳристи китобҳои ӯ омадааст<sup>6</sup> ва он шарҳе бар китоби Арасту бо ҳамин ном буда<sup>7</sup>, дар Бейрут чоп шуда<sup>8</sup>, нусхае аз он, ки дар Китобхонаи Маҷлиси Шӯрои ҶИЭ маҳфуз аст, мавриди истифодаи устод Муҳити Таботабой қарор гирифта, мақолаи «Забони форсӣ дар осори Форобӣ» дар асоси ҳамон нусхаи хаттӣ таълиф шудааст<sup>9</sup>.

Мисолҳои, ки муаллифи мақола барои таъйиди то кучо забони форсиро донишҷӯи Форобӣ овардааст, нишон медиҳанд, ки ӯ аз кадом забонҳо огоҳӣ доштааст ва ба кадом андоза аз назокатҳои ин забонҳо маълумот дорад, дар байни ин забонҳо аз забони туркӣ (ҳеч мумкин нест, ки забони модарияш бошад ва боре аз он ёд наҷамояд) ёд накардааст, баръакс аз забони суғдӣ ёд мекунад (на аз хоразмӣ), ки шояд забони модарии Форобӣ бошад ё забони таълимии ӯ. Дар оғози китоб дар тавзеҳи ин اَنْ – ба забони арабӣ овардааст: ماَنْ – ина ба субот ва давом ва камол ва муҳкамии вучуд ва вусуқ дар илм ба ашъ аст. Ва он дар забони форсӣ гоҳе кофи максур (бо касра – М.Ш.) ки ك ва гоҳе кофи мафтух (бо фатҳа – М.Ш.) ка ك аст. Дар

<sup>1</sup>Ночӣ, Муҳаммадризо. Фарҳанг ва тамаддуни исломӣ дар қаламрави Сомониён. - Душанбе: «Эр-граф», 2011. –С. 1000-1001.

<sup>2</sup>صفا،ضبيح الله.تاريخ ادبيات در ايران. - ص.293-299.

<sup>3</sup>جارحى، زيدان. تاريخ تمدن اسلام. ترجمه و نگارش على جواهر كلام. - تهران: امير كبير، 1382. - ص.599.

<sup>4</sup>محيط طباطبايى، ص.68-99.

<sup>5</sup>محيط طباطبايى، ص.99.

<sup>6</sup>دانشنامه زبان و ادب فارسى. جلد 4. - تهران، 1391. ص.750.

<sup>7</sup>صفا،ضبيح الله.تاريخ ادبيات در ايران، - ص.294.

<sup>8</sup>الفارابى، ابونصر. كتب الحروف. بتحقيق و مقدمه محسن مهدى. - لبنان - بيروت، 1986.

<sup>9</sup>محيط طباطبايى، ص.99.

забони юнонӣ аз ин ҳам ошкортар аст: **ин** ان ва **авн** اون ва ҳарду барои таъкиданд<sup>1</sup>.

Ҳамон тавр ки дидем, аз забонҳои форсӣ, арабӣ, юнонӣ огоҳ будани худро эълон доштааст. Дар фасли ҳаштуми китоб дар мавриди –й (ى-и нисбат) мегӯяд: мансуб ба шаҳр ё чинс ва элу қабилае пеши ҳар тоифае ба алфозе таъбир мешавад ва ба суратҳои ҳамонанде дармеоянд, ки охири онҳо гоҳе ба як ҳарф мунтаҳӣ мешавад монанди он чи дар форсӣ ва арабӣ маъмул аст, ё-и нисбат ё ба ҳуруфе мепайванданд, ҳамчун юнонӣ. Ва дар ҳамин китоб мавқеи баҳс аз «**вучуд**» ва «**вичдон**» ва «**мавчуд**» ва таъриф ва тақсими он мегӯяд: «Ки ин лафзи «вучуд» дар пеши ҳар миллате аз он миллатҳо, ки дар ин маъноӣ онро ба кор мебаранд, маъруф аст: форсии он **ёфт** аст ва дар забони суғдӣ **фирд** ё **вирд** аст ва бад-он вучуд ва вичдонро дарк мекунанд ва **ёфта** ва **фирд** ва **вирд**, ки аз он мавҷудро ирода мекунанд ва дар ҳар як аз забонҳои дигар лафзе назири ҳамон чизе ба кор меравад, ки дар форсӣ ва суғдӣ вучуд дорад, монанди забони юнонӣ ва сурёнӣ ва ғайри он. Пас дар соири забонҳо монанди **форсӣ** ва **юнонӣ** ва **сурёнӣ** ва **суғдӣ** лафзест, ки онро дар мавриди далолат бар вучуди ҳама ашё ба кор мебаранд<sup>2</sup>. Ва дар мавриде, ки мехоҳад мавзӯро ба маҳмул рабт диҳад, меоварад: «Бидуни тасреҳ ба замони муайяне агар бихоҳанд онро рабт бидиҳанд, ба лафзе иродаи маънӣ кунанд, он лафз дар форсӣ **ҳаст** аст ва дар юнонӣ **астин** ва дар суғдӣ **астӣ** ва дар забонҳои дигар алфози дигаре ба ҷои он қарор мегирад...»<sup>3</sup>. Дар ҳамин мавзӯ дар идома дар бораи имкони забони форсӣ барои ифодаи мазмунҳои дақиқу назарии фалсафӣ ва маҳдудияти забони арабӣ барои ифодаи ин матлабҳо ва тарҷумаи осори фалсафӣ аз юнонӣ андеша меронад, иқтибоси баъдӣ агарчи дароз аст, вале барои нишон додани азамати забони форсӣ, ки аз ибтидои тасаллути арабҳо ба Эрон ва шояд пеш аз он бар он забон нуфуз дошт ва эронӣни арабинавис бар ғанои он афзуданд, ки Форобӣ намояндаи барҷастаи ин даста аз эронӣен аст, ки бино бар эътирофи худ арабҳо «дар мантиқ аз Киндӣ пеш рафт, дар фалсафа бисёр амиқ рафт, дар таҳлилу таҷзияи улум ва тариқай таълиму истифода аз улум таҳқиқоти судманде ба ҷо овард ва дар мавзӯҳои китоб навишт, ки пеш аз вай касе аз он хабар надошт»<sup>4</sup>, меоварем: «Агар бихоҳанд аз ин алфоз масдаре бисозанд, аз онҳо алфозе дигар муштак мекарданд ва ин лафзҳои муштакшударо монанди масдар ба кор мебаранд. Ҳамчун **инсон**, ки дар забони арабӣ тасриф ва масдар надорад, вале ҳар гоҳ бихоҳанд барои он масдаре бисозанд, **инсоният**-ро аз инсон муштак мекунанд ва ба ҳамин наҳв ба забонҳои

<sup>1</sup> محیط طباطبایی، ص. 99؛ الفارابی، ابونصر. کتب الحروف، ص. 61.

<sup>2</sup> محیط طباطبایی، ص. 100؛ الفارابی، ابونصر. کتب الحروف، ص. 111.

<sup>3</sup> محیط طباطبایی، ص. 100؛ الفارابی، ابونصر. کتب الحروف، ص. 112.

<sup>4</sup> جارجی، زیدان. تاریخ تمدن اسلام. ترجمه و نگارش علی جواهرکلام. – تهران: امیر کبیر، 1382. ص. 599.



дигар ҳам ҳамл мешавад. Мисли ин ки дар забони форсӣ вақте мехоҳанд аз **ҳаст** масдаре бисозанд, мегӯянд **ҳастӣ** ва ин таркиб бар масдари калимоте татбиқ мекунад, ки аз сарф ва тағйири шакл насибе надорад. Чунон ки **мардумро**, ки ба маънии инсон аст, **мардумӣ** мегӯянд, ки ба маънии **инсоният** аст». Бар забони арабӣ аз ибтидои вазъи луғот лафзе набуда, ки ба ҷои **ҳаст**-и забони форсӣ ва **астин**-и забони юнонӣ ва ҳамчунин барои назоири онҳо дар забонҳои дигар қарор гирад, дар сурате, ки дар улуми назарӣ ва синоъоти мантиқ чунин калимае мавриди эҳтиёҷи комил аст. Аз ин рӯ, вақте фалсафа ба забони юнонӣ тарҷума шуд ва файласуфоне, ки ба забони арабӣ сухан мегуфтанд, муҳтоҷ бад-он шуданд, ки маъонӣ ва мароҳили фалсафа ва мантиқро ба забони арабӣ таъбир кунанд ва аз оғози амр чунин лафзеро дар забони арабӣ наёфтанд, ки битавонад қоиммақоми **астини** юнонӣ ва **ҳаст**-и форсӣ дар мавриди истеъмоли худ бишавад. Бархе чунин андешидаанд, ки лафзи «**ҳува**» дар форсӣ **ҳаст** ва дар юнонӣ **астин** аст... Пас, дар забони арабӣ **ҳува**-ро ба ҷои **ҳаст**-и форсӣ ҳар ҷое ба кор мебаранд, ки форсиён ба истеъмоли **ҳаст** дар он ҷо эҳтиёҷ пайдо мекунанд ва аз он масдари **ҳувият** месозанд ва ин шакл дар забон ҳамонанди масдар барои ҳар илмест, ки дорои тасриф нест, ҳамчун **инсоният** аз **инсон** ва **ҳиморият** аз **ҳимор** ва **ручулият** аз **ричл**. Дастаи дигаре, ки ба ҷои **ҳаст** ва **астин** ва назоири он лафзи **вучуд**-ро ба ҷои **ҳувият** ба кор мебаранд, **вучудро** бо муштаққоти арабияш дар ҷое ба кор мебаранд, ки **ҳастӣ**-и форсӣ ва муштаққоти он ба кор меравад<sup>1</sup>. Аз он чи навишта шуд, бармеояд, ки фалсафа, мантиқ дар замони Форобӣ ба забонҳои форсии дарӣ ва суғдӣ тадрис мешудааст, забони омӯзишии «муаллими сонӣ» форсии дарӣ ва забони хонаводагии ӯ суғдӣ будааст. Забони форсии дарӣ дар замони ӯ забони таълиму тадрис, таълиф ва бо забони суғдӣ бисёр наздик ва ҳампоя будааст. Ҳамон гуна ки муаллифи «Ашкол-ул-олам» мегӯяд: «Забони аҳли Бухоро забони суғд(ӣ)-ст, магар андаке, ки аз он забон бигардад ва забони эшон дарист»<sup>2</sup>.

Хулоса, мақсуди тафсили ин мавзӯ ҳамин метавонад бошад, ки Форобӣ дар дунёи арабӣ аз забони қавми хеш фаромӯш накардааст ва дар замони эҳёи он тавассути хонадонҳои Тоҳириён, Саффориён ва Сомониён аз бартарии он бар забони ғолибон дар қалби хилофат сухан мегӯяд ва ин далел ба наҷоду забону қавми ӯст, ки худ ба забони худ ба мо мерасонад, бар хилофи муҳаққиқони осораш боре ҳам аз забони туркӣ ва ё калимае аз он забон зикр накардааст.

Форсиёти Абӯнастри Форобӣ агарчи дар давраи нашвунамои забон ва адаби форсӣ ба миён омадааст, боз ҳам дар ҷуғрофиёи забони арабӣ мисли форсиёти Абӯнӯвос ва Ҳаким Тирмизӣ садои

<sup>1</sup> محیط طباطبایی، صص. 101-102؛ الفارابی، ابونصر. کتب الحروف، ص. 114.  
<sup>2</sup> جبهانی، ابوالقاسم ابن احمد. اشکال العالم. ترجمه علی عبدالسلام کاتب. با مقدمه و تعلیقات فیروز منصوری. - مشهد: آستان قدس رضوی، بهشتی، 1368. - ص. 185.

қалби ўст, ки барои дифоъ аз забони модарии хеш ва ифтихор аз он ба қалам овардааст. Онро ба масобаи хушдоре барои насли ҳар давра барои ҳифз ва пойдории забон ва адаби форсии тоҷикӣ метавон қабул кард.

Роҳи сеюми нуфузу таъсири адаби форсӣ ба арабро метавон хузури суханони ҳикматомез ва андарз дар адабиёти арабӣ донист. Дар Эрони замони тасаллоти арабҳо пандномаҳо, андарзҳо ва суханони ҳақимону бузургону подшоҳону вазирони ботадбир зиёд паҳн ва дар байни мардум доир ва соир буданд. Ҷомеаи арабии исломӣ ба се асли маънавӣ устувор буд: нахуст дастуроти дин мисли оёти Қуръон, ҳадисҳои пайғамбар, бархе аз мабодии Тавроту Инчил ё амсолу суханони ҳикматноки Сулаймон; дувум фалсафаи Юнони бостон, ки дар давраи Банӣ Аббос тарҷума шуд ва ба эътирофи муҳаққиқон фалсафа, мантиқ, улуми риёзӣ, табиӣ, нучум, ҷуғрофӣ, ҳандасӣ ва ғ. барои арабҳо улуми дахил, яъне бегона буд<sup>1</sup>, аз тариқи эронӣ пазируфтанд; сеум достонҳои тамсилии хурд аз рӯзгору гуфтори подшоҳону вазирону донишмандони Эрон буд, ки барои арабҳо, ки ба завқу фаҳмашон мутобиқ ва мувофиқ ва бо ахлоқи исломии онҳо созиш дошт, ҳар чи бештар аз фалсафаи Юнон таъсиргузор буд, зеро баҳсу таҳқиқу тафаккур дар иллат ва мӯчиби ашъ ва ҳаводис хоси юнониён буда ва арабҳо тибқи балоғати хеш як ҷумла ё иборати балеғро дар ҳар мавзӯи хоси адаби арабӣ – шуҷоат, қарам, вафодорӣ ва ғ. ба таҳқиқу тафсили дуру дароз тарҷеҳ меоданд. Эронӣ аз ин гуна осори адабии мӯҷаз, пурмоя, мухтасар ва ҳикматомез ва баргирифта аз зиндагӣ зиёд доштанд, ки бештари онҳо ибтикороти худашон ва қисме аз адаби Ҳинди Бостон мисли «Қалила ва Димна», «Синдбоднома», «Достонҳои Бидпой» баргардон шуда буданд. Дар ҳамин давра буд, ки тавассути Ибни Муқаффаъ, ки номи эронӣ ӯ Рӯзбех писари Додбех аст, осори мазкур ва маҷмӯае аз ҳикоёту достонҳои кӯтоҳу ҳикматомез дар адаб ва таҷрибаҳои рӯзгор ба унвони «Ал-адаб-ус-сағир» ва «Ал-адаб-ул-кабир» таълиф гардид, ки дар густариши фазлу адаби эронӣ дар миёни арабҳо ҷойгоҳи хос доранд.

Албатта, пеш аз Ибни Муқаффаъ ин даста аз осори адабии эронӣ, суханони ҳикматнок дар гуфтори сӯфии номдор Ҳасани Басрӣ, бисёре калимоти порсӣ ҳам дар китоби «Уюн-ул-ахбор»-и Ибни Қутайба, «Сироч-ул-мулк»-и Тартуш ва китобҳои «Ат-тоҷ» ва «Ал-ақду-л-фарид»-и Ибни Абӯрабиҳ дар замони Банӣ Умайя (651-750) нақл шуда буданд<sup>2</sup>.

Суханони ҳикматомези бисёре аз бузургони Эрон – Бузургмеҳри Ҳаким, Парвиз ва Мӯбади Мӯбадон бо калимоти Аҳноф ибни Қайс,

---

<sup>1</sup> ارجحى، زيدان. تاريخ تمدن اسلام. - صص. 598-624.

<sup>2</sup> ادب پارسی. قسمتی از کتاب فجر الاسلام. ترجمه عباس خلیلی، صص. 439-581؛ Эмомалӣ Раҳмон.

Забони миллат – ҳастии миллат. – С.211-221.

Аксам ибни Сайфӣ (давраи чоҳилият), Рӯҳ ибни Заббоъ ва Имом Алӣ дар давраи ислом ба ҳам ба хотири мушобихат нисбат дода шудаанд. Ҳикматҳои эронӣ, ки бо вучуди кӯтоҳӣ дар худ маъниҳои бузургро гунҷонидаанд, дар китоби «Фачр-ул-ислом» омадаанд ва дар авони зуҳури адаби форсӣ ба адабиёти араб таъсир ва нуфуз доштанд, ки ба чанд намунаи он, ки ҳолӣ аз ғоида нест, иқтифо менамоем: Бузургмехр мегӯяд: «Чун дар ду чиз мутаҳаййир бимонӣ ва надонӣ кадом як беҳтар ба кор ояд, хуб фикр кун, ҳар кадом, ки ба ҳавои нафс наздиктар аст, аз он бипарҳез»<sup>1</sup>.

Парвиз ба фарзанди худ Шерӯя чунин навишт: «Мукофоти хиёнати кӯчакро кӯчак магир, зеро агар мардум ба гуноҳи кӯчак одат кунанд, аз гуноҳи бузург бим нахоҳанд дошт...»<sup>2</sup>.

Хусрав мегӯяд: Битарсед аз мардumi карими озода, гар гурусна шавад ва аз марди ҳасиси лаим, агар сер шавад<sup>3</sup>.

Ардашери Бобакон мегӯяд: Гӯш ба сутуҳ меояд ва дил малул мешавад. Ҳон, аз ҳастагии ину он бипарҳезед ва барои ҳар як аз он ду як наҳв ҳикмат ихтиёр кунед<sup>4</sup>.

Вале ин таъсири нуфуз мунҳасир ба адабу ахлоқ нест. Дар Эрони давраи сосонӣ шеър мусиқӣ бо ҳам дар қолаби ҳунари воҳид арза мегардид ва хусусиёти синкретикии ин ҳунар ҳанӯз барҷо ва муаллифи матни сурудҳо ҳуди хунёгарон буданд<sup>5</sup>. Инчунин анвои (жанрҳои) омехта дар ҳамин замина вучуд доштанд, ки баёнгари вучуди воҳиди ин ду ҳунар дар он замон ва идомаи он дар замони тасаллути арабҳо ва ҳатто то замони устод Рӯдакӣ равшан ба назар мерасад<sup>6</sup>.

Пеши роҳи нуфузи шеър оҳанги форсиро бар арабҳои «ғолиб»-и он замон на шамшер ва на мумониати шариати тозазуҳур тавонист бигирад. Маъхазҳо аз навозанда ва сарояндаи мумтози ин давра Саъид ибни Мусачҷаҳ дар рӯзгори Муовия хабар додаанд, ки овозҳо ва лаҳнҳои хешро бар оҳангҳои эронӣ бунёд ниҳода ва аз бузургони ин фан буд<sup>7</sup>.

Саъид ибни Мусачҷаҳ банде буд, ки рӯзе овози пуршӯр ва дилпазире месарояд ва хочааш онро меписандад ва чун мебинад, ки аз оҳангҳои араб муғойират дорад, пурсид, ки ин овозро аз кучо омӯхтӣ? Ӯ посух дод, ки ин оҳанги порсӣ аст ва ман шунидаам ва

1 ادب پارسی. - ص. 456.

2 ادب پارسی. - ص. 456.

3 ادب پارسی. - ص. 456.

4 ادب پارسی. - ص. 456.

<sup>5</sup>Сатторзода, Абдунабӣ. Шеър дар аҳди Борбад//Рӯдакӣ: Дирӯз ва имрӯз. (маҷ. мақолот). – Душанбе: “Дониш”, 2007.-С. 319.

<sup>6</sup>Дар бораи ривочи ин суннат дар давраи мавриди гуфтугӯи мо ниг. Аскарали Раджабов. Музыкальная культура эпоха Хакима Тирмизи и ее классические истоки//Историко – культурные традиции эпохи Хакима Тирмизи и ее значение в мировой цивилизации. – Душанбе: «Дониш», 2016.-С. 181-212.

7 ادب پارسی. - ص. 577.

онро ба арабӣ нақл кардаам. Хочаро хуш омад ва ўро озод кард. Пас аз озодӣ дар Макка монд ва ба хунёгарӣ машғул буд<sup>1</sup>. Овардаанд, ки рӯзе аз назди бинои хонаи Каъба, ки дар он гурӯҳи эронӣ ба гилкорӣ машғул буданд, мегузашт ва аз онҳо овозҳоеро, ки ҳангоми кор тараннум мекарданд, шунид ва чизҳоеро ба ҳамон шева ба арабӣ сохт, ки барои арабҳо писанд буд<sup>2</sup>. Ў нахустин касе буд, ки лаҳну нағмаи арабиро бар мабнои мусиқии ғаниву бесобикаи эронӣ ташаккул дод ва бо сафарҳое ба Эрон ва Шом таркиби мусиқии эронӣ ва румиро вориди мусиқии араб намуд ва навохтани барбатро омӯхт ва дар натиҷа ин равишро барои ҳунармандони араб умумӣ ва мардумӣ кард.

Ривояти дигар дар ин маврид он аст, ки «Сафвони Чумаҳӣ аз падари худ нақл мекунад, ки нахустин касе, ки мусиқиро аз эронӣ аҳз ва иқтибос намуд, Саъид ибни Мусаччаҳ– бандаи Банӣ Махзум буд. Чун Муовия ибни Абисуфён кохи худро барпо намуд, банноҳои эрониро ба кор водошт. Онҳо ҳам қасри ўро бо ғач ва очур сохтанд ва ҳангоми кор ба нағмаи порсӣ тараннум мекарданд. Саъид ибни Мусаччаҳ барои омӯхтани нағмоти эронӣ ҳамарӯза назди онҳо рафта, лаҳни тоза меомӯхт. Ҳар чиро ки меписандид, ба арабӣ нақл карда, мувофиқи он шеър месуруд...»<sup>3</sup>.

Ҳамзаи Исфохонӣ дар ҷои дигар муассиси мусиқии арабро Ибни Муҳарриз – фарзанди яке аз калиддорони Каъба медонад, ки ў ирқан эронӣ будааст. Гоҳе дар Макка ва замоне дар Мадина зиста, нағмаҳои эрониро бар матнҳои арабӣ татбиқ мекардааст. Аз тамоми нағмаҳои бадастovarдааш аз сафар ба Эрон ва Шом алҳони арабиро эҷод менамояд ва аз ин рӯ, мулаққаб ба «Санноҷ-ул-арабӣ» гардид ва ў нахустин касе буд, ки ҳар як аз овозҳоро ба ду байт меҳонда, ки як байтро барои адои савти комил кофӣ намедонистааст<sup>4</sup>.

Ибни Хурдодбеҳ мусиқии арабро бунёдгузоштаи яке аз ғуломони Абдуллоҳ ибни Омир, ки аз дарбориёни Хусрав буда, медонад<sup>5</sup>. Аз ҳамаи ин навиштаҳо маълум мешавад, ки эронӣҳо дар тамоми умури сиёсӣ, лашкарӣ, девонӣ, фарҳангӣ, меъморий ва шеърӣ мусиқии арабҳо таъсиру нуфузи намоён доштаанд. Вале ин ҷо сухан аз адабиёт ва шеърӣ назм аст. Аз таҳқиқу баррасиҳо дар мусиқӣ ва шеърӣ қадими эронӣ маълум аст, ки дар давраи тасаллути арабҳо бар Эрон мусиқии касбии мардуми эронӣ маҳдуд ба оҳанг набудааст. Мусиқии эронӣ дар замони сосониҳо ба шеърӣ шоирӣ тавҷам ва муаллифи матни суруд ва оҳанг як ҳунарманд будааст ва ин суннат аз замони бостон, аз давраи Авесто ва қисмати аз ҳама қадими он

1 ادب پارسی. - ص. 478.

2 زرّين كوب، عبد الحسين. دو قرن سكوت. - ص. 123؛

ادب پارسی. - صص. 477-478.

3 الاصفهاني، ابو الفرج. كتاب الاغانى. دار الكتب المصرية 1345 و 1357 به نقل از ادب پارسی، ص. 578.

4 ادب پارسی، ص. 578.

5 ادب پارسی، صص. 578-579.

«Готҳо» маншаъ мегирифтааст ва тараннум шудани ин қисматро аз низоми дохилии матнҳо муайян кардаанд ва иҷроқунандагони онро «госан» - аз решаи гот-гос گات-گات доништаанд. Ва ин суннат дар мусиқии иҷроии баъзе аз мардумони бозмондаи давраи портҳо ва ашкониён бар ҷой мондааст. «Базмҳои эронӣ мунхасир ба мусиқӣ набуд, балки худ маҳофили адабӣ ва донишгоҳҳои муҳим ба назар меояд. Дар он маҳофил шеър суруда мешуд ва шеърро бо мусиқӣ татбиқ медоданд. Илова бар он худи маҷолиси адабӣ натиҷаи бисёре дошт, зеро мутаазаммини достонҳои адабӣ ва ҳовии нутқҳои ширин ва баёноти балеғ ва никоти муҳимма ва ривоёти фақоҳӣ мебошад. Шуаро ва фузало дар он маҳал бо ҳам мусобиқа доштанд. Мояҳои фазлу адабро ҳар яке ба як нахву ранг падида оварда, қурбу манзилати бузургонро эҳроз менамуданд. Маҷолиси унс ва базмҳои эронӣ дар таҳзиби шеъру эҷоди адаб ва барангехтани қароҳа ва иншою суруд дорой асари муҳимме буд»<sup>1</sup>.

Ҳамон гуна ки соҳиби китоби «Ат-тоҷ» базмҳои эрониро васф ва тақлиду пайравии арабҳоро аз онҳо батафсил овардааст, он тамоми низоми ҷомеаи арабро фаро гирифта буд. Тарзу тариқи хусравони (подшоҳони – М.Ш.) сосонӣ ба шевае, ки дар он ҷо омадааст, мутобиқ ба меъёрҳои ахлоқии инсонӣ ва покиву ифғат ва муназзаҳ аз фиску фасод будааст, ки баъдан хулафои Банӣ Умайя дар охири ҳукумати хеш онро бо бебандуборӣ омехтанд ва ривоч доданд<sup>2</sup>.

Вале суннати хонандагӣ ва шоирии давраи Сосониёну Ашкониён, ки то замони Рӯдакӣ идома доштааст, дар давраи пеш аз ислом асосан ҷанбаи мардумӣ дошт ва ин хунёгарону гӯяндагони даврагард дар нигоҳ доштани достонҳои ҳамосӣ, қаҳрамонӣ ва ишқномаҳо ҷойгоҳи хос доштанд.

Муҳаққиқон сабаби камии ашъор аз даврони тӯлонии Ашкониён (250 қ.м.– 224м) ва Сосониён (221-651)-ро дар ҳамин вижагии ашъори он замон доништаанд, ки шоирон дар воқеъ навозандагону ромишгарони замони хеш ҳам будаанд. Шеър бештар ҷанбаи шифоҳӣ дошта, суруда мешудааст, то қироат ё хонда шавад. Сарояндагон ва навозандагон – шоирони давраи такомули ин ҳунар ба ду даста тақсим мешуданд: «Ромишгари сурудхон ва барбатнавозе, ки дар «Шоҳнома» ба дарбори Кайковус меояд ва бо хондани «мозандаронӣ суруд» дили шоҳро мефиребад, низ аз ҳамин қабилаи гӯсонҳои даврагард аст. Борбади ромишгарро низ бояд аз зумраи ҳамин гӯсонҳо ба шумор овард. Тафовути гӯсонҳои машҳури дарборӣ бо гӯсонҳои даврагард афзун бар беҳтар хондан ва беҳтар навохтан, яке ҳам ин буда, ки худ низ аз ҳунари шоирӣ баҳра доштаанд, ё дар ин замина ба устодӣ расида будаанд ва аҳёнан хат мешинохтаанд, чун хеле муҳтамаал аст, ки Саркаш (Накисо) ва

1 ادب پارسی، ص. 589

2 ادب پارسی، ص. 589

Борбад худ низ шеър месурудаанд. Дар ҳар ҳол дар «Шоҳнома» ва дигар манбаъҳои форсӣ ва арабӣ... сурудҳои мутааддидеро бо дастгоҳи сози он расман ба Борбад нисбат додаанд»<sup>1</sup>.

Бо таҳқиқоте, ки дар заминаи забоншиносӣ анҷом гирифтааст, замони ташаккул ва равоии забони дарӣ ё форсии дарӣ хеле пештар аз ҳамлаи тозиён будааст<sup>2</sup>. Аз ин ҷо бо он шукӯҳу хишмат, ки дарбори сосониҳо дошт, ҳолӣ аз шеър набуд ва «наметавон тардид кард, ки толорҳо ва коҳҳои сосонӣ аз созу овози сарояндагон ҳолӣ набудааст ва биллошубҳа дар давраи исломӣ ҳадди ақал инъикосе доштааст, зеро ҳар андоза арӯзу кавофӣ дар назми ҷадиди форсӣ ба сабки арабӣ даромада бошад, поре ақсоми шеъри форсӣ, аз ҷумла рубоӣ ва маснавӣ ба ҳукми завоҳири амр, махсуси ҳуди Эрон аст»<sup>3</sup>.

Назари маълум дар бораи ашъори нахустин ба забони форсии дарӣ низ ҳамон аст, ки шурӯи онро аз замони тасаллути арабҳо мутобиқи навиштаи тазкираҳо ва таърихҳо пазируфтаанд<sup>4</sup>. Вале он чи аз таҳқиқу баррасиҳои дар охири сурагирифта маълум мегардад, шеър ба забони форсии дарӣ хеле пештар аз ҳамлаи арабҳо дар Эрон вучуд доштааст. Агарчи муҳаққиқони таърихи адабиёти форсии тоҷикӣ, ки дар заминаи нахустин шоирони форсигӯ ҷустуҷӯ ва таҳқиқот анҷом додаанд<sup>5</sup>, аз замони ҳамлаи арабҳо пештар наарафтаанд, ки қадимтарини онҳо бозёфт ва навиштаи Абдулхусайни Зарринқӯб дар бораи «Суруди мардуми Бухоро» дар бораи ишқбозиҳои Саъид ибни Усмон – сардори тозӣ ва хотуни Бухоро, ки аз лобалои китоби «Асмоъу-л-муғотилин мин ал-ашроф фй-л ҷоҳилия ва-л -ислом» - таълифи Абӯҷаъфар Муҳаммад ибни Ҳабиби Бағдодӣ (мутаваффои соли 245/860) як байти он боқӣ мондааст<sup>6</sup>, аз давраи исломӣ аз он пештар намунае надорем. Ҳамин гуна «Суруди кӯдакони Балх» ба соли 108/726 ва аз он пештар суруди Язид ибни Муфарриғ, ки ҳама ба ашъори давраи тасаллути арабҳо тааллуқ доранд. Вале тавре ки гуфтем, ин забон дар давраи пеш аз омадани арабҳо ҳам дар дарбори Сосониён (221-651), ҳадди ақал дар садаҳои охири ҳукумати онҳо дар гуфтори мардуми шарқи Эрон ва дарбор истифода мешудааст, ки дар ин бора Ибни Надим дар «Алфихраст»

1 خالقی مطلق، جلال. مطالعات هماسی (1) هماسه سرای باستان//سیمرغ بنیاد شاهنامه شناسی، شماره 5. - تهران، تیرماه 1357، ص.5.

2 صادقی، علی اشرف. تکوین زبان فارسی. - تهران، 1979/1357. کدکنی، محمدرضا شفیعی. کهن ترین نمونه شعر فارسی. یکی از خسروانی های بارید//آرش، شماره 6. - صص.28-32.

3 براون، ادوارد. تاریخ ادبیات ایران. از قدیم ترین روزگار تا زمان فردوسی. ترجمه و تهیه ی علی پاشا صالح. جلد 1. - تهران: امیر کبیر، 1356.

4 لباب الالباب، ص.20-22؛ قیس رازی، شمس الدین محمد. المعجم فی معاییر اشعار العجم. به تصحیح علامه محمد ابن عبد الوهاب قزوینی و تصحیح مجدد استاد مدرّس رضوی و تصحیح مجدد دکتر سیروس شمیسایا. چاپ اول. - تهران: نشر علمی، 1338. صص.223-226؛ دولتشاه سمرقندی. تذکره الشعراء. - ص.29؛ هدایت، رضاقلیخان. مجمع الفصحاء بخش اول از جلد اول بکوشش مظاهر مصفا. - تهران: امیر کبیر، 1382. - صص.244-245.

5 صفا، ضبیح الله. تاریخ ادبیات در ایران، صص.163-172.

6 زرّین کوب، عبد الحسین. سرود اهل بخارا - کهنه ترین نمونه شعر به زبان فارسی//یغما، شماره 7، سال 1959/1337. - صص.342-351.

аз Ибни Мукаффаъ<sup>1</sup> овардааст, ки панҷ забон дар Эрон роиҷ буд: пахлави, дарӣ, форсӣ, хузӣ ва сурёнӣ. Пахлави мансуб ба Пахла аст ва он панҷ минтақа (шаҳр): Исфаҳон, Рай, Ҳамадон, Моҳ Наҳованд ва Озарбойҷон аст. Дарӣ забони аҳли Мадоин аст ва касоне, ки дар дарбор бо пойтахт («Бобулмулк») ҳастанд, ба он суҳан мегӯянд ва он мансуб ба шаҳри пойтахт ё дарбор («ҳозират-ал-боб») аст ва забони аҳли Хуросон ва Машриқ, забони аҳли Балх бар он ғолиб аст. Форсӣ забонест, ки мӯбадон, донишмандон ва назоири онҳо ба он такаллум мекунанд ва он забони мардуми Форс аст<sup>2</sup>. Агар ин забон собиқаи раҳшандагӣ дар замони Сосониён наредошт, дар нахустин солҳои ҳукумати Сомониён бо он ҳама тақомул ва пухтагӣ осори фаровони назму наср ва ҳамаи илмҳои мутадовил ба миён намеомад ва далели дигари ривочи забони форсии дарӣ дар садри ислом дар мисолҳо ва форсиёте, ки дар саҳифаҳои қаблӣ дидем ва суҳанони подшоҳони сосонӣ ба забони дарӣ дар китоби «Маҳосин ва-л-азод»-и Ҷоҳиз зикр гардида, метавонад бошад. Дар бораи шеър ба забони дарӣ аз замони Сосониён аз муаллифони тазкираҳо танҳо Муҳаммад Авфии Бухороӣ аз шеър гуфтани Баҳроми Гӯр (421-438) ба ин забон гувоҳӣ медиҳад<sup>3</sup>. Муаллифи «Ал-муъҷам фӣ маъойири ашъори-л-Аҷам»<sup>4</sup> ин шеърро чун намунаи шеъри нахустин ба забони форсӣ овардааст.

Аммо дар он байти Баҳроми Гӯр тасарруф шудааст, яъне, ба он шаклу вазни арӯзро бор кардаанд, зеро ин байт дар «Ал-масолик ва-л-мамолик»-и Ибни Хурдодбех ба сурати: «Манам шери Шалнаба // Ва манам бабри тала» омадааст<sup>5</sup> ва муҳаққиқон онро ба забони дарӣ намедонанд ва як шеъри ҳафтхилоқӣ мешуморанд<sup>6</sup>. Дар мавриди «Суруди оташкадаи Карқуй» ҳам асли онро қабл аз ислом донанд ҳам, матни бадастрасидаи он дар давраи исломӣ иншо ё таҳрир шудааст ва қадимтарин шеър ба забони форсӣ наметавонад бошад. Нашинохтани вижагии шеъри пеш аз ислом ба забони дарӣ Муҳаммад Авфиро бар он доштааст, ки шакли тағйирдодаи шеъри Баҳроми Гӯро нахустин шеър ба забони форсӣ муаррифӣ намояд ва хусравониҳои Борбадро аз назар бияндозад: «Пас, аввал касе, ки суҳани порсиро манзум гуфт, ӯ (Баҳром – М.Ш.) буд. Ва дар аҳди Парвиз навои хусравонӣ, ки онро Борбад дар сурат овардааст, бисёр аст, фааммо аз вазни шеър ва қофият ва муруоти назоири он дур аст ва бад-он сабаб тааррузи байни он карда наёмад...»<sup>7</sup>. Аз ин гуфтаи Авфӣ ба равшанӣ ва сароҳат пай мебарем, ки шеъри ҳилоқӣ ва ори аз бадеиёти қадими форсӣ ва баҳусус ашъори офаридаи Борбад дар замони ӯ вучуд доштааст, ки дар ашъори Фирдавсӣ ва Низомӣ аз

<sup>1</sup> ابن ندیم، محمد ابن اسحاق. الفهرست. ترجمة محمدرضا تجدد. - تهران، 1350. ص 883.

<sup>2</sup> به نقل از ابن ندیم، ص 15؛ صادقی، علی اشرف. دری (زبان) // دانشنامه زبان و ادب فارسی. مدخل «دری». - تهران، فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1388. ص 170.

<sup>3</sup> لباب الالباب، ص 19.

<sup>4</sup> المعجم، صص 223-226.

<sup>5</sup> صادقی، علی اشرف. تکوین زبان فارسی. - تهران، 1979/1357، ص 55. شلنجه - دماوند.

<sup>6</sup> کدکنی، محمدرضا شفیعی. کهن ترین نمونه شعر فارسی. یکی از خسروانی های باربد// آرش، شماره 6. صص 28-32.

<sup>7</sup> لباب الالباب، ص 21.

онҳо ном бурда шудааст ва ҳамаи номҳои онҳо ба форсии дарӣ мебошанд. Ва ин шеъри Мучаллидӣ ё Мухалладии Гургонӣ, ки дар муқаддимаи “Лубобу-л-албоб” омадааст, гувоҳи ду рукни асосии шухрати давлати Сосониён ва Сомониён мебошад:

*Аз он чандон наими инчаҳонӣ,  
Ки монд аз Оли Сомон в-Оли Сосон,  
Санои Рӯдакӣ мондасту мидҳат,  
Навои Борбад мондасту дастон<sup>1</sup>.*

Симате, ки Борбад доштааст, аини вазифаест, ки Рӯдакӣ дар дарбори Оли Сомон иҷро мекардааст. Агар ромишгарро хонанда, навозанда, шоир ва нағмапардоз бипазирем, пас, ӯ

*Бишуд Борбад шоҳи ромишгарон,  
Яке номдоре шуд аз меҳтарон<sup>2</sup>.*

«шоҳи ромишгарон» – ҳамон форсии «маликушшуаро»-ст. Аз осори Борбад ба сабаби хусусияти шифоҳӣ доштани онҳо танҳо ном мондааст, ба чуз як пораи семисраӣ дар китоби «Мухторот мин китоби-л-лаҳв ва-л- малоҳӣ» – навиштаи муаррих, ҷуғрофидон ва мусиқидони эронӣ Ибни Хурдодбех (211-300/827–913) боқӣ мондааст. Дар бораи Борбад ва шеъри ӯ мегӯяд: Бузургтарин мусиқидони эронӣ дар рӯзгори Хусрави Парвиз Баҳлабад (Борбад) аз мардуми Рай буд, ки удро аз ҳама хуштар менавохт ва бо суханоне мавзун барои ӯ оҳангҳое месохт... Ва аз оҳангҳои маъруфи ӯ дар ситоиши подшоҳ ва таҳнияти вай ҳафтоду панҷ овоз буд, ки аз он ҷумла аст ин лаҳни ӯ:

*Асо зиёрату Қайсара Хоқона Кисро Абарвиз,  
Қайсар моҳ монаду Хоқон хуршед,  
Они ман Худой абар монад комгорон (комгорон)  
Каҳоҳад моҳ бӯшаз, каҳоҳад хуршед.*

عسا زیارة قیصر و خاقان کسری ابرویز  
قیصر ماه ماند و خاقان خرشید  
آن من خدای ابرماند کامغاران (کامگاران)  
کخاهد ماه بوشد کخاهد خرشید  
ترجمه عربی:  
ای قیصر شبیه القمر و خاقان الشمس

<sup>1</sup> لباب الالباب. ص. 14.

<sup>2</sup> Дабиринажод, Бадеуллох. Борбад ва навоҳо дастгоҳҳои мусиқии эронӣ дар асри Сосонӣ. // Ахбороти Академияи фанҳои РСС Тоҷикистон. Серияи шарқшиносӣ, таърих, филология, 1989, № 4. С. 7.



ای الزی هو مولای شبیه الفیم المتمکن  
ای اذا شاء غطا القمر و اذا شاء الشمس<sup>1</sup>

Аз ин шеър, ки мисраи аввали онро Шафеъии Кадканӣ унвони ин тарона донистааст<sup>2</sup>, Парвиз Нотили Хонларӣ онро аз ашъоре ба забони паҳлавӣ шумурда, мисраи аввалро ҳазф кардааст<sup>3</sup>, вале Аҳмадали Раҷоӣ онро мисраи аввали банди шеър донистааст, ки матни форсияш аз байн рафта, тарҷумаи арабии онро муаллиф овардааст, ки баргардони тозаи онро ба форсии дарӣ чунин пешниҳод кардааст: «Шукӯҳманд дидори Қайсару Хоқону Хусрави Абарвиз»<sup>4</sup>, чанд масъала равшан мегардад. Пеш аз ҳама он дар маъхазе бо ин қидмати таълиф ба замони Борбад наздик ва бозғимод ба даст расидааст. Чун асли он китоб аз байн рафта, нусхҳои мунҳасир ба фард ва мухтасари он ба чоп расидааст, қитъаи мазкур бо тарҷумаи сатр ба сатри он сабт гардидааст, ки маънии шеърро метавон ба воситаи тарҷумаи арабии он комил кард. Дигар он ки ин шеър комилан бо вижагии ашъори давраи то тасаллутӣ тозиён иншо шудааст. Дар бораи вижагии ин ашъор маъхазҳои адабӣ ишорат кардаанд ва муҳаққикон бо баррасии онҳо ба хулосаи дақиқ омадаанд. Пас аз Авфӣ, касе, ки вижагии шеъри тоарӯзиро умуман ва шеъри Борбадро хусусан зикр кардааст, Шамси Қайси Розӣ буд, ки «ҳамоно аз ин афтодааст, ки Борбади Чаҳрамӣ, ки устои барбатӣ буд, бинои луҳун (лаҳнҳо – М.Ш.) ва ағонии хеш дар маҷлиси Хусрави Парвиз, ки онро хусравонӣ хонанд, бо он ки сар ба сар мадху офарини Хусрав аст, бар наср ниҳодааст ва ҳеч аз каломи манзум дар он ба қор нашофта»<sup>5</sup>. Хоҷа Насируддини Тӯсӣ ҳам аз вижагиҳои шеъри аҳди Борбад сухан ба миён овардааст<sup>6</sup>. Вай, ки муътақиди аз вазну қофия озод будани ин ашъор мебошад, дар баёну ташхиси вазн онҳоро «ҳайате бувад суханро аз ҷиҳати тасовии ақвол ва ба ҳасби зоҳир шабиҳ ба вазн» медонад. ӯ вазни хусравониҳоро на дар «таносуби том», балки «наздик ба том» ва шеъри ин давраро мисли шеъри Юнон медонад ва муътақид аст, ки дар он мисли ашъори юнониён «қофия муътабар набудааст»<sup>7</sup>.

Табиист, ки арбоби тазкира ва фарҳангномаҳои адабиёти гузашта, ки бо «вазни арӯзии араб хӯгар шуда буданд, аз шинохти вазни ҳиҷоии ин навъ сурудҳо дармондаанд ва гуфтаанд, ки Борбад

<sup>1</sup> مختارات من كتاب الهو و ال ملاهى. بكوشش الاب اغناطيوس عبدالخليفه اليسوعى. - بيروت: مطبعة كاتوليكي، 1961. ص.16. / رجایی، احمد على. پلی میان شعر هجایی و عروضی فارسی. - تهران: بنیاد فرهنگ ایران، 1353. صص. هجده- نژده.

<sup>2</sup> کدکنی، محمدرضا شفیعی. کهن ترین نمونه شعر فارسی. یکی از خسروانی های باربد. - صص. 25-26.

<sup>3</sup> خانلری، پرویز نائل. وزن شعر فارسی. - تهران: بنیاد فرهنگ ایران، 1345. ص. 55.

<sup>4</sup> رجایی، احمد على. پلی میان شعر هجایی و عروضی فارسی. - تهران: بنیاد فرهنگ ایران، 1353. ص. بیستم.

<sup>5</sup> المعجم، ص. 225.

<sup>6</sup> ساتتورزودا، Абдунабӣ. Шеър дар аҳди Борбад. -С. 322-323.

<sup>7</sup> Мақолаи мазкур. -С. 323.

асоси онро бар наср ниҳодааст ва имрӯз мо мебинем, ки ин суруд дорои вазнест ҳиҷоӣ, ки эшон онро вазн намедонистаанд, монанди Хоча Насируддини Тӯсӣ, ки чун ба ҳақиқату таърифи аслии вазн ошноӣ доштааст, авзони хусравониётро навъе вазни маҷозӣ дар шумор овардааст»<sup>1</sup>.

Натиҷаи дигаре, ки аз ин шеър ҳосил мешавад, он метавонад бошад, ки шуҳрат ва эътибори шеъри форсии дарии то ҳамлаи арабҳо дар давраи хилофати онҳо ҳам кам нагардида, балки дар матни тамаддуни дигар зинда буда ва ҳатто бар он нуфуз доштааст. Дигар он ки забони форсии дарӣ дар дарбори Сосониҳо аз эътибору нуфузи хос бархурдор буд, дар ҳоле ки он забони гуфтугӯӣ ва модарии аҳолии шарқии Эрон, хоса Хуросону Мовароуннаҳр буд. Адабиёти пешрафта, пурмахсул ва комили ба ин забон навишташуда дар давраи Сомониён далел ба пуштвонаи чандсадсолаи такомули ин забону адабиёт метавонад бошад, зеро он дар ҷои ҳолӣ ба вучуд наомадааст.

Сухан, шеър, осори адабии ҳар миллате аз адабиёти шифоҳии он шуруъ мегардад. Табиист, ки адабиёти бадеии форсии тоҷикӣ пас аз истилои арабҳо дар шакли шифоҳӣ ҳамеша вучуд доштааст. Нахустин намунаҳои ин давраи адабиёт аз нигоҳи таърих ҳам осори шифоҳӣ мебошанд. Ин осори шифоҳӣ аз нахустин рӯзҳои муқовимати мардум бо ғолибон дар рӯҳияи ватандӯстӣ, озодихоҳӣ ва истиклолхоҳии мардум зухур кардааст. Тавре ки мушоҳида менамоем, тадовуми суннатҳои адабии миллӣ дар байни мардум бо вучуди сиёсатҳои баргариҷӯнаи арабҳо, зинда монда, онро мавриди истифода қарор медоданд ва дар ҳолатҳои зарурӣ аҳолии Хуросону Мовароуннаҳр (тасхири ин сарзаминҳо барои арабҳо бо ҷангҳои тӯлонии сангин ҳамроҳ будааст) аз он барои мубориза суд мечустанд. Зиндагии ошуфтаву хароб ва муборизаҳои пай дар пай рӯҳияи мардумро нашикаста буд ва онҳо барои истиклоли фикрӣ ва эҳсоси милливу ватании хеш ва баргаштан ба низоми фарҳангиву муоширати забонии худ бовар ва умеди зиёд доштанд. Дар ҳамин замина нахустин намунаи адабии дар маъхазҳо боқимонда дар давраи интишори ислом як байти шеъргона аз гуфтори мардуми Бухорост, ки имрӯз ба унвони «Суруди аҳли Бухоро» машхур аст ва онро зиндаёд Абдулҳусайни Зарринқӯб аз китобе арабӣ таҳти унвони «Асмоъу-л-муғлотин мина-л-ашроф фӣ-л-ҷоҳилияти ва-л-ислом» – навиштаи Абӯҷаъфар Муҳаммад ибни Ҳабиби Бағдодӣ (ваф. 245/860) ба даст овардааст<sup>2</sup>.

---

<sup>1</sup> کدکئی، محمدرضا شفیعی. کهن ترین نمونه شعر فارسی. یکی از خسروانی های پاربد. - ص. 31.

<sup>2</sup> زرّین کوب، عبد الحسین. سرود اهل بخارا – کهنه ترین نمونه شعر به زبان فارسی//یغما، شماره 7، سال 1959/1337. - صص. 342-351.

Дар он ки ин намунаи шеърӣ ба забони дарӣ кухнатарин санадест, ки пас аз ислом ба мо расидааст, ҳеч ҷои тардид нест ва аз шеъри Язид ибни Муфарриғ кухнатар аст, зеро достонаш чанд сол пештар аз мочарои Язид ибни Муфарриғ рӯй додааст<sup>1</sup>.

Дуруст аст, ки то пайдо шудани байте аз суруди мардуми Бухоро суруди кӯдакони Балх ва таронаи Язид ибни Муфарриғ, (аввалӣ соли 108/ 726 ва дувумӣ 59 х.к. / 679 суруда шудааст), нахустин сурудаҳо ба забони форсии дарӣ ба шумор мерафтанд. Арабҳо бори аввал дар соли 674 ба Бухоро ҳамла карданд, вале ду сол баъд Саъид ибни Усмон бино бар навиштаи «Таърихи Бухоро» ба соли 56 / 676 амири Хуросон таъйин шуд, дар ҳамин сол аз оби Чайхун гузашт ва ба Бухоро омад ва подшоҳи Бухоро – Хотун бо ӯ сулҳ кард<sup>2</sup>. Дар мавриди суруди мазкур, ки байни аҳолии Бухоро машхур будааст ва аз ишқи сардори араб бо подшоҳи Бухоро – Хотун нахустин ишоратро дар ҳамин китоби «Таърихи Бухоро» мехонем: «Овардаанд, ки ин Хотун зани ширин буд ва боҷамол, Саъид бар вай ошиқ шуд ва аҳли Бухороро дар ин маънӣ сурудхост ба забони бухорӣ»<sup>3</sup>, вале матни сурудро наовардааст.

Мутаассифона, ин суруд дар ҳеч маъҳаз зикр нашудааст. Ва хушбахтона, Абдулҳусайни Зарринқӯб зимни ҷустуҷӯҳо ва ёддоштҳо дар таърихи ду қарни нахусти ислом «ду пора аз ин суруди фаромӯшшударо дар китобе ёфт, ки ҳарчанд бисёр кӯтоҳ ва андак аст, лекин ба истиноди ҳамон чанд калима метавон таърихи кухнатарин намунаи шеъри форсиро чанд соли пеш аз таърихи таронаи Ибни Муфарриғ ниҳод»<sup>4</sup>.

Достони Саъид ибни Усмон, ки пас аз расидан ба волигии Хуросон бо «роҳзанону мардумкушону бандиён ба бӯи тороҷ ва ғанимат» дар Бухоро бо маликаи он диёр Хунукхотун аз дари сулҳ даромад ва чанд бор бо малика дидор доштааст ва чамъе аз бузургзодагони Бухороро (ба қавле сӣ нафар ва ба қавли дигар ҳаштод нафар) бо худ барои гарав ва раҳой аз аҳди малика бо худ мегирад ва ҳарчанд малика халосии онҳоро мехоҳад, бо дурӯғ ва фиреб онҳоро то Мадина мебарад ва бо хориву таҳқир дар нахлистони хеш қор мефармояд. Боре онҳо тасмим гирифтанд, ки чун роҳи бозгашт ба Бухоро надорем, пас, бояд бо суде барои ватанамон бимирем. Саъид ибни Усмон чун аз қори онҳо мехост хабар бигирад, онҳо ӯро гирифтанд ва бо шамшери худаш куштанд ва худашонро ҳам ба куштан доданд, ки ин дoston бо суханоне таъсирбахш дар

<sup>1</sup> کدکنی، محمدرضا شفیعی. کهن ترین نمونه شعر فارسی. یکی از خسروانی های باربد. - ص. 26.

<sup>2</sup> Наршаҳӣ, Абӯбақр Муҳаммад ибни Чаъфар. Таърихи Бухоро. Мурағтибон: Ғолиб Ғоибов, Кароматулло Олимов, Нурмуҳаммади Амиршоҳӣ. – Душанбе: “Пайванд”, 2012. – С. 82.

<sup>3</sup> Наршаҳӣ, Абӯбақр Муҳаммад ибни Чаъфар. Таърихи Бухоро. – С. 84

<sup>4</sup> زرین کوب، عبد الحسین. سرود اهل بخارا – کهنه ترین نمونه شعر به زبان فارس، ص. 350.

таърихи Бухоро гузориш шудааст<sup>1</sup>. Ва ин дostonро Балозурӣ дар «Футуху-л-булдон», Аъсами Кӯфӣ дар «Таърих», Ибни Қутайба дар «Ал-маориф» ва Ҳамзаи Исфаҳонӣ дар «Ал-ағонӣ» ҳам нақл кардаанд<sup>2</sup>, вале дар ҳеч кадоми онҳо матни суруд наёмадааст. Танҳо маъхазе, ки ду пораи (мисраи) ин суруд омадааст, китоби «Асмоъу-л-муғтолин мин-ал-ашроф фй-л-чоҳилияти ва-л-ислом» – таълифи Абӯҷаъфар Муҳаммад ибни Ҳабиби Бағдодӣ (ваф. 245/ 860), ки дар силсилаи маҷмӯаи «Махтутоти наводир» ба таҳқиқи профессори Донишгоҳи Қоҳира Абдуссаломи Ҳорун дар соли 1954 дар Қоҳира ба таъъ расидааст, мебошад, ки муаллифи он дар зимни баёни саргузашт ва даргузашти Саъид ибни Усмон бо чунин суханон овардааст: «Ҷро бо Хотун дидор афтод ва аҳли Хуросон ҳар дуру туҳмат ниҳоданд ва бар вай суруд хонданд ба забони хуросонӣ бад- ин гуна:

*Кӯри хамир омад,  
Хотун дурӯғ канда...<sup>3</sup>.*

Нуктаҳое, ки аз ин дoston ва ин суруд равшан мегардад, нахуст он аст, ки муаллифи «Таърихи Бухоро» онро ба **забони бухорӣ** менависад, вале муаллифи «Асмоъу-л-муғтолин» онро ба **забони хуросонӣ** мегӯяд. Ин бори дигар таъйиди ҳамон маънист, ки муаллифи «Ашқолу-л-олам» мегӯяд: «забони аҳли Бухоро суғдист ва аз он андаке бигардад, дарист»<sup>4</sup>.

Дигар он ки ин суруд хатман дорои матне тӯлонитар бо муҳтавои дostonи мазкур будааст, ки Наршаҳӣ менависад: «Аҳли Бухороро дар ин маънӣ сурудҳост». Ва ниҳоят маънии байт равшан нест ва ин ба чанд иллат метавонад бошад 1) нахуст он ки касе, ки матнро тасҳех карда, бо забони дарӣ ошно нест, шояд асли калимаҳоро дуруст нашинохтааст; 2) саҳви котибони нусха ҳам метавонад бошад; 3) фосилаи эҷоди суруд (674 ба баъд) ва соли таълифи китоби «Асмоъ – ул – муғтолин» (то соли 860), қариб дусад сол аст ва дар суруд ва дар забти он ворид шудани тағйирот аз эҳтимол дур нест. Бо вучуди ҳамаи ин байти мазкур намунаи қадимтарин сухани манзум ба забони форсии дарӣ пас аз нашри ислом мебошад, ки дар даст аст ва он ҳам саршор ва ҳамроҳ бо дostonе ватандӯстона ва муассир, ки диққати бисёре аз муҳаққиқон ва пажӯҳишгаронро ба худ кашидааст<sup>5</sup>.

<sup>1</sup>Наршаҳӣ, Абӯбакр Муҳаммад ибни Ҷаъфар. Таърихи Бухоро.– С. 84 – 86.

<sup>2</sup>زرّين كوب، عبد الحسين. سرود اهل بخارا – كهنة ترين نمونه شعر به زبان فارسی، ص. 350.  
<sup>3</sup> حبيب بغدادی، ابو جعفر محمد. اسماء المغتالين من الاشراف فى جاهلیة والاسلام. – قاهره، 1954. صص. 167-168. به نقل از زرّين كوب، 351.

<sup>4</sup> جيهانى، ابوالقاسم ابن احمد. اشكال العالم. ترجمه على عبدالسلام كاتب با مقدمه و تعليقات فيروز منصورى. – مشهد: آستان قدس رضوى، بهنشر، 1368، ص. 185.

<sup>5</sup>Раҳмон, Эмомалӣ, Забони миллат – ҳастии миллат. – С.222, سرود عبد الحسين. سرود اهل بخارا – كهنة ترين نمونه شعر 1959/1337. صص. 342-351.

Суруди мазкур ягона суруди мардуми Бухоро нест, ки дар бораи он дар маъхазҳо ишорат шудааст. Муаллифи «Таърихи Бухоро» дар бораи таърихи давраи бостони Бухоро маълумот дода, навиштааст: «Ва аҳли Бухороро дар куштани Сиёвуш сурудҳое аҷаб аст. Ва мутрибон он сурудҳоро «Кини Сиёвуш» гӯянд»<sup>1</sup>. «Кини Сиёвуш», ки унвони лаҳни бистуми Барбад ҳаст<sup>2</sup> ва аз он ки онро мардуми Бухоро агар хонанд ва номи суруд ба форсии дарист ва ашъори Борбад ҳам, тавре ки гузашт, ба дарӣ будааст, пас, ба яқин сурудҳои бухороиён дар бораи марги Сиёвуши бегуноҳ ба забони форсии дарист, ки то ба мо нарасидааст.

Нахустин касе, ки ба шарҳи маънии ин шеър пардохтааст, Аҳмадали Раҷоӣ мебошад, ки сурати онро чунин бозхонӣ кардааст:

*Gw [w] r xmyr 'mð k'twn drwğ gndh*  
*Гӯ бар хамир омад, Хотун, дурӯғ ганда.*

Пас аз он дар маънии он навиштааст: нахуст бояд тавачҷуҳ кард, ки «вар омадани хамир» гайр аз маънии ҳақиқии он, ки боло омадан ва расидани хамир ва омода шуданаш барои пухт аст, маҷозан ва дар истилоҳ ба маънии «мастӣ ва чуфтҷӯии зан ва майли ҳамхобагӣ», ки ҳамакнун дар қисматҳое аз Хуросон ва Бухоро ва хосса Язд, ин истилоҳ барҷост бо суратҳои мухталиф, монанди ин, ки гӯянд: «фалон зан ё духтар хамираш вар омад», яъне, маст аст ва чуфтҷӯӣ... бино бар ин шояд пораи аввал дар асл будааст: *گو ور خمير آمد*, ки баъд *و* «вов»-и он афтода, идғом шудааст. Албатта, метавон ба ҳамин сурат ҳам пазируфт бо дарчи он, ки дунболаи сухане бошад, филмасал хитоб ба Хотун дар пораи қабл гуфта шуда бошад, ки аз пӯшида доштани ишқат ҷӣ ҳосил, ки «хамират вар омадааст». Вале инҷониб (Аҳмадали Раҷоӣ – Ш.М) ҳамон назари аввалро тарҷех медиҳад, ки дар ин сурат ба вазн низ халале ворид намеояд, яъне:

*گو (و) ر خمير آمد خاتون دروغ گنده<sup>3</sup>*

رجایی، احمد علی. پلى میان شعر هجایی و عروضی فارسی در قرون اول هجری. - تهران: انتشارات بنیاد فرهنگ ایران، 1975/1353. صص. 23-24؛ صادقی، علی اشرف. تکوین زبان فارسی. - تهران، 1979/1357. ص. 65-67.

Шакурии Бухорӣ, Муҳаммадҷон. Хуросон аст ин ҷо. - Душанбе: «Пайванд», 1996.-С.140 - 142; Саймиддинов Додихудо. Шарҳи ду пора шеъри куҳан аз сурудаҳои мардуми Бухоро // Номаи Пажӯҳишгоҳ, соли чаҳорум, шумораи ҳафтум, тирамоҳ ва зимистони соли 2004 - 2005.С. 5- 14; Боголюбов М.Н. Строфа из таджикской песни VIIв. // Известия Академии наук, отделения общественных наук, 1983, №4. -С. 55- 65.

<sup>1</sup>Наршаҳӣ, Абӯбакр Муҳаммад ибни Ҷаъфар. Таърихи Бухоро.- С.45.

<sup>2</sup>Ғиёсуддин Муҳаммад. Ғиёсу-л-луғот. Иборат аз се ҷилд. Ҷилди 2. - Душанбе: «Адиб», 1988. - С. 186.

<sup>3</sup> رجایی، احمد علی. پلى میان شعر هجایی و عروضی فارسی، ص. 22.

Дар ин чо тағйироте, ки Раҷоӣ ворид кардааст, дар ду маврид аст: *ر گونده* ба ганда *گنده* ва ин воридоти хешро чунин шарҳ медиҳад, ки ганда ҳам акнун дар тадовули мардуми Бухоро ба кор меравад ба маънии зишт ва бад ва нописандида ва дар ин чумла ба ҳамин сурат, ки ҳаст, феъли сеवуми шахси муфрад аст ва баробари тадовули мардуми Бухоро дуруст ба кор рафта...»<sup>1</sup>.

Тавзеҳу таъбири худро А. Раҷоӣ чунин натиҷагирӣ мекунад, ки «Бо шарҳе, ки гузашт, инчониб пешниҳод мекунад, ки ду пораи мавриди баҳс аз «Суруди мардуми Бухоро»-ро бад-ин сурат бинависем ва маънӣ кунем:

Гӯ вар хамир омад  
گو ور خمير آمد = بگو خمير ور آمده  
Яъне бигӯ: мастам ва ҷуфтҷӯӣ –  
Хотун, дурӯғ ганда  
خاتون دروغ گنده  
Яъне: Эӣ Хотун, дурӯғ бад аст<sup>2</sup>.

Алиашрафи Содикӣ ҳам зоҳиран аз ҳамин тафсир пуштибонӣ кардааст, ки дар тақвияти он меафзояд: «Истеъмоли калимаҳои «хамир» дар таркиби «хамири касе вар омадан» нишон медиҳад, ки ин шеър бисёр дертар аз соли 56 ҳичрӣ сохта шуда, зеро барои он ки чунин калимае аз арабӣ вориди забони форсӣ шавад ва дар таркибе монанди «хамири касе вар омадан» ба маънии истилоҳии он ба кор равад, мусалламан замони тӯлонӣ лозим аст»<sup>3</sup>.

Дар тафсиру ташреҳи ин намунаи шеъри бозмонда ба забони форсии дарӣ муҳаққиқони дигаре ҳам саҳм гузоштаанд, ки Додихудо Саймиддинов<sup>4</sup>, аз чумлаи онҳост. Дар ин ташреҳ, ки ба китобҳои баъдӣ ҳам роҳ пайдо кардааст<sup>5</sup>, чанд нукта қобили зикр аст. Аввалан муаллифи мақола бо истинод бар таҳқиқоти охири дар мавриди забони сугдӣ баанҷомрасида<sup>6</sup> гунаи зери ин пора шеърро пешниҳод мекунад:

<sup>1</sup> رجایی، احمد علی. پلی میان شعر هجایی و عروضی فارسی. ص. 22.

<sup>2</sup> رجایی، احمد علی. پلی میان شعر هجایی و عروضی فارسی. ص. XXIV.

<sup>3</sup> علی اشرف. تکوین زبان فارسی. - ص. 68.

<sup>4</sup> Саймиддинов Додихудо. Шарҳи ду пора шеъри куҳан аз сурудаҳои мардуми Бухоро. – С. 5-15.

<sup>5</sup> Раҳмон, Эмомалӣ. Забони миллат – ҳастии миллат. – С. 222.

<sup>6</sup> Лившиц В.А., Хромов Л.А. Согдийский язык // Основы иранского языкознания среднеиранские языки. – Москва, 1981. – С. 347 – 514; Согдийские документы с горы Муг, выпуска 4. Юридические документы и письма. Чтение, перевод и комментарии В.А. Лившица. – Москва, 1962; Согдийские документы с горы Муг. Выпуск 3. Хозяйственные документы. Чтение, перевод и комментарии М. Н. Боголюбова и О.

*Kor – i xamir amad (6 ҳиҷо)*  
*Xatun dar way– i kanda (7 ҳиҷо)*<sup>1</sup>.

Аз ҳафт вожаи дар ин ҷо омада ба эътиқоди муаллифи мақола се вожа мансуби забони суғдӣ (*xamir*, *Xatun*, *way*), ду вожа муштарак (*Kor*, *kanda*) ва ду вожа мансуб ба забони дарӣ мебошанд. Вале чунин тақсими вожаҳо ба забонҳои суғдӣ ва дарӣ қатъӣ наметавонад бошад. Масалан, вожаи *way* дар қабати ҳиндуаврупой дар чандин забони дигари бостон ба назар мерасад, ки ба маънои парастиишгоҳ, ҷои муқаддас, ки ба тафсил дар саҳифаи баъд омадааст<sup>2</sup>, он ҳам барои ҳамаи лаҳҷаҳо ва забонҳои роиҷи замони тавлиди ин суруд умумӣ буд. Ҳамин тавр аст вожаи *kanda*, ки муаллиф онро умумӣ медонад. Танҳо ду вожае, ки ин ҷо махсуси забони суғдӣ ё ба истилоҳи Наршаҳӣ бухорист: *xamir* ва *Xatun* мебошад, ки дар матнҳои суғдӣ ва хоразмӣ зиёд дида мешавад, ки аввали тарзи талаффузи суғдӣ ва хоразмӣ вожаи *amir*-и арабӣ ва дигаре вомвожае аз забони туркӣ будааст. Вале натиҷаи муаллифи мақола дар бораи ин пораи шеър он аст, ки он нахуст ба забони маҳаллии Бухоро эҷод ва «баъдан ба дари Хуросон баргардон шудааст»<sup>3</sup>. Вале асли масъала дар он аст, ки дар замоне, ки ин суруд иншо шудааст, забони аҳли Бухоро «дарӣ» навиштаанд, ки дар баробари унвони лаҳҷаи муштарак сарзаминҳои машриқи Эрон будан, сифате аз забони роиҷи дарборҳои шоханшоҳии Сосонӣ ҳам будааст, ки муаллифи «Ахсанут-тақосим» (соли таълифаш 375 / 986) ба возеҳӣ ва равшанӣ ҳамин маънии дариро дар мавриди забони «аҳли Бухоро» баён мекунад: «Дар забони мардуми Бухоро такроре вучуд дорад, магар намебинӣ, ки чӣ гуна мегӯянд: **Яке адраме** ва дидам яке марде ва бахшидам **адраме** ва бар ин қиёс кун; дар миёни каломи худ мегӯянд: **донистӣ**, бе он ки фоидае дар он бошад, ҷуз он ки ин забон **дарӣ** аст ва забонҳои аз қабилҳои онро аз он ҷиҳат **дарӣ** гӯянд, ки забонест, ки номаҳои подшоҳ бад-он навишта мешавад ва ғаризаҳои, ки ба *ӯ* тақдим медоранд, бо он забон аст ва иштиқоқи он аз **дар** аст ва он ба маънии **боб** аст, яъне, он ки забони дарӣ забонест, ки аҳли боб (яъне аҳли даргоҳи подшоҳ) бад-он сухан мегӯянд»<sup>4</sup>. Ҳамин маъниро муаллифи «Бурҳони қотеъ» боз равшантар мерасонад: «**Дарӣ** ба фатҳи аввал

---

И. Смирновой. – Москва, 1963, Хромов А. Л. О структурных особенностях иранской топонимии Мавераннахра в период IX–XVII вв. // Восточная филология. Выпуск III. – Душанбе, 1974.-С. 3 – 25.

<sup>1</sup>Саймиддинов Додихудо. Шарҳи ду пора шеъри куҳан аз сурудаҳои мардуми Бухоро. –С. 10.

<sup>2</sup>Саймиддинов Додихудо. Ҳамон мақола. –С. 11.

<sup>3</sup>Саймиддинов Додихудо. Ҳамон мақола. –С. 13.

<sup>4</sup> مقدّسی، محمد ابن احمد. التقاسيم في معرفة الاقاليم (سال تالیف 986/375). بکوشش دخویه. – لیکن، 1967. -335 ص. // صفاء ذبیح الله. تاریخ ادبیات در ایران. جلد اول. – ص. 157.





ки  $\bar{u}$  бори аввал ба таври илмӣ ин шеърро аз нигоҳи решашиносӣ таҳлил намудааст, ки хеле мантиқӣ ва ҷанбаи забоншинохтии устуворгаре нисбат ба шарҳҳои дигар дорад, ки барои дароз нашудани ин гуфтор танҳо шакли пешниҳодии муаллифи мақола аз ин шеърро меоварем:

Ku var xamir amad Xatun duroy – ka nadah  
Ки бар амир омад Хотун дурӯғ – ка надеҳ.

«Ты уж не лги, что «Хотун приходила к эмиру»<sup>1</sup>. Нуктаҳои тозае, ки дар ин тафсир дида мешаванд, иборатанд: аз талаффузи сугдӣ **амир** будани **хамир**, бар амир омадан - дурӯғ надеҳ ва якҷо навиштани пайвандаки **ка** (ки), ки дар матнҳои дигар ҳам дида мешавад, мисли мисраи севуми суруди Борбад:

كخاهذ ماه بود شد كخاهذ خرشيد

Қитъаи дигари шеър, ки аз давраи баъдазисломии адабиёти форсӣ дар даст аст, аз шоире арабинаҷод ба номи Язид ибни Муфарриғ мебошад. Ба нисбати замон ин шеър ҷаҳор сол пас аз «Суруди мардуми Бухоро» дар ҳудуди соли 60 х. қ. / 680 м дар замони хилофати Язид ибни Муовия (60- 64 / 680- 684) суруда шудааст. Аз он ки ин шеър таърихи эҷоди хеле шигифт дорад ва машҳур будааст, дар ҷандин китоб бо достони шавқангези он нақл шудааст. Ибни Қутайба (даргузашта ба соли 279 х.қ./890) дар «Табакоту-ш-шуаро», Табарӣ (таваллуд 310 х.қ./913) дар «Таърихи Табарӣ», Абдулфараҷи Исфаконӣ (тав.356х.қ./967) дар «Ал-ағонӣ» ва муаллифи номаълуми «Таърихи Систон» онро зикр кардаанд<sup>2</sup>. Замоне ки Аббод ибни Зиёд бародари Убайдуллоҳ ибни Зиёд ба ҳукумати Систон мансуб шуд, Язид ибни Муфарриғи Ҷимярӣ ҳамроҳи  $\bar{u}$  ба Систон омад. Убайдуллоҳ ибни Зиёд  $\bar{u}$ ро пеш аз рафтани ба Систон талабиду хоҳиш намуд, ки ҳамроҳи бародараш наравад, зеро  $\bar{u}$  дар кори ҳукумат ба ҳарб ва ҷамъоварии хироч машғул гардида, наметавонад аз ту мувозибати лозимро намояд ва ту аз ин рафтори  $\bar{u}$  нороҳат гардида, ба хонаводаи мо ҳатман бадгӯйӣ хоҳӣ кард. Ибни Муфарриғ хеле ба  $\bar{u}$  ваъда дод, ки чунин нахоҳад кард, зеро некиҳои бародари туро

<sup>1</sup>М.Н.Боголюбов.Строфа из таджикской песни VII в. (Дополнение к “Истории Бухары” Наршахи). (Як банд аз суруди тоҷикии асри VII. Такмилае ба Таърихи Бухорои Наршаҳӣ). –С. 63.

<sup>2</sup>ابن قتيبة. الشعر و الشعراء. تحقيق و شرح احمد محمد شاكر. طبع قاهره، 1364-1369 (دو جزء) جزء 2. – 844 ص. ;

Табарӣ, Муҳаммад ибни Ҷарир. Таъриху-р-русули ва-л-мулук. Китоби 5. Тарҷумани Абулқосими Поянда. Бо таҳрир, тасҳех ва таҳқиқи Нурмуҳаммад Амиршоҳӣ. – Душанбе: Сарредексияи Энциклопедияи миллии тоҷик, 2016. كتاب. اصفهاني، ابوالفرج. كتاب الاغانى. طبع دارالكتب مصريه، 1345 و1357. تاريخ سيستان. بكوشش ملك الشعراء بهار. تهران: كلاله. 470 ص. –خاور، 1314.

бисёр дидаам ва поси онҳоро медорам. Бо ин ҳама Ибни Зиёд аз ӯ тааххуд гирифт, ки ҳар вақт аз бародари ӯ кӯтоҳӣ дид, ба ӯ нанависад ва дар беобрӯй сохтани ӯ шитоб нахоҳад кард. Пас аз ин мувофиқа ҳосил карданд ва бо иҷозаи Ибни Зиёд, Ибни Муфарриғ ба мусоҳибат ва мунодими Аббод пардохт. Ҳамон тавр ки Ибни Зиёд пешгӯй карда буд, Аббод масруфи ҳарб дар самти Кобул, Қандаҳор ва Ҳинд натавонист хостаҳои Ибни Муфарриғро бароварда намояд ва ӯ андак-андак ба бадгӯии хонаводаи Аббод шурӯъ кард.

Намунаи ин ҳаҷвиёти ӯ дар ҳаққи модари Ибни Зиёд дар китобҳо омадааст. Аббод риши анбӯҳи баланде дошт, боре ҳангоми сафари ӯ, ки Ибни Муфарриғ ҳамроҳаш буд, бод риши ӯро саҳт парешон мекард. Ибни Муфарриғ ба марде дар пахлуяш мегӯяд, ки эй кош, ришҳо алаф буданд ва онҳоро ба асбони мусулмонон мехӯронидем. Ин шахс барои ширин кардани хеш инро ба Аббод гуфт. Аббод саҳт хашмгин шуд, вале чизе ӯро нагуфт. Бори дигар дар ҳангоми аспдавонӣ аспаш афтод. Ибни Муфарриғ боз гуфт: Аббод пеш афтод ва ришаш ақиб монд. Ин бор ҳам Аббод бо вучуди хашмгин гардидан сабр кард ва чизе нагуфт.

Вале Ибни Муфарриғ ҳамоно ба суҳанони тунду ҳаҷвии хеш идома меод. Ниҳоят Аббод ашхосеро маъмур соҳт, то аз ӯ қарзашонро талаб карданд. Пардохтан натавонист. Пас ба зиндонаш андохт ва ғулому канизаки ӯро, ки дилбастагии зиёде ба онҳо дошт, иҷборан бифурӯхт. Баъдан аспу силоҳу асосияи хонаи ӯро фурӯхт ва худаширо дар ҳабс нигоҳ меод, то аз он ҷо раҳой ёфт ва ба Басра гурехт. Ибни Муфарриғ аз шаҳр ба шаҳре пинҳонӣ басар мебурд ва ҳаҷвияҳоро дар ҳаққи Оли Зиёд ва модари онҳо - Сумайя паҳн мекард<sup>1</sup>. Аз он ҷумла ҳамоно ашъор аст, ки ба арабӣ дар китобҳои ёдшуда овардаанд, ки модари онҳоро таҳқир кардааст. Ибни Зиёд пас аз ҷустуҷӯи зиёд ӯро дастгир ва ба зиндон кард ва ба Язид ибни Муовия навишт, то ҳукми қатлаширо содир намояд. Язид ба ӯ навишт, ки ҳар навъе уқубат меҳаҳӣ, бикун, вале ӯро накуш, ки қавму ашоири ӯ зиёд аст ва дар лашкари халифа машғули хидмат ҳастанд, ки онҳо ҷуз ба куштани ту розӣ намешаванд. Пас Убайдуллоҳ ибни Зиёд фармон дод Ибни Муфарриғро набизи ширин бо шабрум (ғиёҳи захрогин ва исҳоловар) хурониданд, то табиати ӯ равон шуд. Пас гурбае, саге ва хукеро бо ӯ баста дар кӯчаҳои Басра мегардониданд. Кӯдакон аз қафои ӯ фарёд мезаданд: Ин чист? (ба форсӣ дар асли матн ин **шист**? омадааст – тавзеҳи Қазвинӣ). Ӯ ба форсӣ мегуфт:

*Об аст, набиз аст,  
Усороти забиб аст,  
Сумайя рӯ сабиз аст<sup>2</sup>.*

<sup>1</sup> Қزوинӣ, محمد. قديم ترين شعر فارسي بعد از اسلام/قزوینی، محمد. بیست مقاله. جلد 1. - صص. 34-35، 39-41. اصفهانی، ابوالفرج. الاغانی چاپ بولاق، جلد 17، صص. 51-73؛ جاحظ، ابو عثمان عمرو؛ ابن بحر. البيان والتبيين بتحقيق عبدالسلام محمد هارون. القاهرة، جلد 1، ص. 609؛ تاريخ سيستان. بکوشش ملک الشعرا بهار: این مصرع را علاوه دارد: و دنیه فریه و په است (ص. 96).

Сумайя – модари Ибни Зиёд аст, ки дар даврони ҷоҳилият аз фоҳишаҳо будааст. Ибни Муфарриғ аз шиддати иҷобати табиат суст шуда, меафтад. Аз бими он ки мабодо бимирад, ўро шустушў карда, боз ба Систон ба назди Аббод фиристод, то солҳо ба саҳтӣ дар зиндон буд. Ва аҳли Яман ба зорӣ ва таҳдид аз Язид раҳоии ўро хостанд ва халифа ўро афв фармуда, аз каламрави Зиёд ва Аббод берун ба Мавсил манзил дод ва паноҳанда кард<sup>1</sup>. Тавре ки дида мешавад, аз нигоҳи таърихӣ ин шеър пас аз “Суруди мардуми Бухоро” қадимтарин шеър ба забони форсии дарист, вале аз шоире арабизабон бо истеъмоли калимаҳои арабӣ ва форсӣ эҷод шудааст. Арзиши илмӣ ва адабии ин шеър дар он мебошад, ки гузашта аз он ки яке аз нахустин ашъор ба забони форсист, боз аз нуфузи забони дарӣ дар Басра ва дигар шахрҳои хилофат дар асри аввали ислом шаҳодат медиҳад. Дигар он ки ин шеър бо вучуди аз тарафи шоире касбӣ иншо шудан, дар вазни ҳичоӣ ва бо нуқсони қофиягуфташудааст. Ба назар мерасад, ки Язид ибни Муфарриғ бар асари зиндагонии чандсола дар Хузистону Хуросону Систон ба забону адаби ин мардумон ошноӣ доштааст ва суннати сурудани шеър дар ин давра ба забони форсии дарӣ ханӯз ба қоидаи бостон, ки дар шеър вучуди аносири вазни арӯзи ва қофияро ҳатмӣ намешумориданд, бар ҷой буд ва то ихтирои Халил ибни Аҳмад ҳам ҳудуди беш аз садсола дар пеш буд. Аз ин рӯ, ба ҳамон суннати ашъори форсии тоисломӣ, яъне, бадохатан суруда шудани қитъаи шеъри Язид ибни Муфарриғ ва мухотабаш кӯдакон будан ҳам, табиӣ ва воқеӣ буда, аз ҷиҳати сохтор бо ашъори ин давра мутобиқати комил дорад.

Аз дигар ашъори бозмонда дар ҳамин навъи суруди мардумӣ ва сохту муҳтаво ва муҳимтар аз инҳо бо оҳангу мазмуни ватандӯстӣ, озодихоӣ ва муртабит бо ҳодисаи воқеии таърихӣ ва зикри соли дақиқи суруда шудани он, маъруф ба унвони «Суруди кӯдакони Балх» мебошад, ки дар китоби «Таърихи Табарӣ» зимни баёни вақоеи соли 108 ҳ.к/726 омадааст<sup>2</sup>. Асад ибни Абдуллоҳ –ҳокими Хуросон дар ин сол барои ҷанг бо амири Хатлон ва Ҳокими Турк ба он сомон рафт, вале шикаст хӯрда, ба Балх баргашт ва кӯдакони Балх дар ҳачви ӯ ин порахоро мехонданд:

*Аз Хуталон омадия,  
Ба рӯ табоҳ омадия,  
Овор боз омадия,  
Хушқу низор омадия<sup>3</sup>.*

<sup>1</sup> Қزوинӣ, محمد. قديم ترين شعر فارسي بعد از اسلام/قزوینی، محمد. بیست مقاله. جلد 1. ص. 41

<sup>3</sup> Табарӣ, Мухаммад ибни Чарир. Таъриху-р-русули ва-л-мулук. – С. 3620 ва 3622.

Ин пораи шеърӣ ҳам мутобиқ ба ашъори давраи мазкур эҷод шудааст, яъне, омиёна ва шифоҳӣ будан аз вижагиҳои аслии он аст. Мисли ашъори қаблӣ бидуни қофия ва дар вазни ҳичоӣ эҷод шудааст. Агарчи дар он нишонаҳои вазни арӯз ба назар расида ва онро дар қолаби муфтаилун мафӯзилун (-VV-| V-V-)метавон рехт, вале ин аз тасодуф ва иттифоқот буда, дур аз мантиқ ва воқеияти он сол, бахусус, дар Балх мебошад<sup>1</sup>. Ҳамин тавр ин пораи ашъори давраи ибтидоии сурудани шеър ба форсии дарӣ дорои ҳамон вижагиҳоест, ки ашъори қаблӣ доштанд.

Суруди дигаре, ки ба забони форсии дарӣ аз ин давра ба мо расидааст, баръакси сурудҳои дигари дарёфтшуда ба ин забон, ки мардумӣ буданд, дорои муаллифе маълум аз аҳли Самарқанд бо номи Абулянбағӣ Алаббос ибни Тархон мебошад. Порае аз ин суруд иттифоқан дар асари ҷуғрофии “Ал-масолик ва-л-мамолик” (соли таълифаш 232х.к./847, ба арабӣ) навиштаи Ибни Хурдодбех боқӣ мондааст, ки матни он комилан ба забони форсии тоҷикӣ бад-ин сурат аст:

*Самарқанди кандманд,  
Баз-инат кӣ афканд?  
Аз Шош та беҳӣ,  
Ҳамеша та хуҳӣ<sup>2</sup>.*

Ин суруд ба ҳамон навъе, ки дар ин маъхаз сабт ёфтааст, ба шакли таърихии вожаҳо дар вазни ҳичоӣ сохта шудааст ва монои сурудҳои пешин дар сабки шеърҳои омиёна эҷод шудааст. Муаллифи ин суруд агарчи шоири касбист, боз ҳам дар вақти ба забони модарии хеш сурудани ашъор пойбанд ба қонунҳои шеъррофаринии замони худ ба забони форсии тоҷикӣ буда, онро мутобиқ ба сурудаҳои мардумии диёри худ дар вазни ҳичоӣ сохтааст.

Донишмандон дар хондани мисраи охири ин пора ихтилофи назар доранд. Бори нахуст аз ин пора шеър ва муаллифи он Аббос Иқболи Оштиёнӣ маълумот дода, матни онро аз китоби Ибни Хурдодбех дар мақолае дар маҷаллаи “Меҳр”<sup>3</sup> чоп намуд ва ашъори арабии шоирро аз дигар маъхазҳо дарёфт ва баъзе лаҳзаҳои зиндагии ӯро равшан ва соли вафоти Абулянбағиро 230 х.к./845 таъин намудааст. Дар ин мақола мисраи чорум чунин тасхех ёфтааст:

**Ҳамеша та хаҳӣ.**

---

<sup>1</sup> Қزوинӣ, محمد. قدیم ترین شعر فارسی بعد از اسلام/قروینى، محمد. بیست مقاله. جلد 1. ص. 42.  
<sup>2</sup> ابن خردادبه، عبدالله ابن عبدالله (913/300-827/211). المسالك والممالك. ترجمة سعيد خاركند. با مقدمه از اندره مايكل. - تهران: مؤسسه مطالعات و انتشارات ميراث ملل، 1371. ص. 28.  
<sup>3</sup> آشتیانی، عباس اقبال. ابوالینبغی العباس ابن ترخان// مهر، سال اول، شماره 10. - صص. 734-736.

Дар асли матни китоб: *همی ته نه جهی* сабт шудааст<sup>1</sup>. Ин мисраъро Садри Саъдиев бад-ин гуна бозхонӣ кардааст: Ҳамеша та *хеҳӣ* ва *хеҳӣ*-ро бо *беҳӣ* ҳамқофия кардааст<sup>2</sup>. Дар китоби Эмомалӣ Раҳмон «Забони миллат – ҳастии миллат» байти охир чунин омадааст:

*Аз Шош та баҳӣ*  
*Ҳамеша та хаҳӣ*<sup>3</sup>.

Алиашрафи Содикӣ мисраи чорумро бад-ин гуна хондааст:

Ҳамеша **баҳ**. **Хаҳӣ**.<sup>4</sup>

Дар бораи ин шоири самарқандиасл дар ду маъхази дигар маълумот омадааст, ки ба замони Абулянбағӣ наздик будааст. Сарчашмаҳо намунае аз ашъори арабии ўро ҳам забт намудаанд. Абулаббос Абдуллоҳ ибн ал-Муътази Аббозӣ (247-296х.к./862-909) дар «Табакоту-ш-шуаро-л-муҳаддисин» ва Абӯабдуллоҳ Муҳаммад ибни Абдуси ал-Ҷаҳшёрӣ (мутаваффоӣ 331/943) дар «Китобу-л-вузаро ва-л-кутуб» овардаанд, ки ў аз надимону муҷолисони Оли Бармак будааст<sup>5</sup>. Рӯзе Яҳё ибни Холиди Бармакӣ ва писаронаш Фазл ва Ҷаъфар бо ҷамоате аз роҳе мегузаштанд, ки Абулянбағӣ он ҷо буд. Абулянбағӣ Абулқосим ибни ал-Муътаммар аз-Заҳрии шоирро, ки ҳамроҳи онон буд, хост ва ин шеърро ба ў дод, ки ба Яҳё расонад:

صَحِبْتُ الْبِرَامِكَ عُشْرًا وَلَا  
وَبَيْتِي كِرَاءً وَخُبْرِي شِرًا

*Даҳ сол аст, ки Бармакиёро ҳамроҳам (то имрӯз)*  
*Вале хонае кироя дорам ва нони худро мехарам.*

Яҳё аз теғи забони ин шоир огоҳӣ дошт, биноан фарзандонашро саҳт аз он хушдор дод. Чун шоир ба хонааш расид, онҳо пулу гизо фиристоданд ва хонае барояш хариданд.

Муҳаққиқи тоҷик Т. Мардонӣ дар бораи ин шоири зуллицсонайни тоҷик мақолае ба ҷоп расонида, аз манбаъҳои ёдшуда ва китобҳои дигар маълумоти дақиқ дода, ду қитъаи шеъри арабии ўро аз «Табакот-уш-шуаро» овардааст, ки дар яке аз онҳо аз калимаҳои

<sup>1</sup> ابن خردادبه، ص. 28.

<sup>2</sup> Саъдиев Садри. Маркази адабии Самарқанд дар шохроҳи таърих. – Тошканд, 2012. – С. 10.

<sup>3</sup> Раҳмон, Эмомалӣ. Забони миллат – ҳастии миллат. – С. 224.

<sup>4</sup> صادقي، علی اشرف. تکوين زبان فارسی. – تهران، 1979/1357. صص. 92-93.

<sup>5</sup> Мардони, Гаджиддин. Об одном раннем двуязычном персидско-таджикском поэте. // Мардони Гаджиддин. Арабско-таджикские литературные связи. Сборник статей. – Душанбе: «Ирфон», 2006. – С. 62.

форсии тоҷикӣ истифода кардааст<sup>1</sup>. Хулосаи муҳаққиқон дар бораи шеъри форсии Абулянбағӣ он аст, ки он ба забони роиҷи ҳамон давраи зодгоҳи ӯ ва дар рӯҳияи ватандӯстӣ суруда шудааст<sup>2</sup>. Шеъри мазкур дар ҳамон замони пайдоиши шеър ба забони форсии тоҷикӣ ва дар заминаи ашъори омиёнаи мавҷуд дар миёни мардумони ин сарзамин ва ба ҳамон шеваи қадим таълиф шудааст.

Садрӣ Саъдиев шеъри мазкурро дар шакли наве, ки мухтареи он ҳуди Абулянбағӣ мебошад, яъне, қофиябандии маснавиरो дорад ва ин ду байтро поре аз манзума ё маснавии шоир медонад, ки ба андешаи мо дар оғози гароиши шеър ба ин забон чунин асари манзуми калон аз ҳақиқат дур ба назар мерасад<sup>3</sup>. Ба назари мо, ин суруда мисли сурудаҳои дигари ин давра ҳам дар қолаби ашъори фолклорӣ ва вазни ҳичоӣ таълиф шудааст ва аз нахустин осори манзуми форсии тоҷикӣ ва дорои муаллифе касбӣ мебошад. Дигар аз вижагиҳои ашъори Абулянбағӣ дар оҳанги танз доштани онҳост, ки дар назми арабии он замон нав нест, вале дар шеъри ӯ «эътироз аз беадолатиҳои ҳаёт»<sup>4</sup> ҳам дида мешавад. Ибни Муътазз ҳатто аз иштиҳои байти дувуми ин пореи шеъри арабии ӯ

ثبرا على الذل والصغار  
يا خالقا الليل والنهار  
كم من حمار على جوار  
و من جوار بلا حمار

*Сабр бидеҳ дар хориҳо ва костиҳои зиндагӣ,  
Эй офаринандаи шабу рӯз!  
Харе чандро бар аспон нишонид,  
Хеле аз некувонанд, ки харе ҳам надоранд.*

«Байти сонии ин китба дар офоқ бар забони мардум мегардад ва дар ҳар маҷлису маҳфил ва кӯю барзан хонда мешавад ва мазмуни ин абёт ҳама вақт мисдоқи хоричӣ дорад»<sup>5</sup>. Ашъори Абулянбағӣ давоми мантиқӣ ва барҳоста аз гулӯи шоирест, ки тамоми харобаҳои Самарқандро, ки дар китобҳои арабии замони ӯ мубориза ва пойдорӣ аҳолии ин шаҳрро навиштаанд, хондааст ва он қаҳрамониҳо дар замони зиндагии ӯ дар байни мардум ҳанӯз зинда буданд ва ин фикр бо таваҷҷуҳ ба шеъри порсии ӯ таъйид мешавад ва

<sup>1</sup>Мардони,Таджиддин. Об одном раннем двуязычном персидско-таджикском поэте. –С. 66.

<sup>2</sup>Саъдиев Садрӣ. Маркази адабии Самарқанд дар шоҳроҳи таърих. –Тошканд, 2012. –С. 10.

<sup>3</sup>Саъдиев Садрӣ. Маркази адабии Самарқанд дар шоҳроҳи таърих. –С. 11.

<sup>4</sup>Мардони,Таджиддин. Об одном раннем двуязычном персидско-таджикском поэте. –С. 65.

<sup>5</sup> آشتیانی، عباس اقبال. ابوالینبغی العباس ابن ترخان// مهر، سال اول، شماره 10. –ص. 736

«ашъори Янбағиро метавон пешдаромади шеъри мактуби порсӣ каламдод кард»<sup>1</sup>. Ҳамин забони тезу бурандаи шоир сабаби марги нобахангоми ӯ шудааст. Дар замони хилофати Восиқ (842-847) ӯ вазири хилофат Фазл ибни Марвонро ҳаҷв кард ва халифа ӯро ҳабс намуд ва шоир дар ҳамон ҷо даргузашт.

Дар мавриди номи гузаштагони шоир ба исми Тархон ва куняи ӯ – Абулянбағӣ, ки дар ҷопи «Ал-масолик ва-л-мамолик» ба шакли Абуттақӣ сабт шудааст<sup>2</sup>, хато буда, дар маъхазҳои боэътимоди замони шоир он Абулянбағӣ омадааст. Тархонро муҳаққиқони шоир лақаби шоҳзодагони суғдӣ пиндошта, шоирро аз авлоди онҳо доништаанд, ки ин ҳам нодуруст ва ин вожаи туркӣ буда, ба шахсони аз молиёт озод итлоқ мегардидааст, ки ҳамин маъниро ҳам дар замони шоир аз даст дода, танҳо барои номи ашхос ҳам дар туркӣ, ҳам дар порсӣ ва ҳам арабӣ ба кор мерафтааст. Ҳамин сабаб шудааст Маликушшуаро Баҳор дар «Сабкшиносӣ»<sup>3</sup> ӯро аз бозмондагони туркони таҳти нуфузи фарҳангу адаби форсӣ монда хондааст, ки саҳеҳ нест<sup>4</sup>. Шеъри форсии Абулянбағӣ, ки бо вожагони порсӣ ва маънии равшан то замони мо расидааст, баёнгари хостгоҳи шеъру адаб ва забони форсии тоҷикӣ будани яке аз гаҳвораҳои тамаддуни миллати мо – шаҳри Самарқанд, давоми мантиқии суруди мардуми Бухоро буда ва дар ҳамон оҳангу рӯҳия эҷод шудааст.

Суруди дигаре бозмонда аз эҷоди адабиёти форсии тоҷикӣ «Суруди оташкадаи Каркуй» мебошад ва аз навъи сурудҳои оинӣ ва ситоишист, ки мансуб ба охири давраи Сосониҳо ва ибтидои тасаллутӣ арабҳо буда, дар «Таърихи Систон»<sup>5</sup> маҳфуз мондааст. Матни суруд аз даҳ мисраъ (ҳашт мисраъ дорои қофияи ягона) ва вазни ҳичоӣ (ҳар мисраъ 7 ҳичо дорад) иборат буда, муҳаққиқон бар онанд, ки он дар оғози шеъри форсӣ суруда шудааст, ё агар матни қадиме аз он буда дар ин давра таҳрир ва тағйир ёфтааст<sup>6</sup>. Дар ин суруд мо қолаби шеъри пеш аз омадани арабҳоро дар вазну таркиби вожагон ва маъниву сохти онҳо мушоҳида менамоем:

*Фарухт бодо рӯш,  
Ҳунида Гаршосб ҳуш,  
Ҳаме бур аст аз ҷӯш,  
Нӯш кун, май нӯш.  
Дӯсти бад-огӯш,  
Б-офарин ниҳода гӯш,*

<sup>1</sup> زند، مخائيل اسحاق. نور و ظلمت در تاريخ ادبيات ايران. ترجمه اسديور پيرانفر. -تهران: پیام، 1975/2536. ص. 34.

<sup>2</sup> ابن خردادبه، ص. 28.

<sup>3</sup> بهار، محمد تقی ملک الشعرا. سبکشناسی یا تاریخ تطور نثر فارسی. -تهران: امیر کبیر، 1389. جلد 1. ص. 235-290.

<sup>4</sup> Мардони, Гаджиддин. Об одном раннем двуязычном персидско-таджикском поэте. -С. 69.

<sup>5</sup> تاریخ سیستان. ص. 37.

<sup>6</sup> آشتیانی، عباس اقبال. شعر قدیم ایران//کاو، سال 2(دوره جدید)، شماره 2، 1921/1339. صص. 1-8.

*Ҳамеша некӣ кӯш,  
Дӣ гудашту дӯш,  
Шоҳо, худойгоно,  
Б–офарин шоҳӣ<sup>1</sup>.*

Арзиши адабии ин суруд пеш аз ҳама он аст, ки он дорои қофияи ягона ва суруда шудан аст, яъне, сароида шудааст ва аз навъи осори шифохӣ ва мисли дигар сурудҳое, ки мушоҳида намудем аз вижагии мутаранним будан бархурдор аст ва беҳуда нест, ки яке аз муҳаққиқони нахустини он Маликушшуаро Баҳор оҳанги онро **тано танан тан тан** муайян кардааст<sup>2</sup>. Дар тавзеҳу тафсири вожаҳои ин суруд ҳам назари ягона вучуд надорад. Содиқӣ бар он аст, ки ин матн ба порсии дарист, то паҳлавӣ ва калимаҳои онро чунин тафсир мекунад: **фарухт** – афрӯхта, сифати феълӣ аз афрӯхтан, **рӯш**, ки Баҳор ва Аббос Иқбол аз рӯшноӣ дониста буданд – рӯяш, **хунида** – ситуда, писандида машхур, **хуш** ба маънии чон ва равон, **бад оғӯш** ба оғӯш<sup>3</sup>.

Ҳамчунин дар китобҳои таърих ва адаб аз сурудҳои Муҳаммад ибн ал-Баъис ибни Чалис (ваф. 235), ки ба қавли Табарӣ пирони Мароға ашъори форсии онро мехондаанд ва Абулашъаси Кумӣ аз шоирони аввали қарни сеуми ҳиҷрӣ (нуҳуми милодӣ) хабар додаанд, ки мутаассифона ба рӯзгори мо нарасидаанд, вале зикру ёди онҳо мерасонад, ки шеърҳои адаби форсии тоҷикӣ дар он рӯзгор аз шухрат ва нуфуз дар байни омма бархурдор будааст. Чун намунаҳои нахустини адабиёти форсии тоҷикӣ бо баҳрагирӣ аз адабиёти шифохӣ ва хоса суруд, ки навъи вижаи фолклор аст, офарида шудаанд, метавон ҳаде зад, ки нуфузи арабӣ ба омма чандон назаррас набудааст ва осори бадеӣ сина ба сина дар байни мардум, хоса равиши сароишии он идома доштааст ва то интиқол ба адабиёти китобӣ роҳи дарозеро паймудааст.

Адабиёти форсии тоҷикӣ ба он тарзу тариқи маъмуле, ки дар давраи классикӣ мавҷуд аст, бо ба қудрат расидани давлатҳои маҳаллии миллӣ чун Тоҳириён (821-873), Саффорӣён (873-903) ва ниҳоят Сомониён (250-390/875-999) ташаккул ёфтааст, зеро ҳама гуна падидаи фарҳангӣ ва адабӣ ниёз ба пуштвонаи қудратӣ ва ҳукумати дорад.

<sup>1</sup> *تاریخ سیستان. بکوشش ملک الشعرا بهار. - تهران: کلاله خاور، ص. 37.*

<sup>2</sup> Ҳамон китоб, ҳамон саҳифа.

<sup>3</sup> *صادقی، علی اشرف. تکوین زبان فارسی. -، ص. 100.*



## ФАСЛИ ДУЮМ

### ОФАРАНДАГОНИ ОСОРИ АДАБИИ АСРҲОИ VIII-IX

Бо таваҷҷуҳ ба навиштаҳои боло метавон дарёфт, ки шеърӯ шоирӣ ва умуман осори бадеӣ барои мардумони мо аз Авесто маншаъ гирифта, то омадани арабҳо рушду нумӯи чашмгире доштааст, ки бо тафовутҳои вижа аз осори пас аз тасаллути арабҳо фарқ мекард ва ин боиси ба миён омадани дидгоҳҳои гуногун роҷеъ ба пайдоиши шеъри форсии тоҷикӣ гардидааст.

Маъхазҳои адабӣ аз нахустин шоири форсигӯ сухан ба миён оварда, номи шоҳзодаи сосонӣ Баҳроми Гӯрро (420-438) зикр кардаанд<sup>1</sup>. Аз он ҷо, ки муҳаққиқон вучуди забони дариро дар баробари забони паҳлавӣ то пирӯзии арабҳо дар қисматҳои Хуросону Мовароуннаҳр исбот кардаанд ва санадҳои охиринаи пайдогардидаи намунаҳои ин забон бори дигар гуфтаҳои Маликушшуаро Баҳорро дар бораи таърихи қадимтар аз истилои арабҳо собит мекунад: «Аз пухтагии иборот ва истехкоми таркибот ва ширинии лафзу маънӣ пайдост, ки насри қадим парваришёфтаи солиён ва балки қарнҳои дуру дароз аст ва ба маротиб аз китобҳои паҳлавӣ, ки шояд баъзе дар ҳамон қарн таълиф ёфтааст, пухтатар ва чомеътар ва аз лиҳози татаввур комилтар аст»<sup>2</sup>.

Аз ин рӯ, ба форсии дарӣ шеър гуфтани Борбади Марвазӣ (589-638) ва пеш аз ӯ Баҳроми Гӯр (хукм. 421-438) набояд боиси тааҷҷуб бошад. Аввалан, мо намунаи шеъри Борбадро пеш аз ин мулоҳиза намудем, ки мутобиқи меъёр ва вижагии ашъори пешазисломӣ будани он бар асолат ва воқеияти он пораи шеър гувоҳӣ медиҳанд. Дар мавриди Баҳроми Гӯр ва шеъри ӯ бояд гуфт, ки шояд аз тарафи ноқилони ин байтҳо тасарруфе дар сохтор ва вожагони он шудааст, то аз вазну тақтеъ баҳра дошта бошад, зеро дар нахустин маъхазе, ки ин шеър сабт ёфтааст («Ал-масолик ва-л-мамолик»-и Ибни Хурдодбех), чунин будааст: Манам шери Шаланба//Ва манам бабри тала<sup>3</sup>. Муаллифони осори адабиётшиносӣ ва тазкира аз дидгоҳи адабиёти замони хеш ба он сурати арӯзӣ бахшидаанд. Достони

<sup>1</sup> لباب الالباب، صص.22-23. المعجم . - ، صص.221-225. دولتشاه سمرقندى. تذکره الشعراء، ص.29.  
<sup>2</sup> بهار، محمد تقى ملك الشعراء. سبکشناسى، جلد 1. ص.11.

Дар бораи ривоҷи ин забон то омадани арабҳо муфассал ниг. Э.Раҳмон. Забони миллат– ҳастии миллат.– С. 134-138.

<sup>3</sup> کذکنى، محمدرضا شفیعى. کهن ترین نمونه شعر فارسی. یکی از خسروانى های باربد. ص.29. ;صادقى، على اشرف. تکوین زبان فارسی..ص.55

Э.Раҳмон. Забони миллат–ҳастии миллат. – С. 221.

гуфтани байти мазкур батафсил дар маъхазе қадим чун “Ал-муъҷам”-и Шамсиддин Муҳаммад ибни Қайси Розӣ омадааст<sup>1</sup>.

Баҳроми Гӯр – Баҳроми панҷум, понздаҳумин подшоҳ аз сулолаи Сосониён (224-651), ки солҳои 421 то 438 ҳукумат кардааст. Муҳаммад Авфӣ дар «Лубобу-л-албоб» дар боби чаҳорум «Дар маънии он ки аввал кас шеъри форсӣ кӣ гуфт» овардааст: «Бибояд донист, ки аввал касе, ки шеъри порсӣ гуфт, Баҳроми Гӯр буд»<sup>2</sup>. Дар он ки ин байт ба Баҳроми Гӯр мансуб аст, касе аз муҳаққиқон шубҳа накардаанд, ба ҷуз Аҳмади Ҷовид, ки онро аз Баҳроми Гӯр намедонад<sup>3</sup>.

Вале бино бар навиштаи Шамсиддин Қайси Розӣ дар «Ал-муъҷам» тарбияти ӯ бо дастури мунаҷҷимон ба Мунзир ибни Амр ибни Аддӣ Лахмӣ, ки аз тарафи сосониҳо ба Ҷира ҳукумат дошт, супорида мешавад<sup>4</sup>. Пас, Баҳроми Гӯр дар он ҷо, ки дар асри панҷум маркази фарҳангии арабҳо буд ва ҷойи таҷаммуи шоирони араб низ, аз илми шеърӣ қофия бархурдор гашт. Баъзе аз муаллифони сарчашмаҳо ба ӯ чанд қитъа шеъри арабӣ ҳам нисбат додаанд. Масъудӣ – муаллифи «Муруҷу-з-заҳаб» менависад: «Баҳром ашъори арабӣ ва форсии зиёд дорад, ки мо ба чихати эҷоз аз зикри онҳо сарфи назар менамоем»<sup>5</sup>. Дар бораи шеър гуфтани Баҳроми Гӯр гуфтааст:

وله اشعارٌ كثيرةٌ بالعربيةِ والفارسيةِ

Дар «Лубобу-л-албоб» аз ашъори арабии ӯ чор байт омадааст, ки дар ду байти охири он номи муаллиф зикр шудааст:

فقلت له لما مضضت كأنك لم قسم بصوالات بهرام  
فانى لحامى ملك فارس كلها و ما خير ملك لا يكون له حام<sup>6</sup>

Дар ҳамин ҷост, ки Авфӣ мегӯяд, ки «ӯро шеъри тозист бағоят балеғ ва ашъори ӯ мудавван ва банда дар китобхонаи Сари Пули бозорчаи Бухоро девони ӯ дидааст ва дар мутолиа овардааст ва аз он ҷо ашъор навишта ва ёд гирифта. Аз он ҷумла ин аст...»<sup>7</sup>.

<sup>1</sup> المعجم، صص. 221-225.

<sup>2</sup> لباب الالباب، ص. 20.

<sup>3</sup> احمد جاويد. نخستين سخنسرایان فارسی تا ابوالفرج سگزی // افغانستان، 1955/1334، ص. 165. . аз накл

Э.Раҳмон. Забони миллат – ҳастии миллат. – С. 221.

<sup>4</sup> المعجم، ص. 223.

<sup>5</sup> مسعودی، علی ابن الحسین. مروج الذهب. مترجم: ابوقاسم پاینده. – تهران: علمی فرهنگی، 1382، جلد 2. ص. 193.

<sup>6</sup> لباب الالباب، ص. 21.

<sup>7</sup> لباب الالباب، ص. 20.

Соҳиби «Ал-муъҷам» мегӯяд: «Ва Ҳаммод ибни Абилайлӣ, ки мадори ривоёти бештари ашъори араб бар ӯст, чанд қитъаи тозӣ аз ашъори Баҳром муштамил бар тафохур ва такосур аз аҳли Ҳира ривоят мекунад. Ва он чи Аҷам онро аввал ашъори порсӣ ниҳодаанд ва ба вай нисбат кардаанд, ин аст:

*Манам он пили дамону манам он шери яла  
Номи ман Баҳроми Гӯру кунятам он Бӯҷабала<sup>1</sup>*

ва дар «Лубобу-л-албоб» ба ин тарз омадааст:

*Манам он шери гала,  
Манам он пили яла.  
Номи ман Баҳроми Гӯр,  
Кунятам Бӯҷабала<sup>2</sup>.*

Вале қадимтарин сабти ин байт ҳамон аст, ки Ибни Хурдодбех овардааст<sup>3</sup> ва муаллифи «Ғуруру-с-сияр» маъруф ба «Шоҳнома»-и Саолибӣ аз қавли Ибни Хурдодбех менависад: Ибни Хурдодбех мегӯяд: он чи ёрони мо (эрониён) аз ӯ нақл мекунанд, ин аст:

*Манам он шери шулаву манам он бабри яла,  
Манам он Баҳроми Гӯру манам он Бӯҷабала<sup>4</sup>.*

Дар ҳамин чо низ ду пора (6 байт) аз ашъори арабии Баҳроми Гӯр боз ҳам бо така бар Ибни Хурдодбех зикр ёфтааст<sup>5</sup>.

Дар «Таърихи адабиёт дар Эрон» - таълифи Ҷамолиддини Ҳумоӣ ба тарзи зер омадааст:

*Манам он шери шула, манам он бабри яла,  
Манам он Баҳроми Гӯру манам он Бӯҷабала<sup>6</sup>.*

---

<sup>1</sup>المعجم. ص. 224.

<sup>2</sup>إلياب الالياب. ص. 21.

<sup>3</sup>ابن خردادبه، عبيدالله ابن عبدالله (913/300-827/211)، المسالك والممالك // صادقى، على اشرف. تكوين زبان فارسى. – تهران، 1979/1357. ص. 55.

<sup>4</sup>Саолибии Нишопурӣ, Абӯмансур Абдумалик ибни Муҳаммад. Ғуруру-с-сияр маъруф ба «Шоҳнома»-и Саолибӣ. Таҳиягар ва муаллифи сарсухану таълиқот Низомиддин Зоҳидов. – Душанбе: Бухоро, 2014. – С. 282.

<sup>5</sup>Саолибии Нишопурӣ, Абӯмансур Абдумалик ибни Муҳаммад. Ғуруру-с-сияр маъруф ба «Шоҳнома»-и Саолибӣ. – С. 281–282.

<sup>6</sup>همای، جلال الدين. تاريخ ادبيات در ايران، ص. 28.

Муаллиф муътакид аст, ки бо хама ихтилофоте, ки дар ривоёти ин шеър хаст, нигоранда чунин ҳадс мезанад, ки дар асл чизе буда, вале тамодии айём (дурии замон – Ш.М.) ва татовули замон (дастдарозии таърих – Ш.М.) ва тасарруфоти (дасткорихои – Ш.М.) ноқилон онро ба сурате даровардааст ва мӯчиби тардид шуда ва баъзеро аслан ба инкори сиххати ин ривоёт ва шак дар асоси матлаб таъйид кардааст. Дар китоби «Ал-масолик ва-л-мамолик» таълифи Абулқосим Убайдуллоҳ ибни Абдуллоҳ ибни Хурдодбех (205/820-301/913) як қитъа байт ё насри мусаччаъ ба Бахроми Гӯр нисбат медиҳад, ба ин тарик:

*Манам шери Шаланбаву манам бабри яла<sup>1</sup>.*

Ривоятҳои гуногуни ин байтҳо аз он шаҳодат медиҳанд, ки онҳо дар байни мардум аз шуҳрат бархурдор ва дар забони хосу ом чорӣ будаанд ва инро гуфтаҳои Давлатшоҳи Самарқандӣ тақвият медиҳанд, ки ӯ сабаби таълифи нахустин шеъри забони форсиро чунин тавзеҳ медиҳад: «Ва уламову фузало ба забони форсӣ қабл аз замони ислом шеър наёфтаанд ва зикри асомии шуаро надидаанд, аммо дар афвоҳ афтода, ки аввалкасе, ки шеър гуфт ба забони форсӣ, Бахроми Гӯр буд ва сабаб он буд, ки ӯро маҳбубае буд, ки ӯро Дилороми Чангӣ мегуфтаанд ва он манзур зарифа нуктадону росттабъ ва мавзунҳаракот буд ва Баҳром бар ӯ ошиқ буд ва он канизакро доим ба шикор ва тамошо ҳамроҳ бурдӣ. Рӯзе Баҳром ба хузури Дилором дар беша ба шере даровехт ва он шерро ду гӯш гирифта бар ҳам баст ва аз ғояти тафохур бад-он диловарӣ ба забони Баҳром гузашт, ки:

*Манам он тили дамону манам он шери яла*

Ва ҳар сухане, ки аз Баҳром воқеъ шудӣ, Дилором муносиби он ҷавобе гуфтӣ. Баҳром гуфт, ки ҷавоби ин сухани ман чӣ дорӣ? Дилором муносиби он бигуфт:

*Ном Баҳром турову падарат Бӯҷабала.*

Подшоҳро тарзи ин калом ба мазок мувофиқ афтод ва ба ҳукамо ин суханро арз кард. Дар назм қонуне пайдо карданд, фааммо аз як байт зиёда намегуфтанд<sup>2</sup>. Оё ин ривоят ва ривоятҳои дигаре, ки дар мавриди сохтмони қасрҳо ва хушгузаронии умр дар ҷавонӣ ва ёд гирифтани шикору аспсаворӣ ва пас аз ба қудрат расидан бо ташвиқи

<sup>1</sup> Ҳмаи, جلال الدين. تاريخ ادبيات در ايران، ص. 28.

<sup>2</sup> دولتشاه سمرقندى. تذكره الشعراء، ص. 28-29.

мӯбади мӯбадон аз гуфтани шеър даст кашидан, ки дар Ал-муъҷам, Лубобу-л-албоб ва Арафоту-л-ошиқин<sup>1</sup> омадаанд, воқеият доранд ё сохтаву бофтаи ин муаллифон аст? Фирдавсӣ низ дар достони «Подшоҳии Баҳроми Гӯр» ривояти ўро муфассал бар ҳама ва рағбати ўро ба фарҳангу мусиқӣ ва сурудхонӣ овардааст<sup>2</sup>. Тафсили хушгузарониҳо ва майгусорӣ ва ташвиқи мардум ба лаззатгирӣ ва баҳрабардорӣ аз шеър овозхонӣ ва ромишгарӣ ва ба ин хотир овардани чаҳор ҳазор ромишгару навозандаи корозмуда аз Ҳинд дар «Шоҳнома»-и Саолибӣ омадааст<sup>3</sup>, ки бо он чи дигар маъхазҳо навиштаанд, мутобиқат мекунад. Далели дигари алоқа ва иртиботи ин шоҳзода ба аҳли қалам ҳамон метавонад бошад, ки тибқи навиштаи Алиакбари Деххудо дар «Луғатнома» (зайли Оли Микол) бисёре аз бозмондагони Баҳроми Гӯр аз ҷумлаи аҳли қалам ва шамшер будаанд, ки чанде аз онҳо қаҳрамонанд, чун Деваштич, ки дар солҳои 708-722 ихшиди Панҷекат ва пешвои шӯришиёни суғдӣ бар зидди арабҳо дар солҳои 720-722 буд. Дар соли 722 дар Қалъаи Муғ (деҳаи Мадми ноҳияи Айнӣ) ақиб нишаст ва арабҳо ўро дастгир карда ва ба дор кашиданд<sup>4</sup>.

Шаҷараи бозмондагони Баҳроми Гӯр, ки дар Нишобур ва Байҳак будаанд: Микол ибни Абдулвоҳид ибни ҷибрил ибни Қосим ибни Баҳр ибни Девостии Сур ибни Сур ибни Сур ибни Сур ибни Фирӯз ибни Яздгирд ибни Баҳроми Гӯр. Аз ҳамин дуда аст Амир Абулаббос Исмоил ибни Абдуллоҳ ибни Муҳаммад ибни Микол (тав. 882 – ваф. 972), ки дар Шероз мезист ва шоиру олим Ибни Дурайд қасидаи машҳури мақсураи худро дар мадҳи ҳамин Исмоил сурудааст. Ва ў дар замони ҳукумати Амир Абдулмалик ибни Нӯҳи Сомонӣ (954-961) бо пешниҳоди вазир Абӯҷаъфари Утбӣ девони рисолати ин хонадонро пеш мебурд. Вале Амир Аҳмад ибни Исмоили Миколӣ ва фарзанди ў-Амир Олам Абулфазли Убайдуллоҳ ибни Аҳмад соҳиби таълифоте чун «Ал-мунтаҳил» ё «Ал-мунтахаб» ва «Махзану-л-балоға», дорои назму наср ва «Девони расоил» будаанд ва аз ҳамин дуда аст Ҳасанаки вазир, ки ба таври фоҷиавӣ дар Балх бо фармони Масъуди Ғазнавӣ (1030-1041) ба дор кашида шуд ва мӯчиби эҷоди

---

<sup>1</sup> تقى الدين. عرفات العاشقين و عرصات العارفين. با مقدمه ، تصحيح و تحقيق سيدمحسن ناجى نصرآبادى. جلد 2. – تهران: اساطير، 1388، ص. 728؛ المعجم، صص. 223-225؛ لباب الالباب، صص. 20-21. Дар ин ҷо ба ҷои «шери гала»–«шери жаён» забт шудааст.

<sup>2</sup>Фирдавсӣ. Шоҳнома, ҷ. 7. –С. 427–650.

<sup>3</sup>Саолибии Нишопурӣ, Абӯмансур Абдумалик ибни Муҳаммад. Ғуруру-с-сияр маъруф ба «Шоҳнома»-и Саолибӣ.– С. 285–286.

<sup>4</sup>Шамсиддин Муҳаммадӣ. Баҳроми Гӯр. Донишномаи Рӯдакӣ, ҷ. 1. – Душанбе, 2008. –С.. 202-203.

дилангезтарин достони адабиёти гузаштаи форсӣ аз тарафи Абулфазли Байҳақӣ гардид<sup>1</sup>.

Агар донишмандон умри забони форсии дариро «ҳадди ақал то карни III милодӣ пеш бурдаанд»<sup>2</sup>, пас, дар он замон ба ин забон шеър гуфтани Баҳроми Гӯр амре табиист ва он дар ҳолист, ки ин шоҳзода тарбиятёфтаи Ҳира – яке аз конунҳои пайдоиш ва нумуви забону адаби арабӣ бо собиқаи боаҳаммият дар тамаддуни арабист. Ба назар мерасад шеъри Баҳроми Гӯр дар намунаи «Шоҳнома»-и Саолибӣ (таълифи ин китоб дар замони ҳукумати Султон Маҳмуди Ғазнавӣ (998-1030) сурат гирифтааст) ба асл наздиктар аст, зеро чунонки дидем, онро ба нақл аз Абулқосим Убайдуллоҳ ибни Абдуллоҳ ибни Хурдодбех (205/820-301/913) овардааст. Агар мулоҳиза менамоем, ин вариант мантиқитар ва аз нигоҳи дастурӣ эрод надорад ва дар он «Бӯчабала» ба назари мо на ба маънои кунят, балки таҳрифи вожаи асили тоҷикии «бӯзбала» аст, ки мураккаб аз вожаҳои «бӯз»– ба маънои марди тезхуш, соҳибидрок, муқобили кавдан омадааст<sup>3</sup>. Дар «Луғати нимтафсирии Айни» дар тафсири вожаи «бӯз» чунин омадааст: «бӯз»– 1. Аспи нилгуни ба сафедӣ моил; 2. ҷавони паҳлавони далери бебок, тавоно, бардам; 3. Замини зӯри дамдодашуда. (Дар сифати одам ва ҳайвоноти саворӣ ин калима байни «Шоҳнома» ва забони зиндаи тоҷикӣ муштарак аст. Аммо дар сифати замини пурқувват ва навдам махсуси забони тоҷикӣ аст)<sup>4</sup>. Қисми дувуми ин вожа «бала» низ аз вожаҳои куҳани забони тоҷикӣ буда, дар маҳалҳои ҷануби Тоҷикистон дар шакли «бара» – м ва дар манотиқи шимолии кишвар дар шакли «бала» ба маънои писар ё бача ба кор меравад<sup>5</sup>. Дар «Фарҳанги ғӯишҳои ҷанубии забони тоҷикӣ» вожаи «бузбала» ба маънои бӯзбала, болиғ, бакамолрасида, калон омадааст<sup>6</sup>. Пас, дар шеъри Баҳроми Гӯр метавонад ин вожа

---

1خواجه ابوالفضل محمد ابن حسين بيهقى دبیر. تاریخ بيهقى. به تصحيح على اكبر فياض. – تهران: هرميس، 1387. صص. 209-230.

Дар мавриди бозмондагони Баҳроми Гӯр будани Деваштич ва Ҳасанаки вазир ниг.: Маҳдии Сайидӣ. Аз дори Суғд то дори Балх(Сарнавишти хонадони Меколиён, ки аз Деваштич то Ҳасанаки вазир ба он тааллуқ доштанд) //Рӯз. “Озодагон”, шумораҳои 13-18, март-апрели 2008.

2 كهزاد، احمدعلى. تاريخ ادبيات افغانستان. – كابل، 1951/1330. ص. 59؛ دستور زبان درى. بخش نخست. مؤلفان: كهزاد، عبد القويم قويم، حسين يمين. – كابل، 1998/1367. ص. 6

3 معين، محمد. فرهنگ فارسى. جلد 1. چاپ 23. – تهران: امير كبير، 1385 ص. 602.

<sup>4</sup>Айни, Садриддин. Куллиёт. Ҷилди 12. – Душанбе: «Ирфон», 1976. – С. 60.

<sup>5</sup>Саймиддинов Додихудо. Бархе аз вожаҳои куҳан дар ғӯишҳои тоҷикӣ// Саймиддинов Додихудо. Пажӯҳишҳои забоншиносӣ.–Душанбе: «Шарқи озод», 2013.–С. 36– 52,40.

<sup>6</sup>Фарҳанги ғӯишҳои ҷанубии забони тоҷикӣ. Мураттибон: Мансур Маҳмудов, Ғаффор Ҷӯраев, Баҳром Бердиев.–Душанбе: «Пайванд», 2012. – С.946,119.

«бӯзбала» бошад, ки дар он вақт маъно халал намеёбад ва мантиқи мисраъҳо дуруст ва ба асли замону забони шеър мувофиқат мекунад:

*Манам он шери шала,  
Ва манам он бабри яла.  
Манам он Баҳроми Гӯр,  
Ва манам он бӯзбала.*

Дар ин сурат ин шеър бо шеърҳои Абулянбағӣ, Суруди кӯдакони Балх, Суруди Язид ибни Муфарриғ монанд мешавад, ки ҳамагӣ дорои вижагиҳои хосу умумӣ мебошанд.

Як байт шеъри дигаре, ки аз давраи тоисломии забони форсии дарӣ боқӣ мондааст, ба туфайли «Тазкирату-ш-шуаро»-и Давлатшоҳи Самарқандӣ ба мо расидааст. Барои он ки латофати сухани Давлатшоҳ аз байн наравад ва аҳаммияти масъала таъкид шавад, айни навиштаи ӯро меорем: «Абӯтоҳири Хотунӣ<sup>1</sup> гуфта, ки ба аҳди Азудуддавлаи Дайламӣ, ки ханӯз Қасри Ширин, ки ба навоҳии Хониқин аст, вайрон нашуда буд, дар китобаи он қаср ин байт навишта ёфтанд, ки ба дастури форсии қадим аст:

*Ҳужабро, ба геҳон анӯша бизӣ,  
Ҷаҳонро ба дидор тӯша бизӣ<sup>2</sup>.*

Аз ин намуна ва байти дигаре, ки дар «Мучмалу-т-таворих» дар шарҳи ҳоли Ҳумои Чехрзод – духтари Баҳман, ки дар накши зару дирам онро навишта буд:

*Бихӯр бо навӣ ҷаҳон  
Ҷазор сол Наврӯзу Меҳргон<sup>3</sup>,*

маълум мегардад, ки ашъори форсии дарӣ пеш аз ислом ривоч доштааст.

---

<sup>1</sup>Абӯтоҳири Хотунӣ – Муваффақуддавла Ҳусайн ибни Ҳайдар – шоир, нависанда ва муставфӣи хонадони Салҷуқиён дар дарбори Маликшоҳи Салҷуқӣ (465–485/1073 – 1093) ва Муҳаммад ибни Маликшоҳ (498– 511/1105–1118) машғул ба корҳои девонӣ ва муставфӣи Гавҳар Хотун – ҳамсари Маликшоҳ буда, таҳаллуси Хотунӣ аз ҳамин ҷо ба ӯ додаанд. Аз осори ӯ тазкираи «Маноқибу-ш-шуаро» ва ашъоре ба забонҳои форсӣ ва арабӣ ба ҷой мондааст. «Шикорнома»-и Маликшоҳро дар манобеъи адабӣ ба хатти ӯ ёд кардаанд – (سلطان زاده، شهلا. ابوظاهر خاتونی/ دانشنامه ادب فارسی. جلد یکم. - تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1384. - صص. 186-188).

<sup>2</sup> دولتشاه سمرقندی. تذکره الشعراء، ص. 29.

<sup>3</sup> احمد جاوید. نخستین سخنسرایان فارسی تا ابو الفرج سگزی // افغانستان، 1955/1334، ص. 165 به نقل از

Эмомалӣ Раҳмон. Забони миллат – ҳастии миллат. – С.492, 225.

Муаллифони тазкираҳо дар мавриди нахустин шоирони форсиабон, ки дар вазни арӯз шеър гуфтаанд, аз Абӯҳафси Суғдӣ ва Абулаббоси Марвазӣ ёд кардаанд. Нахустин бор Муҳаммад Авфӣ дар «Лубобу-л-албоб» (соли таълифаш 618/1221) пас аз муаррифии байти Баҳроми Гӯр меоварад, ки пас аз интишори ислом миёни шоирони форсигӯ ва шоирони араб «муҳовара падида омад ва аз анвори фазоили эшон иқтибос карданд... бар дақиқи бухур ва давоири он иттилоъ ёфтанд ва тақтеъу қофия ва ридфу равӣ ва итову синод ва аркону фавосил биёмӯхтанд ва ҳам бар он минвол насоиҷи фазоиле, ки натоиҷи таъби эшон буд, бофтанд гирифтанд ва зулфи мусалсали баёнро ба дасти иборату истиорат тофтанд оғоз карданд ва ба қалами забон суварӣ маъноиро чеҳракушоӣ пеш гирифтанд ва дар корхонаи қарехат нақшбандии сухани зебо карданд»<sup>1</sup>. Ҳангоме ки халифа Абулаббос Абдуллоҳи Маъмун (ҳукмр. 786-833) дар соли 893 ба Марв – шаҳри асосӣ ва пойтахти шарқии хилофат ворид мешавад, чун Ҳоча Абулаббос аз донандагони арабӣ буд, қасидае ба забони форсӣ бо омехтаи калимаҳои арабӣ дар мадҳи халифа суруд, ки чаҳор байти он дар «Лубобу-л-албоб» омадааст:

*Эй расонида ба давлат фарқи худ то Фарқадайн,  
Густаронида ба ҷуду фазл дар олам ядайн.  
Мар хилофатро ту шоиста чу мардум дидаро,  
Дини Яздонро ту боиста чу рухро ҳар ду айн.  
Қас бад- ин минвол пеш аз ман чунин шеъре нагуфт,  
Мар забони порсиро ҳаст то ин навъ байн.  
Лек аз он гуфтам ман ин мидҳат туро, то ин луғот  
Гирад аз мадҳу санои ҳазрати ту зебу зайн.<sup>2</sup>*

Пас аз Авфӣ Алоуддин Дадаи Буснавӣ ба нақл аз китоби «Ал-авоил»-и Суҷутӣ ўро нахустин шоир ва ўро Абулаббос ибни Ҳанузи Марвазӣ номидааст<sup>3</sup>. Асли навиштаи Суҷутӣ дар «Ал-васоил ило сомирати ал-авоил», тасҳеҳи д-р Асъад Атлас, Бағдод 1350/1369, сах. 125 чунин аст: аввал мин назми аш-шеъри-л-форсӣ Абулаббос ибн Хирад ал-Марвазӣ қола ал-Бастӣ фӣ Машориб ат-таҷориб<sup>4</sup>, аммо ин матлаб дар дигар китобҳои «Ал-авоил»<sup>5</sup>, аз ҷумла Абӯҳилоли Аскарӣ

<sup>1</sup> لباب الالباب، ص. 21.

<sup>2</sup> لباب الالباب، ص. 22.

<sup>3</sup> صادقى، على اشرف. نخستین شاعر فارسی سرا و آغاز شعر عروضی فارسی//بنیاد موقوفات دکتر محمود افشار یزدی. گنجینه 44. – تهران، 1393. گذشته و آینده فرهنگ و ادب ایران. ص 121.

<sup>4</sup> صادقى، على اشرف. نخستین شاعر فارسی سرا و آغاز شعر عروضی فارسی//بنیاد موقوفات دکتر محمود افشار یزدی. گنجینه 44. – تهران، 1393. گذشته و آینده فرهنگ و ادب ایران. ص. 122.

<sup>5</sup> Китобҳои «Авоил» дар бораи қасоне баҳс мекунанд, ки нахустин бор ба коре пардохтаанд, монанди нахустин қасе, ки ба арабӣ шеър гуфтааст, ё нахустин қасе, ки хирочро бунёд ниҳод ва ё аз корҳои сухбат мекунанд, ки нахустин бор воқеъ



дида намешавад<sup>1</sup>, зеро бештари матолиби китоби Суютӣ аз он ҷо гирифта шудааст, вале дар мавриди Абулаббос маълумотро аз «Машориб-ут-таҷориб»–навиштаи Абулҳасани Байҳақии муаллифи «Таърихи Байҳақ» гирифтааст. Бо вучуди дар маъхазҳои дигар ҳам омадани ин матлаб<sup>2</sup> ин шеър дар байни пажӯҳишгарони ин мавзӯ тарафдорон ва радкунандагони хешро дорад, ки ақидаи дувум бартарии зиёд дорад, зеро шеъри мазкур аз нигоҳи сабку услуб ва тарзи баён ба ашъори садаҳои хаштуму нухум намечаспад. Вучуди калимаҳои номаънуси арабӣ ва вазни рамали мусаммани максур (махзүф) онро бо ашъори шоирони асрҳои XI ва XII мушобеҳ кардааст. Аз ин рӯ, метавонад дар шеъри мазкур дасткории котибон сурат гирифта бошад, вале Алиашрафи Содикӣ ин назар ва назари дигаронро дар мавриди яке донишмандони Абулаббоси Марвазӣ бо Аббос ибни Тархон – муаллифи суруда дар бораи харобии Самарқанд рад мекунад ва бар он аст, ки «агар дар воқеъ шахсе ба номи Аббос ё Абулаббоси Марвазӣ дар қарни дувум вучуд дошта, дар ҳангоми вуруди Маъмун ба Марв дар мадҳи ӯ шеър суруда, шеъри ӯ аз ҳаёл рафта ва ба дасти мо нарасидааст ва гӯяндаи ашъори мавҷуд яке аз шуарои қуруни баъд – эҳтимолан аз шуарои қарнҳои панҷум ва шашум аст, ки таъйини ҳувияти ӯ дар ҳоли ҳозир мумкин нест»<sup>3</sup>. Аз вучуди шеъру шоирии форсӣ дар аҳди Маъмун (786-833) огоҳӣ ё иттилоъе дар даст нест, вале Ибни Қутайба дар «Уюн-ал-ахбор» аз қавли Алӣ ибни Ҳишом, ки зоҳиран ҳамон Алӣ ибни Ҳишом аз уммоли Маъмун аст, мегӯяд: «Дар шаҳри Марв марде буд, ки барои мо қиссаҳои гирифта нақл мекард. Сипас аз остини худ танбӯре берун меоварду менавохт ва чунин мехонд: «Або ин темор бояд андаке шодих»<sup>4</sup>. Аз ин ҷумлаи ба забони форсии дарӣ ба ҷой монда аз он рӯзгор маълум мешавад, ки дар ин минтақа ҳам шеъри қадими тоҷикӣ вучуд доштааст, ки Алиашрафи Содикӣ дар ин ҷумла вучуди вазне ғайриарӯзиро дида, сарояндаи онро аз гӯсонон медонад, ки дар замони Сосониён аз замони Борбади Марвазӣ фаъолият доштанд ва Рӯдакиро яке аз ин шоирони хунёгар дар аҳди Сомониён мешуморад<sup>5</sup>. Аз Абулаббоси Марвазӣ байте дар ситоиши Рӯдакӣ машхур аст, ки пас аз Рӯдакӣ зистани ӯро таъйид менамояд:

---

шуда, монанди нахустин боре, ки девон аз форсӣ ба арабӣ баргардонида шуд ва ғайра. (صادقى، على اشرف. نخستين شاعر، ص.139).

1 نامه های قزوینی به تقی زاده. بکوشش ایرج افشار. – تهران، 1353. ص.126.

2 صادقى، على اشرف. نخستين شاعر. ص.121.

3 صادقى، على اشرف. نخستين شاعر. ص.126.

4 صادقى، على اشرف. نخستين شاعر. ص.127.

5 صادقى، على اشرف. نخستين شاعر. ص.127-128.

*Зебо бувад, ар Марв бинозад ба Кисой,  
Чунонки чаҳон ҷумла ба устои Самарқанд<sup>1</sup>.*

Муҳаммадҷаъфари Маҳҷуб аз рӯи хусусиятҳои сабки байти бозмондаи Абулаббоси Марвазӣ тааллуқи он байтхоро ба ашъори асрҳои дувуму сеуми ҳиҷрӣ – ҳаштуму нуҳуми мелодӣ қатъӣ медонад<sup>2</sup>. Зикри номи Абулаббос дар қасидаи машҳури Манучехрии Домғонӣ:

*Булъалову Булабосу Бӯсалику Булмасал,  
Он ки аз Валволич омад, он ки омад аз Ҳарӣ<sup>3</sup>*

низ гувоҳи аз шоирони қадими форсӣ будани ӯст. Агарчи дар бораи асолати қасидаи ӯ ақидаҳои гуногун дар адабиёти илмӣ вучуд доранд, вале далелҳои ёдшуда аз пешохангони шеъри форсии тоҷикӣ донишмандони Абулаббоси Марвазиро тақвият мебахшанд.

Абӯҳафс Ҳаким ибни Аҳваси Суғдиро ҳам манобеи адабӣ ва таъриҳӣ аз шоирони нахустини форсигӯ навиштаанд. Муаллифи «Ал-муъҷам фӣ маъойири ашъори-л -Аҷам» (замони таълифиш нимаи аввали асри XIII) дар боби аввали қисми аввали китоби хеш, ки «Дар маънии шеър ва қофият ва ҳадду ҳақиқати он»<sup>4</sup> унвон дорад, пас аз таърифи шеър аз нахустин сарояндаи шеър ба арабӣ суҳан оғоз карда, гуяндаи онро Яъриб ибни Қаҳтон ибни Обир ибни Шолих ибни Арфахшад ибни Сом ибни Нӯҳ (с.а.) медонад, ки пас аз тӯфони Нӯҳ «ба исҷоъ ва қароин машъуф будааст»<sup>5</sup> ва аз ин замина ба сароидани каломи мавзун муваффақ гардидааст ва ду байт аз шеъри ӯ меорад<sup>6</sup>. Ва ривояти муаррихонро дар бораи шеъри нахустинро сурудани ҳазрати Одам (с.а.) меорад ва аз марсияи ӯ дар марғи Ҳобил се байт сабт кардааст, ки баъдан муаллифони тазкираҳои форсӣ онро иқтибос кардаанд<sup>7</sup> (ду байт) Давлатшоҳ<sup>8</sup>, (4 байт). Вале Қайси Розӣ «ба иттифоқи аҳли илм» забони ҳазрати Одамро забони сурёни медонад ва шеъри ба ӯ нисбатдодаро тарҷумаи он ба арабӣ менависад<sup>9</sup>.

<sup>1</sup>Шамсиддин Муҳаммадӣ. Абулаббоси Марвазӣ//Донишномаи Рӯдакӣ. Ҷ. 1. – Душанбе, 2008.-С. 38.

<sup>2</sup>مهجوب، محمدجعفر. سبک خراسانی در شعر فارسی. – تهران، 1350.صص.33-37، 34، 50، 56، 77، 86-87، 108-107.

<sup>3</sup>منوچهری دامغانی. دیوان. بکوشش محمد دبیر سیاقی. – تهران: زوار، 1370.ص.131.

<sup>4</sup>المعجم. ص.221.

<sup>5</sup>المعجم. ص.222.

<sup>7</sup>لباب الالباب. ص.18.

<sup>8</sup>دولتشاه سمرقندی. تذکره الشعرا. ص.20.

<sup>9</sup>المعجم. ص.223.

Дар идомаи баҳси хеш аз нахустин шоирони форсигӯ сухан ба миён меорад, ки маълумоти ӯ дар ин мавзӯ аз аввалин навиштаҳо ба забони форсӣ ба шумор меояд ва ривояти Баҳроми Гӯр ва шеъри ӯро муфассал меорад, ки дар саҳифаҳои боло мавриди мулоҳиза қарор додем.

Пас аз он менависад: «Ва баъзе мегӯянд, ки аввал шеъри порсӣ Абӯҳафси Ҳаким ибни Аҳваси Суғдӣ гуфтааст аз Суғди Самарқанд ва ӯ дар саноати мусиқӣ дасте тамом доштааст. Ва Абӯнастри Форобӣ дар китоби хеш зикри ӯ овардааст. Ва сурати олате мусиқорӣ, номи он «шаҳруд», ки баъд аз Абӯҳафс ҳеч кас онро дар амал натавонист оварад, баркашида ва мегӯяд ӯ дар санаи салосамиаи ҳичрӣ (300 х.қ./913 – Ш.М.) будааст ва шеъре, ки ба вай нисбат мекунамд, ин аст:

*Оҳуи кӯҳӣ дар дашт чӣ гуна давадо,  
Ёр надорад, бе ёр чӣ гуна равадо»<sup>1</sup>.*

Ин матлаб, яъне, ихтирои сози мусиқии шаҳруд аз тарафи Абӯҳафси Суғдӣ пеш аз Қайси Розӣ ҳам дар китобҳои донишномаи дида мешавад. Абӯабдуллоҳ Муҳаммад ибни Аҳмад ибни Юсуфи Котиби Хоразмӣ (вафоташ 387х.қ./997) дар «Мафотеху-л-улум», ки ба забони арабӣ навиштааст, дар мусиқӣ дар мадҳали «шаҳруд» навиштааст: «Ашшаҳрӯз-олату миҳдинати, ибдаъуҳо Ҳаким ибн Аҳвас ас - Суғдӣ би Бағдод фӣ санати салоса миати»

الشهرود آلة محدنة ابدعها حكيم بن احوص السغدي ببغداد في سنة ثلاثمائة<sup>2</sup>

Ин маълумот дар тарҷумаи китоби мазкур ҳам омадааст<sup>3</sup>. Зикри Абӯҳафс дар китоби «Асрору-л-ҳикма»-и Абулаббоси Лугарӣ – шогирди Баҳманёр ибни Марзбони (вафоташ 458/1066) шогирди Абӯалӣ ибни Сино (980-1037) чунин омадааст: «Ҳоҷа Абӯнастри Форобӣ дар китоби «Мусиқӣ» чун ҳадиси олати «шаҳруд» ёд кард, гуфт: Инро Ҳаким Аҳвас Ассугдӣ аз Суғди Мовароуннаҳр истинбот кардааст. Ва дар он вақт, ки истинбот кард, бештар аз билоди маъмураи замин онро бигардонид, аҳли ин билодро овози ин олат мувофиқ омад ва ҳама инро писандиданд. Ва ин маънӣ, ки ёд кардем, дар таърихи санаи ситта ва салосамиа (306 х.қ./919 – Ш.М.) буд»<sup>4</sup>. Тавре аз ин навиштаҳо бармеояд, бо он ки онҳо аз «Ал-муъҷам» пеш таълиф шудаанд, маъхазии ягона доранд ва он навиштаи Абӯнастри Форобӣ (870-3-950) мебошад. Абӯнастри Форобӣ дар «Ал-мадҳал фӣ-л-мусиқӣ» аз «ихтирои созе ба номи «шаҳруд» сухан гуфта, мухтареи онро муосири хеш доништа ва гуфтааст, ки вай он созро ба Суғду Бобилу Бағдоду Шому Мисру Миёнрӯдони боло (Байнаннаҳрайни

1 المعجم - . ص. 225-226.

2 نفيسى، سعيد. ابو حفص - نخستين شاعر // پیام نو، سال 6، شماره 3. - تهران، 1331/1953. ص. 41.

3 خوارزمي، ابو عبدالله محمد ابن احمد. مفاتيح العلوم. ترجمة حسين خديوجم. - تهران، 1362. ص. 226.

4 نفيسى، سعيد. ابو حفص - نخستين شاعر. ص. 41.

улё) бурд ва «ҳамаи оҳангҳои ин кишварҳоро бо он заданд ва касе ҳеч кадомро ноҳинчор надонист»<sup>1</sup>.

Дар «Ал-муסיқию-л-кабир» Форобӣ тасвири сози шахрудро нишон додааст<sup>2</sup>. Саид Нафисӣ матлаби болоро аз он ҷо, ки матни арабии китоби Форобиро надоштааст, аз тарҷумаи қисмате аз ин китоб, ки ба франсавӣ дар маҷмӯае бо номи «Муסיқии араб» пайдо карда ва дар мақолаи хеш овардааст, ки аз матни пеш аз ин фарқ мекунад ва бо баёне дақиқтар мефармояд: «Нахуст аз миёни созҳои, ки дар миёни мо (яъне, Форобӣ – Ш.М.) ривоч дорад, созери, ки беш аз ҳама парда дар он ҳаст, бингарем, аз миёни ҳама созҳои, ки дар диёри Араб ривоч дорад, он ки ин шароит дар он ҳаст, шахруд аст. Ихтироии он тоза аст. Қудам аз он огоҳӣ надоштан. Ихтироии он аз Холис<sup>3</sup> ибни Аҳвас, яке аз мардуми Кӯҳистони Самарқанд аст. Онро дар Моҳ дар сарзамини Ҷабал дар соли 1228 таърихи Искандар баробар бо соли 306 таърихи аъроб сохтааст. Сипас ин созиро ба сарзамини Суғд бурд, ки кишварест дар шимол дар мадхали иқлими шашум. Ин сарзамин дар болои дараҷаи чихилу панҷи арзи шимолӣ ва ба машриқ имтидод дорад. Созери, ки дар ин сарзамин ва дар навоҳии муҷовири он аз шимол ва машриқ ба қор мебаранд, писандида афтод ва пардаҳои, ки аз он бармеомада, бар гӯши мардуми ин навоҳӣ гарон наёмадааст. Ибн ал-Аҳвас сипас онро ба Бобил бурд ва дар он замон тавонотарини подшоҳони тозӣ дар он ҷо буд. Сипас онро ба Бағдод бурданд ва аз он ҷо ба Миср ва онсӯйтар ба Байнаннаҳрайну Сурия бурданд...»<sup>4</sup>. Бино бар ин навиштаҳои соли ихтироии шахруд яқинан соли 306 ҳ.қ./ будааст, на 300 ҳ.қ./, ки Қайси Розӣ навиштааст, зеро «Форобӣ, ки дар 339/950, яъне, 33 сол пас аз ин воқеа даргузашта, аз ин қор огоҳтар будааст»<sup>5</sup>.

Аз ин навиштаҳои муҳимтарин натиҷа он аст, ки Абӯҳафс бо муסיқӣ ошно ва мухтарреи яке аз созҳои муסיқӣ, ва аз он ҷо, ки шеър дар аҳди қадим дар Эрон Хуросону Мовароуннаҳр суруда мешуд ва шоир – хонанда ё ромишгар маъруф буд, ки аз шеър гуфтани шоирӣ ӯ гувоҳ аст. Дигар он, ки ӯро аз Суғди Самарқанд ва дақиқан аз Кӯҳистон гуфтани Абӯнасири Форобӣ ба ҳақиқат наздик аст, зеро аз мазмуни байти мансуб ба ӯ ҳам ин матлаб хувайдо мегардад.

Гувоҳи дигар, зинда будани навъи шеърии байт дар осори шифоҳии мардуми сарғаҳи Зарафшон, мерасонад, ки Абӯҳафси Суғдӣ

<sup>1</sup> Мلاح, حسينعلی. فرهنگ سازها. – تهران، 1376. – صص. 439-440. به نقل از: غلام رضایی، محمد. ابوحفص سغدی/دانشنامه زبان و ادب فارسی. جلد اول. – تهران، 1384. – صص. 126-127، 127.

<sup>2</sup> غلام رضایی، محمد، ص. 127.

<sup>3</sup> Мутарҷими франсавӣ тасриҳ кардааст, ки дар нусхаи дигари китоби Форобӣ номи мухтарре «Ҳаким ибни Аҳвас» омадааст (41 (نفیسی سعید. ابوحفص – نخستین شاعر. ص. 41).

<sup>4</sup> نفیسی سعید. ابوحفص – نخستین شاعر، ص. 41-42.

<sup>5</sup> نفیسی سعید. ابوحفص – نخستین شاعر. ص. 42.

аз ин сарзамин будааст ва инро шодравон Аълохон Афсаҳзод низ пай бурда, зодгоҳи ӯро ҳамон ҷо тахмин кардааст<sup>1</sup>.

Манбаъҳои дигари адабӣ ва таърихӣ навиштаҳои Қайси Розиро дар мавриди Абӯҳафси Суғдӣ ва байти бозмонда аз ӯ такрор кардаанд. Фазлуллоҳи Қазвинӣ дар китоби «Ал-муъҷам фӣ осори мулуки-л-Аҷам», ки ба номи Атобак Нусратуддин Аҳмад ибни Рукниддини Юсуфшоҳ (696-733/1297-1333)–ҳокими Луристон аз хонадони Ҳазорасбӣ навиштааст, матлаби Қайси Розиро такрор кардааст, вале аз он ки дар сабти байт тағйирот дорад, овардани онро лозим мешуморем: «Ва баъзе мегӯянд аввал шеърӣ форсӣ Абӯҳафси Суғдӣ гуфтааст, аз Суғди Самарқанд. Ва ин Абӯҳафс дар синоати мусикӣ дасте тамом доштааст ва Абӯнасри Форобӣ (Форобӣ – Ш.М.) дар аснои таълифоти хеш зикр кардааст ва сурати олати мусикорӣ, ки мулаққаб ба шохруд ва баъд аз Абӯнаср ҳеч кас дар амал наёварда, бар сафҳа барнакашида. Ва ӯ дар санаи салоса миати ҳичрияи набавия будааст. Ва шеъре, ки ба вай мансуб кардаанд, ин аст:

*Оҳуи кӯҳӣ дар дашт чӣ гуна давадо,  
Чун надорад ёр, бе ёр чӣ гуна равадо»<sup>2</sup>.*

Дар фарҳангномаҳои форсӣ – «Фарҳанги Чаҳонگیرӣ»-и Инҷуи Шерозӣ, «Маҷмаъу-л-фурс»-и Сурурии Кошонӣ ва «Фарҳанги Рашидӣ»-и Абдуррашиди Таттавӣ аз «Рисолаи Абӯҳафси Суғдӣ» ё «Фарҳанги Абӯҳафси Суғдӣ» ёд шудааст ва баъзе фарҳангшигориҳо вожаҳоро бо намунаҳои шеърӣ аз ин луғатнома нақл кардаанд. Муаллифи «Маҷмаъу-л-фурс» (соли таълифаш 1008 то 1028/1600-1628) дар зайли мадҳалҳои «ахш» – ба маънии арзиш ба вазни рахш (мисол аз Унсурӣ), «чилб» ба маънии нобакор (мисол аз Носири Хусрав), «хасу хос» ба маънии хасу хошок (мисол аз Рӯдакӣ) ва «деранд» – ба маънии даҳр ва замон (мисол аз Рӯдакӣ) «Рисолаи Абӯҳафси Суғдӣ»-ро марҷаъ нишон додааст<sup>3</sup>. Дар «Фарҳанги Рашидӣ» (1064/1654) дар зайли вожаҳои «астем» ба маънии остин (мисол аз Амир Хусрав), «гургар» ба маънии муфтӣ (мисол аз Абӯҳафси Суғдӣ), «дафнук» ба маънии ғошия (мисол аз Мунҷик), «деранд» ба маънии рӯзгор, замона (мисол аз Рӯдакӣ) аз фарҳанги Абӯҳафс ёд шудааст ва байти зеро аз ӯ барои шохиди вожаи «гургар» овардааст:

*Бӯсу назарам ҷамол бошад бо ёр,  
Ин фатво ман гирифтаам аз гургар.<sup>4</sup>*

<sup>1</sup>Афсаҳзод, Аълохон. Одамушшуаро Рӯдакӣ. – Душанбе: «Адиб», 2008. – С. 91.

<sup>2</sup> Қزوӣ, فضل الله المعجم في آثار ملوك العجم. – تبريز، 1858/1274. ص 301. به نقل از: نفیسی سعید. ابو حفص – نخستین شاعر // پیام نو، سال 6، شماره 3. – تهران، 1953/1331. ص 42.

<sup>3</sup> نفیسی، سعید. ابو حفص – نخستین شاعر، ص 43.

<sup>4</sup> نفیسی، سعید. ابو حفص – نخستین شاعر، ص 44.

Аз он ки байтҳои мисол аз шоирони қарнҳои баъд аз зиндагии Абӯҳафс оварда шудаанд, Саъид Нафисӣ бар он аст, ки луғати мазкур аз Абӯҳафси дигарест<sup>1</sup>, вале Холиқии Мутлақ гумон дорад, ки ин байтхоро баъдҳо ба ин фарҳанг афзудаанд<sup>2</sup>. Пажӯҳишгарон ба ин ақидаанд, ки байти бозмонда аз Абӯҳафси Сугдӣ дар вазни ҳичой аст ва тағйиру табдили манбаъҳо аз кӯшишҳои онҳо дар наздик кардани шеъри ҳичой ба шеъри арӯзӣ буда, таъкиди вижагиҳои усули шеъри қадими форси тоҷикӣ мебошад.

Шеъри нахустин ба вазни арӯзиро муҳаққиқон ба шоирони даврони Тоҳирӣён (205-259/821-873) нисбат додаанд. Нахустин маълумотро дар бораи Ҳанзалаи Бодғисӣ, ки дар замони ҳукумати Оли Тоҳир зиндагӣ ва фаъолият доштааст, Муҳаммад Авфӣ додааст: «Дар аҳди маймуни эшон (Оли Тоҳир – Ш.М.) шоире шакарсухан хост, Ҳанзала ном аз Бодғис, лутфи лафзи ӯ ҳокии оби Кавсар ва зулол ва шеъри ӯро тароватшумул ва латофатшамол ва аз латоифи ашъори ӯ, ки иншодро (шуниданро – Ш.М.) шояд ва масомеъу маҷомеъро зебад, ин ду байт ривоят кардаанд:

*Ёрам сипанд агарчи бар отаи ҳамафиганд  
Аз баҳри чаиш, то нарасад мар варо газанд.  
Ўро сипанду отаи н-ояд ҳама ба кор  
Бо рӯи ҳамчу оташу бо холи чун сипанд<sup>3</sup>.*

Ҳидоят ӯро аз шоирони замони Оли Тоҳир медонад ва вафоти ӯро ба соли 219 ҳ.қ./834 навиштааст<sup>4</sup>.

Вале нахустин зикру ёд аз Ҳанзалаи Бодғисӣ ва шеъри ӯ тааллуқ ба Низомии Арӯзии Самарқандӣ дорад. Дар мақолаи дувуми «Чаҳор мақола» (соли таълифаш 1155) «Моҳияти илми шеър ва салоҳияти шоир» овардааст, ки Аҳмад ибни Абдуллоҳи Хучастонӣ (мақтул ба 268 ҳ.қ./882) – аз амирони номдори охири ҳукумати Тоҳирӣён (821-873) ва ибтидои ҳукумати Саффорӣён (873-903) буд, ба пурсиши «ки ту марде харбанда будӣ, ба амирии Хуросон чун афтодӣ?» мегӯяд, ки «Ба Бодғис дар Хучастон, рӯзе девони Ҳанзалаи Бодғисӣ ҳамехондам, бад-ин ду байт расидам:

*Меҳтарӣ гар ба коми шер дар аст,  
Шав, хатар кун, зи коми шер бичӯй.*

*Ё бузургию иззу неъмату чоҳ,  
Ё чу мардон-т марги рӯёрӯй!*

<sup>1</sup> نفيسى، سعيد. ابو حفص – نخستين شاعر، ص. 44.

<sup>2</sup> Khālighi-Mutlagh. Dj. “Abu Hafsi Cogdi”. Ensiklopedia Iranika I.- New York, 1985.P. 294.

<sup>3</sup> لباب الالباب، ص. 241.

<sup>4</sup> هدايت، رضا قليخان. مجمع الفصحاء. بخش دوم از جلد اول. يکوشش مظاهر مصفاً. – تهران: امير کبير، 1382. ص. 727.

Доъияе (ангега, хоҳише – Ш.М.) дар ботини ман падида омад, ки ба ҳеч вачҳ дар он ҳолат, ки андар будам, розӣ натавонистам буд...»<sup>1</sup>

Ба шарофат ва таъсири ин ду байт, ки туфайли ин ҳикоят ва забти Арӯзии Самарқандӣ ин намунаи беҳтарину нахустини шеърӣ арӯзии форсии тоҷикӣ то ба мо расидааст, чандин маълумот аз шоиру шеърӣ ӯ ба даст дорем, ки аз ғаниматҳои адабиёти асри IX ба шумор меравад. Аввалан аз вучуди девони шоир, ва он ҳам дар дасти марде харбанда (марде, ки дар моликияти ӯ харон бошанд, ки онҳоро барои кироя ба мардум медиҳад – Ш.М.) аз муҳтавои он лаззат мебарад ва гумон меравад ашъораш дар Хуросон, бахусус дар зодгоҳаш – Бодғис дар зеҳну забони мардум ривоҷ доштааст ва аз нуфузу эътибор бархурдор будааст. Аҳмад ибни Абдуллоҳ ба таъсири ин ду байт, харонро мефурӯшад, аспон мехарад, сипоҳгариро пеша мекунад. Дар хидмати Алӣ – бародари хурди Яъқуби Лайси Саффорӣ (ҳукмр. 247-268/861-882) мепардозад ва дар андак фурсате ба амирии Хуросон иртиқо меёбад<sup>2</sup>. Ривояти мазкур бидуни зикри номи муаллифи шеър дар «Таърихи гузида»-и Ҷамдуллоҳи Муставфӣ ба Сомони ниёи Сомониён нисбат дода шудааст<sup>3</sup>. Ин ҳикоятҳо аз нуфузу эътибори шеърӣ Ҷанзала дар байни мардум гувоҳӣ медиҳанд. Вале муҳаққиқони адабиёт бар онанд, ки дубайти Ҷанзала, ки Авфӣ онро оварда<sup>4</sup> ва манбаъҳои дигар<sup>5</sup> онро аз ӯ иқтибос кардаанд, «дар инсиҷому фасоҳат ба дараҷаест, ки онҳоро бо қиёс бо ашъори авоҳири қарни сеум ва авоили қарни чаҳоруми қамарӣ наметавон аз ҷумлаи ақдами ашъори форсии дарӣ шумурд, магар он ки абёти мансуб ба ин шоир баъд аз ӯ, бино бар расми маъхӯд, ислоҳ шуда бошад»<sup>6</sup>. Шафеъии Кадканӣ ҳам бар он аст, ки «пухтагӣ ва камол»-и ин дубайтӣ ба андозаест, ки «ё дар интисоби он ба Ҷанзала тардид кунем ё дар рӯзгори ғӯяндааш», зеро дар ин шеър «ташбеҳ ба сурати нисбатан печида ва тафсилӣ омадааст, ки ёдовари навъи тасовири шеърӣ Кисоист»<sup>7</sup>.

Аз он ҷо, ки барои ислоҳи ашъори Ҷанзала ҳеч санад ё далеле дар даст надорем ва пухтагиву комилии он агар ба замонаш мувофиқат

1 نظامی عروضی سمرقندی. چهار مقاله. بر اساس تصحيح علامه محمد قزوینی. شرح و توضیح سعیدالله قره بگلو، رضا انزابی نژاد. – تیریز: آیدین، 1387. ص. 41.

2 لازار ژیلبر. اشعار پراکنده قدیم ترین شعرای فارسی زبان. جلد 2. – تهران: انتشارات کتاب آزاد، 1341. ص. 12؛ همای، جلال الدین. تاریخ ادبیات در ایران، صص. 47-48؛ شرح احوال و اشعار شاعران بی دیوان قرن های 3-4-5 هجری قمری. مصحیح: محمود مدبری. – تهران: پانویس، 1370. ص. 4؛ هدایت، رضاقلیخان. مجمع الفصحاء. ص. 727؛ شکوهی فریبا. هنرنامه بادغیسی / دانشنامه ادب فارسی. جلد دوم. – تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1386. – صص. 758-759.

3 حمدالله مستوفی. تاریخ گزیده. بکوشش عبدالحسین نوای. – تهران، 1362. صص. 376-377.

4 عوفی، محمد. لباب الالباب، 241.

5 هدایت، رضاقلیخان. مجمع الفصحاء. بخش دوم از جلد اول. ص. 727.

6 صفا، ذبیح الله. تاریخ ادبیات در ایران. ص. 180.

7 کدکنی، محمد رضا شفیعی. صور خیال در شعر فارسی. – تهران، 1357. صص. 402-403.

надорад, пас, бояд ба ин ҳақиқат тан бидиҳем, ки шеъри форсии тоҷикӣ дар ин давра ба сатҳу дараҷаи баланде расида будааст, фақат намунаҳои ашъори ин давра хеле кам то ба мо расидаанд, ва Ҳанзалаи Бодғисӣ яке аз он шоирони хушзавқ ва боистеъдоди давраи мазкур аст, ки хушбахтона намунаҳои хуби шеърашон ба мо расидааст, агарчи мутаассифона, хеле кам аст.

Дар ҳар сурат, бино бар сабти Ҳидоят Ҳанзала дар соли 219 ҳ.қ./833 м, ба навиштаи «Шоҳиди Содик», 220 ҳ.қ./834 м<sup>1</sup> ва ба навиштаи Ҳумой дар соли 225 ҳ.қ./839 м<sup>2</sup> вафот ёфта, аз шоирони дар «Таърихи Систон» омада пеш зистааст ва замони зиндагии ӯ ба давраи ҳукумати Тоҳириён (821-873) мусодиф аст ва ӯро ба унвони яке аз шоирони нахустини форсии тоҷикӣ, ки ба вазни арӯз шеър сурӯдааст, метавон ба ҳисоб овард.

Муаллифони фарҳангҳои форсӣ дар зайли вожаи «сипазгӣ» аз Ҳанзалаи Бодғисӣ байте барои шоҳид овардаанд:

*Кай сипазгӣ кашидаме зи рақиб,  
Гар будӣ ёри меҳрубон бо ман<sup>3</sup>.*

Ин байт бо вижагиҳои сохторӣ ва содагӣ ва истеъмоли вожаҳои маҳчуре чун «сипазгӣ» - ба маънии «дарду ранҷ» ба сабки шоирони давраи аввали шеъри форсии тоҷикӣ меҳурад ва танҳо дар ҳамин манбаъҳо боқӣ мондааст<sup>4</sup>.

Баҳси чанду чуни шеъри Ҳанзалаи Бодғисӣ ва вижагиҳои онро ба ҷои дигар мегузorem ва ба масъалаи дигари вобаста ба шахсият ва рӯзгори ӯ, ки дар сарчашмаҳои адабӣ ва таърихӣ зикр ёфтааст, мепардозем. Мутакаллими маъруфи исмоилӣ Абӯҳотами Розӣ (мутавафӣ 322 ҳ.қ./937) зимни баёни он ки нахустин касе, ки ба форсӣ шеър гуфтааст, аз марде нишобурӣ ном мебарад. Дарвоқеъ, навиштаи Абӯҳотами Розӣ дар мавриди нахустин шоири форсисаро ва оғози шеъри форсӣ аз куҳантарин асноди дар ҳоли ҳозир мавҷуд мебошад. Ӯ овардааст: «Аз огоҳон шунидам, нахустин касе, ки ба форсӣ шеър гуфта, марде аз аҳолии Нишобур аст, ки наздик ба замони мо мезистааст»<sup>5</sup>. Мусаҳҳеҳи китоби Абӯҳотами Розӣ – Ҳусайн ибни Фазлуллоҳ дар ҳошияи китоб дар тавзеҳи ин матлаб ба нақл аз

<sup>1</sup> محمد صادقصفهانی. شاهد صادق// یادگار، سال 2، شماره 4. - تهران، 1324. ص. 23.

<sup>2</sup> همای، جلال الدین. تاریخ ادبیات در ایران، ص. 47.

<sup>3</sup> انجوى شیرازى، مير جمال الدين. فرهنگ جهانگیرى. بکوشش رحيم افیفي. جلد یکم. - مشهد، 1351. ص. 637؛ تنوى، عبدالرشید. فرهنگ رشیدی. بکوشش محمد عباسی. جلد 2. - تهران: کتابخانه بارانى، 1337. ص. 830.

<sup>4</sup> شکوهی فریبا. هنظله بادغیسی/ دانشنامه ادب فارسی. جلد دوم. - تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1386. ص. 759.

<sup>5</sup> رازى، ابوحاتم. کتاب الزینة فی کلمات الاسلامیه. بکوشش حسین ابن فضل الله حمدانى. - قاهره، جلد 1، 1957. صص. 122-123. به نقل از: شکوهی فریبا. هنظله بادغیسی/ دانشنامه ادب فارسی. جلد دوم. - تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1386. صص. 758-759. ص. 759؛ صادقی، علی اشرف. نخستین شاعر فارسی سرا و آغاز شعر عروضی فارسی. - صص. 87-115، ص. 88.



Содиқи Нашъат навиштааст, ки манзур аз «марде аз аҳолии Нишобур» Ҳанзалаи Бодғисист, ки муосири Тоҳириён аст ва дар Марв зиставу дар Нишобур даргузаштааст<sup>1</sup>. Аммо Алиашрафи Содиқӣ ба далели он ки аз сукунати Ҳанзалаи Бодғисӣ дар Нишобур ҳеч огоҳие дар даст нест, «марде аз аҳолии Нишобур»-ро бар Ҳанзалаи Бодғисӣ мунтабиқ намедонад<sup>2</sup>. Дигар он ки Ҳанзалаи Бодғисӣ агарчи дар замони Тоҳириён зистааст, вале бо дарбори онҳо иртибот надоштааст. Тоҳириён низ ба шеърӯ шоирии форсӣ рағбате надоштаанд, баръакс, мувофиқи навиштаи Авфӣ «эшонро» (Тоҳириён – Ш.М.) дар порсӣ ва луғоти дарӣ эътиқод набуд. Дар он аср шуаро дар ин фан камтар хавз<sup>3</sup> карданд<sup>4</sup> ва ба қавли Давлатшоҳ бисёре аз китобҳои форсии боқимонда аз қадимро ба об андохта ё сӯхтаанд<sup>5</sup>. Ва дар тазкираҳо низ аз шоирони форсисаро дар даргоҳ ё сарзамини тахти тасаллуту Тоҳириён ё атрофиёни онҳо зикр накардаанд. Босворт С.Е. дар асоси ривояти «Чаҳор мақола» ба натиҷае мерасад, ки Ҳанзала эҳтимолан дар Бодғис–зодгоҳи хеш шеър месурӯда ва бо дарбори Оли Тоҳир–Нишобур иртибот надоштааст, зеро Тоҳириён ба қисматҳои Бодғис ва Ғарҷистон тасаллут надоштаанд ва ин минтақаҳо дар тасарруфи фирқаҳои хориҷӣ (хаворич) будааст<sup>6</sup>. Ҳидоят низ дар зимни шарҳи ҳоли Ҳанзалаи Бодғисӣ менависад: «Дар аҳди Оли Тоҳир шеърӣ форсӣ зоҳир намуда, агарчи Оли Тоҳир муътақиди шеърӣ форсӣ набудаанд ва дар он вақт ҳеч кас соҳиби ин тарзи зебо нашуда. Ҳаким (Ҳанзала – Ш.М.) бинои гуфтани шеърӣ форсӣ гузошта ва дар ин фан (форсигӯӣ – Ш.М.) ливои мусалламият барафрошта, дар ин кор вай бар ҳама муқаддам буда, магар бар Абулаббоси Марвӣ. Зухури вай (Ҳанзала – Ш.М.) дар миаи сония (садаи дувум – Ш.М.) аз ҳичрат буда. Муосирони ӯ Маҳмуди Варроқ ва Фирӯзи Машриқӣ будаанд. Вафоташ дар санаи 219х.қ./833 будааст»<sup>7</sup>.

Ҳосили ин гуфтаҳо ҳамин метавонад буд, ки Ҳанзалаи Бодғисӣ аз нахустин шоирони форсисаро мебошад, ки ашъори ӯ ба вазни арӯз эҷод шуда ва то замони мо расидааст. ӯ дар зодгоҳи хеш – Бодғис, ки

<sup>1</sup> Рази, ابو حاتم. كتاب الزينة في كلمات الاسلاميه. بكوشش حسين ابن فضل الله حمداني. - قاهره، جلد 1، 1957. صص. 122-123. به نقل از: شكوهي فريبا، هنظله بادغيسى/ دانشنامه ادب فارسي. جلد دوم. - تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسي، 1386. - صص. 758-759، ص. 759.

<sup>2</sup> صادقي، علي اشرف. نخستين شاعر فارسي سرا و آغاز شعر عروضي فارسي. ص. 91.

<sup>3</sup> Хавз – خوض. 1. Фурӯ рафтани ба об. 2. Фурӯ рафтани дар фикр, жарф андешидан. 3. Жарфандешӣ.

(معين، محمد. فرهنگ فارسي. جلد 1. چاپ 23. - تهران: امير كبير، 1385. - ص. 131).

<sup>4</sup> عوفي، محمد. لباب الالباب، ص. 241.

<sup>5</sup> دولتشاه سمرقندی. تذکره الشعراء. ص. 30.

<sup>6</sup> Bosworth C.E. "The Tahirids and Persian Literature" JRAN, vol.VII. - London, 1969. - P. 103-106, 101, ба нақл аз: صادقي، علي اشرف. نخستين شاعر فارسي سرا و آغاز شعر عروضي فارسي. ص. 90.

<sup>7</sup> هدايت، رضا قليخان. مجمع الفصحاء. بخش دوم از جلد اول. بكوشش مظاهر مصفا. - تهران: امير كبير، 1382. ص. 727.

яке аз хостгоҳҳои забони форсии тоҷикӣ мебошад, бо истифода аз суннатҳои шеърсароии ҳаммеҳанонаш дар даврони пур аз муборизоти мардуми Бодғис ба эҷоди ашъори дорой мазмуни бедоркунанда ва зулмситезиву муқовимат дар баробари бегонагон пардохтааст, ки ба ҳодисоти таърихии замони зиндагии ӯ мутобиқат ва иртиботи комил дорад<sup>1</sup>. Ҳанзалаи Бодғисӣ бо дарбори Тоҳириёни арабимаоб иртибот надоштааст ва ашъори ӯ зода ва парвардаи ҳеч дарборе набуда дар заминаи суннатҳои мавҷуди минтақаи адабхез ва адабпарвари зодгоҳаш ба миён омадааст ва агар он ба хонандаи ҳеш таъсир меғузорад ва дар байни омма нуфузу эътибор доштааст, аз ҳамин хусусияти мардумии навиштаҳои ӯ метавонад бошад. Аз ҳамин дидгоҳ ашъори боқимондаи Ҳанзалаи Бодғисӣ дар таърихи адабиёти форсии тоҷикӣ дорой аҳаммият мебошад. Ҷанбаҳои мардумии ҳар се пора шеъри Ҳанзалаи Бодғисӣ ҳам дар сохтор ва ҳам дар мухтаво ошкор ва маълум аст, ки муҳаққиқон ба он ишорат кардаанд<sup>2</sup>.

Алиашрафи Содиқӣ ин марди нишобурии Абӯҳотами Розӣ зикрнамударо ба он огоҳӣ ва маълумоте, ки дар бораи Ҳанзалаи Бодғисӣ ёд намудем, мутобиқ ба ӯ намедонад. Аввалан, бояд ривочу шуҳрати шоирии Ҳанзала то соли 259/873-соли охири ҳукумати Муҳаммад ибни Тоҳир рост ояд, вале ба соли даргузашти Абӯҳотами Розӣ, яъне, 322/937 мувофиқат надорад, ки ривояти Низомии Арӯзиро дар бораи Аҳмад ибни Абдуллоҳи Ҳуҷастониро мавриди тартид қарор медиҳад.

Дигар он ки агар Ҳанзаларо соҳиби девони ашъор ба форсии тоҷикӣ бидонем, мусалламан бояд аз ӯ ашъори бештаре боқӣ мемонд, дар ҳоле ки аз шоирони дигари ин давра, ки девон доштанишон маълум нест, байтҳо расидааст. Ва ин ҳам дар ҳолиест, ки девони ӯ ба андозае паҳн гардида ва шуҳрат доштааст, ки харбанде дар яке аз навоҳии Бодғис –Ҳуҷастон онро доштааст ва ба мутолиаи он мушарраф гардидааст.

Ниҳоят аз иртиботи Ҳанзала ба дарбори Тоҳириён ба Нишобур санаде дар даст нест. Агар навиштаи Абӯҳотами Розӣ «марде аз аҳли Нишобур»-ро ба маънии касе аз аҳолии он ҷо ва ё сокини он ҷо дар замоне қариб ба соли 322/937 (соли даргузашти Абӯҳотами Розӣ) бипазирем, ногузир бояд шоири дигари ин аҳд ва бо дарбори Тоҳириён саруқордор–**Маҳмуди Варроқи Ҳирави**ро нахустин шоири форсисаро қарор диҳем. Аз тазкиранигорон танҳо Ҳидоят дар бораи

---

<sup>1</sup> Вобаста ба воқеаҳои солҳои зиндагии Ҳанзала ва муборизаҳои мардуми Бодғис ва Ғур бо арабҳо ниг. و معصومه بادنچ. بادغيس/دانشنامه زبان و ادب فارسی. جلد 1. – تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1384. –صص. 672-674.

<sup>2</sup> Брагинский И.С. Иранское литературное наследие. – Москва: “Наука”, 1984. – С. 296, 119; De Blois, Francois “Hanzala Badgisi” // Encyclopaedia Iranica XI.- New York, 1998.- P. 659.

Маҳмуди Варроқи Ҳиравӣ маълумот дода, ӯро муосири Тоҳирӣ ва Саффорӣ доништа, муаллифи «таърихе некӯ» муаррифӣ кардааст<sup>1</sup>. Дар идома Ҳидоят ривояти ба канизаки Маҳмуди Варроқ хостор шудани Муҳаммад ибни Тоҳирро меорад<sup>2</sup>. Аз ашъори ӯ чизе дар миён нест, илло ин ду байт:

*Нигорино, ба нақди ҷон-т надҳам,  
Гаронӣ дар баҳо, арзон-т надҳам.  
Гирифтастам ба ҷон домони васлат,  
Ниҳам ҷон аз кафу домон-т надҳам.*

Вафоти ӯро дар соли 221/836 навиштаанд<sup>3</sup>. Маъҳази навиштаҳои соҳиби «Маҷмаъу-л-фусаҳо» дар мавриди соҳиби китоби таърих будан, шеър ва вафоти ӯ ба мо маълум нест, вале мочарои канизаки шоир ва Муҳаммад ибни Тоҳир аз ин пеш дар «Табақоти Носирӣ»-и Минҳоч Сирочи Ҷузҷонӣ (соли таълифаш 658/1260 дар Дехлӣ) ба таври машруҳ омадааст<sup>4</sup>. Минҳоч Сироч ҷое, ки аз охири амири хонадони Тоҳирӣ – Муҳаммад ибни Тоҳирро зикр ва вафоти ӯро рӯзи якшанбе, сеюми моҳи шавволи санаи 259/мусодиф бо якшанбеи 6 августи 873 навишта, дар зимни ҳикоят аз саховати ин амир ва ба канизаки Маҳмуди Варроқ хостор шуданаш ва баъд аз мушоҳидаи тааллуқи хотири канизак ба хоҷааш он чаҳордаҳ бадраи зар, ки ба баҳои канизак бурда буд, ба онҳо таслим мекунад ва бозмегардад. Аз ин ривоят, агар воқеият дошта бошад, чанд лаҳзаи муҳим равшан мегардад, ки ба рӯзгор ва масъалаи мавриди гуфтугӯи мо дар бораи Маҳмуди Варроқ иртибот доранд. Пеш аз ҳама ҳодиса дар Нишобур сурат мегирад, ки Маҳмуди Варроқ муқими он ҷост. Канизаке, ки шоир ба ӯ гирифтории хотир дорад, аз ҷумлаи канизакони маъмулӣ нест, ӯ соҳиби истеъдоду ҳунараст, ки ба завқу таъби шоир созгор аст, зеро ба қавли Минҳоч Сироч «дар Нишобур шахсе буд аз афозили аср, ки ӯро Маҳмуди Варроқ гуфтандӣ, канизаке дошт барбатӣ, дар ғояти лутф бакамол» ва ин ба ҳаддест, ки ин ҳунару истеъдод то ба гӯши амири кишвар расидааст, «ҳадиси ҷамоли он канизак ва таъби росту назми ӯ ба самъи Муҳаммади Тоҳир расида буд». Аз аҷобати ин канизаки барбатӣ он аст, ки «худ ғазал мегӯяд ва месозад (месарояд-Ш. М.) ва барбат мезанад»<sup>5</sup>. Ҳамон гуна ки дар аҳди

<sup>1</sup> Ҳдайт, رضاقلیخان. مجمع الفصحاء. بخش سوم از جلد اول، ص. 813.

<sup>2</sup> Ҳдайт, رضاقلیخان. مجمع الفصحاء. بخش سوم از جلد اول همان صحیفه.

<sup>3</sup> Ҳдайт, رضاقلیخان. مجمع الفصحاء. بخش سوم از جلد اول، ص. 813.

<sup>4</sup> منہاج سراج جزجانی. طبقات ناصری. به تصحیح و مقابلہ و تحشیہ و تعلیق عبدالحی حبیبی قندهاری. جلد اول. – کابل: مطبعہ پوهنی، 1342. صص. 195-196.

<sup>5</sup> منہاج سراج جزجانی. طبقات ناصری، ص. 195.

Борбад буд: сарояндаву шоиру навозанда амалан як хунарманд буд ва ин аз вижагии шеъри давраи бостон аст, ки он суруда мешудааст. Аз ин маълум мешавад, ки сабаби асосии гирифтории ҳам Маҳмуди Варроқ, ки аз ҷумлаи «афозили аср» буд, ва ҳам амири Тохириро, ки вучуди адибону фозилони арабинавис, ки дар он замон роиҷ буд, дар дарбораш низ аз эҳтимол дур нест, авсофи ёдшудаи канизаки мазкур, ки ўро «Ротиба ном буд», доништан равост, ки «ба васли ў майл мекард ва ба каррот он канизакро аз Маҳмуди Варроқ дархост кард ба баҳои тамом», вале аз он ки шоир ба ишқи ў гирифтор буд, ба ҳеҷ вачҳ розӣ намешуд. Ниҳоят шоир розӣ мешавад, ки ўро ба амир бидиҳад, ва амир бо чордаҳ бадраи зар ба хонаи ў ҳозир мешавад. Вале аз мушоҳидаи майлу тааллуқи Ротиба ба шоир гирифтани ўро аз инсоф намедонад ва ба болои ин он бадраҳои зарро ба онон мебахшад, ки аз адолату саховату ҷавонмардии ў гувоҳӣ медиҳад. Шояд ҳикояти мазкур воқеият надошта бошад, вале аз маълумоте, ки дар он дарҷ ёфтааст, ба бисёре аз қаринаҳои адабии он давра ва ҷузъиёти рӯзгори Маҳмуди Варроқ, ки дар дигар маъхазҳои адаби омадаанд, мутобиқат дорад ва инро ҷумлае, ки аз тарафи амир ба забони арабӣ гуфта мешавад, ва дар саҳифаҳои пеш аз арабимаобии амирони ин хонадон гуфтем, бар ҳолати ў сидқ мекунад: Ва қола молакумо инна афъалатумо золика, фаиннал-мола лакумо: *ان افعلتما ذلك فان المال لكما*

Яъне, ин кулли мол шуморо бахшидам, боқии умр дар роҳат бигзаронед, ва бозгашт ва зикри саховати ў боқӣ монд<sup>1</sup>.

Тавре ки аз ин ҳикоят маълум мешавад, агарчи муаллифи «Табақоти Носирӣ» аз шоирии ў намегӯяд, вале ўро аз «афозили аср» медонад. Саъид Нафисӣ дар «Таърихи назму наср дар Эрон ва дар забони форсӣ»<sup>2</sup> дар бораи ин ривоят менависад: «Ҷунон менамояд, ки матолибро Минҳочиддин ибни Сирочиддин аз забони тозӣ тарҷума карда бошад ва дар бораи ин Маҳмуди Варроқи шоир, ки ашъоре ба забони тозӣ аз ў мондааст, дар китобҳои адаби тозӣ матолибе назирӣ ин ҳаст ва ашъоре аз ў забт кардаанд. Аз он ҷумла дар китоби «Аш-шеър ва-ш-шуаро»-и Ибни Қутайба<sup>3</sup> ва «Китобу-л-ағонӣ»<sup>4</sup>, «Табақоту-ш-шуаро фӣ мадҳи-л-хулафо ва-л-вузаро», навиштаи Абдуллоҳ ибни Муътаз<sup>5</sup> дар «Ниҳояту-л-араб»-и Нувайрӣ<sup>1</sup> дар бораи

<sup>1</sup> منہاج سراج جزائى. طبقات ناصرى، ص. 196.

<sup>2</sup> نفیسی، سعید. تاریخ نظم و نثر در ایران و در زبان فارسی. جلد دوم، . - صص. 713-714.

<sup>3</sup> ابن قتیبه. الشعر و الشعرا. تحقیق و شرح احمد محمد شاکر. طبع قاہرہ، 1364-1369 (دو جزء) جزء 2. ص. 844.

<sup>4</sup> اصفہانی، ابوالفرج. کتاب الاغانی. طبع دارالکتب مصریہ، 1345، 1337 و 1357. جلد 14، صص. 197-198.

<sup>5</sup> ابن معنز. طبقات الشعرا المحدثین. تحقیق عبدالستار احمد فراخ. - القاہرہ: دار المعارف بمصر، 1956. صص. 174-175.

ӯ чунин омадааст: «Маҳмуд ал- Варроқ- хува Маҳмуд ибн ал-Ҳасан ал-Бағдодӣ мавло банӣ Зухра ва якнӣ Абба-л-Ҳасан»<sup>2</sup> бар «Табақоту-ш-шуаро» соли вафоти ӯро худуди 230/845 овардааст<sup>3</sup>. Чунонки маълум мешавад, иртиботи Маҳмуди Варроқ бо дарбори Тоҳириён ба чанд восита ба далоили боло исбот мегардад, аввалан ӯ дар Нишобур – пойтахти онҳо мезистааст, сониян муаллифи ашъори арабӣ будааст, ки дар дарбори онҳо арабинависӣ ривоч дошт ва онҳо ханӯз ба хилофати Бағдод вобастагии сиёсӣ, фарҳангӣ ва мазҳабӣ доштанд ва дар бораи форсиситезии онҳо аз ишорати тазкиранигорон маълум аст, ки дар саҳифаҳои пеш ёдовар шудем. Ҳамчунин Ибни Надим дар «Алфехрист» аз Варроқи дигаре аз мардуми Хуросон мегӯяд, ки ному куняи он бо Маҳмуди Варроқ намехонад, вале дар Бағдод зистан ва дорои таълифоти мутааддид будани ӯ ва касби китобфурӯшӣ, саҳхофӣ доштаниаш бо шоири мо мушобаҳат дорад. Бо ин ҳама Маҳмуди Варроқи Ҳиравӣ дар қатори Ҳанзалаи Бодғисӣ аз нахустин гӯяндагони шеъри арӯзии форсӣ дар Хуросон мебошад, ки дар замони ҳукумати Тоҳириён (822-873) зистааст ва «марде нишобурӣ» –и мавриди назари Абӯҳотами Розӣ ба яқин ӯ метавонад буд, ки аз замони шоирони дарбори Яъқуб ибни Лайс пештар аст, агарчи дар бораи инсичому фасоҳати комиле, ки дар шеъри ин ду шоир вучуд дорад, шеъри онҳоро аз ашъори шоирони охири асри нухум ва аввали асри даҳум баъид шуморидаанд<sup>4</sup>, вале ҳамон гуна ки медонем, шеъри форсии тоҷикӣ дар Хуросони замони Тоҳириён ба дарбор вобастагӣ надошта ва аз пуштибонии ҳукумати бархурдор набудааст. Пухтагӣ ва инсичому фасоҳати сатҳи болое, ки дар шеъри онҳо ба мушоҳида мерасад, нишонаи он метавонад буд, ки шеър ба забони форсии тоҷикӣ дар ин маҳдудаи чуғрофӣ собиқаи бештар дошта, он ба суннатҳои таълифи ашъори мардумӣ вобаста буда, ба анвоъ ва вижагиҳои шеъри мардумии ин сарзамин иртиботи мустаҳкам дорад.

Аз шоирони дигари ин давра, ки манбаъҳои адабӣ зикр кардаанд, **Фирӯзи Машриқӣ** аст, ки зодгоҳи ӯро муайян накардаанд, ба эҳтимоли қавӣ аз Хуросон аст, чи дар маъхазҳои чуғрофӣ минтақаи марбути Хуросонро ба арабӣ Машриқ ҳам навиштаанд, зеро маънои Хуросон ҳамон ҷост, ки аз забони паҳлавӣ «аз вай хур осад» яъне «хур ояд», ҳамон гуна ки Фаҳриддин Асъади Гургонӣ мегӯяд:

1 النويرى، شهاب الدين احمد ابن عبد الوهب. نهاية الإرب في فنون الادب. - قاهره: دار الكتب ، جلد 3. 1424 ه.ق./2004.ص.85.

2 نفيسى، سعيد. تاريخ نظم و نثر، ص. 714.

3 ابن معنز. طبقات الشعرا، ص.174؛ نفيسى، سعيد. تاريخ نظم و نثر، ص. 715.

4 صفا، ضبيح الله. تاريخ ادبيات در ايران. جلد اول، صص. 180-181.

*Забони паҳлавӣ ҳар к-ӯ шиносод,  
Хуросон он бувад, к-аз вай хур осад.  
«Хур осад» паҳлавӣ бошад «хур ояд»,  
Ироқу Порсро хур з-ӯ барояд.  
«Хуросон»-ро бувад маънӣ «Хуроён»,  
Ку чо аз вай хур ояд с-ӯи Эрон.*

Калимаҳои паҳлавии «осад»-ро «ояд», «осон»—«оён» ва «Хуросон»—«Хуроён», яъне Машрик, ҷое, ки офтоб аз он тулӯ мекунад, маънӣ кардааст<sup>1</sup>. Ин вожа барои забони мо ҳам бегона нест ва он дар забони мардуми диёри Рӯдакӣ зинда аст ва дар он ҷо дамидани хамирро осидани хамир мегӯянд, ки мисли дамидани офтоб аст.

Авфии Бухороӣ аз шоирони аҳди Оли Лайсу Оли Тоҳир се танро ном мебарад, ки нахустинаш Ҳаким Ҳанзалаи Бодғисӣ ва дувумаш Фирӯзи Машриқист, ки агарчи маълумоти ӯ чизеро аз рӯзгори шоир равшан намекунад, фақат барои нахустин огоҳӣ дар бораи шоир будан дорои аҳаммият ва арзиши илмӣ буда, қитъае аз ӯро дар сифати тири хаданг овардааст, ки аз ғаниматҳои адабии замони Амри Лайси Саффорӣ (хукмр. 879-900) мебошад:

*Мургест хаданги ӯ, а ҷаб дидӣ,  
Мурге, ки ҷама шикори ӯ ҷоно.  
Дода пари хеш каргасаи ҳадя,  
То баччаширо барад ба меҳмоно<sup>2</sup>.*

Дувумин маъхазе, ки як пора шеъри Фирӯзи Машриқӣ боқӣ мондааст, «Ал-муъҷам» мебошад, ки дар қисмати ҳудуди қофия ва асноди он дар мавриди айбҳои қофия шеъри ӯро мисол меорад, ки ба зарурати такмили қофияи шеър вожаи «нохун»-ро бо вов навиштааст:

*Наҳвагар карда забон чанги ҳазин аз гами гул,  
Мӯй бикшодаву бар рӯй занон нохуно.  
Гаҳ қанина ба сучуд афтад аз баҳри дуо,  
Гаҳ зи гам барфиканад як даҳан аз дил хуно<sup>3</sup>.*

Дар «Луғати фурс»-и Асадии Тӯсӣ (соли таълифаш 1070) ба шоҳиди вожаи «шойвард», ки тавқи моҳ бувад, қитъаи шеърии Фирӯзи Машриқӣ оварда шудааст:

---

<sup>1</sup> Раҳмон, Эмомалӣ. Забони миллат-ҳастии миллат. –С. 371.

<sup>2</sup> لباب الالباب، ص. 241.

<sup>3</sup> المعجم . ص. 318.

*Ба хатту он лабу дандон-ш бингар,  
Ки ҳамвора маро доранд дар тоб.  
Яке ҳамчун Паран дар авчи Хуриед,  
Яке чун шойвард аз гирди Маҳтоб<sup>1</sup>.*

Вафоти ӯро ба соли 283/896 навиштаанд<sup>2</sup>. Луғатномаҳои баъдӣ ҳамин байтҳои Фирӯзи Машриқиро ба шоҳиди «шойвард» овардаанд<sup>3</sup>. Аз ашъори Фирӯзи Машриқӣ ба ҷуз аз ин се қитъа шеър, ки нисбатан комил ва дар як қолаб суруда шудаанд, боз се байти дигар ба шоҳиди вожаҳои «фархол»/ «фархоқ», «заҷ», «рангинон» дар луғатномаҳо омадааст<sup>4</sup>. Маълумоти «Маҷмаъу-л-фусаҳо» дар бораи ин шоир чизе намеафзояд, ба ҷуз ин ки соли вафоти ӯро 283/896 таъйин кардааст, ки ба ҳамин асос Маҳмуди Мудаббирӣ ва дигарон ҳамин санаро пазируфтаанд<sup>5</sup>. Инчунин нисбаи шоирро муаллифи «Маҷмаъу-л-фусаҳо» Мушрифӣ навиштааст ва онро маҳаллае дар Яман донистааст, ки саҳеҳ нест ва «Мушрифӣ» таҳрифи ҳамон «Машриқӣ»-ст, ки ба ҳам дар навишт наздиканд<sup>6</sup>. Шеъри Фирӯзи Машриқӣ ҳам аз лиҳози сохтор ва ҳам аз нигоҳи муҳтаво ба ашъори асри IX монанд аст. Дар он вожаҳои маҳҷур, ношинос ба кор рафтаанд, ки ҳамин боиси ворид шудани байтҳои алоҳидаи ӯ ба фарҳангномаҳо гардидааст ва ба ин васила ба мо расидаанд.

Конунӣ дигари пайдоиши шеъри форсии тоҷикиро метавон Систон ба шумор овард. Бо пайдо шудани китоби маҷхулумуаллифи «Таърихи Систон» бисёр масъалаҳои вобаста ба пайдоиши шеъру адаби форсии тоҷикӣ равшан гардиданд. Ин китоби арзишманд бори нахуст дар повараки рӯзномаи «Эрон» (шумораҳои 474-564) дар солҳои 1299-1301 х.к./1882-1884 аз тарафи Муҳаммадхасанхони Ӯтимодуссалтана–вазири интибоъоти (табъу нашри – Ш.М.) давраи

---

<sup>1</sup> طوسی، اسدی ابومنصور علی احمد. لغت فرس. با تصحیح عباس اقبال. - تهران: چاپخانه مجلس، 1319. ص. 87؛ تۆسی

Асадӣ. Луғати фурс. Муқаддима, таҳия, таълиқот, ҳошия ва феҳристи Нурулло

Ғиёсов.-Хуҷанд: “Нури маърифат”, 2015, – С. 123-124.

<sup>2</sup> شرح احوال و اشعار شاعران بی دیوان قرن های 3-4-5 هجری قمری. مصحیح: محمود مدبری. - تهران: پانویس، 1370. ص. 7.

<sup>3</sup> شرح احوال و اشعار شاعران بی دیوان. ص. 7.  
<sup>4</sup> سروری کاشانی. مجمع الفرس. به تصحیح محمد دبیر سیاقی. - تهران: علمی، 1338. ص. 654؛ تتوی، عبدالرشید. فرهنگ رشیدی. بکوشش محمد عباسی. - تهران: کتابخانه بارانی، 1337. ص. 396، شاهد «رنگینان».

<sup>5</sup> شرح احوال و اشعار شاعران بی دیوان. ص. 7؛ Раҳмон, Эмомалӣ. Забони миллат–ҳастии Рӯдакӣ. Таҳияи матн ва луғату тавзеҳот аз миллат. – С. 231; Ашъори ҳамасрони Рӯдакӣ.

Худой Шарифов ва Абдушукур Абдусатторов. –Душанбе: “Адиб”, 2007.-С. 24.

<sup>6</sup> هدایت، رضاقلیخان. مجمع الفصحاء، ص. 1415.

Носириддиншоҳ (хукмр.1264-1313х.к./1848-1896), сипас дар соли 1314/1936 ба тасҳеҳи Маликушшуаро Баҳор дар Техрон ба чоп расидааст. Баробари чопи ин китоб маълумот дар бораи нахустин шоирони форсисаро такмил гардида, бисёре аз ашъори шоирони дарбори Саффорӣён (873-903) маҳз дар саҳифаҳои ин китоб боқӣ мондаанд. Китоб аз ду бахш: дар бораи ҳодисаҳои то соли 445 х.к./1053 (372 саҳифаи чопи Баҳор) ва зикри ҳодисаҳои соли 725/1325 (43 саҳифаи чопи Баҳор) иборат аст<sup>1</sup>, ки сабки навишти онҳо аз ҳам фарқ мекунад<sup>2</sup>.

Муҳимтарин арзиши ин китоб сабти ашъори шоирони дарбори Яъқуб ибни Лайс (873-879) Муҳаммад ибни Васифи Систонӣ<sup>3</sup>, Бассоми Курди Хориҷӣ<sup>4</sup> ва Муҳаммад ибни Мухаллади Сағзӣ<sup>5</sup> мебошад. Яқуб ибни Лайс пас аз дастгир кардани Солеҳ ибни Назр ва шикаст додани Занбили Кобули дар соли 253/867 барои гирифтани шаҳри Ҳирот, ки дар дасти охири амираи Тоҳирӣ – Муҳаммад ибни Тоҳир буд, рафт ва ба зудӣ онро тасхир ва ба қаламрави хеш мулҳақ сохт ва дар бозгашт аз он ҷо хориҷиён ва дигар муҳолифони хешро аз байн бурд ва ба Систон баргашт. Мардуми Систон аз пешравиҳои амираи хеш шодию хурсандии зиёд доштанд, имому фақеҳи бузурги онон Абӯаҳмад Усмон ибни Аффонӣ Сичзӣ (мутаваффоӣ 255х.к./869) дар намози ҷумъа дар хутба номиӯро дохил кард ва «шоирон ӯро шеър гуфтандӣ ба тозӣ:

*Қад акрамаллоҳу аҳлал мисри вал балади,*

*Бимулки Яъқуб зилафзол вал удади.*

*Қад омана анноси бихавоҳ ва гурратиҳи,*

*Ситрун мин Аллоҳи фӣ амсори ва-л-балади.*

Чун ин шеър бихонданд, ӯ олим набуд, дарнаёфт. Муҳаммад ибни Васиф ҳозир буд ва дабири расоили ӯ буд ва адаб некӯ донист. Ва бад-он рӯзгор номаи порсӣ набуд. Пас Яъқуб гуфт: Чизе, ки ман андарнаёбам, чаро бояд гуфт? Муҳаммад ибни Васиф шеъри форсӣ гуфтан гирифт. Ва аввал шеъри порсӣ андар Аҷам ӯ гуфт. Пеш аз ӯ касе нагуфта буд, ки то порсиён буданд, сухан пеши эшон ба руд боз гуфтандӣ, ба тариқи хусравонӣ. Ва чун Аҷам пароканда шуданд ва араб омаданд, шеър миёни эшон ба тозӣ буд ва ҳамгинонро илму маърифати шеъри тозӣ буд. Ва андар Аҷам касе барнаёмад, ки ӯро бузургии он бувад пеш аз Яъқуб, ки андар ӯ шеър гуфтандӣ, магар Ҳамза ибни Абдуллоҳи Хориҷӣ ва ӯ олим буд ва тозӣ донист.

<sup>1</sup> тарих سيستان، ص 470.

<sup>2</sup> همان، ص 375.

<sup>3</sup> تاريخ سيستان، ص 210، 253، 260، 276.

<sup>4</sup> همان، ص 210-211.

<sup>5</sup> همان، ص 211-212.



Шуарои ӯ тозӣ гуфтанд ва сипоҳи ӯ бештар араб буданд ва тозиён буданд. Чун Яъқуб Занбил ва Амвори Хориҷиро бишқаст ва Ҳарӣ бигрифт ва Систону Кирмону Форс ӯро доданд, Муҳаммад ибни Васиф ин шеър бигуфт:

*Эй амире, ки амирони ҷаҳон хосаву ом  
Бандаву чокару мавлову сағбанду ғулом.  
Азали хатте бар лавҳ, ки мулке бидиҳед  
Ба Абюсуфи Яъқуб бина-л-Лайси ҳумом  
Ба Латом омад Занбилу лате хӯрд паланг,  
Латра шуд лашқари Занбилу ҳабо гашит куном.  
«Лиманилмулк» бихондӣ ту, амиро, ба яқин,  
Бо қалилулфиа, к-ат дод бар он лашқар ком.  
Амри Аммор туро хост в-аз ӯ гашит барӣ,  
Теги ту кард миёнҷӣ ба миёни даду дом.  
Умри ӯ назди ту омад, ки ту чун Нӯҳ бизӣ,  
Дари Окор тани ӯ, сари ӯ Боби Таом<sup>1</sup>.*

Аз ин шоири систонӣ дар ҷойи дигари ин китоб қасидае дар 11 байт бо матлаъи

*Мамлакате буд, шуда беқиёс,  
Амр бад-он мулк шуда буд рос<sup>2</sup>.*

омадааст, ки бо таркиби калимаҳо ва сохти ҷумлаҳо монои ашъори нахустини шоирони нахустини форсисаро буда, бо тақозои вазъи адабии дарбор ва суннати шеърсароии пеш аз ин рӯзгор ба навъи маъмули адабии ин давра-қасида эҷод шудааст. Пораи дигари шеърии аз Муҳаммад ибни Васиф боқимонда ҳам дар «Таърихи Систон» ба мавзӯи оқибати кори охири амири Саффорӣ Амр ибни Лайс (879-903), ки ба дасти Исмоили Сомонӣ (849-907) дар Балх шикаст хӯрд ва асир афтод, бахшида шудааст, ки аз нигоҳи сохту мухтаво аз ашъори нахустини форсии тоҷикӣ ба шумор меравад ва дар тасаллии амири мағлуб самимона гуфта шудааст:

*Кӯшиши банда сабаб аз бахшиши аст,  
Кори қазо буд, туро айб нест.  
Буду набуд аз сифати Эзад аст,  
Бандаи дармондаи бечора кист?*

<sup>1</sup> Таърихи Сייستان, 210-с. Аштиани, عباس اقبال. شعر قديم ايران//کاه، سال 2(دوره جديد)، شماره 2، 1921/1339. ص.7.

<sup>2</sup> Таърихи Сייستان, 286-287-с.

*Аввали махлуқ чӣ бошад? Завол,  
Кори чаҳон аввалу охир якест.  
Қавли Худованд бихон «Фастақим»,  
Муътақиде шав ту, бар он – бар бишт<sup>1</sup>.*

Ин ашъор ва ашъори дигари шоирони дарбори Саффориён, ки дар «Таърихи Систон» маҳфуз аст, ба пайдоиши назми дарбории форсии тоҷикӣ асос гардидааст. Вале бояд ибраз дошт, ки аз арабигӯӣ ба форсисароӣ гузаштан дар ин дарбор маҳз ба ибтикор, даъват ва пуштибонии Яъқуб ибни Лайси Саффорӣ ва гуфтаи машҳури ӯ «Чизе, ки ман андарнаёбам, чаро бояд гуфт?» оғоз шудааст, ки он ҳам бархоста аз қиёму муборизаҳои ин амиру пешвои мардуми маҳаллӣ барои ба даст овардани истиқлоли сиёсӣ аз хилофати Бағдод ва истиқлоли маънавӣ аз он мебошад, ки онро «исёни ошкор бар зидди забони арабӣ ва хилофати Бағдод»<sup>2</sup> метавон донист, ки дар таҳкими забони форсии тоҷикӣ дар дафтардорӣ давлатӣ ва истиқлоли фарҳангӣ ва адабии миллӣ мусоидат намудааст.

Шоири дигари ин давра **Бассоми Курд**, ки аз хориҷиён будааст. Вай пас аз ин фирқаро шикаст додани Яъқуби Лайс ба сулҳ ба дарбори амири Саффорӣ пайваста, ӯро мадҳ ва хатти машӣи амирро таъйид ва Аммори Хориҷиро накӯҳиш мекунад:

*Ҳар кӣ набуд ӯ ба дил муттаҳам,  
Бар асари даъвати ту кард наам.  
Умр зи Аммор бад-он шуд барӣ,  
К-ӯӣ хилоф овард то ло ҷарам<sup>3</sup>.  
Дид бало бар тану бар ҷони хеш,  
Гаши ба олам тани ӯ дар алам.  
Макка ҳарам кард арабро Худой,  
Аҳди туро кард ҳарам дар Аҷам.  
Ҳар кӣ даромад, ҳама боқӣ шуданд,  
Боз фано шуд, ки бидид ин ҳарам<sup>4</sup>.*

Шоири дигаре, ки дар ин ҳодисаи барои Яъқуби Лайс ҳалқунанда, яъне, пирӯзӣ бар Аммори Хориҷӣ шеър суруд ва амирро васф кард, **Муҳаммад ибни Муҳаллади Сағзӣ** буд, ки ҷуз ном ва се

<sup>1</sup> тарих سيستان، ص. 210.

<sup>2</sup> Эмомалӣ Раҳмон. Забони миллат – ҳастии миллат. – С. 205-206.

<sup>3</sup> Мисраъҳои 1,2,4 ихлоли вазнӣдоранд.

<sup>4</sup> тарих سيستان، ص. 212؛ صفا، ضبيح الله. تاريخ ادبيات در ايران، صص. 166-167.

байт тавассути «Таърихи Систон»<sup>1</sup>, чизи дигаре аз ӯ дар даст нест. Вале ҳамин ашъори кам ҳам баёнгари афкори озодихоҳӣ, истиқлолталабӣ, ифтихори миллӣ ва арҷ гузоштан ба расму оинҳои миллӣ буда, аз муборизаҳои мардум дар он рӯзгор ва ифтихору ибрози бартарии Аҷам бар арабро мерасонад:

*Ҷуз ту назод Ҳавво в-Одам нақишт  
Шерниҳоде ба дилу бар маништ.  
Муъ чизи пайғамбари маккӣ туй  
Бо кунӣшу бо манишу бо гувӣшт.  
Фаҳр кунад Аммор Рӯзи бузург,  
К-ӯ ҳамонам ман, ки Яъқуб кушт<sup>2</sup>.*

Навиштаҳои «Таърихи Систон» дар мавриди ин ки ин шоирон нахустин сарояндагони шеър ба забони форсӣ мебошанд: «Аввал шеъри порсӣ дар Аҷам ӯ (Муҳаммад ибни Васиф-Ш. М.) гуфт ва пеш аз ӯ касе нагуфта буд»<sup>3</sup>, агарчи аз лиҳози таърихӣ дуруст намеояд, зеро тавре ки дидем, шеъри форсии тоҷикӣ дар замони Тоҳириён ва пеш аз он ҳам вучуд доштааст, вале дар мавриди шеъри нахустини дарбории расмӣ, ки ба амире миллӣ гуфта шуда бошад, сидқ мекунад. Дигар он ки ашъори шоирони дарбори Саффорӣён бо мазмуну мухтаво ва сохтору таркиботи хеш ба ашъори форсии нахустин, ки аз ашъори давраҳои баъд фарқ мекунад, монанд аст. Боқӣ мондани ин намунаҳо ва дигар ашъори адибони қарни X тавассути «Таърихи Систон» бахусус дар саҳифаҳои ин асари боарзиш сабт ёфтани касидаи комили асосгузори адабиёти форсии тоҷикӣ Абӯабдуллоҳи Рӯдакӣ<sup>4</sup> ва ашъори Сонии Балхӣ (як рубоӣ)<sup>5</sup>– шоирони замони Сомониён (875-999), аз ғаниматҳои адабии он рӯзгорон мебошанд.

Шеъри форсии тоҷикӣ дар дигар минтақаҳои берун аз маҳдудаи Хуросону Мовароуннаҳр ва Систон ҳам дар садаҳои мавриди таҳқиқ баробар ба зуҳур омадааст. Яке аз минтақаҳои, ки арабҳо ба он ҷо дер даст ёфтанд ва ҳам кам нуфуз пайдо карданд, қисматҳои ҷанубии баҳри Хазар – маҳдудаи Гургону Мозандарону Табаристон мебошад, ки дар бештари давраҳои таърихӣ ба сабаби ҷуғрофиёии муҳити ин сарзамин аз истиқлоли нисбӣ бархурдор буд. Сарзамини Гургон аз ин минтақа ба Хуросон наздиктар буда, бо забони форсии дарӣ аз даврони пайдоиши он ошноӣ дошта, балки яке аз маҳдҳои ин забон

1. тарих سيستان، ص. 212.

2. тарих سيستان، ص. 212؛

3. тарих سيستان، ص. 253. Ҳар ду мисраъи охир ишколи вазнӣ доранд.

4. тарих سيستان، ص. 317-323.

5. тарих سيستان، ص. 323؛

ва адабиёт ба ин забон ба шумор меравад. Нахустин шоире, ки аз ин сарзамин дар аҳди Саффорӣ ному осоре аз ӯ имрӯз дар даст дорем, **Абӯсалики Гургонӣ** (дар баъзе манбаъҳои адаби куняи ӯро Абӯсулайк ҳам навиштаанд) мебошад. Муҳаммад Авфӣ ӯро яке аз шоирони муосири Амри Лайси Саффорӣ (265-287/879-900) ва дар қатори Ҳанзалаи Бодғисӣ (даргузашта ба соли 219/835), Фирӯзи Машриқӣ (даргузашта ба соли 283/897) шуморидааст<sup>1</sup>. «Абӯсалик, ки нозими силки калом ва солики масолики хунар буд, ҳам дар аҳди Амри Лайс бурун омад ва бисоти сухан басит кард ва роҷияти калом барафрохт ва дар маънии сиёнати арзи худ аз тааррузи ибтизоли ин назми латиф пардохт:

*Хуни худро гар бирезӣ бар замин,  
Беҳ, ки оби рӯй резӣ дар канор.  
Бут парастидан беҳ аз мардумпараст,  
Панд гиру кор банду гӯи дор!*

\*\*\*

*Ба мижа дил зи ман бидуздидӣ,  
Эй ба лаб қозию ба мижгон дузд.  
Музд хоҳӣ, ки дил зи ман бибарӣ,  
Ин шигифтӣ кӣ дид? Дузд ба музд»<sup>2</sup>.*

Ашъори Абӯсалики Гургонӣ бо ашъори нахустин шоирони форсигӣ дар шаклу муҳтаво мутобиқат ва ҳамхонӣ дошта, бо ҳамон оҳанги сарбаландӣ ва ифтихору улувви ҳиммат ва мазмуни ҷавонмардӣ иншо шудааст. Ризоқулихони Ҳидоят низ ҳамин ду байти охири ӯро меорад ва «аз шуарои замони Оли Лайси Саффор ва авлоди вай буда»<sup>3</sup> менависад, ки беасос ба назар мерасад.

Аз Абӯсалики Гургонӣ 11 байт дар даст аст. Ба ҷуз байтҳои боло дар фарҳангномаҳои «Фарҳанги Ҷаҳонгирӣ» ба шоҳиди луғатҳои **Вушм:**

*Дар ҷунби улувви ҳимматат чарх  
Монандаи вушм пеши чарх аст<sup>4</sup>.*

**Дарғам:**

*Чунон мустағриқам дар ғам, ки мутриб  
Агар дарғам сарояд, ғам физояд<sup>5</sup>.*

1 لباب الالباب، ص. 242.

2 لباب الالباب، ص. 242.

3 هدايت، رضا قليخان. مجمع الفصحاء، ص. 249.

4 انجوى شيرازى، مير جمال الدين. فرهنگ جهانگيرى. بکوشش رحيم افيفى. جلد يکم. - مشهد، 1351. ص. 1413.

5 انجوى شيرازى، مير جمال الدين. فرهنگ جهانگيرى، ص. 982.

## Горчӣ:

*Хуш он набиди горчӣ бо дӯстони якдила,  
Гетӣ ба ором андарун, маҷлис ба бонгу валвала<sup>1</sup>.*

байтҳои мазкур дарҷ шудаанд.

Абёти мазкурро дар фарҳангҳо ба Рӯдакӣ, Шокири Бухорӣ, Кисой ҳам нисбат додаанд<sup>2</sup>.

Аз он ки дар қасидаи Манучехрӣ аз ӯ ёд шудааст, дар замони Манучехрӣ аз нуфузу эътибор бархурдор будааст:

*Булъалову Булабосу Бӯсалику Булмасал  
Он ки аз Валволич омад, он ки омад аз Ҳарӣ<sup>3</sup>.*

Аз пораҳои шеърии Абӯсалики Гургонӣ маълум мешавад, ки онҳо дар қолабҳои асили форсии тоҷикӣ (мисли қитъа) эҷод шудаву дорои мазмунҳои баланд ва тасвирҳои нодиру тоза мебошанд, ки дар миёни осори қарни IX аз абёти ҷолиб ба шумор мераванд.

Ба ҷуз аз шоирони ёдшуда, дар дигар нуқоти қаламрави забони форсии дар ҳоли густариш ишоратҳои аз вучуди шеър ба ин забон ба мо расидаанд, ки аз ташаккули шеъру адаби форсии тоҷикӣ дар ин қарнҳо гувоҳӣ медиҳанд ва гумони моро дар қабул кардани ин забон аз тарафи мардумони ин маҳалҳои Эрон тақвият медиҳанд, зеро адабиёт ба забони форсӣ дар ин манотиқ баъд аз сарзаминҳои Хуросону Мовароуннахру Систон ва Гургон пайдо шудааст. Бино ба навиштаи муаллифи «Таърихи Қум» (соли таълифаш 378/988) дар боби ҳажаҳуми он, дар зикри шоироне, ки Қумро дар ашъори худ ситудаанд ва аҳли Қуму Ова будаанд, ба арабӣ ва форсӣ шеър гуфтаанд, теъдодашон садӯ сӣ нафар будааст<sup>4</sup>. Мутаассифона, ҳамон қисматҳои зикри шоирони «Таърихи Қум» аз байн рафтааст ва ин маълумот аз феҳристи унвони бобҳои китоб, ки дар муқаддима омадааст, ҳувайдост. Ҳамчунин маълум нест, ки онҳо ашъорашонро ба лаҳҷаҳои маҳаллӣ сурудаанд ё форсии дарӣ ва дар ашъорашон аз вазни арӯз истифода кардаанд ё вазни ҳичоӣ. Вале аз ин шоирон номи ду нафари онҳо тавассути маъхазҳои дигар то рӯзгори мо расидааст, ки яке аз онҳо **Абулашъаси Қумӣ** мебошад. Ёқути Ҳамавӣ

<sup>1</sup> انجوى شيرازى، مير جمال الدين. فرهنگ جهانگيرى. ، ص.410.

<sup>2</sup> شرح احوال و اشعار شاعران بى ديوان قرن هاى 3-4-5 هجرى قمرى. مصحيح: محمود مدبرى. - تهران: پانويس، 1370. صص.5-6.

<sup>3</sup> منوچهرى دامغانى. ديوان. بكوشش محمد دبیر سياقى. - تهران: زوار، 1384. صص.131، 67.

<sup>4</sup> تاريخ قم. بكوشش سيد جلال الدين تهرانى. - تهران، 1313. ص.18. به نقل از: صادقى، على اشرف. نخستين شاعر فارسى سرا و آغاز شعر عروضى فارسى. ص.98.

дар «Муъчаму-л-удабо» дар бораи ӯ мегӯяд: «Ва қола Абӯмуслим (Муҳаммад ибни Баҳр-ул-исфаҳонӣ мутаваллиди 254/868 ва мутаваффои 322/934) фӣ абёти билфорсияти ли-Абиалашъас» ва се байти арабии ӯро нақл кардааст<sup>1</sup>.

Дар бораи шоири дигар дар «Таърихи Қум» дар боби «Дар сабаби таълифи китоб» чунин омадааст: «Ба каррот аз Абулфазл Муҳаммад ибна-л-Ҳусайн ал-Амид, раҳимахуллоҳ шунидам, ки ӯ таачҷуб менамуд ва мегуфт: Сахт аҷаб аст, ки аҳли Қум ахбори Қум ба сарҳо тарк кардаанд ва эшонро дар он китобе нест ва ҳамчунин шеъре аз ашъори Ҷаъфар ибни Муҳаммад ибни Алӣ ал-Аттор пеши эшон нест. Ва пеши ӯ шеъри Абӯҷаъфар аз беҳтарин шеърҳо буда, зеро ки ӯ дар он маонии латифа ихтироъ карда ва бар назарҳои худ аз Рӯдакӣ ва Розӣ бад-он шеър фоик шуда ва Абулфазл дар ҳаққи ӯ фармуда, ки Абӯҷаъфар дар рӯзгори худ ҳамчу Имрулқайс аст дар рӯзгори худ. Пас, чамъ кардам аз барои Абулфазл баъзе шеъри Абӯҷаъфар, ҷуз аз он ашъор, ки аз барои хизонаи Мавлоно одомаллоҳа ниъмоиҳи, чамъ карда будам»<sup>2</sup>. Вале ба пиндори Алиашрафи Содикӣ манзури нависандагони араби қарни аввали ислом аз «форсията» забони мардуми Эрон ба таври умум аст, вай хоҳ паҳлавӣ, хоҳ порсии дарӣ ва хоҳ лаҳҷаҳои маҳаллии мардумони минтақаҳои гуногуни кишвар бошад. Ҳамин тавр аст навиштаи Табарӣ дар бораи Муҳаммад ибни Баъис, ки пирони Озарбойҷон ашъори форсии ӯро мехондаанд<sup>3</sup>, зеро забони ин минтақа озарию қадим буда, ҳатто шоирон дар ин ҷо то асри XI «форсиро некӯ»<sup>4</sup> намедонистаанд.

Ҳамин тариқ, адабиёти форсии тоҷикӣ дар қарнҳои VIII–IX роҳи такомулро паймуда, то расидан ба даврони Сомониён давраи ташаккули хешро паси сар гузоштааст, ки таъсири нуфузи суннатҳои адабии тоисломии ин сарзамин дар он бармало ва ошкор аст.

---

<sup>1</sup> Таърихӣ Қм, с. 18.

<sup>2</sup> Таърихӣ Қм. БКОШШ Сайд Ҷалал алдин Тераи. – Тераи, 1313. с. 18. Бе нақл аз: Садақӣ, Ғли ашраф. Нахстинин Шаар Фарсии Сра ва Ағаз Шаар Ғрузии Фарсии. с. 99.

<sup>3</sup> Таърихӣ Қм, с. 18.

<sup>4</sup> Нааср Хасро Қиадияи. Сфарнаме. БКОШШ Наар Узин Пор. – Тераи, 1362, с. 7.

## КИТОБНОМА

### А) Бо алифбои кирилӣ

1. Абаев В.И. Надпись Дария I о сооружении дворца в Сузе // Иранские языки.Т.1.-М.-Л., 1945.-С.127-133.
2. Абаев В. И. Пятый столбец Бехистунской надписи Дария I и Антидевовская надпись Ксеркса // Иранские языки.Т.1.-М.-Л., 1945.С.134-140.
3. Абаев В.И. Антидевовская надпись Ксеркса // Иранские языки. Т.1.М.-Л.,1945.
4. Абаев В. И. Скифский быт и реформа Зороастра // Archiv Orientalni.- Praha, XXIV, I, 1956.
5. Абаев В. И. Миф и история в Гатах Зороастра // мат. «Историко-филологические исследования». –Москва, 1974.
6. АбаевФ. И. Хрестоматия по истории Древнего Востока.- Москва, 1963.
7. Абдуллоев А. Адабиёти форсу тоҷик дар нимаи аввали асри XI.-Душанбе, 1974.
8. Абдуллоев А., Саъдиев С. Адабиёти форсу тоҷик дар нимаи дуҷуми асри XI ва аввали асри XII.- Душанбе, 1986.
9. Абдуманнонов А., Амонов Р., Демидчик Л.Н., Мирзозода Х., Сайфуллоев А., Шукуров М. Таърихи адабиёти советии тоҷик. Инкишофи жанрҳо, ҷ.1-6.-Душанбе, 1977-1984.
10. Абибов А. Аз таърихи адабиёти тоҷик дар Бадахшон (асри XIX ва аввали асри XX).- Душанбе, 1971.
11. Абубакр Муҳаммад ибни Чаъфари Наршаҳӣ. Таърихи Бухоро. Мурағибон Ф. Ғолибов, К. Олимов, Н. Амиршоҳӣ.- Душанбе: “Пайванд”, 2012.
12. Авесто.Тарҷумаи Чалили Дӯстхоҳ. -Душанбе, 2001.
13. Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои XII-XIV.- Душанбе, 1976.
14. Азизкулов Ҷ. Вис ва Ромин // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.1.-Душанбе, 1988.
15. Азизкулов Ҷ. Синдбоднома // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.3.-Душанбе, 2004.
16. Айнӣ С. Намунаи адабиёти тоҷик.- Москва, 1926.
17. Айнӣ С. Куллиёт, ҷ.12.-Душанбе: “Ирфон”, 1976.
18. Айнӣ С. Маънии калимаи “тоҷик” дар луғатҳо ва ҷойи корфармудашудаи он дар таълифоти муаллифони Шарқ ва баромадҳои ин калима // С. Айнӣ. Намунаи адабиёти тоҷик.- Душанбе, 2010.
19. Акбарзода Ю. Таҳқиқи шеър аз дидгоҳи нав.- Душанбе, 2004.
20. Алиев Г. Ю. Персоязычная литература Индии.- Москва, 1968.
21. Алимардонов А. Зиёи Нахшабӣ ва «Тӯтинома»-и ӯ. -Душанбе, 1980.

22. Алимардонов А. Тўтинома // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ. 3.-Душанбе, 2004.
23. Амиркулов С. Адабиёти тоҷик дар нимаи якуми асри XIX.- Душанбе, 1980.
24. Амиркулов С. Таҳаввули жанрҳои адабиёти тоҷик дар нимаи аввали асри XIX.- Душанбе, 2005.
25. Амиркулов С. Таҳаввули адабиёти тоҷик дар нимаи якуми асри XIX.- Душанбе, 1997.
26. Амиркулов С. Нигоҳе ба инкишофи таърихи адабиёти тоҷик дар Мовароуннаҳр (қарни XIX).- Душанбе, 2010.
27. Асадии Тўсӣ. Луғати фурс. Муқаддима, таҳия, таълиқот, ҳошия ва феҳристи Нурулло Ғиёсов. –Хучанд: “Нури маърифат”, 2015.
28. Асозода Х. Адабиёти садаи XX форсии дари Афғонистон (таҳлили осори манзум).- Душанбе, 1996.
29. Асозода Х. Адабиёти форсии дари Афғонистон (насри дostonӣ).- Душанбе, 1997.
30. Асозода Х. Адабиёти Эрон дар садаи XX.- Душанбе, 1997.
31. Асозода Х. Адабиёти тоҷик дар садаи XX.- Душанбе, 1999.
32. Асоев Х. Тачдиди назар мебоҷад // Маҷ. “Садои Шарқ”, 1989, №6.
33. Асолати нақди адабӣ (мусоҳибаи Носир Салим бо Абдунабӣ Сатторзода) // А. Сатторзода. Кухна ва нав.- Душанбе, 2004.
34. Аттот Фаридуддин. Тазкират-ул-авлиё.-Душанбе, 2007.
35. Афсаҳзод А. Адабиёти форсу тоҷик дар нимаи дувуми асри XV.-Душанбе, 1987.
36. Афсаҳзод А., Диловаров М. Андарзнома // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик,ҷ.1.-Душанбе, 1988.
37. Афсаҳзод А. Калила ва Димна // Энциклопедияи советии тоҷик,ҷ., 3.-Душанбе, 1981.
38. Афсаҳзод А. Одамушшуаро. Нашри дувум.- Душанбе: «Адиб», 2008.
39. Ашъори ҳамасрони Рӯдакӣ. Таҳияи матн ва луғату тавзеҳот аз Худой Шарифов ва Абдушукур Абдусатторов. – Душанбе: “Адиб”, 2007.
40. Аъзамзод С. Адабиётшиносии тоҷик ва ҷустуҷӯҳои илмӣ Лутфулло Бузургзода.- Хучанд, 2009.
41. Балъамӣ. Таърихи Табарӣ. Дар ду ҷилд. Бо муқаддима ва тавзеҳоти М. Умаров ва Ф. Бобоев, ҷ.1. – Техрон: «Замон», 1380/2001.
42. Бартольд В.В. Историко-географический обзор Ирана \\\ Сочинения. Т.У11. – Москва, 1971.
43. Бартольд В.В. Рыцарство и городская жизнь в Персии при Сасанидах и при исламе \\\ Сочинения. – М.:1971.Т.VII.



44. Бартольд В.В. Тахириды // Соч.: Т.VIII. –М.: «Наука», 1971.
45. Бартольд В.В. Персидская шуубийя и современная наука // Соч. т. У11. – Москва: «Наука», 1971.
46. Беляев Е.А. Арабы, ислам и арабский халифат в раннее средневековье. Второе издание. – Москва: «Наука», 1966.
47. Бертельс Е.Э. История персидско-таджикской литературы, т.1.- Москва, 1960.
48. Бертельс Е.Э. Литература народов Средней Азии. \ \ Новый мир, 1939, № 6-7.
49. Бертельс Е. Э., Новые работы по изучению Авесты // «Уч. зап. ИВАН СССР», т. 3.- Москва, 1951.
50. Бертельс Е.Э. Отрывки из «Авесты». Пер. с языка «Авесты» //Восток, 1924, №4.
51. Бертельс Е.Э. Очерки истории персидской литературы.- Ленинград, 1928.
52. Бертельс Е.Э. Суфизм и суфийская литература.-Москва, 1965.
53. Бертельс Е.Э. История литературы и культуры Ирана.-Москва, 1988.
54. Берунӣ, Абӯрайҳон. Осор-ул-боқия.- Душанбе: Ирфон, 1990.
55. Бобо-Назар Ғафор. Номаҳои бостон.- Душанбе, 2010.
56. Боголюбов М.Н. Древнеперсидский месяц Viyaxana.-СВ,1956, №1.-С.173-174.
57. Боголюбов М.Н. Строфа из таджикской песни VII в. // Известия Академии наук, отделения общественных наук, 1983, №4.
58. Боголюбов М. Н. Труды по иранскому языкознанию: Избранное.-Москва, 2012.
59. Бозсой ва таърихи адабиёти тоҷик // Маҷ. «Садои Шарқ», 1989, №1.
60. Бозсой ва танкиди адабӣ // Рӯзн. «Адабиёт ва санъат», 1990, 26 апрел.
61. Бойс М. Зороастрийцы. Верования и обычаи, перевод с английского и примечания И.М. Стеблин-Каменского.- Москва, 1970.
62. Болдырев А.Н. Отражение древних культурных традиций в классической литературе Ирана // История Иранского государства и культуры. К 2500-летию Иранского государства.- Москва: «Наука», 1971.
63. Брагинский И.С. Из истории персидской и таджикской литературы.-Москва, 1972.
64. Брагинский И.С. Иранское литературное наследие.-Москва: «Наука»,1970.
65. Брагинский И.С. Иранское литературное наследие.-Москва: «Наука»,1984.
66. Брагинский И.С. 12– миниатюр. Москва, 1966.

67. Брагинский И.С. Очерки из истории таджикской литературы.- Сталинабад, 1956.
68. Брагинский И. С. Из истории таджикской народной поэзии. Элементы народно-поэтического творчества в памятниках древней и средневековой письменности.- Москва, 1956.
69. Брагинский И.С. М. Диловаров. Авесто //Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик,ҷ. 1.-Душанбе,1988.
70. Брагинский И. С. От Авесты до Айни.- Душанбе, 1981.
71. Брагинский И., Бақоев М., Абибов А., Айни К., Ҳодизода Р., Афсаҳзод А. Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои XII-XIV.- Душанбе, 1983.
72. Брагинский И., Д. Комиссаров. Персидская литература.- Москва, 1963.
73. Брагинский И., Д. Комиссаров. Общая литературная традиция и разные пути развития (Об особенностях формирования современных персидской и таджикской литератур) // Литература стран Зарубежного Востока и советская литература.- Москва, 1977.
74. Брагинский И.С., Шукуров М. Пешгуфтор // Таърихи адабиёти советии тоҷик. Инкишофи жанрҳо, ҷ.1.-Душанбе, 1984.
75. Герасимова А.С., Гирс Г.Ф. Литература Афганистана.- Москва, 1963.
76. Геродот. История. В девяти книгах. Пер. и примеч. Г.А. Стратановского,-М.,1972.
77. Готҳо ва Ҳафт хот ва дигар гуфтаниҳои ёрон ба порсии равон аз Алиакбари Чаъфарӣ. Таҳияи Муаззами Диловар.-Техрон: «Асотир»,1382.
78. Грантовский Э.А. О распространение иранских племен на территории Ирана. \ \ История Иранского государства и культура. – М.: 1971. – С. 286-327.
79. Грантовский Э.А. Ранняя история иранских племен в Средней Азии. –М.: 1970.
80. Гафуров Б.Г. Таджики.- Москва, 1972.
81. Гафуров Б.Г., Касимджанов А.Х. Ал-Фараби в истории культуры.- Москва: “Наука”, 1975.
82. Гафуров Б.Г. История таджикского народа. Т.II. Эпоха формирования таджикского народа. Под редакцией Н.Н.Негматова.-Душанбе, 1999.
83. Гафуров А. Назми форсизабони Ҳинд ва Покистон дар нимаи дуюми асри XIX ва асри XX.- Душанбе, 1975.
84. Гафуров Б. Тоҷикон,ҷ.1. –Душанбе: “Ирфон”, 1998.
85. Гафурова З. Ташаккул ва инкишофи адабиёти форсизабони Кашмир дар асрҳои XVI-XVII.-Хучанд, 2001.
86. Ғиёс-ул-луғот. Таҳияи матн бо пешгуфтор, мулҳақот, тавзеҳот ва феҳристи А. Нурув, ҷ.1.- Душанбе: “Адиб”,1987.

87. Гиёс-ул-луғот. Таҳияи матн бо пешгуфтор, мулҳақот, тавзеҳот ва феҳристи А. Нуров, ҷ.2.- Душанбе: “Адиб”,1988.
88. Дабиринадод, Бадеуллоҳ. Борбад ва навоҳои дастгоҳҳои мусиқии эронӣ дар асри Сосонӣ // Ахбороти Академияи фанҳои РСС Тоҷикистон. Серияи шарқшиносӣ, таърих, филология, 1989, № 4.
89. Давлатшоҳи Самарқандӣ. Тазкират-уш-шуаро. Таҳияи М.Нуруллоева.-Хучанд, 2015.
90. Дандамаев М.А. Бехинстунская надпись и античные авторы о Бардии –Гаумате.-КСИНА, 1962,№46,-с., 353-356.
91. Дандамаев М.А. Проблема древнеперсидской письменности.- ЭВ, ХУ, 1963,-с.,24-35.
92. Дандамаев М.А. Иран при первых Ахеменидах (VI в до н.э).- М., 1963.
93. Дандамаев М.А. Древнеперсидские слова в вавилонских текстах.-Душанбе, 1966,-с., 157-158.
94. Дворянков Н.А. Литература Афганистана // Литература Востока в новейшее Время.- Москва, 1977.
95. Диловаров М., Хромов А. Адабиёти тоҷик // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик,ҷ.,1.-Душанбе,1988.
96. Диловар М. Авесто // Энциклопедияи миллии тоҷик, ҷ. 1.- Душанбе, 2011.
97. Диловаров М., «Авесто» ва баъзе хусусиятҳои адабии он // Маҷ. «Мақтаби советӣ», 1976, № 4.
98. Диловаров М. «Авесто» – ганҷи шойғони эронитаборон // Маҷ. «Фарҳанг», 2004, № 3 – 4.
99. Диловаров М. Нахустқомуси миллат.- Хучанд, 2001.
100. Диловаров М. «Авесто» – китоби муқаддаси зардуштиён // Феҳристи адабиёт.- Душанбе, 2001.
101. Диловаров М. Готҳо // Энциклопедияи миллии тоҷик, ҷ. 4.- Душанбе, 2015.
102. Диловаров М. Ясно // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.3.- Душанбе, 2004.
103. Диловаров М. Яштҳо // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.,3, Душанбе, 2004.
104. Диловаров М. Хурд-Авесто // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.3.- Душанбе, 2004.
105. Диловаров М. Вандидод // Энциклопедияи миллии тоҷик, ҷ.3.- Душанбе, 2014.
106. Диловаров М. Дарахти асурик (таҳияи матн бо пешгуфтору шарҳу тавзеҳот аз М. Диловаров) // Маҷ. «Маърифат», 1995, № 1–2.
107. Диловаров М. Дарахти асурий // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.,1, Душанбе, 1988.

108. Диловаров М. Позанд // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.2.-Душанбе, 1989.
109. Диловаров М. Динкард // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.1.-Душанбе, 1988.
110. Диловаров М. Додистони динӣ // Энциклопедия адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.1. -Душанбе, 1988.
111. Диловаров М. Ардавирофнома // Энциклопедияи миллии тоҷик, ҷ.1. -Душанбе, 2011.
112. Диловаров М. Шканд гумоник визор // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.3,. - Душанбе, 2004.
113. Диловаров М. Пандномаи Бузургмеҳр // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.2. -Душанбе, 1989.
114. Диловаров М. Андарзи Хусрави Қубодон // Энциклопедияи миллии тоҷик, ҷ.1. -Душанбе, 2011.
115. Диловаров М. Андарзи кӯдакон // Энциклопедияи миллии тоҷик, ҷ.1.-Душанбе, 2011.
116. Диловаров М. Минуи хирад // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.2. - Душанбе, 1989.
117. Диловаров М. Мотикони Ҷуишти Фриён // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.2. - Душанбе, 1989.
118. Диловаров М. Номаи Тансар // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ. 2. - Душанбе, 1989.
119. Диловаров М. Бундаҳишн // Энциклопедияи миллии тоҷик, ҷ., 3. -Душанбе, 2014.
120. Диловаров М. Ҷуишти Фриён // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.1.-Душанбе,
121. Диловаров М. Фарҳанги паҳлавӣ, нусхаи электронӣ.
122. Диловаров М. Фарҳанги оим-евак, нусхаи электронӣ.
123. Демидчик Л.Н. Драмаи солҳои 40-50 тоҷик.- Душанбе, 1965.
124. Додихудоев Р.Х. Луғати ҳетерограммаҳои паҳлавӣ.-Душанбе, 1969.
125. Достони «Минуи хирад», тарҷумаи Д. Саймуддинов // Маҷ. «Садои Шарқ», 1994, №3-4.
126. Достони Ҷуишти Фриён. Тарҷумаи Д. Саймуддин // Маҷ. «Садои Шарқ», 1994, №1. С. 136-143.
127. Драматургияи тоҷик.- Душанбе, 1978.
128. Дьяконов И.М. История Мидии от древнейших времен то конца IV в. до н.э. –М.-Л., 1956.
129. Дьяконов И.М. Очерк истории древнего Ирана. –Москва, 1961.
130. Дьяконов И.М. Языки древней Средней Азии.-Москва, 1967.
131. Дьяконов И.М. Восточный Иран до Кира // История Иранского государства и культура. – Москва, 1971.-С.122-154.
132. Занд М. Шесть веков славы.- Москва, 1966.
133. Заҳирии Самарқандӣ. Синдбоднома. Таҳқиқот, тасхеҳи матн ва таълиқоти Ҷ. Азизкулов.-Душанбе: «Пайванд», 2012.

134. Зиёев И. Форобӣ // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик.- Душанбе, 2004.
135. Зоҳидов Н. Арабоязычный период персидско-таджикской литературы. VIII-IX вв.- Душанбе: «Дониш», 1993.
136. Зоҳидов Н. Адабиёти арабизабони форсу тоҷик аз истилои араб то аҳди Сомониён.- Хучанд, 1999.
137. Зоҳидов Н. Насри арабизабони форсу тоҷик дар асрҳои VIII-X.- Хучанд, 2004.
138. Зоҳидов Н. Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои VIII-IX (давраи арабизабон).- Душанбе: «Бухоро», 2014.
139. Ибни Балхӣ. Форснома.- Душанбе: «Дониш», 1989.
140. Иностранцев К. А. Сасанидские этюды.- СПб., 1909.
141. Исрофилиё Ш. Носири Бухороӣ ва тақомули ғазал дар асри XIУ.- Душанбе, 2009.
142. История советской литературы: новый взгляд // По материалам Всесоюзной научно-творческой конференции, 11-12 мая 1989г. Часть 1.- Москва: «Наука», 1990.
143. Калила ва Димна. Тахияи Р. Ҳодизода.- Душанбе, 1979.
144. Каримов А. Первичные предлоги в среднеперсидском языке. Душанбе, 1970.
145. Каримов У. Адабиёти тоҷик дар нимаи дуҷуми асри XVIII ва аввали асри XIX.- Душанбе, 1978.
146. Книга деяний Ардашира сына Папака. Транскр. текста, пер. со среднеперсидского ОМ. -Москва, 1987.
147. Колесников А.И. О термине «марзбан» в сасанидском Иране//ПС. Вып.27/90/.-Л., 1981.-С.49-56.
148. Комиссаров Д.С. Пути развития новой и новейшей персидской литературы.- Москва, 1982.
149. Кошифӣ, Ҳусайн Воиз. Анвори Сухайлӣ. -Душанбе, 1987.
150. Краткая история литератур Ирана, Афганистана и Турции.- Ленинград, 1971.
151. Крачковский И.Ю. Абу Нувас о сасанидской чаше с изображениями // Избранные сочинения. Т.2.- М.- Л.: Изд-во АН СССР, 1956.
152. Крымский А.А. История Персии, ее литературы и дервишеской теософии.- Москва, 1909-1917.
153. Крымский А.Е. Абан Лахыкый, манихействующий поэт (ок.750-815 гг.) Очерк из истории арабской повествовательной литературы индоперсидского характера VIII-IX вв. // Труды по востоковедению, издаваемый Лазаревским Институтом Восточных языков. Выпуск 37.- Москва, 1913.
154. Курбонов Х., Диловаров М. Катибаҳои Ҳахоманишиён // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.2.- Душанбе, 1989.
155. Литература Древнего Востока.-Москва, 1962.

156. Литература Востока в средние века. В 2-х части. Под ред. Н.И. Конрада, И.С. Брагинского, Л.Д. Поздновой.- Москва, 1970.
157. Левковская Р.Г. Литература Ирана // Литература Востока в новейшее время.- Москва, 1977.
158. Лелеков Л. А. Современное состояние и тенденции зарубежной Авестологии // Жур. «Народы Азии и Африки», 1978, № 2.
159. Лившиц В.А. Хромов А.Л. Согдийский язык//Основы иранского языкознания среднеиранские языки.-Москва,1981.
160. Литература Древнего Востока.- Москва, 1962.
161. Луконин В.Г. Иран в эпоху мервских Сасанидов. Очерки по истории культуры.-Ленинград, 1961.
162. Луконин В.Г. Культура Сасанидского Ирана. Иран в III-V вв. Очерки по истории культуры.-Москва, 1969.
163. Луконин В.Г. Искусство Древнего Ирана. –Москва,1977.
164. Луконин В.Г. Иран в III веке. Новые материалы и опыт исторической реконструкции.–Москва, 1979.
165. Луғати идеограммаҳои забони паҳлавӣ, таҳияи А. Каримов, Душанбе, 1983.
166. Майе А. Введение в сравнительное изучение индоевропейских языков. – М.-Л., 1938.
167. Маковельский А.О. Авеста.- Баку, 1963.
168. Матни паҳлавии «Шаҳристонҳои Эрон». Пешгуфтор, тарҷума ва ташреҳи Д. Саймиддин // Маҷ. «Садои Шарқ», 1998, №5-8.
169. Маҳдии Саййидӣ. Аз дори Суғд то дори Балх (Сарнавишти хонадони Меколиён, ки аз Деваштич то Ҳасанаки вазир ба он тааллуқ доштанд) // Рӯз. “Озодагон”,13-18, март-апрели 2008.
170. Маъсумӣ Н. Адабиёти тоҷик дар асри XVIII ва нимаи аввали асри XIX.- Душанбе, 1962.
171. Мирзоев А. Сездаҳ мақола. – Душанбе, 1977.
172. Мец А. Мусульманский ренессанс. –Москва: “Наука”, 1966.
173. Мардони, Таджиддин. Об одном раннем двуязычном персидско-таджикском поэте // Мардони Таджиддин. Арабско-таджикские литературные связи. Сборник статей. –Душанбе: «Ирфон», 2006.
174. Мероси хатии бостон, таҳияи Назри Яздон, Бобо-Назар-Ғафор, Муаззами Диловар. Китоби 11, қ.1. –Душанбе, 2014.
175. Мирзозода Х. Материалҳо аз таърихи адабиёти тоҷик (асрҳои XVI-XIX ва ибтидои асри XX). – Сталинобод, 1950.
176. Мирзозода Х. Материалҳо аз таърихи адабиёти тоҷик (ба ёрии муаллимони адабиёт). –Душанбе, 1962.
177. Мирзозода Х. Таърихи адабиёти тоҷик (аз давраи қадим то асри XIII. Китоби 1 (1-2). –Душанбе, 1987-1989.
178. Мирзозода Х. Таърихи адабиёти тоҷик, қ. 1. – Душанбе, 1989.

179. Мирзоев А. Адабиёт (ёри барои дарси адабиёти асрҳои XVI, XVII, XVIII ва XIX). – Сталинобод, 1948.
180. Мирзоев А. Рӯдакӣ ва инкишофи ғазал дар асрҳои X-XV. – Сталинобод, 1957.
181. Мирзоев А. Адабиёти тоҷик дар нимаи аввали асри XV, 1976 (номатбӯъ).
182. Мирзоев А., Болдирев А., Ҳодизода Р. Адабиёти тоҷик (барои синфи 9). – Душанбе, 1976.
183. Мирзоюнус М., Аъзамзод С. Назари тозаи пажӯҳишгар ва муаммои арзишдоварии адабӣ (рочез ба концепсияи нави адабиётшиносӣ) // Маҷ. мақ. – Душанбе, 2007.
184. Молчанова Е.К. Среднеиранские языки // Языки Азии и Африки. – Москва, 1978. – С. 58-77.
185. Мукотибаи Садриддин Айни ва Абулқосим Лоҳутӣ. – Душанбе, 1978.
186. Мусулмониён Р. Меъёри баҳо // Рӯз. «Адабиёт ва санъат», 1990, 15 март.
187. Мусулмониён Р. Марҳилаҳои адабиёти навин // Рӯз. «Адабиёт ва санъат», 1991, 1 август.
188. Муҳаммадризо Ночӣ. Фарҳанг ва тамаддуни исломӣ дар каламрави Сомониён. – Душанбе: «Эр-Граф», 2011.
189. Муҳаммадҷони Шакурии Бухорӣ. Нигоҳе ба адабиёти тоҷикии садаи бист. – Душанбе, 2006.
190. Муҳаммадҷони Шакурии Бухорӣ. Аз пайи дарёфти фаҳмиши нав // Маҷ. «Садои Шарк», 1990, №7.
191. Муҳаммадҷони Шакурии Бухорӣ. Се шоҳаи як дарахти баруманд // Муҳаммадҷони Шакурии Бухорӣ. Нигоҳе ба адабиёти тоҷикии садаи бист. – Душанбе, 2006.
192. Муҳаммадҷони Шакурии Бухорӣ. Хуросон аст ин ҷо. Маънавият, забон ва эҳёи миллии тоҷикон. Нашри якум. – Душанбе: «Пайванд», 2006.
193. Муҳаммадҷони Шакурии Бухорӣ. Хуросон аст ин ҷо. Маънавият, забон ва эҳёи миллии тоҷикон. Нашри дувум. – Душанбе, 2009.
194. Муҳаммадхусайн Бурҳон. Бурҳони қотеъ, ҷ. 2. Таҳияи матн бо пешгуфтор, мулҳақот, тавзеҳот ва феҳристи Амон Нуров. – Душанбе: “Адиб”, 2004.
195. Набиев А. Нарзуллои Бектош ва илму адаби тоҷик. – Душанбе, 2004.
196. Нақди адабӣ: имрӯз ва фардо (мусоҳибаи А. Сатторзода бо М. Шакурӣ) // А. Сатторзода. Кӯҳна ва нав. – Душанбе, 2004.
197. Никитина В.Б. Литература Ирана // Литература древнего Востока. – Москва, 1971.

198. Никитина В.Б. Древнеиранская литература // Литература древнего Востока. – Москва, 1972.
199. Неупокоева И.Г. История всемирной литературы. Проблемы системного и сравнительного анализа. – Москва: «Наука», 1986.
200. Нуров Н. «Авесто» ва мероси фархангии тоҷикон. – Хучанд, 2001.
201. Оранский И.М. Иранские языки. – М., 1963.
202. Оранский И.М. Иранские языки в историческом освещении. – Москва, 1979.
203. Оранский И.М. Введение в иранскую филологию. – Москва, 1988.
204. Османов М.Н. Пословицы и поговорки в поэтическом наследии Рудаки // Рудаки и его эпоха. – Сталинабад: «Таджикгосиздат», 1958.
205. Османов М.Н. Своды иранского героического эпоса («Худойнаме» и «Шахнаме») как источники «Шахнаме» Фирдоуси // Ученые записки Института востоковедения. Т. XIX. – Москва, 1958.
206. Отахонова Х. Таҳаввули жанри достон дар назми муосири тоҷик. – Душанбе, 1983.
207. Очерки таърихи адабиёти советии тоҷик, ч.1-2. – Сталинобад, 1956-1957.
208. Периханян А.Г. Сасанидский судебник. Книга тысяча судебных решений. – Ереван, 1973.
209. Петрушевский И.П. Ислам в Иране в VII-XV веках. – Ленинград: «Издательство Ленинградского Университета», 1966.
210. Поэзии и проза Древнего Востока. – Москва, 1973.
211. Пригарина Н.И. Индийский стиль и его место в персидской поэзии. – Москва, 1999.
212. Раджабов А. Музыкальная культура эпохи Хакима Тирмизи и ее классические истоки // Историко – культурные традиции эпохи Хакима Тирмизи и ее значение в мировой цивилизации. – Душанбе: «Дониш», 2016.
213. Раҷабӣ М. Насри тоҷикии замони ҷанг. – Душанбе, 1990.
214. Раҳмонов А. Шамсиддин Шохин ва анъанаи ғазалсароӣ дар адабиёти тоҷики нимаи дуюми асри XIX ва авали асри XX. – Душанбе, 2006.
215. Раҳмонов Ш. Таҳаввули воҳидҳо ва созмони жанрҳои лирикӣ дар назми форсу тоҷик. – Душанбе, 2010.
216. Раҷабӣ М. Таърихи танқид ва адабиётшиносӣ. – Душанбе, 1997.
217. Риёҳӣ, Муҳаммадамин. Фирдавсӣ (зиндагӣ, андеша ва шеърӣ). – Душанбе: “Бухоро”, 2008.



- 218.Рипка Ян. История персидской и таджикской литературы. Перевод И.С. Брагинского. –Москва, 1963.
- 219.Рипка Ян. История персидской и таджикской литературы. Перевод И.С. Брагинского. –Москва, 1970.
- 220.Розен В.Р. К вопросу об арабских переводах «Худай-нама» // Восточные заметки.- СПб., 1895.
- 221.Розенберг Ф.А. О вине и пирах в персидской национальной эпохе // Сборник музея антропологии и этнографии при Российской АН Т.У. – Петроград, 1918.
- 222.Саймуддинов Д. Катибаҳои Ҳахоманишӣ // Маҷ. «Садои Шарқ», 1982, №7.
- 223.Саймуддинов Д. Занд // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.,1, Душанбе, 1988, 1.-С. 452-453.
- 224.Саймуддинов Д. Корномаи Ардашери Бобакон // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ. 2. –**Душанбе.**
- 225.Саймуддинов Д. Форсии бостон. –Душанбе, 2008.
- 226.Саймуддинов Д. Вожашиносии забони форсии миёна. – Душанбе, 2001.
- 227.Саймуддинов Д. Вожаномаи феълҳои паҳлавӣ. – Душанбе, 1992.
- 228.Саймуддинов Д. Чанд андарзномаи паҳлавӣ // Маҷ. «Фарҳанг», 1992, №1-2.-С. 52-54.
- 229.Саймуддинов Д. Андарзҳои Менуи хирад // Маҷ. «Садои Шарқ», 1993, №3-4.-С. 72-76.
- 230.Саймуддинов Д. Ёдгори Зарирон//Маҷ. «Садои Шарқ»,1993, №5-6.-С. 121-128.
- 231.Саймуддинов Д. Ёдгори Бузаргмехр // Маҷ. «Садои Шарқ»,1993, №7-8.-С. 136-143.
- 232.Саймуддинов Д. Андарзи Одурбоди Маҳраспандон // Маҷ. «Садои Шарқ»,1994, №2.-С. 137-141.
- 233.Саймуддинов Д. Достони Менуи Хирад // Маҷ. «Садои Шарқ»,1994, №3-4.-С. 118-142.
- 234.Саймуддинов Д. Шатранҷ ва нард// Маҷ. «Садои Шарқ»,1994, №5-8.-С. 140-143.
- 235.Саймуддинов Д. Истилоҳоти идории замони Сосониён.- Душанбе, 1995.
- 236.Саймуддинов Д. Дарахти Асуриг// Маҷ. «Садои Шарқ»,1995, №1-3.-С. 138-143.
- 237.Саймуддинов Д. Барчидаи андарзи пурйуткешон // Маҷ. «Садои Шарқ»,1996, №1-4.-С. 140-143.
- 238.Саймуддинов Д. Адабиёти паҳлавӣ. – Душанбе, 2003.

239. Саймуддинов Д. Шархи ду пора шеъри куҳан аз сурудаҳои мардуми Бухоро // Номаи Пажӯҳишгоҳ, соли ҷаҳорум, шумораи ҳафтум, тирамоҳ ва зимистони соли 2004-2005.
240. Саймиддинов Д. Бархе аз вожаҳои куҳан дар ғӯишҳои тоҷикӣ // Саймиддинов Додихудо. Пажӯҳишҳои забоншиносӣ. – Душанбе: “Шарқи озод”, 2013.
241. Сайфиев Н. Адабиёти тоҷик дар асрҳои XVI, XVII, XVIII ва нимаи авали асри XIX. – Душанбе, 2004.
242. Сайфуллоев А. Баъзе муаммоҳои таърихи адабиёти муосир // Маҷ. “Фурӯғи маънавият”. – Хучанд, 2003.
243. Салимов Н. Осори М. Турсунзода ва масъалаи таҷдиди назар ба адабиёти шӯравии тоҷик // Маҷ. мақ. «Шоирӣ ватан». – Хучанд, 2001.
244. Салимов Н. Марҳалаҳои услубӣ ва таҳавули анвои наср дар адабиёти форсу тоҷик (асрҳои IX-XIII). – Хучанд, 2002.
245. Саолибии Нишопурӣ, Абӯмансур Абдулмалик ибни Муҳаммад. Ғурау-с-сияр маъруф ба «Шоҳнома»-и Саолибӣ. Таҳиягар ва муаллифи сарсухану таълиқот Н. Зоҳидов. – Душанбе: «Бухоро», 2014.
246. Сатторзода А. Таърихчаи назариёти адабии форсии тоҷикӣ. – Душанбе, 2001.
247. Сатторзода А. Аристотель и таҷикско-персидская литературная мысль. – Душанбе, 2002.
248. Сатторзода А. Вазъи кунунии адабшиносӣ дар Афғонистон ва дурнамои рушди он // А. Сатторзода. Кӯҳна ва нав. – Душанбе, 2004.
249. Сатторзода А. Даврабандии адабиёт аз нигоҳи равишшиносӣ // А. Сатторзода. Кӯҳна ва нав. – Душанбе, 2004.
250. Сатторзода А. Кӯҳна ва нав (нуктае чанд дар усули таълифи китоби дарсӣ) // А. Сатторзода. Кӯҳна ва нав. – Душанбе, 2004.
251. Сатторзода А. Кӯҳна ва нав. – Душанбе, 2004.
252. Сатторзода А. Ду тазмини маҷҳул бар як ғазали машҳур // Сатторзода А. Кӯҳна ва нав. – Душанбе, 2004.
253. Сатторзода, Абдунабӣ. Шеър дар аҳди Борбад // Рӯдакӣ: дирӯз ва имрӯз. – Душанбе: “Дониш”, 2007.
254. Сатторзода А. Адабиёти тоҷик (барои синфи 8). – Душанбе, 2009.
255. Саъдиев С. Сӯзанӣ ва муҳити адабии асри XII. – Душанбе, 1974.
256. Саъдиев С. Маркази адабии Самарқанд дар шоҳроҳи таърих. – Тошканд, 2012.
257. Саъдиев С. Адабиёти тоҷик дар асри XVII. – Душанбе, 1985.
258. Саъдиева Г. Худойнома // Энциклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик, ҷ.3. – Душанбе, 2004.

259. Согдийские документы с горы Муг. Вып.3. Хозяйственные документы. Чтение. пер. и коммент. М.Н. Боголюбова и О.И. Смирнова. – Москва, 1963.
260. Согдийские документы с горы Муг, выпуска 4. Юридические документы и письма. Чтение, перевод и комментарии В.А. Лившица. – Москва. 1962.
261. Соколов С.Н. Язык Авесты. –Л., 1964.
262. Солехов Ш. Роман дар адабиёти тоҷикии қарни XX.–Душанбе, 2011.
263. Струве В.В. Поход Дария I на саков и массагетов.- ИАН.СИФ.Т.І- II -№3, 1946-с.,231-250.
264. Струве В.В. История древнего Востока. – Ленинград, 1941.
265. Струве В.В. Родина зороастризма // Жур. «Советское востоковедение». – Москва, 1948, № 5.
266. Суфиев Ш.З. Саки-наме в системе персидско-таджикской литературы ХУ1-ХУ11 веков. – Душанбе, 2011.
267. Табаров С. Таърихи адабиёти асри бистумро бояд ба вучуд овард // Маҷ. «Садои Шарқ», 2001, №7.
268. Толстов С. П. Черты общественного строя Восточного Ирана и Средней Азии по Авесте// История СССР. –М.-Л., 1939.
269. Турсунов А. Эҳёи Ачам. Ручӯи таърихию публисистӣ.– Душанбе, 1984.
270. Умарзода, Иброҳим. Ориён. Душанбе: «Сурушан», 2002.
271. Фарнбағ Додағӣ. Бундаҳишн. Гузориши Мехрдоди Баҳор, таҳияи М. Диловар.-Душанбе, 2006.
272. Фарҳанги гӯишҳои ҷанубии забони тоҷикӣ. Мураттибон: Мансур Маҳмудов, Ғаффор Ҷӯраев, Баҳром Бердиев. – Душанбе: “Пайванд”, 2012.
273. Фахриддин Гургонӣ. Вис ва Ромин. – Душанбе, 1966.
274. Фильштинский И.М. История арабской литературы. V -начало X века. – Москва: “Наука”, 1985.
275. Фирдавсӣ, Абулқосим. Шохнома, ҷ. 6. –Душанбе: “Адиб”, 1989.
276. Фирдавсӣ, Абулқосим. Шохнома, ҷ. 7. –Душанбе: «Адиб», 1989.
277. Фирдавсӣ, Абулқосим. Шохнома, ҷ. 8. –Душанбе: «Адиб», 1990.
278. Фирдавсӣ, Абулқосим. Шохнома, ҷ. 9. –Душанбе: «Адиб», 1989-1991.
279. Фишурдаи суханрониҳо дар Симпозиуми байналмилалӣ «Авесто» ва тамаддуни ҷаҳонӣ». –Душанбе, 2001.
280. Фотиева В.С. К вопросу об историчности Ваддаха ал-Йамана // Письменные памятники Востока. Историко-филологические исследования. Ежегодник, 1975. –Москва: «Наука», 1982.
281. Фрай Р. Наследие Ирана, перевод с английского В.А. Лавшица, Е.В. Зеймаля. –Москва, 1972.

- 282.Фрейман А.А. Хорезмийский язык. –М., 1951.
- 283.Фрейман А.А. Древнеперсидские клинообразные надписи // Восток, 1925, №5.
- 284.Хрестоматия по истории Древнего Востока, ч. 2. – Москва, 1980.
- 285.Хромов А.Л. О структурных особенностях иранской топонимии Мавераннахра в период IX–XVIIвв. // Восточная филология. Выпуск III. – Душанбе, 1974.
- 286.Ҳодизода Р. Адабиёти тоҷик дар нимаи дувуми асри XIX. - Душанбе, 1968.
- 287.Ҳодизода Р., Каримов У., Саъдиев С. Адабиёти тоҷик (асрҳои XI–XIX ва ибтидои асри XX). – Душанбе, 1988.
- 288.Ҳодизода Р. Тасаввуф дар адабиёти форс-тоҷик. – Душанбе, 1999.
- 289.Ҳусейнзода Ш., Ниёзӣ Ш. Адабиёт. – Сталинобод, 1934.
- 290.Ҳусейнзода Ш. Адабиёти ватан (барои синфи 7). – Сталинобод, 1943.
- 291.Ҳусейнзода Ш. Адабиёти ватан (барои синфи 8). – Сталинобод, 1950.
- 292.Ҳусейнзода Ш., Болдирев А. Адабиёти ватан (барои синфи 9). – Сталинобод, 1960.
- 293.Чайкин К. Краткий очерк новейшей персидской литературы. – Москва, 1928.
- 294.Чунакова О. М. Изведать дороги и пути праведных. Пехлевийские назидательные тексты. Введение, транскрипция текстов, перевод, комментариев и глоссарий. –Москва, 1991.
- 295.Чунакова О. М. Зороастрийские тексты Суждения разума (Дадестан-и-меног-и храд). Сотворение основы (Бундахишн) и другие тексты. –Москва, 1997.
- 296.Чунакова О. М. Пехлевийский словарь зороастрийских терминов, мифических персонажей и мифологических символов. - СПб., 2004.
- 297.Шакурӣ М. Вазифаҳои танқиди адабӣ // Рӯз. «Адабиёт ва санъат», 1986, 13 феврал.
- 298.Шакурӣ М. Адабиёт ва фалсафаи ҳастӣ // Маҷ. «Садои Шарқ», 1986, №3.
- 299.Шакурӣ М. Барои танқиди асил // Маҷ. «Садои Шарқ», 1987, №10.
- 300.Шакури М. Литературная критика. Проблемы жанры и проблемы жизни // Жур. «Дружба народов», 1987, №3.
- 301.Шакурӣ М. Истиқлоли фикр ва консепсия даркор аст // Маҷ. «Садои Шарқ», 1988, №2.

302. Шакурӣ М. Маъруф Рачабӣ ва китоби ӯ дар бораи Сотим Улуғзода // Маъруф Рачабӣ. Сотим Улуғзода абармарди набард ва андеша. – Душанбе, 2004.
303. Шамсиддин Муҳаммадӣ. Бахроми Гӯр // Донишномаи Рӯдакӣ, ҷ.1. – Душанбе, 2008.
304. Шамсиддин Муҳаммадӣ. Абулаббоси Марвазӣ // Донишномаи Рӯдакӣ, ҷ. 1. – Душанбе, 2008.
305. Шарифов Х. Марзи адабиёт // Маҷ. «Садои Шарк», 1990, №7.
306. Шарифов Х. Аз нав омӯхтан зарур... Танқид дар шароити Бозсоӣ // Рӯз. «Адабиёт ва санъат», 1991, 21 март.
307. Шарифзода Х., Нарзикул М. Таърихи адабиёти тоҷик (аз аҳди қадим то оғози асри XIII). – Душанбе: «ТоРус», 2017.
308. Эберман В.А. Персы среди арабских поэтов эпохи Омейядов // + ЗКВ, т.11, выпуск 1. – Ленинград: “Изд-во АН СССР”, 1926.
309. Эмомалӣ Раҳмон. Нақши «Авесто» дар тамаддуни миллӣ ва ҷаҳонӣ. – Душанбе, 2001.
310. Эмомалӣ Раҳмон. Тоҷикон дар оинаи таърих // Аз Ориён то Сомониён, китоби якум. – Душанбе, 2009.
311. Эмомалӣ Раҳмон. Нигоҳе ба таърих ва тамаддуни ориёӣ. – Душанбе: «Ирфон», 2006.
312. Эмомалӣ Раҳмон. Забони миллат – ҳастии миллат. – Душанбе: «ЭР-Граф», 2016.
313. Юлдошев А. К. Эволюция арабской любовной лирики (ал-газал). VI-середи́на VIII вв. Автореф. дисс. канд. филолог. наук. – Москва, 1987.

Б) Бо алифбои лотинӣ

314. Abdulla Anwar Beg. Introduction to Persian Literature.- Atma Ram & Sons, 1942.
315. Abid Hasan Faridi. An Outline History of Persian Literature A.D. 822-1926. - Ram Prasad & Brothers, 1928.
316. Abid Hasan Faridi. An Outline History of Persian Literature, AD 822-1926.-Islamabad, 2002.
317. Abdulla Anwar Beg. Introduction to Persian Literature.- Atma Ram & Sons, 1942.
318. A Literary History of Persia. - Cambridge, 1929.
319. Anklesaria B. The holy Gathas of Zarathushtra.- Bombay, 1953.
320. Anna Heinz, W. Der indische Stil in der persischen Literatur.- Wiesbaden, 1973.
321. Arberry, A.J. Classical Persian Literature.-New York, 1958.
322. Bartholomae Chr. Die Gathas des Avesta. -Strassburg, 1905.
323. Bosworth C.E. Ebn Abi Taher Tayfur //Encyclopaedia Iranica. Edited by Ehsan Yarshater.- Vol.VII, 1996.– P.663.

324. Bosworth C.E. The Tahirids and Persian Literature // JRAN, vol.VII. – London, 1969.- P. 103-106, 101.
325. Boyce M. The Letter of Tansar.-Roma, 1968.-P. 22-121, 228-233
326. Brandenstein W. Maerhofer M., Handbuch des Altpersischen, Wiesbaden, 1964.
327. Brown, E.G. - A Literature History of Persia. - London, 1906-1908.
328. Brown, E.G. A History of Persian Literature under Tartar Dominion. - Cambridge, 1924.
329. Brown, E.G. A History of Persian Literature in modern Times. - Cambridge, 1924.
330. Benveniste E. *Le memorial de Zarer. Poeme Pehlevi mazdeen.*// "Journal asiatique". Volume, CCXX, 1932, № 2.
331. Boyce M. Ayadgar Zariran. M., 1989. Eir3.
332. Boyce M. Middle Persian literature. HDO1.
333. Classical Persian Literature.-New York, 1958.
334. Darmesteter, M.J. Les origines de la poesie persane. - Paris, 1887.
335. Darmesteter, J., 1892-3: le Zand – Avesta.- Paris.
336. Devare, T.N. A Short History of Persian Literature: at the Bahmani, the Adilshahi and Qutbshahi Courts.-India Poona: S. Devare.-1961.
337. De Redlich, M.D. Persian Language and Literature, with a Short Historical Sketch of the Country and Flag. - Philadelphia, 1929.
338. Dhabhar, B.N. The Pahlavi Pivayat.-Bombay, 1913.
339. De Blois, Francois "Hanzala Badgisi" Encyclopaedia Iranica XI.- New York, 1998.
340. De Bruijn, J.T.P. Persian Sufi Poetry: an Introduction to the Mystical Use of Classical Persian Poems. - Routledge Curzon, 1997.
341. Ethe, H. - Neupersische Literatur. - Strassburg, 1896-1904.
342. Ethe, H. Die Hofische und Romantische Poesia der Perser. - Hamburg, 1887.
343. Field, C. Persian Literature. - London, 1912.
344. Gershevitch, I. 1968. Old Iranian literature.- Leiden.
345. Grunebaum G.E. On the origin and early development of Arabic muḏavij poetry.- "Journal of Near Eastern studies".-Chicago, 1947. Vol.3, number 1.
346. Grignaschi M. Quelques specimens de la litterature Sassanide // Journal asiatique, 1966, t. 254.
347. Geldner R.A. Avesta, the Sacred Book of the Pariss, vol. 1896, III, Stuttgart art.
348. Bailey, H.W., Zoroastrian Problems in the Ninth Century Books. Oxford, 1971.
349. Gnoly G. Zoroaster's Time and Homeland.-Naples, 1980.
350. Horn, P. Geschichte der persischen Literatur. - Leipzig, 1901.
351. Hadi Hasan. Mughal Poetry: Its Cultural and Historical Value.- Madras.-1951.

352. Henning, W.B. An Astronomical Chapter of the Bundahishn //JPAS, 1942.
353. Henning, 1958. -Livshitz, 1970.
354. Henning, W.B., 1965, The Choresmian Documents // Asia Major 5.
355. Humhaech, H. W. Die Gathas des Zaratustra, I–II.-Heidelberg, 1959;
356. Humbach, H., 1991, The Cathas of Zarathushtra, 2 vols.- Heidelberg.
357. Lazard, G., 1884, 'La metrigue de l'Avesta recent' // Asta Iranica 23.
358. Hadi Hasan. A Golden Treasury of Persian Poetry.-Delhi, 1966.
359. History and Literature in Iran: Persian and Islamic studies in honor of Peter W. Avery.-London, 1998.
360. Ivanov, W. Ismaili Literature.-Tehran, 1963; Bozorg Alavi. Geschichte und Entwicklung der modernen persischen Literatur.- Berlin, 1964.
361. Iqbal Hasan. The Early Persian Poets of India. - Ратна, 1937.
362. Jnster S. The Gathas of Zaratuster. Teheran – Liege, 1975.
363. Jaffery. Y. History of Persian Literature. - Delhi.-1981.
364. Joseph Baron von Hammer Purgstall. Geschichte der schonen Redekunste Persiens. – Vienna, 1818.
365. Khalid Ahmad Nizami. Persian Influence on the Development of Literature and Sifi Traditions in South Asia.- Bethesda, 1992.
366. Khālighi-Mutlagh. Dj. "Abu Hafs Cogdi". Ensiklopedia Iranika, I.- New York, 1985.
367. Kent R. Old Persian.- New Hawen, 1953.
368. Levshits V.A and Hromov, A, 1981, Sogdijskij Jazuk.- Osnovy 11.
369. Levy, R. Persian Literature. – 1923.
370. Levy, R. Persian Literature.-London, New York, 1951.
371. Marguart J. A Caralogue of the Provincial Capitals of Eransahr.- Rome, 1931.
372. Messina G. Libroapo calittico persiana: AyakarI ZamaspiK. – Roma, 1939
373. Meisami Julie Scott . Medieval Persian Court Poetry.-Prinston.- 1987;
374. Morison, I.G., Baldick, J. Muhammad Rizaa Shafi'ei Kadkanai. History of Persian Literature: From Beginning of the Islamic Period to the Present Day.-E.J. Leiden: Brill-Koln, 1981.
375. Muhammad Abdulghani. A History of Persian Language and Literature at the Mughal Court. - Allahabad, 1929-1930.
376. Muhammad Abdulghani. Pre-Mughal Persian in Hindustan: A Critical Survey of the Growth of Persian Language and Literature in India from the Earliest Times to the Advent of the Mughal Rule. – Allahobod, 1941.
377. Lutfur Rahman, M. Persian Literature in India during the Time of Jahangir and Shah Jahan.- Baroda.-1970.

378. Muller F.W.K. Neutestamentliche Bruchstücke in soghdischer Sprache.-SPAW.
379. Noldeke, Th., 1920, Das iranische Nationalepos.- Heidelberg.- P. 647.
380. Noldeke, Th. Das Iranische Nationalepos: Besonderer Abdruck aus dem Grundriss der iraischen Philologie. - Strassburg, 1896.
381. Ouseley. W.G. Biographical Notices of Persian Poets: with Critical and Explanatory Remarks...- London, 1846.
382. Pizzi. - Manuale di Letteratura persiana. - Milano, 1887.
383. Pizzi. Storia Della Poesia Persiana. - Torino, 1894.
384. Padliaro, Bausani, A. Storia Della letteratura Persiana.-Milano, 1960.
385. Reed, E.A. Persian Literature, Ancient and Modern. - Chicago, 1893.
386. Sadarangani, H.I. Persian Poets of Sindh.-Karachi.-1956.
387. Shaked Sh. Andarz. Eir 2.
388. Sims-Williams, N. 1976, The Sogdian fragment of the British lebraru // Ibd-iranian journal 18.
389. Skjaervo, P.O., 1998b, Eastern Iranian Epic Traditions II, Rostam and Bhisma // Acta Orientalia 51.
390. Skjaervo, P.O. Eastern Iranian Epic Traditions II, Rostam and Bhisma.
391. Smith S. Draxt- iAsurig. Notes on the Assyrian Tree. // BSOS 4/1926-1928.
392. Tikku, G.L. Persian Poetry in Kashmir.- Los Angeles, 1971.
393. Zakeri, Mohsen, Sahl b. Harun b. Rahawayh // The Encyclopaedia of Islam. New edition. Vol. VIII.- Leiden, 1995.
394. Waiz Lall, J. An Introductory History of Persian Literature. - Imperial Book Depot Press, 1914.
395. Watkins, C., 1995, How to Kill a Dragon, Aspects of Indo-European Poetics, New York/Oxford.
396. West, E.W. 1880 (a): Pahlavi texts, I, SBE, V, Oxford.
397. West. Pahlavi Texts IV. Sacred Books of the East. XXXVII. Oxford, 1892; de menasce y. p. Une encyclopedie mazdeenne, le Denkart.- Paris, 1958; mole m. Ja legende le Zoroastze. - Paris, 1967.
398. Yarshater, E/1983, Iranian National Historu.- Cambridge.
399. Yashida, Y, 1991, "Sogdian Miscellany III", Corolla Iranica, Papers in honor of Prof. David Neil Mackenzie.

#### В) Бо алифбои арабӣ

- آذرنوش، آذرتاش. راه های نفوذ فارسی در فرهنگ و زبان عرب جاهلی. تهران، 1374. 400
- آلبری، سی. آر. سی. زیور مانوی. ترجمه ۀ ابولقاسم اسماعیل پور، تهران، 1375. 401



402. آموزگار ژاله و تفضلی، احمد. اسطوره زندگی زردشت. تهران، 1370.
403. آموزگار ژاله و تفضلی، احمد. زبان پهلوی، ادبیات و دستور آن، تهران، 1375.
404. آموزگار ژاله و تفضلی، احمد. کتاب پنجم دینکرد. تهران، 1386.
405. آموزگار ژاله. گلی بر مزار: مزارنوشته نویافته ای به پهلوی ساسانی از کازرون، نامۀ ایران باستان، 1381، 3، 2، صص 63-69.
406. آموزگار، ژاله. جامی سیمین از زمان اردشیر یکم ساسانی. نامه ایران باستان، 1383، 8، 4، صص 18-7.
407. آموزگار ژاله و تفضلی، احمد. کتاب پنجم دینکرد، تهران، 1386.
408. آموزگار ژاله. ادبیت زردشتی به زبان فارسی. مجله دانشکده ادبیات تهران، 1348، 18، 1، ش 1-2، صص 172-179.
409. آشتیانی، عباس اقبال. ابوالینبغی العباس ابن ترخان. //مهر، سال اول، شماره 10. صص 734-736.
410. آشتیانی، عباس اقبال. شعر قدم ایران //کاوه، سال 2 (دوره جدید)، شماره 2، 1339/1921. صص 1-8.
411. ابراهیم صفایی ملایری. تحضت ادبی قاجار. -تهران. -1333؛
412. ابن ابی اصبیعه، احمد بن قاسیم. عیون الانباء فی طبقات الاطباء. جلد 2. بکوشش محمد باسیل عیون الصوید. - بیروت، 1419/1998.
- ابن بلخی. فارسنامه. به سعی و اهتمام و تصحیح گای لیسترانج و رنولد الن نیکلسن، لندن، 1921.
413. ابن حوقل، محمد. صورة الارض. ترجمه جعفر شعار. -تهران: بنیاد فرهنگ ایران، 1345. - یو+371+32 ص.
414. ابن خردادبه، عبیدالله ابن عبدالله. المسالک والممالک. ترجمه سعید خاکنند. با مقدمه از اندره مایکل. -تهران: مؤسسه مطالعات و انتشارات میراث ملل، 1371. -221 ص.
415. ابن خلدون. مقدمه ابن خلدون، ترجمه پروین گنابادی، تهران، 1379.
416. ابن قتیبہ. الشعر و الشعرا. تحقیق و شرح احمد محمد شاکر. طبع قاهره، 1364-1369 (دو جزء) جزء 2. - 844 ص.
417. ابن قتیبہ دینوری. عیون الاخبار، بیروت 1343/ 1925.
418. ابن مسکویه، ابوعلی. جاویدان خرد. ترجمه تقی الدین محمد شوشتری ارجانی، به کوشش بهروز ثروتیان، تهران، 1355 ش.
419. ابن معتر. طبقات الشعرا المحدثین. تحقیق عبدالستار احمد فراخ. -القاهره: دارالمعارف بمصر، 1956. - سیوچهار+854 ص.
420. ابن نلسم. الفهرست. به کوشش رضا تجدد، تهران، 1352.
421. ابن نلسم، محمد ابن اسحاق. الفهرست. ترجمه محمد رضا تجدد. -تهران، 1350. -883 ص.
422. ابولقاسم اسماعیل پور. ادبیات مانوی //تاریخ جامع ایران، صص 483-515.

423. ابولقاسم اسماعیل پور. اسطوره آفرینش در آیین مانی. تهران، 1382.
424. ابولقاسم اسماعیل پور. بازسازی ارزشنگ مانی // مجله باستان شناسی و تاریخ، تهران، 1376، س. 12، ش. 2/1، ص. 10-13.
425. ابولقاسم اسماعیل پور. مهرنامگ: سرودنام ای مانوی // یاد بهار، به کوشش ک. مزدور، تهران، 1376، ص. 91-98.
426. ابولقاسمی، محسن. راهنمای زیانهای ایران باستان، تهران، ج. 1375، 1.
427. ابولقاسمی، محسن. شعر در ایران پیش از اسلام. تهران، 1373
428. ابولقاسمی، محسن. تاریخ زبان فارسی. تهران، 1373.
429. ابولمعالی علوی. بیان الادیان. به کوشش عباس اقبال، تهران، 1312
430. ابولمعالی نصراله منشی. کلیله و دمنه. به کوشش مجتبی مینوی، تهران، 1343.
431. احدزادگان، منیجه. آیین نامه نویسی. چستا، 1365، س. 3، ش. 8، ص. 609-611.
432. احسان یارشاطر. شعر فارسی در عهد شاهروخ (نیمه اول قرن نهم). - تهران. - 1334؛
433. احمد تفضلی. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام. - تهران. - 1377؛
434. احمد تمیمداری. عرفان و ادب در عصر صفوی. - تهران. - 1368؛
435. احمد جاوید. نخستین سخنسرایان فارسی تا ابو الفرج سگزی // افغانستان، 1955/1334.
436. احمد خاتمی. تاریخ ادبیات دوره بازگشت. - تهران. - 1380؛
437. احمد سمیعی. ادبیات ساسانی. - تهران. - 1355؛
438. احمد صفار مقدم. زبان و ادب فارسی در بوسنی و هرزگوین. - تهران. - 1372
439. احمد کریمی حکاک. تلیعة تجدد در شعر فارسی. - تهران. - 1374 (ترجمة مسعود جعفری)؛
440. احمد گلچین معانی. مکتب وقوع در شعر فارسی. - تهران. - 1347؛
441. احمد علیخان کوهزاد، علی محمد زهما، علی احمد نعیمی، محمد ابراهیم صفا و غلام محمد غبار. تاریخ ادبیات افغانستان برای صنوف لیسه‌ها. - کابل. - 1330؛
442. احمدی و حسین رزنجوی. سیر سخن. - تهران. - 1345؛
443. ادب پارسی. قسمتی از کتاب فجر الاسلام. ترجمه عباس خلیلی // مهر، سال پنجم، ش. 5، صص. 451-578.
444. ادیس احمد. سرهند مین فارسی ادب. - دهلی. - 1988 (به زبان اردو)؛
445. ادی شیر، الافاظ الفارسیة فی ارعریة. - بیروت: المطبعة الكاتولیکية للاباء الیسوعیین، 1907.
446. اسدالله حبیب. ادبیات دری در نیمه اول سده بیستم. - کابل. - 1366؛
447. اسدالله حبیب. ادبیات معاصر دری. - کابل. - 1362؛
448. اسدالله حبیب. ادبیات معاصر از آغاز سده بیست تا جنگ جهانی دوم (1900-1941-1945). - کابل. - 1356؛
449. اسکندر نامه (کاسیتنس دروغین)، به کوشش ایرج افشار، تهران، 1343.
450. اسماعیل نوری اعلی. صور و اسباب در شعر امروز ایران. - تهران. - 1348؛

451. اصطخری، ابراهم ابن محمد. المسالك والممالك. بکوشش محمد عبداللّال الحینی. - قاهره، 1961/1381.
452. اصطخری، ابواسحاق ابراهم ابن محمد فارسی. مسالك ممالک. بکوشش ایرج افشار. - تهران: بنگاه ترجمه و نشر کتاب، 1347. - 245 ص.
453. اصفهانی، ابوالفرج. کتاب الاغانی. طبع دارالکتب مصریه، 1345 و 1357.
454. افشار شیرازی. متن عربی و فارسی در باره مانی و مانویت // مانی و دین او، تهران، ص. 62-71.
455. افشار شیرازی. متون عربی و فارسی در باره مانی و مانویت. مانی و دین او، تهران، 1355، ص. 62-71. ارداویرازنامه. حروفنویسی، آوانویسی و ترجمه فیلیپ ژینیو، ترجمه ژاله آموزگار، تهران، 1372.
456. اکبرزاده، داریوش. دو نبشته جدید پهلوی // سروش پیر معان، تهران، 1381، ص. 263-274.
457. امام، سید محمد کاظم. جاویدان خرد. تهران، 1350.
458. انامار شیمیل. ادبیات اسلامی هند. - تهران. - 1373؛
459. انجوی شیرازی، میر جمال الدین. فرهنگ جهانگیری. بکوشش رحیم افیفی. جلد یکم. - مشهد، 1351. - ص. 1413.
460. انعام‌الق کوثر. شعر فارسی در بلوچستان. - راولپنڈی. - 1351؛
461. انیس ادب. مشاهیر شعرا یا ردو کی فارسی شاعری. - هند. - 1993؛
462. اوحدی، تقی الدین. عرفات العاشقین و عرصات العارفين. با مقدمه، تصحیح و تحقیق سید محسن ناجی نصرآبادی. جلد 2. - تهران: اساطیر، 1388. صص. 669-1344.
463. ایرج افشار. رگه‌های پیوند همیشگی در «مذاکر الاصحاب» و «تذکره نصرآبادی» // مجله «آینده»، 1992/1371، ش 7 - 12
464. ایلز گرشوپیچ و مری بویس. ادبیات دوران ایران باستان. برگردان به فارسی یدالله منصور، تهران، 1378.
465. اینوسترنس، کنستانتین. تحقیقات در باره ساسانیان. تهران، 1351.
466. باغبیدی، حسن رضای. از هند و اروپا تا آغازین تا ایرانی باستان // تاریخ جامع ایران، ص. 17-48.
467. باغبیدی، حسن رضای. بازنگری کتیبه دوزبانه پهلوی - چینی یافته شده در شی ان چین // نامه ایران باستان 7، س. 4، 1، تهران، 1384، ص. 22-31.
468. باغبیدی، حسن رضای. تاریخ زبان های ایرانی. تهران، 1388.
469. باغبیدی، حسن رضای. راهنمای زبان پارسی، تهران، 1385.
470. باغبیدی، حسن رضای. زبان پارسی // تاریخ جامع ایران، ص. 177-190.
471. باغبیدی، حسن رضای. زبان خوارزمی // تاریخ جامع ایران، ج. 5، تهران، 1394، ص. 597-606.
472. باغبیدی، حسن رضای. زبان های ایرانی باستان // تاریخ جامع ایران، ص. 53-106.
473. باغبیدی، حسن رضای. شیراز باستان // گویش شناسی، تهران، 1382، ج. 1، ش. 1، ص. 32-40.

474. باغبیدی، حسن رضای. واژه‌گزینی در عصر ساسانی و تاثیر آن در فارسی دری // نامۀ فرهنگستان، تهران، 1377، س. 4، ش. 3، ص/ 158-145.
475. باغبیدی، حسن رضای. زبان فارسی میانه // تاریخ جامع ایران، ج. 5، تهران، 1394، ص. 191-198.
476. باغبیدی، حسن رضای. کتیبه های فارسی میانه // تاریخ جامع ایران، ج. 5، تهران، 1394، ص. 201-227.
477. باغبیدی، حسن رضای. کتیبه پهلوی - کوفی برج لاجیم // نامه ایران باستان، س. 4، س. 1، تهران، 1384، ص. 9-21.
478. بدیع‌الزمان فروزانفر. سخن و سخنوران. تهران، 1308-1309.
479. بروسیوس، ماربا. شاهنشاهی هخامنشی از کروش بزرگ تا اردشیر اول. ترجمه هایده مشایخ، تهران، 1388.
480. بریان، پی. یر. تاریخ امپراتوری هخامنشیان، ترجمه مهدی سمسار، تهران، 1378.
481. بزرگ علوی. تاریخ و تحول ادبیات جدید ایران. - برلین. - 1964 (به آلمانی)؛
482. بشاش کنزق، رسول. معرفی و قراعت کتیبه‌های پهلوی سنگنگاره های رمه کوه // نامه پژوهشگاه میراث فرهنگی 1383، 9، دوره 2، ش. 4.
483. بلعمی، ابوعلی محمد. تاریخ، به تسحیح محمد تقی بهار، تهران، 1341.
484. بنونیست، امیل. دهن ایرانی بر پایه متنهای معتبر یونانی، ترجمۀ بهمن سرکاراتی، تهران، 1377
485. بهار، محمد تقی ملک الشعرا. سبکشناسی یا تاریخ تطور نثر فارسی. - تهران: امیرکبیر، 1389/2001. جلد 1. - 462 ص.
486. بهار، مهرداد و ا. اسماعیل پور. ادبیات مانوی. تهران، 1383.
487. بهار، مهرداد. از اسطوره تا تعریخ، به کوشش ابولقاسم اسماعیل پور، تهران، 1376.
488. بهار، مهرداد. پژوهشی در اساطیر ایران. ج. 2، تهران، 1375
489. بهار، مهرداد. واژه نامه گزیده های زادسپرم. تهران، 1351.
490. بهار، مهرداد. بندهشن. تهران، 1369.
491. بهزادی، رقیه. واژه نامه بندهشن. تهران، 1345.
492. بويس، مری. تاریخ کیش زردوشت، ج. 2: هخامنشیان، ترجمه همایون صنعتی زاده، تهران، 1382
493. بويس، مری. زردشتیان: باورها و آداب دینی آنها، ترجمه عسکرکهرامی، تهران، 1382.
494. بويس، مری. گوئان پارسی و سنت نوازندگی در ایران، ترجمه مسعود رجب نیا، تهران، 1369
495. بیرونی، ابوریحان. آثارالباقیه، ترجمه داناسرشت، تهران، 1353.
496. بیضون، لیبب. الکلمات الفارسیة فی اللغة العربیة. الطبع الثانیة. دمشق: مطبعة ابن زیدون، 2004.
497. پاکزاد، فضل الله. بندهشن. جلد 1، متن انتقادی، تهران، 1348.
498. پروانه طاهری. ستارگان ادب پارسی. - تهران. - 1382؛ ( براون، ادوارد. تاریخ ادبیات ایران . از قلم ترین روزگار زمان فردوسی. ترجمه و تهیه ی علی پاشا صالح. جلد 1. - تهران: امیرکبیر، 1356.

499. پروین شکبیا. شعر فارسی از آغاز تا امروز. -تهران. -1370؛.
500. پورداود، ابراهیم. خرده اوستا. بی تاریخ، بمبی.
501. پورداود، ابراهیم. گاتھا سرودهای پیامبر ایرانی شپیتمان زردشت. بمبی، 1952.
502. پورداود، ابراهیم. ویسپرد. تهران، 1334.
503. پورداود، ابراهیم. یسنا. ج. 1. تهران، 1334.
504. پورداود، ابراهیم. یسنا. ج. 2. تهران، 1337.
505. پورداود، ابراهیم. یشت ها. تهران، 1347.
506. پیکولوسکایا، ن. شهرهای ایران در روزگار پارتیان و ساسانیان/ ترجمه عنایت الله رضا، تهران،
- 1372
507. تاریخ ادبیات افغانستان. -کابل، 1951/1330.
508. تاریخ ادبیات مسلمانان پاکستان و هند. -در 5 جلد. -لاهور. -1971-1976 (به زبان اردو).
509. تاریخ جامع ایران، جلد پنجم، زیر نظر کاظم موسوی بجنوردی، تهران، 1394.
510. تاریخ سیستان. بکوشش ملک الشعرا بهار. -تهران: کلاله خاور، 1314. -470 ص.
511. تاریخ قم. بکوشش سید جلال الدین تهرانی. -تهران، 1313.
512. تاوتدیا جهانگیر. زبان و ادبیات پهلوی. تهران، 1348.
513. تتوی، عبدالرشید. فرهنگ رشیدی. بکوشش محمد عباسی. -تهران: کتابخانہ بارانی، 1337. -
- 696+7 ص.
514. تحسین یازنجی. پارسی نویسان آسیای صغیر. -تهران. -1371؛
515. ترابی، سیدمحمد. نگاهی به تاریخ و ادبیات ایران. تهران، 1384.
516. تفضلی، احمد. آیین نامه. دایرة المعارف بزرگ اسلامی، تهران، 1367، ج. 2، ص. 289-290.
517. تفضلی، احمد. ابالیس. دایرة المعارف بزرگ اسلامی، تهران، 1368، ج. 2، ص. 342.
518. تفضلی، احمد. آذرباد مهرسپندان، دانشنامه ایران و اسلام، ج. 1، تهران، 1354.
519. تفضلی، احمد. آرش. دانشنامه ایران و اسلام، ج. 1، تهران، 1354.
520. تفضلی، احمد. اندرز بجزاد فرخ پیروز. هفتاد مقاله، تهران، 1371، ص. 537-542.
521. تفضلی، احمد. آیین نامه. دانشنامه ایران و اسلام، ج. 1، تهران، 1368.
522. تفضلی، احمد. باربد یا پهلبد/نامواره دکتر محمود افشار، ج. 4، تهران، 1367، ص. 222-2225.
- 2225.
523. تفضلی، احمد. تاریخ ادبیات ایران پیش از اسلام. به کوشش ژاله آموزگار، تهران، 1378.
524. تفضلی، احمد. جوسان، جوسانه، رهنمای کتاب، س. 11، ش. 7، 410-411.
525. تفضلی، احمد. دو اثر تازه ایرانشناسی، رهنمای کتاب، س. 18، ش. 1-2، ص. 102-111.
526. تفضلی، احمد. شهرستان های ایران، سخر های ایران، به کوشش محمد یوسف کیانی، تهران،
- 1368، ج. 2، ص. 332-349.
527. تفضلی، احمد. واژه نامه مینوی خرد/ تهران، 1348.
528. تفضلی، احمد. وندیداد. پیشگفتار کتاب وندیداد. ترجمه داعی الاسلام، ج. 2، تهران، 1361.

529. تفضلی، احمد. جاویدان خرد و خردنامه. تحقیقات اسلامی، تهران، 1374، س. 10، ش. 2، 1، ص. 503-507.
530. تفضلی، احمد. کزتیر و سیاست اتحاد دین و دولت در دوره ساسانی، یکی قطره باران، تهران، 1370، ص. 721-737.
531. تقی زاده، سیدحسین و افشار شیرازی. مانی و دین او، تهران، 1335.
532. تقی زاده، سیدحسین. شست مقاله، تهران، 1346.
533. تقی زاده، سیدحسین. گاهسماری در ایران قدم، تهران، 1312.
534. التنجی، محمد. معجم المعربات الفارسیة. بیروت: الطبعة الثانية مکتبة لبنان ناشیرون، 1998.
535. توسی، اسدی ابومنصور علی احمد. لغت فرس. با تصحیح عباس اقبال. تهران: چاپخانه مجلس، 1319. - 582+19.
536. توفیق سبحانی. تاریخ ادبیات ایران. تهران. - 1386؛
537. ثعلبی، ابومنصور عبدملک. غرر اخبار ملوک الفرس یا غرر السیر. به کوشش زوتنبرگ، ترجمه محمد فضائلی، تهران، 1368.
538. جاحظ، ابوعثمان عمرو ابن بحر. البیان والتبیین. بتحقیق عبدالسلام محمد هارون. - القاهرة: مکتبة الخانجی. در چهار جلد، 1998/1418. - 1600 ص.
539. جارجی، زیدان. تاریخ تمدن اسلام. ترجمه و نگارش علی جواهرکلام. تهران: امیرکبیر، 1381. - 1106 ص.
540. جان شلدون. زبان های سکای: ختنی و تمشقی // تاریخ جامع ایران، ص. 516-532.
541. جعفری دهقی، شیمیا. نامه نویسی در زبانهای ایرانی میانه // تاریخ جامع ایران، ص. 621-637.
542. جعفری دهقی، محمود. بازشناسی منابع و مآخذ تاریخ ایران باستان. تهران، 1390.
543. جعفری دهقی، محمود. تاریخ نگاری و جغرافیا در ایران باستان // تاریخ جامع ایران، ص. 705-722.
544. جعفری دهقی، محمود. زبان بلخی // تاریخ جامع ایران ص. 577-596.
545. جعفری دهقی، محمود. فلسفه و کلام در ایران باستان // تاریخ جامع ایران ص. 723-747.
546. جعفری دهقی، محمود. نهضت ترجمه در دوره ساسانی // تاریخ جامع ایران ص.
547. جعفری دهقی، محمود. ماتیگان یوشت فریان. تهران، 1365.
548. جلال الدین همایی. تاریخ ادبیات ایران. تهران، 1309.
549. جمشید ملکپور. ادبیات نمایشی در ایران. در 2 جلد. تهران. - 1362؛
550. جیهانی، ابوالقاسم ابن احمد. اشکال العالم. ترجمه علی عبدالسلام کاتب. با مقدمه و تعلیقات فیروز منصوری. مشهد: آستان قدس رضوی، به نشر، 1368. - 323 ص.
551. حبیب بغدادی، ابوجعفر محمد. اسماء المغتالین من الاشراف فی جاهلیة والاسلام. - قاهره، 1954.
552. حسن انوشه. دانشنامه ادب فارسی در افغانستان. تهران. - 1378؛
553. حسن عابدینی. صد سال داستان نویسی در ایران. در 2 جلد. تهران. - 1366-1368؛

554. حسن کامشاد. پایه گذاران نثر جدید فارسی. -تهران. -1366 (به انگلیسی)؛
555. حسن میرعابدینی. صد سال داستان‌نویسی. -تهران. -1377؛
556. حسنعلی محمدی. شعر معاصر ایران: از بهار تا شهریار. -در 2 جلد. -قم. -1372؛
557. حسین جوگو. نگاهی کوتاه به ادبیات فارسی. -بوسنی و هرزگوین. -1914؛
558. حسین خدیوچم. -تهران، 1362. -226 ص.
559. حسین خطیبی. تاریخ تطور نثر فارسی. -تهران. -1344؛
560. حسین خطیبی. تاریخ مختصر نثر فارسی. -تهران. -1327؛
561. حسین فریور. تاریخ ادبیات ایران و تاریخ شعرا. -تهران. -1337؛
562. حسین نایل. سیری در ادبیات دری سده سیزدهم. -کابل. -1345؛
563. همدالله مستوفی. تاریخ گزیده. بکوشش عبدالحسین نوای. -تهران، 1362.
564. همدالله مستوفی. تاریخ گزیده. به کوشش عبدالحسین نوای، تهران، 1339.
565. حمید زرینکوب. چشم‌انداز شعر نو فارسی. -تهران. -1358؛
566. حمید زرینکوب. چشم‌انداز شعر نو فارسی. -تهران-توس. -1357؛
567. خاراکیسی، ایسیدور. منزلگاه‌های اشکانی. ترجمه ع. میرزای، تهران، 1392.
568. خالقی مطلق، جلال. بیژن و منیژه و ویس و رامین//ایران شناسی، س 2، ش 2، ص. 283-298.
569. خالقی مطلق، جلال. کینخسرو و کورش//ایران شناسی، س 7، ش 1، ص. 158-170.
570. خالقی مطلق، جلال. مطالعات حماسی. حمسه سرای باستان//سیمرغ، نشریۀ بنیاد فردوسی، 1381، س 3، ش 2، ص. 273-298
571. خالقی مطلق، جلال. مطالعات حماسی 1(هماسه سرای باستان//سیمرغ. بنیاد شاهنامه شناسی، شماره 5. -تهران، تیرماه 1357.
572. خال محمد خسته. معاصرین سخنور. -کابل. -1339؛
573. خانلری، پرویز ناتل. وزن شعر فارسی. -تهران: بنیاد فرهنگ ایران، 1345. -308 ص.
574. خداینظر. نگرشی به نثر معاصر دری افغانستان، عبارت از 2 جلد. -کابل، 1981.
575. خردنامه، به کوشش منصور ثروت، تهران، 1367.
576. خروموف آلبرت لیانیداویچ. آز رستم تا دیواشتیج. دوشنبه، 1987.
577. خطیبی، ابوالفضل. خدای نامه//تاریخ جامع ایران، ص. 675-703.
578. خطیبی، حسین. فن نثر در ادب فارسی. تهران، 1366.
579. خلیل‌الله خلیلی. آثار هرات. -هرات، 1309-1310.
580. خواجه ابوالفضل محمد ابن حسین بیهقی دبیر. تاریخ بیهقی. به تصحیح علی اکبر قیاض. -تهران: هرمیس، 1387. -ده+970 ص.
581. خوارزمی، ابو عبدالله محمد ابن احمد. مفاتیح العلوم. ترجمه حسین خدیوچم. -تهران، 1362. -226 ص.
582. دانداما یوف، آ.د. ایران در دوران نخستین پادشاهان هخامنشی/ترجمه روحی ارباب، تهران، 1383.
583. در سدن، مارک. زیانهای ایرانی میانه. ترجمه احمد تفضلی//مجله بررسی های تاریخی، س 9، ش 6، ض. 13-54.

584. درخشان، جتانشاه. آریاییان، مردم کاشی، امرد، پارسی و دیگر ایرانیان، تهران، 1382.
585. دریای، تورج. کتیبۀ پهلوی سلوک، داور کابل// فرهنگ 49-50، ص. 47-51.
586. دریای، تورج. کتیبۀ کرتیر در نقش رجب// نامۀ ایران یاستان 1، س. 1، ش. 1، ص. 3-10.
587. دریای، تورج. لقب پهلوی چهار از یددان و شاهنشاهان ساسانی// نامه فرهنگستان 16، س. 4، ش. 4، ص. 28-32.
588. دستور زبان دری. بخش نخست. مؤلفان: کهزاد، عبد القیوم قویم، حسین یمین. - کابل، 1998/1367.
589. دهدشتی، آذرمیدوخت. پژوهشی در متن پهلوی سی روزه کوچک و سی روزه بزرگ. تهران، 1363.
590. دولتشاه سمرقندی. تذکرت الشعرا. تصحیح محمد عباسی، تهران، 1334.
591. دولتشاه سمرقندی. تذکره الشعرا. به احتمال و تصحیح ادورد براون. - تهران: اساطیر، 1382.
592. دیاکونوف. اشکانیان، ترجمۀ کریم کشاورز، تهران، 1344.
593. دیان بوگدانویچ. ادبیات فارسی در یوگاسلاوی. - تهران. - 1333؛
594. دینوری، ابوحنیفه احمد بن داود. اخبار الطوال. ترجمۀ محمود مهدی دامغانی، تهران، 1366.
595. ذبیح الله صفا. تاریخ سیاسی و اجتماعی و فرهنگی ایران، تهران، 1376.
596. ذبیح الله صفا. تاریخ علوم عقلی در تمدون اسلامی، تهران، 1356.
597. ذبیح الله صفا. تاریخ ادبیات در ایران. ج. 2، تهران، 1339.
598. ذبیح الله صفا. حماسه سرای در ایران، تهران، 1363.
599. ذبیح الله صفا. تاریخ ادبیات در ایران. - تهران، 1322.
600. ذبیح الله صفا. تاریخ ادبیات در ایران. ج. 1-5. - تهران. - 1332-1367؛
601. ذبیح الله صفا. حماسه سرایی در ایران. - تهران، 1324.
602. ذبیح الله صفا. گنج سخن. - تهران. - 1340؛
603. ذبیح الله صفا. گنجینه سخن. - تهران. - 1348؛
604. ذبیح الله صفا. نثر فارسی از آغاز تا عهد نظام الملک طوسی. - تهران. - 1347؛
605. رازی، ابوحاتم. کتاب الزینة فی کلمات الاسلامیة. بکوشش حسین ابن فضل الله همدانی. - قاهره، جلد 1، 1957.
606. راشد محصل، محمد تقی. زند بچمن یسن، تهران، 1370.
607. راشد محصل، محمد تقی. اوستا// تاریخ جامع ایران، ص. 131-176.
608. راشد محصل، محمد تقی. پاییدن مرز به روایت متن های زردشتی، مجلد تحقیقات تاریخی، س. 1، ش. 3، تهران، 1368.
609. راشد محصل، محمد تقی. درامدی به دستور زبان اوستای، تهران، 1364.
610. راشد محصل، محمد تقی. سرودی در ستایش اپام نبات، مجله نامه پارسی، تهران، 1381، س. 7، ش. 1، ص. 9-17.
611. راشد محصل، محمد تقی. کتیبه های ایران باستان تهران، 1380.
612. راشد محصل، محمد تقی. گزیده های زادسپرم، تهران، 1366.
613. راشد محصل، محمد تقی. نجاتبخشی در ایران، تهران، 1364.



614. رجایی، احمد علی. پلای میان شعر هجایی و عروضی فارسی در قرون اول هجری. - تهران: انتشارات بنیاد فرهنگ ایران، 1353/1975. - 524 ص.
615. رجبزاده، هاشم. نوشته پهلوی در گنجینه هوریوچی ژاپون // آینده، 1366، س. 13، ش. 6-7، ص. 462-467.
616. رجبزاده، هاشم. نوشته پهلوی تازه یاب در توکیو // آینده، 1366، س. 13، ش. 4-5، ص. 352-353.
617. رجیبی، پرویز. کرتیر و سنگنبشته او در کعبه زردشت // بررسیهای تاریخی 33، تهران، 1350، س. 6، شماره مخصوص، ص. 3-68.
618. رحیمزاده، صفی. یدداشت های خسرو اول انوشیروان، تهران، 1330.
619. رسول هادی زاده، علی محمدی خراسانی. تاریخ ادبیات فارسی (دری-تاجیکی). - کابل، 2009/1388.
620. رشتین س. تاریخ مختصر ادبیات افغانستان. - کابل، 1946.
621. رشید یاسمی. ادبیات معاصر. - تهران. - 1352؛
622. رشید یاسمی. ادبیات معاصر. - تهران، 1316.
623. رضا داوری اردکانی. فارابی/دانشنامه زبان و ادب فارسی. جلد 4. - تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1391. - صص. 748-754.
624. رضازاده شفق. تاریخ ادبیات ایران. - تهران. - 1349؛
625. رضازاده شفق. تاریخ ادبیات ایران. - تهران، 1320.
626. رضاقلی خان هدایت. مجمع الفصحا. - تهران، 1295.
627. رضیه اکبر. نظم و نثر فارسی در زمان قطبشاهی. - حیدرآباد دکن. - 1982؛
628. رهنورد زریاب. پسمنظر نثر داستانی معاصر دری و نکته‌هایی در باره داستان. - کابل. - 1362
629. روایات داراب هرمز دیار. به کوشش مودی، بمبی، 1922.
630. روایت پهلوی، ترجمه مهشید میرفخرای، تهران، 1367.
631. روبین لیوی. تاریخ ادبیات فارسی. - تهران. - 1999/1378
632. روح امینی، محمود. جستاری مردم‌شناختی از منظمه درخت آسورگ // هفتاد مقاله، تهران، 1329. ص. 323-326.
633. روحی، مسعود. تمدون و فرهنگ ایران پیش از اسلام. تهران، 1384.
634. رؤیای صدر. بیست سال با طنز. - تهران. - 1381؛
635. زردشت، کوروش و حقوق بشر. گردآورنده مسعود متواضع، تهران، 1389.
636. زرشناس زهره. داستان سغدی میمون و روباه // فصلنامه فرهنگ، تهران، 1385، ش. 17، ص. 349-358.
637. زرشناس زهره. فرهنگ سعدی // نامه فرهنگستان، تهران، 1384، سال اول، ش. 2، ص. 126-131.
638. زرشناس زهره. میراث ادبی روی ایران باستان، تهران، 1384.
639. زرشناس زهره. ادبیات شفاهی ایران باستان، ص. 639-674.

640. زرشناس زهره. جستارها در زیانهای ایرانی میانه شرقی. تهران، 1370.
641. زرشناس زهره. داستان سغدی پیرمرد خوش اقبال//یاد یار، تهران، 1372، دفتر اول، ص. 113-121.
642. زرشناس زهره. داستان سغدی مروارید سنت// سیمرخ، تهران، 1369، سال یکم، ش/ 8-9، ص. 38-39.
643. زرشناس زهره. داستان سه ماهی// چستا// تهران، 1366، س. 5، ش. 3، ص. 239-244.
644. زرشناس زهره. زبان خوارزمی// نامۀ فرهنگستان، تهران، 1375، س. 2، ش. 1، ص. 53-65.
645. زرشناس زهره. زن و واژه. گفتارهای در بارۀ زنان و زبان سغدی، تهران، 1385.
646. زرشناس زهره. شش متن سغدی، تهران، 1380.
647. زرشناس زهره. یک داستان سغدی. چستا// تمدان، 1365، سال چهارم، ش. 5، ص. 322-325.
648. زرقانی، سید مهدی. کلمات فارسی در قدم ترین فرهنگنامۀ عربی// جستارهای ادبی. مجلۀ علمی پژوهشی، شماره چهارم، زمستان 1389. صص. 109-141.
649. زرین کوب، عبد الحسین. دو قرن سکوت. تهران: شرکت افست سهامی عام، 2536. 372- ص.
650. زرین کوب، عبد الحسین. سرود اهل بخارا - کهنه ترین نمونه شعر به زبان فارسی// یغما، شماره 7، سال 1337/1959. صص. 342-351.
651. زرینکوب، عبدالحسین. از گذشته ادبی ایران، تهران، 1375
652. زند، مختابیل اسحاق. نور و ظلمت در تاریخ ادبیات ایران. ترجمۀ اسدپور پیرانفر. -تهران: پیام، 1975/2536. 190- ص.
653. زهره زرشناس. زبان و ادبیات معاصر ایران. -تهران. -1382؛
654. زین العابدین معتمد. شعر و ادب فارسی. -تهران، 1925/1304.
655. زین العابدین موعتمد. تحوّل شعر فارسی. -تهران. -1339؛
656. ژینیو، فلیپ. ارداویراف نامه. ترجمۀ ژاله آموزگار، تهران، 1372.
657. سبحانی توفیق. تاریخ ادبیات. -تهران. -1380؛
658. سرامی، قدمعلی. از رنگ گل تا رنج خار. شکلشناسی قصههای شاهنامه، تهران، 1368
659. سروری کاشانی. مجمع الفرس. به تصحیح محمد دبیر سیاقی. -تهران: علمی، 1338. 980- ص.
660. سعید عبدالله. ادبیات فارسی در میان هندوان. -تهران. -1381؛
661. سعید نفیسی. تاریخ نظم و نثر ایران. - پاریس، 1311-1322.
662. سعید نفیسی. تاریخ نظم و نثر در ایران و در زبان فارسی. -تهران. -1344؛
663. سلیم نیساری. تاریخ ادبیات ایران. -تهران، 1328.
664. سید حسن ثبت رضوی. فارسیگویان پاکستان. -ج. 1. -روپلندی. -1354؛
665. سید سخّاد حسین. تاریخ ادبیات ایران. -اورنگ آباد دکن. -1351؛
666. سید محمدرضا داعی جواد. تاریخ ادبیات ایران از حمله مغول تا نیمه اول دوره صفویّه. -ج. 1. -اصفهان. -1335؛
667. سید مهدی زرقانی. تاریخ ادبی ایران و قلمرو زبان فارسی. -تهران. -1388 و دیگران.
668. سیدحسن امین. ادبیات معاصر ایران. -تهران. -1384؛

669. سیدرضا صدوقی خسروشاهی. شعر و ادب فارسی در کشورهای همسایه. -تهران. -1354؛
670. سیروس شمیسا. سبک‌شناسی شعر. -تهران. -1376؛
671. سیروس شمیسا. سیر غزل در شعر فارسی. -تهران. -1373؛
672. سیمز ویلیامز. آشنای با زبان سغدی. مترجمان: ویدانداف، محمد جعفرزاده، رستم وحیدی، 1387.
673. سیمز ویلیامز، نیکلاس. بلخی. راهنمای زبانهای ایرانی، ترجمه حشمن رضای باغیبدی، ج. 1، تهران، 1382، ص. 358-366.
674. سیمز ویلیامز، نیکلاس. رمززدای از زبان بلخی، پرتو تازه بر افغانستان باستان، ترجمه م. ج. دهقی، مجله زیانشناسی، 1389، سال 15، ش. 2، ص. 83-107.
675. شارپ، ر. ن. فرمانهای شاهنشاهان هخامنشی / شیراز، 1346
676. شاه‌علی‌اکبر شهرستانی. هجو در ادبیات دری. -کابل. -1359؛
677. شبلی نعمانی. شعرالعجم یا تاریخ شعرا و ادبیات ایران. -اعظمگره، 1906، 1910.
678. شرافت عباس. بلوچستان مین فارسی شاعری که پچاس سال. -کویته. -1999 (به زبان اردو) ،
679. شرح احوال و اشعار شاعران بی دیوان قرن های 3-4-5 هجری قمری. مصحیح: محمود مدبری. -تهران: پانویس، 1370. 10+704 ص.
680. شروو، اکتار. زبان های ایرانی نو شرقی//رهنمای زبانی ایرانی، ترجمه ج. باغیبدی، تهران، 1382، ج. 1، ص. 723-739.
681. شعیب اعظمی. فارسی ادب به عهد سلاطین تغلق. -دهلی. -1985؛
682. شفیع کدکنی، محمدرضا. کهنه ترین نمونه شعر پارسی//آرش، تهران، 1342، ش. 6.
683. شکوهی فریا. هنظله بادغیسی / دانشنامه ادب فارسی. جلد دوم. -
684. شکی، منصور. ساسان که بود؟!//ایران سناسی، تهران، 1329، ش. 2، ص. 77-88.
685. شمس لنگرودی. تاریخ تحلیلی شعر نو. در 4 جلد. -تهران. -1357-1384؛
686. شمس لنگرودی. مکتب بازگشت. -تهران. -1372؛
687. صابرمیرزایف. ادبیات‌مصدری افغانستان، عبارت از 2 جلد. -کابل، 1364
688. صادقی، علی اشرف. تکوین زبان فارسی. -تهران، 1979/1357. 100 ص.
689. صادقی، علی اشرف. نخستین شاعر فارسی سرا و آغاز شعر عروضی فارسی//بنیاد موقوفات دکتر محمود افشار یزدی. گنجینه 44. -تهران، 1393. گذشته و آینده فرهنگ و ادب ایران. صص. 117-144.
690. صادقی، علی اشرف. نخستین شاعر فارسی سرا و آغاز شعر عروضی فارسی//معارف، مرداد-آبان 1363، شماره 2. صص. 87-115.
691. صالح‌محمد خلیق. تاریخ ادبیات بلخ (از کهنترین روزگار تا اوایل سده بیست و یکم). -کابل. -1387؛
692. صدیق سفیزاده. تاریخ ادبیات ایران. -تهران. -1382؛
693. صلطان زاده، شهلا. ابوطاهر خاتونی / دانشنامه زبان و ادب فارسی. جلد یکم. -تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1384. - صص. 186-188.
694. ضبیح الله صفا. تاریخ ادبیات در ایران. جلد اول. -تهران: فردوس، 1385. -ج. 1 + 716 ص.

695. ضیاء نخشبی. طوطی نامه. به تصحیح فتح الله مجتبیای، تهران، 1372.
696. طاوسی، محمد. واژه نامه شایست ناسایست، سیراز، 1365.
697. طبری، محمد بن جریر. تاریخ طبری. ترجمه ابولقاسم پاینده، تهران، 1362.
698. ظهیرالدین احمد. ایرانی ادب. -اسلام آباد. -1375 (به زبان اردو)؛
699. ظهیرالدین احمد. پاکستان مین فارسی ادب. -در 4 جلد. -1974-1985 (به زبان اردو)؛
700. عباس اقبال آشتیانی. تاریخ مختصر ادبیات ایران. -تهران. -1338؛
701. عباس مهین ششتری. تاریخ ادبیات ایران در عصر خلافت عرب. -تهران. -1350؛
702. عباس مهین ششتری. تاریخ زبان و ادبیات ایران در خارج از ایران. -تهران. -1352؛
703. عبدالحسین زرّینکوب. از گذشته ادبی ایران. -تهران. -1375؛
704. عبدالحسین زرّینکوب. سیری در شعر فارسی. -تهران. -1363؛
705. عبدالقیوم قویم. تاریخ ادبیات دری از دوره های باستانی تا پایان قرن چهارم هجری. -کابل. -1360؛
706. عبدالقیوم قویم. مروری در ادبیات معاصر دری (از 1259 تا 1380). -کابل. -1385؛
707. عریان، سعید. متون پهلوی، تهران، 1371.
708. عفیفی، رحیم. ارداویراف نامه. مشهد، 1342.
709. عفیفی، رحیم. اساطیر فرهنگ ایران در نوشته های پهلوی، تهران، 1374.
710. علی اصغر میرباقری. تاریخ ادبیات ایران. -تهران. -1381؛
711. علیخانی، بابک. بررسی لطایف عرفانی در نصوص عتیق اوستایی، تهران، 1379.
712. عناصری، جابر. شناخت اساطیر ایران بر اساس طومار نقالان، تهران؛ 1370.
713. عهد اردشیر، تحقیق احسان عباس، ترجمه فارسی محمد علی امام شوشتری، تهران، 1348
714. عوفی، محمد. جوامع الحکایات. به تصحیح بانو کریمی، تهران، 1352.
715. عوفی، محمد. لباب الباب. از روی چاپ ادوارد براون و قزوینی با تصحیحات جدید و حواشی و تعلیقات کامل بکوشش سعید نفیسی. -تهران: اتحاد، 1335. -سی و دو+782 ص.
716. غزالی، محمد. نصحة الملوک. به کوشش جلال الدین های، ج 2، تهران، 1351.
717. غضنفر تبریزی. فهرست کتاب های رازی و نام های کتاب های بیرونی. تصحیح و ترجمه مهدی محقق، تهران، 1371.
718. غلام رضایی، محمد. ابوحفص سغدی/دانشنامه زبان و ادب فارسی. جلد اول. -تهران، 1384. -صص. 126-127.
719. غلام سرور همایون. تاریخ ادب زبان دری در سده های پنجم و ششم هجری. -کابل. -1360؛
720. غلام سرور همایون. تاریخ ادبیات بدخشان. -کابل. -1353؛
721. غلامحیدر یقین. تاریخ ادبیات دری. -کابل. -1342؛
722. غلام محمد لعلزاد. شعر معاصر دری در افغانستان. -دهلی. -1377؛
723. غیاث آبادی، رضا مرادی. تمدون هخامنشی، سیزده گفتار در بررسی های هخامنشی. تهران، 1390.
724. غیبی، بیژن. یادگار زریران. بیلفلند، 1375.
725. الفارابی، ابونصر. کتب الحروف. بتحقیق و مقدمه محسن مهدی. -لبنان- بیروت، 1986. -218 ص.

726. فراهیدی، ابو عبدالرحمان خلیل ابن احمد. کتاب العین. تحقیق مهدی مخدومی و ابراهیم سامرای. جلد‌های 1-8. قم: دارالهجر، 1405.
727. فرای، ریچرد. سنگنبشته پارتی کل جنگگاه// نشریه انجمن فرهنگ ایران باستان، 1345، ش 1، ص 1-38.
728. فرای، ریچرد. میراث باستانی ایران، ترجمه مصعود رجب نیا، تهران، 1373.
729. فره وشی، بهرام. کارنامه اردشیر بابکان، تهران، 1354.
730. فریدریش، یوهانس. زیانهای خاموش. ترجمه یدالله ثمره و بدر الزمان قریب، تهران، 1381.
731. فضللی، احمد. مینوی خرد. تهران، 1348.
732. قاسم صافی. بهار ادب. تاریخ مختصر زبان و ادبیات فارسی در شبه قاره هند. -تهران. -1382؛
733. قریب، بدرالزمان. رستم در روایات سغدی// شاهنامه شناسی، ج 1، تهران، 1357، ص 44-53.
734. قریب، بدرالزمان. روایتی از تولد بودا، متن سغدی و سنتزه جاتکه/ تهران، 1383.
735. قریب، بدرالزمان. زبان سغری// تاریخ جامع ایران، ص 431-482.
736. قریب، بدرالزمان. طلسم باران از یک متن سغدی// نشریه انجمن فرهنگ ایران باستان، 1347، ش 1، ص 12-24.
737. قریب، بدرالزمان. فرهنگ سغدی. تهران، 1374.
738. قریب، بدرالزمان. کتیبه ای به خط پهلوی در چین// مجله دانشکده ادبیات تهران 53، ج 14، ش 1، ص 80-86.
739. قریب، بدرالزمان. مطالعات سغدی. به کوشش محمد شکری قومشی، تهران، 1386.
740. قریب، بدرالزمان. عناصر زردشتی در متن ایرانی شرقی// جشننامه محمدعلی موحد، به کوشش حسن حبیبی، تهران، 1387.
741. قزوینی، فضل الله المعجم فی آثار ملوک العجم. -تبریز، 1858/1274. -301 ص.
742. قزوینی، محمد. قلم ترین شعر فارسی بعد از اسلام/ قزوینی، محمد. بیست مقاله. جلد 1. صص 34-35، 39-41.
743. قیس رازی، شمس الدین محمد. المعجم فی معاییر اشعار العجم. به تصحیح علامه محمد ابن عبد الوهاب قزوینی و تصحیح مجدد استاد مدرّس رضوی و تصحیح مجدد دکتر سیروس شمیسا. چاپ اول. -تهران: نشرعلمی، 1338. - 640 ص.
744. قیصر امینپور. سنت و نوآوری در شعر معاصر. -تهران. -1383؛
745. قیصری، ابراهیم. منظومه ای به شعر دری نظیر درخت آسوریک// هفتیمین کنگره تحقیقات ایرانی، تهران، ج 2، صص 362-378.
746. کارلو جووانی چرتی. شعر در ایران باستان// تاریخ جامع ایران، صص 606-615.
747. کامبخش فرد، صیف الدین. کتیبه ای از شاپور دوم شاهنشاه ساسانی در مشکین شهر// هنر و مردم، تهران، 1346، ش 61 و 62، صص 6-9.
748. کاووس حسنی. گونه‌های نوآوری در شعر معاصر ایران. -تهران. -1383؛
749. کدکنی، محمدرضا شفیعی. کهن ترین نمونه شعر فارسی. یکی از خسروانی های باربد// آرش، شماره 6. - صص 28-32.

750. کدکنی، محمد رضا شفيعی. صور خیال در شعر فارسی. تهران، 1357. 730 ص.
751. کرباسیان، ملیحه. در خرابات مغان، جستارهایی در فرهنگ ایرانی. تهران، 1385.
752. کریستن سن، ارتور. ایران بزرگ در زمان ساسانیان. ترجمه رشید یاسمی، تهران، 1332، ج 2.
753. کریستن سن، ارتور. داستان بزرگمهر حکیم. ترجمه عبدالحسین میکده//مهر، تهران، 1 ش، 12، ص. 1312-1313.
754. کریستن سن، ارتور. شاهزاده خانم و برگ مورد شاهزاده خانم و نخود. ترجمه ژاله آموزگار، کتاب سخن، تهران، 1368، ص. 102-117.
755. کریستن سن، ارتور. کارنامه شاهان. ترجمه باقر امیرخانی و بهمن سرکاراتی، تبریز، 1350.
756. کریستن سن، ارتور. کیانیان. ترجمه ذبیح الله صفا، تهران، 1336.
757. کریستن سن، ارتور. نمونه های نخستین انسان و نخستین شهریار در تاریخ افسانه های ایران، ترجمه ژاله آموزگار و احمد تفضلی، تهران، 1367.
758. کریستن سن، ارتور. مزدپرستی در ایران باستان، ترجمه ذبیح الله صفا، تهران، 1336.
759. کسروی، احمد. کارنامه اردشیر بابکان، ج 2، تهران، 1342.
760. کلیم، ا و نجمآبادی، ص. متن های پهلوی اشکانی کتیبه حاجی آباد//هنر و مردم، ش 86 و 87، ص. 74-85.
761. کلیم، اوتاکر. تاریخچه مکتب مزدک. ترجمه ج. فکری ارساد، تهران، 1371.
762. کيفر، پراچی، رموری و گروه زبانهای ایرانی جنوبی شرقی// رهنمای زبانهای ایرانی، ترجمه ج 2، باغبیدی، تهران، 1382، ص. 723-739.
763. کیومرث امیری. زبان و ادب فارسی در هند. تهران. 1374؛
764. گردیزی. زین الاخبار. به تصحیح عبدالحی حبیبی، تهران، 1347.
765. گرگانی، فخرالدین. ویس و رامین. تصحیح مجتبی مینوی، تهران، 1349.
766. گزنفون، کورش نامه. ترجمه رضا مشایخی، تهران، 1342.
767. گزیده های زادسپرم، ترجمه م. راشد محصل، تهران، 1366.
768. لازار ژیلبر. اشعار پراکنده قدیم ترین شعرای فارسی زبان. جلد 2. تهران: انتشارات کتابآزاد، 1341. ص. 224-
769. لطیف ناظمی. مقدمه ای بر داستان نویسی کشور. - کابل. - 1360؛
770. لوکونین، و. گ. تمدن ایران ساسانی. ترجمه عنایت الله رضا، تهران، 1350.
771. ماتکان گجستک ابالیس، آذرفرنگ فرخزادان، ترجمه ابراهیم میرزای ناظر، تهران، 1375.
772. مارگارت، خاچیکیان. زبان ایلامی//تاریخ جامع ایران، جلد پنجم، زیر نظر کاظم موسوی بجنوردی، تهران، 1394، ص. 1-14.
773. مجتبیای، فتح الله. ملاحظاتی در باره اعلام کلیله و دمنه//زبان شناسی، تهران، 1363، س. 1، ش. 2، ص. 33-63.
774. مجمل التواریخ و القصص، به تصحیح محمد تقی بهار، تهران، 1318
775. مجی، ماورو. ادبیات ختنی، ترجمه م. ج. دهقی//تاریخ ادبیات فارسی، ج 17، تهران، 1393، ص. 378-465.

776. محبوب، محمد جعفر. در بارهٔ کلیله و دمنه، تهران، 1336.
777. محقق، مهدی. تحلیل اشعار ناصر خسرو. تهران، 1344.
778. محمد استعلامی. بررسی ادبیات امروز ایران. -تهران. 1356.
779. محمد استعلامی. بررسی ادبیات امروز. -تهران. 1350.
780. محمد حقوقی. ادبیات امروز ایران. نظم. -تهران. 1377.
781. محمد حقوقی. شعر نو از آغاز تا امروز. -تهران. 1371.
782. محمد خانجی. شعرا، علما و امرای نامی بوسنی و هرزگوین. ترجمهٔ علیدوانی. -تهران. 1373.
783. محمد دبیر سیاقی. پیشاهنگان شعر پارسی. -تهران. 1370.
784. محمد دبیر سیاقی. پیشگامان شعر پارسی. -تهران. 1351.
785. محمد صادقافشانی. شاهد صادق // یادگار، سال 2، شماره 4. تهران، 1324. ص. 23.
786. محمد صدر هاشمی. شعر و شاعری در عصر صفوی. -اصفهان. 1344.
787. محمد عبدالله. ادبیات فارسی در میان هندوان. ترجمهٔ محمداسلم خانی. -تهران. 1371.
788. محمد عثمان صدقی. سیر ادب در افغانستان. اجمال تطور ادبی در عصر حاضر. -کابل. 1360.
789. محمد غلامرضایی. سبک‌شناسی شعر فارسی از رودکی تا شاملو. -تهران. 1377.
790. محمد مهدی. ادب پهلوانی. مطالعه‌ای در تاریخ ادب دیرینهٔ ایرانی از زردشت تا اشکانیان. -تهران.
- 1379؛
791. محمد امین ریاحی. زبان و ادب فارسی در قلمرو عثمانی. -تهران. 1369؛
792. محمد جعفر محبوب. سبک خراسانی در شعر فارسی. -تهران. 1345-1350؛
793. محمد جعفر یاحقی. چون سبویی تشنه. تاریخ ادبیات معاصر فارسی. -تهران. 1374-1375؛
794. محمد حسن طیبی. تاریخ ادبیات دری افغانستان. -کابل. 1349؛
795. محمد حیدر ژوبل. تاریخ ادبیات افغانستان بعد از اسلام. -کابل. 1330؛
796. محمد رضا روزبه. ادبیات معاصر ایران (شعر). -تهران. 1381؛
797. محمد رضا روزبه. سیر تحول غزل فارسی. -تهران. 1378؛
798. محمد رضا شفیعی کدکنی. ادبیات فارسی از عصر جامی تا روزگار ما. -تهران. 1382؛
799. محمد رضا شفیعی کدکنی. ادوار شعر فارسی از مشروطیت تا سقوط سلطنت. -تهران. 1359؛
800. محمد صدر هاشمی. شعر و شاعری در عهد صفوی. -اصفهان. 1341؛
801. محمد علی سپانلو. نویسندگان پیشرو ایران. -تهران. 1366؛
802. محمد کلام سه‌سرامی. خدمتگزاران فارسی در بنگلادیش. -داکا. 1999؛
803. محمد هادی محمدی. تاریخ ادبیات کودکان ایران. -تهران. 1380؛
804. محمد دیونس طغیان سکایی. تاریخ ادبیات فارسی دری (سده‌های 7 و 8 هجری) (عصر مغول). -کابل. 1391 و دیگران.
805. محمدی ملایری، محمد. تاریخ و فرهنگ ایران. تهران، 1372.
806. محمدی ملایری، محمد. تاریخ و فرهنگ ایران در دوران انتقال از عصر ساسانی به عصر اسلامی.
- ج. 1، تهران، 1372.

807. محمدی ملایری، محمد. در باره یکی از تاج نامه های ساسانی//الدراسات الادبیه، تهران، 1340، س. 2، ش. 3 و 4، ص. 185-207.
808. محمدی ملایری، محمد. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام و آثار آن در تمدون اسلامی و ادبیات عربی. تهران، 1374.
809. محمدی ملایری، محمد. فرهنگ ایرانی پیش از اسلام. تهران، 1356.
810. محمود فتوحی. نظریه تاریخ ادبیات با بررسی انتقادی تاریخ ادبیات نگاری در ایران. -تهران. -1387. -ص. 206. محمود فتوحی. نظریه تاریخ ادبیات با بررسی انتقادی تاریخ ادبیات نگاری در ایران. -تهران. -1387. -ص. 407.
811. محمود هاشمی. تحوّل نثر فارسی در شبه قاره. -اسلام آباد. -1375؛
812. محیط طباطبای. زبان فارسی در آثار فارابی// بنیاد موقوفات دکتر محمود افشار یزدی. گذشته و آینده فرهنگ ادب ایران. گنجینه، 5. صص. 93-108.
813. محیط طباطبای، سید محمد. کارنامه انوشیروان// مجله شرق، تهران، 1320، ص. 552-602.
814. مختارات من کتاب الهو و ال ملاحی. بکوشش الاب اغناطیوس عبدالحلیفه الیسوعی. - بیروت: مطبعه کاتولیکی، 1961.
815. مرزبان راد، علی. خسرو انوشیروان در ادب پارسی، تهران، 1356.
816. مزدپور، کتابیون. اندرز کودکان// چیستا، تهران، 1368، س. 6، ش. 7 و 8.
817. مزدپور، کتابیون. شالوده های اساطیری شاه نامه، فرهنگ، کتاب هفتم، تهران، 1369، ص. 53-78.
818. مزدپور، کتابیون. شایست ناشایست، تهران، 1369.
819. مسعودی، ابولحسن علی. مروج الذهب. ترجمه ابولقاسم پاینده، تهران، 1370.
820. مسعودی، علی ابن حسین. التنبه والاشراف. بکوشش داخویه. -لیدن، 1967.
821. مسعودی، علی ابن حسین. مروج الذهب. مترجم: ابوقاسم پاینده. -تهران: علمی فرهنگی، 1382، جلد 1. - سیزده+785. جلد 2. -923 ص.
822. مشکور، محمدجواد. فرهنگ هزارش های پهلوی. تهران، 1346.
823. مشکور، محمدجواد. کارنامه اردشیر بابکان. تهران، 1369.
824. مظفر حسین شمیم. شعر فارسی در هند و پاکستان. -تهران. -1349؛
825. معصومه بادنج. بادغیس/دانشنامه زبان و ادب فارسی. جلد 1. -تهران: فرهنگستان زبان و ادب فارسی، 1384. - صص. 672-674.
826. معین، محمد. روزشماری در ایران باستان// ایران شناسی، تهران، ص. 1-85.
827. معین، محمد. مزدیسنا و ادب پارسی. تهران، 1338.
828. معین، محمد. فرهنگ فارسی. جلد 1. چاپ 23. -تهران: امیرکبیر، 1385. - صدوشش+1472.
829. معین، محمد. فرهنگ فارسی. جلد 3. چاپ 23. -تهران: امیرکبیر، 1385. ص. 4223.
830. معین، محمد. مجموعه مقالات، ج. 1، تهران، 1368، ص. 80-102.
831. معین، محمد. یوشت فریان و مرزبان نامه، تهران، 1324.



832. المقدّسی، شمس الدین ابو عبدالله محمد. احسن التقاسیم فی معرفة الاقالیم. -لیدن، 1906. - 335 ص.
833. مقدم، محمد. داستان جم. تهران، 1341.
834. مکرّی، کیوانپور، محمد. اندرز خسرو قبادان. تهران، 1326.
835. مآلاح، حسینعلی. فرهنگ سازها. -تهران، 1376.
836. ملک الشعرا بمار. سبک شناسی یا تاریخ تطور شعر فارسی. در 3 مجلد. -تهران. 1334.
837. ملک الشعرا بمار. سبک شناسی یا تاریخ تطور نثر فارسی. - تهران، 1320.
838. ملکی، ایرج. خسرو و ریدک // مجله موسیقی، تهران، 1344.
839. منصور رستگار فسائی. انواع نثر فارسی. -تهران. 1380؛
840. منہاج سراج جزجانی. طبقات ناصری. به تصحیح و مقابله و تحشیه و تعلیق عبدالحی حبیبی قندهاری. جلد اول. - کابل: مطبعه پوهنی، 1342. 523 ص.
841. منوچهری دامغانی. دیوان. بکوشش محمد دبیر سیاقی. -تهران: زوّار، 1384. - بیست و شش + 418 ص.
842. منور مسعودی. کشمیر کی فارسی ادب کی تاریخ. -سرینگر. -1993 (به زین اردو)؛
843. مهجوب، محمدجعفر. سبک خراسانی در شعر فارسی. -تهران، 1350. -749 ص.
844. مهدی حمیدی. شعر در عصر قاجار. -تهران. 1364؛
845. مهدی زرقانی. چشم انداز شعر معاصر. -تهران. 1383؛
846. موحد، محمد علی. فارسیات متون تازی. // بنیاد موقوفات دکتر محمود افشار یزدی. گذشته و آینده فرهنگ ادب ایران. گنجینه، 38. صص. 81-99.
847. مولای، چنگیز. سنگنبشته های شاهنشاهان هخامنشی // تاریخ جامع ایران، ص. 107-130.
848. مولوی خال محمد خسته ختلانی. یادی از رفتگان. -کابل. 1344؛
849. میرزا محسن ابراهیمی. نمونه ادبیات ایران. -باکو، 1922.
850. میرزا محمد حسین فروغی. تاریخ ادبیات. -تهران. 1335؛
851. میرزای، ناظر. اندرز اوشنر دانا، تهران، 1383.
852. میرفخرای، مهشید. ادبیات ختنی // تاریخ جامع ایران، ص. 533-576.
853. میرفخرای، مهشید. ادبیات فارسی میانه // تاریخ جامع ایران، ص. 241-430.
854. میرفخرای، مهشید. بررسی روایات پهلوی. تهران، 1390.
855. میرفخرای، مهشید. بررسی هادخت نسک، تهران، 1371.
856. میرفخرای، مهشید. بررسی دینکرد ششم. تهران، 1392.
857. میرفخرای، مهشید. بغان یسن / یشت. تهران، 1382.
858. میرفخرای، مهشید. درآمد بر زبان ختنی. مشهد، 1383.
859. میرفخرای، مهشید. روایات پهلوی. تهران، 1367.
860. مینورسکی، ولادیمیر. ویس و رامین، داستان عاشقانه پارتی، ترجمه م. مقرّبی // فرهنگ ایران زمین، تهران، 1335، س. 4، ش. 1-2، ص. 3-73.
861. مینوی، مجتبی. پانز گفتار. تهران، 1346.

862. مینوی، مجتبی. یکی از فارسیات ابونواس// دانشکده ادبیات دانشگاه - تهران، سال اول. - صص 77-62.
863. ناتل خانلری، پرویز. تاریخ زبان فارسی. تهران، 1369.
864. ناصر خسرو قبادیانی. سفرنامه. بکوشش نادر وزین پور. - تهران، 1362.
865. ناصر خسرو. دیوان. به کوشش، مجتبی منوی و مهدی محقیق، تهران، 1353.
866. نامه های قزوینی به تقی زاده. بکوشش ایرج افشار. - تهران، 1353.
867. نامه تنسر به گشنسپ، به کوشش، مجتبی منوی، ج. 2، تهران، 1354.
868. نجوانی، محمد بن هندوشاه. صحاح الفرس، به اهتمام عبدالعلی طاعنی، تهران، 1341.
869. نصراله زاده، سیروس و جاوری، محسن. مزارنوشته های نویافته به پهلوی ساسانی از چشمه ناز سمیرم// نامه ایران باستان 4، تهران، 1381، س. 2، ش. 2، ص. 71-76.
870. نصراله زاده، سیروس. کتیبه سنگ مزار تل سفید// یروش پیر مغان، تهران، 1381، ص. 385-391.
871. نصراله زاده، سیروس. کتیبه یادبود و سنگ مزار پهلوی ساسانی// بامه پارسی 23، تهران، 1380، س. 6، ش. 4، ص. 12-16.
872. نصراله زاده، سیروس. کتیبه نویافته ی پهلوی// نامه پارسی 23، تهران، 1380، س. 6، ش. 4، ص. 5-11.
873. نصراله زاده، سیروس. کشف کتیبه ی تازه ای از تخت قیصر شوشتر// نامه پژوهشگاه میراث فرهنگی 8، تهران، 1383، دورت 2، ش. 8، ص. 91-92.
874. نظامی عروضی سمرقندی. چهار مقاله. بر اساس تصحیح علامه محمد قزوینی. شرح و توضیح سعیدالله قره بگلو، رضا انزایی نژاد. - تبریز: آیدین، 1387. - 288 ص.
875. نفیسی سعید. ابوحفص - نخستین شاعر // پیامنو، سال 6، شماره 3. - تهران، 1331/1953. صص. 40-46.
876. نفیسی، سعید. تاریخ نظم و نثر در ایران و در زبان فارسی. جلد دوم. - تهران، 1344. - صص. 665-1172.
877. نوایی ماهیار، یحیی. درخت آسوری. تهران، 1346.
878. نوایی ماهیار، یحیی. مجموعه مقالات، به کوشش م. طوسی، شیراز، 1355.
879. نوایی ماهیار، یحیی. یدگار زریران. تهران، 1374.
880. نوری عثمان، محمد. خدای نامه ها و شاهنامه های مآخذ فردوسی// جشننامه محمد پروین گنابادی، تهران، 1354، ص. 287-332.
881. نولدکه، تودور. تاریخ ایرانیان و عرب ها. ترجمه عباس زریاب، تهران، 1358.
882. نولدکه، تودور. حماسه ملی ایران. ترجمه بزرگ علوی، تهران، 1327.
883. النویری، شهاب الدین احمد ابن عبد الوهب. نهاية الإرب فی فنون الادب. - قاهره: دارالکتب، جلد 3. 1424 ه. ق. / 2004.
884. هدایت، صادق. چهار باب از کتاب شکنندگمانی ویچار، تهران، 1322.
885. هدایت، صادق. زند و همن یسن و کارنامه اردشیر بابکان/ تهران، 1332.

886. هدایت، صادق. کارنامه اردشیر بابکان. تهران، 1322.
887. هدایت، صادق. گجسته ابالیش، تهران، 1318.
888. هدایت، رضاقلیخان. مجمع الفصحاء. بخش سوم از جلد اول. بکوشش مظاهر مصفا. -تهران: امیرکبیر، 1382. صص. 1683-2263.
889. هدایت، رضاقلیخان. مجمع الفصحاء. بخش اول از جلد اول. بکوشش مظاهر مصفا. -تهران: امیرکبیر، 1382. صص. هفتاد و چهار+726.
890. همایونفرخ رکن‌الدین. تاریخ هشت هزار سال شعر ایران. -تهران. -1370؛
891. همای، جلال‌الدین. تاریخ ادبیات در ایران. بکوشش ماهدخت بانو همای. -تهران: هما، چاپ اول، 1375. 10+328 ص.
892. هنینگ، و.پ. کتاب اخنوخ. ترجمه ک. جهانداری//نامه فرهنگستان، س. 2، ش. 1، ص. 25-35.
893. هوشنگ مستوفی. شعرای بزرگ ایران. -تهران. -1334؛
894. وهمن، فریدون. داروی خرسندی//فرهنگ ایرانزمین، تهران، 1343، س. 12، ص. 198-217.
895. وهمن، فریدون. دیانت زردشتی. تهران، 1347.
896. وهمن، فریدون. واژه نامه ارتایوپیرانامک. تهران، 1355.
897. ویدن گرن، گو. دینهای ایرانی. ترجمه منوچهر فرهنگ، تهران، 1377. هدایت، رضاقلیخان. مجمع الفصحاء. بخش دوم از جلد اول. بکوشش مظاهر مصفا. -تهران: امیرکبیر، 1382. صص. 727-1662.
898. یارشاطر، احسان. تاریخ ایران از سلوکیان تا فروپاشی دولت ساسانیان. ج. 3، قسمت 1، ترجمه حسن انوشه، تهران، 1373.
899. یارشاطر، احسان. چرا در شاهنامه از پادشاهان ماد و هخامنشی ذکر نیست؟//شاهنامه شناسی (1)، تهران، 1353، ص. 268-301.
900. یارشاطر، احسان. چند نکته در باره زبان خوارزمی//مجله دانشکده ادبیات دانشگاه تهران، 1332، س. 1، ش. 2، ص. 41-48.
901. یارشاطر، احسان. رستم در زبان سغدی//مهر، تهران، 1331، ش. 8، ص. 406-411.
902. یاسمی، رشید. ارداویرافنامه.//مهر، تهران، 1314، س. 3، ش. 1-4.
903. یاسمی، رشید. اندرز اوشنر دانا.//مهر، تهران، 1313، س. 2، ش. 7-9.
904. یحیی آریانیپور. از نیما تا روزگار ما. -تهران. -1357.
905. یحیی آریانیپور. از صبا تا نیما (تاریخ 150 سال ادب فارسی). در 2 جلد. -تهران. -1350.
906. یعقوبی. تاریخ یعقوبی. ترجمه محمد ابراهیم آیتی، تهران، 1343، 1342.
907. یمینخان لاهوری. تاریخ شعر و سخنوران فارسی در لاهور. -کراچی. -1971.

## ФЕХРИСТИ НОМҶО

- Абаев В. И. 36, 39, 40, 63, 69, 568  
Аббос Халилӣ 499, 514  
Абдулганӣ Муҳаммад 4  
Абдуллоев А. 7, 297, 569  
Абдуллоҳ Муҳаммад 8, 367, 646  
Абдуллоҳ Густарӣ 357  
Абдуманнонов А. 7  
Абдусаттор, Абдушукур 561, 570, 559, 568  
Абибов А. 7, 569, 572  
Абӯабдуллоҳ Муҳаммад ибни Аҳмад 548  
Абулқосимӣ, Муҳсин. 57, 58, 59, 103, 197  
Абӯнувос 167, 201, 261, 262, 263, 265, 267, 277, 278, 280, 282, 283, 284, 285, 291, 294, 299, 300-310, 312, 313, 314, 316, 317, 318, 319, 320-330, 336, 506, 514  
Авҳадӣ, Тақиюддин 532  
Авфӣ, Муҳаммад 198, 316, 517, 519, 521, 523, 544, 546, 550, 552, 553, 555, 564, 629  
Азизкулов Ҷ. 92, 184, 185, 569, 575, 197, 199  
Айнӣ, Садриддин 4, 18, 20, 23, 569, 577, 624, 625  
Акбарзода, Ю. 14, 567  
Алавӣ, Бузург 5, 8  
Алӣ ибна-л-Ҳусайн 564  
Ал-Обӣ 422  
Ал-Оқуб, Эсо 384, 438  
Ал-Абӯбакр 283, 353  
Ал-Аввалӣ 421  
Ал-Ачисӣ 318  
Ал-Ансорӣ 361, 378  
Ал-Беҳтарӣ 344  
Ал-Берунӣ 250, 267, 414  
Ад-Дебо 283  
Ад-Диноварӣ 435  
Ад-Дурӣ, Абдулазиз 306  
Алиев Г.Ю. 9, 569  
Алии Давонӣ 8  
Аличонӣ, Б. 71  
Алимардонов А. 187, 569, 570,  
Ал-Исфаҳонӣ, Абулфараҷ 274, 278, 313, 568  
Алихонӣ Б. 70, 71  
Ал-Қалқашандӣ, Абулаббос 376,  
Ал-Қосими Поянда 342  
Ал-Ҷаҳшиёрӣ 344, 346, 348, 350, 360, 361, 367, 381, 383, 384, 385, 414, 462  
Ал-Ҷоҳиз, Умар 259, 264, 266, 278, 342, 350, 357, 371, 374, 384, 388, 411, 427, 428, 444, 451, 452, 453, 488, 496  
Ал-Мубарру 278  
Ал-Муҳаммад 404, 405,  
Ал-Муртазо Имомӣ 386,  
Ал-Омирӣ, Абулҳасан 417  
Ас-Сулӣ 278  
Ат-Тунҷӣ, Муҳаммад 505,  
Ал-Удабой 486,  
Ал-Форобӣ, Абӯнаسر 222, 523, 504, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 549, 550, 551, 575  
Ал-Хатиб, Абдуллоҳ 279  
Ал-Хураймӣ, Абӯяъқуб 275, 281, 292  
Ал-Ҷамавӣ 284  
Ал-Ҳусурӣ 291, 346  
Амин Саидҳасан 6  
Аминпур, Қайсар 6, 21, 22  
Амирӣ, Каюмарс 6  
Амиршоҳӣ, Нурмуҳаммад 498, 523, 529  
Амиркулов С. 19, 20, 569  
Амонов Р. 7, 568  
Ан-Надим, Муҳаммад ибни Исҳоқ 281, 366-369, 370-379, 380, 381, 385, 403  
Ан-Нувайрӣ, Шаҳобиддин 583

Анӯша, Ҳасан 6, 74  
 Аҳмад Билозарӣ 380  
 Аҳмад, Зақӣ 406  
 Аҳмад, Идрис 8  
 Аҳмадӣ 5  
 Ардаконӣ, Ризо Доварӣ  
 Ардашер ибни Бобак 432  
 Асламхонӣ, Муҳаммад 8  
 Асоев Х. 7, 14  
 Афифӣ, Раҳим 543, 555  
 Афсаҳзод А. 135, 137, 181, 182,  
 183, 184, 195, 196, 197, 509, 511,  
 550  
 Афшор, Эрач 18, 19, 188, 252,  
 347, 506, 508  
 Аъзамзод, С. 15  
 Аъзамӣ, Шуайб 8  
 Аъло, Исмоил Нурӣ 5, 579  
 Бағдодӣ, Ҳабиб 519, 525, 529  
 Баёт, Азизуллоҳ 83, 88  
 Байзун, Лабиб 105, 523  
 Байҳақӣ, Хоҷа Абулфазл  
 Муҳаммад ибни Ҳусайни Дабир  
 140, 167, 355, 481  
 Балъамӣ, Абулфазл 98, 162, 167,  
 182, 360, 370, 372, 377, 391, 420,  
 446  
 Баҳор, Маликушшуаро 4, 5, 11,  
 140, 147, 169, 199, 270, 371, 177,  
 199, 361, 370, 371, 373, 374, 376,  
 383, 390, 420, 424, 428, 441, 446,  
 505, 529, 531, 535, 536, 537, 538,  
 561  
 Баҳор, Меҳрдод 123  
 Бартолд В.В. 252, 468  
 Башор Б. 278, 291, 279, 299, 304  
 Беляев Е.А. 353  
 Бехзодӣ, Руқия 121  
 Бертелс Е.Э. 3, 8, 9, 62, 63, 68,  
 92, 214, 215, 312  
 Бобоев Ф. 383  
 Бобоназар, Б. 67, 74  
 Боғбедӣ, Ҳасанризо 29, 46, 47,  
 83, 84, 86, 243, 244  
 Боголюбов М.Н. 127, 231, 526,  
 527, 529, 530  
 Боданч, Маъсума 545  
 Бойс, Мэри 31, 51, 124, 194, 203,  
 204, 219  
 Болдирев А.Н. 500  
 Брагинский И.С. 7, 8, 9, 14, 16,  
 50, 51, 53, 63, 72, 92, 111, 150,  
 500, 555  
 Браун, Эдвард 9, 10  
 Бугдонович, Диён 9  
 Бурҳон, Муҳаммадхусайн 529  
 Бруклиман Карл 388  
 Ваҳман Фаридун 62  
 Вилямз С 216  
 Габриэли Ф. 395, 396, 424, 471  
 Гафуров Б.Г. 63, 511  
 Герасимова А.С. 9  
 Гершевич, Иля 62, 228  
 Гирс Г.Ф. 9  
 Грюнебаум Г.Э. 335  
 Гургонӣ, Фаҳруддин 85, 92, 200,  
 204, 325, 447, 558  
 Гуштосп, Ф. 142, 151  
 Гаффоров, Абдуллоҷон 7  
 Гаффорова З. 7, 571  
 Гафуров Б. 32  
 Гуфрони Хуросонӣ 383, 513  
 Гиёс, Ободӣ 33, 34, 36, 40, 45,  
 171  
 Гиёсуддин Муҳаммад Ромпурӣ  
 548  
 Губор, Гуломмуҳаммад 6  
 Гуломризой, Муҳаммад 6  
 Дабиринаҷод, Бадеуллоҳ 521  
 Давлатшоҳи Самарқандӣ 198,  
 251, 521, 578  
 Дворянков Н.А. 9  
 Демидчик Л.Н. 7  
 Диловаров М. 24, 34, 35, 36, 40,  
 41, 50, 53, 55, 56, 57, 58, 60, 61,  
 62, 63, 64, 65, 67, 69, 71, 74, 76,  
 77, 78, 79, 80, 87, 88, 106, 110,  
 111, 114, 118, 122, 123, 131, 135,

136, 140, 143, 146, 147, 150, 153, 178, 195  
Додихудоев Р. 177, 178  
Дӯстхоҳ, Чалил 63, 68, 178  
Ёзичӣ, Таҳсин 6  
Ёқут, Ҳамавӣ 208, 263, 266, 267, 268, 271, 360, 369, 384, 386, 453, 455, 462, 465, 466, 467, 468, 471  
Ёҳақӣ, Муҳаммадҷаъфар 6  
Ёршотир, Эҳсон 5, 36, 95, 101, 166, 167  
Ёсамӣ, Рашид 4, 105  
Жинев, Филипп 119, 123, 589  
Жубал, Муҳаммадхайдар 6, 10  
Занд, М. 9  
Заҳириддин Аҳмад 8  
Заҳмо Алимӯхаммад 6  
Зарёб, Раҳнавард 7  
Зарқонӣ Саид Маҳдӣ 6  
Зарринқӯб, Абдулҳусайн 6, 10, 520, 524, 525  
Зарринқӯб, Ҳамид 6  
Зарёб, Аббос 424  
Заршинос, Зухра 6, 94, 95  
Зиёев И. 512  
Зоҳидӣ (Зоҳидов), Низомиддин 24, 502, 507  
Зундерман, Вернер 223  
Ибни Абд 356, 358  
Ибни ал-Балхӣ 53, 401, 412  
Ибни Абиусайбиъа 511, 512, 525, 531  
Ибн ал Қифтӣ 377  
Ибни Қутайба 166, 168, 171, 172, 184, 251, 394, 396, 398, 401, 402, 481, 500, 525  
Ибни Маскавейҳ 144, 204, 203  
Ибн ал-Муътаз 266, 271, 298, 299, 300, 301, 308, 309, 320, 324, 326, 329, 331, 346, 464, 479, 536  
Ибни Надим. 97, 128, 162, 163, 170, 191, 192, 247, 266, 267, 270, 332, 333, 345, 349, 350, 360, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 372, 374, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 386, 387, 391, 395, 396, 398, 400, 402, 408, 409, 410, 412, 414, 418, 422, 423, 425, 426, 427, 428, 432, 434, 435, 436, 448, 449, 450, 453, 455, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 478, 479, 485, 492, 497, 520, 535, 559  
Ибни Ҳавқал 208  
Ибни Рашиқ 262, 296, 297  
Ибни Фақеҳи Ҳамадонӣ 357, 385  
Ибни Халдун 251, 253, 350, 484, 485  
Ибни Халкон 368, 371, 448  
Ибни Хурдодбеҳ 197, 201, 495, 518, 521, 522, 534  
Ибни Шиҳом 459  
Иброҳим ибни Муҳаммад  
Истаҳрӣ 167, 208, 348, 530  
Иброҳимӣ, Мирзомӯҳсин 4  
Иброҳим, Пурдовуд 76  
Инҷӯии, Шерозӣ 267, 268, 343, 347, 348, 360, 365, 367, 371, 381, 382, 422, 423, 445, 458, 460, 467, 551  
Иностранцев К. 62, 140, 188, 190, 195, 367, 370, 380, 395, 408, 436, 456, 481, 482, 494  
Исмоил Нурӣ Уғлӣ 5  
Имрул Қайс 309  
Истеълomӣ, Муҳаммад 5, 6  
Исфаҳонӣ, Муҳаммадсодик 552  
Исфаҳонӣ, Ҳамза 85, 99, 165, 166, 191, 202, 360, 366, 371, 373, 375, 376, 377, 389, 390, 441, 442  
Ифтихорзода, Муҳаммадризо 498, 526  
Кавсар, Инъомулҳақ 8  
Кадканӣ, Муҳаммадризо  
Шафеъӣ 6, 373, 523, 553  
Каримов У. 7, 16  
Касравӣ, Аҳмад 157, 166  
Комиссаров Д.С. 8, 9, 16

Комшод, Ҳасан 5  
 Конрада Н.И. 9  
 Корлу Ҷувонӣ. 204, 205  
 Кошифӣ, Ҳусайн Воиз 183  
 Кошонӣ, Сурур 550  
 Крачковский И.Ю. 309, 311, 395  
 Кристенсен, Артур 62, 72, 105,  
 140, 153, 158, 164, 166, 173, 194,  
 196, 197, 304, 342, 395, 403, 404,  
 445  
 Кримский А.Е. 3, 332, 333  
 Курдалӣ, Муҳаммад 371  
 Куруши Кабир 32, 33, 34, 44  
 Кӯҳзод, Аҳмадалихон 6  
 Қавим, Абдулқайюм 6, 7  
 Қасрӣ, Мустафо 346, 347, 462  
 Қазвинӣ, Муҳаммад 373, 401,  
 531  
 Қариб, Бадруззамон 207, 208,  
 220, 222  
 Қарибӣ, Б. 22, 223, 224, 225, 229  
 Қулизода, Хусрав 75, 144, 152,  
 160, 161  
 Қурбонов Х. 34, 35, 36, 41, 42  
 Лангрӯдӣ, Шамс 6  
 Лаълзод, Фуломмуҳаммад 8  
 Левковская Р.Г. 9  
 Лелеков Л. А. 66  
 Лившиц В.А. 527  
 Лоҳурӣ, Яминхон 8  
 Луконин В.Г. 574  
 Мавлавӣ, Холмуҳаммад Хастаи  
 Хатлонӣ 6  
 Мавлоӣ Ч. 35  
 Маздопур, К. 156, 157, 147, 148  
 Маковелский А. О. 63, 68  
 Малакӣ, Э. 178  
 Маликпур, Ҷамшед 6  
 Маллох, Ҳусайналі 572  
 Малоирӣ, Иброҳим Сафой 5  
 Малоирӣ, Муҳаммад 168, 171,  
 189, 195  
 Маҳдӣ, Муҳаммад 6, 463  
 Мудаббирӣ, Маҳмуд 584  
 Маҳҷуб, Муҳаммадҷаъфар 5,  
 447, 570  
 Маонӣ, Аҳмад Гулчин 5  
 Мардонӣ Т. 533, 534, 535  
 Масъудӣ, Али 349, 356, 361, 367,  
 425, 426  
 Масъуди Ҷаъфарӣ 6  
 Масъудӣ, Абулҳасан 422, 203  
 Масъудӣ, Алимухаммади Заҳмо  
 367, 425, 426  
 Масъудӣ, Мунаввар 8  
 Машкур, Муҳаммадҷавод 177  
 Маъсумӣ Н. 7  
 Метс А. 254, 255, 326  
 Минавӣ, Мучтабо 92, 193, 424,  
 506  
 Мирбоқирӣ, Алиасгар 6  
 Мирзоев А. 4  
 Мирзоев С. 7  
 Мирзозода Х. 4, 7, 10, 92  
 Мирзоюнус М. 15  
 Миробидинӣ, Ҳасан 6  
 Мирфахроӣ М. 87, 89, 92, 103-  
 114, 116-129, 130-139, 142-149,  
 153-159, 160-164, 173-179, 185,  
 188, 192-194, 233-240  
 Монрӯ, Мачҷӣ 249, 252, 253  
 Муаззин Ҷомӣ 463  
 Муваҳхид, Муҳаммадалӣ 52,  
 527  
 Мучтабой, Фатҳуллох 193  
 Муин, Муҳаммад 27, 36, 38, 44,  
 106, 155, 164, 176, 203, 326, 501,  
 542, 553  
 Муин, Маҳмуд 28, 112  
 Мукаддам, Аҳмад Саффор 6  
 Мукаддасӣ, Тоҳир 398  
 Мусаффо, Абулфазл 339, 348  
 Муставфӣ, Ҳамдуллох 85, 166,  
 442, 443, 444, 552, 575  
 Муставфӣ, Ҳушанг 5  
 Мусулмониён, Р. 14,  
 Мутлак, Ҷалол Холиқӣ 85, 93,  
 94, 133, 134, 518, 551  
 Мухаккиқ, Маҳдӣ 180, 181

Муҳаммади Муҳаммад 289, 354, 358, 359, 363, 364, 369, 370, 371, 421, 424  
 Муҳаммадӣ, Ҳасанлӣ 6  
 Муҳаммадӣ, Шамсиддин 24  
 Муҳаммадӣ, Муҳаммадходӣ 6  
 Муҳаммадҷон Шакурии  
 Бухорой 7, 13, 17, 18, 22, 526  
 Муътаман, Зайнулобидин 4, 5, 10,  
 Набиев, А. 14  
 Наввобӣ Я. 158  
 Наввобӣ, Моҳёр 89, 90, 139, 140, 143  
 Наимӣ, Алиаҳмад 6  
 Найсорӣ, Салим 5  
 Наршаҳӣ, Абӯбакр Насрудин 499, 524, 525, 526, 528, 529, 530  
 Насруллоҳ, Абулмаолий Муншӣ. 181, 182  
 Нафисӣ, Саид 4, 5, 22, 547, 548, 549, 550, 552, 556, 557, 558  
 Негматов Н.Н. 468  
 Нёлдеке Т. 93, 99, 163, 391, 423  
 Неупокоева И.Г. 248  
 Нибарг Ҳ.С. 76  
 Ниёзӣ, Шавкат 4  
 Низомии Арӯзии Самарқандӣ 552, 556  
 Никитина В. Б. 8, 61, 62  
 Нозимӣ, Латиф 6, 20, 21  
 Ноил Ҳусайн 6  
 Носир Мирзой 151  
 Ночӣ, Муҳаммадризо 512  
 Носири Хусрав 12, 16, 21, 66, 156, 165, 166, 167, 168, 551  
 Нуров Н. 62, 320  
 Нуъмонӣ, Шиблӣ 3  
 Обидинӣ, Ҳасан 6  
 Ободонӣ, Ф. 140, 148  
 Озартош, Озарнӯш 388  
 Омӯзгор, Жола 45, 46, 106, 108, 121  
 Оранский И.М. 41, 62, 243  
 Ориёнпур, Яҳё 5, 6  
 Ориёнпур Я. 5  
 Османов М.Н. 340, 369, 372, 393, 429  
 Отахонова Х. 7  
 Оштиёнӣ, Аббос Иқбол 5, 195, 196, 533  
 Пригарина Н.И. 9  
 Раҷабов А. 538, 541  
 Разия Акбар 8  
 Размчӯй, Ҳусайн 5  
 Раҷабӣ, Маъруф 7, 14  
 Раҷой, Аҳмадалӣ 522, 526, 527  
 Раҳмон, Эмомалӣ 15, 62, 70, 515, 525, 527, 534  
 Раҳмонов А. 7  
 Раҳмонов Ш. 7  
 Растагор, Фасой Мансур 6  
 Риёҳӣ, Муҳаммадамин 6, 20, 27  
 Ризо Муродӣ 34  
 Ризоқулий Сайид Маҳмуд 502  
 Рипка, Ян. 9, 16, 22, 41, 110, 117, 122, 194  
 Риштин С. 5  
 Розен В.Р. 369, 375, 376, 390, 391, 392  
 Розенберг Ф.А. 61, 311  
 Розӣ, Шамси Қайс 196, 522, 539, 547, 548, 549  
 Розӣ, Абӯҳотам 201, 486 553, 554, 555, 556  
 Рошидмуҳассил Муҳаммадтақӣ 49, 47, 52, 53 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 69, 70, 71, 72, 73, 75, 76, 77, 78, 81, 125  
 Рубен, Левӣ 9  
 Рӯдакӣ, Абӯабдуллоҳ 15, 51, 92, 104, 106, 133, 181, 184, 185, 201, 296, 317, 318, 334, 337, 427, 516, 518, 521, 547, 551, 560, 565, 567, 568  
 Рузбех, Муҳаммадризо 6  
 Рӯҳуламинӣ, Маҳмуд 89, 94  
 Рӯъёӣ, Садр 6  
 Саид Абдуллоҳ 6



- Саид Муҳаммадризо Доии  
Чавод 5  
Саид Саччодӣ Хусейн 5  
Саид Ҳасани Сабти Разавӣ 8  
Сайид Чалолиддини Техронӣ  
590, 591  
Саййид, Аддӣ Шер 526  
Саймиддинов Д. 35, 136, 526,  
527, 528, 544  
Сайфиев Н. 7  
Сайфуллоев А. 7, 14  
Салимов Н. 7, 14, 16  
Самеъӣ, Аҳмад 6  
Саҳл ибни Ҳорун 469  
Саҳсаромӣ, Муҳаммадкалом 8  
Саолибии Марғанӣ 288, 290,  
400, 411, 414, 433, 435  
Саолибии Нишопурӣ 173, 175,  
443, 541, 543  
Сатторзода А. 7, 10, 13, 14, 20,  
23, 516, 522  
Сафизода Сиддиқ 6  
Сафо, Забеҳуллоҳ 5, 9, 10, 161,  
184, 366, 370, 403, 435  
Сафо, Муҳаммадиброҳим 6  
Саъдиев С. 7, 16, 17, 18, 19, 20,  
296, 534, 535  
Саъдиева Г. 162  
Сеймз Виямз 89, 222, 224, 236,  
242  
Сидкӣ, Муҳаммадусмон 6, 10  
Сиёкӣ, Муҳаммадабир 5, 6  
Сипонлу, Муҳаммадалӣ 6, 660  
Смирнова О.И. 230  
Содиқ О. 401  
Содиқӣ, Алиашраф 534, 537,  
569, 577  
Солеҳов Ш. 14  
Софӣ, Қосим 6  
Струве В.В. 41, 62  
Субҳонӣ, Тавфиқ 6  
Субҳонӣ 6  
Султонзода Шахло. 535  
Сӯфиев Ш. 3. 8
- Табарӣ, Муҳаммад ибни Ҷарир  
97, 502  
Табаров С. 14  
Таботабой, Муҳити 421, 512,  
Таййибӣ, Муҳаммадҳасан 6  
Тақизода 195  
Тамимдорӣ, Аҳмад 6  
Таҳа Хусайн 276, 494  
Таттавӣ, Абдуррашид 575, 578  
Тафаззулӣ, Аҳмад. 6, 9, 28, 29,  
31, 32, 34, 43, 46, 48, 50, 52, 75,  
83, 84, 101, 104, 109, 116, 125,  
127, 159, 166-170, 177, 179, 187,  
197, 200, 202, 203, 208, 222, 224,  
244, 403, 417, 425, 456  
Товодиё, Ҷ. 9, 61, 123, 138, 137,  
149, 151, 173  
Тоҳирӣ, Парвона 6  
Туғён, Муҳаммадюнус Сакоӣ 7  
Туробӣ С. 27, 56, 59, 86, 99, 100,  
104  
Турсунов, Акбар 17  
Тӯсӣ, Асадӣ 12, 133, 134, 181,  
559  
Тӯсӣ, Хоҷа Насируддин 239,  
476, 476, 522, 523  
Умаров М. 383  
Унсурии Балхӣ 180  
Урён Саид 52, 54, 55, 104, 141,  
144, 145, 146, 157, 173  
Усмон, Мавофӣ 309  
Фазилат Ф. 142  
Фарнбағ Додагӣ 121  
Фароҳидӣ, Абӯабдуррахмон 503  
Фароҳидӣ, Халил ибни Аҳмад  
502, 504, 525, 526, 528, 529, 558  
Филштинский И.М. 249, 292,  
305  
Фирдавсӣ, Абулқосим 12, 27, 31,  
56, 72, 77, 90, 93, 97, 133, 134,  
138, 139, 155, 161, 162, 167, 168,  
169, 175, 181, 183, 190, 191, 202,  
225, 246, 311, 325, 393, 394, 406,  
434, 436, 438, 465, 520  
Фотиева В.С. 258, 303, 492

- Фрай, Ричард 41  
 Фузулӣ 47  
 Фурӯғӣ, Мирзомуҳаммадхусайн 5  
 Фурӯзонфар, Бадеъуззамон 4, 22  
 Футӯҳӣ, Маҳмуд 3, 9, 19  
 Халилӣ, Халилуллоҳ 4, 21, 22  
 Халиқӣ, Солеҳмуҳамад 7  
 Хатибӣ Абулфазл 163, 165  
 Хатибӣ, Ҳусейн Холмуҳаммади Мавлавӣ 5  
 Хонларӣ, Парвиз Нотил 22, 522  
 Хонҷӣ, Муҳаммад 8  
 Хоразмӣ, Абдуллоҳ Муҳаммад ибни Аҳмад 571  
 Хотамӣ, Аҳмад 6  
 Хотунӣ, Абӯтоҳир 197, 544  
 Хромов А.Л. 25, 527  
 Хуросонӣ, Алии Муҳаммадӣ 8  
 Хусравшоҳӣ, Саидризо Садуқӣ 5  
 Ҳабиб, Асадуллоҳ 6, 7  
 Ҳаккок, Аҳмад Каримӣ 6  
 Ҳамидӣ, Маҳдӣ 6  
 Ҳасанлӣ, Ковус 6  
 Ҳидоят, Ризоқулихон 4, 518, 541-549, 350-359  
 Ҳидоят, Содик 131, 133, 157  
 Ҳодизода Р. 6, 7, 8, 16, 182  
 Ҳочӣ Халифа 138, 250, 452, 454, 464, 465  
 Ҳошимӣ, Маҳмуда 8  
 Ҳошимӣ, Муҳаммадсадр 5  
 Ҳуберг Х. С. 70  
 Хусайнӣ, Фаривар 5  
 Ҳукуқӣ, Муҳаммад 6  
 Ҳумой, Чалолиддин 4, 9, 27, 27, 47, 80, 82, 95, 102, 168, 171, 195, 196, 197, 198, 203, 246, 533  
 Ҳумоюн, Фуломсарвар 6  
 Ҳумоюнфаррух, Рукниддин 6, 195  
 Ҳамадонӣ, Ҳусайн ибни Фазлуллоҳ 577  
 Ҳусейнзода Ш. 4, 6, 7  
 Чайкин К. 3, 4  
 Чингиз М. 3, 7, 35, 36, 42  
 Чунакова О.М. 113, 126, 139  
 Чайхонӣ, Абулқосим ибни Аҳмад 510, 529  
 Чаъфарӣ, Д. 155, 164, 242  
 Чаъфарӣ, Маҳмуд 258, 259  
 Човид, Аҳмад 538, 543  
 Чугу, Ҳусайн 8  
 Чуззонӣ, Минҳоч Сироч 556, 579  
 Чурайр Муҳаммад 455  
 Чурҷӣ, Зайдон. 128, 358, 365, 512  
 Шавқӣ, Зайф 345, 350, 361, 452  
 Шамим, Музаффари Ҳусайн 8  
 Шамисо, Сирус 6  
 Шарофат, Аббос 8  
 Шарифов Х. 14, 560  
 Шахристонӣ, Шоҳалиакбар 6  
 Шафак, Ризозода 4, 5  
 Шикобо, Парвин 6  
 Шиммел, Анаморӣ 8  
 Шукӯҳӣ, Фиребо 585  
 Шуштарӣ, Аббоси Меҳрин 5  
 Эберман В.А. 257, 304, 322, 583  
 Эронӣ, Диншоҳ 146  
 Юлдашев А.К. 293, 296  
 Ютоко, Юшидо 215  
 Яқин, Фуломҳайдар 6  
 Яҳё Калонтарӣ 444  
 Феҳристи номҳо бо алифбои лотинӣ  
 Arberry A.J. 9  
 A.Pagliari 8  
 Abdulla Anwar Beg 9  
 Abid Hasan Faridi 4, 8  
 Anklesaria B. 69  
 Anna Heinz W. 9  
 Baldick J. 9  
 Bausani A. 9  
 Bailey H.W. 56  
 Bartholomae Chr 69  
 Benveniste E. 92

Bosworth C.E. 464, 553  
Boyce M. 92, 105, 196  
Bozorg Alavi 9  
Brandenstein W. 43  
Brown E.G. 3  
Darmesteter M.J. 3, 65  
Devare T.N. 8  
De Blois 554  
De Bruijn 9  
De Redlich M.D. 3  
Emmerick R.E. 210, 211, 214, 220,  
221, 222, 223  
Field C. 3  
Tikku G.L. 9  
Yarshater E. 166  
Yashida Y. 231  
Geldner K. 51, 65, 77, 81  
Geldner R.A. 51, 61  
Gershevitch I. 228  
Gnoly G. 69  
Grignaschi M. 408  
Grunebaum G.E. 334, 398  
Ethe H. 3  
Sadarangani H.I. 8  
Shaked Sh. 136  
Sims-Williams, N. 227  
Skjaervo, P.O. 228, 229  
Hadi Hasan 8  
Henning W.B. 113, 231, 243  
Humbach, H. 69, 70  
Iqbal Hasan 4  
Inster S. 69  
Joseph Baron 3  
Jaffery Y. 9  
Kent R. 45  
Khalid Ahmad Nizami 8  
Khjlighi-Mutlagh Dj. 550  
Lazard G. 73  
Levshits V. 229  
Levy R. 3, 9  
Lord A.B. 26  
Lutfur Rahman M. 8  
Maerhofer M., 43  
Marguart J. 158  
Meisami Julie Scott 9, 127  
Messina G. 126  
Muller F.W.K. 220  
Muhammad Abdulghani 4  
Muhammad Rizaa 9  
Morison I.G. 9  
Noldeke Th. 3, 95, 228  
Horn P. 3  
Ivanov W. 9  
Igbol Hasan 4  
Ouseley W.G. 3  
Pagliaro A. 9  
Pizzi I. 3  
Reed E.A. 3  
Waiz Lall J. 3  
Watkins C. 26  
West E.W. 57, 112  
Zakeri, Mohsen. 451, 452

## ФЕҲРИСТИ АСАРҲО

### Ба алифбои кириллӣ

- Абан Лахыкый, манихействующий поэт (ок. 750-815 гг.) 332, 333  
Абу Нувас о сасанидской чаше с изображениями 309  
Авесто, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 45, 46, 47, 48, 49, 50-59, 60, 69, 71-79, 80, 81, 95, 96, 97, 98, 99, 100-103, 108, 110-117, 120-130, 133, 138, 149, 158, 174, 235, 441  
Авесто – ганчи шойғони эронитаборон 64  
Авесто ва мероси фарҳангии тоҷикон 64  
Адаби паҳлавонӣ, Мутолиае дар таърихи адаби деринаи эронӣ аз Зардушт то Ашкониён 446  
Адабиёт (ёри барои дарси адабиёти асрҳои XVI, XVII, XVIII ва XIX) 5  
Адабиёт ва фалсафаи ҳастӣ 14, 581  
Адабиёти арабизабони форсу тоҷик аз истилои араб то аҳди Сомониён 7, 255  
Адабиёти ахлоқии Эрон 3, 95  
Адабиёти ватан (барои синфи 7) 4, 580  
Адабиёти даврони Эрони бостон 26  
Адабиёти дарӣ дар нимаи аввали садаи бистум 6  
Адабиёти зардуштӣ ба забони форсӣ 108, 124  
Адабиёти зардуштӣ 62, 65  
Адабиёти имрӯзи Эрон 6  
Адабиёти исломии Ҳинд 8  
Адабиёти масеҳӣ дар забонҳои эронии миёна 220, 221  
Адабиёти монавӣ ба забонҳои эронӣ 3, 221, 222, 223  
Адабиёти муосир 4, 6, 578  
Адабиёти муосир аз оғози садаи бист то ҷанги ҷаҳонии дувум 6  
Адабиёти муосири дари Афғонистон 7  
Адабиёти муосири дарӣ 6  
Адабиёти муосири Эрон 6  
Адабиёти намоишӣ дар Эрон 6  
Адабиёти паҳлавӣ 103, 454  
Адабиёти паҳлавӣ, Мутолиае дар таърихи адаби деринаи эронӣ аз Зардушт то Ашкониён 6  
Адабиёти порсӣ 500, 501, 514, 515, 516, 517  
Адабиёти садаи XX форсии дари Афғонистон (таҳлили осори манзум) 568  
Адабиёти сосонӣ 6, 413  
Адабиёти суғдии будой, Адабиёти Эрон пеш аз ислом 210, 217  
Адабиёти суғдии монавӣ 221, 223  
Адабиёти тоҷик (барои синфи 8) 7, 580  
Адабиёти тоҷик (барои синфи 9) 7, 580

- Адабиёти тоҷик дар асри ХУ111 ва нимаи аввали асри XIX 7  
 Адабиёти тоҷик дар асрҳои XVI, XVII, XVIII ва нимаи аввали асри XIX 8  
 Адабиёти тоҷик дар нимаи аввали асри XV 7  
 Адабиёти тоҷик дар нимаи дувуми асри XIX 7  
 Адабиёти тоҷик дар нимаи дувуми асри XVIII ва аввали асри XIX 7
- Адабиёти тоҷик дар садаи XX 7  
 Адабиёти тоҷик дар асри XVII 17  
 Адабиёти тоҷик дар нимаи якуми асри XIX 570  
 Адабиёти форсии дари Афғонистон (насири достонӣ) 7  
 Адабиёти форсии миёна 103, 105, 106, 108, 110, 113, 114, 130, 132, 133, 134, 136, 137, 138  
 Адабиёти форсӣ аз асри Ҷомӣ то рӯзгори мо 5  
 Адабиёти форсӣ дар миёни ҳиндувон 6, 8  
 Адабиёти форсӣ дар Югусловӣ 8  
 Адабиёти форсу тоҷик дар асри VIII-IX (давраи арабизабонӣ) 499, 500, 505  
 Адабиёти форсу тоҷик дар асрҳои XII-XIV 7  
 Адабиёти форсу тоҷик дар нимаи дувуми асри XI ва аввали асри XII 296
- Адабиёти форсу тоҷик дар нимаи аввали асри XI 7, 569  
 Адабиёти хутанӣ 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240  
 Адабиёти шифоҳии Эрони бостон 25  
 Адабиёти шифоҳии Эрон 95, 99, 101  
 Адабиёти шифоҳӣ 95, 228  
 Адабиёти Эрон дар садаи XX 7, 570  
 Адабиётшиносии тоҷик ва ҷустуҷӯҳои илмии Лутфулло Бузургзода 15
- Адвори шеърӣ форсӣ аз маршрутӣ то сукути салтанат 5  
 Аз гузаштаи адабии Эрон 6  
 Аз дори Суғд то дори Балх (Сарнавишти хонадони Меколиён, ки аз Деваштич то Ҳасанаки вазир ба он тааллуқ доштанд) 542  
 Аз Нимо то рӯзгори мо 6  
 Аз пайи дарёфти фаҳмиши нав 15  
 Аз Рустам то Деваштич 206, 208, 209, 210, 224, 228  
 Аз Сабо то Нимо (Таърихи 150 соли адаби форсӣ) 5  
 Аз таърихи адабиёти тоҷик дар Бадахшон (асри XIX ва аввали асри XX) 7, 569
- Ал-алфозу-л-форисията фи-л-арабияти 504  
 Ал-баён ва-т-табйин 167, 385  
 Ал-Булдон 383  
 Ал-калимоту-л-форисия фил-луғат-ил-арабияти 504  
 Ал-маҳосин ва-л-аздод 190  
 Ал-масолик ва-л-мамолик 528, 532

Ал-муъчам ал-муарработ ал-форисията 504  
 Ал-муъчам фй маъойири ашъори-л- Ачам 521, 537, 538  
 Ал-муъчам фи осори мулку-л-ачам 549  
 Ал-гаёрот ал-чанбият фи-л-шеър-ал араб 289, 319, 323, 327, 336  
 Ал-умда фи саноеъ ал-шеър ва накд 249, 261, 294, 295, 297  
 Ал-ҳикмат-ул-холида 191  
 Ал-Фараби в истории культуры 553  
 Ал-фехрист 196  
 Анвори Суҳайлӣ 197  
 Анвои насри форсӣ 6  
 Андарз ва ҳикам 135  
 Андарзи Анӯшаравон Озарбоди Маҳраспандон 138  
 Андарзи Беҳзоди Фаррух 145, 147  
 Андарзи Беҳзоди Фаррухпирӯз 155, 157, 200  
 Андарзи дастурон ба беҳдинон 144  
 Андарзи доноён ба маздояснон 144  
 Андарзи кӯдакон 104, 147, 158, 159  
 Андарзи пурюткешон 143, 144  
 Андарзи Ушнари доно 142, 144, 145, 151  
 Андарзи Хусрави Кубодон 143  
 Андарзнома 135, 136  
 Андарзномаи Бузургмеҳри Ҳаким 140  
 Андарзҳои кӯтоҳ 149  
 Андарзҳои паҳлавӣ дар китобҳои даврони ислом 81, 191  
 Аносири зардуштӣ дар мутуни эронии миёнаи шарқӣ 210  
 Арабоязычный период персидско –таджикской литературы VIII-IX вв 522  
 Арабы, ислам и арабский халифат в раннее средневековье 366  
 Ардовирофнома 122, 123, 124  
 Асмоъу-л-муғтолин мин-ал-ашроф фй-л-чоҳилиятӣ-ва-л-ислом 524, 525  
 Асолати накди адабӣ (мусоҳибаи Носир Салим бо Абдунабӣ Сатторзода) 14  
 Аҳбор-ал шуаро ал-ҳадисин мин китобил авроқ 329, 330, 331, 332  
 Ахлоқи Эрони Бостон 146  
 Аҳди Ардашер 481, 482  
 Аҳди Ардашер ба писараш Шопур 206  
 Ашколу-л-олам 524, 533, 549  
 Аш-шеър ва-ш-шуаро 529, 530, 556, 555, 584  
 Ашъори парокандаи қадимтарин шуарои форсизабон 552  
 Баёзи адабиёти форсии тоҷикӣ (синфи 8) 23  
 Балучистон мен форс шоирӣ кӣ пачос сол 8  
 Баҳман-яси 132  
 Баҳроми варҷованд 128  
 Баҳс дар бораи муҳтавиёти «Гоҳон» 69, 73

Барои танқиди асил 14  
 Баррасии адабиёти имрӯз 5  
 Баррасии латоифи ирфонӣ дар хусуси атиқи авестой 71  
 Баъзе муаммоҳои таърихи адабиёти муосир 15  
 Бежану Манижа ва Вису Ромин 85, 99  
 Бист мақола 521, 532, 533  
 Бист сол бо танз 6  
 Бодғис 577, 578, 580, 581  
 Бозсозӣ ва танқиди адабӣ 15  
 Бозсозӣ ва таърихи адабиёти тоҷик 15  
 Борбад ва навоҳои дастгоҳҳои мусиқии эронӣ дар асри Сосонӣ  
 545  
 Булуҳар ва Будосаф 187  
 Бундаҳишн 59, 60, 95, 107, 111, 112, 113, 114, 120, 122, 123, 135,  
 141, 152, 157, 159, 187, 253, 270  
 Бурҳони қотеъ 527, 528  
 Вазифаҳои танқиди адабӣ 14  
 Вазни шеъри форсӣ 522  
 Вазъи кунунии адабшиносӣ дар Афғонистон ва дурнамои рушди он  
 14  
 Введение в иранскую филологию 42, 62  
  
 Вису Ромин 447  
 Виспарад 50, 52, 58, 77, 115  
 Вичаркарди динӣ 121  
 Вожае чанд аз Озарбоди Маҳраспандон 147  
 Вожаномаи Бундаҳишн 115, 121  
 Ганҷи сухан 5  
 Готҳо ва Ҳафт хот ва дигар гуфтаҳои ёрон ба порсии равон аз  
 Алиакбари Ҷаъфарӣ 64, 69  
 Гузашта ва ояндаи фарҳанг ва адаби Эрон 506, 510, 544  
 Гузидаҳои Зодиспарам 112, 114, 115, 116, 152, 157  
 Гучастаг Аболиш 131, 132, 158, 159, 165, 187  
 Гунаҳои навоварӣ дар шеъри муосири Эрон 6  
 Гиёсу-л-луғот 550  
 Гуруру-с-сияр маъруф ба «Шоҳнома»-и Саолибӣ 289, 290, 400,  
 411, 414, 433, 434, 435, 439, 445  
 Даврабандии адабиёт аз нигоҳи равишшиносӣ 9, 11  
 Дарахти Асурик, (Осурӣ, Осур) 87,88  
 Девони Абӯабдуллоҳ Ҷаъфар ибни Муҳаммад ибни Ҳаким ибни  
 Абдурраҳмон ибни Одам Рӯдакии Самарқандӣ 54, 112  
 Девони Унсурии Балхӣ 180  
 Динкард, (Динкарда) 112, 118, 126, 134  
 Динҳои Эрони бостон 70  
 Додистони динӣ 118, 119

Донишномаи адаби форсӣ дар Афғонистон 6  
Донишномаи адаби форсӣ 508, 510, 511, 519, 543, 551, 552, 553, 554  
Донишномаи забон ва адабиёти форсӣ 549, 555  
Донишномаи забон ва адаби форсӣ 270, 551, 553, 554, 555  
Донишномаи маздоясно 57, 58  
Доруи хурсандӣ 146  
Достонҳои Хахоманишӣ, Куруши Кабир 44  
Драмаи солҳои 40-50 тоҷик 7  
Драматургияи тоҷик 7  
Древнеиранская литература 67  
Ду қарни сукут 264  
Ду тазмини мачҳул бар як ғазали машҳур 20  
Ёдгори Бузургмеҳр 138, 139, 140, 418  
Ёдгори Зарирон, Таърихи ҷомеи Эрон 92, 161, 200, 204  
Ёдгори Ҷомосбӣ 107, 120  
Ёде аз рафтагон 6  
Забон ва адабиёти форсӣ 511, 554  
Забон ва адаби форсӣ дар Бусни ва Ҳирзигувин 8  
Забон ва адаби форсӣ дар қаламрави Усмонӣ 5  
Забон ва адаби форсӣ дар Ҳинд 6  
Забон ва адабиёти муосири Эрон 6  
Забон ва адабиёти паҳлавӣ 9, 119, 123, 124, 132, 137, 138, 149, 167  
Забони балхӣ 242, 257, 258, 593  
Забони миллат – ҳастии миллат 537, 548, 557  
Забони паҳлавӣ, адабиёт ва дастури он 103  
Забони портӣ 82, 83, 84, 85, 86, 89, 91, 97, 102, 161, 204, 447  
Забони суғдӣ 161, 204, 206, 208, 209, 210, 211, 219, 220, 222, 223, 224, 226, 229, 231, 245, 512, 513, 514, 527, 528  
Забони форсии миёна 82, 85, 86, 89, 96, 97, 102, 105, 161  
Забони форсӣ дар осори Форобӣ 509, 510, 511, 533  
Забонҳои эронии бостон 29, 48, 49  
Зан ва вожа 210  
Зиёи Нахшабӣ ва «Тӯтинома»-и ӯ 187  
Зороастрийские тексты Суждения разума (Дадестан-и-меног-и храд) Сотворение основы (Бундахишн) и другие тексты 115  
Из истории персидской и таджикской литературы 66  
Из истории таджикской и персидской литературы 51, 72, 111  
Избранные труды, История литературы и культуры Ирана 9  
Изведать дороги и пути праведных 137  
Индийский стиль и его место в персидской поэзии 9  
Иранские языки в историческом освещении 259  
Иранское литературное наследие 500, 555  
Ирфон ва адаб дар асри сафавӣ 5  
Искандарнома 81, 98, 187  
Истиклоли фикр ва концепсия даркор аст 14



История арабской литературы V-начало X века 265, 306, 318  
История всемирной литературы 264  
История литературы и культуры Ирана 9  
История персидской и таджикской литературы 8, 16, 42, 126, 132  
История советской литературы 15  
История таджикского народа 468  
История таджикской и персидской литературы 111  
Йуишти Фриён ва Марзбоннома 154  
К вопросу об арабских переводах «Худай-нама» 370, 376, 377, 391  
К вопросу об историчности Ваддаха ал-Йамана 259, 304, 492  
Кабус-Наме 312  
Қадимтарин нухаи шеъри форсӣ 426  
Қадимтарин шеъри форсии баъд аз ислом 531, 532, 533  
Каёниён 153, 166, 167  
Кайхусрав ва Куруш 134  
Калила ва Димна 331, 334, 362, 363, 373, 382, 387, 402, 412, 423,  
424, 425, 426, 427, 431, 452, 455, 471, 476, 484, 485, 488, 489, 490, 491, 515  
Калимоти форсӣ дар қадимтарин фарҳангномаи арабӣ 502, 503  
Катибаҳои форсии миёна 102  
Катибаҳои Ҳахоманишӣ 40, 82, 202, 207  
Кашмир ке форсӣ адаб ке таърих 8  
Кашф ва шухуд 121  
Кашфу-л-зунун 250, 256, 266, 267, 424, 452, 454, 457, 459, 462, 463,  
464, 467  
Китобу-л шеър ва-ш-шуаро 350  
Китоби севуми “Динкард” 124  
Китоби Таърихи Қум 8  
Китоби Ҳаким Синдбод, Аз рӯи «Синдбоднома» -и Захирӣ 185  
Китобу-л-баён ва-т-табайин 259, 452, 454, 495  
Китобу-л-булдон 259, 266, 350, 454, 492  
Китоба-л-вузаро ва-л-кутабо 344, 348, 463  
Китобу-л-вуруд 298  
Китобу-л-икд ул-фарид 345, 348, 494  
Китобу-л зиннат фи калимот ал-исломията 553, 554  
Китобу-л-точ 437, 438  
Китобу-л-саноеъ ат-тайибин 350, 353  
Китобу-л-шеър ва-ш-шуаро 256, 350  
Китобу-л-хуруф 512, 513, 514  
Китобу-л-ағонӣ 255, 256, 258, 260, 262, 468  
Китобу-л-фехрист 262, 265, 266, 424, 424, 427, 431, 432, 434, 435,  
447, 448, 449, 460, 461, 462, 483, 465, 466, 468, 469, 477, 478, 479, 480,  
484, 490, 492, 493, 495, 496, 497  
Книга деяний Ардашер сына Папака 158  
Корномаи Ардашери Бобакон 97, 100, 154, 156, 187, 189, 297  
Краткая история литератур Ирана, Афганистана и Турции 9

Куҳантарин намунаи шеърӣ форсӣ 519, 520, 522, 523, 524  
 Куҳантарин намунаи шеър ба забони форсӣ 519, 523, 525  
 Куҳантарин шеърӣ форсӣ, Яке аз хусравониҳои Борбад 519, 520, 522, 523, 524, 538  
 Кӯҳна ва нав (нуктае чанд дар усули таълифи китоби адабиёт) 10, 12, 14, 20, 23  
 Қисмате аз китоби «Фаҷр-ул-ислом» 499, 500, 514  
 Литература Афганистана 8, 9  
 Литература Древнего Востока 9, 63, 68, 150, 422  
 Литература Ирана 9  
 Литературная критика, Проблемы жанра и проблемы жизни 14  
 Лубобу-л-албоб 196, 521, 539, 540, 542, 545  
 Луғати фурс 561  
 Маздоясно ва адабиёти порсӣ 106, 112, 304, 316  
 Мактаби бозгашт 6  
 Мактаби вуқӯъ дар шеърӣ форсӣ, 5  
 Маҷмаъу-л-фусаҳо 4, 518, 551, 553, 555, 559  
 Маҷмӯаи дostonҳои шоҳони Ҳахоманишӣ 34, 35, 42  
 Маҷмӯаи мақолот ,143 145, 149, 153  
 Марзи адабиёт 6  
 Маркази адабии Самарқанд дар шоҳроҳи таърих 7, 534, 535  
 Марҳалаҳои услубӣ ва таҳаввули анвои наср дар адабиёти форсу тоҷик (асрҳои IX-XIII) 7  
 Марҳалаҳои адабиёти навин 14  
 Маздасно ва адаби порсӣ 27 , 106  
 Масолик ва мамолик 464  
 Материалҳо аз таърихи адабиёи тоҷик (ба ёрии муаллимони адабиёт) 7  
 Материалы по истории науки и культуры народов Средней Азии в арабских рукописях собрания Института востоковедения АН СССР 257  
 Матнҳои паҳлавӣ 58, 136, 137, 138, 140, 141, 143, 144, 145, 146, 147, 158, 159, 160, 173, 174, 175, 176, 177  
 Мафотеху-л-улум 548  
 Машоҳири шуарои урду ке форсии шоирӣ 8  
 Маъруф Раҷабӣ ва китоби ӯ дар бораи Сотим Улуғзода 14  
 Меъёри баҳо 14  
 Меъёр-ул-ашъор 199  
 Минуи хирад 97, 106, 107, 134, 148, 149, 150  
 Миф и история в Гатах Зороастра 68, 569  
 Музыкальная культура эпоха Хакима Тирмизи и ее классические истоки 516  
 Мукотибаи Садриддин Айнӣ ва Абулқосим Лоҳутӣ 20  
 Муқаддимае бар дostonнависии кишвар 6  
 Мулоҳизоте дар бораи қадимтарин уҳуди ойини зардуштӣ 73

Мулоҳизоте дар бораи қадимтарин уҳуди ойини зардуштӣ, маздопарастӣ дар Эрони бостон 73

Муруч-уз-заҳаб 100, 106, 134, 167, 185, 191, 198, 203, 204, 331, 361, 403, 404, 418, 419, 434, 438, 448, 458, 492

Муруре дар адабиёти муосири дарӣ 7

Мусулманский ренессанс 254, 326

Мутолиоти сӯғдӣ 210

Мутолиоти ҳамосӣ (Ҳамосасарои бостон) 99

Мутуни паҳлавӣ 52, 54, 92, 140, 141, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 160, 176

Мухтасари таърихи таҳаввули назм ва насри порсӣ 5, 7

Мухтасар китобу-л-баён ва-т-абиён 443

Нависандагони пешрави Эрон 6

Надпись Дария о сооружении Дарваза 569

Назари тозаи пажӯҳишгар ва муаммои арзишдоварию адабӣ роҷеъ ба консепсияи нави адабиётшиносӣ 15

Назарияи таърихи адабиёт бо баррасии интиқодии таърихи адабиётнигорӣ дар Эрон 3, 9

Назми форсизабони Ҳинд ва Покистон дар нима дуоми асри XIX ва асри XX 7

Назму насри форсӣ дар замони Қутбшоҳӣ 8

Нақши Авесто дар тамаддуни миллии ва ҷаҳонӣ 63, 326

Намунаи адабиёти тоҷик 4, 20, 23

Намунаи адабиёти Эрон 4

Наследие Ирана 42

Нарзуллои Бектош ва илму адаби тоҷик 15

Насри тоҷикии замони ҷанг 7

Насри форсӣ аз оғоз то аҳди Низомулмулк 5

Нахзати адабии Қочор 5

Нахустин сухансароёни форсӣ то Абулфараҳи Сағзӣ 539

Нахустин шоири форсисаро ва оғози шеърӣ арӯзии форсӣ 545, 554, 566, 567

Нахустқомуси миллат, Авесто – китоби муқаддаси зардуштиён 64

Нигоҳе ба адабиёти муосири Афғонистон 6

Нигарише ба насри муосири дарию Афғонистон 7

Нигоҳе ба таърих ва адабиёти Эрон 27, 56, 86, 102, 104

Нигоҳе ба таърих ва тамаддуни ориёӣ 71

Нигоҳе ба адабиёти тоҷикии садаи бист 7, 18

Нигоҳе ба инкишофи таърихии адабиёти тоҷик дар Мовароуннаҳр (қарни XIX) 8, 20

Нигоҳе кӯтоҳ ба адабиёти форсӣ 8

Новые работы по изучению Авесты 62

Номаи Тансар ба Гушнасф 56, 420

Номаи Тансар 53, 167, 192, 193, 203, 420, 421

Номаҳои бостонӣ 222, 224

Номаҳои Манучехр 117  
Нур ва зулмат дар таърихи адабиёти Эрон 535  
О вине и пирах в персидской национальной эпосе 312  
О структурных особенностях иранской топонимии Мавераннахра  
в период IX–XVII вв 528  
Об одном раннем двуязычном персидско-таджикском поэте 534,  
535, 536  
Общая литературная традиция и разные пути развития (Об  
особенностях формирования современных персидской и таджикской  
литературы) 16  
Одамушшуаро Рӯдакӣ 509, 550  
Ойиннома 173  
Озарбоди Махраспандон 53, 114, 116, 119, 121, 136, 137, 138, 148,  
418  
Оини номанависӣ 177  
Осори М, Турсунзода ва масъалаи таҷдиди назар ба адабиёти  
шӯравии тоҷик 14  
Осори Ҳирот 4  
Осору-л- боқия 501  
От Авесты до Айни 63, 501  
Отражение древних культурных традиций в классической  
литературе Ирана 500  
Отрывки из «Авесты» 63  
Очерки из истории таджикской литературы 184  
Очерки истории персидской литературы 3  
Очерки таърихи адабиёти советии тоҷик 7  
Пасманзари насри достонии муосири дарӣ ва нуктаҳои дар бораи  
достон 7  
Персидская литература 8, 9, 16  
Персидская шуубийя и современная наука 469  
Персоязычная литература Индии 9  
Персы среди арабских поэтов эпохи Омейядов 258, 304, 322, 493  
Пехлевийский словарь зороастрийских терминов, мифических  
персонажей и мифологических символов 127  
Пешгомони шеъри порсӣ 5  
Пешоҳангони шеъри форсӣ 6  
Пойидани марз ба ривояти матнҳои динии зурдуштӣ 77  
Покистон мен форсӣ адаб 8  
Пословицы и поговорки в поэтическом наследии Рудаки 341  
Поэзии и проза Древнего Востока 68  
Поягузорони насри ҷадиди форсӣ 5  
Пуле миёни шеъри хичой ва арӯзии форсӣ дар қуруни аввали  
хичрӣ 522, 526, 527  
Рағаҳои пайванди ҳамешагӣ дар «Музокир-ул-асҳоб» ва  
«Тазкираи Насрободӣ» 19

Ривоёти паҳлавӣ 118, 119, 120, 159, 253  
 Рисолаи Ӯиши Фриён ва Ахт 155, 164  
 Рисолаҳои кӯтоҳи таълимӣ 177, 176  
 Родина зороастризма 63  
 Роҳнамои забонҳои бостонии Эрон 103  
 Рустам дар забони сугдӣ 162  
 Рӯдакӣ ва инкишофи ғазал дар асрҳои X-XV 7  
 Сабки хуросонӣ дар шеъри форсӣ 5, 547  
 Сабкшиносии шеър 6  
 Сабкшиносии шеъри форсӣ аз Рӯдакӣ то Шомлу 6  
 Сабкшиносӣ ё таърихи татавбури насри форсӣ 4, 5, 11, 536  
 Сабкшиносӣ 583,  
 Сад соли достоннависӣ 6  
 Сад соли достоннависӣ дар Эрон 5  
 Сайре дар адабиёти дари садаи сздаҳум 6  
 Сайри адаб дар Афғонистон, Иҷмоли татавбури адабӣ дар асри  
 хозир 6  
 Сайри ғазал дар шеъри форсӣ 6  
 Сайри таҳаввули ғазали форсӣ 6  
 Саки-наме в системе персидско-таджикской литературы XV-  
 XVI веков 8  
 Сангнабиштаҳои шоҳаншоҳони Ҳахоманишӣ 35, 38, 44  
 Саргузашти «Сияр-ул-мулук»-и Ибни Муқаффаъ 176, 177  
 Сарчашмаҳои Фирдавсиносии 167  
 Сархинд мин форсӣ адаб 8  
 Сасанидские этюды 127, 140, 370, 380, 395, 408, 436, 456, 457, 482  
 Своды иранского героического эпоса («Худайнаме» и  
 «Шахнаме») как источники «Шахнаме» Фирдоуси 370, 373, 394, 430  
 Се шоҳаи як дарахти баруманд 18  
 Сздаҳ мақола 380  
 Синдбоднома 185  
 Синдбоднома 184, 185, 186, 247, 334, 425, 426, 427, 472, 485, 516  
 Ситорағони адаби форсӣ 6  
 Скифский быт и реформа Зороастра 63  
 Современное состояние и тенденции зарубежной Авестологии,  
 «Народы Азии и Африки» 63  
 Согдийские документы с горы Муг, выпуска 4, Юридические  
 документы и письма 550  
 Согдийские документы с горы Муг, Вып. 3, Хозяйственные  
 документы 231, 528  
 Согдийский язык, Основы иранского языкознания  
 среднеиранские языки 257  
 Строфа из таджикской песни VII в 527, 530, 531  
 Сувар ва асбоб дар шеъри имрӯзи Эрон 5  
 Сувари хаёл дар шеъри форсӣ 552

Сугдиён ва ойини будой, Адабиёти Эрони пеш аз ислом 214, 215  
 Суннат ва навоарӣ дар шеъри муосир 6  
 Суруди аҳли Бухоро – куҳнатарин намунаи шеър ба забони форсӣ  
 524, 525  
 Суфизм и суфийская литература 9  
 Сухан ва суханварон 4, 9  
 Сӯзанӣ ва муҳити адабии Самарқанди асри XI 7  
 Табақоти Носирӣ 556, 557  
 Табақоту-ш-шуаро 261, 531  
 Табақоту-ш-шуарои-л-муҳаддисин 330, 463, 558  
 Тазкирату-ш-шуаро 519, 538, 541, 544, 547, 554  
 Таквини забони форсӣ 519, 520, 526, 527, 534, 537, 538  
 Талиъаи тачаддуд дар шеъри форсӣ 6  
 Тачдиди назар мебоҷад, 14  
 Тамаддуни Ҳахоманишӣ 34, 38, 41, 44, 47  
 Тамаддуни Ҳахоманишӣ, сздаҳ гуфтор дар баррасихои  
 ҳахоманишӣ 34  
 Тарҷумаи чанд матни паҳлавӣ 92, 147, 177  
 Тасаввуф дар адабиёти форс-тоҷик 7  
 Таҳаввули воҳидҳо ва созмони жанрҳои лирикӣ дар назми форсу  
 тоҷик 8  
 Таҳаввули жанрҳои адабиёти тоҷик дар нимаи аввали асри XIX 7  
 Таҳаввули насри форсӣ дар Шибҳи Қора 8, 605  
 Таҳаввули шеъри форсӣ 5  
 Таҳқиқот дар бораи Сосониён 189, 190  
 Таҳлили ашъори Носири Хусрав 180  
 Таҳриды 252  
 Таҳқиқи шеър аз дидгоҳи нав 14  
 Ташаккул ва инкишофи адабиёти форсизабони Кашмир дар  
 асрҳои ХУI-ХУII 7, 573  
 Таърих ва таҳаввули адабиёти ҷадиди Эрон 5  
 Таърих ва фарҳанги Эрон 168, 169  
 Таърихи адабиёт 5, 6  
 Таърихи адаби забони дарӣ дар садаҳои панҷум ва шашуми  
 ҳиҷрӣ 6  
 Таърихи адабиёт дар Афғонистон 6  
 Таърихи адабиёти асри бистумро бояд ба вучуд овард 14  
 Таърихи адабиёт, 102, 105, 106, 108, 110, 113, 114, 130, 132, 133,  
 134, 136, 137, 138  
 Таърихи адабиёти Афғонистон барои сунуфи лисаҳо 6, 10  
 Таърихи адабиёти Афғонистон баъд аз ислом 6  
 Таърихи адабиёти Афғонистон 10, 542  
 Таърихи адабиёти Бадахшон 6  
 Таърихи адабиёти Балх (аз куҳантарин рӯзгор то авоили садаи  
 бисту якум) 6

Таърихи адабиёти давраи Бозгашт 6  
 Таърихи адабиёт дар Эрон 4, 10, 163, 366, 367, 379, 499, 505, 511, 518, 527, 528, 539, 540, 551, 552, 557, 562  
 Таърихи адабиёти дари Афғонистон 6  
 Таърихи адабиёти дарӣ 6  
 Таърихи адабиёти дарӣ аз давраҳои бостонӣ то поёни қарни чаҳоруми ҳиҷрӣ 6  
 Таърихи адабиёти кӯдакони Эрон 6  
 Таърихи адабиёти мусулмонони Покистон ва Ҳинд 8  
 Таърихи адабиёти муосири Эрон 6  
 Таърихи адабиёти советии тоҷик, Инкишофи жанрҳо 7  
 Таърихи адабиёти тоҷик (аз давраҳои қадим то асри XIII) 10  
 Таърихи адабиёти форсӣ (дарӣ-тоҷикӣ) 8  
 Таърихи адабиёти форсии дарӣ (садаҳои 7 ва 8 ҳиҷрӣ) (асри муғул) 6  
 Таърихи адабиёти форсӣ 9, 11  
 Таърихи адабиёти Эрон 4, 6, 82, 129, 167, 171, 185, 197, 198, 203, 246, 518  
 Таърихи адабиёти Эрон аз ҳамлаи муғул то нимаи аввали давраи сафавия 5  
 Таърихи адабиёти Эрон ва таърихи шуаро 5  
 Таърихи адабиёти Эрон дар асри хилофати араб 5  
 Таърихи адабиёти Эрон пеш аз ислом 28, 30, 31, 42, 43, 76, 83, 86, 103, 107, 108, 109, 110, 112, 117, 118, 119, 120, 124, 125, 127, 130, 139, 142, 145, 153, 155, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 103, 176, 179, 190, 193, 200, 201, 203, 208, 210, 214, 220, 221, 222, 223, 224, 229, 230, 233, 235, 237, 238, 239, 242, 243, 244, 246, 252, 384, 389, 399, 400, 403, 404, 416, 417, 420, 425, 454, 455  
 Таърихи адабиёти Эрон 519  
 Таърихи адабии Эрон ва қаламрави забони форсӣ 6  
 Таърихи Байҳақӣ 543  
 Таърихи Бухоро 524, 525, 526  
 Таърихи гузида 166, 442, 443, 552  
 Таърихи забон ва адабиёти Эрон дар хориҷ аз Эрон 5  
 Таърихи адабиёти муосири форсӣ 6  
 Таърихи мухтасари адабиёти Афғонистон 4  
 Таърихи мухтасари адабиёти Эрон 5  
 Таърихи мухтасари забон ва адабиёти форсӣ дар Шибҳи Қораи Ҳинд 6  
 Таърихи мухтасари насри форсӣ 5  
 Таърихи назм ва наср 558  
 Таърихи назм ва насри Эрон 4  
 Таърихи назму наср дар Эрон ва дар забони форсӣ 5, 557  
 Таъсири панди порсӣ бар адабиёти араб 358, 470  
 Таърихи Систон (История Систана) 199, 200, 532

Таърихи Табарӣ 53 ,91, 97, 98, 191, 196, 360, 370, 372, 377, 391, 420,  
 446, 530, 532  
 Таърихи Табаристон 375  
 Таърихи татбиқии Эрон бо кишварҳои ҷаҳон 83  
 Таърихи тамаддуни исломӣ 129, 5  
 Таърихи танқид ва адабиётшиносӣ 14  
 Таърихи таҳлилии шеърӣ нав 6  
 Таърихи Афғонистон 6  
 Таърихи ҳашт ҳазор соли шеърӣ Эрон 5, 6  
 Таърихи ҷомеи Эрон 30, 47, 49, 50, 51, 53, 59, 69, 70, 71, 73, 74, 81  
 Таърихи шеър ва суҳанварони форсӣ дар Лоҳур 8  
 Таърихчаи назриёти адабии форсии тоҷикӣ 24  
 Тоҷикон 32, 44, 63, 230, 468  
 Тоҷикон дар оинаи таърих, Аз Ориён то Сомониён 63  
 Тоҷнома 172, 173, 190, 395, 396, 397, 399  
 Труды по иранскому языкознанию 127  
 Тӯтинома 186,187, 195, 200  
 Устураи зиндагии Зардушт 46,121  
 Уюну-л-анбоъ фӣ табақот-ил атиббо 510  
 Фанни наср дар адабиёти порсӣ 355  
 Форсиёти мутуни тозӣ 507  
 Фарҳанг ва тамаддуни исломӣ дар қаламрави Сомониён 512, 631  
 Фарҳанги асотир ва дostonвораҳо дар адабиёти форсӣ 187  
 Фарҳанги асотирӣ эронӣ 75, 170,  
 Фарҳанги Ҷаҳонгирӣ 59, 550  
 Фарҳанги ҳузворишҳои паҳлавӣ 178  
 Фарҳанги паҳлавӣ 177,178, 179  
 Фарҳанги Рашидӣ 550  
 Фарҳанги созо 549  
 Фарҳанги суғдӣ 232  
 Фарҳанги уим-евак 178  
 Фарҳанги форсӣ 502, 543, 554  
 Фарҳанги Эрон пеш аз ислом 167, 172, 174, 191, 192, 135, 134, 139,  
 387, 404, 435  
 Фарҳанги Эрони пеш аз ислом ва осори он дар тамаддуни  
 исломӣ ва адабиёти араб 250, 354, 359, 387, 404, 445  
 Фирдавсӣ (зиндагӣ, андеша ва шеърӣ ӯ) 28  
 Фишурдаи суҳанрониҳо дар симпозиуми байналмилалӣ «Авесто  
 ва тамаддуни ҷаҳонӣ» 64  
 Форсигӯёни Покистон 8  
 Форсиёт дар мутуни тозӣ 507  
 Форсӣ адаб ба аҳди салотини Туғлуқ 8  
 Форснома 53, 401, 407  
 Ҳафтад мақола 89, 146  
 Ҳачв дар адабиёти дарӣ 6



Ҳамосасароӣ дар Эрон 4  
 Ҳем ва хиради фарруҳмард 145, 148, 199  
 Хидматгузори форсӣ дар Бангладеш 8  
 Хрестоматия по истории Древнего Востока 39, 42  
 Хубӣ кунам ба шумо, кӯдакон 146  
 Худойнома 28, 29, 43, 84, 91, 93, 94, 112, 113, 160-169, 176, 187, 191,  
 202, 247, 360, 362, 363, 377-379, 388, 389, 390, 396, 418, 420, 426, 429, 430  
 -439, 440-445, 454, 459  
 Хуросон аст ин чо 23, 526  
 Хусрав ва ридаг 100, 176  
 Хусрави Қубодон ва Рӯдакӣ 128, 176  
 Ҳазор афсон 179, 180, 363, 448, 449,  
 Ҳамосаи миллии Эрон 94  
 Ҳамосасароӣ дар Эрон 4  
 Чаҳор боб аз китоби Шканд гумоник вичор 138  
 Чаҳор мақола 551, 554  
 Чаро дар «Шоҳнома» аз подшоҳони Мод ва Ҳахоманишӣ зикре  
 нест? 101, 175  
 Чашмандози шеърӣ нави форсӣ 5  
 Чашмандози шеърӣ муосир 5, 6  
 Чун сабӯе ташна, Таърихи адабиёти муосири форс 6  
 Чомосбнома 107, 120  
 Чустори мардумшинохтӣ аз манзумаи «Дарахти Осурик» 84 94  
 Чусторхое дар забонҳои эронии миёнаи шарқӣ 210  
 Шамсиддин Шоҳин ва анъанаи ғазалсароӣ дар адабиёти тоҷики  
 нимаи дуими асри XIX ва аввали асри XX 7  
 Шаҳристонҳои Эрон 97, 157, 158, 386  
 Шарҳи ду пора шеърӣ куҳан аз сурудаҳои мардуми Бухоро 527,  
 528, 529  
 Шесть веков славы 9  
 Шеър ва адаби форсӣ 4  
 Шеър ва адаби форсӣ дар кишварҳои ҳамсоя 5  
 Шеър ва шоирӣ дар аҳди сафавӣ 5  
 Шеър дар аҳди Борбад 517, 523  
 Шеър дар асри Қочор 6  
 Шеър дар Эрони пеш аз ислом 58, 59, 75, 80, 128, 136, 197  
 Шеърӣ қадими форсӣ 536, 562  
 Шеърӣ қадими Эрон 517  
 Шеърӣ муосири Эрон: Аз Баҳор то Шаҳрёр 6  
 Шеърӣ муосири дарӣ дар Афғонистон 8  
 Шеърӣ нав аз оғоз то имрӯз 6  
 Шеърӣ паҳлавӣ 203  
 Шеърӣ форсӣ аз оғоз то имрӯз 6  
 Шеърӣ форсӣ дар аҳди Шоҳруҳ (нимаи аввали қарни нухум) 6  
 Шеърӣ форсӣ дар Балучистон 8

Шеъри форсӣ дар Ҳинду Покистон 8  
Шеъру шоирӣ дар аҳди сафавӣ 5  
Шеъру-л-аҷам ё таърихи шуаро ва адабиёти Эрон 3  
Шигифтиҳо ва барҷастагиҳои Систон 170  
Шоҳаншони Ҳахоманишӣ 44  
Шоҳиди Содик 555  
Шоҳнома 29, 32, 43, 84, 90, 91, 93, 94, 95, 103, 133, 134, 135, 139,  
154, 156, 160, 162, 163, 164, 166, 168, 169, 176, 191, 192, 202, 203, 226,  
228, 229, 237, 247, 292, 297, 312, 326, 334, 360, 364, 370, 372, 374, 377,  
378, 392, 394, 395, 407, 413, 414, 433, 434, 435, 436, 437, 439, 445, 446,  
519, 529  
Шуаро;уламо ва умарои номии Буснӣ ва Ҳирзигувин 8  
Шуарои бузурги Эрон 5  
Энсиклопедияи адабиёт ва санъати тоҷик 26, 35, 50, 77, 89, 93, 107,  
111, 112, 119, 132, 136, 141, 151, 154, 158, 164, 185, 188, 196  
Эрон дар замони Сосониён 94, 111, 105  
Эронӣ адаб 6, 8  
Эҳёи Аҷам 18  
Як қитъа шеър дар порсии бостон 38, 43  
Яке аз форсиёти Абӯнӯвос 507, 508  
Ясн 124, 125  
Ясно 54, 55, 61, 65, 66, 67, 68, 71, 72, 235

## ФЕХРИСТИ АСАРҲО БА АЛИФБОИ ЛОТИНӢ

- A Caralogue of the Provincial Capitals of Eransahr 158  
A Golden Treasury of Persian Poetry 8  
A History of Persian Literature in modern Times 3, 9  
A Literary history of Persia, Vol,1, From the Earlist times until Firdawsi 3  
A literary history of the arabs 3  
A Literature History of Persia 3  
A short History of Persian Literrure: at the Bahmani;the Adilshahi and Qutbshahi Courts 8  
Abu Hafs Cogdi, Ensiklopedia Iranika 551  
Abu Ubayda Mamar b, al-Muthanna //The Encyclopaedia of Islam, New edition, Vol,1 45 21  
An Introductory History of Persian Literature 3  
An Outline History of Persian Literature A, D 822-1926 3  
Avesta; the Sacred Books of the Parsis,vol, I, Stuttgart 62, 112  
Biographical Notices of Persian Poets: with Critical and Explanatory Remarks 3  
Classical Persian Literature 8  
Das iranische Nationalepos 3, 95, 228  
Das Iranische Nationalepos: Besonderer Abdruck aus dem Grundriss der iraischen Philologie 3  
Der indische Stil in der persischen Literatur 9  
Die Hofische und Romantische Poesia der Perser 3  
Eastern Iranian Epic Traditions II;Rostam and Bhisma 228  
Ebn Abi Taher Tayfur //Encyclopaedia Iranica 465  
Gershevitch;I, 1968, Old Iranian literature 228  
Geschichte der schonen Redekunste Persiens 3  
Geschichte und Entwicklung der modernen persischen Literatur 8  
Geschichteder persischen Literatur 3  
Handbuch des Altpersishen; Wiesbaden 43  
Hanzala Badgisi” Ensyclopaedia Iranica XI 555  
History and Literature in Iran: Persian and Islamic studies in honor of Peter W. Avery 9  
History of Persian Literature 8  
Introduction to Persian Literature 8  
Iranian National History 8  
Ismaili Literature, – Tehran 8  
Literary History of Persia 3  
Medieval Persian Court Poetry 9  
Middle Persian literature 105  
Mughal Poetry: Its Cultrual and Historical Value 8  
Neupersische Literatur 3  
Neutestamentliche Bruchstucke in soghdischer Sprache 220  
Old Persian;New Hawen 43

“Journal of Near Eastern studies  
 Pahlavi texts 54, 112  
 Persian Influence on the Development of Literature and Sifi  
 Traditions in South Asia 8  
 Persian Language and Literature;with a Short Historical Sketch of the  
 Country and Flag, 3, 4  
 Persian Literature in India during the Time of Jahangir and Shah  
 Jahan 8  
 Persian Literature, Ancient and Modern 3  
 Persian Literature 3, 8  
 Persian Poetry in Kashmir 9  
 Persian Poets of Sindh 8  
 Persian Sufi Poetry: an Introduction to the Mystical Use of Classical  
 Persian Poems 9  
 Quelgues specimens de la litterature Sassanide 397, 400  
 Sahl b,Harun b,Rahawayh //The Encyclopaedia of Islam 452  
 Storia Della Letteratura Persiana 3  
 Storia Della Poesia Persiana 3  
 The Cathas of Zarathushtra, 2 vols 70  
 The Choresmian Documents, Asia Major 243  
 The Tahirids and Persian Literature 554  
 Zoroaster`s Time and Homeland 69  
 Zoroastrian Problems in the Ninth Century Books 54

## МУҲТАВО

Муқаддимаи умумӣ.....	3-24
<b>Боби якум</b>	
Адабиёти Давраи бостон.....	25-247
Фасли якум. Адабиёт дар Давраи қадими аввал ва ё давраи модию ҳахоманишӣ.....	29-81
Фасли дуюм. Адабиёт дар давраи фосила ва таназзули адабӣ ..	82-96
Фасли сеюм. Давраи сеюми пеш аз мелод ва адабиёти забонҳои эронии давраи миёна.....	97-196
Фасли чаҳорум. Шеър дар адабиёти давраи миёна.....	197-205
Фасли панҷум. Адабиёти сугдӣ.....	206-232
Фасли шашум. Адабиёти хутанӣ.....	233-240
Фасли ҳафтум. Адабиёти балхӣ.....	241-242
Фасли ҳаштум. Адабиёти хоразмӣ.....	243-244
Фасли нухум. Таъсири адабиёти Давраи бостон ба адабиёти Асрҳои миёна.....	245-247
<b>Боби дуюм</b>	
Адабиёти арабизабони халқҳои эронӣ дар асрҳои VIII-IX...	248-249
Фасли якум. Омилҳои ташаккули адабиёти арабизабони халқҳои эронӣ.....	250-254
Фасли дуюм. Назми арабизабони садаҳои VIII-IX .....	255-339
Фасли сеюм. Оғози насри арабизабон. Насри тарассул.....	340-354
Фасли чаҳорум. Наҳзати тарҷумаи насри паҳлавӣ ба арабӣ дар қарнҳои VIII-IX .....	355-449
Фасли панҷум. Насри таълифии арабизабон дар асрҳои VIII-IX...	450-497
<b>Боби сеюм</b>	
Адабиёт ба забони форсии тоҷикӣ дар қарнҳои VIII-IX .....	498-536
Фасли якум. Пайдоиш, ташаккул ва таҳаввул.....	498-536
Фасли дуюм. Офаринандагони осори адабии асрҳои VIII-IX ...	537- 566
Китобнома.....	567-603
Феҳристи номҳо.....	604-611
Феҳристи асарҳо.....	612-628

*Ба матбаа супорида шуд 11.07.2019*  
*Барои нашр имзо шуд 12.07.2019*  
*Чопи офсетӣ. Ҷузъи чопӣ 55. Андоза 70x100<sup>1</sup>/<sub>16</sub>.*  
*Адади нашр 200 нусха. Супориши №70.*



**МН «Дониш»**

*Муассисаи нашриявӣ «Дониш»-и АИ ҶТ*  
*ш. Душанбе, 734063, кӯчаи Айнӣ, 299/2.*